

२/५/५५५

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नावली

खण्ड : १



सम्पादक :

आचार्य श्री तुलसी

संग्रहकर्ता :

मुनि श्री चौथमलजी

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी. कॉम., बी. एल.



तेरापंथ द्विज्ञाताव्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरपंथी महासभा

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता—१



प्रथमावृत्ति

जून, १९६०

अषाढ २०१७



प्रति संख्या

१५००



पृष्ठांक :

६६२



मूल्य :

दो रुपये



मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस,

कलकत्ता

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विंशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा रचित कृतियों को 'मिश्र-ग्रन्थ रत्नाकर' (प्रथम खंड) के रूप में प्रकाशित कर वस्तुतः गौरवासुभूति हो रही है। स्वामीजी की उच्च कोटि की दार्शनिक कृतियों में जैन आचार और विचार विषयक गूढ़ तार्किक चर्चाएँ वड़ी सरल भाषा में हैं। यद्यपि इन कृतियों की रचना स्वामीजी ने आज से प्रायः पौने दो सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में की थी, किन्तु, फिर भी ये रचनायें, आज भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अपनी रचना-काल में थीं।

महासभा ने स्वामी जी की समस्त कृतियों को जन-हितार्थ क्रम से प्रकाशित करने की परिकल्पना की है। प्रथम दो खण्डों में स्वामीजी की उपलब्ध पद्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। पाठकवृन्द इन परमोपयोगी ग्रन्थ रत्नों से अत्यन्त लाभान्वित होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

तेरापंथ द्विंशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,

कलकत्ता—१

३० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

व्यवस्थापक,

साहित्य-विभाग

भूमिका

तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य संत भीखण जी द्वारा रचित विभिन्न तात्त्विक कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' के प्रथम खंड में संकलित किया गया है। इस खंड में कुल ३४ रत्न हैं। भिन्न-भिन्न रत्नों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

१—नव पदार्थ :

जैन-दर्शन में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, वंश, निर्जरा और मोक्ष—ये नव पदार्थ बताये गये हैं। इस कृति में इन्हीं पदार्थों का विशद विवेचन है। यह कृति सं० १८५५ में आरम्भ की गई और सं० १८५६ में समाप्त हुई। ऐसा प्रथम और बारहवीं ढाल की अन्तिम गाथाओं से मालूम होता है। 'पुण्य पदार्थ' की दूसरी ढाल, जो १८४३ में रचित है, तथा तेरहवीं ढाल, जो १८५७ में रचित है, बाद में इस कृति के साथ जोड़ी गई हैं। इस कृति में १३ ढालों में कुल ६४ दोहे और ६८० गाथाएँ हैं। नव पदार्थ का जैसा गभीर विवेचन इस कृति में है वैसा अन्यत्र कम देखा जाता है। पहली ढाल में द्रव्य जीव और भाव जीव का भेद तथा जीव के तेईस गुणनिष्पन्न नामों का बड़ा सुन्दर और सरल विवेचन है। दूसरी ढाल में घर्मास्तिकाय, अघर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का तुलनात्मक विवेचन तथा काल और पुद्गलास्तिकाय का अनेक पहलुओं से विवेचन है।

तीसरी और चौथी ढाल में पुण्य पदार्थ का विवेचन है। पुण्य की परिभाषा, पुण्य के उदय से उत्पन्न सुखों का स्वभाव, पुण्योत्पन्न सुखों के भोगने का फल, उनके त्याग का फल, पुण्य का वंश कैसे होता है ? पुण्य वधने के नौ प्रकार आदि अनेक विषयों का गहरा विवेचन है।

पाँचवीं ढाल में पाप पदार्थ का विवेचन है। छठीं और सातवीं ढाल में आश्रव और कर्म में भेद, आश्रव जीव है या अजीव, आश्रव के वीस भेद आदि का विवेचन है।

आठवीं ढाल में संवर किसे कहते हैं, संवर कैसे होता है, देश संवर और सर्व संवर आदि बातों पर मौलिक प्रकाश है। नवीं और दसवीं ढाल में निर्जरा कैसे होती है, निर्जरा की परिभाषा, शुभ योग और निर्जरा का सम्बन्ध, संवर और निर्जरा का सम्बन्ध, अकाम निर्जरा और सकाम निर्जरा, मोक्ष और निर्जरा में अन्तर आदि विषयों का विवेचन है। ग्यारहवीं ढाल में वध पदार्थ का स्वरूप, उसके चार भेद आदि का वर्णन है। बारहवीं ढाल में मोक्ष पदार्थ का विवेचन है। सांसारिक और मौक्तिक सुख, १५ प्रकार के सिद्ध, सिद्धों के स्वरूप आदि का मार्मिक विवेचन है। तेरहवीं ढाल में नौ पदार्थों में कितने जीव हैं और कितने अजीव इस विषय की चर्चा है।

२—श्रावक ना वारे व्रत :

यह कृति सं० १८३२ में गुदोच शहर में समाप्त हुई। इसमें श्रावक के बारह व्रतों का विस्तृत विवेचन है। बारह व्रतों पर इतना विशद और व्यापक विवेचन अन्यत्र कम देखा जाता है। इस कृति में १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५२ दोहे और ३६३ गाथाएँ हैं।

३—कालवादी री चौपई :

स्वामीजी के समय में कालवादी एक विशिष्ट मत था। इस कृति में स्वामी जी इस मत की मान्यताओं को खण्डन कर वास्तविक तथ्य क्या है इस पर बड़ा गहरा प्रकाश डालते हैं। यह उच्च कोटि की दार्शनिक कृति है जिसमें गूढ़ तात्त्विक चर्चा बड़ी सरल भाषा में मिलती है। इसमें ७ ढालें हैं। कुल ३६ दोहे और २४७ गाथाएँ हैं। इस कृति की पहली चार ढालों में रचना-संघत् नहीं मिलता।

५ वी ढाल खेरवा गहर मे १८३२ मे आपाइ सुदी १ सोमवार के दिन रची गई थी। ६ वी और ७ वी ढाले पुर मे सं० १८४८ की क्रमश बैंगाल सुदी ५ दुबवार और बैंगाल सुदी ८ रविवार के दिन पूरी हुई।

४—इन्द्रियवादी री चौपई :

इसमे १५ ढाले हैं। कुल ६२ दोहे और ६६७ गाथाएँ हैं। प्रथम सात और १४ वी ढाल की रचना का काल नहीं मिलता। अवशेष ढालों का रचना-स्थान और काल इस प्रकार है।—

ढाल	८ नैणवा गहर	सं०	१८४६ ज्येष्ठ सुदी दुबवार
"	९ "	सं०	१८४७ फाल्गुन वदि ८ अनिवार
"	१० माधोपुर	सं०	" फाल्गुन सुदी
"	११ नेणवा गहर	सं०	" बैंगाल वदि ६ दुबवार
"	१२ आतरदा गांव	सं०	" बैंगाल सुदी १२ रविवार
"	१३ इन्द्रगढ़	सं०	" ज्येष्ठ वदि १४ सोमवार
"	१५ माधोपुर	सं०	" चैत्र वदि २ सोमवार

इन्द्रियां सावध हैं या निरवध—इस विषय पर इन ढालों मे मौलिक विवेचन है।

५—परजायवादी री चौपई :

इस कृति मे ३ ढाले हैं जिनमे १५ दोहे और १०१ गाथाएँ हैं। इसके रचना-काल का उल्लेख नहीं है।

स्वामी जी के समय मे परजायवादी एक मत था। उस मत की विग्रह समीक्षा इन कृति में है।

६—टीकम डोसी री चौपई :

टीकम डोसी की अनेक अकाएँ थी। उनका निवारण स्वामीजी ने किया। इस कृति में अनेक तात्त्विक विषयों की गहरी चर्चा है। इस कृति मे ५ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १२८ गाथाएँ हैं।

७—निपेपां री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल ३० दोहे और २६७ गाथाएँ हैं। किसी ढाल मे रचना-काल नहीं मिलता। इस कृति मे निक्षेपों के स्वरूप का विवेचन और उनपर मौलिक विचार हैं।

८—निम्ब री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल २८ दोहे और १७२ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल मे रचना-काल का उल्लेख नहीं है। निम्बों की मान्यताओं की गभीर आलोचना इस कृति में है।

९—मिथ्याती री करणी री चौपई :

इस कृति मे ४ ढालें हैं। कुल २५ दोहे और १५१ गाथाएँ हैं। दूसरी और चौथी ढाल का रचना समय नहीं मिलता। बाकी दो ढालों का रचना-समय इस प्रकार है —

पहली ढाल	माधोपुर	सं०	१८४३ चैत्र सुदी ६ शुक्रवार
तीसरी ढाल	नैणवा गहर	सं०	१८४७ बैंगाल वदि १२ अनिवार

१०—एकल री चौपई :

इसमें ८ ढालें हैं जिनमे कुल ३७ दोहे और २२७ गाथाएँ हैं। इसका रचना-सबत् नहीं मिलता। जो गण छोड़कर अकेले फिरते हैं उन्हें 'एकल' कहा जाता है। इस चौपई मे ऐसे स्वच्छंदों के दोषों पर प्रकाश डाला है और ऐसी स्वच्छंदता किस प्रकार जिन-आज्ञा के विपरीत है यह सिद्ध किया है। सूत्र मे एकल विहारी किसे कहा है ? एकल विहार करते हुए भी कैसा साधु शुद्ध होता-है ? आदि विषयों का

विवेचन दूसरी ढाल में है। जो अग्रव्यक्त है और बिना गुरु की आज्ञा के अकेला स्वच्छन्द विहारी होता है उसका किस तरह पतन होता है इसका बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कृति में होता है। स्वामी जी ने उपसहस्र रूप कहा है—'भगवान् ने सूत्र में कहा है कि ऐसे कुशील, पार्श्वस्थ, अग्रछंद और ससक्त एकल विहारियों का सग नहीं करना चाहिये। साधु उनके साथ परिचय न करे।'

११—जिनाग्या री चौपई :

इस कृति में ५ ढाले हैं जिनमें कुल ३४ दोहे और २३५ गाथाएँ हैं। पहली ढाल में रचना-संबन्ध नहीं है। बाकी चार ढाले भिन्न २ वर्ष में रचित हैं :

ढाल २ खेरवा	स० १८४० आश्विन वदि ५ शनिवार
” ३	सं० १८३१ ज्येष्ठ सुदी ३ शुक्रवार
; ४ नाथ दुवारा	स० १८४२ आषाढ वदि १ सोमवार
” ५ ”	स० १८५६ फाल्गुन वदि ६ शनिवार

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि 'जिनाग्या री चौपई' कोई सलग्न रचना नहीं है। यह इस विषय की अलग-अलग समय की ढालों का सग्रह मात्र है। इसका प्रतिपाद्य है—“जैन-धर्म जिन-आज्ञा में है, जिन-आज्ञा के बाहर जैन-धर्म नहीं।” पहली ढाल में इसका बड़ा सुन्दर विवेचन है कि किन-किन बातों में जिन-आज्ञा है और किन-किन में नहीं। दूसरी ढाल में सावद्य-निरवद्य कार्य की कसौटी बताते हुए जो जिन-आज्ञा रहित कार्यों में भी धर्म बताते हैं उनकी तीव्र आलोचना की है। जो जिन-आज्ञा के बाहर के कार्यों में मिश्र-धर्म-पाप मिश्रित बतलाते हैं उनकी भी तीव्र आलोचना है। साधु, आहार आदि करते हैं, वस्त्रादि रखते हैं, रात में सोते हैं, ये कार्य जिन-आज्ञा के अन्तर्गत हैं। जो साधुओं के इन कार्यों में प्रमाद, अविरति आदि दोष कहते और उनके महाव्रतों को सागर कहते हैं उनकी आलोचना तीसरी ढाल में है। आज्ञा-सहित कार्य करने में किस तरह साधु को पाप नहीं लगता इसका विशद विवेचन भी इस ढाल में है। चौथी ढाल में यह बताया गया है कि साधु और साध्वियों के जो अलग-अलग कल्प हैं उनमें किसी तरह का पाप नहीं। यह कल्प भगवान् द्वारा निर्धारित है और उनकी मुद्रा उस पर है फिर उसे पाप पूर्ण कैसे कहा जा सकता है ? इस तरह इस ढाल में साधु-साध्वियों के कल्प का बड़ा गभीर और सुन्दर विवेचन है।

साधु के उपकरण १४ ही हैं या उनसे अधिक भी हो सकते हैं इसका विवेचन ५ वीं ढाल का विषय है। स्वामीजी ने सिद्ध किया है कि साधु के उपकरण १४ ही नहीं अधिक भी हैं। अतः जो यह कहते हैं कि १४ उपकरण के उपरांत उपकरण रखने वाला साधु नहीं, इनके उपरांत जो एक कागज का पन्ना भी रखता है वह असाधु है वे विपरीत प्ररूपणा करते हैं। इस ढाल में इस बात का भी विवेचन है कि साधु लिखने के उपकरण रख सकता है या नहीं तथा लिख सकता है या नहीं।

१२—पोतियाबन्ध री चौपई :

इस कृति में ४ ढाले हैं। इनमें कुल २८ दोहे और १६७ गाथाएँ हैं। रचना-संबन्ध किसी भी ढाल में नहीं देखा जाता।

स्वामीजी के समय में जैनों का एक सम्प्रदाय पोतियाबन्ध नाम से भी था। स्वामीजी गृहस्थावास में इस सम्प्रदाय के यहाँ भी आना-जाना रखते थे। गच्छवासी सम्प्रदाय को छोड़ कर वे इसके अनुयायी बने थे।

पोतियाबन्ध सम्प्रदाय की एक मान्यता यह थी कि सिद्धों के पहले अरिहन्तों की वदना करने से आशातना होती है। सर्व साधुओं को वदना नहीं करनी चाहिए। जो बड़े हैं उन माधुओं

के लिए छोटे कसे बदनीय हो सकते हैं? इस तरह नमस्कार ग्रंथ की रचना में वे त्रुटि बतलाते थे। स्वामीजी ने पहली ढाल में इसी मान्यता को लेकर उसकी निस्सारता सिद्ध की है। उनकी दूसरी मान्यता थी कि वर्तमान समय में जैन साधु नहीं हो सकते। स्वामीजी ने दूसरी ढाल में इस मिथ्या मान्यता का खण्डन किया है तथा इस सम्प्रदाय के अन्य अनेक अभिनिवेशों की भी आलोचना की है। वे 'मन' योग से प्रत्याख्यान नहीं करते थे। 'मन' योग से प्रत्याख्यान करने में वे पाप बतलाते थे। इसकी आलोचना तीसरी ढाल में है। चौथी ढाल में अन्य अनेक मान्यताओं का उल्लेख और उनका खण्डन है।

१३—निन्व रास :

इस कृति में केवल एक ही ढाल है। स० १८५३ की कार्तिक वदि ११ बुधवार के दिन यह ढाल रची गई। इसमें ६ दोहे और १७० गाथाएँ हैं। स्वामीजी को विपक्षी निह्व कहते। स्वामीजी ने इस ढाल में यह बताया है कि वास्तव में निह्व बह होता है जिसके श्रद्धा, आचार और प्ररूपणा जिन-वाणी के विपरीत हो। उन्होंने उस समय के साधुओं की मान्यता, आचार, प्ररूपणा आदि पर विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि निह्व सजा कहाँ घटती है। यह कृति उस समय के मिथ्या अभिनिवेश, क्रिया और प्ररूपणाओं पर बड़ा गभीर प्रकाश डालती है।

१४—विनीत अविनीत री चौपई :

इस कृति में नौ ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ५२ और गाथाओं की संख्या ३४२ है। यह कृति खेरवा शहर में सवत् १८३२ भाद्र शुद्ध पड़्यो, शुक्रवार के दिन समाप्त हुई। इस कृति का मुख्य आधार 'उत्तराध्ययन' सूत्र है। पर अन्य सूत्रों में भी जहाँ भी इस विषय पर कुछ भी आया है उसको भी स्वामीजी ने इस कृति में ले लिया है। विनय किसका करना चाहिए, विनय किसे कहते हैं, अविनय किसे कहते हैं, कौन विनयी है, कौन अविनयी है, साधु के विनय का स्वरूप आदि-आदि अनेक विषयों पर इस कृति में बड़ा गम्भीर और मार्मिक विवेचन है। आगम आधार पर रचित इस कृति में बड़ा मौलिक मनोवैज्ञानिक विस्लेषण है और इस दृष्टि से यह एक स्वतंत्र कृति भी कही जा सकती है। इसमें स्वामीजी ने विषय को समझाने के लिए अनेक मौलिक दृष्टान्त और मनोवैज्ञानिक विचार दिये हैं।

१५—विनीत अविनीत री ढाल :

इस कृति में दो ढालों का संग्रह है। दोनों ढालों में रचना सवत् नहीं है। दोनों में कुल मिलाकर दो दोहे और पचास गाथाएँ हैं। पहली ढाल में अविनयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विस्लेषण है। दूसरी ढाल में अविनयी अपनी वृत्तियों को बदल कर किस तरह विनयी हो सकता है, इसका सुन्दर विवेचन है।

१६—उणारी ढाल :

इस कृति में एक ही ढाल है जिसमें एक दोहा और ७८ गाथाएँ हैं। रचना-संवत् नहीं मिलता। इस ढाल में स्वामीजी ने तीन सम्बन्धों को लिया है—(१) माता-पिता और सन्तान का सम्बन्ध, (२) मालिक और नौकर का सम्बन्ध और (३) गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और बतलाया है कि आध्यात्मिक दृष्टि से सन्तान, नौकर और शिष्य किस तरह उद्गृह्य होता है। आध्यात्मिक उद्गृहणता का सुन्दर विवेचन इस ढाल में है। स्वामीजी ने एक मौलिक दृष्टान्त द्वारा इनका विवेचन किया है।

१७—मोहणी कर्म बंध री ढाल :

आठ कर्मों में मोहनीय कर्म प्रबलतम है। प्राणी की ज्ञान और दर्शन की शक्ति इसीसे अवरुद्ध होती है। इस कृति में महा मोहनीय कर्म-बन्ध के ३० बोलों का विवेचन है। इस ढाल के गंभीर मनन से मनुष्य महान् पापों से बच सकता है। यह ढाल स्वामीजी ने पाटुगांव में संवत् १८३७ श्रावण वदि रविवार के दिन रची। इसमें ५ दोहे और ५० गाथाएँ हैं।

१८—दसवें प्राञ्चित्त री ढाल :

इस ढाल में दसवाँ प्रायश्चित्त किसको आता है, इसका विवेचन है। यह ढाल 'स्थानाङ्ग' सूत्र के तीसरे और पांचवें स्थानक के आधार पर रची गई है। इसमें रचना-संवत् का उल्लेख नहीं है। इसमें दो दोहे और प्यारह गाथाएँ हैं।

१९—जिण लखणा चारित्त आवे न आवे तिणरी ढाल :

यह ढाल संवत् १८३५ माघ सुदी ४, बुधवार के दिन रचित है। इसमें ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। श्रामण्य को आगम में गुणों का महा भार कहा है। श्रामण्य आत्मिक विरोधताओं के बिना नहीं आता। इस ढाल में इस बात का विवेचन है कि किन गुणों से सर्व संयम—श्रामण्य का पाना सुलभ होता है और किन-किन कर्मों से मनुष्य उसका अधिकारी नहीं होता।

२०—सूस भंगावण रा फल री ढाल :

इस ढाल में ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। यह कृति १८५४ चैत्र सुदी ३ बुधवार के दिन पाटुगांव में रची गई है। इस छोटी सी ढाल में स्वामीजी ने प्रत्याख्यान के महत्वपूर्ण विषयों को कई पहलुओं से स्पर्श किया है। प्रत्याख्यान किस भावना से ग्रहण करना चाहिए, किस तरह उसका पालन करना चाहिए, प्रत्याख्यान के भङ्ग में क्या दोष है, गिरते हुए को किस तरह से दृढ़ करना चाहिए, ब्रती के परिणामों को ढीला नहीं करना चाहिये आदि २ विषयों पर बड़ा मार्मिक विवेचन है।

२१—सामधर्मी सामद्रोही री ढाल :

इस ढाल में कुल ३१ गाथाएँ हैं। इसका रचना-संवत् नहीं मिलता। एक योगी ने चूहे को मंत्र के बल से क्रमशः विल्ली से सिंह बनाया। सिंह बनने पर वह चूहा अपने उपकारी योगी को ही खाने के लिए उद्यत हो गया। यह स्वामी द्रोह का दृष्टान्त है। इसीमें एक अन्य दृष्टान्त राजा के स्वामीभक्त नौकर का है जिसको राजा ने ठुकरा दिया। बाद में राजा पर विपद पड़ी। उस समय उस नौकर ने राजा के व्यवहार की ओर जरा भी दृष्टिपात न करते हुए उसकी रक्षा की। स्वामीजी ने इन दृष्टान्तों की उपमा देते हुए विनयी-अविनयी शिष्य के स्वभाव को प्रगट किया है।

२२—शील की नव वाढ़ :

इस कृति में प्यारह ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ४६ और गाथाएँ १६७ हैं। इसकी रचना संवत् १८४१ की मिति फाल्गुन वदि १० बुधवार के दिन पाटुगांव में समाप्त हुई। इस कृति में उत्तम ब्रह्मचारी के शील—उसके लक्षण, रहन-सहन और व्यवहार के नियमों का विवेचन है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 'उत्तराख्यान' सूत्र में दस समाधि स्थानों का उल्लेख है। उसीके आधार पर ब्रह्मचर्य की बाड़ों का विस्तृत, मार्मिक एवं मौलिक विवेचन इस कृति में है।

इस कृति का सटिप्पण हिन्दी अनुवाद अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

२३—समाकित री ढालां :

यह तीन ढालों का संग्रह है। इसमें सम्यक्त्व का महत्त्व, मम्यक्त्व की कौन है, किन्तु मम्यक्त्व नहीं है, इत्यादि विवेचन है। इसमें मम्यक्त्व के स्वरूप पर बड़ा अच्छा प्रकाश है। इन संग्रह में कुल २ दोहे और ४६ गायार्थ हैं।

२४—गणधर सिखावणी :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान केनवा है और यह संवत् १८४३ के पीप महीने में रची गई है। मनुष्य का आयुष्य किन्तु तरह अस्तिर है यह पहली ढाल में बताया गया है। दूसरी ढाल में एक समय के लिए भी प्रमाद न करने का उपदेश देने हुए अनेक उच्च गुणों की शारावना का बड़ा गम्भीर उपदेश है। दोनों ढालों में ३६ गायार्थ हैं।

२५—दान री ढालां :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गांव है। यह ढाल संवत् १८४२ कार्तिक मास में रची गई है। दोनों ढालों में कुल दोहों की संख्या ६ है और गायार्थ ६० हैं। प्रथम ढाल में निरवद्य मुपात्रदान की महिमा का वर्णन है और दूसरी ढाल में कृपण की प्रकृति का गम्भीर मनोवैज्ञानिक विवेचन है।

२६—चराग री ढालां :

यह कुल ४ ढालों का संग्रह है। इसमें कुल दोहे ५ हैं और गायार्थ १०५। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गांव है। यह संवत् १८३४ आषाढ वदि ११ शनिवार को रची गई है। पहले गणधर सिखावणी का जो संग्रह थाया है उसकी पहली ढाल का ही विषय इस संग्रह की पहली ढाल का विषय है। वास्तव में ये दोनों ढालें एक ही संग्रह में होनी चाहिये थी। दूसरी ढाल की प्रायः 'बूढ़े की ढाल' कहते हैं। इसमें बृद्धान्त्या में मनुष्य की कंठी हालत होती है उनका वर्णन है। तीसरी ढाल में ग्रहत्यागत्या की विडम्बना का वर्णन है। इसमें कई अच्छे सूक्त हैं। उदाहरण स्वरूप :

नर्चित होय वेअ नर अंब, बांधे पर घर केरा चंब ।
परणीजे जाणें घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या ॥
तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जप मांहे तिरसी ॥
केह श्रावक नां व्रत पाले, ते पिणनरक तिर्यंच दुखटाले ।
देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व चिकारी ॥
नरक दिलावण दीवी नार, मोष जावण ने आडी किवाड ।
सुयमांग तंदुल वियालि साख, तिण में वीर गया छे भाव ॥
स्त्री दोप जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यंही एक ।
बुरो मती मानें नर नारी, निश्चें देखो ग्यान चिकारी ॥
छद्दार्णां जस हाथ नें पाय, कांप्या कान नें नांक कहाय ।
ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी ॥
विपें दिष्टि वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी ।
सूर्य साहो जोयां घटें तेज, ज्यू ब्रह्मचर्यं घटें इण हेज ॥

उंदर बेटो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस ।
तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ बचे वलवंत ॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपने हित वांछे ते संत ।
शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनै जांणो मुगत नजीक ॥

२७—जुआ री ढाल :

इसमें दोहे ४ और गाथाएँ ६१ हैं। इसकी रचना पुर शहर में संवत् १८३७ श्रावण सुदी ५ शनिवार को हुई। जुये का शीषण दुष्परिणाम इस कृति में बड़े मौलिक ढंग से दिखाया गया है।

२८—ब्याहुलो :

इसमें केवल एक ही ढाल है। इसकी गाथाएँ ६८ हैं। इसके रचना-काल व स्थान का उल्लेख नहीं है। विवाह में जो अनेक नेगचार होते हैं उनका आध्यात्मिक गूढार्थ इस कृति में प्रगट किया है। स्वामीजी का उद्देश्य है कि इसको पढ़कर “जोगी जोग सेंठो रहे, भोगी तजे विकार”—अर्थात् योगी योग में दृढ़ रहे और भोगी विकार को छोड़े। यह ढाल स्वामीजी की श्रौत्यांतिकी बुद्धि का बड़ा सुन्दर नमूना है। विवाह सम्बन्धी लौकिक क्रियाओं का परमार्थ उपस्थित करते हुए उल्कट वैराग्य का उपदेश इस कृति में दिया गया है।

२९—तात्त्विक ढालां :

यह पाच ढालों का संग्रह है, जिनमें कुल ७ दोहे और १२४ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-संघट्ट व स्थान का उल्लेख नहीं है। प्रथम ढाल में जिन-शासन में किन किन महान् व्यक्तियों ने समय ग्रहण किया उनका वर्णन है। दूसरी ढाल में २४ दण्डक की अपेक्षा से २३ पदवियों का वर्णन है। तीसरी ढाल में भोक्षमार्ग में ज्ञान और क्रिया की सहचारिता पर अग्ने और पगु का दृष्टान्त है। छोटी होने पर भी यह ढाल बड़ी अर्थ-गम्भीर है। चौथी ढाल में एकेन्द्रिय जीवों को कौसी वेदना होती है इसका दिग्दर्शन है। पांचवी ढाल में मोम, लाख, लकड़ी और मिट्टी के गोले का दृष्टान्त देकर चार प्रकार के मनुष्यों की मार्मिक व्याख्या की है।

३०—अनुकम्पा री चौपई :

यह रत्न १२ ढालों का संग्रह है जिनमें ५४ दोहे और ४८७ गाथाएँ हैं। प्रारम्भिक आठ ढालों में रचना-संघट्ट नहीं मिलता। अवशेष ढालों के अन्त में निम्न व्योरा मिलता है।

ढाल ९ बगड़ी १८४४ फाल्गुन सुदी ९ रविवार।

ढाल १० मांडा गाँव १८५२ आषाढ वदि ११ मंगलवार।

ढाल ११ खेरवा १८५४ आश्विन सुदी २ शुक्रवार।

ढाल १२ पुर शहर १८५३ कार्तिक वदि १४ शुक्रवार।

उपर्युक्त रचना-वर्णन से यह स्पष्ट है कि कुछ ढालें मूल कृति के साथ वाद में जोड़ी गई हैं। मूल कृति में न अथवा ६ ढालें रही इसका स्पष्ट पता नहीं चलता। इस कृति में, हिंसा, अहिंसा, दया, अनुकम्पा, उपकार आदि विषयों पर विविध गम्भीर विवेचन हैं जिसके पीछे गहरा आराम-अव्ययन और गम्भीर चिन्तन-मनन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अहिंसा के क्षेत्र में स्वामीजी एक बहुत बड़े विचारक और साधक रहे जिनके चिन्तन में बहुमूल्य स्याई तत्त्व हैं। इस कृति का सानुवाद सटिप्पण संस्करण अनग प्रकाशित किया जा रहा है।

३१—विरत अविरत री चौपई :

इस सग्रह में २० ढाले हैं। कुल मिला कर ८९ दोहे और ६७५ गाथाएँ हैं। इनमें विरति और अविरति के विषय पर मौलिक चिन्तन और विश्लेषण है। दान के सावद्य-निरवद्य भेद पर आगम-सम्मत विचार हैं। एक ही क्रिया में धर्म-अधर्म दोनों होते हैं ऐसी मान्यता का खण्डन है। जैन-आगम में कहाँ किस परिस्थिति में मौन रहने का विधान है इसका जिक्र है। दस प्रकार के दान पर विवेचन कर सावद्य-निरवद्य दान का विवेक उपस्थित किया गया है। यह कृति अनेक मिथ्याभिनिवेशों को दूर कर अनेक विषयों में सम्यक्दृष्टि देती है। इस सग्रह की कुछ ढालों के रचना-स्थान और काल का विवरण इस प्रकार है—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
४	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि १० रविवार
८	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ८ शुक्रवार
९	कोठाख्या	१८४३ आसोज सुदी १४ शनिवार
१२	धेनावस	१८४४ माघ सुदी ७ बृहस्पतिवार
१३	पाली	१८५२ श्रावण वदि १३ मंगलवार
१४	पाली	१८५२ आसोज वदि ५ शुक्रवार
१५	पाली	१८५२ आसोज वदि १५ सोमवार
१६	सोजत	१८५३ श्रावण सुदी ६ सोमवार
१७	पाली	१८५५ आसोज सुदी १ बुधवार
१८	नाथ दुवारा	१८५६ पौष वदि २ शनिवार
१९	गोधुंदा	१८५७ चैत्र सुदी १४ बुधवार

३२—श्रद्धा री चौपई :

यह रत्न ३१ ढालों का सग्रह है। ये ढाले विभिन्न स्थल और काल में रची गई हैं। इनका पूरा विवरण इस प्रकार है -

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
१	बगड़ी	१८३६ कार्तिक सुदी १५ मंगलवार
२	माधोपुर	१८४८ आसोज सुदी ६ सोमवार
४	नाथदुवारा	१८४३ श्रावण वदि १५ मंगलवार
५	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ९ शनिवार
६	ईडवा	१८५४ चैत्र वदि ४ बुधवार
७	कोठाख्या	१८४३ कार्तिक सुदी १३ शनिवार
८	सिरयारी	१८५० आषाढ सुदी २ रविवार
९	गुदवच	१८५१ वैसाख सुदी ११ बुधवार
१०	खैरवा	१८५३ आसोज वदि १५ बुधवार
११	मेडता	१८५४ वैसाख वदि १५ सोमवार
१२	पाली	१८५५
१३	केलवा	१८५५ फाल्गुन वदि १ बुधवार

१४	गुरला	१८५८ कार्तिक वदि ५ मंगलवार
१५	पीपाड़	१८३३ ज्येष्ठ वदि १२ मंगलवार
१६	पाहू	१८५४ वैसाख वदि १० मंगलवार
१८	सिरयारी	१८५१ कार्तिक वदि १४ बुधवार
१९	पुर	१८५७ आसोज वदि ९ शुक्रवार
२०	पुर	१८५७ आसोज वदि १३ मंगलवार
२१	गंगापुर	१८५७ पौष सुदी ८ मंगलवार
२२	पीपाड़	१८५७ चैत्र सुदी १३ सोमवार
२३	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १ बृहस्पतिवार
२४	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १५ बृहस्पतिवार
२५	पूहना	१८५७ माघ वदि २ शनिवार
२६	रावल्यां	१८५७ चैत्र सुदी १४ रविवार
२७	मेवाड़	१८५७ आसोज वदि १५ बृहस्पतिवार
२९	नौगवा	१८४८ माघ वदि १५ सोमवार

स्वामीजी के समय मे जैन दर्शन के क्षेत्र में बड़ा वितण्डावाद फैला हुआ था। एक ही विषय के सम्बन्ध मे नाना प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित थी। श्रद्धा विषयक इन मान्यताओं का स्वामीजी ने गहरा अध्ययन किया और हजारों विषयों पर सही दृष्टि दी। श्रद्धा आचार की चौपई में श्रद्धा विषयक निर्णयों का संग्रह और जिन धर्म विषयक विपरीत मान्यताओं की तीव्र आलोचना एवं खण्डन है। इस संग्रह मे कुल मिला कर १६० दोहे और १४६४ गाथाएँ हैं।

३३—आचार री चौपई :

इस चौपई में ३२ ढालों का संग्रह है। कुछ के रचना-काल और स्थान इस प्रकार मिलते हैं—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
९	मेढता	१८३३ वैसाख वदि ९
११	रीयां	१८३३ आषाढ सुदी ३ सोमवार
१२	पीपाड़	१८३४ आसोज सुदी ७ बुधवार
१४	अणंदपुर	१८३३ वैसाख सुदी ११ रविवार
१६	खेरवा	१८३२ आसोज सुदी २ मंगलवार
१७	खेरवा	१८३२ कार्तिक वदि २ मंगलवार
१८	गुंदवच	१८३२ वैसाख सुदी ११ सोमवार
१९	रीयां	१८३३ ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रवार
२०	रीयां	१८३३ आषाढ वदि ९ रविवार
२५	पाली	१८५२ भाद्र वदि ७ शुक्रवार
२६	सोजत	१८५३ आसोज सुदी ७ शनिवार
२७	पाली	१८५२ आसोज सुदी २ बुधवार
२८	सोजत	१८५३ आसोज वदि ११ मंगलवार
२९	पाली	१८५५ भाद्र वदि १० बुधवार
३०	नाथद्वारा	१८५६ कार्तिक सुदी ८ मंगलवार

श्रद्धा के बोलों की तरह आचार के सम्बन्ध में भी स्वामीजी के समय में बड़ा अन्धेर चला हुआ था। साधुओं के आचार में इतनी विभिन्नता थी कि किसे साधु कहा जाय और किसे नहीं यह निर्णय करना असंभव-सा हो गया था। स्वामीजी ने आचार विषयक शिथिलता की जो तीव्र आलोचना की वह इस संग्रह की प्रत्येक ढाल में देखी जाती है। उन्होंने आगम-सम्मत शुद्ध साध्वाचार और श्रावकाचार को जनता के सामने रखा।

३४—अवनीत रास :

इसमें १ दोहा और ४४३ गाथाएँ हैं। अविनयी की प्रकृति का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रत्येक गाथा से प्रगट होता है। स्वामीजी से चन्द्रभानजी आदि अलग हुए उसके बाद की यह कृति है। इसमें विनय और अविनय के विषय पर अमूल्य विचार-रत्न छिपे पड़े हैं।

इस खण्ड में आर्डे हुई कृतियों के विषयों का परिचय संक्षेप में ऊपर दिया जा चुका है। इन कृतियों के पढ़ने से पाठकों के हृदय पर सहज ही निम्न प्रभाव पड़ेगा

स्वामीजी का शास्त्रीय-ज्ञान बड़ा गभीर था। आगमों का उनका अध्ययन बेजोड़ था।

शास्त्रीय-ज्ञान के साथ-साथ उनमें तीव्र नीर-क्षीर विवेक था जिसके सहारे वे तत्त्व-अतत्त्व का सही-सही निर्णय दे सकते थे।

उनकी कृतियों में तत्त्वों का सूक्ष्म निरूपण है। उनमें गर्भीर्य के साथ-साथ सरलता और सहज बोध है।

वे बड़े भारी मनोवैज्ञानिक थे। मनोभावों का उनका विश्लेषण जितना ही गहरा है, उतना ही सुगंधकारी।

उन्होंने जो कुछ लिखा है वह विद्वानों के लिए जितना सरल है उतना ही एक साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए भी।

वे सहज कवि और तत्त्व-ज्ञानी थे। उनकी काव्य-प्रतिभा असाधारण और विविध पहलुओंवाली थी। वे सैद्धान्तिक थे और दिग्विजयी चर्चावादी। वे महान् टीकाकार थे। सूत्र की गाथाओं की उनकी टीकाएँ बेजोड़ हैं। वे पाण्डित्यपूर्ण ही नहीं वरन् बड़ी भूलस्पृशी और मार्मिक भी हैं।

महान् बहुश्रुत होने के साथ-साथ वे महान् चिन्तक भी थे।

वे महान् उपदेशक और नैयायिक थे, साथ ही साथ तीव्र आलोचक और कठोर समीक्षक भी। उनकी कृतियों में गहरा ज्ञान और सहज वैराग्य है।

वे एक महान् आचार्य्य थे और एक दूरदर्शी आचार्य्य की तरह स्थायी अनुवासन के नियम दे सकते थे।

उनका जीवन-व्यापी प्रयास शुद्ध जैनत्व का प्रकाश करना रहा।

स्वामीजी अपने समय के एक महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी पुरुष थे। उस समय की जैन धर्म की स्थिति एवं साधुओं में छाई हुई शिथिलता के प्रति उनके मन में गहरा दर्द था। जो यह कहा करते थे कि यह पंचम काल है, सम्पूर्ण साधुत्व का पालन असंभव है, स्वामीजी उनके लिए एक चुनौती थे। उन्होंने केवल प्रचलित आचार-विषय में ही नहीं किन्तु विचारों और मान्यताओं के विषय में भी मौलिक प्रकाश दिया। उन्होंने जिनाज्ञा के विपरीत कार्यों में धर्म बताने वालों की गहरी आलोचना की। वे एक अत्यन्त स्पष्टवादी आचार्य्य थे। अपने विचारों को निर्णयतापूर्वक प्रगट करने में वे कभी नहीं सकुचाये।

इस खण्ड में स्वामीजी की तात्त्विक और सैद्धान्तिक कृतियों का संग्रह है। द्वितीय खण्ड में स्वामीजी रचित आख्यानों और कथानकों का संग्रह है। तृतीय खण्ड में स्वामीजी की गद्यमय रचनाओं का संग्रह रहेगा।

तीनों खण्डों की विस्तीर्ण विषय-सूचि, कठिन शब्दों का कोष आदि तृतीय खण्ड के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित किये जायेंगे।

तात्त्विक ढालों का यह संग्रह न केवल जैनियों के लिए ही अत्यन्त महत्त्व का सिद्ध होगा पर जो जैन धर्म के हृदय को समझना चाहते हैं उन सब के लिए भी वैसा ही सिद्ध होगा।

स्वामीजी की ढालों की प्राचीनतम प्रति उनके परम भक्त विष्णु और द्वितीय आचार्य श्रीमद् भारीमालजी के हस्ताक्षरों में उपलब्ध है। वही प्रस्तुत संग्रह का आधार रही है। श्रीमद् जयाचार्य ने स्वामीजी की कृतियों का विषयवार वर्गीकरण कर उन्हें व्यवस्थित कर उनपर 'सिद्धान्त-सार' नामक ग्रन्थ की रचना की। वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी ने "भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" के रूप में उन्हें संयोजित करने का विचार किया। मुनि श्री चौथमलजी ने आचार्य श्री की दृष्टि के अनुसार संयोजन करने में पूरा परिश्रम किया।

तेरापन्थ सम्प्रदाय के द्विषाताव्दी समारोह के अवसर पर तेरापन्थ के प्रतिष्ठापक श्रीर आद्य आचार्य की वाणी का यह संग्रह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्रकाशन है। करीब १७५ वर्षों के बाद यह बहुमूल्य साहित्य अपने अमित आलोक के साथ जनता के सामने आ रहा है, यह एक बड़े ही सौभाग्य की बात है।

१५, नूरमल लोहिया लेन

कलकत्ता,

३० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

विषय-सूची

रत्न कृति-नाम	पृष्ठ
१ नव पदारथ	१
२ श्रावक ना वारे व्रत	५६
३ कालवादी री चौपई	६३
४ इन्द्रियवादी री चौपई	११७
५ परजायवादी री चौपई	१८१
६ टीकम डोसी री चौपई	१६३
७ निषेपां री चौपई	२०६
८ निन्द री चौपई	२३३
९ मिथ्याती री करणी री चौपई	२५३
१० एकल री चौपई	२६६
११ जिनाग्या री चौपई	२६३
१२ पोतिया बन्ध री चौपई	३१७
१३ निन्द रास	३३५
१४ विनीत अविनीत री चौपई	३४६
१५ विनीत अविनीत री ढाल	३८३
१६ उरण री ढाल	३९१
१७ मोहणी कर्म बंध री ढाल	३९६
१८ दशवे प्राछित्त री ढाल	४०५
१९ जिण लक्षणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल	४०६
२० सूस भंगावण रा फल री ढाल	४१७
२१ सामघर्मीं सामद्रोही री ढाल	४२३
२२ शील की नव बाड	४२६
२३ समकित री ढाला	४५३
२४ गणधर सिखावणी	४६१
२५ दान री ढालां	४६७
२६ बैराग री ढालां	४७७
२७ जुआ री ढाल	४८६
२८ व्याहुलो	४९७
२९ तार्खिक ढालां	५०५
३० अणुकम्पा री चौपई	५१६
३१ विरत इविरत री चौपई	५६७
३२ श्रद्धा री चौपई	६५१
३३ आचार री चौपई	७७६
३४ अविनीत रास	६०६

मिशु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

१ : जीव पदारथ

दुहा

नमू वीर सासन धणी, गणवर गोतम साम ।
तारण तिरण पुरषा तणां, लीजे नित प्रत नाम ॥ १ ॥
त्या जीवादिक नव पदारथ तणो, निरणो कीयो भांत भांत ।
त्याने हलूकमीं जीव ओलखे, पूरी मन री खांत ॥ २ ॥
जीव अजीव ओलख्यां विनां, मिटे नही मन रो भर्म ।
समकत आयां विण जीव ने, रूके नही आवतां कर्म ॥ ३ ॥
नव ही पदारथ जू जूआ, जथातथ सरदे जीव ।
ते निश्चे समदिष्टी जीवडा, त्यां दीवी मुगत री नीव ॥ ४ ॥
हिचे नव ही पदारथ ओलखायवा, जूआ जूआ कर्हू छूं भेद ।
पहिलां ओलखाऊं जीव ने, ते सुणजो आण उमेद ॥ ५ ॥

ढलल : १

[तिनल रल डलल सूख सुख गुंजे]

सलसतु जीव ड्रुड्य सललुडलत, कडे घटे नही तिलुडलत ।
 तिनरल असलुडलत डुरेडुड, घटे ववे नही लुवलस ॥ १ ॥
 तिन सू दरवे कहुु जीव एक, डलव जीव रल डेड अनेक ।
 तिनरु वहुत कहुु विसतलरु, ते वुववंत जलणे वलचलरु ॥ २ ॥
 डुगुतु वीसडलं सतक डलंय, वीजे उडेजे कहुु जिनरलड ।
 जीवरल तेवीस^३ नलंड, गुण नलडन कहुु छै तलंड ॥ ३ ॥
 जीवेतलवल^१ जीवरु नलंड, आडलल ने वले जीवे तलड ।
 ओतु डलवे जीव ससरलरु, तिनने वुववंत लीजे वलचलरु ॥ ॡ ॥
 जीवथलकलड^७ जीवरु नलंड, वेह वरे छै तेह डुगुु आंड ।
 डुरेडसलं रल समुह ते कलड, डुडगल रल समुह डेले छै तलड ॥ ॡ ॥
 सलस उसलस लेवे छै तलंड, तिन सू डलगेतलवल^३ जीव नलंड ।
 डुडुतलवल^ॡ कहुु डण नुडलड, सडल छै तलहुं कलल रे डलंय ॥ ॡ ॥
 सतेतलवल^ॡ कहुु डण नुडलड, डुडलसुड डुने छै तलड ।
 वलनुतलवल^१ वलडे रल जलंण, सवडलदलक लीडल सवं डलछुलंण ॥ ॡ ॥
 वेडलतलवल^१ जीव रल नलंड, सुख दुख वेडे छै तलंड तलंड ।
 ते तुु डेतन सलरुड छै जीव, डुडगल रुु सवलदी सवीव ॥ ॡ ॥
 डेडलतलवल^ॡ जीवरु नलंड, डुडगल नी रचणल करे तलंड ।
 वलवड डुरकलरे रडे रुड, ते तुु डुंडल ने डलल अनुड ॥ ॡ ॥
 जेडलतलवल^१ नलंड शुरीकर कडुं रलडुु नुु जीडणहलर ।
 तिनरु डुरलकडु सकत अतंत, थुुडल डें करे करडलं रुु अलुत ॥ १० ॥
 आडलतलवल^{१०} नलड डण नुडलड, सवं लुके डरसुडुु छै तलड ।
 जनुड डरण कुरीडल तलंड तलंड, कडे डलडुुु नही आरलंड ॥ ११ ॥
 रलंणेतलवल^{११} नलंड डडडलतुु, रलड डेड रुड रलतुु ।
 तिन सू रहे छै डुुह डतवललु, आतुडल नं लुडलवे कलले ॥ १२ ॥
 हीडुतलवल^{१२} जीवरु नलंड, वलडुु गतल डलहुं हीं डुुु छै तलंड ।
 कडुं हललुले तलंड तलंड, कडे डलडुुु नही वलसरलड ॥ १३ ॥
 डुगलेतलवल^{१३} जीवरु नलंड, डुडगल ले ले डेलुडल तलंड तलंड ।
 डुडगल डलहुं रच रहुु जीव, तिन सू लुगुु संसर गी नीव ॥ १ॡ ॥

माणवेतिवा^{१४} जीव रो नाम, नवो नही सासतो छै ताम ।
 तिणरी परजा तो पलटे जाय, द्रव्य तो ज्यू रो ज्यू रहे ताय ॥ १५ ॥
 कतातिवा^{१५} जीव रो नाम, करमां रो करता छै ताम ।
 तिण सू तिणने कह्यो छै आश्रव, तिण सू लामे छै पुदगल दरब ॥ १६ ॥
 विक्तातिवा^{१६} नाम इण न्याय, कर्मा ने विधूणे छै ताय ।
 आ निरजरा री करणी अमांम, जीव उजलो जै निरजरा ताम ॥ १७ ॥
 जएतिवा^{१७} नाम तणो विचार, अति हि गमन तणो करणहार ।
 एक समे लोक अन्त लग जाय, एहवी सक्त सभाविक पाय ॥ १८ ॥
 जतूतिवा^{१८} जीव रो नाम, जन्म पाम्यो छे ठाम ठाम ।
 चोरासी लख जोनि रे मांहि, उपज्यो ने निसर गयो ताहि ॥ १९ ॥
 जोणित्तिवा^{१९} जीव कहिवाय, पर नो उत्पादक इण न्याय ।
 घट पट आदि वस्त अनेक, उपजावे निज सुविवेक ॥ २० ॥
 सयंभूतिवा^{२०} जीव रो नाम, किण हि निपजायो नही ताम ।
 ते तो छे द्रव्य जीव सभावे, ते तो कदे नही विललावे ॥ २१ ॥
 सरीरेतिवा^{२१} नाम एह, सरीर रे अतर तेह ।
 सरीर पाछे नाम घरायो, काले गोरादिक नाम कहायो ॥ २२ ॥
 नायएतिवा^{२२} ते कर्मा रो नायक, निज सुख दुख छै दायक ।
 तथा न्याय तणो करणहार, ते तो बोले छै वचन विचार ॥ २३ ॥
 अन्तरअपा^{२३} ते जीव रो नाम, सर्व सरीर व्यापे रह्यो ताम ।
 लोलीभूत छै पुदगल माहि, निज सरूप दबे रह्यो त्याही ॥ २४ ॥
 द्रव्य तो जीव सासतो एक, तिणरा भाव कह्या छै अनेक ।
 भाव ते लखण गुण परयाय, ते तो भावे जीव छै ताय ॥ २५ ॥
 भाव तो पाच श्री जिण भाख्या, त्यारा सभाव जू जूया दाख्या ।
 उदे उपसम ने खायक पिछ्छाणो, खय उपसम परिणामीक जाणो ॥ २६ ॥
 उदे तो आठ कर्म अजीव, त्यांरा उदा सँ नीपना जीव ।
 ते उदे भाव जीव छै ताम, त्यारा अनेक जूया जूया नाम ॥ २७ ॥
 उपसम तो मोहणी कर्म एक, जब नीपजे गुण अनेक ।
 ते उपसम तो भाव जीव छै ताम, त्यांरा पिण छे जूया जूया नाम ॥ २८ ॥
 खय तो हुवे आठ कर्म, जब खायक गुण नीपजे परम ।
 ते खायक गुण छै भाव जीव, ते उजला रहे सदा सदीव ॥ २९ ॥
 वे आवरणी ने मं हणी अतराय, ए च्यारू कर्म खय उपसम थाय ।
 जब नीपजे खय उपसमभाव चोखो, ते पिण छै भाव जीव निरदोषो ॥ ३० ॥

जीव परिणमें जिण जिण भाव माहि ते सगला छै न्याया न्यारा ताहि ।
 पिण परिणामिक सारा छे ताम, जेहव तेहवा परिणामिक नांम ॥ ३१ ॥
 कर्म उदे सू उदे भाव होय, ते तो भाव जीव छै सोय ।
 कर्म उपसमीया उपसम भाव, (ते) उपसम भाव जीव इण न्याय ॥ ३२ ॥
 कर्म खय सू खायक भाव होय, ते पिण भाव जीव छै सोय ।
 कर्मखे उपसम सू खै उपसम भाव, ते पिण छै भाव जीव इण न्याय ॥ ३३ ॥
 अे च्याहं इ भाव छै परिणामिक, ओ पिण भाव जीव छै ठीक ।
 और जीव अजीव अनेक, परिणामिक बिना नही एक ॥ ३४ ॥
 छे पांचूइ भाव नें भाव जीव जाणो, त्यांनै रूड़ी रीत पीछांणो ।
 उपजे नें विले हो जाय, ते भावे जीव तो छै इण न्याय ॥ ३५ ॥
 कर्म संजोग विजोग सू तेह, भावे जीव नीपनो छै एह ।
 च्यार भाव तो निश्चे फिर जाय, खायक भाव फिरे नही ताय ॥ ३६ ॥
 द्रव्य तो सासतो छै ताहि, ते तो तीनुंइ काल रे माहि ।
 ते तो विले कदे नही होय, द्रव्य तो ज्युं रो ज्युं रहसी सोय ॥ ३७ ॥
 ते तो छेद्यो कदे न छेदावै, भेद्यो पिण कदे नही भेदावै ।
 जाल्यो पिण जले नांही, बाल्यो पिण न बले अगन माहि ॥ ३८ ॥
 काट्यो पिण कटे नही कांई, गाले तो पिण गले नांही ।
 बाट्यो तो पिण नही बटाय, घसे तो पिण नही घसाय ॥ ३९ ॥
 द्रव्य असख्यात प्रदेसी जीव, नित रो नित रहसी सदीव ।
 ते मारयो पिण मरे नाही, बले घटे, बवे नही कांइ ॥ ४० ॥
 द्रव्य तो असख्यात प्रदेसी, ते तो सदा ज्युं रा ज्युं रहसी ।
 एक प्रदेस पिण घटे नांही, तीनुंइ काल रे माही ॥ ४१ ॥
 खंडायो पिण न खडे लिगार, नित सदा रहे एक धार ।
 एहवो छै द्रव्य जीव अखंड, अखी थको रहे इण मड ॥ ४२ ॥
 द्रव्य रा भाव अनेक छै ताय, ते तो लखन गुण परजाय ।
 भाव लखन गुण परजाय, ए च्याहं भाव जीव छै ताय ॥ ४३ ॥
 ए च्याह भला ने भूडा होय, एक धारा न रहे कोय ।
 केइ खायक भाव रहसी एक धार, नीपना पछं न घटे लिगार ॥ ४४ ॥
 दरवे जीव सासतो जांणो, तिणमे पिण सका मूल म आंणो ।
 भगोती सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४५ ॥
 भावे जीव असासतो जाणो, तिणमे पिण सका मूल म आणो ।
 ए पिण सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४६ ॥

जेती जीव तणी परजाय, असासती कही जिणराय ।
 तिणने निरुचे भावे जीव जाणो, तिणने रुडी रीत पिछाणो ॥ ४७ ॥
 कर्मा रो करता जीव छै तायो, तिण सू आश्रव नाम धरायो ।
 ते आश्रव छै भाव जीव, कर्म लागे ते पुदगल अजीव ॥ ४८ ॥
 कर्म रोके छै जीव ताह्यो, तिण गुण सू संवर क्हायो ।
 सवर गुण छै भाव जीव, रुकीया छै कर्म पुदगल अजीव ॥ ४९ ॥
 कर्म तूटा जीव उजल थाय, तिणने निरजरा कही जिणराय ।
 ते निरजरा छै भाव जीव, तूटे ते कर्म पुदगल अजीव ॥ ५० ॥
 समस्त कर्मा सू जीव मूकायो, तिण सू तो जीव मोख क्हायो ।
 मोख ते पिण छै भाव जीव, मूकी गया कर्म अजीव ॥ ५१ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, तेहनो करे संजोग ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५२ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, त्याने त्यागे ने पाडे विजोग ।
 ते तो संवर छै भाव जीव, तिण सू रुकीया छै कर्म अजीव ॥ ५३ ॥
 निरजरा ने निरजरा री करणी, अे दोनूइ जीव नें आदरणी ।
 ए दोनू छै भाव जीव, तूटा ने तूटे कर्म अजीव ॥ ५४ ॥
 काम भोग सू पामे आरामो, ते संसार थकी जीव स्हांमो ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५५ ॥
 काम भोग थकी नेह तूटो, ते संसार थकी छै अपूठो ।
 ते सवर निरजरा भाव जीव, जब रुके तूटे कर्म अजीव ॥ ५६ ॥
 सावद्य करणी सर्व अकार्य, अे तो सगला छै किरतव अनाय ।
 ते सगलइ छै भाव जीव, त्यासू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५७ ॥
 जिण आगन्या पाले छै रुडी रीत, ते पिण भाव जीव सुवनीत ।
 जिण आगन्या लेगे चाले कूरीत, ते तो छै भाव जीव अनीत ॥ ५८ ॥
 सूर वीरा ससार रे माही, किणरा डराया डरे नाही ।
 ते पिण छै भाव जीव ससारी, ते तो हुवा अनती वारी ॥ ५९ ॥
 साचा सूरवीर साख्यात, ते तो कर्म काटे दिन रात ।
 ते पिण छै भाव जीव चोखो, दिन दिन नेडी करे छै मेखो ॥ ६० ॥
 कहि कहि नें कितोएक केहू, द्रव्य ने भाव जीव छै वेहू ।
 त्यानें रुडी रीत पिछाणो, छै ज्यूं रा ज्यूं हीया माहे जाणो ॥ ६१ ॥
 द्रव्य भाव ओलखावणी ताम, जोड कीधी श्री दुवारे सु ठाम ।
 समत अठारे पचावने वरस, चेत विद तिय तेरस ॥ ६२ ॥

२ : अजीव पदारथ

दुहा

हिंवे अजीव ने ओलखायवा, त्यांरा कर्हू छू भाव भेद ।
थोदा सा परगट कर्हू, ते सुणजो आण उमेद ॥ १ ॥

ढाल : २

[मम करो काया माया कारभो]

धर्म अधर्म आकास छै, काल ने पुदगल जाण जी ।
अे पाचूइ द्रव्य अजीव छे, त्यारी बुद्धवत करो पिछाण जी ।
ए अजीव पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥

यामे च्यार दरब ने अरूपी कह्या, त्यामेंवर्ण गब रस फरस नाहिजी ।
एक पुदगल द्रव्य रूपी कह्यो, वर्णादिक सर्व तिण माहि जी ॥ २ ॥

अे पाचूइ द्रव्य भेला रहे, पिण भेल सभेल न होय जी ।
आप आप तणो गुण ले रह्या, त्याने भेला करसके नही क्योय जी ॥ ३ ॥

धर्म द्रव्य धर्मास्तीकाय छै, आसती ते छती वसत ताय जी ।
असख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्याय जी ॥ ४ ॥

अधर्म द्रव्य अधर्मास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत ताय जी ।
असख्यात प्रदेस छे तेहना, तिणने काय कही इण न्यायजी ॥ ५ ॥

आकास द्रव्य आकास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत छै ताय जी ।
अनत प्रदेस छे तेहना, तिण सू काय कही जिणराय जी ॥ ६ ॥

धर्मास्ती अधर्मास्तीकाय तो, पेहली छै लोक प्रमाण जी ।
लोक अलोक प्रमाण आकास्ती, लगी ने पेहली जाण जी ॥ ७ ॥

धर्मास्ती ने अधर्मास्ती, बले तीजी आकास्तीकाय जी ।
अे तीनुँ कही जिण सासती, तीनुँइ काल रे माय जी ॥ ८ ॥

अे तीनुँइ द्रव्य छै जू जूआ, जूआ जूआ गुण परजाय जी ।
त्यारी गुण परजाय पलटे नही, सासता तीन काल रे माय जी ॥ ९ ॥

ए तीनुँइ द्रव्य फेली रह्या, ते तो हाले चाले नही ताय जी ।
हाले चाले ते पुदगल जीव छे, ते फिरे छै लोक रे माय जी ॥ १० ॥

जीव ने युदगल चाले तेहने, साज धर्मास्तीकाय जी ।
अनंता चाले त्याने साज छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ ११ ॥

ॐ यह आँकड़ी है । प्रत्येक गाय के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति समझनी चाहिए ।

जीव ने पुदगल थिर रहे, त्यानें साज अघर्मास्तीकाय जी ।
 अनता थिर रहे त्याने साम् छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ १२ ॥
 जीव अजीव सर्व द्रव्य नों, भाजन आकास्तीकाय जी ।
 अनता रो भाजन तेह सू, अनती कही परजाय जी ॥ १३ ॥
 चालवाने साज घर्मास्ती, थिर रहेवाने अघर्मास्तीकाय जी ।
 आकास विकास भाजन गुण, सर्व द्रव्य रहै तिण मांय जी ॥ १४ ॥
 घर्मास्ती रा तीन भेद छे, खंघ ने देस परदेस जी ।
 आखी घर्मास्ती खद छे, ते उंणी नही लवलेस जी ॥ १५ ॥
 एक प्रदेस थी आदि दे, एक प्रदेस उणो खंघ न होय जी ।
 त्यां लग देस प्रदेस छे, तिणने खव म जाणजो कोय जी ॥ १६ ॥
 घर्मास्ती काय तो सेयाले पछी, तावडा छांही ज्यू एक धार जी ।
 तिणरे बेठो ने दीटो कोई नही, वले नही छेकी साव लिगार जी ॥ १७ ॥
 पुदगलास्ती सू प्रदेस न्यारो पखो, तिणने परमाणु कह्यो जिणदाय जी ।
 तिण सूखम परमाणु थकी । तिण सू मापी छै घर्मास्तीकाय जी ॥ १८ ॥
 एक परमाणुओ फरसे घर्मास्ती, तिणने प्रदेस कह्यो जिणराय जी ।
 इण मापा सू घर्मास्ती काय नां, असंख्याता प्रदेस हुवे ताय जी ॥ १९ ॥
 तिण सू असंख्यात प्रदेसी घर्मास्ती, अघर्मास्ती पिण इमहीज जाण जी ।
 अनंता आकास्ती काय नां, प्रदेस इण रीत पिछ्छाण जी ॥ २० ॥
 काल पदारथ तेहनां, द्रव्य कह्या छै अनंत जी ।
 नीपना नीपजे ने नीपजसी वलि, तिणरो कदेय न आवसी अंत जी ॥ २१ ॥
 गये काल अनता समां हूआ, वरतमान समो एक जाण जी ।
 आगमीये काले अनंता हुसी, ए काल द्रव्य पिछ्छाण जी ॥ २२ ॥
 काल द्रव्य नीपजवा आसरी, सासतो कह्यो जिणराय जी ।
 ऊपजे नें विणसे तिण आसरी, असासतो कह्यो इण न्याय जी ॥ २३ ॥
 तिण सू काल द्रव्य नही सासता, ए तो उपजे छै जेम प्रवाह जी ।
 जे उपजे ते समो विणसे सही, तिणरो कदेय न आवे छै थाह जी ॥ २४ ॥
 सूरज ने चन्द्रमादिक नी चाल थी, समो नीपजे दगचाल जी ।
 नीपजवा लेखे तो काल सासतो, समयादिक सर्व अघा काल जी ॥ २५ ॥
 एक समो नीपजे ने विणसे गयो, पछै बीजो समो हुवे ताय जी ।
 बीजो विणस्यो तीजो नीपजे, इन अणुक्रमे नीपजता जाय जी ॥ २६ ॥
 काल वरेत छै अढाइ घीप में, अढी दीप वारे काल नाहि जी ।
 अढी घीप वारला जोतषी, एक ठाम रहे त्यांरा त्यांहि जी ॥ २७ ॥

पुदगल रा द्रव्य अनंता कहा, ते द्रव्य तो सासता जाण जी ।
 भावे तो पुदगल असासतो, तिणरी बुधवंत करजो पिछाण जी ॥ ४४ ॥
 पुदगल रा द्रव्य अनंता कहा, ते घटे बवे नही एक जी ।
 घटे बवे ते भाव पुदगल, तिणरा छै भेद अनेक जी ॥ ४५ ॥
 तिणरा च्यार भेद जिणवर कहा, खंभ नें देस प्रदेश जी ।
 चौथो भेद न्यारो परमाणुओ, तिणरो छै ओहीज विंसेस जी ॥ ४६ ॥
 खंभ रे लागो त्यां लग परदेस छै, ते छूटने एकलो होय जी ।
 तिणनें कहीजे परमाणुओ, तिण मे फेर पड़यो नही कोय जी ॥ ४७ ॥
 परमाणु ने प्रदेश तुल छै, तिणरी संका मूल म आण जी ।
 आंगल रे असंख्यातमें भाग छै, तिणने ओलखो चतुर सुजाण जी ॥ ४८ ॥
 उतकष्टो खंभ पुदगल तणो, जब सम्पूर्ण लोक प्रमाण जी ।
 आंगुल रे भाग असंख्यातमें, जगन खंभ एतलो जाण जी ॥ ४९ ॥
 अनत प्रदेशीयो खंभ हुवे, एक प्रदेश क्षेत्र मे समय जी ।
 ते पुदगल फेल मोटो खंभ हुवे, ते सम्पूर्ण लोक रे मांय जी ॥ ५० ॥
 समवे पुदगल तीन लोक में, खाली ठोर जायगां नही काय जी ।
 ते आमां स्हामां फिर रह्या लोक में, एक ठाम रहे नही ताय जी ॥ ५१ ॥
 थित च्याल्ई भेदां तणी, जगन तो एक समो छै तांम जी ।
 उतकष्टी असंख्याता काल नी, ए भावे पुदगल तणा परिणाम जी ॥ ५२ ॥
 पुदगल नो सभाव छै एहवो, अनंता गले ने मिल जाय जी ।
 तिण सूं पुदगल रा भाव री, अनंती कही परजाय जी ॥ ५३ ॥
 जे जे वस्तु नीपजे पुदगल तणी, ते ते सगली विल्लाय जी ।
 त्याने भावे पुदगल जिणवर कहा, द्रव्य तो ज्यूं रा ज्यूं रहै ताय जी ॥ ५४ ॥
 आठ कर्म नें शरीर असासता, ए नीपना हूआ छै ताय जी ।
 तिण सूं भाव पुदगल कहा तेह ने, द्रव्य तो नीपजायो नही जाय जी ॥ ५५ ॥
 छाया तावड़ो प्रभा कांति छै, ए सगला भाव पुदगल जाण जी ।
 वले अंधारो ने उद्योत छै, ए पुदगल भाव पिछाण जी ॥ ५६ ॥
 हलको भारी सुहालो खरदरो, गोल वटादिक पांच संठांण जी ।
 षड़ा पड़हा ने वखादिक, ए सगला भावे पुदगल जाण जी ॥ ५७ ॥
 घरत गुलादिक दसूं विभो, भोजनादि सर्व वखाण जी ।
 वले सख विवध प्रकार ना, ए सगला भावे पुदगल जाण जी ॥ ५८ ॥
 सइकडां मण पुदगल बल गया, पिणद्रव्ये तो बल्यो नही असं मात जी ।
 ए भावे पुदगल उपनां हुंता, ते भावे पुदगल विणस जात जी ॥ ५९ ॥

सङ्कडां मण - पुद्गल उपनां, पिण द्रव्य तो नहीं उपनों लिंगार जी ।
 उपनां तेहीज विणससी, पिण द्रव्य नो नहीं विगाड़ जी ॥ ६० ॥
 द्रव्य तो कदेइ विणसे नहीं, तीनोंइ काल रे मांय जी ।
 उपजे ने विणसे ते भाव छै, ते पुद्गल री परजाय जी ॥ ६१ ॥
 पुद्गल नें कह्यो सासतो असासतो, द्रव नें भाव रे न्याय जी ।
 कह्यो छै उत्तराधेन छत्तीस में, तिण में संका म आंणजो कांय जी ॥ ६२ ॥
 अजीव द्रव्य ओलखायवा, जोड़ कीवी श्री दुवारा मजार जी ।
 संवत अठारे पचावनें, वैसाख विद पांचम बुधवार जी ॥ ६३ ॥



३: पुन पदारथ

ढाल : ३

ढुहा

पुन पदारथ छै तीसरो, तिणसूं सुख मानें संसार ।
काम भोग शबदादिक पामें तिण थकी, तिणने लोक जाणे श्रीकार ॥ १ ॥
पुन रा सुख छै पुदगल तणा, काम भोग शबदादिक जाण ।
ते मीठा लागे छै कर्म तणे वसे, ग्यांनी तो जाणे जेहर समान ॥ २ ॥
जेहर सरीर में त्यां लगे, मीठा लागे नीब पान ।
ज्युं कर्म उदय हुवे जीव रे जब, लागे भोग इमरत समान ॥ ३ ॥
पुन तणा सुख कारमा, तिण में कला म जांगी काय ।
मोह कर्म बस जीवड़ा, तिण सुख में रह्या लपटाय ॥ ४ ॥
पुन पदारथ तो सुभ कर्म छै, तिणरी मूल न करणी चाय ।
तिण नें जयातथ परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आशीये]

पुन तो पुदगल री परजाय छै, जीव रे आय लागे ताम रे लाल ।
ते जीव रे उदय आवे सुभ पणे, तिणसूं पुदगल रो पुन छै नाम रे लाल ॥
पुन पदारथ ओखलो ॥ १ ॥
च्यार कर्म ते एकंत पाप छै, च्यार कर्म छै पुन ने पाप हो लाल ।
पुन कर्म थी जीव ने, साता हुवे पिण न हुवे संताप हो लाल ॥ २ ॥
अनंता प्रदेस छै पुन तणा, ते जीव रे उदय हुवे आय हो लाल ।
अनंतो सुख करे जीव रे, तिणसूं पुन री अनती परजाय हो लाल ॥ ३ ॥
निरवद जोग वरते जब जीव रे, सुभ पणे लागे पुदगल ताम हो लाल ।
त्यां पुदगल तणा छै जू जूआ, गुण परिणामे त्यांरा नाम हो लाल ॥ ४ ॥

साता वेदनीय पणे परणम्यां,
 ते सुखसाता करे जीव ने,
 पुदगल परणम्यां सुभ आउखा पणे,
 जाणे जीविये पिण न मरजीये,
 केइ देवता नें केइ मिनख रो,
 जुगलीया तियंच रो आउखो,
 सुभ नाम पणे आए परणम्या,
 अनेक बाना सुध हुबे तेह सू,
 सुभ आउखा रा मिनख नें देवता,
 केइ जीव पचेन्द्रिय विसुध छै,
 पांच वरीर छै सुध निरमला,
 ते पामे शुभ नाम उदय हुआ,
 पेला संवयण ना रूडा हाड छै,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला वर्ण मिले जीव ने,
 ते पामे सुभ नाम उदे हुआ,
 भला भला मिले गंध जीव ने,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले रस जीव ने,
 ते पामे सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले फरस जीव ने,
 ते पामें सुभ नाम उदय थकी,
 तस रो दश को छै पुन उदे,
 त्याने जूआ जूआ कर वरणवू,
 *तस नाम शुभ कर्म उदय थकी,
 *बादर सुभ नाम कर्म उदय हुआं,
 *प्रतेक सुभ नाम उदें हुआं,
 *प्रज्यापता सुभ नाम थी,
 *सुभ थिर नाम कर्म उदे थकी,
 *सुभ नाम थी नाभमस्तक लगे,
 *सोभाग नाम सुभ कर्म थी,
 *सुस्वर सुभ नाम कर्म सुं,

साता पणे उदय आवे ताम हो लाल ।
 तिण सूं साता वेदनी दीयो नाम हो लाल ॥ ५ ॥
 घणो रहणो वाछै तिण ठाम हो लाल ।
 सुभ आउखो तिण रो नाम हो लाल ॥ ६ ॥
 सुभ आउखो पुन ताय हो लाल ।
 दीसे छै पुन रे मांय हो लाल ॥ ७ ॥
 ते उदय आवे जीव रे ताय हो लाल ।
 नाम कर्म कह्यो जिणराय हो लाल ॥ ८ ॥
 त्यारी गति ने आणपूर्वीं सुध हो लाल ।
 त्यारी जात पिण पुन विसुध हो लाल ॥ ९ ॥
 त्यारा निरमला तीन उपंग हो लाल ।
 सरीर ने उपंग सुचंग हो लाल ॥ १० ॥
 पहलो संठाण रूडे आकार हो लाल ।
 हाड ने आकार श्रीकार हो लाल ॥ ११ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १२ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १३ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १४ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १५ ॥
 सुभ नाम उदय सू जाण हो लाल ।
 निरणो कीजो चतुर सुजाण हो लाल ॥ १६ ॥
 तसपणो पामें जीव सोय हो लाल ।
 जीव चेतन बादर होय हो लाल ॥ १७ ॥
 प्रतेक सरीरी जीव थाय हो लाल ।
 प्रज्यापता होय जाय हो लाल ॥ १८ ॥
 सरीर ना अवयव दिढ थाय हो लाल ।
 अवयव रूडा हूवै ताय हो लाल ॥ १९ ॥
 सर्व लोक नें बलभ होय हो लाल ।
 सुस्वर कंठ मीठी हूवे सोय हो लाल ॥ २० ॥

१आदेज वचन सुभ करम थी,	तिणरो वचन मानें सहु कोय हो लाल ।
१०जस किती सुभ नाम उदे हूआं,	जस कीरत जग में होय हो लाल ॥ २१ ॥
अगुरलधू नाम कर्म सू,	सरीर हलको भारी नही ल्यात हो लाल ।
परघात सुभ नाम उदे थकी,	आप जीते पेलो पामें घात हो लाल ॥ २२ ॥
उसास सुभ नाम उदे थकी,	सास उसास सुखे लेवंत हो लाल ।
आताप सुभ नाम उदे थकी,	आप सीतल पेलो तपंत हो लाल ॥ २३ ॥
उद्योत सुभ नाम उदे थकी,	सरीर नो उजवालो जाण हो लाल ।
सुभ गइ सुभ नाम कर्म सू,	हंस ज्यूं चोखी चाल वखाण हो लाल ॥ २४ ॥
निरमाण सुभ नाम कर्म सू,	सरीर फोड़ा फूलंगणा रहीत हो लाल ।
तीर्थंकर नाम कर्म उदे हूआं,	तीर्थंकर हुवे तीन लोक वदीत हो लाल ॥ २५ ॥
केइ जगलीयादिक तिरयंच नी,	गति नें आणपूर्वी जाण हो लाल ।
ते तो प्रतक दीसे पुन तणी,	ग्यानी वदे ते परमाण हो लाल ॥ २६ ॥
पेहलो सघेण संठाण वरज ने,	च्यार सघेण संठाण हो लाल ।
त्यामें तो मेल दीसे छै पुन तणी,	ग्यानी वदे तो परमाण हो लाल ॥ २७ ॥
जे जे हाड छै पहिला सघेण में,	तिण माहिला च्यारां माय हो लाल ।
त्याने जाबक पाप में घालीया,	मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २८ ॥
जे जे आकार पहिला संठाण में,	तिण माहिला च्यारां मांय हो लाल ।
त्याने जाबक पाप में घालीया,	ओ पिण मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २९ ॥
उच गोत पणे आय परणम्या,	ते उदे आवे जीव रे तांम हो लाल ।
उंच पदवी पामें तिण थकी,	उंच गोत छै तिण रो नांम हो लाल ॥ ३० ॥
सगली न्यात थकी उंची न्यात छै,	तिणमें कठे न लागे छोट हो लाल ।
एहवा छै मिनष ने देवता,	त्यांरो कर्म छै उंच गोत हो लाल ॥ ३१ ॥
जे जे गुण आवे जीव रे सुभ पणे,	जेहवा छै जीव रा नाम हो लाल ।
तेहवाइज नाम पुदगल तणा,	जीव तणे संयोगे तांम हो लाल ॥ ३२ ॥
जीव सुघ हूओ पुदगल थकी,	तिण सूं रुडा रुडा पाया नांम हो लाल ।
जीव ने सुघ कीघो पुदगल,	त्यांरा पिण सुघ छै नाम तांम हो लाल ॥ ३३ ॥
ज्यां पुदगल रां प्रसंग थी,	जीव वाज्यो संसार में उंच हो लाल ।
ते पुदगल पिण उच वाजीया,	त्यांरो न्याय न जाणे भूंच हो लाल ॥ ३४ ॥
पदवी तियंकर ने चक्रवत तणी,	वासुदेव बलदेव महंत रे लाल ।
वले पदवी मडलीक राजा तणी,	सारी पुन थकी लहत रे लाल ॥ ३५ ॥
पदवी देविद्रो ने नरिद्र नी,	वले पदवी अहमिद्र वखाण हो लाल ।
इत्यादिक मोटी मोटी पदवीयां,	सहु पुन तणे परमाण हो लाल ॥ ३६ ॥

जे जे पुद्गल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जाण हो लाल ।
 त्यां सूं सुख उपजे संसार में, पुन रा फल एह पिच्छाण हो लाल ॥ ३७ ॥
 बाला विछड़ीया आए मिले, सेंणा तणो मिले संजोग हो लाल ।
 ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल ॥ ३८ ॥
 हाथी घोड़ा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आंण हो लाल ।
 रिख विरख ने सुख संपत्त मिलै, ते पुन तणे परिमाण हो लाल ॥ ३९ ॥
 खेतु^१ वत्थू^२ हिरण^३ सोवनादिक^४, धन^५ धान^६ ने कुत्रीं घात^७ हो लाल ।
 दोपद^८ चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल ॥ ४० ॥
 हीरा मांणक मोती मूगीया, वले रत्तां री जात अनेक हो लाल ।
 ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन बिना मिले नहीं एक हो लाल ॥ ४१ ॥
 गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपछर रे उणीधार हो लाल ।
 ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल ॥ ४२ ॥
 ते सुख पामें देवता तणा, ते तो पूरा कछ्या न जाय हो लाल ।
 पल सागरां ल्हा सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल ॥ ४३ ॥
 रूप सरीर नों सुन्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल ।
 ते गमतो लगे सर्व लोग ने, तिणरो बोल्यो गमे वास्वार हो लाल ॥ ४४ ॥
 जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जाण हो लाल ।
 ते कहि कहि नें कितरो कहुं, बुधवंत लीज्यो पिच्छाण हो लाल ॥ ४५ ॥
 ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, संसार लेखे श्रीकार हो लाल ।
 त्यांनैं मोख सुखां सूं मीढीये, तो ए सुख नहीं मूल लिंगार हो लाल ॥ ४६ ॥
 पुद्गलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल ।
 भातमीक सुख छै मुगत नां, त्यांने तो ओपमा नहीं काय हो लाल ॥ ४७ ॥
 पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लगे अतंत हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदे हूआं जीव नें, सबदादिक सर्व गमता लागंत हो लाल ॥ ४८ ॥
 सर्प डंक लगा जहर परगम्यां, मीठा लगे नीब पान हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लगे भोग परधान हो लाल ॥ ४९ ॥
 रोगीला सुख छे पुद्गल तणा, तिणमें कला म जाणो लिंगार हो लाल ।
 ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नहीं लगे बार हो लाल ॥ ५० ॥
 भातमीक सुख छै सासता, त्यां सुखां रो नहीं कोइ पार हो लाल ।
 ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल ॥ ५१ ॥
 पुन तणी वद्धा कीयां, लगे छै एकंत पाप हो लाल ।
 तिण् सूं दुःख पामें संसार में, वचतो जाये सोग संताप हो लाल ॥ ५२ ॥

जिणसूं पुन तणी वंछा करी, तिण वांछिया कांम नें भोग हो लाल ।
 त्यांने दुःख होसी नरक निगोद नां, वले वाला रा पइसी विजोग हो लाल ॥ ५३ ॥
 पुन तणा सुख अंसासता, ते पिण करणी विण नहीं थाय हो लाल ।
 निरवद करणी करे तेहने, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ॥ ५४ ॥
 पुन री वंछा सूं पुन न नीपजे, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ।
 ते तो लागे छै निरवद जोग सूं, निरजरा री करणी सूं ताय हो लाल ॥ ५५ ॥
 भली लेख्या ने भला परिणाम थी, निश्चेइ निरजरा थाय हो लाल ।
 जब पुन लागे छै जीव रे, सहजे सभावे ताय हो लाल ॥ ५६ ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी, पुन तणी मन में धार हो लाल ।
 ते तो करणी खोएनें बापडा, गया जमारो हार हो लाल ॥ ५७ ॥
 पुन तो चोफरसी कर्म छै, तिणरी वंछा करे ते मूढ हो लाल ।
 त्यां कर्म ने धर्म न ओलख्यो, करे करे मिथ्यात नी रूढ हो लाल ॥ ५८ ॥
 जे जे पुन थी वस्त मिले तके, त्यांने त्याग्यां निरजरा थाय हो लाल ।
 जो पुन भोगवे त्रिभी थको, तो चीकणा कर्म बंधाय हो लाल ॥ ५९ ॥
 जोड कीवी पुन ओलखायवा, श्रीजी दुवारा सहर मभार हो लाल ।
 संवत अठारे पचावने, जेठ विद नवमी सोमवार हो लाल ॥ ६० ॥

ढाल : ४

दुहा

नव प्रकारे पुन नीपजे, ते करणी निरवद जाण ।
 बयांलीस प्रकारे भोगवे, तिणरी बुववंत करजो पिछांग ॥ १ ॥
 पुन नीपजे तिण करणी मभे, तिहां निरजरा निश्चे जाण ।
 तिण करणी री छै जिण आगना, तिण मांहे संक म आंग ॥ २ ॥
 केई साध वाजे जैन रा, त्यां दीवी जिण मारग नें पूठ ।
 पुन कहे कुपातर ने दीयां, त्यांरी गई अभितर पूठ ॥ ३ ॥
 काचो पाणी अणगल पावे तेहनें, कहै छै पुन नें धर्म ।
 ते जिण मारग सू वेगला, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
 साध विना अनेरा सर्व ने, सचित अचित दीयां कहे पुन ।
 वले नांव लेवे ठाणा अंग रो, ते तो पाठे विना छै अर्थ सुन ॥ ५ ॥
 किणहीएक ठाणा अंग मभे, घाल्यो छै अर्थ विपरीत ।
 ते पिण सगला ठाणा अंग में नहीं, जोय करो तहलीक ॥ ६ ॥
 पुन नीपजे छै किण विवे, जोवो सूतर मांय ।
 श्री वीर जिणेसर भाषीयो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[राजा रामजी हो रेख छमासी...]

पुन नीपजे सुभ जोग सूं रे लाल, सुभ जोग जिण आगना मांय हो । भविकजण*
 ते करणी छै निरजरा तणी रे लाल, पुन सहिजां लगे छै आय हो ॥ भविकजण ।*
 पुन नीपजे सुभ जोग सं रे लाल ॥ १* ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी रे लाल, तिणारी आगना देवे जगनाथ हो ।
 तिण करणी करतां पुन नीपजे रे लाल, ज्युं झाखलो गोहां हुवे साथ हो ॥ २ ॥
 पुन नीपजे तिहां निरजरा हुवे रे लाल, ते करणी निरवद जांग हो ।
 सावद्य करणी में पुन नहीं नीपजे रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजाण हो ॥ ३ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बीलीयां रे लाल, साधु नें देवे असुघ आहार हो ।
 तिण सूं अल्प आउखो बंधे तेहनें रे लाल, ते आउखो पाप मभार हो ॥ ४ ॥
 लांबो आउषो बंधे तीन बोल सूं रे लाल, लांबो आउषो छै पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, बले बोले नहीं मूसावाय हो ॥ ५ ॥
 तथारूप श्रमण निग्रंथ नें रे लाल, देवे फासू निरदोष च्यांरु आहार हो ।
 यां तीनां बोलां पुन नीपजे रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मभार हो ॥ ६ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बोलीयां रे लाल, साधु नें हेले निदे ताय हो ।
 आहार अमनोग नें अपीयकारी दीये रे लाल, तो उसभ लांबो आउषो बंधाय हो ॥ ७ ॥
 सुभ लांबो आउषो बंधे इण विवे रे लाल, ते पिण आउषो पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीव री रे लाल, बले बोले नहीं मूसावाय हो ॥ ८ ॥
 तथारूप समण निग्रंथ ने रे लाल, करे वंदणा ने नमसकार हो ।
 पीतकारी वेहरावे च्यांरु आहार नें रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मभार हो ॥ ९ ॥
 एहीज पाठ भगोती सूतर मभे रे लाल, पांचमें सतक षष्ठप उदेश हो ।
 संका हुवे तो निरणे करो रे लाल, तिणमें कूड़ नहीं लबलेश हो ॥ १० ॥
 वंदणा करतां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत बंधे बले ताय हो ।
 ते वंदणा करण री जिण आगना रे लाल, उत्तरावेन गुणतीसमां मांय हो ॥ ११ ॥
 धर्म कथा कहै तेहनें रे लाल, बंधे किल्याणकारी कर्म हो ।
 उत्तरावेन गुणतीसमां अवेनमें रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 करे वीयावच तेहनें रे लाल, बंधे तीर्थकर नाम कर्म हो ।
 उत्तरावेन गुणतीसमां अवेन में रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १३ ॥
 बीसां बोलां करेनें जीवझे रे लाल, करमां री कोड़ खपाय हो ।
 जब बांधे तीर्थकर नाम कर्म नें रे लाल, गिनाता आठमा अवेन मांय हो ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी है । प्रत्येक गाथा के अन्त में इसकी पुनरावृत्ति सगभनी चाहिए ।

सुबाहू कुमर आदि दस जणा रे लाल, त्यां साधां नें असणाविक वेंहराय हो ।
 त्यां बांध्यो आउषो मिनख रो रे लाल, कस्यो विपाक सुतर रे मांय हो ॥ १५ ॥
 प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, दुःख न दे उपजावे सोग नांय हो ।
 अमूरणया नें अतीप्यणया रे लाल, अपिटृणया परिताप नहीं दे ताय हो ॥ १६ ॥
 ए छ प्रकारे बंधे साता वेदनी रे लाल, उल्टा कीषां असाता थाय हो ।
 भगोती सतबंध सातमें रे लाल, छठा उदेसा मांय हो ॥ १७ ॥
 करकस वेदनी बंधे जीवरे रे लाल, अठारे पाप सेव्यां बंधाय हो ।
 नही सेव्यां बंधे अकरकस वेदनी रे लाल, भगोती सातमां सतक छठा मांय हो ॥ १८ ॥
 कालोदाई पूछ्यो भगवांन नें रे लाल, सुतर भगोती मांहि ए रेस हो ।
 किल्याणकारी कर्म किण विध बंधे रे लाल, सातमें सतक दसमें उदेस हो ॥ १९ ॥
 अठारे पाप थांनक नही सेवीयां रे लाल, किल्यांण कारी कर्म बंधाय हो ।
 अठारे पाप थांनक सेवे तेह सूं रे लाल, बंधे अकिल्यांणकारी कर्म आय हो ॥ २० ॥
 प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, बहु सबदे च्याहूँद मांहि हो ।
 त्यांरी करे अणुकम्पा दया आणने रे लाल, दुःख सोग उपजावे नाहि हो ॥ २१ ॥
 अमूरणया ने अतीप्यणया रे लाल, अपिटृणया नें अपरिताप हो ।
 या चवदे सूं बंधे साता वेदनी रे लाल, यां उल्टा सूं बंधे असाता पाप हो ॥ २२ ॥
 माहा आरंभी ने माहा परिग्रही रे लाल, करे पंचिद्री नी धात हो ।
 मद मांस तणो भक्षण करे रे लाल, तिण पाप सूं नरक में जात हो ॥ २३ ॥
 माया कपट ने गूढ माया करे रे लाल, वले बोलै मूसावाय हो ।
 कूडा तोलां ने कूडा मापा करे रे लाल, तिण पाप सूं तिरजंच थाय हो ॥ २४ ॥
 प्रकत रो भद्रीक^१ नें वनीत^२ छै रे लाल, दया^३ नें अमच्छरभाव^४ जाण हो ।
 तिण सूं बंधे आउषो मिनख रो रे लाल, ते करणी निरवद पिछांण हो ॥ २५ ॥
^१पले सराग पणे साधुण्णी रे लाल, वले ^२श्रावक रा वरत वार हो ।
 बाल तपसा^३ नें अकामनिरजरा^४ रे लाल, यां सूं पामें सुर अवतार हो ॥ २६ ॥
 काया सरल^५ भाव सरल^६ सूं रे लाल, वले भाषा सरल^७ पिछांण हो ।
 जेहवो करे तेहवो मुख सूं कहे^८ रे लाल, यां सूं बंधे सुभ नाम कर्म जाण हो ॥ २७ ॥
 ए च्याहूँ बोल वांका वरतीयां रे लाल, बंधे उसभ नाम कर्म हो ।
 ते सावद्य करणी छै पापरी रे लाल, तिण में नही निरजरा धर्म हो ॥ २८ ॥
 जात^९ कुल^{१०} बल^{११} रूप^{१२} नो रे लाल, तप^{१३} लाम^{१४} सुतर^{१५} ठाकुराय^{१६} हो ।
 ए आठोई मद करे नही रे लाल, तिण सूं उंच गोत बंधाय हो ॥ २९ ॥
 ए आठोई मद करे तेहने रे लाल, बंधे नीच गोत कर्म हो ।
 ते सावद्य करणी पाप री रे लाल, तिण मे नहीं पुन धर्म हो ॥ ३० ॥

ग्यांनावर्णीं नें दरसणावर्णीं रे लाल,
 ये च्यारूई एकंत पाप कर्म छै रे लाल,
 वेदनी आउषो नाम गोत छै रे लाल,
 तिणमें पुन री करणी निरवद कही रे लाल,
 ए भगवती शतक आठ में रे लाल,
 पुन पाप तणी करणी तणो रे लाल,
 १ करणी करे नीहांगो नहीं करे रे लाल,
 २ समाध जोग वरते तेहनो रे लाल,
 ३ पांचूं इंद्री ने वश कीयां रे लाल,
 ४ अपासत्थपणो ग्यांनादिक तणो रे लाल,
 ५ हितकारी प्रवचन आठां तणो रे लाल,
 यां दसां बोलां बंधे जीवरे रे लाल,
 ते किल्याणकारी कर्म पुन छै रे लाल,
 ते ठाणा अंग दसमें ठाणे कह्यो रे लाल,
 अन पुने पांण पुने कह्यो रे लाल,
 मन पुने वचन काया पुने रे लाल,
 पुन्य बंधे नव प्रकार सूं रे लाल,
 ते नवोई बोलां में जिण आगना रे लाल,
 कोई कहै नवोई बोल समचे कह्यो रे लाल,
 सचित्त अचित्त पिण नही कह्यो रे लाल,
 तिण सूं सचित्त अचित्त दोनूं कह्यो रे लाल,
 पुन नीपजे दीषां सकल नें रे लाल,
 साव श्रावक पातर ने दीयां रे लाल,
 अनेरां ने दान दीषां थकां रे लाल,
 इम कहै नाम लेई ठाणा अंग नों रे लाल,
 ते अर्थ अणहंतो घालियो रे लाल,
 जो अनेरा ने दीयां पुन नीपजे रे लाल,
 कुपातर ने दीयां पुन किहां थकी रे लाल,
 पुन रा नव बोलतो समचे कह्यो रे लाल,
 ज्युं वंदणा वीयावच पिण समचे कही रे लाल,
 वंदणा कीषां खपावे नीच गोत ने रे लाल,
 तीथंकर गोत वंधे वीयावच कीयारे लाल,

वले मोहणी नें - अंतराय हो ।
 त्यांरी करणी नहीं आग्या मांय हो ॥ ३१ ॥
 ए च्यारूई कर्म पुन पाप हो ।
 तिणरी आग्या दे जिन आप हो ॥ ३२ ॥
 नवमां उदेसा मांय हो ।
 ते जाणे समदिष्टी न्याय हो ॥ ३३ ॥
 ३ चोखा परिणामां समकतवंत हो ।
 खिमा करी परीसह खमंत हो ॥ ३४ ॥
 ४ वले माया कपट रहीत हो ।
 ५ समणपणे छै सहीत हो ॥ ३५ ॥
 ६ धर्म कथा कहें विसतार हो ।
 किल्याणकारी कर्म श्रीकार हो ॥ ३६ ॥
 त्यांरी करणी पिण निरवद जाण हो ।
 तिहां जोय करो पिछांण हो ॥ ३७ ॥
 लेण सेण वद्ध पुन जाण हो ।
 नमसकार पुने नवमों पिछांण हो ॥ ३८ ॥
 ते नवोई निरवद जाण हो ।
 तिणरी करज्यो पिछांण हो ॥ ३९ ॥
 सावध निरवद न कह्यो तांम हो ।
 पातर कुपातर रो पिण नहीं नाम हो ॥ ४० ॥
 पातर कुपातर ने दीयां तांम हो ।
 ते भूट बोले सुतर रो ले ले नाम हो ॥ ४१ ॥
 तीथंकर नामादिक पुन थाय हो ।
 अनेरी पुन प्रवत्त बंधाय हो ॥ ४२ ॥
 नवमा ठाणा में अर्थ दिखाय हो ।
 ते भोलां ने खबर न काय हो ॥ ४३ ॥
 जब टलीयो नहीं जीव एक हो ।
 समभो आंण विवेक हो ॥ ४४ ॥
 उण ठमें तो नहीं छै नीकाल हो ।
 ते गुणवंत सूं लेजो संभाल हो ॥ ४५ ॥
 उंच गोत कर्म बंधाय हो ।
 ते पिण समचे कह्यो छै ताय हो ॥ ४६ ॥

तीर्थंकर गोट बघे वीस बोल सूं रे लाल, त्यामे पिण समचे बोल अनेक हो ।
समचे बोल घणा छै सिधंत में रे लाल, त्यामें कुण समचे विगार ववेक हो ॥ ४७ ॥
जो अन पुने समचे दीघां सकल ने रे लाल, ते नवोई समचे जाण हो ।
हुवे निरणी कर्हू छूं नवां ही तणीं रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजाण हो ॥ ४८ ॥
अन सचित्त अचित्त दीघां सकलने रे लाल, जो पुन नीपजे छै तांम हो ।
तो इमहीज पुन पांणी दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर पुन आंम हो ॥ ४९ ॥
इमहीज मन पुने समचे हुवे रे लाल, तो मन भूडोई वरत्यां पुन थाय हो ।
बले वचन पुने पिण समचे हुवे रे लाल, भूडो बोल्याई पुन बंधाय हो ॥ ५० ॥
काय पुने विण समचे हुवे रे लाल, तो काया सूं हिसा कीयां पुन होय हो ।
नमसकार पुने पिण समचे हुवे रे लाल, तो सकल ने नम्यां पुन जोय हो ॥ ५१ ॥
मन वचय काया माठा वरतीयां रे लाल, जो लागे छै एकंत पाप हो ।
तो नवोई बोल इम जाणजो रे लाल, उथप गई समचे री थाप हो ॥ ५२ ॥
मन वचन काया सूं पुन नीपजे रे लाल, ते निरवद वरत्यां होय हो ।
तो नवोई बोल इम जाण जो रे लाल, सावद्य मे पुन न कोय हो ॥ ५३ ॥
नमसकार अनेरा ने कीयां थका रे लाल, जो लागे छै एकत पाप हो ।
तो अनादिक सचित्त दीयां थकां रे लाल, कुण करसी पुन री थाप हो ॥ ५४ ॥
निरवद करणी में पुन नीपजे रे लाल, सावद्य करणी सूं लागे पाप हो ।
ते सावद्य निरवद किम जांणीये रे लाल, निरवद में आग्या दे जिण आप हो ॥ ५५ ॥
अन पांणी पातर ने बेंहरावीयां रे लाल, लेण सयण वस्त्र वेहराय हो ।
त्यारी श्री जिण देवे आगना रे लाल, तिण ठामें पुन बंधाय हो ॥ ५६ ॥
अन पाणी अनेरा नें दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर देवे ताय हो ।
त्यारी देवे नही जिण आगन्या रे लाल, तिणरे पुन किहां थी वधाय हो ॥ ५७ ॥
सुपातर ने दीया पुन नीपजे रे लाल, ते करणी जिण आगना माय हो ।
जो अनेरा नें दीयाई पुन नीपजे रे लाल, तिणरी जिण आगना नही काय हो ॥ ५८ ॥
ठाम र सुतर मे देखलो रे लाल, निरजर ने पुन री करणी एक हो ।
पुन हुवे तिहां निरजरा रे लाल, तिहां जिण आगना छै शेष हो ॥ ५९ ॥
नव प्रकारे पुन नीपजे रे लाल, ते भोगवे ब्यालीस प्रकार हो ।
ते पुन उदे हुवे जीवरे रे लाल, सुख साता पामें संसार हो ॥ ६० ॥
ए पुन तणा सुख कारिया रे लाल, ते विणसंतां नही वार हो ।
तिणरी वद्धा नही कीजीये रे लाल, ज्यूं पामे भव पार हो ॥ ६१ ॥
जिण पुन तणी वद्धा करी रे लाल, तिण वंछीया काम नें भोग हो ।
संसार वघे काम भोग सूं रे लाल, तिहां पामें जन्म मरण सोग हो ॥ ६२ ॥

वंछा कीजे एक मुगत री रे लाल, और वंछा न कीजे लिंगार हो ।
 जे पुन तणी वंछा करें रे लाल, ते गया जमारो हार हो ॥ ६३ ॥
 संवत अठारे तयांले समे रे लाल, काती सुद चोथ विसपतवार हो ।
 पुन नीपजे ते ओलखायवा रे लाल, जोड़ कीवी कोठाख्या मभार हो ॥ ६४ ॥



४ : पाप पदारथ

ढाल : ५

दुहा

पाप पदारथ पाडूओ, ते जीव ने घणो भयंकार ।
ते घोर रुद्र छै बीहांमणो, जीव ने दुःख नो दातार ॥ १ ॥
पाप तो पुदगल ब्रव्य छै, त्याने जीव लगाया ताम ।
तिण सूं दुःख उपजे छै जीव रे, त्यारो पाप कर्म छै नाम ॥ २ ॥
जीव खोटा २ किरतब करै, जब पुदगल लागे ताम ।
ते उदय आया दुख उपजे, ते आप कमाया काम ॥ ३ ॥
ते पाप उदय दुख उपजे, जब कोई म करजो रोस ।
आप कीघां जिसा फल भोगवे, कोई पुदगल रो नही देस ॥ ४ ॥
पाप कर्म ने करणी पाप री, दोनूं जूआ जूआ छै ताम ।
त्याने जथातथ परगट कहं, ते सुणजो राख चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुमर हाथी रा भव मे]

घणघातीया च्यार कर्म जिण भाष्या, ते आभपडल वादल ज्यूं जाणो ।
त्यां जीव तणा निज गुण ने विगरया, चंद वादल ज्यू जीव कर्म ढकाणो ॥
पाप कर्म अन्तकरण ओलखीजे* ॥ १ ॥
ग्यांनावर्णी ने दशर्णावर्णीय, मोहणी अन्तराय छै ताम ।
जीवरा जेहवा २ गुण विगख्या, तेहवा २ कर्मा रा नांम ॥ २ ॥
ग्यांनावर्णी कर्म ग्यान आवा न दे, दर्णावर्णी दर्शण आवे दे नाही ।
मोहकर्म जीव ने करे मतवालो, अंतराय आछी वस्तु आडी छै माही ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ए कर्म तो पृथग्ल हरी चोफरसी,
 त्यांरा उदा मू खोटा २ जीवरा नाम,
 यां ज्याहं कर्मा री जुदी २ प्रवृत्त,
 त्यां मू जूआ २ जीव रा गुण अट्क्या.
 ग्यांनावर्णी कर्म री प्रवृत्त पावे.
 मत्त ग्यांनावर्णी मत्त ग्यान रे आडी,
 अव्वि ग्यांनावर्णी अव्वि ग्यान ने रोके,
 केवल ग्यांनावर्णी केवल ग्यान रोके.
 ग्यांनावर्णी कर्म पयउपसन हुवै.
 केवल ग्यांनावर्णी तो खयोपसन न हुवै.
 दर्शगावर्णी कर्म री नव प्रवृत्त छै.
 जीवां नें जावक कर देवे आंवा,
 चपू दर्शगावर्णी कर्म उदे मू.
 अचमू दर्शगावर्णी कर्म रे जोगे,
 अव्वि दर्शगावर्णी कर्म उदे मू,
 केवल दर्शगावर्णी तणे परसन,
 निद्रा मुत्तो तो मुखे जगयो जगे,
 ईंठां उनां जीव नें नींद आवे,
 प्रचला २ नींद उदे मू जीव नें.
 पांचनी नींद छै कठन धीणोदी.
 पांच निद्रा नें च्यार दर्शगावर्णी थी,
 देहन आशी दर्शगावर्णी कर्म,
 दर्शगावर्णी कर्म पयउपसन हुवे जड,
 दर्शगावर्णी जावक पय होवे,
 तीजो घन घातिये मोह कर्म छै.
 मूवो श्रद्धा रे विपे मूह निव्याती,
 मोहणी कर्म तणा नेय नेह ज्हा जिन,
 इन जीव रा निज गुण देण विगाड्या,
 वले दंसण मोहणी उदे हुव जड,
 चारित मोहणी कर्म उदे हुवे जड,
 दर्शन मोहणी कर्म उदे मू,
 दर्शन मोहणी उपसन हुवे जड.

त्यांनो खोटी करणी करे जीव ल्गाया ।
 तेहवा इज खोटा नाम कर्म रा क्हाया ॥ ४ ॥
 जूआ २ छै त्यांरा नाम ।
 त्यांरो थोडो सो विस्तार कहुं छूं तांन ॥ ५ ॥
 तिण मू पांचोई ग्यान जीव न पावे ।
 सुरत ग्यांनावर्णी सुरत ग्यान न आवे ॥ ६ ॥
 मनपरज्यावर्णी मनपरज्या आडी ।
 यां पांचां में पांचनी प्रकत जाडी ॥ ७ ॥
 जड पानें छै च्यार ग्यान ।
 आ तो खय हुवां पामें केवल ग्यान ॥ ८ ॥
 ते देवना नें सुणवादिक् आडी ।
 त्नां में केवल दर्शगावर्णी समलां में जाडी ॥ ९ ॥
 जीव चपू रहीत हुवै अंभ अयांण ।
 ज्याहं इंद्रियां री पर जाये हांण ॥ १० ॥
 अव्वि दर्शन न पामें जीवो ।
 जजने नहीं केवल दरसन दीवो ॥ ११ ॥
 निद्रा २ उदे दुखे जगे छै तांम ।
 तिण नींद तणो छै प्रचला नाम ॥ १२ ॥
 हांत्तां चालतां नींद आवै ।
 तिण नींद मू जीव जावक दव जावे ॥ १३ ॥
 जीव अंभ हुवै जावक न सुभे ल्गारो ।
 जीव रे जावक कीयो अंभारो ॥ १४ ॥
 तीन पयउपनम दर्शन पामतो जीवो ।
 केवल दर्शन पामें च्यूं घट दीवो ॥ १५ ॥
 तिनरा उदा मू जीव होवै मतवालो ।
 मात्रा किरतव रो पिण न होवै टालो ॥ १६ ॥
 दर्शन मोहणी नें चारित मोहणी कर्म ।
 एक सनकत न दूजो चारित धर्म ॥ १७ ॥
 मूव सनकती जीव रो हुवे निव्याती ।
 चारित खोव नें हुवे छ काय रो घाती ॥ १८ ॥
 मुजी सरवा समकत नावे ।
 उपसन सनकत निरमली पावे ॥ १९ ॥

दर्शन मोहणी जाबक खय होवे, जब खायक समकत सासती पावे ।
दर्शन मोहणी षयउपसम हुवे जब, खयउपसम समकत जीव नें आवे ॥ २० ॥
चारित मोहणी कर्म उदे सू, सर्व विरत चारित नहीं आवे ।
चारित मोहणी उपसम हुवे जद, उपसम चारित निरमला पावे ॥ २१ ॥
चारित मोहणी जाबक खाय हुवे तो, खायक चारित आवे श्रीकार ।
चारित मोहणी खयोपसम हुवे जब, खयउपसम चारित पार्में च्यार ॥ २२ ॥
जीव तणा उदे भाव नीपनां, ते कर्म तणा उदा सूं पिछांणो ।
जीव रा उपसम भाव नीपनां, ते कर्म तणा उपसम सूं जाणो ॥ २३ ॥
जीव रा खायक भाव नीपनां, ते तो कर्म तणो खय हुवां सूं ताम ।
जीव रा खयोपसम भाव नीपनां, खयउपसम कर्म हुवां सूं नाम ॥ २४ ॥
जीव रा जेहवा २ भाव नीपनां, ते जेहवा २ छै जीव रा नाम ।
ते नाम पाया छै कर्म संजोग विजोगे, तेहवा इज कर्मां रा नाम छै तांम ॥ २५ ॥
चारित मोहणी तणी छै पचवीस प्रवृत्त, त्यां प्रकृत तणा छै जूआ जूआ नाम ।
त्यांरा उदा सूं जीव तणा नाम तेहवा, कर्म ने जीव रा जूआ जूआ परिणाम ॥ २६ ॥
जीव अतंत उतकष्टो क्रोध करे जब, जीवरा दुष्ट घणा परिणाम ।
तिणने अनुताणुबंधीयो क्रोध कह्यो जिण, ते कषाय आत्मा छै जीव रो नाम ॥ २७ ॥
जिणरा उदा सूं उतकष्टो क्रोध करे छै, ते उतकष्टा उदे आया छै तांम ।
ते उदे आया छै जीव रां संच्या, त्यांरो अणुताणवधी क्रोध छै नाम ॥ २८ ॥
तिण सु कायंक थोडो अप्रत्याखानी क्रोध, तिण सुं कायंक थोडो प्रत्याख्यान ।
तिण सुं कायंक थोडो छै संजल रो क्रोध, आ क्रोध री चोकडी कही भगवान ॥ २९ ॥
इण रीते मान री चोकडी कहणी, माया ने लोभ री चोकडी इन जाणो ।
च्यार चोकडी प्रसगे कर्मां रा नाम, कर्म प्रसगे जीव रा नाम पिछांणो ॥ ३० ॥
जीव क्रोध करें क्रोध री प्रकत सूं, मान करे मान री प्रकत सूं तांम ।
माया कपट करें छै माया री प्रकत सूं, लोभ करे छे लोभ री प्रकत सूं आंम ॥ ३१ ॥
क्रोध करें तिण सूं जीव क्रोधी कहायो, उदे आइ ते क्रोध री प्रकत कहाणी ।
इण हीज रीत मान माया ने लोभ, यानें पिण लीजो इण हीज रीत पिछांणी ॥ ३२ ॥
जीव हसे छै हास्य री प्रकत उदे सूं, रित अरितरी प्रकत सूं रित अरित वधावे ।
भय प्रकत उदे हूआं भय पार्में जीव, सोग प्रकत उदे जीव नें सोग आवे ॥ ३३ ॥
दुगंछा आवें दुगंछा प्रकत उदे सूं, अस्त्री वेद उदे सूं वेदे विकार ।
तिणने पुरष तणी अभिलाषा होवे, पछे वेंतो २ हुवे वोहत विगाइ ॥ ३४ ॥
पुरष वेद उदे अस्ती नी अभिलाषा, निपुंसक वेद उदे हुवे दोयां री चाय ।
करम उदे सूं सवेदी नाम कह्यो जिण, करमां ने पिण वेद कह्या जिण राय ॥ ३५ ॥

मिथ्यात उदे जीव हुवो मिथ्याती,
 इत्यादिक माठ २ छै जीव रा नाम,
 चोथो घनघातीयो अतराय करम छै,
 ते पाचूई प्रकत पुदगल चोफरसी,
 दानांतराय छै दान रे आडी,
 मन गमता पुदगल नां सुख जे,
 भोगांतराय नां करम उदे सूं,
 उवभोगांतराय करम उदे सूं,
 वीर्यअतराय रा करम उदे थी,
 उठाणादिक हीणा थावे पांचूई,
 अनंतो बल प्राकम जीव तणो छै,
 तिण करम नें जीव लग्गायां सू लागो,
 पांचू अन्तराय जीव तणा गुण दाब्या,
 ए तो जीव रे प्रसने नाम करम रा,
 ए तो च्यार घनघातीयाकरम कहुआ जिण,
 त्यामे पुन ने पाप दोनु कहुआ जिण,
 जीव असाता पावे पाप करम उदे सूं,
 जीव रा सचीया जीव ने दुःख देवै,
 नारकी रो आजखो पाप री प्रकत,
 असनी मिनख ने केई सनी मिनख रो,
 ज्यांरो आजखो पाप कह्यो छै जिणेसर,
 गति अणुपूर्वी दीसे आजखा लारे,
 च्यार सघेयण मे हाड पाडूआ छै,
 च्यार संठाण मे आकार भुडा ते,
 वर्ण गध रस फरस माठ मिलीया,
 ते पिण उसम नाम करम उदे सूं,
 सरीर उपंग बंधण ने संघातण,
 ते पिण उसम नाम करम उदे सूं,
 थावर नाम उदे छै थावर रो दस को,
 नाम करम उदे छै जीव रा नाम,
 १ थावर नाम करम उदे जीव थावर हूओ,
 २ सूक्ष्म नाम उदे जीव सूक्ष्म हूओ छै,

चारित मोह उदे जीव हुवो कुकरमी ।
 वले अनार्य हिंसाधर्मी ॥ ३६ ॥
 तिणरी प्रकत पांच कही जिण तांम ।
 त्यांरी प्रकत रा छै जूजुआ नांम ॥ ३७ ॥
 लाभान्तराय सूं वस्त लाभ सके नांही ।
 लाभ न सके सब्दादिक कांई ॥ ३८ ॥
 भोग मिलीया से भोग भोगवणी नावे ।
 उवभोग मिलीया तो वे ही भोगवणी नहीं आवें ॥ ३९ ॥
 तीनूई वीर्य गुण हीणा थावे ।
 जीव तणी सक्त जाबक घट जावे ॥ ४० ॥
 तिणनें एक अतराय करम सूं घटायो ।
 आप तणो कीयो आप रे उदे आयो ॥ ४१ ॥
 जेहवा गुण दाब्या छै तेहवा करमा रा नांम ।
 पिण सभाव देयां रो जूजुओ तांम ॥ ४२ ॥
 हिवे अघातीया करम छै च्यार ।
 हिवे पाप तणो कहु छूं विसतार ॥ ४३ ॥
 तिण पाप रो असाता वेदनी नाम ।
 असाता वेदनी पुदगल परिणाम ॥ ४४ ॥
 केइ तिर्यंच रो आजखो पिण पाप ।
 पाप री प्रकत दीसे छै विलाप ॥ ४५ ॥
 त्यारी गति अणुपूर्वी पिण दीसे छै पाप ।
 इणरो निश्चो तो जाणे जिणेसर आप ॥ ४६ ॥
 ते उसम नाम करम उदे सूं जाणों ।
 उसम नाम करम सू मिलीया छै आंणो ॥ ४७ ॥
 ते अण गमता नें अतंत अजोग ।
 एहवा पुदगल दुःखकारी मिले छै संजोग ॥ ४८ ॥
 त्यां में केकारे माठ २ अतंत अजोग ।
 अणगमता पुदगल रो मिले छै संजोग ॥ ४९ ॥
 तिण दसका रा दस बोल पिछांणो ।
 एहवा इज नाम करमा रा जाणों ॥ ५० ॥
 तिण सूं आघो पाछो सरकणी नावे ।
 सूक्ष्म सरीर सगला नान्ही पावें ॥ ५१ ॥

३साधारण नामं सूं जीव साधारण हूओ,	एकण सरीर में अनंता रहे तांम ।
४अप्रज्यासा नामं सू अप्रज्यासो मरे छे,	तिण सूं अप्रज्यासो छे जीव रो नामं ॥ ५२ ॥
५अथिर नामं सू तो जीव अथिर कहाणो,	सरीर अथिर जाक्क ढीलौ पावे ।
६दुभ नाम उदे जीव दुभ कहाणो,	नाम नीचलो सरीर पाडूओ थावे ॥ ५३ ॥
७दुभग नाम थकी जीव हुवे दोभागी,	अण गमतो लागे न गमे लोकां ने लिंगार ।
८दुःस्वर नाम थकी जीव हुवे दुस्वरीयो,	तिणरो कंठ उसम नही श्रीकार ॥ ५४ ॥
९अणादेज नाम करम रा उदा थी,	तिणरो वचन कोइ न करे अगीकार ।
१०अजस नाम थकी जीव हुआ अजसीयो,	तिणरो अजस बोले लोक वाखंवार ॥ ५५ ॥
११अपचात नाम करम रा उदे थी,	पेलो जीते ने आप पामें घात ।
१२दुभ गइ नामं करम संजोगे,	तिणरी चाल किण ही ने दीठी न सुहात ॥ ५६ ॥
१३नीच गोत उदे नीच हुवो लोकां में,	उच गोत तणा तिणरी गिणे छे छोट ।
नीच गोत थकी जीव हर्ष न पामें,	पोता रो संचीयो उदे आयो नीच गोत ॥ ५७ ॥
पाप तणी प्रकत ओलखावण काजे,	जोड कीधी श्री द्रुवारा सहर मभार ।
संवत अठारे पचावने वरत्ते,	जेठ सुद तीज नें बृहस्पतिवार ॥ ५८ ॥



५ : आश्रव पदार्थ

ढाल : ६

दुहा

आश्रव पदार्थ पाचमां, निगने कहीजे आश्रव दुवार ।
 ने कर्म आवाग छें वाग्णा, ने वाग्णा नें कर्म न्यार ॥ १ ॥
 आश्रव दुवार नां जीव छें, जीव ग भला भंडा परिणाम ।
 भला परिणाम पुन ग वाग्णा, भंडा पाप तणा छें ताम ॥ २ ॥
 केद्र मूढ मिथ्यानी जीवडा, आश्रव नें कहे छें अजीव ।
 त्यां जीव अजीव न ओल्ख्या, न्यारे मंटी मिथ्यात री नीव ॥ ३ ॥
 आश्रव नां निचेंड जीव छें, श्री वीर गया छें भाख ।
 ठाम २ सिद्धांत मे भाषायो, ने मुणजो सूतर नी साख ॥ ४ ॥
 द्विजें पाप आवा ना वाग्णा, पंढरी कच्छ छूं ताम ।
 ने जयातय परगट कन्हं, ते मुणो गखे चित ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[विना रा भाव सुण.]

ठांगा अंग सूतर रे मभार, कह्या छे पांच आश्रव दुवार ।
 ने दुवार छें माहा विक्रम, त्यां में पाप आवे दगचाल ॥ १ ॥
 मिथ्यात इविरत नें कर्माय, परमाद जांग छे ताय ।
 ए पांचूई आश्रव दुवार छे ताम, निचें जीव तणा परिणाम ॥ २ ॥
 उंबो सरखें ते आश्रव मिथ्यात, उंबो सरखें जीव साख्यात ।
 तिण आश्रव नां खंघण हारो, ते समकित संवर दुवारी ॥ ३ ॥
 अत्याग भाव इविरत छें ठाम, जीव तणा माछा परिणाम ।
 तिण इविरत ने देवे निवार, ते अत छे संवर दुवार ॥ ४ ॥
 नही त्याग्या छें प्यां दरवां री, आसा वांछा लो रही ज्यांरी ।
 ते इविरत जीव रा परिणाम, तिण ने त्याग्यां हुवे संवर आम ॥ ५ ॥
 आश्रव छे ताम, ए पिण जीव रा मेला परिणाम ।
 आश्रव रुवाय, जब अपरमाद संवर थाय ॥ ६ ॥

कषाय आश्रव छे आंम, जीव रा कषाय परिणाम ।
 तिण सू पाप लागे छें आय, ते अकषाय सू मिट जाय ॥ ७ ॥
 सावद्य निरवद जोग व्यापार, ए पाचूई आश्रव दुवार ।
 रूधे भला भूडा परिणाम, अजोग सवर तिणरो नाम ॥ ८ ॥
 ए पांचूई आश्रव उघाड़ा दुवार, करम आवे या दुवार मभार ।
 दुवार तो जीव ना परिणाम, त्यां सू करम लागे छें तांम ॥ ९ ॥
 यांरा ढाकणा संवर दुवार, आश्रव दुवार ना रूधणहार ।
 नवा करम ना रोकणहार, ए पिण जीव रा गुण श्रीकार ॥ १० ॥
 इमहिज कह्यो चोथा अंग मभारो, पाच आश्रव ने सवर दुवारो ।
 आश्रव करमां रो करता उपाय, करम आश्रव सू लागे छे आय ॥ ११ ॥
 उतरावेन गुणतीसमा माह्यो, पडिकमणां रो फल बतायो ।
 व्रतां रा छिद्र ढकायो, वले आश्रव दुवार रूधायो ॥ १२ ॥
 उतरावेन गुणतीसमा माह्यो, पचक्खाण रो फल बतायो ।
 पचलांग सू आश्रव रूधायो, आवता करम ते मिट जायो ॥ १३ ॥
 उतरावेन तीसमां रे मांह्यो, जलना आगम रूधायो ।
 जब पाणी आवतो मिट जावे, ज्यू आश्रव रूध्या करम नावे ॥ १४ ॥
 उतरावेन उगणीसमां माह्यो, गाठ दुवार ढक्या कहा ताह्यो ।
 करम आवा ना ठाम मिटायो, जब पाप न लागे आयो ॥ १५ ॥
 ढांकीया कहा आश्रव दुवार, जब पाप न बघे लिंगार ।
 कह्यो छे दशवीकालिक मभार, तीजा अघेन में आश्रव दुवार ॥ १६ ॥
 रूधे पाचूई आश्रव दुवार, ते भीषू मोटां अणगार ।
 ते तो दसवीकालिक मभार, तिहां जेय करो निस्तार ॥ १७ ॥
 पेहला मनजोग रूधे ते सुध, पछे वचन काय जोग रूध ।
 उतरावेन गुणतीसमा माहि, आश्रव रूधणा चाल्या छे ताहि ॥ १८ ॥
 पांच कहा छे अघर्म दुवार, ते तो प्रश्नव्याकरण मभार ।
 वले पांच कहा संवर दुवार, या दोया रो घणो विसतार ॥ १९ ॥
 ठाणा अग पाचमा ठाणा माहि, आश्रव पडिकमणो ताहि ।
 पडिकम्यां पाछ्यो रूधाए दुवार, फेर पाप न लागे लिंगार ॥ २० ॥
 फूटी नाव रो दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवत ।
 भगोती तीजा सतक मभार, तीजे उदेसे छें विसतार ॥ २१ ॥
 वले फूटी नावा रे दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवंत ।
 भगोती पेहला सतक मभार, छट्टे उदेसे छें विसतार ॥ २२ ॥

ए तो कच्चा छें आश्रव दुवार, बले अनेक छें सूतर मभार ।
 ते पूरा केम कहिवाय, सगला रो एकज न्याय ॥ २२ ॥
 आश्रव दुवार कच्चा ठाम ठाम, ते तो जीव तणा परिणाम ।
 त्यांनै अजीव वहे मिथ्याती, लोटी सग्धा तणा पक्वपाती ॥ २४ ॥
 करमां नें ग्रहे ते जीव दरव, ग्रहे तेहीज छे आश्रव ।
 ते जीव तणा परिणाम, त्यां सूं करम लागे छें ताम ॥ २५ ॥
 जीव नें पुद्गल रो मेल, तीज दरव तणो नही मेल ।
 जीव लगावे जांप जांग, जब पुद्गल लागे छे आंग ॥ २६ ॥
 तेहिज पुद्गल छें पुन पाप, त्यारो करता छै जीव आप ।
 करता तेहिज आश्रव जांपों, तिण में संका मूल म आंगो ॥ २७ ॥
 जीव छें करमा रो करता, सूतर में पाठ अपरता ।
 कह्यो पेंहला अंग मन्तारो, जीव करमां रो करतारो ॥ २८ ॥
 ते पेंहला इज उदेसो संभालो, ए तो करता कह्यो त्रिहूं कालो ।
 जीव सत्न नों इषकार, तीग करणे कह्यो करतार ॥ २९ ॥
 करता तेहिज आश्रव ताम, जीव रा भला भूंडा परिणाम ।
 परिणाम ते आश्रव दुवार, ते जीव तणो व्यापार ॥ ३० ॥
 करता करणी हेतु नें उपाय, ए करमां रा करता कहाय ।
 यां सूं करम लागे छें जाय, त्यांनै आश्रव कच्चा जिण राय ॥ ३१ ॥
 सावत्र करणी सूं पाप लागे, तिण सूं दुख भोगवसी आगे ।
 सावत्र करणी नें कहें अजीव, ते तो निवचें मिथ्याती जीव ॥ ३२ ॥
 जोग सावत्र निरवद चाल्या, त्यांनै जीव दरव में घाल्या ।
 जोग आतना वही छै ताम, जोग नें कच्चा जीव परिणाम ॥ ३३ ॥
 जोग छें ते जीव व्यापार, जोग छें तेहिज आश्रव दुवार ।
 आश्रव तेहिज जीव निसंक, तिण में मूल म जांगो संक ॥ ३४ ॥
 लेत्या भली ने भूडी चाली, त्यांनै पिण जीव दरव में चाली ।
 लेत्या उदे भाव जीव ताम, लेत्या ते जीव परिणाम ॥ ३५ ॥
 लेत्या करमां सूं आतम लेस, ते तो जीव तणा परदेस ।
 ते निण आश्रव जीव निसंक, त्यांरा थानक कच्चा असंत ॥ ३६ ॥
 मिथ्यात इविरत ने कपाय, उदे भाव छे जीव रा ताय ।
 कपाय आत्मा वही छै ताम, यांनै कच्चा छें जीव परिणाम ॥ ३७ ॥
 ए पांचूं छे आश्रव दुवार, छें करन तणा करतार ।
 ए पांचूं छें जीव साख्यात, तिण में संका नहीं तिलमात । ३८ ॥

आश्रव जीव तणा परिणाम, नवमें ठणे कह्यो छे आंम ।
 जीव रा परिणाम छे जीव, त्याने विकल कहे छे अजीव ॥ ३६ ॥
 नवमें ठणे ठणा अग माहि, आश्रव करम ग्रहे छे ताहि ।
 करम ग्रहे ते आश्रव जीव, ग्रहीया आवे ते पुदगल अजीव ॥ ४० ॥
 ठांणा अंग दसमें ठणे, दस बोल उंवा कुण जाणे ।
 उंवा जाणे तेहिज मिथ्यात, तेहिज आश्रव जीव साख्यात ॥ ४१ ॥
 पांच आश्रव नें इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणाम ।
 माठी लेस्या तो जीव छे ताय, तिगरा लषण अजीव किम थाय ॥ ४२ ॥
 जीव ने लषण सूं पिछांणो, जीव रा लषण जीव जांणो ।
 जीव रा लषण ने अजीव थापे, ते तो वीर ना वचन उथापे ॥ ४३ ॥
 च्यार सगन्या कही ङिणराय, ते पिण पाप तणा छे उपाय ।
 पाप रो उपाय ते आश्रव, ते आश्रव जीव दरब ॥ ४४ ॥
 भला ने भूंडा अघवसाय, त्याने आश्रव कह्या जिनराय ।
 भला सूं तो लागे छे पुन, भूडा सूं लागे पाप गांबून ॥ ४५ ॥
 आरत ने छ्द्र ध्यान, त्याने आश्रव कह्या भगवान ।
 आश्रव पाप तणा छे दुवार, दुवार तेहिज जीव व्यापार ॥ ४६ ॥
 पुन ने पाप आवाना दुवार, ते करम तणा करतार ।
 करमा रो करता आश्रव जीव, तिण ने कहे अग्यानी अजीव ॥ ४७ ॥
 जे आश्रव ने अजीव गाणे, ते पीपल बावी मूरख ज्यू ताणे ।
 करम लगावे ते आश्रव, ते निरचेई जीव दरब ॥ ४८ ॥
 आश्रव ने कह्यो रुचाणो, आ जिनजी रा मुख री वाणो ।
 ओ कीसो दरब हंघाणो, कीसो दरब थिर थपाणो ॥ ४९ ॥
 विपरीत तत्व गुण जाणे, कुण माडे उलटी ताणे ।
 कुण हिंसादिक रो अत्यागी, कुण रे वछा रहे लागी ॥ ५० ॥
 सबदादिक कुण अभिलाखे, कषाय भाव कुण राखे ।
 कुण मन जोग रो व्यापारो, कुण चिन्तवे म्हारों थारो ॥ ५१ ॥
 इंद्रा ने कुण मोकली मेले, सबदादिक ने कुण मेले ।
 इण नें मोकली मेले ते आश्रव, तेहिं छे जीव दरब ॥ ५२ ॥
 मुख सूं कुण भूंडो बोले, काया सूं कुण माठे डेले ।
 ए जीव दरब नो व्यापार, पुदगल पिण वरते छे लार ॥ ५३ ॥
 जीव रा चलाचल परदेस, त्यां ने थिर थापे दिढ करेस ।
 जब आश्रव दरब हंघाणो, तब तेहिज संवर थपाणो ॥ ५४ ॥

चलचल जीव परदेस, सारा परदेसा करम प्रवेस ।
 सारा परदेसां करम ग्रहता, सारा परदेसां करमा रा करता ॥ ५५ ॥
 त्यां परदेसा रो थिर करणहार, तेहिज संवर दुवार ।
 अथिर परदेस ते आश्रव, ते निरुचेई जीव दरब ॥ ५६ ॥
 जोग परिणामीक ने उदे भाव, त्याने जीव कह्या इण न्याव ।
 अजीव तो उदे भाव नाही, ते देख लो सूतर माही ॥ ५७ ॥
 पुन निरवद जोगा सू लागे छे आय, ते करणी निरजरा री छे ताय ।
 पुन सहजां लागे छे आय, तिण सू जोग छे आश्रव मांय ॥ ५८ ॥
 जे जे ससार ना छे काम, त्यारा किण २ रा कर्हू नांम ।
 ते सगला छे आश्रव तांम, ते सगला छें जीव परिणांम ॥ ५९ ॥
 करमां ने लगावे तो आश्रव, तेहिज छे आश्रव जीव दरब ।
 लागे ते पुदगल अजीव, लगावे ते निरुचेई जीव ॥ ६० ॥
 करमा रो करता जीव दरब, करतापणो तेहिज आश्रव ।
 कीधा हुआ ते करम कहिवाय, ते तो पुदगल लागे छे आय ॥ ६१ ॥
 ज्यारे गूढ मिथ्यात अचारो, ते नही पिच्छाणे आश्रव दुवारो ।
 त्याने सबली तो मूल न सूभे, दिन २ इवक अलूभे ॥ ६२ ॥
 जीव रे करम आडा छे आठ, ते लग रह्या पाटानेपाट ।
 ज्यामे घातीया करम छे च्यार, मोक्ष मारग रोकणहार ॥ ६३ ॥
 और करमां सू जीव ढंकाय, मोह करम थकी विगडाय ।
 विगड्यो करे सावद्य व्यापार, तेहिज आश्रव दुवार ॥ ६४ ॥
 चारित मोह उदे मतवालो, तिण सू सावद्य रो न हुवे टालो ।
 सावद्य रो सेवण हारो, तेहिज आश्रव दुवारो ॥ ६५ ॥
 दंसण मोह उदे सरघे उबी, हाथे मारग न आवे सुवो ।
 उबी सरधा रो सरदणहारो, ते मिथ्यात आश्रव दुवारो ॥ ६६ ॥
 मूढ कहे आश्रव ने रूपी, वीर कह्यो आश्रव ने अरूपी ।
 सूतरां मे कह्यो ठाम २, आश्रव ने अरूपी ताम ॥ ६७ ॥
 पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणांम ।
 माठी लेस्या अरूपी छें ताय, तिणरा लषण रूपी किम थाय ॥ ६८ ॥
 उजला ने मेल कह्या जोग, मोह करम सजोग विजोग ।
 उजला जोग मेल थाय, करम भरियां उजल होय जाय ॥ ६९ ॥
 उत्तरावेन गुणतीसमां माय, जोग सचे कहुँ जिनराय ।
 जोग सचे निरदोष में चाल्या, त्यां ने सावां रा गुण माहे घाल्या ॥ ७० ॥

साधां रा गुण छें सुध मान, त्यांनै अरूपी कह्या भगवान ।
 त्यां जोग आश्रव ने रूपी थाप्या, त्यां वीर नां वचन उथाप्या ॥ ७१ ॥
 ठाणा अग तीना ठाणा मभार, जोग वीर्य रो व्यापार ।
 तिण सूं अरूपी छै भाव जोग, रूपी सरघे ते सरघा अजोग ॥ ७२ ॥
 जोग आतमा जीव अरूपी, त्यां जोगा ने मूढ कहे रूपी ।
 जोग जीव तणा परिणाम, ते निश्चे अरूपी छें तांम ॥ ७३ ॥
 आश्रव जीव सरधावण ताय, जोड कीधी छे पाली मांय ।
 संवत अठारे पंचावना मभार, आसोज सुद वारस रिववार ॥ ७४ ॥

ढाल : ७

दुहा

आश्रव करम आवानां वारणा, त्यांनै विकल कहे छें करम ।
 करम दुवार ने करम एकहिज कहे, ते भूला अग्यांनी भरम ॥ १ ॥
 करम ने आश्रव छे जूजूआ, जूजूआ छें त्यारो सभाव ।
 करम नें आश्रव एकहिज कहे, तिणरो मूढ न जाणें न्याव ॥ २ ॥
 वले आश्रव ने रूपी कहे, आश्रव ने कहे करम दुवार ।
 दुवार ने दुवार में आवे तेहने, एक कहे छें मूढ गिवार ॥ ३ ॥
 तीन जोगा ने रूपी कहे, त्यांनै इज कहे आश्रव दुवार ।
 वले तीन जोगा ने कहे करम छे, ओ पिण विकलां रे नही छे विचार ॥ ४ ॥
 आश्रव नां वीस भेद छे, ते जीव तणी पर्याय ।
 करम तणा कारण कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखी]

मिथ्यात आश्रव ती उवो सरघे ते, उवो सरघे ते जीव साख्यातो रे ।
 तिण मिथ्यात आश्रव ने अजीव सरघे छे, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यातो रे ॥
 आश्रव ने अजीव कहे ते अग्यांनी ॥ १ ॥
 जे जे सावद्य कामां नही त्याग्या छे, त्यांरी आसा वछा रही लागी रे ।
 ते जीव तणा परिणाम छे मेल, अत्याग भाव छे इवितत साणी रे ॥ २ ॥
 परमाद आश्रव जीव नां परिणाम मेल, तिण सूं लागे निरंतर पापो रे ।
 तिणने अजीव कहे छे मूढ मिथ्याती, तिण रे छोटी सरघा री थापो रे ॥ ३ ॥
 कषाय आश्रव ने जीव कहां जिणिसर, कषाय आतमा कही छें तांमो रे ।
 कषाय करवारो सभाव जीव तणो छें, कषाय छे जीव परिणामो रे ॥ ४ ॥

जोग आश्रम नें जीव कहीं जिणैसर, जोग आतमा कहीं छे तांमो रे ।
 तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छै, जोग छे जीव रा परिणामो रे ॥ ५ ॥
 जीवरी हिंसा करें ते आश्रव, हिंसा करे ते जीव साख्यातो रे ।
 हिंसा करे ते परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे ॥ ६ ॥
 भूठ बोले ते आश्रव कहीं छे, भूठ बोले ते जीव साख्यातो रे ।
 भूठ बोलण रा परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे ॥ ७ ॥
 चोरी करें ते आश्रव कह्यो जिणैसर, चोरी करें ते जीव साख्यातो रे ।
 चोरी करवा रा परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे ॥ ८ ॥
 मैथुन सेवे ते आश्रव चोथो, मैथुन सेवे ते जीवो रे ।
 मैथुन परिणाम तो जीव तणा छे, तिण सूं लगे छें पाप अतीवो रे ॥ ९ ॥
 परिग्रह राखे ते पांचमों आश्रव, परिग्रह राखे ते पिण जीवो रे ।
 जीव रा परिणाम छें मूर्छा परिग्रह, तिण सूं लगे छे पाप अतीवो रे ॥ १० ॥
 पांच इंद्रयां ने मोकली मेले ते आश्रव, मोकली मेले ते जीव जाणों रे ।
 राग बेष आवें सब्दादिक उपर, यानें जीव रा भाव पिछाणो रे ॥ ११ ॥
 सुरत इंद्रो तो सब्द सुणे छे, चषु इंद्रो रूप ले देखो रे ।
 घाण इंद्रो गन्ध ने भोगवे छे, रस इंद्रो रस स्वादे बसोपो रे ॥ १२ ॥
 फरस इंद्रो तो फरस भोगवे छें, पांचूं इंद्रयां नों एह सभावो रे ।
 यां सूं राग नें बेष करे ते आश्रव, तिण नें जीव कहीजे इण न्यावो रे ॥ १३ ॥
 तीन जोगां ने मोकला मेले ते आश्रव, मोकला मेले ते जीवो रे ।
 त्याने अजीव कहे ते मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट मे तही ग्यान रो दीवो रे ॥ १४ ॥
 तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छे, ते जोग छे जीव परिणामो रे ।
 माळ जोग छे माठी लेस्या रा लषण, जोग आतमा कही छें तांमो रे ॥ १५ ॥
 भड उपरण सू कोई करे अजेणा, तेहिज आश्रव जाणो रे ।
 ते आश्रव सभाव तो जीव तणो छे, रुडी रीत पिछाणो रे ॥ १६ ॥
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव, सुची कुसग सेवे ते जीवो रे ।
 सुची-कुसग सेवे तिणने अजीव कहें, त्यांरे उंडी मिथ्यात री नीवो रे ॥ १७ ॥
 दरब जोगा ने हपी कह्या छे, ते तो भाव जोग रे छें लारो रे ।
 दरब जोगां सू तो करम न लागे, भाव जोग छे आश्रव दुवारो रे ॥ १८ ॥
 आश्रव ने करम कहे छें अग्यानी, तिण लेखे पिण उंची दरसी रे ।
 आठ करमां नें तो चौफरसी कहे छे, काया जोग तो छे अठफरसी रे ॥ १९ ॥
 आश्रव ने करम कहे त्यारी सरषा, उठी जठ थो मूठी रे ।
 त्यांरा बोल्या री ठीक पिण त्याने नाही, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे ॥ २० ॥

वीस आश्रव मे सोले एकत सावद्य, ते पाप तणा छे दुवारो रे।
 ते जीव रा किरतब माठा ने खोटा, पाप तणा करतारो रे ॥ २१ ॥
 मन वचन काया रा जोग व्यापार, वले समचें जोग व्यापारो रे।
 ए च्याहंइ आश्रव सावद्य निरवद, पुन पाप तणा छें दुवारो रे ॥ २२ ॥
 मिथ्यात इविरत नें परमाद, कषाय नें जोग व्यापारो रे।
 ए करम तणा करता जीव रे छें, ए पांचूइ आश्रव दुवारो रे ॥ २३ ॥
 यामें च्यार आश्रव सभावीक उदारा, जोग में पनरे आश्रव समाया रे।
 जोग किरतब नें सभावीक पिण छे, तिण सूं जोग में पनरेंइ आया रे ॥ २४ ॥
 हिंसा करे ते जोग आश्रव छें, भूठ बोलें ते जोग छे ताह्यो रे।
 चोरी सूं लेइ सुची कुसग सेवे ते, पनरेंइ आया जोग माह्यो रे ॥ २५ ॥
 करमां रो करता तो जीव दरब छे, कीवा हुवा ते करमो रे।
 करम ने करता एक सरबे ते, भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ २६ ॥
 अठारे पाप ठांणा अजीव चोफरसी, ते उदे आवे तिण वारो रे।
 जब जूजूआ किरतब करे अठारो, ते अठारेंइ आश्रव दुवारो रे ॥ २७ ॥
 उदे आया ते तो मोह करम छे, ते तो पाप रा ठांणा अठारो रे।
 त्यांरा उदा सूं अठारेंइ किरतब करे छें, ते जीव तणो छें व्यापारो रे ॥ २८ ॥
 उदे नें किरतब जूआजूआ छे, आ तो सरघा सूची रे।
 उदे नें किरतब एकज सरबे, अकल तिणांरी उंची रे ॥ २९ ॥
 प्राणातपात जीव री हिंसा करे ते, प्राणातपात आश्रव जाणों रे।
 उदे हुवो ते प्राणातपात ठांणो छे, त्यांने रूडी रीत पिछांणो रे ॥ ३० ॥
 भूठ बोले ते मिरषावाद आश्रव छे, उदे छें ते मिरषावाद ठाणो रे।
 भूठ बोलें ते जीव उदे हुवा करम, यां देयां नें जूआजूआ जाणो रे ॥ ३१ ॥
 चोरी करे ते अदत्तादान आश्रव छे, उदे ते अदत्तादान ठांणो रे।
 ते उदे आयां जीव चोरी करे छें, ते तो जीव रा लपण जाणो रे ॥ ३२ ॥
 मैथुन सेवे ते मैथुन आश्रव, ते जीव तणा परणांमो रे।
 उदे हूओ ते मैथुन पाप थानक छें, मोह करम अजीव छे तांमो रे ॥ ३३ ॥
 सचित्त अचित्त मिश्र उपर, ममता राखे ते परिग्रह जाणो रे।
 ते ममता छे मोह करम रा उदा सूं, उदे में छे ते पाप ठांणो रे ॥ ३४ ॥
 क्रोध सूं लेइ ने मिथ्यात दरसन, उदे हूआ ते पाप रो ठांणो रे।
 यांरा उदा सूं सावद्य कामा करे ते, जीवरा लपण जाणो रे ॥ ३५ ॥
 सावद्य कामां ते जीव रा किरतब, उदे हूआ ते पाप करमो रे।
 यां दोयां ने कौइ एकज सरबे, ते भूला अग्यांनी भरमो रे ॥ ३६ ॥

आथव तो करम आवानां दुवार, ते तो जीव तणा परिणामो रे ।
 दुवार माहें आवे ते आठ करम छें, ते पुदगल दरु छें तांमो रे ॥ ३७ ॥
 माठा परिणाम ने माठी लेस्या, वले माठा जोग व्यापारो रे ।
 माठा अववसाय नें माठो ध्यान, ए पाप आवानां दुवारो रे ॥ ३८ ॥
 भला परिणाम नें भली लेस्या, भला निरवद जोग व्यापारो रे ।
 भला अववसाय नें भलोइ ध्यान, ए पुन आवा रा दुवारो रे ॥ ३९ ॥
 भला भूडा परिणाम भली भूडी लेस्या, भला भूडा जोग छें तांमो रे ।
 भला भूडा अववसाय भला भूडा ध्यान, ए जीव तणा परिणामो रे ॥ ४० ॥
 भला भूडा भाव जीव तणा छें, भूडा पाप रा वारणा जाणो रे ।
 भला भाव तो छें संवर निरजरा, पुन सहजे लागे छें आणो रे ॥ ४१ ॥
 निरजरा री निरवद करणी करतां, करम तणो खय जाणो रे ।
 जीव तणा परदेस चले छें, त्यां तूं पुन लागे छें आणो रे ॥ ४२ ॥
 निरजरा री करणी करे तिण काले, जीव रा चालें सर्व परदेसो रे ।
 जव महचर नाम करम मूं उदे भाव, तिण मूं पुन तणो पग्वेसो रे ॥ ४३ ॥
 मन वचन काया ग जोग तीनूंड, पसत्य नें अपसत्य चाल्या रे ।
 अपसत्य जोग तो पाप नां दुवार, पसत्य निरजरा री करणी में चाल्या रे ॥ ४४ ॥
 अपसत्य दुवार नें खंभणा चाल्या, पसत्य उदीरणा चाल्या रे ।
 खंभतां नें उदीरतां निरजरा री करणी, पुन लागे तिण सूं आथव में चाल्या रे ॥ ४५ ॥
 पसत्य नें अपसत्य जोग तीनूंड, त्यांरा वामठ भेद छें ताह्यो रे ।
 ते सावद्य निरवद जीव री करणी, मूतर उवाइ रे माह्यो रे ॥ ४६ ॥
 जिण कहां सतरे भेद असंयम, असंजम ते डविरत जाणो रे ।
 डविरत ते आसा वंछा जीव तणी छें, तिणनें वुडी रीत पिछाणो रे ॥ ४७ ॥
 माठा २ किरतव नें माठी २ करणी, सर्व जीव व्यापारो रे ।
 वले जिण आज्ञा वाग्ला सर्व कामां, ए सगल छें आथव दुवारो रे ॥ ४८ ॥
 मोह करम उदे जीव रे व्याग संजा, ते तो पाप करम ग्रहे तांमो रे ।
 पाप करम ग्रहे ते आथव, ते तो लपण जीव रा जाणो रे ॥ ४९ ॥
 उठांण कम वल वीर्य पुरपाकार प्राकम, यांरा सावद्य जोग व्यापारो रे ।
 तिण सूं पाप करम जीव रे लागे छें, ते जीव छें आथव दुवारो रे ॥ ५० ॥
 उठांण कम वल वीर्य पुरपाकार प्राकम, यांरा निरवद किरतव व्यापारो रे ।
 त्यांसूं पुन करम जीव रे लागे छें, ते पिण जीव छें आथव दुवारो रे ॥ ५१ ॥
 संजती असंजती नें संजतासंजती, ते तो संवर आथव दुवारो रे ।
 ते मंवर नें आथव देनूंड, तिण में संका नहीं छें निगारो रे ॥ ५२ ॥

इम विरती अविरती नें विरताविरती, इम पचखांणी पिण जांणो रे ।
 इम पिंडीया बाला नें बालापिंडीया, जागरा सुत्ता एम पिच्छांणो रे ॥ ५३ ॥
 वले संबूडा असंबूडा ने संबूडासंबूडा, धमीया धमठी तांमो रे ।
 धम्मवचसाइया इमहिज जांणो, तीन तीन बोल छें तांमो रे ॥ ५४ ॥
 ए सगला बोल छें संवर नें आश्रव, त्यानें रुडी रीत पिच्छांणो रे ।
 कोइ आश्रव ने अजीव कहे छें, ते पूरा छे मूढ अयांणो रे ॥ ५५ ॥
 आश्रव घटीयां संवर ववे छे, संवर घटीयां आश्रव वधांणो रे ।
 किसो दरब घटीयो ने वधीयो, इणने रुडी रीत पिच्छांणो रे ॥ ५६ ॥
 इविरत उदे भाव घटीयां सू, विरत वधें छें षयत्तपसम भावो रे ।
 ए जीव तणा भाव वधीयां नें घटीया, आश्रव जीव कह्यो इण न्यावो रे ॥ ५७ ॥
 सतरे भेद असजम ते इविरत आश्रव, ते आश्रव ने निश्चे जीव जांणो रे ।
 सतरे भेद संजम ने सवर कह्यो जिण, ए तो जीव रा लषण पिच्छांणो रे ॥ ५८ ॥
 आश्रव नें जीव सरचावण काजे, जोड कीधी पाली ममारो रे ।
 संवत अठारे वरस पचावने, आसीज सुद चवदस मंगलवारो रे ॥ ५९ ॥



६ : संवर पदारथ

ढाल : ८

दुहा

छटो पदारथ संवर कह्यो, तिणरा थिरी भूत परदेस ।
 आश्रव दुवार नों रूंचणो, तिणसूं मिटीयो करमां रो परवेस ॥ १ ॥
 आश्रव दुवार करमां रा वारणा, ढंकीयां छें संवर दुवार ।
 आतमा वश कीयां सवर हूओ, ते गुण रतन श्रीकार ॥ २ ॥
 संवर पदारथ ओलख्यां विना, संवर न नीपजे कोय ।
 संका कोइ मत राखजो, सूतर साह्यो जोय ॥ ३ ॥
 सवर तणा भेद पांच छे, त्यां पांचां रा भेद अनेक ।
 त्यारा भाव भेद परगट कहं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[पूजजी पधारे हो नगरी]

नव ही पदारथ सरखे यथातथ, तिणने कहिजे समकत निधान हो । भविक जण ।
 पछे त्याग करे उंधा सरखण तणा, ते समकत संवर परघान हो । भविक जण ।
 त्याग कीयां सर्व सावद्य जोग रा, संवर पदारथ भवीयण ओलखो* ॥ १ ॥
 आगार नहीं त्यारे पाप करण तणो, जावजीव तणा पचखाण हो ।
 पाप उदे सूं जीव परमादी थयो, ते सर्व विरत संवर जाण हो ॥ २ ॥
 ते पाप खय हूआं के उपसम हूआं, तिण पाप सूं परमादी थाय हो ।
 कपाय करम उदे छे जीव रे, अपरमाद संवर हुवें ताय हो ॥ ३ ॥
 ते कपाय करम अलग्गा हुवां जीव रे, तिणसूं कषाय आश्रव छें ताम हो ।
 थोड़ा थोड़ा सा जोगां ने रूंचीयां, जव अकषाय संवर हुवें आम हो ॥ ४ ॥
 मन वचन काया रा जोग रूंचे सरवथा, अजोग संवर नहीं थाय हो ।
 सावद्य माठा जोग रूच्यां सरवथा, ते अजोग संवर हुवें ताय हो ॥ ५ ॥
 पिण निरवद जोग वाकी रह्या तेहने, जव तो सर्व विरत संवर होय हो ।
 परमाद आश्रव ने कपाय जोग आश्रव, तिणसूं अजोग संवर नहीं कोय हो ॥ ६ ॥
 ए तो सहजांड मिटे छे करम अलग्गा हुवां, ए तो न मिटे कीयां पचखाण हो ।
 सुभ ध्यान ने लेस्यासू करम कटियां थकां, तिणरी अंतरंग करजो पिछाण हो ॥ ७ ॥
 इमहिज करतां अकषाय संवर हुवे, जव अपरमाद संवर थाय हो ।
 इम अजोग संवर होय जाय हो ॥ ८ ॥

* यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

समकित संवर ने सर्व विरत संवर,
 अपरमाद अकषाय अजोग संवर हुवें,
 हिंसा भूठ चोर मैथुन परिग्रहो,
 ए पांचू आश्रव ने त्यागे दीयां,
 पांचू इंदर्यां नें मेले मोकली,
 इंदर्यां ने मोकली मेलवारा त्याग छें,
 भला भंडा किरतब तीनुई जोगां तणा,
 त्या तीनुई जोगां नें जाबक रुधियां,
 अजेंणा करें मंडउपगरण थकी,
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव कह्यो,
 हिंसादिक पनरे जोग आश्रव कहां,
 त्यां पनरां ने माठा जोग माहे गिण्या,
 तीनुई निरवद जोग रुंध्यां थकां,
 ए बीसूई संवर तणों विवरो कह्यो,
 कोइ कहे कषाय ने जोगा तणा,
 त्याने पचख्यां विनां संवर किण विध होसी,
 पचखाण चाल्यो छें सूतर में सरीर नो,
 इम हिज कषाय ने जोग पचखाण छे,
 सामायक आदि पांचू चारित भणी,
 पुलाग आदि दे छहूई नियंठा,
 चारितावर्णी षयउपसम हूयां,
 जब काम ने भोग थकी विरक्त हुवे,
 सर्व सावद्य जोग ने त्यागे सरवया,
 जब इविरत रा पाप न लागे सरवथा,
 धूर सूं तो सामायक चारित आदर्यो,
 ते करम उदे सूं किरतब नीपजे,
 भला ध्यान नें भली लेस्या थकी,
 जब उदे तणा किरतब पिण हलका पडें,
 मोह करम जाबक उपसम हुवें,
 जब जीव हुवें सीतलमूत निरमलो,
 मोहणीय करम नें जाबक खय हुवां,
 जब सीतलमूत हूओ जीव निरमलो,

ए तो हुवें छें कीयां पचखाण हो ।
 ते तो करम खय हूयां जाण हो ॥ ६ ॥
 ए तो जोग आश्रव में समाय हो ।
 जब विरत संवर हुवे ताय हो ॥ १० ॥
 त्याने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 ते पिण विरत संवर ल्यो पिछाण हो ॥ ११ ॥
 ते तो जोग आश्रव छें ताम हो ।
 आजोग संवर हुवे आम हो ॥ १२ ॥
 तिणने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 त्याने त्याग्यां विरत संवर पिछाण हो ॥ १३ ॥
 त्याने त्याग्यां विरत संवर जाण हो ।
 निरवद जोगां री करजो पिछाण हो ॥ १४ ॥
 अजोग संवर होय जात हो ।
 ते बीसूई पाच संवर में समात हो ॥ १५ ॥
 सूतर माहे चाल्या पचखाण हो ।
 हिवे तिणरी कहुं छू पिछाण हो ॥ १६ ॥
 ते सरीर सू न्यारो हुवा ताम हो ।
 सरीर पचखाण ज्यूं आम हो ॥ १७ ॥
 सर्व वरत संवर जाण हो ।
 ए पिण लीज्यो संवर पिछाण हो ॥ १८ ॥
 जब जीव नें आवे बेराग हो ।
 जब सर्व सावद्य दे त्याग हो ॥ १९ ॥
 ते सर्व वरत संवर जाण हो ।
 ते तो चारित छे गुण खाण हो ॥ २० ॥
 तिणरे मोह करम उदे रह्यो ताय हो ।
 तिण सूं पाप लागें छे आय हो ॥ २१ ॥
 मोह करम उदे थो घट जाय हो ।
 जब हलकाइ पाप लाग्य हो ॥ २२ ॥
 जब उपसम चारित हुवें ताय हो ।
 तिणरे पाप न लागे आय हो ॥ २३ ॥
 खायक चारित हुवे जथाख्यात हो ।
 तिणरे पाप न लागें अंसमात हो ॥ २४ ॥

सामायक चारित लीये छे- उदीर नें, उपसम चारित आवें मोह उपसम्यां, खायक चारित आवें मोह करम नें खय कीयां, ते आवें सुकल ब्यांन घ्यायां थकां, चारितावर्णी षयउपसम हुवां, ते उपसम हूआं उपसम चारित हुवें, चारित निज गुण जीव रा जिण कह्यां, ते मोहणी करम अलगो हूआं परगट्या, चारितावर्णी ते मोहणी करम छे, तिणरा उदे सूं निज गुण विगड्या, तिण करम रा अनंत परदेस अलगा हूआ, जब सावद्य जोग नें पचख्या छे सरवथा, जीव उजलो हुबो ते तो हुइ निरजरा, नवा पाप न लागे विरत सवर थकी, जिम २ मोहणी करम पतलो पडे, द्रम करता मोहनी करम खय जाए सरवथा, जगन सामायक चारित तेहना, अनंता करम परदेस उदे था ते मिट गया, जघन्य सामायक चारितीया तणा, बले अनंता परदेस उदे थी मिट गया, मोह करम घटे छे उदे थी इण विवे, तिण सू सामायक चारित नां कह्यां, अनत करम परदेस उदे थी मिट गया, चारित गुण पजवा अनंता नीपजे, जगन सामायक चारित जेहना, तिण थी उत्कष्टा सामायक चारित तणा, पजवा उत्कष्टा सामायक चारित तणा, अनंत गुणां कह्यां छे जिगन चारित तणा, छटा गुण ठांणा थकी नवमा लगे, तिणरा असंख्यात थानक पजवा अनंत छे, सुषम संपराय चारित तेहनां, एक २ थानक रा पजवा अनंत छे,

सावद्य जोग रा करें पचखांण हो ।
 ते चारित इग्यारमे गुणठांण हो ॥ २५ ॥
 पिण नावें कीयां पचखांण हो ।
 चारित छेहले तीन गुण ठांण हो ॥ २६ ॥
 षयउपसम चारित आवें निघान हो ।
 खय हूआं खायक चारित परधान हो ॥ २७ ॥
 ते जीव सूं न्यारा नहीं थाय हो ।
 त्यां गुणां सूं हुवा मनीराय हो ॥ २८ ॥
 तिणरा अनंत परदेस हो ।
 तिणसूं जीव ने अतंत कलेस हो ॥ २९ ॥
 जब अनंत गुण उजलो थाय हो ।
 ते सर्व विरत संवर छे ताय हो ॥ ३० ॥
 विरत संवर सूं स्कीया पाप करम हो ।
 एहवो छे चारित धर्म हो ॥ ३१ ॥
 तिम २ जीव उजलो थाय हो ।
 जब जथाख्यात चारित होय जाय हो ॥ ३२ ॥
 अनता गुण पजवा जाण हो ।
 तिण सूं अनंत गुण परगट्या आंण हो ॥ ३३ ॥
 अनंत गुण उजला परदेस हो ।
 जब अनंत गुण उजलो वशेष हो ॥ ३४ ॥
 ते तो घटे छें असंखेज्ज बार हो ।
 असंख्यात थानक श्रीकार हो ॥ ३५ ॥
 चारित थानक नीपजे एक हो ।
 सामायक चारित रा भेद अनेक हो ॥ ३६ ॥
 पजवा अनंता जांण हो ।
 पजवा अनंत गुणां ब्रखांण हो ॥ ३७ ॥
 तेह थी सुषम संपराय ना बोख हो ।
 ए सुषम संपराय लो पेख हो ॥ ३८ ॥
 सामायक चारित जांण हो ।
 सुषम संपराय दसमों गुण ठांण हो ॥ ३९ ॥
 थानक असंखेज जांण हो ।
 तिणने सामायक ज्यू लीज्यो पिंछाण हो ॥ ४० ॥

मुष्म संपराय चारितीया रे सेष उदे रह्या,
 ते अनंत परदेस खब्थां निरजर हृइ,
 जब जथाख्यात चारित परगट हुवो,
 मुष्म संपराय रा उतकष्टा पजवा थकी,
 जथाख्यात चारित उजल हूओ सरवथा,
 अनंता पजवा तिण थानक तणा,
 मोह करम परदेस अनंता उदे हुवें,
 अनंता अलगा हूआं अनंत गुण परगटे,
 ते निज गुण जीव रा ते तो भाव जीव छें,
 ते तो करम खय हूआं सूं नीपनां,
 सावद्य जोगां रा त्याग करें ने रुंधीया,
 निरवद जोग रुंध्यां संवर हुवें,
 निरवद जोग मन वचन काया तणा,
 सरवथा घटीयां अजोग संवर हुवें,
 साधु तो उपवास बेलादिक तप करें,
 जब संवर सहचर साधु रे नीपजें,
 श्रावक उवास बेलादिक तप करें,
 जब विरत संवर पिण सहचर नीपनीं,
 श्रावक जे जे पुद्गल भोगवे,
 त्यारो त्याग कीयां थी विरत संवर हुवें,
 साधु कल्पे ते पुद्गल भोगवे,
 त्यांनं त्याग्या सूं तपसा नीपनी,
 साधु रें हालवो चालवो बोलवो,
 निरवद जोग रुंध्यां जितलो संवर हुवो,
 श्रावक रे हालवो चालवो बोलवो,
 सावद्य रा त्याग सूं विरत संवर हुवें,
 चारित ने तो विरत संवर कह्यो,
 अजोग संवर सुभ जोग रुंध्यां हुवें,
 संवर निज गुण निश्चेंइ जीव रा,
 जिण दरब नें भाव जीव नही ओलख्या,
 संवर पदार्थ नें ओलखायवा,
 समत अठारे वरसे छपनें,

मोह करम रा अनंत परदेस हो ।
 बाकी उदे नही रह्यो लवलेस हो ॥ ४१ ॥
 तिण चारित रा पजवा अनंत हो ।
 अनंत गुणां कहां भगवंत हो ॥ ४२ ॥
 तिण चारित रो थानक एक हो ।
 ते थानक छें उतकष्टो वखेख हो ॥ ४३ ॥
 ते तो पुद्गल री पर्याय हो ।
 ते निज गुण जीव रा छें ताय हो ॥ ४४ ॥
 ते निज गुण छें बंदणीक हो ।
 भाव जीव कहा त्यांनं ठीक हो ॥ ४५ ॥
 तिण सूं विरत संवर हुवो जाण हो ।
 तिणरी करजो पिछाण हो ॥ ४६ ॥
 ते घटीयां संवर थाय हो ।
 तिणरी विच सुणो चित्त ल्याय हो ॥ ४७ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 निरवद जोग रुंध्यां सूं ताम हो ॥ ४८ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 सावद्य जोग रुंध्यां सूं ताम हो ॥ ४९ ॥
 ते सावद्य जोग व्यापार हो ।
 तप पिण नीपजें लार हो ॥ ५० ॥
 ते निरवद जोग व्यापार हो ।
 जोग रुंध्यां रो संवर श्रीकार हो ॥ ५१ ॥
 ते तो निरवद जोग व्यापार हो ।
 तपसा पिण नीपजे श्रीकार हो ॥ ५२ ॥
 सावद्य निरवद व्यापार हो ।
 निरवद त्याग्यां सूं संवर श्रीकार हो ॥ ५३ ॥
 ते तो इविरत त्याग्यां होय हो ।
 तिण माहें संक न कोय हो ॥ ५४ ॥
 तिणनें भाव जीव कह्यो जगनाथ हो ।
 तिणरो घट सूं न गयो मिथ्यात हो ॥ ५५ ॥
 जोइ कीधी नाथ दुवारा मझार हो ।
 फागुण विद तेरस युक्त्वार हो ॥ ५६ ॥

७ : निरजरा पदारथ

ढाल : ९

दुहा

निरजरा पदार्थ सातमों, ते तो उजल वसत अनूप ।
ते निज गुण जीव चेतन तणो, ते सुणजो घर चूप ॥ १ ॥

ढाल

[धन्य धन्य णंबू स्वाम नें]

आठ करम छें जीव रे अनाद रा, त्यांरी उतपत आर्ख्व दुवार हो ।
ते उदे थइ नें पछे निरजरे, बले उपजे निरंतर लार हो ॥
निरजरा पदार्थ ओलखो ॥ १ ॥

दरब जीव छें तेहनें, असंख्याता परदेस हो ।
सारां परदेसां आश्रव दुवार छें सारां परदेसां करम परवेस हो ॥ २ ॥
एक एक परदेस तेहनें, समें २ करम लागंत हो ।
ते परदेस एकीका करम नां, समें समें लागे अनंत हो ॥ ३ ॥
ते करम उदे थइ जीव रे, समें २ अनंता भइ जाय हो ।
भरीया नींगल जूं करम मिटें नहीं, करम मिटवा रो न जाणें उपाय हो ॥ ४ ॥
आठ करमां में च्यार घण घातीया, त्यांसू चेतन गुणां री हुइ घात हो ।
ते अंसमात्र षय उपसमा रहे सदा, तिण सूं उजलो रहें अंसमात हो ॥ ५ ॥
कायक छन घातीया षयउपसम हूआं, जब कोयक उदे रह्या लार हो ।
षय उपसम थी जीव उजलो हुवो, उदे थी उजलो नहीं छे लिंगार हो ॥ ६ ॥
कार्यक करम खय हुवे, कार्यक उपसम हुवें ताथ हो ।
ते षय उपसम भाव छे उजलो, चेतन गुण पर्याय हो ॥ ७ ॥
जिम २ करम षय उपसम हुवे, तिम २ जीव उजल हुवें आम हो ।
जीव उजलो तेहिज निरजरा, ते भाव जीव छें तांम हो ॥ ८ ॥
देस थकी जीव उजलो हुवे, तिणने निरजरा कही भगवानं हो ।
सर्व उजल ते मोष छें, ते मोष छे परम निघानं हो ॥ ९ ॥
ग्यांनावरणी षय उपसम हूआं नीपजे, च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन हो ।
भणवो आचारंग आदि दे, चददे पूर्व रो ग्यांन हो ॥ १० ॥
ग्यांनावरणी री पांच प्रकत मभे, दोय षयउपसम रहें छे सदीव हो ।
तिण सूं दोय अग्यांन रहे सदा, अंस मात्र उजल रहे जीव हो ॥ ११ ॥

मिथ्याती रे तो जगन दोग अग्यांन छें, उतकष्टा तीन अग्यांन हो ।
 देस उणों दस पूर्व उतकष्टो भणे, इतरो उतकष्टो षयउपसम अग्यांन हो ॥ १२ ॥
 समदिष्टी रे जगन दोग ग्यांन छें, उतकष्टा च्यार ग्यांन हो ।
 उतकष्टो चवदें पूर्व भणें, एहवो षयउपसम भाव निघांन हो ॥ १३ ॥
 मत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, नीयजें मत ग्यान मत अग्यांन हो ।
 सुरत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआ, नीपजे सुरत ग्यान अग्यान हो ॥ १४ ॥
 वले भणवो आचारग आदि दे, समदिष्टी रे चवदें पूर्व ग्यांन हो ।
 मिथ्याती उतकष्टो भणे, देस उणो देस पूर्व लग जाण हो ॥ १५ ॥
 अवधि ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, समदिष्टी पामें अवघ ग्यांन हो ।
 मिथ्या दिष्टी ने विभंग नाण उपजे, पयउपसम परमाणं जांण हो ॥ १६ ॥
 मनपजवावर्णी षयउपसम्यां, उपजें मनपजवा नांण हो ।
 ते साधु समदिष्टी ने उपजे, एहवो षयउपसम भाव परघांन हो ॥ १७ ॥
 ग्यांन अग्यांन सागार उपीयोग छें, दोगा रो एक सभाव हो ।
 करम अलगा हूआं नीपजें, ए षयउपसम उजल भाव हो ॥ १८ ॥
 दरसणावर्णी षयउपसम हूआं, आठ बोल नीपजे श्रीकार हो ।
 पांच इंद्री नें तीन दरसण हुवे, ते निरजरा उजला तंत सार हो ॥ १९ ॥
 दरसणावर्णी रे नव प्रकत मभे, एक प्रकत षयउपसम सदीव हो ।
 तिण सू अचषू दरसण ने फरस इदरी रहे, षयउपसम भाव जीव हो ॥ २० ॥
 चषू दरसणावर्णी पयउपसम हूआ, चषू दरसण ने चषू इंद्री होय हो ।
 करम अलगा हूआं उजलो हूओ, जब देखवा लागो सोय हो ॥ २१ ॥
 अचषू दरसणावर्णी वशेष थी, षयउपसम हुवें तिण वार हो ।
 चषू टाले सेष इंद्री, षयउपसम हुवे इंद्री च्यार हो ॥ २२ ॥
 अवधि दरसणावर्णी षयउपसम हूआं, उपजें अवधि दरसण वशेष हो ।
 जब उतकष्टो देखे जीव एतलो, सर्व रूपी पुदगल ले देख हो ॥ २३ ॥
 पांच इंद्री ने तीनू इ दरसण, ते षयउपसम उपीयोग अणाकार हो ।
 ते वानगी केवल दरसण माहिली, तिणमें संका म राखो लिंगार हो ॥ २४ ॥
 मोह करम षयउपसम हूआं, नीपजे आठ बोल अमाम हो ।
 च्यार चारित ने देस विरत नीपजें, तीन दिष्टी उजल होय तांम हो ॥ २५ ॥
 चारित मोहं रे पचीस प्रकत मभे, केह सदा षयउपसम रहे ताय हो ।
 तिण सू अंस मात उजलो रहे, जब भला वरते छे अववसाय हो ॥ २६ ॥
 कदे षयउपसम इधकी हूवें, जब इधका गुण हुवें तिण मांय हो ।
 विमा दया संतोषादिक गुण वधे, भली लेख्यादि वरतें जब आय हो ॥ २७ ॥
 ६

भला परिणाम पिण वरते तेहनें, भला जोग पिण वरते ताय हो ।
 धर्म ध्यान पिण ध्यावे किण समे, ध्यावणी आवें मिटीयां कषाय हो ॥ २८ ॥
 ध्यान परिणाम जोग लेस्या भला, बले भला वरते अघवसाय हो ।
 सारा वरते अंतराय षयउपसम हूआं, मोह करम अलगा हूआं ताय हो ॥ २९ ॥
 चोकड़ी अंताणुबंधी आदि दे, घणीं प्रकृत्यां षयउपसम हुवें ताय हो ।
 जब जीव रे देस विरत नीपजे, इणहीज विघ च्यारुं चारित आय हो ॥ ३० ॥
 मोहणी षयउपसम हूआं नीपनों, देस विरत नें चारित च्यार हो ।
 बले षिमा दयादिक गुण नीपनां, सगलाइ गुण श्रीकार हो ॥ ३१ ॥
 देस विरत नें च्यारुं ई चरित भला, ते गुण रतनां री खान हो ।
 ते खायक चरित री वानगी, एहवो षयउपसम भाव परधान हो ॥ ३२ ॥
 चारित नें विरत संवर कह्यो, तिण सूं पाप रूबें छें ताय हो ।
 पिण पाप भरी नें उजल हूओं, तिणनें निरजरा कही इण न्याय हो ॥ ३३ ॥
 दरसन मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें साची सुव सरधान हो ।
 तीनुं दिष्ट में सुव सरधान छें, ते तो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३४ ॥
 मिथ्यात मोहणी षयउपसम हूआं, मिथ्यादिष्टी उजली होय हो ।
 जब केयक पदारथ सुव सरधले, एहवो गुण नीपजें छें सोय हो ॥ ३५ ॥
 मिश्र मोहणी षयउपसम हूआं, सममिथ्या दिष्टी उजली हुवें ताम हो ।
 जब घणां पदारथ सुव सरधलें, एहवो गुण नीपजें अमाम हो ॥ ३६ ॥
 समकत मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें समकत रतन परधान, हो ।
 नव ही पदारथ सुव सरधलें, एहवो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३७ ॥
 मिथ्यात मोहणी उदे छें ज्यां लगे, सममिथ्या दिष्टी नही आवंत हो ।
 मिश्र मोहणी रा उदे थकी, समकत नही पावंत हो ॥ ३८ ॥
 समकत मोहणी ज्यां लों उदे रहें, त्यां लग षायक समकत आवें नाय हो ।
 एहवी छाक छें दरसन मोह करम नी, न्हांखे जीव नें भ्रमजाल माय हो ॥ ३९ ॥
 षयउपसम भाव तीनोंइ दिष्टी छें, ते सगलोइ सुव सरधान हो ।
 ते खायक समकत माहिली, वानगी मातर गुण निधान हो ॥ ४० ॥
 अंतराय करम षयउपसम हूआं, लबध आठ गुण नीपजें श्रीकार हो ।
 पांच लबध तीन वीर्य नीपजे, हिवे तेहनो सुणो विसतार हो ॥ ४१ ॥
 पांचोंइ प्रकत अंतराय नी, सदा षयउपसम रहें छे साख्यात हो ।
 तिण सूं पांचू लबध बाल वीर्य, उजल रहे छें अल्पमात हो ॥ ४२ ॥
 दानांतराय षयउपसम हूआं, दान देवा री लबध उपजंत हो
 लामांतराय षयउपसम हूआं, लाम री लबध खुलंत हो ॥ ४३ ॥

भोगअंतराय - षयउपसम्यां, भोग लब्ध उपनें छे ताय हो ।
उपभोगअंतराय खयउपसम हूआं, उपभोग लब्ध उपजें आय हो ॥ ४४ ॥
दांन देवा री लब्ध निरंतर, दांन देवे ते जोग व्यापार हो ।
लाभ लब्ध पिण निरंतर रहें, वस्त लाभे ते किण ही वार हो ॥ ४५ ॥
भोग लब्ध तो रहे छे निरंतर, भोग भोगवे ते जोग व्यापार हो ।
उपभोग पिण लब्ध छे निरंतर, उपभोग भागवे जिण वार हो ॥ ४६ ॥
अंतराय अलगी हूआं जीव रे, पुन सारुं मिलसी भोग उपभोग हो ।
साधु पुदगल भोगवे ते सुभ जोग छें, और भोगवे ते असुभ जोग हो ॥ ४७ ॥
वीर्य अंतराय षयउपसम हूआं, वीर्य लब्ध उपजें छे ताय हो ।
वीर्य लब्ध ते सगत छे जीव री, उत्तकष्टी अनती होय जाय हो ॥ ४८ ॥
तिण वीर्य लब्ध रा तीन भेद छें, तिणरी करजो पिछांण हो ।
बाल वीर्य कह्यो छे बाल रो, ते चोथा गुणठाणा ताई जांण हो ॥ ४९ ॥
पिंडत वीर्य कह्यो पिंडत तणो, छठा थी लेइ चवदमे गुण ठांण हो ।
बाल पिंडत वीर्य कह्यो छे श्रावक तणो, ए तीनीई उजल गुण जांण हो ॥ ५० ॥
कदे जीव वीर्य नें फोडवे, ते छे जोग व्यापार हो ।
सावद्य निरवद तो जोग छे, ते वीर्य सावद्य नहीं छे लिगार हो ॥ ५१ ॥
वीर्य तो निरंतर रहे, चवदमां गुण ठांणा लग जांण हो ।
बारमा ताइ तो षयउपसम भाव छे, खायक तेरमे चवदमें गुण ठाण हो ॥ ५२ ॥
लब्ध वीर्य नें तो वीर्य कह्यो, करण वीर्य ने कह्यो जोग हो ।
ते पिण सगत वीर्य ज्यां लगे, त्या लग रहे पुदगल सजोग हो ॥ ५३ ॥
पुदगल विण वीर्य सगत हुवे नहीं, पुदगल विना नहीं जोग व्यापार हो ।
पुदगल लागा छे ज्यां लग जीव रे, जोग वीर्य छे ससार मभार हो ॥ ५४ ॥
वीर्य निज गुण छे जीव रो, अतराग अलगा हूआं जाण हो ।
ते वीर्य निश्चेइ भाव जीव छे, तिण मे सका मूल म आण हो ॥ ५५ ॥
एक मोह करम उपसम हुवे, जब नीपजे उपसम भाव दोग हो ।
उपसम समकत उपसम चारित हुवे, ते तो जीव उजलो हुवो सोय हो ॥ ५६ ॥
दरसण मोहणी करम उपसम हुवां, निपजे उपसम समकत निघान हो ।
चारित मोहणी उपसम हूआं, परगटे उपसम चारित परघान हो ॥ ५७ ॥
अ्यार घणघातीया करम षय हुवे, जब परगट हुवे खायक भाव हो ।
ते गुण सरवथा उजला, त्यारो जूओ २ सभाव हो ॥ ५८ ॥
ग्यांनावरणी सरवथा खय हूआं, उपजे केवल ग्यांन हो ।
दरसणावर्णी पिण खय हुवं सरवथा, उपजे केवल दरसण परघान हो ॥ ५९ ॥

मोहणी करम खय हुवे सरवथा, बाकी रहें नही अंसमात हो ।
 जब खायक समकत परगटे, वले खायक चारित जथाख्यात हो ॥ ६० ॥
 दरसण मोहणी खय हुवे सरवथा, जब निपजे खायक समकत परघान हो ।
 चारित मोहणी खय हुआं, नीपजे खायक चारित निघान हो ॥ ६१ ॥
 अंतराय करम अलगो हुआ, खायक वीर्य सगत हुवे ताय हो ।
 खायक लब्ध पाचूइ परगटे, किण ही वात री नही अंतराय हो ॥ ६२ ॥
 उपसमय खायक षयउपसम निरमला, ते निज गुण जीव रा निरदोष हो ।
 ते तो देस थकी जीव उजलो, सर्व उजलो ते मोख हो ॥ ६३ ॥
 देस विरत श्रावक तणी, सर्व विरत साधु री छें ताय हो ।
 देस विरत समाइ सर्व विरत में, ज्यूं निरजरा समाइ मोख मांय हो ॥ ६४ ॥
 देस थी जीव उजले ते निरजरा, सर्व उजलो ते जीव मोख हो ।
 तिण सूं निरजरा ने मोख दोनू जीव छे, उजल गुण जीव रा निरदोष हो ॥ ६५ ॥
 जोड कीधी निरजरा ओल्लायवा, नाथ दुवारा सहर मभार हो ।
 सवत अठारे वरस छपने, फागण सुद दसम गुरवार हो ॥ ६६ ॥

ढाल : १०

दुहा

निरजरा गुण निरमल कह्यो, उजल गुण जीव रो वशेख ।
 ते निरजरा हुवे छे किण विधे, सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥
 भूख तिरषा सी तानादिक, कष्ट भोगवे विविध परकार ।
 उदे आया ते भोगव्यां, जब करम हुवे छें न्यार ॥ २ ॥
 नरकादिक दुःख भोगव्यां, करम वस्यां थी हलको थाय ।
 आ तो सहजा निरजरा हुइ जीव रे, तिणरो न कीयो मूल उपाय ॥ ३ ॥
 निरजरा तणो कामी नही, कष्ट करे छे विविध परकार ।
 तिणरा करम अल्प मातर भरे, अकाम निरजरा नो एह विचार ॥ ४ ॥
 अह लोक अर्थे तप करे, चक्रवर्तादिक पदवी काम ।
 केइ परलोक ने अर्थे करें, नही निरजरा तणा परिणाम ॥ ५ ॥
 केइ जस महिमा वधारवा, तप करे छे ताम ।
 इत्यादिक अनेक कारण करे, ते निरजरा कही छे अकाम ॥ ६ ॥
 सुध करणी करें निरजरा तणी, तिण सूं करम कटे छे ताम ।
 थोडो घणो जीव उजलो हुवे, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ७ ॥

ढालें

[पूज्य भिखन जी रो समरण करता]

देस थकी जीव उजल हुवो छें, ते तो निरजरा अनूप जी ।
हिंवे निरजरा तणी सुघ करणी कहं छू, ते सुणजो घर चुंप जी ॥
आ सुघ करणी छें कर्म काटण री ॥ १ ॥

ज्यूं साबू दे कपडा नें तपावे, पांणी सूं छांटे करें संभाल जी ।
पछे पांणी सूं घोवें कपडा ने, जब मेल छटे ततकाल जी ॥ आ० २ ॥

ज्यूं तप कर नें आतम नें तपावे, ग्यान जल सूं छांटे ताय जी ।
ध्यान रूप जल माहें भखोले, जब करम मेल छंट जाय जी ॥ ३ ॥

ग्यान रूप सावण सुघ चोखे, तप रूपी निरमल नीर जी ।
घोबी ज्यूं छें अंतर आतमा, ते घोवे छे निज गुण चीर जी ॥ ४ ॥

कांमी छें एकंत करम काटण रो, और बंछा नही काय जी ।
तो करणी एकंत निरजरा री, तिण सूं करम भड जाय जी ॥ ५ ॥

करम काटण री करणी चोखी, तिणरा छे बारे भेद जी ।
तिण करणी कीयां जीव उजल हुवें छें, ते सुणजो आंण उमेद जी ॥ ६ ॥

अणसण करे च्याहं आहार त्यागे, करें जावजीव पचखांण जी ।
अथवा थोडा काल तांइ त्यागे, एहवी तपसा करें जांण २ जी ॥ ७ ॥

सुघ जोग रूंध्या साधु रे हुवो सवर, श्रावक रे विरत हुइ ताय जी ।
पिण कष्ट सहायां सूं निरजरा हुवे, तिण सूं घाल्यो छे निरजरा माय जी ॥ ८ ॥

ज्यूं २ भूख तिरषा लागें, ज्यूं २ कष्ट उपजे अतंत जी ।
ज्यूं २ करम कटे हुवें न्यारा, समें २ खिरे छें अनंत जी ॥ ९ ॥

उणों रहे ते उणोदरी तप छे, ते तो दरब नें भाव छें न्यार जी ।
दरब ते उणगरण उणा राखें, वले उणोइ करे आहार जी ॥ १० ॥

भाव उणोदरी क्रोधादिक वरजे, कल्हादिक दिये छें निवार जी ।
समता भाव छें आहार उपघि थी, एहवी उणोदरी तप सार जी ॥ ११ ॥

भिष्याचरी तप भिष्या त्याग्यां हुवे, ते अभिग्रहा छें विवघ परकार जी ।
ते तो दरब बेतर काल भाव अभिग्रह छें, त्यांरो छे बोहत विस्तार जी ॥ १२ ॥

रस रो त्याग करे मन सुघे, छांड्यो विगयादिक रो सवाद जी ।
अरस विरस आहार भोगवे समता सूं, तिणरे तप तणी हुवे समाद जी ॥ १३ ॥

काया कलेस तप कष्ट कीयां हुवें, आसण करे विवघ परकार जी ।
सी तापादिक सहे खाज न खणे, वले न करे सोभा ने सिणगार जी ॥ १४ ॥

परीसंलीणीया तप च्यार परकारे, त्यांरा जूजूवा छें नांम जी ।
 इंद्री कषाय नें जोग संलीण्या, विवत सेणासण सेवणा तांम जी ॥ १५ ॥
 सोइंद्री नें विपे नां सव्व सूं व्हे, विपे सव्व न सुणे किंवार जी ।
 कदा विपे रा सव्व कानां में पडीया, तो राग घेप न करे लिगार जी ॥ १६ ॥
 इम चपू इंद्री रूप सूं संलीनता, घाण इंद्री गंव सुं जाण जी ।
 रसइंद्री रस सूं ने फरस इंद्री फरस सूं, सुरत इंद्री ज्यूं लीजो पिछाण जी ॥ १७ ॥
 क्रोध उपजावारो संवण करवो, उदे आयो निरफल करे तांम जी ।
 मांन माया लोभ इम हिज जाणों, कषाय संलीणीया तप हुवें आंम जी ॥ १८ ॥
 पाडुआ मन नें संवे देणों, भलो मन परवरतावणो तांम जी ।
 इम हिज वचन नें काया जाणों, जोग संलीणीया हुवें आंम जी ॥ १९ ॥
 अस्त्री पभू पिंडग रहीत थानक सेवे, ते सुध निरदोपण जाण जी ।
 पीढ पाटादिक निरदोपण सेवें, विवत सेणासण एम पिछाण जी ॥ २० ॥
 ए छव परकारें वाह्य तप कहां छें, ते परसिव चावो दीसंत जी ।
 हिवें छ परकारें अमितर तप कहुं छें, ते भाप्यो छे श्री भगवंत जी ॥ २१ ॥
 प्रायच्छित्त कहां छें वस परकारें, दोप ओलाए प्रायच्छित्त लेवंत जी ।
 ते करम खपाय आरावक थावे, ते तो मुगत में वेगो जावंत जी ॥ २२ ॥
 विनों तप कहां सात परकारें, त्यांरो छें वोहत विसतार जी ।
 ग्यांन दरसण चारित्त मन विनों, वचन काया नें लोग ववहार जी ॥ २३ ॥
 पांचू ग्यांन तणा गुणग्राम करणा, ए ग्यांन विनों करणो छें एह जी ।
 दरसण विनां रा दोय भेद छें, सुसरपा ने अणासातणा तेह जी ॥ २४ ॥
 सुसरपा वडां री करणी, त्यांने वंदणा करणी सीम नांम जी ।
 ते सुसरपा दस विध कही छें, त्यांरा जूवा जूवा नांम छे तांम जी ॥ २५ ॥
 गुर आयां उठ उमो होवणो, आसन छोडणो तांम जी ।
 आसन आमंत्रणों हरप सूं देणो, सत्तकार नें समांण देणो आंम जी ॥ २६ ॥
 वंदणा कर हाय जोडी रहे उमो, आवता देख सांहुं जाय जी ।
 गुर उमा रहे त्यां लग उमा रहिणो, वें जांयें जव पोहचावण जावें ताय जी ॥ २७ ॥
 अणअसातणा विनां रा भेद, पेंतालीस कह्या जिणराय जी ।
 अरिहंत नें अरिहंत पळ्यो धर्म, वले आचार्य नें उवमाय जी । २८ ॥
 यिवर कुल गण संघ नों विनां, किरिया दादी संभोगी जाण जी ।
 मत ग्यांनादिक पांचूई ग्यांन रो, ए पनरेई वोल पिछांण जी ॥ २९ ॥
 थां पनरां वोलं में पांच ग्यांन फेर कह्या छें, ते दीसे छे चारित्त सहीत जी ।
 ए पांच ग्यांन नें फेर कह्या त्यांरी, विनां तणी ओर रीत जी ॥ ३० ॥

यारी आसातना टालणी ने विनों करणों, भगत कर देणो समान जी ।
 गुणग्राम करे नें दीपावणा त्यांनं, दरसन विनों छें सुघ सरधान जी ॥ ३१ ॥
 सामायक आदि दे पांचूई चारित, त्यांरो विनों करणो जथाजोग जी ।
 सेवा भगत त्यांरी हरष सूं करणी, त्यांसूं करणो निरदोष संभोग जी ॥ ३२ ॥
 सावद्य मन नें परो निवारे, ते सावद्य छें बारे परकार जी ।
 बारे परकार निरवद मन परवरतावे, तिण सूं निरजरा हुवे श्रीकार जी ॥ ३३ ॥
 इम हिज सावद्य वचन बारे भेदे, तिण सावद्य नें देवे निवार जी ।
 निरवद वचन बोले निरदोषण, बारेइ बोल वचन विचार जी ॥ ३४ ॥
 काया अजेंणा सूं नही परवरतावे, तिणरा भेद कह्या सात जी ।
 ज्यूं सात भेद काया अजेंणा सूं परवरतावे, जब करम तणी हुवें घात जी ॥ ३५ ॥
 लोग ववहार विनों कह्यां सात परकारे, गुर समीपे वरतवो तांम जी ।
 गुरवादिक रे छांदे चालणो, ग्यांनादिक हेते करणों त्यांरो काम जी ॥ ३६ ॥
 भणायो त्यांरो विनों वीयावच करणी, आरत गवेष करणों त्यांरो काम जी ।
 प्रसताव अवसर नों जाण हुवेणो, सर्वं कार्य करणो अमिरांम जी ॥ ३७ ॥
 वीयावच तप छे दस परकारे, ते वीयावच सावां री जाण जी ।
 करमां री कोड खपे छें तिण थी, नेड़ी हुवे छें निरवांण जी ॥ ३८ ॥
 सभाय तप छें पांच परकारे, जे भाव सहीत ही करे सोय जी ।
 अर्थ ने पाठ विवरा सुघ गिणीया, करमां रा भड खय होय जी ॥ ३९ ॥
 आरत रोद्र ध्यान निवारे, ध्यावें सुकल ध्यान जी ।
 ध्यावतो २ उतकष्टें ध्यावें, तो उपजें केवल ग्यान जी ॥ ४० ॥
 विउसग तप छें तजवारो नांम, ते तो दरब नें भाव छें दोग जी ।
 दरब विउसग च्यार परकारे, ते विवरो सुणो सहू कोय जी ॥ ४१ ॥
 सरीर विउसग सरीर रो तजवो, इम गण नों विउसग जाण जी ।
 उपधि नों तजवो ते उपधि विउसग, भात पांणी रो इम हिज पिछांण जी ॥ ४२ ॥
 भाव विउसग रा तीन भेद छे, कषाय संसार नें करम जी ।
 कषाय विउसग च्यार परकारे, क्रोधादिक च्याहं छोड्यां छें धर्म जी ॥ ४३ ॥
 संसार विउसग संसार नों तजवो, तिणरा भेद छें च्यार जी ।
 नरक तिर्यंच मिनष नें देवा, त्यांने तजने त्यांसूं हुवें न्यार जी ॥ ४४ ॥
 करम विउसग छें आठ परकारे, तजणा आठूंड करम जी ।
 त्यांनं ज्यूं २ तजे हल को होवें, एहवी करणी थी निरजरा धर्म जी ४५ ॥
 बारे परकारे तप निरजरा री करणी, जे तपसा करे जाण जी ।
 ते करम उदीर उदे आंण खेरे, त्यांने नेड़ी होसी निरवांण जी ॥ ४६ ॥

साध रे बारे भेदे तपसा करतां,
 तिहां २ संवर हुवें तपसा रे लारे,
 इण तप माहिलो तप श्रावक करतां,
 जब विरत संवर हुवें तपसा लारे,
 इण तप माहिलो तप इविरती करतां,
 कोड परत संसार करे इण तप थी,
 साध श्रावक समदिष्टी तपसा करतां,
 कदा उतकटो रस आवें तिणरे,
 तप थी आणे संसार नों छेहडो,
 इण तपसा तणे परतापे जीवडो,
 कोड भवां रा करम संचीया हुवें तो,
 एहवो छें तप रतन अमोलक,
 निरजरा तो निरवद उजल हुवां थी,
 तिण लेखे निरजरा निरवद कहीए,
 इण निरजरा तणी करनी छें निरवद,
 निरजरा ने निरजरा री करणी,
 निरजरा तो मोष तणो अंस निरवें,
 जिणरे निरजरा करण री चूप लागी छे,
 सहजां तो निरजरा अनाद री हुवें छें,
 वरम बंवण सूं निवरत्यो नाहीं,
 निरजरा तणी करणी ओलखावण,
 समत अठारे बरस छपने,

जिहां २ निरवद जोग रुंघाय जी ।
 तिण सूं पुन लागता मिट जाय जी ॥ ४७ ॥
 कठे उसभ जोग रुंघाय जी ।
 लागता पाप मिट जाय जी ॥ ४८ ॥
 तिणरे पिण करम कटाय जी ।
 देगो जाए मुगत रे मांय जी ॥ ४९ ॥
 त्पारे उतकष्टी टले करम छोट जी ।
 तो वंवे तीथंकर गोत जी ॥ ५० ॥
 वले आणे करमां रो अंत जी ।
 संसारी रो सिव होवंत जी ॥ ५१ ॥
 खिण में दिये खपाय जी ।
 तिणरा गुण रो पार न आय जी ॥ ५२ ॥
 करम निरवरते हुओ न्यार जी ।
 बीजूं तो निरवद नहीं छें लिंगार जी ॥ ५३ ॥
 तिणसूं करमां री निरजरां होय जी ।
 ए तो जूआ जूआ छे दाय जी ॥ ५४ ॥
 देश थकी उजलो छें जीव जी ।
 तिण दीवी मुगत री नीव जी ॥ ५५ ॥
 ते होय २ ने मिट जाय जी ।
 संसार में गोता खाय जी ॥ ५६ ॥
 जोड कीवी नाथ दुवारा मभार जी ।
 वेत विद बीज ने गुरवार जी ॥ ५७ ॥

८ : बंध पदारथ

ढाल : ११

दुहा

आठमों पदारथ बंध छें, तिण जीव नें राख्यो छें बंध ।
जिण बंध पदारथ नहीं ओलख्यो, ते जीव छें मोह अंध ॥ १ ॥
बंध थकी जीव दबीयो रहें, काई न रहें उघाडी फोर ।
तिण बंध तणा प्रबल थकी, काई न चले जोर ॥ २ ॥
तलाव रूप तो जीव छें, तिणमें पडीया पांणी ज्यू बंध जाण ।
नीकलता पांणी रूप पुन पाप छें, बंध नें लीजो एम पिछ्छाण ॥ ३ ॥
एक जीव दरब छे तेहने, असंख्यात परदेस ।
सगला परदेसां आश्रव दुवार छें, सगला परदेसां करम परदेस ॥ ४ ॥
मिथ्यात इविरत नें परमाद छें, बले कपाय जोग विख्यात ।
यां पांचां तणा बीस भेद छें, पनरे आश्रव जोग में समात ॥ ५ ॥
नाला रूप आश्रव नाला करम नां, ते रूंध्यां हुवें संवर दुवार,
करम रूप जल आवतो रहे, जब बंध न हुवें लिगार ॥ ६ ॥
तलाव नों पाणी घटे तिण विघे, जीव रे घटे छ करम ।
जब कायक जीव उजल हुवे, ते तो छे निरजरा धर्म ॥ ७ ॥
कदे तलाव रीती हुवें, सर्व पांणी तणो हुवें सोप
ज्यूं सर्व करमां नों सोपंत हुवे, रीता तलाव ज्यूं मोप ॥ ८ ॥
बंध तो छे आठ करमां तणो, ते पुदगल नीं पर्याय ।
तिण बंध तणी ओलखणा कर्ह, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[अइ २ कर्म विडम्बना]

बंध नीपणें छे आश्रव दुवार थी, तिण बंध ने कह्यो पुन पापो जी ।
ते पुन पाप तो दरब रूप छें, भावे दंब कह्यो जिण आपो जी ॥
बंध पदारथ ओलख्यो ॥ १ ॥
ज्यूं तीर्थकर आय उपनां, ते तो दरब तीर्थकर जाणो जी ।
भावे तीर्थकर तो जिण समे, होसी तेरम गुणठांणी जी ॥ २ ॥
ज्यूं पुन नें पाप लागो कह्यो, ते तो दरब छें पुन ने पापो जी ।
भावे पुन पाप तो उदे आयां हुसी, सुख दुःख सोग संवाण जी ॥ ३ ॥
तिण बंध तणा दोय भेद छें, एक पुन तणां बंध जाणो जी ।
बीजो बंध छें पाप रो, दोनू बंध श करजो मिच्छाणी जी ॥ ४ ॥

यद् आंकडै प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पुन नों बंध उदे हुआं, जीव नें साता सुख हुवें सोयो जी ।
 पाप नों बंध उदे हुआ, विविध पणे दुःख होयो जी ॥ ५ ॥
 बंध उदे नही ज्यां लग जीव ने, सुख दुःख मूल न होय जी ।
 बंध तो छता रूप लागो रहे, फोडा न पाडे कोयो जो ॥ ६ ॥
 तिण बंध तणा च्यार भेद छे, त्यांने रुखी रीत पिछांणों जी ।
 प्रकतबंध नें थितबंध दुसरो, अनुभाग नें परदेस दध जाणों जी ॥ ७ ॥
 प्रकतबंध छे करमां री जूजूइ, ते करमां रा समाव रे न्यायो जी ।
 बांधी छे तिण समे बंध छें, जेसी बांधी तेसी उदे आयो जी ॥ ८ ॥
 तिण प्रकत ने मापी छे काल सूं, इतरा काल तांइ रहसी तांमो जी ।
 पछे तो प्रकत विल्लवसी, थित सूं प्रकत बंध छें आंमो जी ॥ ९ ॥
 अनुभाग बंध रस विपाक छें, जेसो जेसो रस देसी ताह्यो जी ।
 ते पिण प्रकत नो बंध रस कह्यो, बांध्या तेसांइज उदे आयो जी ॥ १० ॥
 परदेश बंध कह्यो प्रकत बंध तणो, प्रकत प्रकत रा अनंत परदेसो जी ।
 ते लोलीभूत जीव सूं ह्य रह्या, प्रकत बंध ओलखाई वशोपो जी ॥ ११ ॥
 आठ करमा री प्रकत छे जूजूइ, एकी की रा अनंत परदेसो जी ।
 ते एकी की परदेस जीव रे, लोली भूत हुवा छे वशोपो जी ॥ १२ ॥
 ग्यांनावरणी दरसवरणी वेदनी, वले आठमों करम अंतरायो जी ।
 यांरी थित छें सगला री सारिषी, ते सुणजो चित्त ल्यायो जी ॥ १३ ॥
 थित छे यां च्यालूं करमां तणी, अंतरमुहरत परिमांणो जी ।
 उतकप्टी थित यां च्यालूं करमां तणी, तीस कोडा कोडा सागर जाणों जी ॥ १४ ॥
 थित दरसण मोहणी करम नीं, जगन तो अंतरमुहरत परमांणो जी ।
 उतकप्टी थित छे एहनी, सितर कोडा कोड सागर जाणों जी ॥ १५ ॥
 जगन थित चारित मोहणी करम नी, अंरमुहरत कही जगदीसो जी ।
 उतकप्टी थित छे एहनी, सागर कोडा कोड चालीसो जी ॥ १६ ॥
 थित कही छे आजखा करम नीं, जिगन अंतरमुहरत होयो जी ।
 उतकप्टी थित सागर तेतीस नीं, आगे थित आजखा री न कोयो जी ॥ १७ ॥
 थित नांम ने गोत्र करम तणी, जगन तो आठ मुहरत सोयो जी ।
 उतकप्टी एकीका करम नीं, बीस कोडा कोड सागर होयो जी ॥ १८ ॥
 एक जीव रे आठ करमां तणां, पुद्गल रा परदेस अनंतो जी ।
 ते अमवी जीवां थी मापीयां, अनंत गुणां कह्या भगवंतो जी ॥ १९ ॥
 ते अवस उदे आसी जीव रे, भोगवीयां विण नहीं छटायो जी ।
 हदे आयां विण सुख दुःख हुवें नही, उदे आयां सुख दुःख थायो जी ॥ २० ॥

सुभ परिणांमां करम बांधीया, ते सुभ पणे उदे आसी जी ।
 असुभ परिणांमां करम बांधीया, तिण करमां थी दुःख थासी जी ॥ २१ ॥
 पांच वरणा आठोंइ करम छें, दोय गंध नें रस पांचूई जी ।
 चोफरसी आठोंइ करम छें, रूपी पुदगल करम आठोंइ जी ॥ २२ ॥
 करम तो लूखा ने चोपड्यां, वले ठंडा उंना होइ जी ।
 करम हलका नही भारी नही, सूहाली नें खरदरा न कोइ जी ॥ २३ ॥
 कोइ तलाव जल सूं पूर्ण भख्यो, खाली कोर न रही कायो जी ।
 ज्यूं जीव भख्यो करमां थकी, आ तो उपमा देस थी ताह्यो जी ॥ २४ ॥
 असंख्याता परदेस एक जीव रे, ते असंख्याता जेम तलावो जी ।
 सारा परदेस भरीया करमां थकी, जाणें भरीया चोखूणी बाबो जी ॥ २५ ॥
 एक एक परदेस छें जीव नों, तिहां अतंता करम नां परदेसो जी ।
 तें सारा परदेस भरीया छें वाव ज्यूं, करम पुदगल कीर्यो छें परवेसो जी ॥ २६ ॥
 तलाव खाली हुवे छे इण विघे, पेंहला तो नाला देवे रूंधायो जी ।
 पछे मोरियादिक छोडे तलाव री, जत्र तलाव रीतो थायो जी ॥ २७ ॥
 ज्यूं जीव रे आश्रव नालो रूंध दे, तपसा करें हरष सहीतो जी ।
 जब छेहडो आवें सर्व करम नों, तव जीव हुवे करम रहीतो जी ॥ २८ ॥
 करम रहीत हुवो जीव निरमलो, तिण जीव ने कहिजे मोखो जी ।
 ते सिघ हुवो छे सासतो, सर्व करम बंध कर दीयो सोषो जी ॥ २९ ॥
 जोड कीर्षी छे बंध ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर मझारो जी ।
 संमत अठारे नें वरस छपनं, चेत विद बारस सनीसर वारो जी ॥ ३० ॥

६ : मोख पंदारथ

ढाल : १२

दुहा

मोख पदार्थ नवमों कह्यो, ते सगला माहे श्रीकार ।
 सर्व गुणां करी सहीत छे, त्यांरा सुखां रो छेह न पार ॥ १ ॥
 करमां सूं मूकाणा ते मोख छे, त्यांरा छे नाम विशेष ।
 परमपद निरवाण ते मोख छें, सिद्ध सिव आदि छे नाम अनेक ॥ २ ॥
 परमपद उक्तण्टो पद पामीयो, तिण सूं परमपद त्यारो नाम ।
 करम दावानल भेट सीतल थया, तिणसूं निरवाण नाम छें ताम ॥ ३ ॥
 सर्व कार्य सिधा छें तेहनां, तिण सूं सिध कह्या छें ताम ।
 उपद्रव्य करेनें रहीत ह्यां, तिण सूं सिव कहीजे त्यारो नाम ॥ ४ ॥
 इण अनुसारे जाणजो, मोख रा गुण परमाणे नाम ।
 हिवें मोख तणा सुख वरणूं, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

(पाखंड वधसी आरे पाचवे)

मोख पदार्थ नां सुख सासता रे, तिण सुखां रो कदेय न आवे अंत रे ।
 ते सुख अमोलक निज गुण जीव रा रे, अनत सुख भाप्या छें भगवंत रे ॥
 मोख पदार्थ छें सारां सिरे रे* ॥ १ ॥
 तीन काल रा सुख देवां तणां रे, ते सुख इधका घणां अथाग रे ।
 ते सगलाइ सुख एकण सिध ने रे, तुले नावे अनंतमे भाग रे ॥ मो० २ ॥
 संसार नां सुख तो छें पुदगल तणां रे, ते तो सुख निश्चें रोगीला जाण रे ।
 ते करमां बस गमता लागें जीव नें रे, त्यां सुखां री बुधिवंत करो पिछांण रे ॥ ३ ॥
 पांव रोगीलो हुवें छें तेहनें रे, अतंत मीठी लागें छें खाज रे ।
 एहवा सुख रोगीला छें पुन तणा रे, तिण सूं कदेय न सीमे जातम काज रे ॥ ४ ॥
 एहवा सुखां सूं जीव राजी हुवें रे, तिणरे लागे छें पाप करम रा पूर रे ।
 पछें दुःख भोगवे छें नरक निगोद में रे, मुगति सुखां सूं पडीयो दूर रे ॥ ५ ॥
 छूटा जनम मरण दावानल तेह थी रे, ते तो छें मोष सिध भगवंत रे ।
 त्यां आठोई करमां नें अलग्ना कीयां रे, जव आठोई गुण नीपना अनंत रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते मोक्ष सिध भगवंत तो इहा हिज हूआं रे,
 सिध रहिवा नो खेतर छेतिहां जाए रह्या रे,
 अनंतो ग्यान नें दरसन तेहनों रे,
 षायक समकत छें सिध वीतराग तेहने रे,
 अमूरतीपणों त्यारो परगट हूवो रे,
 तिण सू अगुरलघू नें अमूरती कह्यां रे,
 अंतराय करम सू तो रहीत छे रे,
 ते निज गुण सुखां माहे मिले रह्यां रे,
 छूटा कलकली भूत संसार थी रे,
 ते अनंता सुख पांम्यां सिधे रमणी तणां रे,
 त्यारा सुखां नें नही काई ओपमा रे,
 एक धारा त्यांरा सुख सासता रे,
 तीरथ सिधा ते तीरथ मां सू सिध हूआं रे,
 तीर्थंकर सिधा ते तीरथ थापने रे,
 सयबुधी सिधा ते पोतें समझ नें रे,
 बुधबोही सिधा ते समझे ओरां कनें रे,
 स्वर्लिंगी सिधा साधां रा भेष में रे,
 ग्रहर्लिंगी सिधा ग्रहस्थ रा लिग थकां रे,
 पुरष लिग सिधा ते पुरष ना लिग छतां रे,
 एक सिधा ते एक समें एक हीज सिध हूआ रे,
 ग्यान दरसन ने चारित तप थकी रे,
 यां च्यांरा विनां कोइ सिध हूओ नही रे,
 ग्यान थी जाणे लेवे सर्व भाव ने रे,
 चारित सू करम रोके छें आवता रे,
 एं पनरेंड भेदें सिध हूआं तकेरे,
 वले मोष में सुख सगला रा सारिषा रे,
 मोष पदार्थ नें ओलखायवा रे,
 समत अठांरें नें बरस छमनें रे,

पछें एक समा में उंचा गया छे थेट रे ।
 अलोक सूं जाए अह्या छे नेंट रे ॥ ७ ॥
 वले आतमीक सुख अनंतों जाण रे ।
 वले अक्गाहणा अटल छें निरवाण रे ॥ ८ ॥
 हलको भारी न लागे मूल लिआर रे ।
 ए पिण गुण त्यांमिं श्रीकार रे ॥ ९ ॥
 त्यांरे पुदगल सुख चाहीजे नांय रे ।
 कांइ उणारत रही न दीसे कांय रे ॥ १० ॥
 आठोइ करमां तणो कर सोष रे ।
 त्यांनं कहिजे अविचल मोख रे ॥ ११ ॥
 तीनोंइ लोक संसार ममार रे ।
 ओछा इधका सुख कदेय न हूवे लिगार रे ॥ १२ ॥
 अतीरथ सिधा ते विण तीरथ सिध थाय रे ।
 अतीर्थंकर सिधा ते विना तीर्थंकरताय रे ॥ १३ ॥
 प्रतेकबुधी सिधा ते कांयक वस्त देख रे ।
 उपदेस सुणे ने ग्यान वशेष रे ॥ १४ ॥
 अनर्लिंगी सिधा ते अन लिंगी मांय रे ।
 अस्त्री लिंग सिधा अस्त्री लिंग मे ताय रे ॥ १५ ॥
 निपुंसक सिधा निपुंसक लिंग मे सोय रे ।
 अनेक सिधा ते एक समें अनेक सिध होय रे ॥ १६ ॥
 सारा हूआं छें सिध निरवाण रे ।
 ए च्याल्ई मोष रा मारग जाण रे ॥ १७ ॥
 दरसन सूं सरष लेवे सयमेव रे ।
 तपसा सूं करमां ने दीया खेव रे ॥ १८ ॥
 सगला री करणी जाणों एक रे ।
 ते सिध छें अनत भेदे अनेक रे ॥ १९ ॥
 जोड कीची छे नाथ दुवारा ममार रे ।
 चेत सुद चोय ने सनीसर वार रे ॥ २० ॥

ढाल :- १३

दुहा

केह भेष बाख्यां रा घट मन्हे जीव अजीव री खबर न कांय ।
 ते-पिण गोला फेले गालां तणा- ते पिण चुव न दीलें कांय ॥ १ ॥
 नव पदार्थ रो त्यारे निरपों नहीं, छ-दखां रो निरपों नांय ।
 न्याय निरपा वितां व्क बोचरे- तिणरो सोच नहीं मन मांय ॥ २ ॥
 जीव अजीव दोनूं लिंग क्हा, तीजी वस्त न कांय ।
 जे जे वस्त छें लोक में ते दोगों में सब सनाय ॥ ३ ॥
 नव ही पदार्थ जिण क्हा, त्यांनं दोगों में घाले नांय ।
 त्परे अंधकार घट में जगों, ते भूल गया भम मांय ॥ ४ ॥
 उंची र करे छें पल्पणा, ते भोला नें खबर न कांय ।
 तिण तूं नव पदार्थ रो निरपों क्हुं, ते चुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[ते कुंवर हरी राम भे]

जीव ते वेतन अजीव अचेतन, त्यांनं वादर पणे तो ओलखणा सोरा ।
 त्यांरा नेदाननेद झुआजूआ करतां, जव तो ओलखणा छें अति ही दोरा ।
 जीव अजीव सूबा न सरखे मिथ्याती ॥ १ ॥
 जीव अजीव दालेनं सात पदार्थ, त्यांनं जीव अजीव सरखें छें दोनूड ।
 एइवी उंची सरबा रा छें नूड मिथ्याती, त्यां सावू रो भेष ले आतम विणोइ ॥
 जीव अजीव सूबा न सरखें मिथ्याती ॥ २ ॥
 पुन पाप ने वंघ एं तीनुंइ करम, करम ते निरवेइ पुदमल जांगो ।
 पुद्गल छें ते निरवेइ अजीव, तिण माहें सत्का-मूल म जांगो ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरखें मिथ्याती ॥ ३ ॥
 भाव-करनां नें लवी क्हा छें जिणेत, त्यांनं प्रांचुंइ वरां नें-रंघ छें-दोय ।
 बले प्रांचुंइ रत नें चार फरत छें, एं सोलें बोल पुद्गल अजीव छें सोय ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरखें मिथ्याती ॥ ४ ॥
 पुन पाप वेहूं नें अहे आश्रव, पुन पाप अहे ते निरवेइ जीव जांगो ।
 निरवेइ जांगां सूं पुन-गहे छें, सान्ध जांगां सूं पाप लागें छें जांगे ॥
 कार्मा नां दुवार आश्रव जीव रा भाव, आश्रव नें जीव न सरखें मिथ्याती ॥ ५ ॥
 ते दीसोइ बोल छें कार्मां रा करता, तिन आश्रवनां नीसोइ बोल पिड्दांगो ।
 कार्मां रा करता निरवेइ जीव जांगो ।
 आश्रव नें जीव न सरखें मिथ्याती ॥ ६ ॥

आतमा ने वस करें ते संवर,
ते तो उपसम खायक षयउपसम भाव,
संवर ते आवतां करमां नें रोके,
तिण संवर ने जीव न सरघे अग्यांती,
देस थकी करमां नें तोड़े,
जीव उजलो हुओ छें तेहिज निरजरा,
करमां ने तोड़े ते निश्चेइ जीव,
उजला जीव नें निरजरा कही जिण,
समसत करम थकी मूकावे,
इण संसार दुख थी छूट पड़या छे,
करमां थकी मूकावे ते मोष,
बले मोष नें परमपद निरवाण कहिजे,
पुन पाप नें बंध एं तीनूइ अजीव,
एहवी उंची सरघा रा छें मूढ मिथ्याती,
आश्रव संवर निरजरा नें मोष,
त्याने जीव अजीव दोनूइ सरघे,
नव पदारथ में पांच जीव कह्या जिण,
ए नव पदारथ रो निरणों करसी,
जीव अजीव ओलखावण काजे,
समत अठारे सत्तावने वरसे,

आतमा वस करें ते निश्चेइ जीव ।
ए तो जीव रा भाव छें निरमल अतीव ॥
संवर ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ७ ॥
आवतां करम रोके ते निश्चेइ जीव ।
तिणरे नरक निगोद री लागी छे नीव ॥
तिण संवर नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ८ ॥
जब देस थकी जीव उजलो होय ।
निरजरा जीव छे तिणमें सका न कोय ॥
इण निरजरा ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ९ ॥
करम तूटां थकां उजलो हुओ जीव ।
जीव रा गुण छें उजल अत ही अतीव ॥
इण निरजरा नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १० ॥
ते करम रहीत आतमा मोष ।
ते तो सीतलीभूत थया निरदेष ॥
तिण मोष नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ११ ॥
तिण मोष नें कहिजे सिघ भगवान ।
ते तों निश्चेइ निरमल जीव सुघ मान ॥
तिण मोष नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १२ ॥
त्याने जीव ने अजीव सरघे दोनूइ ।
त्यां साघ रा भेष में आतम विगोइ ॥
पुन पाप नें अजीवन सरघे मिथ्याती ॥ १३ ॥
एं निमाइ निश्चे जीव च्याह्णइ ।
तिण उंची सरघा सूं आतम विगोइ ॥
यां च्यारां नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १४ ॥
च्यार पदारथ अजीव कह्या भगवान ।
तेहिज समभूत छें सुघ मान ॥
जीव अजीवने सुघन सरघे मिथ्याती ॥ १५ ॥
जोड कीधी पुर सहर मभार ।
भादवा सुद पूनम नें वुघवार ॥
जीव अजीवने सुघन सरघे मिथ्याती ॥ १६ ॥

रत्न : २

श्रावक ना बारे व्रत

व्रत पहिलो

(स्थूल प्राणातपात विरमण व्रत)

ढाल : १

दुहा

पांच अणुव्रत परबरा, तीन गुण वरत सार ।
सिष्या वरत च्यारे चतुर, तेहनो करो विचार ॥ १ ॥
पहिलां में हिंसा तजे, दूजें झूठ परिहार ।
तीजें अदत्त चौथे अवंभ, पांचमें तजे घन सार ॥ २ ॥
पहिलो गुण वरत दिसि तणो, दूजें भोग पचखाण ।
तीजें अनरथ परहरे, ए तीनू गुण वरत जाण ॥ ३ ॥
सामायक पहिलो सिख्या, दूजें संवर जाण ।
तीजें पोषद कहीजीयें, चौथें सावां नें दे दान ॥ ४ ॥
यां बारे वरतां तणों, कहीये छे विसतार ।
भाव घरी भवियण सुणों, मन मे आण विचार ॥ ५ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

श्रावक ना व्रत बार, पाले निरतीचार ।
ते दुरगत नहि पड़े ए, भवसायर तिरे ए ॥ १ ॥
पेहलो वरत इम जाण, तिण में हिंसा ना पचखाण ।
हिंसा तस तणो ए, बीजी थावर भणी ए ॥ २ ॥
वसतां ग्रहस्थावास, हिंसा हुवे जास ।
आरम्भ विण करीये ए, पेट किम मरीये ए ॥ ३ ॥
करूं तस तणा पचखाण, थावर नो परमाण ।
भेद तस तणां ए, ग्यांनी कह्या घणां ए ॥ ४ ॥
कोई मोनें घाले घात, माहरो अपरावी साख्यात ।
खमतां दोहिलो ए, नहि मोने सोहिलो ए ॥ ५ ॥
सातो दे घन लेजाय, अथवा लूटे आय ।
खून करे जरे ए, सुंस नही तरे ए ॥ ६ ॥

विण	अपराधी	होय,	तिणरी	हिंसा	दोय ।
मारे	जाणतां	ए,	बले-	अजाणतां	ए ॥ ७ ॥
म्हारे	घान	जोखण	रो काम,	गाडी	चढ जाऊं गाम ।
खेती	हल	खडूं	ए,	सूर	निदाण कळं ए ॥ ८ ॥
तिहां	बहू	जीव	हणाय,	किम	पालूं मुनीराय ।
नही	सभे	एसो	ए,	ग्रहवासे	फस्यो ए ॥ ९ ॥
आकुटी	ने	साम,	जीव	मारण	रे काम ।
व्रत	छै	जाणतां	ए,	नही	अजाणतां ए ॥ १० ॥
म्हारी	इसडी	इरज्या	नाहि,	चालूं	अंधारा मांहि ।
वसतू	पूजूं	नही	ए,	लेवूं	मूकूं सही ए ॥ ११ ॥
थाप	लाठी	रो	नेम,	मोसूं	चाले केम ।
चोपद	हाकणा	ए,	दोपद	हठकणा	ए ॥ १२ ॥
इम	करतां	जीव	मराय,	जीव	काया जूदा थाय ।
हणवा	बुध	नही	घरी ए,	विना	बुध मरी ए ॥ १३ ॥
हणवारी	बुध	होय,	जीव	न	माळं कोय ।
सेउपयोने	करी	ए,	एसी	विगत	घरी ए ॥ १४ ॥
हिसानां		पचखांण,	में	कीघा	परमांण ।
जावजीव	करी	ए,	करण	जोग	घरी ए ॥ १५ ॥
घिन	घिन	जे	ले	बैराग,	ज्यारे सर्व हिंसा रा त्याग ।
तस	थावर	तणीं	ए,	अणकंपा	घणीं ए ॥ १६ ॥
हू	ग्रहस्थ	मुनीराज,	म्हारे	आरम्भ	काज ।
इविरत	बहु	घणी	ए,	तस	थावर तणी ए ॥ १७ ॥
घिन	घिन	साधू	मुनीराय,	ते	सुमते सुमता थाय ।
जीवे	ज्यां	भणी	ए,	न	चूके अणी ए ॥ १८ ॥
घिग	घिग	ग्रहस्थावास,	म्हारे	मोटो	पड्डियो पास ।
हिंसा	बहु	घणी	ए,	लागे	मो भणी ए ॥ १९ ॥
ग्यांनादिक	आंकस	ल्याय,	मन	नैं	आंणी ठाय ।
हिंसा	टालसूं	ए,	ममता	वालसूं	ए ॥ २० ॥
जावजीव		पचखांण,	नहिं	योंने	आसात ।
लफरो	बहु	घणो	ए,	न्यातीलां	तणो ए ॥ २१ ॥
घिन	घिन	साधू	सूर,	जिण	लफरो कीघो दूर ।
तिण	विध	मोंवत	ए,	खातो	नहिं खतै ए ॥ २२ ॥



व्रत दूजो

(स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)

ढाल २

दुहा

दूजो व्रत श्रावक तणों, करे भूठ तणों परमाण ।
त्यागे माठो जाण नें, पाले जिणवर आण ॥ १ ॥
भूठ बोला- मानवी, नहि ज्यांरी परतीत ।
मनष जमारो हार ने, नरकां हुवें फजीत ॥ २ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

भूठ तणां पचखाण, नाहना मोटा जाण ।
पचखे मोटका ए, केयक छोटका ए ॥ १ ॥
छोटो न बोलूं केम, म्हारो ग्रहवासा सूं पेम ।
विणज सोदा करू ए, मन में लोभ वरूं ए ॥ २ ॥
मोटा पाच प्रकार, तेहनो करूं परिहार ।
व्रत करूं इसो ए, मोसूं निभे जिसो ए ॥ ३ ॥
किन्या गोवाली जाण, तीजी भोम पिच्छाण ।
थापण मोसो करे ए, कूडी साख भरे ए ॥ ४ ॥
किन्यां रा भेद अपार, करणो सूंस विचार ।
घरसां छोटकी ए, न कहणी मोटकी ए ॥ ५ ॥
गहली गूंगी होय, वले आंख नहि दोय ।
कांणी मीमरी ए, आंख्यां चीपडी ए ॥ ६ ॥
काली कोढणी नार, कानां न सुणे लिंगार ।
टूटी पांगली ए, बोले तोतली ए ॥ ७ ॥
रोग घणो घट मांय, जीवण री आस न कांय ।
वेलंजर तेजरो ए, आवे एकंतरो ए ॥ ८ ॥
वले रोग छे खेन, जीव न पामें चेन ।
रक्तपीती तणी ए, दुरगंध अति घणी ए ॥ ९ ॥

कूबी दूबी होय, बाडी वांकी जोय ।
 छोटी वांवणी ए, बाख्यां वांमणी ए ॥ १० ॥
 हीण वंस री होय, तिणरी जात न जाणे कोय ।
 आ तो जाये जठे ए, साख न भरे कठे ए ॥ ११ ॥
 रूप रोग ने खोड, वले वरस दे तोड ।
 अछतो नहि भाषणो ए, हुवै जिम दाखणो ए ॥ १२ ॥
 यां बोलां रो साम, आय पडे कोइ काम ।
 घर मांडे जठे ए, भूठ न वोळूं तठे ए ॥ १३ ॥
 हासा मसकरी काज, म्हारे सुंस नही मुनीराज ।
 पलतां दोहिलो ए, नहि भोंनें सोहिलो ए ॥ १४ ॥
 इत्यादिक परमाण, में कीघा पचखाण ।
 इमहीज पुरप तणां ए, कन्या ज्यूं भापणां ए ॥ १५ ॥
 इम गोवाली जाण, दूध तणो परमाण ।
 वेत न ओछारणो ए, हुवें जिम दाखणो ए ॥ १६ ॥
 भोमाली घर नें हाट, वले वाघ नें घाट ।
 घरती वावण तणी ए, इत्यादिक घणी ए ॥ १७ ॥
 कोइ घन सुंपे आय, हूं राखूं घर माहि ।
 आय नें मांगे तरे ए, नटूं नहि जरे ए ॥ १८ ॥
 मागे घणी जो आय, वाप भाई नें माय ।
 उ वारस आय अडे ए, राजा रोके जरे ए ॥ १९ ॥
 जब भूठ वोळण रो नेम, राखूं वरत सुं पेम ।
 चोखो पालसूं ए, दोपण टाल सुं ए ॥ २० ॥
 मांगे अनेरो आय, तो नट जावूं मुनीराय ।
 सुंस नही कियो ए, लोभे चित दीयो ए ॥ २१ ॥
 साख भरावे मोय, भूठ न वोळूं कोय ।
 ते पिण मोटकी ए, नही छोटकी ए ॥ २२ ॥
 जो हूं वोळूं वाय, तो घर पेलारो जाय ।
 भाषा तोलणी ए, पछे वोळणी ए ॥ २३ ॥
 करे भूठ रा भेद, त्याग्या थाण उमेद ।
 मनोरथ जद फले ए, भूठ छोटोइ टले ए ॥ २४ ॥
 करण जोग घाली ने एम, करे भूठ रा नेम ।
 बरत करे इसो ए, पोते निभे जीसो ए ॥ २५ ॥

व्रत तीजो

(स्थूल अदत्त विरमण व्रत)

ढाल : ३

दुहा

तीजो व्रत श्रावक तणो, करे अदत्त रा त्याग ।
मन मे सुमता आणीयां, चढे भाव वेराग ॥ १ ॥
अह लोके जस अति घणो, परलोके सुख थाय ।
भाव सहित अराचीयां, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥
चोरी करे ते मानवी, गया जमारो हार ।
मनष तणो भव खोय ने, नरका खाए मार ॥ ३ ॥
तीजो व्रत छे एम, करे अदत्त रा नेम ।

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

न करे मोटकी ए, वले छोटकी ए ॥ १ ॥
न्हानी किम त्यागू सांम, म्हारे वास इवण रो काम ।
खिण खिण किणनें केवुं ए, किहां किहां आम्या लेवुं ए ॥ २ ॥
न्हानी त्यागे ते चिन, पिण म्हारो नहि मन ।
चित्त चोखो नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ३ ॥
सांतो दे गांठी छोड, वाडो कर तांलो तोड ।
वसतु मोटी अछे ए, घणी जाण्या पछे ए ॥ ४ ॥
ऐसा अदत्त रा त्याग, मे पचख्यो आण वंराग ।
ते पिण परतणी ए, नही घर भणी ए ॥ ५ ॥
म्हारा कुटुंबादिक में माल, मो में पडे हवाल ।
भौड घणी सही ए, माग्यां दे नही ए ॥ ६ ॥
वले भूखो न मिले अन, म्हारा वाप भाई ने घन ।
सेठो कीयो सही ए, मोने दे नही ए ॥ ७ ॥
जबे तालो ल्युं तोड, वले गांठी छोड ।
सांतो दे चोरसूं ए, खोसल्यु जोर सूं ए ॥ ८ ॥
इतरा मो - आगार, ते नरक तणा दातार ।
रमणी वस पड्यो ए, जंजीरां जड्यो ए ॥ ९ ॥

राजा लेवे डंड हुवे लोक नें मंड ।
 चोरी नहीं कहं ए ऐसी व्रत व्हं ए ॥ १० ॥
 इसो पळे नुनीराय. नीने दो पचखाय ।
 जीवे ज्यां भगी ए इत चोरी तपो ए ॥ ११ ॥
 चोरी कर्म चण्डाल. तिग थी पडे ह्वारु ।
 दुख नरकां तनां ए. सहे अनि जनां ए ॥ १२ ॥
 चोरी ले पर मात्र. तिग नें पडे ह्वारु ।
 नरक निगोद तपां ए. फल चोरी तनां ए ॥ १३ ॥
 पर वन लेवे ताहि. दे पेल रे बहि ।
 ते नरक ना पावना ए. न्यात लजावगा ए ॥ १४ ॥
 इहलोक उदे हुवे पाप. दुख भुगते आयो जाय ।
 मार वणी पडे ए. विग आइ मरे ए ॥ १५ ॥
 तिगरा काटे हाथ नें पाय. वळे सुली देवे चडाय ।
 नकटो नें बूटों करे ए. वळे नार वणी पडे ए ॥ १६ ॥
 मुयां पछे चोर री जाय. न्हावे लाई मांय ।
 तिहां कुत्ता आयनें ए. विगाड़े जाय नें ए ॥ १७ ॥
 वळे काग चांचां सुं मार. तिगरा डीया काटे वार ।
 शरीर तिग तपो ए. विकराल बीसे वणो ए ॥ १८ ॥
 तिग नें देवे मात्र नें तात. मन में वना सीदात ।
 इप चोरी कर परतगी ए. लजाया न्हां भगी ए ॥ १९ ॥
 लोक करे चोरी नी वात. ते दुपे मात्र नें तात ।
 वळे ज्व रोवता ए. नीचो जीवता ए ॥ २० ॥
 चोरी सूं दुख अतंत. तिगरो कहिता न आवे अंत ।
 चिहूँ गति में भञ्जे वणो ए. ते पाप चोरी तपो ए ॥ २१ ॥
 इन सांभलनें नर नार. चोरी म करो लिगार ।
 समता रत जांपनें ए. त्यागो जांपनें ए ॥ २२ ॥
 कोडे आपे मन वैराग. चोरी सर्व धनी दे त्याग ।
 करण जोग करी ए. नन समता वरी ए ॥ २३ ॥
 कोडे सुंस करे दे सांग. तिगरा वना नीकल्ली सांग ।
 महा पापी मोटकी ए. कर्मा दियो धाको ए ॥ २४ ॥
 चौडो पाल्सी सुंस, त्यांरी पुरी जे मन हूंत ।
 जासी देवलोक में ए. केई जाए मोक्ष में ए ॥ २५ ॥

व्रत चौथो

(स्वदार संतोष परदार विरमण व्रत)

ढाल : ४

दुहा

मनष तणो भव पाय ने, जे नर पाले सील ।
सिव रमणी बेगी बरे, रहे मुगत में लील ॥ १ ॥
साधु त्यागे सर्वथा, ग्रहचारी पर नार ।
माठी निजर जोवे नहीं, तिण रो खेवो पार ॥ २ ॥
एक एक श्रावक एहवा, आंणी मन बैराग ।
भोग जाणी विष सारिषा, घर नारी दें त्याग ॥ ३ ॥

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

चौथो व्रत इम जाण, अबंभ तणा पचखांण ।
देवंगण मिनषणी ए, त्यागे तिरजंचणी ए ॥ १ ॥
बले पोता री नार, तेहनो करे विचार ।
तजे दिन रात नी ए, परणी हाथ नी ए ॥ २ ॥
परवीयादिक नो नेम, निरतो पाले एम ।
मोहणी परहरे ए, आतम वस करे ए ॥ ३ ॥
कोई सर्व थकी दे त्याग, आंणी मन बैराग ।
विषे ओधरे ए, ब्रह्म व्रत घरे ए ॥ ४ ॥
मारे घर नारी सूं नेह, तिणनें किम वूं छेहे ।
आतम वस नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ५ ॥
करूं दिवस दिवस तणा पचखांण, रात तणो परमाण ।
संतोष आदरूं ए, विषे परहरूं ए ॥ ६ ॥
पर नारी सूं पेम, म्हें कीघो छे नेम ।
सूइ डोरे करी ए, एसी विरत घरी ए ॥ ७ ॥
जे सेवे पर नार, ते गया जमारो हार ।
नरकां मांहे पड़े ए, ढीलो नहिं करे ए ॥ ८ ॥
चौथो व्रत घणो श्रीकार, सारा व्रतां रो सिरदार ।
व्रतां रो नायको ए, मुगत रो दायको ए ॥ ९ ॥

सील व्रत छे मोटो रतन्न, तिणरा करे जतन्न ।
 ते आतम उधरे ए, सिव रमणी वरे ए ॥ १० ॥
 ए व्रत पाले निरवोष, त्याने नेडी छे मोख ।
 तिण में सका नही ए, श्री जिण मुख कही ए ॥ ११ ॥
 चारुं जात रा देव, करे ब्रह्मचारी नी सेव ।
 बले सीस नमावता ए, बांदि गुण गावता ए ॥ १२ ॥
 जिण चोथो वरत दीयो भांग, त्यारो घणा नोकलसी सांग ।
 ते नरक माहे पडे ए, घणो रडवडे ए ॥ १३ ॥
 इह लोके फिट फिट होय, पर लोके दुरगति जोय ।
 तिण जन्म विगांडीयो ए, मानव भव हारीयो ए ॥ १४ ॥
 जातवंत कुलवंत, ते आतम नित दमंत ।
 ते व्रत पालसी ए, कुल उजवाळसी, ए ॥ १५ ॥
 नही जातवंत कुलवंत, बले रस गिबी अतंत ।
 ते विषय रो प्यासीयो ए, तिण व्रत विणासीयो ए ॥ १६ ॥
 निरलजा लज्या रहीत, बले विषय विकार सहीत ।
 तिण व्रत ने कापियो ए, ते मोटो पापीयो ए ॥ १७ ॥
 ब्रह्म व्रत रा भांगणहार, धिग त्यारो जमवार ।
 ते न्यात लज्जावणा ए, दुरगति ना पावणा ए ॥ १८ ॥
 घणा लोका रे माहि, उचे सुर बोल्यो न जाय ।
 आ खांमी मोटी घणी ए, व्रत भांग्यां तणी ए ॥ १९ ॥
 कोइ ओ मोटो करे अकाज, लज्यावंत ने आवे लाज ।
 निरलजा लाजे नही ए, सेहल गिणे सही ए ॥ २० ॥
 इण सील भांग्यां रो सोय, कहतब न मिटे कोय ।
 आ मोटी मेहणी ए, जीवे ज्यां भणी ए ॥ २१ ॥
 इण पापी कियो अकाज, अजेय न आवे लाज ।
 तोही बोले गाजतो ए, निरलज नही लाजतो ए ॥ २२ ॥
 ब्रह्म व्रत तपो करे भांग, तिणरो कदे न कीजे संग ।
 कुकर्म माहे मिलीयो ए, कर्म कादे कलीयो ए ॥ २३ ॥
 जो सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 लजावे न्यात में ए, पडियो मिथ्यात मे ए ॥ २४ ॥
 परनारी मा बेन समान, त्यां सून करे माठो घ्यान ।
 चित चीखो कीयो ए, ब्रह्म व्रत लीयो ए ॥ २५ ॥

कोइ छोडी सर्म नें लाज, त्यांसूं इज करे अकाज ।
 ते निरलज नहिं लाजीयो ए, डाकी वाजीयो ए ॥ २६ ॥
 कर्म जोगे जाए भाज, पिण केकां ने आवे लाज ।
 केइ लाजे नंही ए, वेसरमा सही ए ॥ २७ ॥
 केई सीदावें मन मांय, म्हें मोटो कियो अन्याय ।
 पिछ्छतावे घणों ए, खोटा किरतब तणो ए ॥ २८ ॥
 जिणरो चोथो वरत गयो भांग, तिणरो पूरो - अभाग ।
 ते, नागो निरलजो - ए, तिण में नही मजो ए ॥ २९ ॥
 ब्रह्म व्रत तणी नव बाइ, ते पाले निरतीचार ।
 अडिग सेंठो घणो ए, मन जोग तणो ए ॥ ३० ॥
 जिण लोपे दीधी वाइ, तिण रो हुवे विगाइ ।
 खुराबी हुवे घणी ए, ब्रह्म व्रत तणी ए ॥ ३१ ॥
 व्रत भांग सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 फिट फिट हुवे घणो ए, कुजस तिण तणो ए ॥ ३२ ॥
 चोखे चित्त पाले सील, ते रहे मुगत में लील ।
 राखे नित आसता ए, पामें सुख सासता ए ॥ ३३ ॥
 दिन दिन चढते रंग, पाले व्रत अमंग ।
 मन सुमता घरें ए, ते सिब रमणी वरे ए ॥ ३४ ॥
 ब्रह्म व्रत ने श्री जगदीस, उपमा कही बतीस ।
 दसमा अंग में कही ए, ते सुरा पाले सही ए ॥ ३५ ॥
 करण जोग सूं जाण, विवरा सुध पचखाण ।
 चोखे चित्त पालीये ए, दोषण टालिये ए ॥ ३६ ॥

व्रत पांचमों

(स्थूल परिग्रह विरमण व्रत)

ढाल : ५

दुहा

पांचमे व्रत त्यागे परिग्रहो, ते परिग्रह मुरच्छा जाण ।
तिण सूं निरंतर जीव रे, पाप लागे छे आण ॥ १ ॥
ए मोटो पाप छे परिग्रह, तिण थी गोता खांय ।
सांसो हुवे तो देखलो, तीन मनोरथ मांय ॥ २ ॥
ओ अनर्थ ग्यांनी मापीयो, नरक ले जावे तांण ।
जती मार्ग नो भांडणो, निषेधों इम जाण ॥ ३ ॥
खेतू वथू हिरण सोवन तणो, धन ने धान जाण ।
वले दोपद नें चोपद तणा, कुंवि घात तणो परमाण ॥ ४ ॥
खेतू ते उघाड़ी भूमका, वथू हाट हवेली जाण ।
रूपा नें सोना तणो, करे सक्त सारू पचखाण ॥ ५ ॥
घनते रोकड नांणो गिणती तणो, धान री जात अनेक ।
कुंवीघात ते घर विलेरो कह्यो, त्यांने त्यागे आंण विवेक ॥ ६ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्य छे, यां सगला रो करे प्रमाण ।
राख्या ते सगला इविरत में छें, वाकी सगलां राकीया पचखाण ॥ ७ ॥
ए नवोड जात रो, बाहिरज परिग्रह जाण ।
मुर्छा अभितर परिग्रहो, तिण सूं पाप लागे छे आण ॥ ८ ॥
वाहिरज परिग्रह नव जात रो, ममता कर ग्रह्यो छे ताहि ।
तिण सूं यानेइ परिग्रह कह्यो, पिण यां सूं पाप न लागे आय ॥ ९ ॥

ढाल

[जिश भाष्या पाप अठार]

परिग्रहा नो परिहार, संख्या करे विचार ।
ममता उवरे ए, नव भेदे करे ए ॥ १ ॥
खेतू वथू छें जेह, सोनो रूप्यो तेह ।
धन धान दोपद ए, कुंवी घात चोपद ए ॥ २ ॥
ए नव विच संख्या थाय, वंछा दीए मिटाय ।
त्रिसणा परहरे ए, मन सुमता धरें ए ॥ ३ ॥

ममता वडी बलाय, चिहुं गति में लटकाय ।
घणो रडबडे ए, नहिं जक पडे ए ॥ ४ ॥
मन सूं करी विचार, ए नरक तणी दातार ।
एहने टालवे ए, व्रत ने पालवे ए ॥ ५ ॥
नव जात रो परिग्रह नाहि, विचार करो मन मांहि ।
मुर्छां परिग्रहो ए, ओ मारग नरक रो ए ॥ ६ ॥
ए मोटो प्रतिबंध पास, करे बोध बीज रो नास ।
मारग छै कुगत रो ए, फलतो मुगत रो ए ॥ ७ ॥
परिग्रह छे मोटो फंद, कर्म तणो छै बंध ।
नरक पोंहचावे सही ए, तिहां मार घणी कही ए ॥ ८ ॥
परिग्रह छै महा विकराल, मोटो छै माया जाल ।
तिण में खूता सही ए, धर्म पावे नहीं ए ॥ ९ ॥
कनक कामणी दौय, त्यासूं दुरगति होय ।
फंद छे मोटका ए, त्यासूं खाए धका ए ॥ १० ॥
कनक कामणी दौय, पेला ने पकड़ावे कोय ।
तिण फंद में नाख्यो सही ए, निकल सके नहीं ए ॥ ११ ॥
परिग्रहो दीघां कहे धर्म, ते भूला अयांनी भर्म ।
धारे कर्म घणा सही ए, समझ पड़े नहीं ए ॥ १२ ॥
इण परिग्रहा तणा दलाल, त्यांमे पिण होसी हवाल ।
दुख नरकां तणा ए, सहसी अति घणा ए ॥ १३ ॥
ए राख्यां लागे छै कर्म, रखायां पिण नहीं धर्म ।
तीनू करण सारिखा ए, ते करजो पारिखा ए ॥ १४ ॥
परिग्रहा नां दातार, त्यारा सावद्य जोग व्यापार ।
मारग नहीं मोखरो ए, छावो लोक रो ए ॥ १५ ॥
असणादिक च्याहं आहार, श्रावक रे परिग्रहा मभार ।
ते खाए खवावे सही ए, तिणमें पिण धर्म नहीं ए ॥ १६ ॥
श्रावक ते माहों मांहि, देवो लेवो छे ताहि ।
ते सगलो परिगरो ए, सका मति करो ए ॥ १७ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र दरव, तिण में आय गया छै सरव ।
ए सगलोइ परिगरो ए, ते ममता मांहे खरो ए ॥ १८ ॥
सचित्तादिक सगला ताहि, गृहस्थ रे परिग्रहा मांहि ।
कह्यो उववाइ उपांग में ए, वले मूयगडायंग में ए ॥ १९ ॥

त्यांरो श्रावक कीयो परमाण, त्याग्या त्यांरी विरत पिछांण ।
 झाकी इविरत में राखीया ए, सुतर छे साखीया ए ॥ २० ॥
 सचित्तादिक सारां मांहि, साचां रे इवरित नांहि ।
 त्यां मुर्छा परहरी ए ममता उवरी ए ॥ २१ ॥
 परिग्रहो दीयां धर्म ह्वेत, तो जिण आ-या देत ।
 कहे कहे ने दरावता ए, धर्म करावता ए ॥ २२ ॥
 इण धन थी अनर्थ होय, धर्म धुरा न चले कोय ।
 भव भटकावणों ए, दुर्गति पोचावणो ए ॥ २३ ॥
 धन थी, धर्म न थाय, तीन काल रे मांहि ।
 साचो कर जाणजो ए, संका मत मांणजो ए ॥ २४ ॥
 इण परिगरा माहें रक्त, त्याने आवै नहीं समक्त ।
 मुरझ्या तिण में सही ए, समझ पड़े नहीं ए ॥ २५ ॥
 ज्यारे परिगरा सूं छै प्रीत, ते हूसी घणा फजीत ।
 नरकां जावसी ए, भीकां खावसी ए ॥ २६ ॥
 इण थी बघे संसार, जाए नरक निगोद मझार ।
 घणो रडवडे ए, जक नहीं पड़े ए ॥ २७ ॥
 सचित अचित ब्रव्य छे ताहि, ग्रहस्थ रे अन्नत मांहि ।
 ज्यांरो त्याग कीयो नहीं ए, त्यारो पाप लागे सही ए ॥ २८ ॥
 तीनां करणां लागे पाप, तिण सूं दुख भुगते आप ।
 त्याने त्याग्यां विरत हुसी ए, जब जीव होसी खुसी ए ॥ २९ ॥
 करण जोग घालीजे जाण, कीजे सुघ पचखांण ।
 चोखे चित पालीये ए, दोषण टालीये ए ॥ ३० ॥



व्रत छठा

(दिशि परिमाण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

पांच अणुव्रत धारतां, मोटी बांची पाल ।
छोटा री इविरत रही, ते पाप आवें दगचाल ॥ १ ॥
तिण इविरत मेटण मणी, पहलो गुणव्रत देख ।
दिस मरजाद मांडले, टाले पाप विशेष ॥ २ ॥
मांहिली इविरत मेटवा, झूजो गुणवरत धार ।
द्रव्यादिक त्यागन करे, भोगादिक परिहार ॥ ३ ॥
जे द्रव्यादिक राषीया, तेहनी इविरत जाण ।
अर्थ डंड छूटे नहीं, अनर्थ डंड पचखाण ॥ ४ ॥
छठो वरत श्रावक तणो, करे दिस तणो परमाण ।
हिंसादिक त्यागे छहं दिस तणा, मन माहें सुमता आण ॥ ५ ॥

ढाल

[इथ पुर कबल कोई न लेसी]

उंची नीची दिस कोस बे च्यार, तिण बाहिर सावध परिहार ।
त्रिछी दिस पांच सो परमाण, हण विव दिस तणा पचखाण ॥ १ ॥
प्रथवीयादिक जीव न मारें, छोटाइ भूठ तणो परिहारें ।
चोरी न करे मझुन टाले, धन सूं ममता पाछी बाले ॥ २ ॥
माहें बेठो पिण बारलो लेवो ने देवो, तिण रा पिण त्याग करे सयमेवो ।
बारली वसत माहें मंगावे नाही, मांहिली वसत वारे मेले नहिं कांई ॥ ३ ॥
जिगन तो एक आश्रव त्यागे कोई, उतकष्ट आश्रव त्यागे पांचोंइ ।
एक करण तीन जोग सूं जाण, बारला आश्रव ना करे पचखाण ॥ ४ ॥
कोइ दोय करण तीन जोगां सूं ताहि, त्याग कर ने अव्रत देवे मिटाय ।
कोइ तीन करण तीन जोगां जाण, पांचोंइ आश्रवनां करे पचखाण ॥ ५ ॥
बारला आश्रवनां कीवा त्याग, इविरत छोडी छैं आण वेंरग ।
पेत्र थकी सर्व पेत्र में जाण, काल थकी जावजीव पचखाण ॥ ६ ॥
कोइ देवादिक तिण नें न्हांखे बार, तो पिण नहिं सेवे तिहां आश्रव दुवार ।
कोइ कष्ट पढ्यां राखे छैं अगार, पोता नी कचाइ जांणी तिणवार ॥ ७ ॥

कोइ मित्री देवादिक ने बोलावे, तिण आगें आपरो कांम करावे ।
 तिण पिण छठे व्रत लियो तिवार, इतरो तो पहिला राख्यो छै आगार ॥ ८ ॥
 इत्यादिक राखे आगार अनेक, आगार विना करे नहिं एक ।
 आगार राख्यां इविरत रो पाप लागे, विना आगार करे तो छठे व्रत भांगे ॥ ९ ॥
 छठ व्रत तणो छे बोहत विसतार, ते कहितां कहितां न आवे पार ।
 ओ तो संक्षेप मातर कह्यो विसतार, बुद्धिवंत जाण लेसी अनुसार ॥ १० ॥
 छठे व्रत एहवा पचखांग, माहें घणा दरबादिक जांग ।
 तेहनी इविरत टालण काज, सातमो व्रत कह्यो जिणराज ॥ ११ ॥



व्रत सातमों

(उपभोग परिभोग परिमाण व्रत)

ढाल : ७

दुहा

सातमों व्रत श्रावक तणो, तिण में उवभोग परिभोग नो त्याग ।
गमती वस्त त्यागे तेहनें, आवे छे इधिक वैयाग ॥ १ ॥
भोग आवे एक वार मे, ते कहिये उवभोग ।
वाह्वार आवे भोग जीव रे, तिण ने कहा छे परिभोग ॥ २ ॥
उवभोग परिभोग श्रावक तणें, इविरत मे कहा भगवान ।
त्यारो त्याग करे सद्गुरु कनें, ते सातमों व्रत परधान ॥ ३ ॥
उवभोग परिभोग काम भोग छै, माहा दुखां री खान ।
तिणने कपाक फल री दीधी ओपमा, भगवंत श्री चिरघमान ॥ ४ ॥

ढाल

[इय पुर कवत कोई न लेसी]

अंगोचा दातण पल अभंगण, उगटणो पीट्टी ने मंजण ।
वत्थ वलेपण पूफ आभरण, धूपखेवण पीवण ने भवण ॥ १ ॥
ओदन सूप विगे साग विमास, महुर जीमण पांणी मुखवास ।
वाहण सयण पानीय सचित्त, द्रव संख्या कर त्यागे एक चित्त ॥ २ ॥
ए छावीस बोल तणो परमाण, घिन त्यागे ते सुमता आण ।
नाम लेइ विवरो कर लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ॥ ३ ॥
ए छावीस बोल भोगवीयां संताप, भोगवायां पिण लागे पाप ।
अणमोद्यां धर्म किहां थी होइ, तीनूइ करण सरीपा जोइ ॥ ४ ॥
मूरख रे दिल बात न वेसे, न्याय छोड भगड़ा में पेसे ।
सुगुर छोड कुगुर सूं परचा, भारी हुवे कर उंची चरचा ॥ ५ ॥
विरत इविरत कही जिण न्यारी, समके नहिं तिण रे कर्म भारी ।
मूढ मती नव तत्व नहिं जाणे, लीची टेक छोडे नहिं ताणे ॥ ६ ॥
छावीस बोल तणो आगार, ते तो इविरत आश्व दुवार ।
त्यामें केइ उवभोग ने केइ परिभोग, त्याने भोगवे ते तो सावद्य जोग ॥ ७ ॥
त्यारो त्याग करे मन सुमता आण, सकत साहं करे पचखाण ।
एक करण ने तीन जोगां सूं त्यागे, जव पांते भोगवण रो पाप न लागे ॥ ८ ॥

द्वेय करण तीन जोग सूं पचखाण, ते पोते पिण भोगवे नहि काइ, तीन करण तीन जोगा युं त्यागे, भोगवे नहि भोगवावे नाहीं, जे जे सेरी छूटी रही ताहि, जे सेरी रुकी ते संवर दुवार, छूटी सेरी में श्रावक खावे ने खवावे, रुकी सेरी में खावे खवावे नाही, श्रावक ने मांहे मां छ काय खवावे, ए इविरत रा सावद्य जोग व्यापार, श्रावक ने माहों मां छ काय खवावे, तिण माहै धर्म मिथ्याती जाणे, विरत आश्री श्रावक ने कह्यो छे धर्मी, तिण सूं श्रावक ने धर्मी अधर्मी जाणो, श्रावक रो खाणो पीणो ने गेहणों, ते तीनोइ करण इविरत मे घाल्यो, बाब्द रूप रस गृध ने फासा, एहीज उवभोग ने परिभोग, राख्या छे तिणरी इविरत जाणो, त्याने त्याग्यां होसी संवर सुखदाय, उवभोग परिभोग भोगवे जाण, भोगवावे तिणने दूजे करण पाप, अनुमोदे ते सरावे जाण जाण, श्रावक रा उवभोग परिभोग, जघन मभिम्भ ने उत्कष्टा जाण, त्यारो खाणो पीणो इविरत मे जाणो, जघन श्रावक रे इविरत घणेरी, ते इविरत आश्रव पाप रो नालो, श्रावक तप करे आंण हुलास, सावद्य जोग रुंध्यां संवर हूवो रुडे, तप पूरा हूआं पछे इविरत आगार, तिण सूं पाप कर्म लागे छे आय,

तिण छ भांगां रो पाप टाल्यो जाण । ओरां ने पिण भोगवावे नाही ॥ ६ ॥ तिण ने नव ही भागां रोपापन लागे । भोगवण वाला ने सरावे नहि काई ॥ १० ॥ तिहां पाप कर्म लागे छे आय । तिण सूं पाप न लागे लिंगार ॥ ११ ॥ खातां ने पिण छूटी सेरी में सरावे । अनुमोदना पिण न करे काई ॥ १२ ॥ वले छ काय मारे ने जीमावे । तिण माहे धर्म नही छें लिंगार ॥ १३ ॥ वले छ काय मारे ने जीमावे । कर्म तणे वस उंशी ताणें ॥ १४ ॥ इविरत आश्री कह्यो छें अधर्मी । पनवणा भगोती सू जोय पिछाणो ॥ १५ ॥ माहों मा एक एक ने लेणो ने देणो । उवांइ ने सूर्यगडावंग मे चाल्यो ॥ १६ ॥ राख्या छे तिणरी लग रही आसा । तिणरा मेले छें विवध संजोग ॥ १७ ॥ तिणरो समय समय पाप लागे छे आणो । तिण सूं इविरत रा पाप मिट जाय ॥ १८ ॥ तिण सू पाप लागे छे आंण । तिण सू पिण होसी बोहत संताप ॥ १९ ॥ तिणरे पिण पाप लागे छे आण । तीनूइ करणा छे सावद्य जोग ॥ २० ॥ श्रावक गुण रत्ना री खाण । तिणने रुडी रीत पिछाणो ॥ २१ ॥ उत्कष्टा श्रावक रे इविरत थोड़े री । तिण सू पाप आवे दगचालो ॥ २२ ॥ उवास बेलदिक करे छ मास तपसा सू कर्म करे चकचूरो ॥ २३ ॥ खाए पीए ते सावद्य जोग व्यापार । ते पाप होसी जीव ने दुखदाय ॥ २४ ॥

पारणो करे ते पहले करण जाण, करावे ते दूजे करण पिछाण ।
 सरावणवालो छै तीजे करणो, या तीनां रो बुधवत करसी निरणो ॥ २५ ॥
 पहले करण तो पाप बंधावे, तो बीजे करण धर्म किहां थी थावे ।
 तीजे करण धर्म नहि छै लिंगार, यां तीनां रा सावध जोग व्यापार ॥ २६ ॥
 सावध जोग सूं लागे छे पाप, तिण सूं आगना नहि दे आप ।
 श्रावक ने जीमायां धर्म ह्वेत, तो अरिहंत भगवंत आगना देत ॥ २७ ॥
 केइ कहे श्रावक ने जीमाया धर्म, ते भूल गया अग्यानी भर्म ।
 पोते पिण जीम्यां लागे छै पाप कर्म, औरां ने जीमायां किम हुवे धर्म ॥ २८ ॥
 कोइ कहे लाडू खवायां धर्म, ओ तप कर म्हारा काटसी कर्म ।
 तिणसू म्हे ओरां ने लाडूडा खवावां, पछे लाडूआं साटे म्हे उवास करावां ॥ २९ ॥
 पछै तो उ करसी ते उणने होय, लाडू खवाया धर्म म जाणो कोय ।
 लाडू खावां खवायां तो एकंत पाप, ते श्री जिण मुख सूं भाख्यो छै आप ॥ ३० ॥
 श्रावक ने लाडू खवायां धर्म होय, तो एहवो धर्म करे हर कोय ।
 बडा बडा श्रावक हुआ धनवंत, ते लाडूआ खवाय ने धर्म करंत ॥ ३१ ॥
 बडा बडा सेठ सेन्यापती ताहि, त्यारे हुंती धर्म री चाहि ।
 लाडू खवायां धर्म हुवे तो आचो नहि काढत, लाडू खवाय कांम सिराडे चाढत ॥ ३२ ॥
 श्रावक ने लाडू खवाया हुवे धर्म, खवावण वाला रा कट जाए कर्म ।
 तो चक्रवत बलदेव वासुदेव, ओ तो धर्म करता सयमेव ॥ ३३ ॥
 श्रावक ने लाडू खवायां हुवे धर्म, श्रावक ने लाडू खवायां कटे कर्म ।
 तो च्याहं जात रा देव सयमेव, ओ तो धर्म करत ततखेव ॥ ३४ ॥
 एहवा धर्म थी सिव सुख होय, तो देवता आगो न काढता कोय ।
 एहवो धर्म करी पुरत मन खांत, देव भव थी पाधरा मोष में जांत ॥ ३५ ॥
 लाडू खावा खवायां धर्म छै नाही, खाणो खवावणो इविरत माहीं ।
 इण माहे धर्म सरखे ते भोला, त्यारे मोह कर्म ना छै रे भखोला ॥ ३६ ॥
 लाडू खवायां धर्म नहि रे भाइ, आ तो उषाड़ी दीसे विकलाइ ।
 ओ लोलपणो जीम्या रो सवाद, तिण सूं कर्म वचें छे वाद ॥ ३७ ॥
 खाणो खवावणो त्यागे सोय, जब सातमो व्रत श्रावक रे होय ।
 जब रकती आवाता पाप कर्म, तेहिज उजळ संवर धर्म ॥ ३८ ॥

तीनों इ करण जूआ जूआ कीजे, त्याग नें आगार ओलख लीजे ।

इविरत में पाप जाण छाडीजे, विरत मे धर्म जाण वरत लीजे ॥ ३६ ॥

सातमा व्रत रो बहुतेत बिसतार, संषेप मातर कह्यो अनुसार ।

ए व्रत लेई ने चोखो पालीजे, मानव भव नो लाहो लीजे ॥ ४० ॥

डाल : ८

डुहा

उदमंग परिमोग ने, मातमों इत पर्याप्त ।
त्रिण माहें उम्मेयाग, पनरे करमादान ॥ १ ॥

डाल

[इत पुर कंकर काई न नैने]

इंत लीहाला सोनार ठंठारा, मडमूंजा कुंभार लुहारा ।
ए कर्म करी ने पेट नगोजे, ते अंगान्नी कर्म कहीजे ॥ १ ॥
वेचे साग पात कंद मूल, फल बीजादिक वान तुंडूल ।
वेचे फूलादिक सवे बनराई, ते वग कर्म कहीजे भाइ ॥ २ ॥
वेचे गाडादिक रच कराई, चोकी पाट पिल्ले वगाई ।
किवाडु थंनादिक वेचावे, जीणे साडी कर्म कहावे ॥ ३ ॥
हाट हवेची भाडे थाणे, रोकड नांणो व्याजे वाने ।
गाडादिक भाडे दे जेहू, भाडी कर्म कहीजे तेहू ॥ ४ ॥
वेचे नालेरादिक फोडी, वळे अखरोट सोनारी तोडी ।
पयर फोड वल पीस वान, पांचमों फोडी करमादान ॥ ५ ॥
कचपूरी कचडा गजदंठा, मोठी वानर पान अंतवा ।
चर्म हाड सींग पुहार, छटा कनादान ए वार ॥ ६ ॥
घातमें नदे मेनसल जाल, वेचे लाह गुली हरियाल ।
कनूंमादिक रांगन पास, दोग्ग घगा कहा जिन तास ॥ ७ ॥
नवु मान मांदग ने दाह, सारी विणे कही जिन व्याहं ।
वृत्र वही इत तेल गुल जाग, वाळ्णों ते रस दिग्ज पिछांग ॥ ८ ॥
वेचे उंट गवा ने गाय, घोडा हाथी व्हल नगाय ।
जल रुड रसम थान वगाथ, केस दिग्ज ए नवमों थाय ॥ ९ ॥
सीपीनेहरो आपुसार, नीजोयुधो मोदन वार ।
हवंसी निगवंसी दिग्जे, वसमों ते विज दिग्ज कहीजे ॥ १० ॥
सिद्ध मग्गुं प्रमुह पीलावे, इहू रस ता घान मंडावे ।
संतनीलन इयानमों कर्म, क्कता बाडे घगों अवम ॥ ११ ॥

कान फड़ावे नाक बीघावे, बलदादिक ने तणीय नखावे ।
 बारमो करमादान निलच्छण, व्रतघारी ने लागे लच्छण ॥ १२ ॥
 जाले गांम नगर दे लाय, अटव्यादिक ने दे रे लगाय ।
 वाले मुरडा ने दव आपे, तेरमो कर्म इसी पर व्यापे ॥ १३ ॥
 चवदमें भांजे नदी द्रह तीर, खेत माहे आण घाले नीर ।
 सर द्रह तलाव करे सोखत, ए कर्म करी जीव नरक पडत ॥ १४ ॥
 साध विना सगला पोखीजे, पनरमो असंजती पोख कहीजे ।
 रोजगार लेइ त्यां उपर रेवे, खाणो पीणो असंजती नें देवे ॥ १५ ॥
 ए पनरे कर्म तणो विसतार, मरजादा बांध करे परिहार ।
 पनरेई कह्या सावद्य व्यापार, करे आजीविका चलावण हार ॥ १६ ॥



व्रत आठमों

(अनर्थ दण्ड विरमण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

सात व्रत पूरा थया, हिवै आठमां नो विसतार ।
अर्थ अनर्थ ओलखवा भणी, तेहनो मुणो विचारं ॥ १ ॥
सात व्रत आदरतां थका, बाकी अन्नत रहि छे ताहि ।
तिण सूं निरंतर जीव रे, कर्म लागे छे आय ॥ २ ॥
तिण इविरत रा दोग भेद छे, तिणमें एक तो अनर्थ डंड जाण ।
एक इविरत अर्थे कही, तिण सू पाप लागे छे आण ॥ ३ ॥
अर्थ ते मुतलब आपरे, सावद्य करे विविध प्रकार ।
अनर्थ ते मुतलब विना, पाप करता पिण न डरे लिंगार ॥ ४ ॥
पाप करे छे अर्थे ने अनर्थ, त्याने रुडी रीत पिछ्छाण ।
अर्थ दड तो छोडणो दोहिलो, अनर्थ दंड रा करे पचखाण ॥ ५ ॥
अनर्थ दड तणा भेद अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
पिण थोड़ा सा परगट कळं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[इण पुर क'बल कोई न लेसी]

पहिलो भेद कह्यो अपधान, तिण थी बाचे अनर्थ खान ।
बीजे भेदे प्रमाद आखे, घ्रतादिक ठाम उचाडा राखे ॥ १ ॥
सस्त्र जोड करे विसतार, पाप उपदेश दे विविध प्रकार ।
ए अनर्थ रा करे पचखाण, सूची पाले जिणवर आण ॥ २ ॥
ए अनर्थ डड केम कहीजे, अर्थ डड सेती ओलखीजे ।
तेहना भेद छे विविध प्रकार, सखेप मात्र कळं विसतार ॥ ३ ॥
माठा ध्यान रा दोग परकार, जग में जे ध्यावे नर नार ।
आर्त्त रुद्र ध्यान ध्यावे लोग, पामे बहु विघ हर्ष ने सोग ॥ ४ ॥
सब्दादिक इद्रया ना भोग, तेहनो ध्यावे संजोग विजोग ।
रोगादिक लागे अणगमता, भोग भोगवता ल्यावे ममता ॥ ५ ॥
इण विध जीव रचे ने विरचे, आप अर्थ कुटम्ब ने परचे ।
ठाकुर चाकर सगा सनेही, बोहरा ने घुरीया आद देह ॥ ६ ॥

जिण सुषीए सुख वेदे आप, तिण दुषीये पांमिं सोग संताप ।
 ते पिण टाले सुमता आण, अनर्थं ध्यानं ध्यावा पचखाण ॥ ७ ॥
 छद्द ध्यानं हिसा जे ध्यावे, भूठ चोरी बंदीवान दरावे ।
 अर्थ करे पिण धूजे तन, अनर्थं ध्यान तजे एक मन ॥ ८ ॥
 प्रत तेलविक विणज करंतां, धूपादिक कारज अण सरतां ।
 इण विध अर्थ उघाड़ा थाय, तिणरो जतन करे चित्त ल्याय ॥ ९ ॥
 परमाद रे वस आलस आण, उघाड़ा राखण रा पचखाण ।
 घरटी मूसल उंखल राखे, म्हारे सजे नहीं इण पाखे ॥ १० ॥
 अनर्थं राखण ना पचखाण, एहवो व्रत करे मन जाण ।
 अर्थे पिण राखंता सांके, तो सस्त्र गोड़ी कुण न्हांखे ॥ ११ ॥
 भाइ भतीज चाकर ने पेस, ज्याने देवुं पाप रा उपदेश ।
 खेती विणज सोदा कर भाइ, बेठो खासी किणरी कमाइ ॥ १२ ॥
 बुववंत नर ग्यान कर देखे, कहितां लागे पाप वशेखे ।
 तो अनर्थं कृण घर में घाले, तिण श्री कर्म मेला भाले ॥ १३ ॥
 जस कीरत मान बडाइ काजे, वले सरमा सरमी लोकां री लाजे ।
 वले घर रा उदारपणा रे तांई, हिसादिक करे ते अर्थ डंड मांही ॥ १४ ॥
 जिण करतब कीयां करे लोक भंड, जे किरतब करे छे ते अनर्थ डंड ।
 छ छंडी राखी ते अर्थ डंड माहि, त्यांरे काजे हिसादिक करे छे ताहि ॥ १५ ॥
 सुयगढायंग अधेन अठारमा मभार, अर्थ डंड रा कहा छे आठ आगार ।
 आत्मा न्यातीलां रे कांम, हिसादिक करे छे तांम ॥ १६ ॥
 आगार ते घर हाटादिक कांम, परवार ते दास दासी तांम ।
 मित्री नें नाग भूत जख देव, त्यांरे तांइ हिसादिक करे सयमेव ॥ १७ ॥
 इहलोक ने वले परलोक, जीवणो मरणो ने काम भोग ।
 यारी अर्थे वंछा कियां पाप लागे, अनर्थे कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १८ ॥
 असजती जीवां रो जीवणी चावे, असंजती जीवीयां सूं हरषत थावे ।
 ए अर्थे कीयां तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १९ ॥
 असजती रो मरणो चावे, अथवा त्यांने मारे ने मरावे ।
 अर्थे तो माख्यां मरायां पाप लागे, अनर्थे माख्यां मरायां व्रत भागे ॥ २० ॥
 ग्रहस्थ नें कांम भोग भोगवायां चावे, अथवा त्यांनें काम भोग भोगवावे ।
 अर्थे भोगवायां तो पापज लागे, अनर्थे भोगवायां व्रत भागे ॥ २१ ॥
 ग्रहस्थ ने उवभोग परिभोग भोगवावे, तो निश्चेइ पाप कर्म वंदावे ।
 अर्थे भोगवावे तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे भोगवायां आठमो व्रत भागे ॥ २२ ॥
 ग्रहस्थ रो काम करे असंमात, तिणरे निश्चेइ पाप लागे साख्यात ।
 अर्थे कीयां तो अर्थ पाप लागे, अनर्थे कियां आठमो व्रत भागे ॥ २३ ॥
 कहि कहि ने कितरो एक केहूं, अर्थ नें अनर्थ डंड छे बेहूं ।
 तिनमे अर्थ री इविरत राखी छे जाण, अनर्थ डंड तणा पचखाण ॥ २४ ॥
 याने रुडी रीत पिछांणी लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ।
 यामें रोक्री सेरी तिण माहें छे धर्म, छूटी सेरी छे तेहीज अधर्म ॥ २५ ॥
 आठमा व्रत रो बोहत विचार, ओ तो अल्प मातर क्हावो विसतार ।
 हिवे नवमो व्रत कहूं छूं ताहि, सांभलजो भविषण चित्त ल्याय ॥ २६ ॥

व्रत नवमों

[सामायिक व्रत]

ढाल १०

दुहा

पांच अणुव्रत फेल्तां, गुणव्रत दे संकड़ाय ।
 सिख्या व्रत जिम चोटली, कहे ओपमा ल्याय ॥ १ ॥
 जिम देवल इंडो चढ़े, मुगट मस्तक अंत ।
 जिम समदिष्टी जीवड़ा, सिख्या व्रत पार्लंत ॥ २ ॥
 व्रत आठ पहेलां कह्या, जावजीव लग जांण ।
 सिख्या व्रत च्यारां तणा, विविध पणे पचखांण ॥ ३ ॥
 सामायिक महोरत एक नी, जो करे चित ल्याय ।
 देसावगाली व्रत ना, जिम करे तिम थाय ॥ ४ ॥
 पोसो हुवे दिन रात नो, जो ध्यावेनिरमलध्यान ।
 बारमो व्रत सुष साव नें, देवे सूभ्रतो दान ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[मम करो काया माया कारमी]

सामायिक	सुमता	पणे,	सावद्य	जोग	पचखांण	जी ।	
काल	थी	मोहरत	एक नी,	दुविहं	तिविहेणं	जांण जी ॥	
				सिख्या	जी	व्रत आराधीए* ॥ १ ॥	
उतकप्टे	भांगे	करे,	तीन	करण	तीन	जोग जी ।	
प्रहवासा	तणी	वात	नो,	न	करे	हर्ष न सोग जी ॥ २ ॥	
उपगरण	सदाइ	करतां	राषीया,	तिण	उपरंत	कीया पचखांण जी ।	
राख्या	ते	इविरत	परिमोग	री,	तिणरो	पाप निरंतर	जांण जी ॥ ३ ॥
उपगरण	समाइ	में	राखिया,	त्यांरो	पिण	करे परमाण जी ।	
वाकी	तीन	करण	तीन	जोग	सूं,	पांचूं आसव ना पचखांण जी ॥ ४ ॥	
ते	उपगरण	पेहरे	ओडे	वावरे,	विछांणणादिक	करे वारंवार जी ।	
ते	सरीर	री	सातादिक	कारणे,	ते	तो सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ५ ॥	
वले	गेहणां	आभरण	कनै	रह्या,	ते	पिण इविरत में जांण जी ।	
तिणरो	पिण	पाप	निरंतर,	समे	समे	लागे छे जांण जी ॥ ६ ॥	
ते	गेहणा	आभरण	रा	जतन	करे,	त्यांमूं	राजो हुवे तिण वार जी ।
आगो	पाछो	समारै	तिण	अवसरे,	सावद्य	जोग व्यापार जी ॥ ७ ॥	

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपगरण गेहणा कने राखीया, ते तो नहि आवे समाइ रे काम जी ।
 काम तो आवे छे परिभोग में, सुख साता सोमदिक तांम जी ॥ ८ ॥
 समाइ री तो दीधी जिण आगना, ते तो समाइ छे संवर धर्म जी ।
 उपगरण ने गेहणा परिभोगव्यां, तिण सू तो लागे पाप कर्म जी ॥ ९ ॥
 समाइ में श्रावक री आत्मा, अधिकरण कही जिण राय जी ।
 भगोती रे सतपंच सात में, पहिला उदेसा रे माय जी ॥ १० ॥
 अधिकरण ते सस्त्र छ कय रो, तिण नें सातरो करे अंसमात जी ।
 तिणरी सार संभाल जतन करे, ते सावच्च जोग साख्यात जी ॥ ११ ॥
 कपडो ओढे पेहरे वावरे, बले वियावचादि करे ताहि जी ।
 तिण अधिकरण ने सांतरो कीयो, तिण री आगना न दे जिणराय जी ॥ १२ ॥
 अंसमात सरीर रो कार्य करे, ते तो सावच्च जोग छे ताहि जी ।
 तिण सू पाप कर्म लागे जीव रे, तिणरी आगना न दे जिणराय जी ॥ १३ ॥
 हालवो चालवो सरीर नो, सुख साता काजे करे जाण जी ।
 ते सावच्च जोग श्री जिण कह्या, तिण सू पाप कर्म लागे आण जी ॥ १४ ॥
 जिण किरतव कीयां जिण आगना नही, ते सावच्च जोग साख्यात जी ।
 जिण किरतव कीया जिण आगना, ते निरवद जोग विख्यात जी ॥ १५ ॥
 उपगरण गेहणा ने सरीर ना, जतन करे समाई मभार जी ।
 त्याने जिण आगना नही सर्वथा, सावच्च जोग तणो छे व्यापार जी ॥ १६ ॥
 कने राख्या छे त्यारा जतन करे, ओ तो राख्यो समाइ मे आगार जी ।
 समाइ करतां ज्याने त्यागीया, त्यारा जतन नही करणा लिमार जी ॥ १७ ॥
 श्रावक रा उपगरण इविरत मभे, कह्या उवाइ ने सूयगडाअंग मांय जी ।
 त्याने सेववो सावच्च जोग छे, तिण सू आगना न दे जिणराय जी ॥ १८ ॥
 कोइ कहे सामाइ कीधी तेहने, सावच्च जोग पचखाण जी ।
 तिणरे पाप रो आगार किहां थी रह्यो, कोइ एह्वी पूछा करे आंण जी ॥ १९ ॥
 तेहने - जाव इम दीजिये, सर्व सावच्च नहि पचखाण जी ।
 सर्व सावच्च रा त्याग साचां तणे, तेहनी करो पिछांण जी ॥ २० ॥
 छ भागा समाइ में पचखीया, तिणरे तीन भांगां रो आगारं जी ।
 तिणरे पाप लागे छे निरतर, तिणरा जोग छे सावच्च व्यापार जी ॥ २१ ॥
 तिणरे पुत्रादिक हूआं हरषत हुवे, मूजां गयां हुवे सोग जी ।
 इत्यादिक आगार समाइ मभे, एहवा सामाइ में सावच्च जोग जी ॥ २२ ॥
 गहणो - पडतो - हुवे तेहने, जतन करे सामाइ रे मांहि जी ।
 ते पिण सावच्च जोग छे, तिणरी आज्ञा न दे जिणराय जी ॥ २३ ॥

मरीरः कपडादिक नेहना, जतन करे सामाह रे संय जी ।
 लाय चोगादिक ना संय थकी, एकान ठामें जेणा मूं जाय जी ॥ २४ ॥
 इले मरुप गजादिक ना भय थकी, एकंत ठामें जयणा सूं जाय जी ।
 ने निण मावद्य जोग छै, आगार सेव्यो समाह रे माहिं जी ॥ २५ ॥
 लाय मपादिक ग भय थकी, जेगा सूं नोकल जाए वार जी ।
 पारवती मिनख वेठो हुवे, त्यानिं तो नहिं लेजावे लार जी ॥ २६ ॥
 आररो तो आगार गनीयो, बीरां रो तो नहिं छे आगार जी ।
 बीरां ने त्याग्या नमाह मके, त्यानि किण विच लेजावे वार जी ॥ २७ ॥
 लाय चोगादिक ग भय थकी, राख्या ने उपवि ले जाय जी ।
 पारवती कपडादिक हुवे घणा, त्यानि वारे ले जावे नहिं ताहि जी ॥ २८ ॥
 राख्या ने दरव ले जावतां, समाह रो भंग न थाय जी ।
 ज्यानि त्याग्या छे त्यानि लेजावतां, समाह रो व्रत भागे जाय जी ॥ २९ ॥
 निण मूं सर्वथा सावद्य जोग ग, समाह में नहिं पचखांण जी ।
 आगार उपरंत मावद्य जोग ग, पचखांण कीया छे पिछांण जी ॥ ३० ॥
 निण मूं श्रावक रे त्याग कीया तके, ने मावद्य जोग ग पचखांण जी ।
 सर्वथा सावद्य जोग ग, ने तो त्याग मात्रां तथा जांण जी ॥ ३१ ॥
 उगरण नमाह में राक्षिया, ने तो वेले करण लेजो जांण जी ।
 ते बीरां ने भोगावती किण विवे, बीरां ग तो कीया छे पचखांण जी ॥ ३२ ॥
 द्रव्य थकी तो कते निण उपरंत ग, सगलां रा कीया पचखांण जी ।
 न्नेत्र थकी नवे न्नेत्र मके, काल थी मोहृत जांण जी ॥ ३३ ॥
 नाव थी गग द्रेण रक्षीन छै, तत्र संव निरजग गुण थाय जी ।
 इण गिने नमाह ओल्लव करे, जव भावे नमाह हुवे नाय जी ॥ ३४ ॥
 श्रवण सगलां ने न्याने दिया, त्यांमूं इज करे संभोग जी ।
 जव भागे नमाह व्रत नेहनां, इणरा वरतीया मावद्य जोग जी ॥ ३५ ॥
 कोइ नमाह में नमाहवाला तणां, कारज कण्ठो छे जांण जी ।
 निणगे कारज कीयां नमाह भागें नहिं, निणगे पिण करे परिमाण जी ॥ ३६ ॥
 नमाह में माहोनां कारज करे, ने तो मूत्र माहिं वीपे नहिं नाय जी ।
 निणगे निश्चै तो श्रावणी आवे नहिं, त्यांती वदे ते मत्य बाय जी ॥ ३७ ॥
 कोइ कहे नमाह में गन्वी पूजणी, गन्वी ने दया रे काम जी ।
 निणगे जाव मुणो विवग मुच, चित्त गले एक ठाम जी ॥ ३८ ॥
 मरीगदिक पूजे नमाह मके, मानरादिक पठे छे पूज जी ।
 एहवा कारज री जिग आगना नही, निण में घर्म कहे ते अबूज जी ॥ ३९ ॥

सरीर ने पूजे परठे मातरो, ते तो सरीरादिक नो छे काज जी ।
 जो धर्म तणो कार्य हुवे, तो आगना दे जिणराज जी ॥ ४० ॥
 जो पूजणो परठणों करे नही, तो काया थिर करणी एक ठाम जी ।
 हस्तादिक नें विना हलवीयां, रहणी ना आवे छे तांम जी ॥ ४१ ॥
 बले आ बावा लघू बड़ी नीत नी, खमणी न आवे छे तांम जी ।
 तिण सू पूजे छे जायगा जोय ने, ते समाइ तणो नहिं काम जी ॥ ४२ ॥
 माखी माछर कीड़ी आद दे, ते तो लामे सरीर रे आय जी ।
 ते खमणी नावे छे तेहथी, तिण सू पूजे परीकरे ताय जी ॥ ४३ ॥
 जो काया थिर राखे एक आसणे, तिण रे पूजण रो कांई काम जी ।
 परीसो खमणी नावे तेह सू, पूजणी राखे छे तांम जी ॥ ४४ ॥
 जो इतरी कहुं समझ पड़े नही, तो राखणी जिण परतीत जी ।
 जिण आगना बारे धर्म सरध ने, नही करणी एहवी अनीत जी ॥ ४५ ॥
 सरीर उपगरण रा जतन कीयां, सावच्च जोग ब्यापार जी ।
 सरीर सू किरतब निरबद करे, तिण ने जिण आगना श्रीकार जी ॥ ४६ ॥



व्रत दसमों

(देसावगासी व्रत)

ढाल : ११

दुहा

दसमा देसावगासी वरत छँ, तिणरा छँ भेद अनेक ।
थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

देसावगासी व्रत ना, भांगा हुवे विव दोग जी ।
पेहलो छे छठा व्रत नी परे, हूजो सातमा ज्यू जोग जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥

दिन परते प्रभात थी, छ दिसरो कीधो परिमाण जी ।
मरजादा कीधी तिण बारला, पाचू आश्रव ना पचखाण जी ॥ सि० २ ॥
जे भोमका राखी छे भोकली, तिण माहे द्रव्यादिक व्यापार जी ।
मरजादा सकत सारुं करे, भोगादिक परीहार जी ॥ ३ ॥

काल थी दिवस ने रात नो, भावना विवध प्रकार जी ।
करण जोग घाले जेतला, जेहवो करे परीहार जी ॥ ४ ॥

वले जगन नवकारसी आदि दे, उतकण्टो घाले काल कोय जी ।
मरजाद सू त्यागे सावद्य भणी, जिम करे तिम होय जी ॥ ५ ॥

कोइ करे छँ त्याग हिंसा तणो, तिण मे काल रो करे परमाण जी ।
ते त्याग पूरो हूआं तेहने, आगे तो नहीं पचखाण जी ॥ ६ ॥

हिंसा भूळ चोरी मैइथुन नो, वले पांचमो परिग्रह जाण जी ।
ए पाचोई आश्रव दुवार नो, काल घाले ने करे पचखाण जी ॥ ७ ॥

परमाण करे छावीस बोल नो, पनरें कर्मादान तणो परमाण जी ।
वले सचितादिक चवदे नेम नो, यांरा नित नित करे पचखाण जी ॥ ८ ॥

नोकारसी पोरसी ने पुरमढ, एकासणो आंबलादिक तास जी ।
उपवास बेलादिक तप करे, उतकण्टो करे तप छ मास जी ॥ ९ ॥

तप तणो कष्ट हूवो तको, ते करणी निरजरा तणी जाण जी ।
खावा पीवा री चिरत हुइ तका, दशमो व्रत हूवो आण जी ॥ १० ॥

जे जे सावद्य त्यागे तेहमे, काल रो करे परमाण जी ।
ते तो दशमों व्रत नीपनों, ते जावजीव नहि पचखाण जी ॥ ११ ॥

व्रत इग्यारमों

ढाल : १२

(पोषध व्रत)

दुहा

श्रावक रो व्रत इग्यारमों, पोषो कछ्छो छे भगवानं ।
तीजो सिख्या व्रत रलीयामणो, ते सुणो सुखत दे कांन ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

पोषध व्रत वखाणीये, पचखे चउ विघ आहार जी ।
अवंभ मणी सोवन तजे, माला वणग वलेपण परिहार जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधीये ॥ १ ॥

सत्य मुसलादिक आद दे, सावच्च जोग तणा पचखांण जी ।
काल थी दिवस ने रात रो, एक पोसा तणो परिमाण जी ॥ २ ॥

जगन दोय करण तीन जोग सूं, करे सावच्च जोग पचखांण जी ।
कोइ उत्कष्टे भागे करे, तीन करण तीन जोग सूं जाण जी ॥ ३ ॥

द्रव्य थकी तो कने तिण उपरत रा, कीया सर्व दरबा रा पचखाण जी ।
षेतर थकी सर्व षेतर मग्गे, काल थी दिवस ने रात जाण जी ॥ ४ ॥

भाव थकी राग द्वेष रहीत करे, वले चोखे चित्त उपीयोग सहीत जी ।
जब कर्म रुके छे आवतां, वले निरजररा हुवे रुडी रीत जी ॥ ५ ॥

उपगरण पोसा माहे राखिया, तिण उपरत कीया पचखाण जी ।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर लागे आण जी ॥ ६ ॥

पोसा ने सामायक वरत ना, सरीषा छे पचखांण जी ।
सामाइ तो मोहरत एक नी, पोसो दिन रात रो जाण जी ॥ ७ ॥

पोसा ने समायक वरत में, या दोयां मे सरीषो छे आगार जी ।
ते कछ्छा छ सगला इविरत मे, ते जोय करो निसतार जी ॥ ८ ॥

जब कोइ कहे पोषध वरत मे, मणी सोवनादिक पचखांण जी ।
तिण सूं मणी सोवन कने राखीयां, पोसो भागे गयो जाण जी ॥ ९ ॥

पोसा माहें कने राखीया, मणी सोवनादिक जाण जी ।
तिण उपरत पचखांण छे, उत्तर एह पिछ्छांण जी ॥ १० ॥

उमूक कहिता मूके दीया, त्यां मणी सोवन रा पचखांण जी ।
कने रह्या त्यांरी इविरत रही, भगोती सू करजो पिछ्छांण जी ॥ ११ ॥

मणी सोवन रा जावक पचखाण हुवे, तो उमूक रो पाठ कहिता नांहि जी ।
 ओ तो निरणो उघाडो दीसे कीयो, विचार देखो मन मांहि जी ॥ २२ ॥
 श्रेणक ने किस्नजी री राणियां, इत्यादिक हुइ राणीयां अनेक जी ।
 त्यां पोसा कीया दीसे गेहणा थकां, समझो आंण ववेक जी ॥ १३ ॥
 त्यांरी चूडीयां में हीरा पना जड्या, बले दांतां मे जांणीजे भेल जी ।
 ओर गेहणा त्यांरे पेहरणे, त्यां उतारखा नांहि दीसे छे एक जी ॥ १४ ॥
 भारी भारी जूंहर चूड्यां जड्या, बले भारी २ हाथ गला मांय जी ।
 ते सगलाइ केम उतारसी, ओ तो मिलतो न दीसे छे न्यय जी ॥ १५ ॥
 त्या कीवी समाइ संख्या काल री, समाइ करी रात परमात जी ।
 ते खिण खिण में केम उतारसी, आ पिण मिलती न दीसे छे वात जी ॥ १६ ॥
 समाइ में गेहणा न राखणा, तो चूडो न राखणो ताहि जी ।
 गेहणो ने चूडो तो एक हीज छे, दोनूंई आभूषण मांहि जी ॥ १७ ॥
 सामायक नें पोसा तणी, दोयां री विघ जाणो एक जी ।
 रीत दोयां री वरोवरी, समझो ने आण ववेक जी ॥ १८ ॥
 इहलोक रे अर्थ करे नही, न करे खावा पीवा रे हेत जी ।
 लोभ लालच हेते करे नही, पर लोक हेते न करे तेथ जी ॥ १९ ॥
 सवर निरजरा रे हेते करे, और बंछा नहि काय जी ।
 इण परिणामां पोसो करे, तो भाव थकी सुघ थाय जी ॥ २० ॥
 कोई लाडूयां साटे पोसा करे, कोइ परिग्रह लेवा करे तांम जी ।
 कोई और द्रव्य लेवा पोसो करे, ते कहिवा रो पोसो छे नांम जी ॥ २१ ॥
 ते तो अरथी छे एकंत पेट रो, ते मजूरीया तणी छे पांत जी ।
 त्यारा जीव रो कार्य सभे नही, उलटी घाली गला मांहि रांत जी ॥ २२ ॥
 लाडूया साटे पोसा करावसी, अथवा धन देइ ने तांम जी ।
 ते कहिवा ने पोसा करावीया, पिण सवर निरजरा रो नही ओकांम जी ॥ २३ ॥
 कर्म काथण ने करे मजूरीया, त्यांरा घट मांहि घोर अग्यांन जी ।
 लाडू खवाय पोसा करावणा, ए तो कठेइ नही कह्यो भगवांन जी ॥ २४ ॥
 कर्म काठण ने करे मजूरीया, त्यांरा घाट मांहि घोर अंवार जी ।
 पइसा देई पोसा करावणा, ते नाही चाल्या सुतर मझार जी ॥ २५ ॥
 मजूरीया करे खेत नेदाणवा, मजूरीया करे घर करवा कांम जी ।
 कडव काठण करे मजूरीया, कर्म काठण नही चालीया तांम जी ॥ २६ ॥
 खेत खडवा ने चाल्या मजूरीया, बले भार लेजावण कांम जी ।
 धान खाडग करे मजूरीया, कर्म काठण ने नांहि चाल्या तांम जी ॥ २७ ॥

विरक्त होय काम भोग थी, त्याने त्याग्या छै सुघ परिणाम जी ।
मोष रे हेत पोसो करे, ते असल पोसो कह्यो तांम जी ॥ २८ ॥
इण विघ पोसा ने कीजीये, तो सीभसी आतम काज जी ।
कर्म सकसी नें वले तूटसी, इम भाषीयो श्री जिगराज जी ॥ २९ ॥



व्रत वारहमों

(अतिथि सविभाग व्रत)

ढाल : १३

दुहा

अतिथि संविभाग चोथो सिख्या, ते वारमों व्रत रसाल ।
समण निग्रंथ अणगार ने, दान देवे दगचाल ॥ १ ॥
ते फासू अचित्त ने सूभत्तो, कल्पे ते दरव अनेक ।
कल्पतां खेतर काल में, दान दे आण ववेक ॥ २ ॥
जो उ दान दे मुगत रे कारणे, और वच्छा नहि काय ।
जव नीपजें व्रत वारमों, इम माप्यो जिणराय ॥ ३ ॥
इयारे व्रत वस आपरे, मन मानें जव नीपजाय ।
वारमों व्रत सुध साध ने, प्रतिलाम्यां थी थाय ॥ ४ ॥
लाखां कोडां खरचीया, जीव अनती वार ।
पिण दान सुपातर दोहिलो, जीव तणो आधार ॥ ५ ॥
इण व्रत नीपावा कारणे, उदम करे नित नेम ।
भावे सावां री भावना, हाथे दान देवण सूं पेम ॥ ६ ॥
आलस छोडणो किण विचे, किण विध देणो दान ।
उदम करणो किण विचे, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ७ ॥

ढाल

[मोह अनुकम्पा न आशीर]

वाग्गो व्रत छे श्रावक तणो, तिणरो सांभल जो विसतार जी ।
समण निग्रंथ अणगार ने, देवो चउविध सुध आहार जी ॥
इम व्रत नीपावे वारमो ॥ १ ॥
इम वसत्र पातर ने कावलो, पायपूछणों देवे एम जी ।
पीढ फलग सेज्जा ने साथरो, देवे ओपघ भेपद जेम जी ॥ २ ॥
इत्यादिक वस्तु कल्पे तका, सावां ने दीघां हरपत होय जी ।
जाणे धिन दीहाडो ने धिन घडी, वारमो व्रत नीपनो मोय जी ॥ ३ ॥
करे चितवणा साघां तणी, घर मे देखे सुध आहार जी ।
वले भांगे वेठां भावे भावना, व्रत घारी रो ओ आचार जी ॥ ४ ॥

साधु आय उभा देखे आगणे, विकसे सगली रोमराय जी ।
 असणादिक देवे भाव सूं, घणों मन रलीयात थाय जी ॥ ५ ॥
 काचा पांगी सूं थाली घोवे नही, वले सचित न राखे पास जी ।
 संघटे नहि वेसे सचित रे, व्रत नीपजावण रो हुलास जी ॥ ६ ॥
 कोई काम पडे आय सचित रो, जब पिण रीत राखे विख्यात जी ।
 दिस अवलोक्यां विण साव ने, नहि घाले सचित नें हाथ जी ॥ ७ ॥
 कल्पे ते वस्त पडी असुभती, कदे सहिजां सुभती होय जी ।
 तो उ खप कर राखे सुभती, सचित उपर न मेले कोय जी ॥ ८ ॥
 जे जे दरब जाणे छे सुभता, कल्पे ते साधु ने जाण जी ।
 तिणरी भावे निरंतर भावना, एहवा श्रावक चतुर सुजाण जी ॥ ९ ॥
 चित्त वित्त पातर तीनुं तपो, कदे आय मिले संजोग जी ।
 जब अढलक दान दे हाथ सूं, पछे न करे पिछतावो सोण जी ॥ १० ॥
 जे जे वरतधारी श्रावक हुवे, ते जीमे नहि जडे कमाड जी ।
 उवाड ने सुयगडजंग में, त्यांरा चाल्या उघाडा दुवार जी ॥ ११ ॥
 सहजे उघाडा हुवे बारणा, जब राखे उघाडा ताम जी ।
 नहि जडे उघाडे बारणा, साव ने दान देवा काम जी ॥ १२ ॥
 ओर शेष उघाड माहि घसे, साधु नावे खोल कमाड जी ।
 तिण सूं व्रतधारी श्रावक हुवे, ते तो राखे उघाडा दुवार जी ॥ १३ ॥
 सहिजे भायो छे घरे आपरे, नीपनो देखे सुघ आहार जी ।
 जब काल जाणे गोचरी तणों, तो उ बाट जेवे तिण वार जी ॥ १४ ॥
 ज्यारे हुंस घणी छे मांहिली, पोते सहय देवा दान जी ।
 त्यांरा हिरवा में साधु वस रह्या, त्यारो किण विध मूके ध्यान जी ॥ १५ ॥
 असणादिक थाल में लीवां पछे, तुरत घाले नही मुख माय जी ।
 दिस अवलोकें भावे भावना, जाणे साव पवारे आय जी ॥ १६ ॥
 इण विध भावना भावतां थका, मिले सतगुर नी जोगवाय जी ।
 तो उ दान दे उलट परिणाम सूं, चूके नहि अवसर पाय जी ॥ १७ ॥
 सकत सारू दान दे साव ने, पिण न करे कूडी मनवार जी ।
 ठाला वादल ज्युं गाजे नही, साचे मन बोले सुघ विचार जी । १८ ॥
 अढलक दान देई साव नें, पमावे नही ओरां पास जी ।
 गिरवा गभीर रहे सदा, त्यानें वीर वखांग्या तस जी ॥ १९ ॥
 अढलक दान देशो पातरे, नही जिण तिण नें आसान जी ।
 वान देवा रो ध्यान रहे सदा, एहवा विरला छे दुववान जी ॥ २० ॥
 १२

आछी वस्त गोपव राखे नही, नांणे लोलपणों ने लोभ जी ।
 गमती वसत देवे साध ने, पिण कूडी न सावे सोभ जी ॥ २१ ॥
 आप खाए ते इविरत में गिणे, बंधता जांणे पाप कर्म जी ।
 तिण सूं दांन सुपातर ने दीया, जांणें संवर निरजरा धर्म जी ॥ २२ ॥
 सुपातर दांन दे तिण अवसरे, लेखो नही करे मन मांहि जी ।
 लेखो कीयां सूं लोभ उपजे, अढल्लक दांन दीयो नहि जाय जी ॥ २३ ॥
 लाडू घोवणादिक वेहरावतो, राखे एक धारा परिणाम जी ।
 व्रतधारी आघो काढे नही, छडी जोगवाइ पाम जी ॥ २४ ॥
 कदा वेहच्छां विण पाछा फिरे, काइ आय पडे अंतराय जी ।
 जब पिच्छतावो कीयाई पुन बवे, वले कर्म निरजरा थाय जी ॥ २५ ॥
 पिच्छतावो कीयाई पुन बंधे, तो वेहरायां हुवे लाभ अनंत जी ।
 उतकण्टो तीर्थंकर पद लहे, इम भाष गया भगवंत जी ॥ २६ ॥
 सुभती वसत न करे असुभती, ते तो न देवा रे काम जी ।
 असुभती ने न करे सुभती, वेहरावण रा आण परिणाम जी ॥ २७ ॥
 जांणे ने नहीं देवे असुभती, करडे पिण वणीये काम जी ।
 निरदोषण दीघां वस्त हाथ सूं, पाछी लेवण री नहीं हांम जी ॥ २८ ॥
 दांन देवण न देवण कारणे, अतिकरमे नही काल जी ।
 मछर मांन वडाइ छोड ने, दांन देवे ते दोषण टाल जी ॥ २९ ॥
 आपणी वस्त कहे पारकी, दांन देवा काम जी ।
 धर्म ठिकांणे भूठ बोले नही, मूढे कूडी न राखे मांम जी ॥ ३० ॥
 इगारे व्रत तो त्यागन कीयां, वारमो व्रत दीघां होय जी ।
 तिण सूं कठण काम इण वरत रो, विरला नीपजावे कोय जी ॥ ३१ ॥
 सुपातर दांन देवे तेहने, नीपजे तीन बोल अमोल जी ।
 संवर निरजरा होय पुन बवे, त्यांरा अर्थ सुणो दिल खोल जी ॥ ३२ ॥
 जे जे दरब वेहराया साध ने, तिण दरब री इवरत नही काय जी ।
 ते वरत संवर हूवो इन विवे, सुम जोगां सूं निरजरा थाय जी ॥ ३३ ॥
 सुभ जोग वरत्यां हुवे निरजरा, सुभ जोगां सूं पुन बंध जात जी ।
 पुन्य सहजे हुवे निरजरा कीया, ज्यूं खाखलो हुवे गोहां रे साथ जी ॥ ३४ ॥
 उतकण्टा परिणामां दान दे, तो उतकण्टी टले कर्म छोट जी ।
 उतकण्टा बंधे पुन्य तेहने, वले बंधे तीर्थंकर गोत जी ॥ ३५ ॥
 जो उणरे पुन्य उदे हुवे इण भवे, तो दुख दाल्द्र दूर पलाय जी ।
 रिघ सपत पामे अति घणी, सुख साता मे दिन जाय जी ॥ ३६ ॥

जो उदे न आवे इण भवे, तो पर भव में संका मत आंण जी ।
 उंच गोतादिक सुख भोगवे, इण दान तणा फल जाण जी ॥ ३७ ॥
 पुन्य री बद्धा कर देवे नहि, समदिष्टी साधां नें दान जी ।
 देवे सवर निरजरा कारणे, पुन्य तो सहिजां बवे आसान जी ॥ ३८ ॥
 इविरत माहे दान देता थकां, पड़े श्रावक रे मन घट्क जी ।
 ज्यांनें दान दियां विरत निपजे, त्याने दीठाइ पामे हरष जी ॥ ३९ ॥
 काम पड़े अविरत में दान रो, जब देतो ही सरमा सम जी ।
 पछे करे पिछ्छतावो तेहनो, कांयक ढीला पाड़े कर्म जी ॥ ४० ॥
 इविरत में दान देवण तणो, टालण रो करे उपाय जी ।
 जाणे कर्म बंधे छे माहरे, मोने भोगवता दुख थाय जी ॥ ४१ ॥
 इविरत में दान देतां थकां, बवे आठोइ पाप कर्म जी ।
 सुपातर दान दियां हुदी, म्हारे सवर निरजरा धर्म जी ॥ ४२ ॥
 इविरत मे दान देवण तणो, कोइ त्याग करे मन सुघ जी ।
 तिण पाप निरंतर टालियो, तिणरी वीर बखाणी बुध जी ॥ ४३ ॥
 कुपातर दान मोह कर्म उदे, सुपातर दान खयउपसम भाव जी ।
 व्रत नीपजे सुपातर नें दियां, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव जी ॥ ४४ ॥
 सहिजा जायगां पढी हुवे सूभती, जब जोवे साधा री बाट जी ।
 तिणरे कर्म तणी निरजरा हुवे, बले बध जाए पुन्य तणा थाट जी ॥ ४५ ॥
 बाट जोवता साधु पचारिया, सेज्जा दान दे हरषत थाय जी ।
 जाणे घिन दिहाडो ने घिन घडी, माहे साध उत्तरिया आय जी ॥ ४६ ॥
 सेज्जा दान देइ सुघ साधु ने, केइ करे परत संसार जी ।
 केइ बंध पाड़े सुघ गति तणो, ते तो पामे भव जल पार जी ॥ ४७ ॥
 सिज्जा धानक दे दे साधु ने, आगे तिरिया जीव अनत जी ।
 बले त्तिरे नें तिरसी घणा, इम भाप गया भगवंत जी ॥ ४८ ॥
 दीघा दरायां नें भलो जाणिया, निर्दोष सुपातर दान जी ।
 व्रत निपजे दीघां वस्त आपरी, इम भाव्यो श्री भगवान जी ॥ ४९ ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, परिणाम चढावे विशेष जी ।
 त्यांनं दान देवा सनमुख करे, सीखावे सुघ विवेक जी ॥ ५० ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, दान देवा रा रहे परिणाम जी ।
 त्यासूं हेत राखे जिन धर्म नो, सुघ श्रावक तिणरो नाम जी ॥ ५१ ॥
 अडलक दान देतो देखे ओर ने, त्यारा पाड़े नहि परिणाम जी ।
 कदा देणी न आवे आप सू, तो कर दे तिणरा भुण ग्राम जी ॥ ५२ ॥

गुण सहणी नावे दातार ना,
 ए दोनूँ अवगुण दूरा तजे,
 और नें दान देता देखने,
 तो उ कर्म बावे महा मोहणी,
 केइ अन्यतीर्थी जीमे नहि,
 नित वारे रसोड काढनें,
 त्याने ठीक नहि त्यांरा देव री,
 तोहि राखे छे त्यारी आसता,
 तो व्रतधारी सुध श्रावक,
 ते गुर नी भावना भाया विना,
 केकारे गुरु छे अन्यतीर्थी,
 तो साध पधाख्या आंगणे,
 कोइ कहे दान घणो दडावियो,
 एहवा उधा बोले सुध बुध विना,
 दान देवा रा परिणाम जेहना,
 कहे व्रत निपजावा नी विधि,
 और व्रत कहुया छे देवल समा,
 त्यां मे सगलां सिरें व्रत वारमों,
 तिरया तिरें तिरसी घणा,
 तिण मे सका मूल न आणवी,
 सुतर पुराण कुराण मे,
 पछे पातर कुपातर ओलखे,
 वले कहि कहि ने कितरा कहुं,
 कोइ जिभ्या करे वरणवे,
 जोड कीधी बारमा वरत री,
 सवत अठारे बतीसे समे,

पोते पिण दान दियो न जाय जी ।
 श्री जिनवर नो धर्म पाय जी ॥ ५३ ॥
 कोइ वरज पाड़े अन्तराय जी ।
 एहवो श्रावक न करे अन्याय जी ॥ ५४ ॥
 यांरा ठाकुर ने विण दिया भोग जी ।
 पोषे पूजारादिक लोग जी ॥ ५५ ॥
 देवे लेवे न लेवे भोग जी ।
 नित वरतावे त्यांरा जोग जी ॥ ५६ ॥
 धर्म सू रंग्यो तन मन जी ।
 मुख में किम धाले अन जी ॥ ५७ ॥
 त्यारी करे साचे मन टेल जी ।
 त्यांने श्रावक न गिणे सेल जी ॥ ५८ ॥
 ए तो लेवा रो कीधो उपाय जी ।
 एहवी श्रावक न काढे वाय जी ॥ ५९ ॥
 ते तो सुण सुण हरषत थाय जी ।
 मोनें सतगुरु दीधी सिखाय जी ॥ ६० ॥
 सिख्या व्रत छे इडा समान जी ।
 तिणरी बुधवंत करसी पिछांण जी ॥ ६१ ॥
 इण दान तणे परताप जी ।
 श्री जिन मुख भाख्यो आप जी ॥ ६२ ॥
 पातर दान तणो अधिकार जी ।
 बुधवंत काढे निसतार जी ॥ ६३ ॥
 इण दान तणा गुण ग्राम जी ।
 पूरा कहणी न आवे ताम जी ॥ ६४ ॥
 ते तो गूंदोच सहर मभार जी ।
 जेठ विद बीज सूर्य वार जी ॥ ६५ ॥



रत्न : ३

कालवादी री चोपई

ढाल : १

दुहा

दसा सतखव सूयगडाग्रं में, अकिरीया वादी रो विसतार ।
नास्तक मत छें तेहनों, बले किरिया न मानें लिंगार । १ ॥
तीर्थकर चक्रवतादिक, बले साधु सती अणगार ।
त्याने जीव न माने सरवथा, उ जाणें भर्म संसार ॥ २ ॥
तिण नास्तकवादी रा मत तणों, कालवादी पिरवार ।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, ते भूलो भर्म गिब्वार ॥ ३ ॥
उ सरघा परुषे एहवी, कर २ खांच अतीव ।
जे सिद्धां में गुण पावे नहीं, ते गुण सर्व अजीव ॥ ४ ॥
बले असासता दरब नें इम कहें, नहीं चेतन गुण परजाय ।
उण कुण २ काल में घालीया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या...]

तीर्थकर गणवर धर्म रा नायक, आचार्य ने उवभाय मोटां अणगारो ।
साध साधवीयादिक च्याल्डै तीरथ, त्याने अजीव कहे मूढ विनां विचारो ।
आ सरघा छें कालवादी री* ॥ १ ॥
वेव गुर धर्म तीनूं रतन अमोलक, त्यारो सरणो लीयां उतरे भवपारो ।
याने अजीव कहें कोइ मूढ मिध्याती, तिण आंख मीचने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर ही काल ने चेलो ही काल, कालरो विनों काल करे उछरंगो ।
काल सूं काल सभोग करें छे, काल सू काल रो मन जाए भंगो ॥ ३ ॥
काल उपदेस दे सूतर बांचे, धर्म कथा कहें मोटे मंडाणो ।
काल ही आय बलाण सुणें छे, काल कने काल ले पचखाणो ॥ ४ ॥
काल तिरने नें काल ही तारें, काल नें काल उतारें पारो ।
काल डूबें नें काल डवोवे, काल नें काल करे छें खुवारो ॥ ५ ॥
चक्रवत वासुदेव मंडलीक राजा, ए मनष हुआं करणी कर मोटी ।
भवी दरब देवादिक पांचोइ देवां ने, यानें अजीव कहे तिणरी सरघा खोटी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वार ही काळ ते वेगवेगळे काल, काळ रे काळ वधे फिरवारे ।
 काळ जनम लेहू मोठे हूवे छे, पछे काल रे वधे छे दिव्य विकारे ॥ ७ ॥
 काळ परतीजे ते काळ परत्यावे, काळ रे काळ पावना आवे ।
 अक्षयादिक् आहार काळ नीराए, काळ जीमे ते काळ जीमावे ॥ ८ ॥
 अन्थासो पर्यातो काळ, काळ छे वाळ पुत्रान ते वृशे ।
 तेरुद्वयो गिंच्च मिनण ते देवा, ए भरला ते काल व्हें छे सुशे ॥ ९ ॥
 चाळो ही काळ ते ठोले ही काळ, काळ करे छे दिग्गज व्यानारे ।
 वेदी करमंग आदि दे काल करे छे, वले काळ करे छे म्हाडा ते राडे ॥ १० ॥
 एकत्री आदि दे पांचत्री ते, छकाय वुरा वर व्हें छे काणे ।
 चववेइ मेद छे जीवरा त्याने, याने अजीव व्हें अग्यानी काणे ॥ ११ ॥
 द्विचक्र मूढावोचो इ काळ, चोर कुमीलीयां ते वनपातर ।
 वले नीन मो तेसठ पाण्डीयां ते, याने इ काळ व्हें छे कुमातर ॥ १२ ॥
 मोदी काळ ते जोगे काळ, वेरी ते मिश्री ए पिय काळो ।
 मायादीया मिथ्यात्री ते काळ व्हें छे, इय सरवा रो बुचवंत्र करती टाळो ॥ १३ ॥
 आरत वृत्र ते वने ध्यान, ए तौनूइ ध्यान ते व्हें छे काणे ।
 छ नाव लेखा ते रिग काळ व्हें छे, मूत्र रे मिर दे दे आणे ॥ १४ ॥
 अग्यान नीन ते आरई मंजा, वले चववे गुण टांग व्हें छे काणे ।
 वृत्र अकल्पमि ए रिग काळ, ते कर रह्या मूख मूत्री म्हाळो ॥ १५ ॥
 छ नियठा ते पांचोड चाग्नि, उद्योग कर्मादि ए रिग पांच ।
 वले आत्मना च्यार ते मातृच निरवृत्र, याने काळ व्हें मूड कर र खांच ॥ १६ ॥
 इत्यादिक् जीवरा वेल अनंता, त्याने निवंचेइ काळ व्हें छे अग्यानी ।
 जे जे सभाव सिद्धां मे न पावे, ते मगला ते कर वीया काळ री कानी ॥ १७ ॥
 अनामता मगलाइ पाछे क्हा ने, त्याने तो जीव व्हेंती किज लेखे ।
 याने जीव व्हें तो मूड वेल छे, आरगी सरवा तांही वयू नही देवे ॥ १८ ॥
 जे वरवा रो वंम पर्यां जीव व्हें तो, अनामता वरव री पृछा कीडे ।
 अनामता वरव ते काळ व्हें छे, याने जीव व्हें तो मूडो धारजे ॥ १९ ॥
 अनामता वरव ते जीव व्हें छे, आरगी सरवा रो वार अज्ञां ।
 सिद्धां मे नही ते गुण ते जीव थावे, तो पात्रेइ काय न वीसे सिद्धां ॥ २० ॥
 द्विदे काव्यानी ते पृछा कीडे, संभार माहि वुख किज विच पावे ।
 कुण उजवे ते कुण खमावे, करजा रो करवा कुण व्हावे ।
 ए प्रश्न काव्यानी ते पूछीजे ॥ २१ ॥

जो करमां रो करता जीव ने थापें, तो उणरी सरघा जाबक उठजावे ।
 करता अनेक असासता दीसे, वले सिद्धां में करता कंठासूं बतावें ॥ २२ ॥
 जो करमां रो करता अजीव कहें तो, घणां लोक न मानें तिणरी वातो ।
 असरघा हुवे तो पिण छांनें राखें, एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २३ ॥
 उणरी सरघा रा एलांण एहवा दीसे, करमां रा करता ने सरघें छें कालो ।
 कदा भूठ बोले ने जीव कहे पिण, सिद्धां में नहीं करता ते सरघा संभालो ॥ २४ ॥
 सिद्धां माहें तो करता मूल न दीसें, ते जीव नें करता कहसी किण लेखे ।
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब भूठ बोलण री सेरी देखें ॥ २५ ॥
 केंतो भूठ जाणें ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजाणो ।
 ए वातरो निश्चो तो केवली जाणें, पिण बुचवंत होसी ते करसी पिछांणो ॥ २६ ॥
 श्री वीर कह्यो आचारंग माहें, करमां रो करता छे निश्चो जीवो ।
 चेतन गुण पर्याय सहीत ओलखसी, त्यारे अभितर ग्यान खुलसी घट दीवो ॥ २७ ॥
 हिंसादिक भूठ चोरी जीव करें छें, तिण किरतब सूं लागे जीवरे पापो ।
 तो छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहं गति में दुख भुगतें आपो ॥ २८ ॥
 कालवादी री सरघा परगट कीघां, केइ क्रोध करें केइ मन माहें लाजें ।
 जिण आगम लोपे विरुध परूपे, ते सीह तणी परें कदेय न गाजें ॥ २९ ॥
 इण खोटी सरघा रो उवाड़ कीयां सुं, केइ बुचवंत सुण २ रहसी दूरा ।
 केइ विपरीत सरघा आदर नें छोडें, त्यांनें पिण वीर वलांण्या सूरा ॥ ३० ॥



ढलल : २

ढुहल

आ कललवलदी नै सरवल वृणै. धोर छ्द मल्लुवलनै ।
 हललुकुणमं जीव कलम सरखमी, आ प्रनख मूळी वलत ॥ १ ॥
 चेतन गुण पर्याय नै, कहल २ अरुग्यानी कलल ।
 उंवी करेय पहपणल, दीयल धणल मलर कलल ॥ २ ॥
 त्थलन सलधु वनलवै जूजुवल, जीव अजीव सलख्यलत ।
 पण गुल्लुमरीपल मलनवी, त्थलरै वीह तलकलडज रलत ॥ ३ ॥
 त्थलनै वुरसू तो संत मललललल नडीं, कीवल कललवलदी री प्रसंग ।
 जलणै नलरुणै कोठै मूळीयलं, कलल नलम मूरुय ॥ ४ ॥
 उणनै मललै सतगुरं गलरलू, जो उ हूर करै पखेपलत ।
 सूतर अरथ मुणलय नै, कललै जहर मल्लुवलनै ॥ ५ ॥
 कललवलदी नै सख्यल उयणै, मूतग मललै जलव अंतक ।
 पलण थोडुग सल पणुगट वरुं, नै मुणुजो जलण वलवक ॥ ६ ॥

ढलल

[पललल वधुनी अरै पंचमं]

तीरथंकर गणवर उत्तम जीव छै दे, उत्तम छै आचलरज नै उवकलय दे ।
 त्थलंरल ग्यलन दगुण वललनल छै नलगुणल दे, यलनै वलंछल मू पलतक हूर पललय दे ।
 ए अरलहंत वलयक मनकर जलणजो दे* ॥ १ ॥
 वले सलधु मलववी थलवक थलवकल दे, मूनर में भलप्यल छै तीरथ क्यलर दे ।
 त्थलनै पलण उत्तम जीव जलप कललल दे, ग्यलनलडक गुण रननलं रल भंडलर दे ॥ २ ॥
 त्थलनै कललवलदी पलपंडी हूम कहै दे, ए मगलल छै जड अचेतन कलल दे ।
 यलनै जीव चेतन कोड मन जलणजो दे, ए दीयल अरुग्यानी मोडो आल दे ॥ ३ ॥
 क्यललं तीरथ तीरथंकर देव में दे, पलवै गुणउंगल परजल प्रलण दे ।
 जोग उपीयलंग लेस्यल नेहमें दे, यलनै अजीव वहे छै मूंड अयलण दे ॥ ४ ॥
 त्थलंरो वलनल वीयलवच गुण कीरत कीयलं दे, वलवे तीरथंकर गोनग्यलल दे ।
 ते कहललं छै गलनल अवेन आठनै दे, लीजो वीसलंड वोल मंमलल दे ॥ ५ ॥
 ओ कलल वीयलवच करमी कलम वलवै दे, कलल वीयलवच केम करलय दे ।
 ए कललवलदी कूडो मन कलललल, ए प्रनख चोडै मूरुयलं जलय दे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भवी दरब देवादिक पाचू देवमें रे, यामे करें केई वेक्रो रूप रसाल रे ।
 यारी गति आगति ने याशे आतरो रे, याने अजीव कहेते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेहली गतमां सू उपजे आय नें रे, ए मरनें उपजे पेहली गति मांय रे ।
 देवाधिदेव जावे छे मुगत में रे, याने अजीव सरधेने बूडो कांय रे ॥ ८ ॥
 परभव में जांसी ते निश्चे जीव छें रे, काल गतागत करसी केम रे ।
 इतरोइ न सुभे मोह अंध जीव ने रे, उ बोले सुने चित गहला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरबादिक पाचू देवरो रे, अरथ भगोती सूतर मांहि रे ।
 नवमे उदेंसें सतक बारमें रे, ए निरणो करलेजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकद्री आदि पचिंद्री जीव नें रे, छक्राय धुरा घर कहे छे काल रे ।
 चवदेई भेद जीवरा तेहमे रे, याने अजीव कहे अग्यानी बाल रे ॥ ११ ॥
 काल समायादिक वरते तेहने रे, नही कोइ खब देस परदेस रे ।
 तिण काल नें एकद्रीयादिक जे कहे रे, ते करे अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
 एकद्री आदि पचिंद्री जीव नें रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवो भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
 ते दशमें उदेंसें दूजा सतक मे रे, बले दशमां सतक रे पेहले जांण रे ।
 सोलमें सतक उदेंसे आठमें रे, ए निरणो कर लेजो चतुर सुजाण रे ॥ १४ ॥
 बले दसमें उदेंसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे निसतार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नो रे, रूपी अरूपी नो विसतार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयों तिरजंच मिनख ने देवता रे, त्यारे आठेई करम कह्या भगवत रे ।
 ए जीव हूसी तो यारे करम छें रे, त्याने निश्चेइ जीव जांणो मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोइ डंडक नियमा जीव छें रे, नियमा कह्यो ते वीसबावीस रे ।
 दसमें उदेंसे छठ्ठा सतक मे रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीवरा चवदे भेद सिघत में रे, ते निश्चेइ जीव कह्या साख्यात रे ।
 याने मूढ मिथ्याती कहे अजीव छें रे, आ प्रतख भूझे तिणसी बात रे ॥ १८ ॥
 बले दशवीकालिक चोथां अवेन में रे, निश्चेइ जीव कही छक्राय रे ।
 तिणने अग्यानी जीव न लेखवें रे, ते करें बूडण रो मूढ उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सुतर रा तीजा अवेन मे रे, ठाणां अंग में तीजा ठणा मांय रे ।
 छजीव नीकाय माहे सका कर रे, तो अहेत असुख ने समकित जाय रे ॥ २० ॥
 छवभाव लेस्या ने जीव जिण कही रे, तिणरी अतर में करो पिछांण रे ।
 माठी लेस्या रा माठा लखण छें रे, रुडी लेस्या रा रुडा जांण रे ॥ २१ ॥
 जीव रें मोह करम उदे हुवे रे, जब जीव वरते जो सावद्य कांम रे ।
 ते पाप उपजावे मेलज जोग सू रे, माठी लेस्या रा ए परिणांम रे ॥ २२ ॥

कदे मोह करम रो खयउपसम हुवें रे, जव जीव वरतें जो निरवद ठाम रे ।
 ते पाप खपाय उपजावें पुन नें रे, रूडी लेस्या रा ए परिणाम रे ॥ २३ ॥
 ए लेस्या छें निश्चें लषण जीवरा रे, तो कांय भारी हुवां कहि कहि काल रे ।
 जोवों उतरारावेन चोतीसमें रे, वले पन्नावगा लेस्या पद संभाल रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या परिणाम कह्या छें जीवरा रे, ठांगा अंग दसमां ठांगा मांय रे ।
 वले जोग उपीयोग पावे तेहमें रे, तो निश्चेंद जीव जाणों इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 मति सुरतादिक च्याहं ग्यान रा रे, कीघा अग्यांनी दोय दोय भेद रे ।
 सुतर अरय विनां मुख सूं कहें रे, करमावस करें अणहुती खेद रे ॥ २६ ॥
 मति सुरतादिक ने कहें काल छे रे, ग्यान कहे छें यांसूं न्यार रे ।
 दोय २ भेद कीयां छें इण विघे रे, उण उंची अकल सूं कीयों विचार रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी री मति नें मतिग्यान कह्यां रे, मिथ्याती री मति ते मति अनांण रें ।
 ए निरणो नदी सूतर में काढीयों रे, तो ही करें अग्यांनी कूडी तांण रे ॥ २८ ॥
 पांच ग्यान ने तीन अग्यान नो रे, वले च्याहंई दरसण तणो विचार रे ।
 त्यांरा भेद कीयां छें ग्यांनी अतिघणां रे, ते दोय उपीयोग तणो विसतार रे ॥ २९ ॥
 जे भेद कीयां छें जिण उपीयोग रा रे, ते भेद नें तेहीज उपयोग जांण रे ।
 त्यांमें काल रो भेद अग्यांनी घालीयो रे, ते नंदीय सूतर सूं करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
 वले अग्यानने कही छे नियमा आतमारें, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 ए वसमें उदेसैं सतक वारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
 उवाइ उपंग नें ठांगा अंग मे रे, च्याहंई ध्यान तणो विसतार रे ।
 ध्यान ध्यावे ते लषण जीवरों रे, यांनैं अजीव कहे ते मूढ गिवार रे ॥ ३२ ॥
 चवदे गुणठांगा लक्षण जीवरा रे, जोवो समवायंग सूतर मांय रे ।
 ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय नें रे, काल परुपें डूवो कांय रे ॥ ३३ ॥
 च्याहंई संज्ञा चेतन दरव छे रे, वीर कह्यो ठाणा अंग मांय रे ।
 जोवो चोथो दसमां अवेन में रे, संका मत आणों भवीयण कांय रे ॥ ३४ ॥
 जे जे दरव में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुण ठांगा पर्याय प्राण रे ।
 ते तो दरव निश्चेइ जीव छें रे, ए सरघा में संका मूल म आंण रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

दुहा

कालवादी रा मति तणी, केइ कर रह्या कूडी ताण ।
त्यानें खुलवा जाव व्तावीया, साख सूतर री आण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरघा छुडायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितराएक तो वले कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[निहव तेरासीया केडायत ओलसो]

छ नियठा नें पांचूइ चारित भणी, यांनं कहें छें अग्यानी काल हो ।
ए निश्चेंइ चेतन गुण पर्याय छें, ते सुणजो सुरत संभाल हो ॥
कालवादी रो मत कूडो घणों* ॥ १ ॥
छ नियठा नें पांचूइ चारित तणा, छतीस छतीस छे दुवार ।
पच्चीस में सतक उदेसे छठें सातमें, ए भगोती में कहुओं विसतार हो ॥ का० २ ॥
यांरा पजवा अनंता कहुआ छें एकएक ना, त्यां पजवांरी अल्पा बोहत जाण ।
ते संख असंख अनंत गुणा कहुआ, ते पजवांरी करजों पिछाण हो ॥ ३ ॥
निग्रंथ सनातक नें यथाख्यात रा, यांरा पजवा वरोबर जाण ।
सेष चारित नें नियठा मेंला कहुआ, तिणसूं छें पजवांरी हाण हो ॥ ४ ॥
ए कुण दरबे मेंलो कुण उजलों, तिण दरब री करजों तहतीक हो ।
याने दरब बेतर काल भाव सूं ओलखों, यांरा गुणांरी पिण करजों ठीक हो ॥ ५ ॥
किण ही दौय जणां चारित साथे लीयो, समकाले छोड्या प्राण हो ।
काल सारिखों दौयां रा चारित तणों, पिण चारित गुण में फेर जाण हो ॥ ६ ॥
चारित नें जगन मभम उतकण्टों कहुओं, ते तो चेतन गुण पर्याय हो ।
ते चारितावणीं करम दुरा हूजां, निजगुण परगट थाय हो ॥ ७ ॥
ए संजया नें नियठा तों निश्चेंइ जीव छें, तिण माहें संका म आण हो ।
यांनं काल परळें करम वांचो मती, छोड दो कूडी ताण हो ॥ ८ ॥
सजती असजती ने सजता संजती, एहवा बोल घणां छे ताहि हो ।
ए सगलां ने जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती माहि हो ॥ ९ ॥
चारित आतमा श्री जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमें उदेसे सतक वारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चारितावर्णी चारित नें विगाडीयो,
 परगुण आडो करम आवें नहीं,
 ए चारितावर्णी जेणावर्णी करम कह्यो,
 ए नवमें सतक उदेते इगतीस में,
 समाइ पचखांग संजम नें संवर,
 ए सगला ने कही छे जिणेसर आतमा,
 ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में,
 समाइ समता परिणाम गुण जीवरा,
 ग्यांन दरसण चारित गुण कह्या जीवरा,
 कोई जीव रो निजगुण चारित नही लेखवें,
 दसमें अग छंठा अघेन माहें कह्यो,
 ते दया ने नियमा निजगुण जिण कही,
 सुख बुख ग्यांन दरसण चारित तप,
 ए आठ लखण कह्या चेतन दरब ना,
 चारित परिणाम कह्या छें जीवरा,
 ते जीव परिणाम ने अजीव परूपने,
 ठांगाअग चौथे कही छे. च्यार परवजा,
 तेकरमन्यारा कीयां परवजा हुवे निरमली,
 बले ठांगाअंग चौथे च्यार चारित कह्या,
 छिदर सहीत नें रहित चारित कह्या,
 ए ग्यांन रो इंदर केवलग्यांन छे,
 जथाख्यात चारित इंदर चारित तणों,
 उतकष्टा चेतन गुण ने इंदर कह्या,
 तिण चारित गुण ने काल परूपने,
 जगन मरुम उतकष्टी आराधना,
 ते कुण दरब नें जीव आराधीयो,
 जिण जीव कीयां निजगुण ने निरमला,
 जिण चारित आराधयो ते निजगुण आपरो,
 देस चारित नें सर्व चारित कह्यो,
 काल दरब तो देस न चालीयो,
 चारितादिक गुण अनेक असासता,
 उ भावें जीव न मानें असासतो,

ओ बिगड्यो ते निजगुण जाण हो ।
 इणरी पिण करजों पिछांण हो ॥ ११ ॥
 तो चारित जेणा जीव पर्याय ।
 सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
 ववेक नें बिउसग जाण हो ।
 तो कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ १३ ॥
 नवमों उदेसो संभाल हो ।
 त्यांने भोलेइ म सरखो काल हो ॥ १४ ॥
 ते अनुयोग दुवार मभार हो ।
 ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
 प्रथम संवर दया जाण हो ।
 तिण गुण सू.पोहचें, निरवांण हो ॥ १६ ॥
 बले वीयें उपीयोग वखांण हो ।
 ते अठावीसमा उत्तरावेन जाण हो ॥ १७ ॥
 दसमेघेन ठांगाअंग मांय हो ।
 कोई मति करो वूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
 घन पूंजीयादिक समांण हो ।
 तिण परवजा नें निजगुण जांण हो ॥ १९ ॥
 भिन्नेजजरीए समांण हो ।
 ते जीवनां गुण परमांण हो ॥ २० ॥
 समकत रो खायक समकत इंद हो ।
 ए तीजे ठांणे कह्यो छे छिणंद हो ॥ २१ ॥
 तिणमें चारित गुण सूं पांमें निरवांण हो ।
 कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ २२ ॥
 ते ग्यांन दरसण चारित री जांण हो ।
 तिण दरब री करजो पिछांण हो ॥ २३ ॥
 तिण मोह करम ने टाल हो ।
 तिणनें मूरख सरखे काल हो ॥ २४ ॥
 ते त्यांग परमांणे गुण जोय हो ।
 तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
 त्यांनें सरखे अग्यांनी काल हो ।
 ते तो सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

दरबे सासतो नें भावे असासतो,
 ते सूतर भगोती रे सतक सातमें,
 दरबे सासतो जीव नें थूं कह्यो,
 भावे जीव नें कह्यो छें असासतो,
 निजगुण फिरें नें परगुण भरपडे,
 परगुण भरियां हुवें निजगुण निरमला,
 असुख निजगुण फिरियां सुख निजगुण हुवे,
 सुख निजगुण फिरियां असुख निजगुण हुवे,
 जे मेला निजगुण मोह वसें,
 मोह रहित निजगुण हुवे निरमला,
 सात करम उदे सूं निजगुण मेंला हुवें,
 ते करम भरिया हुवे निजगुण निरमला,
 आठ करम उदे हूआं नीपजे
 आठ करमां नें खय कीचां नीपनां,
 च्यार करमां नें खयउपसम कीया नीपजे,
 मोह करम उपसमीयां परगटे,
 ए च्यारुई भाव परिणामीक जीव छे,
 ए भाव फिरें पिण दरब फिरे नही,
 तत सुख सरध्या हुवे जीव समकती,
 उहीज ग्यानी रो अग्यानी हुवे,
 नारकी ने देवता रो मिनष तिरजंच हुवे,
 हत्यादिक जीवरा भाव अनेक ही,
 सासतो जीव दरब छे अनादरो,
 ते पर्याय हांण विरघ हुवे करम सू,
 जे भाव फिरे पिण दूर पडे नही,
 इणविध भावे जीव असासतो,
 उ जीव रा भाव न सरघे असासता,
 याने काल कहें ते कुवद लगाय ने,
 वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री,
 ते तीजा उदेसा छठा सतक मे,
 आदि नें अंत रहीत ए जीव छे,
 के आदि सहीत ने अंत रहीत छे,

जीव नें कह्यो जिणराय हो।
 दूजा उदेसा मांय हो ॥ २७ ॥
 जीव रो अजीव न थाय हो।
 ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥ २८ ॥
 ते परगुण पुदगल जाण हो।
 आ सरघा घट में आण हो ॥ २९ ॥
 ते परगुण करदे दूर हो।
 तिणसूं परगुण लागें पूर हो ॥ ३० ॥
 त्यां निजगुण सूं करम बंधाय हो।
 त्यांसूं परगुण दूर पलाय हो ॥ ३१ ॥
 त्यांसूं पाप न लागें तांम हो।
 त्यांरा गुण निपन छें नांम हो ॥ ३२ ॥
 निजगुण उदें भाव अनेक हो।
 निजगुण खायक भाव वखोल हो ॥ ३३ ॥
 निजगुण खयउपसम भाव हो।
 निजगुण उपसम भाव हो ॥ ३४ ॥
 ते चेतन गुण पर्याय हो।
 ते पिण सुणजो न्याय हो ॥ ३५ ॥
 उंधा सरध्या मिथ्याती थाय हो।
 अग्यानी रो ग्यानी हुय जाय हो ॥ ३६ ॥
 मिनख तिरजंच देवता थाय हो।
 ते ओर रो ओर हूय जाय हो ॥ ३७ ॥
 तिणरी पर्याय अनती जाण हो।
 पिण दरब री नही विरघ हांण हो ॥ ३८ ॥
 त्यां भावां रा नांम अनेक हो।
 ते सरघों आंण ववेक हो ॥ ३९ ॥
 तिण काढ्यो छें मत कूर हो।
 तिणरी संगत करजों दूर हो ॥ ४० ॥
 सूतर भगोती मांय हो।
 ते सामल जो चित्त ल्याय हो ॥ ४१ ॥
 के आदि नही अत सहीत हो ॥ जिणेसर ॥
 के आदि ने अंत सहीत वदीत हो ॥ जिणेसर ॥
 ए गोतम सामी पूछ्यो श्री वीर ने* ॥ ४२ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्री वीर जिणेसर कहें सुण गोयमा, ए च्याह्दई भांगा छें जीव हो ।
 त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरख्यां समक्त री नीव हो ॥ ४३ ॥
 ए आदि रहीत नें अंत रहीत छें, ए अमव सिद्धीया जीव जाण हो ।
 आदि नहीं पिण अंत सहीत छें, ते भव सिद्धी जीव पिछाण हो ॥ ४४ ॥
 जे करम खपाय नें सिद्धी गति मे गया, त्यांरी आदि छे पिण अंत रहीत हो ।
 नारकी तिरजंच मिनख ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥ ४५ ॥
 ए च्याह्दई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांनो जीव न सरवें मूढ हो ।
 ते वूडें छे वीरनां वचन उत्थापनं, कर कर कूडी रुढ हो ॥ ४६ ॥



ढाल : ४

दुहा

कालवादी चेतन नही ओलख्यो, तिणमे खोट अनेन्त ।
 तिमहीज पुदगल दरब में, कहितां न धावें अंत ॥ १ ॥
 एक वर्ण एक गंध छे, एक रस फरस छें दोय ।
 उ माने छें पुदगल एहने, ते पिण सुघ न कोय ॥ २ ॥
 पांच वर्ण दोय गंध छें, पांच रस फरस छें च्यार ।
 उ समचें पुदगल कहें एहने, ते पिण असुघ विचार ॥ ३ ॥
 भारी हलको सुहालो खरदरो, ए पुदगल दरब साख्यात ।
 याने कालवादी कहे काल छे, ते प्रतख भूठ मिथ्यात ॥ ४ ॥
 खंध देस परदेस परमाणुओ, यानें पुदगल मानें नाहि ।
 त्यानें पिण कहे काल छे, आ उंची अकल घट माहि ॥ ५ ॥
 ए प्रतख पुदगल दरब ने, कहे छें अग्यांनी काल ।
 उणरीसरवानें सरघा रा उतर कहें, ते सुणजो सुरत संभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

पुद्गल रूपी दरब तणा, च्यार भेद कीयां जिणराय रे ।
 खंद देस परदेस परमाणुओ, छतीसमां उत्तराबेन मांय रे ।
 कालवादी री सरवा सुणो* ॥ १ ॥
 पुद्गल रा भेद च्याहूं भणी, याने कहे छें अग्यांनी भूढकाल रे ।
 ए करमा वस सुघ सूफे नही, अमितर फूटी आयां जाल रे ॥ २ ॥
 वीसामीसा वले पोगसा, ए पुद्गल री तीन जात रे ।
 यां पुदगलां नें काल दरब कहें, तिणरे छे गूढ मिथ्यात रे ॥ ३ ॥
 अठारें पाप ठाणा चोफरसी कहा, आठकरमे चोफरसी कहां वीर रे ।
 मन वचन जोग दरवे लीया, चोफरसी कहां कारमण सरीर रे ॥ ४ ॥
 सन्द अंधारा उद्योत नें, प्रकास छाया तावरो जाण रे ।
 इत्यादिक एहवा सूक्ष्म खंद ने, चोफरसी पुद्गल ने पिछाण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छत्र दरब लेस्या च्यार सरीर नें, घणो दधी घणवाय तणवाय रे ।
 काय जोग नें केइ बादर खद ने, याने अठ फरसी कह्या जिणराय रे ॥ ६ ॥
 दीप समुदर देवलोक नें, मुगत सिला पिण तेह रे ।
 नरकावासा जाव वेमाणिया, ए सर्व अठफरसी दरब एह रे ॥ ७ ॥
 ए चोफरसी आठफरसी पुद्गल कह्या, ते वरण गंध रस सहीत रे ।
 यानें काल कहे मूढ मूरख थको, तिणरी सरघा घणी विपरीत रे ॥ ८ ॥
 धर्म अधर्म आकाश नें, काल पुद्गल जीव वखांण रे ।
 यामें पांच दरबे नें अरूपी कह्या, रूपी एक पुद्गल जांण रे ॥ ९ ॥
 ए भगोती रे सतक बारमें, पांचमें उदेने संभाल रे ।
 ज्यानें पुद्गल दरब श्री जिण कह्या, त्यानें मूरख परुपें छें काल रे ॥ १० ॥
 हाट घर मिंदर मालीया, आसण सयण-संण जांण विमांण रे ।
 वसत्र गंहणा आभूषण, हिरण सोवनादिक जांण रे ॥ ११ ॥
 गंध कसबोइ बाजंत्रादिक, असणादिक च्यार आहार रे ।
 ए उवभोग परिभोग आवे जीव रे, एक वार बहू वार रे ॥ १२ ॥
 त्यामें सब्द रूप दोय कामा कह्या, गंध रस फरस तीन भोग रे ।
 ए काम ने भोग रूपी जिण कह्या, तै आय मिलीयां जीव रे संजोग रे ॥ १३ ॥
 ए काम नें भोग रूपी ते पुद्गल कह्या, त्यानें काल परुपे बूढे कांय रे ।
 ए भगोती रे सतक सात मे, सातमां उदेसा रे मांय रे ॥ १४ ॥
 घृत ने खांड मेदें करी, कोइ नीपजावे विविध पकवानं रे ।
 ए प्रतख वात सरघे नही, ओ पिण पूरों अग्यांन रे ॥ १५ ॥
 घी खांड मेदों तो कहें काल था, ए तीनूइ गया विललाय रे ।
 यां तीना सूं पकवानं नही नीपनां, एतो काल परगट हुओ आय रे ॥ १६ ॥
 पकवानं नें काल दरब कहें, यांरां नाम दरब कहें एक रे ।
 इण विपरीत सरघां रा उत्तर कह, ते सांमलो आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 घृत ने खांड मेदे करी, कोइ निपजावे विविध पकवानं रे ।
 त्यांरा नाम एक २ रा अनेक छे, सूतरे भाष्यो भगवानं रे ॥ १८ ॥
 ए पकवानं तो पुद्गल दरब छे, तिणमें पांच वर्ण दोय गंध रे ।
 पांच रस आठ फरस छे, ते पुद्गल मिलीया छे बध रे ॥ १९ ॥
 त्यांरा नाम तो ओलखवा भणी, ते नाम छे सूरत ग्यान रे ।
 ते नाम नें दरब छे जूजूआ, ए वीर वचन सत मान रे ॥ २० ॥
 ए नाम दरब जूदो सरघायवा, ओलखों दरब आकाण रे ।
 ते दरब छे लोक अलोक में, इणरो नाम छें जीव रें पास रे ॥ २१ ॥
 इण परें दरब अनेक छे, ते दरब छे दरब रे ठाम रे ।
 त्यां दरबां रा नाम जाणें जठे, जीव कनें सर्व नाम रे ॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

चदरमा ने सूर्य नी चाल सू, नीपजे समयादिक काल ।
तिणरी उतपत छे प्रवाह ज्यू, निरन्तर दगचाल ॥ १ ॥
ते अढाई दीप दोय समुद में, सेष दीप समुद सर्वटाल ।
पेतालीस लाख जोजन लगे, तिरछो वरतें काल ॥ २ ॥
उचो जोतक चकर लों, ते नवसो जोजन परमाण ।
सहंस जोजन नीचो कह्यो, दोय विजे उडी तांइ जाण ॥ ३ ॥
मेरू विचे उची दिस तिहां, प्रतिबब सू वरते काल ।
अठा बरे काल कठे नही, तिणरो सूतर माहे निकाल ॥ ४ ॥
कालवादी कहे लोक अलोक मे, सगले वरतें काल ।
ते सूतर अर्थ विनां बके, वले देवे सूतर सिर आल ॥ ५ ॥
उघा अर्थ करे अकल विना, वले बोले आल पपाल ।
हिवे काल दरब रो निरणो कहु, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[म्हारो सेशा रो साथी रे वीछीयो]

चाल सासती ले जोतष्यां तणी, जीव पुद्गल रो जघन व्यापार जी ।
तिणने समो कह्यो तीथकरे, तिणरो सांभलजो विसतार जी ।
काल वरते अढाई दीप मे* ॥ १ ॥
असंख्याता समां री आवलका हुवें, जाव पुद्गल परावर्तन जाण जी ।
अतीत अनागत वरतमान ने, काल दरब री करजों पिछांण जी ॥ का० २ ॥
जिण खेतर में समों वरते नही, तठे आवलकादिक पिण नही जी ।
आवलकादिक तो समां सू हुवे, अघा समों सगला रे मांहि जी ॥ ३ ॥
उतरावेन में छ दरबां तणा, चाल्या दरब खेतर काल भाव जी ।
काल वरते समय खेतर मभे, तठे कह्यो उघाडो न्याव जी ॥ ४ ॥
समय खेतर कहे सर्व खेतर ने, कालवादी सूतर रो अजांण जी ।
समय खेतर चाल्यो सिद्धांत में, तिणरा पाठ री करजो पिछांण जी ॥ ५ ॥
अढाई दीप दोय समुद ने, समय खेतर कह्यो जिणराय जी ।
भगोती रे सतक दूसरें, जोवो नवमां उदेसा मांय जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सीमंत नामा नरका वासो कह्यो,
 वले मुगत सिला चोथी कही,
 च्याहं पेंतालीस लाख जोजन तणा,
 समय खेतर समय सहीत छे,
 परमाण^१ आहाउनिव्वत^२ काल छे,
 च्याहं भेद छें अघाकाल ना,
 अघाकाल छें मिनख लोक मे,
 आतो सूर्यादिक री चाल छे,
 इंदा^३ अगी^४ जमा^५ ने नेरइ^६,
 सोमा^७ इसणीया^८ विमला^९ दिसि,
 नव दिस मे अजीव अरूपी तणा,
 छत्र भेद नीची तमा दिस भभे,
 ए भगोती दसमां सतक मे,
 तो ही कालवादी भूठो थको,
 नीचा तिरछा खेतर लोक में,
 छ भेद कह्या ऊंचा लोक में,
 ए भगोती रे सतक इग्यार मे,
 उचा लोक मे काल निपेवीयो,
 छहं दिस लोक नें अंत छेहडे,
 अजीव अरूपी रा छ भेद छे,
 घर्म अघर्म नें आकाग नां,
 कालवादी कहे तिहां काल छे,
 छ भेद अरूपी रा कह्या,
 काल परुपें लोक रे छेहडे,
 इग्यारे भेद तो काढ सके नहीं,
 उंची परुपे सुघ वृष बाहिरा,
 रूपी अरूपी विण वसतु नहीं,
 त्यारो लेखो तो मूढ करे नहीं,
 रूपी अरूपी जीव अजीव रो,
 भगोती रे सतक सोलमें,
 कालवादी कहें काल अलोक मे,
 अजीव दरव रो देस अलोक में,

समय खेतर ने उडू विमाण जी ।
 ए तो च्याहं बराबर जांग जी ॥ ७ ॥
 ठांणाअंग चोथो ठांणा मांहि जी ।
 गुण निपन नाम छें ताहि जी ॥ ८ ॥
 वले मरण^६ ने अघाकाल जी ।
 ठांणाअंग चोथो ठांणो संभाल जी ॥ ९ ॥
 ते तो समयादिक जांणे एहू जी ।
 अडी दीप वारे नहीं तेह जी ॥ १० ॥
 वाइणी^३ वायवा^४ दिस जांग जी ।
 दसमी दिस तमा^५ पिछांग जी ॥ ११ ॥
 सात भेद तिहा बरते काल जी ।
 अवा समो दीयो जिण टाल जी ॥ १२ ॥
 पेहले उदेसे जोय संभाल जी ।
 लोक अलोक मे कहे काल जी ॥ १३ ॥
 अजीव अरूपी रा भेद सात जी ।
 अघाकाल टाल्यो साख्यात जी ॥ १४ ॥
 लेजो दसमें उदेसे सभाल जी ।
 तो अलोक मे किहां थी काल जी ॥ १५ ॥
 नहीं बरतें समयादिक काल जी ।
 अघासमों दीयो जिण टाल जी ॥ १६ ॥
 देस परदेस कह्या जिणराय जी ।
 तो तू सातमों भेद बताय जी ॥ १७ ॥
 रूपी रा कह्या छे भेद च्यार जी ।
 तो तू काढ बताय इग्यार जी ॥ १८ ॥
 लोक अलोक मे कहे काल जी ।
 दे दे सूतर रे सिर आल जी ॥ १९ ॥
 जीव अजीव विण नहीं काय जी ।
 यूही कूड़ी करे वकवाय जी ॥ २० ॥
 रुडी रीत काढचों नीकाल जी ।
 आठमें उदेसे संभाल जी ॥ २१ ॥
 ते बोले नहीं वचन विमास जी ।
 अनंत भाग उणो छे आकास जी ॥ २२ ॥

दसमें उदेसे दूजा सतक मे, भगोती में कालचो नीकाल जी ।
 पिण कालवादी भूठ आदखो, अलोक में कहि २ काल जी ॥ २३ ॥
 रात-दिन अनंता नीपजे, ते तो लोक असंखेग मांय जी ।
 अढी दीप में दरब अनत छे, इण लेखें अनता थाय जी ॥ २४ ॥
 एक २ दरब उपर गिण्यां, एक २ रात दिन जाण जी ।
 इम अनता दरब उपर गिण्यां, अनता रात दिन पिछाण जी ॥ २५ ॥
 दले तीनुंइ काल तणा गिण्यां, तो पिण अनंत हुवे दिन रात जी ।
 ए भगोती सतक पांचमे, नवमे उदेते कहुया साख्यात जी ॥ २६ ॥
 काल फरसे पांचू दरबा तणा, छ दिस ना परदेस चकवाल जी ।
 पिण परदेस पांचू दरब नां, केइ फरसे न फरसे काल जी ॥ २७ ॥
 समय खेतर परदेस आगलो, तठा बारे न फरसे काल जी ।
 माहे परदेस पांचू दरब ना, अवा समों फरसे दगचाल जी ॥ २८ ॥
 जो काल हुवे लोक अलोक मे, तो सगला परदेस फरसे काल जी ।
 फरसे न फरसे जिण क्याने कहे, कोइ समभो सुरत संभाल जी ॥ २९ ॥
 भगोती रे सतक तेरमें, चोथे उदेसे ए विसतार जी ।
 फरसे नही फरसे ते विवरो कह्यो, छ ही दरबां तणो निसतार जी ॥ ३० ॥
 नीची दिस थी उची दिस मभे, दरब अनत गुणां तिण मांय जी ।
 छ दरबां री अल्पावोहत मे, तिणरो अर्थ सुणो चित्त ल्याय जी ॥ ३१ ॥
 नीची दिस में काल वरते नही, उची दिस काल वरते तांहि जी ।
 ते काल दरब माहें मिल्यां, अनंत गुणां उंची दिस मांहि जी ॥ ३२ ॥
 फिटकरतकरंड मेह तणो, तिहां उंची दिस वरतें काल जी ।
 चंद सूर्य नी प्रभा पड़े तठे, समां नीपजे दग चाल जी ॥ ३३ ॥
 उंचा लोक थी नीचा लोक में, दरब अनंत गुणां छें ताहि जी ।
 सठे समां अनंता नीपजे, दोय विजे उडी तिण मांहि जी ॥ ३४ ॥
 उंचा लोक थी नीचा लोक मे, पुदगल जीव इधक विशेष जी ।
 अनता गुणां कहुं ताे काल सू, छ दरब री अल्पा वोहत देख जी ॥ ३५ ॥
 उंचा लोक में काल वरतें नही, नीची दिस मे न वरते काल जी ।
 काल वरते कहे सर्व खेतर में, ते करे मूढ भूटी भखाल जी ॥ ३६ ॥
 पन्नावणा रा तीजा पद मभे, तठे कहुं घणों विसतार जी ।
 तिणरो निरणो करें घट भीत रे, कालवादी रो संग निवार जी ॥ ३७ ॥
 लोक आकाशती सर्व लोक में, तिणरा देस ने फरसे काल जी ।
 तिमहीज फरसें देश लोक नों, ए तो अवा समो दगचाल जी ॥ ३८ ॥

आकाशती रा देस परदेस सू, अलोक ने फरस्यो जाण जी ।
 और दरब नही अलोक मे, ए श्री जिणवचन परमाण जी ॥ ३६ ॥
 अढाई दीप दोग समुद ने, अघासमो फरसें दगचाल जी ।
 सेष दीप समुदर तेहने, अघासमों न फरसे काल जी ॥ ४० ॥
 समय खेतर बारे छे नही, आ तो जोतषीयां री चाल जी ।
 जेठ समयादिक नीपजे नही, तटे किहां थी फरसे काल जी ॥ ४१ ॥
 पन्नवणा सूतर रे पद पनरमे, कोइ बुधवंत लेजो संभाल जी ।
 पिण कालवादी करमां वसे, लोक अलोक मे कहे काल जी ॥ ४२ ॥
 नीपनें सूर्यादिक चालीया, समयादिक काल अनत जी ।
 ए भगोती रे सतक बारमे, छठे उदसे कहाँ भगवंत जी ॥ ४३ ॥
 नरकादिक गति में वरतें नही, समो आवलिकादिक जाण जी ।
 त्यांरा आउषादिक ने मापवा, मिनष खेतर में मान परमाण जी ॥ ४४ ॥
 आखा लोक मे काल वरते नही, तो अलोक मे किहांथी होय जी ।
 भगोती रे सतक पांच मे, लेजो नवमो उदसे जोय जी ॥ ४५ ॥
 खेतर उजाड़ मे घान नीपनो, कोइ कहे मण सो दोग च्यार जी ।
 तिणरा मापा तोला छे गांम में, उण उनमान कहाँ विचार जी ॥ ४६ ॥
 ज्यूं नरकादिक जीवां कने, आउषादिक पुद्गल पाय जी ।
 ते तो समे २ पुद्गल खिरे, त्यांरो मापो समय खेतर कांय जी ॥ ४७ ॥
 कपड़ो छे बजाज रा हाट में, गज दरजी रे घर ताहि जी ।
 ज्यूं आउषादिक जीवां कने, मापो छे समय खेतर मांहि जी ॥ ४८ ॥
 गाय भेस उहाडै हांचले, कोइ कहे दूध सेर छे च्यार जी ।
 पिण तोला पड्या घर हाट में, इणरे उनमान कहाँ विचार जी ॥ ४९ ॥
 ज्यूं ससारी जीवां तणा, आउषादिक सगला तीर जी ।
 त्यांरा आउषादिक ने मापवा, समय खेतर में कहाँ काल वीर जी ॥ ५० ॥
 जीव अजीव अवगाहे रह्या, तिणरो मापो छे खेतर आकास जी ।
 केइ उनजे विगसे केइ सावता, काल सू माप लेजो विनास जी ॥ ५१ ॥
 संचिठण गति च्यार मे, तिणरा अरथ री कीजो पिछाण जी ।
 सुन असुन मिश्रपणे रह्यो, तिणने काल सू गिणीयो जाण जी ॥ ५२ ॥
 जीव नरक सू गयो गति ओरमें, फेर पाछो आयो नरक मांहि जी ।
 जद नेरइय मेल गयो हुंती, ते तो एक रह्यो नहीं ताहि जी ॥ ५३ ॥
 ते तो सुन संचिठण मे रह्यो, ते तो काल सू गिणीयो वीर जी ।
 हिवें असुन संचिठण नें कही, तिणरो सुणजो अरथ सधीर जी ॥ ५४ ॥

जीव नरक सूं गयो गति ओर में, फेर पाछो आयो नरक ताहि जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँ तो, ते तो सगलाइ हुवें नरक मांहि जी ॥ ५५ ॥
 ते तो असुन संचिठण में रह्यो, ते तो काल सूं गिणीयो एम जी ।
 हिवें मिश्र संचिठण नें कहुँ, तिणरो अरथ सुणों घर पेम जी ॥ ५६ ॥
 जीव नरक सूं गयो गति ओर मे, फेर पाछो आयो नरक मांय जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँतो, केइ उवेहीज केइ ओर आय जी ॥ ५७ ॥
 ते तो मिश्र सचिठण में रह्यो, तिणनें काल सू गिण्यो भगवंत जी ।
 पिण काल न वरते नरक में, तिणरो न्याय सुणो बुघवत जी ॥ ५८ ॥
 सुन असुन मिश्र काल नरक में, ते काल कहुआ ओर न्याय जी ।
 तिणरो द्विष्टन्त दे निरणो कहुँ, ते सांभल जो चित्त ल्याय जी ॥ ५९ ॥
 एक चाडो भरयो तेल तेहने, कोइ कहुँ तेल सेर छ सात जी ।
 पिण सेर नही चाडा मभे, ज्युं नरक में नही काल विख्यात जी ॥ ६० ॥
 कालवादी कूडो मत थापवा, नरक माहे परूपे काल जी ।
 सुन असुन मिश्र कालरो, भेद जाणयां विण करे मखाल जी ॥ ६१ ॥
 कालवादी रा मत तणी, एक इचरज वाली वात जी ।
 समभायो समभे नही, तिणरा घट मांहे गूढ मिथ्यात जी ॥ ६२ ॥
 हूँ कहि र नें कितरो कहुँ, कालवादी रा मत रो कूड जी ।
 इम सांभल नें नरनारीयां, कालवादी सू रहजो दूर जी ॥ ६३ ॥
 काल दरब ओलखायवा, जोड कीवीं खेरवा मभार जी ।
 समत अठारें नत्तीसैं समें, आसाढ सुद एकम सोमवार जी ॥ ६४ ॥



ढाल : ६

दुहा

कालवादी रे करम उदें हुवां, तिणसूं हूवों घणों विपरीत ।
तिणने छेडवीया उलटो पडें, नही न्याय मेलण री नीत ॥ १ ॥
अरिहंत देव ने आयरीया, वले उवभाय सगला साध ।
त्यांनं अजीव कहे मूरख थको, वले मूठों करें विषवाद ॥ २ ॥
इण कालवादी पाषडी तणों, करडों घणों छे मिथ्यात ।
केइ भारीकरमा जीवडा, ते मानें इणरी वात ॥ ३ ॥
केइ घेपी छे सुघ सावां तणां, त्यांरे घोर रुद्र मिथ्यात ।
त्यांनं समझ पडे नही सर्वथा, तोही करें इणरी पखपात ॥ ४ ॥
तिरण तारण उत्तम पुरषा भणी, अजीव कहतो नाणें मूंड लाज ।
हिवे साधु करे छे परूपणा, यांनं जीव सरधानण काज ॥ ५ ॥

ढाल

[धन्या श्री आजनगर में वाइमे]

अरिहंत देव जिण सासण रा नायक, ते निश्चेइ उत्तम जीवो रे लो ।
त्यांनं अजीव कहे कोइ मूंड मिथ्याती, तिण दीधी नरक री नीवो रे लो ॥
देखो रे आवा चेतें नही* ॥ १ ॥
अरिहंत देव अरी करमां नें हणीया, त्या कीधी धर्म री आवो रे ।
त्यांनं अजीव सरखे कांय बूडो, कर २ कूडी विषवादो रे लो ॥ २ ॥
अरिहंत आप तिरे ओरां ने तारे, तिरण तारण उवाडों छे पाठो रे ।
याने अजीव सरखे उसभ उदे सूं, त्यारो भाग उगडीयो माठो रे लो ॥ ३ ॥
अरिहंत देव मुगत जावारा कामी, त्या दीधी संसार ने पूठो रे ।
त्यां अरिहंता ने जीव न सरखे, ते मत निश्चेइ मूठो रे लो ॥ ४ ॥
सगला मुनीसरां रा टोला माहे, तीथकर देव मोटा रे ।
ते मुनीसरां ने तीथंकर देवा ने, अजीव सरखे तिण खावा खोटा रे ॥ ५ ॥
साखां रा गण अधिपती गणघर, ते अनेक गुणां कर सहीतो रे लो ।
त्यांनं अजीव कहे केइ भारीकरमां, ते होसी चिहूंगति में फजीतो रे लो ॥ ६ ॥
आचार्य पिण मोटा मुनीसर, ते छ्स्तीस गुणां सहीतो रे लो ।
त्यांनं अजीव कहे केइ मत हीण मानव, त्यांरी विकल करें परतीतो रे लो ॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

उवभाय पिण मोटां मुनीवर, ते पचीस गुणां सहीतो रे ।
 त्यांने अजीव कहें केइ अकल विहूंगा, ते नरभव खोय जासी रीतो रे लो ॥ ८ ॥
 साधु रिषीसर मोटा मुनीसर, ते सत्तावीस गुणां करे पूरा रे ।
 त्यांने अजीव कहें बाल अग्यांनी, तिणरी वात माने ते कूडा रे ॥ ९ ॥
 अरिहंत आचार्य उवभाय ने साधु, ते सगलाई मोटा अणगारो रे ।
 त्यांने अजीव सरघे उसभ उदे सूं, ते बूड गया काली घारो रे ॥ १० ॥
 यां मोटां पुरषां नें अजीव सरखसी, तिणरें बवसी पाप रा पूरो रे ।
 उवे उदे आसी जद दुखीयो होसी, तिणमें म जाणों कूडो रे ॥ ११ ॥
 जो इणहीज भव मे पाप उदें हुवे, तो पडे बाहलां रो विजोगो रे ।
 बले रिघ संपत सगली विल्लावें, वले मिले दुसमण रो जोगो रे लो ॥ १२ ॥
 कदा इण भव माहें उदे पाप न होवे, तो परभव में संका मत आणो रे ।
 उत्तम पुरषां नें अजीव सरखें त्यांने, भव २ मे दुखीयो जाणो रे ॥ १३ ॥
 उत्तम पुरषां नें अजीव सरखीयां, आसातणा लागे मारी रे ।
 उसभ करम लागे इण सरखा थी, तिण सूं भव २ में होसी खुवारी रे लो ॥ १४ ॥
 अरिहंत आचार्य उवभाय ने साधु, त्यारो भजन करो दिन रातो रे ।
 त्यांने अजीव कहें छे कुपातर, तिणरी मूरख मानसी वातो रे लो ॥ १५ ॥
 अरिहंत आचारज उवभाय ने साधु, यां सगलां ने ई जीव जाणो रे ।
 आगम संभालो नें जिणमत जोवों, इणमे संका मत आणो रे ॥ १६ ॥
 कालवादी री सरघा पुरभे परगट कीधी, भव जोवां रो करण उघारो रे ।
 समत अठारे बरस अब्तीसे, वैसाख सुद पांचम बुववारो रे लो ॥ १७ ॥



हाल : ७

दुहा

अग्निं आचार्य उच्यते न, क्वे मातृ मीतं मुनीराय ।
 त्पतिं कालदात्री कहे जाल छे, कडा कुहेत लाय ॥ १ ॥
 अग्निं न अग्निंनगो, इम दोय र बेल लाय ।
 मोला न पाड्या भर्म में, त्याने अजीव दीया सखाय ॥ २ ॥
 अग्निंनगो छुटे गयो, सावुरगो निग छुट जाय ।
 जीव हुवो मित्र निग नमं, जवे ए कयं गया दिल्लाय ॥ ३ ॥
 जीव ने जीव न गृण मासदा, ने कवे नदी दिल्लाय ।
 ने दिल्लाय पुगो हुवे, ने काल दरद छे ताय ॥ ४ ॥
 इम कद्वि र मोला कंक नें, नांख्या भर्म जाल माय ।
 निग अग्निं मातृ ने सिव हुवो, ने जदक खर न वाय ॥ ५ ॥
 अग्निं मातृ रो मित्र हुवे, ते मृतर में जव अदेक ।
 हिंवे थोडा सा पगट कवे, ते मृजो आं वदेक ॥ ६ ॥

हाल

[चतुर विचार करे नें देखे]

नमोयुगं अग्निं मिदां नें कीवो, ते अग्निं थी हुआ सिगो रे ।
 अंम र नमोयुगं मंभालो, ओ चोई पाठ प्रसिबो रे ।
 चतुर विचार करे नें देखो ॥ १ ॥
 के अग्निं जेवदा विचरे, ते मृगज जावा रा कामी रे ।
 अगो अग्निं हुवा अतदा, त्यां मगलाइ मित्र गति पानी रे ॥ २ ॥
 पेंहलो नमोयुगं कीयो अग्निं मिदां नें, कीनी नमोयुगं अग्निंता नें रे ।
 त्यां अग्निंता नें अजीव पदवे, तिगरी वात अग्यानी माने रे ॥ ३ ॥
 चोदीसां गे अजुनी लोम गु-जा, ते अग्निं सिव हुआ चोइसोई रे ।
 त्यां अग्निंता नें अजीव मरवे, ते गया जमारो खोई रे ॥ ४ ॥
 अग्निंता रा गुणं करे अग्निं वाजे, सावां रा गुणं सूं सावु वाजे रे ।
 त्यां मीतं पुरणं नें अजीव कहुतां, मूख मूळ न लाजे रे ॥ ५ ॥
 ज्यां पुरणं ग नांय लीयो थी, कटे पात्र अदहुतो रे ।
 त्यां पुरणं नें अजीव पदवे, तिग दीवा नरक न मृजो रे ॥ ६ ॥
 कालदात्री कहे साव जीव हुवे तो, सिवां में सावु वजावो रे ।
 माव जो काल दरद पुगो हुवो, जव उननें साव वनावे छे न्यावो रे ॥ ७ ॥

रुइ रो मूत करे कपड़ो कीयो, पिण उत्तपत रुइ री जांगो रे ।
 ज्यू साध अरिहंत थई ने सिध हूआ, पिण यांरी उत्तपत साध पिछांगो रे ॥ ८ ॥
 तिण कपड़ा नें रुइ कहैं त्याने, मतहीण मानव जाणों रे ।
 ज्यू सिद्धां ने साध परूपे, ते मूढ मिथ्याती अयांगो रे ॥ ९ ॥
 रुइ रा गुण तो कपड़ा मे संमाया, ज्यू साध रा गुण सिधां में समावें रे ।
 पिण वरतमान काले हुवें जिम कहणों, ते समझ विरलां ने आवें रे ॥ १० ॥
 रुइ रो गराम आयां कपड़ो जेवे, पिण रुइ कठा सुं पावे रे ।
 ज्यू कोइ साध सिधां माहे पूछे, सिद्धां में साध किहां थी बतावे रे ॥ ११ ॥
 खांड रो बूरो करें कीधी मिथ्री, पिण स्वाद न पडीयो जूओ रे ।
 ज्यू बधता रे जीव रा गुण बचीया, जब ओ साध तणो सिध हुओ रे ॥ १२ ॥
 मांखण ताएनें घृत कीषों, ते घृत हुओ छें चोखो रे ।
 ज्यू साधां रा सिध हूआ करणी करें, त्यां सकल करम कीयां सोखो रे ॥ १३ ॥
 आखा लोक में धर्मास्तीकाय रा, खंघ परदेस दोय भेद पावे रे ।
 आखा लोक में पूछे धर्मास्ती रो देस, तिणमें देस किहां थी बतावे रे ॥ १४ ॥
 खंघ हुवें तिहां देस न हूवे, देस हुवे तिहां खंघ न पावे रे ।
 आखो ते खय ने उणो ते देस, दोनूं भेला किहां थी बतावे रे ॥ १५ ॥
 ज्यू आतमिक सुख पूरा सिद्धां में, देस सुख साधां माहे पिछांगो रे ।
 सपूर्ण सुख ने सिध कहीजे, देस सुख ते साध नें जाणों रे ॥ १६ ॥
 संपूर्ण सुख तिहां नही अधूरा, अधूरा तिहां संपूर्ण नांही रे ।
 पूरा सुख सिधां में उणा सुख साधां में, दोनूं सुख नहीं एकण मांही रे ॥ १७ ॥
 जिण समे साध तिण समें देस सुख, सिध तिण समें देस सुख नांही रे ।
 जब साध मरे ने सिध हूवो जद, देस सुख आयो सर्व सुख मांही रे ॥ १८ ॥
 धर्मास्तीकाय रो खय हुवे तिहां, देस रो खय नहीं हूवों रे ।
 ज्यू साध रो सिध हूवों जब, साध न पडीयो जूओ रे ॥ १९ ॥
 मोष री साधन करतों साध कहिवांगो, साधन कर चूका ने सिध जाणों रे ।
 उणहीज साध रो सिध हुवों छे, तिण माहे संका मत आपो रे ॥ २० ॥
 तिण सानु ने अजीब कहे छे अग्यानी, ते वूड गयो काली धारो रे ।
 इण सरधा ने कोइ साची जांगे, ते पिण जासी जनम विगाडो रे ॥ २१ ॥
 साध रो सिध भगवंत हूवो छें, तिणरी खबर न कायो रे ।
 तिण साध ने अजीब कहे काल्वादी, तिण गालां रो गोलो चलायो रे ॥ २२ ॥
 कोरा धान ने कोरो धान कह्यो छे, सीभ्रता ने कहे सीभ्रे धानो रे ।
 सीभ्र गया ने कह्यो सीझ्यौ धान, ए तीनूं धान जांगो वृधवानो रे ॥ २३ ॥

कौरव धर्म उरु अश्विनी सप्तमिती, सीते उरु नाडु अश्वल निरुतो रे।
 मीन्या धर्म उरु सिद्धि सप्तमि उरु, ए सीते उत्तम उरु जौरी रे ॥२८॥
 कौरव धर्म उरु तद कीरु मीन्या, उरु सप्तमिती रे अश्वल हूरी जौरी रे।
 उरु अश्वल रे सप्त अश्विनी हूरी, अश्विनी रे हूरी सिद्धि निरुतो रे ॥२९॥
 कौरव धर्म उत्तम उरु मीन्या, उत्तम कौरु किशु सी उरु रे।
 उरु मीन्या उरु सप्त रे सिद्धि हूरी, उरु मीन्या उरु सी उरु रे ॥३०॥
 अश्वल उरु मीन्या कीरु हूरी, उरु सप्तमिती कीरु हूरी रे।
 कीरु उत्तम रे उरु मीन्या उरु, उरु अश्विनी मीन्या रे किशु रे ॥३१॥
 कीरु कीरु उत्तम रे उरु मीन्या उरु, कीरु सिद्धि रे उरु हूरी मीन्या रे।
 सिद्धि सिद्धि कौरु मीन्या हूरी उरु, अश्विनी उरु मीन्या उरु हूरी रे ॥३२॥
 अश्विनी रे मीन्या मीन्या उरु हूरी, रे कीरु कीरु हूरी रे।
 सिद्धि उरु मीन्या उरु कौरु अश्वल उरु, सिद्धि मीन्या मीन्या रे उरु रे ॥३३॥
 मीन्या मीन्या अश्वल उरु कीरु रे, उरु मीन्या मीन्या उरु उरु रे।
 अश्वल उरु मीन्या मीन्या मीन्या, उरु उरु मीन्या उरु रे ॥३४॥
 अश्वल उरु अश्वल उरु मीन्या, रे कीरु कीरु हूरी मीन्या रे।
 कीरु मीन्या उरु मीन्या कीरु हूरी, कीरु मीन्या रे मीन्या रे ॥३५॥
 उरु उरु मीन्या मीन्या उरु कीरु, मीन्या मीन्या सिद्धि मीन्या रे।
 मीन्या मीन्या उरु उत्तम उरु मीन्या, उरु उरु हूरी मीन्या रे ॥३६॥
 मीन्या उरु मीन्या अश्वल उरु मीन्या, अश्वल उरु अश्वल मीन्या रे।
 मीन्या कीरु उरु मीन्या रे मीन्या, मीन्या मीन्या उरु मीन्या रे ॥३७॥



रत्न : ४

इन्द्रियवादी री चौपई

ढाल : १

दुहा

केइ कहें इग्यारमें ने बारमें, दोय गुण ठांगा नव नव जोग ।
 च्यार च्यार जोग मन वचन रा, नवमों उदारीक रों छे प्रयोग ॥ १ ॥
 इम कहें ते वीतराग नें, भूठाबोला कहें छे तांम ।
 ते ववेक विकल सुख बुव दिना, भूठ बोले वेफांम ॥ २ ॥
 त्यांरो भूठों मन वरते नही, मिश्र मन वरते नांहि ।
 वले भूठ न बोलें सर्वथा, मिश्र भाषा नही त्यारे मांहि ॥ ३ ॥
 इग्यारमां गुण ठांगा सूं आदिदे, चवदमां गुण ठांगा लग जांण ।
 जथाख्यात चारित छे निरमलो, जथातथ गुण रत्नारी खांण ॥ ४ ॥
 ए च्यारां गुण ठांगां वीतराग छे, त्यांने पाप न लागे अंस मात ।
 कषायादिक जोग माठा नही, त्यांरी मूल न विगटे वात ॥ ५ ॥
 इग्यारमें वारमे ने तेरमें, तीन गुण ठांग पुन बंवाय ।
 ते पिण निरवद जोग सूं, इरिया वही कर्म लागे आय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिख आग्या मे]

जथतथ चाले वीतराग हुआ ते, त्यांने भूठ लागतो मूल म जांणो ।
 भूठ सूं पाप निकेवल लागें छे, ते अभितर जोय करों पिछांणों ।
 वीतराग भाव अंतकरण ओलखजौ* ॥ १ ॥
 भूठो मन मिश्र मन त्यांरो न वतें, भूठी ने मिश्र भाषा मूल न बोले ।
 निरदोष अखंड चरित छे त्यांरो, करलें काम पख्यां पिण मूल न डोलें ॥ २ ॥
 भेषधारी कहे त्यांने भूठ लागे छे, ते ऊठी जठा थी निकेवल भूठी ।
 वले तांणा तांण करे छे अग्यांनी, त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ ३ ॥
 भूठा जोग सूं पाप निकेवल लागें छे, ते पाप न लागें च्याहं गुण ठांगें ।
 भूठा जोग वरत्यां सूं पुन पिण न लागें, ते न्याय निरणा विण अग्यांनी तांणें ॥ ४ ॥
 कदा कहिवा ने कहे पाप न लागें, जथाख्यात च्याहं गुण ठांगें ।
 वले भूठाबोला त्यांने कहिता न संके, पोतारा बोल्या नें पोते नही पिछांणें ॥ ५ ॥
 भूठ लागे कहे जथाख्यात चरित नें, त्यांने जाब पूछ्यां बोले ढाल पंपालो ।
 ते भारीकर्म जीव मूढ मिथ्याती, तीन काल रा अरिहत नें वीयो आलो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अठारे' पाप ठांणा मोह कर्म री प्रकृत,
 ज्यारे मोह कर्म उदे जावक नांही,
 पापरा किरतब छे ससार में सगला,
 ते जयाख्यात चारितीयों नही सेवे',
 त्याने' निरवद जोग सू पुन लागे छें,
 जब उ पण कहे त्याने पाप न लागे,
 कदा विण उपीयोगे कह्यो हुवे' तिणने'
 जो उ समभायो' समभे' नही भूरख,
 वीतराग ने' भूठ लागे कहे तिणरे',
 कदा तांण करता टाको जलेतो,

त्यांरा उदा सू सेवे छे किरतब अठारो ।
 ते सावद्य किरतब न करे लिंगारो ॥ ७ ॥
 हिंसा भूठ आदि दे सेवे' अठारों ।
 त्यारे' निरवद जोग तणो व्यापारो ॥ ८ ॥
 भूठ ने' मिश्र जोग हूआ लागे पापो ।
 पिण भूठ बोळण री करे' मूढ थापो ॥ ९ ॥
 समभक्तो देखे' तो समभाय दीजे ।
 तिणने' न्याय करे ने' भूठो घालीजे ॥ १० ॥
 घट मांहे' घणो छे घोर अंधारो ।
 उत्कटो भमे तो अनत संसारो ॥ ११ ॥



ढाल : २

दुहा

आठ कर्म जिणेसरभाषीया, तिणमें घणघातीया कर्म च्यार ।
ए च्याहं पाप कर्म उदे हूआं, जीवरे हूवे बोहत विगाड़ ॥ १ ॥
ए च्याहं कर्म षयोपसम हूआं, जब जीव उजल हुवे ताय ।
जिम जिम च्याहं कर्म पातला पडे, तिम तिम गुण परगट थाय ॥ २ ॥
ए च्याहं कर्म षयोपसम हूआं, जीव पावे बोल वत्तीस ।
ते वतीसोई षायक भाव मांहिला, चोखा उजला विसवावीस ॥ ३ ॥
उजला हूवा करमां सूं निवरते, ते उजला लेखे निरवद एह ।
वले बीजों निरवद किरतव कह्यों, तिणसू कर्म रुके तूटे तेह ॥ ४ ॥
कर्म रोके आतमा वस करे, ते संवर निरवद जांग ।
वले कर्म काटण करणी करे, ए बीजो निरवद वखांण ॥ ५ ॥
षयोपसम भाव छै निरमलो, तिणने कहे अग्यानी आम ।
त्यांरा केयक बोल निरवद कहे, केइ सावच्च निरवद कहे तांम ॥ ६ ॥
षयोपसम भाव नें सावच्च कहे, तिणरी प्रतख भूठी वात ।
तिण सावच्च निरवद नही ओल्लख्यो, तिणरा घट माहें चोर मिथ्यात ॥ ७ ॥

ढाल

[पुन नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

हिंवे षयोपसम भाव ओल्लखो रे लाल, आंख हीयारी उचाड हो । भविकु जण*
निरणों करो घट भितरे रे लाल, ते सावच्च नही छै लिंगार हो ॥ भव० ॥
षयउपसम भाव निरवद जांणजों रे लाल* ॥ १ ॥
जो षयउपसम भाव सावच्च हुवे रे लाल, तो षायक भाव सावच्च वशेप हो ।
षयउपसम षायकभाव मांहिलो रे लाल, यां दोयारों छे निजगुण एक हो ॥ प० २ ॥
ग्यांनावणीं वसंनावणीं मोहणी रे लाल, चोथों घणघातीयो अंतराय हो ।
ए च्याहं कर्म घनघातीया रे लाल, ते धर्म आवा न दे ताय हो ॥ ३ ॥
आम पडल व्यूं घणघातीया रे लाल, देस थकी पय थाय हो ।
जब जीव उजल हुवे देस थी रे लाल, ते सावच्च कठ थी आयो ताय हो ॥ ४ ॥
च्याहं कर्म देस थी अलगा हूआं रे लाल, मांसू सावच्च निकलीयो कहे मूढ हो ।
तिण सावच्चवणीं कर्म थापियों रे लाल, तिणरे गाडी मिथ्यात री रुढ हो ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सावद्यवर्गी कर्म चान्यो नहीं रे लाल,
 त्रिग मूँ पयउमम नम नें रे लाल,
 मोहनी कर्म जीव रे उदे हूआं रे लाल,
 वाकी जीव कर्म उदे हूआं रे लाल,
 उदे हूआंई सावद्य न नीपजे रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य नीपनो कहे रे लाल,
 जीव उरला हूआं नें सावद्य कहे रे लाल,
 सावद्य बटीयो कहे उमम उदे हूआं रे लाल,
 उगरी मरवा रे लखे सावद्य मूँ मिटे रे लाल,
 सावद्य देवे च्याहं कर्म बाव नें रे लाल,
 धनवातीया देन श्री अलगा हूआं रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य बटीयो कहे रे लाल,
 ए च्याहइ कर्म पातला पख्या रे लाल,
 कर्म सातला पख्या सावद्य नीपजे रे लाल,
 कर्म अलगा हूआं निरवद नीपजे रे लाल,
 त्रिग निरवद नें सावद्य कहे रे लाल,
 आठ करनो नाहें छै अति बुरा रे लाल,
 ते पतला पख्यां बीदरे आंगुंग कहे रे लाल,
 जिनमें अदिनादिक आंगुंग दगा रे लाल,
 सिष्ट पुन सीदना नें सावद्य कहे रे लाल,

सावद्य आठ च्याहं कर्म नाहें हो ।
 सावद्य सरवे नत पडजो फंद माहि हो ॥ ६ ॥
 जव तो सावद्य फिरतव होय जात हो ।
 सावद्य नहीं नीपजे तिल मात हो ॥ ७ ॥
 तो कटीयां नहीं सावद्य अंसमात हो ।
 आ विकलां री इचयवाली बात हो ॥ ८ ॥
 तो नेला हूआं सावद्य मिट जाय हो ।
 उगरी मरवा निकली इण न्याय हो ॥ ९ ॥
 च्याहं कर्म उदे आयां पूर हो ।
 उदे आंगे सावद्य करगो दूर हो ॥ १० ॥
 सावद्य मूँडे नीपनो कहे ताम हो ।
 ते तो वूँडे अग्यानी बेफाम हो ॥ ११ ॥
 कहे सावद्य नीपनो मत जांग हो ।
 आतो पावडीयांरी छे बांग हो ॥ १२ ॥
 आतो जिनजी रा मुख री बात हो ।
 त्रिग रे उदे आयां छे मिय्यात हो ॥ १३ ॥
 धनवातीया च्याहइं कर्म हो ।
 ते नूला अग्यानी मम हो ॥ १४ ॥
 त्रिगरी सरवा रहे नहीं मुख हो ।
 त्रिगरी मिष्ट हुई छै वृष हो ॥ १५ ॥

ढाल : ३

दुहा

कायक षणघातीया कर्म षय हुआ, वलें उदे हुआ ते षय जाय ।
बाकी दवीया छे ते उपसम्यां, षयउपसम कर्म हुआं इण न्याय ॥ १ ॥
च्याहं कर्म षयउपसम हुआं, थोरो सो जीव उजल थाय ।
ते उजलो खयउपसम भाव छे, ते चेतन गुण परजाय ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी षयउपसम हुआं, आठ गुण परगट थाय ।
च्यार ग्यान ने तीन अगिनान कह्या, सूत्रादिक नो भणवो ताय ॥ ३ ॥
ए आठ गुण छेकेवल ग्यान मांहिला, त्यामे सावद्य नही छे एक ।
जो यां मांहिलो कोई सावद्य हुवे, तो केवल ग्यान सावद्य बरोष ॥ ४ ॥
ग्यानावर्णी षयउपसम हुआं, ग्यान आयो कहे ते तो न्याय ।
पिण अग्यान कठा थी आवीया, कोई एहवी पूछां करे आय ॥ ५ ॥
परमार्थ ग्यान अग्यांन रो, एक कह्यो जिणराय ।
ते पिण आवे छे ग्यानावर्णी घट्यां, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[जीव मोह अनुकम्पा न आशीये]

गिनान ने अगिनान दोया तर्णों, षयउपसम भणवो तो एक जांणरे ।
ते तो समदिष्टी रो ग्यांन जिण कह्यो, मिथ्याती रो कह्यो अनांण रे ।
निरवद षयउपसम भाव छै* ॥ १ ॥
समदिष्टी भणे आगम गिनान ने, तेहिज भणे मिथ्याती गिनान रे ।
उणरो ग्यान छे उणरो अग्यान छे, तिणरो निरणो कीजो बुधवान रे ॥ नि० २ ॥
भारतादिक साख पर समे, स्थाने भणे मिथ्याती जाणे रे ।
तेहिज भणे समदिष्टी जाण ने, उणरे अनाण उणरे नांण रे ॥ ३ ॥
केइ निखद कहे गिनान ने, पछे सरधा वतावे विरुध रे ।
सावद्य निरवद कहै छै अग्यांन नें, आतो प्रतष वात विरुध रे ॥ ४ ॥
अगिनान ने सावद्य कहे, तिणरा घडा ल्गावै आंम रे ।
खोट्टा साख भणे जांण जांण ने, उवाडे मुख घोखे ताम रे ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाया के अन्त मे है ।

अग्यान सावद्य हुवे इण विव भण्णां, तो ग्यांन पिण सावद्य होय रे ।
 एहीज भणें समदिष्टी इण विवें, ए दोनूं वरोवर सोय रे ॥ ६ ॥
 समदिष्टी खेती करें जाण नें, ग्यांन सूं जाणें होसी धान रे ।
 नही जाणें तो खेत वावें नही, तो ही सावद्य नही छे ग्यांन रे ॥ ७ ॥
 समदिष्टी जाणे ग्यांन सूं, पुत्र होसी परणीज्यां नार रे ।
 पछे जाण परणीजे नार नें, पिण ग्यांन नही सावद्य लिंगार रे ॥ ८ ॥
 समदिष्टी रे कोई वेरी हुवै, तिणनें मारण रो लग रह्यो ध्यान रे ।
 ते पिण मारे छे ग्यांन सूं जाण ने, ते पिण सावद्य नही छे ग्यांन रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सावद्य करें, समदिष्टी ग्यांन सूं जाण रे ।
 तो पिण ग्यांन सावद्य मत जाणजों, सावद्य किरतव लेजों पिछांण रे ॥ १० ॥
 एहीज किरतव मिथ्याती करे, अग्यांन सूं जाण पिछांण रे ।
 जो ग्यांन निरवद छे निरमलो, तो अग्यांन पिण निरवद जाण रे ॥ ११ ॥
 ग्यान अग्यान दोनूं छे उजला, त्यांरी धारणा निरवद जाण रे ।
 धारणा दोनूं री छे सारिणी, तिण में संका मूल म आण रे ॥ १२ ॥
 ग्यांन ने अगिनान तेह ने, जाणपणा तणों गुण जाण रे ।
 ओर गुण ओगुण नही एह में, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे ॥ १३ ॥
 जे जे कर राखी छे धारणा, ते तो धारणा निरवद जाण रे ।
 ते धारणा उंबी सरणीयां, मिथ्यात उदें भाव पिछांण रे ॥ १४ ॥
 गाल्ल भणवारो उदम करे, तेतो जोग तणो व्यापार रे ।
 सावद्य जोग उदें भाव मोह सू, निरवद ओगारी करणी सार रे ॥ १५ ॥
 ग्यांन अग्यांन छत्ता रूप जीव रे, तिणसू जाण रह्यो छे ताय रे ।
 जे जे कोई सावद्य नीपजे, मोह उदा तणी परजाय रे ॥ १६ ॥
 धोलवा चालवादिक अति धणी, जीवरी परजाय अनेक रे ।
 जाण पणा विण ग्यान अग्यांन री, परजाय नहीं छे एक रे ॥ १७ ॥
 कोई अग्यांन ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतष भूट्टी वात रे ।
 तिणरे उसभ उदे रा जोर सू, चोरें पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ १८ ॥



ढाल : ४

दुहा

दरसणावर्णी घणघातीयो, षयउपसम ह्योय पड्यो खीन ।
जब आठ गुण परगट हुवें, पांच इंद्री नें दर्शन तीन ॥ १ ॥
ए आठुं गुण निरदोष छे, उजला लेखे निरवद जाण ।
ते केवल दर्शण माहिला, गुण रतनां री खाण ॥ २ ॥
केई अर्यानी इम कहे, आठोई गुण निरवद नाहि ।
यांनो सावद्य निरवद दोनूं कहे, भोला ने न्हाखे फंद माहि ॥ ३ ॥
यां आठां गुणां में सावद्य हुवें, तो केवल दर्शण सावद्य विशेष ।
ए तो केवल दर्शण माहिला, यां सगलां री गुण एक ॥ ४ ॥
पांच इंद्री ने तीन दर्शण मभे, सावद्य नही छे एक ।
ते जथात्थ परगट करूं, ते सुणजो आंण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[जोयजो रे समकित : आउषो टूटी ने साधो को नही रे]

चषू दर्शण मे चषू इंद्री अछें रे, अचषू दर्शण में आइ इंद्री च्यार रे ।
यां बिना देखें कोई मरजाद सूं रे, ते अविद्य दर्शण छे यां सूं न्यार रे ।
षयउपसम भाव छे निरवद जिण कह्यो रे* ॥ १ ॥
सुरतइंद्री सुने छे तीन शब्द ने रे, पांच वर्ण चषू इंद्री देखें ताहि रे ।
यांरो तो ओहिल गुण सभाव छे रे, गुण अवगुण और नही त्यां माहि रे ॥ २ ॥
षणइंद्री वेदे दोय गंध ने रे, रस इंद्री रस वेदे पांच सवाद रे ।
फरस इंद्री वेदें आठ फरस ने रे, यासू नही बिषे तणो विवाद रे ॥ ३ ॥
ए त्रेवीस प्रकारे पुद्गल जूजूआरे, वेदे देखे ते दर्शण जाण रे ।
यां में राग ने घेष सेव्यां विषे हुवे रे, तिणसूं तो पाप लगे छै आंण रे ॥ ४ ॥
सुरतइंद्री में पुद्गल आए पडे रे, ते सुरतइंद्री रे नावे भोग रे ।
चषू इंद्री देखें छे पुद्गल दूर थी रे, ते पिण नावे छे तिण रे भोग प्रजोग रे ॥ ५ ॥
बाकी तीन इंद्री में पुद्गल आए परे रे, ते पुद्गल आवें छे त्यारे भोग रे ।
गंध रस ने फरस भोगवे रे, त्यां पुद्गल नो आय मिले संजोग रे ॥ ६ ॥
सुरतइंद्री ने चषूइंद्रीयां रे, यांरे तो पुद्गल आवे काम रे ।
भोग नही छै यांरे सर्वथा रे, तिणसू यारो कामी इंद्री नाम रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

घणइद्री रसइद्री नें फरस इंद्रीया रे,
 तिण सूं तीनूं इद्री भोगी कही रे,
 कांमी नें भोगी तो इंदर्या कही रे,
 त्यासूं तो पाप न लागें सर्वथा रे,
 कांमभोग सूं सुमता नही हुवै रे,
 कह्यो छे उतरावेन बतीस भे रे,
 सजम निरवाहण राखण शरीर ने रे,
 ते निरवद जोग तणो व्यापार छे रे,
 त्यारे निरवद जोगा सू निरजरुा हुवै रे,
 त्यांसाधा रेसावद्यनही राख्यो सर्वथा रे,
 ग्रहस्थ उदीरे पुदगल भोगवे रे,
 तिण शरीर प्रग्रहा नों कीयो जाबतो रे,
 वले छ काय रो सल्ल ने तीखो कीयो रे,
 तिण सूं पुदगल ने भोगववा तणी रे,
 सेह हजे इंदर्या में पुदगल आए पड़े रे,
 जब पाप रो अस न लागे तेहने रे,
 पुदगल नें भोगवे देखे उदीर ने रे,
 तिणरो सावद्य निरवद किरतब ओलखों रे,
 जिण आग्या सहीत पुदगल ने भोगवे रे,
 कर्म कटे छे तिण सूं आगला रे,
 जिण आगना विण कोइ पुदगल भोगवे रे,
 तिण सू पाप कर्म लागे छे तेहने रे,
 आख्या सूं देखे कागादिक जीवने रे,
 तिणसूं चषू इद्री ने सावद्य कहे रे,
 चषू इद्री सू रूप देखें नारी तणो रे,
 तिण सू चषू इंद्री ने सावद्य कहें रे,
 इत्यादिक रूप अनेक देखने रे,
 तिणसूं चषू इद्री ने सावद्य कहे रे,
 च्यारां इंदर्या भे पुदगल आए पड़े रे,
 जब केयक जीवा रे अवगुण नीपजे रे,
 चषू इद्री पुदगल देखे दूर थी रे,
 जब केयक जीवा रे आंगुण नीपजें रे,

यारें तो पुदगल आवें भोग रे ।
 त्यानें पुदगल रों आय मिल्यां संजोग रे ॥ ८ ॥
 कामभोग नें पुदगल जाण रे ।
 पाप लागे छे राग घेष सूं आण रे ॥ ९ ॥
 असुमता पिण तिण सूं नही लिंगार रे ।
 सो नें पहली गाथा मभार रे ॥ १० ॥
 पुदगल रो करे छे सावु आहार रे ।
 इंदर्या रों नही छे विषे विकार रे ॥ ११ ॥
 जब पुन्य पिण सेहजें नीपजे छें ताय रे ।
 त्याने आजा दीघी छें श्री जिण राय रे ॥ १२ ॥
 ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे ।
 वले इंदर्या री सेवा विषे विकार रे ॥ १३ ॥
 इत्यादिक अवगुण छे तिण मांहि रे ।
 सुघ साधां विण श्री जिण आग्या नांहि रे ॥ १४ ॥
 त्याने कोई वेदे देखे छे ताय रे ।
 राग घेष सूं पाप लागें छें आय रे ॥ १५ ॥
 ते तो छे जोग तणों व्यापार रे ।
 जिण आग्या अणआग्या रो कुरो विचार रे ॥ १६ ॥
 ते निरवद जोग तणो व्यापार रे ।
 वले नवो न लागे पाप लिंगार रे ॥ १७ ॥
 ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे ।
 ते जीव नें दुखना आपणहार रे ॥ १८ ॥
 जब करे सिकारी तिणरी घात रे ।
 ते प्रतष भूठी तिणरी वात रे ॥ १९ ॥
 जब करे अकारज तिण सूं तेह रे ।
 तिण पिण भूठ बेल्यां छे एह रे ॥ २० ॥
 केइ जीवा रे उठे विषे विकार रे ।
 ते निरणों न जाणें मूढ गिंवार रे ॥ २१ ॥
 ते इंदर्यां वेद लेवे छें ताहि रे ।
 ते अवगुण बतवे इंदर्यां मांहि रे ॥ २२ ॥
 ते देखणरो गुण छे तिण में तांम रे ।
 खोटा वरत्या तिणरा परिणाम रे ॥ २३ ॥

सावद्य कहे पांचू इ दख्यां भणी रे, तिणरें उदे छे मोह मिथ्यात रे।
 ते इंदरयां ने निरवद जिणकही रे, तिण में सका नही तिलमात रे ॥ २४ ॥
 जो देख्यां वेद्यां इंदख्यां सावद्य हुवे रे, तो जांप्यां सूं ग्यांन सावद्य होय जाय रे।
 ग्यांन दर्शण रा गुण दोईज छे रे, सावद्य निरवद छै ओर परजाय रे ॥ २५ ॥
 दर्शण रो सभाव छे देखण तर्णों रे, और गुण ओगुण नही तिणरो एक रे।
 और गुण ओगुण नीपजें जीव रें रे, ते परजा छे जीव तणी अनेक रे ॥ २६ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

च्यलर कर्म घणघलतीयल, तलण में ढोटों ढोंहणीं कर्म ।
तलणरल उदल सूं जीव पलढे नही, सढकत चलरलत घर्म ॥ १ ॥
तलणढे दर्शन ढोहणी उदे हुवलं, पड़े उंची सरघल ढलंही आंण ।
सलची सरघल ढूल सूढे नही, बूडे कूडी कर कर तलंण ॥ २ ॥
चलरलत्र ढोहणी रल जोग सू, करे सलवघ कलरतब अनेक ।
खेदल २ कलढ सर्व आवीयल, बलकी सलवघ रह्यो नही एक ॥ ३ ॥
ते ढोहणी षयउपसढ हूवल, जब आठ गुण परगटे आय ।
च्यलर चलरलत्र देसवलरलत पलंचढो, तीढ दलदुष्ट पयउपसढ थय ॥ ॡ ॥
ए आठोई बोल छे उजलल, त्यलनें नलरलवद कहुल जलणरलय ।
ते आठोई षयक ढलव ढलहललल, त्यलसू कर्म न ललगे आय ॥ ॡ ॥
षयउपसढ ढलव ढलधुयलदलदनें, सलवघ कहे अगयलनी तलंढ ।
तलणरी जयलतथ ओलखणल कहुं, ते सुणजुयो रलखे चलत ठलंढ ॥ ६ ॥

ढलल

[दुलहो ढलनव ढव पलवशो]

उधो सरघे ते ढलधुयलदलद छे, ते दसवलध कहुयो ढलधुयलत हो । ढवलकजन ।
ते आश्रव उपलय छे पलप रो, ते उदे ढलव कहुयो जगनलथ हो ॥ ढ० ॥
षयउपसढ ढलव छे नलरढलो* ॥ १ ॥
दसोई उंधल बोल ढलंहललो, कोइ सूघे सरघे बोल एक हो ।
ते नलरदोष षयउपसढ ढलव छे, पलछे सलवघ रह्यल बोल शेष हो ॥ ष० २ ॥
जलढ २ घट छे उंधो सरघवो, तलढ २ घटे छे ढलधुयलत हो ।
उधो घटयलं वघे सूघो सरघवो, ते षयउपसढ ढलव सलखुयलत हो ॥ ३ ॥
ते षयउपसढ ढलव नलरलवद कहुयो, श्री जलणढुख सूं आप हो ।
ते उजलल लेखे नलरलवद कहुयो, वले खूकीयल छे तलणसूं पलप हो ॥ ॡ ॥
इढ घथतल २ सगलल घटयल, उंधल दसोई बोल जलंण हो ।
जब हूवो ढलधुयलती रो सढकती, एहुवो पयउपसढ ढलव पलछलंण हो ॥ ॡ ॥
कोइ, षयउपसढ नलरलवद ढलव ने, सलवघ कहे छे कर २ तलंण हो ।
ते यही बूडे छे बलपड़ल, ते जलण ढलरग रल अजलंण हो ॥ ६ ॥

*यह ओकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त ढे है

मिथ्यात मोहणी कर्म उदे हुआं, जब उदें भाव सावद्य मिथ्यात हो ।
 ते घटीयां सावद्य वधीयो कहे, ते विकलां वाली छें वात हो ॥ ७ ॥
 उदें भाव कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मिथ्यात मोहणी सु जाण हो ।
 वले षयउपसम कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मोह कर्म पख्यां हांण हो ॥ ८ ॥
 मोह कर्म उदे सावद्य नीपजें, षयउपसम हूआं सावद्य नांहि हो ।
 षयउपसम हूआं निरवद्य नीपजें, बुधवंत समझो मन मांहि हो ॥ ९ ॥
 मिथ्यादिष्ट षयउपसम भाव छे, समाभिथ्या दिष्ट तिमहीज जाण हो ।
 षयउपसम भाव निरवद्य कहां, तिण माहे संका मत आंण हो ॥ १० ॥
 जो षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो षायक भाव सावद्य वशेख हो ।
 षयउपसम षायक भाव मांहिलो, यां दोयां रो छे निजगुण एक हो ॥ ११ ॥
 षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो उदे भाव सूं मिट जाय हो ।
 उणरी सरखा रो ओहीज न्याय छे, उदे भाव रो करणों उपाय हो ॥ १२ ॥
 तो मिथ्यात मोहणी कर्म बांधणों, तिण सूं षयउपसम मिट जात हो ।
 साची सरखा नें उंधी सरख ने, पाछो पडिबजणों मिथ्यात हो ॥ १३ ॥

ढलल : ६

दुहल

चोथो कर्म घणघातीयो, भारी कर्म अंतराय ।
 जिण २ वसतुरी छे चावना, तिण आडो होय रह्यो ताय ॥ १ ॥
 अंतराय कर्म तणा, पांच भेद कह्या जिणराय ।
 प्रथम दांना अंतराय छे, बीजो भेद लाभा अंतराय ॥ २ ॥
 भोग उवभोग आडो होय रही, ते भोग उवभोग अंतराय ।
 वीर्य अंतराय कर्म थकी, सकत दबे रही ताय ॥ ३ ॥
 षयउपसम हुवे अंतराय जब, आठ गुण परगटें आय ।
 पांच लब्द नें तीन वीर्य हुवे, ते निर्मल गुण परजाय ॥ ४ ॥
 ए आठोई गुण निरवद उजला, त्यां नें सावद्य कहे केइ मूढ ।
 तिण-ऊंघ मती री सरखा सुंणो, छोड हीया री रुढ ॥ ५ ॥

ढलल

[विनारा भाव सुख सुख गूजे : डलभ मुंदिक नी डोरी]

धूर सूं तो दांना अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 दांन आडो नही छे ताय, दांन लब्द परगट हुवे आय ॥ १ ॥
 तिण लब्द नें निरवद जांणो, तिण मांहे संका मत आंणो ।
 तिणनें सावद्य कहे तांण तांण, ते तो जिण मारग अजांण ॥ २ ॥
 इण लब्द में ओगुण नांही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण अवगुण दांन में जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ ३ ॥
 इविरत में दान देवे जांणो, ते तो सावद्य जोग पिछांणो ।
 विरत में दांन देवे छे कोय, तिणरा निरवद जोग छे सोय ॥ ४ ॥
 दान ने सावद्य निरवद जांणो, त्यांनें रुडी रीत पिछांणो ।
 सावद्य दांन तो प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ५ ॥
 दान लब्द ने दांन छे न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो ।
 दान लब्द जतनज कीजे, सावद्य दान जाबक त्याग दीजे ॥ ६ ॥
 दांन लब्द छे निरवद भावो, तिण मांहे संका मत ल्यावो ।
 दान लब्द सावद्य कहै कोय, उपरे लेखे निरवद किम होय ॥ ७ ॥
 कर्म बांवे दांना अंतराय, सताव सूं उदे अणाय ।
 षयउपसम नें देणो घटाय, उपरे लेखे निरवद इम थाय ॥ ८ ॥

दांता अंतराय कर्म घटीयो, जीव उजल हूवों कर्म मिटीयो ।
 तिण उजल ने सावद्य कहे ते भूटो, मोह कर्म उदे हीयो फूटो ॥ ६ ॥
 सावद्य वधीयो कहे घटियां कर्म, ते भूला अग्यांनी भर्म ।
 ते सावद्यावर्णी कर्म थाप, यू ही दाचे अग्यांनी पाप ॥ १० ॥
 दूजी लाभ अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 लाभ आडी नहीं छे ताय, लाभ लब्द परगट हुवे आय ॥ ११ ॥
 तिण लब्द ने निरवद जाणों, तिण माहें सका मत आणों ।
 तिणनें सावद्य कहे तांण २, ते तो जिणमारग रा अजांण ॥ १२ ॥
 इण लब्द में आंगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण आगुण लाभ लेंग मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ १३ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, इविरत में लेण रो उपाय ।
 तिणने मेल्यां मिले छे आय, तिणरा सावद्य जोग छे ताय ॥ १४ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, जिण आग्या सूं मेलण रो उपाय ।
 तिण ने मेल्या मिले छे आय, तिणरा निरवद जोग छे ताय ॥ १५ ॥
 सावद्य जोग सू पाप बंधाय, निरवद जोग सू निरजरा थाय ।
 नहीं तूटे बंधे लब्द सू कर्म, लब्द छे निरजरा धर्म ॥ १६ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जांण, दान लब्द ज्यूं लेजो पिछांण ।
 लाभ लब्द मे ओगुण नाही, गुण अवगुण पुदगल मेल्यां मांही ॥ १७ ॥
 तीजी भोगा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 भोग आडी नहीं छे ताय, भोग लब्द परगट हुवे आय ॥ १८ ॥
 तिण लब्द ने निरवद जाणों, तिण माहें संका मत आंणो ।
 तिणने सावद्य कहे तांण २, ते तो जिण मारग रा अजांण ॥ १९ ॥
 इण लब्द में आगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण ओगुण भोगवण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ २० ॥
 पुदगल भोगवण री छे चाहि, इविरत में भोगवे छे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, तेतो सावद्य जोग व्यापार ॥ २१ ॥
 पुदगल भोगवणरी छे चाहि, जिण आग्या सूं भोगवे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, ते तो निरवद जोग व्यापार ॥ २२ ॥
 सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय ।
 नहीं तूटें बंधे लब्द सू कर्म, लब्ध छे निरजरा धर्म ॥ २३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लेज्यो पिछांणों ।
 भोग लब्द में ओगुण नाहीं, गुण ओगुण भोगवण रे मांही ॥ २४ ॥

असणादिक च्याहं आहार, ते भोग आवे एक वार ।
 ते उवभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नहीं छे ताय ॥ २५ ॥
 बल्ल गंहणादिक अनेक प्रकार, ते तो भोग आवे बारंबार ।
 ते परिभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नहीं छे ताय ॥ २६ ॥
 उवभोग लब्ध ज्युं जाणों, परिभोग लब्ध पिच्छाणों ।
 सगलोई कह्यो विसतार, लब्ध सावद्य नहीं छे लिगार ॥ २७ ॥
 पांचमी वीर्य अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 वीर्य आडी नहीं छे ताय, वीर्य लब्ध परगट हुवे आय ॥ २८ ॥
 तिण लब्ध ने' निरवद जाणो, तिण माहें संका मत आणो ।
 तिण ने' सावद्य कहे ताण ताण, ते तो जिण मारग रा अजाण ॥ २९ ॥
 इण लब्ध मे ओगुण नांही, लब्ध तो जिण आगना मांही ।
 गुण ओगुण किरतब मे जाणों, सावद्य निरवद भेद पिच्छाणो ॥ ३० ॥
 संसार रो किरतब करे जाणों, ते तो सावद्य जोग पिच्छाणो ।
 निरवद किरतब करे कोय, तिणरा निरवद जोग छें सोय ॥ ३१ ॥
 किरतब नें सावद्य निरवद जाणो, त्यां ने' रुद्धी रीत पिच्छाणो ।
 सावद्य किरतब प्रतष खोटो, लब्ध गुण छे निरंतर मोटो ॥ ३२ ॥
 वीर्य लब्ध ने किरतब न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणें विचारो ।
 वीर्य लब्ध रा जतन कीजें, सावद्य किरतब नें त्याग दीजे ॥ ३३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जाणो, दान लब्ध ज्युं लीज्यो पिच्छाणो ।
 वीर्य लब्ध में ओगुण म जाणों, गुण अवगुण किरतब मे पिच्छाणों ॥ ३४ ॥
 कोइ कहे बल प्राकम नहीं हुवें ताय, तो खोट किरतब केम कराय ।
 तिण सूं बल प्राकम सावद्य छे भूडो, इण सूं कर्म बांधे जीव बूडो ॥ ३५ ॥
 उसम उदें एहवी चरचा आणे, ते बल प्राकम ने सावद्य जाणें ।
 एहवी उंची करे बकवाय, इणरो न्याय सुणों चित ल्याय ॥ ३६ ॥
 अंतराय रो षयउपसम थाय, बल वीर्य सक्त हुवे ताय ।
 ते उजला लेखे निरवद रुडा, त्याने सावद्य कहे ते कूडा ॥ ३७ ॥
 यां सू किरतब करे भला भूडा, भला सू तिरे भूडा सू बूडा ।
 किरतब नें जोग व्यापार जाणों, सावद्य निरवद री करो पिच्छाणों ॥ ३८ ॥
 बल वीर्य सक्त प्राकम ताह्यो, वीर्य लब्ध में सर्व समायो ।
 ए छता रूप जीव रे मांहि, तिणसूं कर्म तूटे बंधे नाहि ॥ ३९ ॥
 धर्मी पुरष छे बलवंत रुडा, करणी करे कर्म करे दूरा ।
 अधर्मी तो निरवद हुवा रुडो, नहीं बांधे पाप रा पुरो ॥ ४० ॥

ते तो बल छे किरतब रूप ताह्यो,
जोवो सुतर भगोती रे म्हांयो,
सावद्य जोग उदे भाव भूडा,
लब्द षयउपसम भाव छे रूडो,
षयउपसम ने उदे भाव,
षयउपसय ने सावद्य जाणो,
बले वीर्य सकत पिछाणो,
ते गुण जीव सूं नही छे जूवा,
जेहवा सरीर पुदगल बघाय,
बल प्राकम हीणो इधिको होय,
शरीर गाढो हुवे अतंत,
शरीर पुदगल घट जावे,
जीव शरीर सूं हूवों न्यारो,
जब गयो जीव मुगत रे माही,
बल शरीर रे परसग,
तिणरो कह्यो घगो विसतारो,
भार ले जावे बूढो ने तरुणो,
तरुणा ज्यूं बालक तीर चलायो,
आहार सिज्जा उपघादिक ज्याने,
ते किरतब लेखे कह्या जाणो,
आहार सिज्जा उपघादिक जेह,
ते तो सावद्य निरवद नाही,
ज्यूं बल प्राकम वीर्य पिछाणों,
माठी बुव मत कही छे ताय,
बुव मत सूं करे विचारो,
माठो विचार्यो माठो जोग पूरो,
इत्यादिक बोल अनेक पिछाणो,
पिण षयउपसम भाव छे चोखो,
वाल वीर्य गुण ठाणां च्यार,
तिण वीर्य सूं सावद्य रो आगार,
तिण इविरत सूं पाप लागे,
पिण वीर्य लब्द छे षयउपसम भावो,

सावद्य निरवद जोग में आयो ।
जयवंती नें वीर बतायो ॥ ४१ ॥
तिणसूं जीव अनंता बूडा ।
ते पामें छे कर्म हूवां दूरो ॥ ४२ ॥
त्यांरो छे जूदो जूदो समाव ।
ते अग्यांनी थका उधी ताणें ॥ ४३ ॥
ते जीवरा उजल गुण जाणो ।
पिण शरीर रे प्रयोगे हूवा ॥ ४४ ॥
तेहवा बल प्राकम थाय ।
ते शरीर काचे पाके सोय ॥ ४५ ॥
जब जीव में बल अनंत ।
जब प्राकम हीणो थावे ॥ ४६ ॥
जब नही बल प्राकम लिंगारो ।
तठे बल प्राकम नही काई ॥ ४७ ॥
जोवो रायप्रसेणी उपंग ।
केसीकुपर मोटा अणगारो ॥ ४८ ॥
कावर दिष्टंत दे कीयो निरणो ।
तीर कबाण रो मेल्यो न्यायो ॥ ४९ ॥
सावद्य निरवद कह्या वीर त्याने ।
तिण ने रूडी रीत पिछाणो ॥ ५० ॥
ते तो पुदगल दरब छे एह ।
ते विचार करो मन मांही ॥ ५१ ॥
सावद्य जोग किरतब सूं जाणो ।
ते पिण कही छे किरतब रे न्याय ॥ ५२ ॥
ते पिण मन जोगरो व्यापारो ।
अछो विचार्यो निरवद जोग रूडो ॥ ५३ ॥
त्याने किरतब लेखे सावद्य जाणो ।
ते निश्चै निरवद निरदोखो ॥ ५४ ॥
तिणमें पिण ओगुण नही लिंगार ।
तिण आगार सूं हुवे छे विगाड ॥ ५५ ॥
तिण ने माठी जाणे नें त्याणें ।
ते तो निरजरा गुण छे चावो ॥ ५६ ॥

पिंडत वीर्यं नद्रगुणठांणा मांहीं, तिण सूं सावच्च न सेवणों काई ॥
 सावच्च सेवण रो त्याग्यो आगारो, तिण सूं इविरत्त न रही ल्लिगारो ॥ ५७ ॥
 जव चारित पयउपसम हूवो, ते चारित छे वीर्यं सूं जूओ ।
 तिण चारित सूं पाप रक्क जावे, लब्ध उज्जल रही थिर भावे ॥ ५८ ॥
 बाल पिंडत वीर्यं ने पिच्छांणो, तठें तो पांचमों गुण ठांणो ।
 देस थकी इविरत्त नें त्यागी, देस थकी हुवो वैरागी ॥ ५९ ॥
 इण त्याग सूं पंडित जांणो, इविरत्त रही सूं बाल पिच्छांणो ।
 बाल पिंडत इण लेखे हूओ, वीर्यं रो गुण इण सूं जूओ ॥ ६० ॥



ढल : ७

दुहा

सागार उपीयोग रा, आठ भेद कहुआ जिणराय ।
 पांच ग्यान तीन अग्यांन छे, और भेद नही कोई ताय ॥ १ ॥
 त्यांमे केवल ग्यान सारां सिरे, क्षायक भाव सागार ।
 ते पामें ग्यांनावणीं क्षय हुआं, तिणरो कोइ न पामें पार ॥ २ ॥
 सेष ग्यान अग्यांन रह्या तैह ने, कहिजे षयउपसम भाव सागार ।
 ते केवल ग्यान मांहिली वानगी, त्यांमें अवगुण नही छे लिगार ॥ ३ ॥
 च्यार ग्यांन केवल ग्यांन मांहिला, ते तो मिल गयो न्याय ।
 पिणअग्यांनकेवल मांहि किम मिलें, कोई एहवी पूछा करें आय ॥ ४ ॥
 ग्यांन अग्यांन तो एकहीज छे, एकहीज उपीयोग सागार ।
 ते पामें ग्यांनावणीं घट्यां, मिटे जीव तणों अंधकार ॥ ५ ॥
 *समदिष्टी रो ग्यांन जिण कहुआं, मिथ्याती रो कहुआं छे अनांण ।
 षयउपसम भाव तो निरमलो, दोयां रो बरोबर जांण ॥ ६ ॥
 ग्यांन अग्यांन षयउपसम भाव छे, यांमें जांणपणा रों गुण जांण ।
 और गुण यां में एक पावे नहीं, ते सुणजों चुत्तर सुजांण ॥ ७ ॥

ढल

[विनरा भाव सुख सुख गू जे]

उंधो सुधो जांणपणो सारो, ग्यांन सूं सर्व राखें धारो ।
 ए षयउपसम भाव छे चोखों, तिण में कोइ म जांणों दोखो ॥ १ ॥
 जिण रीतें धारे समदिष्टी, तिण रीते धारे मिच्छदिष्टी ।
 यांरी धारणा दोयां री एक, तिण में कोइ नही छे वषोष ॥ २ ॥
 धारणा षयउपसम भाव छे आछो, धारणा मति ग्यांन छे साचो ।
 तिण सूं पाप रूके तूटे नाही, वले पाप न लागे काई ॥ ३ ॥
 ऊंधों सुधों जांणपणो सारो, धाख्यां नही दोष लिगारो ।
 उंधो सरध्यां हुवे धगो विगाडों, जीवरो हुवे बहुत खुवारों ॥ ४ ॥
 अधर्म नें धर्म सरधे ताय, धर्म नें अधर्म सरधाय ।
 अजीव नें जीव सरधे कोय, जीव नें सरधे अजीव सोय ॥ ५ ॥

* (मिच्छत्त समाजोगा, अणण णाणत्ति ठाविद्या सण्णा ।

उपओगों एकं जहा, माहण चंडाल धड सलिलं १ ॥

कुमार्य नें नाग सरखें कोइ, नाग नें कुमार्य सरखें सोई।
 अनाव नें सरखें साव, साव नें सरखें असाव ॥ ६ ॥
 अनुवांगी नें सरखें नूत्रांगी, नूत्रांगी सरखें अनुवांगी।
 इत्यादिक उंचा बोल सरखाव, तिन सूं जीव निव्याती थाय ॥ ७ ॥
 ईश्वर मोह उदे हूवों जाय, उंचो सरखा लपो ताय।
 जव हूवो जीव निव्याती, उंचो सरखा रो पयनती ॥ ८ ॥
 मात्री सरखा मात्री जगनाथ, ते उंचा सरखा अवे निव्यात।
 आरे उंचो मन्वनी आरे, जो नूठ लगे तिन सरखा न जावे ॥ ९ ॥
 निव्याती उंचो सरखा मूं बागो, तिन रे क्लिय निव्यात रो लगे।
 ते वंज्य मोह उदे नाव जानों, तिन नें हवी रीत पिछांगो ॥ १० ॥
 तिनरे पयउत्तम भाव अनांग, तिन सूं पार न लगे बांग।
 पयउत्तम भाव नें उजळ जंगो, निव्याती रे छे तिन मूं अनांगो ॥ ११ ॥
 ओहीज सनदिष्टी रे छे ग्यांग, पयउत्तम भाव दोयां रो एक जांगो।
 ग्यांगवांगी रो पयउत्तम हूवे, तिन सूं दोयां रो गुण नहीं जूओ ॥ १२ ॥
 सनदिष्टी रे कह्यो छे ग्यांग, निव्याती रे कह्यो छे अग्यांग।
 तिन सूं सनदिष्टी बापो ग्यांगी, निव्याती बापो अग्यांगी ॥ १३ ॥
 जिगी सरखा छे मुव नांग, ते ननायो पूर्व रो ग्यांग।
 एक बोल उंचो मरखें ताय, जव निरव निव्याती थार ॥ १४ ॥
 तिनरो मनीशो पूर्व रो ग्यांग, तिनरो ग्यांग नें कहीजे अग्यांग।
 इन ग्यांग नें आंगुन नहीं लियार, अग्यांग बाब्यो निव्यात रो लार ॥ १५ ॥
 ओहीज बोल नूवो मरखें ताय, जव उहीज सनदिष्टी थय।
 तिनहीज अग्यांग नें ग्यांग जांगी, मनकत लारे ग्यांग क्लवांगो ॥ १६ ॥
 नावद्य उदे भाव निव्यादिष्ट, निरवद पयउत्तम भाव दिष्ट।
 नावद्य मूं पार अगे जाय, निरवद मूं पार कर्म क्लाय ॥ १७ ॥
 ग्यांग अग्यांग रो पयउत्तम भाव, जांगुन देखवा रो सनाव।
 यो नें जो ओहीज गुण पिछांगो, उज्जा लेखे निरवद जांगो ॥ १८ ॥
 त्यां मूं कर्म क्ले नूटे नाहीं, त्यां सूं पार न लगे जाई।
 केवल ग्यांग नें दर्शन पिछांगो, त्यां माहित्री बांगगी जांगो ॥ १९ ॥
 ग्यांग नागार उरीयोग जांगो, तिनरो क्लोय दोष दहांगो।
 तिन में विदरो विचार विगनांग, दर्शन विवेक ग्यांग प्रचांग ॥ २० ॥
 क्लोय उरीयोग छे सनागार, तिन में नहीं विगनांग विचार।
 तिन में देखन रो गुण छे ताहि, और गुण नहीं छे तिन मोई ॥ २१ ॥

दर्शण देखवा रो गुण छे ताथ, ग्यांन विना खबर नहीं काय ।
 तिण सूं ग्यांन कह्यो परघांन, दर्शण नें कह्यो सामान ॥ २२ ॥
 यां री खबर जुदी जुदी पाडो, बुधवंत हीया में विचारो ।
 मतग्यांन रा अठावीस भेद, ते सुणजो आंण उमंद ॥ २३ ॥
 सुरतइंद्री में शबद पडे आय, मतग्यांन विण खबर न काय ।
 उग्रह करे विचारे कोय, निरणो कर घारी राखें सोय ॥ २४ ॥
 विचारणा निरणो करे सोय, ते तो सावद्य निरवद होय ।
 ते तो जोग तणों व्यापार, सावद्य निरवद लेजों विचार ॥ २५ ॥
 धारणा कर राखें सोय, ते पिण सावद्य निरवद होय ।
 तिण में मन जोग रो व्यापार, ते पिण बुधवंत लेजों विचार ॥ २६ ॥
 उग्रह इहा उवाय नें घारे, संसार नें हेत विचारे ।
 ते सावद्य जोग कह्या जिणराय, माळी बुध मत छे इण न्याय ॥ २७ ॥
 उग्रह इहा अवाय नें घारे, निरजरा हेते मन में विचारे ।
 ते निरवद जोग कह्या जिणराय, आळी बुध मत छे इण न्याय ॥ २८ ॥
 बुधरो व्यापार मन जोग जांणो, मन विण नहीं कठे ठिकाणो ।
 बुध षयउपसम भाव छे न्यारो, तिण सूं नहीं सुघारो विगाडो ॥ २९ ॥
 इम पांचूं इंद्री नें मन जांणो, उग्रहादिक च्याळं सगलें पिछांणो ।
 च्याळं इंद्री ना वंजण च्यार, त्यां में चषू नें मन कीयो न्यार ॥ ३० ॥
 ए मतग्यान रा भेद अठावीस, सुतर में भाष्या जगदीस ।
 ते सुणवादिक सूं करे विचार, सावद्य निरवद जोग व्यापार ॥ ३१ ॥
 जांण जांण सावद्य करे कोय, तो ही ग्यांन सावद्य नहीं होय ।
 ग्यांन षयउपसम भाव छे ताहि, सावद्य किरतब उदे भाव माहि ॥ ३२ ॥
 ग्यान परिज्ञा समदिष्टी रे होय, पिण पचखांण परिज्ञा न कोय ।
 ते सावद्य कामा करे जांण, तिण सू पाप कर्म लागे आंण ॥ ३३ ॥



ढलल : ॢ

[ॢतुर वललर करे ने देखे]

ढडर हूड गंढ रस नें फरस, हडड डडर आणें छे, रागो रे ।
 डडडड डडर डेडड आणें, तलणरे डड कड आड ललगो रे ।
 ॢतुर वललर करे नें देखो* ॥ १ ॥
 गडर हूड गंढ रस ने फरस, हडड डडर न आणे रागो रे ।
 डडडड डडर डेड न आणें, तलणरे डड रो अंस न ललग रे ॥ २ ॥
 राग डेड आड वलण डड न लगे, ते डुववंत करो वललरो रे ।
 डड डडडडड डड डड कडे नही लगे, डड डे अवगुण नही ललगारो रे ॥ ३ ॥
 डडड तो डडडडड डड छे ॢओडो, राग डेड डडे डड डडणे रे ।
 ते ॢरलत डोह डडे डड नीडन, डड डे रूडड रलत डडडडणे रे ॥ ॡ ॥
 डडडर नें डणडर डडडडड, तडडनें ओलरललडो घट डडडडणे रे ।
 अनंतड डडरथ डडणे नें देखे, तलण डड अनंती डरडडडो रे ॥ ॡ ॥
 डडणडणड नें डडर डडडडड डडणे, ओर गुण आंगुण तलणडे नडडरे ।
 डणडर डडडडड डे देखण रो गुण, ओर गुण अवगुण नही तलण डडडरे ॥ ॢ ॥
 डडडडड डडडडड री डरडड डड, कड हके तूटे नडडरे ।
 डले डडडडड डड कड न लगे, डडड डरव गुण डरडड डडडरे ॥ ॣ ॥
 केड डडनड कड डडडडड डेती, हके तूटे छे कडो रे ।
 डले कड कड डडडडड डड लगे, ते डडड छे डडक डडो रे ॥ ॢ ॥
 डरव गुण डरडड डुवर लोकर नें, रूडड रलत डडडडडे रे ।
 डडण डडरड डडडड री डडड डडे नही, तलण डड डडल र डडल ॢलडडे रे ॥ ॢ ॥
 अनंतड डडरथ डडणे नें देखे, डडडडड र ड डड गुण डडडडे रे ।
 डरव गुण डरडड डडन २ लोकर नें, रूडड रलत डडडडडे रे ॥ १० ॥
 डले कड छे कड रोके नें तोडे, ते तो डडडर ने डणडरडो रे ।
 डले कड कड डडडडड डड वडे छे, ओ डरतड डेखो अंडरडो रे ॥ ११ ॥
 डडडडड डड नें डडड डरडे, हडड डड ललगडो डडडो रे ।
 डडर डरड डे डड डडडड, डड डडडो कुण डडनडी डडडो रे ॥ १२ ॥
 डडडडड डड नें डडड डरडे, डड डडड डडडो डडडडडो रे ।
 तलण डडडड नें डडड कडडड लडडे, तडडर डडड डरड डडडो रे ॥ १३ ॥

*डह आकडड डरतडेक गडड के अनंत डे डे ।

सावद्य कह्यो जब आश्रव निश्चै, कह दियो चोड़े साख्यातो रे ।
तो ही सावद्य कहें पिण आश्रव न कहें, कूडी टेक भाल्यांरी आ वातो रे ॥ १४ ॥
जब कहे भूँ षयउपसम भाव तिणें, उदा सूं कहां सावद्य तांमो रे ।
सुघ जाब नायां दूसरी ले उठे, तिणनें पाछो कहणो वले आंमो रे ॥ १५ ॥
जो थे उदा सूं षयउपसम सावद्य जांणो, तो पिण सावद्य कह्यो पयउपसम भावो रे ।
सावद्य कह्यो तिणनें आश्रव कहीजे, थारे मूढे थें कर दीयो न्यावो रे ॥ १६ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य कहे पिण, आश्रव कहितां आणे संको रे ।
ते लीषो टेक छूटे नहीं तिण थी, ते कर्म तणे वस वंको रे ॥ १७ ॥
आगे आश्रव में दोय भाव परुप्या, उदे नें परिणामीक भावो रे ।
षयउपसम कहां उठे आगली सरघा, तिण सूं खेले छे खोट डवो रे ॥ १८ ॥
जाणे भूठ बोलूं पिण आगली सरघा, उवा पिण कुसले खेंमें राखू रे ।
तो दोय भाव आश्रव मांहे दाखूं, तीजो षयउपसम भाव न भाखूं रे ॥ १९ ॥
पिण षयउपसम भाव ने प्रसिध चोडे, सावद्य तो कह चूको रे ।
सावद्य कह्यो जद आश्रव कह दीयो, तो तीन भाव कहां मानूको रे ॥ २० ॥
तो पिण तीन भाव आश्रव मांहे, मुख सूं कहणी न आवे रे ।
इसडी ताण आले रह्या त्यां नें, किण न्याय करे समभावें रे ॥ २१ ॥
जो आश्रव में तीन भाव नही कहो, तो षयउपसम ने सावद्य मत भाखो रे ।
उदे ने परिणामीक कहे ने, आगली सरघा राखो रे ॥ २२ ॥
इणविध चरघा में बं व कीषां, जाव नायां बोले कूरो रे ।
वले अकबक करनें उषो बोलें, वले क्रोध करे भागे दूरो रे ॥ २३ ॥
कोइ गहलो कहे म्हारी मा बांमळी छे, ते चोडे कहुं नहीं छाने रे ।
मो पूत तणी मा बांमळी निश्चै, एहवी बातडा हो कुण मानें रे ॥ २४ ॥
ज्यू कोई षयउपसम नें कहे सावद्य, पिण सावद्य नें आश्रव कहे नांही रे ।
म्हारी मां नें वले बांमळी छे तिम, एहवो अंचारी छे तिण मांही रे ॥ २५ ॥
केइ मानव पांचूं इंदव्यां नें, सावद्य कहे छें लोकां नें रे ।
कूडा २ कुहेत ल्याए, चोडे कहे नही छे छाने रे* ॥ २६ ॥
सुरतइंद्री नों सभाव छे एहवो, भला ने भूडा शब्द सुणायो रे ।
और गुण आंगुण नही सुरतइंद्री में, तिणमें संका म जांणो कोयो रे ॥ २७ ॥
भला २ शब्द सुणने राग आणें, घेष आणे शब्द सुणे भूडा रे ।
ए प्रतष आंगुण राग घेष में, त्यां सूं पाप कर्म वांघे वूडा रे ॥ २८ ॥

*ए २६ वी गाथा समूचे षयोपसम भाव उपर कही छे ।

चपू इंटीनों सभाव छे एहूवो, भला मूंडा ह्य देखें रे।
 और गुण आंगुण नहीं चपू इंटी में, वृक्वत ग्यांन सूं इम पेखें रे ॥ २६ ॥
 भला २ ह्य देखें राग आणे, मूंडा देखें आणे वेपों रे।
 ए प्रतय आंगुण राग वेप में, चपू इंटीनों काई नहीं लेखो रे ॥ ३० ॥
 घागइंटी नों सभाव छे एहूवो, भला नें मूंडा गंव वेदायो रे।
 और गुण अक्वगुण नहीं घागइंटी में, मूवी समरू पारो इण न्यायो रे ॥ ३१ ॥
 भला २ गंव उपर राग आणे, मूंडा गंव उपर ट्रेप आणे रे।
 ए प्रतय आंगुण राग वेप में, घागइंटी में अक्वगुण भोला जाणे रे ॥ ३२ ॥
 रमइंटी नों सभाव छे एहूवो, भला मूंडा वेदे रस सवावो रे।
 और गुण आंगुण नहीं रमइंटी में, इण मूं मूल नहीं विपवावो रे ॥ ३३ ॥
 भला २ रम उपर राग आणे, मूंडा रस उपर वेप आणे रे।
 ए प्रतय आंगुण राग वेप में, रसइंटी में आंगुण भोला जाणे रे ॥ ३४ ॥
 फरसइंटी नों सभाव छे एहूवो, भला मूंडा फरस वेदायो रे।
 और गुण अक्वगुण नहीं फरस इंटी में, इण नें ओल्लहल्यो इण न्यायो रे ॥ ३५ ॥
 भला फरस उपर राग आणे, मूंडा फरस उपर आणे वेपों रे।
 ए प्रतय आंगुण राग वेप में, फरसइंटी नों नहीं कोई लेखो रे ॥ ३६ ॥
 राग वेप में अक्वगुण वीते उवाडो, पिण इंटी में अक्वगुण नाहीं रे।
 यांरि गुण परलाय छें न्यारी २, विचार देखो मन माहीं रे* ॥ ३७ ॥
 कोई कहे छे आंगुण मुरतइंटी में, सवद मुणीयां राग वेप आयो रे।
 इमइ २ कूडा कु हेत ल्याए, सुरतइंटी नें सावद्य कहे ताह्यो रे ॥ ३८ ॥
 इमइ कूडा कु हेत मुण नें, मुरतइंटी नें सावद्य जाणे रे।
 हिवे निगणे जाव मुणे भव जीवां, मन नें आण ठिकाणे रे ॥ ३९ ॥
 किय ही ठामें पुरप अनेक वेडा था, त्यां सवद सुण्यो विपे कारी रे।
 के कां रे तो अळद गराज न आह्यो, त्यारे गुण अक्वगुण न हूवो ल्यारारे ॥ ४० ॥
 के कां तो मळ नें जयातय जाण्यो, ते निरवद जोग व्यापारो रे।
 के कां रे अळ सुगे वैराग उमनो, त्यांनं संसार लागो हारो रे ॥ ४१ ॥
 केडक तो मळ मुणनं रीड्या, त्यांरा तो सावद्य जोग छे मूंडो रे।
 के कां रे मळ मुणनं ट्रेप आयो, ते पिण सावद्य जोग सूं वूडा रे ॥ ४२ ॥
 मुणवो तो मगल्यो रो जगो मरीपो, सुरतइंटी नों ओहीज सभावो रे।
 जेप उदे प्यउमसम भाव नीपता, ते मुणजों जयातय न्यावो रे ॥ ४३ ॥

*ए ३७ वें गाथा समचे इंटी उपरे छे ।

सवद सुण्यो पिण गराज न आयो,
जथातथ जाण्यो तिण विचार करे ने,
जथातथ जाण्यो ते गिनान मे आयो,
ए दोनूई परजाय निरवद जाणो,
वैराग भाव उपनो तिण रे,
ओपिण सुरतइंद्री नों गुण छे नाही,
राग ने घेप आयो छे त्यारे,
ते पिण अवगुण नही छे सुरतइंद्री मे,
राग ने घेप आया ते मोह उदे सू,
राग घेप तणी परजाय छे,
राग ने घेप तणा परिणाम,
ए पिण परिणाम जूआ जूआ छें,
एहवा भला भूडा परिणाम वरते छे,
ते पिण सावच्च जोग वरत्या छे,
सुरतइंद्री सू सवद साथे लगो सुणीयो,
तिणा काले तो सम रह्या सारा,
हिवे के कारे अंतर मोहरत माहे,
के कां रे मोहरत दोय मोहरत पाछे,
इम पोहर दो पोहर दिवस पख मास,
राग आवे तिण शबद रे उपर,
सुरतइंद्री सू शब्द साभल लीघो,
हिवे तो शब्द ग्यान सू याद आयो छे,
ग्यान सू याद आया विषे सेवा लगो,
जो याद न आवे तो विषे न सेवत,
जो शब्द सुण्यां सू राग उपनों,
ज्यूं ग्यान सू याद आया राग आवे,
सुरतइंद्री ने ग्यान तो सावच्च नाही,
ताणातांग छोडो भव जीवां,
भूडा भूडा शब्द सुणीयां घेप आवे,
रागरी ठोड तो घेप ने कहणो,
कोइ कहे छे अवगुण चषू इंद्री में,
इसडा कूडा र कुहेत ल्हाए,

ते पिण सुरतइंद्री नों स्वभाव जाणो रे ।
ग्यान हूजो निरवच्च जोग पिछ्छाणो रे ॥ ४४ ॥
विचाख्यो ते निरवच्च जोग मांही रे ।
ते तो सुरतइंद्री नों गुण नाही रे ॥ ४५ ॥
चारित मोहणी षयउपसम हूओ रे ।
वैराग भाव इण सू जूओ रे ॥ ४६ ॥
पाप कर्म वघाणा भारी रे ।
ते बुववत करज्यो विचारी रे ॥ ४७ ॥
ते सुरतइंद्री नीं नही परजायो रे ।
ते सुरतइंद्री में केम समायो रे ॥ ४८ ॥
बले वीतराग परिणामो रे ।
त्यारा जूआ जूआ छें नामो रे ॥ ४९ ॥
ते गुण अवगुण छें या मांही रे ।
ते तो सुरतइंद्री मे नाही रे । ५० ॥
षणा मिनखां रो वदो रे ।
कोई न पख्यो विषे रे फंदो रे ॥ ५१ ॥
परिणाम माठा आया रे ।
त्यां पिण माठा परिणाम चलाया रे ॥ ५२ ॥
तथा वरस छ मास रे मांही रे ।
ते सुरतइंद्री में अवगुण नाही रे ॥ ५३ ॥
ते तो वीत गयो तिण कालो रे ।
मोह उदे सू हूवो मतबालो रे ॥ ५४ ॥
उणरे लेखे सावच्च ग्यांनो रे ।
आ सरवा क्यूं नही मांनो रे ॥ ५५ ॥
सुरत इंद्री सावच्च होय जायो रे ।
तो ग्यांन सावच्च क्यूं नहीं थायो रे ॥ ५६ ॥
सावच्च तो राग घेप रो चालो रे ।
श्री जिण वचन संभालो रे ॥ ५७ ॥
राग ज्यूं सगलोई कहणो रे ।
रुडी रीत विचारी लेणो रे ॥ ५८ ॥
रूप दीठां राग द्वेष आवे रे ।
चषू इंद्री ने सावच्च बतावे रे ॥ ५९ ॥

वले कहे जीव दीठो आंख्यां थी, जव कीषी जीवरी घातो रे ।
 जो नहीं देखे तो क्यां हणतो, इण लेखे आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
 इत्यादिक अनेक करे छे अकारज, जो कीषा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
 ते सर्व अवगुण छे चषू इंद्रो नो, इसरो वतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
 इण लेखे म्हे चषू नें सावद्य कहां छां, चषू माहें छे मांठो दोखो रे ।
 ग्यांन रो जाणपणो छे निरवद्य, तिणसूं ओ उपीयोग छै चोखो रे ॥ ६२ ॥
 इत्यादिक कूड़ा र कुहेत सुणे नें, कोई चषू इंद्रो ने सावद्य जाणें रे ।
 हिवें तिणरो जाव सुणों भवजीवां, मन नें आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
 क्रिण ही ठामें पुरष अनेक बेंठा था, त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
 के कारे रूप गराज न आयो, त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे ॥ ६४ ॥
 सुरतइंद्रो नो विस्तार कह्यो तिम, चखुइंद्रो नो पिण जाणो रे ।
 उठे शब्द कह्यो अठे रूप नें कहिणो, ते पिण हड़ो रीत पिछाणो रे ॥ ६५ ॥
 वले चषू इंद्रो नों विस्तार कहूं छूं, ते सांमल च्यो चित्त ल्यायो रे ।
 कोई चक्षु दर्शन ने सावद्य म जाणो, तिणरो न्याय धारो मन मांहां रे ॥ ६६ ॥
 चषूसूं देखनें करे सावद्य कामो, जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
 तो ग्यांन सूं जाण करे सावद्य कामा, ते ग्यांन सावद्य क्यूं न थायो रे ॥ ६७ ॥
 आंवे पुरष बेटा नें मोठो हूवो जाण्यो, तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
 जो नहीं जाणतों तो नहीं परणावतो, उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
 ग्यांन सूं जांणने श्रावक खेती करे छै, सूर नेदाणादिक करावे रे ।
 ते जाणे म्हारे धान इण विव होसी, उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
 कोई श्रावक समायक कर वेठो, तिणनें थेली भूली याद आइ रे ।
 याद आइ तो परिणाम चलीया, उठे चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
 जीव देख्यो तो हिंसा जीवरी कीषी, थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
 जो देखवो सावद्य तो जाणवो सावद्य, तिणमें कांडं धालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
 केइ समदिष्टी जांणने करावे, गढ कोट किलादिक भारी रे ।
 हाट हवेली मेंहलादि करावे, नही जाणे तो न करे लिगारी रे ॥ ७२ ॥
 जांण र नें एहवा कामा करे छे, तोही ग्यांननें नहीं कह्यो छो भूंडे रे ।
 देखनें करे छे सावद्य कामा, तो दर्शन ने सावद्य कहि कांय वूडो रे ॥ ७३ ॥
 कोई ग्यांन सूं जाण ने संचो करे छे, गुल तेलादिक घन धांनो रे ।
 वले विवध प्रकार संचो करे तोही, सावद्य नहीं बहे ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
 तो दर्शन सूं देखने करे संचो, तो दर्शन सावद्य कांय जांणो रे ।
 जांण ने देखने कीया सावद्य कामा, दोयां री एक रीत पिछाणो रे ॥ ७५ ॥

जव कीषी जीवरी घातो रे ।
 इण लेखे आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
 जो कीषा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
 इसरो वतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
 चषू माहें छे मांठो दोखो रे ।
 तिणसूं ओ उपीयोग छै चोखो रे ॥ ६२ ॥
 कोई चषू इंद्रो ने सावद्य जाणें रे ।
 मन नें आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
 त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
 त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिगारी रे ॥ ६४ ॥
 चखुइंद्रो नो पिण जाणो रे ।
 ते पिण हड़ो रीत पिछाणो रे ॥ ६५ ॥
 ते सांमल च्यो चित्त ल्यायो रे ।
 तिणरो न्याय धारो मन मांहां रे ॥ ६६ ॥
 जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
 ते ग्यांन सावद्य क्यूं न थायो रे ॥ ६७ ॥
 तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
 सूर नेदाणादिक करावे रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
 तिणनें थेली भूली याद आइ रे ।
 उठे चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
 थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
 तिणमें कांडं धालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
 गढ कोट किलादिक भारी रे ।
 नही जाणे तो न करे लिगारी रे ॥ ७२ ॥
 तोही ग्यांननें नहीं कह्यो छो भूंडे रे ।
 तो दर्शन ने सावद्य कहि कांय वूडो रे ॥ ७३ ॥
 गुल तेलादिक घन धांनो रे ।
 सावद्य नहीं बहे ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
 तो दर्शन सावद्य कांय जांणो रे ।
 दोयां री एक रीत पिछाणो रे ॥ ७५ ॥

समदिष्टी न्यातीलादिक नें मूंआ जाण्यां, बिगड्या जाण्यां काम अनेको रे ।
तिण जाण्यां सूं आर्त्तध्यान व्यावा लागो, ज्ञान नें दोष न कहो एको रे ॥ ७६ ॥
तो एहीज कामा देखतां विगड्यां, जब पिण ध्यायो आरत ध्यानी रे ।
जो देखनं कीचां दर्शन सावद्य कहों छो, तो जाणे कीचां सावद्य हूवों ज्ञानी रे ॥ ७७ ॥
समदिष्टी घर में धन गडीयो जाणे, और माल मुलक वले ताहों रे ।
जब याद आवे तब मन मांहे मूर्छें, नही जाणे तो नही मूरछार्यों रे ॥ ७८ ॥
ग्यानं सूं जाण्यां तो मूर्छा आई, जब ग्यानं नें निरवद जाणो रे ।
तेहीज सारा निजरां देख मूर्छें, जब उलटी कांय ताणों रे ॥ ७९ ॥
जाण नें सावद्य कीयां ग्यानं छे निरवद, देखे सावद्य कीयां दर्शन चोखो रे ।
अवगुण उदेभाव किरतब में छे, दोनूं उपीयोग छे निरदोषो रे ॥ ८० ॥
काम भोग जथातथ ग्यानं सूं जाणें, त्यां नें भोगवे जाण पिछाणो रे ।
जो नहीं जाणें तो नहीं भोगवतो, जब थें ग्यानं ने निरवद जाणो रे ॥ ८१ ॥
तो चषू देखनं भोग भोगवे, जब चषू नें सावद्य कांय भाखो रे ।
एक जाण भोगवे एक देख भोगवे, दोयां ने सरीषा क्यूं न दाखो रे ॥ ८२ ॥
धन भूलो ते समदिष्टी ने याद आयो, तिण सूं कीचा उदंगल अनेको रे ।
याद नही आवे तो नही करत उदंगल, जद ग्यानं कहो निरदोषो रे ॥ ८३ ॥
तो चषू सूं देखने करे उदंगल, ते चषू नें सावद्य कांय भाखो रे ।
जो जाण कीयां ग्यानं सावद्य हुवे तो, देख कीयां चषू सावद्य दाखो रे ॥ ८४ ॥
माठी वस्त अजाण्यां खावी, जाण्यो जब मन हूवो भूंडो रे ।
तिणरे मन भूडो वरत्यां पाप बंधाणों, ते किसा उपीयोग सूं बूडो रे ॥ ८५ ॥
देख खावों जब मन भूंडो न वरत्यो, जाण्यो जब मन वरत्यो भूंडों रे ।
तिण जाणपणा नें निरवद्य जाणो, तो चषू सावद्य कहे कांय बूडो रे ॥ ८६ ॥
चास बटाउ देखने पीवी, पछे सुणनं जाण्यो जहर पीवो रे ।
जाण्यो जब घसको पड्यो त्यां रे, पाप कर्म बाधें काल कीवो रे ॥ ८७ ॥
बटाउ मूंआ ते घसको परयां थी, जहर सुणने ग्यानं सूं जाण्यो रे ।
ते जाणपणा नें निरवद थापो, तो चषू सावद्य मत कहो ताणो रे ॥ ८८ ॥
साधु अपछरा देख रह्यो समभावे, घणा दिनां पछे अणसण लीवो रे ।
तिणरो रूप आछो जाण नें साधु, भोग वंछा नीहाणो कीवो रे ।
तिणरा रूप री धारणा याद आई, तो साधु कीवो नीहाणों रे ।
ते धारणा ग्यानं री निरवद जाणों, तो चषू मांहे अवगुण कांय जाणो रे ॥ ८९ ॥
धारणा याद आयां राग उपनो, देख्यो जब तो राग न आयो रे ।
चषू इंद्री नों अवगुण मूल न दीसे, तिणरो काल वीत गयो ताहो रे ॥ ९१ ॥

ज्ञान नीच सेव्या है याद आया जब, हूँ वाम नीच से गयी रे ।
 जब किन्ना उरियोग मूँ याद आया छे, किन्ना उरियोग मूँ वाड नग्यी रे ॥ ९२ ॥
 स्थान मूँ याद आयो तो रज्य उरयो, जब स्थान ज्ञान्यो ये हडो रे ।
 चतू आदि ईश्री नै माळुड यारो, जो थै चोडे ज्ञान्यो कूडो रे ॥ ९३ ॥
 ऊपरी नैँ हय वेह विकार उरजे, जब नागे छे चोथी बाडो रे ।
 तै निग देहनेँ स्थान मूँ ज्ञान्यो पाछे, वाड नग्यी कधीयो विकारो रे ॥ ९४ ॥
 नग्यी वाड नागे स्थान मूँ ज्ञान्यो पाछे, ऊपरीनी तो चरलेई स्थानो रे ।
 दिन स्थान नै निरवद चोडो जांगो, जो क्कन सारुड कांय नानो रे ॥ ९५ ॥
 देहनेँ करे रे छे दिन स्थान मूँ जांगो, नन मूँ करे विकारो रे ।
 जांग नैँ करे छे दिहोँ देहण री नज्जण, ए निरगो रुडो रीत्र बागो रे ॥ ९६ ॥
 नैँकृणार हाथी ग नव नैँ, जज्ञीपनरग मूँ याद आयो रे ।
 जब एक जेहनरो नंडयो कीयो, इना संह उमाड्या ताड्यो रे ॥ ९७ ॥
 याद आयो चारिपनरग सेवी, निरतैँ जो कही छो चोडो रे ।
 चतू मूँ पाछिलो नव याद न आयो, त्रिगनेँ कांय बनयो चोडो रे ॥ ९८ ॥
 किन छे तिनदिह जांग कीयाँ मूँ, स्थान सावड नहीं जाह्यो रे ।
 किन छे तिनदिह देह कीयाँ मूँ, कसण सारुड किन थायो रे ॥ ९९ ॥
 किन छे तिनदिह देह कीयाँ थी, चतू क्कन नैँ नहीं होडो रे ।
 होयो उरयो राग देव उदेनाड, त्रिग मूँ देवे छैँ पारगि पांयो रे ॥ १०० ॥
 इच्छाकि अनेक करे प्राकठ जाना, त्याँ नैँ केह स्थान मूँ जांगे रे ।
 केह क्कन मूँ देव करे छे, त्याँ नैँ रुडो रीत्र निह्योगो रे ॥ १०१ ॥
 ईश्री री सनद लो हूँ २ छे, और नसाव यो नैँ न पावे रे ।
 और उरनेँ पयउरपन नहीं कीह्यो मूँ, इन सनइया संक निड बावे रे ॥ १०२ ॥
 केह जांग करे केह देह करे छे, माळुड किरुव माउरई नंडो रे ।
 उरियोग तो छैँ वंड निरवद मूँ, त्याँ नैँ सावड सारुडे नत हूँ रे ॥ १०३ ॥
 वेदुँ उरियोग पयउरपन नाव छैँ चोला, उरया लेखे निरवद जांगो रे ।
 चतू उरियोग नैँ सावड पारुडे ते, कूडे छैँ कर ० जांगो रे ॥ १०४ ॥
 जब केह क्कहे मूँ मोह छैँ मूँ, पयउरपन नैँ सावड जांगो रे ।
 त्रिगनेँ पाछे इन उरर दीजे, हसडी उंडो नड जांगो रे ॥ १०५ ॥
 चारिप नोहणी उरे हूँवे रज, कीनरग नाव विकारवे रे ।
 त्रिग मूँ राग नैँ देव उरुड कधीया, त्रिग मूँ नाव जेग चरवे रे ॥ १०६ ॥
 नोह क्कन पयउरपन हूँवो जब, पयउरपन नाव पयउरयो रे ।
 नोहिय नोहणी फे उरे हूँवे, नोहिय पयउरपन छटीयो रे ॥ १०७ ॥

हूँ वाम नीच से गयी रे ।
 किन्ना उरियोग मूँ वाड नग्यी रे ॥ ९२ ॥
 जब स्थान ज्ञान्यो ये हडो रे ।
 जो थै चोडे ज्ञान्यो कूडो रे ॥ ९३ ॥
 जब नागे छे चोथी बाडो रे ।
 वाड नग्यी कधीयो विकारो रे ॥ ९४ ॥
 ऊपरीनी तो चरलेई स्थानो रे ।
 जो क्कन सारुड कांय नानो रे ॥ ९५ ॥
 नन मूँ करे विकारो रे ।
 ए निरगो रुडो रीत्र बागो रे ॥ ९६ ॥
 जज्ञीपनरग मूँ याद आयो रे ।
 इना संह उमाड्या ताड्यो रे ॥ ९७ ॥
 निरतैँ जो कही छो चोडो रे ।
 त्रिगनेँ कांय बनयो चोडो रे ॥ ९८ ॥
 स्थान सावड नहीं जाह्यो रे ।
 कसण सारुड किन थायो रे ॥ ९९ ॥
 चतू क्कन नैँ नहीं होडो रे ।
 त्रिग मूँ देवे छैँ पारगि पांयो रे ॥ १०० ॥
 त्याँ नैँ केह स्थान मूँ जांगे रे ।
 त्याँ नैँ रुडो रीत्र निह्योगो रे ॥ १०१ ॥
 और नसाव यो नैँ न पावे रे ।
 इन सनइया संक निड बावे रे ॥ १०२ ॥
 माळुड किरुव माउरई नंडो रे ।
 त्याँ नैँ सावड सारुडे नत हूँ रे ॥ १०३ ॥
 उरया लेखे निरवद जांगो रे ।
 कूडे छैँ कर ० जांगो रे ॥ १०४ ॥
 पयउरपन नैँ सावड जांगो रे ।
 हसडी उंडो नड जांगो रे ॥ १०५ ॥
 कीनरग नाव विकारवे रे ।
 त्रिग मूँ नाव जेग चरवे रे ॥ १०६ ॥
 पयउरपन नाव पयउरयो रे ।
 नोहिय पयउरपन छटीयो रे ॥ १०७ ॥

चारितमोहणी कर्म उदे सूं,
तो षयउपसम विगड्यो उदे भाव हूवों,
मोह उदे सूं मोहरो षयउपसम विगखो,
ज्यूं साधु विगड्या ने साधु म जाणो,
ज्यूं षयउपसम विगख्या नें उदेभाव जाणो,
षयउपसम आछो उदे भाव खोटो,
मोह उदे सूं नीपजें सावद्य सारा,
पाप लागे मोह उदे भाव सूं,
मोह उदे हूआं मोह रो षयउपसम विगरे,
चारित मोह सूं षिमादिक गुण विगरें,
दंसणमोह सूं सूधी सरधा विगाडे,
दंसण नें चारित मोहनों ओहीज होदो,
अंतानबंधी चोकरी उदे हूआं,
जब जीवरा दोनूँइ गुण विगरे,
दंसण मोहणी उदे हूवें जब,
जब पिण जीवरा दोनूँइ गुण विगरें,
आधाकर्मी आहारादिक असुध कह्यो छे,
ते आहार असुध सावद्य दोनू नाही,
ज्यूं सुरत इंद्रीयादिक आश्रव कह्यो ते,
पिण सुरत इंद्री तो आश्रव नाहीं,
ज्यूं अजीव काय असंजम कह्यो छे,
पिण अजीव तो असंजम नाही,
ज्यूं इंदख्या मोकली मेली ते आश्रव,
पिण इंद्रयां तो आश्रव छे नाहीं,
वले अजीव काय ने संजम कह्यो छे
ते अजीव तो संजम छे नाहीं,
ज्यूं इंद्रयां नें वस करे ते संवर,
पिण इंद्रयां ने संवर विरत मति जाणो,
परिग्रहो कह्यो सचित्त अचित्त नें मिश्र,
ते परिग्रहो तो डबोवे नाहीं,
ज्यूं इंद्रयां की विषे नें सावद्य कही ए,
पिण इंद्रयां तो सावद्य छे नाहीं,

राग घेष उदे भाव थायो रे।
तो षयउपसम नही छे ताह्यो रे ॥ १०८ ॥
ते षयउपसम भाव छे नाही रे।
ते गिण लेजों असाध रे मांही रे ॥ १०९ ॥
षयउपसम भाव म जाणो रे।
इम सावद्य निरवद्य पिछाणो रे ॥ ११० ॥
निरवद्य नीपजें षयउपसम तेथी रे।
नही लागे ते षयउपसम सेती रे ॥ १११ ॥
और षयउपसम विगारे नाही रे।
और गुण विगारे नहीं कांइ रे ॥ ११२ ॥
ओर तो गुण विगाड़े नाहीं रे।
ओर गुण विगाडे नही कांइ रे ॥ ११३ ॥
कदा दंसण मोह साथे उदे होयो रे।
आप आपरा न्यारा लो जोयो रे ॥ ११४ ॥
चारित मोहणी उदे हूवे साथे रे।
जोवो सूतर में साख्यातो रे ॥ ११५ ॥
ते तो किरतब आसरी जाणो रे।
आहारादिक थी सावद्य पिछाणो रे ॥ ११६ ॥
राग घेष आश्री जाणो रे।
अहार ज्यूं लो इंद्रया पिछाणो रे ॥ ११७ ॥
ते इविरत आश्री जाणो रे।
असंजम इविरत आश्री पिछाणो रे ॥ ११८ ॥
ते विषें इविरत आश्री जाणो रे।
ते अजीव असंजम ज्यूं इंद्रयां पिछाणो रे ॥ ११९ ॥
ते त्याग विरत लेखे वतायो रे।
त्यांरी विरत लेखे ओलखायो रे ॥ १२० ॥
ते विषे री विरत आश्री जाणो रे।
अजीव सजम ज्यूं इंद्रयां पिछाणो रे ॥ १२१ ॥
ते दुरगति मांहे डबोवे रे।
तिणरी मूर्छा विषे विगोवे रे ॥ १२२ ॥
ते राग घेष आश्री जाणो रे।
ते परिग्रहा ज्यूं इंद्रयां पिछाणो रे ॥ १२३ ॥

यों तीन प्रकार को परिग्रहो कह्यो ते, पाप कर्म न लागे तेथी रे।
 पाप लागे तिगरी मुद्धो जायां सूं, वले तिगरी इविस्त सेती रे ॥ १२४ ॥
 ज्युं पांचू इंदर्यां सूं पाप न लागे, पाप लागी विषे सूं जाणो रे।
 केइ . कहे इंदर्यां सूं ई लागें, ते प्रतख भूठ पिछाणो रे ॥ १२५ ॥
 अन पुने पाप पुने कह्यो सुतर में, नमसकार पुने नवमों वतायो रे।
 पिग ए सो नवोंई पुन छे नांही, पुन नीमनें परिणाम सूं ताह्यो रे ॥ १२६ ॥
 ज्युं इंदर्यां नें वस करे ते संवर, पिग इंदर्यां नें संवर म जाणो रे।
 विषे त्यागी ते परिणाम संवर नां छे, अन पुने ज्युं इंदर्यां पिछाणो रे ॥ १२७ ॥
 जोड़ कीशी इंदर्यां नी विषे ओल्लावण, नेंपवा सहार मन्मरो रे।
 संवत अजारे नें वस छयांलें, जेठ सुद तेरस बुववारो रे ॥ १२८ ॥

ढल : ९

दुहा

पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदे^१ उपसम^२ क्षायक^३ भाव ।
 षयउपसम^४ ने परणामीक^५ पांचमों, तिणरो जांणे समदिष्टी न्याव ॥ १ ॥
 धूरला च्यार भावां तणो, जुवो जुवो गुण जांण ।
 परणामीक भाव छे पांचमों, ते मिले सगलां माहें आंण ॥ २ ॥
 आठ कर्म उदे हूआं, त्यांसूं नीपनों उदे भाव जाण ।
 त्यांरो जूओ जूओ सभाव छे, तिणरी बुधवंत करजों पिछांण ॥ ३ ॥
 उपसम एक मोहणी कर्म हुवे, जब नीपजे उपसम भाव ।
 तिण उपसम भाव तेह में, और भाव रो नहीं छे लगाव ॥ ४ ॥
 आठ कर्म षय हूआं नीपजे, षायक भाव अनेक ।
 ते सगलाई षायक भाव में, और भाव न पावे एक ॥ ५ ॥
 च्यार कर्म षयउपसम हूआ, नीपजे षयउपसम भाव अनूप ।
 ते षयउपसम भाव निरमलो, तिणरो जूओ जूओ छे सरूप ॥ ६ ॥
 च्यारू भावं समावे आप आप में, परिणामीक सगलां में जांण ।
 समदिष्टी जथातथ ओलख्या, जिम छे तिम लीया छे पिछांण ॥ ७ ॥
 पांच भाव पूरा नहीं ओलख्या, ते करे अग्यांनी तांण ।
 नव पदार्थ रो निरणो नहीं, ते मूढ मिथ्याती अयांण ॥ ८ ॥
 केइ ओलख नें उलटा पख्या, मोह कर्म उदे हूओ आंण ।
 तिण सू निन्व हूवा किण विघें, ते सुणजो चंतुर सुजांण ॥ ९ ॥

ढाल

[पुन निपजे शुभजोग सू रे लाल]

इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छें आछो ध्यान हो ।
 मणागार उपीयोग कहे तेहने रे लाल, तिणरा घट माहे घोर अग्यांन हो ॥
 सरवा सुणो निन्वां तणी रे लाल ॥ १ ॥
 माठा ध्यान ने इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो ।
 मणागार उपीयोग त्यां नें पिण कहे रे लाल, एहवा कूड़ा करे छे निरंत हो ॥ २ ॥
 विरत इविरत भला मूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छें मणागार उपीयोग हो ।
 उधी अकल हिया रा जोर सू रे लाल, तिणरी सरवा घणी छे अजोग हो ॥ ३ ॥

विरत इविरत भला भूँडा ध्यान नें रे लाल,
 तिणरी खोटी सरधा छे सर्वथा रे लाल,
 विरत इविरत भला भूँडा ध्यान नें रे लाल,
 त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं रे लाल,
 इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल,
 सूतर सू मिलती नहीं रे लाल,
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल,
 तिण सू चेतन जीवरे रे लाल,
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल,
 तिण सू ए तो दोनूइ जू जूआ रे लाल,
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल,
 छठे गुण ठाणे आरत ध्यान छे रे लाल,
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल,
 धर्म ध्यान चोथें गुण ठाणे हुवे रे लाल,
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल,
 श्रावक रे इविरत छे सदा रे लाल,
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल,
 श्रावक रें विरत पिण छे सदा रे लाल,
 श्रावक रे दोनू निरंतर हुवे रे लाल,
 जो विरत इविरत ध्यान छे रे लाल,
 विरत इविरत भलो भूँडा ध्यान हुवे रे लाल,
 बले ध्यान ते ध्यान तीसरो हुवे रे लाल,
 तीन ध्यान एकण समे हुवे नहीं रे लाल,
 हीया मांहे विचारे निरणो करो रे लाल,
 इविरत नें कहे माठो ध्यान छे रे लाल,
 आ उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल,
 माठा ध्यान ने पिण इविरत कहे रे लाल,
 आपिण उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल,
 धर्म ध्यान थकी निरजरा हुवे रे लाल,
 संवर तो हुवे छे विरत सू रे लाल,
 संवर ने निरजरा कहे रे लाल,
 दोनू प्रकारे बूडे छे बापड़ा रे लाल,

कहे छे उपीयोग मणागार हो ।
 ते बुधवंत करजो विचार हो ॥ ४ ॥
 जूदा जूदा कहा छे भगवान हो ।
 सुणो सुरत दे कान हो ॥ ५ ॥
 तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ।
 ते सुणजो देई उपीयोग हो ॥ ६ ॥
 ते निरंतर लगती जाण हो ।
 पाप लागे निरंतर आण हो ॥ ७ ॥
 ध्यान तो ध्यावे जब होय हो ।
 यां नें एकम जाणो कोय हो ॥ ८ ॥
 तो छठे गुण ठाणे इविरत होय हो ।
 जब तो विरत रो अस न कोय हो ॥ ९ ॥
 तो चोथें गुण ठाणे विरत होय हो ।
 जब तो इविरत जावक न कोय हो ॥ १० ॥
 तो श्रावक रे निरंतर माठो ध्यान हो ।
 ते पिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ ११ ॥
 तो श्रावक रे निरंतर आछो ध्यान हो ।
 ओ पिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ १२ ॥
 विरत ने इविरत दोय हो ।
 दोनू ध्यान निरंतर होय हो ॥ १३ ॥
 तो श्रावक रे निरतर दोय ध्यान हो ।
 ओपिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ १४ ॥
 विरत इविरत एकण समें दोय हो ।
 उंची ताणकर बूडो मत कोय हो ॥ १५ ॥
 विरत ने कहे छे आछो ध्यान हो ।
 ते किण विव माने बुधवान हो ॥ १६ ॥
 आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो ।
 तिणमें करे अग्यानी निरत हो ॥ १७ ॥
 धर्म ध्यान सू सवर न होय हो ।
 तिण सू विरत ने ध्यान छे दोय हो ॥ १८ ॥
 निरजरा ने सवर कहे तांम हो ।
 उंची अकल सू वेफाम हो ॥ १९ ॥

विरत इविरत भला भूडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण हीया रा जोर सूं रे लाल, आ पिण सरवा घणी छे अजोग हो ॥ २० ॥
 इविरत तो उदे भाव अघर्म छे रे लाल, मोह कर्म उदे सूं जाण हो ।
 मणागार उपीयोग छे उजलो रे लाल, ते तो षयउपसम भाव पिछाण हो ॥ २१ ॥
 मोह कर्म षयउपसम हुवां रे लाल, विरत नीपजें षयउपसम भाव हो ।
 तिण मणागार उपीयोग रो रे लाल, मूल नही छे ल्गाव हो ॥ २२ ॥
 विरत सूं तो रुके कर्म आवता रे लाल, ते निश्चेइ संवर जाण हो ।
 मणागार तो देखण रो सभाव छै रे लाल, विरत में मिले नहीं आण हो ॥ २३ ॥
 विरत इविरत तो निरंतर हुवे रे लाल, मणागार निरंतर नाहि हो ।
 विरत इविरत मणागार किहां थकी रे लाल, ते निरणो करो घट माहि हो ॥ २४ ॥
 विरत इविरत नें कहे मणागार छे रे लाल, तिणरी सरवा में घोर अंधार हो ।
 ते भूठ बोले छे सर्वथा रे लाल, तिणमें सावद्य नहीं छे ल्गार हो ॥ २५ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहू रे लाल, त्यानें कहे छे मणागार असुघ हो ।
 घर्म शुक्ल ध्यान बेहू भला रे लाल, त्याने कहे छे मणागार सुघ हो ॥ २६ ॥
 भला भूडा च्याखंड ध्यान ने रे लाल, त्याने कहे उपीयोग मणागार हो ।
 ओतो गालां सूं गोलो चलावीयो रे लाल, तिणमें साच नही छे ल्गार हो ॥ २७ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहू रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो,
 ते सावद्य किरतब पाखो रे लाल, ते निश्चे नहीं मणागार हो ॥ २८ ॥
 मोहकर्म उदे सूं माठो ध्यान छे रे लाल, ते तो पाप कर्म रा उपाव हो,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, तिणरो देखण रो इज सभाव हो ॥ २९ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा तेह ने रे लाल, त्याने कहे मणागार उपीयोग ।
 एहवी उधी करे छे परूपणा रे लाल, तिणरी सरवा घणी छे अजोग हो ॥ ३० ॥
 घर्म शुक्ल ध्यान बेहू भला रे लाल, ते तो निरवद्य जोग व्यापार हो ।
 ते निरवद्य करणी निरजरा तणी रे लाल, ते पिण निश्चे नही मणागार हो ॥ ३० ॥
 अंतराय ने मोहणी षयउपसम्या रे लाल, जब ध्यावे छे आछो ध्यान हो ।
 तिण सूं कर्म कटे छे जीवरा रे लाल, मणागार तो देखण रो इज तांन हो ॥ ३२ ॥
 घर्म शुक्ल आछा ध्यान ने रे लाल, त्याने कहे मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण उधी करे छे परूपणा रे लाल, आपिण सरवा घणी छे अजोग हो ॥ ३३ ॥
 हिंसा करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले मूसावाय हो ।
 चोरी करे सेवे मइथुन ने रे लाल, परिग्रह मेलणरो करे उपाय हो ॥ ३४ ॥
 करे क्रोध मान माया लोभ नें रे लाल, राग धेष कलहो करे तांन हो ।
 अभिषण पेसुण पर परवाद ने रे लाल, रति अरति माया मोत्तों आंन हो ॥ ३५ ॥

चोथे गुणठाणे एक भाव ग्यान में रे लाल, समक्त मांहे तो छें तीन भाव हो ।
 त्यांरी समक्त नें ग्यान म जाणजो रे लाल, यांरो जूओ २ छें सभाव हो ॥ ५२ ॥
 दंसण मोहणी कर्म उदे हूआं रे लाल, समक्त रो हूओ छे मिथ्यात हो ।
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छें रे लाल, तिणरी खोटी सरघा साख्यात हो ॥ ५२ ॥
 सागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, मिथ्यात उदे भाव अंधकार हो ।
 सागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल, ते बृधवंत करजो विचार हो ॥ ५४ ॥
 मिथ्यात उदे भाव तेहथी रे लाल, लागे छे किरिया मिथ्यात हो ।
 सागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे तिलमात हो ॥ ५५ ॥
 समक्त उपसमादिक तेह थी रे लाल, टल जाए किरिया मिथ्यात हो ।
 समक्त रो मिथ्यात प्रतिपष छे रे लाल, बिगडयो सुघरयो होय जात हो ॥ ५६ ॥
 सागार बधीयां कर्म खके नहीं रे लाल, घटीयां पाप न आवे लगार हो ।
 बले कर्म न तूटें सागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद सागार हो ॥ ५७ ॥
 सागार बधे ग्यांनावर्णी घट्यां रे लाल, ग्यांनावर्णी बधीयां घटे सागार हो ।
 सागार घटीयां सावद्य न नीपजें रे लाल, बधीयां निरवद न नीपजें लिगार हो ॥ ५८ ॥
 मिथ्यात सावद्य छे मोटको रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो ।
 तिण मिथ्यात नें सागार कहे केई रे लाल, ते बोले छे आल पंपाल हो ॥ ५९ ॥
 कोइ सागार नें समक्त कहे रे लाल, बले कहे छे सागार नें मिथ्यात हो ।
 संवर आसव कहे छे सागार नें रे लाल, तिणरी प्रतष भूझी वात हो ॥ ६० ॥
 सागार तो संवर आसव नहीं रे लाल, संवर आसव तो समक्त मिथ्यात हो ।
 सागार नें संवर आसव कहे रे लाल, ते चोडे भूला जात हो ॥ ६१ ॥
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते तो अंतरमोहरत मांहे हो ।
 समक्त रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहे हो ॥ ६२ ॥
 मिथ्यात रहे त्यां लग निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहे हो ।
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, सोच देखो मन मांहे हो ॥ ६३ ॥
 मिथ्यात ने समक्त बेहूं दिष्ट छे रे लाल, ते निश्चें नहीं छे सागार हो ।
 बेहूं दिष्ट नें सागार म सरघज्यो रे लाल, करे हीया में विचार हो ॥ ६४ ॥
 बेहूं दिष्ट ने घाली सागार में रे लाल, तीजी दिष्ट किम राखसी न्यार हो ।
 जो इण नें ई कहे सागार छे रे लाल, तो अंवार मांहे फेर अंवार हो ॥ ६५ ॥
 समा मिथ्या दिष्ट छे तीसरी रे लाल, ते दिष्ट छे तीजे गुण ठाण हो ।
 दंसणमोहणी उदे षयउपसम हूवां रे लाल, मिश्र दिष्ट नीपजती जाण हो ॥ ६६ ॥
 मिश्र दिष्ट नें कहे सागार छे रे लाल, सागार नहीं मिश्र दिष्ट हो ।
 मिश्र दिष्ट ने कहे छे सागार छे रे लाल, तिणरी सरघां घणी छे मिष्ट हो ॥ ६७ ॥

तीनां दिष्टां नें कहे सागार छे रे लाल,
 आप डूवे ओरां नें डबोवता रे लाल,
 तीनुं दिष्ट ने सागार उपीयोग रा रे लाल,
 ए समल नें धाल्या सागार में रे लाल,
 तीन दिष्ट ने सागार उपीयोग रो रे लाल,
 दिष्टे निरणो कहु छूं मणागार नों रे लाल,
 मणागार उपीयोग ने चारित कहे रे लाल,
 ते वेहूं विघ सरधा उंची घणी रे लाल,
 चारित मोहणी षयउपसम हुआं रे लाल,
 तिणसूं इविरतादिक री किरिया मिटी रे लाल,
 मणागार तो दर्शन उपीयोग छे रे लाल,
 तिण चारित नें कहे मणागार छे रे लाल,
 छडा गुणठांगा थी बारमां लगे रे लाल,
 तठा तांइ चारित में तीन भाव छे रे लाल,
 छडा गुणठाणा थी दसमां लगे रे लाल,
 उपसम चारित गुणठाणें इग्यारमें रे लाल,
 षायक उपसम षयउपसम चारित तिहां रे लाल,
 तिणसूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल,
 चारित तो उपसम भाव जिण कहीं रे लाल,
 ए न्यारा २ दोनुं जाण जो रे लाल,
 दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे लाल,
 तिण मणागार ने चारित कहे रे लाल,
 चारित मोहणी कर्म उपसम हुआं रे लाल,
 तेहीज चारितमोहणी षय हुआं रे लाल,
 चारित मोहणी षयोपसम हुआं रे लाल,
 यां तीनां ने कहे मणागार छे रे लाल,
 चारित मोहणी कर्म घटीयां थकां रे लाल,
 दर्शणावर्णी कर्म घटीयो तेहूं सूं रे लाल,
 तिण सूं मणागार नें चारित जूजुआ रे लाल,
 कोई चारित नें गिणें मणागार हो लाल,
 षयउपसम ग्यांन छदमस्थ रो रे लाल,
 तिण चारित नें मणागार मजांण जो रे लाल,

तिणरे उदे हूवो छे मिथ्यात हो ।
 कर २ भूळी वात हो ॥६८॥
 जूआ २ गुण तास हो ।
 तिणरी समक्त रो हूवो छे विणास हो ॥६९॥
 निरणों कीयो छे तांम हो ।
 ते सुणजों राख चित्त ठाम हो ॥७०॥
 चारित नें कहे छे मणागार हो ।
 तिण में साच नहीं छे लिगार हो ॥७१॥
 जब पामें चारित श्रीकार हो ।
 ते तो निश्चेइ नहीं मणागार हो ॥७२॥
 चारित ने तो त्याग भाव जांण हो ।
 ते पिण पूरा मूढ अयांण हो ॥७३॥
 मणागार तो षयउपसम भाव हो ।
 तिणरो सुणो विवरा सुघ न्याव हो ॥७४॥
 षयउपसम चारित जांण हो ।
 षायक चारित बारमें गुणठांण हो ॥७५॥
 षयउपसम छे मणागार हो ।
 तिणमें शंका म राखो लिगार हो ॥७६॥
 मणागार उपसम भाव नांय हो ।
 यां नें एक सरधे वूडो कांय हो ॥७७॥
 जब नीपजे षयउपसम मणागार हो ।
 तिणरा घट मांहे घोर अंबार हो ॥७८॥
 जब उपसम चारित होय हो ।
 षायक चारित पामें सोय हो ॥७९॥
 षयउपसम चारित थाय हो ।
 ते तो चोडे मूला जाय हो ॥८०॥
 जब चारित पामें श्रीकार हो ।
 पामें छे षयउपसम मणागार हो ॥८१॥
 जूई जूई त्यांरी परजाय हो ।
 तिण गेंहला नें खबर न कांय हो ॥८२॥
 त्यांरा चारित मांहे तीन भाव हो ।
 यां रो जूओ २ छें सभाव हो ॥८३॥

चारित मोहणी कर्म उदें हूयां रे लाल,
 तिण अचारित नें कहे मणागार छे रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल,
 मणागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल,
 अचारित उदे भाव तेहथी रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव थी रे लाल,
 चारित सामायिकादिक तेहथी रे लाल,
 चारित रों प्रतिपक्ष अचारित हुवे रे लाल,
 मणागार बबीयां कर्म रुके नहीं रे लाल,
 बले कर्म न तूटे मणागार थी रे लाल,
 दसंगावर्णी कर्म घटे बधे रे लाल,
 मणागार बबीयां घटीयां थकां रे लाल,
 इविरत तो सावद्य छे अति बुरी रे लाल,
 तिण इविरत नें कहें मणागार छे रे लाल,
 कोइ मणागार ने चारित कहे रे लाल,
 संवर आश्व कहे मणागार नें रे लाल,
 मणागार तो संवर आश्व नहीं रे लाल,
 मणागार नें संवर आश्व कहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 चारित रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल,
 इविरत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 दसमें गुणठांणे चारित निरंतर हुवे रे लाल,
 जो मणागार चारित हुवे रे लाल,
 मणागार उपीयोग हुवे जिण समें रे लाल,
 तिणसूं सागार नें मणागार नों रे लाल,
 मणागार नो उपीयोग नहीं हुवे रे लाल,
 तिणसूं विरत इविरत मणागार नों रे लाल,
 विरत इविरत छे बेहूं जू जूइ रे लाल,
 यां दोयां नें मणागार म जाणजो रे लाल,
 विरत तो छे धर्म पक्ष मफे रे लाल,
 विरताविरत मिश्र पक्ष तीसरो रे लाल,

जब चारित रो अचारित हुवो जाण हो ।
 ते पूरा मूढ अयांण हो ॥ ५४ ॥
 अचारित तो उदे भाव जाण हो ।
 से निरणो करो चतुर सुजाण हो ॥ ५५ ॥
 इविरत किरिया लागे साख्यात हो ।
 पाप न लागे अंसमात हो ॥ ५६ ॥
 टलजाए किरिया पात हो ।
 विगळ्यो सुबख्यो होय जात हो ॥ ५७ ॥
 घटियां पाप न लागे लिगार हो ।
 उजला लेखे निरवद मणागार हो ॥ ५८ ॥
 जब बधे घटे मणागार हो ।
 सावद्य नहीं नीपजे लिगार हो ॥ ५९ ॥
 तिणसूं पाप लागे दग चाल हो ।
 ते बोले छें आल पंपाल हो ॥ ६० ॥
 बले कहे मणागार नें इविरत हो ।
 ते तो कूड़ा करे छें निरत हो ॥ ६१ ॥
 संवर आश्व तो विरत इविरत हो ।
 ते चोडे भूलो छें निसरत हो ॥ ६२ ॥
 ते अंतर मोहरत मांहि हो ।
 किण ही समें विरहो पडे नांहि हो ॥ ६३ ॥
 किणही समें विरहो पडे नांहि हो ।
 ते विचार देखो मन मांहि हो ॥ ६४ ॥
 दसमें गुणठांणे नहीं मणागार हो ।
 तो चारित न हुवे तिणवार हो ॥ ६५ ॥
 तिण समें नहीं सागार उपीयोग हो ।
 समकाले वेहां रो नहीं जोग हो ॥ ६६ ॥
 जब विरत इविरत हुवे ताहि हो ।
 मिलाप नहीं मांहो मांहि हो ॥ ६७ ॥
 ते निश्चेंद नहीं मणागार हो ।
 करे हीया में विचार हो ॥ ६८ ॥
 इविरत नें अधर्म पक्ष जाण हो ।
 यांरी पिण करज्यों पिछांण हो ॥ ६९ ॥

दोय तो पन्न थाल्या मणागार में रे लाल, मित्र पन्न किन्न राखती न्यार हो ।
 जो इण नें इ कहे मणागार छे रे लाल, तो अंचारा में फेर अंचार हो ॥१००॥
 मित्र पन्न छे तीसरो रे लाल, मित्र पन्न पांच में गुणअण हो ।
 चारित मोहणी उदे पयलपसम हूवां रे लाल, मित्र पन्न नीपजतो जाण हो ॥१०१॥
 मित्र पन्न मणागार निश्चें नहीं रे लाल, मणागार मित्र पन्न नाहि हो ।
 मित्र पन्न नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पडीया मिथ्यात रे माहि हो ॥१०२॥
 तीनां पनां नें कहे मणागार छें रे लाल, तिणरे उदे हूवो छें मिथ्यात हो ।
 आप डूवें ओरां नें डवोवता रे लाल, कर २ कूडी वात हो ॥१०३॥
 तीनुं पन्न नें मणागार ज्योयोग रा रे लाल, जूया २ गुण वास हो ।
 यां सगलां नें थाल्या मणागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हुवो छे विगास हो ॥१०४॥
 तीनां इ पप नें मणागार नां रे लाल, ए निरणों कहो छें तांम हो ।
 हिवें निरणो कहूंछुंतीनुंजोगांतणो रे लाल, ते मुणजो राख चित्त ठाम हो ॥१०५॥
 अठारे पापयानक सेवे तेहनां रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो ।
 ते तो चारित मोहणी रा उदा थकी रे लाल, ते तो निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०६॥
 हिंसा करे छे प्राणी जीवरी रे लाल, ते तो प्रणातपात आश्र दुवार हो ।
 ते पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०७॥
 मूठ बोले कोई मोटो छोटको रे लाल, ते मिरपावाद आश्र दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०८॥
 कोई छोटो मोटी चोरी करे रे लाल, ते अदत्तादान आश्र दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०९॥
 अस्त्रीयादिक सूं सेवें मैथुन नें रे लाल, ते मैथुन आश्र दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ मणागार हो ॥११०॥
 सचित्त अचित्त मित्र राखे परिग्रहो रे लाल, ते परिग्रह आश्र दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१११॥
 इम क्रोधादिक मिथ्यात अठारमां रे लाल, अठारोंइ आश्र दुवार हो ।
 अठारे पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते अठारोंइ नही मणागार हो ॥११२॥
 सतरे पापयानक छें चारित मोहणी रे लाल, अठारमों दंसण मोहणी जाण हो ।
 त्यांरा उदा सूं ए किरतव करे रे लाल, त्यांनं जूदा २ लो पिछाण हो ॥११३॥
 हिंसादिक अठारेंइ किरतव करे रे लाल, ते अठारेंइ सावद्य जोग हो ।
 ते अठारोंइ आश्र दुवार छें रे लाल, निश्चेंइ नहीं मणागार ज्योयोग हो ॥११४॥
 हिंसा री इविरत निरंतर हुवे रे लाल, हिंसा रा जोग निरंतर नाहि हो ।
 हिंसा रा जोग तो हिंसा करे जवी रे लाल, विचार देखो मन माहि हो ॥११५॥

हिसादिक अठारे पाडूवा रे लाल,
हिसादिक रा जोग बरते जदी रे लाल,
यां अठारां री इविरत तेहना रे लाल,
यां अठारां रा किरतब माठा जोगना रे लाल,
अठारां री इविरत नें माठा जोगने रे लाल,
ते मोहकर्म रा उदा थकी रे लाल,
सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल,
तिणरी उंधी सरधा छे सर्वथा रे लाल,
पनरे करमादांन सेवे जू जूवा रे लाल,
विविध पर्णे किरतब पाडूवा करे रे लाल,
बले कूटवो पीटवो नें रोयवो रे लाल,
त्यां सगलां नें कहें मणागार छें रे लाल,
आश्व संवर ने निरजरा तणा रे लाल,
यां सगलां नें कहे मणागार छे रे लाल,
पसारी तणा हाट तेह में रे लाल,
त्यांरी कोथलीयां छें जू जूइ रे लाल,
तिण पसारी रो वेटें हीया फूट थो रे लाल,
तिण सगली कोथलीयां खोलने रे लाल,
दोय कोथला हुंता तिणरी हाट में रे लाल,
ते मन में जाणे हूं डाहो घणो रे लाल,
पूत कपूत हुवो पसारी तणो रे,
इण दिष्टते निन्व हुआ रे लाल,
अनंती परजाय छें जीवरी रे लाल,
जे निन्हव हुआ उधी अकल का रे लाल,
समकत नें मिथ्यात नी परजाय ने रे लाल,
एहवा बवेक विकल निन्वां तणें रे लाल,
बले चारित अचारत री परजाय ने रे लाल,
एहवा हीया फूट निन्वां तणी रे लाल,
इत्यादिक जीवरी परजाय ने रे लाल,
जूइ जूइ परजाय नहीं बोलखी रे लाल,
सागार नों गुण जाणव तणा रे लाल,
और गुण अकगुण यामें कोइ नहीं रे लाल,

ज्यांरी इविरत निरंतर जाण हो ।
यांरी करो हीया मे पिछाण हो ॥ ११६ ॥
पूरा भेद कहा नहीं जाय हो ।
कहितां र पार न आय हो ॥ ११७ ॥
कहीजे आश्व दुवार हो ।
ते निश्चै नही मणागार हो ॥ ११८ ॥
केई कहे छे आश्व दुवार हो ।
तिणमें साच नहीं छे लिगार हो ॥ ११९ ॥
आरंभ करे अनेक परकार हो ।
त्यांने कहे छे ग्यानी मणागार हो ॥ १२० ॥
बले घर रा कारज अनेक हो ।
त्यां विकलां नें नहीं छे विवेक हो ॥ १२१ ॥
त्यांरा भेदां रो नहीं छे कोइ पार हो ।
तिण मिथ्यात कीयो अंगीकार हो ॥ १२२ ॥
किराणों छे विवध परकार हो ।
यां में जूइ जूइ नो जाणकार हो ॥ १२३ ॥
तिण विकल में नहीं छे विवेक हो ।
किराणा रो कीयो ढिग एक हो ॥ १२४ ॥
ते किराणो घाल्यो दोयां मांहि हो ।
मोसरीषो म्हारो पिता पिण नांहि हो ॥ १२५ ॥
तिण कीयो नीवी रो नास हो ।
त्यां कीयो समकत रो विणास हो ॥ १२६ ॥
ते मांहो मांहि न खाए भेल हो ।
त्यां कर दीधी भेल संभेल हो ॥ १२७ ॥
त्यांने कहे छे सागार उपीयोग हो ।
लागो मिथ्यात रो रोग हो ॥ १२८ ॥
त्यांने कहे मणागार उपीयोग हो ।
आ सरधा घणी छे अजोग हो ॥ १२९ ॥
कर दीधी भेल संभेल हो ।
ते बोले वालक जिम वेहल हो ॥ १३० ॥
देखवा रो गुण छे मणागार हो ।
ते करो हीया में निस्तार हो ॥ १३१ ॥

सागर मणागर उपीयोग नें रे लाल, संवर आस्व म सरघो कोय हो ।
 जो संका पड़े इण बात में रे लाल, तों सूतर नें लो जोय हो ॥ १३२ ॥
 संवत अठारे सेंतालेस में रे, फागुण विद आठम शनीसर वार हो ।
 जोड कीधी भव जीवांनें प्रति बोधवा रे लाल, नेणवा सहर मझार हो ॥ १३३ ॥



ढाल : १०

दुहा

च्यार कर्म घनघातिया, अन्न पटल ज्यूं जीवरे ताय ।
 ग्यानवर्णी दर्शनावर्णी मोहणी, चोथो कर्म अंतराय ॥ १ ॥
 च्यार कर्म षयउपशम हुआं, नीपजे निरवद भाव ।
 ते- निजगुण सुद्ध पर्याय छें, त्यांरो जूदो २ छें सभाव ॥ २ ॥
 उजला लेखे सगलां भणी, निरवद कह्या भगवान ।
 केइ गुणा सूं पाप कर्म व्हे, उजला लेखे सर्व निधान ॥ ३ ॥
 ए च्याळं कर्म उदे हुवां, पडे गुणा री हाण ।
 जे २ गुण विगडे जिण कर्म थी, ते जाणें चतुर-सुजाण ॥ ४ ॥
 गुण विगडे जिण २ कर्म थी, ते भोला ने खबर न काय ।
 तिण सूं ऊंधी करे छें परूपणा, तिणरा जाब सुणो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

ग्यानवर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ गुण पामें श्रीकार रे ॥ सुगणनर* ॥
 च्यार ग्यान ने तीन अग्यान नें रे लाल, बले सूतर नों भणबो सार रे ॥ सु० ॥
 निज गुण रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
 ग्यानवर्णी कर्म रा उदा थकी रे, ग्यान तणो छे विगाड़ रे ।
 और गुण नही विगडे एहथी रे, तिणमे संका नही छे लिगार रे ॥ सु० नि० २ ॥
 दर्शनावर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ बोल पामें श्रीकार रे ।
 पांच इन्दी ने दर्शन तीन नें रे, और गुण नही पामें लिगार रे ॥ ३ ॥
 दर्शनावर्णी उदे हुआं रे, भणगार दर्शन रो विगार रे ।
 और गुण इणथी विगारे नही रे, इणरो तो ओहीज विचार रे ॥ ४ ॥
 मोहणी कर्म षयउपशम हुआं रे, आठ बोल नीपजे विशिष्ट रे ।
 च्यार चारित ने देश विरत पांचमों रे, बले क्षयोपशम तीन दिष्ट रे ॥ ५ ॥
 ते मोहणी कर्म उदे हुवां रे, समकत नें चारित नों विगार रे ।
 तिण-षयउपशम हुआं गुण नीपनां रे, त्यांरो विगारणहार रे ॥ ६ ॥
 अंतराय कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ बोल पामें तंतसार रे ।
 पांच लब्धि नें वीर्य तीन नें रे, आठ गुण उजला श्रीकार रे ॥ ७ ॥

*प्रत्येक गाथा के अन्त मे इन्की पुनरावृत्ति है ।

अंतराय कर्म उदे हूआं रे, लब्धि नें वीर्य री पड़े हाण रे।
 अनेक वस्तु आडी होय रही रे लाल, तिणरी चोखी करज्यो पिछाण रे ॥ ८ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती इम कहें रे, मोह उदे सूं विगरे उपीयोग रे।
 कर्म बांधे विगख्या उपीयोग थी रे, तिण सूं बूढ़ रह्या छे लोक रे ॥
 दंसण मोहणी उदे हुवे रे, सरघा सुणों निन्वां तणी रे लाल ॥ ९ ॥
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छे रे, जब पामें जीव मिथ्यात रे।
 दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे, सागार विगख्यो कहे छे साख्यात रे ॥ स०१० ॥
 तिण समकत नें कहे सागार छे रे, जब पामें समकत सार।
 चारित मोहरा उदा थकी रे, तिणमें साच नही छे लिगार रे ॥ ११ ॥
 तिण अविरत नें कहे मणागार छे रे, तिणरे लागो मिथ्यात नों रोग रे ॥ १२ ॥
 चारित मोहिणी षयउपसम हूआं रे, चारित नीपजे सुखदाय रे।
 तिण चारित नें कहे मणागार छे रे, एहवी कूड़ी करे बकदाय रे ॥ १३ ॥
 समकत तो सागार निश्चें नही रे, मिथ्यात पिण नही सागार रे।
 चारित ते मणागार निश्चें नही रे, अचरित पिण नही मणागार रे ॥ १४ ॥
 मोह कर्म उदे सूं विगड़े नही रे, सागार ने मणागार रे।
 दयादिक गुण विगरे मोह थी रे, कोइ बुधवंत करज्यो विचार रे ॥ १५ ॥
 मोहकर्म षयउपसम हूआं रे, दयादिक गुण नीपजे अठार रे।
 त्योंरो जूओ २ निरणो कहूं रे, तो कहितां न आवे पार रे ॥ १६ ॥
 बले निपजावे तो नीपजे रे, मोहणी कर्म परीयां हाण रे।
 निरबद्ध जोग निपजावे तो नीपजें रे, बले धर्म नें शुक्ल भ्यान रे ॥ १७ ॥
 भली लेख्या निपजावे तो नीपजे रे, भला अध्यवसाय ने परिणाम रे।
 इत्यादिक गुण निपजाया नीपजें रे, ते मोह दूरो हूआं ताम रे ॥ १८ ॥
 बले मोह कर्म दूरो हूआं रे, मिट जाए तिण रो मिथ्यात रे।
 बले वीतराग भाव नीपजे रे, राग द्वेष षय जात रे ॥ १९ ॥
 इत्यादिक गुण निपजे अति घणा रे, ते सगलाई गुण श्रीकार रे।
 ते पामें मोहणी षयउपसम हूआं रे, त्योंरो कहितां न पामें पार रे ॥ २० ॥
 ते मोहणी कर्म उदे हूआं रे, समकत नें चारित रो विगार रे।
 मोह षयउपसम हूआं गुण नीपना रे, त्यों गुणरो विगारणहार रे ॥ २१ ॥
 समकत विगरे मिथ्याती हूओ रे, दंसण मोह उदे सूं जाण रे।
 चारित मोह कर्म रा उदा थकी रे, पडी कुण २ गुणारी हाण रे ॥ २२ ॥
 दया तणो गुण मिट गयो रे, हिसा रो अक्वण प्रगट थाय रे।
 झूठ चोरी मैथुन परिग्रहो रे, एहुवा ओगुण बवे छे ताय रे ॥ २३ ॥

*प्रत्येक गाथा के बाद यह आंकी है।

क्षमा नरमाइ विगरे मोह थी रे, वले सरलपणो संतोष रे ।
 क्रोच मान माया लोभ परगटे रे, मोह कर्म उदे सू एहवा दोष रे ॥ २४ ॥
 वीतरागपणो विगार दे रे, राग द्वेष वधे तिणसूं ताम रे ।
 घणा - कर्म बंधे राग द्वेष थी रे, वले माठा वरते परिणाम रे ॥ २५ ॥
 वले मोह कर्म रा उदा थकी रे, अविरत नीपजे ताम रे ।
 सतरे पाप सेवण रो उदम करे रे, अनेक सावद्य करे काम रे ॥ २६ ॥
 सतरे पापथानक सेवे जीवडो रे, माठी लेख्या माठा अध्यवसाय रे ।
 ध्यावे आर्ति रीद्र ध्यान नें रे, चारित मोह उदे सूं ताय रे ॥ २७ ॥
 माठा जोग वरते छे जीवरा रे, ते पिण मोह उदा सूं जाण रे ।
 कहि रे नें कितरो कहुं रे, ते करज्यो हिया में पिछाण रे ॥ २८ ॥
 मोहणी कर्म षयउपसम हूआं रे, गुण नीपजे श्रीकार रे ।
 ते उदे हूआं यांहीज गुणा तणों रे, ओहीज विगारणहार रे ॥ २९ ॥
 कोइ मूढ मिथ्याती इम कहे रे, ग्यान आडो छे मोहणी कर्म रे ।
 ते विवेक विकल सुधवुव विना रे, ते तो भूलो अग्यानी भर्म रे ॥ ३० ॥
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, मोह बारमें गुणठाणे हुवे दूर रे ।
 जब केवलग्यान न उपजे रे, तो पडी सरघा में घूर रे ॥ ३१ ॥
 ग्यान आडो कहे कर्म मोहणी रे, ते पूरा मूढ गिंवार रे ।
 आप हुवे ओरोनें हुबोवता रे, साची सरघा सूं करे छे खुवार रे ॥ ३२ ॥
 नाण मोह चाल्यो सूतर मभे रे, तो ग्यान में उपजे व्यामोह रे ।
 ते ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते मोह निश्चेई न कोय रे ॥ ३३ ॥
 नाणमूढे कह्यो सूतर मभे रे, ग्यानावर्णी उदे सूं जाण रे ।
 व्यामोह पडे तिण जीव ने रे, तिणरी पूरी न करे पिछांण रे ॥ ३४ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, व्यामोह पामे छे ताय रे ।
 तिण व्यामोह नें थाप्यो मोहणी रे, भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
 दिसामोहेण कह्यो आवसग मभे रे, ते दिसि नें पाम्यो व्यामोह रे ।
 ते पिण ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते हिरदे त्रिचारी जोय रे ॥ ३६ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ग्यान भूले सांसो पर जाय रे ।
 दंसणमोहणी रा उदा थकी रे, पदार्थ उंचो सरघाय रे ॥ ३७ ॥
 मोहणी कर्म जावक षय गयो रे, जब आयो वारमें गुण ठाण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते षय गयां उपजे केवलनाण रे ॥ ३८ ॥
 मोहणी कर्म जावक उपशम्यो रे, इग्यार में गुणठाण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते उपशम्यो उपजे उपगम नाण रे ॥ ३९ ॥

जात कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर ने ठुकराय ।
 ए आठोंइ मदरा कारण कहा, पिण एतो नही मदरा उपाय ॥ ५ ॥
 आठ बोल ज्यूं पांचूइ इंदखां, ए पिण कारण कहि छे ताय ।
 आठ बोलां सूं पाप लागे नहीं, ज्यूं इंदखांसुं पिण पाप न थाय ॥ ६ ॥
 जो पांचूं इंदरी सावद्य हुवे, तो ए पिण आठुइ सावद्य होय ।
 जो ए आठूं बोल सावद्य नहीं, तो पांचूं इंदरी सावद्य नहीं कोय ॥ ७ ॥
 कोइ कहे आंधो हुवें छें तेहनें, देखण रो पाप टल जाय ।
 तो सुतर भण नें कोइ वीसख्यो, तिण रे टलीयो सुतर मद ताय ॥ ८ ॥
 कार्नें बहरो हूवो तेहने, सुणवारो पाप मिटियो ताय ।
 कोइ तप करेणें भागल हुवो, तिणरे पिण तप मद मिट जाय ॥ ९ ॥
 इण विष पांचूं इंदरी हीणी पखां, त्यारो पाप न लागे आय ।
 तो जात कुलादिक आठुइ भिष्ट हुवें, तिणरे आठुइ मद मिट जाय ॥ १० ॥
 पांच इंदरी तो सावद्य नहीं, जातादिक आठूं मद नहीं ताहिं ।
 रागद्वेष ओलखायो छे एहथी, ते निरणो करो घट मांहिं ॥ ११ ॥
 इंद्री घटीयां सूं गुण वधीयो कहे, ते जिण मारग रा अजाण ।
 इंद्री घटे छे उसभ उदे हूवां, तिणरी विकलां नें नही छे पिछाण ॥ १२ ॥
 उणरी सरघा रे लेखे इंदरीहार नें, थावर में उपनां गुण होय ।
 जात कुलादिक आठां तणो, त्यारे मद नहि आवे कोय ॥ १३ ॥
 उणरे लेखे मिनष छें दलदरी, हीयाफूट इंद्रीहीण होय ।
 जातादिक आठूं हीणा हुवां, तिणरे मद नहीं आवे कोय ॥ १४ ॥
 जीव नीच जाति माहे उपनो, तिणरे जात रो मद आवे नांहि ।
 जो नीच कुल में जीव उपनो, तो कुल मद नही आवे मन मांहिं ॥ १५ ॥
 जो बल करेणें निरबल हुवें, तो बल रो मद नावें लिंगार ।
 जो रूप मे जीव कुरूप हुवे, तो रूप रो नही आवे अहंकार ॥ १६ ॥
 तपसा तिण सूं मूल हुवें नहीं, तिणरे तपसा रो मद नहीं आय ।
 असाणादिक जाबक मिले नही, तिण नें लाभ रो मद मावें ताय ॥ १७ ॥
 कोई ठोठ तो सुतर भणे नही, तो सुतर मद नावें ताय ।
 जो सिखादिक जाबक मिले नहीं, तो ठुकराइ रो मद नहीं आय ॥ १८ ॥
 जातादिक आठूं पामें पाडूवा, ते उसभ कर्म सूं जाण ।
 पांचूं इंद्री हीणी पडे तेहनें, उसभ कर्म उदे हुआ आण ॥ १९ ॥
 उसभ उदे सूं गुण नीपनां कहे, तिणरे उदे हुआ छें मिथ्यात ।
 उसभ घटीया सावद्य नीपणों कहे, आतो विकला वाली छें घात ॥ २० ॥

कोई जीव दो भागी नें दल दलदरी, दुख भोगवे विविध परकार ।
 तिणनें चावे ते वस्त मिले नहीं, तिणरे गुण कहे मूढ गिवार ॥ २१ ॥
 एतो उदें आया कर्म भोगवे, तिणरे गुण नहीं हुआ लिंगार ।
 गुण तो होसी जद जीवरे, मिलीया त्यागसी तिण वार ॥ २२ ॥
 रूडा रूप छे विविध प्रकार नां, त्यां ने देखे चषू इंद्री तांम ।
 रूप नें चषू इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य छे खोटा परिणाम ॥ २३ ॥
 रूडा शब्द विविध प्रकार नां, ते सुणे सुरत इंद्री तांम ।
 शब्द नें सुरत इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २४ ॥
 रूडा गंध छे विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे घणेद्री तांम ।
 गंध नें घाणेद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २५ ॥
 रूडा रस विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे रस इंद्री तांम ।
 रस ने रस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २६ ॥
 रूडा फरस छे विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे फरस इंद्री तांम ।
 फरस नें फरस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २७ ॥
 शब्दादिक पांचूं रूडा उपरे, राग ते सावद्य जाण ।
 शब्दादिक पांचूं पाडुआ उपरे, धेष आवे ते सावद्य पिछाण ॥ २८ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, जो ग्रिघपणो करे कोय ।
 ते जिण अगना रो चोर छे, तिणरो चारित कोयल होय ॥ २९ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, ग्रिघपणो करे नहीं कोय ।
 तिणरो चारित न हूवो कोयल, तिणरे कर्म निरजरा होय ॥ ३० ॥
 रस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य नहीं मनोग्य आहार ।
 ग्रिघपणा ने सावद्य कह्यो, तिणसू चारित हूवो छार ॥ ३१ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष करे तिण वार ।
 तिणरे चारित में धूवो उठीयो, हूवो श्री जिण आगना वार ॥ ३२ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष न आणे लिंगार ।
 तिणरो चारित कुसले रह्यो, बले कर्म तूटा तिण वार ॥ ३३ ॥
 रस इंद्री तो सावद्य नहीं, सावद्य नहीं अमनोग्य आहार ।
 धेष आयो तिण नें सावद्य कह्यो, तिणसूं हूवो चारित रो विगार ॥ ३४ ॥
 देखो राग धेष सावद्य कह्यो, ते सावद्य जोग व्यापार ।
 भगोतीरे सतक खंद सातमे, पेंहिला उदेसामें विसतार ॥ ३५ ॥
 श्रेणिक राजा ने राणी चेलणा, त्यांरो ह्य मनोहर देख ।
 साधु साधवियां नीहाणो कीयो, त्यांरा खोटा परिणाम विशेष ॥ ३६ ॥

दुहा

केइ भारीकर्मा जीवडा, ते कर रहुआ कूडी टेक ।
 ते पांचू इंदरयां नें सावद्य कहें, ते बूडे छे विना ववेक ॥ १ ॥
 जो इंदरयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटीयां सावद्य मिट जाया ।
 उणरे लेखे इंद्री हारीयां, लाभ अनंतो थाय ॥ २ ॥
 इंद्रयां प्रयउपसम भावछे निरमलो, केवल दरसण मांहिली चीज ।
 त्यां इंदरयां नें सावद्य कहे, ते रहुआ मिथ्यात में भीज ॥ ३ ॥
 कहे जो इंदरयां कायम रहे, तो पडे नरक में जाय ।
 दूसरो ओगुण कहे इंदरयां ममे, ते एकंत मूसावाय ॥ ४ ॥
 अवगुण तो छें राग घेष में, ते दीया इंदरयां सिर नांख ।
 त्यांने किम समझावियें, ज्यांरी फूटी अमितर आंख ॥ ५ ॥
 केइ शब्दादिक सुख भोगवे घणा, तो ही जावे देवलोक मांय ।
 त्यांरी इंदरया पिण कुसले रहे, तिणरो जाणे समदिप्टीन्याय ॥ ६ ॥
 इंदरयां काम रहुआं कह नारकी, ते भूठ रा बोलणहार ।
 तिणरी खीटीसरजारो निरणो कहूं, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[पाषण्ड वधसी आरे पांच में]

तीन पल आउवारा जुगलीया रे, त्यांरी तीन कोस री-हूंती काय रे ।
 इंद्री पांचौइ त्यांरी निरमली रे, ते मरनें निश्चेंइ देवता थाय रे ।
 इंदरयां ने सावद्य कोइ मत जांणज्यो रे* ॥ १ ॥
 जुगलीया मरने हुवे छे देवता रे, त्यांरे हूंता शब्दादिक नां सुंख पूर रे ।
 इंदरी कायम रहुआं कहे नारकी रे, तिणरी सरघा रो प्रतष देखो कूड रे ॥ २ ॥
 काम ने भोग जुगलीयां रे घणा रे, त्यांरा सुख पूरा केम कहवाय रे ।
 पिण राग ने घेष तीवर नहीं तेहने रे, तिणसूं जुगलीया नरक न जाय रे ॥ ३ ॥
 काम ने भोग उत्तकप्टा भोगवे रे, जो उत्तकप्टो राग तिणसूं होय रे ।
 तो जुगलीयो मरने जाए नारकी रे, देवता होय न सके कोय रे ॥ ४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते वांजत्र सुणे छे विविध प्रकार नां रे,
 कसबोइ लेवे विविध प्रकार नां रे,
 फरस भोगवे विविध प्रकार नां रे,
 पिण राग नें घेष तिणा रें पातला रे,
 जुगलीयां रा सुख रे भाग अनंत में रे,
 जो राग ने घेष त्यांरे प्रबल हुवे रे,
 ए प्रतष अवगुण छे राग घेष में रे,
 पाप लागे छे सवद्य जोग थी रे,
 घणा काम नें भोग जुलीयां भोगवे रे,
 केइ थोडा भोगवीयां जाए नरक में रे,
 जुगलीयां रा सुख सूं सुख अनंत गुणा रे,
 पिण मूर्छां नें तिसणा त्यांरे अल्प छें रे,
 भवणपति नें व्यंतर जोतपी रे,
 त्यां सगला रा सुख सूं अनंत गुणा रे,
 त्यां रे सुख छें उतकष्टा शब्दादिक तणां रे,
 त्यां रे अल्प कर्म लागे छे तेह सू रे,
 केइ दोनूंइ पुरष बरोबर भोगवे रे,
 पिण पाप न लागे त्यांने सारिषो रे,
 कोइ काम नें भोग तीवर परिणाम सूं रे,
 तिण मूर्छां सूं पाप लागे छे चीकणा रे,
 कोइ काम ने भोग मनोग्य भोगवे रे,
 तो अल्प कर्म लागे तिण राग थी रे,
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाड्वा रे,
 तिण घेष सूं कर्म लागे छे चीकणा रे,
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाड्वा रे,
 तो अल्प कर्म लागे तिण घेष थी रे,
 राग ने घेष करे छे जीवडो रे,
 जेहवो करे छे तेहवो पाप नीपजे रे,
 घेष सूं तंडुल नामे माछलो रे,
 ते एकंत सावद्य मन रा जोग थी रे,
 नाटक पड़े छे विविध प्रकारना रे,
 बले गीत ने नाद घणा रलीयामणा रे,

बले विविध प्रकारे देखे रूप रे।
 भोजन करे छे विविध अनूप रे ॥ ५ ॥
 त्यांरे कामभोग घणा सुखदाय रे।
 तिण सूं तो अल्प पाप बंधाय रे ॥ ६ ॥
 केइ राजा नां सुख छें अल्प लिगार रे।
 तो पादरा जाए नरक मभार रे ॥ ७ ॥
 ते इंदरयां रे माथे न्हाणें कांय रे।
 विचार करे देखो मन मांय रे ॥ ८ ॥
 ते तो न जाए नरक मभार रे।
 तिणरो कोइ बुधिवंत करो विचार रे ॥ ९ ॥
 एक सवार्थ सिद्ध देवतां रा जाण रे।
 तो अल्प कर्म लागे छें आण रे ॥ १० ॥
 बले नर मनष सगलाइ नर नार रे।
 एक देवता रा सवार्थ सिद्ध मभार रे ॥ ११ ॥
 पिण राग नें घेष अल्प छे ताय रे।
 ते मिनष थइ ने मुक्ति में जाय रे ॥ १२ ॥
 काम ने भोग मनोग्य जाण रे।
 पाप परिणामा लार पिछाण रे ॥ १३ ॥
 भोगवे गाढी मूर्छां आण रे।
 ते पिण इंदरयां रो दोष म जाण रे ॥ १४ ॥
 तिण उपर आणे अल्पसो राग रे।
 ते पिण इंदरयां रो नही विभाग रे ॥ १५ ॥
 त्यां उपर करे जो गाढो घेष रे।
 ते इंदरयां रो काई नही विशेष रे ॥ १६ ॥
 तिण उपर करे अल्प सो घेष रे।
 ते पिण इंदरयां रो नहीं विशेष रे ॥ १७ ॥
 जगन मभ्रम उतकष्टो जाण रे।
 पिण इंदरयां सूं पाप न लागे आण रे ॥ १८ ॥
 गयो छे सातमी नरक मभार रे।
 तिणरी इंदरी में दोष नही लिगार रे ॥ १९ ॥
 तिहां बांजत्र बाज रह्या धुंकार रे।
 ते तो सावद्य जोग तणों व्यापार रे ॥ २० ॥

ते नाटक देखे छे गायां भेंसीया रे, वले तेहीज नाटक देखे नर नार रे।
वले गीत वाजंत्र सघला सांमले रे, यां में कुण २ कर्मां रा बांघणहार रे ॥ २१ ॥
नाटक देखे छे गायां भेंसीयां रे, त्यांनं तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नहीं वरतीयो रे, देख्यां सू पाप न लागे ताय रे ॥ २२ ॥
गीत सुणियां छे गायां भेंसीयां रे, त्यांनं तो समझ पडी नहीं काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नहीं वरतीयो रे, त्यांनं सुणीयां सू पाप न लागो ताय रे ॥ २३ ॥
त्यांरे सुणीयां देख्यांरी नही विचारणा रे, विचार्यां विन मन सूं हरष न थाय रे।
कदा कोयक विचारी नें हरखत हुवे रे, जब तिणरे पिण पाप कर्म बंधाय रे ॥ २४ ॥
तेहीज नाटक देख्या नर नारीयां रे, ते मन सूं हुआ घणा गलतांन रे।
जब पाप लागो छे मनरा जोग थी रे, तिण पाप सूं होसी घणा हेरान रे ॥ २५ ॥
तेहीज गीत सुण्यां नर नारीयां रे, वले सुणीयां वाजंत्र ना धुंकार रे।
जब केइ नर नारी मनसूं हरषीया रे, त्यां सघलां ने पाप लागो तिण वार रे ॥ २६ ॥
ते नाटक देख ने कोइ हरष्यो नहीं रे, नही हरष्यो सुणने वाजंत्र गीत रे।
जब पाप न लागो तिणने सर्वथा रे, इंदरयां नें दोष नहीं इण रीत रे ॥ २७ ॥
नाटक देख्यो छे गायां भेंसीयां रे, नाटक देख्यो नरनारी ताम रे।
यांमें पाप कर्म लागो छे जेहनें रे, जिणरा वरत्या खोटा परिणाम रे ॥ २८ ॥
पाप न लागे सुणिया देपीयां रे, तिण माहें संका मूल म आण रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, मोह उदे भाव नीपन सूं जाण रे ॥ २९ ॥
च्यार कषाय नें तीन वेद थी रे, वले मिथ्यात इविरत सेती जाण रे।
माठी लेत्या ने माठा जोग सूं रे, यां बोलां सूं पाप लागे छे आण रे ॥ ३० ॥
वले कोइ मोह उदे सू नीपना रे, त्यांसूं पिण लागे पाप एकंत रे।
पिण पाप न लागे षयउपसम भावथी रे, विचार करे देखो मतवंत रे ॥ ३१ ॥
सात कर्म उदा सूं नीपनां रे, तिण सूं इ पाप न लागे आय रे।
तो षयउपसम कर्म हुआं गुण नीपनां रे, त्यां गुणा सूं पाप केम बंधाय रे ॥ ३२ ॥
पाप बवे कहे षयउपसम भाव थी रे, तिणरी सरखा में पूरो घोर अंधार रे।
ते आप डूबें ओरां ने बोवता रे, तिण जीतव जन्म दियो विगार रे ॥ ३३ ॥
पांचू इंदर्यां ने मेहले मोकली रे, ते शब्दादिक माहें त्रिषी थाय रे।
ते निश्चेइ राग तणी परजाय छे रे, तिणसूं सावद्य जोग वरते छे ताय रे ॥ ३४ ॥
पांचूं इंदर्यां ने जो कोई वस करे रे, ते त्रिषी शब्दादिक सूं नहीं थाय रे।
ते तो वीतराग तणी परजाय छें रे, जब निरवद जोग वरते छे ताय रे ॥ ३५ ॥
इंदर्यां तो षयउपसम भाव छे निरमलो रे, तिण सूं तो पाप न लागे आय रे।
पाप लागे छे उदे भाव थी रे, ते राग ने घेव तणी परजाय रे ॥ ३६ ॥

पांचूं इंद्रियां नें राग घेष रो रे, सभाव जूओ २ छे तांम रे।
 इंद्रियां रा सभाव माहे अवगुण नही रे, कषाय तणा खोटा परिणाम रे ॥ ३७ ॥
 काम नें भोग शब्दादिक तेह थी रे, समता नही पामें जीव लिगार रे।
 असमता पिण नहीं पामें छे एहथी रे, यां सूं मूल न पामें जीव विकार रे ॥ ३८ ॥
 जो राग ने घेष आणे त्यां ऊपर रे, ते हिज विकार विषय कषाय रे।
 ते कह्यो छे उत्तराखेन वत्तीस में रे, सो उपरली पहली गाथा मांय , रे ॥ ३९ ॥
 इंद्रियां नें राग घेष ओलखायवा रे, जोड कीधी आंतरदा गांम मभार रे।
 संवत अठारे सेंताले समें रे, वैसाख सुदि वारस ने रविवार रे ॥ ४० ॥

ढलल : १३

दुहा

केइ इंदरयां नें सावच्च कहे, ते जिणमारग ना अजाणं ।
 ते आगम अर्थ अंवला करें, बूडे छें कर कर ताणं ॥ १ ॥
 पांचूं इंदरी दमवी कही, निग्रह करवी कही छे ताय ।
 वले इंद्रयां नें संवरवी कही, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ २ ॥
 शब्द सुणे रूडा पाडुआ, राग घेष न करवो ताय ।
 निग्रह करवी कही छे इण विघे, दमणी संवरवी इण न्याय ॥ ३ ॥
 रूप दीठा रूडा पाडुआ, राग द्वेष न करवो ताय ।
 इण विघ निग्रह करवी कही, दमवी संवरवी इण न्याय ॥ ४ ॥
 शेष इंदरी तीनां तणो, इण रीत सूं कहणो ताय ।
 निग्रह करणी दमणी ने संवरवी, सगलां रो छे ओहीज न्याय ॥ ५ ॥
 राग घेष उपजे जीव रे, शब्दादिक थी ताय ।
 ते इंदरयां कर ओलखावीयो, ते भोलां नें खबर न कांय ॥ ६ ॥
 ते आंगुण तो राग घेष में, पिण इंदरयां में आंगुण नांहि ।
 इंद्रयां हिंसादिक अठारा में नही, विचार देखो मन मांहि ॥ ७ ॥
 इंदरयां ने सावच्च निरवद कहे, ते परमारथ रा अजाणं ।
 हिवे जथातथ निरणो कहूं, ते सुणजों चुतर सुजाणं ॥ ८ ॥

ढलल

[चन्द्रगुप्त राजा सुषो]

शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणे सुरतइद्री ताह्यो रे ।
 तिण सूं हरष ने सोगरो आगार छे, ते इविरत कही जिण रायो रे ।
 कोइ इंदरयां नें सावच्च मत जाणजों ॥ १ ॥
 इविरत अत्यागभाव तेहसूं, पाप लागे निरतर आणो रे ।
 शब्द सुणियां रो कारण को नहीं, इविरत संबंधीयो पाप जाणो रे ॥ को० २ ॥
 शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणियां हर्ष सोग थायो रे ।
 तिणरा सावच्च जोग वरतीया, मन वचन नें कायो रे ॥ ३ ॥
 तिण सावच्च जोग थी जीवरे, पाप कर्म आय लागे रे ।
 जोग वरते तठा ताई जाणज्यो, तिणरो नही निरंतर पाप आणे रे ॥
 २२

शब्द रूडा नें पाडुवा, ते सुणे सुरत इंद्री ताह्यो रे ।
 त्यां सूं हरष नें सोगरा त्याग छे, तिणनं विरत कही जिण रायो रे ॥ ५ ॥
 ते विरत त्याग भाव तेहसूं, स्के निरंतर पापो रे ।
 शब्द सुणीयां रो कारण को नहीं, थिर परिणाम राख्या थापो रे ॥ ६ ॥
 शब्द रूडा नें पाडुवा, जो सुणनं बेराग बाणे ताह्यो रे ।
 तिण रा जोग निरवद वरतीया, मन वचन नें कायो रे ॥ ७ ॥
 तिण निरवद जोग थी जीव रे, कटे छे पाप कर्मो रे ।
 ते जोग वरते छे त्यां लो, ते पिण नहीं निरंतर धर्मो रे ॥ ८ ॥
 शब्द री विरत ने निरवद जोग थी, हुवे छे संवर निरजरा धर्मो रे ।
 शब्द री इविरत नें माठा जोग थी, लागे छे पाप कर्मो रे ॥ ९ ॥
 विरत नें निरवद जोग वरतीया, ए दोनूं इंदरयां नांही रे ।
 इविरत नें सावच जोग वरतीया, ते पिण इंदरया नहीं कांड रे ॥ १० ॥
 शेष च्यालं इंदरयां भणी, सुरत इंद्री जेम पिछाणो रे ।
 विरत इविरत सुम उसुम जोग थी, सघली इंदरयां नें न्यारी जाणो रे ॥ ११ ॥
 शब्दादिक रूडा नें पाडुवा तणा, इविरत नें उसुम जोग भूंडा रे ।
 पिण इंदरयां नें भूंडी मत जांणजों, छोड मिथ्यात री रूडा रे ॥ १२ ॥
 पांचूं इंदरयां नें संवर कही, वले मन वचन ने काया रे ।
 मंड उवगरण ने सूची कुसग, ए दसोंई संवर बताया रे ॥ १३ ॥
 एहीज दसोंई असंवर कह्या, त्यां नें रूडी रीत पिछाणो रे ।
 एतो दसोंई संवर असंवर नहीं, त्यांरो न्याय परमारथ जाणो रे ॥ १४ ॥
 शब्दादिक पांचूं विषें रा त्याग छे, मन वचन काया इम जाणो रे ।
 माठा वरतावण रा त्याग छे, संवर एह पिछाणो रे ॥ १५ ॥
 मंड उपगरण री ममता रो त्याग छे, वले अजयणा करवारो त्यागो रे ।
 सूची कुसग अजयणा रो त्याग छे, ए दसोंई संवर त्याग बेरागो रे ॥ १६ ॥
 शब्दादिक आदि सूची कुसग नों, नहीं त्याग्या दसोंई बोळ तामो रे ।
 वले जोग बरतावे पाडुवा, ते असंवर खोटा परिणामो रे ॥ १७ ॥
 संवर नें आस्रव दोनूं तणो, ते इंद्रयां सूं कांड लेखो रे ।
 संवर भांगा इंद्रयां भागे नहीं, इविरत पिण इमहीज देखो रे ॥ १८ ॥
 प्रथवी पांणी तेउ बाउ काय नें, वनसपती ने बेंड्री कायो रे ।
 तेइंद्री चोरिंद्री नें पचिंद्री, दसमों अजीव काय बतायो रे ॥ १९ ॥
 प्रथवी कायादिक दसां भणी, संजम कह्यो ठणाअंग मांह्यो रे ।
 यां दसांई नें असंजम कह्यो, तिणरो मूढ न जाणे न्यायो रे ॥ २० ॥

प्रथवी कायादि दसोंइ संजम नही, असंजम पिण नहीं छे दसोंइ रे ।
 यांन हणवा रो त्याग संजम कह्यो, विना त्याग असंजम कह्यो सोई रे ॥ २१ ॥
 संजम असंजम नें इंद्रयां कहे, ते पूरा मूढ अयांगो रे ।
 संजम असंजम नें इंद्रयां भणी, निस्चेइ जूवा २ जांगो रे ॥ २२ ॥
 मोह उदे नें षयउपसम हूआं, संजम नें असंजम जाणो रे ।
 दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम्यां, पांचूं इंद्रयां प्रंगटी पिछांणो रे ॥ २३ ॥
 संजम नें तो संवर जाणजो, असंजम नें असंवर जाणो रे ।
 त्यांन इंद्रयां कही किण कारणे, तिणरी करो हिया में पिछांणो रे ॥ २४ ॥
 सुरतइंद्री नें मेले मोकली, तिणें सुरतइंद्री मत जाणो रे ।
 मोकली मेहले ते भाव और छे, तिण नें रूढी रीत पिछांणो रे ॥ २५ ॥
 सुरतइंद्री नों सभाव सुणवा तणो, मोकली मेले ते राग घेषो रे ।
 ए सांप्रत दोनूंइ जूजूआ, यां दोयां ने एक म लेखो रे ॥ २६ ॥
 सुरतइंद्री सुणे ते जीव छे, ते तो षयउपसम भाव छे चोखो रे ।
 मोकली मेले ते पिण जीव छे, ते तो उदे भाव सदोखो रे ॥ २७ ॥
 उदे नें षयउपसम भाव दोय छे, त्यां ने एक कोइ मत जाणो रे ।
 षयउपसम सूं कर्म लागे नही, उदे भाव सूं कर्म लागे आणो रे ॥ २८ ॥
 चषू इंद्री नें मेहले मोकली, तिणें चषू इंद्री मत जाणो रे ।
 सुरतइंद्री जिम पांचूं इंद्रयां भणी, इणहीज रीत पिछांणो रे ॥ २९ ॥
 पांचूं इंद्रयां नें सत्रू कही, उत्तराधेन तेवीसमां मभारो रे ।
 ते राग घेष ओलखायो इंद्रयां करी, तिणरो पिंडत जाणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 चोर कही पांचूं इंद्रयां भणी, उत्तराधेन बत्तीस मां मभारो रे ।
 ते विकार उलखायो इंद्रयां करी, तिणरो बुववंत जाणे विचारो रे ॥ ३१ ॥
 एक २ इंद्री रा विकार सूं, मरण पाम्यां छे अकालो रे ।
 श्रिधी थका राग पीडीया, त्यांरी घात हुइ ततकालो रे ॥ ३२ ॥
 रूप रे विषे श्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो पतंगीयो, रूप लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३३ ॥
 श्रिधी घणो मनोग्य शब्द सूं, ते पामें विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो मिरगलो, शब्द लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३४ ॥
 मनोग्य गंध सूं श्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो सर्प गंध ओषची, गंध लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३५ ॥
 मनोग्य रस सूं श्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो मछमांस नें ग्रहे, रस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३६ ॥

मनोग्य फर्श सूं ग्रिची घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीञ्चो महिप जल पडे, फरस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३७ ॥
 मनोग्य भाव सूं ग्रिची घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीञ्चो हस्ती कामभोग सूं, लम्पटपणा सूं मरे ततकालो रे ॥ ३८ ॥
 एक २ इंद्रो नां विकार थी, पामी अकाले घातो रे ।
 आतो इण भव केरी वानगी, कहे दिखाई छे वातो रे ॥ ३९ ॥
 एक २ इंद्रो ना विकार थी, दुख पामें छे एमो रे ।
 तो पांचूं इंद्रो ना विकार थी, दुखां नों कहिवो केमो रे ॥ ४० ॥
 इंद्रयां रा विकार राग घेप छे, ते इंद्रयां रा गुण थी न्यारा रे ।
 इंद्रयां तो शब्दादिक सुणे देख ले, शब्दादिक राग सूं लागे प्यारा रे ॥ ४१ ॥
 शब्दादिक जयातथ जाण्यां देखीयां, पाप न लागे लगारो रे ।
 पाप लागे छे राग घेप आणियां, राग घेप छे विषय विकारो रे ॥ ४२ ॥
 राग नें घेप दोनूं पय क्रियां, तो वितरागी गुण थावे रे ।
 इंद्रयां तो कुसले रहे, ए तो केवल दर्शन में समावे रे ॥ ४३ ॥
 तिण सूं इंद्रयां तो सावद्य नहीं, सावद्य छे राग घेपो रे ।
 पाप कर्म लागे तेहथी, ते तो इंद्रयां रो नहीं लेखो रे ॥ ४४ ॥
 करलो वचन कह्यो श्रवणे सुण्यो, मन सूं जाण्यो जव जाग्यो घेपो रे ।
 तिणरो गरीर सचलोइ प्रजल्यो, आंख्यां हुई लाल वगोषो रे ॥ ४५ ॥
 विपेकारी वचन श्रवणे सुण्यो, मनसूं जाण्यो जव उपनो रागो रे ।
 सगलो सरीर विपे सूं फलफूलीयो, विकार सहित जोवा लागो रे ॥ ४६ ॥
 राग द्वेष छे सर्व प्रदेस में, तिणसूं सर्व प्रदेसां पाप लागें रे ।
 वले सावद्य जोग कषाय थी, पाप लागे नें निजगुण भांगे रे ॥ ४७ ॥
 वले कहि २ नें कितरो कहूं, इंद्रयां नें सावद्य मत जाणो रे ।
 इंद्रयां सूं पाप लागे नहीं, त्यांनं ह्डी रीत पिछांणो रे ॥ ४८ ॥
 जोड कीची इंद्रयां नें ओलखायवा, इंद्रगढ सहर मभारो रे ।
 संवत अठारे सेंताले समें, जेठ विद चवदस सोमवारो रे ॥ ४९ ॥

ढाल : १४

दुहा

केइ इंदरयां नें मूढ सावद्य कहे, कूडा २ कुहेत ल्गाय ।
 तिण श्री जिण वचन उथापने, खांच लीधी गलारे मांय ॥ १ ॥
 कहे इंद्रयां निग्रह करणी कही, दमणी जीतणी कहीं ठाम २ ।
 वस करणी नें संवरणी कही, सावद्य छे तो कही छे आंम ॥ २ ॥
 इण विघ करे छे परूपणा, तिणरो मूल न जाणे भरम ।
 तिण रहिस न जांण्यो सिद्धांत रो, भूला अज्ञानी भरम ॥ ३ ॥
 पांचूं इंदरयां नें सावद्य थापवा, करे अनेक उपाय ।
 वले छोटी २ जोडां करे, भोला लोकां ने दीया भरमाय ॥ ४ ॥
 इंदरयां नें निग्रह करणी कही, तिणरो न्याय न जाणे मूढ ।
 तिण सूं उंधी करे छे परूपणा, मूठी भाल रह्या छे रुढ ॥ ५ ॥
 शब्दादिक पांचूं उपरे, राग धेष न करणा हेत पीत ।
 इम निग्रह करणी दमणी जितणी, वस करणी संवरणी इण रीत ॥ ६ ॥
 वले वशेषें तेहनो, विवरो कहु छूं तांम ।
 चित्त ल्गाय ने सांभलो, च्यूं दीके आतम काम ॥ ७ ॥

ढाल

(आ अशुकपा जिन आग्या मे)

शब्दरी चाहि करणें शब्द सुणे ते, शब्द सुणवा री चाहि विषे रस जाणों ।
 तिण विषे सेवण रा सुद्ध साधु नें, जीवे ज्यां लग छे पचखाणो ।
 इंद्रयां रो सभाव सुणो भव जीवां ॥ १ ॥
 परमारथका जे शब्द सुण्या नहीं दोष, वले सहिजां सुणे तोही दोष न लागे ।
 गमता शब्दरी चाहि अभिलाष करे तो, जब त्याग वैराग साधु रो भागे ॥ २ ॥
 शब्दरी अभिलाषा ने शब्द रो सुणवो, एतो दोनूं सभाव जूधा २ जाणो ।
 अभिलाषा तो मोह उदे राग भाव छे, इंद्रयां नें षयउपसम भाव पिछांणो ॥ ३ ॥
 मोह भाव अभिलाषा तिणने, मेट दीयां वीतरागी थाय ।
 षयउपसम इंदरी मेट हुवे तो, जाय पडे अंध कूप रे मांय ॥ ४ ॥
 सुरतइंद्री नें निग्रह इण विघ करणी, मन गमता शब्द सूं मगन न थाय ।
 अमनोगम उपरे धेष न आणे, तिण सुरतइंद्री निग्रह कीधी छे ताय ॥ ५ ॥
 सुरतइंद्री नें निग्रह कही जिण रीते, दमणी ने जीतणी इमहीज जाणो ।
 इमहिज वस करणी नें संवर लेणी, या पांचां रो परमारथ एक पिछांणो ॥ ६ ॥

सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रहो,
ज्यूं इंदर्यां ने पिण सत्रू कही छे,
सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रह,
ज्यूं पांचू इंदर्यां पिण सत्रू नहीं छे,
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे,
समचे शरीर नें नावा कही जिण,
ज्यूं इंद्रयां नें शत्रू तिहां इज कही छे,
ज्यूं शरीर तो नावा निश्चे नहीं छे,
त्यांरो परमारथ समदिष्टी जाणें,
शरीर थी सावद्य सेवण आगार जे,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे तो,
शरीर थी सावद्य रा त्याग छे त्रिविधे,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग न आणे,
प्रथवीकाय नें संजम कह्यो जिण,
ते न्याय न जाणे मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय तो संजम निश्चे नहीं छे,
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू निश्चे नहीं छे,
प्रथवीकाय नें असंजम कह्यो जिण,
ते पिण न्याय न जाणें मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय असंजम नहीं निश्चे,
ज्यूं इंदर्यां पिण सत्रू निश्चे नहीं छे,
सतरे भेदे संजम ने असजम,
त्यांरो त्याग सजम ने अत्याग असजम,
काम ने भोग कह्या छे अनर्थरा मूल,
त्यां नें किपाक फल री ओपमा दीधी,
काम नें भोग कह्या छे अनरथ रा मूल,
ज्यूं इंद्रयां नें पिण सत्रू कही छे,
काम ने भोग अनर्थ रा मूल नाहीं,
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू छे नाहीं,
काम ने भोग थी जीव समता न पामें,
उत्तराधेन वत्तीसमें घेने,

तिणें अनर्थ रो मूल कह्यो भगवानं ।
त्यांरो न्याय न जाणें ते विकल समानं ॥ २३ ॥
ते तो निश्चेइ अनर्थ रो मूल नाहीं ।
ते न्याय विचारे देखो घट मांही ॥ २४ ॥
तिणेंरो मूर्छा सावद्य जोग अनरथ जाणो ।
तिण राग ने सत्रू लीजो पिछाणो ॥ २५ ॥
उत्तराधेन तेवीसमां घेन मांय ।
ते पिण विकलां नें खबर न कांय ॥ २६ ॥
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू निश्चेइ नांही ।
पिण भोलां ने खबर पडे नहीं कांई ॥ २७ ॥
तिण आगार नें फूटी नावा जाणो ।
तिण राग नें शत्रू लीजो पिछाणो ॥ २८ ॥
ते त्याग छे नावा गुण रत्नां री खाणो ।
तिण त्याग ने मित्री कह्यो जिण जाणो ॥ २९ ॥
ज्यूं इंदर्यां नें सत्रू कही भगवंत ।
तिणरो परमारथ जाणे मतवंत ॥ ३० ॥
संजम छे प्रथवी हणवा रो त्याग ।
सत्रू शब्दादिक सूं कीयां राग ॥ ३१ ॥
ज्यूं इंद्रयां नें सत्रू कही भगवंत ।
तिणरो परमारथ सुणज्यो मतवंत ॥ ३२ ॥
असंजम तो प्रथवी हणवारो अत्याग ।
सत्रू तो शब्दादिक सूं कीयां राग ॥ ३३ ॥
प्रथवीकाय ज्यूं सतरेइ जाण ।
त्यांरी जूवी २ कर लीजो पिछाण ॥ ३४ ॥
त्यां नें कह्या छे महादुख ने दुख तणी पांन ।
ज्यूं इंदर्यां ने सत्रू कही भगवानं ॥ ३५ ॥
ते तो राग ने वेष आसरी जाणो ।
तिण ने लीजो रूडी रीत पिछाणो ॥ ३६ ॥
त्यां सूं भिघ पणो अनर्थ रो मूल जाणो ।
सत्रू तो शब्दादिक सूं राग पिछाणो ॥ ३७ ॥
काम ने भोग थी नहीं पामें विकार ।
सो ऊपरली पेंहली गाथा ममार ॥ ३८ ॥

ढाल : १५

ढुहा

दरबे जीव छे सासतो, भावे जीव असासतो छे ताहि ।
 भगोती रे सतषेव सातमें, कह्यो बीजा उदेसा माहि ॥ १ ॥
 दरब तो तीन काल में सासतो, असंख्यात प्रदेसी जाण ।
 उपजे ने विणजे ते भाव जीव छे, तिणरी बुधवंत करजो पिछ्छाण ॥ २ ॥
 दरब ने भाव दोनूं छे जूजूआ, ते जीव लेखे तो एक हीज जाण ।
 उदयादिक पांच भावां करी, भाव जीव नें लीजो पिछ्छाण ॥ ३ ॥
 छ दरब जिणेर भाषीया, त्यानें सासता कह्या तीन काल ।
 ते तो गिणती रा छहुं दरबां ने गिण्यां, अठे भाव रो न कह्यो निकाल ॥ ४ ॥
 छ दरबां ने छ दरब कह्या, त्यारीं गिणी नहीं परजाय ।
 परजाय तो एकीका दरब री, अनती अनती कही जिणराय ॥ ५ ॥
 जीव दरब री परजाय ने, भावे जीव कह्यो जिणराय ।
 ते परजाय तो नीपनी हुवे, दरब घटे बधे नहीं ताय ॥ ६ ॥
 दरब ने भाव जीव रो, विवरो कहूं छूं ताय ।
 ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकपा जिख आग्या मे]

दरब नें भाव जीव रो निरणो कीजो, वीर रा वचन आगम माहे जोवो ।
 आगम नां उवा २ अथे करेनें, मानव नों भव कांय विगोवो ।
 दरब नें भाव जीवरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 नव पदारथ में धुर सूं जीव कह्यो जिण, तिणमें द्रब नें भाव दोनू ई आया ।
 कांई दरब गुण परजाय बारे न राखी, समचे जीव कह्यो तिण मे सर्व समाया ॥ २ ॥
 आश्व संवर निरजरा नें मोष, ए च्यांरु पदारथ छे भाव जीवो ।
 याने समदिष्टी ओलखिया अभितर, त्यारे अभितर ग्यांन खुल्यो घट दीवो ॥ ३ ॥
 आश्व संवर निरजरा ने मोष, याने दरबे जीव कह्यो छे अग्यांनी ।
 तिण भाव जीव ने द्रब जीव सरध्या, तिण नें समदिष्टी किण विव जाणे ग्यांनी ॥ ४ ॥
 अववसाय परिणाम ध्यान नें लेस्या, त्यांरा भेद अनेक कह्या भगवंत ।
 ए जीवरा भाव असासता निस्चें, त्यानें भावे जीव जाणो मतवंत ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले जोग उपीयोग नें दिष्ट तीनोंइ, कषाय संज्ञादिक बोल अनंत ।
 ए पिण जीवरा भाव असासता निश्चें, त्यांनेई भावे जीव कहाा भगवंत ॥ ६ ॥
 नारकी तिरजंच मिनख नें देवा, वले चोवीस डंडक नें छकाय ।
 इत्यादिक अनेक असासता त्यांनं, भावे जीव कहाा जिण राय ॥ ७ ॥
 द्रव आत्मा नें दरबे जीव कही . जे, सेप जीवरी परजाय आतमा सात ।
 तिण परजाय नें दरबे जीव सरबे, तिणरे निश्चेइ आय चूको छे मिथ्यात ॥ ८ ॥
 भाव जीव नें दरब जीव सरबे, ते अन्हाखी थको करे भूठी भस्वाल ।
 ते आगम उथापने उंची परूपे, अनंता अरिहंता पे सिर दीवो आल ॥ ९ ॥
 दरबे तो जीव नें एक कह्यो छे, तिण एक रा दोंय कदे नही होय ।
 तिण दरब रा लखणां नें भाव जीव कहीजे, तिण भाव री संख्या नहीं छे कोय ॥ १० ॥
 सुखदेव सिन्यासी पृच्छा कीधी, तिणरो जाव दीयो थावचे अणगार ।
 दरब थकी तो हूं एक हो सुखदेव, ते हूं सासतो तीनोंइ काल मस्कार ॥ ११ ॥
 नाणवंसणठ्या ए दोंय पिण हूं छूं, प्रदेसठ्याए अवय पिण हूं छूं ।
 प्रजोगठ्याए अनेक पिण हूं छूं, ए तोने जाव सूत्र सूं देऊं छूं ॥ १२ ॥
 वले सोमल नें कह्यो वीर जिणेंसर, दरब थकी हूं सोमल एक ।
 अठारमां सतक रे दसमें उदेशें, भगोती सूत्र जोय छोड दो टेका ॥ १३ ॥
 वले पारसनाथजी कह्यो सोमल नें, दरब थकी हूं सोमल एक ।
 निराबलिका सूत्र जोय निरणो कीजो, परभवसाहमों जोय नें छोड दो टेक ॥ १४ ॥
 इत्यादिक सूत्र में ठाम ठाम, दरब थकी जीव कह्यो छें एक ।
 तिण दरब रा भाव नीपनां त्यांनं, भाव थकी जीव नें कहीजे अनेक ॥ १५ ॥
 दरब थकी जीव तो सासतो कहीजे, भाव थकी असासतो केहणो ।
 भगोती रे सातमें सतक कह्यो छे, दूजा उदेसा मांहें जोय लेणो ॥ १६ ॥
 जीव दरबे सासतो भावे असासतो, जमाली नें वीर कह्यो छें ताहि ।
 भगोती सूत्र रा नवमां सतक में, तेतीसमां उदेसा रे मांहि ॥ १७ ॥
 नरेइयो नरेइयो द्रव थी तूला, प्रदेस थकी पिण तूला जाणो ।
 अवग्राहणा नें थित आश्री तो, चउठाणवडीयो लेजो पिछांणो ॥ १८ ॥
 नव उपीयोग आश्री छठाणवडीयो, तिणरी धारणा करनं रीत सूं कहीजे ।
 चउठाण नें छठाणवडीयो, त्यांने भावे जीव पिछाण लीजे ॥ १९ ॥
 दरब नें प्रदेस ववे घटे नांही, ववे घटे तिण नें भाव जीव कहीजे ।
 नारकी तिम डंडक चोवीसोइ कहणा, जिण जिण मे बोल पावे ते लीजे ॥ २० ॥
 ए पन्नवणा रा पांचमां पद मांहें, तिण ठामें तो छे धणो विस्तारो ।
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी, दरब भाव सरब लो न्यारो न्यारो ॥ २१ ॥

इत्यादिक सूतर में ठाम ठाम, दरबे जीव नें सासतो कह्यो वीर ।
भावे जीव असासतो जीव कह्यो छे, दरबने भाव जाण्पा छे सरवा सधीर ॥ २२ ॥
भावे जीव असासतो तिण नें दरब नें भावे कहे छे दोनूं ।
एहवी उधी परूपणा करनं अग्यानी, उसभ कर्म उदे साची सरवानें खोइ ॥ २३ ॥
दरबे जीव तो नित सासतो छे, तिणने पिणकहे दरब नें भाव दोनूंइ ।
याने ओलखीयां विण उधी परूपे, तांण कर कर ने यूही आतम विगोइ ॥ २४ ॥
दरब रा लषणां ने दरब न कहीजे, लषणां रा दरबां ने लखण न कहीजे ।
दरब नें लखण न्यारा न्यारा कहीजे, जीव रे लेखे दोयां ने एक गिणीजे ॥ २५ ॥
जिण दरब ने भाव ओलषीया नाही, ते खाय रह्या छे अग्यानी भखोला ।
त्याने प्रश्न पूछ्यां तो डिगता बोले, त्यांरी परतीत करने बूढे कोइ भोला ॥ २६ ॥
दरब री ठोर तो भाव बतावे, भाव री ठोर दरब नें बतावे ।
तिणरी अर्भितर आख हिया री फूटी, तिणसूं आमो सांहमो भखोला खावे ॥ २७ ॥
दरब ने भाव जीव ओलषीया नाही, तिणने समभावण पूछ्या कीजे ।
दरब जीव ने एक के अनेक कहीजे, वले सासतो के असासतो कहीजे ॥ २८ ॥
जो उ दरब जीवने सासतो कहदे, वले दरब जीव ने कह दे एक ।
तिणरो वचन गाढो कर चरचा कीजे, भाव जीव असासतो कहीजे अनेक ॥ २९ ॥
पछे दरब ने भाव री चरचा करने, समभतो जाणे तो समझाय लीजे ।
जो समझायो समझे नहीं मूरख, तिणसूं विषवाद कदेय न कीजे ॥ ३० ॥
सासतो असासतो दोनूं न जाणे, वले दरब ने भावरा नहीं निवेरा ।
अजांग थको उधी तांण करे छे, तिण नरक सूं सनमुख दीघा डेरा ॥ ३१ ॥
दरब ने भाव जीव ओलखावण काजे, जोड कीवी मावोपुर सहर मभारो ।
समत अठारे ने वरस सेताले, चेत विद बीज ने सोमवारो ॥ ३२ ॥



ढल १

दुहा

दसासतखंघ सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार ।
नास्तक मत छे तेहनों, ओं जाणें भर्म संसार ॥ १ ॥
तीथंकर चक्रवरतादिक, वले साधु सती अणगार ।
त्यानें जीव न सरघे सरवथा, ते भूलो भर्म गिवार ॥ २ ॥
तिण नास्तक वादी रा मत तणो, परजायवादी पिरवार ।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, तिणराघट माहें घोरअन्चार ॥ ३ ॥
उ चेतन गुण परजाय नें, नहीं सरघें जीव अजीव ।
एहवी उधी करे छें परूपणा, कर २ खांच अतीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, जीव अजीव दोनुइ कहें नाहीं ।
जीव अजीव बिनां तीजी वस्तु छें, ते तों नहीं गिणती रे माहें ॥ ५ ॥
नियमा निश्चे जीव तेहनें, जीव गिणे नही ताय ।
तिणरी सरघा परगट करूं, ते सुणजों चित्त ह्याय ॥ ६ ॥

ढल

[आ अशुकंपा जिन आग्या में]

तीथंकर गणवर धर्म नां नायक, आचार्य उवभाय मोटां अणगारो ।
साधु साधवीयादिक च्यारुई तीर्थ, याने जीव न सरघे ते मूढ गिवारो ।
आ सरघा छें, परजायवादी री* ॥ १ ॥
वेव गुर धर्म तीनुइ रतन अमोलक, त्यारों सरणों लीयां उत्तरें भवपारों ।
यानें जीव न सरघे ते मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचीने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर नही जीव चेलों नहीं जीव, विनों अविनों करे ते पिण जीव नाहीं ।
माहोमां करे समोग असणादिक नो, तिण मे पिण जीव रो अंस न काई ॥ ३ ॥
आठोइ करमां सूं मूकावे ते मोख, त्याने तो कहीजें सिध भगवानं ।
त्यानें पिण जीव न सरघें अग्यांनी, त्यां विकलां में नही छे जाबक विगनां ॥ ४ ॥
सूतर बांचे ते जीव नही छे, धर्म कथा कहे ते पिण नहीं जीव ।
वखाण सुणे ते पिण जीव नाही, त्यां दीवी मिथ्यात री उंडी नीव ॥ ५ ॥
तिरण तारण जीवने नही सरघें, जीव नें जीव नही उतारें पारो ।
जीव ने जीव डबोवे नाही, वले जीव ने जीव न करे खुवारो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चक्रवत् वासुदेव मंडलीक राजा, ए मिनख हुआ करणी कर मोटी ।
 भवी दरबादिक पांचूइ देवां नें, जीव न कहें तिणरी सरघा खोटी ॥ ७ ॥
 बाप नही जीव बेटो नही जीव, वले जीव नही सगलो पिरवारो ।
 जीव जनमें नही जीव मरें पिण नाहीं, जीव नही भोगवें विषें विकारो ॥ ८ ॥
 परणीजे परणावे ते जीव नहीं छें, जानी मांडी आया ते पिण नही जीव ।
 असगादिक नीजजावें ते जीव नही छें, जीमें जीमावें ते नही जीव अजीव ॥ ९ ॥
 अप्रजापतो होय प्रजापतो हुवां, पछे बाल जुवांन ने होय गयो बूढो ।
 नेरइय तिरजंच मिनख ने देवा, यां नें जीव न सरखें ते जावक मूढो ॥ १० ॥
 हालें चाले तिणनें जीव न कहीजे, वले जीव न करें छें विणज व्यापारो ।
 खेती करसणादिक करें ते जीव नही छें, जीव तो नही करें छें भगडा नें राडो ॥ ११ ॥
 एकिंद्री आदि दे पंचिंद्री ने, वले प्रथवी आदि देइ छक्य ।
 वले चउदें भेद छे जीवरा त्याने, यां सगलां ने जीव कहें नहीं ताप ॥ १२ ॥
 हिंसक भूठाबोलो नही जीव, वले चोर कुसीलीयो नें धनपातर ।
 वले तीनसो तेसठ पावंडीयां ने, या सगलां नें जीव न सरखें कुपातर ॥ १३ ॥
 भोगी नही जीव जोगी नही जीव, बेरी ने मित्री ए पिण जीव नांही ।
 मायावीया मिथ्याती ने जीव न जाणे, इण खोटी सरघा माहे कला न काई ॥ १४ ॥
 आरत रुद्र धर्म नें सुकल, यां च्यालं ध्याना नें जीव न जाणें ।
 छ भाव लेंस्या नें पिण जीव न जाणें, अग्यानी थका मूढ उभी ताणे ॥ १५ ॥
 बारें उनीयोग नें चवदे गुण ठांगा, त्यानें पिण जीव न जाणें अग्यानी ।
 जीव न जाणें चोवीस डंडक ने, तिणनें बुधवत कोइ न जाणें ग्यानी ॥ १६ ॥
 छव नियंठा नें पांचूइ चारित, उठाण कमादिक ए पिण पाच ।
 वले आतमा सात ने सावद्य निरवद, याने जीव न माने करे कूडी खांच ॥ १७ ॥
 इत्यादिक जीव रा भेद अनेक, त्यानें निरुचेई जीव कह्या जिणराय ।
 त्याने जीव अजीव न कहे दोनुंइ, तीजी रास कहे छे ताप ॥ १८ ॥
 असासता सगलाइ पाछें कह्या ते, त्याने तो जीव कहसी किण लेखे ।
 याने जीव कहें तो भूठ बोले छे, आपरी सरघा सांहा क्यूं नही देखे ॥ १९ ॥
 जो चरचा रो कांम पड्यां जीव कहे तो, असासता दरब री पूछा कीजे ।
 असासत दरब ने जीव न सरघे, याने जीव कहे तो भूठो घालीजे ॥ २० ॥
 जो असासता दरब ने जीव कहे तो, आपरी सरघा रो आप अजाणें ।
 सूने चित्त हीयाफूट विकल ज्यूं, आपरी सरघां री पिण नही पिछाणें ॥ २१ ॥
 हिंवे परजायवादी ने पूछा कीजे, संसार माहे दुख किण विध पावे ।
 कुण उपजावे ने कुण खपावे, करमा रो करता कुण कहावे ।
 ए प्रश्न परजायवादी ने पूछीजे* ॥ २२ ॥

*इस आंकड़ी को प्रत्येक गाथा के अन्त में समझें ।

जो उ करमां रो करता जीव नें थापें, तो उगरी सरघा जाबक उठ जावे ।
करता अनेक असासता दीसैं, असासता नें जीव यूही वतावें ॥ २३ ॥
जो उ करम रें करता ने जीव नहीं कहें तो, घणां लोक न मानें तिणरी वातो ।
जो सरघा हुवें तो पिण छांनैं राखें, एहवा कपटी रो भूठ नें गूढ मिथ्यातो ॥ २४ ॥
उगरी सरघा रा अहलांण एहवा दीसे छें, करमां रा करता ने गेबी जांणो ।
करमां रो करता तो असासतो छें, गेबी जांणजो इण अहलांणो ॥ २५ ॥
घमं नें करम रो करता जीव छें, तिणनैं जीव अजीव न कहें दोनूइ ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु न कांई, तीजी कहे ते तेरासी होइ ॥ २६ ॥
जीव अजीव विनां वस्तु थापें, तिणनैं नियमाइ निश्चें तेरासीयो जांणों ।
तिणनैं कोइ तेरासीयों नही जांणें, ते पिण मूढमती छे अयांणो ॥ २७ ॥
करमां रो करता सासतो नांही, तो उ जीव नें करता कहसी किण लेखे ।
एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब भूठ बोळण री सेरी देखें ॥ २८ ॥
के तो भूठ जांणी ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजांणो ।
ए वात रो निश्चें तो केवली जांणे, पिण बुववंत हूसी ते करसी पिछांणो ॥ २९ ॥
श्री वीर कह्यो आंचारग मांहें, करमां रो करता छे निश्चें जीवो ।
चेतन गुण परजाय सहीत ओलखसी, त्यांरे अभितर ग्यांन खुलसी घट दीवों ।
आ सरघा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३० ॥
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करें छे, तिण किरतब सूं लागे जीवरे पायो ।
ते छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहूं गति मे दुःख भुगते आपो ॥ ३१ ॥
परजायवादी री सरघा परगट कीषां, केइ क्रोध करें केइ मन मांहे लाजे ।
जिण आगम लोप विरुध परूपे, ते सीह तणी परे कदेय न गाजे ॥ ३२ ॥
इण खोटी सरघा रो उघाड कीयां सूं, केइ बुववंत सुण २ रहसी दूरा ।
केइ विपरीत सरघा आदर ने छोड, त्यांने पिण वीर वखाण्या सूरा ॥ ३३ ॥
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपे, जीव ने जीव री परजाय नही छें एक ।
जीवरी परजाय नें जीव न सरखें, ते अग्यांनी थको कूडी करे छे टेक ॥ ३४ ॥
पीजणी पेडा ने वले नाम नें ओघण, इत्यादिक जूआ जूआ नाम अनेक ।
यां सगला ने गाडो निश्चेंइ कहीजे, गाडा री परजाय नें गाडो छे एक ॥ ३५ ॥
जिम गाडा री परजाय ने गाडो कहीजे, तिम जीव री परजाय ने जीव छे एक ।
जीवरी परजाय ने जीव न सरखें, तिण खोटी सरघा धारी विना वदेक ॥ ३६ ॥
गाडां री परजाय तो भेली करी छे, ते तों कदेइ काले पड जाएं दूरी ।
पिण जीवरी परजाय न पड़े छे दूरी, उपजे उपजे नें होय जाए पूरी ॥ ३७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जे जे परजाय पूरी होय जाए, तिणरी प्रतख बीजी हुवे ताय ।
 जे मिनष मूओ ते देवादिक हुवो, इत्यादिक ओर रो ओर हुय जाय ॥ ३८ ॥
 देस थकी दिष्टत दीयो छे गाडं रो, ते बुधवंत जाण लीजो मन माय ।
 पिण जीव री परजाय ने जीव एक छे, तिण माहे संका म आणजो कांय ॥ ३९ ॥

ढलल : २

दुहा

आ परजायवादी री सरघा बूरी, घोर छद्द मिथ्यात ।
हलुकरमीं किम सरघसी, ए प्रतख भूठ मिथ्यात ॥ १ ॥
चेतन गुण परजाय ते जीव छें, जोवों सूतर मांहीं संभाल ।
चेतन गुण नें जीव सरघें नही, तिण दीयो अरिहंत सिर आल ॥ २ ॥
त्यानें साघ वतावे जूजूआ, जीव रा गुण जीव साख्यात ।
पिण गुधू सरीखा मानव माने नहीं, त्यारें दिवस तकाइज रात ॥ ३ ॥
त्यानें धुर सूं तो संत मिलीयों नहीं, कीघों परजायवादी रो परसंग ।
जाणें निरणें कोठें मूंवीयों, कालो नाग भूयंग ॥ ४ ॥
उणनें मिलें सतगुर गारलू, जो उ दूर करे पखपात ।
सूतर अरथ सुणाय नें, काढे जेहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
जीवरा गुण लखण परजाय छें, त्याने जीव कह्यो जिणराय ।
त्याने जीव न सरघें सरवथा, ते चोडे भूला जाय ॥ ६ ॥
परजायवदी री सरघा उपरे, सूतर में जाव अनेक ।
पिण थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो आंग ववेक ॥ ७ ॥

ढलल

[पाण्ड वधसी आरे पाच मे]

तीर्थंकर गणघर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छें आचार्य नें उवभाय रे ।
त्यांरा ग्यांन दरसण चारित छें निरमला रे, यांने बांढा सूं पातिक दूर पलाय रे ।
ए अरिहंत वायक सतकर जांगजो रे* ॥ १ ॥
वले साघ साघवी श्रावक श्रावका रे, सूतर में भाख्या छे तीरथ च्यार रे ।
त्यांने पिण उत्तम जीव जिण कह्यारे, ग्यानादिक गुण रतनां रा भंडार रे ॥ ए० २ ॥
यां सगलां ने जीव न सरघे सरवथा रे, परजायवादी पाखंडी बाल रे ।
वले एहवी करे छे मूढ परूपणा रे, तिण दीयो अग्यांनी मोटो आल रे ।
ए परजायवादी रो मत रूडो नही रे ॥ ३ ॥
ए च्याहं तीरथ तीर्थंकर देव में रे, पावे गुणठांगा परजा प्रांग रे ।
जोग उपीयोग लेख्या तेहमें रे, याने जीव न पिणे ते मूढ अयांग रे ॥ ए० ४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्पारो विनो वीयावच भुण कीरत कीयां रे, वाघें तीथंकर गोत रसाल रे ।
 ते कह्यो गिनातावेन आठमे रे, लीजो बीसोंइ बोल सभाल रे ॥ ५ ॥
 विनों वीयावच करे ते निश्चें जीव छे रे, जीव विनां वीयावच कुण कराय रे ।
 यानें परजायवादी जीव गिणें नही रे, ए प्रतख चोडे भूलों जाय रे ॥ ६ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव में रे, यां में करे केइ वेक्रे ह्य रसाल रे,
 यारी गति आगति ने यारो आंतरो रे, यानें जीव न सरघे ते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेंहली गति मां सूं उपजे आय नें रे, ए मरनें उपजे पेंहली गति मांय रे ।
 देवातदेव जाए छे मुगत में रे, यानें सूतरमें जीव कह्या जिणराय रे ॥ ८ ॥
 परभव मे जासी ते निश्चे जीव छे रे, जीव विनां गतागति करे केम रे ।
 इतलो न सुक्के मोह अंध जीव नें रे, ओ बोले सूणें चित्त गेहला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव नों रे, विसतार भगोती सूतर मांहि रे ।
 नवमे उदैसे सतक बारमे रे, ए निरणो कर लीजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकंद्री आदि पचिंद्री जीव छे रे, छ काय नें जीव कही जिण राय रे ।
 जीवरा चवदे भेद ते जीव छे रे, त्याने जीव न गिणें अग्यानी - ताय रे ॥ ११ ॥
 वले परजायवादी पाखंडी इम कहे रे, परजाय रे नही छें देस परदेस रे ।
 जीवरी परजाय नें जीव माने नही रे, ते करें अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
 एकंद्री आदि पचिंद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवों भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
 दसमें उदैसे वूजा सतक में रे, वले दसमां सतक रे पेहले जांण रे ।
 सोलमें सतक उदैसे आठमें रे, ए निरणों करलीजों चतुर सुजांण रे ॥ १४ ॥
 वले दसमें उदैसे सतक इग्यारमें रे, तिहां पिण तेहीज छे विस्तार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नों रे, रूपी अरूपी नों विस्तार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयो तिरजंच मिनब ने देवता रे, त्यारे आठोंइ करम कह्यां भगवंत रे ।
 ए जीव होसी तो यारें करम छें रे, त्याने निश्चेइ जीव जांणों मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोंइ डंडक नियमा जीव छे रे, नियमा कह्यो ते विसवावीस रे ।
 दसमे उदैसे छठा सतक में रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीव रा चवदे भेद सिधंत मे रे, ते निश्चेंइ जीव कह्या साख्यात रे ।
 यानें मूंड मिथ्याती जीव गिणें नही रे, आ प्रतख भूठी तिणरी वात रे ॥ १८ ॥
 वले दसवीकलिक चोथा अधेयन मे रे, निश्चेइ जीव कही छव काय रे ।
 तिणनें अग्यानी जीव न लेखवे रे, ते करें वूडण रों मूड उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सूतर रा तीजा अधेन मे रे, ठांणा अंग में तीजा ठांणा मांय रे ।
 छ जीव नीकाय माहे सका करे रे, अहेत असुख नें समकत जाय रे ॥ २० ॥

अरिहंत कही छें आठूं आतमा रे, आतमा ते निश्चें जीव साख्यात रे ।
 कोइ सात आतमा नें जीव सरखें नहीं रे, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात रे ॥ २१ ॥
 हिसादिक अठारें थानक पाप रा रे, त्यां अठारां रो वेरमण ते परिहार रे ।
 पांच थावर नें धर्म अधर्म आकासासती रे, वले सलेसी साघ मोटां अणगार रे ॥ २२ ॥
 बादर कलेवर ने परमाणूओ रे, वले सरीर रहीत जीव छे ताय रे ।
 ए सारा अडतालीस बोलां भणी रे, जीव अजीव दरब कहा ज़िणराय रे ॥ २३ ॥
 ए भगोती सूतर रे सतक अठारमें रे, कह्यो चोथा उदेसा माहि रे ।
 जीव अजीव री परजाय नें रे, जीव अजीव दरब कहा छे ताहि रे ॥ २४ ॥
 जीव री परजाय नें जीव एक छे रे, जीवरी परजाय ते निश्चे जीव रे ।
 परजायवादी परजाय ने जीव गिणें नही रे, तिण दीधी खोटी सरघा री नीव रे ॥ २५ ॥
 चोथे उदेसे सतक तेरमें रे, भगोती में पूछयो गोतम सांम रे ।
 आप कहो सांमी किरपा करी जी रे, जीव रे जीव आवें छे कांम रे ॥ २६ ॥
 जब वीर कह्यो छें सुण तूं गोयमारे, जीव रें जीव आवे छे कांम रे ।
 उपीयोग कांम आवे छें जीव रे रे, त्यां उपीयोगा रा छे बारे नाम रे ॥ २७ ॥
 जीव कह्यो छे वीर उपीयोग नें रे, निसक पणें कीयो निस्तार रे ।
 जे कोइ जीव नहीं सरखें छे उपीयोग ने रे, ते निश्चेइ पूरो मूढ गिवार रे ॥ २८ ॥
 केवल ग्यान तणों विनों कीयां रे, कट जाएं माठा पाप करम रे ।
 कोइ जीव न गिणें छे केवल ग्यान नें रे, ते भूला अग्यानी जाबक भर्म रे ॥ २९ ॥
 अगिनांन ने कही छें नियमा आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 ए दसमें उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
 गिनांन ने नियमा कही छे आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 दसमे उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
 आतमा छे तेहीज निश्चें ग्यान छे रे, ग्यान छे तेहीज आतमा जांण रे ।
 ते आचारंग पांचमां अवेन में रे, पाचमें उदेसे जोय पिछांण रे ॥ ३२ ॥
 जे जे दरब में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुणठांणा परजाय प्रांण रे ।
 ते तो दरब निश्चेइ जीव छे रे, ए सरघा में सका मूल म आण रे ॥ ३३ ॥

ढाल : ३

दुहा

परजायवादी रा मत तणा, केइ कर रह्या कूडी ताण ।
त्याने खुलवा जाब वतावीया, साख सूतर री आण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरघा छ्झायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितरा एक तो बले कहूं, ते सुणजों विव्यात ॥ २ ॥

ढाल

[पूज जी पधारी हो नगरी सेविया]

संजती असंजती ने संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताहि हो ।
ए सगला नें जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो ।
ए अरिहंत वायक सतकर जाण जो* ॥१॥

संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छे ताय हो ।
ते सगलाइ भावे जीव असासता, ते भाष्यों छें श्री जिणराय हो ॥ए०२॥

समाइ पचखाण संजम ने संवर, ववेक नें विउसग जाण हो ।
ए सगला नें कही छे जिणेसर आतमा, ए भावे जीव पिच्छाण हो ॥३॥

ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में, नवमां उदेसा मांय हो ।
समाइ आदि छहु आतमा भणी, भावे जीव कह्यो जिणराय हो ॥४॥

चारित परिणाम कह्या छें जीवरा, ठांणाअंग दसमां ठांणा मांय हो ।
ते जीव रा परिणाम तो निश्चे जीव छे, तिणमे संका म आंणो कांय हो ॥५॥

दरब कषाय जोग उपीयोग आतमा, ग्यान दरसन चारित ताय हो ।
बले आठमी कही छें वीर्य आतमा, आठोइ जीव कही जिण राय हो ॥६॥

एक जीव गिणे छें दरब आतमा भणी, ते सासती नित सदीव हो ।
सेष आतमा सात नही छे सासती, त्यांने जाबक न गिणे जीव हो ॥७॥

आतमा आठोइ जीव जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमे उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥८॥

उ भावे जीव न सरवे असासतो, तिण सूतर दीया छें उथाप हो ।
उ साप्रत जीव ने जीव गिणे नही, यूं ही कूडो करें छें विलाप हो ॥९॥

दरबे सासतो ने भावे असासतो, जीव नें कह्यों जिणराय हो ।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो ॥१०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दरबे सासतो जीव नें यूँ कह्यो, जीव रो अजीव न थाय हो ।
 भावे जीव नें कह्यो छें असासतो, ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥११॥
 निजगुण फिरें नें परगुण भरपडे, ते परगुण पुदगल जाण हो ।
 परगुण भडीयां हुवें निजगुण निरमलो, आ सरघा घट में आण हो ॥१२॥
 असुघ निजगुण फिरीयां सुघ निजगुण हुवें, ते परगुण कर दे दूर हो ।
 सुघ निजगुण फिरीयां असुघ निजगुण हुवें, तिणसूं परगुण लागें पूर हो ॥१३॥
 जे मेंला निजगुण मोहकरम वसें, यां निजगुणां सूं करम बंधाय हो ।
 मोह रहीत निजगुण हुवे निरमला, त्यां सूं परगुण दूर पलाय हो ॥१४॥
 सात करम उदें सूं निजगुण मेंला हुवे, त्यां सूं पाप न लागें ताम हो ।
 ते करम भरख्यां हुवें निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छें नाम हो ॥१५॥
 आठ करम उदे हूवां नीपजें, निजगुण उदें भाव अनेक हो ।
 आठ करमां नें षय कीषां नीपनां, निजगुण षायक भाव वगेल हो ॥१६॥
 च्यार करमां नें षयोपसम कीयां नीपजे, निजगुण षयोपसम भाव हो ।
 मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥१७॥
 ए च्याखई भाव परणामीक जीव छें, ते चेतन गुण परजाय हो ।
 ए भाव फिरे पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥१८॥
 तत्व सुघ सरघ्यां हुवें जीव समकती, उंधी सरघ्यां मिथ्याती थाय हो ।
 उहीज ग्यानी रो अगनांनी हुवें, अग्यांनी रो ग्यानी हुय जाय हो ॥१९॥
 नारकी देवता रो मिनष तिरजंच हुवें, मिनष तिरजंच देवता थाय हो ।
 इत्यादिक जीवरा भाव अनेक छें, ते ओर रो ओर होय जाय हो ॥२०॥
 सासतो जीव दरब छें अनादरो, तिणरी परजाय अनंती जाण हो ।
 ते परजाय हांण विरध हुवें करम सूं, पिण दरब री नही विरध हांण हो ॥२१॥
 जे भाव -फिरे पिण दूर पडें नहीं, त्यां भावां रा नाम अनेक हो ।
 इण विध भावे जीव असासतो, ते सरघो आंण ववेक हो ॥२२॥
 ओ जीव रा भाव न सरघें असासता, तिण काढ्यो छें मत कूर हो ।
 याने जीव न सरघें मूढ मूरख थको, तिणरी संगत करजो दूर हो ॥२३॥
 वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती माय हो ।
 ते तीजा उदेसा छठा सतक में, ते सांभल जो चित्त ल्याय हो ॥२४॥
 ए आदि ने अंत रहीत जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो ।
 के आदि सहीत ने अंत रहीत छे, के आदि ने अत सहीत हो ।
 ए गोतम सांमी पूछ्यो श्री वीर नें ॥२५॥
 श्री वीर जिणेसर कहे सुण गोयमा, ए च्याखं भांगा छे जीव हो ।
 त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरघ्यां समकत री नीव हो ॥२६॥

ए आदि र्हीत नें अंत र्हीत छें. ए अमव सिवीया जीव जाण हो ।
 आदि नहीं. पिण अंत सहीत छें. ते भव सिवीया जीव पिछाण हो ॥२७॥
 जे करम दनाए नें सिव गति में गया, त्यांरो आदि छें पिण अंत र्हीत हो ।
 नारकी त्रिजंच मिनप नें देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥२८॥
 ए च्याहंई जीव जिणेसर भापीया, त्यांनो जीव न संखें मूड हो ।
 ते वूडें छें वीर ना वचन उयापनो, कर कर कूडी रुड हो ॥२९॥

रत्न : ६

टीकम डोसी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिघ नें आयरिया, उवझाया सगला साध ।
ए पांचू पदां नें नमण कीयां, पांमें परम समाध ॥ १ ॥
नव पदारथ ओलख्यां विनां, निश्चेइ समकती नांहि ।
केइ ओलख नें उंवा पड्या, ते तो निनवां री पांत माहि ॥ २ ॥
एक एक वचन उथाप ने, निनव हूवां छें कर २ तांण ।
तो अनेक वचन उथापे तके, ते तों निश्चेइ निनव जांण ॥ ३ ॥
करणी छे निरजरा तणी, तिणने संवर सरघे कोय ।
ते समकत खोय मिथ्याती हुवों, जीतव जनम विगोय ॥ ४ ॥
प्रबल उदे छे दंसण मोहणी, तिणसूं विगडी दिष्ट अतंत ।
विभ्रम पडीयो मिथ्यात रे, तिणरी मती हुइ भय भ्रंत ॥ ५ ॥
जिण अनेक वचन उथापीया, उंधा अर्थ करे ने ताय ।
कुण कुण वचन उथापीया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[साध म जागो इण चल गत सू]

करडी सीखामण कहूं जोड नें, सुण नें मत घरजो घेष जी ।
जो परभव री चित्ता हुवे घट में, तो निरणों करों विगेष जी ।
उंधी सरघा कोई म राखो* ॥ १ ॥
सुभ जोगां ने संवर सरघे, संवर नें सरघे सुभ जोग जी ।
तिण रे दोनूं कांनी पड्यो दिवालो, आ सरघा घणी अजोग जी ॥ २ ॥
धुरला पांच गुणठांणां तांइ, नही सरघे सुभ जोग जी ।
इसडी उंधी सरघा छें तिणरे, मोटें मिथ्यात रो रोग जी ॥ ३ ॥
केवल ग्यांनी नें कहे अघरमी, त्यांरे सरघे सावच्च जोग जी ।
वले सावच्च सू पुन लागों सरघे, आ पिण वात अजोग जी ॥ ४ ॥
पाप ठाणो इविरत रो पय हूआं, कहे सर्व विरत आवे नांहि जी ।
देस विरत नीपनी सरघे, आ सरघा नही जिणमत मांहि जी ॥ ५ ॥
पांच महावरतां ने कहें सुभ जोग, सुभ जोगां ने कहें महावरत जी ।
आपिण प्रतख उंधी सरघा, तिण में मूल नही छे सत जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पांच चारित ने कहें सुभ जोग छे, सुभजोगांने कहे चारित पांच जी ।
 ते समकत खोय नें नें हूआ मिथ्याती, कर कर उंधी खांच जी ॥ ७ ॥
 सुभ जोगां ने कहें उपसम भाव, ओ पिण बडो अन्याय जी ।
 तिणरे जोग तणी ओलखणा नांही, चोडे भूला जाय जी ॥ ८ ॥
 असुभ जोग तणा कीघा पचखाण, तिणसूं नीपना कहे सुभ जोग जी ।
 आपिण उंधी सरघा तिण री, ते किम सरघे डाहा लोग जी ॥ ९ ॥
 दरब जोग तीनूंड रूपी, तिण सूं लागो कहे पुन जी ।
 पुनरो करता रूपी सरघे, आ सरघा घणी जवून जी ॥ १० ॥
 वले सावद्य सूं पुन लागों सरघें, तिण सावद्य ने कहें अघर्म जी ।
 पुनरो करता कहें अघर्म, ते जावक भूलों मर्म जी ॥ ११ ॥
 जीव रा भाव थकी नही लागें, पुनरो एक प्रदेस जी ।
 ए प्रतख खोटी सरघा तिणमें, नही साच तणों लवलेस जी ॥ १२ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतव नही कोड, कहे विण कीघां पुन होय जी ।
 धा सरघा जिणमत सू न्यारी, तिणने मत धारो कोय जी ॥ १३ ॥
 कहे इरियावही किरिया छे घर्म, तिहां नीपनों कहे सावद्य जी ।
 तिण सावद्य नें अघर्म सरघे, ते कहितां न आवे लाज जी ॥ १४ ॥
 कहे असुभ कर्म रों परिग्रहण, सर्व सावद्य कहे छें तांम जी ।
 तिण सावद्य नें कहे अघर्म, ते यूंही वकें बेफांम जी ॥ १५ ॥
 कहे सुभ लेस्या ने सुभ जोगां विण, कहे घर्म ने निरजरा नांही जी ।
 इसडी उंधी करें परूपणा, ते नही जिण आग्या मांही जी ॥ १६ ॥
 केवलीयां रें सावद्य सरघे, तिण सावद्य ने कहें अघर्म जी ।
 तिणरी थित कहे दोय समां री, तिणरो मूढ न जाणे मरम जी ॥ १७ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतव नही कोड, इसडो परूमें कोय जी ।
 ते पिण श्री जिण आग्या बारे, च्यार तीर्थ में नही होय जी ॥ १८ ॥
 कहे सुभ जोगां ने आश्रव सरघ्या, बीस संवर नो हुवों विछेद जी ।
 एहवी उंधी करें परूपणा, तिण पाडयो घर्म में भेद जी ॥ १९ ॥
 कहे सुभ लेस्या ने आश्रव सरघ्या, तो निरजरा नो थाए विछेद जी ।
 आपिण उंधी सरघा तिणरी, ओ घाल्यो घर्म में भेद जी ॥ २० ॥
 महावीर ना सासण मांहे, निनव हूयां सात जी ।
 त्यां तो एकीको वचन उयाप्यो, पडवजीयो मिथ्यात जी ॥ २१ ॥

एक वचन उथाप्यां निनव हुवें, तिण में संक म राखो कोय जी ।
तो अनेक वचन उथापें ते तो, निश्चें निनव होय जी ॥ २२ ॥
तिण एहवी उंची सरघा काढे, वले बोले आल पंपाल जी ।
तिण तीन कालरा तीथंकरा नें, दीयो अग्यांनी आल जी ॥ २३ ॥



ढाल : २

दुहा

भारी कर्म छे जेहने, तिण सू लीधी न छूटें टेक ।
ज्यूं छेरवे ज्यूं उलटो पडें, साची वात न मांनो एक ॥१॥
मोह कर्म पतलो पडीयां विना, नही जाणें सूतर रो न्याय ।
मद छावया मतवाला नी परें, समझ पडें नही काय ॥२॥
हिबे मांन वडाइ छोड ने, थाणे समता भाव ।
तो लीधी टेक म राखजो, जो समकत री हुवें चाव ॥३॥
लारें छोटी सरधा कही तेहनो, उत्तर सुणो भव जीव ।
जो सुण सुण नें निरणो करो, तो लागे मुगत री नीव ॥४॥
छोटी सरधा रा एक एक बोल रो, उत्तर कहू सूतर रे न्याय ।
जो मुगत जावा री हुवें चावना, तो सांभलजो चित्त ल्याय ॥५॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आम्हा मे]

चारित संवर नें सुभ जोग सरधें, इण सरधा सू होसी घणा खराब ।
सुभ जोग नें संवर जिण कह्या न्यारा, त्यारो सुणजों विवरा सुध जाब ।
सुध सरधा रो निरणो कीजो* ॥१॥
तेरमें गुणठाणे आतमा सात, तिहा कषाय आतमा टल गइ ताय ।
चवदमे गुणठाणे छ आतमा छे, तिहां जोग आतमा गइ छे विल्लाय ॥सु०२॥
जोग आतमा मिटी चवदमें गुणठाणे, चारित आतमा तो मिटी नही कोय ।
इण लेखे चारित नें सुभ जोग, प्रतख जूआ जूआ छे दोय ॥३॥
चारित ने जोग एक सरधें तो, आठ आतमा री हुवें आतमा सात ।
सुभ जोग ने चारित एक सरधे तिण, चोडेइ पडवजीयो मिथ्यात ॥४॥
बारेंमें तेरमें चवदमे गुणठाणें, षायक चारित छे जथाव्यात ।
ते चारित निरंतर एक धारा छे, ते तो बवे घटे नही छे तिलमात ॥५॥
चारित मोहणी षय हुवे जब, षायक चारित नीपजे ताय ।
इण चारित संवर रो एक सभाव, सुभ जोग ते चारित कदेय न थाय ॥६॥
चारित मोहणी उपसम हुवे जब, उपसम चारित नीपजें ताय ।
षयउपसम हुआ षयउपसम चारित, खय हुआं षायक चारित थाय ॥७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चारित मोहणी षय षयउपसम हूआं,
 मोह षट्यां सुभ जोग नीपना सरखें,
 सुभ जोग नीपजण री विघ न जाणें,
 सुभ जोग ने ओलखीयां विण आंचा,
 सुभ नें असुभ जोग नीपजें तिणरों,
 त्यारो थोडों सो विसतार कहूं छूं,
 अंतराय करम षय षयउपसम हूआं,
 ते लवद वीर्य छें उजलों निरमल,
 तिण लवद वीर्य सूं करम न रुक्कें,
 लवद वीर्य छें पुदगल नें संजोगें,
 लवद वीर्य तणों जीव करें व्यापार,
 तिण व्यापार ने भाव जोग कहीजें,
 सावद्य काम करें ते सावद्य जोग,
 तेतो दरब जोग पुदगल नें संघालें,
 सावद्य जोगां सूं पान लागें छे,
 वले निरवद जोगां सूं पुन पिण लागें,
 सुभ जोग छे करणी करम काटण री,
 सुभ जोगां ने संवर सरखे छें भोला,
 मन वचन जोग उतकष्टा रहे तो,
 चारित तो उतकष्टों रहे तां,
 सुभ मन वचन जोग चारित हुवे तां,
 जो उ चारित री थित इघकी परूपे,
 मन वचन रा दोय दोय तीन काया रा,
 जोग ने संवर कहे तिण ने पूछा कीजे,
 कदेयक तो सत मन जोग वरतें,
 एक एक समें दोनू मन नही वरते,
 काया रा तीन जोग साथे नही वरते,
 चारित संवर तो निरतर एक,
 जो उ सातोड जोगां ने संवर सरखे,
 कदे कोइ वरते कदे कोइ वरते छे,
 संवर ने सुभ जोग जूजूवा दीसे,
 अभितर आंख हीया री फूटी,

तिण सूं तो सुभ जोग नीपजे नांही ।
 ते पड गया मोह मिथ्यात रे मांही ॥ ८ ॥
 असुभ जोग तणी पिण विघ नही जाणे ।
 पीपल बावी मूरख ज्यू ताणे ॥ ९ ॥
 निरणो वीर सूतर मे वतायो ।
 ते सांभलजों भवीयण चित्त ल्यायो ॥ १० ॥
 नीपजें षायक पयउपसम ताय ।
 तिण वीर्य सूं करम न लागें आय ॥ ११ ॥
 वले वीर्य सूं करम कटें नही ताय ।
 तिण ने वीर्य आतमा कही जिणराय ॥ १२ ॥
 ते व्यापार छें करण वीर्य जोग ।
 त्यारो व्यापार छें पुदगल रे संजोग ॥ १३ ॥
 निरवद काम करें ते निरवद जोग ।
 दरब नें भाव जोग रों भेलो संजोग ॥ १४ ॥
 निरवद जोगां सूं निरजरा होय ।
 सुभ जोगां ने संवर सरघो मत कोय ॥ १५ ॥
 संवर सूं तो रुकें छें करम ।
 तेतो करमां तणे वस भूला छे भर्म ॥ १६ ॥
 अंतर मोहरत तांइ जाण ।
 देसउणों कोड पूर्व परमाण ॥ १७ ॥
 चारित पिण अंतर मोहरत तांइ ।
 तिणने आपरा बोल्या री समरुन कांड ॥ १८ ॥
 ए सात जोग तेरमें गुणठाणे ।
 तू किसा जोग ने संवर जाणें ॥ १९ ॥
 कदेयक वरते जोग ववहार मत ।
 इमहीज वरते दोनू जोग वचन ॥ २० ॥
 एक समें वरते काया रो जोग एक ।
 जोग तो जूजूवा वरते अनेक ॥ २१ ॥
 ते सातोड जोग नही एक नाय ।
 संवर तो एक घारा रहे छे नाग्यान ॥ २२ ॥
 यां दोया ने एक वहे क्रिण देये ।
 ते सूतर साह्यो विण विघ देये ॥ २३ ॥

केवली समदघात करें तिण कालें, काया रा तीन जोग तणों व्यापार ।
 पेंहले नें आठमें ओदारोक जोग, बाकी रा जोग नही तिण वार ॥ २४ ॥
 बीजें छूटे वले सातमें समें, ओदारोक नों मिश्र जोग व्यापार ।
 तीजें चोथें नें पांचमें ए तीन समा में, कारमण जोग वरते तिण वार ॥ २५ ॥
 ए कारमण जोग तो नवों नीपनो, आगें जोग हुंता ते गया विल्लाय ।
 सुभ जोगां नें चारित गिणें तिण लेखे, चारित पिण विलें होय गयो ताय ॥ २६ ॥
 जो उ कारमण जोग ने चारित सरखें, ते पिण मिटसी तेरमें गुणठाणे ।
 जब उणरे लेखे ते पिण चारित मिटीयो, जब उ किसा जोग नें चारित जाणे ॥ २७ ॥
 जो उ ओदारोक रा मिश्र नें चारित सरखें, ते पिण जोग जासी विल्लाय ।
 जब तिणरें लेखे ते पिण चारित विल्लायो, आप री सरघा समझ देखें मन मांय ॥ २८ ॥
 वले पांच जोग नीपजे त्यारे, त्यारे पिण चारित सरघ उभों रहे ताय ।
 ते पिण जोग निरंतर नांहीं, त्यां जोगां नें चारित कहसी किण न्याय ॥ २९ ॥
 चारित निरंतर केवलीयां रे, जोग निरंतर नही छें एक ।
 ए प्रतख न्याय उघाडों दीसें, हलूकर्मि होसी ते छोडसी टेक ॥ ३० ॥
 तेरमां थी जायें चवदमें गुणठाणें, जब पेंहला तो मन जोग रों रुखें व्यापार ।
 तठा पछे रुखें छें वचन रो जोग, जब एक काय जोग रह्यो छें लार ॥ ३१ ॥
 जो उ मन वचन जोग संवर सरखें, तिणरे लेखें तो दोनूंइ संवर घट जाय ।
 अजोग संवर पिण नीपनो नांही, एक काया रो जोग बाकी रह्यो ताय ॥ ३२ ॥
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब हलूकर्मि हुवे तो सवलों सूभे ।
 भारीकरमो हुवें तो ऊंघो पड जायें, वले उंघी सरघा मांहे इधको अलूमें ॥ ३३ ॥
 सुभ जोग ने संवर न्यारा न्यारा छें, याने एक सरखें ते मूढ मिथ्याती ।
 वले दिन दिन इधकी तांण करे तों, ते उंघी सरघा रो हुवो पखपाती ॥ ३४ ॥

ढाल : ३

दुहा

सुभ जोग संवर निश्चें नही, सुभ जोग निरवद व्यापार ।
 'ते करणी छें निरजरा तणी, तिण सूं करम न रुके लिंगार ॥ १ ॥
 समदघात करे जब केवली, कांय जोग तणों व्यापार ।
 तिण सूं करम तणी निरजरा हुवे, पुन पिण लागे तिण वार ॥ २ ॥
 त्यारी निरजरा सूं पुदगल भस्त्र्या, त्यां सूं सर्व लोक फरसाय ।
 जोगा सूं निश्चे निरजरा हुवें, चोडे देखो सूतर रो न्याय ॥ ३ ॥
 सुभ जोगां सूं निरजरा हुवें, ते कह्यो सूतर रे मांय ।
 ते थोडा सा परगंट कळें, ते सांभलजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

'अकुसल जोग' रुधतां निरजरा हुवे, ते निरजरा रुवें त्यां लग जाणों रे ।
 वले निरजरा हुवें 'कुसल जोग' उदीस्थां, ते प्रवर्तें छे त्यां लग पिछांणो रे ।
 सुभ जोग छें निरजरा री करणी* ॥ १ ॥
 ओ तो परिसलींणीया तंप कह्यो श्री जिणसर, सूतर उवाई मांह्यो रे ।
 त्यां सुभ जोगां नें कोइ संवर सरधें, ते तो चोडे मूल जायो रे ॥ सु० २ ॥
 प्रसस्त जोग पडवेजीयो सांधु, अणतंघाती करमा नें खपायो रे ।
 'ए उंतराघेन गुणतीसमे अघेने, सात्तिमों बोल कह्यो जिणरायो रे ॥ ३ ॥
 सामायक रो फल सावद्य जोग निवरते, इणरो 'ए गुण नीपनो ताह्यो रे ।
 'ए पिण उतराघेन गुणतीसमें घेनें, कह्यो आठमां बोल रें मांह्यो रे ॥ ४ ॥
 पांच परकार नी सभाय कीयां सूं, निरजरा हुइ कटीया करमो रे ।
 सभाय करे ते निरवद जोगां सूं, जब नीपनो निरजरा घमों रे ।
 सुघ सरवा रो निरणो कीजो ॥ ५ ॥
 ए पिण उंतराघेन गुणतीसमें घेनें, उरणीस सू तेवीस तांड रे ।
 त्यां सुभ जोगां नें संवर सरधे, ते मूल गया भर्म माही रे ॥ ६ ॥
 जोग तणा पचखांण कीयां सूं, अजोग संवर हुवो रे ।
 ते अजोग संवर चारित नाही, अजोग संवर चारित सू जूवो रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अजोग संवर सुभ जोग रुध्यां नीपनों, जब छटो निरवद व्यापारो रे ।
 चारित नीपनो सर्व इविरत त्याग्यां, बाकी इविरत न रही ल्गारो रे ॥ ८ ॥
 अजोग संवर हुवें निरवद जोग त्याग्यां, तिणमें सावद्य रो नहीं परिहारो रे ।
 चारित हुवें सर्व इविरत त्याग्यां, नव कोटी त्याग्यो सावद्य व्यापारो रे ॥ ९ ॥
 तीन करण जोगां सर्व सावद्य त्याग्यो, ते तो तीन गुपत संवर धर्मो रे ।
 पांच सुमति छे निरवद जोग व्यापार, त्यासूं कटें छे आगला करमो रे ॥ १० ॥
 गुपत संवर तो निरंतर साधु रे, पांच सुमत निरंतर नाही रे ।
 पांच सुमत तो निरतर नही छे, ए तो प्रवरते छे जठ तांड रे ॥ ११ ॥
 इर्या सुमत तो चालें जठ तांड, भाषा सुमत बोलें जठ तांड रे ।
 एसणा सुमत तो प्रवरते छे त्यां ल्ग, त्यांनं संवर कहीजें नाही रे ॥ १२ ॥
 आयाण भड मत निखेवणा सुमत, ते तो लेवें मूकें तठ तांड रे ।
 परठणा सुमति परठें जठ तांड, त्यांनं पिण संवर कहीजें नाही रे ॥ १३ ॥
 सुमति छे सुभ जोग निरजरा री करणी, सुभ जोगां नें संवर कहें कोयो रे ।
 यानें एक कहें तिणरी उंची सरखा, संवर नें सुभ जोग छे दोयो रे ॥ १४ ॥
 सुभ जोग रुध्यां मिटें निरजरा री करणी, पुन ग्रहवारा दुवार रूधांणा रे ।
 जब अजोग संवर नीपनों तिण कालें, करण वीर्य जोग मिटांणो रे ॥ १५ ॥
 जीव तणा प्रदेस चलावें, तेहीज जोग व्यापारो रे ।
 ते प्रदेस थिर हूआं अजोग संवर छे, सुभ जोग मिट्या तिणवारो रे ॥ १६ ॥
 सुभ जोग व्यापार सूं करम कटें छे, जब जीव रा प्रदेस चाले रे ।
 जीव रा प्रदेस चालें तठ तांड, पुन रा प्रदेस झाले रे ॥ १७ ॥
 चारित ना परिणाम थिर प्रदेस, त्यांरो सीतलभूत सभावो रे ।
 तिणसू सुभ जोग नें चारित न्यारा न्यारा छे, ओतों देखों उघाडो न्यावो रे ॥ १८ ॥
 वीयावच करण रो फल वतायो, बंधें तीथंकर नाम करमों रे ।
 ते वीयावच करें सुभ जोगां सू, त्यांसूं हुवों निरजरा धर्मों रे ॥ १९ ॥
 बंदणा करता नीच गोत खपावें, बले बांधें उंच गोते करमों रे ।
 बंदणा करे छे सुभ जोगां सू, तिण सू हुवो निराजरा धर्मों रे ॥ २० ॥
 सावद्य जोगां सू सेवे पाप अठारें, ते तो पाप री करणी जांणो रे ।
 ते सावद्य करणी करतां पिण निरजरा हुवे छे, त्यांरो न्याय हीया मे पिच्छणो रे ॥ २१ ॥
 उदीरी उदीरी नें करे क्रोधादिक, जब लागे छे पाप ना पूरो रे ।
 उदीरी नें क्रोधादिक उदें आंण्या ते, करम भरे पडें दूरो रे ॥ २२ ॥
 पाप री करणी करतां निरजरा हुवे छे, तिण करणी में जाबक खांमी रे ।
 सावद्य जोगां पाप ने निरजरा हुवें छे, ते निरजरा तर्णों नही कांमी रे ॥ २३ ॥

अं सुभ जोग छें निरवद व्यापार, ते करणी निरजरा री जाणो रे ।
 तिण करणी करतां पिण पुन लागे छें, त्यांरो न्याय हीया में आणो रे ॥ २४ ॥
 उदीरी नें करणी निरवद करतां, लागे पुन रा पूरा रे ।
 करम उदीर उदीर उदें आणी नें, करम भाटक करे दूरो रे ॥ २५ ॥
 निरजरा री करणी करतां पुन हुवें छें, तिण करणी मांहे नही खांमी रे ।
 निरवद जोगां सूं निरजरा ने पुन हुवे छे, ते पुन तणा नही कांमी रे ॥ २६ ॥
 सुभ जोग सूं निरजरा री करणी, तिणरो छे आगम साखी रे ।
 सुभ जोगां नें कोइ संवर सरखें, ते भारी करमां जीव अन्हाखी रे ॥ २७ ॥
 कहि कहि नें कितरो एक कहूं, सुभ जोग ते संवर नांहीं रे ।
 सुभ जोगा नें संवर सरखे, ते निनवारी पांत माही रे ॥ २८ ॥
 सुभ जोग ने सुभ लेस्या सेती, पुन लागों सरखे नांही रे ।
 ते जिण मारया सूं न्यारा पडीया, ते पिण निनवारी पांत मांही रे ॥ २९ ॥
 भली लेस्या ने उदे भाव में आणी, अनुजोगे दुवार सूतर मझारो रे ।
 वले भली लेस्या घर्म में पिण आणी, तिणरो मूढ न जाणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 भली लेस्या थी तो पुन ग्रहें छे, तिण सूं उदें भाव माहें आणी रे ।
 निरजरा हुवें तिण सूं घर्म में आणी, आ श्री जिणवरनी वाणी रे ॥ ३१ ॥
 लेस्या अवेन री धुरले गाथा में, करम लेस्या छहूं जिण भाखी रे ।
 वले भली लेस्या ने घर्म में आणी, उत्तराखेन चोतीसमो साखी रे ॥ ३२ ॥
 करमां ने ग्रहे तिण सूं कही करम लेस्या, निरजरा हुवें तिण सूं लेस्या घर्मो रे ।
 उदें भाव ते करम ग्रहवारो हेत, सुभ लेस्या सूं लागे पुन करमो रे ॥ ३३ ॥
 समवे जोगां नें उदें भाव में आण्या, तिण में सावद्य निरवद दोनूं जाणो रे ।
 निरवद जोगा सूं तो पुन ग्रहे छे, सावद्य-सूं पाप लागे छे आणो रे ॥ ३४ ॥
 सुभ जोगां सूं निरजरा हुवे छे, तिण सूं निरजरा री करणी में चाल्या रे ।
 वले सुभ जोगां सूं पुन पिण लागें, तिण सूं आश्रव माहें घाल्या रे ॥ ३५ ॥
 गोहूं नीपावे छें गोहां कें-कारणें, पिण खाखला री नही चावो रे ।
 तो पिण साथे खाखलो नीपजे छे, बुधवंत समभों इण न्यावो रे ॥ ३६ ॥
 अयू करणी करे निरजरा रे काजें, पिण पुन तणी नही चावो रे ।
 पिण पुन नीपजे छे निरजरा करतां, खाखला ने गोहां रे न्यावो रे ॥ ३७ ॥
 भली लेस्या ने भला जोगां सूं, निरजरा ने पुन होयो रे ।
 लेस्या ने जोगां से कांयक फेर छे, तिण सूं लेस्या ने जोग छे दोयो रे ॥ ३८ ॥
 सुभ लेस्या ने सुभ जोगा सूं पुन लागे, त्यांरो न कीयो घणो विसतारो रे ।
 जो इतरे कहे किण ने समझ न पडे तों, सूतर सूं करो निसतारो रे ॥ ३९ ॥

ढाल : ४

दुहा

पेह्ला गुणडांगा थी पांचमां-ल्लों, कदे वरते नहां-मुभ, जोग ।
 एद्वी उंची करे, छें पल्पणा, तिणरे लागों मिथ्यात, रों रोग ॥ १ ॥
 पेह्ला गुणडांगा थी छ्छा ल्लों, सावच्च, निरवद-जोग छें ताहि ।
 सातमां थी तेरमां-ल्लों, एक-निरवद-जोग-त्यां मांहि ॥ २ ॥
 केड मूड मिथ्याती-जीवडा, कर-रह्या उंची तांग ।
 श्रावक रें मुभ जोग-सरखें-नहीं, ते, पूरा मूड अयांण ॥ ३ ॥
 श्रावक-रें मुभ जोग सरखें-नहीं, ते-भव भव-में हीमी खुराव ।
 श्रावक रें-मुभ जोग-जिण-कह्या, ते नुणजों मूतर रो जाव ॥ ४ ॥

ढाल

[आखंड समकित उचरे रे लाल]

श्रावक सामायक-व्रत उचरे-रे लाल, सावच्च जोग रा करे पचखाण हो-भविकजन*,
 ते भणे-सभाय-बोल थोकडा रे-लाल, बले-बोलें निरवद वाण हो-भविकजन-
 सुच सरचा रो-निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
 श्रावक पांच पदां-ने-वदणा करे रे लाल, त्यांस-वस्तें-निरवद-जोग-हो ।
 श्रावक रे मुभ जोग-सरखें-नहीं-रे लाल, तिणरे मोटों-मिथ्यात रो-रोग-हो ॥ भ० सु० २ ॥
 आवो पवारो-कहें साचां भणी-रे लाल, ते-ववहार वचन-जोग सुच हो ।
 तिण वचन ने कहें-असुभ जोग छें-रे लाल, तिणरी मिष्ट-हुइ, छें, वुव हो ॥ ३ ॥
 बले मावां नें श्रावक-वांन-दें-रे लाल, तिणरी तीतूड जोग-हुवे-सुच हो ।
 वांन देवा रा जोगां नें असुच कहें रे लाल, तिणरी विगड-गड-सुच वुव हो ॥ ४ ॥
 तीन मनोरय मन चित्तवे रे लाल, ते सुव मन-जोग-निरदोप हो ।
 तिण मन नें कहें असुभ जोग छें-रे लाल, तिणरी सरचा फोणद-फोक हो ॥ ५ ॥
 धर्म ध्यान ध्यावें श्रावक तिण समें रे लाल, जव सुभ जोगां रो छें व्यापार हो ।
 तिण व्यापार नें कहें असुभ जोग छें रे लाल, तिणरी खोटी सरचा नें विकार हो ॥ ६ ॥
 श्रावक भावे साचां रो भावना-रे लाल, साव आवें जो देड-सुच आहार हो ।
 इण भावना रा जोगां नें असुच कहें रे लाल, तिण-जीतव दीयां विगार हो ॥ ७ ॥
 श्रावक सीलादिक वारें व्रत उचरे रे लाल, जव निरवद जोगां रो व्यापार हो ।
 तिण जोगां नें असुच कहें रे लाल, ते-तो पूरा मूड गिवार हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रावक निरवद किरतब करें रे लाल, ते निरवद जोगां सूं होय हो ।
 तिण जोगां नें सुध सरघे नहीं रे लाल, तिण समकत दीवीं खोय हो ॥ ९ ॥
 मन पुने वचन काय पुने कह्या रे लाल, ए- तीनूंइ सुध जोग जाण हो ।
 या तीनां नें कहें असुध जोग छें रे लाल, ते तो जिन मारग नां अजाण हो ॥ १० ॥
 श्रावक तो जिहांइ रह्या रे लाल, मिथ्याती रे पिण सुम जोग जाण हो ।
 जब परत संसार मिथ्याती करे रे लाल, तिणरा निरवद जोग पिछाण हो ॥ ११ ॥
 सुख विपाक सूतर में दस जणां रे लाल, दांन दे कीयों परत संसार हो ।
 त्यारा तीन करण जोग सुध था रे लाल, जेवो विपाक सूतर रे मभार हो ॥ १२ ॥
 दांन दीयों भगवान : नें रे लाल, विजें- गाथापती आदि च्यार हो ।
 त्या पिणतीन करण तीन जोग सूं रे लाल, कीधो परत संसार हो ॥ १३ ॥
 ठांम ठांम सिधांत मांहे कह्यो रे लाल, मिथ्याती- कीयो परत संसार हो ।
 त्यारे सुभ जोग मूल सरघे तहीं रे लाल, ते तो भूट-रा बोलणहार हो ॥ १४ ॥
 सूतर भगोती मांहे कह्यो रे लाल, इंद्र निरवद भाषा बोले जाण हो ।
 निरवद भाषा ते निरवद जोग छें रे लाल, तिणरी कर्ये हीय में पिछाण हो ॥ १५ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

अरिहंत सिघ ने आररीयां, उवढ्णल सगलल सलघ ।
 ए ढुगंत नगर नलं दलडकल, डलंऑई डद अरलघ ॥ १ ॥
 डलंघ डलव ऑुणुडसर डलषीडल, उदुं उडसड डलडक ऑलण ।
 डुंओडसड नुं डररलणलडक ऑुं, तुडररी डुडवतं करऑुं डलऑलण ॥ २ ॥
 आठ करड उदुं हूआं नुडडऑुं, ऑुड तणल उदुं डलव ।
 तुडलनुं डलव ऑुड ऑुणुवर कहुडल, तुडलरुं ऑुओु ऑुओु ऑुं सडलव ॥ ३ ॥
 नलरकुी तलरऑुंऑु डलनुषु डुवतल, डुथुडुी आदल दुदु ऑु कलड ।
 कुलनुनलदलक डलव लुसुडल ऑुहुं, कुओुडलदलक ऑुडलर कषलड ॥ ॡ ॥
 तुलन डुवदु डलडुडलतुी नुं अडलरतुी, असनी नुं अनलण ।
 वलु अहलरुथल नुं संसलरथल, असलघ नुं अकुवलुी ऑलण ॥ ॡ ॥
 ऑुदडसुथ नुं संऑुगुडुडणुं, ए डुल कहुडल तुतुीस ।
 तु सलरल उदुं डलव ऑुड ऑुं, तु डलष गडल ऑुगदुीस ॥ ॢ ॥
 तुडलडु डुलु उदुं सुु नुडडनलं, तु सलरलडु सलवऑु ऑलण ।
 सुष करड उदुं सुु नुडडनलं, तुडलसु डलड न ललगु आण ॥ ॣ ॥
 नलड करड उदुं सुु नुडडनलं, तुडलडुं कुडक नलरवदु ऑलण ।
 कुड सलवऑु नलरवदु दुनुं नहुी, तुडलसुं करड न ललगु आण ॥ ॡ ॥
 ऑु करड उदुं हूआं नुडडनलं, तु सलवऑु नलरवदु नलंहु ।
 तुडलरल डलव डुद डरगऑु कहुं, तु नलरणु कुरु डलंहु ॥ ॥ ॥

ढलल

[आ अशुकुडल डलणु आगुडल डु]

ऑुडलर गतल ऑु कलड असनी नुं अनलणुी, संसलरथल तु तुु संसलर रु डलहु ।
 असलदुदु अकुवलुी नुं ऑुदडसुथ, ए सुलुं डुल सलवऑु नलरवदु नलंहु ।
 उदुं डलव ऑुड अतुकरणु ओलखऑु* ॥ १ ॥
 ऑुडलर कषलड नुं तुलन डलठी लुसुडल, वलु तुलनुु डुवदु डलडुडलतु नुं अडलरतु ।
 ए डलरुडु डुल ऑुं एकतु सलवऑु, तुडलसुं एकतु डलड ललगु ऑुं नलरतु ॥ उ० २ ॥
 तुलन डुलु लुसुडल ऑुं एकतु नलरवदु, तुडलसुं नलरऑुडल हुुडुडु ललगु ऑुं आड ।
 आहलरुीक नुं सऑुगुी ऑुं सलवऑु नलरवदु, तुडलसुं डुन नुं डलड दुनुंदु डुडलड ॥ ३ ॥

*डहु आंकडुी डुरतुडुक गलथल कु अनुत डुं हु ।

अंतराय करम षय षयउपसम हुआं,
ते उजला लेखे' छें एकंत निरवद,
वीर्य चलावें छें नाम करम संजोगें,
जब करम कटे' तिण निरवद जोगा सूं,
नाम करम संजोगें प्रदेस चलावें,
अववसाय परिणामादिक सर्व रूडा,
भली लेस्या भला जोग करणी रे लेखे',
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिण लेखे',
चवदमें गुणठांगे चवदे' जोग सरवे',
ए सरधा छे विपरीत प्रतख खोटी,

चवदमें गुणठांगो अजोगी कह्यो जिन,
पिण भारी करमां ने सवली न सूमें,
तेरमें गुणठांगे पे'हला मन जोग रूधे,
ए तीनुं जोग रूधीं नें हुआ अजोगी,
जब तो कहें प्रवर्तन जोग रूधांणा,
ओ तों अणहंतो गोलों चलायो,
ए निरवतन जोग छें सुभ जोग सवर,
ते किण ही सूतर माहे' चाल्यो न दीसे',
सुभ जोग ने संवर सरवे' मिथ्याती,
ते हीया फूट गधा रा साथी,
जोग तो व्यापार जीव तणों छें,
थिर प्रदेस ने जोग सरवे' छें,
सुभ जोग ने संवर जूआ जूआ छें,
त्यां दोयां नें एक सरवे' अग्यांनी,
सुभ जोगां सूं पुन करम लागे छें,
सुभ असुभ करम संवर सूं रुके' छें,
सवर सूं जीवा रा प्रदेस बंध हुवे' छें,
या दोयां ने एक सरवे छें अग्यांनी,

जब वीर्य लब्ध उपजे' छें आय ।
तिणसूं पुन पाप निरजरा क्यूंही न थाय ॥ ४ ॥
ते निरवद जोग तणो व्यापार ।
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिणवार ॥ ५ ॥
ते भली लेस्या भला जोग व्यापार ।
जब निरजरा पुन हुवे' तिणवार ॥ ६ ॥
षायक षयउपसम भाव छें ताय ।
उदे' भाव माहे घाल्या जिणराय ॥ ७ ॥
तीणमें कारमण जोग नें दीर्यो छे टालो ।
तिणरो मूढ मिथ्याती न कडे' निकाल ।
इण खोटी सरधा रो निरणो कीजो ॥ ८ ॥
जो सका हुवे' तो सूतर नें संभालो ।
तिणरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ ९ ॥
पछे' वचन रूधे पछे' रूधे काया ।
त्यारे' पाछा जोग कठी सूं आया ॥ १० ॥
निरवतन जोग छे तिण मांही ।
ते तो किण ही सूतर में दीसे' नांहीं ॥ ११ ॥
ओ पिण अणहंतो चलायो गोलो ।
आ पिण मिथ्यात्यां रे' मोटी भोलो ॥ १२ ॥
आतो उठी जठा थी जाबक भूठी ।
त्यारी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ १३ ॥
जीव रा प्रदेस हाले' चाले' त्यांही ।
तिणरे' मोटो मिथ्यात रह्यो घट मांही ॥ १३ ॥
त्यां दोयां रो जूओ जूओ छे' सभाव ।
तिण निश्चे'इ कीघो छें मोटो अन्याव ॥ १५ ॥
असुभ जोगां सूं लागें पाप करम ।
वले सुभ जोग सूं हुवे' निरजरा घर्म ॥ १६ ॥
जोग सूं जीव रा प्रदेस री हुवे' छें छूट ।
ते निश्चे'इ नेमा छें हीया फूट ॥ १७ ॥



रत्न : ७

निषेपां री चौपई

ढालि : १

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, वले उवाभाय नें सर्व साध ।
 यांरा गुण ओलखनं वंदणा करें, ते पामें परम समाध ॥ १ ॥
 केइ हिसाधर्मी जीवडा, मानें निगुणा देव गुर धर्म ।
 मारें छक्राय रा जीव नें, वाधें उसम करम ॥ २ ॥
 नाम थापना दरब-भाव ने, ए मानें नषेपा च्यार ।
 त्यांरी पिण समज पडे नही, घट मे घोर अंधार ॥ ३ ॥
 ए च्यार नषेपा रो नाम ले, भोलां ने दे भरमाय ।
 त्यांरी सरधा रा प्रश्न पूछीयां थकां, तो भूठ बोलें फिर जाय ॥ ४ ॥
 ते भूठ बोलें छें किण विधें, किण विध फिर फिर जाय ।
 हिंवे नाम नषेपा रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे]

ढेढ डुंब थोरी नें सरगरा रे, भील मेणा ने मूसलमान रे ।
 चंडाल धुरा धुर सर्व जात में रे लाल, कें कारो छें नाम भगवान रे ।
 नाम नषेपा रो निरणो सुणो रे लाल* ॥ १ ॥
 जे गुण विण नाम माने तेहनं रे, सगला नाम भगवान बंदणीक रे ।
 तिणने पूछणो सगली न्यात ने रे लाल, करणी नाम भगवान री ठीक रे ॥ ना० २ ॥
 पछे गुण विण नाम भगवान नें रे, जो उन वादें सगला रा पाय रे ।
 उण सरधा थापी ते उथप गद रे लाल, पिण गहलां ने खबर न कांय रे ॥ ३ ॥
 केइ जोगी सिन्यास्यां रा नाम छे रे, सिधगिरी ने सिधनाथ रे ।
 जे गुण विणा नाम माने तके रे लाल, सिधां ने क्यून वादे जोडी हाथ रे ॥ ४ ॥
 केइ करे मित्वां रो कारटा रे, ते पिण वाजे आचार्य लोकां मांय रे ।
 जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, क्यून न वादे तिण आचार्य रा पाय रे ॥ ५ ॥
 केइक ब्राह्मण लोक में रे, त्यांरी जात वाजें उपाध्याय रे ।
 जे गुण विणा नाम मानें तके रे लाल, क्यून न वादें उण उपाध्याय रा पाय रे ॥ ६ ॥
 केइ साध वाजे भगत डूढीया रे, ते निगुण छें रहीत समाध रे ।
 जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, ते क्यून न वादें एहवा साध रे ॥ ७ ॥
 ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, त्यांरा पूछे पूछे नें नाम रे ।
 जे गुण विणा नाम माने तेहने रे लाल, वादे पूजे करणा गुण ग्राम रे ॥ ८ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, जो उनमें तो सरघा में फूट रे ।
 भाव भगत करी वादें नहीं रे लाल, तो नाम नषेपो गयो उठ रे ॥ ६ ॥
 नाम नषेपो माने गुण विणा रे, पिण कांम पड्यां दे उथाप रे ।
 ते पग २ भूठ बोले घणां रे लाल, ते कर रह्या कूडा विलाप रे ॥ १० ॥
 नाम वादण रो कहां थकां रे, तब ते बोले एम रे ।
 कहे नाम छे तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणनें सीस नमावां केम रे ॥ ११ ॥
 जे नाम नकेवल मानता रे, ते गुण रो सरणो ले किण न्याय रे ।
 यांरी खोटी सरघा अटकें घणीं रे लाल, जब साच बोली आया ठाय रे ॥ १२ ॥
 ते कहवा नें ठाम आवीयों रे, पिण माहें न भीजे मूढ रे ।
 त्यारें लाग्गा डंक कु गुरां तणा रे लाल, ते किण विघ छोडें ह्द रे ॥ १३ ॥
 ए नाम नषेपो करें रह्यां रे, तिण री पिण समझ न काय रे ।
 भरमाया कुगुरा तणा रे लाल, ते चोडे भूला जाय रे ॥ १४ ॥
 सोनों रूपो दीयों नाम मिनष रो रे, ते कहवा ने छे नाम रे ।
 जो काम पडे गंहणा तणो रे लाल, तो नावें गेहणा रे कांम रे ॥ १५ ॥
 किण ही मिनष रो नाम हीरो पनों दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडे जडाव रो रे लाल, तो नावें जडाव रे काम रे ॥ १६ ॥
 किण ही मिनष रो मांणक मोती नाम छे रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे ।
 जो पेहरें सिणगार करवा भणी रे लाल, तो नावें पेंहरण रे काम रे ॥ १७ ॥
 केसर किस्तुरा नाम दीयों मिनष रो रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडे वलेपण गंध रो रे, तो नावें वलेपण गंध कांम रे ॥ १८ ॥
 किण ही मिनष रो नाम लाडू दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे ।
 पिण भूख लागें तिण अवसरे रे लाल, तो नावें खावण रे काम रे ॥ १९ ॥
 किण ही लकडी रो नाम घोडो दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडें चालण तणो रे, तो नावें चढण रें कांम रे ॥ २० ॥
 इत्यादिक जीव अजीव रा रे, दीघां नाम अनेक रे ।
 पिण गरज सरें नही ते नाम सूं रे लाल, समझो आण ववेक रे ॥ २१ ॥
 ज्युं गुण विण नाम भगवान छे रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 पिण धर्म नही तिण वादीया रे लाल, ते तिरण तारण नहीं तांम रे ॥ २२ ॥
 नाम भगवान सर्व जीव रो रे, दीयों अनंती वार रे ।
 पिण गुण विण नाम भगवान सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे ॥ २३ ॥
 गुण विण नाम भगवान सूं रे, न टलें आतम दोख रे ।
 जे त्याने वाधां सुव गति हुवें रे लाल, तो सगलाइ जीव जाता मोख रे ॥ २४ ॥

गुण विण नांम बांघां थकां रे, गरज सरें नही कांय रे।
 गरज सरे एक भाव सूं रे लाल, जोवो सूतर रे मांय रे ॥ २५ ॥
 गुण विण नाम माने तेहनें रे, बोली रो न दीसे बंध रे।
 फिरती भाषा बोले घणां रे लाल, ते होय रह्या मोह अध रे ॥ २६ ॥
 गुण करने अरिहत छें रे, गुण करतें सिध साध रे।
 त्यांरा गुण नें नांम एक हीज छे रे लाल, त्यांने बांघां हुवे परम समाध रे ॥ २७ ॥
 क्णरी मातां रो नांम सरुपां छें रे, तेहीज नांम अस्त्री रो होय जांय रे।
 जे गुण विण नाम माने तेहने रे लाल, दोयां ने गिण लेंगी माय रे ॥ २८ ॥
 के दोयां ने गिण लेणी अस्त्री रे, उणरी सरघा सांहो जोय रे।
 जो उ अस्त्री ने मां जुदी गिणे रे लाल, तिण नांम नषेपो दीयो खोय रे ॥ २९ ॥
 क्णरा बाप रो नाम घनरूप छे रे, त्यांरे मांहोमां हेत मिलाप रे।
 जे गुण विणा नांम माने तेहनें रे लाल, सगला छें घनरूप बाप रे ॥ ३० ॥
 सगला घनरूप नांम तेहनें रे, संकतो नही लेखवें बाप रे।
 ओर घनरूप सूं दुजागी करे रे लाल, तिण दीयो नांम नषेपो उथाप रे ॥ ३१ ॥
 बेन बेनोइ काका बाबादिके रे, यांरें नांम छे नांम अनेक रे।
 त्यांने नांम परमाणे न लेखवे रे लाल, तो छोड देणी कूडी टेक रे ॥ ३२ ॥
 गुण ओर ने नांम ओर छें रे, ते कह वतलावण कांम रे।
 कोई भोलेइ मत भूलजो रे लाल, सुण सुण एहवो नांम रे ॥ ३३ ॥
 केयक नांम कहिवा नें दीया रे, केइ गुण निपत छें नांम रे।
 कहिवा रा नाम कहिवा भणी रे लाल, पिण गुण निपत आवें कांम रे ॥ ३४ ॥
 इम कहि कहि ने कितोक कहूं रे, नांम नषेपो रो विसतार रे।
 जे गुण विण नांम बांघे नही रे लाल, तिण सफल कीयो अवतार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : २

ढुहा

गुण विण नांम दीयों लोक में, ते प्रतख लेजो देख ।
बले थोडा सा परगट करूं, ते सुण सुण म करो देख ॥ १ ॥

ढाल

[देशी - चौपई नी]

नांम दीयों सुरो रणधीर, भागो जाये दीठें तीर ।
नांम दीयों छें राधाकिसन, सेवतो जायें सातो विसन ॥ १ ॥
नांम दीयों छे गोबिंदराय, फिर फिर चरावे पराइ गाय ।
बाई रो नाम दीयों छें लाछ, मांगी न मिले कुलडी छाछ ॥ २ ॥
सासु कहे म्हांरी कपूरदे बहू, भांभल नाम बोलवें सहू ।
नांम दीयो कसतूरी जास, माहें न मिलें हीग री वास ॥ ३ ॥
टेट घगी ने बांको न्हाल, दुरभख पढीयो देस दुकाल ।
नाम दीयो थो जगतपाल, पिण सगलां पेंहली बेच्या बाल ॥ ४ ॥
किण ही एकरो नाम सोनो दीयो, साथ विणा एकलो चालीयो ।
घणों दलद वहेज लार, नाम नें कदेय न उठें घाड ॥ ५ ॥
बाइ रो नांम दीयों छें खुसाल, पिण मिट्यो नही सोक रो साल ।
कुड कुड ने दिन पूरा करे, कूअें वावडी- पड ने मरें ॥ ६ ॥
नांम दीयो छें घर्मोसाह, परभव नी नही छे परवाह ।
कूड कपट लंपट चित घरें, इसडो घरमो नरकां पडें ॥ ७ ॥
लोक कहे बा लिछमी बाय, उों सूर छांणां ने जाय ।
किण ही एक रो नाम सरूपां दीयो, एक काली ने कुजस लीयो ॥ ८ ॥
सुंदर नांम दीयों छें अनूप, खोटी बोलें बले कुरूप ।
कुत्ता चाटे छे हांडीयां, सेडे करनें घर भाडीयां ॥ ९ ॥
ज्यूं नांम दीयों अरिहंत भगवानं, पिण माहें न दीसें अकल गिनांन ।
तिरण तारण री समझ न काय, तिणने मूरख बादिं जाय ॥ १० ॥
इण अनुसारे दीघा नांम अनेक, त्यांसूं गरज सरें नही एक ।
ते सुणनें समझे चतुर सुजाण, पिण मूरख माडे तांणा तांण ॥ ११ ॥

ढाल : ३

दुहा

ए नांम नषेपो ओलखावीयो, हिवें थापना रो इधकार ।
 गुण विण देखी थापना, भूला भर्म संसार ॥ १ ॥
 वादे पूजें तीर्थकर री थापना, त्यारें आकारें पथर कोराय ।
 सोनें पीतल घात अनेक सूं, त्यारे आकारें विब मराय ॥ २ ॥
 बले कागद कपडादिक उपरें, भगवंत रो मांडे आकार ।
 तिणनें सीस नमाय वंदणा करें, जांणे हुवो लाभ अपार ॥ ३ ॥
 कहें जिण प्रतिमा जिण सारखी, फेर म जांणों कोय ।
 दोनां ने वांदां थकां, लाभ सरीखो होय ॥ ४ ॥
 बले गुण लारें पूजा कही, निगुण पूजता जाय ।
 अें चोडें भूला मांनवी, त्यांनं किम आंणीजें ठाय ॥ ५ ॥
 कदे तो कहें वांदां गुणा भणी, कदे कहे वांदां आकार ।
 त्यांरी सरघा में फूट फजीती घणी, ते कहतां न आवे पार ॥ ६ ॥
 अें गुण विणा आकार नें वांदता, त्यांनं प्रश्न पूछें जाय ।
 तो फिर जाअें भूट बोलें घणों, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आगन्या मे]

चक्रव्रत वासुदेव ने बलदेवा, ते तो छे तीन खड तणा सिरदार ।
 इत्यादिक केइ भिनष ने सर्व जूगलीया, ते सगलाइ छे भगवंत रे आकार ।
 थापना निषेपा रो निरणो सुणजो* ॥ १ ॥
 भवनपती ने व्यंतर देवा, जोतकी देव ने विमांणीक वखाण ।
 ते पिण छें आरिहंत रें आकारें, समचोरस छे सगलां रो संठाण ॥ था० २ ॥
 जे गुण विणा आकार भगवान रो वांदे, तिणरे लेखें वांदणा कुण २ आकारो ।
 समचोरस संठाण रा भिनष ने देवा, त्यांनं हरष घरे वांदणा वालं वारो ॥ ३ ॥
 जो उ हरष घरे यांनं वांदे नहीं तो, उणरी सरघा उणरें लेखें छोटी ।
 आप थापी ते आप उथापें, आ पिण आंदां रे भोलप मोटी ॥ ४ ॥
 पथर घातु चितरांमादिक नां, कर कर वांदें भगवंत रो आकारो ।
 तो लाद गोवर धूर कोयलादिक नां, आकार करें वांदणा वारं वारो ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जो गोवरदिक नां आकार न बाँधें
 पथर वातु चित्तसंनदिक नां
 केई धारना चित्त नें अचित्त बरद नीं
 तिन जागें आय पाँचूं इंग नरें नें
 तिगरी देव पूजा करें नाव भगत सूं
 निग तेजो एकी लीव अग्यानी,
 आचार्य उचन्य साव गुणवन्ता
 जे गुण विना आकार बाँधें ते
 जे जे आकार निमन तना छें
 जे गुण विना आकार बाँधें ते
 जो उ सर्व निमया नें नहीं बाँधें जो,
 ओ अकल विद्वान् सरथा पहरे,
 जो आकार बाँधन रो कहें बोह टग तें
 ए आकार छे तो दिग गुण नहीं नाहें
 जे धारना आकार नाहें निकैक
 चारी नरथा अस्वधां जाव न जावें
 ते कहवा नें टय जाया जांगें
 त्पारे कृपरां रा इंद्र करडा लागे
 ए धारना धारना कर रक्षा नूरल
 कृपरां रां नरनाथा अग्यानी,
 जो उ हाथी नछल्पां नांत करडो वेवे उर,
 जो उ गुण दिग आकार बाँधें निग लेहें,
 कहें हाथी नछल्पां नांत करडो फाड्यां सूं
 तो भगवंत रे आकारें प्रतिना बाँडां,
 जिगर सगा सब्डी व्याही त्याजिल,
 भगवंत रे आकारे प्रतिना पूछें
 कहें रेत रा लाडू नें सवाद नहीं छे
 गुण दिग वनदु ते अर्थ न जावें,
 पथर कोराय नें प्रतिना बगावें,
 तिन नें दिनहीन पथर रा स्तीया देवें ते,
 घृष्ट तैलादिक नां सोबो देइ नें
 तो नाज तना भगवंत बनाए

तो शारी सरथा रो आय अजांगें।
 आकार केही नूड नर्य नुलंपो ॥ ६ ॥
 भगवंत रे आकार बगावें चैरी।
 मनोयूयं गुणें मूड होय होय देरो ॥ ७ ॥
 एहीव न्हारी अद्यानन निवारें।
 ए तिरें नहीं ते दिग दिव तारें ॥ ८ ॥
 त्पारे आकारें दुँडीयादिक भेपजारी।
 जो ओ कृपू न बाँधें यंरो देह आकारि ॥ ९ ॥
 तेहीज आकार सावां रा जांग।
 सर्व निमया नें क्युं नहीं बाँधें अघांग ॥ १० ॥
 तिन धारना आकार दीयो उठय।
 ते पग पग नूड बोले फिर जाय ॥ ११ ॥
 उर जो नूयो बोले नुह सूं एन।
 दिगने न्हें सीस नमावां केन ॥ १२ ॥
 ते गुण रो सरथो लें छें दिग त्याग।
 उर साव बोली ते जायो छें टय ॥ १३ ॥
 निग मन में न नीजें अग्यानी नूडो।
 ते दिग दिव छोडें लोयी लडो ॥ १४ ॥
 तिन थापना री दिग सनन न बाधो।
 ते बोडे मारग नूला जायो ॥ १५ ॥
 त्यांग फाडी फाडि करें देय देय डूका।
 तो हाथी नछल्पां मारग कांय डूका ॥ १६ ॥
 हाथी नछल्पां मारवां रा न लागे पार करनीं।
 तिन नेंडे निरवें न जांगें धनीं ॥ १७ ॥
 तिन नें रेत रा लाडू बनाय नें नेलें।
 ते रेत रा लाडू पाछा कांय उलें ॥ १८ ॥
 तो प्रतिना नें गुण नूल न जांगी।
 सननो रे सननो ये नूड अजांगो ॥ १९ ॥
 तिन प्रतिना नें भगवंत व्युं सेवें।
 ओ चोला स्तीया नें क्युं नहीं लेवें ॥ २० ॥
 पथर रा स्तीया लेइ पलें न बाँधें।
 उ भगवंत व्युं दिग लेवें बाँधें ॥ २१ ॥

भाठा रा रूपीयां लेइ वंसतु देवें,
 ज्यूं भाठा रा प्रभूं वादें तिणरी मत,
 रूपा तणां रूपीयां रे ठिकाणें,
 ते तिरण तारण भगवंत री ठारे,
 भाठा रा रूपीया लेइ घालें खेजानें,
 ज्यूं भाठां रा भगवंत थापो वादें ते,
 कोइ परंख विणो खाअें रूपीयां में खोटो,
 ए भगवंत में खोटो खावा किण लेखें,
 कोइ कागद उपर कटकं अलकें,
 त्यामें सूरपणा रो अंस न दीसैं,
 ज्यूं चौबीस आदि अनेक तीर्थकरें,
 त्यामें ग्यानादिक गुण अंस न पावें,
 जो उ राखें भरोसो कागद रां कटक रो,
 ज्यूं प्रतिमा नें वादें तिरण रे भरोसैं,
 पोल रे दोनूं कवले हाथी वणाया,
 ज्यूं प्रतिमा कराय देवल में वेंसारी,
 लण री अस्त्री मूळां जो फेर परणीजे,
 गुण विण आकार वादें तिण लेखें,
 भरतार मूळां जो अस्त्री रोवें तो,
 गुण विण आकार वादें तिण लेखें,
 अस्त्री री गरज ढूली नहीं सारें,
 हण दृष्टते गुण विण आकार वादें,
 वले बालपणे रमें डावडा डावडी,
 ज्यूं भगवंत री प्रतिमा कर वादें,
 पापड रा लोया नें गवा रा लोडा,
 ज्यूं प्रतिमा छें भगवंत रे आकारें,
 गवा रा लीड रा पापड न थायें,
 ज्यूं प्रतिमा ने वाद्यां धर्म किहां थी,
 इण लोक में मोह अंब मिनष घणां छें,
 तिणरो वछडो हुंतो ते चल गयो चेतन,
 वछडा री खाल देखी गाय भूली,
 आ प्रतिमा नहीं भगवंत री काया,
 २८

तो नीवी में पंड जायें जांवक टोटें ।
 खोटो रे खोटो निकेवल खोटो ॥ २२ ॥
 पथर रा रूपीयां कदे नहीं हाले ।
 भाठा रा भगवंत किण विघ चाले ॥ २३ ॥
 त्यारो कांमं पडे जवें घणो सीदावे ।
 परभव मांहे घणो पिछतावे ॥ २४ ॥
 ते तो रूपा रा भोल तणो परतापो ।
 आ तो प्रतख दीसैं पथर री थापो ॥ २५ ॥
 मांहे भलं घोरीया असवार वणावें ।
 बेरी दुसैमण हटावण रें अर्थ न आवें ॥ २६ ॥
 त्यांरां जथातथ आकार वणावे ।
 तें तरण तारण रें काज न आवें ॥ २७ ॥
 तो इजत जाय रहें नहीं आवो ।
 ते चिहुं गति में होसो घणां खुरावो ॥ २८ ॥
 ते चढवा रें कांम कदे नहीं आया ।
 आं पिण जाणजो थोथी माया ॥ २९ ॥
 तो उ पिण उणरी सरंवां गयो भूली ।
 अस्त्री रे आकारे कर लेणी ढूली ॥ ३० ॥
 उवा पिण सरथा गइ छें भूलो ।
 भरतार रें आकारे कर लेणो ढूलो ॥ ३१ ॥
 भरतार री गरज सारें नहीं ढूलो ।
 त्यांरी पिण जाणजो ओहीज सुलो ॥ ३२ ॥
 ते विकल पणें करें ढूली नें ढूला ।
 ते भूला रें भूला निकेवल भूला ॥ ३३ ॥
 यां दोयां रो दीसैं एक आकारो ।
 अें गुण विण अर्थ न आवें लिंगारो ॥ ३४ ॥
 कोरा खावां पिण विगडे मूंडो ।
 छोडो रे छोडो थे खोटि हडो ॥ ३५ ॥
 जेहवी सूजाडी मोह अंब गाय ।
 तिणरी खाल चाटी २ पावस जाय ॥ ३६ ॥
 तो अें प्रतिमा देख भूला किण लेखें ।
 ते तो मोह अंब गाय सूं भूला दणेपे ॥ ३७ ॥

अरिहंत भगवंत मुगत गया जब,
 ते तो गुण विण जड अचेतन पुदगल,
 त्यांरो असल आकार सरीर पड्यो ते,
 तो ओर आकार वणाय नें वांदे,
 गुण विण आकार वादण वालो बोले,
 तिण मूं भगवत री प्रतिमा कर वांदा,
 परिणाम चले कहे अस्त्री दीठां,
 ज्यूं प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें,
 उण रें मा बेंन अस्त्री हुवें एक आकारें,
 पिण एक तीनुंइ ज्यूं काम न आवें,
 कदे प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें,
 पिण धर्म तो भगवंत रा गुण वांदां,
 मा बेंन आकारें अस्त्री तिण सूं,
 जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें,
 मा बेन आकारें अस्त्री तिण नें दीठां,
 ज्यूं प्रतिमा देखी मन हरप घरें तो,
 मा बेंन रे आकारे अस्त्री हुवें ते,
 ज्यूं भगवंत रे आकारे प्रतिमा कीधी ते,
 भगवंत रे आकारे प्रतिमा वांदें,
 तो उणरा बाप रे आकारे मिनप घणा छें,
 जो सगला नें बाप लेखवतो लाजे,
 जो गुण विण आकार माने अग्यानी,
 उण री मा रे उणीयारे वीदणी हूंती,
 गुण विण आकार वादे तिण लेखें,
 कें दोयां नें अस्त्री लेखव लेणी,
 वले मा रें उणीयारें अनेक ल्हायां,
 वले बेन बेंनोइ काका बाबादिक,
 त्याने आकार परमाणे नहीं लेखवे तो,
 कोइ वाइ छें हिंसा धर्मी अनार्य,
 आकार वादें तिण बाइ रे लेखें,
 कें दोयां नें बेटा लेखव लेणा,
 जो भरतार नें बेटा जुदा गिणे तो,

त्यांरो सरीर आकार लारें रही काय ।
 तिण नें कोइ वादें तो धर्म न थाय ॥ ३८ ॥
 तिणनेंइ वांदां बंधें निश्चें कर्मो ।
 त्यां वांदां नें किण विघ होसी धर्मो ॥ ३९ ॥
 आकार वांदा कहे लाम अनंत ।
 तिण प्रतिमा नें लेखव ल्यां भगवंत ॥ ४० ॥
 मा बेंन दीठां रहे सुघ परिणाम ।
 एहुवा कुहेत लगावें तांम ॥ ४१ ॥
 कहे एक दीठां याद आवें तीनुंइ ।
 याद आइ पिण गरज सरी नही कोइ ॥ ४२ ॥
 कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें ।
 प्रतिमा रा गुण वांदां करम बंध जावें ॥ ४३ ॥
 घर वासो करतो संक न आणें ।
 तो अस्त्री नें मा बेंन व्यू नही जाणें ॥ ४४ ॥
 हरषे ते विषें रे काम ।
 छ काय मारण रा उठें परिणाम ॥ ४५ ॥
 मा बेंन री गरज निश्चेंइ न सारें ।
 आ पिण जाणजो कदेइ न तारें ॥ ४६ ॥
 तिण आगें करे वले अनेक विलापो ।
 त्यां सगला नें लेखव लेणा बापो ॥ ४७ ॥
 ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो ।
 ते कर रह्यां मूरख फेन फित्तुरो ॥ ४८ ॥
 तिणनें धन खरचे परणीजे ल्यायो ।
 दोयां नें लेखव लेणी मायो ॥ ४९ ॥
 आपणी सरघा रो देखी न्यायो ।
 त्यां सगल्यां नें लेखव लेणी मायो ॥ ५० ॥
 यारें आकारें छें मिनष अनेक ।
 छोड देणी कूडी जावक टेक ॥ ५१ ॥
 तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो ।
 दोयां नें गिण लेणा भरतारो ॥ ५२ ॥
 तो उणरी सरघा में उवा परवीण हूरी ।
 उण री सरघा लेखें आ पडसी कूडी ॥ ५३ ॥

इत्यादिक जीव अजीव तणा छें, कीघा अकीघा आकार अनेक ।
 पिण गरज सरें नही आकार वांछां, समझो रे समझो थे आण ववेक ॥५४॥
 गुण विण थापना भगवांन री छें, ते देखीं नें जाणो लेणो आकार ।
 पिण धर्म नही त्यानें सीस नमायां, तिरण तारण मत जाणो लिंगार ॥५५॥
 भगवंत रो आकार सर्व जीवां रे, ह्रवो छें अनंत अनंती वार ।
 पिण गुण विण आकार भगवांन रा सूं, किणरोइ ह्रवो न दीसें उद्वार ॥५६॥
 गुण विण आकार भगवांन रा सूं, निश्चेइ न टले आतम दोख ।
 जो आकार वांछां सू मुदगति जावें तो, सगला जीव जाय विराजता मोख ॥५७॥
 गुण विनां आकार वांछां सूं, निश्चेइ गरज सरें नहीं कांय ।
 गरज सरें एक भाव नें वांछां, सांसो ह्रवें तो जोवो सूतर मांय ॥५८॥
 गुण विण आकार वांदे तिणां रें, बोली में मूल न दीसें वंघ ।
 ते फिरती भाषा बोलें अग्यांनी, ते होय रह्या मतवाला ज्यूं अंध ॥५९॥
 गुण करनें अरिहंत भगवंत छें, गुण करनें छें रखेसर साध ।
 त्यांरा आकार सूं गुण न्यारा नहीं छें, त्यानें वांछां सूं पांमें परम समाध ॥६०॥
 जे गुण विण आकार थाप राख्यो ते, कहि वतलावण आवें कांम ।
 भर्म म भूला आकार देखी नें, वले सुण सुण ने आकार रो नाम ॥६१॥
 केयक आकार कहिवारा छें, केइ गुण निपन चारित परिणाम ।
 कहिवारा आकार कहिवा भणी छें, गुण निपन आवें वांदण कांम ॥६२॥
 इम कहि २ नें कितरो एक कहीजे, इण थापना निषेपा रो विसतार ।
 गुण विण थापना वांदे नहीं, त्यां निश्चेइ सफल कीयो अवतार ॥६३॥



ढाल : ४

दुहा

ए थापना नपेपो कह्यो, हिवें दरव री करजो पिछांग ।
 केइ दरव नपेपो सांभली, भूला लोक ब्रजांग ॥ १ ॥
 ते गुण विण बांदें दरव नें, कूडा कुहेत लग्गाय ।
 अतीत अनागत काल री, मानें गुण परजाय ॥ २ ॥
 कहे साव हुवा श्री रिषभ नां, त्यां कीयो चोइसत्यो ले नांम ।
 चोवीस तीथंकर हुवा नहीं, त्यांनं बांदें कीयां गुणग्राम ॥ ३ ॥
 इम कहि २ भोला लोक नें, करें निगुणा वांदण री थाप ।
 उंधी करें परुपणा, बोहला बांवे पाप ॥ ४ ॥
 त्यांसूं काम पडें चरचा तणो, तो भूठ वोलें फिर जाय ।
 त्यांरी सरवा ने भूठ परगट कहं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आउखो तूटा ने साधो नही]

तीथंकर होसी आगमीया काल में रे, त्यांनं बांदें नें करें अग्यानी जाप रे ।
 ते भेल नमोथुणं में घालीयो रे, त्यां कीधी निगुणा वांदण री थाप रे ।
 ए दरव नपेपा रो निरणो सुणो रे* ॥ १ ॥
 नमोथुणं चोवीसत्यो करतां थकां रे, कहे गुण रो मत जाणो कोइ काम रे ।
 तो उणरी सरघा रें लेखें कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठाम रे ॥ २ ॥
 एक मूला मांसूं जीव नीकली रे, अनंता तीथंकर आगें थाय रे ।
 जे दरव तीथंकर बांदें गुण विनां रे, तो मूलां ने कयूं नही बांदें जाय रे ॥ ३ ॥
 पृथवी आदि देइ छ काय नें रे, दरवे तीथंकर अनंत पिछांग रे ।
 जे दरव तीथंकर बांदें गुण विनां रे, तो कयूं नही बांदे यांनं जाण रे ॥ ४ ॥
 अनंता दरवे सिघ छें छ काय में रे, सिघ होसी ग्यांनादिक पांमी रिघ रे ।
 जो दरव तीथंकर बांदें गुण विनां रे, तो कयूं नही बांदें दरवे सिघ रे ॥ ५ ॥
 अनताइ छे साव छ काय में रे, भावे होसी चारित आराव रे ।
 जो दरवे तीथंकर बांदें गुण विनां रे, तो कयूं नही बांदें छे साव रे ॥ ६ ॥
 ए दरवे तीथंकर सिघ साव कहाा रे, त्यांनं ओहीज न बांदें सीस नमाय रे ।
 इण लेखे उण री सरघा खांटी पडी रे, पिण आंवां नें समरु पडे नही काय रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भरत चक्री नो हुवो डीकरो रे, ते महावीर सांभी नो जीव मरीच रे ।
 ते घर छोडी नें हुवो तिरडंडीयो रे, तिण री सावद्य करणी ने सरघा नीच रे ॥ ८ ॥
 ते दरवे तीथंकर हुंतो तिण दिने रे, श्री रिषभ जिणेसर दीयो वताय रे ।
 तो रिषभ जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, क्यूं नहीं बांछा तिण रा पाय रे ॥ ९ ॥
 जो चोइथो करतो वांदे तेहने रे, तिण सूं तो भेलो करणो आहार रे ।
 वले रिषभ जिणेसर सरिषो लेखवी रे, अं करता बंदणा नें नमसकार रे ॥ १० ॥
 श्री रिषभदेव रा साघ साघव्यां रे, त्या नही बांछो निगुण मरीच रे ।
 जे कोइ दरव तीथंकर बांदसी रे, तिण री पिण सावद्य करणी नीच रे ॥ ११ ॥
 वले भरतजी बांछो कहे मरीच नें रे, ते पिण नहीं छें सूतर मांय रे ।
 भोलां ने विगोए पाड्या भमं में रे, ते निगुणां नें वादे हरषत थाय रे ॥ १२ ॥
 वले दरवे तीथंकर हुंता किसनजी रे, त्यानें नेम जिणंद दीयो वताय रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, त्या किसन रा क्यूं नहीं बांछा पाय रे ॥ १३ ॥
 त्यां उलटा किसन नें पगे ल्गावीया रे, पिण गुण विण दरवे न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथो करतां निगुणा किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुध सू जोय रे ॥ १४ ॥
 वले दरवे तीथंकर हुंती देवकी रे, वले रोहिणी बलभद्रजी जाण रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, नही बांछा ते गुण विण दरव पिछ्छण रे ॥ १५ ॥
 यां तीनां नें उलटा पगे ल्गावीया रे, पिण गुण विण दरव न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथी करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ १६ ॥
 वले दरवे तीथंकर श्रेणक राय थो रे, त्याने वीर जिणेसर दीयां वताय रे ।
 पिण वीर जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, त्यां श्रेणक रा क्यूं नहीं बांछा पाय रे ॥ १७ ॥
 त्यां उलटा श्रेणक ने पगे ल्गावीया रे, पिण गुण विण दरव न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथो करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ १८ ॥
 मोटी सतीयां थी रांण्यां किसन री रे, त्यारे तीथंकर वादण रो घणों हुलास रे ।
 जो वे दरवे तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो किसन सू नहीं करती घरवास रे ॥ १९ ॥
 वले मोटी सतीयां श्रेणक नी राणीयां रे, त्यारे तीथंकर वादण रो घणो हुलास रे ।
 जो दरवे तीथंकर वादे गुण विनां रे, तो श्रेणक सूं नहीं करती घरवास रे ॥ २० ॥
 त्यां भरतार जांणी नें कीधी विटंबणा रे, वले त्यांसू पिण सेव्या कांम नें भोग रे ।
 ते नमोथुणं गुणतां किम वांदसी रे, ते तो कुनुरां री सरवा जाण अजोग रे ॥ २१ ॥
 किसनजी ने श्रेणक री रांणीयां रे, ते तो समदिष्टी चतुर सुजाण रे ।
 त्यां सामायक पोसां में वदणा करी रे, ते तो भावें तीथंकर देव जाण रे ॥ २२ ॥
 जे दरवे तीथंकर वांदे गुण विना रे, त्यानें गुण विण वादणा दरवे साघ रे ।
 जो उ कहू दे दरवे साघ न वादणा रे, उणने उण री सरघा री न पडी लाघ रे ॥ २

केइ आगमीये काले सुख साध होसी रे,
 ते दरब छें गुण विण ठाली ठीकरा रे,
 जो दरबे साधां ने बांदे गुण विनां रे,
 उणरी सरघा रें लेखे कुण कुण बांदणा रे,
 तो गोसाला कुपातर नें पिण बांदणो रे,
 जो उ दरबे साध ने बांदे गुण विनां रे,
 बले इग्यारें श्रेणक राजा रा डीकरा रे,
 अं साध होसी आगमीया काल में रे,
 जमाली नें कुंडरीकादिक जे हुवा रे,
 जे दरबे साध नें बांदे गुण विनां रे,
 इत्यादिक भाँगल नें हुवा कुसीलीया रे,
 जे दरबे साध नें बांदें गुण विनां रे,
 जो उ न बांदें याने भाव सूं रे,
 बले दरबे साध ने बांदे गुण विनां रे,
 उण अली परणी सूं घरखासो कीयों रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 उण नें जनम देइ ने मा मोटो कीयों रे,
 जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 मा नें तो लेखव लेंगी अली रे,
 जे माने निकेवल गुण विण दरब ने रे,
 इण रें सगलाइ जीव हुवा छें अली रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 बले बेटो इण रे घरे आय जनमीयो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 इण रो बाप ते पाछल भव बेटो हुंतो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 थोरी मेंणादिक सर्व जीवां तपो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 जो उ सगला नें बाप न लेखवें रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 बले काका बाबादिक सगपण तेहनें रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,

केइ भागल हुवा चारित विराध रे ।
 त्यां सगला नें कहीजे दरबे साध रे ॥ २४ ॥
 तो यां सगला नें बांदणा करणी तांम रे ।
 हिवें दरबे साध रा कहुं छूं नांम रे ॥ २५ ॥
 ते पिण आगमीयो काले साध थाय रे ।
 तो गोसाला नें क्यूं नही बादें ताय रे ॥ २६ ॥
 ते कोणक नें कालादिक कुमार रे ।
 यानें पिण बांदणा वाख्वार रे ॥ २७ ॥
 ते बिगड्या समकत नें संजम खोय रे ।
 तो यानें पिण बांदणा नीचो होय रे ॥ २८ ॥
 त्यांरो दरब नषेपो न गयो तांम रे ।
 तो यानेंई बांदणा ले ले नांम रे ॥ २९ ॥
 तो उण रो उणहीज वीयों उयाप रे ।
 त्यांरें छें पोतें बोहला पाप रे ॥ ३० ॥
 ते माता हुंती पाछल भव मांय रे ।
 तो अली नें लेखव लेणी मांय रे ॥ ३१ ॥
 ते तो अली थी पाछल भव मभार रें ।
 तिण लेखे मा नें गिण लेंगी नार रे ॥ ३२ ॥
 अली नें लेखव लेंगी मांय रे ।
 उणरी सरघा रो ओहीज उंवो न्याय रे ॥ ३३ ॥
 सगलाइ जीव हुवा मा बेन रे ।
 तिण रा किण विव चलसी कूडा फेन रे ॥ ३४ ॥
 तिण रो पाछल भव बेटो हुंतो आप रे ।
 तो बेटा नें इण लेखे गिणपो बाप रे ॥ ३५ ॥
 तिणरोइज बेटो हुवों आय रे ।
 तो बाप ने बेटो गिणपो इण न्याय रे ॥ ३६ ॥
 त्यांरे बेटो हुंतो पाछल भव आप रे ।
 इण लेखे सगला जीव इण रा बाप रे ॥ ३७ ॥
 तो उणरेंइ लेखेइ सरघा कूड रे ।
 त्यांरो चिहुं गति में होसी घणो फितुर रे ॥ ३८ ॥
 सगला जीव हुवा अन्ती वार रे ।
 ए किण विव करसी मूढ विचार रे ॥ ३९ ॥

बले अरिहंत सिध साध इण जीव रे,
 जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 ओ कुण कुण मारे नें कुण कुण पूजसी रे,
 ते बूडा अग्यानी निगुणा वांदे नें रे,
 अं दरब नषेपो वांदे गुण विनां रे,
 पगले पगले भूठ बोले घणों रे,
 याने गुण विण दरब वांदण रो कह्यां रे,
 कहे दरब छे तो पिण गुण मांहे नही रे,
 जे दरब निकेवल वांदे तेहनें रे,
 आ खोटी सरघा यांरी अटकी घणी रे,
 ते कहिवा नें ठाय अग्यानी आवीया रे,
 त्यादे डक करडा लाग़ा कुगुरां तणा रे,
 ए दरब नषेपो मुख सूं कर रह्यां रे,
 जे भरमाया लाग़ा छे कुगुरां तणा रे,
 केइ दरब तीथंकर काल अनाद रा रे,
 तो वदणा करे तिणनें किम तारसी रे,
 जे दरबे तीथंकर छे केइ गुण विनां रे,
 पिण घर्म नही तिणाने वांदीयां रे,
 गुण विण दरबे तीथंकर तेहसूं रे,
 जो त्यानेंइ वांछां सूं सुध गति हुवे रे,
 जे दरबे तीथंकर वांदे गुण विनां रे,
 ते फिरती भाषे बोले कपटी थका रे,
 गुणा करे तीथंकर देव छे रे,
 त्यांरा गुण ने दरब तो एक हीज छे रे,
 गुण ओर नें दरब ओर छे रे,
 कोइ भोलें मत भूलो गुण विण दरब नें रे,
 केइ दरबा रा नाम कहिवा नें दीयां रे,
 ते कहिवारा दरब जाणो कहिवा भणी रे,
 इम कहतां कहतां पूरो हुवे नही रे,
 जे गुण विण थोथा दरब वांदे नही रे,

ते हुवा न्यातीला वार अनंत रे।
 तिणरे लेखे छे सगला एकण पंत रे ॥ ४० ॥
 तिण रो कहतां तो कदेय न आवे थग रे।
 त्यांरो भव भव में होसी घणोअभाग रे ॥ ४१ ॥
 पिण कांम पड्यां देवे उथाप रे।
 ते कर रह्या कूडा मूढ विलाप रे ॥ ४२ ॥
 जब तो उवे सूचो बोले एम रे।
 तिणनें म्हे सीस नमांवा केम रे ॥ ४३ ॥
 ते गुण रो सरणो लेवे किण न्याय रे।
 जब साच बोले नें आया ठाय रे ॥ ४४ ॥
 पिण मांहे नही भीजे मूरख मूढ रे।
 ते किण विघ छोडे खोटी ल्ह रे ॥ ४५ ॥
 तिणरी पिण समझ पडे नही काय रे।
 ते प्रतख चोडे भूला जाय रे ॥ ४६ ॥
 त्यांरी पिण गरज सरी नही काय रे।
 ववेक आंणी समझो इण न्याय रे ॥ ४७ ॥
 ते पिण कहिवा नें दरबे नाम रे।
 ते तिरण तारण नही छे तांम रे ॥ ४८ ॥
 किण विघ टलसी आतम दोख रे।
 तो जीव सगलाइ जाता मोख रे ॥ ४९ ॥
 त्यारि मूल न दीसे बोले बंध रे।
 ते होय रह्या पूरा मोह अंध रे ॥ ५० ॥
 गुण करनें कह्या छे सिध साच रे।
 त्याने वांछां सूं पांमे परम समाध रे ॥ ५१ ॥
 ते तो छे कह वतलावण कांम रे।
 सुण सुण दरब रो चोखो नाम रे ॥ ५२ ॥
 केइ गुण निपन दरबां रा नाम रे।
 पिण गुण निपन ते आवे कांम रे ॥ ५३ ॥
 इण दरब नषेपा रो विसतार रे।
 तिण सफल कीयो निश्चे अवतार रे ॥ ५४ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

नाम थापना दरब तणो, यां तीनां रो कह्यो विसतार ।
ए निगुणा भाव रहीत में, कण नही रे लिगार ॥ १ ॥
गुण विण नाम निकेवलो, गुण विण थापना आकार ।
दरब नषेपो गुण विना, ए तीनू नषेपो असार ॥ २ ॥
तिण कारण मोटो कह्यो, गुण सहीत नषेपो भाव ।
च्यारुं नषेपो तिण भाव में, तिणरो विरला जाणें न्याय ॥ ३ ॥
भाव नषेपो रूडी रीत सू, ओलखजो नर-नार ।
इण नें ओलखीयां विना जीव रे, घट में घोर अंधार ॥ ॡ ॥
जे जे दरब रो नाम छे, नाम जिसा छें गुण तिण मांय ।
ए भाव नषेपो श्री जिण कह्यो, ते सुणजो वित्त ल्यायं ॥ ॡ ॥

ढलल

(पूज्य जी पधरो हो नगरी सेविया)

अनंता तीथंकर आगें हुसी बले, ते हिवडां रले च्यारु गति माहि हो । भ० ज० ।
दरबे तीथंकर कहिजे तेहनें, पिण भावें एकंद्रीयादिक ताहि हो । भ० ज० ।
भाव नषेपो भवीयण सांभलो* ॥ १ ॥
तीथंकर ग्रहवासें वसतां थकां, जद भोगी पुरष विख्यात हो ।
दरब तीथंकर त्यानेंइ जिण कह्या, पिण भावें ते गृहस्थ साख्यात हो ॥ भ० भा० २ ॥
तीथंकर घर छोडे नें चारित लीयो, पालें छें सुघ आचार हो ।
तो ही दरबे तीथंकर कहीजे तेहने, भावे हूआं मोटां अणगार हो ॥ ३ ॥
केवल ग्यान दरसण उपनां पछें, थापें तीरथ च्यार हो ।
भावे तीथंकर कहीजे तेहने, समभो आंण विचार हो ॥ ॡ ॥
चोतीस अतसय कर नें परबख्या, वाणी छें गुण पे तिस हो ।
तीथंकर ना गुण सगला छें तेह में, ते तीथंकर भावे जगदीस हो ॥ ॡ ॥
अनत अरिहत आगे हुसी बले, हिवडां तो चिहुं गति गोता खाय हो ।
दरबे तो अरिहत त्यानेंइ जिण कह्या, पिण भावे एकंद्रीयादिक माय हो ॥ ६ ॥
घर छोडे सुघो पालें सावपणो, पिण हणीया नही करम च्यार हो ।
त्यां लगे दरबे अरिहत कह्या तेहने, तें भावे हुवा सुघ अणगार हो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार करम घन घातीया छें अरि,
 भावे अरिहंत कहीजें तिण समें,
 अनंत सिध आगमीये काले हुसी,
 दरबे सिध कहीजे तेहने,
 बले अरिहंत साध मुगत ने नीकल्या,
 पिण ज्यां लग मुगत न पोहतां त्यां लों,
 सकल कार्य साभी मुगते गया,
 त्यां आवागमण भेट्यो गति च्यार नां,
 अनंत आचार्य उवभाय साध होसी,
 ते आचार्य उवभाय साध दरबे कह्या,
 बले आचार्य उवभाय साध घर में थकां,
 त्यामें गुण परगट हुवा घर छोड्यां पछें,
 केइ आचार्य उवभाय साध भागल थया,
 त्यामिं आगमीये काले गुण परगट्यां,
 छतीस गुणां आचार्य परवस्था,
 सत्तावीस गुणां सहीत साध कह्या,
 ए भावे अरिहंत सिध साध कह्या,
 निगुणा तीन नषेपा वांदीया,
 जो मात पिता रा अंग सूं उपनों,
 मात पिता पिण भावे तेहनां,
 ते पुतर मरे ओर जायगां उपनो,
 ओ पिण मात पिता नही भावे तेहनां,
 कोइ अस्त्री परणे ग्रहवासो करे,
 ते पाछिल भव में इण री माता हूती,
 इम माइ भतीजा काका वावादिक,
 जे जे सगपण वरतमान काल में,
 भावे सगपण जे जे संसार में,
 दरबे सगा सगलाइ एक एक रे,
 भावे सगपण वीतां पछें तेहने,
 दरब छेती पिण गुण मांहे नही,
 सगलाई जीव छे दरबे नेरीया,
 तिहां छेदन भेदन खेतर वेदना,
 २६

ए अरी हणीयां सूं अरिहंत हो ।
 ओलख नें वांदो मतवंत हो ॥ ८ ॥
 ते तो हिवडा चिहुं गत गोताखाय हो ।
 पिण भावें एकंद्रीयादिक माय हो ॥ ९ ॥
 त्यांरा भाव परमाणे गुण रिघ हो ।
 त्यांने दरबे कहीजे सिध हो ॥ १० ॥
 त्यां आठोइ करम षय कीघ हो ।
 त्यांनें भावे कहीजे सिध हो ॥ ११ ॥
 ते हिवडां नरकादिक में तांम हो ।
 भावे नेरइयादिक नांम हो ॥ १२ ॥
 ते दरबे छें भाव रहीत हो ।
 जब भावे छें गुण सहीत हो ॥ १३ ॥
 ते दरबे छें गुण रहीत हो ।
 जद होसी बले भाव सहीत हो ॥ १४ ॥
 पचीस गुणां उवभाय हो ।
 ए सगला भावे मुनीराय हो ॥ १५ ॥
 त्यांनें वांछां निरजरा धर्म हो ।
 वंधें सात आठ उसभ करम हो ॥ १६ ॥
 ते भावे पुतर साख्यात हो ।
 जीव ज्यां लग त्यांरो अंगजात हो ॥ १७ ॥
 जब यारो नही भावे अंगजात हो ।
 भावे सगपण नही तिलमात हो ॥ १८ ॥
 ते भागें बरतें नार हो ।
 ओ सगपण न रह्यो लिंगार हो ॥ १९ ॥
 वेन वेनोइ आदि पिछाण हो ।
 ते भावे सगपण जांण हो ॥ २० ॥
 आवे गुण परमाणे कांम हो ।
 त्यांरा कुण कुण कहीजे नांम हो ॥ २१ ॥
 भावे ज्यूं अर्थ न आय हो ।
 तिण सू गरज सरे नही काय हो ॥ २२ ॥
 पिण भावे तो नारकी मस्कार हो ।
 ते खाये अनंती मार हो ॥ २३ ॥

जे देवता होसी आगमीया काल में, ते दरबे देवता पिछाण हो ।
 भवणपती वंतर जोतकी वेमाणीया, त्यांनै भावे देवता जाण हो ॥ २४ ॥
 नारकी आदि चोवीसोइ डंडक मभे, तिहां जीव उपनों जाय हो ।
 जे भावे तो कहीजें वरतें तेहवो, ते जोवो सूतर मांय हो ॥ २५ ॥
 अणघडीया रूपा नें दरबे रूपीयो कहां, तिण रो घडे आकार तेह हो ।
 पछें उपर सीको दीयो चलण हुवें जेहवो, जब भावे रूपीयो एह हो ॥ २६ ॥
 सूत पूंणी नें दरबे कपडो कह्यो, ते गुण विण तिण रो नाम हो ।
 भावे कपडो कहीजे वणीयां पछें, आवें पेहरण रे काम हो ॥ २७ ॥
 इत्यादिक भाव नषेपा अनेक छें, ते पूरा केम कहिवाय हो ।
 पिण इण अणुसारे बुधवंत समझ ने, अटकल लेजो न्याय हो ॥ २८ ॥

ढलल : १

ढुहल

दुनीयलं डें डुलड डणी, ते कही कडल लड डलड ।
 अरुथं अनरुथं डरुड डरुणें, हण रहुडल डीव अथलड ॥ १ ॥
 अरुथें हणें ते आडलं डरुणलं, आतडल^१ नुडलत^२ डरु^३ डरुवर^४ ।
 डरुड^५ नलड^६ डुत^७ नेंडकुष^८ थलंरु, कहुलें डणु डरुसरतलर ॥ २ ॥
 आडलं डरुणलं वरुण हणें, ते अकल वरुनल वेडलंड ।
 ते अनरुथं डंड डुरी डरुण कहुलें, डु कलड हणु वरुण कलड ॥ ३ ॥
 डेव डुर डरुड डरुणें, डलणें डीव हणुडल डु डरुड ।
 डरुड हेते हणें डु डण वरुडे, ते डुलल अडुडलनी डरुड ॥ ॡ ॥
 अरुथं अनरुथं डरुड डरुणें, डलले डलं डे हण रहुडल डुरलण ।
 ते डुडल कुरसी डुर डरुलसी, अ डुडडडती अडलण ॥ ५ ॥
 डे हुररुडल डरुड डीवडल, तुडलरु डु डरुथुडलत अडुडलन ।
 तुडलंरु डु कलड डरुण तणु, रहे नरुडतरु डुडलन ॥ ६ ॥
 डेव डुर डरुड डरुणें, कुरण वरुड हणु डु कलड ।
 तुडलंरु डु डुरे डरुडल डरुणड कहुं, ते डुणडु डरुड वरुडलड ॥ ७ ॥

ढलल

[डेशु—वरुडुरुडलनी]

अरुडरुड डेव री करु थलडनल, हण रहुडल डीव डु कलड डी ।
 डेव कलडे हणें डीव कुरण वरुडे, ते डलंडलडु डरुड वरुडलड डी ।
 डीव डरुणें ते डरुड आडु डरुडल^{*} ॥ १ ॥
 ते तु डेवललडरुड कुरलवतलं, लडलवे हडलरुल डलड डी ।
 डन डुरडु डुरल डरुणें, वले करु अनेक हडलंड डी ॥ डी० २ ॥
 डुर डलंन डूं कलडे डंगलवतलं, तड थलवर डरु अनेक डी ।
 तुडलंरु लेखु करु डु डरुड डरुडलरु, कुड डुडवंत आण वकेक डी ॥ ३ ॥
 डुर डुरेडुडल डुरुडलकलडल डरु, डलंणी डललें डुरुडलडरुड डलं डी ।
 वलडुडलड डरु लेतलं डेलेतलं, डलंडी लडलं डुतें तेडुडलड डी ॥ ॡ ॥
 वनडडतु नें तड डीवडल, डलडलडरुड हेडें डुरुथुडल डलड डी ।
 नुडल डेडु डेवल डुरुणतलं थकलं, तडें डुरण डरुणें डीव डु कलड डी ॥ ५ ॥

*डह आंकडु डुरुडुडु डलडल के अनुत डें है ।

चूनो दाल उपर देतां थकां, तिहां पिण मरे जीव अयाग जी ।
 अनंता जीव मारे देवल कीयों, ओ तो नहीं छें मुगत रो माग जी ॥ ६ ॥
 देवल करावतां हिंसा हुइ, ते तो पूरी केम कहवाय जी ।
 पछें पूजादिक करावतां, नित रा नित मारे छे काय जी ॥ ७ ॥
 कठें टांची वाजें छें निरंतर, नित नित मारे पृथ्वीकाय जी ।
 त्यानें दुल उपजे छें तिण समें, घणी अतुल वेदना घाय जी ॥ ८ ॥
 नित पाणी ढोले न्हवरावतां, अग्न मारें दीवो उज्वाल जी ।
 नितका वाजकाय मारे घणां, कूट कूट मजीरा ताल जी ॥ ९ ॥
 नित नित काची कलीयां तोड नें, माला गुंथें चडावे आंग जी ।
 दीवादिक सुं मरे पतंगीया, तसकाय रो करे घमसांग जी ॥ १० ॥
 इण विघ छे काय नें मारवा, करे छें नित का संग्राम जी ।
 वले कहें म्हानें पाप लागो नहीं, हणीयां अरिहंत देव रे काम जी ॥ ११ ॥
 आवे दया पाळण रो पगधीयो, तिय परव पजूसण मास जी ।
 ते तो तिण दिन जीव मारे घणां, करे अनेक जीवां रो विगास जी ॥ १२ ॥
 वले सतर भेदे पूजा रचें, तिणरो मांडें घणों विसतार जी ।
 तठें दया तपो सींचो नहीं, करे छे काय रो संघार जी ॥ १३ ॥
 वले वावें पगां रे गूधरा, हाय में ले मजीरा ताल जी ।
 ते तो गावें वजावे कूदता, करे छे काय रो खेंगाल जी ॥ १४ ॥
 देव काजे हणें जीव इण विवें, तिण में मूल न जाणें दोल जी ।
 जाणें लाम हुवो जिण घर्म नो, तिण सूं नेदी छें अविचल मोल जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक देवल काजे हणें, तिणरो कहितां न आवे पार जी ।
 हिवें गुर काजे हणे जीव नें, ते सामलजो विसतार जी ॥ १६ ॥
 देव रे काजें देवल करवतां, तस थावर लूट्या प्रांग जी ।
 तिम गुर काजें थानक कीयां, हुवे छे काय रो घनसांग जी ॥ १७ ॥
 थानक करावतां हिंसा हुइ, ते तो देवल नी परें जांग जी ।
 छे काय मारे छें तिण विवें, तिण री बृषवंत करजो पिछांग जी ॥ १८ ॥
 वले वावें पडदा परेच नें, चंदरवा ताटादिक आंग जी ।
 इत्यादिक थानक करे कारणे, हणें तस थावर रा प्रांग जी ॥ १९ ॥
 खीर खाड फीणा रोट्यां करे, पाणी उज्जाले भर भर ठाम जी ।
 ओर वसत अनेक करे घणी, गुर नें प्रतिलाभ्य काम जी ॥ २० ॥
 आहार पाणी आदिक निपजावतां, करे छें काया रो विपास जी ।
 पछें तेड वहरावे तेहनें, वले करे मुगत री बास जी ॥ २१ ॥

इत्यादिक गुर काजे हिंसा करे, ते तो पूरी केम कहिवाय जी ।
 धर्म काजे हिंसा करे जीव री, ते सांमल जो चित लाय जी ॥ २२ ॥
 करे उजवणा ने पारणा, वले सांही बछल जाण जी ।
 त्यांते नहत जीमावा कारणे, करे छे काय रो घमसांण जी ॥ २३ ॥
 वले धर्म काजे धूंकल करे, संघ काढे ले जावे जात जी ।
 चोमासादिक में जातां आवतां, करे तस थावर री घात जी ॥ २४ ॥
 तप माड्यो ते पूरो हूआं पछे, जीमण करे लोक जीमाय जी ।
 वले लाडू आदिक करे घणां, ते तो हण हण जीव छ काय जी ॥ २५ ॥
 वले समदड होइ दान दे, उपर वाडा रा फल दे जाण जी ।
 आबादिक फल नीं चोवीसी दीये, इत्यादिक दांन पिछांण जी ॥ २६ ॥
 हणें अर्थे अनर्थे जीव ने, ते तो भारी हुवे वांघे पाप जी ।
 धर्म हेते हणे छ काय ने, ओ तो कुगुर तपो परताप जी ॥ २७ ॥
 पंखी आला घाले देवल मग्गे, इंडा मेल बते तिण मांय जी ।
 ते निजर पडे कुगुरां तणी, तो आला दे तुरत पडाय जी ॥ २८ ॥
 केइ इंडा पंखी जीवां मरे, केइ उड भागे आकास जी ।
 त्यामें धर्म पल्पे पापीया, करावे जीवां रो विणास जी ॥ २९ ॥
 अनार्य आवे देस उपरे, जब करे अकार्य काम जी ।
 दुख उपजावे रांक गरीव ने, फिर फिर मारे नगर ने गांम जी ॥ ३० ॥
 तिम कुगुर अनार्य सारिषा, त्यांरा दुष्ट घणां परिणाम जी ।
 ते पिण गांमां नगरां फिरता थका, मरावे पंखीया रा गांम जी ॥ ३१ ॥
 अनार्य देस मारे गयां पछे, वले गांम नगर वसें आंण जी ।
 कदे अनार्य फेर आवे तिहां, तो वले मार करे घमसांण जी ॥ ३२ ॥
 ज्यूं कुगुर विहार कीयां पछे, पंखी फेरें आला घाले लग जी ।
 वले कुगुर आवे तिण गांम में, जब पंख्यांरो जांणों अभाग जी ॥ ३३ ॥
 मोटां विरद महाजम रा कुल मग्गे, वाजे जीव दया प्रतिपाल जी ।
 पिण कुगुरां तणा भरमावीया, पाडे पंखी जीवां रा आल जी ॥ ३४ ॥
 अनार्य गांम नगर माख्यां पछे, कोइ आणे मन पिछताप जी ।
 कुगुर जीव मराय हरषत हुवे, त्यांरे हिंसा धर्म री थाप जी ॥ ३५ ॥
 अनार्य करे कतल जीवां तणी, ते पिण फेरे दुहाइ वेग जी ।
 कुगुर जीव मरावण नित नवा, त्यांरो कडेय न दीसें थेग जी ॥ ३६ ॥
 अनार्य विचें तो कुगुर वुरा, त्यांरी मूरख मानें वात जी ।
 ते तो धर्म जाणें जीव मार नें, ओं तो करलें घणां छे मिथ्यात जी ॥ ३७ ॥

कुगुर कहें हिसा कीयां विनां, धर्म न होवें कोय जी ।
 पोतें त्याग कीयो हिसा तणां, त्यानें धर्म किहां थी होय जी ॥ ३८ ॥
 जो हिसा कीयां धर्म नीपजें, तो गृहस्थ होय जायें निहाल जी ।
 पिण सावां नें हिसा करणी नहीं, त्यांरो होसी कुण हवाल जी । ३९ ॥
 जीव माख्यां में धर्म कहें, अ तो कुगुर तणा छें वेण जी ।
 त्यानें वादें पूजे गुर जाण नें, त्यांरा फूटा अभितर नेण जी ॥ ४० ॥
 जीतव्य नें परसंसा हेंतें हणें, वले मान वडाइ काम जी ।
 हणें जनम मरण मूकायवा, वले दुख दूरा करवा तांम जी ॥ ४१ ॥
 मारें छ कारणं छ काय नें, त्यांरे अहित रो कारण साल्यात जी ।
 धर्म हेंतें हणें तिण जीव रे, समकत जाय आवें मिथ्यात जी ॥ ४२ ॥
 ए छ कारणे हिसा कीयां, वघें थाठ करम गांठ पूर जी ।
 निश्चे मोह नें मार वघे घणी, नहीं वरतें नरक सू दूर जी ॥ ४३ ॥
 ए छ कारणा हिसा करें, ते तो दुख पामें इण संसार जी ।
 ए आचारांग पेंहला अवेन में, छ उदेसां कह्यो विसतार जी ॥ ४४ ॥
 केइ समण माहण अनार्य थका, करें हिसा धर्म री थाप जी ।
 कहें प्राण भूत जीव सत्त्व नें, धर्म हेंतें हण्यां नही पाप जी ॥ ४५ ॥
 एहवी उंची परुषें तेहने, आर्य साव बोल्या केम जी ।
 तुम्हे भूंडो दीठो सांभल्यो, भूंडो मान्यो भूंडो जाण्यो एम जी ॥ ४६ ॥
 जीव माख्यां रो दोप गिणें नही, ए तो वचन अनार्य रो जाण जी ।
 एहवा मूढ मिथ्याती दुरमती, त्यांरी सुध दुव नही टिकाण जी ॥ ४७ ॥
 कोइ हिसा धर्मा नें इम कहें, थानें माख्यां हुवें धर्म कें पाप जी ।
 जव कहें मोनं माख्यां पाप छें, साच बोली सुधी करें थाप जी ॥ ४८ ॥
 जो थानि माख्यां रो पाप छे, तो इम सर्व जीव माख्यां जाण जी ।
 ओरां नें माख्यां धर्म परुष नें, थे कांय वूडो कर कर तांण जी ॥ ४९ ॥
 धाचारांग चौथा अवेन में, वीजें उदेसं ए विसतार जी ।
 हिसा धर्मा अनार्य तेहनें, कीवा जिण मारगं सू न्यार जी ॥ ५० ॥
 धर्म होसी एकंद्री मारीयां, तो वेद्री माख्यां पाप न थाय जी ।
 इधके माख्यां इधको धर्म छें, उण री सरखा रो ओहीज न्याय जी ॥ ५१ ॥
 जो एकंद्री माख्यां पाप छें, तो वेद्री माख्यां पाप वसेख जी ।
 इधके हण्यां इधको पाप छें, उम जिण धर्म साह्यो देख जी ॥ ५२ ॥
 केइ हिसा धर्मा चोडें कहें, हिसा क्रीवां विण नही हुवें धर्म जी ।
 केइ चोडें न कहें कपटी थका, साचो कहितां आवें समं जी ॥ ५३ ॥

केइ दया धर्मी वाजें लोक में, चालें हिंसा धर्मी री - रीत जी ।
 ते पिण छें तिण हीज पांत रा, बतलायां बोलें विपरीत जी ॥ ५४ ॥
 सूतर सिधंत में इम कह्यो, जीव माख्यां सूं लागें पाप जी ।
 नही माख्यां पाप लागे नही, श्री जिण-मुख भाख्यो आप जी ॥ ५५ ॥
 वले देहरा प्रतिमा करावतां, जीव हण रह्या पृथवीकाय जी ।
 त्यांनैं मंद बुधी श्री जिण कह्या, दसमें अंग पेंहला अघेन मांय जी ॥ ५६ ॥
 वले रुद्रमति कही तेहनी, ते तो जढ मूढ घणो अतंत जी ।
 ते दूरंत पंत लक्षण रो घणी, हिंसा धर्मी ने कह्यो भगवंत जी ॥ ५७ ॥
 जीव हिंसा करें तेहनें, ओलखायो श्री जिणराय जी ।
 हिंवे हिंसा धर्मी रा फल कहुं, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ५८ ॥
 केइ हिंसा धर्मी जीवडा, मरी उपजे नरक मभार जी ।
 तिहां छेदन भेदन पांमें घणी, वले खाबे अनंती मार जी ॥ ५९ ॥
 मार खाबे नरक थी नीकले, पडे तिर्यच गति में जाय जी ।
 तिहां पिण दुख पांमें अति घणां, ते तो पूरा केम कहिवाय जी ॥ ६० ॥
 वले निगोद में पडीयां पछे, दुख पांमें अनंतो काल जी ।
 परिभमण करे संसार में, जाणें अरट तणी घड माल जी ॥ ६१ ॥
 इम रलतो रलतो संसार मे, कदे मिनष तणो भव पाय जी ।
 ते कुण कुण पांमे अवस्था, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ६२ ॥
 त्यांरी बालपणें माता मरे, वले पिता रो पडे विजोग जी ।
 सेण सगां रो विछोहो पडे, मिले दुसमण रो संजोग जी ॥ ६३ ॥
 बालक थकां मरे बेटा बेटीयां, वले घर भागें अघगाल जी ।
 दुखे दुखे जनम पूरो हुवे, माथे आवे अणहुंतो आल जी ॥ ६४ ॥
 केइ होय जाबें टूटा पांगुला, केइ गुगा बहरा जाण जी ।
 केइ होय जाबें आंधा दलद्री, रहे दिन दिन तांणा तांण जी ॥ ६५ ॥
 सोलें रोग सरीरे उपजें, तिण सूं पांमे दुख संताप जी ।
 जनम मरण जरा दुख पांमें घणां, हिंसा धर्मी तणें परताप जी ॥ ६६ ॥
 सुयगडायंग अघेन अठारमें, ए भाव कह्या जिणराय जी ।
 इम जाणें नर नारीयां, धर्म काजे म हणो छ कय जी ॥ ६७ ॥
 देवल हिंसा निषेधी सांभले, केइ पाछो उत्तर दे आंम जी ।
 पाप हुवें तो नहीं ल्यावता, लाखां कोडां हजारां दाम जी ॥ ६८ ॥
 आगे वडा वडेरा भोला नही, घन खरचें लगावें पाप जी ।
 किण री उठाइ उठें नही, म्हारा वडा वूडां री थाप जी ॥ ६९ ॥

आगे सिव मारगी हुवा घणां, ज्यारो जोवो पुराणे विचार जी ।
 त्यां पिण लाखां कोडां लभावीया, कराया देवल हरदुवार जी ॥ ७० ॥
 आगे वडा वडेरा तुरकां तणा, मोटीं कराइ मसीत जी ।
 त्यां पिण लाखां कोडां लभावीया, त्यांरी पिण छें आहीज रीत जी ॥ ७१ ॥
 ग्यांनी सिवी नें मुसलमान रे, सगला वडां री आ रीत जी ।
 सगरा लाखां कोडां लभाय नें, कराया देवल आदि मसीत जी ॥ ७२ ॥
 ओर देवल मसीत करावीयां, त्यांनं पाप बतावें पूर जी ।
 जिण रा देवल कीयां तेहनें, धर्म कहें ते एकंत कूड जी ॥ ७३ ॥
 धर्म होसी तो सगला नें धर्म छें, पाप होसी तो सगला नें पाप जी ।
 ए लेखो कीयां तो लड पडें, खोटी सरघा री करवा थाप जी ॥ ७४ ॥
 आप रा देवल री करें थापना, ओर देवल देवें उथाप जी ।
 पिण धर्म नही हिंसा कीयां, कोइ मत करो कूड विलाप जी ॥ ७५ ॥
 दया धर्म छे जिणवर तणो, तिण में जीव न हणवो कोय जी ।
 जीव माख्यां धर्म न नींपजें, प्रवचन सांह्यो जोय जी ॥ ७६ ॥

रत्न : द

निन्व री चौपई

ढलल : १

दुहा

ढणलरुंग उवल इ उडंगडें, नलनुव नुु अलवलर ।
वलु सुडगडलडग तुरुडें, अरुथ तणुु वलसतलर ॥ १ ॥
शुुी वीर तणल सलसण डडुु, नलनुव चललुडल सलत ।
तुडलरुी सरखल नलंन नगरी डणुु, तुु सुणगुु वलखुडलत ॥ २ ॥

ढलल

[रलग—सल कुुई डत रलखगुु]

गुु कलरग करवल डलडुीडुु, कलइ कडुुु नुु कलइ करणुु रुु ।
कुुीखल नुु डुुल डलंनुु नहुुी, डलरी करडुुु न कुुीखुुु नलरणुु रुु ।
सरखल सुणुु नलनुवलं तणुु* ॥ १ ॥
ए गडललुी^१ सलषुड डगवलन रुु, ओ सुध सरखल शुुी डलगुु रुु ।
वीर थकलंइग वलगडुीडुुु, सलवथुी नगरी नुु वलगुु रुु ॥ स० २ ॥
असष डुरुदुुसुी गडुु वुु, वीर सगलुु कुुतन डलखुुु रुु ।
ए डुरडुु वुवन उथलड नुु, एक डुरदुुस नुु गडुु वलखुुु रुु ॥ ३ ॥
ए तुुीसगुनुत^२ नलनुव दूगुु, नगरी रलगडुुहुी गलणुु रुु ।
तलण कुुतन दरड न ओलखुुुु, डड गडुु उलुडुी वलणुु रुु ॥ ॡ ॥
सगडलदलक डुु सकुल डडुी, तुडलं डलंहुुुडलं डंदणल कुुुगुुी रुु ।
सलधल डुु सरखुु दुुवतल, तुु नडुु नहुुी कर गुुीगुुी रुु ॥ ॡ ॥
सुध ववहुलर उडलडुीडुुु, करड उदुु वलत वलगडुुी रुु ।
ए असलड^३ नलनुव तुुीगुुु, तुु डूगुुु सुवुीडल नगरी रुु ॥ ॢ ॥
नरकलदलक कुुडलं गतलं, डुुीगुुी डुुीगुुी घुड गलसुी रुु ।
कुुुडुुी असुी सरुुव गडुु वीर रुु, ओ संसलर सुनुुुु थलसुी रुु ॥ ॣ ॥
डलथल नगरी नुु डडुु, डरगइ डन डुु डलतुु रुु ।
वलकुुुद सरखुुु संसलर नुु, ए असलडलतुु[ॣ] नलनुव कुुुथुु रुु ॥ । ॥
संडरलड इरलडलवहुुी असल दुु, एक सडुु कलरलडल दुुड ललगुु रुु ।
वलगुडुुु वुुल अनेक सुु, डरुुड दुुी लुकलं असुु रुु ॥ ॥ ॥
ए गगुु[॥] नलनुव डलंनुडल तणुु, उलुतलतल. उलुकल तुुीर नगरी रुु ।
एक सडुु कलरलडल दुुड थलडतलं, सडुकत सरखल वलगडुुी रुु ॥ १० ॥

*डुुह अलंकडुुी डुरतुुडुक गलथल कुु अनुत डुुं हुुी ।

जीव अजीव दोनों जिण कहा, तीजी रास तैरासीयें थपि रे।
 बोव बीज विणासीयों, संकीयों नहीं मूरख पायी रे ॥ ११ ॥
 अंतरंजी नगरी मझे, ओ हूव गयो समकत भउ रे।
 तीन रास पल्पी ताण नें, ए छल्लूक* निन्व छठों रे ॥ १२ ॥
 खीर नीर व्युं आठोंइ करम छें, जिग कहा लोलीभूतो रे।
 ते कांचूवा नौ परें करम नें, ओ उंची सरख विगूतो रे ॥ १३ ॥
 दगनपुर नगरी तिहां, ते गोधानाहिल* जणों रे।
 ए सातांइ निन्वां तणी, सरखा एह पिछाणों रे ॥ १४ ॥
 ए सात निन्व तो हुय गया, बले हुती त्यांरी केडावत रे।
 सरखा परगट कीयां तेहनीं, सुण नें हुवा रलीयायत रे ॥ १५ ॥
 जे आचार में ढीला पखा, सुख सरखा थी पिण चूका रे।
 भव जीवां नें देवी समभता, तो कर लेकां आणें कूका रे ॥ १६ ॥
 पालंडीयां सूं मिल गया, सावां सूं अंतर बेखों रे।
 केडें चालें लोक रे, ए प्रतख निन्व देखों रे ॥ १७ ॥
 पूरा दान दया नहीं ओलख्या, घालें अणहूता घोचा रे।
 सुख सावां नें निन्व कहें, ए जुगरां भाल्या चौचा रे ॥ १८ ॥
 गोसाले आद्रक कुमार पें, बीर में दोष वताया रे।
 संका नहीं आंगी भूठ री, कूडा गोला चलाया रे ॥ १९ ॥
 आद्रक कुमार उत्तर दीयां, तव पाछा जाव न आया रे।
 कुळ करें घट भितरें, ओर पापंडीयां नें लगाया रे ॥ २० ॥
 इम अजुणाइ काल में, नहीं न्याय मेलग री नीतो रे।
 लोकां सूं करें लगावणी, त्यां लीवीं गोसाला री रीतो रे ॥ २१ ॥
 महावरतां री चरचां कीयां, पगला मूल न भडि रे।
 सरणो लीयों संसार नों, भेष ले जिण मारल भाडें रे ॥ २२ ॥
 ग्यान दरसन चारित तप विनां, धर्म वतावण लागा रे।
 सके नहीं सावध बोल्तां, ते वरत विहूणा नागा रे ॥ २३ ॥

ढाल : २

दुहा

बंस गयो पांच निन्वां तणो, प्रसिघ न सुप्यो कोय ।
दोय तणा परगट हूआं, सांभलजो सहु लोय ॥ १ ॥
दो किरिया निन्व पांचमो, छठो तेरासीयो जाण ।
त्यांरा केडायत उठैया, प्रतख देखो अह्लांण ॥ २ ॥
माहोमांही निन्व कहे, ते रागा घेखो जाण ।
रूखणां कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजांण ॥ ३ ॥
कहुं थोडीसी वानगी, तेरासीया नी वात ।
भव जीवां ने प्रति बोधवा, काढण मूल मिथ्यात ॥ ४ ॥

ढाल

[देशी—पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

जीव अजीव दोनूइ जिण कहुया, तीजी वस्तु न कोय हो ।
तीजी रास पलूपी तेरासीये, तो निन्व कहुयो जिण राय हो ।
निन्व तेरासीया केडायत ओलखो* ॥ १ ॥
धर्म अघर्म जिणेसर भाखीयो, तीजो पंथ न कोय हो ।
तीन पलूपे ते निन्व जांणजो, छलूक छठा जिम होय हो ॥ नि० २ ॥
मिश्र पख ने तो मिश्र धर्म कहे, तिण रो न पायो भेद हो ।
विरत इविरत दोनू न्यारी कीयां, कुड कुड पामे खेद हो ॥ ३ ॥
सुयगडाअंग अघेन अठारमें, श्रावक धर्म विरत वखांण हो ।
इविरत रही ते अघर्म जिण कही, तिण से मांडी तांण हो ॥ ४ ॥
इविरत सेवाया सेवीया भलो जांणीयां, तीनूइ करणां पाप हो ।
एहवो भगवंत वचन उयाप ने, कीचीं छे मिश्र री थाप हो ॥ ५ ॥
सर्व विरत छे धर्म साचां तणो, देस विरत श्रावक जांण हो ।
ए दोनूइ धर्म मे जिणजी री आगना, तिण री न करे पिछांण हो ॥ ६ ॥
तीजा गुणठांणा ने मिश्र धर्म कहे, भोलां ने दीयां भरमाय हो ।
नाख्यां मोह मिथ्यात री जाल में, हिवे साभलो तिण रो न्याय हो ॥ ७ ॥
साची सरधा तो समकत माहिली, तिण सूं न लागे करम हो ।
कायक मिथ्यात रह्यो घट भितरें, तिण मे नही जिण धर्म हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दोनूं सरघा घट में जूजूइ, जूओ जूओ तिण रो सभाव हो ।
 सममिथ्या दिष्टी तो समचें कह्यो, ए तीजा गुणठांणा रो न्याव हो ॥ ६ ॥
 मिश्र भाषा नें मिश्र धर्म कहे, एहवो चलायो भूठ हो ।
 करम बंधे इण थी महामोहणी, जो बोलें सभा में आकूट हो ॥ १० ॥
 तीसांड बोलां बंधे महामोहणी, धर्म, रो अंस न कोय हो ।
 जो गुणतीस बोलां मे मिश्र न नीपजें, तो एकण में किम होय हो ॥ ११ ॥
 अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, भूला तिण रें भर्म हो ।
 वीर कही छें बोलण आंसरी, पिण न कटें तिण सूं करम हो ॥ १२ ॥
 साची भाषा पिण सावज बोलतां, बंध जाय सात आठ करम हो ।
 ते साची भाषा ने कही छे आराधवी, तिणमेंइ न दीसे धर्म हो ॥ १३ ॥
 तो मिश्र भाषा में धर्म किहा थकी, भोलेइ म करजों तांण हो ।
 भूठ री नेश्राय साचो नीकलें, ते साच ही सावद्य जांण हो ॥ १४ ॥
 जो करमा वस इतरी समझ पडे नही, तो भेल समेल म जांण हो ।
 साच नें भूठ दोनूइ न्यारा करो, सावद्य निरवद्य पिछांण हो ॥ १५ ॥
 जमीकद खाधां खवाया भलो जाणीयां, तीनूइ करणां पाप हो ।
 ए चोडे मारग श्री जिणराज रो, ते पिण दीयों छें उंथाप हो ॥ १६ ॥
 मिश्र परुपें अग्यानी एह में, भोलां ने वतावें भेद हो ।
 खवाये तिरपत कीयो पर जीव नें, ए सरघो धर्म उमंद हो ॥ १७ ॥
 करम वधाख्या छें तिण जीव रें, जमीकद खवाय हो ।
 जीव अनंता मार जूंहर कीयो, मिश्र किहां थी थाय हो ॥ १८ ॥
 एक डबोयो अनंता मार नें, ते कुगुर जांणें उपगार हो ।
 ए प्रतख पाप लागों दोनूं विधें, तिणरोइ घट में अंधार हो ॥ १९ ॥
 काचो पाणी छांण्या मिश्र धर्म कहे, ते भूठ चोज लगाय हो ।
 के धर्म हूओ तस जीव न्यारा कीयां, आ दया रही घट मांय हो ॥ २० ॥
 तस री दया ने घात पांणी तणी, मिश्र वतावे एम हो ।
 हिवे साध कहे ते भवीयण सांभलो, एक मना धर पेम हो ॥ २१ ॥
 एक गले बीजो अणगल पीये, ते वुधवत करसी नीवेर हो ।
 पांणी रो पाप देयां ने बरोबर, तस माहे पडीयो फेर हो ॥ २२ ॥
 पाणी छांण्यां घात हूइ अपकाय री, देख दीयों तस ने गोताय हो ।
 ठिकांणा छुडाय अबला जीवां तणा, ते मिश्र किहां थी थाय हो ॥ २३ ॥
 अणगल पीयां तो पाप लागें घणो, गल पीया अरु करम हो ।
 थोडों घणो छे पाप दोनूं मणी, नही छेरवीयां छें धर्म हो ॥ २४ ॥

मिश्र अणहुंतो ज्ठाय बेठो कीयो, विगटाय्या वोल अनेक हो ।
 ए बांकी गति छे मोह करम तणी, तिण सूं न छूटे टेक हो ॥ २५ ॥
 चाले चाल असल निन्वां तणी, ओरां सिर दे माल हो ।
 निरणो न काढे समता भाव सु, बोले आल पंपाल हो ॥ २६ ॥



ढाल : ३

दुहा

हिवें पांचमां नित्व तणा, ओल्लखजो पिरवार ।
 ते विगडायल जिण भेष में, ते न कहें धर्म विचार ॥ १ ॥
 कहें दया आंण ने जीव मारीयां, हिवें छें धर्म नें पाप ।
 ए करम उदे पंथ काडीयो, भगवंत वचन उथाप ॥ २ ॥
 पाप कीयां धर्म न नींपजे, धर्म थी पाप न होय ।
 एक करणी में दोग न नींपजे, ए संका म आंणो कोय ॥ ३ ॥
 धर्म अवमं करणी जू जूइ, ते मांहोमांहीं नही मेल ।
 दो किरिया नित्व केडायतां, कर दीधी मेल समेल ॥ ४ ॥
 एक सावद्य करणी करे तेह नें, धर्म अवमं दोग वताय ।
 कुण कुण चाला चालव्या, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[देही-धिग धिग काम विहम्बशा]

एक सावद्य करणी कीयां थकां, धर्म अंस न होय रे ।
 ए अरिहंत वचन माने नहीं, ते सावद्य में सरखें दोग रे ।
 दोग किरिया नित्व केडायत सुणों* ॥ १ ॥
 हंख्यादिक अठारेंइ सेवीयां, तीनूंइ करणां पाप रे ।
 ए न्याय मारग जिणराज रो, ते निन्वां दीर्यो उथाप रें ॥ २ ॥
 खरच आवरण्णी जीमणवार में, वले नहत जीमावें लोक रे ।
 त्यांने धर्म अवमं दोनूं कहें, ते नित्व सरखा फोक रे ॥ ३ ॥
 छकाय नां जीव विणासीया, ए जिण भाप्यो नहीं धर्म रे ।
 वले विषे सेवारी पर जीव नें, दोनूं विव वंवीया करम रे ॥ ४ ॥
 कहें अवड नां सिप्य सातसो, अण दीवो लीवो नांय रे ।
 त्यां आगना ले पांणी लीयो, वले ओरां डवोया कांय रे ॥ ५ ॥
 वले आणद आदि दे श्रावकां, मारो ल्याया आहार रे ।
 ते सरलवुवो था जीवडा, त्यां कांय विगोया दातार रे ॥ ६ ॥
 इम कहे विरुव परुपता, हख्या दिदावे मूड रे ।
 हिवें एहनो विवरें सांमलो, छोडो मिथ्यात री हड रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

किण ही सूंस लीयों सतगुर कनें, जाव जीव - न परणूं नार रे ।
 मोने बाप परणावे तो परणीज सूं, इतरो राख्यों आगार रे ॥ ८ ॥
 बाप परणावे तेह ने, तो हरप घरें मन मांय रे ।
 तो उण री सरघा रें श्रावकें, बाप डवोयो कांय रे ॥ ९ ॥
 ज्यूं अंबड आणंद आदि श्रावकां, वेरागें कीयां पचखाण रे ।
 मांगण री इविरत पेंहलां हुंती, ते नवो पाप म जाण रे ॥ १० ॥
 जाचीयो नें अण जाचीयो, सचित अचित आहार रे ।
 सुभत्तो ने अण सुभत्तो, सगलोइ थो आगार रे ॥ ११ ॥
 वले पूछ्या ने विण पूछीयां, पाप करता न आणता लाज रे ।
 ते विरत करी विण पूछीयां, ते इविरत टालण काज रे ॥ १२ ॥
 जे जे आगार त्यागें दीयो, ते श्रावक नों छे घर्म रे ।
 बाकी रह्यो आगार सेवारीया, ते निरुचें बंधसी करम रे ॥ १३ ॥
 ए आगार तो पेहलां हुंतो, नवो न सीख्यो कोय रे ।
 इविरत सिची पार की, ते घर्म - किहां थी होय रे ॥ १४ ॥
 लेवाल रें इविरत लेण री, दातार रें देण री जाण रे ।
 ए दोयां रे काल अनादरी, ते त्याग्यां थी निरवाण रे ॥ १५ ॥
 वले कोइ अभिग्रह ले एहवों, हुं रनवन खेतमें जाय रे ।
 विण कहें विरख वाढूं नही, ते पूछी न्हाखें ढाय रे ॥ १६ ॥
 इम हिज फल फूल चार नों, तस थावर जीव अनेक रे ।
 विण आग्या हणवो नही, सूंस लीयों आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 इण अनुसारे बोल अनेक छें, सावद्य किरिया करे कोय रे ।
 जे अघर्म री देसी आगनां, तो आद्या फल नही होय रे ॥ १८ ॥
 अंबरना सिष्यां नें दीची आगना, कहें खपे स भरलों नीर रे ।
 तिण हिंसा में सिर घालीयो, न सरायों तिण ने वीर रे ॥ १९ ॥
 हिंसा तणी आग्या दीयां, नफो म जाणों कोय रे ।
 ए निरणो न कीयो घट भितरें, ते गया जमारो खोय रे ॥ २० ॥
 वरसी दान दीयो तीथंकरे, एक कोड नें आठ लाख जाण रे ।
 ए प्रतख सावद्य सुफे नही, पर गया उलटी ताण रे ॥ २१ ॥
 सोनड्या लीघा तिण ने कहे, हुओ छें एकंत पाप रे ।
 दीया तीथंकर तेह ने, दो किरिया दीची थाप रे ॥ २२ ॥
 घर्म अघर्म दोनूं कहे, सोनड्या दीवां दान रे ।
 पाप जाणें तो देता नही, ते एहवा आणे तांन रे ॥ २३ ॥

इम कहे भोलां लोक नें, घर्म सूं दीयां भिरकाय रे ।
 हिंसें साव कहे ते सांभलो, वरसी दांन रो न्याय रे ॥ २४ ॥
 एक कनक दूजी कांमणी, त्याग्यां सिव सुख होय रे ।
 पेह्ला नें पकरावीयां, घर्म म जाणों कोय रे ॥ २५ ॥
 जो नफो जाणें सोनइया दीयां, तो ओरां डबोया कांय रे ।
 लेवाल नें भारी कीयां, ए कपट रो मारग नांय रे ॥ २६ ॥
 जो सो सो सोनइया दीयां एक नें, तिण लेखे वांध्यो तु मार रे ।
 दिन रा भिनप हूआं एतला, एक लाख नें आठ हजार रे ॥ २७ ॥
 एक वरस तणा तीन कोड ने, अठ्यासी लाख नें असी हजार रे ।
 एहवे उनमाने मानव्यां, पाप लगायो अपार रे ॥ २८ ॥
 ए जस महिमां देव वधारवा, ते समझों चतुर सुजाण रे ।
 ए सासती थित छें तेहनीं, उत्तर एह पिछांण रे ॥ २९ ॥
 आठ सहस्र नें बले चोसठ, कलसा ढोल्या भर नीर रे ।
 वाजंन्र अनेक आरंभ कीयां, दीख्या लीधीं जिण दिन वीर रे ॥ ३० ॥
 ए सगलाइ सावद्य जिण कह्या, राखों सूतर परतीत रे ।
 महोच्छ्रव दांन सिनांन तो, ए गृहवासा री रीत रे ॥ ३१ ॥
 ग्यांन दरसन चारित तप विनां, सर्व करणी अवर्म जाण रे ।
 ज्यां श्री जिणघर्म न ओलख्यो, ते कर रह्या उलटी तांण रे ॥ ३२ ॥
 तीथंकर सोनइया दीयां लोक नें, कहे हूओं छे पाप नें घर्म रे ।
 सुघ आहार गवेषे ने भोगव्यो, कहे बांध्या जसम करम रे ॥ ३३ ॥
 सुघ आहार दीयो भगवंत नें, घर्म कहे ते तो न्याय रे ।
 पाप लागो कहे सगवंत नें, ए प्रतख मुसावाय रे ॥ ३४ ॥
 आप तिरे ओरां ने डबोय ने, आप डूबे ओरा नें तार रे ।
 ए दोनुं वोल विरुब छे, ते बुधवंत करसी विचार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ४

दुहा

सुयगढा अंग तेरमें, जथातथ छे भाव ।
साध ने निन्वां तणों, कह दीयों भगवंत न्याव ॥ १ ॥
एक मारग कह्यो मोष रो, बीजों कह्यो ससार ।
किरिया भली नें पाडवी कही, मेल न राख्यो लिंगार ॥ २ ॥
निन्व पाषंडी बोटकादिक, ते उठ्या दिवस नें रात ।
ते सूतर भणे जिण भाखीया, पिण गिर रह्या गूढ मिथ्यात ॥ ३ ॥
प्रबलपणो अहंकार नों, बले चालें उलटी रीत ।
समाध मारग सेवे नही, ते अपछंदा अक्नीत ॥ ४ ॥
श्री जिण मारग उथपें, भाषे कुमारग जेह ।
निन्व पापडी त्याने कह्या, बले सांभलजो विघ तेह ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आगन्या मे]

विसुध निरदोषण मारग मुगत रा रे, ग्यान दरसण चारित तप च्यार रे ।
ते छोड ने परीया करें कदागरो रे, ए निन्वां री सरखा ने आचार रे ।
त्याने पाषडी निन्व जिण कह्या रे ॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित तप विनां रे, जे धर्म कहें छें ते विपरीत रे ।
बले जोड करे हिंसा धर्म थापवा रे, त्यारे केडें पिण डूबे कर परतीत रे ॥ २ ॥
सवर सूं रुके छें करम आवता रे, निरजरा सूं कटें आगला करम रे ।
शेष कारज सगला संसार नां रे, तिण में पाषडी थापे धर्म रे ॥ ३ ॥
ग्यान आगम मे संका आणता रे, पिळत वाजें मन मे अभिमान रे ।
प्रश्न पूछ्या रो जाब ने उपजे रे, जब भाणे अग्यांनी कूडा तांन रे ॥ ४ ॥
विनां करावण ने आगा घणां रे, म्हें पदवीघर छां मोटा अणगार रे ।
सतावीस गुण सूं वरते वेगला रे, बले सरखा मे पूरो खोर अघार रे ॥ ५ ॥
केइ हीण आचारी कूगुर छोडें रे, सुध सरखा ने पाले वरत रसाल रे ।
त्याने कहि ए निन्व मायावीया रे, दे दे अणहूंतो भूडो आल रे ॥ ६ ॥
एहवा असाध साध कहावता रे, कपट सहीत त्यांरी वात रे ।
ते तो भमण करखी ससार मे रे, उतकठी अनती पामें घात रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाया के अन्त मे है ।

केइ गुर कनें भण नें गुर नें गोपवें रे,
केइ भूठ बोले कहे हूं पोतें भण्यो रे,
उस्नादिक पाषंडीयां आगें भण्यो रे,
खोटा जाण ने त्यानें छोडणा रे,

केइ सूतर सिघंत भणे अश्वी कने रे,
पिण जाणे मिथ्याती तिण नें मूलगो रे,
सिघत भणायो अनन्ता जीव नें रे,
गुर ने चेलों हूओ सर्व जीव नों रे,
गधा मे घाल्यो चदन बावनो रे,
जे किरिया मे हीण थका सूतर भणे रे,
कोइ भणे भणावे करवा नाम नां रे,
सूने चित परमार्थ पायो नही रे,
सुध साध पें घर छोडे सूतर भणे रे,
तो काण न राखे चला गुर तणी रे,
अजाणपणें कुगुर नें गुर करे रे,
त्यागी बेंरागी त्याने जिण कहा रे,
बले क्रोध घणो बोलें अलखामणा रे,
खिमा रो मारग छोडे उभर .पस्था रे,
कोइ भेपले हलका बोलें एहवा रे,
हूं जीवादिक नवतत रो निरणो करूं रे,
एहवा अहंकारी साध भेष में रे,
अनेरा उत्तम साध ने श्रावकां रे,
कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे,
सुध साध श्रावक नें एहवा लेखवे रे,
ते मिरग ज्यू परीया छे कुड जाल मे रे,
ते भमग करसी गाढा दुखीया थकां रे,
ए दिष्टंत सुलटा रों उलटों करें रे,
ए हिज निन्व म्हां मांसू निकल्या रे,
इम कहि कुगुरु कुन्द चलाय नें रे,
चंद्रमा^१ने प्रतिबिब^२निन्व^३साध^४ रो रे,
कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे,
मुख जाणें गिरलूं चंद्रमा रे,

केइ प्रसिघ आचार्य रो ले नाम रे ।
ए भारी करमां जीवां रा काम रे ॥ ८ ॥
पिण भूठ न बोले उत्तम जीव रे ।
ए न्याय मारग छेसिघ गति नीव रे ।
ए अरिहंत वायक सतकर जाणजो रे* ॥ ९ ॥
तोही पूछ्यां तो कहि दे तिण रो नाम रे ।
नही कोइ गुर चेला रो काम रे ॥ १० ॥
अनन्ता आगें भणीयो सिघंत रे ।
साची सरधा विन न मिटी अत रे ॥ ११ ॥
ते भार तणो विभागी जाण रे ।
समकत विण थोथा मूढ अयाण रे ॥ १२ ॥
केइ प्रसंसा मान वडाइ हेत रे ।
ए बीज विण रहि गयो खाली खेत रे ॥ १३ ॥
आचार सरधा में देखे चूक रे ।
भागल जाणें तो जाबे मूक रे ॥ १४ ॥
पिण ठीक पस्थां छोडें ततकाल रे ।
ए सांसो हुवें तो सूतर संभाल रे ॥ १५ ॥
उपसम्यो कलहो करवा त्यार रे ।
ते पिण दुख पामें संसार रे ॥ १६ ॥
मो तुल कुण छें ग्यान भंडार रे ।
हूं तपसी छूं जतकष्टों अणगार रे ॥ १७ ॥
त्यां दीयां नरकादिक जावा सूत रे ।
जाणें आकार मात बिबभूत रे ॥ १८ ॥
चंदरमा रो सगले छें प्रतिबिब रे ।
आ माली पाषंडीयां भूठी भब रे ॥ १९ ॥
जे चारित लेनें करे अहंकार रे ।
इण भाव कूट संसार मभार रे ॥ २० ॥
साध नें कहें असाध एम रे ।
सगलां नें गिणीया प्रतिबिब जेम रे ॥ २१ ॥
साधां ने घाले निन्व मांय रे ।
ए च्यारां तणो सुणजो भवियण न्याय रे ॥ २२ ॥
चंद्रमा रो सगले छे प्रतिबिब रे ।
पिण ते तों आकासें अंतर लंब रे ॥ २३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

प्रतिबिब ने जे कोइ मांनं चंद्रमा रे, ते तों कहिजें विकल समान रे ।
 ज्युं गुण विण सरधे सावु भेष ने रे, ते खूता मिथ्याती पूर अग्यांन रे ॥ २४ ॥
 प्रतिबिब ने प्रतिबिब कह्यां थकां रे, भूठ म लागो जाणो कोय रे ।
 सतावीस गुण विहुणा सांग नें रे, असावु कह्यां थी दोष न होय रे ॥ २५ ॥
 साव री गुण री चरन्वा माडीयां रे, जब तो कांती दे जाये दूर रे ।
 घणां लिंग धाखा सूं भेलप करे रे, सुघ साघ ने निन्व कहिवा सूर रे ॥ २६ ॥
 घणां रे भरोसे कोइ रहिजो मती रे, सरघा नें चलगति मीढी जोय रे ।
 लोक भाषा माहिं पिण इम कहे रे, धीखाघो पिण कुलडोनगयो कोय रे ॥ २७ ॥
 कोइ साघा म्हासूं निकल भागल हुवे रे, केइ भागल छोडे ने हुवे छे साव रे ।
 वले थोडा घणां रो कारण को नही रे, सुघ करणी सूं पामे सदा समाघ रे ॥ २८ ॥
 सुघ साघां ने छोडे सरघा विगटीया रे, ते गिणजो पापडो निन्व मांहि रे ।
 सुघ सरघा भाले ने छोड्या भागलां रे, आचार पाले ते निन्व नाहिं रे ॥ २९ ॥
 पूजा सलगा उचा गोत ने रे, पाम्या छे जीव अनती वार रे ।
 जे बेरागे घर छोडे संजम लीयो रे, गरब छूट्यो तो खेवो पार रे ॥ ३० ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केरलत दलत नलनवल तणल, ओललखलतल हडल रलत !
 हलवलं जडलली रल डरगड कलं, ते सुणओ डर डलत ॥ १ ॥
 श्री वीर तणल सलसण डडु, नलनवल हूअ लसलत !
 तलण डे डुरथड नलनवल जडलली हूओ, तलण री वलगडी सरखल वलत ॥ २ ॥
 कलई कीडुं ने कलई करणु ओलु, ते डुरसलख कलवी वलत !
 कलई कीवल ने डूल डलंने नही, तलण रे इण वलव आतुं डलथुतल ॥ ३ ॥
 सलवथी नगरु नलं वलग डे, इण रे रलग उडनु आत !
 जव इण सलवलं ने तेडी कलहुओ, डलंहरुं करु संथलरु जलत ॥ ॡ ॥
 जव सलथलं करणु डलडुओ सलथरुं, कलई कीडुं ने करुं तलणवलर !
 जव जडलली सलथलं ने कलहे, अओ कीडुं के न कीडुं सथलर ॥ ॡ ॥
 जव सलथलं कलहुओ न कीडुं करलं अलं सलथरुं, तव आतुं जडलली कललत !
 इण डुरुं न दीठु सलथरुं, तलण सु उवी वलकलरु डन डलत ॥ ॢ ॥
 डगवत कलहे करवल डलडीतुं, तलण ने कीडुं कलहे सलखुतल !
 वले कललवल डलडुओ ने कललीतुं कलहे, ते एकंत डुठुी वलत ! ॣ ॥
 तलण डगवत ने डुठुल कलहे, डडुवओीतुं डलथुतल !
 तलणरल केडुतल उठुीतलं, ते सुणओ वलखुतल ॥ ॡ ॥

ढलल

[देशु—आ अणुकडुतल जलख आगनुत डे]

कलई कीडुं ने कलई करणु ओ वलकी, तलण कीडुं कलरओ ने ओ नही डलंने !
 हसडी सरखुं ते जडलली रल केडुतल, ते वुडवंत आगु कलण वलव रहसुी अलंने !
 आ सरखल जडलली नलनवल री* ॥ १ ॥
 डलंओ सेर तणुी रलुडी करणुी ओ, तलण डे सेर तणुी कीडुं ओ रलुडी !
 सगलुी कीडुं वलनल कलहे कीडुं न कलहुणुी, तलणरुी डलण सरखल जलवक खलुडी ॥ आ० २ ॥
 ओवीस हलथ रल थलंन वणवल डलडुओ, तलण डलहे वणुीतुं ओ एक हलथ !
 आखु वणुीतलं वलनलं कलहे वणुीतुं न कलहुणुी, तलणरुी डलण ओणओ ओहलओ डलथुतल ॥ ३ ॥
 डर हलड हवेलुी करवल डलंडुओ, कलई कीडुं डलण न कीडुं ओ डुरु !
 अधुरु कीडुं ने कलहे कीडुं न कलहुणुी, तुतलने डलणओणओओ जलणओी रल सरखल सुं डुरु ॥ ॡ ॥

*तुह आंकडी डुरतुेक गलतल के वनुत डे है !

दस कोस तणें गामंतरें चाल्यो, काई चाल्यो नें काई चालणो सेप ।
 थेट पोहता विना कहे चाल्यो न कहिणो, आ पिण खोटी सरघा जमाली री टेक ॥ ५ ॥
 कोइ मास खमण चोखे चित कीघो, तिण गुणतीसमे दिन एक खाथी रोटी ।
 जमाली रे लेखे मास खमण न भागों, तिण सूं जमाली री सरघा खोटी ॥ ६ ॥
 लाय लागी नें लाय लागी नही कहिणी, पूरो बलीयां पछे कहें वलीयो ताय ।
 इण अनुसारे छे बोल अनेक, आ खोटी सरघा पूरी केम कहवाय ॥ ७ ॥
 सुदंसणा भगवंत री वेटी, तिण वीर कने लीयो संजम भार ।
 तिणरें सरघा जमाली री आई, ते पिण हुइ जमाली री लार ॥ ८ ॥
 ते आहार करती थी परेच वाचे नें, ते आर्या सहीत वेठी थी मांय ।
 त्याने ढीक श्रावक समभावण काजें, अग्न सूं परेच ने दीवी ल्गाय ॥ ९ ॥
 जब केइ आर्या कहे परेच वलें छें, जव ढीक श्रावक वोल्यो छें एम ।
 परेच बली कह्ना थारी खोटी हुवे सरघा, पूरी बली विनां बली कहो छों केम ॥ १० ॥
 इम सुदंसणा सांभल नें डरपी, जमाली री सरघा छोडी खोटी जाण ।
 वीर कने सुघ हुइ आलोए, प्राच्छित ले पाछी आई टिकाण ॥ ११ ॥
 आ प्रतख खोटी जमाली री सरघा, ते सरघा भेप घाख्यां रे आई ।
 जमाली रा थकां भगवंत रा बाजें, ते पिण विकलां ने खवर न काई ॥ १२ ॥
 दोष सेव्यों सेवे नें सेवसी आगें, तिणरोई चारित सरवे नही भागो ।
 बले करम तणे वस उंचा बोले, कहे वरत न भागों पिण दोपण लागों ॥ १३ ॥
 किण ही साव सावद्य किरतव कीघों, पांच महावरत में दोपण लागो ।
 जे जे होसी जमाली रा केडायत, तिणरो संजम सरवें नही भागों ॥ १४ ॥
 हिंसा कीयां पेंहलो वरत भांगे, भूठ वोल्यां डूजो वरत भागों ।
 जमाली रा केडायत कहें भेप घारी, वरत भागों नही पिण दोपण लागों ॥ १५ ॥
 अदत लीया तीजों वरत भांगे, विपे परिणाम आयां चोथो वरत भागों ।
 तिण भागां ने भागो न सरवें अग्यांनी, ते पिण जमाली रे केडें लागो ॥ १६ ॥
 उपगरण मरजादा सूं इधका राखें, थानकादिक उपर ममता रही लागों ।
 बंधो करावें दीव्या भो आगे लीजें, तिणरो पांचमों वरत न सरवें भागों ।
 किंवाड जड्या दोप लागों न सरवे, ते निन्वां जमाली रा केडायत* ॥ १७ ॥
 निसंक थकां पापी जडे उघाडें, लागों सरवें तोड वरत भागों न सरवें ।
 ठाम ठाम थानक मांडी ने वेठा केड, रात दिवस रांक जीवां ने मरदे ॥ ते० १८ ॥
 त्यांरो सावपणो भागो नही सरवें, आवाकरमी केइ मोल रा लीघा ।
 असणादिक नित एकण घर वेहखां, त्यां नरक सूं सनमुख डेरा दीघा ॥ १९ ॥
 केइ आहार पांणी नित घोवण वेहरें, वीर कह्यो तिण नें अणाचारी ।
 तिण ने सरवे मूंड भुघ आचारी ॥ २० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

पुस्तक पांना वले लोट नें पातरा,
 थोडो घणों त्याने मोल वतावे,
 जीमणवार आरा माहें जावें,
 सूतर माहे वरज्यो तोही नहीं मानें,
 गृहस्थ रें घरे मेलें पोथी पांना,
 जीवां रा जाल जमें तिण माहें,
 श्री पारसनाथ तणी साधवीयां,
 ते भिष्ट हुइ हाथ पग धोई ने,
 त्या समकत सहीत साधपणो खोयो,
 समदिष्टी विमाणीक देवता हुवें छें,
 भेषधारी भिष्ट भागल होय वेठा,
 त्यांरी विकलाई देख फिरे लोक त्यांतूं,
 एहवी भागल विराभक नें सरधे साधवीया,
 त्यांरा विनां वीयावच में धर्म थापें,
 सेलग राय ऋषी ढीलों पख्यो जद,
 वीर कह्यो इसडो साध हुवें तो,
 हेलवा निंदवा जोग कह्यो सेलग नें,
 तिणरी वीयावच पंथक कीधी,
 उस्नादिक वाद्या नसीत रे माहें,
 उस्नादिक पांचूं दोप सेलग में पावे,
 सेलग ने पारसनाथ तणी साधवीयां,
 यांरा पूरा भागां विण भागां न सरधें,
 याने कहि कहि नें कितरो एक कहिजे,
 याने बुधवत जांग लेसी थोडा में,

सांनी करें साध मोल लरावें ।
 वले साध रो मूरख विडद धरावें ॥ २१ ॥
 वेंठी पांत मा सूं पातरा भर ल्यावे ।
 वले लोकां माहें साध ज्यू पूजावें ॥ २२ ॥
 वले पडिलेह्यां विनां राखें वरस छ मासों ।
 एहवा साध वाजें त्यांरो दुरगत वासों ॥ २३ ॥
 दोय सो नें छ साधपणो विगारी ।
 त्यांने साधवीयां सरधें भेषधारी ॥ २४ ॥
 समकत रही हुवें तो देवी हुवें नाहिं ।
 त्यांने साध सरधे ते जमाली रे माहि ॥ २५ ॥
 ते आप मे दोपां रो पार न देखे ।
 त्यांने साधवीयां सरधे इण लेखें ॥ २६ ॥
 त्यांने वांचां पूज्या कहें एकत धर्मो ।
 ते भूला मिथ्याती एकंत धर्मो ॥ २७ ॥
 उस्ना कुसीलीयो कह्यो भगवंत ।
 उतकटो स्ले तो काल अनंत ॥ २८ ॥
 तिणनें वांचां वंचे पाप करमो ।
 तिण नें भेषधारी कहे छें धर्मो ॥ २९ ॥
 च्यार महीनां रो प्राच्छित आवें ।
 तिण नें वांचां धर्म मिथ्याती वतावें ॥ ३० ॥
 यारा साधपणा सगला रा भागां ।
 त्यांने समकत विहूणा कहिजे नागां ॥ ३१ ॥
 यारी सरधा रो छेह न आवे वेगो ।
 यांरी छोटी सरधा नें भूठ रो ठेगो ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

ढुहा

भेषधारी विगडायल जेन रा, ते भूला सूतर वांच ।
उंधा अर्थ करे घणां, त्यांरो विकल माने ले साच ॥ १ ॥
सुध साघां नें निन्व कहें, ले ले सूतर रो नांम ।
पोतें केडायत निन्वां तणा, ते पिण खबर नही छें तांम ॥ २ ॥
त्यांरी सुध बुध तो चलती रही, तिण सूं बोले आल पंपाल ।
त्यांरे न्याय निरणो घट में नहीं, तिण सूं भाषें अग्यांनी अलाल ॥ ३ ॥
निन्व कहिजें केहनें, किण नें कहिजें सुध साघ ।
समचें ओलखाउं दोनूं भणी, त्यांरी विरलां परसी लाघ ॥ ४ ॥

ढाल

[भव जीवां तुम्हें जिन धर्म ओलखो]

एक धर्म कहें जिण आगना मभे, एक कहें रे धर्म जिण आगना बार ।
यांमें साची सरघा छें केहनी, किण रो भूखी रे सरघा घोर अंधकार ।
बुधवंता यांमें निन्व कहिजें केहनें* ॥ १ ॥
धर्म कहें श्री जिण आगना मभे, ते केडायत रे श्री जिणजी रा जाण ।
जिण धर्म जिण आगन्या बारें कहे, ते केरायत रे निन्वां रा पिछाण ॥ २ ॥
जिण करणी में जिण आगना नहीं, तिण करणी में रे साघ साभे मून ।
तिण में एक कहे मिश्र धर्म हवो, एक कहे रे ए तो करणी जवून ॥ ३ ॥
साघ मून साभें पिण बोले नहीं, तिण करणी नें रे सावद्य जाणें तो ठीक ।
मिश्र कहे ते केडायत निन्वां तणा, तेरासीया रे जिम जाणजों तहतीक ॥ ४ ॥
आहार पांणी कपडादिक आण नें, जिण आग्या सूं रे भोगवें छें सुध साघ ।
तिण में एक कहे पाप लागे नहीं, एक कहे रे इविरत नें परमाद ॥ ५ ॥
साघ आहार पांणी कपडादिक भोगव्यां, पाप न कहे रे ते तो जिणजी रा साघ ।
पाप कहें ते पाषंडी कें निन्वा, त्यांरे होसी रे भव-भव मे असमाघ ॥ ६ ॥
एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, तिण करणी में रे पाप करम लागे नांहि ।
एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, पाप लागे रे तिण करणी रे मांहि ॥ ७ ॥
जिण आगना दीये तिण करणी मभे, पाप लागो रे न कहे ते साची वात ।
जिण आगना सहीत करणी मभे, पाप कहे छें रे तिण रा घट में मिध्यात ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक कहेँ छेँ अमुक अंतक भोग्ये,
एक कहेँ बंदीक अमुक भोग्यो,
अमुक भोग्येँ ने तो बंदीक नहीं,
दिन तेँ बंदीक तो दिखल कहेँ
एक कहेँ नव नव ओखल्योँ नहेँ,
एक कहेँ नव नव ओखल्योँ विना,
नवनव ओखल्योँ बेगो मावनगो,
नवनव ओखल्योँ विनाँ बेगो कहेँ,
एक कहेँ संजो बरत सारोँ नेहूँ नै,
एक कहेँ दिख्योँ देई बडो गुहनो,
बरत सारोँ दिख्योँ देई छोटोँ करेँ,
बरत सारोँहिँ बडो रो बडो गार्हो,
एक कहेँ पार कीजोँ बगारोँ,
एक कहेँ सार कीजोँ पार छेँ,
पार कीजोँ बगारोँ नयोँ जंगोँ,
कीजोँ गार कगारोँ मिथ कहेँ,
एक बनेँ कहेँ छेँ विन नै,
दुनिँ कुन निन नै कुन मात्र छेँ,
विन नहेँ बनेँ कहेँ तेहनी,
दुविन नहेँ बनेँ कहेँ तेहनी,
एक कहेँ देवगु बनेँ बगारोँ,
एक कहेँ देवगु बनेँ बगारोँ,
देवगु बनेँ बगारोँ हुरा नहीँ,
इत कहेँ तेँ केड,उड, कीन चाँ,
एक कहेँ टोला मूँ न्याग तेहनेँ,
एक कहेँ टोला कहेँ मूँ बंदीक,
टोला मूँ न्याग कीजोँ - तेहनेँ,
दिन बनेँ ओखल्योँ विनाग रो,
एक कहेँ अकल विनेँ एकलो,
एक कहेँ अकल विनेँ एकलो,
अकल एकल विनेँ - तेहनेँ,
अकल एकल नै मात्र लेखनेँ,

ने तो मात्र रे कहेँ नहीं बंदीक।
याँ बंदीकोँ नै रे दिन रो भुवा ठीक ॥१६॥
आ जोँ जंगोँ रे मूँ मात्र रो बड।
ने तो बंदीकेँ दिनाँ रो पाँट नयेँ ॥१७॥
दिखा देई रे मेलो करयो अहार।
दिखा बेगो रे डीठन कगारोँ विनार ॥१८॥
इत माहोँ रे तेँ जोँ दिनाँ रो मूँट।
इत माहोँ रे तेँ जोँ दिनाँ रो मूँट ॥१९॥
दिखा देई रे छोटोँ करयोँ कहेँ।
आ जोँ मारी रे भुवा छेँ ठीक।
आ दिनाँ रो रे सरवा जोँतेँ प्रहरीक ॥२०॥
मयोँ लंग्योँ रे टीरुँ कगारोँ छेँ पार।
कगारोँ रे कीजोँ मिथ बनेँ अर ॥२१॥
याँ नियोँ नै रे पार कहेँ तेँ कीर बेग।
दिन दिनाँ रो रे पूज्य अंतर नै ॥२२॥
एक कहेँ रे बनेँ अविन नै लाग।
गंगेँ दिन रे कर लीजेँ निखान ॥२३॥
भुवा बंदीक रे मूँट रे न्याग।
भुवा बंदीक रे दिनाँ रो छेँ जग ॥२४॥
नहीँ हुरा रे छगल ग लीक।
छगल नै रे हुरी निम डीक ॥२५॥
कीजोँ रो रे - छबोई बड।
हुरा कहेँ रे तेँ तोँ दिनाँ ग बड ॥२६॥
नहीँ बंदीक रे दिन कहेँ दिनाँ।
याँ बंदीकोँ नै रे दिन सारीँ दिन मात्र ॥२७॥
नहीँ बडि रे दिन कहेँ दिनाँ।
बंदीक दिन रे सारीँ दिन बंदीक पाठ ॥२८॥
दिन एकल नै रे मात्र भवनोँ नाहिँ।
दिन नै मात्र रे सखेँ पडनेँ प्याँ नाहिँ ॥२९॥
मात्र न भवनोँ तेँ तोँ दिनाँ रो मात्र।
ने तोँ दिनाँ रे मूँटोँ करेँ दिनाँ ॥३०॥

साघ ने बांढण जाता थकां, मारग में रे तस थावर री हुवे घात ।
 तिण री एक तो पाप लागो कहे, एक कहे रे पाप नहीं अंस मात ॥२५॥
 तस थावर मूंआ री पाप लेखवे, ते तो सरघा रे सुघ साघां री अटल ।
 जीव मूंआ त्यांरी पाप न लेखवें, त्यांने जाणों रे निश्चें निन्वां असल ॥२६॥



रत्न : ६

मिथ्याती री करणी री चौपई

ढाल : १

ढुहा

अरिहंत सिध ने आयरीया, उवम्हाया सगला साध ।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचूं पद अराध ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण घणी, सासण नायक सांम ।
त्यां माथे हाथ देइ करी, साख्यां घणां ना कांम ॥ २ ॥
त्यां श्री जिण मुख सूं भाखीया, आगम सार सिधंत ।
त्यांरो हलूकमीं निरणों कीयो, त्यां पायों छें मारग तंत ॥ ३ ॥
केई सुतर वाचे जिण भाखीया, पिण पूरा मूढ अयाण ।
उंघा उंघा अर्थ करें, ते ववेक विकल समांण ॥ ४ ॥
पेहला गुणठांणा रो घणी, बेराग मन मांहे आंण ।
दांन सीयल तप भावनादिक, निरवद करणी करे जांणजांण ॥ ५ ॥
तिण करणी ने मूढ मूखं कहे, मिथ्याती री करणी नही सुघ ।
उणरे संसार वघे करणी कीयां, उणरे प्राकम सर्व असुघ ॥ ६ ॥
जो उ घणी घणी करणी करे, तो घणो घणो वघें संसार ।
तिणरी सरघा परगट कळं, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या मे]

केई परकत रा भद्रीक मिथ्याती, वले विनेवंत साघां रा ताहि ।
दया तणा परिणांम छे चोखा, वले मच्छर नहीं तिणरा घट माहि ।
इण निरवद करणी रो निरणो कीजों ॥ १ ॥
तिणरे घर साधूजी गोचरी आया, ते साघ ने देख हुवो हरख अगार ।
सात आठ पग सांद्दो आय ने, सीस नमाय वांछा वाळंवार ॥ २ ॥
पछे रसोडा घर माहे लेजाए, प्रतिलाभ्यों असणादिक च्याहंइ आहार ।
तिणरो असुघ प्राकम सरघें अग्यांनी, वले कहे तिणरे वचीयों संसार ॥ ३ ॥
मिथ्याती साघां ने असणादिक देवे, तिणरो तो उ प्राकम असुघ जाणे ।
तो पिण उणरे घर जाए अग्यांनी, असणादिक किण लेखे आणे ॥ ४ ॥
वले वस्त्र पातर आहार ने पांणी, साघां ने दीयां जाणे छे वघतो संसारो ।
तेहीज तिणरो असणादिक वेहरें, तो उणरे लेखे उ कांय पाडें छे घाडो ॥ ५ ॥

जिण नें आप जाणें छें निश्चें मिथ्याती,
अमुघ प्राकम जाणें छें त्यांरो,
जो मिथ्याती उणनं असणादिक देवें,
उणरी करणी नें प्राकम अमुघ जाणें छें,

ज्यांरो आहार पांणी कपडादिक लेवें,
आप रा मुतल्लव काज ओरां नें डवोवे,
मन गमतों चोखो चोखो आहार वेंहरायों,
तिणरो दांन नें प्राकम असुव जाणें छें,
असणादिक नित ल्यावे छें घणा घरां रो,
नित नित घणां रे संसार वचारें,
इण री सरवा रे लेखें मिथ्याती रा घर रो,
वले सेज्या संथारो वस्त्र नें पातर,
जो अनेरी सरवा रों उण ने आय पूछे,
थाने दांन दीयां करणी सुव कं असुघ,
आप नें भारी भारी म्हें वस्त्र वेंहराया,
म्हे कल्पे ते वस्त आप नें दीवी,
आप नें दान दीयां री सुघ करणी हुवें,
जो सुघ नहीं हुवे तो असुघ कहों थे,
सुघ करणी कहां निज सरवा उठे छें,
प्रश्न पूछ्यां रो जाव तो देणी न आवें,
जव उ कहे म्हें पुन री तो पूछा न कीघी,
भली करणी कहां पुन नें धर्म जाणें,
थाने दांन दीयां आछी करनी न जाणों,
तिण सू आप करणी हुवे ते वतावो,
हूं कहवायां विनां आप ने नही छोड़ूं,
थानें दांन दीयां आछी करणी कहो,
थाने दांन दीयां आछी करणी न कहो तो,
म्हें थाने दान दीयां ते करणी,
म्हे तो म्हारें कारण पूछा करी छें,
थाने दांन दीयां री भूंडी करणीं छें,
थे साव थइ इसरा कांम कीघां,

त्यांरो असणादिक जांणी जांणी नें ल्यावें ।
तो उणरें लेखे उ ठागों कांय चलावें ॥ ६ ॥
तो ओ तुरत लेवण नें त्यांरी होवें ।
तो साव थइ ओरां नें कांय डवोवें ।
इण मूढ मती रो निरणों कीजो* ॥ ७ ॥
त्यारें सांप्रत जाणें छें वधतो संसार ।
विग विग छें तिणरो जमवारो ॥ ८ ॥
वले मही मही चोखो कपडो वेंहरावें ।
वले तिण हीज दांन नें तेहीज सरावें ॥ ९ ॥
त्यां सगलां रें जाणें छे ववीयां संसार ।
ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार ॥ १० ॥
असणादिक वेंहरणों नही कांइ ।
तिण मिथ्याती रो जावक वेंहरणों नांही ॥ ११ ॥
म्हारों असणादिक थे वेंहरी वेंहरीने ल्यावों ।
म्हारें फल लागें ते जयातथ वतावों ॥ १२ ॥
मनगमतों वेंहरायो म्हें आहार नें पांणी ।
म्हें तो आप नें दांन दीयां धर्म जांणी ॥ १३ ॥
तो सुव करणी मुख सूं कही आप ।
यां दीयां में एकण री करो थाप ॥ १४ ॥
असुव करणी कहां तो उ घेखी थावें ।
जव पुन कहे ने उ पिडों छुडावें ॥ १५ ॥
थानें दान दीयां री करणी कहो आप ।
भूंडी कहां तो जाण सूं एकंत पाप ॥ १६ ॥
थाने दांन दीयां करणी जाणो थे भूंडी ।
हिवें मती करों आप गला गोलो ।
मोनें पिण आप निपटम जाणो भोलो ॥ १७ ॥
तो हूं जाण सूं थानें मोटा अणगारो ।
हूं जाण लेसूं थाने पिण दगादारो ॥ १८ ॥
आछी जांणो तो चोड़े कहिदो आछी ।
संका कांय आणो थे कहितां साची ॥ १९ ॥
तो थे ठा ठा नें म्हारो स्वावो छें मालों ।
थांरों परभव में होती कूण हवालो ॥ २० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

थानें दान दीयां आछी करणी न जाणों,
 वले भूंडी करणी कीयां पुन वतावों,
 पुन सरधो थे भूंडी करणी मे,
 भूंडी करणी कीयां निश्चे पाप लागे छें,
 जो इसडों मिलें कोइ पूछण वालो,
 जब अकल विकल थइ उघो बोलें,
 पेहले गुणठाणे दान साधां नें देइ ने,
 तिण दान रा गुण देवतां पिण कीचां,
 — सुपातर दान री कोइ करे दलाली,
 सुपातर दान री कोइ करे परसंसा,
 पेहले गुणठाणे सील पाले छे,
 तिणरो सील असुघ जाणें अग्यानी,
 पेहलें गुणठाणे तपसा करे छें,
 वले हरी नीलोतरी त्याग करे छे,
 दान सील तप तणी भावना भावें,
 जो उ घणो घणो बेराग करे तो,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 इसडी परूपणा करे अग्यानी,
 पेहलें गुणठाणे निरवद करणी करे छें,
 अतिचार लागो कहे समकत मांही,
 निरवद करणी कोइ करे मिथ्याती,
 तिणने भगवत पिण आगना नही देवे,
 मिथ्याती री करणी मांहे गुण नही जाणें,
 वले तेहीज मिथ्याती ने सूंस करावे,
 वले कहि कहि मिथ्याती ने हरी छुडावें,
 उपवास बेलादिक कहि कहि ने करावे,
 वले मिथ्याती ने उपदेस देई ने,
 राती भोजनादिक रो पिण त्याग करावें,
 वले बखाण सुणावें छें तिणने,
 संथारो पिण करावे उपदेस देइने,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 वले असुघ प्राकम जाणे छे तिणरो,
 ३३

थाने दान दीयां करणी जाणो थे भूंडी ।
 ते निश्चें न चाले खोटी हूंडी ॥ २१ ॥
 तो पाप होसी किण करणी माय ।
 ते पिण थानें समझ न कांय ॥ २२ ॥
 तो पग पग सरवा मांहे अटकावें ।
 पिण पूछ्या रो जाब पूरो नही आवें ॥ २३ ॥
 परत ससार कीधो छे जीव अनत ।
 ठाम ठाम सूतर में कह्यो भगवंत ॥ २४ ॥
 वले हर कोइ देवे सुपातर दान ।
 यांतीनां री आछी करणी कही भगवान ॥ २५ ॥
 बेराग सहीत चोखे परिणाम ।
 वले ससार वधीयो जाणे छे ताम ॥ २६ ॥
 उपवास बेलादिक चोखे परिणाम ।
 ते सगलाई असुघ कहें छे ताम ॥ २७ ॥
 वले तिणने ससार लागें खारो ।
 उ घणो घणो जाणे वधतो ससारो ॥ २८ ॥
 तिण करणी ने जावक जाणे असुघ ।
 तिणरी मिष्ट हुइ छे सुघ ने बुध ॥ २९ ॥
 तिणरी करणी सराया में दोषण जाणे ।
 तिणरो न्याय जाण्यां विण मूर्ख ताणे ॥ ३० ॥
 तिणरे कहे गुण नीपजे नही कांइ ।
 एहवी कहे छे अग्यानी परपदा मांही ॥ ३१ ॥
 सरावे तिणने पिण दोष बतावे ।
 त्यांरा बोल्या री परतीत किण विध आवे ॥ ३२ ॥
 जमीकंदादिकना पिण सूंस करावे ।
 तेहीज तिण करणी ने असुघ वतावें ॥ ३३ ॥
 कुसीलादिक छोडे तो छोडावे ।
 छकाय ने चवदे नेमादिक सीखावे ॥ ३४ ॥
 वले कहि कहि ने तिणने ग्यान सीखावे ।
 तेहीज तिणरी करणी असुघ वतावे ॥ ३५ ॥
 तिणरी असुघ करणी कहे छें वाह्वार ।
 वले करणी कीयां जाणें वधीयो ससार ॥ ३६ ॥

ढाल : २

ढुहा

जीव अजीव जाणे नही तेहनें, पेहले गुणठाणे कह्यो जिणराय ।
 त्यांरा पचखाण दुपचखाण कहा, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ १ ॥
 पेहले गुणठाणे विरत न नीपजे, तिण लेखे कहा दुपचखाण ।
 पिण निरजरा लेखे पचखाण निरमला, उत्तम करणी बखाण ॥ २ ॥
 पेहले गुणठाणे करणी करे, तिणरे हुवे छे निरजरा धर्म ।
 जो घणो घणो निरवद प्राकम करे, तो घणा घणा कटे छे कर्म ॥ ३ ॥
 पेहले गुणठाणे दान दधा थकी, कीयो छे परत संसार ।
 थोडासा परगट करू, ते सुणजो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल

[पाखड वधसी आरे पाच मे]

सुलम थो सुमुख नामे गाथापती रे, तिण प्रतिलाभ्या सुदत्त नामे अणगार रे ।
 तिण परत संसार कीयो तिण दान थी रे, विपाकसूतर मे छे विस्तार रे ।
 ए निरवद करणी मे छे जिण आगना रे* ॥ १ ॥

सुमुख गाथापति ज्यू दसा जणा रे, त्यां पिण प्रतिलाभ्या अणगार रे ।
 त्या परत संसार कीयां सगला जणा रे, विपाक मे जूवो जूवो विस्तार रे ॥ २ ॥
 जत्र देवता वजाइ थी देवदुदमी रे, तिण दान रा कीयां घणा गुणग्राम रे ।
 थे भिनष जन्म तणो लाहो लीयो रे, जस कीरत कीयीं छे तिण ठाम रे ॥ ३ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती करे पळपणा रे, मिथ्याती तो न करे परत संसार रे ।
 जो मिथ्याती दान देवे सावां भणी रे, तिण करणी मे सार नही लिंगार रे ॥ ४ ॥

सुमुख ने आदि देइ दसां जणां रे, त्या दान थी न कीयीं परत संसार रे ।
 ते साव ने देखे ने हरखत हूआं रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे ॥ ५ ॥
 त्यां उपसम समकत थी दसां जणां रे, सगलाइ कीयीं परत संसार रे ।
 ते समकत अंतरमुहरतमें वमी रे, पळे भिनष आउखो बांध्यो तिणवार रे ॥ ६ ॥

इसडी वार्ता मन सुं उठाय नें रे, दान री करणी कहे असुघ रे ।
 ते सके नही सूतर ज्यापता रे, मिष्ट हुइ छे त्यारी वुव रे ॥ ७ ॥
 सांप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दानथी कीयीं परत संसार रे ।
 भिनष रो आउखो बांध्यो दानथी रे, जोवो विपाक सूतर मफार रे ॥ ८ ॥

*यइ आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

मुद्रा गो विजय नामे गाथापति रे, निग प्रनिष्ठाया भगवान श्री महावीर रे ।
 तिण पन्न मंगार तीया तिग मन्त्री रे, दान नूं पांमो भवच्छ तीर रे ॥ ६ ॥
 आपन्न ने मुद्राया निग तीये रे, क्ले च्छुल वाद्यण निमरीज जान रे ।
 ह्यो वीर ने दान देः पन्न ज्ञान रे, पन्न मंगार तीयो हे देना पाण रे ॥ १० ॥
 चां च्छार रे मन्त्राया ती विद्या ह्य रे, पान दग्ग पण्डया ताम रे ।
 निहा देव पन्ना देवदुग्गी रे, या प्यानां न कीया घना मुद्राम रे ॥ ११ ॥
 क्ले धिन धिन गो दे प्याने देव्या रे, धे मफल तीयो मानव अद्वार रे ।
 दान निरदोपण देव वीर ने रे, निग नो पत्त वीयो मुद्रार रे ॥ १२ ॥
 जम तीया तीये प्याने देवता रे, वरे म्मिन्ता तिग तीया घना गुणताहि रे ।
 तिगार धिन्ताय पन्ना दे धीय पन्नो रे, भगोती न पन्नमा मनक रे माहि रे ॥ १३ ॥
 त्याने दान वीर हे मिया ती भके रे, निर्याती भान तीयो पन्न मंगार रे ।
 ण कणी नी तिगो नी हे आगता रे, तिण पन्ना मे अवगुण नी तिगार रे ॥ १४ ॥
 विजे गाथापति आदि प्याने पन्ना रे, त्या दान ती न तीयो पन्न मंगार रे ।
 ने तिग मन्त्र ने कीया पन्नीया रे, उन्नम मन्त्रन आः तिगार रे ॥ १५ ॥
 ह्या उन्नम मन्त्रन पन्नी धी च्छार पन्ना रे, मन्त्राः तीयो पन्न मंगार रे ।
 देव पन्नो आउतां वान्नीयो रे, न् मिद्यानी नी ह्यता तिगार रे ॥ १६ ॥
 उमरी याना पन नूं उठाने रे, दान नी कणी वहं अनुध रे ।
 ते मके नदी सूतर उद्याता रे, भिट ह्य छे त्यांगी व्व रे ॥ १७ ॥
 साप्रत सूतर माहे उम कणी रे, शन धी कीयो पन्न मंगार रे ।
 देव आउतां वाध्यो दान धी रे, भगोती न पन्नमा मनक मभार रे ॥ १८ ॥
 घणा मिद्यानी श्री भगवान ने रे, ह्य नूं वीयो निरदोपण दान रे ।
 तिण दान नी कणी ने कहे अनुध छे रे, त्या विद्यां न घट मे घोर अद्यान रे ॥ १९ ॥
 अन्ता तीर्थकर ह्या तेहने रे, त्याने ह्य नूं वीयो अनता दान रे ।
 त्या सगळां नी कणी कहे अनुध छे रे, ने भवभव मे होमी घणा हिगंन रे ॥ २० ॥
 — देवती वेहरायो विजोग पाक ने रे, तिण दान सू कीयो परत संसार रे ।
 क्ले देव आउतां वांध्यो दान धी रे, ते विजय ज्यं जाण लेजो विस्तार रे ॥ २१ ॥
 जिग ने वाटे हरकेसी साव ने रे, ब्राह्मणा वीयो निरदोपण दान रे ।
 तिण दान री जम महिमा कीवी देवता रे, ते सूतर माहे गुंथ्यो भगवान रे ॥ २२ ॥
 मिथ्याती अनता मातर दान धी रे, निग्गेइ कीयो परत संसार रे ।
 ए वीर ना वचन उथापे पापीया रे, भूठ वोऽ ने ह्या त्यार रे ॥ २३ ॥
 सीले आचार करं सहीत छे रे, पिण सूतर ने समकत तिणरे नाहि रे ।
 तिणने आराधक क्ह्यो देसथी रे, विचार कर जोवो हीया माहि रे ॥ २४ ॥

देस थकी तो आराधक कह्यो रे, पहले गुणठाणे ते किण न्याय रे ।
 विरत नही छें तिणरें सर्वया रे, निरजरा लेखे कह्यो जिगराय रे ॥ २५ ॥
 जो पेहले गुणठाणे असुघ करणी हुवे रे, तो देस आराधक कहिता नाहि रे ।
 ते विस्तार भगोती सतकज आठमें रे, ए चौभगी दसमा उद्देसा माहि रे ॥ २६ ॥
 देस आराधक करणी जिण कही रे, ते करणी छे जिण आग्या माय रे ।
 कर्म कटे छे तिण करणी थकी रे, तिणने असुघ कहे ने बूंडो काय रे ॥ २७ ॥
 तामलीतापस तप कीवो घणो रे, साठसहंस वरसां लग जाण रे ।
 बेले बेले निरतर पारणों रे, बेराग भावे सुमता आण रे ॥ २८ ॥
 आहार बेहरी ने ल्यायों तेहने रे, पांणी सू घोयो इकवीस वार रे ।
 सार काढे ने कूकस राखीयो रे, एहवो पारणे कीयो आहार रे ॥ २९ ॥
 तिण संथारो कीयों भला परिणाम सूं रे, जब देवदेवी आया तिण पास रे ।
 त्यां नाटक पाडे विवध परकारना रे, पछे हाय जोखी करें अरदास रे ॥ ३० ॥
 म्हे चमरचंचा राजघ्यांनी तणा रे, देवदेवी हुआ म्हे सर्व अनाथ रे ।
 इंद्र हूंतो ते म्हारो चव गयो रे, थे नीहाणो कर हुवो म्हारा नाथ रे ॥ ३१ ॥
 इम कहे ने देवदेवी चलता रह्या रे, पिण तामली न कीयो नीहाणो ताय रे ।
 तिण कर्म निरजरीया मिथ्याती थकां रे, ते इसाण इद्र हुवो छे जाय रे ॥ ३२ ॥
 ते देवचवी नें होसी मांनवी रे, महाविदेह खेतर मझार रे ।
 ते साध थई ने सिवपुर जावसी रे, ससारनी आवागमण निवार रे ॥ ३३ ॥
 इण करणी कीवी छे मिथ्याती थके रे, तिण करणी सू घटीयो छे ससार रे ।
 इंद्र हुवो छे तिण करणी थकी रे, इण करणी सूं हुवो एकावतार रे ॥ ३४ ॥
 जो तामलीतापस तप करतो नही रे, तो तपसा विण इंद्र हूतो नाहि रे ।
 एकावतारी पिण हूंतो नही रे, विचार करे देखों मन माहि रे ॥ ३५ ॥
 जो निरवद करणी मिथ्याती करे रे, ते पिण कर्म करे चकचूर रे ।
 तिण निरवद करणी ने कहे असुघ छे रे, तिणरी सरघा मे कूड कूड मे कूड रे ॥ ३६ ॥
 तामली बालतपसी तेहनी रे, करणी तणो करो निस्तार रे ।
 ए भगोती सूतर रे सतकज तीसरे रे, पेहला उद्देसा मे विस्तार रे ॥ ३७ ॥
 असोचा केवली मिथ्याती थकां रे, छठ छठ तप कीयो निरंतर जाण रे ।
 वले लीची सूर्य सांही आतापना रे, बांह दोनूड उंची आण रे ॥ ३८ ॥
 परकत रों भद्रीक ने वनीत छे रे, उपसंतपणो घणों छे ताहि रे ।
 क्रोध मान माया ने लोभ पातला रे, मांन ने मर्द लीयो तिण मांहि रे ॥ ३९ ॥
 इद्री ने वस कर लीवी जाण नें रे, वले घणा छे गुण तिण माहि रे ।
 इसरा गुणा सहीत तपसा करे रे, करमां ने पतला पाडे छे ताहि रे ॥ ४० ॥

इन कर्तों एकाग्र श्रद्धावै तैहनां रे,
 बने चहटी चरती, कस्या दिगुव छै रे,
 उदावनीं कर्म पयउपमन हुवां रे,
 न्याय नाराय नै कर्ता रवेइना रे,
 जो शंको जंगे विमंग अनान मू रे,
 उरुत्रो जंगे नै शंके तैह मू रे,
 कचे जंगे विमंग अनान मू रे,
 पार्वीयां नै जंग्यां पाइया रे,
 नार्गी मंगरिछी जंग्यां तैहने रे,
 विमुव विमंग, वन हुवा तैहने रे,
 इन गीतें पंहुला जो मनकत पार्वीयां रे,
 पछे अनुकने हुवा केवली रे,
 अनेत्रा केवली हुवा इन गीत मू रे,
 कर्म पतया पच्छा निव्याती शकां रे,
 जो निव्याती शकां जना कर्तों नही रे,
 प्रायादिक नही पाइतो पातया रे,
 जो कल्या परिपान मला हुवा नही रे,
 इत्यादिक कीयां मू हुवां अनरुटी रे,
 पंहुले गुणतापे निव्याती शकां रे,
 तिन करणी थी नाव लागी छै मूत्र गी रे,
 अनचा केवली गी करणी तगो रे,
 नवनां मदक रे उइवें इपान मं रे,
 मनकत तिन हाये न नव नमे रे,
 तिन पत्र संसार कीयो वया शको रे,
 निव्याती निरवद करणी कर्तां शकां रे,
 तिन करणी नै अमुव वहुं छै पागिया रे,

जया मुन अववयं परिपान रे।
 विषय विचार कर्तां नहीं हान रे ॥४१॥
 कया लागे ते मुव विचार रे।
 विमंग अनान उरवें त्रिवार रे ॥४२॥
 अंगुच रे अरुण्यता नै नग रे।
 अरुण्यता लोचन उहवें नै नग रे ॥४३॥
 लीव नै अरीव तगें नव रे।
 तानें हुइता जंग्यां नवजल कून रे ॥४४॥
 संकल्प कर्ता जंग्यां छै तान रे।
 जगें तिन जंग कीया तिन छान रे ॥४५॥
 विमंग अनान रे हुवो अव विगिपान रे।
 पछे पयो पांचमी गति प्रवाल रे ॥४६॥
 निव्याती शकां तिन करणी कीव रे।
 तिन मू अनुकने तिवदूर लीव रे ॥४७॥
 निव्याती शकां नहीं छेटी जाडार रे।
 तं तिन विष कर्ता इया पान रे ॥४८॥
 जो तिन विष पानत विमंग अनान रे।
 अनुकने पंहुतो छै निरवांग रे ॥४९॥
 निरवद करणी कीयो छै तान रे।
 नै करनी चोही नै मुव परिपान रे ॥५०॥
 विस्तार नगोती मूत्र माहि रे।
 त्रिहां जोय निरगो कर लीजो माहि रे ॥५१॥
 मुगला री वया पाली छै ताहि रे।
 जेवें पंहुला अनेन तिताता माहि रे ॥५२॥
 समकत पाय पोहता निरवांग रे।
 ते निरवद पूरा मूड अद्यां रे ॥५३॥

ढाल : ३

दुहा

सूर्यगडाअंग आठमा अघेन मे, दोय गाथा कही तिण मांय ।
 तेवीसमी ने चोवीसमी, तिणरो मूढ न जांणे न्याय ॥ १ ॥
 जे ततवना अजाण छे, मोटा भाग सहीत ।
 ते वीर सुभट वाजे लोक में, पिण समकत कर ने रहीत ॥ २ ॥
 ते करणी निरवद करे, दांन सीलादि निरदोष ।
 मास खमणादिक तपसा करे, तिणरी करणी कहे सर्व फोक ॥ ३ ॥
 असुध प्राकम कहे तेहने, करणी कीयां वधे संसार ।
 कर्म वध कहे तिणरे सर्वथा, निरजरा नही कहे लिगार ॥ ४ ॥
 इण विध अर्थ उंघा करे, निरवद करणी ने कहे छे असुध ।
 ते ववेक विकल सुध बुव विनां, त्यांरी भिट हुइ छे बुव ॥ ५ ॥
 तेवीसमी गाथा तणो, तिण मूल न जांण्यो न्याय ।
 असुध प्राकम कह्यो तेहनो, तिणरो अर्थ सुणो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[श्री नेम जिखद समोसरथा रे लाल]

असुध प्राकम कह्यो तेहनो रे, ते असुध करणी तणो कथन जांण रे ।
 सुध करणी रो कथन इहां नही रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे ।
 सुध सरघा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
 जे खोटी करणी मिथ्याती करे रे, ते जिण आगना बाहिर जाण रे ।
 ते असुध प्राकम तिणरो कह्यो लाल, तिणसूं पाप कर्म लागे आंण रे ॥ सु० रे ॥
 असुध करणी रो असुध प्राकम कह्यो रे, ते विकलां ने खवर न काय रे ।
 तिणसू निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणने असुध कहे ताय रे ॥ ३ ॥
 सावद्य निरवद करणी मिथ्याती करे रे, यां दोनू ने कहे छे असुध रे ।
 तो उणरी सरघा रो लेखो कीया रे लाल, समकती रो प्राकम सर्व सुध रे ॥ ४ ॥
 जे ततवतणा केइ जाण छे रे, ते मोटा भाग सहीत रे ।
 ते वीर सुभट वाजे लोक में रे लाल, ते समकत करने सहीत रे ॥ ५ ॥
 ते करणी निरवद करे रे, दांनसीलादिक निरदोष रे ।
 मास खमणादिक तपसा करे रे लाल, तिणसू कर्म तणो हुवे सोख रे ॥ ६ ॥

*ग्रह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

निरवद करणी ते सुघ प्राकम कह्यो रे,
 शेष करणी असुघ प्राकम कह्यो लाल,
 ते असुघ प्राकम समदिष्टी तणो रे,
 सुघ प्राकम मिथ्याती तणो लाल,
 तिण ठामें तो कथन इतलेंज छें रे,
 समदिष्टी रा सुघ प्राकम तणो रे लाल,
 सावच्च निरवद करणी मिथ्याती तणी रे,
 तो समदिष्टी री दोनूं करणी तणो रे लाल,
 मिथ्याती निरवद करणी करें रे,
 ते ववेक विकल सुघ वुघ विनां रे लाल,
 बले मूढ मिथ्याती इम कहें रे,
 मिथ्याती तणी करणी तणो रे लाल,
 निरवद करणी मिथ्याती तणी रे,
 अे दोनूं दुरगत रो कारण कहे रे लाल,
 आचारंग पांचमां अचेयन रो रे,
 भोला नें न्हाळें भर्म में रे लाल,
 आचारंग तिण ठामें तो इम कह्यो रे,
 तिण करणी करण रों उदम करे रे लाल,
 निरवद करणी जिण आगना सहीत छे रे,
 ते पिण कुमारग में पड्या रे लाल,
 अठें कुमारग री करणी कही रे,
 अें दोनूं कुगति रा कारण कह्या रे लाल,
 अठें मिथ्याती ने समदिष्टी तणों रे,
 उठे करणी निखेवी आग्या वारली रे लाल,
 बले निखेव्यों परमारद ने रे,
 तिणने दुरगतिनों कारण कह्यो लाल,
 करणी जिण आगना मांहिली रे,
 जे करसी ते सुख पावसी रे लाल,
 एहवो कथन आचारंग नें मझे रे,
 तिणसूं निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल,
 निरवद करणी मिथ्याती करे रे,
 समदिष्टी रा परमाद सरिखी कही र लाल,

ते जिण आगना माहिलों जाण रे ।
 तिण सू पाप कर्म लागें आण रे ॥ ७ ॥
 तिणरो कथन नहीं तिण ठाम रे ।
 तिणरो पिण कथन नही छें तांम रे ॥ ८ ॥
 असुघ प्राकम मिथ्याती रो तांम रे ।
 फल वतायो तिण ठाम रे ॥ ९ ॥
 यां दोयां रो प्राकम हुवें असुघ रे ।
 प्राकम हो जाअे सुघ रे ॥ १० ॥
 तिणरी करणी कहें छें असुघ रे ।
 त्यांरी भिष्ट हुइ छे वुघ रे ॥ ११ ॥
 समदिष्टी तणों परमाद रे ।
 यां दोयां ने कहें असमाद रे ॥ १२ ॥
 समदिष्टी तणो परमाद रे ।
 एहवो कूडों करें छें विवाद रे ॥ १३ ॥
 छडों उद्देसों वताय रे ।
 तिणरो उधो अर्थ वताय रे ॥ १४ ॥
 सावच्च करणी जिण आगना वार रे ।
 ते पडीया कुमारग मम्मार रे ॥ १५ ॥
 तिणमें उदम नही छें लिंगार रे ।
 करमां रा ववारण हार रे ॥ १६ ॥
 सनमारग रों कह्यो परमाद रे ।
 ए साची सरध्यां होसी समाद रे ॥ १७ ॥
 कथन नही छे लिंगार रे ।
 दुरगति नी पोहचावण हार रे ॥ १८ ॥
 करणी न करे जिण आगना सहीत रे ।
 तिहां जोय लो हडी रीत रे ॥ १९ ॥
 तिहां वीर कही निरदोष रे ।
 आग्या वारे करणी सर्व फोक रे ॥ २० ॥
 तिणरों अर्थ न जाण्यो ताय रे ।
 तिणनें कही दुरगति रों ज्याय रे ॥ २१ ॥
 तिणने कहे दुरगति रो उपाय रे ।
 बले पुन वतावें तिण मांय रे ॥ २२ ॥

समदिष्टी रा परमाद थी रे, पाप लागें छें आय रे
तो मिथ्याती री करणी मफे रे लाल, पुन क्यूं वतावे ताय रे ॥ २३ ॥
उणरी करणी दुरगति रो कारण कहे रे, तिण लेखें तों पुन नांही रे।
पुन सूं तो जाअें सुदगति मफे रे लाल, ते पिण निरणो नही घट माहि रे ॥ २४ ॥
मिथ्यात्वी निरवद करणी करें रे, तिणने दुरगति रो कारण कहे मूढ रे।
परमाद कहे अन्हाखी थकां रे लाल, तिण भाली मिथ्यात री रूढ रे ॥ २५ ॥
मिथ्याती दान देवे साचां मणी रे, तिणरे जांणे दुरगति रो उपाय रे।
बले तेहीज बेहरे तिणरो जांण नें रे लाल, इसडो कांय करे छे अन्याय रे ॥ २६ ॥
मिथ्याती देवे वस्त्र पातरा रे, बले देवे असणादिक व्याखं आहार रे।
तिणरें जांणे उपाय दुरगति तणो रे लाल, तो लेवा नें कांय हुवे तयार रे ॥ २७ ॥
घणा मिथ्यात्यां रा घर तणो रे, नित्य नित्य ल्यावे आहार रे।
त्यारे दुरगति वघारें जांण जांण ने रे लाल, त्यांने किम कहिजें अणगार रे ॥ २८ ॥
शील पालें मिथ्याती बेराग सूं रे, तपसा करें बेराग सूं ताय रे।
हरियादिक त्यागे बेराग सू रे लाल, तिणरे कहे दुरगत रो उपाय रे ॥ २९ ॥
इत्यादिक निरवद करणी करें रे, बेराग मन माहे आंण रे।
तिणरी करणी दुरगत रो कारणकहें रे लाल, ते जिण मारग रां अजांण रे ॥ ३० ॥
बले तेहीज मिथ्याती जीव ने रे, उपदेस दे दे वाखंबार रे।
फुसील छोडावे तेहनें रे लाल, बले तपसा करावण ने त्यार रे ॥ ३१ ॥
बले तिणने छोडावें नीलोतरी रे, बले छोडावे वस्त अनेक रे।
तिणरी करणी रा फल दुरगति कहे रे लाल, त्या विकलां में नही छें ववेक रे ॥ ३२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें कहे दुरगति ने परमाद रे।
ते ववेक विकल सुघ दुध विनां रे लाल, बोलें छे मिरखावाद रे ॥ ३३ ॥
निरवद करणी ओलखायवा रे, जोड कीवी नेणवा मभार रे।
समत अठारे सेंतालें समें रे लाल, वेसाख विद वारस थावरवार रे ॥ ३४ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

मलधुडलतल नलरवद करणी करे, तलणरें नलरजरल कहुल जलणरलड ।
 तलण डलहें संक ड रलखजु, जुवु सुतर रें डलंड ॥ १ ॥
 मलधुडलतल आछुल करणी कुडलं वलनलं, कुण वलष डलडें डडकुत सलर ।
 सुध डुरलकड सूं डडकुत डलंडसु, तलणडें संकल ड रलखु ललणलर ॥ २ ॥
 धूर सूं तुु जुलव मलधुडलतल थकलं, सुणुं सलघलं रल वलण ।
 गुडलंड डडकुत डलड सलघलं कने, अनुकुरडें डुहुकें नलरवलण ॥ ३ ॥
 सलघलं रल संगत कुडलं थकल, दस डुललं रल डुरलस जलण ।
 धुर सूं तुु सुणवु सुषंत रु, डछें गुडलंड वलणनलंड डकखलण ॥ ॡ ॥
 सजड नें आशुव रहुलत डणु, तडसल ने कड डुदलण ।
 नवडु कुललडल रहुलत डणुं, दसडुं सलष नलरवलण ॥ ॡ ॥
 संकल हुवें तुु डणुतुु डें जुुड लु, दूजें सतक डलंडडें उदुस ।
 सुणुडलं सूं डडकुत डलंडसु, इणडु कुड नहुल लवलेस ॥ ॡ ॥
 जुु मलधुडलतुु रल करणी असुध हुवें, वले असुध डुरलकड हुवें तलड ।
 जड सुणवुदु तलणरु असुध हुवे, तुु उ डडकुतुु कदुड न थलड ॥ ॡ ॥
 मलधुडलतुु नलरवद करणी करे, तलणने असुध कहुें तुु अडलण ।
 तलणरल जलड कहुं सुतर थकु, तुु सुणजुं कतुर सुजलण ॥ ॡ ॥

ढलल

[जगत गुडू तलसलल नदन वलर]

कुललुडलण करणी वलरतल, सुणुडलडल सूं जलणे सलखुडलत ।
 वले जलणे सुणुडलडल थकु, अकुललुडलण करणी वलत ।
 कंतुर नर डडडुं गुडलंड वलकलर* ॥ १ ॥
 कुललुडलण ने अकुललुडलण रल, सुणुडलं सूं दुुडलं रल ठलक हुुड ।
 दसवुलकललक कुुथल अवुडन डें जुु, इडुडलरसुल गलथल जुुड ॥ क० २ ॥
 मलधुडलतुु सुणे सलघलं कने, डछे करे छें डन डे वलकलर ।
 नलरणुं करे षट डलतरे, तलण सूं डलडें डडकुत सलर ॥ ३ ॥
 जुु मलधुडलतुु रु डुरलकड असुध हुवे, तुु वलकलरणल सुध नहुल हुुड ।
 असुध डुरलकड ने असुध वलकलर थु, डडकुत नहुल डलडें कुुड ॥ ॡ ॥

*डहु आंकडु डुरतुुक गलथल के अतुत डें हु ।

समकत पामे सुघ विचारीया, ते निश्चे सुघ प्राकम जाण ।
तिण प्राकम ने असुघ कहें, ते तो पूरा मूढ अयाण ॥ ५ ॥
सकडाल पुत्र श्री वीर नें जी, वदणा कीवी सीस नमाय ।
वले जायगा माहे उत्तारीया, पाट पाटला दीघा वेंहराय ॥ ६ ॥
तिण दान दीयो श्री वीर ने, मिथ्याती थकें निरदोष ।
अनुक्रमे समक श्रावक हुवो, तिण कीयो कर्मा रो सोप ॥ ७ ॥
तिणरा प्राकम ने कहे असुघ छे, वले असुघ करणी कहे ताय ।
कर्म बंधवा रों कारण कहे, ते तो चोडे मूला जाय ॥ ८ ॥
धर्म करवा ने जावक न उठीया, धर्म सुणवो न वांछे ताहि ।
तिणने पिण धर्म सुणावणो, जोवो आचारग मांहि ॥ ९ ॥
जिणरो सुणवा रो असुघ प्राकम हुवे तो, सीखणों पिण असुघ होय ।
जव धर्म न सुणावणो तेहने, ग्यान सीखावणो नही काय ॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद सीखे सुणे, तिणरी करणी जाणे छे असुघ ।
तेहीज सुणावे सीखावे तेहने, उणरे लेखे उणरी भिट बुघ ॥ ११ ॥
सोगवीया नगरी वाहिरे, नीलासोग वाग मभार ।
तिहा सुखदेव सिन्यासी आवीयो, साथे ल्यायो सीप हजार ॥ १२ ॥
तिण थावरचा अणगार ने जी, पूछ्या प्रश्न अनेक ।
त्यांरा जाब सुणे हरखत हुवो जी, घट माहे आयो ववेक ॥ १३ ॥
पछे वाणी सुणे हीये सरख ने, समकत पामी तिण ठाम ।
तिण संजम लीयो एक सहस सू जी, साख्या आत्म काम ॥ १४ ॥
तिण प्रश्न पूछ्या मिथ्याती थके, मिथ्याती थके सुणीया जाव ।
मिथ्याती थकां कीवी विचारणा, तिण सू समकत पायो सताव ॥ १५ ॥
जो मिथ्याती रो सुणवो असुघ हुवे तो, समकत नही पांवतो ताम ।
तिणरो सुणवारो प्राकम सुघ हूतो, तिण सू समकत पायो तिण ठाम ॥ १६ ॥
खधक नामे सिन्यासी हूतो जी, सावथी नगरी माय ।
तिणने प्रश्नज पूछीया जी, पिगल नियठे आय ॥ १७ ॥
जब तिणने जाव न उपनो, तिण सू आयो वीर ने पास ।
तिणने वीर आगूच वतावीयो, ते सुणने पांम्यो हुलास ॥ १८ ॥
तिण मिथ्याती थके वाणी सुणे, पांम्यो समकत सार ।
श्रीवीर जिणसर आगले, तिण लीघो सज्जम भार ॥ १९ ॥
तिणरो सुणवारो प्राकम सुघ थो, तिण सू पामीयो समकत सार ।
तिणरा प्राकम कोइ असुघ कहे, ते पूरा मूढ गिवार ॥ २० ॥

हृथणापुर नगर नाँ वासीयो, सिवराज रखेस्वर जाण ।
 ते राज छांडे तापस हुवो, तिणलें उपनो विभंग नांण ॥ २१ ॥
 सातघीप समुंदर देखीया, इतलोइज जाण्यो संसार ।
 असख घीप समुंदर सुण्या जब, संका पडी तिणवार ॥ २२ ॥
 संका पड्या इतरोइ देखें नही, जब आयो वीर नें पास ।
 वीर वचन सुणे हीये सरवीया, जब समकत पांमीयो तास ॥ २३ ॥
 वीर वचन सुण्या मिथ्याती थकां, तो पांमीयो समकत सार ।
 तिणरो सुणवारों प्राकम सुघ छे, तिणमें सका नही लिगार ॥ २४ ॥

रत्न : १०

एकल री चौपई

ढाल : १

दुहा

आरंभ जीवी ग्रहस्थी, फिरे त्यांरी नैश्राय ।
अणतीर्थी पासथादिक, ते पिण तेहवा थाय ॥ १ ॥
केइ बेरागे घर छोड ने, राचें विषे रस रंग
राग बेख ज्याकुल थकां, करे त्रत नो भंग ॥ २ ॥
रित पांमें पाप कर्म मे, सावघ सरणो मान,
गण छोडी हुवें एकला, कुड कपट री खान ॥ ३ ॥
न्यात लजावे पाछली, वले भेख लजावण हार ।
एहवा मानव फिरें एकला, धिग त्यारो जमवार ॥ ४ ॥
घणां में रहे सके नही, ते एकलडा थाय ।
कुण कुण दोख तिणमें कहा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[समरुं मन हरखे तेह सती]

आप छांदे फिरे जे एकला, ते जिण मारग में नही भला ।
साव श्रावक धर्म थकी टलीया, ससार समुद्र में कलिया ॥ १ ॥
एकलो देख ने लोक पूछा करें, घणो क्रोध करी तिण सूं रे लडे ।
कोइ बादे नही तब मान वहे, करला वचन तिणने रे कहे ॥ २ ॥
कपटाइ घणी छे एकल तणी, सूतर माहे भाखी त्रिभुवन घणी ।
वले लोभ घणो छे वोहल पणे, श्री वीर कह्यो छे एकलतणे ॥ ३ ॥
बहु आरंभ ने विषे रक्त घणो, संचो करें बजर पाप तणों ।
नट नी परे अर्थी भोग तणो, बहु भेख घरे माहे गिघपणो ॥ ४ ॥
घणे प्रकारे करे धुरतपणो, संके नही करतो कर्म रिणो ।
अवसाय मन रा अतही घणा, माठा वर्ते छें एकल तणा ॥ ५ ॥
बहु^१ कोहे माणे^२ माया^३ लोभ^४ पणो, रते^५ नडे^६ सडे^७ संकम घणों ।
ए आठ आगुण घट मे वर्ती, हिंसादिक आश्रवना अर्थी ॥ ६ ॥
वले साधु नो लिंग लीयां रहे, कर्म आछाछो एम कहे ।
हूं सुध चारितीयो आचारी, सतरे भेदे संजमचारी ॥ ७ ॥
रखे कोइ देखे अकार्य करतों, आजीवका अर्थी रहे डरतो ।
अग्यान परमाद दोख भस्त्रों, निरंतर मूढ मोह्यों कुपंथ पस्त्रों ॥ ८ ॥

जिणधर्म न जाणें अपच्छादें रह्या, त्यानें कर्म बांधण नें पिडत कह्या ।
 पाप करण सूं अलगा रे नही, तिणनें संसार में भमण कही ॥ ९ ॥
 आचारंग पांचमें अधेनें आख्यो, पेंहले उदेसें जिण भाख्यो ।
 ए चिरत कह्या छे एकल तणा, इण अनुसारें अतहि घणा ॥ १० ॥
 एहवा अपच्छंदा अवनीत, त्यां छोडी घर्म तणी रीत ।
 निरलजा भागल विपरीत, किम आवें तिणरी परतीत ॥ ११ ॥
 उस्नादिक पाचूं रे तणी, संगत वर्जी छे त्रिभुवन घणी ।
 ए मोख मारग ना छे फदा, एहवा छें जेंन तणा जिदा ॥ १२ ॥
 त्या छोडी लोकीक तणी लजीया, सकों नहीं आणें करता कजीया ।
 दोखण काढ्यां तो तपता रहे, ते आया परिसा केम सहें ॥ १३ ॥

बाल २

दुहा

ठाणाअंग माहें कह्यो, एकल रो ववहार ।
 आठ गुणा सहीत छे, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
 सरधा में सेंठो घणो^१, न सके देव डिगाय ।
 सतवादी^२ प्रज्ञासूर^३ छे, बोलि नही अन्याय ॥ २ ॥
 सूतर ग्रहवा सक्त घणी, मरजादा वंत वखाण ।
 बहुश्रुती^४ नवप्रा पूर्व तणी, तीजी आचार वथू नो जाण ॥ ३ ॥
 पांचमें पाचू समरथा^५, तप सूतर एकलपणो जाण ।
 सत्व करी सेंठो घणों, वले समरथ सरीर वखाण ॥ ४ ॥
 कलहकारी^६ छठें नही, सातमे घोरज^७ ताहि ।
 अनुकूल प्रतिकूल उपसग्र सहे, आठमें वीरज^८ अछाहि ॥ ५ ॥
 ए आठं गुणां सहीत छे, तो करणो उग्र विहार ।
 तो पिण गुर आग्या दीयां, फिरें एकलमल अणगार ॥ ६ ॥
 ए आठ गुणां विण एकला फिरे, ते अवक्त मूढ अयाण ।
 वले आचारंग में निखेचीयो, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

बाल

[पाखड बधसी आरे पाच में]

एकल ने मुनी रो भाव नखेचीयो रे, अवक्त ने कह्यो छें घणो विगाड रे ।
 दुष्ट पराकम नो थानक तेहने रे, दुष्ट कह्यो तिनरो विहार रे ।
 अवक्त ने नखेच्यो रहणो एकलो रे ॥ १ ॥
 धुर सूं तो लोपी अरिहत आगना रे, एक तो आहीज मोटी खोड रे ।
 वले नांम धरावे एकल साध रो रे, ए तो छे जिण सासण मे चोर रे ॥ २ ॥
 सूतर अवक्त वय अवक्त पणे रे, तिणरी चोभंगी चित्त में धार रे ।
 यां दोनू वोला माहे काचो नही रे, तो नचित रहो एकल अणगार रे ॥ ३ ॥
 कोइ गण माहे रहतां पडीयो चूक मे रे, तिणने गुर हित सूं दीवी सीख रे ।
 अवक्त क्रोध तणे वस आय ने रे, वचन न बोलें गुर ने ठीक रे ॥ ४ ॥
 कहे सगला साध तो इमहीज चालता रे, त्यांने सीखांमण न दीए कांय रे ।
 हू घणा माहे तो रहे सकूं नही रे, ओषट घाट घणी मन मांय रे ॥ ५ ॥

अभिमानि आपणपो मोटो मांनतो रे, प्रबल मोह मांहेँ मुरभाय रे।
 कार्य अकार्य सुघ सूभेँ नहीं रे, ववेक विकल ते एकल थाय रे ॥६॥
 गांमानुमांम विचरतां तेहनेँ रे, घणी आवावा उपजेँ आय रे।
 आवावा एकल नेँ खमतां दोहिली रे, खमवा रो जांणेँ नहीं उपाय रे ॥७॥
 वीर कह्योँ म्हांरा उपदेस थी रे, तोनेँ सीष एकल्पणो म होय रे।
 ए तो सरवा तीर्थंकर देव री रे, गण मत छोडो सूतर जोय रे ॥८॥
 आचारंग पांचमां अवेन मेँ रे, चोयेँ उद्देसेँ छेँ ए भाव रे।
 उपसग्र थी आवावा उपजेँ तेहनेँ रे, विसतार कहं छुँ तिणरो न्याव रे ॥९॥



ढाल : ३

दुहा

सास खास ताव तेज रो, रोग उपजें अनेक विघ आय ।
 बले गरढापौ आयां थकां, विवध पणें दुख पाय ॥ १ ॥
 बले परिणाम चल विचल हूआं, किण री हटक न कांय ।
 ज्यां एकलपणों आदखों, त्याने परभव चिंतन कांय ॥ २ ॥
 जो सावां री संगत करे, तो बघें घणों बेराग ।
 आप छ्दि एकला फिर्यां, जाए संजम थी भाग ॥ ३ ॥
 भागण रा उपाय छे अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
 पिण कह थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[सत्य कोइ मत राखजो]

ताव चढे कदा आकरो, वाचा रुके बोल्यो न जायो रे ।
 तिरखा अतुल वाय भिडकीयां, कुण सखाइ थायो रे ।
 विग विग अवक्त एकलो* ॥ १ ॥
 कर्म जोगे कुत्तो डसे, तो ठरलें मात्र किम जावे रे ।
 डांबरु जान्हौ वालादिक हुवां, आहार पांणी कुण ल्यावें रे ॥ बि० २ ॥
 जब केइ कायर सीदावता, आप छ्दिं करे मन जांण्यो रे ।
 भूख त्रिषा ना पीळिया, खामे ग्रहस्थ नो आंण्यो रे ॥ ३ ॥
 केइ आरत ध्यान माहे मरे, नरक तिरजंब मे जायो रे ।
 उतकष्टे अनंता भव भमें, चिहं गति गोता खायो रे ॥ ४ ॥
 अखी आय बकारीयां, तो लग जाए तिण चाले रे ।
 विटल हुवा होसी घणा, किणरी लज्जा सील पाले रे ॥ ५ ॥
 विखे अतत पीळ्या थकां, वेस्यादिक नें घरे जायो रे ।
 माठे भावना भावीया, कुण आणें तिणने ठायो रे ॥ ६ ॥
 अकार्य करतो संके नही, थोडा सुखां नें काजे रे ।
 वात चावी हुवां लोक में, कने वेसणवाला-पिण लाजे रे ॥ ७ ॥
 यूं जाणे नर नारीयां, एकल दूर ताजीजे रे ।
 घरे हांण हांसो हुवे लोक मे, इसरो काम न कीजे रे ॥ ८ ॥

*मह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

क्या सूं प्रकृत पाछी वलें नही, किण सूं न मिलें सभावो रे ।
 दुख वेदी हुवें एकला, केइ करे घणो अन्यावो रे ॥ ६ ॥
 क्यां सूं पोते आचार पलें नही, वले कूड कपट रो चालो रे ।
 गण छोडी हुवें एकला, ओरां रें सिर दे आलो रे ॥ १० ॥
 क्यां सूं पोते आचार पले नहीं, पिण समकत राखें चोखो रे ।
 गण छोडी हुवे एकला, नहीं काढे ओरां में दोखों रे ॥ ११ ॥
 पछे मोह कर्म उदें हुवां, कूड कपट चलावे रे ।
 फिरती भाषा बोलें घणी, अणहंता आगुण गावें रे ॥ १२ ॥
 गावां नगरा विचरतां, लोक पूछें हर कोइ रे ।
 थे साधा मांसूं नीकले, आतम कांय विगोइ रे ॥ १३ ॥
 जब केयक बोलें पाधरा, केइ बोलें आलपंपाली रे ।
 केइ क्रोध करें केइ परजले, केइ मूह करें विकरालो रे ॥ १४ ॥
 केइ दोखण डाके आपणा, ओरां में वतावें चूर्को रे ।
 पूछ्यां न बोले पाधरो, पूजा सलागा रो भूखों रे ॥ १५ ॥
 कोइ लालालो करे, आहारदिकनां लपटी रे ।
 पूरो निकालो काढे नहीं, अँसा एकल कपटी रे ॥ १६ ॥
 आए साधां नें बंदणा करे, माहें माछ परिणामी रे ।
 विनो नरमाइ करें घणी, ए पेट भरण रो कामो रे ॥ १७ ॥
 समभू नर नार वादे नहीं रे, आगना लोप एकल देखी रे ।
 आहार पांणी न वे भाव भगत सूं, तो हुवें साधां रो धेखी रे ॥ १८ ॥
 छल छिद्र जोवतों रहें, दुष्ट परिणामां दिन काढे रे ।
 च्यार तीरथ सूं तपतो रहे, मोख तणी विरत वाढे रे ॥ १९ ॥
 दगध बीज करें आप रो, वले घाले ओरां रे संकारे ।
 भर्म में पाडे लोक नें, अँसा छे एकल बंकारे ॥ २० ॥
 चित भरम्यों फिरतो रहें, लिणनें साची सरधा नावे रे ।
 कदाच जो आइ हुवें, तो थोडा माहे गमावें रे ॥ २१ ॥
 मागे न खाणो पार को, वले कनें साधां रो भेखी रे ।
 सरधा राखे निरमली, केयक विरला देखो रे ॥ २२ ॥
 च्यार तीरथ नें ओर लोक में, फिट फिट सगले कहिवाणो रे ।
 जो अवगुण जाणें आप में, साची सरधा रो एह अहलंणो रे ॥ २३ ॥
 वले अवगुण काढें गुर तेहनां, तो ही कुलष भाव नही आंणे रे ।
 अभितर समकत परगामी, ते तो मोटां उपागरो जाण रे ॥ २४ ॥

बोध समकत पायो त्या कनें, त्या दीळं हरपत थायो रे ।
विनीं भगत करे घणीं, साची सरघा दीसे तिण माह्यो रे ॥ २५ ॥
साध साधवी ने सरघा तणा, पूठ पाछे गुण गावे रे ।
एकण घारा बोलतां, परतीत इण विध [आवे रे ॥ २६ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

भलल कुल री वलगरल तकल, कुवे वलरलणल सलघ ।
 कुं सलघ वलगरुओओल आकलर थी, ते कलण वलघ आवें हलथ ॥ १ ॥
 आगुल लुओें सतगुर तणी, तलणनें ओडड लें गलुीधलर ।
 आड छलदें एकलु भडें, कुं डुओर फलरें रुलुीधलर ॥ २ ॥
 वलगरुओओल धलन री डलखतुी, वेओल दुदुरगंध आड ।
 कुं एकल री संगत कलडल, वुववंत अकल डत कुड ॥ ३ ॥
 कु ओकल नें आदर वुीए, तु ववे मलधुडलत ।
 डूड डरें कुण धरुडें डें, ते सुणकु वलखुडलत ॥ ॡ ॥

ढलल :

[भव कुवल तुड कुलर धरुड ओलसुओ]

कुण सलसण डें आगुल वडुी, आ तुओ वलंवी रे थी भगवंत डलल ।
 ओं तु सकुन असकुन भेलल रहे, छलदल कललें रे डुरडु वकन संडलल ।
 वुववंतल एकल संगत न कुलकुए* ॥ १ ॥
 छलदुओ रुंधुडल कुण संकुड नुीडके, तु कुण कलले रे डरनुी आगुल डलड ।
 सह आड डतें हुवें एकलल, कुलण भेलल रें कुलण वुीखर कुड ॥ वु० २ ॥
 आड डतें एकलल हुवल, तु सलसण डें रे डर कुलए घडडुओल ।
 एहवल अडछंडल री करें थलडनल, ते डलण डुलल रे भेद न डलडुओ रही डुओल ॥ ३ ॥
 डेंरलग घटें तलणरी डलखतुी, कें कुण संगत रे आवें डुल मलधुडलत ।
 कें सलघ सुं उतर कुड आसतल, सलकुी सरधुडल रे एकल तणी वलत ॥ ॡ ॥
 ओं तु डलडकलवे सलघल रल सडडलड थी, आडड डें रे वुलें वलरुवल वेंण ।
 वले छलदुर धरलवें एक एक नें, सलव वुीओल रें वललें अंतर नेंण ॥ ॡ ॥
 नकडलदलक कुओर कुसुीलुीडल, वधुी कलवें रे आड आडडुी नुडलत ।
 कुं डलगल नें डलगल डललुडल, घणुओ हुरडुे रे करें डनुओगत वलत ॥ ॢ ॥
 कुओरी कुलरी आदल खुंन अकुरकु कलडल, रलकु डकडे रे करें छुनुी छेद कुओड ।
 वले देस नुीकललुुे दें कलडुीडल, तुडलनें रलखें रे डुील डेंणलदलक कुओर ॥ ॣ ॥
 ते वलगलड करे तलण देसनुओ, डुीलडेंणल रे तुडलनें आणुुे सलथ ।
 दुख उडकुलवे रेंत गरीव नें, धन लेकुलवें रे करे करें तुडलरी धलत ॥ ॡ ॥

*डह आंकडुी डुरतुडक गलडल के अनूत डें हु ।

त्यांनं असणादिक आदर दीयां, लफरो लागे रे भांग्यां राजा तणी आंण ।
 कदा राय कोपे तो घन खोस लें, जीवां मारे रे तिणरा बें फल जांण ॥ ९ ॥
 इण दिष्टते साघां रा समदाय में, दोखण सेव्यां रे साघ काढे गण बार ।
 ते आप छांदे एकला रहे, के भागल रे आगें पाछे फिरें लार ॥ १० ॥
 अे तो साघां रा ओगुण बोलता फिरे, मुख मीठा रे खेले अंतर घात ।
 ओछी बुधवाला नें विगोवता, कूडी कथणी रे कूडी कर कर वात ॥ ११ ॥
 त्यांरी भाव भगत संगत कीयां, तिण भागी रे भगवंत नीं आंण ।
 ते तो दुख पांमें इण ससार में, उत्कष्टां रे अनंत जांमण भरण जांण ॥ १२ ॥
 चोर नें तो आहार आदर दीयां, इह लोके रे घन जीतव नों विणास ।
 भेष धारी ने भागल एकल तणी, संगत कीघां रे वंधे करम तणी रास ॥ १३ ॥
 उसनां कुसीलीया पासथा, अपछंदा रे ससत्तादिक जांण ।
 त्यांने तीरथ मे गिणवा नहीं, ओ कर लीजो रे जिण वचन परमाण ॥ १४ ॥
 अें तो हेलवा निंदवा जोग छे, खिष्ट करवा रे तिणरी ग्याता में साख ।
 त्यांरो संग परचो करणो नहीं, सूतर मांहे रे भगवत गया भाख ॥ १५ ॥
 यां तो अनत ससार आरे कीयों, इह लोके रें परलोके हुसी भंड ।
 त्यांनं आहारपांणी उपध दीयां, तिणनें आवे रे चोमासी नों वंड ॥ १६ ॥
 भेला बेस सभाय करवी नहीं, नही करणो रे त्यांरे साथे वीहार ।
 .यांरो संग परचो करतां थकां, ग्यांन दरसण रे चारित नों विगार ॥ १७ ॥

ढल : ॡ

दुहा

केइ भेपघाखां रा टोलां थकी, लड भगड नीकलें वार ।
ते आप छांदें फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरे रूलीयार ॥ १ ॥
तिणनें हीर हटक किणरी नही, स इछाचारी फिरे छे सदीव ।
वले प्रवल उदे तिणरे मोहणी, एहवा एकल भारी करमां जीव ॥ २ ॥
ते नांम घरावें साव रो, पिण मूंक दीवी मरजाद ।
वले वाड लोपी ब्रह्म वरत री, करतों फिरें मूढ उपाव ॥ ३ ॥
आठां गुणां विण एकलों, साव नें रहिवों नांहि ।
श्री वीर जिणेसर भाखीयो, जोवों आगम रे मांहि ॥ ४ ॥
जे आप छांदें फिरें एकला, श्री जिण वचन विराव ।
जिण लोक लज्या पिण परहरी, तिणनें मूरख सरवें साव ॥ ॡ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखे]

वावीस टोलां वाजे त्यांरी आ सरवा, सावां नें एकलो नहीं रहणो रे ।
हिवें तेहीज एकल ने साव थापें, त्यांरी विकलाइ रो कांइ कहणो रे ।
एकल भेवचारी रो संग न कीजे ॥ १ ॥
जो एकल ने चोडे साव परुषें, तो लागें लोकां मांहें भूडी रे ।
जो एकल नें गिणे वावीस टोलां में, तो सगला री सरवा वूडी रे ॥ २ ॥
त्यां वीर नां वचन तो हेठा मेल्या, तो एकल सूं पीत वांचें रे ।
एकल ने कोइ साव सरवे तिण, आगम उयाप्या आंचे रे ॥ ३ ॥
क्यारों नेव चवें क्यारी चवें नेवाली, ते तो रहे एकल सूं डरता रे ।
जाणें एकल म्हांरो उघाड करें ला, तिण सूं संकता रहे लाजां मरता रे ॥ ४ ॥
त्यांरा श्रावक श्रावका वादें एकल ने, त्यांने इतरो पिण कहणों काठो रे ।
थे एकल ने वांदों किण लेखें, गुणें तीखुतो रा पाठो रे ॥ ॡ ॥
एकल तो जिण आगना वारें, तिणने वांघां तो नहीं छे घर्मो रे ।
थे सीस नमाय एकल नें वादें, कांय वांचों चीकणा करमो रे ॥ ६ ॥
इतरी कहेंन एकल री बंदणा छडावे, तो एकल घणो दुख पावें रे ।
जत्र एकल पिण यांरा खोटा खोटा किरतव, चोडें लोकां में वतावें रे ॥ ७ ॥

केइ इण कारण डरता थकां भेषघारी, राखें एकल सूं मिलापो रे।
 वले उलटी खुसामदी करें एकल री, न करे एकल री उथापो रे ॥ ८ ॥
 केइ तो भेषघाख्या रे ओहीज कारण, ते एकल ने उथापे केमो रे।
 वले वीजों कारण भेषघाख्यां रे, ते सांभलजो घर पेमो रे ॥ ९ ॥
 एकला रा श्रावक भेषघाख्यां ने, साध सरखे वादे पूजे रे।
 वले आहार पांणी भावभगत सू देवें, तिणसूं एकल रा अक्वगुण न सूंके रे ॥ १० ॥
 वले एकल रा श्रावक श्रावका पासे,, एकल रा गुण गावें रे।
 तेतों पेटभरा इहलोक रा अरयी, एकला ने साध सरधावें रे ॥ ११ ॥
 मन माहें तों आछों न जाणे एकल ने, पिण मुखसूं खोटो कहणी नावे रे।
 पिण निज मुतलब रे काजें भेषघारी, एकल ने नही रीसावे रे ॥ १२ ॥
 अे तों कूड कपट कर काम चलावे, त्याने पूछ्या करे गालगोलो रे।
 यासूं एकल ने असाध चोडे कहणी नावे, यारे पिण ताबा उपर भोलो रे ॥ १३ ॥
 कठेक तो एकल ने साध कहे छे, कठे कहे एकल ने असाधो रे।
 यारें काम पडे जेहवी भाषा बोले, त्याने किम कहिजे वीर नां साधो रे ॥ १४ ॥
 जो एकल भेषघाख्यां रे काम न आवे, तो तुरत दे तिणनें उडायो रे।
 खोटो सरधाय ने बंदणा छोडावें, घाले असाध तणी पात मायो रे ॥ १५ ॥
 जिण एकल मे पाणी मरे विवध परकारे, ते तो ओरा ने केम उथापे रे।
 भागल एकल ने भेषघारी, त्या सगला ने साध थापें रे ॥ १६ ॥
 ते एकल भेषघाख्या सूं मिलतो चालें, वले करें त्यांसूं नरमाड रे।
 आप रा किरतव आपने सूंके, मन छानी चोरी नही काइ रे ॥ १७ ॥
 एहवो एकल भागल भेषघाख्या सूं, डरतो रहे दिन रातो रे।
 वले भूठ बोलें त्यारा अक्वगुण ढाके, त्यारी कूडी करे पखपातो रे ॥ १८ ॥
 इमहीज भेषघारी भागल एकल सू, डरता रहे दिन रातो रे।
 ते पिण भूठ बोली दोष ढाके एकल रा, वले कूडी करे पखपातो रे ॥ १९ ॥
 एकल पिण भेषघाख्या रो न करें उघाड, अे पिण न करें एकल रो उघाडो रे।
 गालगोलो कनें ठग खावें लोकाने, धिग्रधिग्र त्यारो जमवारो रे ॥ २० ॥
 काम पढ्या एकल सूं करे आहार पाणी, काम पढ्यां उतर जावें भेला रे।
 काम पढ्या देवो लेवो करें एकल सू, काम पढ्या वादें किण वेला रे ॥ २१ ॥
 काम परजाए तो भेषघारी एकल सू, करे बारैइ संभोगो रे।
 एकल पिण भेषघाख्या सू करें संभोग, ते मेल दें सर्व सजोगो रे ॥ २२ ॥
 कदेक तो एकल सूं करें संभोग, कदेक न करे एकल सूं सभोगो रे।
 एकल सू संभोग करे छे त्यांरा, वरत छें माठ जोगो रे ॥ २३ ॥
 ३६

कदेक तो एकल भूं होय जाएं जूडा, कदेक होय जाएं भेअ रे ।
 ए सावां रा भेप में प्रनख देवो, जाणें नाचें कुवडी खेला रे ॥ २४ ॥
 गवा रा कंठ नें उंट वखाणें, उंट रों रूप गवा वखाणें रे ।
 ए तो दोनूं जणां मांहोमां हिन्दमिलीया, ते तो परमारथ नही पिछाणें रे ॥ २५ ॥
 ज्यूं भेपवाखां नें एकल सरखें, एकल नें भेपवारी सरखें रे ।
 ए पिण मांहोमां हिन्दमिल एक हूया, टाटा लोकां नें खावें रे ॥ २६ ॥
 चोर मांहोमां मिल्लें चोरी करे नें, पर धन कुसल ल्यावें रे ।
 ज्यूं एकल नें भेपवारी मिल चालें, तो मोलां नें टा टा खावें रे ॥ २७ ॥
 जो चोरां रे मांहोमां फाट पडें तो, पर धन हाय न आवें रे ।
 ज्यूं यारे पिण मांहोमां रे फाट पडें तो, यां आगें पिण कुण टावें रे ॥ २८ ॥
 एकल नें भेपवारी भेला मिल चालें, ओं प्रनख देवो पोलाणो रे ।
 ए ठप-ठप नें माल खावें लोकां रो, त्यांगी वृषवंत करे पिछाणो रे ॥ २९ ॥
 भेपवाखां रा थावक नें एकल ग थावक, त्यांरा घट मांहें घोर अंवागे रे ।
 ते साव अमाध रा गुण नहीं जाणें, नहीं जाणें सावां रो धाचारी रे ॥ ३० ॥
 ते एकल नें पिण साव सरखें, यारें आ पिण मुख बुव नाहि रे ।
 समझाया पिण समझें नही भोला, परीया एकल रा फंद मांहि रे ॥ ३१ ॥
 भेपवाखां रा थावका त्यांगी, मुखवृध जावक विगडी रे ।
 ते एकल नें बादिं नीकुतो करनें, मम्नक पगां रे रगडी रे ॥ ३२ ॥
 केइ एकल नें भेपवाखां ग थावक, ते पिण एकल रा दोप हाकें रे ।
 मुख सावां रे आल देतां अग्यांनी, भारी करमा मूल न साकें रे ॥ ३३ ॥
 सावां रे आल दें एकल ग दोप हाके, ते तो दोनूं परकारें वूडा रे ।
 ते तो नरक निगोद ग वीट वण्यां छें, चिहंगनि माहें दीस सी भूडा रे ॥ ३४ ॥
 त्यांरा गुर में हुंता दोप वतावें, तो लडवा नें छें तयागे रे ।
 निकाल काडण री तो बात न कांड, उलटां करे कजीया ने राडो रे ॥ ३५ ॥
 त्यांनं परभव गी चिन्ता नही कांड, त्यांग मत्त माहि गाडा घूलीया रे ।
 त्यांरे न्याय निरणो तो मूल न दीमें, जेंया हुंता जिसा गुर मिलीया रे ॥ ३६ ॥

ढाल : ६

दुहा

केइ भेषचारी एकला फिरे, --अवक्त मूढ अयाण ।
वदेक विकल सुधवुध विनां, जिण मास्य रा अजाण ॥ १ ॥
सगला एकल नही सरिखा, सगलां री सरखा नहीं एक ।
चलगत पिण त्यारी जूजूइ, त्यारा चाला चिरत अनेक ॥ २ ॥
केइ एकल छे भोलीया, केइ विकल छे ताम ।
केइ एकल छे पेदारथी, केकांरा छे दुष्ट परिणांम ॥ ३ ॥
केइ एकल छें बूरत अति घणा, कूड कपट री खान ।
केइ एकल छे कुसीलीया, त्यांरो एकत विषे सूं ध्यांन ॥ ४ ॥
केइ एकल तपसा करें, लोकां नें ठिगण रे कांम ।
ते छानो खावे तपसा मभे, ते तो थोथा करे छे हगाम ॥ ५ ॥
केइ एकल दुष्ट छे अति घणा, निज दोषण देवे ढांक ।
मोटा मोटां अकार्य पोते करे, देवे ओरां सिर न्हांख ॥ ६ ॥
एकल माहे तो अवगुण घणां, ते पूरा कह्या न जाय ।
थोडा सा परगट कहं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केइ एकल कुपातर कुसीलीया छे, ते तो बुगल ध्यांनी वणजायो रे ।
तिणरे ठांम ठांम बायां सू परचो, ते करता फिरें विषे रो उपायो रे ।
एकल भेषचारी रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
बुगला रो ध्यांन तो मछल्या उपर, ज्युं एकल रे विषे सूं ध्यांनो रे ।
तिणने भोला लोक तो सायु जाणे छे, पिण पिडत सूं नही छे छानो रे ॥ २ ॥
एहवा एकल उतरे खुणें खचूणे, ते जायगा छे अपतीतकारी रे ।
तिण ठांमें रात री अखी रहे तो, लोकां ने न पडे ठीक लिगारी रे ॥ ३ ॥
बले रात रो आडो जडे सूअे एकल, जब कुण जाणे अखी छे मांहीं रे ।
इण वात रो कुण करें गवेसो, गवेसो कीया मिले त्याने कांइ रे ॥ ४ ॥
घणा साय रहे कदा एहवें ठिकाणे, तो अखी नो जोर न लागें रे ।
जो एकल एहवे ठिकाणें रहें तो, ब्रह्मव्रत तिणरो भागे रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जिन् एकल रा परिधान नहीं छे जिनापे, ते उरें एहकी जायगा रे।
 जे उरें अश्रीतकारी जिनापे, ते तां अरु विहना नाग रे ॥ ६१ ॥
 जिन् एकल रें सील पाछां नही, ते तां अजोग जिनापे जेके रे।
 तिन् ठामें नितक सुं करे अकारज, एकल आत्म दिगेके रे ॥ ६२ ॥
 हुमें लक्ष्मी उरें ते जिनापे, धनी अस्त्रियां तिन् तिन् ठामें आवें रे।
 लानें हाता कहुहल री बातां सुंभार, धनी अस्त्रां नें नोह उरजाके रे ॥ ६३ ॥
 लानें मोली बायां केयक इन दोले, जानां नें जोपरी नहीं जायें रे।
 सानेजी रें जानां सुं मोह धनो छे, ते एकल रा बाला चारित न सिद्धापे रे ॥ ६४ ॥
 लानें केयक अश्री कुन्तार हूवें ते, एकल सुं सिद्ध लगवें रे।
 तिन्गी निगर चेला देख नें एकल, तिन्नें विनें चहीत बतलावें रे ॥ ६५ ॥
 तिन्गी लज सरन छेडाय नें एकल, अकारज करतों जायें संजा रे।
 नया कुल री नें सिद्ध करतों नहीं सके, केह एहवा छे एकल वंका रे ॥ ६६ ॥
 गानं गानं विचरें तिहां एकल, ठामं ठामं ओहीन चालो रे।
 एकल अकारज करे छे तिन्गी, कुप काडें नीकालो रे ॥ ६७ ॥
 टोलावर नेपथारी नेला रहें छे, ते तां साव बाजे भली भांते रे।
 त्यां नाहें निप कोइ कनडाविक देह, विपे सेजी पूरें नन खांते रे ॥ ६८ ॥
 टोलां नाहिलों विपे सेजे इप रीजें, तो एकल से कांई कह्यो रे।
 धनां नेलां रहें ते तां संकोव पाने, तो एकल नें तो एकलो रह्यो रे ॥ ६९ ॥
 धनां नेलां रहें ते तां अकारज करतों, राखें बोरां री संजे रे।
 एकल नेपथारी अकारज करे ते, निडर धको नितको रे ॥ ७० ॥
 टोलां नाहिलों कपडो दे करे अकारज, तिन्नें पूछें कोइ टोला बालो रे।
 थारे कपडों हुंतो किन्नें दोजे, इन पूछी नें काडें नीकालो रे ॥ ७१ ॥
 एकल कनडाविक देह करे अकारज, तिन्नें कुग पूछें काडें नीकालो रे।
 तिन्सुं एकल नें डर किन्गी न दीसै, ते विपे रो किम करती टालो रे ॥ ७२ ॥
 टोलां नाहिलो नोडेरो आवें जिनापे, तिन्नें पूछें तूं हुंतो कठें रे।
 जो एकल नोडों आवें तो कुग पूछे, तिन्सुं ओं फिरें छे मनमानें लठे रे ॥ ७३ ॥
 हुटंभवाली अश्री रा परिधान चालीया, तो सरभा सरनी निगन करे अकारजो रे।
 जे आगें पाछे तिगरे कोइ न हूवें, तो छोड दें सरन नें लाशो रे ॥ ७४ ॥
 ज्यूं एकल रें आगें पाछे कोइ न वीसै, तिगरे किन्गी न दीसै लाशो रे।
 जिन् एकल रा परिधान कल जाके, तो सके नहीं करतों अजाजे रे ॥ ७५ ॥
 एकल तो गुर नें गुर भायां सुं न्यारा, बले संभोगी निप तिगरे नाहीं रे।
 तिन्सुं ओर नीकाल काडें थारें तांड, यानें दोष न लागे कांइ रे ॥ ७६ ॥

ते उरें एहकी जायगा रे।
 ते तां अरु विहना नाग रे ॥ ६१ ॥
 ते तां अजोग जिनापे जेके रे।
 एकल आत्म दिगेके रे ॥ ६२ ॥
 धनी अस्त्रियां तिन् तिन् ठामें आवें रे।
 धनी अस्त्रां नें नोह उरजाके रे ॥ ६३ ॥
 जानां नें जोपरी नहीं जायें रे।
 ते एकल रा बाला चारित न सिद्धापे रे ॥ ६४ ॥
 एकल सुं सिद्ध लगवें रे।
 तिन्नें विनें चहीत बतलावें रे ॥ ६५ ॥
 अकारज करतों जायें संजा रे।
 केह एहवा छे एकल वंका रे ॥ ६६ ॥
 ठामं ठामं ओहीन चालो रे।
 कुप काडें नीकालो रे ॥ ६७ ॥
 ते तां साव बाजे भली भांते रे।
 विपे सेजी पूरें नन खांते रे ॥ ६८ ॥
 तो एकल से कांई कह्यो रे।
 तो एकल नें तो एकलो रह्यो रे ॥ ६९ ॥
 राखें बोरां री संजे रे।
 निडर धको नितको रे ॥ ७० ॥
 तिन्नें पूछें कोइ टोला बालो रे।
 इन पूछी नें काडें नीकालो रे ॥ ७१ ॥
 तिन्नें कुग पूछें काडें नीकालो रे।
 ते विपे रो किम करती टालो रे ॥ ७२ ॥
 तिन्नें पूछें तूं हुंतो कठें रे।
 तिन्सुं ओं फिरें छे मनमानें लठे रे ॥ ७३ ॥
 तो सरभा सरनी निगन करे अकारजो रे।
 तो छोड दें सरन नें लाशो रे ॥ ७४ ॥
 तिगरे किन्गी न दीसै लाशो रे।
 तो सके नहीं करतों अजाजे रे ॥ ७५ ॥
 बले संभोगी निप तिगरे नाहीं रे।
 यानें दोष न लागे कांइ रे ॥ ७६ ॥

जो घणां भेला हुवे तो कोइ काढें नीकालो, सारां ने दोष लागतों जांणी रे ।
 तिण एकल री चिता नही किणलें, तिणरो निकाल काढे कुण तांणी रे ॥ २२ ॥
 केइ करमां रे जोगे फिरे एकला, दोप सेवें छें विवध परकारो रे ।
 पिण लोक लज्या सूं सील पाले छे, ते तो उत्तरें मझ बाजारो रे ॥ २३ ॥
 ते खूणे खचूणे उतरतों सके, रखें आवे अण हूतो आलो रे ।
 तो एकल ने कुण साचो जाणे, कुण काढे एकल रो नीकालो रे ॥ २४ ॥
 यूं जाणे नें केयक एकल भेषवारी, नही उतरे अप्रतीत कारखें ठामो रे ।
 ओर ओगुण तो अनेक छे तिणमें, पिण कुसील रा नहीं परिणामो रे ॥ २५ ॥
 वले सेसतों परचो न करे बायां सूं, वले न करे आलाप सलापो रे ।
 केइ तो एकल एहवा फिरे छे, तिणरे कुसील री नही थापो रे ॥ २६ ॥
 एकल होय नें करे बायां सूं परचो, तिण तो हायां सूं वात विगाळी रे ।
 तिणरा उघाडा अहलांण दीसें भागल रा, तिण ने कुण कहसी ब्रह्मचारी रे ॥ २७ ॥
 आजूणा काल मे पांचमें आरे, केइ अवक्त रहे एकलो रे ।
 ते तों निरचेइ छे च्यार तीरथ वारे, एहवो एकल कदेय न मलो रे ॥ २८ ॥
 इण विध फिरे एकल भेषवारी, तिणमें साध तणी नही रीतो रे ।
 तिणरी तपसा ने आचारसील वरतरी, किम आवे परतीतो रे ॥ २९ ॥
 ए तों एकल कुमातर कुसीलीया रे, कह्या उतरवा रा ठामो रे ।
 हिंदे फिरवा रा चिरत कहूं छूं एकल रा, ते संमलजो सुघ परिणामो रे ॥ ३० ॥
 केइ एकल घर घर फिरें एकला, ज्यूं द्वोर फिरे वलीयारो रे ।
 ते विषे रों बाह्यों फिरें एकलो, तिणरो वृषवंत करजो विचारो रे ॥ ३१ ॥
 केइ एकलो पातरो घाले पडला में, फिरें छे घर घर बारो रे ।
 ते तो विषे विकार रो पीडीयो एकल, करतों फिरे बायां रों दीदारो रे ॥ ३२ ॥
 बायां ने दरसण देवा रो नाम लेवे छे, ते पिण भूठ बोले छें तांमो रे ।
 बायां ने देखण री चावना पोतें, तिणसूं घर घर फिरे इण कामो रे ॥ ३३ ॥
 जो बायां रे चावना दरसण री छे, तों बायां आय दरसण करती रे ।
 जो एकल रे चावना बायां देखण री, तो एकल घर घर फिरसी रे ॥ ३४ ॥
 तिण एकल नें केयक इम पूछे, थे क्यूं फिरो घर घर आंमो रे ।
 थे आहार पांणी बेहरता न दीसो, ओर धारे कांड कामो रे ॥ ३५ ॥
 जब एकल कहें वाया ने दरसण देवा, घर घर फिलें जाणे उमगारो रे ।
 ओर तो मांहेरे काम न कोइ, इम कहिने उतर जायें पारो रे ॥ ३६ ॥
 निरलज घर घर फिरें एकलो, वायां ने दरसण देतो रे ।
 धा चलगति खोटी प्रतख दीसे, ए अजोग एकल रो पेंतो रे ॥ ३७ ॥

बायां नें दरसण देवा घर घर फिरणो,
 आ तों रीत काढी छें एकल भागल,
 कोइ गरडी गिलांण छें तपसण बाइ,
 इत्यादिक कोइ उपगार जाणें तो,
 घर घर फिरें बायां ने दरसण देवा,
 दरसण देवा नें फिरें घर घर एकलो,
 दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो,
 अकाल बेला में फिरे घर घर एकलो,
 एकल घणां घरां फिरें खोज भांगण नें,
 विवध पणें चाला चारित करें नें,
 जो उणहीज घर जाअें दरसण देवा,
 ओर बाया पिण मांहीमां माडें किचाकिच,
 जो एकल विकलां ने मूड करे चेला,
 आप तो एकलो परगांवां जाअें,
 एकल चेला नें राखें ठिकाणें,
 ते पिण जाअें बायां नें दरसण देवा,
 दरसण देवा बाया नें जाअें एकलो,
 पांच सात रात तिहां रहे एकलो,
 लखण तो उणरा ओ ही जाणें,
 छद्मस्थ तो बारलो ववहार देखी,
 एहवा धूरत केइ एकल भागल,
 तिण एकल नें कोइ साधु जाणें,
 एकल घर घर फिरे कुचेला,
 किण किण सूं करें अंग कुचेष्टा,
 छोटी डवरीयां रे माथे हाथ फेरे,
 जो तुरणी रा माथा उपर हाथ फेरे,
 जो उण लखणी कोइ बाइ हुवे तो,
 एकल सू हिलमिल करे अकारज,
 कोई जातवंत कुलवंत हुवे बाई,
 जाणें रखे मोने आल आवे अणहंतो,
 जब एकल कहे मोने आल देवे छें,
 वले कहे एकल नें थे भूठ बोलो ला,

आ तों सुघ साघारी नहीं रीतो रे ।
 ते तो उघाडी दीसैं विपरीतो रे ॥ ३८ ॥
 कोइ करती जाणें पचखांणो रे ।
 कारण पडीया दरसण देवा जाणो रे ॥ ३९ ॥
 ते तो सूतर में नहीं पाठो रे ।
 तिणरो सील भाचार छें माठो रे ॥ ४० ॥
 ते पिण गोचरी री बेला टालो रे ।
 ओ प्रतख दाल में कालो रे ॥ ४१ ॥
 दरसण देवा रों ले ले ओटो रे ।
 करें निसाणें चोटो रे ॥ ४२ ॥
 तो पडजाअें हाथां सूं कूरो रे ।
 वले करें एकल रो फित्तूरो रे ॥ ४३ ॥
 त्यानें तो म्हेलें तिण गामो रे ।
 बायां नें दरसण देवा कामो रे ॥ ४४ ॥
 एकलो जाअें परगांमो रे ।
 तिणरा कुण जाणें सुघ परिणामो रे ॥ ४५ ॥
 चेलां राखें ठिकाणें रे ।
 तिणने ब्रह्मचारी कुण जाणें रे ॥ ४६ ॥
 कें केवल ग्यानी जाणें रे ।
 खोटो जाणें छें तिणनें अलाणें रे ॥ ४७ ॥
 त्यारी कुण करसी प्रतीतो रे ।
 ते भव भव में होसी फजीतो रे ॥ ४८ ॥
 किण सूं करें विषें री वातो रे ।
 किण किण रे फेरें मस्तक हाथो रे ॥ ४९ ॥
 ते तों मोह उपजावण कामो रे ।
 जब तो दीसैं विषें रा परिणामो रे ॥ ५० ॥
 ते तो वात न काडें बारें रे ।
 उ विगख्यो ओरां नें विगाडें रे ॥ ५१ ॥
 ते तो कर दें एकल रों उघाडी रे ।
 तिण सूं आ तो कहिनें हुवे न्यारी रे ॥ ५२ ॥
 जब आ पाडे एकल ने कूडो रे ।
 तो इषको होसी वले फित्तूरो रे ॥ ५३ ॥

ए वात सुणें एकल रा श्रावक श्रावका, तो उलटा मांडे तिणसूं कजीया रे ।
 वले बंदी करे दरवारां तांइ, त्यां छोडी लोकीक री लोजीया रे ॥ ५४ ॥
 तिणने भेला होय दबकावे अग्यांनी, देवे अणहंता दाबा रे ।
 म्हारा गुरां नें तूं आल देवें छे, वले करें लोकां में हाबा रे ॥ ५५ ॥
 तिणनें अनेक परकारे करी ते डरावे, तिणरो कर कर लोकां में फितुरो रे ।
 त्यारे निरणो काढण री तो वात न कांइ, खपे छें बोलावण कूडो रे ॥ ५६ ॥
 जाणें हण आगा सू भूठ बोलाए, उतारा गुरां रो आलो रे ।
 पिण इसरी तो विकलां रे मन में आवें, आपां काढां इणरो नीकालो रे ॥ ५७ ॥
 तिणमें कोयक वाइ काची हुवे ते, डरती थकी भूठ बोले रे ।
 जब विकल जाणें गुर रो आल उतरीयो, पिण अमितर री आंख न खेले रे ॥ ५८ ॥
 जो केयक वाइ गाढी हुवे हीया री, वले साची हुवे साहस पूरो रे ।
 तिणनें एकल रा श्रावक श्रावका पूछे, तो डरती न बोले कूडो रे ॥ ५९ ॥
 तिणसू धेव घरें पिण निकाल न काढे, यारे दोष ढांकण री रीतो रे ।
 एहवा मत ग्राही मानव मत माहे घुलीया, त्यारे न्याय तणी नही नीतो रे ॥ ६० ॥
 अ तों दोष जाणें तोही दावे राखें, जाणें लागे लोकां माहें भूंडी रे ।
 वले षड जाबेला म्हारा मत में विखेरो, तो जावक जायला वात बूडी रे ॥ ६१ ॥
 इम जाणें ने एकल रा दोष ढाके, नही काढें तिणरों नीकालों रे ।
 एकल रे बदले भूठ बोली ने, आत्मा नें लगावे कालो रे ॥ ६२ ॥
 वले एकल घर घर फिरें तो अग्यांनी, साता पूछे वायां री रे ।
 त्यारे सुखीमे सुखी त्यारे दुखीमे दुखी हुवें, वरग वहे छें आछा खांया री रे ॥ ६३ ॥
 साता पूछे वायां सूं माया मोह बांचे, त्यांसूं कर कर गमती वातां रे ।
 जे विकल वायां तिणनें गुर जाणे, ते करे एकल री पखपातां रे ॥ ६४ ॥
 जो गृहस्थ री साता साध पूछे तो, ते तों साध निश्चे अणाचारी रे ।
 तिण अणाचारी ने गुर जाण वादे, ते गया जमारो हारी रे ॥ ६५ ॥
 कोइ गृहस्थ वाइ भाइ मांदो हुवे तो, त्यांरी फिर फिर पूछे समाधो रे ।
 एहवो विकल एकल शेषवारी, ते तों निमाइ निश्चें असाधो रे ॥ ६६ ॥
 ए तों एकल रो विषे विकार वतायो, थोडीसी कही विकलाइ रे ।
 हिंवें लोलपणा री विष कहुं एकल री, ते सांभलजो चित्तलाइ रे ॥ ६७ ॥

ढलल : ७

दुहल

केइ खलवल पीवल रों अतललोलपी, ते घणलं भेलो रहें केम ।
 गण छोडी एकलो फिरें, तलणरेखलवल रोलघुवलन नत नेम ॥ १ ॥
 आप छलदें एकल गोलचरी करें, ते बुगल घुवलनी बण जलड ।
 तलजे आहलर तूटों परें, ललंबों देखुवलं तुरत फिर जलड ॥ २ ॥
 एकल जलणें आहलर नतकों कळं, तो न मललें सरस आहलर ।
 तपसल करू तो आहलर तलजों मललें, वले जस फेले लोक मभलर ॥ ३ ॥
 इम जलणी एकल तपसल करें, तलणरी तपसल री कलसी परतीत ।
 तलणरी वलकललइ वेंहरण तणी, दीसें घणी वलपरीत ॥ ॡ ॥
 रस त्रलधी री तपसल तणी, परतीत आवें केम ।
 तलणरी वेंहरण री वलध परगट कळं, ते सुणजो घर पेम ॥ ५ ॥

ढलल

[आ अनुकम्पल जलस आगुल में]

एकल ने आखी रोटी जवल री वेंहरलवें, जव तों घणलं गलढ सूं लेवें बटको ।
 जो ललडू सेरेक वेहरलवें एकल नें, तो तुरत वेहरी ने करजलजे गटको ।
 एकल भेषधलरी रलचलरलत ओखलजो* ॥ १ ॥
 आखी रोटी न लेवे नें बटको लेवें, ते तो आखो ललडू वेहरे कलण लेवें ।
 बटकल रे लेखे तो डली लेणी ललडू री, आपरी सरधल सलहो क्यूं नही देखें ॥० २॥
 आखी रोटी न लेवे नें बटको लेवें, तलणरो भेद भोली बलडल नही जलणे ।
 आहलर थोडो वेहखुवो तलणसूं गुण गलवे, तलणरो परमलरथ पूरो न पलछलणे ॥ ३ ॥
 आतो घर घर फिरें आछलआहलर ने रलगतों, तलण तो आछे आहलरखलणे चलत दीघो ।
 ते जवलं री रोटी आखी कलम खलवें, तलणसूं जवल री रोटी रोल बटको लीघो ॥ ॡ ॥
 कलणरेइ घरे तो बटकोइ न लेवे, गलल गोलो करे जवलं री रोटी देख ।
 आगले घर गलडल आहलर चोखो देवे तो, प्रतलपूरुण आहलर लेवे वशेख ॥ ५ ॥
 कोइ तो वलइ कहें म्हलरे बटको लीघो, कोइ कहें म्हलरे मूल न लीयों आहलर ।
 ते तों मलल मलल ने एकल रल गुण गलवे, ते एकल रलचलवल चलरलत न जलणे ललगलर ॥ ६ ॥
 डलरे दडल रल ललडू जलणें तलण ठलमे, उरलल घर छोडी ने तलण घर जलवें ।
 तलहलं एकल ने वलइ ललडू वेहरलवे, तो भलवे जलतल एक घर नल लुवलवं ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

जब रोटी रो तों बटको बटको वेंहरे,
 बटको बटको वेंहख्यो तिणसूं महिमा वधारे,
 किणरे खरच विवाह रा लाडू कच्यां हुवें,
 ओर दातार छोडी ने तिण घर जावें,
 पारणें पारणें तिणहीज घर जावें,
 लाडू पूरा हुआं पछें जावें आगा ज्यूं,
 जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे,
 ताजा आहार उपर तो तुटो पडे छें,
 जवां री रोटी रों तो बटको लेवें,
 बले फिरतों फिरतों ताजा घर सोभें,
 घणा लाडू वेहख्यां तो दोष न कोइ,
 दोष तों छे आहार असुच वेंहख्यां में,
 घणी रोटी वेंहख्यां कोइ दोषण जाणें,
 ते मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे,
 बले बेरांगी वाजें बटको वेंहख्यां नूं,
 आखी रोटी न वेंहरे ने बटको वेंहरे,
 इण कारण एकल घणां घरां भटके,
 आखीआखी रोटी वेहख्या थोडा घरा में आवे,
 दूष दही पिण थोडोइज आवें,
 तिणसूं घर घर रोटी रो बटको वेंहरे,
 जब विगे पिण आवें छें घणां घरां नों,
 विगें सुखडी घणी खायां हुवें राजी,
 सरस आहार रे कारण घणां घरां भटकें,
 केइ धूरत एकल छें मायावीया कपटी,
 ते एकंत आछों आहार खावा रे तांड,
 जिण गांव में थोडो आहार मिलतो जाणे,
 जब लांबो पातलों आहार न छोडें,
 केइ एकल महिमा वधारण काजें,
 बले तपसा जगाय ताजो आहार ल्यावे,
 किणही कनें तो कपडादिक देवे,
 अथवा कोइ वाइ हुवे रागण एकल री,
 ३७

लाडू वेंहरावें तो लेवें भरपूर ।
 ते तों समभ पछ्यां विण बोलें कूर ॥ ८ ॥
 तिण नें आपरो रागी दातार जाणे ।
 खपें जिता एकण घर रा आणें ॥ ९ ॥
 बोहत लाडू वेहरावे छें जिहां ताई ।
 तिण री भोलां नें खवर पडे नही काई ॥ १० ॥
 लाडू वेंहरावे तो लगाय दें भीकों ।
 एहवा एकल नें कदेय म जाणो नीको ॥ ११ ॥
 गोहां री देवे तो लेवे दोय च्यार रोटी ।
 आ एकल री चलागत देखलों खोटी ॥ १२ ॥
 गोहां री रोटी घणी वेंहख्यां दोष नाही ।
 कें दोष छें लोलपणा रे मांही ॥ १३ ॥
 घणां लाडू वेहख्यां कोइ दोषण जाणें ।
 ते पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणें ॥ १४ ॥
 ताजों आहार देवे तो लेवे भरपूरों ।
 एहवा कपटी रो वेराग कूडी फिनुरों ॥ १५ ॥
 जाणे आछों आहार मिलसी ओर ठाम ।
 ताजों ताजों आहार गवेषण काम ॥ १६ ॥
 जब विगें सुखडी पिण थोडीज आवे ।
 जब थोडा सू एकल संतोष न पावे ॥ १७ ॥
 जब तो बीस तीस घरां वेंहर ल्यावें ।
 सुखडी दूष दही अे पिण घणां आवें ॥ १८ ॥
 बले टाल राखे छे तपारा दातार ।
 तिणरें किणरी हटक न दीसें लिगार ॥ १९ ॥
 ते तो कूड कपट कर काम चलावे ।
 तिणसूं बटको बटको वेहरी ने ल्यावे ॥ २० ॥
 तो जवां री रोटी वेंहरे दोय च्यार ।
 जाण नें अणोदरी न करे लिगार ॥ २१ ॥
 तपसा कर लोकां मांहे पमावे ।
 पछें छाने छाने तपसा माहे खावे ॥ २२ ॥
 किणही रे घर मेले सुखडियादिक सार ।
 ते छाने छाने देवे एकल नें आहार ॥ २३ ॥

कोइ एकल राखे आप तणा थानक में, ते मेल दे एकंत गुप्त ठिकाणे ।
 ते तों रातेवासी राखे तपसा में खावे, एहवा एकल रा चरित तो केवली जाणें ॥ २४ ॥
 एकल कहें मोनें वीस वरस हुआं छे, निरंतर वेलें बेलें पारणों करतां ।
 तिणरों डील तों दीसैं आगा जिम पुष्टो, वले थाको नही वीहार करतां विचरतां ॥ २५ ॥
 जो बेले बेले पारणो कहें निरंतर, तो पिण हीणों कुमलाणो दीसे नाहीं ।
 तिणरी तपसा री परतीत किण विघ आवें, कोइ चतुर विचार देखों मन मांही ॥ २६ ॥
 तिणरो डील पिण दीसे चिलका करतो, वले लोही ने मांस तुटा दीसे नाही ।
 चाल तों पिण दीसे सेठो थको एकल, तिणरे तपसा रा लखण न दीसे काई ॥ २७ ॥
 तिणरा सरीर रो शोलो दीसे एक धारा, वले बल प्राकम पिण तिणरो दीसे छें गाढो ।
 बेला तेला तिणरा किण विघ कहीजें, पेट में पिण परीयों न दीसे खाडो ॥ २८ ॥
 इणरा डील तणा अलांण देखतां, तपसा रो अंस न दीसैं लिंगार ।
 एहवा एकल भागल छे भेषधारी, ते तो निश्चेइ छे जिण आगना वार ॥ २९ ॥
 एकल री तपसा री नही परतीत, वले एकल रा सील री नही परतीत ।
 तपसा नाम लेवें छे ठाण लोका ने, एहवा एकल होसी भव भव मे फजीत ॥ ३० ॥

ढाल ८

[सेवो रे साथ सयाखा-]

के कांसू तो घणां भेलो रहणी न आवे, तिणसूं फिरे एकलो आपे ।
 ते सुध साधा ने पिण कहे असाध, ते करे एकल री थाप रे । भवीयण ।
 जोवों हिरदय विचारी, थे छोड दें तिणरी लारी रे । भवीयण ।
 एकल छे जिण आगना नारी* ॥ १ ॥

केइ विषे रा बाया फिरें एकला, तिणसूं घणां भेलो रहणी नावे ।
 वले खावा रो सिधो रसनो लोलपी छे, घणां मे केम खटावे रे ॥ २ ॥
 ज्याने साध सरखे त्यासूं न रहे भेला, आप छदि फिरे एकलो ।
 एहवो भागल फिरे एकलो, तिणने कदेय म जाणजो भलों रे ॥ ३ ॥
 अनेक टोलाधर फिरे छे त्याने, साधु सरखे वादे कर जोड ।
 त्यासूं भेलो न रहे ने फिरे एकलो, तिणमे जाणजो मोटी खोड रे ॥ ४ ॥
 घणा भेला र्ह्यां परतो बीसे उघाड, तिणसूं एकला फिरें अघर्मी ।
 तिणरा अहलांण तो उघाडा दीसे, जाणोजे साचेलो कुकरमी रे ॥ ५ ॥
 तिण एकल ने पूछे थे टोले कांय छोडयो, जब एकल बोलें छे आमो ।
 म्हे डीला जाणे ने छोडया छे त्याने, म्हांरे नहीं छें घणां सू कामो रे ॥ ६ ॥
 मो सरीखो जे कोइ आयं मिले तो, जब तो कर्हं तिणने चेलो ।
 जो मो सरीखो कोइ नहीं मिले चेलो, तो आपरे मेले रहू एकलो रे ॥ ७ ॥
 इम कहि कर्हि एकल आपो जणावे, ते पिण बोले वध न काई ।
 तिण एकल ने विकल मिले चेलो, त्याने पिण मूड लेवे माही रे ॥ ८ ॥
 ओ कहितो मो सरीखा ने करसू चेलो, तिण मूड लीया विकला ने माही ।
 ओ पिण भूठ उघाडो एकल रो, ते पिण विकला ने खबर न काई रे ॥ ९ ॥
 थे पेहला कहिता हूं चेलो कर्हं तो, मो सरीखो करसू सुवनीत ।
 हिवे चेलो कीयां भोला विकलां ने, थारा बोल्यां री किसी परतीत ॥ १० ॥
 एहवा चतुर विचक्षण श्रावक हुवें तो, इम पूछ करे तिणने खिष्ट ।
 भारीकरमा मूड श्रावक त्याने, गुर मिलियो एकल भिष्ट ॥ ११ ॥
 एकलपणा रो खोज भागण ने, विकलां नें मूड कीयां भेला ।
 जो उणरा श्रावक ने समझ पड़े तो, तुरत करे तिणरी हेला रे ॥ १२ ॥
 चेला ने रात रा न्यारा राखे, आप रात रो रहे एकलो ।
 तिण एकल री अपरतीत बीसे उघाडी, एहवो एकल कदे नहीं भलो रे ॥ १३ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तिण एकल रा चेला ववेक विकल छें,
 म्हारो गुर म्हांसूं रात रो रहें एकलो,
 एहवा कुकरमी फिरें एकल,
 ते चेलो करे तो ही रहें एकलो,
 एहवां एकल गये कारले हुआ अनंता,
 केइ वरतमान काले पिण एहवा छें एकल,
 एकल रा चारित तो एकल जाणें,
 छदमस्य तो अहनांगा सू जाणें,
 केइ भेषधारी फिरें एकल,
 तिणनें पिण साध सरखे केइ भोला,
 ओ तों साध सरखे छें अनेक टोलां नें,
 बले त्यासू पिण संभोग करे छें,
 त्यासूं भेलों पिण रहें नहीं एकल,
 गांमां नगरा पिण फिरें एकलो,
 ओ किण कारण फिरें एकलडो,
 तिणरा कूड कपट ने दोष सेवण री,
 तिण एकल माहे अनेक अवगुण छें,
 ते एकल रहें छें सगला थो डरतो,
 विण कारण फिरें घर घर एकलो,
 अवसर देखनें एकल पापी,
 घर घर फिरतों तपसा जणावें,
 पछें पारणा रे दिन तिण घर सेती,
 तिण एकल री सील आचार तपसा री,
 कोइ चतुर विचक्षण डाहा होसी ते,
 केइ क्रोधी कपाइ लोलपी होसी,
 बले विपे तणा वाया फिरें एकलो,
 ठाम ठाम सूतर माहे वीर नषेखो,
 केइ एकल नें साध सरखे ने वादें,
 इम साभल नें उत्तम नर नारी,
 उत्तम साध हुवे सुध आचारी,
 इण पाचमें आरे फिरें एकलो,
 ते ववेक विकल जिण आगना बारें,
 त्याने इतरी समझ छें नाही ।
 किसा मुतलब रे ताइ रे ॥ १४ ॥
 तिणरे कुकरम रो छें चालो ।
 ते नही सके लगावतों कालो रे ॥ १५ ॥
 अनंता होसी आगमीये कालो ।
 तिणरो कुण काढे नीकालो रे ॥ १६ ॥
 के केवलग्यानी रह्या जाणों ।
 कोइ आप म लेजो ताणों रे ॥ १७ ॥
 अपछंदा अवक्त मूढ ।
 कर कर कूडी हूढ रे ॥ १८ ॥
 त्याने वादे छें सीस नमाय ।
 बले मुख सू करे गुण ग्राम रे ॥ २९ ॥
 रहें एकलडो न्यार ।
 बले करे एकलडो वीहार रे ॥ २० ॥
 ते तो भोलां नें नही ठीक ।
 कुण करे तहतीक रे ॥ २१ ॥
 बले कूडकपट रो भंडार ।
 रखे करे म्हांरो उघाड रे ॥ २२ ॥
 पातरों लेइ हाथ ।
 फेरे बायां रे माथें हाथ रे ॥ २३ ॥
 ताजो आहार पिण गली आवे ।
 ताजों आहार ताकी ल्यावे रे ॥ २४ ॥
 भोला करसी परतीत ।
 एकल नें जाणें विपरीत रे ॥ २५ ॥
 ते फिरसी एकल ।
 एहवा एकल कदेयन भला रे ॥ २६ ॥
 साध नें एकलो रहणों नाही ।
 ते पडीया मोटां फंद माही रे ॥ २७ ॥
 एकल दूर तजीजे ।
 त्याने हरष सहीत गुर कीजे रे ॥ २८ ॥
 ते नीमाइ निष्चें भिष्टी ।
 तिणनें साध न सरखे समदिष्टी रे ॥ २९ ॥

रत्न : ११

जिनाग्या री चौपई

ढाल : १

दुहा

श्री जिण धर्म जिण आगना मभे, आगना बारे नही जिण धर्म ।
तिण सू पाप कर्म लागे नही, वले कटे आगला कर्म ॥ १ ॥
केइ मूढ मिथ्याती इम कहे, जिण आगना बारे जिण धर्म ।
जिण आगना माहें कहे पाप छे, ते भूला अर्ग्यानी भर्म ॥ २ ॥
जिण आगना बारे धर्म कहे, जिण आगना माहे कहे पाप ।
ते किण ही सूतर मे चाल्यो नही, यू ही करें मूढ विलाप ॥ ३ ॥
केइ कहे धर्म तिहां देवां आगना, पाप छे तिहां करां नखेद ।
मिश्र ठिकाणें मून छे, एह धर्म नो भेद ॥ ४ ॥
इसडी करें छे परूपणा, ते करे मिश्र री थाप ।
ते बूडा खोटें मत बांध ने, श्री जिण वचन उथाप ॥ ५ ॥
केइ मिश्र तो माने नही, माने हिंसा में एकंत धर्म ।
ते पिण बूडा छे बापडा, भारी करे छे कर्म ॥ ६ ॥
जिण धर्म तो जिण आगना मभे, आगना बारे नही धर्म लिंगार ।
तिणरी साख सूतर री दे कहूं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अशुकम्पा न आसीये]

आग्या में जिण धर्म जिणराज रो, आगना बारे कहे ते मूढ रे ।
ववेक विकल सुध बुध विना, ते बूडे छे कर कर रूढ रे ।
श्री जिण धर्म जिण आगना मभे* ॥ १ ॥
ग्यांन दर्शन चारित ने तप, ए तो मोख रा मारग च्यार रे ।
या च्यारा में जिणजी री आगना, या विना नही धर्म लिंगार रे ॥ श्री २ ॥
या च्यारा महिला एक एक री, आगना मागे श्री जिण पास रे ।
तिण ने देवे जिणेसर आगना, जब उ पिण पामे मन मे हूलास रे ॥ ३ ॥
यां च्यारा विण मार्गे कोइ अगना, तो जिणेसर सामे मून रे ।
जिण आगना विण करणी करे, ते करणी जावक जबून रे ॥ ४ ॥
वीसां भेदां रूके कर्म आवता, बारे भेदां कटे वाघ्या कर्म रे ।
त्यांरी देवे जिणेसर आगना, ओहीज जिण भाष्यो धर्म रे ॥ ५ ॥

यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कर्म रुकें तिण करणी में आगना,
 यां दोय करणी विनां नही आगना,
 देव अरिहंत नें गुर साध छें,
 ओर धर्म में नही जिण आगना,
 जिण भाष्या में जिण आगना,
 तिण सूं सुद गत जायें नही,
 केवली भाष्यो धर्म मंगलीक छे,
 सरणों पिण लेणो इण धर्म रो,
 ठाम ठाम सूतर में देखजों,
 मून सामें तिहा धर्म कह्यो नही,
 मून सामणीयो धर्म माठो घणों,
 खाच खांच बूडें छे बापडा,
 धर्म नें सुकल दोनू ध्यान में,
 आरत रुद्र ध्यान माठा बेहू,
 तेजू पदम सुकल लेस्या भलीं,
 तीन माठी लेख्या में आग्या नही,
 भला परिणाम में जिण आगना,
 भला परिणामा निरजरा नीपजे,
 भला अधवसाय में जिण आगना,
 भला अधवसाय सूं निरजरा हुवें,
 ध्यान लेस्या परिणाम अधवसाय,
 च्याहं माठा में जिण आगना नही,
 च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या,
 ए सगला छे जिण आगना ममे,
 सर्व मूल गुण उत्तरगुण,
 यां दोनू गुणां में जिण आगना,
 अर्थ परमअर्थ जिण धर्म छें,
 तिण माहे तो श्री जिण आगना,
 सर्वविरत धर्म साव तणों,
 यां दोनू धर्म में जिण आगना,
 उजल धर्म छे श्री जिणराज रो,
 मुगत जावा अजोग साध कह्यो,

कर्म कटे तिण करणी में जाण रे।
 ते सगली सावद्य पिछाण रे ॥ ६ ॥
 केवलीयें भाष्यो ते धर्म रे।
 तिण सूं लार्गे पाप कर्म रे ॥ ७ ॥
 ओर रो भाष्यो ते ओर जाण रे।
 पाप कर्म लार्गे छें आण रे ॥ ८ ॥
 ओहीज धर्म उत्तम जाण रे।
 तिणमें जिण आगना परमाण रे ॥ ९ ॥
 केवली भाष्यो ते धर्म रे।
 मून सामें तिहां पाप कर्म रे ॥ १० ॥
 भेष धाख्यां परुष्यो ताण रे।
 सूतर - रा मूढ अजाण रे ॥ ११ ॥
 जिण आग्या दीधी चालवार रे।
 यानें ध्यावें ते आग्या बार रे ॥ १२ ॥
 त्यामें जिण आग्या नें निरजरा धर्म रे।
 तिण सूं बंधे पाप कर्म रे ॥ १३ ॥
 माठा परिणाम आग्या बार रे।
 माठा परिणामा पाप दुवार रे ॥ १४ ॥
 आग्या बारे माठा अधवसाय रे।
 माठा अधवसाय सूं पाप बंधाय रे ॥ १५ ॥
 च्याहं भलां में आग्या जाण रे।
 यांरा गुणां री कीजो पिछाण रे ॥ १६ ॥
 च्यार सरणा कह्या जिणराय रे।
 आग्या विण आछी वस्त न काय रे ॥ १७ ॥
 देस मूल उत्तर गुण दोय रे।
 आगना बारे गुण नहीं कोय रे ॥ १८ ॥
 उवाइ सूयगडाअंग मांय रे।
 सेख अनर्थ में आग्या न कांय रे ॥ १९ ॥
 देसविरत श्रावक रो धर्म रे।
 आग्या वारें तो बंधसी कर्म रे ॥ २० ॥
 ते तो श्री जिण आग्या सहीत रे।
 ते जिण आगना सूं विपरीत रे ॥ २१ ॥

आग्या लोपी चाले छादे आप रें, तेग्यांनादिकघन सूं ठालो थाय रे ।
 आचारंग अघेन दुसरे, जोवो छत्र उदेसा मांय रे ॥ २२ ॥
 आग्या सूं कळं ते घन मांहरो, एहवो चितवें साधु मन मांय रे ।
 आगना विण करवो जिहांइ रह्यां, रुडें बोलवो पिण नही कांय रे ॥ २३ ॥
 आग्या माहिलो ते घर्म मांहरों, ओर सर्व पारको थाय रे ।
 आचारंग छत्र अघेन में, दूजें उदेसें कह्यो जिणराय रे ॥ २४ ॥
 आगना मांहे सजम ने तप, आगना में दान परमाण रे ।
 आगना रहीत घर्म आछ्यो नही, जिण कह्यो पलाल समाण रे ॥ २५ ॥
 आश्रव निरजर रो ग्रहण जूदो कह्यो, ते जाणसीजिण आग्या रो जाण रे ।
 आचारंग चोथा अघेन में, पेंहलें उदेसें जोय पिछाण रे ॥ २६ ॥
 निरवद धर्मी चतुरविध संघ छे, ते आग्या सहीत वांछे अनुष्ठान रे ।
 ते आचारंग चोथा अघेन में, तीजे उदेसें कह्यो भगवान रे ॥ २७ ॥
 तीथंकर धर्म कीधो तको, ते मोख रो मारग सुघ वेस रे ।
 ओर मोख रो मारग को नही, पाचमे आचारंग तीजे उदेस रे ॥ २८ ॥
 जिण आगना बारली करणी तणो, उदम करे अग्यांनी कोय रे ।
 आग्या माहिली करणी रो आलस करे, गुर कहे सीष तोनें दोनूं म होय रे ॥ २९ ॥
 कुमारग तणी करणी करें, सुमारग रो आलस करे कोय रे ।
 दोनूं कारण दुरगत तणा, आचारंग पाचमो घेन जोय रे ॥ ३० ॥
 जिण मारग रा अजाण ने, जिण उपदेस रो लाभ न होय रे ।
 ते आचारंग नां चोथा अघेन में, तीजा उदेसा में जोय रे ॥ ३१ ॥
 जो दान सुपातर नें दीयो, तिणमे श्री जिण आग्या जाण रे ।
 कुपातर दान मे आगना नही, तिणरी बुचवंत करजो पिछाण रे ॥ ३२ ॥
 साध विनां अनेरा सर्व ने, दान न दे साध माठो जाण रे ।
 दीघां भमण करें भंसार में, तिणसूं साघां कीया पचखाण रे ॥ ३३ ॥
 सूरगडाअग नवमां अघेन मे, तेवीसमी गाथा जोय रे ।
 वले दीघां भागे वरत साधु रा, जिण आगना पिण नही कोय रे ॥ ३४ ॥
 पातर कुपातर दोनूं ने दीयां, विकल जाणे दोयां मे धर्म रे ।
 घर्म होसी सुपातर दान में, कुपातर नें दीयां पाप कर्म रे ॥ ३५ ॥
 खेतर कुखेतर श्री जिणवर कह्या, चोथे ठांणे ठांग्गाअंग माय रे ।
 सुखेतर मे दीयां जिण आगना, कुखेतर मे आग्या नही कांय रे ॥ ३६ ॥
 आहार पांणी ने उपवादिक, साध देवे गृहस्थ ने कोय रे ।
 तिणने चोमासी डंड नसीत मे, पनरमें उदेसें जोय रे ॥ ३७ ॥

गृहस्थ नें दान दें तिण साव नें, प्रायच्छित आवें छें कीवां अघर्म रे ।
 तो तेहीज दान गृहस्थ दीयें, त्यांने किण विच होसी घर्म रे ॥ ३८ ॥
 असंजम छोडें संजम आदर्यों, कुसील छोडें हूचो ब्रह्मचार रे ।
 अकल्पणीक अकारज परहरे, कल्प आचार कीयों अंगीकार रे ॥ ३९ ॥
 अग्यांन छोडे नें ग्यांन आदर्यों, माठी किरिया छोडी माठी जाण रे ।
 भली किरिया नें साचां आदरी, जिण आग्या सूं चतुर सुजाण रे ॥ ४० ॥
 मिथ्यात छोडे समकत्त आदर्यों, अबोच छोडें नें आदरीयो बोच रे ।
 उनमारग छोडें सनमारग लीयों, तिणसूं आतम होसी सोच रे ॥ ४१ ॥
 आठ छोड्या ते जिण उपदेस सूं, पाप कर्म तणो बंध जाण रे ।
 जिण आगना सूं आठ आदर्या, तिणसूं पामें पद निरवाण रे ॥ ४२ ॥
 ठाम ठाम सूतर में देख लो, जिण घर्म जिण आग्या में जाण रे ।
 ते मूढ मिथ्याती जाणें नहीं, यूंही वूडे छें कर कर ताण रे ॥ ४३ ॥
 हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, आग्या वारें नही घर्म मूल रे ।
 आग्या वारे घर्म कहें तेहनी, सरवा कण विण जाणों घूल रे ॥ ४४ ॥



ढाल : २

दुहा

केइ साबु बाजे जेन रा, ते कूड - कपट री खान ।
ते आगना बारे धर्म कहे, त्यारा घट माहें घोरअग्यांन ॥ १ ॥
त्याने ठीक नहीं जिण धर्म री, जिणआग्या रीपिणनही ठीक ।
त्याने पिरवारबवेक विकल मिल्यो, त्यामे बाजें पूज महिदीक ॥ २ ॥
ते बडा उट ज्युं आगे चलें, लारे चालें जेम कतार ।
ते बोहला बूडें छे बापडा, बडा बूडां री लार ॥ ३ ॥
हिंवे वले बरोले जिण आगना, ओलखजो बुधवांन ।
तिणरा भाव भेद परगट करूं, ते सुण सुरत दे कांन ॥ ४ ॥

ढाल

[बालम मोरा हो]

साध सामायक वरत उचरें, तिणमें सावद्य रा पचचांण ।
तेहीज सावद्य गृहस्थ करे, तिणमें श्री जिण धर्म म जांण ॥
श्री जिण धर्म जिण आगना तिहां* ॥ १ ॥
श्रावक सामायक पोसो करे, तिणमे पिण सावद्य रा पचखांण ।
तेहीज सावद्य कांमा छूटो करे, तिणमें पिण जिण धर्म म जांण ॥ श्री० २ ॥
धर्म कहे साध जिण आगना मभे, आग्या बारे धर्म कहे मूढ ।
तिण श्री जिण धर्म न ओलख्यो, तिण भाली मिथ्यात री रूढ ॥ ३ ॥
जिण धर्म री जिण आगना दीये, जिण धर्म सिखावे जिणराय ।
आग्या बारे धर्म किण सिखावीयो, इणरी आग्या देवे कुण ताय ॥ ४ ॥
केइ आगना बारे मिश्र कहें, केइ धर्म पिण कहे आग्या वार ।
तिणने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यो, तिणरो नांम चोडे तूं पार ॥ ५ ॥
इत मिश्र ने धर्म रो कुण धणी, इणरी आग्या कुण दे जोड्यां हाथ ।
देव गुर मून सामे न्यारा हूवा, उणरी उतपत रो कुण नाथ ॥ ६ ॥
केइ वेस्या रा पुत्र नें पूछा करें, थारी मा कुण नें कुण तात ।
जव ओ नाम बतावे किण तात रो, ज्युं आ मिश्र चाला री छे वात ॥ ७ ॥
वेस्या रा अंग रो उपनों, तिणरो कुण हुवे उदीरी ने वाप ।
ज्युं आग्या बारे धर्म ने मिश्र री, जिण धर्मी कुण करसी थाप ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वेस्या रा अंग रो उपनो, उण लखणो हुवे उदीरी नें बाप ।
 ज्युं जिण आग्या बारें धर्म नें मिश्र री, केइ करें छें पाषंडी थाप ॥ ६ ॥
 बाप विण बेटो निश्चे हुवे नही ज्युं जिण आगना विण धर्म न होय ।
 जिण आग्या होसी तो जिण धर्म छें, आगना विण धर्म न कोय ॥ १० ॥
 कोइ कहें मांहेरी मा तो छें बांभडी, तिणरो हूं छूं आतम जात ।
 ज्युं मूर्ख कहे जिण आगना विनां, करणी कीवां धर्म साख्यात ॥ ११ ॥
 मा विण बेटा रो जनम हुवें नहीं, जनमें ते वांभ न कोय ।
 ज्युं आग्या विण धर्म हुवे नही, जिण आग्या तिहां पाप न होय ॥ १२ ॥
 गूधू पंखी नें चोर दोनूं भणी, गमती लागें अंधारा री रात ।
 ज्युं भारी करमा जीव तेहनें, जिण आग्या बारलो धर्म सुहात ॥ १३ ॥
 काग नीबोली में रित करें, भंडसूरा रें मिष्टो आवे दाय ।
 ज्युं काग भंडसूरा जेहवा मानवी, रीमें आग्या बारली करणी मांय ॥ १४ ॥
 चोर परदार सेवण कुसीलीया, ते तो सेरी जोवें दिन रात ।
 ज्युं आग्या बारें धर्म सरघायवा, उंची कर कर अग्यानी वात ॥ १५ ॥
 दुष्ट जीव मंजारा नें चीत रा, छल सूं करें पर जीवां री घात ।
 एहवो दुष्ट मिश्र सरघा रो घणी, छल सूं घालें विकलां रे मिथ्यात ॥ १६ ॥
 सतगुर री आग्या मांनें नही, ते तो अपछंदा ने अवनीत ।
 ज्युं कोइ जिण आग्या विण करणी करे, ते करणी पिण छे बिपरीत ॥ १७ ॥
 विगडायल हुवां न्यात बारे करे, ते विगडायल फिरे न्यात रे बार ।
 जेहवो धर्म जिण आग्या बारलो, तिणमें कदे मत जाणो भली वार ॥ १८ ॥
 न्यात बारें ते न्यात माहें नही, तिणनें नहीं बेसाणे एक पांत ।
 ज्युं जिण आग्या विण धर्म अजोग छें, कीयां पूरीजें नही मन खात ॥ १९ ॥
 जो आग्या विण करणी में धर्म छें, तो जिण आग्या रो कांभ न कोय ।
 तो मन मांनी करणी करसी तेहने, सगली करणी कीयां धर्म होय ॥ २० ॥
 जिण आग्या बारली करणी कीयां, पाप नही लागें नें धर्म थाय ।
 तो किण करणी सूं पाप नीपजें, तिण करणी रो तू नांभ वताय ॥ २१ ॥
 ग्यांन दरसण चारित ने तप, ए च्याहंडे छे आगना माय ।
 या च्यांरा माहे तो धर्म जिण कहो, यां विनां ओर नाम वताय ॥ २२ ॥
 इम पूछ्यां रो जाब न उपजे, भूठ बोले वणाय वणाय ।
 विकलां ने विगोवें छे पापीया, जिण आग्या बारें धर्म सरघाय ॥ २३ ॥
 जिण धर्म जिण आग्या बारें कहे, ते पिण छे जिण आगना बार ।
 इण सरघा सूं वूडे छें बापडा, ते भव भव में होसी खुवार ॥ २४ ॥

जिण आगना बारे घर्म कहे, ते विगडायल जेन रा जाण ।
 त्यांरी अभितर फूटी छे माहिली, ते अंधारा ने कहे माण ॥ २५ ॥
 जिण आगना विण करणी करे, ते तो दुरगतना आगेवाण ।
 जिण आग्या सहीत करणी कीयां, तिण सूं पामें पद निरवाण ॥ २६ ॥
 आग्या बारे घर्म कहे तेहनी, जोड कीघी खेरवा मभार ।
 सवत अठारें चालीसे समें, असोज विद पांचम थावरवार ॥ २७ ॥



ढलल : ३

दुहल

केइ ढलखंडी जेन रल, सलघ नलंढ ढरलड ।
ते ढलढ कहें जलण आगनल ढढे, कूडल कुहेत लगलड ॥ १ ॥
आहलर ढलंणी सलघ ढोगवे, ते श्रीजलण आगनल सहीत ।
तलण ढें ढरढलद ने इवलरत कहें, तलंरी सरघल घणी वलढरीत ॥ २ ॥
वले वसतुर ढलतर कलंवलु, इतुडलदलक उढघ अनेक ।
ते ढलण जलण आगनल सूं ढोगवे, तलंनें ढलढ कहें ते वलगर ववेक ॥ ३ ॥
तलं श्रीजलण घढं न ओलखुडें, जलण आगनल ढलण ओलखी नलंहल ।
तलणसूं अनेक वुललं तढलं, ढलढ कहें जलण आगनल ढलंहल ॥ ॡ ॥
कहे नंदी उतरें तलण सलघ नें, आगनल दे जलण आढ ।
ते ढुरतल हलंसल देल लु, जलण आगनल छे ढलण ढलढ ॥ ॡ ॥
इतुडलदलक वुल अनेक ढे, आगनल दे जलणरलड ।
तलहलं हलंसल हुवे छें जीव री, तलण सूं ढलढ ललगें आड ॥ ॢ ॥
इढ कहल कहल जलण आगनल ढढे, थलढे छे ढलढ एकंत ।
हलवं ओलखलउ जलण आगनल, ते सुणजुं ढतवंत ॥ ॣ ॥

ढलल

[ढगध देस कु रलजल रलजे]

जे जे कलरज जलण आगनल सहीत छें, ते उढडुुग सहीत करे कुड ।
जे कलरज करतलं घलत जीव तढी हुवं, तलणरुं सलघ नें ढलढ न हुड रे । ढवीडण ।
जुवुु हलरदुड वलचलरी, थे कलंय करुं लुढ हलडल री रे । ढवीडण ।
जलण आगनल सुलकलरी ॥ १ ॥
जलण तढी घलत हुवे सलघ थी, तलणरुु सलघ नें ढलढ न ललगें ।
जलण आगनल ढलण लुढी न कहलंजें, वले सलघ रुु वरत न ढलंरुं रे ॥ ढ० जलण २ ॥
ए इचरुं वलली वलत उघलडी, कलकलं रे हलडुुं केढ सढलवे ।
जुलं जलण आगनल ओलखी नही डुरी, ते जलण आगुडल ढें ढलढ वतलवें रे ॥ ३ ॥
नंदी उतरें जव सुघ सलघलं नें, आगनल दे जलण आढ ।
जुं नंदी उतरें तलंनें ढलढ हुवं तुु, आगनल दीधी तलंनें ढलण ढलढ रे ॥ ॡ ॥
छुदढसुड सलघ नंदी उतरें तलंनें, केवलु आगनल दे सुड ।
ढुुतें ढलण केवलु नंदी उतरें छे, ढलढ हुुसी तुु दुुडलं ने हुुड रे ॥ ॡ ॥

जे नंदी उतरें छें केवलग्यांनी, त्यांने पाप न लागें लिंगार ।
तो छद्रमस्थ ने पाप किण विच लागे, या दोयां रों छें एक आचार रे ॥ ६ ॥
छद्रमस्थ ने केवली नदी उतरे जब, दोयां सूं हुवे जीवां री घात ।
जो जीव मूआ त्यांरी हिंसा लागे तो, दोयां ने लागें परणातिपात रे ॥ ७ ॥
केवल ग्यांनी नंदी उतरे त्यांने, पाप न लागें कोय ।
तो छद्रमस्थ साध नंदी उतरे जब, त्यांने पिण पाप न होय रे ॥ ८ ॥
कोइ कहें केवली नें पाप न लागे, नंदी उतरतां जोग सुघ ।
पिण छद्रमस्थ ने पाप लागे नंदी रो, ए प्रतख वात विरुध रे ॥ ९ ॥
जिण विच केवली नंदी उतरे जिम, पिण छद्रमस्थ उतरें जो नांहि ।
तो खांमी छें तिणरे इरज्या सुमत में, पिण खांमी नही किरतब मांहि रे ॥ १० ॥
ते खांमी पडे ते अजाण पणे छें, इरियावही पडिकमण री थाप ।
वले इधकी खांमी जाणे इर्या सुमत में, तो प्राच्छित ले उतारे पाप रे ॥ ११ ॥
साध नदी उतरे ते किरतब, सावद्य म जाणों कोय ।
जो सावद्य हुवें तो संजम भांगे, ते विराधक री पांत होय रे ॥ १२ ॥
आगे नंदी उतरतां अनंता साघां ने, उपनो केवलग्यांनो ।
ते नंदी मांहे आजपों पूरो करने, गया पांचमी गति परधानो रे ॥ १३ ॥
कोइ कहे साध नदी उतरे ते, इतरी हिंसा रो छे आगार ।
तिणरों पाप लागे पिण व्रत न भांगें, इम कहे ते मूढ गिवार रे ॥ १४ ॥
जो साध रे हिंसा रो आगार हुवे तो, नदी उतरतां मोख न जावे ।
हिंसा रो आगार ने पाप लागे जब, चवदमोइ गुणठांपो नावे रे ॥ १५ ॥
कोइ कहे नंदी उतरे जब साघने, लागे असक हिंसा परीहार ।
तिणरो प्राच्छित विण लीयां सुव नही छे, इम कहे तिणरेंई अंवार रे ॥ १६ ॥
जो नदी उतख्या रो प्राच्छित विण लीवां, साध सुघ न थावें ।
तो नंदी मांहे साध मरे तो असुघ, ते मोख मांहे क्यूं जावे रे ॥ १७ ॥
साध नंदी उतख्या माहे दोप हुवे तो, जिण आगना दे नांहि ।
जिण आगना देतां पाप नही छे, थे सोच देखो मन मांहि रे ॥ १८ ॥
नंदी उतरे त्यांरो ध्यान कीसो छे, किसी लेख्या किंसा परिणाम ।
जोग किंसा अचवसाय किंसा छें, भला भूडां री करो पिच्छाण रे ॥ १९ ॥
ए पांचू भला छे तो जिण आगना छें, माठा में जिण आगना न कोय ।
ए पांचू माठा सूं पाप लागे छे, भलां सूं पाप न होय रे ॥ २० ॥
छद्रमस्थ ने केवली नंदी उतरे जब, लारे छद्रमस्थ केवली आगें ।
छद्रमस्थ उतरें केवली री आग्या सूं, त्यांने पाप किसे लेखे लागे रे ॥ २१ ॥

श्रावक माहोमांहि वीयावच कीधी, तिण दीयो सरीर रो साज ।
 छक्राय रो ससतर तीखो कीधो, तिणसू आग्या न दे जिणराज रे ॥ ५४ ॥
 गृहस्थ री वीयावच कीधी तिणरो, अठावीसमो अणाचार ।
 साता पूछ्यां रो अणाचार सोलमो, तिण मे धर्म नहीं छे लिगार रे ॥ ५५ ॥
 सरीरादिक ने श्रावक पूजें, मातरादिक परठें पूज ।
 इयादिक कारज री नहीं जिण आग्या, तिणमें धर्म कहे ते अबूज रे ॥ ५६ ॥
 सरीर पूजे मातरादिक परठें, ते तो सरीरादिका रों छें काज ।
 जो धर्म तणो ए कारज हुवें तो, आगना देतां जिणराज रे ॥ ५७ ॥
 जो पूजणो परठणों न करे जावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम ।
 हस्तादिक ने विनां चलाया, रहणी न आवे तांम रे ॥ ५८ ॥
 लघू बडी नीत तणी अवाचा, खमणी ठामणी नावे तांम ।
 पूज ने परठें तोही कामो सावच, तटे जिण आग्या रों नहीं कांमरे ॥ ५९ ॥
 कदा थोडी बुध ज्यानें समझ पडे नहीं, त्यानें राखणी जिण परतीत ।
 आगना मांहे पाप आग्या वारे धर्म, इसडी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥
 जिण आगना माहे पाप कहे ज्यांरी, मति घणी छे माठी ।
 जिण आगना वारे धर्म कहे छे, त्यांरी अकल आडी आई पाटी रे ॥ ६१ ॥
 जिण आगना मांहे पाप कहितां, मूखें मूल न लाजें ।
 वले धर्म कहे जिण आगना वारे, ते पिडत पाखंड्यां मे वाजे रे ॥ ६२ ॥
 जिण आगना मांहे पाप कहे छे, ते बूडे कर कर तांण ।
 जिण आगना वारे धर्म कहे छे, ते पिण पूरा मूढ अयांण रे ॥ ६३ ॥
 संवत अठारे वरस इकतीसे, जेठ सुदि तीज सुकरवार ।
 श्री जिण आगना ओलखावण, जोड कीवी पर उपगार रे ॥ ६४ ॥

ढाल : ४

ढुहा

पाप अठारे कहा अति बुरा, श्री जिण मुख सू आर ।
 ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूइ करणा पाप ॥ १ ॥
 ए श्री जिण वचन उत्थापने, बेई उंची परुपे ताहि ।
 कहे करण जोग मिले नही, पाप अठारां माहि ॥ २ ॥
 पाप कीयां पाप नीपनों कहे, पाप करायां कहे छे' धर्म ।
 इण विघ करे छे परुपणा, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३ ॥
 त्याने प्रश्न पूछे इण वात रो, पाप करायां धर्म किघ थाय ।
 जब कल्प वतावे' साघ रो, पिण सूचो बोल्हो नही जाय ॥ ४ ॥
 तिण जिण आगना नही ओलखी, साघरो कल्प ओलख्यो नाहि ।
 त्या करण जोग विगटावीया, पाप कहे जिण आगना माहि ॥ ५ ॥
 कहे साघ न पेहरे कांचूवो, पेहख्यां लागे पाप कर्म ।
 पिण साघवी ने आगना दीया, हुवे छे निक्केवल धर्म ॥ ६ ॥
 इत्यादिक अनेक वोल कल्प रा, त्यामें घाले' घुचलाई मूढ ।
 करण जोग उथापे अग्यांनी थकां, त्यां भाली मिथ्यात री रूढ ॥ ७ ॥
 कल्प साघ साघवी तणो, जुदो जुदो बांध्यो जिणराय ।
 तिण कल्प मे जिणजी री आगना, तिणमें पाप कीहां थी थाय ॥ ८ ॥
 साघने कल्पे ते साघ करे, साघवी करे कल्पे ते तांम ।
 पाप नही त्यारा कल्प में, करण जोग रो अठे नही काम ॥ ९ ॥
 हिवे' कल्प साघ साघवी तणो, सांभलजो नर नार ।
 निरणो कीजे घट भितरे', ज्यू उतरो भवपार ॥ १० ॥

ढाल

[माघ देस को राज राजे]

साघ साघवी रा कल्प माहे अग्यानी, पाप कहे मूढ कोय,
 तिण कल्प माहे श्री जिणजी री आग्या, तिहां पाप रो अस न होय रे ॥
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, कांय करो आतम भारी रे ।
 जिण बांध्यो कल्प सुखकारी* ॥ १ ॥
 साघ साघवी रो कल्प श्री जिण बांध्यो, तिणरी श्री जिण आगना दीघी ।
 तिण माहे पाप वताए अग्यानी, खाच गला ने लीवी रे ॥ जि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तीन पिछोवडी साध नें कल्पे, साधवी नें कल्पे च्यार ।
 यां देयां नें छे श्रीजिण आग्या, तिभमें पाप नही छे ल्यार ॥ ३ ॥
 च्यार पछोवडी साधवी राखें तो, साध आग्या देवें भलीभांत ।
 जो पोतेई साध च्यार राखें तो, भागल री छे पांत रे ॥ ४ ॥
 कांचूओ नें जांधीयो साधवी राखे, तिणनें आग्या दे साध रखावे ।
 जो साव पेहरे कांचूओ जांधीयो, तो जिण आग्या रो चोर कहावे रे ॥ ५ ॥
 गांमां नगरां साधवी नें कल्पे, शेखाकाल रहिणो मास देय ।
 जो शेखा काल साध रहे दोग्य महीना, तों जिण आगना रो चोर होय रे ॥ ६ ॥
 साधवीयां कमाड जडे नें उघाडे, सील व्रत राखण रे काजे ।
 जो साध कमाड जडे नें उघाडे, तो पेहिलो माहावरत भाजे रे ॥ ७ ॥
 साधवीयां किवाड जडे नें उघाडे, त्यानें जिण आगना दें सोय ।
 साध नें किवाड जडण उघाडण री, जिण आगना नही कोय रे ॥ ८ ॥
 कदा साधवी राखे उघाडो दुवार, तिणने प्राच्छित दे करे सुव ।
 तिणने आगना दे किवाड जडण री, साव पोतें जडे तो असुव रे ॥ ९ ॥
 पेहला नें छेहला तीर्थकर त्यांरा, ते वाजे कपठीया साध ।
 त्यांरे धवला नें अल्पमोला कपडा, वले गिणती मे पिण मरजादा रे ॥ १० ॥
 विचला तीर्थकर बावीस त्यांरा, ते वाजे अकपठीयां साध ।
 त्यांरे पांच वर्णा नें बहुमोला कपडा, वले गिणती में नही मरजादा रे ॥ ११ ॥
 जे कपठीया ने नही कल्पे ते कपडा, भोगवे तो लागे पाप कर्म ।
 तेहीज कपडा अकपठीया ने कल्पे, त्यानें भोगवीयां छे धर्म रे ॥ १२ ॥
 पांच वर्णा नें बहु मोला कपडा, अकपठीया राखे भली भांत ।
 त्यानें कपठीया आगना दें तो ही धर्म, पोते राखे तो चोरां री पात रे ॥ १३ ॥
 कपठीया साव साधवी नें, गांमा नगरां मरजादा सूं रहिणो ।
 अकपठीया रहे विण मरजादा, जिण आग्या परिमाणे बहिणो रे ॥ १४ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो कपठीयां रे ताई ।
 ते कपठीया सर्व साध ने न कल्पे, अकपठीया ने दोष नांही रे ॥ १५ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक कपठीया ताई ।
 तो पिण कपठीया ने न कल्पे, अकपठीया ने दोष नाही रे ॥ १६ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो, कीधो अकपठीया रे ताई ।
 तो कपठीया अकपठीया बेहूं नें, कल्पे नही मूल काई रे ॥ १७ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक अकपठीया ताई ।
 तो अकपठीया ने कल्पे उण विनां, कपठीया साध नें कल्पे नाही रे ॥ १८ ॥

संघटो साधवी रो साध नें न करणों, कारण पडीया कीयां दोष नांही।
 ओ पिण कल्प जिणेसर बांध्यो, पाप नही तिण माही रे ॥ १६ ॥
 साध साधवी ने राते भेलों न रहिणों, कारण पडीयां तो रहिणो भेलों।
 जिण रीते वीर कह्यो तिण रीते, रहित्वां ने कोइ मत हलो रे ॥ २० ॥
 साध साधवी नें साथे विहार न करणों, कारणे करणों साथे विहार।
 त्यानें आगना दे हर कोइ साध, तिणने पिण नही पाप लिगार रे ॥ २१ ॥
 साध ने तो एकलो रहिणों न कल्पे, साधवी ने न कल्पें दोग।
 त्याने पिण रहिणों कल्पें कारण पडीयां, जिण आगना पिण छे सोय रे ॥ २२ ॥
 साधवी दिखत घणा काल री छे, तो ही नव दिखत साध ने वदे।
 साधवी पद तीथकर पांमी, तिणनें साध वादे आंगदे रे ॥ २३ ॥
 दिख्या वडी साधवी साध ने वादे, साध पिण साधवी ने वादे।
 ओ पिण कल्प तीथंकर बांध्यो, ओर नही बांध्यो आप छादे रे ॥ २४ ॥
 दोग कोस उपरंत आहार च्याहई, साध ने भोगवणो नाहि।
 पेहला पोहर तणो आहार छेहला पोहर में, ते पिण नही घालणो मुख माहि रे ॥ २५ ॥
 जो गाढा गाढ रो कारण पडे तो, पेहला पोहर तणों पोहर छेहले।
 ओषघादिक जिम जाणे नें साधु, मुख माहि निसंक सूं मेलें रे ॥ २६ ॥
 ओ पिण कल्प छे कपटीयां रो, अकपटीयां रो केवली जाणें।
 ते पिण त्यांरा कल्प माहि रहिसी, ते निश्चो काडे कुण ताणें रे ॥ २७ ॥
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते सूतर सूं कीजो पिछांगणों।
 आप आप तणा कल्प माहे चाल्यां, तिण में जिण आगना थे जाणो रे ॥ २८ ॥
 साधरा कल्प में साध चालें, त्याने लागें नाही पाप कर्म।
 यानें आगना दे कोइ यांरा कल्प री, तिणनें हुवें छे निरजर घर्म रे ॥ २९ ॥
 साधवी रा कल्प में साधवी चाले, यानें पिण नही छे पाप कर्म।
 याने पिण आगना दें यांरा कल्प री, तिणनें पिण निरजर घर्म रे ॥ ३० ॥
 एहवो कल्प तीथंकर बांध्यो, तिण कल्प परमाणे चालो।
 इण कल्प मे पाप म सरखो कोइ, आ सरखा सेठी कर भालो रे ॥ ३१ ॥
 करण जोग विगटावण अग्यांनी, करें साध रा कल्प री वात।
 जे जे कल्प तिथंकर बांध्यो, तिणमे पाप नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 तीथंकर कल्प बांध्यो तिण माहे, पाप हुवे तो कल्प छे भूंडो।
 तिण कल्प तणी कोइ आगना देसी, ते पिण जावक वूडो रे ॥ ३३ ॥
 जे मोटा पुरुषां रो कल्प बांध्यो छे, तिणमें पाप कहें ते पापी।
 ते वूड गयो मानव भव पाए, वीरनो वचन उथापी रे ॥ ३४ ॥

तीर्थकरे कल्प बांध्यों छें तिणरी, तीर्थकर आगना दे आप ।
 त्यांरी आग्या ने कल्प में पाप हुवें तो, किणरी आग्या ने कल्प निपाप रे ॥ ३५ ॥
 साध ने आगना दे साध रा कल्प री, त्यांरी निरखद भाषा जाणो ।
 निरखद भाषा सू निश्चें हुवें निरजरा, तिणमें संका मूल म आणो रे ॥ ३६ ॥
 साधां तो सावद्य सगलोइ त्याग्यो, त्यारे पाप रो नहीं आगार ।
 त्यांरा कल्प में आगार पाप तणो हुवे, तो निश्चें नही अणगार रे ॥ ३७ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मइथुन परिग्रह, इत्यादिक पाप थानक अठारें ।
 ते सेव्यां सेवायां ने भलो जाण्या, तिणमें धर्म नही छें लिगारे रे ॥ ३८ ॥
 जे जे किरतब कीधाई पाप छें, तो कराया अणमोध्याइ पाप ।
 इणमेई घोचो घाले अग्यांनी, श्री जिण वचन उथाप ॥ ३९ ॥
 कीधाइ पाप करायाइ पाप, अणमोघ्यां पिण हुवे पापो ।
 इण माहें संका मूल म जाणों, श्री जिण भाख्यो छे आपो रे ॥ ४० ॥
 साधु रो काम करे कोइ श्रावक, श्रावक रो काम करे जो साध ।
 यां दोयां ने श्री जिण आग्या नाहि, या दोयां रे नही समाध रे ॥ ४१ ॥
 कोइ श्राविका काम करे साधु रो, श्राविका रो करे साधु काम ।
 यां दोयां ने पिण जिनाग्या नाहि, वले धर्म नही छे ताम रे ॥ ४२ ॥
 कोइ श्राविका साधु रो पेट मसल ने, साधु ने जीवां बचावे ।
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचमी, साधु ने बाई साता उपजावे रे ॥ ४३ ॥
 वले कांटो काढे बाई साधु रा पग थी, फांटो काढे आंख्यां थो बरे ।
 इत्यादिक साधु रो काम बाई करे तो, तिणने जिनाग्या नही लिगारे रे ॥ ४४ ॥
 श्राविका साधु रो काम करे तिम, श्रावक करे साधवियां रो काम ।
 यां दोयां ने पिण जिण धर्म नांही, जिनाग्या नही छे ताम रे ॥ ४५ ॥
 साधवी रो पेट मसल ने श्रावक, साधवी मरती ने बचावे ।
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचपी, साधवी ने सांता उपजावे रे ॥ ४६ ॥
 साधवी रो कांटो श्रावक पग थी काढे, फांटो काढे आंख्यां बरे ।
 इत्यादिक साधवी रो करे काम श्रावक, जिनाग्या नही लिगारे रे ॥ ४७ ॥
 श्रीजिण पाल बांधी ते मांगे, तिणने साधु तो न कहे धर्म ।
 केई धर्म बतावें भेषधारी भागल, ते तो भूला ग्यानी धर्म रे ॥ ४८ ॥
 जे जिनाग्या बारे धर्म कहें त्यां, जिनाग्या दीवी छें भागो ।
 एतो उधी श्रद्धा रा मूढ मिथ्याती, त्यां पहर विपाड्यो सांगो रे ॥ ४९ ॥
 साधु साधवी नें श्रावक जीवां बचावे, अथवा वले साता उपजावे ।
 अरिहंत भगवंत कहाो तिण रीते, कर्मा री कोइ खपावे रे ॥ ५० ॥

अरिहंत भगवंत री आग्या लोपे, करे साधु साधवियां रो काम ।
तिण माहें धर्म कहे भेषघारी, ते तो यू ही बके बेफाम रे ॥ ५१ ॥
संवत अठारे वरस बयाले, असाड विद एकम सोमवार ।
साधु साधवी तणो कल्प ओल्लायो, नाथ दुवारा सहर मभार रे ॥ ५२ ॥

●

ढाल : ५

ढुहा

केई जेंनी नाम घराय नें, वांचें सूतर सिद्धंत ।
 पिण सवलो न सूके तेहनें, उंघा उंघा अर्थ करंत ॥ १ ॥
 त्यामिं केई उचाडे मस्तकें, केई पोतीया मस्तक वंघ ।
 ते वचन उयापें वीर ना, ते होय रह्या मोह अंघ ॥ २ ॥
 ते साघ उयापण सांतरा, बोलें आल्पपाल ।
 नाम लेइ सूतर तणों, देवे अणहुंतो आल ॥ ३ ॥
 ते चवदे उपगरण कहे छेसाघ रे, इधकों राखणो कहे छें नांहि ।
 इधको राखें छें तेहनं, न गिणे सावां तणीपांत मांहि ॥ ४ ॥
 एहवी उंची करे छें परूपणा, घणा लोकां रें मांय ।
 सुघ सावां सूं भिडकावीया, कर कर कूडी बकवाय ॥ ५ ॥
 उपगरण इधकां रो नाम ले, सुघ सावां ने दीयां छे उयाय ।
 वले वीर वचन उयापनें, कर रह्या मूढ विलाप ॥ ६ ॥
 श्री वीर वचन सतमेव छें, त्यानें उयापजों मत कोय ।
 एक वचन उयापें जाण नें, तो अनंत संसारी होय ॥ ७ ॥
 भंड उपगरण कह्या छेसाघ नें, ते वीर गया छे भाख ।
 चित्त ल्गाय ने साभलो, तिणरी सूतर में छें साख ॥ ८ ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच मे रे]

उपगरण उगणीस तो लगता कह्या रे, दसमां अंग दसमां अघेन मांय रे ।
 ते नामें परनामिं कह्यां छेजूजूआ रे, सांभलों एकमना चित्त ल्याय रे ।
 उपगरण भाख्या छें भगवंत साघ ने रे* ॥ १ ॥
 भोजन भड नें वले पातरा रे, संग्रह सबद में तीन पातरा जाण रे ।
 जो तीनां पातरा तणी संका पडे रे, तो तीनां सूतरां सूं करों पिछाण रे ॥ २ ॥
 तीन पातरा कह्यां सूतर ववहार में रे, दूजा उदेसा मे जिणराय रे ।
 वले पातरा कह्यां छें तीन नसीत में रे, उदेसा अठारमां रे मांय रे ॥ ३ ॥
 भंड कह्यो छे ते माटी तणों रे, ते उचारादिक रे आवे छे कांम रे ।
 तिणरों कांम पडे छे अचाचूक रो रे, तिण सूं भड कह्यां छे तिणरों नाम रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भोली कही छें पातरा बाघवा रे, पाय केसरीया पातरा पडिलेहण जाण रे ।
 पाय ठवणच ते कह्यो भंडल्यो रे, तीन पडिला कह्या छें ते परमाण रे ॥ ५ ॥
 रसतांन गोछो नें तीन पिछोवडी रे, रजोहरणों नें चोल्पटें कह्यो ताम रे ।
 मुहपती चाली छें मुख बांधवा रे, पायपुछणो कह्यो विछावण कांम रे ॥ ६ ॥
 पायपुछणादि कह्यो तेहमें रे, आदि मांहे उपगरण छें अनेक रे ।
 ते सूतर जोय जोय परगट कळं रे, सांमलजों भवीयण बाण ववेक रे ॥ ७ ॥
 पातरा लूहवा नें चाल्यो लूहणो रे, दसवीकालिक पांचमा मांहे रे ।
 गलणों कह्यो छे पांणी छणवा रे, कल्प सूतर में जोवो ताहि रे ॥ ८ ॥
 बांह परमाणें डांडो नें वले लाकडी रे, पगे कादो लूहवा नें कही खपाट रे ।
 वांसादिक नी पिण सूइ कही रे, नसीत रे पेंहलें उदेसे पाठ रे ॥ ९ ॥
 सूत नी डोरी नें वले रासडी रे, चिलमिली आडी बांधवा जाण रे ।
 ते नसीत सूतर मांहे जिण कही रे, पेंहलें उदेसें में जोय करो पिछाण रे ॥ १० ॥
 डोरा चाल्या छे कपडो सीववा रे, ते कह्या छे सूतर आचारंग मांय रे ।
 ते पिण उनमान जाण नें राखणा रे, तिणरी संका मत राखो कांय रे ॥ ११ ॥
 दोय वार सुच लेणो कह्यो खंडीया थकी रे, नसीत रे चोया उदेसा मांहे रे ।
 ते खंडीया तो गिणती में दीसें नहीं रे, जीत ववहार सूं जाणे लेसी ताहि रे ॥ १२ ॥
 आज्या रे च्यार उपगरण इधका कह्या रे, कांचूओ जांधीयो पिछोवडी एक रे ।
 वले साडी मांहे कपडो इधको कह्यो रे, वेतकल्प आचारंग लीजों देख रे ॥ १३ ॥
 साठ वरसा में ह्वां नें थिवर कह्यो रे, त्यानें उपगरण इधका वखे रे ।
 ते ववहार सूतर उदेसे आठमें रे, संका पडें तो लेजो देख रे ॥ १४ ॥
 छत्तवा कह्यो छे ते तो छत्तरडो रे, ते कंबलादिक नों कर राखे ताम रे ।
 ते राखें छें सी तापादिक टालवा रे, ओर मूतलब रो नहीं छे कांम रे ॥ १५ ॥
 सरीर परमाणें डांडो कल्पें छें तेहनें रे, माटी नो भंड कल्पें छे ताहि रे ।
 ते राखे वडी नीतादिक कारणे रे, वले मान्नीयो राखें इधक सवाय रे ॥ १६ ॥
 लाठी राखणी कल्पे तेहनें रे, ते कही छें दोड हाथ परमाण रे ।
 ते बेसतां उठतां आचार छें रे, एहवें कारण कही छे जाण रे ॥ १७ ॥
 पाटली कही दीसें बेसवा भणी रे, गरदा नें वायादिक हुवेती जाण रे ।
 रोग उपजतो जांणी नें कही रे, सूतर सूं कर लेजों परमाण रे ॥ १८ ॥
 वस्त्र इधको कल्पें कह्यो थिवर नें रे, भसतकादिक बांधवा रे कांम रे ।
 रोग वधतो जांण्यो तिण सूं कह्यो रे, चोखा रहता जांण्या परिणाम रे ॥ १९ ॥
 वडी नीतादिक रो कारण वेगो पडें रे, वारें जांणो पडतो जाणे अकाल रे ।
 तिण सूं चिलमिली कही दीसें छें थिवर ने रे, आडी बांधेनें दीये आवावा टाल रे ॥ २० ॥

चर्म नें चर्म तणी वले कोथली रे,
 ए पिण कहाँ बायादिक टाखा रे,
 ए इयारें उपगरण इयका छें विवर ने रे,
 कहाँ छें संयम थिन् रहवा भणी रे,
 तीस उपगरण सावू रे मूतर श्री कहाँ रे,
 इयारें उपगरण विवर ने कहाँ रे,
 खैल करवाने अवस चाहिजे खेलीयाँ रे,
 एहवा उपगरण राखें ते आदि सबद में रे,
 वले उपगरण मूतर माहें निकले रे,
 वीर वचनां नें कुग उयासि रे,
 केइ मूड मिय्याती ते वक्वोकरे रे,
 चवदें उपगरण सूँ इयका राखें तेहने रे,
 मूतरां री तो पुरी समरु पडे नहीं रे,
 चवदें उपगरण सूँ इयका राखें तेहने रे,
 उपगरण चवदें सूँ तौ इयका कहाँ रे,
 ने वचन उयापे वूडा वागडा रे,
 त्यां तीयंकर उयाया छें तीन काल ना रे,
 वले मूतर उयाप्या भगवंत मान्नीया रे,
 तीन काल रा अरिहंत ने सावां भणी रे,
 ने कर्म बावे नें वूडा वागडा रे,
 घणा मोर्लां नें मिडकाया मुव सावा थकी रे,
 ते पेट मरा अन्हाखी पापीया रे,
 त्यां घणा लोकां नें बोया पापीया रे,
 ताण करे चवदें उपगरण नी रे,
 ते मूतर रा वचन न मांनें पापीया रे,
 थां पीड्यां खन बाख दीयां मावां भणी रे,
 केइ मूड मिय्याती जीव इम कहें रे,
 पातां पिण साव नें नहीं राखगा रे,
 चवदें उपगरण सूँ इयका नहीं राखगा रे,
 उपगरण इयका राखे ते साव निश्चें नहीं रे,
 एहवी भूठी भूठी करे पक्ष्यणा रे,
 त्यांनें सुघ सावां सूँ तो मिडकावीया रे,

चर्म तणी वले कटकों जाण रे।
 सरीरादिक कारण जाण पिछाण रे ॥ २१ ॥
 गरुडपणा तणी वय जाण रे।
 तिग माहि संका मूल म आण रे ॥ २२ ॥
 आरज्या रे उपगरण इयका च्यार रे।
 मूतर सूँ जोय कीयां छे न्यार रे ॥ २३ ॥
 पायपुछ्यादि सबद मे जाण रे।
 अलमात्र राखें उनमान परमाण रे ॥ २४ ॥
 ते पिण कर लेणों परमाण रे।
 ओर कर लेणा साचा जाण रे ॥ २५ ॥
 मूतर अरय तणा अजाण रे।
 सुव साव न सरवे मूड अयाण रे ॥ २६ ॥
 वले मूतरां रा अर्य मरोड मरोड रे।
 मरत्रें छें तीयंकर ना चोर रे ॥ २७ ॥
 ते मूतर में भाख गया भगवान रे।
 त्यांरा घट माहें पुरी घोर अयांन रे ॥ २८ ॥
 तीन काल रा दीवा साव उयाप रे।
 मत बांघण नें कीवी खोटी थाप रे ॥ २९ ॥
 दीयां अयांनी अछनो आल रे।
 त्यारे भव भव में होसी घणों जंजाल रे ॥ ३० ॥
 चवदें उपगरण रो ले ले नाम रे।
 त्यारे एकंत मत बांघण रो काम रे ॥ ३१ ॥
 ने पिण मांनी छें त्रिणरी बात रे।
 सुव सावां सूँ पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ ३२ ॥
 मुमता आणे नें काठें नहीं निकाल रे।
 कर कर भूठी मूड भखाल रे ॥ ३३ ॥
 साव नें लिखणों कल्पें नाहि रे।
 इम कहें छे घणा लोकां रे माहि रे ॥ ३४ ॥
 पांन राख्यां तो उपगरण इयका थाय रे।
 एहवी उंची पक्षे लोकां माहि रे ॥ ३५ ॥
 घणा लोकां नें दीयां उजोय रे।
 परमव सूँ तो मूल न डरीयो कोय रे ॥ ३६ ॥

लिखणो चाल्यो छें सुव सावां भणी रे, तिणरी छें सूतर माहि साख रे।
 तिणरी संका कोइ मत आणजो रे, भगवंत आगम में गया भाख रे ॥ ३७ ॥
 आचार्य री चाली छें आठ संपदा रे, तिण माहि लिखणों कह्यो साख्यात रे।
 दसासुतखंध सूतर जोय निरणो करो रे, छोड दो भवीयण भूठ मिथ्यात रे ॥ ३८ ॥
 वले प्रश्न व्याकरण में लिखणों चालीयो रे, साच बोलें ज्यूं लिखणों साच रे।
 दूजे संवर ते अघेन सातमो रे, संका काढो ते सूतर बांच रे ॥ ३९ ॥
 वले नसीत सूतर पुरों हुवे जठे रे, तिहां पिण लिखणों चाल्यो छें ताम रे।
 वले नंदी सूतर मे लिखणों कह्यो रे, नरकादिक अलंकार चित्राम रे ॥ ४० ॥
 लिखणों चाल्यो तो लेखण राखणी रे, स्याही आदि दे रंग राखणी रे।
 नालेरी आदि स्याही गालण नें राखणी रे, पाटी पाटला पांना बांधण रे कांम रे ॥ ४१ ॥
 पांना राखे ते ग्यान रे कारणे रे, पांना रा उपगरण छें अनेक रे।
 त्यां पांना तणा जतन करवा भणी रे, मेणीयादिक राखें वले वशेख रे ॥ ४२ ॥
 पांना विण ठीक किसी आचार री रे, पांना विण किम पाले आचार रे।
 पांना तणी पूरी परतीत छे रे, आंजूणा पाचमा काल मभार रे ॥ ४३ ॥
 घूर सूं तो पांना लिख्या आचारीया रे, तिणसूं पाना री छे परतीत रे।
 अणाचार्यां रा लिख्या जो सूतर हुवे रे, तो सूतर पाठ हुवे विपरीत रे ॥ ४४ ॥
 जिण सासण चालसी आरे पांचमे रे, तिणमे मत जाणों कोइ सक रे।
 जो आचार सरधा मे संका पडे रे, जब पांना जोय ने हुवे निसंक रे ॥ ४५ ॥
 साध नें लिखणों निषेधे पापीया रे, त्यांरी भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध रे।
 ते यूंही बूडे छे अन्ह्याखी थका रे, कर कर खोटी परूपणा विरुध रे ॥ ४६ ॥
 सरधा नें आचार थकी भिष्टी ह्यां रे, त्यां खोटां चाली सूतरा मभार रे।
 त्यां खोटा नें समविष्टी जथातथ जाण ने रे, कर बीधा दूध पांणी ज्यूं न्यार रे ॥ ४७ ॥
 साधु रा उपगरण नें लिखणा तणी रे, जोड कीधी नाथदुवारा सहार मभार रे।
 समत अठारे छपना वरस मे रे, फांगुण विद छठ सनीसरवार रे ॥ ४८ ॥

रत्न : १२

पोतिया बन्ध री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया, उवभ्राय सगला साव ।
 मुगत नगर नां दायका, ए पांचूं पद आराव ॥ १ ॥
 ए पांचूं पद वादे भाव सूं, पातक दूर पलाय ।
 शिव रमणी वेगा वरे, जनम मरण मिट जाय ॥ २ ॥
 केइ अग्यानी इम कहे, इम बांघां नही जिण धर्म ।
 उल्लटो लागे अविनो आशातना, तिण सूं बंवे पाप कर्म ॥ ३ ॥
 पेहला वादे अरिहंत नें, पछें वादे सिद्ध भगवान ।
 तिण सू लागे सिद्धां री आशातना, एहवा करे अग्यानी तांन ॥ ४ ॥
 वले सर्व सावां ने बांघां थकां, आ पिण न लागे ठीक ।
 बडा साघु हुवे तेहनें, छोटा किम बंदनीक ॥ ५ ॥
 इम कहि कहि भोला लोक ने, सका घाले घट मांय ।
 पांचूं पद वांदण तणी, पाडे मोटी अंतराय ॥ ६ ॥
 सिद्धा पेहली अरिहंत ने वांदणा, सिद्धां पेहली अरिहत रा नांम ।
 सूतर शाख दे वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ७ ॥

ढाल

[धीत्र करे सीता सती रे]

पेहली अरिहंत रा गुण करे रें, पछे करे सिद्धां रा गुण ग्राम रे । सुगुण नर ।
 तो बघे तीर्थकर गोत तेहने रे लाल, जो आवे उतकष्टो रस तांम रे ॥ सुगुण नर ॥
 बांदो पांचू पद भाव सूं रे लाल* ॥ १ ॥
 ए ग्याता सूतर रे अघेन आठमें रे, वीसां बोलां रो विस्तार रे । सु० ।
 सिद्धां पेहली अरिहंत रा गुण कीया रे, ते जीवो आंख उघाड रे ॥ सु० बां० २ ॥
 सिद्धां पेहलां अरिहत ने बांदियां रे, कहे न हुवो विने मूल धर्म रे ।
 तौं उ बीस बोल गुणसी जदी रे, उणरे लेखेइ बंवसी उणरे कर्म रे ॥ ३ ॥
 इम कहां संवली सूमे नही रे, त्यारा घट मांहे गूढ मिथ्यात रे ।
 ते गुधू सरिषा होय रह्या रे लाल, त्यारे दिवस तिकाइज रात रे ॥ ४ ॥
 जब केइ कहे पांचूं पद तणा रे, लगता काढी सूतर में नांम रे ।
 तो मे मानां नवकार नें रे लाल, तो सुणी राखे चित्त ठाम रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गायिका के अन्त में है ।

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया रे, उवभ्राय सगला साव ताहि रे।
 ए पांचूं पद लगता कहा रे लाल, चंदनती सूतर मांहि रे ॥ ६ ॥
 हरियावही कहें कौजस्सग ठावणो रे, पारणो कहें नमोकार रे।
 दसवेकालिक अघेन पांचमें रे लाल, तेराण्मीं गाथा मभार रे ॥ ७ ॥
 बले आवसग सूतर विपे कह्यो रे, लगतो पांचूं पदां नें नमस्कार रे।
 त्यामें पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे, ते जोय करो निस्तार रे ॥ ८ ॥
 बले आजातना टालण तणा रे, घणा बोल कहा जिणराय रे।
 त्यां पेंहली अरिहंत सिद्ध पछे कहा रे, ते पिण आवस्सग मांय रे ॥ ९ ॥
 सावु समवे वादे सर्व साव नें रे, ते पाठ छें आवस्सग मांय रे।
 तिणरी बुववंत करजो विचारणा रे लाल, जोए सूतर रो न्याय रे ॥ १० ॥
 जे पांचूं पद लगता मानें नही रे, त्यां काजस्सग दीवो उत्याप रे।
 त्यां कीवो आजातना अरिहंतनी रे लाल, त्यारे जाणजो जाड पाप रे ॥ ११ ॥
 च्यार मंगलीक कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध सावु धर्म रे।
 तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १२ ॥
 च्यार उत्तम कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध सावु धर्म रे।
 तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १३ ॥
 च्याहं सरणा लेणा कहा साव ने रे, अरिहंत सिद्ध साव धर्म रे।
 त्यां पेंहलो सरणो अरिहंत नो कह्यो रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १४ ॥
 च्यार मंगलीक च्यार उत्तम छें रे, बले च्याहं शरणा कहा ताहि रे।
 तिहां पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे लाल, ते पिण आवस्सग मांहि रे ॥ १५ ॥
 सिद्धां पेंहली अरिहंत रो नाम छे रे, सूतर में जायगां अनेक रे।
 संका म घालो लोकां भणी रे, छोड दो कूडी टेक रे ॥ १६ ॥
 दोनूं टंका साव पडिक्कमणो करे रे, ते पडिक्कमणो आवस्सग सूत रे।
 ते आवस्सग सूतर मानें नहीं रे, ते जिण सासन में कपूत रे ॥ १७ ॥
 साव आवस्सग सूतर वांच्यां विना रे, जो वांचे ओर सिद्धांत रे।
 नसीत उद्दें उगणीस में रे लाल, चोमासी दंड कहा भगवंत रे ॥ १८ ॥
 ए पडिक्कमणो आवस्सग सूतर छे रे, नित करणो सावु नें दोय वार रे।
 ते नें वीयां विरावक जिण धर्म नो रे, जोवो अनुयोग दुवार मभार रे ॥ १९ ॥
 आगे सूतर भण्या सावु साववी रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे।
 ते सामायक सूतर आदि दे रे, ते सामायक छे आवस्सग रो नाम रे ॥ २० ॥
 केइ आवस्सग मोलो कही रे, जावक दीवो उत्याप रे।
 ते डरे नही भूठ बोल्ता रे, त्यारे भव भव में होती संताप रे ॥ २१ ॥

दोनू टकां आवस्सग कीयां रे, टले करमा री छीत रे ।
 जो आवे उतकष्टो रस तेहनें रे, तो बंधे तीथंकर गोत रे ॥ २२ ॥
 ए ग्यातारो आंठमां अध्येन मे रे, बीस बोलां में इयारमों बोल रे ।
 जे आवस्सग सूतर मांनें नहीं रे, त्यारे पूरी जाणजो पोल रे ॥ २३ ॥
 नमस्कार लगतो पांचू पद भणी रे, ए माने नहीं किण न्याय रे ।
 जो साचा हुवो-तो सूतर में-बताय दो रे, नहीं तो-मत-करो कूडीं वक्वाय-रे ॥ २४ ॥
 नमस्कार लगतो पांचू पद भणी रे, कीघां कहे अविनों होय रे ।
 एहवी ऊंठी करे पळपणा रे लाल, पिण पोते अविनां री खबर न कोय रे ॥ २५ ॥
 देव अरिहंत गुर साबुजी रे, ए चोडे सूतर रो न्याय रे ।
 गुर बाजे श्रावक थकां रे, ओ प्रतख मांड्यो अन्याय रे ।
 ते श्रावक नहीं भगवान रा रे ॥ २६ ॥

ते चेला चेली करता फिरे रे, श्रावक नाम घराय रे ।
 भोला नें भरमाय नें रे, तिकखुता सूं बंदावे पाय रे ॥ २७ ॥
 आगे श्रावक हुआ भगवान रा रे, आणद आदि अनेक रे ।
 ते घर में थकां पडिमा बुहा रे, पिण चेलो न कीघो एक रे ।
 ए साचो मत जिणराज रो रे ॥ २८ ॥

ते पडिमा बुहा जब कीघी गोचरी रे, आपणी न्यात में जाय रे ।
 पिण ओर कुल में कीघी नहीं रे, जोवो दसासुतखंध जपासग दसा मांय रे ॥ २९ ॥
 चेला चेली करतां फिरे रे, घणा कुल री रोटी खाये मांग रे ।
 आगे श्रावक हुआ भगवान रा रे लाल, एहवो किण ही न काढ्यो दीसे सांग रे ॥ ३० ॥
 अंबड संन्यासी रे चेला सातसो रे, ते रीत संन्यास्यां री जाण रे ।
 पछे समझे श्रावक हुआ रे, इणरी म करजो कोइ तांग रे ।
 ते रीत संन्यास्यां री मूलगी रे लाल ॥ ३१ ॥

त्यां संन्यासी थकां चेला कीयां रे, ते कुल री रीत परमाण रे ।
 त्यां सांग न पलट्यो मूलगो रे लाल, तिणरी बुववंत करजो पिछांग रे ॥ ३२ ॥
 श्रावक श्रावक ने नमें रे, वले नेंहत जीमावे च्यांरु आहार रे ।
 त्यांनें अरिहंत री आग्या नहीं रे लाल, ए लोकिंक रो व्यवहार रे ॥ ३३ ॥
 साधु साधवियां नीं परे रे, श्रावक श्रावका री थापी रीत रे ।
 ते पिण रीत चाले नहीं रे, यारे लेखेई ए अवनीत रे ॥ ३४ ॥
 श्रावक वेसैं आंगणे रे, श्रावका वेसैं पाट रे ।
 यांरो विनों मारग यां उत्थापियो रे, त्यारे लेखेई होसी मूंडे घाट रे ॥ ३५ ॥

वले श्रावकं वादे श्रावकं भणी रे, यारे लेखे वा उंघी रीत रे।
 यारे लेखे यां विनों जत्यापियो रे, ते त्रिहूँ गति होसी फगीत रे॥ ३६॥
 ए विनों विनों कर रक्षा रे, पिण विनां री खदर न कोय रे।
 त्यांसूँ लेखो क्रीयां तो लडपडे रे लाल, त्यानें किम आणीजे ठाय रे॥ ३७॥
 नोकार री कुणसी चली रे, यां ज्याप्यां खोल अनेक रे।
 ते थोडासा परगट करूं रे लाल, ते सुणजे आण वदेक रे॥ ३८॥

ढाल : २

दुहा

याने छत्ता साध सूफे नही, घट मे घोर अंवार ।
 पोथा पांता बांच ने, भूला भर्म गिवार ॥ १ ॥
 वले केइ अग्यांनी इम कहे, कठे अवारु साध ।
 ते भूटा थकां बकवोकरे, त्या परमारथ नहीं लाव ॥ २ ॥
 प्रतख अरि पांचमें, साध कह्या जिणराय ।
 सांसो हुवे तो देख लो, सूतर भगोती मांय ॥ ३ ॥
 साध हुंता तो सूतर छे, जेन जतीको वेस ।
 यांहीज साधु देख लो, ओहीज आरज देस ॥ ४ ॥
 जेवंतो जिण धर्म छे, आंधा करे अघेर ।
 छेहूडा सूधी चालसी, तिण में म जांगो फेर ॥ ५ ॥
 कुमती चालणी सारीखा, त्याने किहां लगे उपदेस ।
 सार सार तो गेर दे, ग्रहे तूंतडा केस ॥ ६ ॥
 एक साब ने उयपे, तिणरे बधे घणो संताप ।
 तो घणा साधा ने उयपे, तिणरे पोते बोहला पाप ॥ ७ ॥
 जे देवालियो हुवे ते इम कहे, आजनही साहुकारा री रीत ।
 ज्यांसू पोते संजम पले नही, ते उतारे साधां री परतीत ॥ ८ ॥
 साहुकार होसी तिके, छत्ता दिखावसी साह ।
 ज्यू साधुपणो सुध पालसी, ते खरो दिखावसी राह ॥ ९ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती भूरख थकां, श्रावक श्राविका नाम धराय ।
 ते कुण कुण बोल उयापिया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[बे बे मुनिवर वहरथ पागुन्घ्या रे]

त्यां समाई पडिकमणो उथापियो रे, वले दनामां व्रत ने दीयो उथाप रे ।
 वले पोसो उथाप्यो व्रत इयारमो रे, त्यारे होसी परभव में घणो सताप रे ।
 त्याने श्रावक मत जांगो भगवानं रा रे* ॥ १ ॥
 सुध आचारी साधा ने माने नही रे, तिणथी भावसूं दांनदीयो नही जाय रे ।
 इण लेखे व्रत उथाप्यो वारमो रे, वले साधु वांघण रा सूंस दिराय रे ॥ त्या०२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बले व्रत उथाप्यो मूरख आठमों रे, तिणमें अर्थ विनपाप करण रा त्याग रे ।
 ते पोतें पिण एहवो त्याग करें नहीं रे, ओर करें त्यारो पाडे वेंराग रे ॥ ३ ॥
 जे मागे नें खाए रोटी पार की रे, तो ही अनर्थ पाप करण आगार रे ।
 त्यांनैं वादे अग्यानी सतगुरु जाण नें रे, त्यां दोयां रो विगड गयो जमवार रे । ४ ॥
 बले समाई पडिक्रमणो करे नहीं रे, नहीं पोसो करवा सू त्यारो पेम रे ।
 बले सुध आचारी साधु सूफे नहीं रे, त्यां विकलांनैं श्रावक कहीजें केम रे ॥ ५ ॥
 उतारे साधा री मूरख आसता रे, बले कनें जावां नें राखे पाल रे ।
 जाणे खोटा सरधेला मो भणी रे, आ चोडें रेणा देवी री चाल रे ॥ ६ ॥
 मिनकी फिरे छे घर घर बारणे रे, तिणरी अंदरा अमर खोटी दिष्ट रे ।
 ज्यूं समाई पोसा पडिक्रमणा करे रे, तिण नें संका घाले ने करदे भिष्ट रे ॥ ७ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्रमणा करे रे, तिणरे संका घाले नें पाडे धडक रे ।
 जद केयक भोला सामायक छोड दे रे, तब पामें अग्यानी मन में हरष रे ॥ ८ ॥
 सामायक पचखण री विध जाणे नहीं रे, बले पालण रो जाणे नहीं विचार रे ।
 पचखण पालण री विध जाणयां विनां रे, संका घालण ने पापी त्यार रे ॥ ९ ॥
 समाई करे त्यारो मन भांग दे रे, बले भिष्ट करण रो करे उपाय रे ।
 परिणाम पेलारा पारण सांतरा रे, दोष बत्तीस सुणाय सुणाय रे ॥ १० ॥
 ए समाई रा दोष बत्तीस कहे तिके रे, किण ही सूतर में दीसैं नाही रे ।
 तो ही मान्या सामायक ने उथापवा रे, त्यारे घोर अंधारो छे षट मांही रे ॥ ११ ॥
 त्यांरी परतीत नें संगत करे तेहनें रे, बत्तीस दोषण देवे सीखाय रे ।
 जाणे रखे समाई पडिक्रमणो करे रे, इसडो धडको त्यारे मन मांय रे ॥ १२ ॥
 कोइ समाई पडिक्रमणो करे रे, तिण सूं घरे अग्यानी द्वेष रे ।
 कोइ समाई पोसो करणो छोड दे रे, जब पामें प्रापीडा-हर्ष-बशेष रे ॥ १३ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्रमणा करे रे, बले वादे सावां ने जोडी हाथ रे ।
 तो भिष्ट परूपे मूरख तेहनें रे, ओ चोडे देखो त्यारो मिथ्यात रे ॥ १४ ॥
 कोइ समाई पोसा रो बंरो करें रे, त्यारा पिण देवे सूंस भंगाय रे ।
 तिण नें कूड कपट केल्व करे आपणो रे, बले समाई करवा न देवे ताय रे ॥ १५ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्रमणा करे रे, तिण ने भिष्ट करे बोले आल पंपाल रे ।
 ओछी अकल रा भोला मिनष नें रे, माहे न्हांखण नें चोडे मांड्यो जाल रे ॥ १६ ॥
 केइ मागे नें खाए रोटी पारकी रे, ते बोले अग्यानी एहवी वांण रे ।
 म्हे करां सामायक पोसा किण विवे रे, म्हांरो नहीं रे मन रो जोग ठिकाण रे ॥ १७ ॥
 यांरी सरधा रा सगला इमहीज बोलता रे, त्यारो ववेक विचार नहीं छें सुध रे ।
 त्यां समाई पोसा करणा उथापिया रे, आ भिष्ट हुइ सगलां री बुद्ध रे ॥ १८ ॥

केइ मागे ने खाए रोटी पारकी रे, तो ही सुख-न रहे त्यारा परिणाम रे ।
 त्यांसूं एक घडी पिण मन बस हुवे नहीं रे, ते घर छोडी नें-खोटी हुवा बेकाम रे ॥ १९ ॥
 आगे हुवा मोटा मोटा राजकी रे, बले सेठ सेनापती आदि पिछाण रे ।
 त्यांरा घर में आरम नें परिग्रहो अति घणो रे, त्यां पिण कीवी सामायक समता आण रे ॥ २० ॥
 त्यांरे राजविणज रा विभा था घणा रे, बले तरह तरह रा हूता काम रे ।
 त्यां पिण सामायक ने पोसा कीया रे, ते थोडासा कहे क्ताऊं नाम रे ॥ २१ ॥
 राय उदाइ हूतो मोटको रे, ते सोले देसां रो करतो राज रे ।
 तिण समाई पोसा पडिकमणा कीया रे, छोडे सगलाइ घर रा काज रे ॥ २२ ॥
 अदीनसत्तु, राजा रो डीकरो रे, कुमर सुबाहु तिणरो नाम रे ।
 पांचसो राप्या हूती तेहने रे, तिण कीवी समाई सुघ परिणाम रे ॥ २३ ॥
 कुमर सुबाहु आदि दस जणां रे, ते सगलाई मोटा राजकुमार रे ।
 त्यां सगलां रे पांचसो पांचसो राणियां रे, त्यां कीवी सामायक समता धार रे ॥ २४ ॥
 राय परवेशी हूतो पापियो रे, तिण समके नें लीधा व्रत रसाल रे ।
 उण पिण घर माहे वेठां थकां रे, कीवी सामायक दोषण टाल रे ॥ २५ ॥
 सुबुद्धी प्रधान आगे समझियो रे, जितशत्रु नामें राजेंद रे ।
 तिण पिण सामायक नें पोसा कीयां रे, ग्याता में भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ २६ ॥
 कासी नें कोशल देस तणा घणी रे, हूता अठारे मोटा राय रे ।
 श्रीवीर निरवाण गया तिण अवसरे रे, त्यां पोसा कीवां था तिण दिन आय रे ॥ २७ ॥
 आणंद आदि दे श्रावक दस हुवा रे, त्यांरा घर में हूतो कौडां रो घन रे ।
 हजारं गमें त्यांरे गायां हूती रे, त्यां कीवी सामायक चोखे मन रे ॥ २८ ॥
 बले तुंगीयां नगरी नां श्रावक मोटका रे, त्यांरा घर माहे घन हूतो परभूत रे ।
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा करे रे, मुक्ति जावा नां दीधा सूत रे ॥ २९ ॥
 इत्यादिक राजा सेठ सेनापति रे, त्यांरो कहतां कहतां नही आवें पार रे ।
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा कीयां रे, त्यां घर मे वेठां पाल्या व्रत धार रे ॥ ३० ॥
 तो घरवार छोडे नें गेहला थकां रे, न करे सामायक मूढ अयाण रे ।
 ते कहवा नें श्रावक वाजें मोटका रे, पिण श्री जिण धर्म तणा अजाण रे ॥ ३१ ॥
 श्रावक रा वारे व्रतां मांहिलां रे, व्रत उथाप्या मूरख पांच रे ।
 बाकी सात व्रतां मे मन पचखे नही रे, कर्मां वस कर कर कूडी खांच रे ॥ ३२ ॥
 बले उथापी इयांही नें तस्सुत्तरी रे, बले लोगस उथाप्यों जिण सतुत रे ।
 खवर विना उथाप्यां खामणा रे, त्या दीवा दुरगति जावा ना सूत रे ॥ ३३ ॥
 एक वचन उथाप्यां श्री भगवंत रो रे, उत्कटो हलें तो अनंतो काल रे ।
 तो घणा उथापें बोल सिद्धांत रा रे, ते भमसी ज्यूं अरट तणी घड माल रे ॥ ३४ ॥

चिरमी नें उडद दोनू देख्या थका रे, भिडके पूर्वीया भगत वगेल रे।
 इण विष्टाते भरमाया भोला लोक नें रे, ते भिडके साधा नें निजरो देख रे ॥ ३५ ॥
 ते वरत पचखाण करे ते मन विना रे, पिण मनसूं तो जावके नही पचखाण रे।
 त्यांरो विकल्पणा री विच परगट करूं रे, ते विवरा सुख सुणजो चतुर सुजाण रे ॥ ३६ ॥

ढलल : ३

दुहल

ँल ङुदुे उवुी अकल सुं, कलदुवुीं डत वुडरुीत ।
 तुतुं सुंस डुखलंग कुरीतुं तुके, सगलरुई डन रहुीत ॥ १ ॥
 तुतुरे सुडुडु सुषुडुडु हुडुं तुके, रलखुी उणरुी डरतुीत ।
 ते डुडुण डुलुल डरुडु डें, ते डुलुे उणरुीउ रीत ॥ २ ॥
 डडुुे उरुंत आगे डलुें, डलुे डलुे कतलर ।
 उडुं वहुलल वुडल वलडडल, डुल वडुं डुडुं री ललर ॥ ३ ॥
 लुीवुी टेक उरुटे नहुी, डुडु डें डुुर डुधुडुत ।
 गुडुू सरुडुडु हुीडु रहुडुं, तुतुरे दुवस तुकलडुडु रलत ॥ ॡ ॥
 कूआ तणुु डेडुक कूर रंजे, तुडुण सलडुर लरुह न वुीठ ।
 उडुं सलडुल री संगत करुी नहुी, तुतुरे ललुें डुलडुडु डत डुीठ ॥ ॡ ॥
 तुतुं उण डुरलरुग नहुी डुलुलुडुु, नहुी डुलुखुडुल सुडु सलडु ।
 वलुें शुरलवक वुडु सडुडुे नहुी, डुंहुी करतल डुरे वुडुवलद ॥ ॢ ॥
 उणुे वसुतु सु कलडु डडे नहुी, तुडुणरुु डुडुण न करुे नेडु ।
 तुतुं कुण कुण आडुलर रलखुडुल, ते सुणउुुे डुर डेडु ॥ ॣ ॥

ढलल

[उणुु डुरुडु आरलडुीडे ड]

तुतुंरल डत डलहुे संकल डुीठकुी ँ, ते डन सुं न करुे डुखलंग ।
 डुरडुलरडु डलणुडुल वुनलं ँ, ँ डुडुल करुें करुे तलंग ।
 डलवक उण सलडुलुुे ँ* ॥ १ ॥
 डुरगुी गलडुल वलकरल ँ, वलुे हरुण सुंसल नें गलडु ।
 तुतुं डुरलरण तणुी ँ, डन सुं वुरत न कुरीवुी कलडु ॥ ड० २ ॥
 वलुे उलडुलर थलडुलर खेडुलर ँ, वलुे उरडुलर डुउडुलर उलण ।
 डलं डुरलरण तणुुु ँ, डन सुं न कुरीडुुु डुखलंग ॥ ३ ॥
 वलुे डुलत-डुलतल सुत वुंघवलु, संण सगल डुडुल वुडुलर ।
 तुतुं डुडुण डुरलरण तणुुु ँ, डन सुं रलखुुुु आडुलर ॥ ॡ ॥
 वलुे इडल उलत अनेक रल ँ, तुतुं डन सुं डुरलरण रु नहुी नेडु ।
 ँहुवल डुरलखलं डुणुी ँ, वलुकल वलुे डुर डेडु ॥ ॡ ॥

*डुहु आंकडुी डुरतुडुेक गलथल के अनुत डें हुे ।

नीड पतंग मनरा माखियां	ए. क्रीडी नाकण लट नें गीडेल।
मन सूं राख्यां नारणा	ए. त्यां विकलां रे मोटी सोल ॥ ६ ॥
पुडवी पांगी अग्नि नें वाय रो	ए. वले वनस्पती नें तन जांग।
ए छक्राय नें हणवा तगा	ए. -मन सूं न कीयां पचदांग ॥ ७ ॥
जीव अनंत छक्राय नें	ए. -त्यांरी विवव परकारे छे शत।
त्यांनै हणवा तणी	-ए. -मन सूं विरत नहीं तिल्लाड ॥ ८ ॥
ओर जीव तो जिहाई रखा	ए. गुर :री .पिप न छोडी शत।
हणवा ने मन मोकली	-ए. ए इचरज . वाली गद ॥ ९ ॥
देव अरिहंत गुर सावजी	ए. -यांनै - हणवा रो मन सूं आगार।
इसरोई सूंस कीयां नहीं	ए. -त्यांरा . जीतव . नें . विचार ॥ १० ॥
वले चेला चेली आपरा	ए. -गुर भाई . गुर बहिन पिछांग।
त्यांनैई हणवा तणो	ए. मन सूं न कीयां पचदांग ॥ ११ ॥
मोटो भूळ पांच परकार नां	ए. वले छोटी . विवव . परकार।
मन सूं दोळग . तणो	ए. सगलोई राख्यो आगार ॥ १२ ॥
मोटी चांरी पांच परकार नां	ए. वले छोटी रा भेद अनेक।
ते सगली चांरी मोकली	ए. निण --मन सूं न छोडी एक ॥ १३ ॥
देव देवांगणा मिनप मिनपणी	ए. वले तिर्यच तिर्यचणी . विचार।
त्यांनै सेवग तंगो	ए. मन सूं सगलोई आगार ॥ १४ ॥
जिण मात्रा री कूखे उपनो	ए. वले बहिन देटी आदि जांग।
चेली गुर बहिन नें	ए. मन सूं सेवा रा नहीं पचदांग ॥ १५ ॥
हीरा माणक मोती मूंगीदा	ए. सोनो हपादिक सर्व शत।
कंकर पत्थर घणां	ए. वले रत्तां री सोले जात ॥ १६ ॥
सर्व परिग्रहो छे सुवजात रो	ए. तीनुई लोक मन्हार।
ते मन रा जोग . नूं	ए. यारे सगलोई आगार ॥ १७ ॥
पान अठारें सेवग तणो	ए. तीनुई लोक मन्हार।
ते मन रा जोग सूं	ए. जानक नहीं परिहार ॥ १८ ॥
गेंहणां कपडा विवव परकार नां	ए. खावा पिवा री जात अनेक।
फूल बहु जात रा	ए. यां मन सूं न छोड्यो एक ॥ १९ ॥
मद पिवग मांस खावन तणो	ए. वनस्पती अठारें शार।
जमीकंद सर्व री	ए. मन सूं राख्यो सर्व आगार ॥ २० ॥
हाथी घोडादिक वाहण तणो	ए. घगी जात रा पीत्री मरदन।
घूनादिक खेवणो	ए. त्यांमि सगलोई मोकली मन ॥ २१ ॥

सर दह तलाव फोडण तणो ए, दवदे करे जीवां रो संघार ।
 गामांदिक बालण तणो ए, यारे मन सूं सगलो आगार ॥ २२ ॥
 मोटां मोटा वृष बाढण तणो ए, वले कटावणा वाग ।
 घाणी फेरण तणो ए, मन सूं न कीधो त्याग ॥ २३ ॥
 पनरे कर्मादांन में ए, आयो सगलोई विणज व्यापार ।
 तिणरा भेद अति घणा ए, ते सगलोई मन सूं आगार ॥ २४ ॥
 इत्यादिक कुकरम घणा ए, ते तों पूरा कहां न जाय ।
 ते मन सू न पचखिया ए, त्यारे बंधसी कर्म अथाय ॥ २५ ॥
 अर्थे कांम करणो तो ज्यांही रह्यो ए, अर्थे विनां न करणो पाप ।
 ते मन सू न त्यागियो ए, आ खोटा मत री थाप ॥ २६ ॥
 मन सूं तंदुल माछलो ए, अशुभ कर्म उपाय ।
 अंतर महुरत मभे ए, पडे सातमी नरक मे जाय ॥ २७ ॥
 ज्यांरो सदा काल मन मोकलो ए, सगलाई कुकरम मांय ।
 त्यांरो कांडे पूछणो ए, ए चोडे वूडा जाय ॥ २८ ॥
 माठी माठी वस्तु खावा भणी ए, चलता न वीसे परिणाम ।
 तिणमेई मन मोकलो ए, ओ राख्यो अग्यांनी किण कांम ॥ २९ ॥
 आखा जनम में करणा पडे नही ए, माठा माठा अकारज अनेक ।
 ते मन सू न पचखिया ए, आ खोटा मत री टेक ॥ ३० ॥
 एहवा ववेक विकलां भणी ए, पूछा कीजे आंम ।
 अकारज करवा भणी ए, मन मोकलो राख्यो किण कांम ॥ ३१ ॥
 इम पूछ्यां जाव न उपजे ए, जव क्रोध करे घट माय ।
 चरचा करवा थकी ए, मूह टालो दे जाय ॥ ३२ ॥
 कदा लाजां भरता मन पचख दे ए, छोडे खोटा मत री रूढ ।
 इण लेखे यांरा बडवडा ए, सगला हुआ ते मूढ ॥ ३३ ॥
 इम कहि कहि ने कितरो कहुं ए, इण मत रो घोर अंधार ।
 समझ पड्यां विनां ए, ए भूला भरम गिवार ॥ ३४ ॥
 त्यां आपो न ओलख्यो आपणो ए, तो ही साधु उत्थापण शूर ।
 भोलां ने भरमायवा ए, कर रह्या फेन फितूर ॥ ३५ ॥
 ते जिण मारग रा धारवी ए, कूडो उठायो धध ।
 जिण वचन उथाप ने ए, चोडे मांड्यो फद ॥ ३६ ॥
 इम सुण ने नर नारियां ए, छोडो कूडी टेक ।
 सावां री सेवा करो ए, मन मे आंण ववेक ॥ ३७ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केइ श्रलवक वलजे ढर छुडनें, मलंगे लुवलवे आहलर ।
 पलण नुललल मलरग सुभे नहीं, घट में घुर अंघलर ॥ १ ॥
 चेला चेला करतलं फलरें, वले सलघलं जू रहुल पूजलल ।
 वले खुडु करे छे परूपणल, ते पलण खवर न कलंल ॥ २ ॥
 अधर्म करे करलवे तुलर करलगे, तलण नें वतलवे ढर्म ।
 कुडु ढर्म करे जलण भलपललु, तलणनें कहे छे अधर्म ॥ ३ ॥
 एहुवु ऊंधी करे परूपणल, ते पूरु केम कहुवलल ।
 पलण थुडुसी परगट कलं, ते सुणकु कुत लुवलल ॥ ॡ ॥

ढलल

[सल कुडु मत रलखु कु]

लरल कपडल घुवे कुडु गृहसुथु, तलणनें कहे वलनें मूल ढर्मे रे ।
 एहुवु ऊंधी करे परूपणल, भुललं नें पलडुल भर्मे रे ।
 सरखल सुणकु वलकल तणी* ॥ १ ॥
 कुव केयक गृहसुथु वलपडल, कपडल घुवे कुवलं ने मलरु रे ।
 तलणनें कहे ओ तु वनुत छे, ढर्मे पुरुषलं ने सलतलकलरु रे ॥ स० २ ॥
 ए हलसल ढर्म परूपललु, अलभलतर रल आंख मीचु रे ।
 कुडु चतुर पुरुष हुसुी तलकु, एहुवु कलं न करसुी नीचु रे ॥ ३ ॥
 लरल कपडल घुवे तेहुनें, नलरुचेई बंधसुी कर्मे रे ।
 कुे ढर्म कहे इण कलं में, तलण थलपुओ अधर्म ने ढर्मे रे ॥ ॡ ॥
 नमसुकलर करे पलंचू पद भणी, सुस नमी कुडे हलथु रे ।
 लरनें वलंघल पलप लगे कहे, तुलरल घट मलहुं घुर मलषुथलतु रे ॥ ॡ ॥
 लरल कपडल घुवे पलंणी आंण ने, तलण ने ललभ वतलवे मुडु रे ।
 नुकलर गुणुल कहे पलप छे, ओ मत नलरुचेई खुडु रे ॥ ॢ ॥
 वले कुंवल कडलवे गृहसुथु कने, कलढणवलल नें सुख थु सरलवे रे ।
 वलनें मूल ढर्म कहे तेहुनें, ए तु इसडल गुलल चललवे रे ॥ ॣ ॥
 सलधु सुतर ललखे कुेणलं करु, ते तु गुवलं ववलरण हेतु रे ।
 तलण सलधु ने पलप लगे कहे, तुलरल फूडु अलभलतर नेतु रे ॥ ॡ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

यारी जूआं काढ्यां तो घर्म कहे, साधु सूतर लिख्यां कहे पापो रे ।
 ते दोनू विघ बूडे वापडा, कर कर कूड विलापो रे ॥ ६ ॥
 यांने वेसावे गाडे घोडे पीठी ए, करे तस थावर नी घातो रे ।
 तिण वेंसाण वाला ने घर्म कहे, आ ऊंची सरघा साव्यातो रे ॥ १० ॥
 साधु सूतर रा न्याय सूं, जोडें तवन सभायो रे ।
 तिणमें पाप वतावे भूठा थकां, कर कर कूडी वकवायो रे ॥ ११ ॥
 यांने गाडे घोडे वेसाणिया, तिणने घर्म कहे छे अग्यांनी रे ।
 साधु जोड कीयां अघर्म कहे, त्यांने किण विघ कहीजे ग्यांनी रे ॥ १२ ॥
 ए तो अघर्म नें घर्म कहे, घर्म ने अघर्म कहे अन्हाखी रे ।
 त्यांने निरुचे मिथ्याती जिण कह्या, ठाणांग दसमो ठाणो साखी रे ॥ १३ ॥
 यांने थांनक देवे असूभ्तो, तिणमे घर्म कहे निसंको रे ।
 त्यां ववेक विकल भोला मिनष रे, लगाया मिथ्यात रा डंको रे ॥ १४ ॥
 थांनक वडे लीपे यारे कारणे, वले केलू सारे छांन छावे रे ।
 ते मारे अनता जीवां भणी, तिणमे घर्म वतावे रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक यारे कारणे, जीव छकाय रा हतिया रे ।
 वले घर्म सरघे जीव मारने रे, ते वूड गया त्यांरा मतिया रे ॥ १६ ॥
 यांने आहार पांणी दें असूभ्तो, तिणने कहे निकेवल घर्मो रे ।
 ते भोलां नें समरु पडे नहीं, ते तों भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ १७ ॥
 कहिवा ने कहे त्यां म्हे सूभ्तो, तिणरो पुरो न जाणे विचारो रे ।
 जाण जाण ने लेवें असूभ्तो, ते सांभलजो विस्तारो रे ॥ १८ ॥
 यारे गाम पर गाम थी वीदडी, चोमासा दिक में चाली आवे रे ।
 जब जीव अनेक मरे घणां, तिणमेई घर्म वतावे रे ॥ १९ ॥
 आहार पांणी वस्त्र पात्रादिक, यारे कारणे माल ले आणे रे ।
 इण विघ वेहरावे असूभ्तो, तिण दातार ने घर्म जाणे रे ॥ २० ॥
 धी - खाड लाडू आदि चोर ने, वहू ले आवे साधु छांने रे ।
 त्यांने आंण वेहरावे तेहमें, घर्म निकेवल माने रे ॥ २१ ॥
 ए बात चावी हुवे लोक मे, तो दोनूई दीसें भूडी रे ।
 चोरी कर ने वेहरायो असूभ्तो, ते तो दोनू प्रकारे वूडी रे ॥ २२ ॥
 जाये ग्रहस्थ रे घरे गोचरी, जब मांडे फेन वशेषे रे ।
 कहे असूभ्तो मांहरे लेणों नही, माने वेहरायजो सुघ देखे रे ॥ २३ ॥
 साहमें आंण दे वरसता मेह में, तिणरो तो न करे टालो रे ।
 घूतवादी करे गृहस्थ ने घरे, एहवो कूड कपट रो चालो रे ॥ २४ ॥

यनिं इन विष वेहरता देह नै, कोई खूबगो काहे जंगो रे।
 जब तो कहे न्है छां गृह्ययी, सेखां जके न्है क्यांगो रे ॥ २१ ॥
 जो अनुभव जेनां गृह्ययी थकां, तो गुर किन लेहें बजे रे।
 अछा जीवव रे कारणे, इन्द्रो काय बगो अकाशे रे ॥ २२ ॥
 देव अग्रिहंत गुर साधु निग्रन्थ छै, जो आवक गुर किन लेहें रे।
 मोह निग्र्यात नै नृत्ता थकां, ते जे मूत्र प्रहनों न केहे रे ॥ २३ ॥
 आहार अनुभव वेहरे जांग नै, त्यारो होमी काई नृत्तो नै।
 बले अनुभव दीयां नै बने कहौ, छे किन मारग गया नृत्तो रे ॥ २४ ॥
 आवक नै आहार देवें अमृन्तो, तिनरो निग ओहीज नृत्तो रे।
 बने जागे जो पार अग्रनों, ते रह्या निग्र्यात नै नृत्तो रे ॥ २५ ॥
 सावां नै आहार देवें अमृन्तो, निग नै बसावें पातो रे।
 आवक नै देवें अमृन्तो, निग नै कीधीं बने ती थारो रे ॥ २६ ॥
 सावां नै आहार अनुभव वेहरावियां, पार कहें तो मत्र बानी नै।
 बने कहें आवक नै अनुभव दीयां, आ सरथा कदा मूं जांनी रे ॥ २७ ॥
 सावां नै आहार पाणी अनुभव दीयां, पार लागे द्रव्ये बन ह्यो रे।
 आवक नै अनुभव दीयां बने कहें, ओ इन्द्रो काई छे ल्यो रे ॥ २८ ॥
 सावां नै आहार पांगी अनुभव दीयां, एकांत पार निग्र्यांगो रे।
 ज्युं आवक नै अनुभव दीयां, निद्रवेई बने न जंगो रे।
 आवक नै आवकां बनी, का साची सरथा बगवाने रे ॥ २९ ॥
 बने जागे त्यानिं वादियां, गुण नै त्रिकुत्ता रो पातो रे।
 महा आवक बजे वरजां करी, जो मत्र निद्रवेई नाके रे ॥ ३० ॥
 यारे लेहें ए नृत्ता थकां, ते तां छोद्य आवक नै शरी रे।
 इम कहां जाव न जयलें, कर्म तप्य पूज शरी रे ॥ ३१ ॥
 कहें नै घर वार छोड त्यारा हूयां, जब कूर बन्द कवावें रे।
 छ काय छोडी कहे सर्वथा, बले छ काय छोडी वत्रवें रे ॥ ३२ ॥
 ए नृत्त गेले छे दोनुं विच्छे, बले छोड्यो कहे घर वारो रे।
 घर छोड्यो कहे मुक्त थकी, ते सामलजो दिस्तारो रे ॥ ३३ ॥
 निग घर रो नाम थांक दीयां, निग नाम दान देज घर नाडी रे।
 निग थांक रे कारणे, आ तां यही जातना नाडी रे ॥ ३४ ॥
 निग थांक नै कीयां जानरो, विष पपे जीव नारी रे।
 छ काय छोडि कहें सर्वथा, ए जोडें वेजो घरवारी रे ॥ ३५ ॥
 तिहां जीव अनेक मरे घगां, तो राज पड्यां काय हाके रे।
 बले विनां जोयां निग जाके रे ॥ ३६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक पाया के अन्त में है।

वले वेसें गाडे घोडे पोठीए, करें अनंत जीवां री घातो रे।
 छकाय छोडी कहे सर्वथा, ते चोडें बोले भूठ साख्यातो रे ॥ ४१ ॥
 वले छांटं में उठे गोचरी, साह्यो आंग दीयो पिंग लेवे रे।
 तिहां जीवां री हिंसा हुवे घणी, वले बुहारी सूं बुहारो देवे रे ॥ ४२ ॥
 इत्यादिक कामां करतां थकां, विवघ पणे जीव मारे रे।
 वले छ काय छोडी कहे सर्वथा, ते भूठ बोली जनम विगाडे रे ॥ ४३ ॥
 इम कहां जाब न ऊज्जे, जब सूवा बोले तिण वारो रे।
 में छोडी जिती म्हारे विरत छे, बाकी रह्यो आगारो रे ॥ ४४ ॥
 तो ग्रहस्थ छोडी छ काय देस थी, ते पिंग हुवो वरत धारो रे।
 तिण लेखें तो ऊ श्रावक बडो, तिण बडा नें पगे कांय पारो रे ॥ ४५ ॥
 जब कहे में छ काय छोडी घगी, इण श्रावक छोडी छे थोडी रे।
 इण श्रावक सूं मां में गुण घगां, म्हाने तिण सूं बांदे हाय जोडी रे ॥ ४६ ॥
 एहवी ऊंधी करे परूपणा, बडा श्रावक नें पगे लगावे रे।
 इण बात रो प्रश्न पूछियां, ते पिंग जाब न आवे रे ॥ ४७ ॥
 किण ही गृहस्थ संयारो कीयो, ज्यांरु आहार दीयां वीसरायो रे।
 जब यांसू तो उण में गुण घणां, तिणनें क्यूं नही बांदे जायो रे ॥ ४८ ॥
 गुर रे पचखाण हुवे मोकला, लारे चेलो हुवे इधक बेरागी रे।
 घणां गुण वाला ने कहे बादणो, तो चेला ने बांदणो पगे लागी रे ॥ ४९ ॥
 चेला ने बांदणी आवे नही, जब करे बडा री थापो रे।
 ते न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या कूड विलापो रे ॥ ५० ॥
 तो बरतां बडो छे ऊ गृहस्थी, ऊ पिंग श्रावक बाजें रे।
 आप छोटा छे उण श्रावक थकी, तिण बडा नें बांदता कांय लाजे रे ॥ ५१ ॥
 कदे करे बडा री थापना, कदे करे गुणा री थापो रे।
 ते बंदणा रा भूखा थकां, ओरां नें डबोय इवसी आपो रे ॥ ५२ ॥
 एहवा पाखडी लोक में, गृहस्थ थकां गुर बाजें रे।
 करावे तिकखुत्ता सूं बंदणा, पिंग निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 जिम अरिहंत सिघ नें बंदणा करे, तिमहिज आप बंदावे रे।
 ए गुण विण ठली ठीकरा, अरिहंत सिघ रे जोडे किम आवे रे ॥ ५४ ॥
 त्याने तिकखुत्ता सूं बंदणा करे, ते जिण मारग गया भूलो रे।
 ज्या गुर कीघा गृहस्थी भणी, ते रह्या मिथ्यात में भूलो रे ॥ ५५ ॥
 इम सांभल ने नर नारियां, पाषंड मत निवारो रे।
 सुघ सावां ने ओलख गुर करो, ज्यूं उत्तरो भव पारो रे ॥ ५६ ॥

रत्न : १३

निन्द रास

ढाल : १

दुहा

भेषधारी भागलां थकी, पले' नही आचार ।
 बले सरधा पिण त्यांरी बुरी, तिणमे अतंत अंवार ॥ १ ॥
 केइ नाम घरावे साघ रो, पिण वरत न पाले एक ।
 ते भिष्ट थया आचार थी, सेवण लगा दोष अनेक ॥ २ ॥
 ते आचार तणी वातां सुणे, तो लागे अभितर लाय ।
 तलतलाट करता थकां, बोले मूंसावाय ॥ ३ ॥
 सुध साधा ने निन्व कहे, बले बोले' फिरता वेण ।
 सिकल विकल बुध बाहिरा, त्यांरा फूटा अभितर नेण ॥ ४ ॥
 त्यांरे सरधा छे निन्वां तणी, ते अरू वरू ल्यो' देख ।
 बले भिष्ट थया आचार थी, त्यां पेहर विगाड्यो भेख ॥ ५ ॥
 मांहीमां निन्व कहे, ते तां रागा वेषो जाण ।
 लखणा कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर मुजाण ॥ ६ ॥
 त्यांरा टोला अनेक छे जूजूआ, जूइ जूइ सरधा छें तांम ।
 जूइ जूइ करे छे परूपणा, ते पिण साघ घरावे नाम ॥ ७ ॥
 ते आचार में हीणा घणां, बले लोप दीधी मरजाद ।
 साची सूतर री वात मांने नही, कूरो करे रह्या विषवाद ॥ ८ ॥
 ते दोष सेवे छे अति घणां, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोरा सा परगट कळें, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[हू वलीहारी जादवा]

अरिहृतं सिध ने आयरिया, उवमाय नें उत्तम सुध साघ के ।
 मुगत नगर नां दायका, ए पांचू पद ने लीजो अराघ के ।
 रास भणूं निन्वां तणो* ॥ १ ॥
 नमूं बीर सासण घणी, बले नमूं गणवर गोतम सांम के ।
 त्यां मोटां पुरुषां ने नमीया थकां, सीभे मन वछत आतम कांम के ॥ २० ॥ २ ॥
 इण दुषम आरे पांचमें, सांग पेहरे दाजे' साघ अणगार के ।
 सरधा त्यांरे निन्वां तणी, बले' छे त्यांरो भिष्ट आचार के ।
 नीचो मत निन्वां तणो ॥ ३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

त्यांरा चेंहन लक्षण परगट करूं, कोइ म घरजो मन मांहे घेप के।
 निरणों कीजों घट भितरें, जे जे कहूं ते निजरां लेजो देख के ॥ ४ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो जूतों घुरल के, ते घन उदके छे थानक रें काज के।
 ते दांन लेइ थानक करे, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज के ॥ ५ ॥
 वले थानक करावण कारणे, अउत तणों लेवें छे माल के।
 तिण थानक मांहे रहें, ओ प्रतख जाणों खांपण वालो ख्याल के ॥ ६ ॥
 लिंगडा लिंगड्यां कारणे, जागां वाधी छें मठ जेम के।
 मठवासी ज्यूं मांहे वसें, त्यां विकलां नें साध कहीजे केम के ॥ ७ ॥
 आधाकरमी थानक भोगवें, वले मोल रा लीया में रहें छें ताहि के।
 वले भाडे लीया पिण भोगवें, त्यांनें निश्चेंइ जाणों निन्वां री पांत माहि के ॥ ८ ॥
 कोइ मिनप आंतरीयो जूतों घुरल के, ते घर री जायगां नें थानक दे थाप के।
 तिण थापीता थानक में रहें, तिण थानक रा घणी होय बेंठा आप के ॥ ९ ॥
 एहवा थानक भोगव्यां, बुघ अकल पत त्यांरी जाय के।
 त्यां भेष भांड्यो छें भगवान रो, ते बूबा साध नाम घराय के ॥ १० ॥
 ए चाला तो पोतें चालवें, कांम पढ्यां कपटी होय जाए दूर के।
 थानक भायां निमते कहें, जाणे जाणें ने मूरख बोले कूर के ॥ ११ ॥
 दडें लीपे साधां रें कारणे, ओडीयां ओडीयां आणें छें गार के।
 ते पिण बूड गया बापडा, वले गुर रोइ जनम दीयो छें विगाड के ॥ १२ ॥
 केइ भेषधारी नें भेषधाखां, हाथां दडें लीपें छें गार के।
 त्यां भेष भांड्यो भगवान रो, त्यांनें वादें ते पिण मूढ गिवार के ॥ १३ ॥
 साध काजे वादें चंदरवा, वले वाधें पड्या परेच कनात के।
 ते पिण बूडे गया बापडा, वले गुर नें मिष्ट कीयां साख्यात के ॥ १४ ॥
 कैलू फेरें साधां रे कारणे, जपीया उखेलें छे जीवां रा जाल के।
 नीलण फूलण कुलायता, अनंत जीवां रा छें खेंगाल के ॥ १५ ॥
 छपरा करे साध कारणे, वले उपर चढ छावें छें छांन के।
 ते गुर नें सेवग बेहूं जणां, भव भव में होसी घणां हिरान के ॥ १६ ॥
 मुरड न्हांवे नीलो उखणे, अनंत जीवां री करे छें घात के।
 जब साध श्रावक बेहूं जणां, चोडेंइ बूड गया साख्यात के ॥ १७ ॥
 थानक री भीत पड गइ, जब श्रावक फेर चुणावें भीत के।
 तिण हिंसा रा पाप उदे ह्यां, चिहुं गति में होसी घणा फजीत के ॥ १८ ॥
 साध रेत आणे नें पाथरें, ते रहें रों छार उपर बरसें मेह के।
 जीव अनंत मरें तिहां, तिण रा साधपणा रो आए गयो छेह के ॥ १९ ॥

बले टांची वजावे सिलावटां, साधां रें थानक सुवारण काज के ।
 तिण जायगा मे साधु रहे, त्या छोट्यो संजमनें लोकां री लाज के ॥ २० ॥
 पका थांभा मंगावे पर गांम थी, तिहां अनंत जीवां रो करे छे संघार के ।
 ते बूडो जीवां थी वेर वाघ ने, गुर रो पिण दीघों जनम विगाड के ॥ २१ ॥
 नवी जायगां उठाय बेठी करे, घेट सूं नवी दराए नीव के ।
 साधा निमते हिंसा करे, ते तां निश्चेइ हिंसक दुष्टी जीव के ॥ २२ ॥
 हिंसा करे साधां रे कारणे, त्यां जीवां रो जाणजो पुरो अभाग के ।
 तिण विघ विघ सूं जीव मारीया, त्यारो कहितां कहितां न आवें थाग के ॥ २३ ॥
 गरथ दीयों छे थानक करायवा, तिण अनंत जीवा रों करायों छे नास के ।
 पाप रो मूल भूदे तो तेहिज छें, तिणनें निश्चेइ जाणजो दुरगति वास के ॥ २४ ॥
 एहवा थानक भोगवे, ते निश्चेइ छें भगवत रा चोर के ।
 आचाराम नसीत सूत्तर मभे, तिहां वीर जिणंद कीयों छे निचोड के ॥ २५ ॥
 नवो थानक त्यारे मोल लें, जब आगलो थानक वेचे करे दांम के ।
 ते व्याज देवें सामग्री मभे, ते थानक तालके कहे छे ताम के ॥ २६ ॥
 मुखादिक रो माल ले भेलो करे, ते व्याज देइ ने वघारे माल के ।
 तिणने पिण कहे थानक तालके, ते बूडा देवाल लेवाल दलाल के ॥ २७ ॥
 जिणरो थानक तिणरो परगरो, ओर रो परगरो म जांणो कोय के ।
 ते थानक छें भेषवाखां तणो, त्यांरो इज परगरो जांणो लीजो सोय के ॥ २८ ॥
 बले थापीता थानक मे रहें, ओ पिण छे उघाडो दोष के ।
 तिण दोष ने दोष जाणे नही, ते मिथ्याती किण विघ जावसी मोख के ॥ २९ ॥
 कहि कहि ने किंतरो कहूं, इण अनुसारे बोल अनेक के ।
 एहवा थानक भोगवे, त्यामें आखो वरत न पावे एक के ॥ ३० ॥
 राते किंवाड जड्या उघाडीयां, तिहां पिण हुवें छे जीवां री घात के ।
 तिणरो पाप ने दोष गिणे नही, त्याने निन्द जांणो साख्यात के ॥ ३१ ॥
 नित को वेहरे एकण घरे, घोवण पाणी असणादिक आहार के ।
 ते मिष्ट हुआ जिण धर्म थी, विगाड गयो विकला रो आचार के ॥ ३२ ॥
 साध नाम धराय नें, बेठी पांत आरा माहे जाय के ।
 त्या भेष भांड्यो भगवान रो, त्या विकलां ने जाणजो निन्वारे माय के ॥ ३३ ॥
 कलाल ना घर नो पांणी पीये, ते पिण दोष सहीत असुघ के ।
 एहवो पांणी पीये तेहनी, मिष्ट हुइ छे सुघ ने वुघ के ॥ ३४ ॥
 पाणी वेहरे कलाल नां घर तणो, ते पिण मोल रो लीघो छे तांम के ।
 बले स्पीया ने व्याज दे तेहनें, ते पांणी वेहरे ते निन्वां रो कांम के ॥ ३५ ॥

विण पडिलेह्यां गिज पोथ्यां तणो, त्यामें अनंत जीवां री हुवें छें घात कें ।
 त्या जीवां रों पाप गिणें नहीं, ते तों असल निन्व साख्यात कें ॥ ३६ ॥
 ववेक विकल बालक विरघ छें, ते तों समकत विरत जाणें नही ताहि कें ।
 वले साधपणों नही ओलख्यो, एहवा विकलां नें मूढे ले माहि कें ॥ ३७ ॥
 सात आठ वरस रों डावडों, समकत विण हीण बुधीयो जीव कें ।
 तिणनें दिख्या दे आहार भेलो करे, त्यां पिण दीधी छें नरक री नीव कें ॥ ३८ ॥
 तिण बालक नें न्यातीला पकड नें, पाछो गृहस्थ करे तिणरो मेष उतार कें ।
 तिणनें पाछें निन्व जाय नें, धरणो पाडे वाखंवार कें ॥ ३९ ॥
 पूछ्यां कहें म्हें धरणो पाड्यो नही, जाणें जाणें नें बोले सांप्रत कूड कें ।
 एहवा किरतब तो निन्व करे, त्यारो लोकिक मे पिण हुवो फितूर कें ॥ ४० ॥
 कोइ निरघन घर छोडे त्यां कने, तिणनें घर रा आगना देवे नही ताम कें ।
 जब निन्व आमना करे, गृहस्थ कनाथी दरावें छें दाम कें ॥ ४१ ॥
 दाम दरावण री दलाली करे, त्यारो पाचमों वरत हुवों चकचूर के ।
 दसवीकाल कें देखलो, साधपणो गयो वेहतीरे पूर के ॥ ४२ ॥
 मूवा गयां रा पातरा, इधका राखें थानक रे माय के ।
 त्याने पूछे तो कहे गृहस्थ ना, सांप्रत बोलें मूंसावाय के ॥ ४३ ॥
 ते पडिलेह्यां विण पडीया रहे, जाल जमे जीवा री हुवे घात के ।
 इधका राख्यां भागों वरत पांचमो, त्यानें जाणजों निन्व साख्यात के ॥ ४४ ॥
 इधका थान राखें कपडा तणा, ते पिण विण पडिलेह्या ताम के ।
 त्याने आला में घालें मूंद दे, अे तो भेषधारी निन्वा रा काम के ॥ ४५ ॥
 बारा मां सूं साघां रे - कारणे, घोवण मांड मेले अनेरे घर आण के ।
 ते दोखीलें वेहरे जाण ने, एहवो मिष्ट आचार निन्वा रो जाण के ॥ ४६ ॥
 घोवण माहे नीलोतरी, तिण घोवण नें वेहरे जाण के ।
 वले दोष गिणें नही तेह मे, ते निन्व छे पूरा मूढ अयाण के ॥ ४७ ॥
 भूरी घोवे छें जुवार री, तिण घोवण मे जुवार रा दाणा अलेक के ।
 ते घोवण वेहरे छे जाण ने, त्यां छोड दीधी जिण धर्म री टेक के ॥ ४८ ॥
 बायां घर घर नों घोवण भेलो करे, साघां ने वेहरावण रे काज के ।
 ते घोवण वेहरे साघ जाण नें, त्याने किम कहिजे मुनिराज के ॥ ४९ ॥
 छती सकत फिरवा तणी, तोही लिंगळा लिंगडी थाणे वेले ताहि के ।
 कल्प मरजादा सांगी छें पापीयां, त्यानें गिणो निन्वा री पात माहि के ॥ ५० ॥
 सहर मे फिरें गोचरी उतावला, वलेहाय माहे लीयां चाले छे भार के ।
 वले मेड्यां चढें नें उत्तरे, त्या विकला नें छें तीन धिकार के ॥ ५१ ॥

थाणे बेंठा छे खावा घालीया, ते थाणें न वेंठा खांणे वेंठा जांण के ।
 ते रस, त्रिची नगर पिडोलीया, त्या भेषघाख्यां भांगी छे जिणवर आंण के ॥ ५२ ॥
 एक दिन माहे एकण घर मभे, वेहर ल्यावे छे तीन च्यार वार के ।
 ते पिण सख्या छे नही, त्या विकला रो विगड गयो आचार के ॥ ५३ ॥
 ते पिण विनाइ कारण वेहरता, त्या भागे दीवी छे कल्प मरजाद के ।
 एहवा भेषधारी भागल फिरें, विकल थका बाजे छे साव के ॥ ५४ ॥
 माहोमाहि साव सरवे नही, त्यारा मूंजे गये करे माहोमा मूकांण के ।
 आदर भाव नही आयां तणी, ते निन्व जिण मारग रा अजांण के ॥ ५५ ॥
 वले ग्रहस्थ ने वेंसण री आमना करे, जायगा वतावे वेंसण सुवण नें ताय के ।
 तिण कीयो संभोग गृहस्थ सु, तिणरी पिण विकलां ने खवर न काय के ॥ ५६ ॥
 प्रदन व्याकरण दसमा अग मभे, साव ने न राखणो चसमो कांच के ।
 ते राखे छे सूतर उथाप ने, त्यां निन्वा रो विकल माने छे साच के ॥ ५७ ॥
 एकलो साव चोमासो करे, वले एकलो रहे छे सेषे काल के ।
 तिणने अव्यक्त भगवत भाखीयो, सावपणा थी दीयो छे टाल के ॥ ५८ ॥
 दाय साधवीया चोमासो करे, दाय जणी रहे सेखा काल के ।
 कारण विण विचरे दाय जणी, तिण लोपी मरजाद-भागे दीधी पाल के ॥ ५९ ॥
 पाणी ठारे गृहस्थ रा ठाम मे, भोगवी पाछा सूप दे ताहि के ।
 त्यांने अणाचारी जिणवर क्हाया, दसवीकालक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६० ॥
 मातरियाविक रों नाम ले, पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
 तिण माहे दोष जांणे नही, त्याने जांणे निन्वा री पात माहि के ॥ ६१ ॥
 कारण विनाइ साधव्या, काजल घाले आख्यां रें माहि के ।
 अणाचारणी त्याने कही, दसवीकालक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६२ ॥
 केइ आयां पेहरे छे कांचूओ, मिश्रू आदि वले खीनखांप के ।
 ते विगडायल छे जेन री, त्याने वांछा पूच्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
 बंधो करावे गृहस्थ ने, तू दिख्या ले तो लीजे म्हारे पास के ।
 ओर साध कने लीजे मती, तिण श्री जिण आगना लोपे दीवी तास के ॥ ६४ ॥
 मोल लरावे लोट पातरा, वले पांना परत लारावे मोल के ।
 वले मोल वतावे थोडो घणो, ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
 लोट पातरा वसतर पोथीयां, सेटी घाले भुंयरा रे माहि के ।
 त्यारी पडिलेहण करे नही, एहवा मिष्ट आचारी छे निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
 लोट पातरा वसतर ने पोथीयां, गृहस्थ रे घर मेले छे ताम के ।
 त्यांरी भलावण देवे गृहस्थ ने, पछे विहार करे जावे ओर गाम के ॥ ६७ ॥

मोल ले राखें साधां नें वेहरायवा,
 ते वेंहर आणें लोलपी थकां,
 गृहस्थ नें देवें लोट पातरा,
 वले देवे ओघो नें पूंजणी,
 थोडोइ उपधि गृहस्थ नें दीयो,
 नसीतर रे पनरमें उर्दसे कर्हों,
 इधका राखें छे लोट नें पातरा,
 वरत भागों त्यारो पांचमों,
 कागद लिखावे गृहस्थ कर्नें,
 तिण मांहे समाचार आपरा,
 केइ तों कागद हाथां लिखे,
 कर्हे ओर किणही ने दीजो मती,
 कपडा वेंहरावे त्यांनें मोल ले,
 ते मिष्ट हूआं जिण धर्म थी,
 मोल लीघो थानक भोगवें,
 कपडा पिण मोल लीघा भोगवें,
 सिजातर पिंड भोगवें,
 घणी छोडे आग्या ले ओर नी,
 त्यांरा श्रावक खावें केइ मांग ने,
 तिणमें मुतलब जाणे आपरों,
 ओ मोल ल्यावें घी खांड ने,
 ओ पिण खावें मन मांनीयो,
 उणरे निठे खांतां ने देवतां,
 जब ओ पिण वेहरावे उण रीत सूं,
 कोइ घर सूं आयों बोलायवा,
 तिण घर जाए तेडीया,
 घर हाट मूं आयो चलाय नें,
 तिहां पिण जाये तेडीया,
 साह्यो आण्यो ले जाए तेडीयो,
 ते पिण वेहरे निसक सूं,
 पाट बाजोट आणें गृहस्थ रा,
 मरजावा लोपी नें भोगवें,

घी खांड आदि दे वस्तु अनेक कें ।
 त्या पेंहर विगाडयो साध तणो भेखकें ॥ ६८ ॥
 पूछा पांना नें परत वगोष कें ।
 ते मिष्ट हूआ ले साध रो भेप कें ॥ ६३ ॥
 त्यांरो आखो वरत रह्यो नही एक कें ।
 ओ पिण नही विकलां रे ववेक के ॥ ७० ॥
 इधका राखे कपडा लोपे मरजाद के ।
 त्यां विकलां ने विकल जाणें छे साध कें ॥ ७१ ॥
 ओर गांम मेलण ने ताहि कें ।
 ते पिण छें निन्वां री पांत मांहि के ॥ ७२ ॥
 मेल देवे गृहस्थ रे साथ के ।
 छाने दीजों साध साधव्यां रे हाय के ॥ ७३ ॥
 ते जांग ने वेंहरे छे ताहि के ।
 त्यांने निश्चेइ जाणजों निन्वां रे मांहि के ॥ ७४ ॥
 मोल रो लीघो भोगवें आहार के ।
 त्यांने निश्चेइ मत जाणजो अणगार के ॥ ७५ ॥
 ते सरस आहार तिणरो आवतो देख के ।
 तिण पेहर विगाडयो साध तणो भेख के ॥ ७६ ॥
 त्यांने सांनी करे दरावे दाम के ।
 इणरे होसी ते आवसी म्हारे काम के ॥ ७७ ॥
 वले चिरक पणो मेवा मिष्टान के ।
 गुर नें पिण दे अडलक दांन के ॥ ७८ ॥
 जब फेर त्यारी करे दातार के ।
 एहवो छे भेषघाख्यां रे अंधार के ॥ ७९ ॥
 वेहरायवा असणादिक आहार के ।
 त्यां विकला रो विगाड गयों आचार के ॥ ८० ॥
 कपडो वेहरण नें ले जावें बोलाय के ।
 त्यांमे पिणकला मत जाणजों काय के ॥ ८१ ॥
 ए दोनूइ दोष कर्ह्या भगवान के ।
 त्यांने मिष्ट आचारी जाणे बुबवांन के ॥ ८२ ॥
 पाच्छा देवण री नही छे नीत के ।
 आ तो निश्चेइ जाणो निन्वा री रीत के ॥ ८३ ॥

केइ पाट बाजोट मोल रा लीया, केइ आघाकरमी पाट बाजोट के।
 केइ तो सांहा आणे दीया, ओ पिण त्यामिं मोट्को खोट के ॥ ८४ ॥
 भांगां तूटा करावे त्याने सांतरा, खाती रे पासे पागादिक दराय के।
 केइ पाट बाजोट आगा लीये, केइ थानक ज्यू थापे राख्या ताय के ॥ ८५ ॥
 गृहस्थ नें लिखावें बोल थोकडा, आप तणों पांनो दे उतारण ताय के।
 ते उतारे छे पानो देख ने, इण दोष री विकलां ने खवर न कांय के ॥ ८६ ॥
 पेंहलों करण लिख दीयां में पाप छें, तो लिखायां पिण होसी पाप के।
 तिणमें निन्व जाणे घर्म छे, त्यां श्री जिण वचन ने दीयां उथाय के ॥ ८७ ॥
 पुस्तक पातरा आदि दे, मोल लरावें ले ले नांम के।
 आछा भूंडा कहें तेहनें, अे पिण छे भागलां रा कांम के ॥ ८८ ॥
 गराग नें तो कइयो कहां, कुगुर छें तिण विच दलाल के।
 बंचण बालो वाणीयो कहां, यां तीनां रो जाणजों एक हवाल के ॥ ८९ ॥
 क्रय विक्रय माहें वरते साधजी, त्याने महा दोषण छे एह के।
 उत्तराघेन पेतीसमें, तिणने तो साध न कइयो छे तेह के ॥ ९० ॥
 जो मोल लरावें अचित वस्त ने, तो सुमत गुप्त होय जायें खंड के।
 पांचू महावरत भागें गया, तिणरो आवे चोभासी डड के ॥ ९१ ॥
 ए भाव कइया छें नसीत में, संका हुवें तो जोवो उगणीस मे उइस के।
 सुध सावा विण कृण कहे, सूतर तणी उंडी रेस के ॥ ९२ ॥
 पोथां रा गिज राखे पडिलेहा निनां, त्यां माहे जमें छे जीवां रा जाल के।
 पडे कंधुया माकड उपजे, नीलण फूलणादिक जीवां रो हुवे खेगाल के ॥ ९३ ॥
 जोवे वरस छे मास नीकल्यां थकां, तों पेहलां वरत तणों हुवे खंड के।
 नसीत रे दूजे उइसे कइयो, एक मास रों आवें डड के ॥ ९४ ॥
 गृहस्थ रें साथें सदेसों कहे, जब गृहस्थ सू भेलो कीयो संभोग के।
 ते साथ नहीं भगवान रा, त्यारे लागो मिथ्यात रो रोग के ॥ ९५ ॥
 भेषधारी मांहोमां कजीया करें, धरणा पाडे दरावें आंग के।
 आंम्हा सांहा बेसैं बाजार में, अन खावा रा दरावें पचखाण के ॥ ९६ ॥
 अन पांणी छोडावे आंग दे, कदा होय जाये तिण मिनष री घात के।
 एहवा किरतव करें तेह मे, साधपणो रह्यो नहीं अंसमात के ॥ ९७ ॥
 धरणो पाडें साध रा भेष में, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज के।
 ते वेसरमा सम वाहिरा, त्यां विकलां ने विकल कहें मुनीराज के ॥ ९८ ॥
 त्याने बांदि पूजे ते भोलीया, त्याने साधपणा री खवर न कांय के।
 ते पिण दूडें गया वापडा, कुगुर तणी पखपात रें मांय के ॥ ९९ ॥

डोला बारें काढें तुरकां तणें, जब मोटें मोटें सब्दें करें आइधोय कें ।
 ज्यूं निन्वां रो मत विखरें जवे, आहिज रीत जाणें लेजो सोय कें ॥ ११६ ॥
 सैद माख्या तुरकां तणा, तिण सूं आए बरस करें छें आइधोय कें ।
 ज्यूं ज्यांरा खेतार श्रावक फिरें, आइधोय ज्यूं करें छें हाय बोय कें ॥ ११७ ॥
 सूतर विरुध जोडां करे, तिणरा कागदियां लिख दीचा हाथ कें ।
 आइधोय ज्यूं करता थकां, बकता फिरें हाटां में दिन रात कें ॥ ११८ ॥
 सुध साधां नें निन्व कहें, निन्वां नें कहें सुध साध कें ।
 ते दोनूं विध बूडा बापडा, त्यांरा घटमें उपनी मिथ्यात री व्याध के ॥ ११९ ॥
 नवकरवाली निद्या तणी, कुगुरां दीधी छें त्यानें पकडाय के ।
 जाप जपें नित तेहनों, रात दिवस करें छें बुढण रो उपाय के ॥ १२० ॥
 सुध साधां तणी निद्या करे, बले अणहूता देवे आल के ।
 गेहला ज्यूं बकबोकरे, साच भूठ तणो नही काढे निकाल कें ॥ १२१ ॥
 ओरा रें माथें आल दें, तिणसूंड पांमें भव भव में आल के ।
 ज्यूं साधां रे आल देवें तिको, उतकप्टों हलें तो अनंतो काल के ॥ १२२ ॥
 जो पाप उदें हुवे इण भवे, तो घर मांहे आवे दलदर भूख के ।
 बिजोग पडें बाहलां तणों, बले दिन दिन उपजे दुख मांहे दुख कें ॥ १२३ ॥
 रोग सोग संताप वधें घणों, जीवें जां लग रहें खांचा ताण कें ।
 बले दुख पांमे नरक निगोद नां, सुध साधां री निवा रा ए फल जाण कें ॥ १२४ ॥
 जिहां विचरे साधजी, तिहां तिहां मिले परषदा रा थाट के ।
 तिहां भेषधारी ने निन्वां, रात दिवस करें छें तलतलट कें ॥ १२५ ॥
 जिहां जिहां निन्व संचरे, तिहां तिहां हुवे जिण धर्म री हाण कें ।
 कजीयो कलेस वधें घणों, तिहां मूरख बूडे छे कर कर ताण के ॥ १२६ ॥
 जिहां जिहां सूर्य उदें हुवे, तिहां तिहां हुवे चोरा तणी घात के ।
 जिहां जिहां विचरे साधजी, तिहा तिहां पतलों पडें छें मिथ्यात के ॥ १२७ ॥
 साध रो आचार परगट करे, जब भेषवाख्यां रे लागें दाह के ।
 रोम रोम तिणां रा परजले, ओर लोकां रें तो नही परवाह के ॥ १२८ ॥
 कजीया कलेस तो बेहिज करे, बेहीज करे जिण धर्म री हांण के ।
 बेहीज निद्या करे पारकी, ते पिण विकलमें नही छे पिछाण कें ॥ १२९ ॥
 मत विखरतो देखे आप रो, बले परती देखें छें मत मांहे फूट कें ।
 जब निन्व नें निन्वां रा श्रावका, मिल मिल नें चलाबें छें भूठ के ॥ १३० ॥
 स्वान भुसें छें मुख उचो करे, कानां सुणे मालर रो भिणकार कें ।
 ज्यूं साधां रा सब्द कानां सुणें, स्वान ज्यूं निन्व करे भुसवार के ॥ १३१ ॥
 ४४

माठी वस्त नें ज्यूं ज्यूं उकरालीयां, ज्यूं ज्यूं नीकलें दुरगंभ वास के।
 ज्यूं ज्यूं निन्वां नें छेडवे, ज्यूं ज्यूं उंवा बोलें छें तास के ॥ १३२ ॥
 नीब फले जब कागलो, घणों हरणें नीबोली देख के।
 ज्यूं काग सरीषा मांनवी, मिश्र री सरखा सूं हरषे वरोष के ॥ १३३ ॥
 ते मल मल नें गावें मिश्र ने, जाणें सार काढ्यो इण सरखा मांय के।
 न्याय निरणों त्यारे नहीं, यूंही करे थोथी बकवाय के ॥ १३४ ॥
 मिश्र दांन उठाय बेंठो कीयों, ते सरखा छें एकत भूठ मिथ्यात के।
 ते किण किण में मिश्र कहे, ते सांभलजो छोडी पखपात के ॥ १३५ ॥
 आठ दांन कह्या संसार नां, तिण मांहे कहे जिण धर्म रो भेल के।
 आ उंघी सरखा निन्वां तणी, ते जिण मारग सूं नहीं खाजे मेल के ॥ १३६ ॥
 अणुकंपा आंग गाजर मूला दीयें, वले सर्व नीलोतरी ने जमीकंद के।
 ते पिण दीयां मिश्र कहें, एहवो छे निन्वां री सरखा रो फंद के ॥ १३७ ॥
 बंदीवानादिक नें दांन दें, सच्चित्तादिक नीलोती अनेक के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ खोटी सरखा भाले रह्या टेक के ॥ १३८ ॥
 ग्रह करडा आयां भय रो घालीयों, थावरीयादिक ने देवे दांन के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरखा घोर अग्यान के ॥ १३९ ॥
 खरच मूआ रे केडें करे, ए चोथो दांन लोकिक व्यवहार के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरखा छे घोर अंधार के ॥ १४० ॥
 सांकडे पडीयो लज्या सू दांन दे, ते सासरवादिक में जमाइ ज्यूं जाण के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, एहवा निन्वां छें मूढ अयाण के ॥ १४१ ॥
 गरब चढ्यो दांन दे जेह भणी, मुकलावोपेंहरावणी मूसालें रंगरेल के।
 रावलीयादिक नें दांन दें, तिण मांहे कहें जिण धर्म रो भेल के ॥ १४२ ॥
 हांती नेतो देवो नेत घालवो, इत्यादिक आमों सांहाो देवो लेवो तांमके।
 ए नवमों दसमों दांन छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल कहें छे अलामके ॥ १४३ ॥
 पीहर वाजें छकाय नां, छकाय खवायां कहे मिश्र दांन के।
 जब पीहर तों पूरो पड्यो, दया रहित छे विकल समान के ॥ १४४ ॥
 एक करणी करे तेहमें, नीपनो कहे छे धर्म नें पाप के।
 एहवी करे छें परूपणा, मिश्र दांन री कीवी छे थाप के ॥ १४५ ॥
 जीव खाबां खवायां भलो जाणीयां, तीनूइ करणा कह्यो जिण पाप के।
 जीव खवाया मिश्र कहे, त्यां निन्वां रे होसी भव भव माहे संताप के ॥ १४६ ॥
 भात वरोटी जीमणवार में, नेत जीमावें सगा नें सेण के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, त्यांरा फूट गया अभितर नेण के ॥ १४७ ॥

छही छकाय जीवां तणी, कोइ मंडावे छही दान साल के।
 त्यांमे किणहीक में तो मिश्र कहें, किणहीक रों नही काठें निकाल के ॥ १४८ ॥
 बावीस टोलां ने कहे साघ छे, त्यां पिणमिश्ररी सरघाजाणे लीघी कूडके।
 खोटी जाणे ने परहरी, ज्यूं माठी वस्त उपर दे घूर के ॥ १४९ ॥
 बावीस टोलां ने कहे साघ छे, ओ पिण भूठ बोले जाण जाण के।
 पिण मन माहि साघ जाणे नही, त्यां भूठा बोलां री करजो पिछांग के ॥ १५० ॥
 जो साघ सरघे छे तो तेहनी, बंदणा छडावे छे किण न्याय के।
 एहवा प्रश्न पूछे सांकडें लीयां, जब तो जीम पडे नही ठाय के ॥ १५१ ॥
 कदे करडे काम सांकडे पड्यां, बावीस टोलां ने कहिदे साघ के।
 ओं पिण भूठ बोले छे जाण जाण ने, पिण बंतरग माहे जाणे असाघ के ॥ १५२ ॥
 मिश्र दान उथापे तेहने, हिंसाघर्मी कहे छे तांम के।
 हिंसा घर्मी तो निश्चेइ असाघ छे, जब तो बावीस टोलां री पाडी मांम के ॥ १५३ ॥
 मिश्र दान ने उथपे, त्यांने पाखडी कहे छे तांम के।
 बले हिंसाघर्मी त्याने कहे, बले भूठाबोलां कहे छे ठाम ठाम के ॥ १५४ ॥
 बले खोटो मत कहे तेहनो, बले अग्यांनी कहे छें तांम के।
 ग्यान बिना आघा कहे, विघ विघ सूं पाडे छे माम के ॥ १५५ ॥
 जोड कीधी छे त्या उपरे, तिणमे निषेद्या छे विवध परकार के।
 साघपणा ने समकत तणो, खेरो मूल न राख्यो लिगार के ॥ १५६ ॥
 ज्याने भिन भिन कर ने नषेधीया, बले त्यानेइज कहे छे साघ के।
 एहवा भूठाबोलां छे निन्वां, त्यां विकलां रे किण विव होसी समाव के ॥ १५७ ॥
 बावीस टोलां मे केइ भोलीया, त्यां भूठाबोलां ने कहे छे साघ के।
 ते पिण सुध बुध वाहिरा, त्यां रे पिण कदेय म जाणों समाव के ॥ १५८ ॥
 सील भागे निन्वां रा टोला मभे, तिणने कहिवा ने तो दिख्या दे फेर के।
 पिण वडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, एहवा छे निन्वा रा मन में अघेर के ॥ १५९ ॥
 कुसीलीया भागल भेला रहे, त्यांरो तो किण विव काठे निकाल के।
 पांणी भरे सगलां मभे, कण रहीत भेलो कीयो छे पराल के ॥ १६० ॥
 साघ साघवी सूं वरत भाग दे, तिणने दसमो प्राच्छित्त कह्यो जिण आप के।
 ते ठांगाअग वेदकल्प में, ते प्राच्छित्त निन्वां दीयो उथाप के ॥ १६१ ॥
 सील भागे साघ साघवी थकी, तिणने न्याय करण नें दिख्या दे फेर के।
 तिण ने वडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, ओ पिण निन्वा रे अतंत अघेर के ॥ १६२ ॥
 फेर दिख्या दे सगला सू छोटी कीयो, जब सगलां वादणा सीस नमाय के।
 तिणरी वदणा तो जिहाइ रही, उल्टा वडां ने पाडे छे पाय के ॥ १६३ ॥

रत्न : १४

विनीत अविनीत री चौपई

ढाल : १

ढुहा

नमूं वीर सासन घणो, ते पाम्यां पद निरवांण ।
 त्यां विनो परूप्यो सद्गुर तणो, बांधी मरयाद परमांण ॥ १ ॥
 केइ साधु नाम घरावतां, ते बोलें आल पंपाल ।
 सुघ आचार श्रद्धा थी वेगला, ज्यूं कण रहित पराल ॥ २ ॥
 एहवा भेषघारी मिष्टी थकां, मुख सूं कहे म्हें साध ।
 ते विनों परूपें भागल तणो, श्री जिण वचन विराव ॥ ३ ॥
 त्यांसूं महाव्रतां री चरचा कीयां, तो भागें भृग ज्यूं दूर ।
 घणा आडंबर करे पूजावता, बले भाखें अनेक विध कूड ॥ ४ ॥
 त्यांरो विनो करे गुर जांण ने, भोला लोक अयांण ।
 केडे लागा कुगरां तणे, ते बूडें कर कर तांण ॥ ५ ॥
 कुगुर आदर ने छोडण तणो, कठिन घणो ए कांम ।
 कोइ छोडे हिरदे ग्यांन परगट्यां, त्यांने वीर क्खाण्या तांम ॥ ६ ॥
 विनो करणो छे सतगुर तणो, त्यांरा गुणा री करी पिछांण ।
 उत्तरावेन पेहले कह्यो, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल :

[पाणड वधसी आरे पांचमें रे]

संजोग छोड्या अभितर बाहिरला रे, ते मोटा ऋषिस्वर छे अणगार रे ।
 ते सर्व सावद्य त्यागे ने नीकल्या रे, त्यांरे पाप करण रो नही आगार रे ।
 विनों कीजे एहवा सतगुर तणो रे ॥ १ ॥
 ते करणी कर भेदे भिक्खु कर्म ने रे, निरदोषण मिख्या ना लेवणहार रे ।
 विनो परूप्यो एहवा सतगुर तणो रे, सूत्तर में श्रीवीर कह्यो विस्तार रे । वि० २ ॥
 जे चाले निरंतर गुर री आगतां मफे रे, समीपे रहे तो रुडी रीत रे ।
 ते जाण वरते गुर री अंग चेष्टा रे, तिणनें श्रीवीर कह्यो सुविनीत रे ॥ ३ ॥
 विनो तो जिण सासन रो मूल छें रे, विनो निरवांण सावन रो काज रे ।
 जे विनों करण सूं उपराठा पड्या रे, ते गया संजम नें तप सूं भाज रे ।
 ते अविनीत भारी क्रमां एहवा रे ॥ ४ ॥
 केइ गुर री नहीं पाले मूरख आगनां रे, समीपे रहिता सके मन माय रे ।
 रखे-करावे कारज मोक ने रे, एहवो वूडण रो करे उपाय रे ॥ ते० ५ ॥

ने प्रत्येक क्षण में गुर नों पाखियो रे,
 उगरे कूड़ कण्ठ ने बेठारगो धरों रे,
 जो कार्य करें अविनीत गुर दगो रे,
 दिन धर्म शिरोपर नों नहीं ओलख्यो रे,
 जो तर कर कल्या कष्टे आरगो रे,
 के पूजा स्तवा सो मूर्खों यज्ञों रे,
 जो बगवे गृहस्थमें बेल थोकडा रे,
 ओ आतो प्रसन्न अवर ने निद्रो रे,
 अविनीत नें आतो बनसो बोकियो रे,
 ओ दिन विव्र फाले गुर नी आरगो रे,
 उगरे चेल करण री मन में अति बरो रे,
 गडे सोनि छोड दिव्या के गुर कने रे,
 सोइ गुर कने निव्या के जो जंग ने रे,
 बृल आती छुं बने दिन कने रे,
 उगरे टोका नें गुर री आरगो रे,
 ओ परमद रो डर नहीं आंग जारियो रे,
 अविनीत रे चेलो री हूवे चावना रे,
 उ चेलो हुंडो देखे जो आरगो रे,
 अविनीत आगे धर छोडे तेहने रे,
 बडे कुल्ला सोवाय निद्रकवे गुर यकी रे,
 अविनीत आगे धर छोडे तेहने रे,
 जो गुर नहीं सुंदे शिष्य अविनीत नें रे,
 ओ अमात्र फने अरगो माव नें रे,
 बडे कांग न जके पाती तेहनी रे,
 सोइ गुर री आरगो रूपे चेलो करे रे,
 वे छि छि हुसी मनसू लोक में रे,
 वेगम बरयो ने आतो बस नहीं रे,
 उरने शिष्य दिलियां सुं जो शिष्य बडे रे,
 विनीत शिष्य रे शिष्य री मन में उरनी रे,
 दिन आरगो बरने छेया बस करी रे,
 जो विनीत आगे धर छोडे तेहने रे,
 हूं गुर री आरगो दिन चेलो दिन कहं रे,

उग विनी न जायो हवी रीत रे।
 तिनने श्रीवर कह्यो अविनीत रे ॥ ६ ॥
 जो जनि आरगो के समत रे।
 ने चिहुं गति ने होसी बगो हंगल रे ॥ ७ ॥
 ने अघ हीगति के कावा आंग रे।
 दिन दिनों करगो तो नहीं आरगो रे ॥ ८ ॥
 ने दिन मान बडाई काज रे।
 वे अविनीत निरलज नागे काज रे ॥ ९ ॥
 दिनरा अधिर परिगाम रहे सदीव रे।
 जे जेची अहंकारी कृपी जीव रे ॥ १० ॥
 दिनसुं गुर री गुर मुड सुं बखान जाय रे।
 एहवी ओकट घट घरी मन नाथ रे ॥ ११ ॥
 जो फाडन रो करे नूड उराय रे।
 नहर मगत अं आतो रीपे छियाय रे ॥ १२ ॥
 नाव चागि शिष्या पावे नाथ रे।
 चेलो करण री मन में जाय रे ॥ १३ ॥
 दिन गुर नें आरगो देतां नहीं आंग रे।
 जो गुर सुं दिन जोडे नूड अरगो रे ॥ १४ ॥
 ने अविनीत करे चेलो उरकाज रे।
 दे दे अहंदा कूडा आरु रे ॥ १५ ॥
 दिनने जो पूरी खर न जाय रे।
 जो कुन कुन करे अकारज जाय रे ॥ १६ ॥
 बने गुर सुं दिन राखे मूरख देव रे।
 दिन पहर दिगाह्यो मारु रो नेप रे ॥ १७ ॥
 दिन छोडी छे दिन साधन री रीत रे।
 परमद में दिन होसी बगो कसीत रे ॥ १८ ॥
 दिगरे रहे चेलो करण रो आंग रे।
 बडे बडे मोलगी नें अनियत रे ॥ १९ ॥
 दिन गुर री आरगो दिन न करे चाव रे।
 शिष्य दिलियां न दिलियां मरल स्वभाव रे ॥ २० ॥
 जो विनीत बोलें मूर रे न्याय रे।
 हूं दिव्या दे सुं गुर नें जाय रे ॥ २१ ॥

कोइ उपगारी कंठ कला धर साधु री रे, प्रगंसा जज्ञ कीरति बोलें लोग रे ।
 अविनीत अभिमानी सुण सुण परजले, उणरे हरष घटे नें वधें सोग रे ॥ २२ ॥
 जो कठ कला न हुवे अविनीत री रे, तो लोकां आगें बोलें विपरीत रे ।
 यां गाय गाय रीभाया लोक ने रे, कहे हू तत्त्व ओलखाउं रुडी रीत रे ॥ २३ ॥
 एहवा अभिमानी अविनीत ते लोकां कने रे, एहवी जणावे ऊची रस रे ।
 उना रे उत्तम साधा री आसता रे, तिण छोड्यो छे सतगुर नों आवेस रे ॥ २४ ॥
 ओ गुर रा पिण गुण सुण नें विलखो हुवे रे, ओ गुण सुणे तो हरषत थाय रे ।
 एहवा अभिमानी अविनीत तेहने रे, ओलखाऊं भव जीवां ने इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 कोइ प्रत्यनीक ओगुण बोले गुर तणा रे, अविनीत गुर द्रोही पासे आय रे ।
 तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने रे, अमितर मे मन रलियायत थाय रे ॥ २६ ॥
 प्रत्यनीक ओगुण बोलें तेहनी रे, जो आवे उणरी पूरी परतीत रे ।
 तो अविनीत एकठ करे उण सं घणी रे, ओ गुर रा ओगुण बोले विपरीत रे ॥ २७ ॥
 वले करे अभिमानी गुर सूं बरोवरी रे, तिणरे प्रबल अविनीं नें अभिमान रे ।
 ओ जद तद टोलां में आछो नही रे, ज्युं विगड्यो विगाडे सडियो पांन रे ॥ २८ ॥
 ओ खिण माहे रग विरंग करतो थको रे, वले गुर सूं पिण जाए खिण मे रूस रे ।
 जब गूंथे अग्यांनी कूडा गूंथणा रे, ओर अविनीत सू मिलवा री मनहूस रे ॥ २९ ॥
 जो अविनीत ने अविनीत भेला हुवे रे, तो मिल मिल करे अग्यांनी गूमर रे ।
 क्रोध रे वस गुर री करें आसातना रे, पिण आपो नही खोजे मूढ अवूमर रे ॥ ३० ॥
 जो अविनीत अविनीत सू एकठ करे रे, ते पिण थोडा मे विखर जाय रे ।
 त्यारे क्रोध अहंकार ने लोलपणो घणो रे, ते तो साधां मे केम खटाय रे ॥ ३१ ॥
 उणने छोटा ने छादे चलावण तणी रे, ते पिण अकल नही घट माय रे ।
 वडा रे पिण छादे चाल सके नही रे, तिण अविनीत रा दुख माहे दिन जाय रे ॥ ३२ ॥
 पुस्तक पाना वसतर ने पातरा रे, इत्यादिक साधु रा उपधि अनेक रे ।
 गुर ओर साधा ने देता देख ने रे, तो गुर सू पिण राखे मूरख वेख रे ॥ ३३ ॥
 जब करें मांहोमां खेदो ईसको रे, वले वांछे उत्तम साधां री घात रे ।
 तिण जनम विगाड्यो करे कदागरो रे, करे माहोमां मन भांगण री वात रे ॥ ३४ ॥
 एहवा अभिमानी नें अविनीति री रे, करे भोला भारी कर्मां परतीत रे ।
 उणरा लषण परिणाम कह्या छे पाडुआ रे, कोइ चतुर अटकलसी तिणरी रीत रे ॥ ३५ ॥



ढाल : २

दुहा

टोलां माहें रहिवा री आसा नहीं, क्रोधी अविनीत जाणें एम ।
 तिण सूं छाने छाने लोकां कर्नें, बोले थावरिया जेंम ॥ १ ॥
 गर्भवती नें कर्हें डाकोत रो, थारें होसी पुत्र अनूप ।
 पाडोसण ने कर्हें होसी डीकरी, ते पिण अतंत करूप ॥ २ ॥
 गुर भगता श्रावक श्रावका कर्नें, गुर रा गुण बोले तांम ।
 आपो वग हुवो जाणें तिण कर्ने, ओगुण बोले तिण टांम ॥ ३ ॥
 थावरिया डाकोत ज्यूं, बोलें अनेक विघ कूर ।
 इह लोक तणो अरथी घणो, वले मांनं आपण पो सूर ॥ ४ ॥
 कर्नें रहे तिण साधु तणो, वरं बूढी ज्यूं जाण ।
 खीटोरखेडाइ करें घणी, पग पग तांणा तांण ॥ ५ ॥
 कलहगारा अभिमांनी अविनीत ने, निषेध्यों सूवर मांय ।
 तिणनें माठी माठी दीधी ओपमा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[राठश दिगजय चालियो]

कुह्या कानां री कूतरी, तिणरे भरें कीडा राव लोही रे ।
 सगले टांम सूं काढें हुड हुड करे, घर में आवण न दे कोइ रे ।
 विग विग अविनीत आतमा* ॥ १ ॥
 कुत्ती विगाडे रमणीक आंगणो, न्हांखे कीडा राव ने लोही रे ।
 वास दुरगंघ आवे अति बुरी, तिणनें घुर घुर करें तवं कोइ रे ॥ वि० २ ॥
 जेहवी कुह्या कानां री कूतरी, तेहवा अविनीत ने अभिमांनी रे ।
 तिणरो पाडुओ शील ने मुख अरी, तिण सूं सगलाइ दे जाए कानी रे ॥ ३ ॥
 अविनीत रा मुख मां सू नीकलें, ते तो कुवचन कीडा सम जाणो रे ।
 रमणीक आंगणा ज्यूं सुव साव ने, पाप लगावे क्रोध उठाणो रे ॥ ४ ॥
 थिर करण माहे राखे तेहने, छिद्र ग्रहे हुवे द्रोही रे ।
 तिणने कुह्या काना री कूतरी ज्यूं, गण वारें काढे सर्व कोइ रे ॥ ५ ॥
 कण सहित कुंडो छोड नें, भिष्टो भखे भंडसूरो रे ।
 तिण भंडसूरा री ओपमा, अविनीत ने दीधी वीरो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते अविनो छें भिष्ठा सारिषो, तिणनें अविनीत आचर लीघो रे ।
 विनां धर्म सू अल्लो पडें, अनंत संसार आरे कीघो रे ॥ ७ ॥
 हरिया जव तो मिलें खावा भणी, पीवा नें मिलें पाणी ताह्यो रे ।
 तिण सूं भिडके मूढ मिरगलो, पछे जाय पडे जाल मांह्यो रे ॥ ८ ॥
 ते अविनीत छें मिरग सारिखो, ते तों विनों करतो संक आणे रे ।
 अविनां रूपणी जाल में पडे, ते पिण मूढ न जाणे रे ॥ ९ ॥
 तिण भंडसूरा ने मिरग री, ए ओपमा अविनीत नें छाजे रे ।
 तिणरो विगड्यो इहलोक परलोक, तोही निरलज्ज मूल न लाजें रे ॥ १० ॥
 गलियार गधो घोडो अविनीत ते, कूट्यां विन आगो न चालें रे ।
 ज्यूं अविनीत ने काम भलावियां, कह्यां नीठ नीठ पार घाले रे ॥ ११ ॥
 गलियार गधो घोडो मोल ले, खाडेती घणो दुख पावे रे ।
 ज्यूं अविनीत ने दिख्या दीया पछें, पग पग गुर पिच्छतावे रे ॥ १२ ॥
 बुटकने गधेडे दुराचरी, तिण कीची घणी खोटई रे ।
 आप छांदि रह्यो उजाड मे, एक बलद नें कुबद सीखाई रे ॥ १३ ॥
 तिण अविनीत बलद ने तुरकियां, मार गाडा में घाल्यो रे ।
 बुटकनां ने आंग जोतख्यो, हिंवे जाये उतावल सूं चाल्यो रे ॥ १४ ॥
 ज्यू अविनीत ने अविनीत मिल्या, अविनीतपणो सिखावे रे ।
 पछे बुटकनां ने बलद ज्यू, दोनू जणा दुख पावे रे ॥ १५ ॥
 कुशिष्य रो चेलापणो, जेहवो वेव्या नों घरवासो रे ।
 खिण खिण आय विनों करे, खिण खिण हुवे उदासो रे ॥ १६ ॥
 ते वेव्या मुतलब आपणे, करे सोले सिणमारो रे ।
 पुरष रीभावे पारका, किणरी म जाणो नारो रे ॥ १७ ॥
 ज्यूं अविनीत बाजे विनो करें, ते तो मुतलब रों छे यारो रे ।
 जो स्वारथ देखे असीभत्तो, तो खिण माहे हूय जाय न्यारो रे ॥ १८ ॥
 वेव्या सूं घर वासो करे तिके, घन खूटां पछें पिच्छतावे रे ।
 ज्यू अविनीत ने कनें राखियां, ते तो कांम पड्यां सीदावे रे ॥ १९ ॥
 वेव्या नें अविनीत री, यां दोयां री एकज रीतो रे ।
 त्यांरो इहलोक परलोक विगडियो, वले भव होसी फजीतो रे ॥ २० ॥
 अंगीकार न करे गुर वचन ने, विह्यो बोले पाडें विरोधो रे ।
 मूढ सुकुमाल गुर छे खिम्यावंत, जणरी सगत सू करे क्रोधो रे ॥ २१ ॥
 तिणने चूक पड्यां गुर सीख दे, तो अविनीत नें द्रपे जागे रे ।
 वले कलहो करे उलटो पडे, पिण गुर री सीख न लागें रे ॥ २२ ॥

ते सीख छें किल्याण कारणी, ते अविनीत एहवी धारी रे ।
 मोने मारे चपेटा नें टाकरा, देवें डंडादिक परिहारी रे ॥ २३ ॥
 बाघ्यो कालारी पाखती गोरियो, वर्ण नावें पिण लक्षण आवे रे ।
 जूं विनीत अविनीत कने रहे, तो उ कांयक कुबद सीखावें रे ॥ २४ ॥
 अभिमानी अविनीत सूं, सुघ विनो कीयो नहीं जावे रे ।
 कोइ विनीत गुर रो विनों करे, जब आप घणो सीदावे रे ॥ २५ ॥
 अविनीत दुखदाई केहवो, जेहवी सोक वरते दुखदाई रे ।
 ते छल छिद्र जोवतो रहे, खुद्र परिणाम रहे सदाई रे ॥ २६ ॥
 ज्यू सोक रो सोक लोकां कने, करें चावत नें वाछें घातो रे ।
 ज्यूं अविनीत वरते गुर थकी, आहिज रीत विख्यातो रे ॥ २७ ॥
 फाई जात कुजात री उपनी, भरतार सूं लडे रीसावें रे ।
 पछे ताके कुवा ने बावडी, के ओर साथे उठ जावे रे ॥ २८ ॥
 ज्यू अविनीत गुर सूं लुठो थको, करे सल्लेखणा माडे मरणो रे ।
 ते मरणो अविनीत नें दोहिलो, तिणसूं ताके ओरां रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 तिणरो संथारो ज्यू कूवो बावडी, तिण सूं मरे तोहि बाल मरणो रे ।
 ओर साथे उठ जावे अस्त्री, ज्यूं ओर अविनीत रो ले सरणो रे ॥ ३० ॥
 सोर ठडो लागें मुख मे घालियां, अग्नि माहे घाल्या हुवें तातो रे ।
 ज्यू अविनीत नें सोर री ओपमां, सोर ज्यूं अलगो पडे जातो रे ॥ ३१ ॥
 आहार पाणी वस्त्रादिक आपियां, तो उ श्वान ज्यूं पूछ हलावे रे ।
 करडो कहां उठे सोर अग्नि ज्यू, गण छोडी एकल उठ जावे रे ॥ ३२ ॥
 सोर आप बले बालें ओर नें, पछें राख थई उठ जावे रे ।
 ज्यू अविनीत आप ने परतणां, ग्यांनादिक गुण गमावें रे ॥ ३३ ॥
 सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुघवत रहे छें दूरा रे ।
 ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे, ते तों परमेश्वर रा पूरा रे ॥ ३४ ॥
 उत्तरावेन पेहलां अघेन सूं, अविनीत ने ओलखायो रे ।
 वले तिण अनुसारे निषेधियो, ते तों ले ले सूतर रो न्यायो रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

दुहा

बले अविनीत ने ओलखावियो, दशविकालिक मांय ।
निरणो कहू नवमां अघेन सूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ १ ॥
अहंकारे करी क्रोधे करी, जात्यादिक मद तास ।
बले पांच परमाद रे वस पड्यो, विनों न सीखे गुर पास ॥ २ ॥
यां च्यार बोलां अविनीत रे, हुवे ग्यांनादिक रो विणास ।
ज्यूं वंस फल विणांसे वंस ने, ज्यूं अविनें सूं निजगुण नास ॥ ३ ॥
कोइ अविनीत मद मूरख थकां, गुर ने बालक जाण ।
बले थोडा भण्या गुर तेहनो, अविनों करे मूढ अयाण ॥ ४ ॥
जे गुर री हेला निदा करे, तिण पडवजियो मिथ्यात ।
तिणरे दरसन मोह उदे हुवां, संवली न सूंके वात ॥ ५ ॥
केइ बालक गुर बुधवत छे, केइ बालक अल्प बुद्धिताय ।
पिण चारित पाले निरमलो, बले गुण घणां त्यां मांय ॥ ६ ॥
त्यारी हेला निदा कीयां थकां, सकल गुण खय थाय ।
तिणने उपमा देने निषेधियो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासिया केलायत आंलखो]

ज्यूं अग्न मे रुडी वस्त घाल्यां थकां, तो बल जल भस्म होय जाय हो । भविक जन
ज्यू अविने रूपणी अग्न सू गुण बले, ओगुण परगट थाय हो । भविक जन
श्रीवीर कह्यो अविनीत ने अति बुरो* ॥ १ ॥
कोइ बालक नाग जागे ने खीजावियो, तो पामें तिण सूं घात हो । भ० ।
इण दृष्टान्ते गुर री हेला निदा कीयां, पामे एकेन्द्रियादिक जात हो ॥ भ० श्री० २ ॥
आसी विष सर्प अतंत रुठां थकां, जीव घात सूं इधको न थाय हो ।
पिण गुर रा पग अप्रसन हुआं थकां, अबोध ने मुगत न जाय हो ॥ ३ ॥
कोइ अग्नि प्रजलती ने चांपे पग थकी, कोइ सर्प ने क्रोधे चढाण हो ।
कोइ ताल पुट विष खाये जीववा भणी, ज्यूं गुर नी आसातना जाण हो ॥ ४ ॥
कदा अग्नि न बाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो इ सर्प न खाय हो ।
कदा ताल पुट विष न मारे खावां थकां, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ पर्वत वांछे सिर सूं फोडवो,
 कोइ भाला री अणी नें मारें छें टाकरां,
 कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तकें,
 कदा भालोइ न भेदे टाकर मारियां,
 कोइ क्रोधी कुशिष्य अग्यांनी अहंकार सूं,
 ते मायावियो धुरत तांणीजसी संसार में,
 अविनीत नें सीख दीये हेत जुगत सूं,
 ते आवती लिखमी नें ठेले डांडे करी,
 केइ हस्ती घोडा छें अविनीत आतमा,
 तो अविनीत धर्माचारज तेहनो,
 वले अविनीत आतमा दुख पामें घणो,
 ते विकलेद्रिय सारिखा छें सुघ वुच बाहिरा,
 ते तों डांडे शस्त्रकरी मारीजता,
 तो गुर रा अविनीत ने सुख किहां थकी,
 वले अविनीत देव दाणव गंधव्वा,
 तो गुर रा अविनीत नें मार अनंत गुणी,
 अविनीत ग्यांत दरसण चारित तणो,
 उणने ऊंघोई सूभे नें ऊंघो अरथ करें,
 केइ विनीत अविनीत भण्या दोनूं गुर कनें,
 तिणनें सूघोई सूभे नें सूघो अरथ करे,
 ते विनीत अविनीत मारग जातां थकां,
 अविनीत कहे हाथी गयो इण मारगे,
 विनीत कहे हथणी पिण कांणी डावी आंख री,
 वले पुत्र रतन छे तिणरी कूख में,
 वले आगे गयां एक बाइ प्रस्न पूछियो,
 म्हारो पुत्र प्रवेश गयो ते मिलसी किण दिने,
 हुं काटूं रे चाहुं जीमडली तांहरी,
 तूं घसको कयूं नांखे रे पापी एहवो,
 विनीत कहे पुत्र थारो घरे आवियो,
 इणरो साच न माने ओ भूठ बोले घणो,
 ए दोनई बोला में अविनीत भूठो पड्यो,
 जब अविनीत घेष घख्यो गुर ऊमरे,

कोइ सूतोइ सिंह जगाय हो ।
 ज्यूं गुर नी आसातना थाय हो ॥ ६ ॥
 कदा कोप्योइ सिंह न खाय हो ।
 पिण गुर हेल्णा सूं मुगत न जाय हो ॥ ७ ॥
 बोलें विगर विचारी वांण हो ।
 काष्ट बूहो जाये पांणी में ज्यूं जांण हो ॥ ८ ॥
 तो उ क्रोध करें तिण वार हो ।
 ते तो पूरें छें मूढ गिंवार हो ॥ ९ ॥
 त्यांनं प्रतख दीसे छे दुख हो ।
 ते किण विघ पामें सुख हो ॥ १० ॥
 लोक माहें नरनार हो ।
 त्यांरों विगड्यो दीसें आकार हो ॥ ११ ॥
 भूख तिरखा रा दुख सहीत हो ।
 तिण छोडी छें जिण धर्म रीत हो ॥ १२ ॥
 ते पिण खाये छे मार हो ।
 नरक निगोद मकार हो ॥ १३ ॥
 उ दिन दिन पामें विणांस हो ।
 वले बुध ने अकल रो हुवे नास हो ॥ १४ ॥
 पिण विने सहीत भणियो विनीत हो ।
 भण भण ऊंघो पडे अविनीत हो ॥ १५ ॥
 हथणी रो पग देखी तांम हो ।
 ओ बोल्यो निसंक पणे आंम हो ॥ १६ ॥
 उपर राजा री राणी सहीत हो ।
 विवरा सुघ बोल्यो विनीत हो ॥ १७ ॥
 ते ऊमी सरवर पाल हो ।
 जब अविनीत कहे कीवो उण काल हो ॥ १८ ॥
 तु विह्यो बोले केम रे दो भागी ।
 जब विनीत बोले छे एम हो ॥ १९ ॥
 आज मिलसी तोसूं निसंक हो ।
 इणरी जीम वेरण रो वंक हो ॥ २० ॥
 साच उतरियो विनीत हो ।
 कहे मोनें न भणायो रूडी रीत हो ॥ २१ ॥

एहवी ऊंधी करें विचारणा,
 कहे मोनें न भणायो थें कूड कपट करी,
 अविनीत ने बोल्यो जाण बुरी तरें,
 निरणो करे संका काढी अविनीत री,
 इहलोक तणा गुर रा अविनीत री,
 तो धर्माचारज रा अविनीत री,
 नकटी बूटी कुलखणी नार नें,
 तिण विगडायल ने जोगी भखडादिक आदरे,
 नकटी तो आप सरिखो आवे मिल्यां,
 ते इधको न वाछे आपणपो खोजियां,
 नकटी सरिखो छे अविनीत कुलखणो,
 तिणनें आप सरिखो को एक आए मिलें,
 नकटी तो जोवे जोगी भखडादिक,
 जो अशुभ उदे हूवें घणो अविनीत रे,
 कांवा ने सो वार पाणी सू घोवियां,
 ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेश दीये घणो,
 कांवा री तो वास घोया मुवरी पडें,
 जो छोडवे तो अविनीत अंवलो पडे घणो,
 कोइ गुर भक्ता छे सुविनीत आतमा,
 जो हेत देखें तिण ऊपर गुर तणो,
 विनीत ऊपर घणो हेत हूवें गुर तणो,
 जब ओगुण सूभे अणहूताइ गुर तणा,
 अविनीत जाणो विनीत मूआ थकां,
 एहवा परिणामा घात वाछे सुविनीत री,
 वले ओषध भेषज आहार पांणी तणी,
 दुख ने असाता वाछे सुविनीत री,
 ओरां री अंतराय असाता दुख चित्तव्यां,
 सितर कोडा कोड सागर त्यां लगो,
 ते तो जिहां जिहां उपजें तिहा तिहां दुख हूवें,
 अंतराय अविनीत पणो छें एहवी,
 जो पाप उदे हूवे अविनीत रे इण भवे,
 वले गमतों न लागे इणरो बोलियो,

आए गुर सू भगड्यो अविनीत रे ।
 वले बोलें घणो विपरीत रे ॥ २२ ॥
 तिण सू गुर पूछ्यो दोयां नें विचार हो ।
 पिण उणरो तो उहिज आचार हो ॥ २३ ॥
 अकल विगड गई एम हो ।
 ऊंधी अकल रो कहिवो केम हो ॥ २४ ॥
 तिणनें परहरी निज भरतार हो ।
 ते पिण जाए तिणहिज लार हो ॥ २५ ॥
 घणो हरष घरे मन पीत हो ।
 तिमहिज जाणो अविनीत हो ॥ २६ ॥
 तिण सू निज गुर न घरे पीत हो ।
 तिणसूंई इधको अविनीत हो ॥ २७ ॥
 ज्यूं अविनीत जोवे अजोग हो ।
 तो मिल जाए सरिखो संजोग हो ॥ २८ ॥
 तो ही न मिटे तिणरी वास हो ।
 पिण मूल न लागें पास हो ॥ २९ ॥
 निरफल छें अविनीत नें उपदेश हो ।
 उणरे दिन दिन इधक कलेश हो ॥ ३० ॥
 गुर छद्दे रो चालणहार हो ।
 तो अविनीत मुख दे विगाड हो ॥ ३१ ॥
 तो अविनीत ने दुख हूवे साख्यात हो ।
 वले वाछें विनीत री घात हो ॥ ३२ ॥
 पछे म्हारोईज हुसी आग हो ।
 तिण लीघो कुगति रो माग हो ॥ ३३ ॥
 ओ जाणे ने पाडे अन्तराय हो ।
 अविनीत ने ओलखो इण न्याय हो ॥ ३४ ॥
 तिणरे बंधे महा मोहणी कर्म हो ।
 नही पांमैं जिणवर धर्म हो ॥ ३५ ॥
 उत्तकण्टो अनंतो कल हो ।
 कोइ बुधवंत देसी टाल हो ॥ ३६ ॥
 तो सगला नें लागे जहर समान हो ।
 आगे खुलसी दुखां री खान हो ॥ ३७ ॥

गुर बारा सूं आयां उठ ऊभो हवें, पग पूंज नेमें सुविनीत हो ।
 अविनीत ने इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करें तोही भूंडी रीत हो ॥ ३८ ॥
 पग पूंज वीयावच करणी अविनीत ने, ते तों कठण घणो छे कांम हो ।
 ते कांम पड्यां अविनीत टालो दीये, तिणरे प्रबल अविनो नें अमिमांत हो ॥ ३९ ॥
 गुर भक्ता जपर द्वेष अविनीत रो, वले ईसको ने खेदो अतंत हो ।
 उणरा छिद्र जोवें छे उतारणा आसता, तिणरा चारित जाणे मतवंत हो ॥ ४० ॥
 वले करे विनीत सू मूढ बरोबरी, पिण विनो कीयो मूल न जाय हो ।
 वले अवगुण न सूझें अविनीत ने आपरा, तिण सूं दिन दिन दुखियो थाय हो ॥ ४१ ॥

ढाल : ४

दुहा

छ्छ बोलं करी सहित नें, करणो गण अधिकारी जाण ।
 ते तों करे बधोतर गण तणी, ते गुण रतनां री खाण ॥ १ ॥
 कलहगारी अभिमांनी अविनीत नें, जो करे आगेवाण ।
 तो पाडे विखेरो गण मभे, करे सावां री हाण ॥ २ ॥
 केयां नें लडलड ने दूरा करे, बले वांछे केयां री घात ।
 गुणवंत सावां रा गुण सुणे, ते पिण सह्या न जात ॥ ३ ॥
 उ आमी साहमीं वातां करे, उठावें मांहोमां घेष ।
 करे मांहोमां लगावणी, ते अविनीत लेजों देख ॥ ४ ॥
 इसडा अजोग अविनीत सूं, कोइ करे अग्यांनी प्रीत ।
 ते पिण घणो पिच्छतावसी, होसी घणो फजीत ॥ ५ ॥
 आगें अविनीत हुवा घणा, त्यांरो सूतर में छें नांम ।
 इण अनुसारें अवर ने, ओलख लेजो तांम ॥ ६ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

घनावो सेठ सुत च्यारे बहू रे, उभिया ने भोगवती जाण रे । सुगण नर* ।
 रखिया ने बले रोहिणी रे लाल, त्यांरी सेठ कीवी छे पिछाण रे । सुगण नर ।
 भाव सुणो अविनीत रा रे लाल* ॥ १ ॥
 पांच पांच साल दाणा सूप नें रे, मांग्या किते एक काल रे । सु० ।
 उभिया कण उछाले दीया रे, भोगवती गिल गई साल रे ॥ सु० भा० २ ॥
 रखिया जतन कर रखिया रे, रोहिणी कीवी बधोतर भरपूर रे ।
 ते तौ मुसरे मांग्यां सूपे दीया रे लाल, धुरली दोयां रो विगड्यो नूर रे ॥ ३ ॥
 सेठ च्यारां ने साच बोलाय ने रे, यांरा न्यातीला उर्मा आण रे ।
 सेठ सूप्यो कांम च्यारां भणी रे, यांरा गुण परिणामें जाण रे ॥ ४ ॥
 गोबर वासीदो उभिया भणी रे, भोगवती रसोइदार रे ।
 कोठार सूप्यो रखिया भणी रे लाल, रोहिणी नें सगलो घर वार रे ॥ ५ ॥
 उभिया भोगवती दुखणी थई रे, घरती मन माहिं रोस रे ।
 ते हेला निंदा पांमी लोक में रे लाल, पिण सुसरो हुवो निरदोप रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्युं गुर गण सूपे सुविनीत नें रे, ते छे रखिया नें रोहिणी समांन रे ।
 जब अविनीत दुख पारमें घणो रे लाल, उमिया भोगवती ज्युं जाण रे ॥ ७ ॥
 उमिया नें भोगवती दुखणी हुई रे, ते तों एकण भव मभार रे ।
 पिण अविनीत दुखियो हुसी घणो रे, तिणरो कहितां नावें पार रे ॥ ८ ॥
 उमिया भोगवती नें घर सूपियां रे, ते करें खजानो खुराब रे ।
 ज्युं अविनीत नें गण सूपियां रे, तो जाए टोलां री आब रे ॥ ९ ॥
 जिण टोलां में अविनीत छे रे, तिणसूं आछो कदेय म जाण रे ।
 तिणरी खप करने ठाम आणजो रे, नहीं तो परिहरो चतुर सुजाण रे ॥ १० ॥
 किण ही गाय दीधीं च्यार ब्राह्मणां भणी रे, ते वारे वारे दूहे ताय रे ।
 तिणनें चारे न नीरे लोभी थकां रे, म्हारे काले न दूजें आ गाय रे ॥ ११ ॥
 त्यारें मांहोमां लागो इसको रे, तिण सूं दुखे दुखे मूइ गाय रे ।
 ते फिट फिट हुवा ब्राह्मण लोक में रे, ते दिष्टंत अविनीत नें ओल्लाव रे ॥ १२ ॥
 गाय सारिखा आचारज मोटकां रे, दूध सारिखो दे ग्यान अमोल रे ।
 कुशिष्य मिल्या तो ब्राह्मण सारिखा रे, ते ग्यान तो लेवें दिल खोल रे ॥ १३ ॥
 आहार पांणी आदि वीयावच तणी रे, ए न करें सार संभाल रे ।
 एहवा अविनीतां रे वस गुर पड्या रे, त्यां पिण दुखे दुखे कीयो काल रे ॥ १४ ॥
 ब्राह्मण तो फिट फिट हुवा घणां रे, ते- तों एकण भव मभार रे ।
 तो गुर रा अविनीत रो कहियो किसूं रे, तिणरो भव भव हुसी विगाड रे ॥ १५ ॥
 ज्यारे सिखां रो लोभ लालच नहीं रे, ते तो दूर तजें अविनीत रे ।
 ते गरग आचारज सारिखा रे, गया जमारो जीत रे ॥ १६ ॥
 गरग आचारज नें मिल्या रे, पांचसो शिष्य अविनीत रे ।
 ते गुर वचनें उलटा पड्या रे, हिवें सुणजो त्यारी रीत रे ॥ १७ ॥
 गुर नें रोग उपना थकां रे, पडियो ओषधादिक रो काम रे ।
 अविनीत मेल्या जाये नहीं रे, ते तों जुजा जुवा बोलें आंम रे ॥ १८ ॥
 एक कहें मोंनें नही ओलखो रे, बीजों कहें न देसी मोय रे ।
 तीजी कहें घरे हुसी नहीं रे, चौथो कहे मेलो थें ओर जोय रे ॥ १९ ॥
 केइ सुण सुण उत्तर दे नहीं रे, मून सामे कपट सहीत रे ।
 केइ अलगा जाय बेसैं गुर थकी रे, कार्य करवा सूं डरिया अविनीत रे ॥ २० ॥
 केइ राय बेठियां री परें मानता रे, केइ बतलायां मुख दे विगाड रे ।
 एहवा अविनीतां ऊपरे रे, गुर खेद पाय्या तिणवार रे ॥ २१ ॥
 म्हे दिख्या दे सूतर भणाविया रे, भात पांणी सूं पोख्या अविनीत रे ।
 मारे काम न आया दिन आजरे रे लाल, यां लीचीं पंखियां वाली रीत रे ॥ २२ ॥

विनीत अविनीत री चौपई : ढाल ४

पंखी इंडा पाल मोटा करे रे, पछें उड जाये आयां पांख रे।
 ज्यू ए अविनीत भण भण विगडिया रे, म्हारी मूल न माने सांक रे ॥ २३ ॥
 सीदावें छे म्हारी आतमा रे, या अविनीतां रे परसंग रे।
 इहलोक परलोक मांहरो रे, रखे विगड जाये यारें संग रे ॥ २४ ॥
 एहवा शिष्य छे मांहरा रे, गलियार गवा ज्यू अविनीत रे।
 त्यानें हूर तजे अलमो रहे रे, सुघ संयम पालू हूडी रीत रे ॥ २५ ॥
 छोड्या पांचसो अविनीत नॅ रे, आण्यो मन संतोष रे।
 करणी करे कर्म काट नॅ रे, पहुंता अविचल मोख रे ॥ २६ ॥
 ज्यू अविनीत ने छोड्यां थकां रे, ग्यांनादिक गुण वधता जाण रे।
 मिट जोय कलेश कदागरो रे लाल, त्यानें नेडी हुसी निरवांण रे ॥ २७ ॥
 केइ अविनीत नरके गया रे, केइ जाय पड्या छे निगोद रे।
 आप छादे ऊंधी अकल सू रे लाल, गमाय नॅ समकित बोध रे ॥ २८ ॥
 अविनीत मे अवगुण घणा रे, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
 पिण इण अनुसारें अनेक छे रे, ते बुधवंत देसी ब्ताय रे ॥ २९ ॥
 अविनीत रा भाव सांभले रे, घणो हरख पामें नरनार।
 केइ भारी करमा उलटा पडे रे, त्यारे घट माहे घोर अघार रे ॥ ३० ॥

बाल : ५

दुहा

केह अविनीत एकल फिरे, विटल हुआ बेका।
 ने बीठा निरलज लोक में, त्पारो विगड गयो जमवार ॥ १ ॥
 निप एकल नूं अविनीत बुरो, साथं ग गन मंग।
 ने स्वामत्रोही सेवग जिस्तो, न डरे करलें अन्वय ॥ २ ॥
 दुमनो चाकर दुसमग सारिखो, ते प्रसिद्ध लोक बरीत।
 ज्यूं छित्री थकों टोलां माहें रहें, ते आछो नहीं अविनीत ॥ ३ ॥
 ओ भेलो रहें कपटी थकों, ते करे घगी नरमाप।
 छल बल खेहें चोर ज्यूं, करें बूझ रो उजाय ॥ ४ ॥
 तिगरी चरचा उपदेज छे अति बुरो, ते फाडा नोडा रें वाम।
 अभिमानी अविनीत री रीत नें, कहि बजाऊं ताम ॥ ५ ॥

बाल

[तिरा धन अरुडीठे र]

अविनीत	समझावे	तेहने	ए.	आपरो	कर	गये	माम।
ओगं	नूं	करें	ओपरो	रे.	तिगरो	आगे	बन नही टाम के।
					अविनीत	एहवा	ए* ॥ १ ॥
ओर	मानां	रा काहें	गृहस्थ	खूंचगा	ए.	तिग	नूं बात करे दिल गोन।
अनक	में	जाणें	आपरो	ए.	तिगने	मीगवे	बगना टोप के ॥ २ ॥
ओर	ओर	साथां	रा गुप	करें	ए	तो	अविनीत नूं मजा रे न जय।
निन	नूं	उन	माल	नैं	ए	तिगनें	ग्यांत चरचा न मीगार के ॥ ३ ॥
जो	ननगुर	आगे	समझिओ	ए.	ननगुर	नी	घनी छे समी।
तिगरे	ओगुन	नीपजे	ए.	जो	आन	मिं	अविनीत ॥ ४ ॥
तिगने	आज डेज	बोल	पूछ	ने	ए.	तिगरी	समझिन छे रे वाम।
आरो	पगट	करे	ए.	जो	नरना	टोप	मीगार ॥ ५ ॥
जो	बगना	बोल	मीलाय	नैं	ए.	उन	बोके अविनीत ॥ ६ ॥
तिं	हुन	छे	समझति	ए.	तिगरे	मन	मने मीपी मीप ॥ ७ ॥
ने	ने	रन	अवमान	आते	ए.	मान	उजाय ॥ ८ ॥
ने	आन	गामना	ए.	तिग	न	जिग	तिग मने वाम ॥ ९ ॥

* एह अविनीत अविनीत गयो के जन्म में है।

तिणनें आप तणो करें रागियो ए, शंका ओरां - री घाल ।
 अभिमांनी अविनीत - री ए, एहवी छे उंची - चाल ॥ ८ ॥
 कोइ गुर गुर भायां आगें समभियो ए, तिण व्रत लीया तिण पास ।
 चांदें त्यांरें नांम ले ए, जब अविनीत पामे उदास ॥ ९ ॥
 अविनीत रो नांम लेवां दे नही ए, तो तिण सूं राखें घेष ।
 भूखो घणो नाम रो ए, तिण पहिर विगाड्यो मेव ॥ १० ॥
 कोइ विनीत आगे व्रत आदरे ए, तो विनीत बोले एम ।
 म्हारें सो गुर थांहरे रे, हिवें अविनीत बोलें केम ॥ ११ ॥
 जो अविनीत आगे व्रत आदरे ए, तो उन ले गुर रो नांम ।
 पोतेंइ गुर ठेहरे ए, ते पिण मान बडाई कांम ॥ १२ ॥
 विनीत सीखावे करणी वंदणा ए, तो घुर सूं ले गुर रो नांम ।
 अविनीत सीखावता ए, ते तो आपरो नांम ले तांम ॥ १३ ॥
 विनीत तणा समभाविा ए, साल दाल ज्यूं मेला होय जाय ।
 अविनीत रा समभाविा ए, ते कोकला ज्यूं कानी थाय ॥ १४ ॥
 समभाया विनीत अविनीत रा ए, त्यामे फेर कितोयक होय ।
 ज्यूं ताबडो नें छांहडी ए, इतरो अन्तर जोय ॥ १५ ॥
 कोइ अविनीत आगे समभियो ए, पिण ग्यान रो होय गराग ।
 को एक हुवें समकती ए, नही लागो अविनीत रो दाग ॥ १६ ॥
 कोइ कंठ कलाघर साथ जी ए, ते तों करे घणो उपगार ।
 हेत नें जुगत करी ए, समभावे नर नार ।
 उपगारी साथ एहवा ए ॥ १७ ॥
 केयां ने साथ पणो अदरावतां ए, केयां नें भ्रावक व्रत दराय ।
 केया ने करे समकती ए, नवतत्व निरणो कराय ॥ १८ ॥
 केयां ने जिण धर्म सू सनमुख करें ए, तिणसूं दान देवें निरदोख ।
 संसार परित्त करे ए, तिणसू पामें अविचल मोख ॥ १९ ॥
 केइ दयासत सील आदरे ए, केइ तप कर करम दें तोड ।
 ते पिण सुण्या सांभल्यां ए, वले पामे आणंद कोड ॥ २० ॥
 केइ सुण सुण ने सुलभ पडे ए, घणो हरप पामें भवि जीव ।
 उपदेश सुणिया थकां ए, घणा जीव दे मुगत री नीव ॥ २१ ॥
 ते तों जिण मारग करे दीपतो ए, धर्म कथा रे सजोग ।
 महिमा फेले अतिघणी ए, त्यांने धन धन करे बहुलोग ॥ २२ ॥
 अविनीत सुणे तो मुंह मचकोड ने ए, करे हासो मतकरी ठेक ।
 कहे न्हें सगला देखिया ए, समकती न दीठो एक ॥ २३ ॥

पेला रा गुण सहिवा दोहिला ए, तिण सूं ऊंओ बोलें अविनीत ।
 करें घणी इरखा ए, तिणमें होसी घणी रे कुपीत ॥ २४ ॥
 तिणनें चतुर विचक्षण अटकले ए, ए गुर भायां रो अविनीत ।
 ओलख ने परहरे ए, राखें सतगुर री परतीत ॥ २५ ॥
 कोइ अविनीत आगें समभियो ए, जो उ राखें उणरी परतीत ।
 ओरां री नही आसता ए, तो उणरी पिण आहिज रीत ॥ २६ ॥
 अविनीत समभायो तेहनें ए, जो उ मानें अविनीत री वात ।
 ओरां सूं रहे ओपरो ए, तिणरे माहें रह्यो मिथ्यात ॥ २७ ॥
 अविनीत नें अविनीत श्रावक मिले ए, ते पामें घणो मन हरख ।
 ज्यूं डाकण राजी हुवे ए, चढवा नें मिलिया जरख ॥ २८ ॥
 डाकण जरख चढी फिरें ए, ज्यूं अविनीत अविनीत रे साथ ।
 डाकण मारें मिनष नें ए, ज्यूं ओ करें समकत री घात ॥ २९ ॥
 डाकण चोर राजा तणी ए, तिणनें राजा मारें तो एक बार ।
 अविनीत चोर जिण तणो ए, ते भव भव में खासी मार ॥ ३० ॥
 केइ काछ लपटी कुशिलिया ए, ते न गिणे जात कुजात ।
 गृद्धि घणा रूप रा ए, नीच रे घरे जाये साख्यात ॥ ३१ ॥
 ते फिट फिट हुवे सांगली न्यात में ए, बले राजा लेवे डंड ।
 कुजरबी बणे घणी ए, हुवें देश विवेश में भड ॥ ३२ ॥
 ए काछ लपटी री ओपमां ए, अविनीत नें दीर्घी इम जाण ।
 गिरधी घणो खाण रो ए, तिणसूं विकलां नें मूडे ताण ॥ ३३ ॥
 ओर आगे विकलाइ कर सकें नहां ए, तिणसूं चेला री भूख अतंत ।
 सके नहीं दोष सूं ए, ते कुण कुण करें बिरतंत ॥ ३४ ॥
 पेला रो शिष्य फटावतो ए, ओ न करे जेज लिगार ।
 को एक आए मिले ए, तो लेजाये घाडोपाड ॥ ३५ ॥
 पेला रो शिष्य फाड आपणो करे ए, तिणनें भारी प्रायश्चित्त आय ।
 ते पिण सूमें नही ए, तिणरे लग रहि चेला री चाय ॥ ३६ ॥
 कोइ अजोग अविनीत गिरधी घणो ए, तिणरी परतीत नही रे लिगार ।
 इसडो इ शिष्य सुंपियां ए, करवा ने होय जाय त्यार ॥ ३७ ॥
 विकल नें शिष्य पणे आदरे ए, ते तों असिमांनी के अविनीत ।
 कें गिरधी छें आहार रो ए, त्यांरी किम आवें परतीत ॥ ३८ ॥
 उणनें विकल अजोग जाणया पछें ए, तिणनें चेलो करें मत्तहीण ।
 निरलज सके नही ए, ते तो करम बांचण परवीण ॥ ३९ ॥

ज्यांरे चेला री तृष्णा अति घणी ए, त्यांरा अधिर रहे परिणाम ।
चरित नें आराधणो ए, तिणरो छें काठो काम ॥ ४० ॥

ढलल : ६

दुहल

ँ अढलनलत ढलव ओलुगलवलडु, इडलहलल सलडुनल ऑडड ।
 वले शुवलक शुवलकल तडुल, तलडलहलल करऑु डललुऑुग ॥ १ ॥
 डुडक गृहसुथ अऑुग ऑु, शुवलक शुवलकल तलडु वरलड ।
 ते अढलनलत घुगल सलवुल तगुल, सकु नहुल करऑु अलुथलड ॥ २ ॥
 सुथलनु वलनु डुड डुडु नहुल, डुरलल अढलनु नु अडुडलडलन ।
 वलतलतलऑु करु ऑुन वडु डु, वले कुड वडुड रल सुलन ॥ ३ ॥
 ते करु सलवुल रल वलडलतलतल, वलु वुलुल घुगल वुडडुरलत ।
 सुथलरल ओगुन गुरहुल ऑु अलतडु, अतलहुल घुगल अढलनलत ॥ ॡ ॥
 ँहुवल अढलनलतल डु अलवगुण वडुगु, कलहुतल नलव डुलर ।
 नलग थुडुड नल डुरलत वलु, ते सुगुऑु ऑुल वलुडलड ॥ ॡ ॥

ढलल


[डुन करु कलल डुडु वलरडु]

कुडु अढलनलत शुवलक शुवलकल, सकु नहुल वलडुतल कडु रल ।
 करु वडु वुडुलनु कलडुगलरु, नहुल उललुथु वलनु डुडु वडु डु रल ।
 कुडु अढलनलत शुवलक ँहुवल ॥ १ ॥
 ते सलव सलवडुडुल रल नलग करु, अलवगुण वुले वलडुरलत रल ।
 ते सुनु करलडु गुरहसुथ नु, सुथलरल डुलल डुडु डुडु डुरलत रल ॥ २ ॥
 ते सुनु रल सकुल रल डुडुललु, कुरलनु वलव वलडु नलकलल रल ।
 ऑु डुरलतल रललु ँहुवल अऑुग रल, ते वलव अलडुडु कलु डुलल रल ॥ ३ ॥
 उलवल सुनु वुडुल अढलनलत रल, ते सरुडुडुल हुवे सडुडुडु नलस रल ।
 ँहुवल कुडुव वलुगुल डुरल करु, अललुवण करु गुर डुडु रल ॥ ॡ ॥
 उग वहुल ते सडुलु वहु गुर कलु, गुडुडु नहुल रललु ललललर रल ।
 नहुल कलुडुल तु सलुथ डुडुल रहु, ते डुडुडुडु करुडुडु वलललर रल ॥ ॡ ॥
 वलत अढलनलत रल डुडुलनलडु, उगरे कुग कुग अलवगुण थलडु रल ।
 उलतल ऑुडु सलवुल रल अलसतल, नुव वडुगुल डुडु कुरलुडु न ऑुडु रल ॥ ६ ॥
 वलन डुडुल डुगुल नलव डुडुल सु, असणलडुडु वुडुल अलललर रल ।
 सकुल सलहुत वुहुलरलवलडु, कलडु करु डुरलत सलसलर रल ॥ ७ ॥

हुलास न आवे साधु देखियां, अनेक गुणां री पडें हांण रे ।
 दग्ध बीज दाधा रीगा हुवे, तिणरी संगत रा एकल जांण रे ॥ ८ ॥
 जो उ संस भागण सूं डरतो थको, नहीं काढे तिणरो निकाल रे ।
 तो उ भमण करे इण संसार में, ज्यूं अरट तणी घड माल रे ॥ ९ ॥
 संस दराय नें अवगुण कहे, काढण न दे निकाल रे ।
 एहवा अविनीत अजोग ने, बुचवंत जांण देसी टाल रे ॥ १० ॥
 कोइ अविनीत हुवे साधु साधवी, तिण सूं मिलें मूढ जाय रे ।
 ओ अणहंता अवगुण कहे तिके, धार राखे मन मांय रे ॥ ११ ॥
 ते गुर कने आय कहे नहीं, अविनीत रो न करें उचाड रे ।
 वले ओगुण बोलावण कारणे, तिण जनम कीयों छे खुवार रे ॥ १२ ॥
 उ साच माने अविनीत रो, वले तिणरी करें पखपात रे ।
 सुध साधां री निंदा करतो फिरें, तिणरे न मिथ्यो मूल मिथ्यात रे ॥ १३ ॥
 अविनीत नरमाइ करें उण कने, वले बोलें मीठा मीठा वेंण रे ।
 करे खुसामदी तेहनी, रोवे घणो भर भर नेंण रे ॥ १४ ॥
 पछें अवगुण वोलें ओ गुर तणा, केइ एहवा छें दुष्ट अविनीत रे ।
 गरीब होय आपो छिप्राय दे, तिणरी मूरख माने परतीत रे ॥ १५ ॥
 जो साच मानें अविनीत रो, घणां री न मानें परतीत रे ।
 पखपात करे अविनीत री, ते चिहंगति में होसी फजीत रे ॥ १६ ॥
 अविनीत नरमाइ करे घणी, तिणरी वात राखें सर्व दाव रे ।
 तिण ने साध लेखव नें विनों करें, तिणरी पिण जावसी आव रे ॥ १७ ॥
 आप सूं आय मिले तेहना, ओगुण दे सर्व ढांक रे ।
 रहितो जांणें आप सूं ओपरो, तो उणने आल देतो नांणे सांक रे ॥ १८ ॥
 ए राग नें धेष रो घालियो, कर रह्यो कूडी पखपात रे ।
 एहवा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूरख मानसी वात रे ॥ १९ ॥
 एहवा जनम कदापरी अजोग सूं, गुञ्ज करे मतिहीण रे ।
 कर्म बंधे उणरी संगत कीया, तिणनें दूर तजें परवीण रे ॥ २० ॥
 कोइ अविनीत अजोग साधु तिण कने, लीया श्रावक व्रत पचखांण रे ।
 वले सीख्यो सभाय बोल थोकडा, पिण तिणरी न कीवी पिछांण रे ॥ २१ ॥
 जो उ निंदा करे सुध साध री, तो उ मान लेवे ततकाल रे ।
 उणनें श्रद्धे सत्यवादी भोलो थको, वले संकतो नहीं काढे निकाल रे ॥ २२ ॥
 अविनीत ओगुण कहे ओर नां, जो जांण राखे घट मांय रे ।
 पिण कोइक उणरा ओगुण कहे, तो कह दे उ तिण कने जाय रे ॥ २३ ॥

ते भणियां नें वरत लीयां तणी, ए कूडी करे पखपात रे।
 ओ आछो जांगे छे अविनीत नें, ते तो निरवेई वूडो साख्यात रे ॥ २४ ॥
 केइ एइवा छे थावक थावका, वले लड पडे काढ्यां निकाले रे।
 ते तो राम नें घेप माहें कल्या, ते निफल गमावे छे काल रे ॥ २५ ॥
 वले गृहस्थावास माहें थकां, उगरे स्वारथ पूगो छे एक रे।
 तिणने साचो करवा भणी, तांण करें मूढ अनेक रे ॥ २६ ॥
 एक स्वारथ पूगो ओ आपणो, तिण सूं इस राखें मन मांय रे।
 तिण साचा नें भूठो करवा भणी, करे ओ अनेक उपाय रे ॥ २७ ॥
 उगरा गुण कीरत जग सांभले, तो लागे अर्भितर लाय रे।
 तिणरा अणहुंता ओगुण परगट करें, गुण गुण दे रे उडाय रे ॥ २८ ॥
 वले छल छिद्र जोवतो रहे, सदा रहे दुष्ट परिणाम रे।
 उगरी आसता उत्तारण खप करे, यूंही जनम गमावे वेकाम रे ॥ २९ ॥
 ए दोष थालोयां विनां मरे, ते मरणो छे सत्य सहीत रे।
 पछे पाप उदें हुवां तेहने, भव भव होसी कुपीत रे ॥ ३० ॥
 जिण उपर घेप हुवे तेहनों, छिद्र जोवें दिन रात रे।
 उगरा दोष अणहुंताइ कहें गुर कनें, करें मन भांगण तणी वात रे ॥ ३१ ॥
 साधु कहे दोष लागो नहीं, ओ कहे लागो दोष साख्यात रे।
 डंड दो एहनें निसंक सूं, तिणमें कूड नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 साधु कहें डंड लेवूं नहीं, जब गुर बोल्या छे आम रे।
 डंड ले नें संका काढो एहनीं, ते तों भगडो भांजण काम रे ॥ ३३ ॥
 उणनें डंड दीयो गुर समभाय नें, वले केतव न राख्यो लिगार रे।
 डंड दिरायो तिणने कहे, ओर नें नहीं कहियो लिगार रे ॥ ३४ ॥
 जो कह्यो तो तोनें भूठो जांग खां, वले जांग लेखां थारो घेल रे।
 एहवी कीषीं छें थापना, ते सर्व ग्यांनी रह्या देख रे ॥ ३५ ॥
 तिण अंतर द्वेष हुवे तेहनों, पिण सूं कहां विण केम रहिवाय रे।
 उ कहे छानें छानें लोकां कनें, सूंस दराय दराय रे ॥ ३६ ॥
 पछें जाल देवे मन मानियो, वले वोळें घणो विपरीत रे।
 वेंर जाग्यो तिण उपरें, तिणरी किण विच आवे परतीत रे ॥ ३७ ॥
 उगरी वात चालें तो पडती कहे, घणी निदा करे परपूठ रे।
 उणनें चतुर हुंता त्यां जाणें लीयो, ओ द्वेष वस बोले छे भूठ रे ॥ ३८ ॥
 छद्मस्थ एहनांण सूं अटकल्यो, ओ अजोग घणो अविनीत रे।
 कदा साच कहे पिण तेहनीं, पूरी नावें परतीत रे ॥ ३९ ॥

उणरो वचन न माने तिण ऊमरे, क्रोध करे मूंह दे विगाड रे।
उण लारे बोल्या हरषित हुवे, तो घिग घिग तिणरो जमवार रे ॥ ४० ॥
वले आपो जणावे भूठो थकीं, वले भूठो दरायो छें डंड रे।
एहवा अविनीत अजोग छे, ते चिहुंगति में होसी भंड रे ॥ ४१ ॥



ढाल : ७

ढुहा

कूडा कूडा आल सांघा रे दीयां, महामोहणी करम वंघाय ।
 समकित्त वोध गमाय नें, पडे नरक निगोद में जाय ॥ १ ॥
 तिहां छेदन भेदन पामें घणी, कहितां नावें पार ।
 उतक्रुष्ट अनंता भव करे, तिहां खाअें अनंती मार ॥ २ ॥
 केइ खाअें श्रावक घर तणो, केयक मागे खाय ।
 पिण अविनीत पणो छूटे नही, तो गरज सरे नही कांय ॥ ३ ॥
 केइ पेढी जमावे आपणी, मागे नें ल्यावे आहार ।
 त्यां सूं विनों करणो छे दोहिलो, छोडे नें गरव अहंकार ॥ ४ ॥
 पिण सगला नही छे सारिसा, सुविनीत नें अविनीत ।
 त्यांनैं जथातथ परगट करूं, त्त्यारी सुणजो भवियण रीत ॥ ५ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुरें]

ज्यांरे मागे नें खावणो पारको, त्यांरे श्रद्धा रो कठिन छे कामी रे ।
 वले मांन वडाइ रा भूखा थकां, त्यांनैं न गमें साधां रा गुण प्रांमो रे ।
 केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
 जो लोक न देवे खावा पहिरवा, ऊंचो हाथ न करे त्यांनैं देखो रे ।
 वले आदर सनमान देवें नही, तो साधां उपर करे घेलो रे ॥के०२॥
 साध साधवियां ने दीठां थकां, उठे अभितर आलो रे ।
 वले पेट रे कारण पापिया, डरे नही देता भालो रे ॥ ३ ॥
 म्हाने दीधां में अविरत कहे, तो म्है उठाय दां यांरी परतीतो रे ।
 तिणसूं लोकां रा मन भांगता थकां, वोलें घणा विपरीतो रे ॥ ४ ॥
 साधां री छे लोकां में आसता, तिणसूं नही छे म्हारो आयो रे ।
 आध विना वेहरासी म्हाने किण विधें, यांनैं पेट भरण रो सोच लागो रे ॥ ५ ॥
 त्यांनैं दीधां में पुन परुपियां, तो श्वान ज्यूं पूंछ हल्लायो रे ।
 वलं दरावे कर कर आमना, तो चांदे लुळ लुळ पायो रे ॥ ६ ॥
 केउ अविनीत हुवे साध साधवी, कदा गुर दे लोकां ने जतायो रे ।
 ते जनम कदागरी सांभले, तो तुरत कहदे तिण वने जायो रे ॥ ७ ॥

विनीत अविनीत री चौपई : ढाल ७

अविनीत नें तीखो करे घणो, विगट्या नें
 तिणरो मन भागे कूड कपट करी, टोलां माहे
 अविनीत ने पोगां चढाय ने, अवगुण बोले तिण पागो
 ते सुण सुण ने हरषत हुवे, ते तो वाघे करमा री रामां
 उ छांनो विगड्यो थो घणा दितां, पिण लोकां मे न पड्यो उघाडो रे।
 अविनीत सू एकठ कीयां पळे, प्रगट हुवो लोक मभारो रे ॥ १० ॥
 जो दोप लागो देखे साब नें, तो कहे देणो तिणनें एकंतो रे।
 जो उ मानें नही तो कहिणो गुर कने, ते श्रावक छे वुद्धिवंतो रे।

प्रायश्चित्तराय नें सुच करे,
 ते तां श्रावक गिरवा गमीर छे,
 उगरे मूढे तो दोष कहे नही,
 ओर लोकां आगें कहतो फिरे,
 वले साधां ने आय वंदणा करे,
 त्यांने श्रावक श्रावका म जाणजो,
 तिण श्री जिण घरम न ओलख्यो,
 आप छ्त्रदे माठी मत उपजे,
 कोइ साप पड्यो थो उजाड में,
 तिण सर्प री अणुकंपा आण नें,

ते सर्प सचेत थयां पळे,
 जो उ लूठो हुवे तो उणनें दाव दे,
 सर्प सारिखो अविनीत कोइ मानवी,
 त्यांने समकित चारित पमाड ने,
 एहवो उपगार कीयो तिको,
 वले उलटा अवगुण बोलें तेहनां,

आहार पांणी कपडादिक कारणे,
 इणने उपरलो हुवे तो दावे डंड दे,
 सर्प ने मिश्री दूध पायां पळे,
 ज्यूं ओ समकित चारित लीया पळे,
 वले खाणा पीणा रो हुवो लोलपी,
 छेडवियां सू साहां मडे,

सुविनीत श्रावक
 पिण न कहे ओरां रे पासो रे।
 त्यांने वीर वखाण्या तायां
 उगरा गुर नें पिण न कहे कण
 तिणरी परतीत किण विच
 साववियां ने न वादे
 ते तां मूढ मति छे
 वले भण भण करे
 तिणने लागी नही गुर
 चेत नही सुब
 मिश्री घाले नें
 भाव सुणो
 आडो फिरियो
 काचो हुवे तो
 एकल फिरे
 कीचो मोटो
 ततकाल
 उणरे सर्प
 केइ

ते पिण
 आषो
 डक
 हुवो

तिणने दूर करे तो दुसमण थको, बोलें घणो विपरीतो रे ।
 असाध परूपे सगला साध ने, साच बोलण री नही नीतो रे ॥ २३ ॥
 बले प्रायश्चित्त देने मांहे लिये, तो मांहे आवे ततकालो रे ।
 इसडा अजोग अविनीतरो, साच मानें अग्यांनी वालो रे ॥ २४ ॥
 त्यांने भागल असाध परूपिया, त्यामें प्रायश्चित्त लेई मांहे आवे रे ।
 कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिणने बुधवंत मूढे न लगावे रे ॥ २५ ॥
 सुगरा सांप ने दूध पायां थकां, तो उ करे पाछो उपगारो रे ।
 तिणने धन देई ने धनवंत करे, बले दीठां हुवे हरख अपारो रे ॥ २६ ॥
 ज्यूं कोई आप छादे थो एकलो, सरल परिणांमी ने सुध रीतो रे ।
 तिणने समभाय ने संजम दीयो, ते आग्या पाले रूडी रीतो रे ॥ २७ ॥
 कीधो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काजे सूपे रे ।
 त्जारो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व काम मे घोरी ज्यूं जूपे रे ॥ २८ ॥
 तिणने समकित्त ने संजम वेहूं, रुचिया अभितर पूरो रे ।
 ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रूंध ने, पाछो उपगार करण ने सूरु रे ॥ २९ ॥
 बले गामां नगरा फिरता थका, सदा काल करे गुण ग्रामा रे ।
 ते सुविनीत गुण ग्राही आतमा, त्यांने वीर बलाण्या तांमो रे ॥ ३० ॥
 ए भाव कह्या अविनीत रा, सांभल ने नरनारो रे ।
 सतगुर रो विनो करो, तो पामो भव जल पारो रे ॥ ३१ ॥



दुहा

ढाल : ८

ज्यांरी विनेवंत छे आतमा, ते हलु करमी छे जीव ।
 ते विनो करण उद्यमी घणा, त्यां दीधी मुगत री नींव ॥ १ ॥
 ते विनो करे सत गुर तणो, त्यारा गुणां री करे पिछाण ।
 भेषघारी भागल ने परहरे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २ ॥
 सतावीस गुणा सहित छे, तारण तिरण जिहाज ।
 एहवा गुरां रो विनों कीयां थकां, सीमे आतम काज ॥ ३ ॥
 भेषघारी भागल तणो, विनों कीयां बंवे कर्म रास ।
 धर्माचार्य सुध गुर तणो, विनों कीयां हुवे सुध गतिवास ॥ ४ ॥
 ते तो सर्व सावळ तज नीकल्या, नही पाप करण रो आगार ।
 विनो करणो कह्यो छे वीर तेहनों, ते सूतर में विस्तार ॥ ५ ॥
 त्यांरो विनों करणो छे किण विघे, बले करणो कितोयक काल ।
 त्यारी आग्या पालणी किण विघे, ते सुणजो सूतर संभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[२ जीव मोह अशुकम्पा न आस्थिये]

पालें गुर री निरंतर आगना, कने राख्यां हुवे हरख अपार जी ।
 बले वरते गुर री अंग चेष्टा, जिण सफल कीयो अवतार जी ।
 श्री वीर बलाण्यो विनीत ने* ॥ १ ॥
 तिण अमितर छोडी कषाय नें, नही मुख तणो लबाल जी ।
 एहवा गुर समीप रहां थकां, छता गुण दीपे रसाल जी ॥ श्री २ ॥
 तिणने करडे काठे वचने करी, गुर सीख देवे किणवार जी ।
 तो उ खिम्या करे धर्म जाण ने, पिण न करे क्रोध लिगार जी ॥ ३ ॥
 सुकुमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखावण मोय जी ।
 सुविनीत हुवे ते इम चितवे, मोने हेत रो कारण होय जी ॥ ४ ॥
 कदा क्रोध करे करमा वसे, तो ओलवे नहीं राखे विनीत जी ।
 आलोवे ने प्रायश्चित्त ले गुर कने, नही विचरे सल्य सहीत जी ॥ ५ ॥
 भद्र किलाणकारी घोडे चढ्या, असवार २ हरष आणंद जी ।
 ज्यूं सीख दीयां सुविनीत नें, गुर पामें परमानन्द जी ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विनीत घोड़े आसीन जात रो, चादखी बगी रे हाथ देख जी।
 मन मनतो चले असवार रे, चादखानी न खाए एक जी ॥ ७ ॥
 इन दृष्टान्ते मुविनीत नें ओख्खो, ते तौ चले गुर अनुभार जी।
 चादखा रूप वचन लागीं दिनां, देखी बखें गुर रो आहार जी ॥ ८ ॥
 ते तौ नन वचन काथा करी, चित्त चोले हडे परिनाम जी।
 भारवाह नां बोरी नी परे, जिन कहाँ करे गुर काम जी ॥ ९ ॥
 जे जे गुर नें वारज ऊरनां, जव मुविनीत रो आहार जी।
 एहवा गुर भगता विनीत रो, जव कौरती बोले संसार जी ॥ १० ॥
 गुर नां चित्त केडे चाख्खो, कार्य करे किछं रहीत जी।
 कदा कौरी गुर हूवे आकरा, जिन प्रसन्न करे मुनिनीत जी ॥ ११ ॥
 कौब न चडावे गुर नें सर्वथा, मुविनीत गृनां रो नंदार जी।
 ते तौ घान न बाँछें गुर तगी, न हूवे छिद्र गबेगहार जी ॥ १२ ॥
 विनीत जागें गुर नें कोपिया, तो उपजावें परी परतीत जी।
 दोनूं हाथ जोडी गुर नें कहे, हूं कदेव न चारूं कुरीत जी ॥ १३ ॥
 विनीत बनी छे आतना, तिय संजन तर नूं सोव जी।
 जिन जन्म मुवाख्यो आनगो, वेहूं लोक में मुविदो होव जी ॥ १४ ॥
 दोनूं पासां बरोबर बेसैं नही, नहीं बेसैं पूठ अजाय जी।
 सायल नूं सायल संघटे नहीं, नहीं बेसैं फसारी पाय जी ॥ १५ ॥
 पग उर पग चडाय नें, गुर पावें नहीं बेसैं आय जी।
 बले ठानली मार बेसैं नहीं, जे आसन न बेसैं जय जी ॥ १६ ॥
 विनीत नें गुर बोलावियां, बेसैं नहीं रहे मून सान जी।
 आसन छोडी आय उमो रहे, मोनूं किरपा करी गुर आन जी ॥ १७ ॥
 आसन बेसैं न लेवे बांचगी, बांचगी लेवे रुडी रीत जी।
 सनमुद्ध आय बेसैं ऊरुड, दोनूं हाथ जोडी मुविनीत जी ॥ १८ ॥
 आहार पांगी कनडादिक भोगते, ते भिन गुर री आग्या सहीत जी।
 भिन्य भिन न करे जिन आगना, फाले जिन आसन री रीत जी ॥ १९ ॥
 बले उपवादिक नां जाचवो, इत्यादिक काम कनेक जी।
 बले देवो लेवो ओर साव नें, गुर आग्या दिग न करे एक जी ॥ २० ॥
 उपवास वेचदिक तर करे, करे रसादिक भंगहार जी।
 ते भिन न करे आगनां विदा, बले सच्छिगा संथार जी ॥ २१ ॥
 करे दगदच्च ओर साव री, ओर पावें बरते अर जी।
 ते भिन गुर आगनां हुवां, एहवीं जिन आसन री धान जी ॥ २२ ॥

अंसमात्र करणो करावणो, ते पिण आग्या लें सुविनीत जी ।
 सर्व कारज में लेणी आगनां, एह्वो बाधी छे अरिहंत रीत जी ॥ २३ ॥
 सुविनीत टोला मांहे रह्यां, ते तों सगलां ने गमतो होय जी ।
 ओर साबु साये मेल्यां थकां, तिणने पाछो न ठेले कोय जी ॥ २४ ॥
 आतमा दमें इंद्र्यां वस करे, उपजावे सार्वां नें परतीत जी ।
 वले लोक वतावें आंगुली, एह्वो काम न करे विनीत जी ॥ २५ ॥
 विनीत सू गुर प्रसन्न हुवे, तो आपे ग्यांन अमूल जी ।
 तिण सू शिव रमणी वेगी वरें, रहे साश्रत सुख में भूल जी ॥ २६ ॥
 अन्नहोत्री ब्राह्मण अन्न ने, नमस्कार करे हाथ जोड जी ।
 घृतादिक सीची ने मन्न भणे, तिणने वारावे मांन मोड जी ॥ २७ ॥
 इण दिष्टान्ते गुर ने अरावतां, केवली थयो शिष्य सुविनीत जी ।
 तो पिण सेवा भगत करे गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत जी ॥ २८ ॥
 राज मे हाथी घोडा विनीत छे, ते तो सुख पामें रूडी रीत जी ।
 नरनारी रिद्ध सम्पत् करी, सुखी दीसे छे सुविनीत जी ॥ २९ ॥
 वले सुखी दीसे देवी देवता, जगवत् मोटी रिद्ध पाय जी ।
 जावजीव लगे सुख भोगवे, लोक जस कीरति थाय जी ॥ ३० ॥
 ते पाच्छिल भव पुन्य वांध्या तिके, भोगवे उदे आयां आप जी ।
 पिण प्रतख दीसे लंक मे, जाणे विना तणो परताप जी ॥ ३१ ॥
 ज्यूं कोइ गुर ने रिभाव विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष जी ।
 तिणरा ग्यान दरसन चारित बधे, वेगो पामे अविचल मोख जी ॥ ३२ ॥
 केइ पेट भराइ कारणे, सीखे सिल्प कला विग्यान जी ।
 ते तो संसार ना गुर कने, ते पिण विनों करे मूंके मांन जी ॥ ३३ ॥
 इहलोक तणां अरथी थका, भणे राजादिक नां कुमार जी ।
 गुर करडा वचन कहे तेहने, देवे इडादिक परिहार जी ॥ ३४ ॥
 ते पिण तिण गुर नां पग पूज ने, देवें सतकार ने सनमांन जी ।
 वले घणा सतोषे तेहने, वले देवें प्रीतीदान जी ॥ ३५ ॥
 तो सिद्धांत भणावे तेहनी, विनेवत किम लोपे कार जी ।
 ते तो गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कीयो अवतार जी ॥ ३६ ॥
 इहलोक नां गुर नो विनो कीयां, कदा सीके इहलोक काज जी ।
 पिण सतगुर नो विनो कीयां, पामे मुगतपूरी नो राज जी ॥ ३७ ॥
 मूल ने खंभ थी वृक्ष उपजे, पछे साखा पडिसाखा वखाण जी ।
 पांन फूल फल रस नीपजे, ते उत्पत्ति सहु मूल री जाण जी ॥ ३८ ॥

इण दिष्टान्ते जिण धर्म विरख रे, विने रूपियो मूल वखाण जी ।
 समकित रूप थाणो तेहनें, धीरज रूपियो खंव पिछ्णण जी ॥ ३६ ॥
 जश रूप खंव विने वेद का, शील रूपियो गंध वखाण जी ।
 शुभ ध्यान रूपी छे कूपलां, पंच महाव्रत शाखा जाण जी ॥ ४० ॥
 प्रति शाखा ते पचीस भावनां, बहु गुण रूपियो छे फूल जी ।
 पंच संवर रूप फल तेहनें, दया रूपियो रस अमूल जी ॥ ४१ ॥
 मोष रूपियो बीज तिण फल ममे, एहवो धर्म विरख छे अखोम जी ।
 ते समदृष्टि रे हियो विराजतो, विने मूल सूं रहो सोम जी ॥ ४२ ॥
 ज्यूं विरख रो मूल सूकां थकां, शाखादिक सगला सूक जाय जी ।
 ज्यूं विने रूप मूल खिस गयां, सगलाइ गुण खय थाय जी ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाई नें टोलां तणा, गुण बोलें हूडी रीत जी ।
 लोक पिण गुण ग्राम करतां थकां, सुण सुण हरखे सुविनीत जी ॥ ४४ ॥
 शिष्य शिष्यणी मिले ओर साध नें, मिले उपवादिक अनेक जी ।
 बले कंठ कला देखी ओर नीं, विनीत तो हरखे बोध जी ॥ ४५ ॥
 किण ही साध रो न करे ईशको, सर्व साध नें हुवे हितकार जी ।
 एहवा सुविनीत री वंसावली, फेले तीनूइ लोक मभार जी ॥ ४६ ॥
 गमतो लायें तीरथ च्यार में, जिण शासन रो सिणपार जी ।
 एहवा सुविनीत पासे रह्यां, सीखावे विनो आचार जी ॥ ४७ ॥
 ज्यांरी जात माता री निरमली, पिता रो कूल छें निरदोष जी ।
 ते पिण लज्या कर सहीत छे, ते विनो कर लेसी मोख जी ॥ ४८ ॥
 ते पिण मोह कर्म पतलो पढ्यां, सुध रीत जाणें बुधवांन जी ।
 हाड मिंजा रंगी जिण धर्म सूं, तिणनें विनों करणो आसान जी ॥ ४९ ॥
 केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, मेध पहिरी करे कपटाय जी ।
 इहलोक तणा अरथी घणा, त्यां सूं विनो कीयो किम जाय जी ॥ ५० ॥
 अविनीत में अवगुण घणा, ते तों जाबक छोडे विनीत जी ।
 विनां रा गुण सगला आदरे, ते तों गया जयारो जीत जी ॥ ५१ ॥
 उत्तरावेन पेंहला अध्ययन में, दसविकालिक नवधें जंग जी ।
 बले ओर अनेक सिद्धांत मे, कीया विनीत रा वखाण जी ॥ ५२ ॥
 सतगुर तणा विनीत में, गुण भाख्या श्री भगवंत जी ।
 ते कोड जीभ्या कर वरणवे, पिण कहितां न आवे अंत जी ॥ ५३ ॥

ढलल : ६

दुहा

अविनीत रा भाव सांभले, अविनीत घणो दुख पाय ।
केइ कुगुर सुच बुच बाहिरा, ते पिण हरषत थाय ॥ १ ॥
विनीत तणा गुण सांभले, विनीत रे आणंद ओच्छ्राव ।
ते पिण कुगुर हरषत हुवे, त्यारे विनों करावण चाव ॥ २ ॥
ते तो विनो परुपे निसंक सू, मन में आणंद कोड ।
शिष्यां अपर हुकम चलावतां, कर कर मन रो जोड ॥ ३ ॥
ज्यांनं समभ, नहीं जिण धर्म री, सूतर री खवर न कांय ।
त्यांरो विनो करे मोला थकां, करे वूडण रो उपाय ॥ ४ ॥
एहवा कुगुरां ने वीर निषेधिया, तो ही विनों सुणी हरखंत ।
त्याने जयातथ परगट कहं, ते सुणजो कर खंत ॥ ५ ॥

ढलल

[ङाभ मूजादिक नी ङोरी]

विनां रा भाव सुण सुण गूजे, आपरा किरतब नहीं सुभे ।
ते तो व्रत विहूणा नागा, ते पिण विनों करावण आगा ॥ १ ॥
देखो कुगुर हीण आचारी, हुवा विनों करावण त्यारी ।
आपण किरतब नहीं देखे, विनों करावसी किण लेखे ॥ २ ॥
हसली नी देखी हाल, बुगली पिण काढी चाल ।
पिण बुगली सू चाल न आवे, तिणसूं हंसली उपर दुख पावे ॥ ३ ॥
एहवा कुगुर साधा नें देखी, ते पिण करवा लागा शेखी ।
आडम्बर कर विनों करावे, पिण आचार पाल्यो नहीं जावे ॥ ४ ॥
सुण कोयल रा टहुकारी, कां कां काग करे तिण वारी ।
सतियां रा सुण सोभागी, केइ कुसत्यां कुडवा लागी ॥ ५ ॥
काग बोले कुराले गाढे, पिण कोयल जेहवो शब्द न काढे ।
कुसती लजा करे किण वारे, सती रे तुले नावे लिगारे ॥ ६ ॥
काग कुसती जेहवा भेषधारी, ते तों विटल थया वेकारी ।
ठाला वादल व्युं थोथा गाजें, विनो करावता नहीं लाजे ॥ ७ ॥

गति गयवर की देखी श्वान, भूसवा लगा ऊचा कर कान ।
 ज्यूं सावां नें देखे भेपवारी, श्वान ज्यूं वोलें मूंह विगारी ॥ ८ ॥
 ते पिण विनो करावण भूखा, वले वोलें अग्यानी अचूका ।
 कने राखें सावु रो भेप, तिण सू वूडे लोक अनेक ॥ ९ ॥
 ते तो व्रत न पाले एक, तोही कर रह्या कूडी टेक ।
 वले चढ गया मांन रे छाजे, एहवा पिण लोक में गुर वाजे ॥ १० ॥
 विनो पक्षता तो गाजे, आचार वतावता लाजे ।
 त्यांमे दोखां रा छेह न पारा, त्यांरे चिहुं दिगि पडिया वधाग ॥ ११ ॥
 सीप सिबोटिया रा साथी, थेट रा मूलगा छे मिथ्याती ।
 कूडा कर रह्या पापड फेन, एहवा पांचमां आरा रा चैन ॥ १२ ॥
 वाध्या थांनक मिष्टाचारी, वले माया ममता धारी ।
 ते पिण नाम बरावे पूज, ते तो पूरा मूढ अबूज ॥ १३ ॥
 नहीं जिण शासन री ठीक, त्यां नरक ने कीवी नजीक ।
 एहवा ने पिण गुर कर पूजे, समकित विन संवली न सूमे ॥ १४ ॥
 त्यांरा मत मांहे मोटी भोलो, जाणे मड रह्यो गागी रोलो ।
 फेल्यो कूड कपट रो चालो, त्यांरो कुण काडे निकालो ॥ १५ ॥
 नव तूवा तेरे नेगदारो, तिण राज में पूरो अवारो ।
 ए पोपां वाई रो राज पिछांणो, ए तो दटांत लोकिक जाणो ॥ १६ ॥
 एहवो भेपवाख्यां रे अंधारो, ते तो फेल्यो लेक मभारो ।
 ठा ठा खाए लोकां रो माल, चिहुंगति में होसी हवाल ॥ १७ ॥
 ज्यांरा गुर छे भिष्ट आचारी, त्यांरें हुइ नरक नी त्यारी ।
 दुख में दुख पामे अथागा, कुगुर बांवां रा ए फल लागा ॥ १८ ॥
 कुगुर वादे पग झाल, मुख सूं करे लाल ने पाल ।
 वले सावां री निंदा ने सूरा, ते तो डूवसी मूरख पूरा ॥ १९ ॥
 एक सत गुर रो अविनीत, एक कुगुर रो सुविनीत ।
 ए दोनूं मारग गया भूल, रह्या पाप कर्म मे भूल ॥ २० ॥
 कुगुरा रा तो दोषण ढांके, सावां रे आल देतो न साके ।
 ते तो करे वूडण रो उपाय, भव भव मांहे दुखिया थाय ॥ २१ ॥
 सावा रा गुण सुणे मिथ्याती, के का री वल उठे छाती ।
 थो पिण छे वूडण रो उपाय, सेजे दलद्र लीयो वुलाय ॥ २२ ॥
 कुगुर बांघां सूं हुवे छे खुवारी, सुगुर हेल्यां हुवे अनंत संसारी ।
 कुगुर छोडे ने सतगुर वादे, ते तों शिवपुर सूं पीत सावे ॥ २३ ॥

कुगुर निषेध्या सुणे अविनीत, ऊंघा अर्थं करे विपरीत ।
 नही विनो करण री नीत, तिण सू वोले कपट सहीत ॥ ३४ ॥
 उण सूं विनों कीयो नही जावे, तिणसूं गुर ने कुगुर सरघावे ।
 आपणा दोष सगला ढाके, साघां सिर आल देतो न साके ॥ ३५ ॥
 ते तो गुर सू पिण नही गुदरे, त्यांरा कारज किण विष सुघरे ।
 तिण ने करे टोलां सू न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करे विगाडो ॥ ३६ ॥
 सगला साघां ने कहे असाब, वले करे घणो विषवाद ।
 सर्व साघां रो होय जाय बेरी, केइ एहवा छे अविनीत गेरी ॥ ३७ ॥
 तिणने लोक आरे करे नाही, तो उ प्राछित्त ले आवे मांही ।
 ज्यांने असाधु पळ्प्या था मुख सूं, त्यांरा बांदे पग मस्तक सूं ॥ ३८ ॥
 जो उ वले न चाले सूवो, तो उग ने कर देवे गुर जूदो ।
 जब अविनीत रे उवाइज रीत, त्यांरो कीया बोले विपरीत ॥ ३९ ॥
 लोका ने साघां सूं मिड्कावे, आप बुगल घ्यानी होय जावे ।
 वले कूड कपट रो चालो, आतमा ने लगावे कालो ॥ ३० ॥
 ओतो ओगुण काढे अनेक, बुववत न माने एक ।
 एहवा अविनीत छे गुर ब्रोही, तिण आतम पूरी बिगोई ॥ ३१ ॥
 जे माने अविनीत री वात, त्यांरे घट में आवे मिध्यात ।
 एहवा अविनीत अवगणगारा, त्यां सूं बुववंत रहसी न्यारा ॥ ३२ ॥
 इम सुण सुण ने नरनारी, छोडो कुगुर हीण आचारी ।
 अविनीत सू रहसी दूरा, ते तों परमेश्वर नां पूरा ॥ ३३ ॥
 विनीत सुण सुण पामें हरष, पडे अविनीत रे मन षडक ।
 ते तो रहे चोर ज्यूं राच, लेवे आपण ऊपर खांच ॥ ३४ ॥
 विनीत अविनीत रा अहेलाण, इम ओल्लख कीजो पिछांग ।
 रुडी रीत सू काढे नीकालो, अविनीत सूं दीजो टालो ॥ ३५ ॥
 विनां अविना रो ए विस्तार, कीघो खेरवा शहर मभार ।
 वत्तीसे वरष सवत अठारो, भादवा सुद छठ सुकरवारो ॥ ३६ ॥



रत्न : १५

विनीत अविनीत री ढाल

ढाल : १

दुहा

केइ अविनीत छे दुष्ट आतमा, ते सके नहीं करता अन्याय ।
त्यानें जथातथ प्रगट कर्हं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[समरू मन हरखे तेह]

छिद्रपेही छिद्रवारी राखे, कदे काम पडे जब कहे दाखें ।
तिणरे चारित पालण री नही नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १ ॥
ओर साषां ने दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहे तो निरापेखी ।
आ सुष साषां री छोडी नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ २ ॥
गुर री निंदा करे छाने छाने, तिण अविनीत री वात अविनीत मानें ।
ते बिहुंगति में होसी फजीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ३ ॥
छाने छाने टोलां में जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे ।
तिण संजम सहीत खोई परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ४ ॥
गुर सूं चेला रो मन फाडे, वले टोलां में मूरख भेद पाडे ।
कूड कपट कर कर बोले विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ५ ॥
सतगुर री वात देवे ठेली, अविनीत रो तुरत हुवे वेली ।
तिण छोडी सतगुर सूं प्रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ६ ॥
गुर ने वादे तिकबुत्ता रो पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओषटघाट घणी ।
वले खेले कपट दगा सहीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ७ ॥
जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष बांके, तूटां हेत देतो आल नहीं सांके ।
पछे मन मानें ज्यूं बोले नचीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ८ ॥
ते नागा निरलज्ज होय वेठा, त्याने बतलायां वचन बोलें घेठा ।
त्यारे संजम रूप खिस गई भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ९ ॥
पेला ने कुसावण रे कामो, पोते नाक काटे नें मिले साहूाँ ।
ज्यूं अविनीत री छे आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १० ॥
सुष साषां ने उत्थापण काजे, पोते असाव हुवतो पिण नही लाजे ।
त्यां जनम खोयो पिण वे रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ११ ॥
अविनीत साषां रा ओगुण गावे, ते तो भेष धारखां रे मन भावे ।
त्यारें लारे ए पिण गावें गीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १२ ॥

त्यां लाज सरम अलगी मेली, त्यांरा भेषवारी भागल बेली ।
 अविनीत नें यांरी एकहीज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १३ ॥
 अविनीत भण भण उलटो वूडे, कर कर अभिमान वेसें तूडे ।
 तिणरे विनो नरमाइ नही घट भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १४ ॥
 इसडा अविनीत जावक भूंडा, त्यारे केडे लगा ते पिण बूडा ।
 त्यांमें पिण हुसी घणी कुपीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १५ ॥
 अविनीत नें हाथ जोडी वादे, ते तों सात कर्म निश्चें बाधे ।
 तिणनें सतगुर री नही परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १६ ॥
 अविनीत रो वखांण सुणवा जावे, तिणरे मिथ्यात वेगो आवे ।
 तिणनें पिण कर देवे विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १७ ॥
 अविनीतां आगे करे समाई, तिणरे पिण जांणजो भोलाई ।
 तिण अविनीतां री नही जांणी रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १८ ॥
 अविनीतां सूं जे कोइ प्रीत बांधे, तिण धर्म न ओलखियो आंधे ।
 समकित जावण री आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १९ ॥



ढलल : २

दुहल

सलघ सलघवी सव नें, सतगुर नी ए सीख ।
अदर जो आछी तरे, चित्त नें रखे ठीक ॥ १ ॥

ढलल

[ढलम मूढलदिक नी छोरु]

गुर उभु सुकलवे तु उभु सूके, ओ पण अवसर नही चूके ।
गुर करलवे शिष्य नें संथारु, ते पण आग्यल न लुपे ललगरु ॥ १ ॥
शक्तल न हुवे तु कहे जुओी हलथ, म्हलरुी शक्तल नहीं सलमी नलथ ।
शक्तल हुवे तु आघु नही कलढं, आप कहु ते सलर उवर चलढूं ॥ २ ॥
एहुवल शिष्य गुर रल सुवलनीत, आगन्यल पलले इण रीत ।
ते पण जुवे ज्यलं लग जलण, गुर कु वचन करे परमलण ॥ ३ ॥
गुर पण अवसर कल जलण, ते पण एहुवी क्यलने करें तलण ।
सूस करलवे अवसर देख, कणलं सूं मूल न रखे घेख ॥ ॡ ॥
अपछंडल मे घणल छे दुष, छलंदु रूढ्यलं सूं पलमें मलष ।
उतरलधेन चुथल अधेन मभलरु, कुइ दुषवंत करज्यु वलचनरु ॥ ५ ॥
गुर ने शिष्य री उपजे अপরतीत, वलनलदिक में जलणें वलपरीत ।
जु उ शिष्य हुवे सुवलनीत, तु उपजलवे गुर ने परतीत ॥ ६ ॥
जणल जणल वुलं री गुर ने संक, ते संकल कलढें ने करें नलशंक ।
करडल करडल सूंस खलवे, गुर ने परतीत उपजलवे ॥ ७ ॥
सूंस कुषलई परतीत नलणे, सूंसलं नें पणल लुपतु जलणे ।
तु सूंस ललख दे करुे पलने, ते कणलं सूं न रखें छलने ॥ ८ ॥
हूं इण ललख्यल परमलणु हललूं, आगन्यलं लुप कदुे नही चललूं ।
जु शिष्य हुवे सुवलनीत, इम उपजलवे परतीत ॥ ९ ॥
सूंस ललखत री नलणे परतीत, आणें गुर ने घणु अপরतीत ।
तुही हलथ जुडे सुवलनीत, वलने सहलत वुले रुडी रीत ॥ १० ॥
थें म्हलरुी परतीत मूल न रखी, तु हलवें च्यलर तीरथ देउं सलखी ।
म्हलरुल सूंस कलगद में ललखलथ, च्यलर तीरथ नें देउं वंचलथ ॥ ११ ॥
हू चललूं इण ललख्यल परमलणु, कदल चूक में पडलडु जलणु ।
तु च्यलर तीरथ ने देजु जतलथ, मुने हेलें नलंदे आणे ठलथ ॥ १२ ॥

जो यारे कहे न चालूं सूघो, तो मोनें कर देजो गण सुं जूदो ।
 पिण मोसूं किरपा करो स्वामी नाथ, म्हारि मस्तक राखो हाथ ॥ १३ ॥
 हूं मरजादा नहीं चूकूं, आपरो शरणो नहीं मूकूं ।
 आपरो छे मोनें आघार, मोनें उतारो भव पार ॥ १४ ॥
 जब गुर कहे तूं बोले सूघो, हिवडं मूल न दीसें ऊंधो ।
 रखे हुवेला विस्वासघाती, बांवलिया रा बीज रो साथी ॥ १५ ॥
 बांवल बीज वाया पाणी पूगे, तो उ सुलां लीयाईज उगे ।
 बांवल बीज सुहालो थो आगे, हिवे ज्यूं बघें ज्यूं शूलां लगे ॥ १६ ॥
 ज्यूं तूं रहे छे गण मांय, घणो विनों करे छे ताय ।
 रखे साध साधुविया फारे, गुर सुं परिणाम उतारे ॥ १७ ॥
 पछे आल दे नीकलेला बारें, ओरां ने ले जावेला लारे ।
 पाछला नें परूपे असाध, करेला घणो विपवाद ॥ १८ ॥
 घणा जीवां रे घाले ला संका, लगावे ला मिथ्यात रो डंक ।
 ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखे खोटो ॥ १९ ॥
 आ पिण शंका छे थारी मोने, बारवार कहूं हिवे तोने ।
 आ परतीत उपजाव तू गाढी, करडा सुंसादिक काढी ॥ २० ॥
 जो तूं सरल छे नही अनाखी, तो तूं च्यार तीरथ दे साखी ।
 जो थारे रहिणो छे गण मांय, तो इण विघ परतीत उपजाय ॥ २१ ॥
 इम सामल नें सुविनीत, विने सहित बोले रुखी रीत ।
 आप कहो तिणने साखी देखं, आप कहो तिको सुंस लेऊं ॥ २२ ॥
 कदा कर्म जोगे पूडू न्यारो, तो ओरां ने न ले जाऊं लारो ।
 कोइ आफे आवे म्हारि लार, तिण सुं मेलो न कळूं आहार ॥ २३ ॥
 गण में रहूं निरदावे एकलो, किण सुं मिलें न बाधूं जिलो ।
 किणने रागी करे राखूं म्हारो, एहवो पिण न कळूं विगाडो ॥ २४ ॥
 साध साधवियां री वात, उतरती न कळूं तिल मात ।
 बले मांहोमां कलहो लागे, किणरी नही कहूं किण आगे ॥ २५ ॥
 इण विघ रहूं गण मभारो, किणरो ओमुण न बोळूं लिगारो ।
 एहवा सुंस करावो आप, च्यार तीरथ नें शाखी थाप ॥ २६ ॥
 कदा कर्म जोगे पूडू न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो ।
 ओ पिण सुंस करावो मेय, तिणरा साखी करो सहू कोय ॥ २७ ॥
 च्यार तीरथ नें दो थे जताय, मो छूटकरी न माने वाय ।
 याने ही दो सुंस कराय, पिण मोनें राखो गण माय ॥ २८ ॥

गुर नें उपनी जाणें अपरतीत, तो इम उपजावे परतीत ।
 ज्यारे मुगत जावा री नीत, गुर ने आरावे इण रीत ॥ २६ ॥
 जे समता रस में रह्या मूल, ते तो मरणो कर दें कबूल ।
 पिण गुर कुल वास्तो नहीं मूके, विनांदिक्क गुण सूं नहीं चूके ॥ ३० ॥
 सुविनीत गुर नें आरावे, ते आत्म कारज सावें ।
 विनों कर गुर नें रीम्रावे, ते मुगत तणा सुख पावे ॥ ३१ ॥



रत्न : १६

उरण री ढाल

ढाल : १

ढुहा

ढात ढिता सूं उरण किण विघ हुवे, सेठ सूं उरण हुवे केढ ।
वले गुर सूं उरण किण विघ हुवे, ते सुणजो घर ढेढ ॥ १ ॥

ढाल

[ङाढ ढूँजादिक नीं ङोरी]

ढात ढिता जनढ रा दातार, करे संसार नों उपगार ।
तिणने ढाले ढोसे रुडी रीत, त्यांरो कोयक हुवे सुविनीत ॥ १ ॥
त्यांने गढता ढोजन खवावे, गढता गेहुणा वस्तर ढेहरावे ।
ढीठी ढरदन सिनांन करावे, गढती सेज्या में जाय ढोढावे ॥ २ ॥
वले कावड ढाहे वेसाय, कावड खांधे लीयां फिरें ताय ।
घणो विनों करे जोडी हाथ, ते उरण हुवो नहीं तिलढात ॥ ३ ॥
ढाडतां रो जाणे उपगार, त्यांरो विनो करे वारुंवार ।
जाव जीव रहे आगन्यांकारी, तोही उरण न हुवे लिंगारी ॥ ५ ॥
इसडो ढाडतां ने हितकारो, जीव हुवो अनंती वारो ।
ढुगत जावा रो उपगार, तिण न कीयो ढूल लिंगार ॥ ५ ॥
ढात ढिता सूं उरण थावे, जो उ जिण घर्ढ त्यांने ढढावे ।
सढढाय ढेले ढुगत में ताय, ते ढा बाढ सूं उरण थाय ॥ ६ ॥
कोइ वलद्री दल्लिदर सहीत, घन धानादिक सूं रहीत ।
नीठ नीठ ढरे छे ढेट, तिणने राख्यो गुढासतो सेठ ॥ ७ ॥
वलद्री तिणने सेठ ववाख्यो, तिणरो दल्लिदर दूर निवाख्यो ।
तिणने कीघो रिघिवंत ढारी, सेठ इसडो हुवो उपगारी ॥ ८ ॥
कदे सेठ न्यारो कीयो ताय, जब ओ ओर सहर रह्यो जाय ।
तो ढिण सेठ री आगन्यां ढांय, त्यांरो नांढ घरावे ताय ॥ ९ ॥
वले लाखां कोडां ढामी आथ, हुवो घणा नरां नो नाय ।
तिणने गुढासता ढोहत कढावे, सगलां उढर हुकढ चलावें ॥ १० ॥
आढ हुवो घणा रो सेठ, तोही निज सेठ सूं वरते हेठ ।
त्यांरो गुढासतो आढ वाजे, ढुख सूं ढिण कहतो न लाजे ॥ ११ ॥
ढूलगा जाणे उपगारी, त्यांने किण विघ घालें विसारी ।
त्यांरो सिक्को धारे रह्यो सेठो, त्यांरो थको तिहां रहे वेठो ॥ १२ ॥

लारे सेठ रे दिन आयो खोटो, तिणरे पड गयो जावक तोटो ।
 बले घर में आई पूरी खाल, बाकी क्यूं ही रह्यो नही माल ॥ १३ ॥
 सेठ रा पुन पड गया माठा, गुमासता पिण घन ले नाठा ।
 कांनी कांनी रह्या घन दाव, थोडा में छेडो आयो सताब ॥ १४ ॥
 माथे पिण ऋण हुवो पूरो, सेण सगा हुवा सरव दूरो ।
 उपर सूं पडियो दुरभख ताही, खावा घान नही घर मांहीं ॥ १५ ॥
 लोकां मांहे पिण पडियो उघाडो, तिणसूं माथेई न मिले उबारो ।
 अन्न विण भरतां भेली नाकी, जब गुमासता री दिशि ताकी ॥ १६ ॥
 तिण दलद्री रो सेठ कीचो, तिणरो शरणो लेवा मन कीचो ।
 अकुम उदे विपद रो घाल्यो, तिणरी दिशि नें चाल्यो ॥ १७ ॥
 तूटो डील नें तूटी सभाई, मुख वदन गयो कुमलाई ।
 पगां ल्यातरा वाजें ताहि, इण रीते आयो शहर रे मांहे ॥ १८ ॥
 निज सेठ ने आवतो देखी, हरख्यो मन मांहे वशेली ।
 गादी तकिया छोडी साहों जाय, सेठ रा पगां में पडियो आय ॥ १९ ॥
 विने सहीत बोलें जोडी हाथ, मोनें आज कीयो थें सनाथ ।
 थारो दरसन मे दीठो आज, म्हांरा सरिया बंछित काज ॥ २० ॥
 म्हांरे आज भलो दिन ऊगो, मन रो मनोरथ पूगो ।
 घणी अतंत कीधी लघुताई, इण कुमिय न राखी कांई ॥ २१ ॥
 विनो नरमाई करता देख, लोक इचरज पाभ्यां वशेख ।
 त्यानें उत्पति घुर सूं बताय, सगलां ने दीया समझाय ॥ २२ ॥
 पछे निज सेठ ने घरां ल्याय, मरदन सिनांन कराय ।
 मोय मूंहा ने हलका तोल मांय, एहवा वरुण गेहणा पहिराय ॥ २३ ॥
 पछे मन गमता भोजन कराय, रुडी सेज्या में आंण पोढाय ।
 बले भोजन अनेक रसाल, नित्य जीमावे काल रा काल ॥ २४ ॥
 डीलां में चाका कीयो जरुरे, सूरत में घणो सनूरो ।
 गादी तकिया वेंसाणे आंण, हिवे बोले किण विव बांण ॥ २५ ॥
 आप पवाच्या इण ठांम, ते मोने फुरमावो कांम ।
 जब सेठ बोले झ वाय, मोमें विपत पडी छे आय ॥ २६ ॥
 देश दुरभख पडियो ताथ, खावा घान नही घर मांय ।
 माथे पिण न मिले उबारो, जब हूं आयो थारी दिशि घारो ॥ २७ ॥
 आ हूं आप कनें कर्हं अरज, कांयक तो करो म्हांरी गरज ।
 जब ओ बोल्यो सीस नमाय, इसडी भोले म काडजो वाय ॥ २८ ॥

आप तो म्होरा सिर घणी सेठ, हूं तो गुमासतो थारो नेठ ।
 हूं दलद्री तिणनें आप ववाख्यो, म्हारो मिनष जमारो सुघाख्यो ॥ २६ ॥
 म्हे आ पांमी रिधि विस्तार, ओ सगलो आप तणो उपगार ।
 हिचे सगली अवेरलो आथ, रिधि सहित सगलां रा थें नाथ ॥ ३० ॥
 आ रिधि खावो पीवो उडावो, सगलां ऊमर हुकम चलावो ।
 मोने पिण ऋजक रोटी दो आप, हूं पिण इघका क्याने करू टाप ॥ ३१ ॥
 सेठ नें सगली सोपे आथ, सेवग थको रहे जोडी हाय ।
 वले कदेय न हुवे त्यांसू जूओ, तो पिण सेठ सूं उरण न हूवो ॥ ३२ ॥
 इसवो सेठ ने हितकारो, जीव हुवो अंनती वारो ।
 मुगति जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिंगार ॥ ३३ ॥
 जे कोइ सेठ सूं उरण थाचे, ते सेठ ने जिण धर्म पमावे ।
 समभाय मेले मुगत रे मांय, इम सेठ सू उरण थाय ॥ ३४ ॥
 सेठ नें माईत कीयो उपगार, तिणसूं उलटो बचे ससार ।
 ए तो सावद्य रो दातार, तिणमे धर्म नही छे लिंगार ॥ ३५ ॥
 जो उ मुगत गांमी जीव होवे, तो एहवा उपगार साह्यो न जोवे ।
 जो इण उपगार में धर्म जांणे, ते तो भर्म में भूला ताणे ॥ ३६ ॥
 एहवा उपगारी ने देखे ताय, थोडो घणो हरपे मन मांय ।
 तिणरे निश्चे बघें कर्म सात, आ तो जिणजी रा मुख री वात ॥ ३७ ॥
 एहवो पाछो करे उपगार, तिणरें पिण बघे ससार ।
 एहवा आह्यां साह्यां उपगार, कीवा नही पामें भव पार ॥ ३८ ॥
 कोइ हुंतो जीव मिथ्याती, खोटा देव गुर रो पखपाती ।
 करें अधर्म ने धर्म जांणे, महामूढ थको ऊंवी ताणे ॥ ३९ ॥
 तिणनें मिल्या मोटा मुनिराय, समदिष्टि कीयो समभाय ।
 वले ध्रावक करे साधु कीघो, मुगत गामी निश्चे कर दीघो ॥ ४० ॥
 ते साधपणो सुध पाल, पछे कीयो तिहां थी काल ।
 ते उयनों देव लोक में जाय, गुर भगता घणो छे ताय ॥ ४१ ॥
 तिण उपयोग दे जोयो तांम, गुर ने देख लीया तिण ठाम ।
 गुर चोमास कीयो तिणवार, काल पडियो ते देश मझार ॥ ४२ ॥
 गोचरी गयां न मिले आहार, जावक तूट गया दातार ।
 लोक होय गया हेरान, खावा नें पूरो न मिले धान ॥ ४३ ॥
 ओर देश मे सुणियो सुगाल, पिण मारग मे दुरभख काल ।
 तिहां पिण जांवा रो काठो काम, विच में उज्जड होय गया गांम ॥ ४४ ॥

जब कष्ट घणो गुर मांय, मोत घात आए लागी ताय ।
 जब उ गिष्य देवलोक मभार, कष्ट देखी नें कीयो विचार ॥ ४५ ॥
 म्हांग गुर में पडी इसडी वेला, तो हूं जाय करूं अन्न भेला ।
 इम चिन्तव सताव सूं आय, गुर ने मेल्या सुगाल रे मांय ॥ ४६ ॥
 गुर नो कष्ट भेट्यो शिष्य आय, अन्न विण भरता राख्या ताय ।
 बले हरख्यो घणो मन मांय, तो पिण गिष्य उरण हुवो नांय ॥ ४७ ॥
 बले गुर भूल मोटी अटवी मांय, मारग री पिण खवर न कांय ।
 बले भूख तिरखा लागी आय, पग भर आधो खिसियो न जाय ॥ ४८ ॥
 अन्न पांणी चिनां अटवी मांय, जुदा हुवे जीव ने काय ।
 सिध चित्तादिक तिहां आय, उपसर्ग देवा लगा ताय ॥ ४९ ॥
 जब उ गिष्य देवलोक थी आय, गुर नें बसती में मेल्या उठाय ।
 गुर नें जीवां मरता राख्या ताय, तो पिण शिष्य उरण नही थाय ॥ ५० ॥
 बले गुर रा बरीरे मांय, सोले रोग उपनां आय ।
 तिण रोग सूं हुवे जीव घात, बले सुख नहीं तिल मात ॥ ५१ ॥
 जब उ गिष्य देवलोक थी आय, सोलेई रोग बीया गमाय ।
 सुख साता कीधी जीवां वचाय, तो पिण गुर सूं उरण नही थाय ॥ ५२ ॥
 काल रा मेल्या सुगाल रे मांय, अटवी सूं मेल्या बसती मे ताय ।
 रोग कीया बरीर थी न्यार, तोही उरण न हुवो लिंगार ॥ ५३ ॥
 जो इसडा करे अनेक उपाय, तोही गुर सूं उरण नही थाय ।
 उरण न हुवो ते किण लेखे, ते परमारथ विरला देखे ॥ ५४ ॥
 जो उ गिष्य आए इम न करंत, तो पंहेले छेहडे गुर जीवां मरत ।
 मरनें संसार में न पडंत, कष्ट सही कर्म दूर करंत ॥ ५५ ॥
 तो पिण बले नही हुआ कर्म, बले घटती नही त्यारो धर्म ।
 मुगत जावा रो न कीयो उपाय, उरण न हुवो ते इण न्याय ॥ ५६ ॥
 गुर धर्म थी मिष्ट हुवे ताय, ने आंणे गिष्य ठाय ।
 पडता राख्या भव कूआं मांय, जब गुर सूं उरण हुवो ताय ॥ ५७ ॥
 कदा गुर मिष्ट होय वेंठा ताय, ग्यांनादिक गुण सर्व गमाय ।
 रात दिवस हणे छे छे काय, जावक खूता संसार रे मांय ॥ ५८ ॥
 जब उ शिष्य देवलोक थी आय, खपकर आंणे गुर नें ठाय ।
 पाछां साधु करे समभाय, ते गुर सूं उरण हुवे ताय ॥ ५९ ॥
 जो गुर भगता हुवे गिष्य सुविनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत ।
 ए ठाणां अंग सूतर माय, तीजे ठांणे कइयो जिणराय ॥ ६० ॥

गुर कीघो भारी उपगार, गुर उताख्यो संसार थी पार ।
 कीघो भुगत तणो अधिकारी, त्यानें किण विघ घालें विसारी ॥ ६१ ॥
 रात दिवस गुर रो ध्यान घ्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे ।
 गुर रो कीघो उपगार वतावे, गुर रा गुण किण विघ गावे ॥ ६२ ॥
 गुर मोसूं कीयो मोटो उपगार, ग्यांनादिक गुण रा दातार ।
 हूं तो हुंतो जीव अग्यांनी, मोने सतगुर कीघो ग्यानी ॥ ६३ ॥
 हूं अनाद काल रो हुंतो मिथ्याती, हिंसा धर्म तणो पखपाती
 ते म्हारी श्रद्धा खोटी छुडाय, गुर समकित दे आय्यो ठाय ॥ ६४ ॥
 हूं खूतो थो संसार मभार, जब हूं सेक्तो पाप अठार ।
 मोनें दीख्या दे कीयो साध, म्हारी भव भव री मेटी व्याध ॥ ६५ ॥
 हूं इवो इण संसार मांह्यो, गुर बारें काढ्यो बांह संभायो ।
 सुध भावक रो धर्म पमायो, त्यांसूं उरण किण विघ थायो ॥ ६६ ॥
 हं अनंत ससारी जीव थो भारी, ते मोनें गुर कीयो परित संसारी ।
 हं दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोनें सुलभ बोधी कीयो सरलो ॥ ६७ ॥
 हं तो कृष्ण पखी जीव थो कुकरमी, हिंसाधर्मी ने पूरो अधर्मी ।
 मोने शुक्ल पखी गुर कीघो, भुगतगढ रो पट्टो लिख दीघो ॥ ६८ ॥
 हं तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार नां छेड्डा रहीत ।
 गुरां धरम करे सिर चाढ्यो, म्हारा संसार नों छेड्डो काढ्यो ॥ ६९ ॥
 मोने गुर कीघो भुगत नजीक, इन्द्र नों पिण कीयो पूजनीक ।
 म्हारो जीतव जनम सुधाख्यो, मोने संसार पार उताख्यो ॥ ७० ॥
 शिष्य सुविनीत हलुकर्मी होवे, तो गुर रा उपगार साह्यो जावे ।
 जिण आगम सीखामण सूधी धारी, हिंवे कुण कुण करे विचारी ॥ ७१ ॥
 कोइ पट्टो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे ।
 ते पिण विनों करे जोडी हाथ, बले लेखवे सिर घणी नाथ ॥ ७२ ॥
 तिणनें करडी मूहम घणी मेले, तो पिण घणी रो वचन नही ठेलें ।
 मर जाये तिणरा मूंडा आगे, घणी ने मंल पाछो नही भागे ॥ ७३ ॥
 तिण घणी रो पिण काचो आवार, थोडा में पट्टो देवे उतार हो ।
 बले काढ दे देश रे वार, कदा जीवां पिण नांखे मार ॥ ७४ ॥
 तिण घणी रो वचन न लोपें, मरण साह्यो मडे पग रोपें ।
 जाणें आउं घणी रे कांम, तो हं नही होऊं लूण हराम ॥ ७५ ॥
 रिजक रोटी पट्टा रे काजे, मर जाये पिण पाछो न भाजें ।
 तो हं भुगत जावा रे काज, पिंडव मरण करतो नाणू लाज ॥ ७६ ॥

गुर निव्य नें मुगत गांमी कीवो, मोष रो पट्टो अविचल दीवो ।
 दल्लि दीयो दूर समाय, ग्यांन दरसन चारित पमाय ॥ ७६ ॥
 जो उ निव्य हुवे सुविनीत, गुर री आन्या पालें ह्छी रीत ।
 ते गुर रो वचन किम लोपें, मरण साहों तुरत पग रोपें ॥ ७७ ॥



रत्न : १७

मोहणी कर्म बंध री ढाल

ढाल

दुहा

महामोहणी कर्म री, स्थिति लांबी कही जिणराय ।
 सितर कोडा कोड सागर तणी, ते भोगवतां दुख थाय ॥ १ ॥
 आठ कर्मां माहे राजवी, मोटो मोहणी कर्म ।
 इण कर्म उदे वस जीवडो, पामें नहीं जिण धर्म ॥ २ ॥
 जे जे माठा किरतब करे, मोह कर्म उदे वस जीव ।
 पाप कर्म उपजावे अति घणा, तिणसूं पामें दुख अतीव ॥ ३ ॥
 इण मोह कर्म रा जोर सुं, माठी माठी अकल बुद्धि थाय ।
 सावु श्रावक धर्म सुं चूक ने, पडें नरक निगोद में जाय ॥ ४ ॥
 जे कर्म बंधे महामोहणी, तिणरा छे तीस बोल ।
 ते चित्त लगाय नें सांमलो, आंख हीया री खोल ॥ ५ ॥

ढाल

[विधिधानी]

दुष्ट परिणामां तस जीव नें, डबोवें पांणी रे मांय रे ।
 तिणनें मारे पांणी में वुरी तरें, जुदा करे जीव ने काय रे ।
 इम कर्म बंधे महामोहणी ॥ १ ॥
 मुख भींच मारे तस जीव नें, वले मारे नाकादिक भींच रे ।
 मारे गले देई गल भींचियो, इण विव मारे भूंडी कुमीच रे ॥ २ ॥
 घणा जीव बाढा मे घाल ने, देवे चोफेर अगन लगाय रे ।
 मारे अगन धूआ रा जोग सुं, खं.टां परिणामां ताय रे ॥ ३ ॥
 मारे खडग सुं मस्तक भेद ने, मारे मुगदरादिक सिर मार रे ।
 अथवा मस्तक फाडे विदार ने, करे जीव ने काया न्यार रे ॥ ४ ॥
 तस जीव तणा मस्तक मस्से, आलो बांध बीटे तांण तांण रे ।
 पछे आंण वेसाणे तावडे, इण विघ हणे प्रांणी रा प्रांण रे ॥ ५ ॥
 काला गेहला ने मारे हसे, कतोहल करवा कांम रे ।
 वले कपट करी भेष पालटे, ते आपो छिपावण कांम रे ॥ ६ ॥
 खोटो आचार गोपवे आपरो, देखाडे रुडो आचार रे ।
 वले माया ढांकण माया केलवे, मूठ बोली गोपे वास्वार रे ॥ ७ ॥
 अणाचार सेव्यो नही तेहनें, हेले देवे मूठ आल रे ।
 आप दोष अणाचार सेव ने, ओर रे सिर देवे राल रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भरी सभा में बेठी थकी, संके नही करतो अन्याय रे।
 मिश्र भाषा बोले तिण अवसरे, भूठ ने भूठ जाणतो नांय रे ॥ ६ ॥
 राजा रे रूबे लिखमी आवती, द्रोही प्रवांन कपट सहीत रे।
 बले भेद पांडें सुभटां थकी, राजा नें करे राज रहीत रे ॥ १० ॥
 राज लिखमी गयां विल विल करे, तिणनें बोले मरम मोसावाय रे।
 बले भोग भोगवतां तेहनें, जोरी दावे देवे अंतराय रे ॥ ११ ॥
 आचारज गणनायक अघपति, त्यांरे शिष्य कोइ दुष्ट अविनीत रे।
 ते मन भांगे ओर साधां तणो, गुर नें करे पदवी रहीत रे ॥ १२ ॥
 जश कीर्ति घटावे गुर तणी, देवे पूजा श्लाघा घटाय रे।
 बले शिष्य हो तो देखनें वरज दे, उपघादिक री देवे अंतराय रे ॥ १३ ॥
 राजा रे रूबे लिखमी आवती, तिणमें दरबे चोरी री खोड रे।
 इण विध गुर सूं चेलो करे, ते तीर्थंकर रो चोर रे ॥ १४ ॥
 बाल ब्रह्मचारी नहीं ते कहे, हूं तो बाल ब्रह्मचारी अकन कवार रे।
 बले अस्त्री सेवण गिरओ घणो, विषय पिण बांछे बालंबार रे ॥ १५ ॥
 ब्रह्मचारी नहीं बले इम कहे, हूं छं शीलवंतो ब्रह्मचार रे।
 जिम गबो भूके गायां मभे, तिम ओ बोले साधां रे मभार रे ॥ १६ ॥
 जिणरी नेश्राय करे आजीवका, घन वधियो तिणरी नेश्राय रे।
 जश कीरति वधी तिणरी नेश्राय सं, तिणरो घन लूधे जाय रे ॥ १७ ॥
 वधियो राजादिक री नेश्राये, त्यानेंईज दगो दे ताय रे।
 बले छल बल खेले तेह सूं, उपगारी नें हुवे दुखदाय रे ॥ १८ ॥
 गुण वधिया गुर री नेश्राये, त्यां सूं दगो करे मन मांय रे।
 छल छिद्र जोवे चोर नी परे, शिष्य शिष्यणी लेवे फंटाय रे ॥ १९ ॥
 साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यानें फाडण रो करे उपाय रे।
 गुर सूं मन भांगे तेहनों, भूठा भूठा अवगुण दरसाय रे ॥ २० ॥
 करे विश्वासघात मांहे थको, मुख मीठो खोटो मन मांय रे।
 बले जिल्लो बांधे ओर साध सूं, आपरो कर राखे ताय रे ॥ २१ ॥
 राजा नहीं तिणनें राजा कीयो, राज दीघो मोटे मंडाण रे।
 ते तो उपगारी छे मूलगो, तिणनेंईज दुख दुख देवे जांण रे ॥ २२ ॥
 सर्पणी इंडा गिले आपरा, अस्त्री मारे निज भरतार रे।
 बले चाकर मारे ठाकर भणी, गुर नें शिष्य नांखे मार रे ॥ २३ ॥
 मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नें हणे माठे ध्यान रे।
 कोइ मारे अधिकारी पुरुष नें, कुल में दीवा समान रे ॥ २४ ॥

मौहणी कर्म बध री ढांल

कोइ सत रिषेश्वर मोटको, घणा जीवां रो तारणहार रे ।
 द्वोपा समान इबता जीव नें, त्याने हणे कोइ घेपघार रे ॥ २५ ॥
 केई चारित लेवा उठिया, केइ चारित पाले ताय रे ।
 तिण चारितीया नें चारित थकी, मिष्ट करवा रो करे उपाय रे ॥ २६ ॥
 उतकष्टा ग्यानी केवली, त्यारे संजम तप री समाध रे ।
 ते तों प्रतिबोधे भवि जीव ने, त्यांरा बोले अवगुणवाद रे ॥ २७ ॥
 न्याय मारण छे सुध मुगत रो, तिणसूं तपतो रहे दिन रात रे ।
 तिण मारण सूं घणा ने चूकाय दे, खोटी श्रद्धा हिया मे घात रे ॥ २८ ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, साव हुवो छोडे माया जाल रे ।
 वले भणियो सिद्धात त्या कनें, त्यानेइज निदे मूरख वाल रे ॥ २९ ॥
 आचार्य उवभाय तेहनें, न करे सेवा भगत मन सुध रे ।
 विनो वियावच पिण करे नही, अहमेव पणा री बुद्ध रे ॥ ३० ॥
 आचार्य उवभाय त्या कनें, ग्यान दरसन चारित पाय रे ।
 त्यां सूं पिण करे मूढ बरोबरी, वले सनमुख भगडे आय रे ॥ ३१ ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, समझे कीयो परित्त ससार रे ।
 वले सजम रे सनमुख कीयो, त्यारा अवगुण बोले वालंवार रे ॥ ३२ ॥
 आचार्य उवभाय गण थकी, अविनीत ने देवे दूर टाल रे ।
 जब अविनीत क्रोध तणे वले, हेले देदे भूठा आल रे ॥ ३३ ॥
 आचार्य उवभाय तेहनी, वंदणा छोडावे संका घाल रे ।
 उत्तमा री उतारे आसता, दुष्ट अविनीत री आ चाल रे ॥ ३४ ॥
 आचार्य उवभाया ऊमरे, कोइ पडिवजियो मिथ्यात रे ।
 तिण अविनीत ने सबलो सूझे नही, करे जोम ने गाढ री वात रे ॥ ३५ ॥
 कोइ बहुश्रुती तो निश्चे नही, ते कहे हूं छू बहुश्रुती साध रे ।
 मो बरोबर सूत्तर कुण भण्यो, अभिमांनी करे भूठो विवाद रे ॥ ३६ ॥
 कोइ तपसी तो निश्चे नही, ते कहे हूं छूं तपसी घोर रे ।
 तिणने तीन लोक रा चोर सूं, उतकष्टो कह्यो वीर चोर रे ॥ ३७ ॥
 बालक तपसी गरडा गिलाण छे, त्यांरी न करे वियावच देख रे ।
 ते छती सगत घेठो थको, वले राखे त्यां ऊमर घेख रे ॥ ३८ ॥
 वले कपट केल्व भूठो कहे, हूं करूं छू वियावच ताय रे ।
 पिण दुष्ट परिणामां तेहने, उलटी देवे अतराय रे ॥ ३९ ॥
 कलह कारणी कथा कहे, वले घाले मांहोमां खेद रे ।
 आह्मी साह्मी करे लगावणी, पाडे च्यार तीरथ मे भेद रे ॥ ४० ॥

चेला रो मन भांगे गुर धकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग रे।
 यानें भेद घाली न्यारा करे, तिण पहर विगाह्यो सांग रे ॥ ४१ ॥
 गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्यां सूं दूर करे भरमाय रे।
 जीवे ज्यां लग भेला हुवे नहीं, एहवी मोटी देवे अंतराय रे ॥ ४२ ॥
 गण माहें वसे साधु साववी, त्यांमें पाडें विखेरो कोय रे।
 चित्त भंग करे यांरो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय रे ॥ ४३ ॥
 साधु साववी गुर सूं फाड नें, आपरा कर राखे ताय रे।
 गुर सूं छानें छानें बांधे जिल्लो, मूरख चोरी करे गण मांय रे ॥ ४४ ॥
 जोतिष निमित्तादिक भाखे घणा, चले हिंसा कीयां कहे धर्म रे।
 वले पूजा श्लाघा रे कारणे, करे वसीकरणादिक कर्म रे ॥ ४५ ॥
 कांम भोग भिनष देवता तणा तिणमें रहे अतृप्तो ताय रे।
 तिणरे बंधा घणी कांम भोग री, चले लंपट रहे तिण मांय रे ॥ ४६ ॥
 मोटी रिघ संगत पांमी देवता, ते संजम तप रे प्रसाद रे।
 इसडा मोटका देवता तणा, कोइ बोले अवगुण वाद रे ॥ ४७ ॥
 देवता नहीं देखे ते कहें, हूं देवता देखूं साखात रे।
 वले अग्यांनी थको लोकां मभे, जिणेसर ज्यूं पूजावे विख्यात रे ॥ ४८ ॥
 तीसां बोलां बंधे महामोहणी, एतो कह्यो तीथंकर देव रे।
 त्यांनैं साधु तो वरजे सर्वथा, त्यांरी करे इंद्रयादिक सेव रे ॥ ४९ ॥
 संवत अठारे सेंतीसे समें, सावण विद सातम रिववार रे।
 कर्म बंधे छे महामोहणी, जोडी पाडू गांम मभार रे ॥ ५० ॥
 भवि जीवां ने समभायवा ॥

रत्न : १८

दसवें प्राञ्चित्त री ढाल

ढाल

दुहा

ठण्णाअंग तीजे न पांचमें, दगमों प्राछित्त कह्यो जिणराय ।
जघन्य मभिम प्राछित्त किण ही बोल में, ते पिंडत जाणें न्याय ॥ १ ॥
कोइ दगमो प्राछित्त सेवनें, ए आलोए तो मतिवंत ।
ते जयातथ प्रगट करूं, ते सुणजो कर खंत ॥ २ ॥

ढाल

[समरू' मन हरखे तेह सती]

दुष्ट परिणामां ऊंची घारे, गुरवादिक मूवां रा दांत पाडे ।
तीव्र कषाय वस समता नावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें ॥ १ ॥
करे प्रमाद वस अकार्य मोटो, ते प्रतख लोक विवध खोटो ।
तिणरो लौकिक पिण विगडी जावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ २ ॥
साध साधवियां रो पेहरण सांग, मांहीमां चोथो व्रत देवे भांग ।
ते च्यार तीर्थ में फिट फिट थावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें ॥ ३ ॥
रहें एक आचार्य रा शिष्य भेला, कुल माहि वसें सहु मनमेला ।
त्यामें भेद पाडण उचमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ ४ ॥
रहे दोय आचार्य रा शिष्य भेला, गण माहि वसे सहु मनमेला ।
त्यामें भेद पाडण उचमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ ५ ॥
गुरवादिक री वांछे घात, एहवो ध्यान रहे दिन नें रात ।
ते मन में पिण नही पिछ्छतावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे ॥ ६ ॥
ओर सावां रा छिद्र जोवे तांम, तिणने हेलवा निंदवा रे कांम ।
दोष भेला कर कर पछे उडावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे ॥ ७ ॥
प्रश्न पूछे हिंसादिक वाख्वार, तिण चारित वाल कीयो छार ।
ते इहलोक रो अरथी थावे, तिणनें दगमों प्राछित्त आवे ॥ ८ ॥
कुल गण मे भेद पाडे केइ, हिंसा नें छिद्र तणो पेही ।
सावध प्रश्न वाख्वार वतावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे ॥ ९ ॥
दुष्ट प्रमाद ने अनमन सेवे, तिणरो प्राछित्त हाथ जोडी लेवें ।
जे आलोव न सुध थावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे ॥ १० ॥
ठण्णाअंग तीजे ने पांचमे ठाणे, त्यांरा भेद अनेक पिंडत जाणे ।
जघन्य मभिम भेद न्यारा थावे, उत्तरुष्टो प्राछित्त दशमो आवें ॥ ११ ॥

रत्न : १६

जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल

ढल

दुहल

चररत आवे चोखो चरत हुवऱं, पतलो पढ्यऱं मोह कर्म ।
 आतम वस छे आपरे, ते पालें छें जण धर्म ॥ १ ॥
 जे तीखी बुद्धि रऱ मऱनवी, सरल सभऱव मरतवऱंत ।
 ते समक सतऱव संयम लीयो, ज्यांरी पूरीजे मन खंत ॥ २ ॥
 केइ समझ्यऱ छे सतगुर कने, पण न मरिटी मन री भोल ।
 त्याने चररत आवे कण वरिधे, महें मोटी कर्म किलोल ॥ ३ ॥
 त्याने संसर खऱरो लगो नहीं, लपट रह्यऱ तण मऱंय ।
 ते संजम री भऱवे भऱवऱनऱ, पण संजम आवे नऱंय ॥ ४ ॥
 जण लखणऱ चररत आवे नही, जण लखणऱ चररत ऱऱय ।
 त्यांरऱ भऱव भेद परगट कऱं, ते सुणजो चरत ल्यऱय ॥ ५ ॥

ढल

[समरुं मन हरख तेह सती]

त्यारे समकित री सेठी नीव, वरनेवंत हलुकर्मी जीव ।
 ते संसर सूं रहे नररदऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो ऱऱवे ॥ १ ॥
 जे वेरऱग महें भीनऱ पूरऱ, ते लोभ लऱलच सूं रहे दूरऱ ।
 वेरी वऱहलऱं ऊपर रहे समभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो ऱऱवे ॥ २ ॥
 त्यारे न्यऱतीलऱं सूं नेह थोडो, वले मोह कर्म रो नहीं जोरो ।
 दिन दिन चोकडी घटऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो ऱऱवे ॥ ३ ॥
 ते ऱऱगूंच मोह मऱयऱ मुंके, वले सतगुर मरल्यऱं ऱवसर नही चूकें ।
 कर्म कऱटण ने तप तेज संभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो ऱऱवे ॥ ४ ॥
 त्यारे मुगत ऱऱवण री लऱ रही ऱऱस, ते कऱल रो नहीं करे वररवऱस ।
 ते ऱऱगूंच ऱऱपो संभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो ऱऱवे ॥ ५ ॥
 केइ सजम लेवऱ करे टऱलऱ टोलऱ, पल पल में ऊठे ऱनेक डोलऱ ।
 खण में रंग वररंग होय ऱऱवे, यऱं लखणऱ चररत नही ऱऱवे ॥ ६ ॥
 लोभ लऱलच त्यारे नही छुटो, न्यऱतीलऱं सूं नेह पण नही तूटो ।
 मऱयऱ मेलण री मनसऱ ल्यऱवे, यऱं लखणऱ चररत नही ऱऱवे ॥ ७ ॥
 वेरऱग वरनऱं नररथक वेठऱ, त्यांनें वतलऱयऱं वचन बोलें वेठऱ ।
 शूर वीरपणो त्यांमें नही पऱवे, यऱं लखणऱ चररत नही ऱऱवे ॥ ८ ॥

वले दिन दिन इधक भेले तांता, आऊखा मांसू दिन नहीं जाणो जाता ।
 हलफल में यूँही दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ६ ॥
 वले नवा नवा सगपण सांघे, आगला सूँ नेह इधको वांधे ।
 त्यारे काजे कर्मबंध कमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १० ॥
 ज्यानें संसार लागे छे अति मीठो, त्यांरो निश्चैई वेंराग जाणो फीटो ।
 ते अंतरंग भावना किम भावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ११ ॥
 आरा मोसर आरंभ में आघो, छकाय मारण केडे लागो ।
 वले मान बडाई में नहीं मावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १२ ॥
 जिण आगन्यां पालण सूँ दूरा, वले सावद्य काम करण शूरा ।
 तिणनें सरायां फल फूल होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १३ ॥
 मूँडे मीठा पिण नहीं समभावा, घणा जीवां सूँ राखे कावा दावा ।
 रात दिवस पेला रो भूडो चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १४ ॥
 संसार में राड भगडा कजिया, तिण माहे नितका सजिया ।
 थोडा मे पेला रो घर गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १५ ॥
 आह्यो साह्यो घणा सूँ डस राखे, वले मान बडाई मुख भाखे ।
 वले कुबुद्धि करे कलह लगावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १६ ॥
 वेंराग रहित वोलें पोला, त्यांरो मनडो खाय रह्यो भौला ।
 त्यारे चारित री चित्त मे नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १७ ॥
 अथिर सभावी घर छोडण री कहें, त्यांरो आरंभियो तो यूहीज रहे ।
 घडी घडी में परिणाम फिर जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १८ ॥
 वरस छमास में छोडूं गृहपासा, ते दिन आयां ओर वांचे आसा ।
 आगे लगा दिन चलिया जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १९ ॥
 संसार नीं वातां सुण सुण हरखे, संजम री वात कीयां घडके ।
 संजम लेवा सूँ नहीं उमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २० ॥
 केइ कर रह्या संजम लेऊं, जाणें गृहवासो जोग सामूं बेहू ।
 इम करतां करता ने काल गटकावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २१ ॥
 संजम लेवा करे गाथा गूथा, ते तों यूँही रहे घर में खूता ।
 परिणाम चढ चढ नें पड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २२ ॥
 काचे मन चारित री वात काडे, ते तो काम सिराडे किम चाडें ।
 पांणी पर पोटा ज्यूँ वेंराग विललावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २३ ॥
 केइ आपरा मन सूँ जूरा वाजे, कांम पड्यां डेरो नाखे भाजे ।
 इण दिप्टान्ते केइ पडिया पोमावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २४ ॥

घर छोडतां करें थागा थेगो, त्यारे नही वेंराग रस सकेगो ।
 थागा थेगा कर दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २५ ॥
 इसडा जीव आगे अनंत हुवा, उवे आसा अलुधा यूंहीज मुवा ।
 ते तों चिहंगति में गोता खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २६ ॥
 केइ घर छोडण मन वेराग घरे, जब ओरां नें माहे लेऊं बंधो करे ।
 पछे परिणाम पडे जब सीदावें यां लखणा चारित नही आवे ॥ २७ ॥
 उणरो वेली घर छोडण री करे, जब कायर रे मन घडक पडें ।
 बंधो करनें पडियो पिछ्छतावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २८ ॥
 जब उणरा परिणाम पाडण खपे, घणो कूड कपट मुख सूं रे जपे ।
 कर्म बंधवा रो डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २९ ॥
 आप घर छोडण सूं मन उमावे, जब उणरा पिण परिणाम चढावे ।
 आप डिंगियो ओरा नें डीगावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३० ॥
 चारितिया ने चारित सूं मिष्ट करे, तो महामोहणी कर्म रो बंध पडे ।
 ते तो संसार में दुखियो थावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३१ ॥
 साधु सुव उपवेग दे सुविचारी, उणरा वेली ने करे सजम सूं त्यारी ।
 जब ऊ साधां ऊपर पिण दुख पावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३२ ॥
 के उ-भागण री ओर ताके सेरी, घणो भूठ बोले भाषा फेरी ।
 ते बघो भांग ने भागल थावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३३ ॥
 भागल थई भूठ बोले भारी, केइ होय जाय अनंत संसारी ।
 पछे दडी दोटा ज्यूं भीकां खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३४ ॥
 बंधो भांग सत बोले निरापेखो, इरडा तो केयक विरला देखो ।
 भारीकर्मां सूं साच वोलणी नावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३५ ॥
 सूस भागे ने घर में रहिवा री करे, ते तो साधां रा छिद्र जोवतो रे फिरे ।
 मिनक्री उदर ज्यूं माठी भावना भावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३६ ॥
 कोइ घर छोडण री चित्त में घारे, जब ओरां रा परिणाम ढीला पाडे ।
 जाणें रखे मोसूं दडो होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३७ ॥
 केइ सूस वरत देवे भंगो, जब भूरख पामें उछरंगो ।
 भागल ने भागल बधिया चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३८ ॥
 घर छोडण रा सूस भागे, जब सावां ने असाधु श्रद्धण लागे ।
 आल देतो पिण डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३९ ॥
 निर्लज सूस वरत देवे भाग, त्यांरा चिहंगति में नीकले सांग ।
 वले लौकिक पिण विगड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४० ॥

लज्यावंत उत्तम नरनार, सूंस वरत करे ते घाले पार ।
 त्यांरा तीथंकर पिण गुण गावे, यहां लखणा चारित नही आवे ॥ ४१ ॥
 दोय दोय तरवार बाचे गाढी, वरसो वरस खुरसाण चाढी ।
 कांम पड्यां बारे काढणी नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४२ ॥
 ज्यूं त्यागी वेंरागी बाजें पूरा, घर छोडण निमित्त दीसे शूरा ।
 कांम पड्या ते पिचक जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४३ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलकी, तिण ठामें कायर जाए सलकी ।
 विहदावली बोलताई नाठो जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४४ ॥
 ज्यूं परीसा रूप वहे बाण गोला, ते कायर सुण भाग जाये भोला ।
 तिण भागल ने वेराग विरुद न सुहावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४५ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलके, तिण ठामें शूरा हुवे ते नही सलके ।
 ते तों मरण रो डर मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४६ ॥
 ते परीसा रूप गोला बाण वहे, ते सुण सुण उत्तम जीव दड रहे ।
 घर छोडतां परीसा रो डर नही ल्यावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४७ ॥
 केइ कायर संग्राम मांहे जावे, तिणनें न्यातीलादिक याद आवे ।
 ते सनमुख लोह किण विध खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४८ ॥
 यू घर छोडण री चित्त मांहे घरे, ते न्यातीलादिक ने याद करे ।
 त्याने छोडी नें किम हुवे निरदावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४९ ॥
 शूर संग्राम चढे शस्तर भाले, न्यातीला मे चित्त नही घाले ।
 आप जीते ओरा नें हठावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५० ॥
 ज्यूं घर छोडण नें शूरा होवे, ते न्यातीला साहमो नही जोवे ।
 संजम लेनें कर्म वेरी खपावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५१ ॥
 संसार शूरा पिण सेंठी घारे, नासण भागण री नहीं विचारे ।
 मरण सूं साहमो मंड जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५२ ॥
 इण दिष्टाते वेराग मांहे पूरा, मुगत जावण ने हुवे शूरा ।
 ते घर छोडण रो डर नही ल्यावे, त्यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५३ ॥
 कर्म रोकण तोडण री सेठी घारे, ओर आल पपाल नही विचारे ।
 आड दोड चित्त में मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५४ ॥
 एक मुगत जावण री रखे आसा, ओर छोड दे सर्व आसापासा ।।
 ससार सुखां मे रति नही पावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५५ ॥
 इम सुण नें उत्तम नरनार, सूंस वरत पालो निरतीचार ।
 ज्यूं जनम मरण दुख मिट जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५६ ॥

वरस पेतीसे संवत अठारे, महासुदि चोथ दिन बुधवारे ।
देश मेवाड वनेडे गांम, जोड पूरी कीधी छे तिण ठाम ॥ ५७ ॥



रत्न : २०

सूस भंगावण रा फल री ढाल

ढाल

दुहा

वनस्पति ढाल ने पांच काय थी, अनत गुणां अमवी जाण ।
 त्यांसूं पडिवाई समदिष्टी अनंत गुणां, समकित भिष्ट अयाण ॥ १ ॥
 त्यामे केकां तो भांग्यो सावपणो, केका भांग्यो श्रावकपणो जाण ।
 केइ भिष्ट हुवा समकित थकी, होय गया मूढ अयाण ॥ २ ॥
 ते पडिया छे नरक निगोद मे, तिहां खाये अनती मार ।
 अनत काल लगे दुख भोगवे, तिणरो वेगो न आवे पार ॥ ३ ॥
 भागलं हुवा छे वापडा, दीघो जीतव जनम विगाड ।
 थोडा सुखां रे कारणे, गया जमारो हार ॥ ४ ॥
 भागल भिष्ट्यां ने निषेधियां, सूतर सिद्धांत रे माय ।
 थोडा सा परगट कळ, ते मुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[भवियश सेवो रे साध सयाण]

छोटो मोटो सूंस व्रत आदरो तो, पालज्यो रुडी रीत ।
 जे सूंस भांग ने भिष्ट हुवा ते, चिहू गति मे होसी फजीत रे ।
 भवियण सूंस म भागो लिंगारी, सूंस भांग्यां सूं घणी खुवारी रे ॥ भ० ॥
 टांको भले तो अनंत संसारी* ॥ १ ॥
 छोटैइ सूंस भागे छे तिणमें, हवाल पडे छे अतंत ।
 तो मोटा मोटा सूंस भागे छे तिणरो, होसी कुण विरतंत रे ॥ भ० २ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मैथुन ने परिग्रहो, त्यांने त्यागे छे आण बेरागो ।
 त्यारा त्याग जाण ने भागे, तिणरो छे पूरो अभागो रे ॥ ३ ॥
 छक्राय हणवा रा त्याग करे ने, पहख्यो साव रो सांग ।
 शीलादिक आदख्यो रुडी रीते, वले रोटी खाए छे मांग रे ॥ ४ ॥
 करडा करडा सूंस कीया छे त्यांने, भांग करे चकचूर ।
 ते वूडा छे वापडा जीव अग्यानी, ते पड गया भुगत सूं दूर रे ॥ ५ ॥
 केइ सूंस भांगी ने परणीजे पापी, वले चोथो व्रत देवे भांग ।
 तिण पापी जीव रा चिहूगति माहे, घणा निकलसी सांग रे ॥ ६ ॥
 चोथो- व्रत शील आदर ने भागे, तिण दीघी नरक नी नीव ।
 तिणने परमावांमी मार देसी जब, करसी नरक मे रीव रे ॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाया के अन्त में है ।

शीलव्रत आदर नें सर्व अस्त्री नें,
 तिणनें परणीजे तिणसूं करे गृहवासो,
 शील आदरियो जब सर्व अस्त्री नें,
 तिणसूं हीज पाछो करे ग्रहवासो,
 व्रत भांग नें भागल हुवा तिण,
 नरक निगोद तपो पाहुणो होय वेठो,
 सूंस तणा भागल छे त्यांनं,
 दुख भोगवसी नरक में निरंतर,
 सूंसा रो भागल संसार मांहेँ छले तो,
 ते तो नरक निगोद में भीकां खासी,
 अनंतैइ काले मिनष हुवे तो,
 आछो खाणो पीणो मिले नहीं तिणनं,
 वाल्हां रो विजोग पडे उगतां रे,
 आदर भाव कठे नहीं पामें,
 कहि कहि नें कितरा एक कहूं,
 छेदन भेदन पामें संसार रे मांहेँ,
 इहलोक मांहेँ पिण फिट्र फिट्र हुवे,
 मस्तक नीचो धाले लोकां में,
 लज्या रहित निरलज्या मानव,
 तिणनं परलोक नी परवाह नही छे,
 शील व्रत भांगो छे तिणरा,
 मानव नो भव खोए अग्यांती,
 पाप करे त्यांनं पापी कहीजेँ,
 पिण सूंस व्रत भांगे ते महापापी छे,
 तिणरे पाप उदे हुवे इण भव मांहेँ,
 रिधि संपत्ति रो छेहडो आवे इण भव में,
 जातिवंत लज्यावंत कुलवंत तिणरो,
 ते परभव ने लोकिक् सूं डरतो,
 भागल होय होय नें पाछा उठ्वा अनंता,
 सूंस भांगा ते पाछा सताव सूं सांवे,
 सूंस भांग नें भागल भिट्ट हुआ ते,
 काल कीयो आठोयां पडिकमियां विण,

थापी छे मा वेंन सामान।
 ते चिहुंगति में होसी हेंरान रे ॥ ८ ॥
 मूख सूं कही छे मा वेंन।
 ते किण विध पांमसी चेंन रे ॥ ९ ॥
 दीयो जीवत जनम विगाड।
 गयो जमारो हार रे ॥ १० ॥
 जक कठे नहीं होय।
 तिहां सुख नों संचार न कोय रे ॥ ११ ॥
 उत्कथो अनंतो काल।
 तिणरो वेगा न आवे निकाल रे ॥ १२ ॥
 गुंगो मूंगो दुखियारी होय।
 रहे हींजरतो सोय रे ॥ १३ ॥
 मिले दुगमण तपो संजोग।
 नित्य रहे संताप ने सोग रे ॥ १४ ॥
 तिणरा दुखां रो छेह न पार।
 तिणरो कहणी नावें विस्तार रे ॥ १५ ॥
 सूंस व्रत रो भांगणहार।
 तिणने सहु कोइ देवे धिक्कार रे ॥ १६ ॥
 सूंस भांगता मूल न लाजे।
 वकाखाई गीदड जिम भाजे ॥ १७ ॥
 पांचूं व्रत हुवा चकचूर।
 गयो बहती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 पाप्यां तणी पांत मांय।
 महा पाप्यां री पांत मांहेँ गिणाय रे ॥ १९ ॥
 तो ववें घणो रोय सोग।
 पडे वाल्हां तणो विजोग रे ॥ २० ॥
 कर्म जोगे गयो व्रत भागी।
 पाछो ऊठ खडो रहे जागी ॥ २१ ॥
 टाल्या आतम ना सर्व दोष।
 जणहिज भव पोहता मोप ॥ २२ ॥
 घर्म सूं होय गयो रीतो।
 तिणमें भव भव में होसी कुरीतो रे ॥ २३ ॥

केइ भागल भिष्टी छें भारीकर्माँ, ते तो भागल बघिया चावे ।
 घर छोडण रो बवो कीयो आप साये, तिणरोई बंधो भंगावे रे ॥ २४ ॥
 सूंस भागे ने भागल भिष्ट हुआ छे, त्यां सूं सावपणो लेणी नावे ।
 तिणने आपरा अवगुण तो मूल न सूंभे, उलटा सावां में दोष बतावे रे ॥ २५ ॥
 केइ टोला तणा टालोकड भिष्टी, त्यां सावां सूं पड्विजियो मिथ्यात ।
 ते पिण सावां मे दोष कहे अणहुंता, भूठ सूं न डरे तिलमात रे ॥ २६ ॥
 केइ सावपणो लेवा ने ऊठ्या, सूंस भांग रह्या घर मांय ।
 ते पिण सावां में दोष कहे अणहुता, निज अवगुण देवे छिपाय रे ॥ २७ ॥
 टोलां रा टोलाकड भागल भिष्टी, त्यांरा बोल्या री नही परतीत ।
 त्यांरी समदिष्टी ने संगत न करणी, आजिण मारग री रीत रे ॥ २८ ॥
 केइ तो सूंस भागे नें वेठा, केइ पेला रा सूंस भंगावे ।
 त्यांरी पिण आहिज रीत जांणों, नरक निगोद मे दुख पावे रे ॥ २९ ॥
 कोइ चढता परिणामां सूंस पाले छे, चढता परिणामां अधिक वेरागो ।
 चारित लेवा उदमी थया छे, मुगत जावा सूं चित्त लागो रे ॥ ३० ॥
 तिणरा कोइ सूंस भंगावण दुष्टी, करे अनेक उपाय ।
 ते डूव गया बापडा अग्यानी, त्याने भव भव मे दुख थाय रे ॥ ३१ ॥
 केइ सूंस भगावे उपसर्ग कर ने, दुख देइ विवध परकार ।
 चारित लेवा ने ऊठ्या छे तिणने, कर दे थोडा में खुवार रे ॥ ३२ ॥
 केइ चारित लेवा ऊठ्या छे तिणने, कु कलाकार देवे चलाय ।
 विषय री वातां सुणाए तिणने, संसार नां सुख बताय रे ॥ ३३ ॥
 कोइ चारित लेवा ने ऊठ्यो छे तिणने, भिष्ट करण ने तांम ।
 सावां में दोष अणहुता बताए, पाडे तिणरा परिणाम रे ॥ ३४ ॥
 सावां री आसता उतारण ने उणरा, परिणाम करे चक्रचूर ।
 चारितियां ने भिष्ट करे चारित सूं, ते तों गया बहती रे पूर रे ॥ ३५ ॥
 सुघ सावां ने असावु सरघा ए पापी, करे चारित सूं सिष्ट ।
 एहवा कांम करे ते मिथ्याती, भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे ॥ ३६ ॥
 सुघ सावां ने असावु कह्या तिण, मोटो कीयो अन्याय ।
 वले भिष्ट कीयो चारित लेवा सूं, ओ तो पूरो वूडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 छकाय हणवा रा त्याग करने, रोटी तिण माग ने खावे ।
 वले पांच आश्रव नां त्याग छे तिणरा, जोरी दावो करे भंगावे रे ॥ ३८ ॥
 पांच आश्रव नां त्याग भगाए पापी, सावपणो लेवा दे नांय ।
 तिण मोटो अकार्य कीवो अग्यानी, वूडो संसार समुद्र रे मांय रे ॥ ३९ ॥

साधु रो भेष उतरावे पापी, माथे वंवावे पाग ।
 छक्राय मारण ने सरु कीयो छे, तिणरो पिण जाणो पूरो अभाग रे ॥ ४० ॥
 भेष उतारण री कोइ करे दलाली, तिण दलाली सूं होसी खुराव ।
 ते पिण चिहुंगति मांहे गोता चासी भव भव मांहे जासी आव रे ॥ ४१ ॥
 परतणा सूस भंगावे पापी, मोप जावा री दे अतराय ।
 तिणरे चीकणा कर्म वंवे छे भारी, तिणसूं भव भव में दुख थाय रे ॥ ४२ ॥
 चारितीया ने मिष्ट करे चारित सूं, इणसूं इधको नहीं कोइ पाप ।
 एहवा पाप सूं जाए पडे नरक मांहे, तिहां होसी घणो सोग संताप रे ॥ ४३ ॥
 चारितिया ने मिष्ट चारित सूं, करवा ने, खोटी काडे मूढा सूं वांणी ।
 तिणरी परमाधामी नरक रे मांहे, जीम काडे जडां सूं तांणी रे ॥ ४४ ॥
 नरक तणा दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावणहारो ।
 छेदन भेदन मार अनंती, तिणरो कहितां न आवे पारो रे ॥ ४५ ॥
 उत्कष्टो रले तो काल अनंतो, नरक निगीद मभार ।
 अनंता काल में दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावण हार रे ॥ ४६ ॥
 कदा पाप उदे हुवे इण भव मांहे, तो वधे घणो रोग सोग ।
 वले छेहडो आवे रिष संपत केरो, पडें वाल्हां तणो विजोग रे ॥ ४७ ॥
 केइ तो आंवा होय जाअे इण भव में, जावक होय जाअे निराधार ।
 भीख भमता हुवे इण भव में, सूंसा रा भंगावण हार रे ॥ ४८ ॥
 केइ तो मर जाअें अन्न विहुणा, करता थर्का विल विलाट ।
 परतणा सूस भंगावे तिणरा, भव भव में हुवे एहिज घाट रे ॥ ४९ ॥
 सर्व संसार नां कांमा चालू कीया छे, सूंसा रो भंगावण हार ।
 तिण महामोटो पाप में सीर घाल्यो, ते तों बूड गयो काली धार रे ॥ ५० ॥
 इम सांभल उत्तम नरनारी, पेला रा सूस मति भंगावो ।
 इण कुकरम री दलाली मत करज्यो, जो जीव नें सुख चावो रे ॥ ५१ ॥
 कोइ धर्म थकी डिगितो हुवे तिणने, पाछो समझाय ने थिर कीजे ।
 यूं कीर्वां तो कर्म तणी निरजरा हुवे, दूवता ने पिण उद्धर लीजे रे ॥ ५२ ॥
 धर्म सूं डिगिता ने थिर कीयां सूं, टल जाए कर्म री छोट ।
 जो उत्कष्टो रस आवे तो जिण रे, वंवे तीर्थकर गोतर रे ॥ ५३ ॥
 सूस भंगावे तिण रा फल उपर, जोडी पाहू गाम मभार ।
 संवत अठारे नें चोपनैं वरसे, चेत सुद तेरस नें गुरवार रे ॥ ५४ ॥

रत्न : २१

सांभ धर्मी सांभद्रोही री ढाल

ढाल

[म्हें तो भार लियो सो लियो]

ऊंदर ऊपर मिनकी त्रापी जाण, जब जोगी ऊंदर री अणुकंपा आण ।
 तिण जोगी मंत्र पढ्यो ततकाल, ऊंदर ने कीयो घोघड विकराल ॥ १ ॥
 जब मिनकी न्हाट्टी घोघड ने देख, घोघड देख नें त्राप्यो स्वान वशेख ।
 जोगी घोघड नी करुणा लीघ, कुतो सिकारी ततक्षण कीघ ॥ २ ॥
 अहो कर्म गति इधकी देख, जोगी मोह्यो राग वशेख ।
 स्वान देखी चीत्तो त्राप्यो आय, जब स्वान नें जोगी सिह कीयो ताय ॥ ३ ॥
 जब चीत्तो नाठो सिधरी देख हाक, सीकंप हुवो पडी मन में धाक ।
 हिचे तिण सिह ने भूख लागो छे ताम, तिण जोगी ने खावा उठ्यो तिण ठाम ॥ ४ ॥
 जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच ऊंदर री जात ।
 इणरी मिनकी करती अकाले घात, ते म्हे बचा लियो साख्यात ॥ ५ ॥
 म्हारो उपगार कीयो न गण्यो तिलमात, म्हारी उलटी मांडी करवा घात ।
 म्हें नीच ऊंदर ने ऊंचा लियो, सिध नी पदवी दे ने मोटो कीयो ॥ ६ ॥
 नीच ने बघाख्यां आछो हुवे नाहि, ते भाख्यो छे नीति साख माहि ।
 तो इणने पाछो ऊंदर कळ भंत्र राल, सिध ने ऊंदर कीयो ततकाल ॥ ७ ॥
 ते ऊंदर जाबक हुवो अनाथ, तिण री मिनकी वले करवा मांडी घात ।
 जोगी देख अणुकंपा कीधी नाहि, किरतघन मुवो ते बिल रे माहि ॥ ८ ॥
 ज्यू नीच नें ऊंच पदवी जीखे नाहि, जोय देखो लोकिक् लोकोत्तर माहि ।
 किण ही राय बघाख्या अमराव दोय, वले कीया पदवी घर मोटा सोय ॥ ९ ॥
 यामे एक तो साम घर्मी सुवनीत, वले राजनीति जाणें सर्व रीत ।
 तिण सूं राय व्हो किणवार, पट्टो उत्तार काढ्यो देश वार ॥ १० ॥
 जब राय ऊपर इण न कख्यो रोस, जाण लियो निज कर्म रो दोष ।
 अलगो रहे तोही माने कीयो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार ॥ ११ ॥
 कदा राजा नें भीड पडी सुण कान, भीड आयो लेइ साथ सामान ।
 वले मुख सूं कहें म्हारा सिर घणी आप, सारो दीसे ते आप तणो परताप ॥ १२ ॥
 इम सुण ने तिण सूं रीइयो राय, आगे विचेइ घणो बघाख्यो ताय ।
 वले घणो बघाख्यो तिणरो मान, आगेवाण कीयो सगली ठाम ॥ १३ ॥
 बीजो हरामखोर लूणहराम, साम्ब्रोही रा दुष्ट परिणाम ।
 तिण सूं पिण राय व्हो किणवार, तिणरो पट्टो उत्तार काढ्यो देज वार ॥ १४ ॥
 ५४

जब ऊ घाडा करे बले करे उजाड, राय तपा देस में करे बियाड।
 फिर फिर मारे बले नगर नें ग्रान, बलि राय सूं सनकुब करे संग्रान ॥ १५ ॥
 राजा सूं जुष करे तांण तांण, देखे चीत्र वशाखां रा ए फल ज्ञान।
 ज्यां वशाख्यो त्यांतूं ही मांड्यो नद, उगार कीयो ते मूल गयो जद ॥ १६ ॥
 जब राजा अनेक करमें उजाय, हरानखोर नें पड्ड लीयो राय।
 इपरा हाथ पांव कांन नाक नें काट, पांम दोले फेर्यो रवे चाड ॥ १७ ॥
 बले दिवष परकारे दीयो मार, फिट रिट हुवो लोल मन्तार।
 एतो लोकिक कह्यो दिष्टांत, हिवे लोकोत्तर सुनो मन हांत ॥ १८ ॥
 एक आचार्य मोटो अगार, दोष ज्या सूं कीयो उगार।
 त्यांनं समकित पमाय नें कीया साध, बले ग्यान नगाय नें करी छे सनाड ॥ १९ ॥
 यामें एक तो गुर भगता सुवनीत, तिण नें अलल साध री रीत।
 षणो भणे तोही न करे मान, अदनीत री वात सुणे नही कांन ॥ २० ॥
 तिणें गुर करडे वचनें देवे सीख, तो पिण न करे क्रोध लिंगार ॥ २१ ॥
 बले गुर निलेदे बालंवार, तो पिण न दिगाडे नुव नो नूर।
 गुर नें देखी करडी निजर कळड, गुर दूरी राखे तो सुवे रहे दूर ॥ २२ ॥
 गुर राखे तो रहे गुर नीं हजूर, रात दिवष करे गुर रा गुप ग्रंन।
 सदा गुर सूं राखे जुष परिणाम, ते तों कदय न बाले बिसार ॥ २३ ॥
 याद आवे गुर नों कीयो उगार, अनुक्रमें पानें अविचल : मोल।
 एहवा गुणां करे कर कर्मा नो सोख, त्यांचा सुख रों कोड पार नहीं ॥ २४ ॥
 एहवा उंच जीव उंच पदवी लही, षणो भणे ज्यूं षणो अदनीत।
 इजा अदनीत री ऊंशी रीत, और अदनीत ने लगवे कांन ॥ २५ ॥
 गुर सूं पिण यो करे अभिमान, तो तुरत जागे अदनीत नें वेक।
 तिणें गुर सीख देवे चूको देव, क्रोध करे नें होय जाय त्पार ॥ २६ ॥
 षणो छेडवे तो करे बियाड, तिणें पिण देवे भरनाण।
 बले इजो अदनीत हुवो टोलां मांय, तिण अदनीत नें ले जावे साध ॥ २७ ॥
 गुर सूं मन भागे कूडी कर कर वाज, संका पिण नांणे तिलनात।
 गुर ना अवगुण बोले दिन रात, मूठी कर कर नुव सूं वात ॥ २८ ॥
 अदनीत वधारे अति ही मिथ्यात, अदनीत हुवे छे एहवा नेर।
 टोलां नें गुर सूं जागे देर, त्यांने छेडवियां बोले बिसरित ॥ २९ ॥
 कैयक एहवा हुवे अदनीत, अगे नरक निगोद में हाए मार।
 ते फिट फिट हुवो इहलोक मन्तार, तेहनों कहियां नावे पार ॥ ३० ॥
 षणो भमण करे संसार मन्तार

नीच ने वधाख्यां आछो नाँह, ज्युं अविनीत जाण लेजो मन माँह ।

इम सांभल नें उत्तम नर नार, अविनीत ने नीचनो सग निवार ॥ ३१ ॥



रत्न : २२

शील की नव बाड

ढाल : १

दुहा

श्री नेमीसर चरण जुग, प्रणमं उठ परमांत ।
 बावीसमां जिण जगत गुर, ब्रह्मचारी विख्यात ॥ १ ॥
 सुंदर अपछर सारिखी, विद्यु सम राजकुमार ।
 भर जोवन मे जुगति सूं, छोडी राजल नार ॥ २ ॥
 ब्रह्मचर्य जिण पालीयो, घरतां दूघर जेह ।
 तेह तणां गुण वरणव्या, पाभें भव जल छेह ॥ ३ ॥
 कोड केवली गुण करे, रसना सहस वणाय ।
 तो ही ब्रह्मचर्य नां गुण घणां, पूरा कह्या न जाय ॥ ४ ॥
 गलित पलित काया थई, तो ही न मूर्के आस ।
 तरुणपणे जे वरत घरे, हूं बलीहारी तास ॥ ५ ॥
 जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार ।
 थोडा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार ॥ ६ ॥
 वस दिष्टी दोहिलो, लाघो नर भव सार ।
 सील पाली नव बाढ सूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥
 सील मांहे गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
 थोडा सा परगट कळं, ते सुणजे चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[मन मधुकर मोही रखा]

सीयल सुर तरुवर सेवीये, ते वरतां मांहे गिरवो छे एह रे ।
 सीयल सूं सिव सुख पामीये, त्यां सुखां रो कदे नावें छेह रे ।
 सीयल सुर तरुवर सेवीये* ॥ १ ॥
 सीयल मोटो सर्व वस्त में, ते भाव्यो छे श्री भगवंत रे ।
 ज्यां समकित सहीत वरत पालीयो, त्यां कीयो संसार नां अंत रे ॥ सी० २ ॥
 जिण सासण वन अति भलो, ते नंदण वन अनुसार रे ।
 जिणवर वनपालक तेह में, ते कच्छणा रस मंडार रे ॥ ३ ॥
 विरख तिण वन में सील रूपीयो, तिणरें मूल दिढ समकित जाण रे ।
 साखा छें महावरत तेहनी, प्रति साखा अणुवरत वखाण रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधा साधवी श्रावक श्रावका, त्यांरा गुण रूप पत्र अनेक रे।
 महुकर करम सुभ बंध नों, परमल गुण वशेख रे ॥ ५ ॥
 उत्तम सुर सुख रूप फूलडा, सिव सुख ते फल जाण रे।
 तिण सीयल विरख रा जतन करो, ज्युं वेगी पांमों निरवाण रे ॥ ६ ॥
 संसार सीयल थकी उघरे, जो पाले नव कोटी अभंग रे।
 तो स्वयंभू रमण जितलों तिख्यों, सेष रही नदी गंग रे ॥ ७ ॥
 उत्तराधेन रें सोल में, बंभ समाही ठाण रे।
 कीधी तिण विरख नें राखवा, नव बाढ दसमों कोट जाण रे ॥ ८ ॥

ढाल : २

दुहा

हिवें कहुं छूं जू जूइ, सील तणी नव वाड ।
 वसमों कोट ते चिहुं दिसा, माहे ब्रह्मचर्य वरत सार ॥ १ ॥
 खेत गांव रे गोरवें, ते न रहे कीर्षा राड ।
 रहिसी तो खेत इण विघे, दोली कीर्षा वाड ॥ २ ॥
 ज्यूं ब्रह्मचारी विचरे तिहा, ठंम ठंम छे नार ।
 तिण कारण इण सील री, वीर कही नव वाड ॥ ३ ॥
 बाड न लोपे तेहने, रहे वरत अमंग ।
 ते बेरागी विरकत थका, ते दिन दिन चढते रंग ॥ ४ ॥
 हिवे पेहली बाड मे इम क्हाओ, नारी र्हें तिहां रात ।
 तिण ठामे रहिणो नही, र्हां वरत तणी हुवे घात ॥ ५ ॥
 अथवा नारी एकली, भली न संगति तास ।
 धर्मकथा कहवी नही, वेसी तिणरे पास ॥ ६ ॥
 तिण थी ओगुण उपजे, संका पांमें लोक ।
 आवे अछत्तो आल सिर, वले हुवे वरत पिण फोक ॥ ७ ॥
 तिण सू ब्रह्मचारी भणी, रहिणो छे एकंत ।
 हिवे कुण-कुण जायगां वरजवी, ते सुणजो मतिवंत ॥ ८ ॥

ढाल

[नखदल नी देखी]

भाव धरी नित पालीये, गिरउ ब्रह्म वरत सार हो । ब्रह्मचारी-
 जिण थी सिव सुख पांमीये, तू वाड म खडे लिगार हो ।
 आ पेंहली वाड ब्रह्मचर्य नी* ॥ ब्रह्मचारी १ ॥
 भंजारी संगत रमे, कूकड मूसग मोर हो । ब्र० ।
 कुसल किहा थी तेहने, मारे घांटी मरोड हो ॥ ब्र० आ० २ ॥
 अखी पसु निपूसक जिहां वसे, तिहा रहिवो नही वास हो ।
 तेहनी संगत वारीए, वरत नो करे विणास हो ॥ ३ ॥
 हाथ पांव छेदन कीया, कान नाक छेडा तास हो ।
 ते पिण सो वरस नी डोकरी, रहिवो नही तिहां वास हो ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सस सिगगार देवांगणा, आई चलावण तास हो ।
 तिण आगे तो चलीयो नहीं, तो ही रहिणों एकंत वास हो ॥ ५ ॥
 अस्त्री हुवें तिहां वासो रहें, कदा चल जायें परिणाम हो ।
 जब दिढ रहिणों दोहिलों, भिष्ट हुवें तिण ठाम हों ॥ ६ ॥
 सींह गुफावासी जती, रह्यो देखा चित्रसाल हो ।
 तुरत पख्यों वस तेहनें, गयो देस नेपाल हो ॥ ७ ॥
 कुल बालूरो साध थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो ।
 कोणक री गणका वस पख्यों, ते खलसी अंतो काल हो ॥ ८ ॥
 मंजारी जिहां उंदर रहें, ते घात पामे ततकाल हो ।
 ज्यू नारी तिहां ब्रह्मचारी रहें, भागे सीयल रसाल हो ॥ ९ ॥
 बाड सहीत सूष पालीयें, पूरीजे मन खांत हो ।
 आ सीख दीधी छें तो भणी, तूं रहिजे जायगां एकंत हो ॥ १० ॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड ।
जो नारी कथा कहे तेह सूं, हुवे वरत विगाड ॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन माय ।
ते ब्रह्मचारी नें नारी कथा, करवी सोभे नांय ॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो र]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह ।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सू नेह रे ।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद सुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयण ।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रग रे ॥ २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण ।
हंस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे ॥ ३ ॥
कूख छे जेहनी अति भली रे, बले अग उपंग अनेक ।
त्याने वाहवार न सरावणा रे, आंणी मन में विवेक रे ॥ ४ ॥
जथातथ कहितां थका रे, दोष नही छे लिगार ।
पिण बिना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे ॥ ५ ॥
नारी रूप सरावता रे, बधे छे विषे विकार ।
परिणाम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे ॥ ६ ॥
मली कुमारी नो रूप सांभल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम ।
त्यां सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो मांहोमाही तान रे ॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप सांभल्यो रे, चड्ढोट राजान ।
तिण कोसंबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे ॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूही हुओ खुराब ।
फिट फिट हुओ लोक में रे, घणी पडाइ आव रे ॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कने रे, द्रोपदी रा रूप री सुण बात ।
देव कने मंगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

नारी कथा सुणनें विगड्या घणां रे, त्यांरा कहितां न आवें पार।
 ते भिष्ट हुवां वरत भांग नें रे, ते हार गया जमवार रे॥११॥
 नीबू फल नीं वारता सुण्यां रे, मुख पांणी मेलें छें ताय।
 ज्यूं अस्त्री कथा सुणीयां थकां रे, परिणाम थोडा में चल जाय रे॥१२॥
 संका कंखा वितिगछा मन उपजें रे, सीयल वरत पालू के नाहीं।
 तिण सूं नारी कथा करवी नहीं रे, दूजी बाड रें माहीं रे॥१३॥
 बार बार अस्त्री तणी रे, कथा न कहणी ताम।
 ए बीजी बाड सुघ पालसी रे, ते पांमसी अविचल ठाम रे॥१४॥



ढाल : ४

ढुहा

हिवे तीजी बाड में इम कह्यो, ब्रह्मचारी नार सहीत ।
 एकण सय्या नही बेसवो, ए जिण सासण री रीत ॥ १ ॥
 अगन कुड पासैं रहे, तो प्रगले घृत नो कुम ।
 ज्यू नारी संगति पुरख नों, रहें किसी पर बंभ ॥ २ ॥
 ब्रह्मचारी जोगी जती, न करे नार प्रसंग ।
 एकण आसण बेसतां, थावे वरत नो भंग ॥ ३ ॥
 पावक गालें लोह ने, जो रहें पावक संग ।
 ज्यू एकण आसण बेसतां, न रहें वरत सूरंग ॥ ४ ॥

ढाल

[अभिया राखी कहे धाय नें]

तीजी बाड हिवे चित्त विचारो, नारी सहित आसण निवारो लाल ।
 एकण आसण बेठां कांम दीपें छे, ते ब्रह्मचारी ने आछो नही छे लाल ।
 तीजी बाड हिवे चित्त विचारो ॥* १ ॥
 एकण आसण बेठा आसंगो थावे, आसंगे काया फरसावें लाल ।
 काया फरस्यां विषे रस जागे, इम करतां जावक वरत भागे लाल ॥ ती० २ ॥
 पाट बाजोट सेज्जा सयारो जाणो, एहवा आसण अनेक पिछाणों लाल ।
 तिहा नारी सहीत बेसों मत कोइ, जिण वचनां साह्यो जोई लाल ॥ ३ ॥
 अखी सहीत बेसैं एकण आसण, तो वले लोक पडे छे विमासण लाल ।
 अछतोई आल दे करे फिट्तूरो, वले बोलें अनेक विध कूडो लाल ॥ ४ ॥
 जिन ठामे वेठी हुवे नारी, तिण ठामे न बेवे ब्रह्मचारी लाल ।
 बेसे तो अंतर भूहरत टाली, वेद सभाव संभाली लाल ॥ ५ ॥
 नारी वेद रा पुदगल तिण थी, नर वेद विकार वेदें जिण थी लाल ।
 यूहीज नारी ने पुरख सूं जाणो, मांहीमां वेद विकार पिछाणो लाल ॥ ६ ॥
 नारी फरस वेदां हुवे भोग रो रागी, जब जावे वरत सूं भागी लाल ।
 इण कारण एकण आसण वेसणो नाही, नारी फरस सूं डरणों मन मांही लाल ॥ ७ ॥
 श्री राणी सम्भूत बांचो आणी मन रागों, कर फरस मुनी तन लागों लाल ।
 तिण चारित्र खोय नीहांणो कीषो, दुरगत नो पंथ लीषो लाल ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते देव थई चक्रवत हुवों, भोग माहें ग्रिधी थकों मूंजो लाल ।
 सातमीं नरक माहें जाय पडीयो, पाप सूं पूर्ण भरीयो लाल ॥ ६ ॥
 नारी फरस वेद्यां सूं ओगुण धनेक, तिण सूं आसण न बैसणों एक लाल ।
 संका कंखा वितिगछा उपजें मन माहीं, सील वरत पालूं के नाहीं लाल ॥ १० ॥
 ए बाड लोपी तिण बात विगोई, तिण दीयो ब्रह्म वरत खोइ लाल ।
 ते नरक निगोद माहें जाय पडीया, ते संसार में रखबिख्य लाल ॥ ११ ॥
 काचर कोहलो फाड्यां कर फाटों, तिण सूं वाक तुट हुवें आठो लाल ।
 ज्यूं अत्त्री सूं एकण आसण बैठां तांम, ब्रह्मचारी रा चलें परिणाम लाल ॥ १२ ॥
 मा बेंन बेठी पिण इम हीज जाणों, एकण आसण मतीय बैसाणों लाल ।
 त्यां सूं पिण भाग गया छें अनंत, ते भाष्यो छें श्री भगवंत लाल ॥ १३ ॥
 इम सांभल तीजी वाड म लोपो, ब्रह्मचर्य में यिर पग रोपो लाल ।
 तो सिव रमणी नें वेगी वरसों, आवागमण न करतों लाल ॥ १४ ॥

ढाल : ५

दुहा

नारी रूप नहीं विरखणो, ए जिण कही चोयी वाड ।
ए सुव मान जे पालवी, तिण सफल कीयो अवतार ॥ १ ॥
चित्र लिखित जे पृतली, ते पिण जोयवी नांहि ।
केवलग्यानी हम कह्यो, दसावेकालिक मांहि ॥ २ ॥

ढाल

[मोहन मूदछी ते गयो]

मनहर इंद्री नार नी रे, तिण वीठाई ववे विकार ।
मिरग जाल ज्युं नर भणी रे, पास रच्यो संसार ।
नारी रूप न जोईये, जोईये नहीं घर राग* ॥ १ ॥
नारी रूप दीवलो रे, भोगी पुरप पतंग ।
भसे सुख रे कारणे रे, दामें कोमल अंग ॥ ना० २ ॥
कांमणगारी कांमणी रे, वस कीयो सर्व संसार ।
आखी अणी कोयक रहां रे, सुर नर गया सर्व हार ॥ ३ ॥
हमें रंभा सारिणी रे, वले मीठा बोली हुबे नार ।
ते निजर भरे ने निरखता रे, वरत ने होवे विगाड ॥ ४ ॥
रूप में रुडो देखने रे, माहि पडे काम अंध ।
सुख भोगे जाणे नहीं रे, ते पाडे दुरगत नों बंध ॥ ५ ॥
रूप घणों रलीयांगो रे, वले अपछरें रे उणीयार ।
ते देखे रीझी किसूं रे, आ मल मूतर रो भंडार ॥ ६ ॥
अक्षुच अपवित्र नों कोयलो रे, कलह काजल नों ठाम ।
बारें श्रोत वहे सवा रे, चरम दीवडी नाम ॥ ७ ॥
देह उदारीक कारमी रे, खिण में भंगुर थाय ।
सपत घात रोगकुली रे, जतन करतां जाय ॥ ८ ॥
अबला इंद्री निरखतां रे, बाधे विधे रस पेम ।
राजमती देखी करी रे, तुरत डियों रहनेम ॥ ९ ॥
नारी वेद नरपति थयो रे, वले चवू कूसीलीयो ते थाय ।
बाड भांग लाखां गवां रे, खलीयो रूपी राय ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सेठ घरे जांमो लीयो रे, नाम इलापुतर जाण ।
 ते नटवी रूपें मोहीयो रे, ते वसीयो नटवां घरे आण ॥ ११ ॥
 ते वांस उपर चढ नाचतो रे, ते मन माहें हरष न मात ।
 ओ वांछें घन राय नों रे, राय वांछें इणरी घात ॥ १२ ॥
 मणरथ वंघव मारीयो रे, मेणरेहा रो देखी रूप ।
 मरण पांम्यो त्तिण जोग सूं रे, वले जाय पख्यो अंव कूप ॥ १३ ॥
 अरणक संजम आदख्यो रे, दीवी संसार नें पूठ ।
 ते नारी रूपें मोहीयो रे, ते नारी लीयो त्तिण लूट ॥ १४ ॥
 एक पत्री आणों लेजावतां रे, मारग माहें मिलीयो चोर ।
 त्तिणें पत्री वांण वाया घणां रे, चोर फरसी सूं न्हांख्या तोड ॥ १५ ॥
 हिवें एक वांण बाकी रह्यो रे, जव अस्त्री निज रूप दिखाय ।
 ते चोर त्तिणरे रूप विलंवीयो रे, जव पत्री वांण सूं दीयो बाय ॥ १६ ॥
 चोर पख्यो ते देखनें रे, पत्री करवा लागों मांण ।
 चोर कहें गरवे किसूं रे, म्हारि नारी नेणां रा लाग-वांण ॥ १७ ॥
 इत्यादिक व्हू मांनवी रे, त्यारो कहितां न आवे पार ।
 जे नारी रूप में रीभीवा रे, ते गया जमारो हार ॥ १८ ॥
 नारी रूप कांनें सुणी रे, भिष्ट हुवा छें अनेक ।
 तो दीठां गुण होसी किहां रे, समभों वांण विवेक ॥ १९ ॥
 काची कारी आंख नीं रे, सूर्य सांहों जोयां अंव होय ।
 ज्यूं नारी नेणा निरखीयां रे, ब्रह्म वरत देवे खोय ॥ २० ॥
 ब्रह्मचारी निरखे मती रे, नारी रूप तिणगार ।
 आ सीख दीवी छें तो भणी रे, रखे चूकेंला चोथी वाड ॥ २१ ॥

ढाल : ६

ढुहा

भीत परेच ताटी आंतरे, जिहां रहिता हुवें नर नार ।
तिहां ब्रह्मचारी ने रहिवो नही, ए जिण कही पांचमी वाड ॥ १ ॥
संजोगी पासे रहे, ब्रह्मचारी दिन रात ।
तेह तणा सव्द सुण्यां थका, हुवें वरत नी घात ॥ २ ॥
जेवर नेजर खलकती, ते सव्द पडे तिहां कांन ।
जव चल जाअे ब्रह्म वरत थी, लागे विपे सूं घ्यान ॥ ३ ॥

ढाल

[आखण्ड समकित उचरे रे तात]

वाड सुणों हिवे पांचमी रे लाल, सील तणी रुखवाल ब्रह्मचारी रे ।
ज्यं वरत कुसल रहे ताहरों रे, वले नावे अछतो आल ।
वाड सुणो हिवे पांचमीं रे लाल* ॥ १ ॥
भीत परेच ताटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरप रहिता हुवे रात ।
तिहां कुण कुण दोपण उपजे रे लाल, ते सांभलजे चितलाय ॥ वा २ ॥
केल करे निज कत सू रे लाल, ते बोलती जगावे छे कांम ।
कुई सव्द करे तिहां रे लाल, रुदन सव्द करे तिण ठांम ॥ ३ ॥
कोयल जिम बोले कत सूं रे लाल, गावे मधूरे साद ।
काम वसे हडि हडि हसे रे लाल, बोलती करे उनमाद ॥ ४ ॥
वले थणित क्रंदित सव्द तिहां रे लाल, वले विलपति सव्द हुवे तांम ।
तिहा रहितां एहवा सव्द सांभले रे लाल, जव चल जाअे तुरत परिणांम ॥ ५ ॥
गाज तणो सव्द सुणी रे लाल, रित पांमे पपहीया मोर ।
ज्युं भोग समे रा सव्द सांभल्यां रे लाल, लागे वरत ने खोड ॥ ६ ॥
इम सांभल ने रहिवो नही रे लाल, सव्द पडें तिहां कांन ।
ए पांचमी वाड पालीयां रे लाल, पांमे मुगति निवांन ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।



ढलः ७

दुहा

हिवें छ्ठी बाड में इम कह्यो, चंचल मन म डिगय ।
 खाधो पीधो विलसीयो, ते मत याद अणाय ॥ १ ॥
 मन गमता भोग भोगव्या, ते याद कीयां गुण नाहि ।
 ए बाड भांग्यां वरत खंड हुवें, वले अजस हुवें लोक माहि ॥ २ ॥

ढल

[२ जीव मोह अनुकम्पा नाशीए]

हाव भाव सब्द नारी तणा, त्यां सुणीयां बधे विषें विकार रे ।
 एहवा सब्द आगें सुणीया हुवें, त्यांनं याद न करणा लिंगार रे ।
 छ्ठी बाड सुणो ब्रह्मचर्य नी* ॥ १ ॥
 बर्ण गोरविक सरीर नों, रूप सोभायमान अतंत रे ।
 एहवी अल्ली सूं भोग भोगव्या, चीतारें नही वरतचंत रे ॥ २ ॥
 गंध चोवा नें चंदणादिक, रस मधूरादिक अनेक रे ।
 ते पिण अल्ली संघातें भोगव्या, ते पिण याद न करणों एक रे ॥ ३ ॥
 हाथ पग सुखमाल नारी तणा, सुखमाल सरीर सुखदाय रे ।
 एहवी अल्ली सूं कीला करी, ते चीतारें नही मन मांय रे ॥ ४ ॥
 सब्द रूप गन्व रस नें फरस, पांच परकार नां काम भोग रे ।
 ते तों अल्ली संघातें भोगव्या, त्यांनं याद करणा नही जोग रे ॥ ५ ॥
 रम्या सारी पासा सोगटादिक, जूवटादिक रामत अनेक रे ।
 ते अल्ली संघातें रामत करी, त्यांनं याद न करणी एक रे ॥ ६ ॥
 सब्द सुणीयां भागे बाड पांचमीं, रूप सूं चोथी बाड विगाड रे ।
 फरस सूं भागे बाड तीसरी, अल्ली कथा सूं दूजी बाड रे ॥ ७ ॥
 एक याद करे यां माहिलों, तिण सूं भोगें छ्ठी बाड रे ।
 तो सगलाई याद कीयां थकां, ब्रह्म वरत ने हुवे विगाड रे ॥ ८ ॥
 मन गमता काम भोग भोगव्या, तिण सूं हरखत हुवें सभाल रे ।
 तिण वाड सहित वरत खंडीया, पांणी किम रहें फूटां पाल रे ॥ ९ ॥
 पूर्वला काम भोग चीतार नें, कीवी रेणा देवी सूं पीत रे ।
 जब जिन रिष नें जब न्हांखीयो, रेणा देवी माखो वेंरीत रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जहर सहीत चास पीये चालीयां, त्यांरो वाकोई न हुवो वाल रे ।
 त्यांने घणां वरसां पळे कह्यो, तिण सूं मरण पांम्यो ततकाल रे ॥ ११ ॥
 भाई ने पवन मूंज्यो देख ने, भाई ने न जणायों ताय रे ।
 जणायो जिण दिन घसकों पडे, ततकाल छोडी तिण काय रे ॥ १२ ॥
 ए मूंजा जहर याद अणावीयां, पांमी अणचित्ती असमाघ रे ।
 ज्यूं भागे ब्रह्मचारी सील सूं, कांम भोग नें कीयां याद रे ॥ १३ ॥
 कांम भोग ने याद कीयां थकां, संका कंखा उपजे मन माय रे ।
 सील पालूं के पालूं नहीं, वले जावक पिण मिष्ट थाय रे ॥ १४ ॥
 इम सांभल ने नर नारीयां, मत लोपो छठी वाड रे ।
 तो सील वरत सुघ नीपजे, तिण सूं हुवें खेवो पार रे ॥ १५ ॥

ढाल : ८

दुहा

निज निज अति सरस आहार नै, वरध्यों नादनीं चाड ।
 ते बहुचारी निज भोगें, जो वरन नै हूँ विगाड ॥ १ ॥
 अत्राधिक भूँ पूगें नखों, एहूवो नागि आहार ।
 ते चातुं बीगवें अति वनीं, जिग भूँ वषे छे विकार ॥ २ ॥
 खाटा खात चरनरा, बले नीज सोदन जेह ।
 बले विविध पने रस नीरजें, ने रसना प्रव रम जेह ॥ ३ ॥
 जेहनीं रसना वष नहीं, ते चाहें चरम आहार ।
 ने वरत नागि भागल हूँ, खोंवे हूँ वरत सार ॥ ४ ॥

ढाल

[हूँ तों कळं चरनं दंडनं ।]

वदनां करें आहार उचारनां, हुत विन्दू सरतो आहार नागि रे ।
 एहूवो आहार सरस चांद चांद नै, निज निज न करें क्लृपाये रे ।
 वद नुरगी काया रोष म्हीन छे, ने करें सरस आहारो रे ।
 ने आहार रुडी रीत परसनं, जिग भूँ वषे अंत विकारो रे ॥ १ ॥
 विकार वध्यां हूँ वरत नै, बोष अनेक विष आयें रे ।
 बले अंग श्लेष्मा उज्जें, जाकर वरत निग नागि रे ॥ २ ॥
 सरस आहार निज चांन नीयां, वरत भगि विपहे डेहूं लोपो रे ।
 संसार में दुखियों हूँ, वदतो जाए रोग नै सोपो रे ॥ ४ ॥
 वय नुरगी काया कीन पडीं, ते करें सरस आहारो रे ।
 जो पेट फाटे पथ्यों डल वलें, बले जावें अजीर्य इकारो रे ॥ ५ ॥
 बले विविध पने रोग उज्जें, निज सरस आहार कीयां नागि रे ।
 अकाले मरे वन लोष नै, प्रछे होय जाए अंत संसारो रे ॥ ६ ॥
 वय नुरगी रो वनीं इष विष नरें, निज नीयां सरस आहारो रे ।
 जो वृद्धा रो कष्टियो विन्दू, इनरे पेट तुल्य झलें नारो रे ॥ ७ ॥
 इष हूँ विविध पत्रवांन नै, सरस आहार भोगवे रहूं नुरीं रे ।
 पात सनन कहों उत्तरावेन में, ने साधना की विन्दूतो रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक पाया के अन्त में है ।

चक्रवत नी रसवती भोगवे, भूदेव ब्राह्मण छोडी लाजो रे ।
 काम चिटवणा तिण ल्ही, वेन बेटी सू कीयों अकाजो रे ॥ ९ ॥
 सरस आहार तणो लपटी घणो, मंगू आचार्य तेहो रे ।
 मरने गयों व्यंतरीक में, संजम लारे उडई खेहो रे ॥ १० ॥
 वले सेल्ला रायं रिषीसरु, सरस आहार तणो हुवो ग्रिची रे ।
 ते जिभ्या वस पडीये थके, किरिया अलगी घर दी रे ॥ ११ ॥
 कुडरीक रस लोलपी थकों, पाछो घर में आयो रे ।
 भारी आहार सू रोग उपज मूओ, पडीयो सातमी नरक में जायो रे ॥ १२ ॥
 इत्यादिक बहू साव नें साधवी, लोपी ने सातमी वाडो रे ।
 ब्रह्मचर्य वरत खोय ने, गया जमारो हारो रे ॥ १३ ॥
 सनीपातीयो हूच मिश्री पीये, तो सनीपात वधतो देखो रे ।
 ज्यू ब्रह्मचारी ने सरस आहार सूं, विकार ववे छे वसेखो रे ॥ १४ ॥
 इम सांभल ब्रह्मचारीयां, नित भारी म करजो आहारो रे ।
 शील वरत सुघ पाल ने, आवा गमण निवारो रे ॥ १५ ॥
 सरस आहार तो जीहांई रह्यो, लूखोई पिण आहारो रे ।
 चांप चांप दिन प्रते करणों नही, ते कहिसूं आठ्मी वाडो रे ॥ १६ ॥

ढाल : ९

दुहा

आठमीं बाड में इम कह्यो, चांप चांप न करणो आहार।
 प्रमाण लोप इधको करे, तो वरत नें हुवें विगाड ॥ १ ॥
 अति आहार थी दुख हुवें, गलें रूप बल गात।
 परमाद निद्रा आलस हुवे, बले अनेक रोग होय जात ॥ २ ॥
 अति आहार थी विषें बघें, घणोइज फाटें पेट।
 धान अमाउ उरतां, हांडी फाटें नेट ॥ ३ ॥
 केइ बाड लोपे विकल थकां, करसी इधक आहार।
 त्यारे कुण कुण ओगुण नीपजें, ते सुणजो विसतार ॥ ४ ॥

ढाल

[विमल केवती रंक रे चम्या नगरी]

भर जोवन रे मांहि रे, देह निरोगी हुवें।
 मांहि तेजस रो जोरो घणों ए ॥ २ ॥
 ते चांपे करे आहार रे, ते पचें सताव सूं।
 तो विषें बघें तिण रे घणी ए ॥ २ ॥
 जब गमता लागें भोग रे, ध्यान माठो रहे।
 बले गमती लागे अस्त्री ए ॥ ३ ॥
 हूं सील पालूं कें नांहि रे, ए संका उपजें।
 पछें भोग तणी बंछां हुवें ए ॥ ४ ॥
 मोनें लाम होसी कें नांहि रे, सील वरत पालीयां।
 ए पिण सांसो उपजे ए ॥ ५ ॥
 जब भिष्ट हुवें वरत भांग रे, भेष मांहें थकां।
 केइ भेष छोडी हुवें गृहस्थी ए ॥ ६ ॥
 जे चांपे कीचां आहार रे, पचें आछी तरें।
 तो इसडो अनरथ नीपजें ए ॥ ७ ॥
 के कां रं हुवें रोग रे, आहार इधको कीयां।
 बघे असाता वेदनी ए ॥ ८ ॥
 फाटें पेट अतंत रे, बंध हुवें नाडीयां।
 बले सात लेवे अबलो थकां ए ॥ ९ ॥

बले हुवे अजीरण रोग	रे,	मुख वासैं बुरों । पेटें भालें आफरो ए ॥ १० ॥
बले उठें उकाला पेट	रे,	चालें कलमली । बले छूटें मुख थूकणी ए ॥ ११ ॥
डील फिरें चकडोल	रे,	पित घूमे घणां । चालें मुजल बले मुलकणी ए ॥ १२ ॥
आवें माठी घणी हकार	रे,	बले आवें गूचरकां । जब आहार भाग उलटो पडें ए ॥ १३ ॥
बले चाले मरोडा पीड	रे,	पेट दुखें घणो । लोही ठाण फेरो हुवें ए ॥ १४ ॥
बले नाड्यां में हुवें रोग	रे,	ते आहार मल्लें नहीं । ज्यूं खावे ज्यूं नीकले ए ॥ १५ ॥
बले ताव चढ़ें ततकाल	रे,	बंघ हुवें मातरो । आहार इषको कीयां थका ए ॥ १६ ॥
घणी देही पडे कथाय	रे,	आहार भावें नही । जब मांस लोही दिन दिन घटें ए ॥ १७ ॥
खीण पडे जब वेह	रे,	निबलाई पडें । हाथ पगां सोजों चडे ए ॥ १८ ॥
जब ठमे अतीसार	रे,	ओषध करें घणां । दिन दिन फेरो इषको हुवे ए ॥ १९ ॥
पछे जावक छूटे अन	रे,	चूकें घर्म ध्यान थी । बले बोलें घणों दयामणो ए ॥ २० ॥
बले हुवे सांस ने खास	रे,	जलोदर बघें । सून बून देही पडे ए ॥ २१ ॥
बवे अपचों रोग	रे,	आहार पचे नही । ओषध को लागे नही ए ॥ २२ ॥
बले उपजें दाह सरीर	रे,	बलण लागी रहे । पेट सूल चालें घणी ए ॥ २३ ॥
वेदन हुवें आख नें कांन	रे,	खाज हुवें घणों । बले रोग पीतंजर उपजें ए ॥ २४ ॥
इत्यादिक बहु रोग	रे,	उपजें आहार थी । कहि कहि नें कितरो कहूं ए ॥ २५ ॥

ए हृदय आहार श्री रोग दे जक चान लें कर नों।
 कूड करत वरें इनों ए॥ २२॥
 दे चाने कर्ण आहार दे छित्री नें दे।
 तानें सार दोलने दोहने ए॥ २३॥
 नोड सार हों एन दे श्री आहार इकरे करे।
 जो इनों कूडे दिन लरे ए॥ २४॥
 जो निरले नहें अनेक दे कू आहार इनों करे।
 जो ही कह्यो न मने केहने ए॥ २५॥
 केड पूरन नरें निर दे दे इकरो चार नें।
 जव पांगी पूरो नरें नही ए॥ २६॥
 जव तिरया कण अंत दे दे फटे इने।
 जव उल्लसत करे इनों ए॥ २७॥
 बले लाने अंदला डील दे जक नही केहने।
 अक इनी बले केहने ए॥ २८॥
 इसवी पठे विनत दे तो ही छित्री नें दे।
 निर अक्युय छेहें नही ए॥ २९॥
 जव रोग पीडले अंग दे नरें नारी करे।
 श्री दिन वरें गता नें ए॥ ३०॥
 पठे च्याहं गति दे नाहि दे नमन करे इनों।
 अंत काल बुव नोने ए॥ ३१॥
 कूंडरीक दे उनतों रोग दे आहार इकरो कीने।
 वे नरें गयो नरक जतनी ए॥ ३२॥
 हांडी फटे तें दे इकरो उरीयो।
 तो दे न फटे दिन विरे ए॥ ३३॥
 क्लृप्तारी इन बाप दे इकरो नही जीने।
 अजोदरीय रुप इनों ए॥ ३४॥
 ए उदन अपोदरी तन दे वरुतां दोहिली।
 वैराग विनां हूँ नही ए॥ ३५॥
 ए नही आनीं बाड दे क्लृप्तारी नरी।
 चोहें चित्त आपबलो ए॥ ३६॥



ढाल : १०

दुहा

नवमीं बाड ब्रह्मचर्य नी, विभूषा न करणी अंग ।
विभूषा कीयां थकां, थाये वरत नों भंग ॥ १ ॥
सरीर विभूषा जे करे, ते करे तन सिणगार ।
बले रहे घटाख्या मठारीया, त्या लोपी ब्रह्म व्रत बाड ॥ २ ॥
सरीर विभूषा जे करें, ते संजोगी होय ।
ब्रह्मचारी तन सोभवें, ते कारण नही कोय ॥ ३ ॥
बाड भांग्यां किण विष रहे, अमोलक सील रतन ।
तिण सूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य नां, किण विष करें जतन ॥ ४ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

सोभा न करणी देह नी रे लाल, नही करणो तन सिणगार ब्रह्मचारी रे ।
पीठी उगटणों करणो नही रे लाल, मरदन नही करणो लिंगार ब्रह्मचारी रे ।
ए नवमी बाड ब्रह्म वरत नी रे लाल* ॥ १ ॥
ठंडा उन्हा पांगी थकी रे लाल, मूल न करणो अंगोल ।
केसर चंदण नही चरचना रे लाल, दांत रगे न करणा चोल ॥ २ ॥
बहू मोलां ने उजला रे लाल, ते वसत्र ने पेहरणा नांहि ।
टीका तिलक करणा नही रे लाल, ते पिण नवमी बाड रे मांहि ॥ ३ ॥
कांकण कुंडल ने मूंदळी रे लाल, बले माला मोती ने हार ।
ते ब्रह्मचारी पेंहरें नही रे लाल, बले गेहणा विवध परकार ॥ ४ ॥
नही रहणो घटाख्यां मठारीयो रे लाल, केसादिक ने समार ।
बले वसत्रादिक पिण पेहरने रे लाल, मूल न करणो सिणगार ॥ ५ ॥
विभूषा अंग छें कुसील नों रे लाल, तिण सूं चीकणा करम बंधाय ।
तिण सूं पडें संसार सागर मझे रे लाल, तिणरो पार वेगों नहीं आय ॥ ६ ॥
सिणगार कीयां रहे तेहनें रे लाल, अस्त्री देवे चलाय ।
मिष्ट करें सील वरत थी रे लाल, ठाळो कर देवें ताय ॥ ७ ॥
रतन हाथे आयो रांक रे रे लाल, ते दीठां खोस ले राय ।
ज्यूं ब्रह्मचारी विभूषां कीयां रे लाल, अस्ती सील रतन खोसे ताय ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ब्रह्मचारी इम सांभली रे लाल, सील विभूषा मत करजे लिगार।
 ज्युं सीयल रतन कुसलें रहें रे लाल, तिण सूं उतरें भव जल पार ॥ ६ ॥



ढाल : ११

दुहा

ए नव बाड कही ब्रह्मचर्यं री, हिवें दसमों कहे छे कोट ।
 ए बाड लोपी वीटे रह्यो, तिणमें मूल न चाले खोट ॥ १ ॥
 कोट भांगा जोखो छे बाड ने, बाड भांगा वरत ने जाण ।
 तिण सूं कोट भिलण देवे नही, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २ ॥
 कोट भांग वधारा पडीयां थकां, बाड भांगता किती एक वार ।
 तिण सूं वशेष कोट रो, करवो जतन विचार ॥ ३ ॥
 सेर कोट सेठो हुवे, तो चिंता न पामें लोक ।
 ज्यूं अडिग कोट ब्रह्मचर्यं रो, तिण सूं सील न पामें दोख ॥ ४ ॥
 ते कोट करणो किण विध कह्यो, किण विध करणो जतन ।
 ते ब्रह्मचारी विवरा सुच, साभलजो एक मन ॥ ५ ॥

ढाल

[ढाम मुजादिक नी डोरी]

मन गमता सब्द रसाल, अण गमता सब्द विकराल ।
 गमता सब्द सुण्यां नही रीभें, अण गमता सुण्यां नही खीजें ॥ १ ॥
 काला नीला राता पीला धोला, पाच परकार ना रूप बोहला ।
 राग नाणें भला रूप देख, माठा देख न आणणो देख ॥ २ ॥
 गध सुगंध दुगध छे दोय, गमता अण गमता सोय ।
 गमता सू नही रति सोय, अण गमता सूं अरति न कोय ॥ ३ ॥
 रस पाच परकार नां जाणों, तयारा स्वाद अनेक पिछाणो ।
 गमता सूं राग न करणो, अण गमता सूं धेष न धरणो ॥ ४ ॥
 फरस आठ परकार नां ताम, तयारा जूआ जूआ छे नांम ।
 रागी गमता रो अण गमता रो घेखी, यां दोयां सूं रहणो निरापेखी ॥ ५ ॥
 सब्द रूप गन्व रस फरस, भला भूंडा हलका भारी सरस ।
 यां सूं राग धेष करणो नांही, सील रहसी एहवा कोट मांही ॥ ६ ॥
 सील वरत छे भारी रतन, तिणरा किण विध करणा जतन ।
 सगला व्रतां माहे वरत मोटो, तिणरी रिष्या भणी कह्यो कोटो ॥ ७ ॥
 जो सन्दादिक सू हुवे राजी, तो कोट जाअे छे भाजी ।
 कोट भांगां बाड चकचूरो, ब्रह्म वरत पिण पर जाअे पूरो ॥ ८ ॥

तिण सूं कोट रा करणा जतन, तो कुसले रहे सील रतन ।
 टल जाअें सगल दोख, जब पामें अविचल मोख ॥ ६ ॥
 इम सांभल नें ब्रह्मचारी, तूं कोट म खंडें लिगारी ।
 ज्यूं दिन दिन इघको आणन्द, इम भाष्यों छें वीर जिणंद ॥ १० ॥
 ए कोट सहित कही नव बाड, ते सांभल नें नर नार ।
 इण रीत सूं ब्रह्म वरत पालों, ज्यूं मिटे सर्व आल जंजालो ॥ ११ ॥
 उतरावेन सोलमां मभारों, तिणरो लेई नें अनुसारो ।
 तिहां कोट सहीत कही नव बाड, ते संखेप कह्यों विसतार ॥ १२ ॥
 इगतालीसैं नें समत अठार, फागुण विद दसमीं गुरवार ।
 जोड कीधी पाढू मभार, समभावण नें नर नार ॥ १३ ॥



रत्न : २३

समकित री ढालां

ढाल : १

[म्हरो मनडो उमाहो प्रभुजी नें बादवा]

राय सिद्धार्थ नें घर जनमिया, रांणी तिसलादे अंग जात ।
छेह्ला तीर्थकर श्री महावीर जी, चावा तीनूं लोक विख्यात ।
श्रीवीर जिणेस्वर सुणज्यो मोरो वीनतीः ॥ १ ॥

त्यां अथिर संसार छोडी संजम लियो, तोड्या घनघातिया कर्म ।
तीरथ बलायो हो केवली थयां पछे, परूपियो निरवद्य धर्म ॥ श्री० २ ॥

चवदें सहस्र मुनिश्वर तारिया, बले आयां छतीस हजार ।
पाप अठारे हो सर्व पचखाय नें, उताखा भव पार ॥ ३ ॥

एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक हूवा, त्यांनं कीया वारें व्रत धार ।
श्रावका तीन लाख अठारे हजार नें, त्यांरो पिण कीयो उदार ॥ ४ ॥

ग्यांन दरसण चारित तप निरमला, ए गिवपुर मारग च्यार ।
ए साव श्रावक नो धर्म बताय नें, पहुंचता मुक्त मकार ॥ ५ ॥

अवेन अठवीसमां उत्तरावेन में, मोष मार्ग कहा च्यार ।
ग्यांन दरसण चारित ने तप विनां, नहीं श्रद्धुं धर्म लिगार ॥ ६ ॥

देव अरिहत निग्रंथ गुर मांहरे, केवलीए भाखित धर्म ।
ए तीनूंई तत्व सेंटा कर भालिया, ओर छोड दीया सहु भर्म ॥ ७ ॥

ए तीनूं ही तत्व मांहि जिणजी री आगन्या, मै कर लीवी परमाण ।
धर्म शुक्ल ध्यान ध्यावे आ आत्मा, हूं इम पालूं तुम आंण ॥ ८ ॥

केवल ग्यांनी भरत में को नहीं, बले पूर्व ग्यांन विच्छेद ।
कुत्रवी कवाग्रही उट्या अति घणा, त्यां घाल्यो धर्म में भेद ॥ ९ ॥

बले उंचा तो कुल नां हो मोटा राजव्यां, त्यां छोड दीयो जिण धर्म ।
बले लिगडा नें लिगडी साधु रा भेष में, त्यांरो पिण निकल गयो भर्म ॥ १० ॥

द्रव्य जेनी केह साधु कहावतो, त्यां सूं चरचा कीजे जाय ।
त्यां शरणो लियो हो सगला दरशाण्या तणो, त्यांनं किम आणिजे ठाय ॥ ११ ॥

जिण धर्म माहे साहेबा विखो पड्यो, मांहे राजा न दीसे एक ।
गुण विनां भेष बज्यो भगवानं रो, त्यांरो सरवा चाल अनेक ॥ १२ ॥

एक एक री उत्तारे मांहेमांहि आसता, वंदना रा सूंस दिराय ।
न्याय री चरचा रो कांम पड्यां थको, भूठ बोलें एक होय जाय ॥ १३ ॥

भ्यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरी सरवा रो मुंह मायो को दीसें नहीं, चले वोलें घणा विपरीत ।
 पिण मांहरे तो आवार छे प्रभु ए बडो, एक सूतर री परतीत ॥ १४ ॥



बाल : २

[कद ठाकुर फुरमायो]

देव तणो आचार न जाणें, गुर री खवर न काई रे।
 धर्म तणो तूं नाम न जाणें, तूं राखे घणी ठसकाई रे।
 प्राणी समकित किण विघ आई रे ॥ १ ॥
 नव तत्व नां भेद न आवे, कूडी करे लपरआई रे।
 धर्म तणो घोरी होय बेठो, तोमें दीसे घणी भोलाई रे ॥ प्रा० २ ॥
 जीव न जाणे अजीव न जाणें, पुन्य नी पारखा नाई रे।
 पाप तणी प्रकृति नही धारी, ये कीधी घणी नहुराई रे ॥ ३ ॥
 आश्व नाला छूटा नही देखे, संवर सुमता नाई रे।
 निरजरा तणो निरणो नही कीधो, कठे गइ चतुराई रे ॥ ४ ॥
 बव मोष बेहू नो जोडो, तिणरी समझ न पाई रे।
 समदिष्टी तू नाम धरावे, तोनें कुगुरां दीयो भरमाई रे ॥ ५ ॥
 हाथ जोडी नें समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे।
 अजाण पणो मिटियो नही अंतर, मिथ्यात दीयो बोसराई रे ॥ ६ ॥
 न्याय री बात हृदय मे नहीं वेसैं, थोथी करे बडाई रे।
 आग्या वारे धर्म परुमें, दूड गई चतुराई रे ॥ ७ ॥
 करण जोग भांगा नही धाखा, यतां री खवर न काई रे।
 अवत माहिं धर्म परुमें, या ही नरक री साई रे ॥ ८ ॥
 पाप धर्म नो नही निबेडो, अकल गई दपटाई रे।
 जब तोने कोइ जाण पणो पूछे, तो उलटी करे लडाई रे ॥ ९ ॥
 पोथा पानां काढ ने बेठो, भोला नें वे भरमाई रे।
 कूड कपट कर फंद मे पाडे, ते मांडी पेट भराई रे ॥ १० ॥
 सांगधारी नें साधज सरखें, पडे पगा मे जाई रे।
 तिखुत्ता सूं करे बंदणा, मन मे हरषित थाई रे ॥ ११ ॥
 सावध करणी सू पापज लागे, तिण री विगत न पाई रे।
 निरवद्य मे धर्म पुन्य दोनूई, ते पिण अटकल नाई रे ॥ १२ ॥
 ब्रह्म खेतार काल भाव न धाखा, गुण विण वस्तु न काई रे।
 च्यार निबेपा नो निरणो नही कीधो, ते मिनब जमारो पाई रे ॥ १३ ॥
 सगला मे तू बडेरो बाजे, मन मे मगज न माई रे।
 न्याय मार्ग तोने किण विघ आवे, कुगुरा दीया डंक लगाई रे ॥ १४ ॥

सरघा दुर्लभ जिणेश्वर भाखी, सूतर मे दीयो जताई रे।
 चतुर हुंता त्यां निरणो कीघो, ते मिनष जमारो पाई रे ॥ १५ ॥
 जीव अजीव ए छ द्रव्य कीघा, नव कीया न्याय वताई रे।
 समदिष्टी ओलखिया अंतर, त्याने नही सके देव डिगाई रे ॥ १६ ॥



ढलल : ३

दुहा

नव पदार्थ ओलख्या विनां, समकित नही तिण मांहि ।
 समकित विण सावपणो नही, सावपणा विण शिवपुर नांहि ॥ १ ॥
 तिण सूं वशेष समकित तणी, खप करज्यो भव जीव ।
 समकित सहीत करणी करे, त्यारे निश्चय मुक्ति री नीव ॥ २ ॥

ढलल

[पायो मिनव जमारो मति हारो]

देव गुर धर्म री पारखा करो, पंखपात मांहि कोइ मति परो ।
 छोडो कुगुरां तणी छारो, सगलां मांहें समकित सारो* ॥ १ ॥
 भावे जितरा ताप तपो, बले भावे जितरा जाप जपो ।
 पिण समकित विण न हुवे उडारो ॥ स० २ ॥
 मीढी अनेक माडी देखो, आंक विनां नही लागे लेखो ।
 ज्यूं आका जिसी समकित धारो ॥ ३ ॥
 साधु रो आचार पूरो पाले, दोपण सगला विव सू टाले ।
 ते समकित विण नही पामे पारो ॥ ४ ॥
 केइक उजाड मांहि रहे, सी तापादिक नां दुख सहे ।
 पिण समकित विण पूरो अंधारो ॥ ५ ॥
 सूस आंखडी सांकडा कोवा, बले साधु श्रावक ना व्रत लीधा ।
 समकित विण वरत नही लिगारो ॥ ६ ॥
 उणा पूर्व दश भण बाजे ग्यांनी, पिण समकित विण छे अग्यांनी ।
 तिणरे तत्व तणो नहीं विचारो ॥ ७ ॥
 श्रेणिक राव घर मे बेठों, ते समकित मांहि रह्यो सेठो ।
 तिण सू होसी तीर्थंकर अवतारो ॥ ८ ॥
 अरणक ने बले कांम देवो, त्यां धर्म तणी नही छोडी टेवो ।
 ज्यां कने देव गया हारो ॥ ९ ॥
 सस्कृत प्राकृत भणियो टीका, पिण समकित विण सगला फीका ।
 तिण सू तत्व तणो निरणो धारो ॥ १० ॥
 ध्याकरण भणियो मोटे मंडाण, बले षट विव भापा रो जाण ।
 पिण तत्व विनां सगला छारो ॥ ११ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विद विद वाद नगे नागे, त्यांरा अर्थ करे वृद्ध विद्यारि ।
 निग नव तत्र नाहि नृगे अंधारो ॥ १२ ॥
 केह नन नग नें उच्छ्र वृद्धे, जंवा अर्थ करे वेन वृद्धे ।
 ते धर्म कहे जिन कथ्या करे ॥ १३ ॥
 सरवा कुर्म जिन नाडी, उत्तराक्षेन आदि वेले मही ।
 बाहा होसी ते करसी विद्यारि ॥ १४ ॥
 मनशरी जीव निव्यात दीशो नृगे, ते नापपांनी जीव होय कृपे ।
 इच्छो मनशित नो अक्षरं ॥ १५ ॥
 निव्यात दश परकारो, त्यानि एक रह्यो शक्ती करे ।
 तो श्री मनशित योगी पांत करे ॥ १६ ॥

रत्न : २४

गणधर सिखावणी

ढाल : १

[सत्य कोइ मत राखज्यो]

श्री वीर कहे सुण गोयमा, इण जीव तणी नही आदो रे ।
 हिवें नीठ नीठ नर भव लह्यो, समो एक म कर परमादो रे ॥ श्री० १ ॥
 वृक्ष तणो जिम पानडो, पंडुर थद भड जायो रे ।
 इम अथिर आऊखो मिनष रो, खिण मे वेरंग थायो रे ॥ २ ॥
 डाम अणि जल जेहवो, वले अथिर सुपना री माया रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, खिण में घूल घांणी हुवे काया रे ॥ ३ ॥
 अथिर घजा देवल तणी, अथिर पांणी में पतासो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो चेर वाजी रो तमासो रे ॥ ४ ॥
 अथिर वेग नदी तणो, वले अथिर दादल नीं छायां रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवी जुवारी री माया रे ॥ ५ ॥
 अथिर वचन का पुरप रो, वले अथिर सीख अवनीतो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर नारी री प्रीतो रे ॥ ६ ॥
 अथिर फूस नों तापवो, अथिर उन्हाला रो मेहो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर कन्या घन जेहो रे ॥ ७ ॥
 अथिर रंग पतंग रो, ते जातां न लागे वारो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, जाणें आंख तणो टिमकारो रे ॥ ८ ॥
 अथिर घनुष आकाग रो, अथिर कुंजर नो कानो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो संध्या रो वानो रे ॥ ९ ॥
 अथिर परपोटो पांणी तणो, अथिर भालर रो भिणकारो रे ।
 ज्यू अथिर आऊखो मिनष रो, जाणे विजली तणो चमतकारो रे ॥ १० ॥
 एहवो अथिर आऊखो मिनष रो, तिणमें घणो उदवेगो रे ।
 इम जांग परमाद ने परहरो, मरण आवे छे वेगो रे ॥ ११ ॥
 मिनष तणो भव पाय नें, आंणे वेराग सवेगो रे ।
 काल अनंतो दोहिलो, वार वार न पांसो वेगो रे ॥ १२ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढाल २

[आऊखी टुटा नें साधो को नहीं रे]

श्री जिणवर गणघर मुनिवर नें कहे रे, एक समो पिण मत कर परमाद रे ।
 सुमति गुप्ति आठूं सुघ पालजे रे, ज्यूं तोने उपजे परम समाध रे ॥ १ ॥
 भूसर परमाणें इरिया सोधजे रे, ऊंची तिरछी दिष्टी म जोय रे ।
 दश बोल वरजे तूं मारग चालतो रे, ज्यूं जीव तणी हिंसा नही होय रे ॥ २ ॥
 भाषा विचारी निरवद बोलजे रे, करकस कठोर मूल मत बोल रे ।
 सावद्य भाषा मत बोले सरवथा रे, मीठो बोले तूं पेहली तोल रे ॥ ३ ॥
 दोष बयांलीस सगला टाल ने रे, असणादिक वेहरे च्याहं आहार रे ।
 पांच दोषण टाले मंडला तणा रे, ज्यूं तोनें पाप न लागे लिंगार रे ॥ ४ ॥
 वस्त्र पातर लेतां मेलतां रे, जोय पूजे तू रूडी रीत रे ।
 हिंसा हुवे तिम कीजे मती रे, दया सूं राखे अंतरंग पीत रे ॥ ५ ॥
 उचार पासवणादिक नें परठतां रे, जायगां जोय ने परठे ताम रे ।
 त्यां पिण जयणा कीजें जीव नी रे, सिमो निकेवल आतम काम रे ॥ ६ ॥
 मन वचन काया शुद्ध तूं गोपवे रे, ज्यूं तोने मूल न लागे पाप रे ।
 ए आठूंई प्रवचन पाले निरमला रे, तो मिट जाय जनम मरण संताप रे ॥ ७ ॥
 जयणा सूं चाल्यां जयणा सूं बोलियां रे, जयणा सूं कीषां शुद्ध आहार रे ।
 जिण आग्या सहित करणी कीयां रे, तोने पाप न लागे मूल लिंगार रे ॥ ८ ॥
 पांच महाव्रत पाले निरमला रे, बले पाले तू पांच आचार रे ।
 पांचूं इंद्री नें वस कर राखजे रे, तेवीसूंई विषय परिनिवार रे ॥ ९ ॥
 छ काय जीवां री जयणा राखजे रे, निरभय रहिजे भय सात निवार रे ।
 मद रा थानक आठूंई परहरे रे, बले शील तणी पाले नव वाड रे ॥ १० ॥
 वीस थानक वरजे असमाधिया रे, इकवीस सबला दोषण टाल रे ।
 बावीस परिषह जीते जुगत सूं रे, सतावीस साधु रा गुण पाल रे ॥ ११ ॥
 तीसां बोलां बंधे महा मोहणी रे, तीसूंई टाले विसवावीस रे ।
 जोग संग्रह नां बोल बतीस छे रे, टाले तूं आसातना तेतीस रे ॥ १२ ॥
 आहार सेजा नें वस्त्र पातरा रे, लीजे बयांलीस दोषण टाल रे ।
 अनाचार विष टाले सरवथा रे, श्री जिण आग्या चोखी पाल रे ॥ १३ ॥
 सेवा भक्ति कीजे शुद्ध साव री रे, अणाचारी सूं रहिजे दूर रे ।
 ए दोनूं सीखामण सेंठी धारजे रे, ज्यूं कर्म आठूंई हुवे चकचूर रे ॥ १४ ॥

प्रीति पुराणी विणसे क्रोध सू रे, मानं सू विनय तणो हुवे नास रे ।
 मित्रीपणो विणसे माया कपट सू रे, लोभ सू सर्व तणो हुवे नास रे ॥ १२ ॥
 क्रोध मानं माया नें लोभ सू रे, लागे छे निश्चे पाप कर्म रे ।
 तिण कर्मां सू भ्रमण करे संसार में रे, पांम न सके श्री जिण धर्म रे ॥ १६ ॥
 ए च्याहंई चंडाल तणी छे चोक्डी रे, तिण सू तप संजम नो हुवे नास रे ।
 इहलोक परलोक विगडे एहू थी रे, त्यानें मत राखे लगता पास रे ॥ १७ ॥
 शब्द रूप गद्य रस फर्शां छे रे, राग धेख मत धरज्यो कोय रे ।
 पांचू इन्द्री ने वस कीयां थकां रे, संवर निरजर रागो होय रे ॥ १८ ॥
 शब्द रूप रस गद्य फर्शां छे रे, गमता सू राग म धरो लिंगार रे ।
 धेख मत धरज्यो भडा उमरे रे, ज्यूं पामें भव सागर रो पार रे ॥ १९ ॥
 शरीर जीरण पडे छे तांहरो रे, केश पण्डूर पडे छे वगेख रे ।
 इन्द्री पिण हीणी पडे छे ताहरी रे, परमाद मत करतू समो एक रे ॥ २० ॥
 कपडा रो तार तूटे इता विचे रे, असंख्याता समा वहे अगाध रे ।
 एहवो सूक्ष्म समो छे काल रो रे, एक समो पिण मत करजे परमाद रे ॥ २१ ॥
 एक समा तणा परमाद में रे, सात आठ लागे पाप कर्म रे ।
 प्रवेण अनंता एकीका कर्म नां रे, त्यां कर्मां सू खोवे श्री जिण धर्म रे ॥ २२ ॥
 ज्यां लग पाचं इंद्री परवरी रे, जरा न व्यापी तोने आय रे ।
 वले देही में रोग न फेल्यो ज्या लगे रे, कर्म काटे ए अवसर मांय रे ॥ २३ ॥
 जोड कीची गणधर सीखामणी रे, केलवा सहर माहिं हित ल्याय रे ।
 समत अठारे तयांलीस में रे, पोष महिना सुध पख माय रे ॥ २४ ॥



रत्न : २५

दांन री ढालां

ढाल : १

[पूज पाणड न देता षड]

दान	थी	दलदर	दूर,	दान थी	दोल्त पूर आज हो ।
				दान थी	जोत कांति हुवे डील नी जी ॥ १ ॥
दांन	सू	पामे	रिघ,	दांन सूं	पामे विरघ आज हो ।
				दांन सू	दीपे तीरथ च्यार मे जी ॥ २ ॥
भरिया		रिघ	भडार,	ते जावा	ने हुवा तैयार आज हो ।
				दांन थी	थिर लिखमी रहे तेहनी जी ॥ ३ ॥
दान	सू	रहे	मुख	सनूर,	रोग सोग रहे सहु दूर आज हो ।
				दान सू	कदेय न आवे आपदा जी ॥ ४ ॥
दान	सू	करे	परत	ससार,	दांन सू पामे भव पार आज हो ।
				दांन सूं	पामे शिव सुख सासता जी ॥ ५ ॥
दान	सू	पामे	सर्व	थोक,	दांन सूं जावे देवलोक आज हो ।
				दांन सू	जावे सिद्ध गीत पांचमी जी ॥ ६ ॥
दान	सू	टले	कर्मा	री	छोट,
					वले वावे तीथंकर गोत आज हो ।
दान	थी	पावे	नव	ही	नित्रांन,
					दान सुखा री खान आज हो ।
					मन रा मनोरथ सीमे दांन थी जी ॥ ७ ॥
हसो	छे	सुपातर	दान,	नहीं	जिण तिणने आसान आज हो ।
				कृपण	ने दांन सुपातर दोहिलो जी ॥ ८ ॥
मिले		सुपातर	आण,	जव मन	में उजम आण आज हो ।
				अहलक	दांन दीया उद्धरे जी ॥ १० ॥
भरत		नरेशर	जाण,	पाछल	भव दीयो दान आज हो ।
				चक्रत्रत	पदवी पांमी दांन थी जी ॥ ११ ॥
सुबाहु	कुमर	आदि	जाण,	सुखे सुखे	जासी निरवाण आज हो ।
				परत संसार	कीचो दान थी जी ॥ १२ ॥
दीयो		रेवती	पाक,	त्तिण सूं	वीरजी हो गया चाक आज हो ।
				परत संसार	करी ने उद्धरी जी ॥ १३ ॥
संख		नामें	राजांन,	दीयो घोवण	रो दान आज हो ।
				तीथंकर	हुवा जिण बावीसमां जी ॥ १४ ॥

ढाल : २

दुहा

दान शील तप भावना, ए च्याहं जिण आग्या सहीत ।
 जे समदिष्टि जिण धर्म में, याने ओलखो रुडी रीत ॥ १ ॥
 कडुवा फल छे कुपातर दान रा, तिणसू भ्रमण करे संसार ।
 आछा फल छे सुपातर दान रा, तिणसू पामे भव पार ॥ २ ॥
 दान सुपातर ओलख्यो, तो ही देता धूजे हाथ ।
 कुपातर दान दे हर्ष सू, आ इचरज वाली बात ॥ ३ ॥
 पाप जाणे कुपातर दान में, सुपातर दान मे जाणे छे धर्म ।
 तो ही सुपातर दान मे कृपण हुवे, तिणरे वहुत भारी छे कर्म ॥ ४ ॥
 कर्म बान्ध्या छे भव पाछिले, ते उदय हुवा छे आय ।
 ते छले जोग मिलिया थकां, पातर दान दीयो नही जाय ॥ ५ ॥
 दातार ने कृपण तणी, ठीक पाडे वुधवान ।
 हिवे ओलखाउं कृपण भणी, सुपो सुरत दे कांन ॥ ६ ॥

ढाल

[नखदल हे नखदल]

दानान्तराय निकाचित बंध्यो, वले मोह कर्म उदय जोर । भवियण ।
 तिण कर्मा कर कृपण हुवो, त्यांन देवण रो नही कोड ॥ भवियण ।
 कृपण ने दान देणो दोहिलो ॥ १ ॥
 घर रो माल देणो तो दोहिलो, ओरा आडा अतराय ने तयार । भ० ।
 इणरा कृपणपणा रा प्रताप थी, संवलो न सुभे लिंगार ॥ भ० कृ० २ ॥
 सुपातर दान में कृपणपणो, कुपातर दान माहि धूर ।
 ते दोनूं प्रकारे हुवे दलद्री, त्या सू दुरगति नही छे हूर ॥ ३ ॥
 कृपण ने दान देता थकां, कोड देखे लेवे दानार ।
 तो सरवा घटे तिणरे दान री, करतो रडे परत संयार ॥ ४ ॥
 कोइ कृपण साघा रे पातरे, जो देखे सरस आहार ।
 तो दोप अणहुंतो जाणे साध में, ऊचो सुभे तिण वार ॥ ५ ॥
 कोड दान दे उल्लट परिणाम सू, असणादिक सरस आहार ।
 ते निजर पाडे कृपण तणे, तो मूडो दे तुरत विगाड ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पोते बेरावणो तो जिहाइ रह्यो, देखणो पिण जिहां रह्यो तांम ।
 सरस आहार वेहख्यो काने सुणे, तो विगडे तुरंत परिणाम ॥ ७ ॥
 कृपण रो कृपणपणो, कृपण नही जाणे लिगार ।
 आपो न सूभे आपरो, हूं सूभ छूं के दातार ॥ ८ ॥
 साधु समचे निपेचे कृपणपणो, समचे करे दान रा गुण ग्राम ।
 ए दोनू वात कृपण सुणे, गमती न लागे तांम ॥ ९ ॥
 कृपण भाणे बेठ न भावे भावना, ते कृपणपणा नो प्रताप ।
 साधु विण वेहख्यां घर सूं पाछा फिरे, तो पिण मूल न करे पिछाताप ॥ १० ॥
 कदा कृपण भावे भावना, ते तों तिण वेला हरप ।
 जो ऊ साधु आया देखे वारणे, तो पड जाय मन में धडक ॥ ११ ॥
 कृपण आदरे व्रत वारमो, तोही भावना नहीं भाय ।
 हाथ सू दान देवण तणी, हूस नही मन माय ॥ १२ ॥
 कदा कृपण हाथां सूं वेंहरावतां, मन में नही हरष वशेष ।
 जो न कहे नाकारो साधु तो, साधां ऊपर करे धेष ॥ १३ ॥
 कृपण जो लोलपी हुवे, वले हुवे लोभ असमान ।
 ए तीनूई दोप निण मे हुवे, ते किण विव देवे दान ॥ १४ ॥
 जो कृपण अति मानी हुवे, तो घन खरचे जग कीर्ति काम ।
 पिण दान सुपातर देवण तणा, आघा चाले नही परिणाम ॥ १५ ॥
 तिणने राजा खोसे के घरे गिले, तसकर लगे के लाय ।
 कृपण ने कापुरुष री खाटवा, माल मस्करा खाय ॥ १६ ॥
 कण कण सचो कीडी करे, ते कण तीतर चुग जाय ।
 ज्यू कृपण रो घन सचियो, यू ही जावे विललाय ॥ १७ ॥
 केड घनवत पिण कृपण हुवें, केइ निरघन हुवे दातार ।
 छते जोग मिल्यां कृपण थकी, लाहो लेणी न आवें लार ॥ १८ ॥
 कृपण दान दे तिण समे, कोड देखे अनेरो ताम ।
 ते कृपणपणो पिण आदरे, उत्तर जावे दान सू परिणाम ॥ १९ ॥
 दातार दान दे तिण समें, कोइ देखे अनेरो ताम ।
 तो दान देवां सूं तेहना, चढे घणा परिणाम ॥ २० ॥
 दातार री संगत कीयां थकां, ते पिण हुवे दातार ।
 कृपण री संगत कीयां, कृपणपणो छे तयार ॥ २१ ॥
 दान शील तप भावना, यासू सीझे आत्म अर्थ ।
 तीनां में कवडी लागे नही, दान दीयां घट जाय गर्थ ॥ २२ ॥

केइ धनवंत पिण कृपण हुवे, केइ निरघन ही हुवे दातार ।
 ते धनवंत रह गयो दरिद्री, निरघन करे परत संसार ॥ २३ ॥
 घर में धन माल छातां थकां, वले छती जोगवाइ पांम ।
 लाहो लेणी न आवे दांन रो, ओ कृपण रो कांम ॥ २४ ॥
 आगे दांन थकी तिरिया घणा, कृपण ने कहे वात मांड ।
 तो पिण टूब न लागे तेहनें, ज्यूं रेत री न हुवे खांड ॥ २५ ॥
 कृपण नें दांन देवण तणो, साधु उपदेण दे दगचाल ।
 ज्यूं लाखां प्रकारां हुवे नही, कदे गेहूं री दाल ॥ २६ ॥
 बुद्धि पाम्यां फल तत्व विचारणा, देह पाम्यां रो फल व्रत धार ।
 धन पाम्यां फल दांन सुपातरां, वाचा फल बोले हितकार ॥ २७ ॥
 मोटका नें खिम्या करणी दोहिली, कृपण नें दोहिलो दांन ।
 भर जोवन में झील दोहिलो, कायर नें दोरो चारित निधान ॥ २८ ॥
 एक सूम नी त्रिया कहे, आज कांई पीऊ मुख दीन ।
 के कछु ही खोयो गयो, के किण ही ने दीन ॥ २९ ॥
 ना कछु ही खोयो गयो, ना किण ही नें दीन ।
 एक पाडोसी नें देतां देखने, मांहरो मुख थयो दीन ॥ ३० ॥
 जब सूमन की त्रिया कहे, थारा धन पाम्यां ने धूर ।
 थां सूं दांन देणी तो आवे नहीं, थें देख विगाड्यो कांय नूर ॥ ३१ ॥
 जब सूम कहे त्रिया भणी, मोनें न गमे दांन री वात ।
 दांन देणो तो जिहांइ रह्यो, कानें सुणियो पिण न सुहात ॥ ३२ ॥
 आवे अगाट करतो अहंकार जब, कृपणपणो गयो बहती रे पुर ।
 षय उपगम री तयारी हुवां, जब कृपणपणो छे हजूर ॥ ३३ ॥
 कांम पडें सावद्य दांन रो, जब कृपणपणा रो हुवे नास ।
 पयउपसम देखे आवतो, जब कृपणपणो छे पास ॥ ३४ ॥
 दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर माय ।
 जो दातार डरे कृग थकी, तिण सूं दांन दीयो नही जाय ॥ ३५ ॥
 दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर मांहि ।
 जो कृपण डरे दातार थी, देतां बरजणी आवे नांहि ॥ ३६ ॥
 घर में दातार नें कृपण बेहूं, त्यारे आय ऊभा साधु वार ।
 जब दातार उठ्यो बेहरायवा, तिण पेंहली कृपण हुनो तयार ॥ ३७ ॥
 जो सगलाइ घर में कृपण हुवे, त्यारे साधु ऊभा वार ।
 जब सगलां रे हुलास बेहरावण तणी, मांडे मांहोमां मनवार ॥ ३८ ॥

कृपण रे घसको दातार नों, रखे ओ देला बहुत वेंहराय ।
 दातार रे घसको कृपण तणो, रखे ओ देला मोने अन्तराय ॥ ३६ ॥
 घर मे सगला कृपण हुवें, के सगलाइ हुवें दातार ।
 तो कजियो न लागे दांन रो, पछें किरतत्र सारु फल लार ॥ ४० ॥
 किगरे दांन देवण री मन में घणी, पिण मिलियो कृपण रो जोग ।
 ते मन री मन मांहि ले गयो, इसडो छे कृपण रो संजोग ॥ ४१ ॥
 दाता धनवंत रो निरघन हुवे, तो ही दांन देवण रो हुलास ।
 घर मे वस्तु न हुवे तेहने, तो ही करे दलाली ओरां पास ॥ ४२ ॥
 असली राजा रो राज गयां थकां, तो ही ओ राखे राज री रीत ।
 ज्यूं दातार रो घन छूटे सरवथा, तो पिण दांन देवण सूं पीत ॥ ४३ ॥
 कदे कृपण निरघन रो घनवंत हुवे, तो ही देणी न आवे दांन ।
 बले वरजे घर रां ने कहे छो मती, वात न गमे दांन री कांन ॥ ४४ ॥
 कमसल रे राज घरे थकां, तो ही शुद्ध नहीं राज रीत ।
 ज्यूं कृपण ने घन मिलियां थकां, दान देवण री नहीं पीत ॥ ४५ ॥
 एक मेह गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण वरसे नहीं कांय ।
 एक गाजे नही पिण वरसे घणो, एक गाजे वरसे नांय ॥ ४६ ॥
 ज्यूं एक दातार गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण नहीं छे दातार ।
 एक गाजे नही पिण दातार छे, एक न गाजे न वरसे लिंगार ॥ ४७ ॥
 केइ कृपण थोथा गाजे घणा, पिण मूल नहीं दातार ।
 केइ कृपण मूल गाजे नही, दांन पिण नही देवे लिंगार ॥ ४८ ॥
 केइ कृपण पिण एहवा, थोथा करे गुमान ।
 ठाला बादल ज्यूं गाजे घणा, पिण देणी नावे दांन ॥ ४९ ॥
 केइ ओरां ने दैतां देखनें, मुरझ रहे मन मांय ।
 हाथ न चाले आपरो, तिण सूं बोल्थो पिण नहीं जाय ॥ ५० ॥
 कृपण दांन देवे नही, तिण उपर साधु करें धेख ।
 दोनूं बूहें छें वापडा, त्याने ग्यानी रह्या छें देख ॥ ५१ ॥
 वार वार कृपण भणी, निबेघण रो नही कांम ।
 राग धेख बवे घणो, न रहे शुद्ध परिणाम ॥ ५२ ॥
 कोइ दातार रो कृपण हुवे, कोइ कृपण रो हुवे दातार ।
 पछे कर्मा गति छे वांकडी, तिण सूं जीव न रहे एक धार ॥ ५३ ॥
 सुपातर दांन दे तेहने, वरज्यां वंघे भारी अन्तराय ।
 तिण सू दुख असाता हुवे अति घणी, चिहुंगति गोता खाय ॥ ५४ ॥
 ६०

नीठ नीठ नर भव लहो, इण जग में नर नार ।
 पिण कर्म जोगे कृपण हुवा, महा लोमी परले पार ॥ ५५ ॥
 कृपण नें दान दोहिलो, हुवा सत हीणा नर सूम ।
 दिने फरग फूट्तरा, हलका थोथा वूम ॥ ५६ ॥
 सूमा केरी संपदा, चोडें कुपातर खाय ।
 के रोकीले रावले, पिण हाथां सूं दीयो नही जाय ॥ ५७ ॥
 सूम सावां नें आया देख नें, मूडो फेर दे पूठ ।
 कला करी वस्तु छिपाय दे, के कोइ बोले भूठ ॥ ५८ ॥
 घर में घन पिण दलद्री, जिके न देवे दान ।
 भार भूत घन तेहनों, कोरो करे गुमान ॥ ५९ ॥
 जीव कटे कृपण तणो, देतां लडयड धूजे हाथ ।
 कृपण काठो भाअ सारीषो, कपिला दासी वाली जात ॥ ६० ॥
 सात थोक देवे सूमडा, कृपण आडा देवे किवाड ।
 के आडा पग दे आंण ने, वेठो उत्तर देवण ने तयार ॥ ६१ ॥
 कृपण सीख दे दातार ने, कदे नहीं दीजें दान ।
 जो घर रा मिनपां ने देता देखने, तो तोडे जांसूं तांन ॥ ६२ ॥
 देखे साधु आया नें अन्न सूभतो, देखे वेहरावूं एकण वार ।
 भाले कुडछी वल्लतो थको, वले पाछा नहीं आवे दुजी वार ॥ ६३ ॥
 कृपण करे कदागरो, करे सावां ने भांड ।
 मांहरो असूभतो आहार ले गया, कहे काचा पांणी कने मांड ॥ ६४ ॥
 दातार ने दान देता देख ने, मूडो दे कुमलाय ।
 पारका दुखां हुवे दुवल्लो, भांणे वेठो रोटी नहीं खाय ॥ ६५ ॥
 कृपण रो घन कारमों, धर्यो रहे घर मांय ।
 लेले क्यूं ही लागे नहीं, घन पापी रो परले जाय ॥ ६६ ॥
 कीडी सिंचे कहे लोक में, तेहनो तीतर खाय ।
 कृपण कीडी सारिषो, कहे लोक दुनियां रे मांय ॥ ६७ ॥
 छाती फाटें सूम री, जो देता देखे दान ।
 दान तणा गुण वरणवे, तो कृपण कदे न मांडे कान ॥ ६८ ॥
 घणो उपदेण दे दान रो, कृपण नें किरपाल ।
 लाखां प्रकारां न हुवे, कदे गेहुं तणी दाल ॥ ६९ ॥
 मूल कदेही मानें नहीं, कृपण केरी वात ।
 कृपण आयां कोइ हरये नहीं, जिम अमावस री रात ॥ ७० ॥

कदे सूम री सोभा हुवे नही, देखो सहु संसार ।
 जात न्यात ने लोक में, सहु देखलो नर नार ॥ ७१ ॥
 लाहो मिनष जन्म तणो, कृपण न लीनो कोय ।
 धन माल सहु मेल नें, चाल्यो कलदर होय ॥ ७२ ॥
 परलोके पाप परगटें, भरे नेणा भरे नीर ।
 हाय में दान दीयो नही, अब कृण चटावे पीड ॥ ७३ ॥
 कृपण रांक ते बापडा, बाधी पूर्व भव अतराय ।
 तिण कारण तिण जीव सू, दान दीयो नही जाय ॥ ७४ ॥
 कृपण ओलखणी प्रगट करी, कहिज्यो अवसर देख ।
 जो कृपण नें सुणावोला माड ने, तो तुरत जागोला धेख ॥ ७५ ॥
 सवत अठारे वयांलीस मे, कार्तिक मास मभार ।
 कृपण ने ओलखावीयो, सरीयारी सहर मभार ॥ ७६ ॥



रत्न : २६

वैराग री ढालां

ढलल : १

[श्री जिखवर गखधर मुनिवर ने कहें रे]

वृक्ष तणो ज्यूं पाको पांनडो रे, ते पडतां कांय न लगे वार रे ।
ज्यूं तूटे आउखो मरतां मिनष नों रे, जब कोइ न सके राखण हार रे ॥
ढील मत करज्यो चतुरां धर्म नी रेः ॥ १ ॥

मात पितादिक ऊभा मेलने रे, पर भव में जासी एकलडो आप रे ।
विछडियां ने पाछो मिलणो दोहिलो रे, कुण गति में जासी मा वेटो बाप रे ॥ ढी० २ ॥
जीवडो तो अलुभ रह्यो माया मभे रे, बले स्त्री मात पितादिक मांय रे ।
तांगा वेजा तिणरे लगे रह्या रे, पिण आसा अलधा छोडी जाय रे ॥ ३ ॥
जीव काया छोडे तिण अवसरे रे, चित्तवे मन माहे अनेक जंजाल रे ।
म्हे धन जोवन रो लाहो लीयो नहीं रे, इम विल विल करतो कर जाये काल रे ॥ ४ ॥
जीवडो तो जांणे केइ दिन थिर रहु रे, पिण मरण आगे नहीं लागें जोर रे ।
जन्म मरण री सगला जगत में रे, मुदे तो आहिज मोटी खोड रे ॥ ५ ॥
काया माया सगली छें कारमी रे, कारमो छे सगली परिवार रे ।
ते मिल मिल विलावे बादल नी परे रे, एहवो छे सगलो अथिर संसार रे ॥ ६ ॥
धन गडीयो घर माहे लेंणो लोक में रे, जांणे पुत्रादिक ने देऊं सर्व बताय रे ।
जीभ थकी जब न आवे बोलणी रे, ते पिण रह गइ मन री मन मांय रे ॥ ७ ॥
कांइ कीघो कांइ करणो अछे रे, घर हाटादिक विणज व्यापार रे ।
बले माया मेलूं मेलू करतो फिरे रे, पिण काल अण चित्तयो न्हांखे मार रे ॥ ८ ॥
घर रा कारज पूरा कर नहीं सके रे, अष बीच छोड चल्या सहू कोय रे ।
घघा माहिं कलिया रहे सदा रे, ते गया निरर्थक मानव भव खोय रे ॥ ९ ॥
मिनष तणो भव छे अति दोहिलो रे, उतकष्टो पामे अनते काल रे ।
ते अल्प सुखा रे कारण पड्यां रे, हारे मानव भव मूरख बाल रे ॥ १० ॥
एहवो अथिर आउखो जांण ने रे, करो जिणेश्वर भाष्यो धर्म रे ।
जो शुद्ध गति जावा री छे चावनां रे, तो दिन दिन पतला पाडो कर्म रे ॥ ११ ॥
हू कहि कहि नैं कित्तरो कहूं रे, संसार छे सगलो अतत असार रे ।
ग्यान दरसण चारित तप विनां रे, सार म जांणो मूल लिगार रे ॥ १२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बैराग री ढालां : ढाल २

बूढला रा पुन्य परवाखा, तिणसूं वचन जाए माखा ।
 जब बूढलो मन में खीजे, बेटा बहु मूल न भीजे ॥ ६ ॥
 बूढा रे बालपणा रा हेवा, जाणे खावूं मिष्टान न मेवा ।
 मन गमता भोजन खावूं, लाडू पेडा जलेबी मंगावूं ॥ १० ॥
 जन्हां सीरो मगद वले खाजा, एहवा भोजन भावे ताजा ।
 जाणे नरमसी खीचडी खावूं, दही दूध ने दूरो मगावूं ॥ ११ ॥
 बूढा ने आछा भोजन भावे, पुन्य विनां कहो कुण खवावे ।
 ओ तो स्वारथ किणरे न आवे, तिण सूं घर रां नें मूल न सुहावे ॥ १२ ॥
 घर सूं सूखी लूखी रोटी आवे, ते तों दातां सूं खाइ न जावे ।
 जब बूढो हुवो दिलगीर, काढे आंख्यां मां सूं नीर ॥ १३ ॥
 जां की बोली पिण न सुहावे, मीठा भोजन कुण खवावे ।
 बूढे हाथां सूं द्रव्य कमाया, बेटा दाब रह्या धन माया ॥ १४ ॥
 जब ओ कर कर लोकां ने भेला, करे बेटा बहु नी हेला ।
 म्हारा कहा में को नही चाले, पूरो धान खावानें न घालें ॥ १५ ॥
 जब लोक हसैं पीटें ताल्यां, बोले बेटा बहु नें गाल्यां ।
 कहे बेटा बहु नें एम, डोकरा नें दुख दो केम ॥ १६ ॥
 केइ केहवा लगा आम, ये तो मत हुवो लूण हराम ।
 जब बेटा बहु इम बोले, डोकरा रा परदा खोले ॥ १७ ॥
 ओ तों लोका सूं एकठ मांडे, म्हाने यूं ही अनाखी भांडे ।
 म्हे तो आछा भोजन नित घालां, इणरे केडें सगला चालां ॥ १८ ॥
 इणरे पीत मुरीद न काई, ओ तो यूं ही करे विकलाई ।
 इणरी गइ अकल विग्यांनो, इणरी वात कोइ मत मानो ॥ १९ ॥
 बूढा रो कुण उठे बेली, उणरी वात गइ सर्व ठेली ।
 बूढा रा पुन्य पड गया पूरा, तिण सूं सेंण सगा हुवा दूरा ॥ २० ॥
 निज नारी री आहिज रीत, बूढा सूं न घरे प्रीत ।
 वले ओर सगा सेंण सारा, बूढा सूं होय जाय न्यारा ॥ २१ ॥
 कदे धी गुरू सूंघा होय जात, जब वाछे बूढा री वात ।
 घर रां तो मांड्यो अति आंचो, ओ तो मरे न छोडे मांचो ॥ २२ ॥
 बाल जवान तो मर जावे, इण बूढा ने मरण न आवे ।
 ओ तो नित नवो होय रह्यो सेंठो, म्हारे वारणे रिणाइ ज्यूं वेठो ॥ २३ ॥
 म्हे तो सगला हुवां छां काया, इण डोकरे बोहत सताया ।
 विरखो, ओ तों अजे न मुंवो जरखो ॥

म्हारे उघडी पाप री खानो, इण वूडा मूं पडियो पावो ।
 एहवा वचन वूडा नें सुणावे, जव वूडो अनंत दुःख पावे ॥ २१ ॥
 वूडे कर्म कीया था जाड, ते तों आया कुवेलां मे थाड ।
 ते भोगवतां दुख पावे, मुमता विण पडियो सीदावे ॥ २२ ॥
 वूडा री विपत अनेक, पूरी कइणी नावें वणेव ।
 थोडीमी कही वांनगी मान, देखो अखरु मान्यात ॥ २३ ॥
 इणरी सुणज्यो लोक लुगाड, एहवी विपत वूडापे आई ।
 जो ऊ पेंहली धर्म करतों, एहवी विपत मे वजाने पडनो ॥ २४ ॥
 वूडो पेंहलां वूडो मड छकियो, जिण धर्म ओल्लव नही सकियो ।
 हिवे रह्यो आरत व्यान ध्याय, तिण सूं धर्म कीयो किम जाय ॥ २५ ॥
 वूडे पेंहलां कीवी कूडी मंथी, रह्यो धर्म तयो नित वेची ।
 करतो साबु थावकां री हेला, हिवे आय पडी छे वेलां ॥ २६ ॥
 पेंहलां कीवी न्यातीलां ठेले, जिण धर्म ने जाणियो नेले ।
 हिवें न्यातीला आड न आवे, जव आप पइयो पिछ्वावे ॥ २७ ॥
 मोह माया में रह्यो कलियो, दुरगति नों टांको मलियां ।
 जोवन हुंनो ते जीवो गमाय, हिवें कारी न लागे कांय ॥ २८ ॥
 पछें मरनें माठी गनि जावे, चिहुंगति में गोता खावे ।
 पाप आये न चाले जोरो, पाछ्यो तर भव पावणो वोगे ॥ २९ ॥
 केइ वूडा घर रां नें डगवे, लड भगड नें आछ्यो खावे ।
 वले कर कर लोकां नें साखी, वेटा वहु ने भांडे अन्हाखी ॥ ३० ॥
 वले करे खीटोर खोराई, घर गं नें घणो दुखदाड ।
 केइ वूडा छे एहवा पापी, रह्या घर गं ने नित संतापी ॥ ३१ ॥
 केइ वूडा मूवा हूवे जोग, वेटा वहु मिळिया अजोग ।
 कदा आछी वस्तु वूडो खावे, तो उवे मूगे घाली घुक्कावे ॥ ३२ ॥
 कहे तूं तो हुवो गटकायो, म्हारे वन नही घर मांयो ।
 मूवो वेठो रोटी क्यूं न खावे, म्हानें कांय अन्हाखी मतावे ॥ ३३ ॥
 जव वूडो मंके लाजां मरतो, वारे वचन न काडे टग्नो ।
 वूडे कीयो विचारज ऊंडो, रखे दीमूं लोकां में भूंडो ॥ ३४ ॥
 एनो कर रह्या फेल फितूरो, म्हारे घोलां मे थाळें धूरो ।
 यांनं छेडवियां नहीं वाकी, रखे जावे वूडापे नाकी ॥ ३५ ॥
 म्हारो काण कुख थो भारी, रखे लोकिक विणडे म्हानें ।
 डम जांणी वूडे मून सामी, जाण्यो गडूं वूडावे बाजी ॥ ४० ॥

जो न हुवे दोयां मांहे लजिया, तिणरा घर मांसूं न मिटे कजिया ।
 कुड कुड काढे राता डोला, नीकले नित सांग बनोला ॥ ४१ ॥
 वात करतां माथे सल चाढे, नितका दुख में दिन काढे ।
 देखो नीठ मानव भव पायो, राग घेख में यूंही गमायो ॥ ४२ ॥
 संसार नां सगा सर्व काचा, त्यांने जांण रह्या भूढ साचा ।
 तिण री वृववत करज्यो पिछ्छांणो, यांने जांणज्यो वेंरी समाणो ॥ ४३ ॥
 केइ बूढा रे पुन्य रहे बाकी, घर रा कार न लोपे जांकी ।
 जिण रे पूर्व पुन्य छे भारी, तिणरी मरजादा राखे नारी ॥ ४४ ॥
 जिण पूर्व पुन्य उपाया, त्यांरे हाथ जोड रे जाया ।
 जो ऊ थोडीसी वस्तु मंगावे, तो उवे थाल भरी वेगा ल्यावे ॥ ४५ ॥
 सर्व जी जी कारे वतलावे, वले बूढा को हुकम चलावे ।
 मन गमता भोजन खवावे, सारां पेहली बूढा ने जीमावे ॥ ४६ ॥
 जिण पूरी कीवी पुन्याई, वेदा बहु मिल्या सुखदाई ।
 हडा हडा वस्त्र पहारां, सुख सेज्या माहे पोढावे ॥ ४७ ॥
 वले कांण कुख राखे भारी, सगला रहे आगन्या कारी ।
 देव परमेश्वर ज्यूं पूजे, करडी नजर कीया सर्व धूजे ॥ ४८ ॥
 एहवा सुख में बूढो रति पावे, वले रही लोकिक लोका मे ।
 बूढो एहवी साता सुख पाय, षणो मगन हुवो मन मांय ॥ ४९ ॥
 एतो सारा मिल्या सुखदाय, पिण त्राण गरण नही थाय ।
 एतो इण भव केडे चाले, परभव जाता साथे न हाले ॥ ५० ॥
 साय आवे पुन्य नें पाय, सुख दुख भोगवे आपोआप ।
 इम सांमल ने नर नारी, करज्यो मन मांहे विचारी ॥ ५१ ॥
 एहवा सुख तो सगलाइ फीका, त्यांने कदे म जांणो नीका ।
 ते तो थोडा माहे विललावे, सुपना जिम आल माल होय जावे ॥ ५२ ॥
 त्यामे कदे म जांणज्यो सार, ते तो मिलिया अनती वार ।
 एहवा सुख ऊपर निजर न दीजे, करणी कर लाहो लीजे ॥ ५३ ॥
 आचारंग रो ले अनुसारो, कच्चो बूढा तणो विस्तारो ।
 इम जाणी करो जिण घरम, ज्यूं पामो मुगत सुख परम ॥ ५४ ॥
 संवत अठारे चोतीसे वरस, अपाढ विद तिथ इग्यारस ।
 सनीसर वार विचारो, जोड किवी सरियारी मफारो ॥ ५५ ॥

ढाल : ३

[इग धुर कंठ कौई न रंती]

देखो नारी काँहें में खूना, लोक फिरि सहू हा हा हंता ।
 जल थल देवा प्रकलां जावे, तो पिय नारी मुख कर आवे ॥ १ ॥
 जग नुंजग दगा री हंस, खूं जूं वन ल्यावूं लूं ।
 जेया ज्ञाव अनेक उगावे, रिय पूर्व पुन्य हुवे ते पावे ॥ २ ॥
 क्रिय उहां देठे कीर्तिं सगाइ, रिय पाछा घर न सक्या जाइ ।
 क्रिय नें विचे लाइज नाखा, देखो नर नव युद्धि हाखा ॥ ३ ॥
 केइ आय परपीव्या नारी, बन हूयं वळे हुवा उपागी ।
 क्रिय ही द्रव्य इहाइज कनाया, पिय निरचें छे काची नाग ॥ ४ ॥
 खांग नांग छे कर्म क्वाय, पंहुलां स्वाद विगडे जाय ।
 ज्यं विप चडिया नें नीन ही नावे, पांव रोती नें खाज मुहावे ॥ ५ ॥
 एसा कानां मुख सहू फीका, अंत लागु छे निरचें जी वा ।
 इंती कडें तुख नहीं होवे, थूं ही मुख जमारो खंडे ॥ ६ ॥
 नर्या नगो भय न मिट्यो जेय, कायूं मुख भातेयो नेय ।
 मोह्यो विणें नार नो वास, कुग कुग कांन करावे तान ॥ ७ ॥
 फिर फिर वन्नु वगो जो आंणी, तो पिय आणु नार रोषानी ।
 हूं तुक्त केंडें लागी फोक्त, कांइ न आंगं नरिय रोक्त ॥ ८ ॥
 गंधना गांठा मुक्त नें जोइजे, तुक्त श्री कारज कोइ न नीके ।
 क्रिय हूंयें नें मुक्त नें परणी, घर क्रिय चाखी थारी करणी ॥ ९ ॥
 हूंजे कर्ण सहू वर नो कांन, तूं जाय वेंसें वीजी जंन ।
 ए तुक्त नें क्रिय वात जीवाइ, घर री चिउ न जांन कांइ ॥ १० ॥
 आज तो जोइजे घर में हांडी, चूजे भांज गयो घर मांडी ।
 इवग री भारी गई खूटी, बांन गयो नाचा रो हूटी ॥ ११ ॥
 बांन पीपण जोगी नहीं बरटी, बांण आप मुक्त गेहुं बरटी ।
 नाच दाल घृत ल्यावग पाछो, तुक्त नें नावे आछो आछो ॥ १२ ॥
 वाञ्छ कूंकं डावी हार, गेह्या आंग नकूं निगार ।
 टीकी राखडी रेल मुगंज, पेइ आरसी मंज मंज ॥ १३ ॥
 मेल्य वस्त्र बोई नें ल्याव, जूता जेय हूं नव करव ।
 मूई मूत्र बीजगो छाज, जोडी आंग मुक्त पहरवा काज ॥ १४ ॥

साजी लूण हीग मिरच वेसवार, खुवारो बूहारी दातणा चार ।
 ऊंखल मूसल आच्छी गाय, कुडछी डोयला छुरी मोलाय ॥ १५ ॥
 ढहिया घर तूं नवा कराय, ढावडा रमवा दडी वणाय ।
 गुडी गुली तीर घुणी नें हटरी, टोपी भगो ह्ण भलियो कुलडी ॥ १६ ॥
 एता ल्याव सताव संभाल, कानां हेटे मती फुजाल ।
 भजे न ल्यायो कदकी कूकी, थारी अकल गइ छे चूकी ॥ १७ ॥
 मोर मसल थाकी कहे कांमण, वेटो आज छे आंमण दूमण ।
 बेस तूं इण ने खोले लेइ, कांम कर न सकूं हूं बेई ॥ १८ ॥
 दोहिली हुवे नें ए में जायो, हिबें तूं पालीस कांय उपायो ।
 सवा नव मास बूही हूं भार, तूं दोरो लेतो खिणवार ॥ १९ ॥
 किण ही काज रीसाणी नार, मनावे पगे लाग तिबार ।
 ढावा पगरी दे सिर लात, तो पिण मूरख तजे न तात ॥ २० ॥
 पाप तणे वस पडियो समणी, खदन करावे छे वलि रमणी ।
 भेष लेइ केइ विबें विगूता, ते पिण यूं घर ने भार जूता ॥ २१ ॥
 भांत भांत रा सुख मधु विंद, आगे नरक तणा छिद भिंद ।
 इण परे रोलवे पुख ने नारी, नीचा काम करावे भारी ॥ २२ ॥
 दास तणी पर आगे ब्यावे, तो पिण विरत न काचित आवे ।
 जीव तो थोडा सुखां ने काजे, गुलामपणो करतो नही लाजे ॥ २३ ॥
 एहवा दुख नें सुख कर माने, यूंही बूडा जाय अग्यांन ।
 भटके तलफे सुख के ताई, ज्यू ज्यूं अलूम पडे दुख मांही ॥ २४ ॥
 नचित होय बेठा नर अंव, वावे पर घर केरा वव ।
 परणीजे जाणे घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या ॥ २५ ॥
 तो ही तस न हवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
 घर जलाय तीरथ जे करसी, सो सावु जग माहे तिरसी ॥ २६ ॥
 केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख ढाले ।
 देव थकी ते पिण ब्रह्मचारी, सावु तजिया सर्व विकारी ॥ २७ ॥
 नरक दिखानण दीवी नार, मोप जावण ने आडी किवाड ।
 सुयगढायंग तडुल दियालिए साख, तिण मे वीर गया छे भाख ॥ २८ ॥
 स्त्री दोष जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूंती एक ।
 बुरो मती मानें नर नारी, निश्चे देखो ग्यांन विचारी ॥ २९ ॥
 छेदाणा जस हाथ ने पाय, कांप्या कांन ने नांक कहाय ।
 ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजे रहे ब्रह्मचारी ॥ ३० ॥

विषे दिष्टी वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी ।
 सूर्य साह्यो जोग्यां घटें तेज, ज्युं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥ ३१ ॥
 उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण बास ।
 तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥ ३२ ॥
 इम जाणो रहे सावु एकंत, आपनें हित दांछे ते संत ।
 शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यानें जाणो मुगत नजीक ॥ ३३ ॥



ढलल : ॡ

[तलरल हल डुरतख डलहशी]

स्वलरथ सहु नल बलल हल, स्वलरथ जग डंडलण । चतुरनर ।
जुचड डलवल करल घणल, डुरलसुत डलग डुरडलण ॥ चतुरनर ॥
स्वलरथ जग डंडलण* ॥ १ ॥

डुलहरलडलं सुं डुतुरी रलकुी रहल, कुडलं लुग वलवघ डणल डलवल डलल ।
डुतललब डुरलल तुडलं लुगल, तुडलंनलं डलडलं हुवल अतंत कुशुलल ॥ २ ॥

कुल डुलहरलडलं हुलड डलड डरलडुी, डुतुरी नुं घर तलकु डलख ।
कुल डलंगल कुलडक डुतुरी कनल, तुल तुरत कुलगल तुलण नल धलख ॥ ३ ॥

डुतुर नलं डलल डुललुल करल, सुं डुल सलरुल घर घन डलल ।
तल गरडुडलणल डुतुरल डणुी, डुतुर कुलणल डुतुरल नल सलल ॥ ॡ ॥

घर रल कुलड न डलवल सरुवथल, नलकडुल डुलठुल खलवल घलन ।
कुल गडतुल न ललगुल कुलहुनल, खलरुल ललगुल वलष सडलन ॥ ॡ ॥



*डुलह आंकुडी डुरतुडलक गलथल कुल अनुत डुल हल ।

रत्न : २७

जुआ री ढाल

दुहा

विसन सातोंई छे अति बुरा, त्यानों छोडे उत्तम जीव ।
 त्यानों सेवे भारीकर्मा जीवडा, त्यां दीवी नरक री नींव ॥ १ ॥
 प्रथम विसन जूवा तणो, तिण खेल्यां बंधे छे कर्म ।
 मतिभ्रष्ट हुवे तेहथी, बले खाय देवे जिण धर्म ॥ २ ॥
 जूवे रमे ते मानवी, गया जमारो हार ।
 इह लोक परलोक विगाड ने, गया नगर निगोद मझार ॥ ३ ॥
 तिण जूवा में अक्वण घणा, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[२ भवियण सेवो २ साध सयाण]

जूवे रमे त्यारो रहे माठो ध्यान, माठी लेख्या नें माठा परिणाम ।
 बले माठाइ जोग ने माठा अध्यवसाय, बले चित्त न रहे एक ठाम रे । भवियण ।
 जूवो मत रमजो कोइ, इण जूवा थी आछो न होइ रे । भवियण ।
 हीये विमासी जोइ ॥ १ ॥
 जूवे रमे तिणरे भूठ नें चोरी, दोनूं लारे लागी रहे नित । भ० ।
 थोडा में दरिद्री होय जावे, थोडा में हार दें सर्व वित्त रे ॥ भ० ही० २ ॥
 बले धसको निरंतर न मिटे तिणरो, बले न मिटें सोग संताप ।
 बले बिलखे मूढे फिरे लोकां में, इन जूवा तणे परताप रे ॥ ३ ॥
 जुवारी रा घर मे धन माल हुवे तो, थोडा में हार दें ततकालो ।
 बले लोका रो माथे उचारो ल्यावे, मांग्यां काठें तुरत देवालो रे ॥ ४ ॥
 लोक आय मांग्यां माथो नीचे घाले, तिण सूं पाछो तो देंगी न थावे ।
 कोइ लाजा मरतो कूवो वाकडी ताके, केड परदेयां उट जावे रे ॥ ५ ॥
 जूवे रमें जुवारी तिणरो, घर रा पिण न करे विश्वास ।
 जाणे रखे घर मासू चोर लंजावे, रगे नीधीं तणां करे नारा रे ॥ ६ ॥
 तिणरा सगा संवची नें मंत्री न्यातीला, त्यारे घरं जुवारी थावे ।
 जब त्यारे पिण धमको पडे तिणरो, रमें कामक धारं लंजावे रे ॥ ७ ॥
 मात पिता मासू नें गुणग, बडे रंण मायां उं माहि ।
 बले सजन नें अमजन गाग रं, उवारी श्री परमीन माहि रे ॥ ८ ॥

कोइ जुवारी नें बेटी देतो सके, इणरे जूवा रो कलंक लागो।
 इण नें बेटी परणाए कयाने विगोऊं, ओ तों धन खोय हुंतो दिसे नागो ॥ ६ ॥
 कोइ जुवारी ने व्याज देवे छे, कोइ जूवारी ने देवे उवारो।
 कोइ जुवारी सूं सीर मांडे छे, यां तीनां रो हुवे विगाडो ॥ १० ॥
 कोइ जुवारी री संगत करे छे, ते पिण जुवारी होवे।
 ते पिण धन माल खोय ने होय जाय रीतो, पछे छाने - छानें घणो रोवे ॥ ११ ॥
 जुवारी री संगत कीची ते बोले, हुं इण री संग सू गाढो वूडो।
 घर में धन माल हुंतो ते सारोई हाखो, वले दीठो लोकां मे मूंडो ॥ १२ ॥
 जुवारी जूवे रमे ते व्यसनी, बाप दादा ने मेंहणी बोलवे।
 उवे जुवारी तणी बात कांनो सुणे जब, त्यां सूं पिण पूरो बोल्यो न जावे ॥ १३ ॥
 जुवारी रा बेटा नें पोता सुधी, मेंहणी बोलवे लोकां माहि।
 इण रो वाप दादो जुवारी हुंतो, जब ए नीचो मायो घाले ताहि ॥ १४ ॥
 जुवारी रो आबरू घटे लोका मे, वले काण कुख जावक घट जावे।
 वले जुवारी री संगत करे छे, तिण रा पिण विसवा हीणा थवे ॥ १५ ॥
 वले जुवारी री स्त्री जूवा थी, दुखे दुखे काढे दिन रात।
 इण भरतार लारे आयां पछे मोने, कदे सुख न हुवो तिलमात ॥ १६ ॥
 वले जुवारी रा माता ने पिता, जुवारी थी सारा हुवा काया।
 ओ पापी म्हारे घर आय ऊमनो, इण निठाय दीनी म्हारी माया ॥ १७ ॥
 जुवारी रे कुटंब कवीलो, सगलाइ दुखिया थाय।
 जुवारी सारो धन हार जावे जब, न्यातीला पिण सीदावें ताय ॥ १८ ॥
 जुवारी जूवे रमतो हार जावे, सारो धन स्त्री ने माल।
 पछे भीख भमतो फिरे लोकां में, रोतां रा पिण पडे हवाल ॥ १९ ॥
 जुवारी रे - घर कोइ थापण मेले, तिण ने जुवारी हार देवे।
 तो पाछो आय मांग्यां कठा सूं देवे, जब ऊ घणा घमेडा लेवे ॥ २० ॥
 जुवारी जूवे रमें तिण काले, तिणनें देवे कोइ उवारो।
 ते पिण ठूजें तीजें करण जुवारी, ते जुवारियां रो सिरदारो ॥ २१ ॥
 जूवा रो पट्टो कराय सही कराई, ते सगला जूवा तणो अविकारी।
 तिण सगला जुवाख्यां रे छूट कराई, तिण रे नरक तणी छे तयारी ॥ २२ ॥
 केइ चोपड रमे छे गरथ अडे नें, ते पिण निरुवें जुवारी साल्यात।
 मार. मार करे मुख बोले रीणोइ, तिण री पिण विगडी छे बात ॥ २३ ॥
 भेला करे पासो ने सारी, मुख बोले मार मारी।
 चोपड रमें कर्म वांच्या भारी, ते हुवा नरक ने तयारी ॥ २४ ॥

जूवे रमे केइ माल अडे ने, हारी ने वले रोवे ।
 इण भव पर भव मे दुख पावे, दोर्नूई जन्म विगोवे रे ॥ २५ ॥
 जिण गांव में जुवारी घणा हुवे ते, गांव री पेठ गमावे ।
 भला भला मिनष छे तिण गांम माहे, ते सगलां ने भूडा दिखावे रे ॥ २६ ॥
 जुवारी गांम रा सगला लोकां नें, देगां देशां में मेंहणी बोलावे ।
 जो जुवारी सगला ने कहावे, गांम री हलकी घणी लगावे रे ॥ २७ ॥
 जान बरात पर गांम में जाये, जो तिण माहें जुवारी होवे ।
 तठे पिण तिण गांम री हलकी लगावे, जानियां रो पिण आवरू खोवे रे ॥ २८ ॥
 जुवारी जूवे रमें घन माल हारे, तिणने मुख मुख दे फिटकारो ।
 शोभा तो लोकां मे कठेय न दीसे, धिग धिग छे तिण रो जमवारो रे ॥ २९ ॥
 जूवे रमें तिण रे उत्तकष्टे भांगे, विसन सातोई आवे ।
 आगला नें पाछला न्यातीलां ने, जुवारी सगला ने लजावे रे ॥ ३० ॥
 नल राजा तो जूवो रमे ने, सर्व राज ने स्त्री हारी ।
 देव नगर साराइ छोडी ने, एकलो चाल्यो मूंह विगाडी रे ॥ ३१ ॥
 पाचोई पांडव जूवे रमें ने, हाख्यो हथनापुर नों राज ।
 देव प्रवेशा भमता फिरिया, त्यां गमाई लोकां मे लाज रे ॥ ३२ ॥
 धागे वडा वडा राजा अनेक हुवा ज्यां, जूवा थी राज हाख्यो ।
 भीख मंगता हुवा भिख्यारी, त्यां जीतव जनम बिगाड्यो रे ॥ ३३ ॥
 जूवे रमे जुवारी तिण रे, अजक रहे दिन रात ।
 ताणा वेजा लगा रहे चित्त में, तिण रा दुख माहे दिन जात रे ॥ ३४ ॥
 पछे जुवारी मरने माठी गति जावे, तिहां पावे दुख अनंत ।
 नरक निगोद मे भीकां खावे, इम भाख्यो छे श्री भगवंत रे ॥ ३५ ॥
 साहुकार रो वेटो जूवे रमें नित्त को, साहुकार सूं वरजणी नावे ।
 जाण्यो वरजू तो वेटो अपघात करने, रखे अकाले मर जावे रे ॥ ३६ ॥
 रसे रसे वेटा ने समझायो घणो, पिण वेटा सूं जूवो छोडणी नावें ।
 जब साहुकार वेटा थी डरियो, रखे सारो घन जुवा मे गमावे रे ॥ ३७ ॥
 म्हारो कह्यो वेटो मूल न माने, इणने छेडवूं तो हूणो हूणों ।
 ओ तो कपूत उठ्यो म्हारा पाप रे उदे, करतो दीसे छे घर रो पूणो रे ॥ ३८ ॥
 इतले साहुकार मांदो पड्यो जब, वेटा ने कहे एकंत बोलाय ।
 मो काल कीयां पछे हू कहुं ज्यू कीजे, ज्यू तोने सुख थाय रे ॥ ३९ ॥
 म्हारा खरच ऊमर देगां देशां रा, जूवाखां ने लीजे बोलाय ।
 खरच कीया पछे तूं पाट वेसे जब, जुवाखां कने टीको कढाय रे ॥ ४० ॥

जुवाख्यां में बडा जुवारि पाये, तिण कने तूं टीको कदाय ।
 तूं चोडे कहीजे न्यातीलां सारां ने, मोनें तात कह्यो छे बोलाय रे ॥ ४१ ॥
 इम कही नें काल साहुकार कीयो, जूवो छोडावण रो कीयो उपाय ।
 तिणरी वेदा नें समरू पडी नहीं काई, पिण न्यानूं दीयो समसाय रे ॥ ४२ ॥
 हिवे साहुकार रे खरच रे ऊमर, जुवागे लिया अनेक बोलाय ।
 मारी खरच करे सारी न्यात जीमाए, पछे जुवारी सर्व जीमाय रे ॥ ४३ ॥
 साहुकार रो वेदो पाट वेदो जब, न्यातीलां नें कह्यो संभलाय ।
 म्हारे पिता कह्यो तूं पाट वेमे जब, जुवारी आगे टीको कदाय रे ॥ ४४ ॥
 इम न्यातीलां रा कानां में काडे, सारा जुवारियां नें बोलाय ।
 यां में पक्रा में पक्रो जुवारी हुवे ते, म्हारे टीको काडो आय रे ।
 भायां मत करो जेज लियार ॥ ४५ ॥
 एक कहे हूं पक्रो जुवारी, जुवारी माहिं पक्रा सूं पक्रो ।
 म्हारे धन माल हंतो ते सगलोई हाख्यो, होय वेदो छूं फक्रम पक्रो रे ।
 टीको तो हूं देमूं ॥ ४६ ॥
 दूजो कहे हूं थां थकी पक्रो जुवारी, जुवाख्यां माहिं दडो जुवारी ।
 म्हें पिण धन माल हंतो ते सगलोई हाख्यो, हाट हवेली म्हें अचिकी हारी रे ॥ ४७ ॥
 तीजो जुवारी कहे थां थकी म्हारो, मुणो थें सगलोई ढालो ।
 हाट हवेली म्हें पिण हाख्यो, बले म्हें अचिको काड्यो विवालो रे ॥ ४८ ॥
 चौथो जुवारी कहे हूं थां थकी पक्रो, थानें खवर नहीं छे म्हारी ।
 थें हाख्यो छे ते म्हें पिण हाख्यो, थां सूं स्त्री म्हें अचिकी हारी रे ॥ ४९ ॥
 पांचमों कहे हूं थां सूं पक्रो जुवारी, मोनें गांव वारे काड्यो कूटो ।
 थें हाख्यो छे ते म्हें पिण हाख्यो, अचिकाइ रो टिकाणो छूटो रे ॥ ५० ॥
 छठो कहे थां थकी पक्रो जुवारी, थें हाख्यो ते म्हें पिण हाख्यो ।
 मोनें गवे चडाय गांव वारे काड्यो, बले ऊमर जूनां सूं माख्यो रे ॥ ५१ ॥
 सातमों कहे हूं थां थकी पक्रो जुवारी, थां में वीती ते सारी मो मांयो ।
 थानें संका हुवे तो निजरां देखल्यो, म्हें हाय अचिकेरो कदायो रे ॥ ५२ ॥
 आठमों कहे हूं सारां सिरे जुवारी, तिणरो लेखो तूं मुण रे भाया ।
 थां सगलां में वीतीं ते मो में वीतीं, म्हें हाय ने नाक देनूं कदाया रे ॥ ५३ ॥
 जुवाख्यां रे मांहोमाहिं वाड लागो, त्यांरो देखी माहोमां तांण ।
 जब साहुकार तणे वेदो डरियो, जुवारी लागा जहर समांण रे ॥ ५४ ॥
 तिण जुवारी आगे टीको नहीं कदायो, त्यांनें काड दीया घर वारो ।
 जूवो रमवो तिण जावक छोड्यो, हीया में कीयो गृह विचारो रे ॥ ५५ ॥

म्हारे बाप मरते थके कह्यो थो मोनें, तूं जुवारी आगे टीको कढाय ।
 ते तो एकत म्हारो जूवो छोडावण, त्यां इण विघ मोनें समभाय रे ॥ ५६ ॥
 जो हूइज वले जूवो रमू, इण सारिखो हूं पिण थाऊं ।
 तो जीतव जन्म विगाडूं म्हारो, घन माल पिण सगलो गमाऊं रे ॥ ५७ ॥
 जुवारी मर ने माठी गति जावे, पावे दुख अनंत ।
 नरक निगोद मे भिका खावे, इम भाख्यो श्री भगवंत रे ॥ ५८ ॥
 कही-कही ने कितरो एक कहूं, जूवा मांहे अवगुण अनेक ।
 इम सांभल ने उत्तम नर नारी, जूवा नें छोडो आण ववेक रे ॥ ५९ ॥
 फोइ जूवा तणा अति अवगुण सुण नें, जूवो छोडे साघां हजूर ।
 ते सूस भांग नें जूवे रमे पापी, तिणरा जीतव जन्म नें घूड रे ॥ ६० ॥
 जूवा ने ओलखावण काजे, जोड कीची पुर सहर मभार ।
 संवत अठारे वरस सतावनें, सावण सुदी पंचमी शनिसर वार रे ॥ ६१ ॥



रत्न : २८

व्याहुरो

ढाल

साखी	शब्द	कहे	घणा,	सीखी	अकल	उठाण ।
परमारथ	खोजे		तिके,	ते	नर	विरला
कद	कूपल	बोली	हंसी,	पांन	दीयो	कब
वीर	बखांगी		ओपमां,	समभे	लोग	जाब ।
नवा	नवा	लोक	जाण	ने,	कह्या	घणा
करज्यो	मती		कदागरो,	जोयजो	सूतरां	प्रस्ताव ।
अछत्रा	ने	ओपमा	छती,	छत्रे	अछती	न्याव ॥ ३ ॥
इम	जांगी	नें	गुण	ग्रहो,	भगडो	होय ।
मति	ग्यांन	रा	भेद	छे,	सुणज्यो	कोय ॥ ४ ॥
एक	सूतर	नेश्राय	छे,	बीजो	चित्त	लगाय ।
अणदीठो		अणसांभल्यो,	मेले	वचन	विण	नेश्राय ॥ ५ ॥
जेसो	नर	देखे	तिसो,	उत्तर	दे	रसाल ।
इसी	बुद्धि	उत्पात	की,	वीर	बखाणी	ततकाल ॥ ६ ॥
सगंथ	हुवे	तो	देखलो,	नदी	ठांणाअग	ताहि ।
लोक	तिके	पिण	यूं	कहे,	कानकी	मांहि ॥ ७ ॥
साधु	कहे	तिण	में	किसूं,	इण	फंद ।
कहे	लोक	जांगें	नहीं,	पूरो	छलिया	इद ॥ ८ ॥
विषे	रूपिया	फद	रो,	सुणज्यो	अवे	परमारथ ।
जोगी	जोग	सेठो	रहे,	भोगी	तजे	अरथ ॥ ९ ॥
तिणं	उपर	दिष्टान्त	छे,	सुणज्यो	रोस	विकार ।
प्राणी	चाल्यो	परणवा,	जब	आगूच	दीयो	निवार ॥ १० ॥
तोरण	तारां	छांहडी,	किम	कर	बांध्यो	जताय ।
जो	तूं	वेटो	शाह	नों,	करें	जाय ॥ ११ ॥
तो	तुमने	परणावस्यां,	इण	विच	मेले	कांम ।
तोही	विषे	मे	अंव	हुओ,	तुरंत	दांम ॥ १२ ॥
सालां	न्हांखे	धूल	सिर,	चेत	छडी	ले
तव	थोडोसो		बोलियो,	मुंहडे	अवें	ही
पाछो	पिण	जावे	नष्टी.	उगो	छे	पोत्यो
					हठ	देय ।
						लेय ॥ १४ ॥

सासू	म्हांसूं	सलसली,	आई	मोड	वार ।
चोडें	लोकां	देखतां,	मांड्यो	कोण	विचार ॥ १५ ॥
नाक	ताण	दही	चोडियो,	अब तो हुबो	अधिराज ।
भोग	थकी	नरके	गयो,	नकटा अब तो	लाज ॥ १६ ॥
साले	थूलो	न्हंखियो,	सासू	खांच्यो	नाक ।
सालो	सुसरो	स्यूं	करे,	डर लाग्यो	तिण घाक ॥ १७ ॥
रुपिया	सेती	राजवी,	बस हो	जावे	तेह ।
तो	स्यूं छे	आ	बापडी,	नाणे	घरसी
इम	चित्तव	आवा	कीया,	घाल्या	रुपिया
तुरंत	उतारे	आरती,	इचरज	पाम्यां	लोक ॥ १८ ॥
मिल	नें	मांहे	लेगया,	माया	दराई
कोइक	जूती	मेलके,	हांसी	करेज	लोक ॥ २० ॥
अनमी	भूम्यां	ज्यूं	नम्यां,	चाकर	ऊमो
आपो	परवश	वेचियो,	तिणरी	खबर	न कांथ ॥ २१ ॥
हाथी	हलकां	आवज्यो,	मोत्यां	चोक	पुराय ।
पग	हेठे	गंगा	वहे,	कूडी	करें सराय ॥ २२ ॥
केशरियो	वनडो	कहे,	घणो	लडायो	जोर ।
गाल्यां	गावा	ओसरी,	जाणें	दीवी भाटा	री ठोर ॥ २३ ॥
कोइ	कहे	तुभू	मा इसी,	तो	करे राबला
साल्यां	भांडे	तव	हंसें,	तिण	जीतव ने
बोल्या	तव	मोल्या	कह्यो,	पांणी	लावण दास ।
कुडुम्ब	कबीलो	भांडियो,	तोइ	न हुयो	उदास ॥ २५ ॥
भोला	कहे	गाया	भला,	रीभू	गया घर पीत ।
ग्यांनी	मन	में	मुलकिया,	ए	गेल्यां वाला गीत ॥ २६ ॥
जातादिक	तेडाव	सूं,	दुनियां	हरषित	थाय ।
मन	लागो	छे	मुगत	सूं,	दुनियां
घर	में	सेंठो	घाल	नें,	तिण और
आगे	मेल्यो	भूस	रो,	अब तो	सुरत संभाल ॥ २० ॥
बदल	तणी	परि	खांचसी,	सगला	घर नों भार ।
आलस	करनें	बेससीं	तो,	देसी	वचन प्रहार ॥ २६ ॥
छेहडे	छेहडो	बांधियो,	नास	नास	न जाय ।
नेनी	गने	ठाव	को,	तो	सेठे हाथ संभाय ॥ ३० ॥

व्याहृतो

बीच	मेंदी	घाली	बली,	दागल	कीयो	तिवार ।
देखो	कांम		विडम्बनां,	ओ	लाजे नही	लिगार ॥ ३१ ॥
ओलख	लेस्यां	आप	स्यूं,	मेदी	रे	एलाण ।
लाखां	हजारं	लोक	में,	पकडे	लेसां	ताण ॥ ३२ ॥
चिहुंगति	चवरी		जाणज्यो,	बंधन	डोर छे	कर्म ।
थोथा	तीनूं		बांसडा,	कुगुर	कुदेव	कुधर्म ॥ ३३ ॥
हिंसा	धर्म	बताय	नें,	घणो	हलावसी	तोय ।
पांच	थावर	च्यार	त्रस,	ए	नव घाटी	जोय ॥ ३४ ॥
होम	तणी	पर	होमसी,	पापी	नरकां	मांय ।
रंक	राव	सब	एकसा,	कारण	किसका	नांय ॥ ३५ ॥
नरक	पंथ	जाणें	नही,	आव	बतावूं	नाह ।
तीन	फेरा	आणें	लीया,	चोथे	चलियो	जाह ॥ ३६ ॥
खीच	तणी	पर	खांडसी,	भूरे	जेम	कपास ।
इण	विघ	बेला	बीतसी,	तो पिण	जीवण री	आस ॥ ३७ ॥
जुवारी	जिम		जाणज्यो,	हाखो	जाय	गिंवार ।
कर्म	गांठ	काठी	होसी,	जातां	मोष	किवार ॥ ३८ ॥
पेहला	हुतो		माणसियो,	अवे	हुवो छे	डोर ।
बाया	पिण	गावें	खरी,	ओ	हिज इचरज	जोर ॥ ३९ ॥
डोल	घुरावे	जीत	रा,	देखो	उलटी	चाल ।
मानस	खोडे	मार	ने,	गावे	टोडर	माल ॥ ४० ॥
जीत्चो	नही	पिण	हारियो,	इम	भावे धन	खूट ।
पइसा	भर	भर	नीठ	सूं,	देव देव	कर छूट ॥ ४१ ॥
आगेवाणी	तूं		होसी,	पापे	मेलसी	आथ ।
दोरो	काकण		दोरडो,	ते	खुल्सी एकण	हाथ ॥ ४२ ॥
विणज	पाप	नारी	तणो,	थोडा	कर्म	बंधाय ।
तिण	सू	खोले	दोरडो,	दोनूं	हाथ	लगाय ॥ ४३ ॥
सूंक	पाक	दीवी	घणी,	दे	जाचकां	दांन ।
इतरो	थोकां		परणियो,	तोइ	करे छे	मांन ॥ ४४ ॥
घर	चिंता	लागी	घणी,	दिन	भूरंता	जाय ।
अछत्रे	छत्रे		तिरपतो,	तडफे	फासी	मांय ॥ ४५ ॥
चोर	कसाई	रिण	दगो,	भूठ	गुलामी	वेठ ।
इतरा	बानां				नीठ भरीजे	

एक	कवलियो	जद	होसी,	अनंता	जीव	संहार ।
दोटे	ले	दोली	फिरी,	इण	विष	दां ला मार ॥ ४७ ॥
कद	सासू	मुख	सूं	कह्यो,	कह्यो	कुण दीयो जताय ।
नरक	दीवी	श्री	जिण	कही,	तिण	स्यूं मेल्यो न्याय ॥ ४८ ॥
नारी	सेती	नेह	करी,	खलियो	काल	अनंत ।
इम	सांभल	नैं	थडहखा,	शूर	वीर	गुणवंत ॥ ४९ ॥
तडके	मोहज		तोडियो,	चित्त	लगो	निरवाण ।
आज	पछे	वियें	सेववा,	मोनें	देव	गुर री आण ॥ ५० ॥
तोरण	सूं	पाड्या	फिखा,	बावीसमां	जिण	चंद ।
जानी	जोवंत		रह्या,	छोड	दीया	घर फंद ॥ ५१ ॥
चोसठ	सहस्र		अतेवरू,	पायक	छिन्नू	कोड ।
भरत	चक्रवर्ति		सारिखा,	छिन	में	दीघा छोड ॥ ५२ ॥
एकीका	नूर		बोलिया,	ए	आगली	रीत ।
मोटा	मोटा		मांनवी,	मांडी	इण	सूं पीत ॥ ५३ ॥
तिणरो	जाब	सुणो	तुमें,	क्रोच	कषाय	निवार ।
आगम	वेद	कुरान	में,	भाख्यो	दोषण	नार ॥ ५४ ॥
मोटा	मोटा		मांनवी,	मांड्यो	इण	सूं प्यार ।
थोडा	सुखां	रे	कारणें,	भव	भव	हुआ खुवार ॥ ५५ ॥
महाभारत	इण	श्री	हुओ,	आतो	बात	वदीत ।
रावण	सारिखा		जीवडा,	बहुला	हुआ	फजीत ॥ ५६ ॥
लंका	कोट	चितोड	पिण,	मार	कीया	पेमाल ।
नारी	हंदा	नेह	सूं,	कुण	पड्या	हुवाल ॥ ५७ ॥
लोक	तिके	जाणें	घणा,	परे	मांडे	छें रांत ।
मांडे	होलू	भोज	री,	कराइ	बकडावतां	री घात ॥ ५८ ॥
नारी	घर	आई	तरे,	करे	कवण	वृत्तंत ।
भेद	धाल	पर	भावसी,	चिता	गले	पडत ॥ ५९ ॥
माता	जण	मोटो	कीयो,	पिता	पोषियो	वेह ।
भाई	बहन		रमाडता,	त्यांसूं	तोडायो	नेह ॥ ६० ॥
नारी	बोली	नाह	सूं,	घर	रो	काम चलाय ।
आरों	अवसर		आवियो,	हिम्मत	हिंवे	संभाय ॥ ६१ ॥
के	तो	जावो	चाकरी,	के	जावो	परदेस ।
के	करषण	व्यापार	कर,	बेंठा	कांय	अजेस ॥ ६२ ॥

ज्युं	त्यूं	कर	घन	करे,	हाकिम	दहे	हमेश ।
उग्सर्ग		आरो		आण	नें, मेटो	परो	कलेश ॥ ६३ ॥
दिन	दिन	चिता	सूं	आवियो,	घर	मे	दरख ।
सगा	सेण	थांसूं		मे गले,	किण	विव	गरव ॥ ६४ ॥
म्हारी	शर्म	कोडक		मांगणी,	जाये	करो	अरज ।
नीण	पुन्ती	भरतार		रहिस,	क्यूंडक	करो	गरज ॥ ६५ ॥
बेर	काढे	नी पर		स्त्री,	धर्म	करण	नांय ।
चाकर		चाले		सू,	न्हांखे	दे	मांय ॥ ६६ ॥
दिल	केडें	उजम		चूकले,	हुकम	नारकी	वार ।
परण्यो	जब	गले		पिऊ,	तो	चलावे	नार ॥ ६७ ॥
बांधी				हुतो,	अवे	विरचे	सोस ।
				कलेषणी,	रुपिया	तन	खोस ॥ ६८ ॥
						लीघा	



रत्न : २६

तात्त्विक ढालां

ढलल : १

[जलल डलरग डे धुर सू आदल जललद के]

जलल डलरग डे धुर सू आदल जललद के, तूडलं आदल कलढी जलल घडं री जी ।
तूडलंरी सेवल सलरे डुर नर कलसठ डद के, तूडलं सलरलं डेहली संजड ललडुु जी ॥जल०*१॥
जलल डलरग डे रलषड देव जी कु डूत के, डरतेशुवर छ खणुड नुु घणी जी ।
तूडल डलल दूधल डुगलतल नगर नलं सूत के, तूडलगी कउसठ सहसुर डनुतेवरू जी ॥ २ ॥
सडुदुर दलकूड सुत नेड डहल डललवलन के, तीरुथकर डलवीसडलं जी ।
तूडल तुरेण सेती डलछुडी डलली कलन के, तेल कढी तक नीकलूडल जी ॥ ३ ॥
जलल डलरग डे डुरगटूडल डलरस नलथ के, कलस नलंडी थूडल ककत डे जी ।
दलखूडल लीघी तीनसुु डुरषलं सघलत के, जलल कलसण नल डघलडती जी ॥ ॡ ॥
जलल डलरग डे डुरगवत शुरी वरवडलंन के, तूडल सूड डणे संकड ललडुु जी ।
कषुट सही उडकलडुु केवल नूडलन के, आक कलसण वरते तेहनू जी ॥ ॡ ॥
कलतल जललणेशुवर ऊडनल गडं डे आड के, देश नगर डे कलतल हुडू जी ।
एकण डव डे कहुं डदवी डलड के, डुगत गडल तीरुथ थलडने जी ॥ ॢ ॥
जलल डलरग डे कलतल कुषु डरनलथ के, तीरुथ घडं दीडलडने जी ।
दलखूडल लीघी सहसुर डुरुष सघलत के, डलस संथलरे शलव लहूडल जी ॥ ॣ ॥
जलल डलरग डे तीरुथकर कलवीस के, कषुडुरलड कुल नलं ऊडनलं जी ।
तूडल सगल कलरलत डललूडुु वलसवलं डीस के, कूडलरू तीरुथ थलडने जी ॥ । ॥
जलल डलरग डे सलगर नलडे रलड के, सलठ सहसुर सुत डुवल डुणी जी ।
दीघी सगली छ खणुड रलदुधल छलटकलड के, वेरलगे डन वलरूने जी ॥ ॥ ॥
जलल डलरग डे कषुडुरती सनत कुडलर के, तस रूड देखण देव आडलडुु जी ।
रुुग ऊडनूु कलणी देही डसलर के, कलरलत ले डुगते गडल जी ॥ १० ॥
जल० डरत सगर डडव सनत-कुडलर के, कलतल कुंडु डर कलणलडे जी ।
डहलडड हुरलषेण कक वलकलर के, दसूडू कषुडुरती डुुडकल जी ॥ ११ ॥
तूडलरे लख कुरलसी हूड गड रथ नल थलट के, कलसठ सहसुर डनुतेवरू जी ।
ते छुुडुुडल डलड दलल छड खणुड रलदुधल गहघलट के, जलल डलरग कलडुुु दीडतुु जी ॥ १२ ॥
जलल डलरग डे नवू ही वलदेव के, रलक रडण सरू डरलहुरी जी ।
डुगत डहुतल शुरी जलल डलरग सेव के, वलडडुर गडल डुर डलंकडे जी ॥ १३ ॥
जलल डलरग डे दकलरण नलंन नरेद के, देश दकलरण कुु घणी जी ।
तलस डलरखल करवल आडुुु ककदुर के, वीर सडुुडे दलखूडल गुरुुु जी ॥ १ॡ ॥

*डह आंकुडी डुरतूडेक गलथल के डनुत डे है ।

ढलल : २

[सलथ कोइ मत रलसुओओ]

गणघर	गोतम	स्वाम	जी,	समखं	सुख	दातारो	जी ।
चोवीस		डंडक	ऊमरे,	पदवी	रो	विस्तारो	जी ।
				भाव	घरी	भवियण	सुणो ॥* १ ॥
समदिव्डी		श्रावक	मुनि,	केवली	जिणवर	जाणो	जी ।
चक्री		हल्लघर	केशवा,	मंडलीपती	राजानो	जी ॥भा०२॥	
सेनापति			गाथापति,	बढही	प्रोहित	जोयो	जी ।
इत्थी	हय	गय	जाणज्यो,	ए	रत्न	पचेन्नी	होयो जी ॥ ३ ॥
चक्र	छतर	चरम	डंड,	असी	मणी	कागणी	सातो जी ।
सातूं	नरक	रो	नीकल्यो,	ए	न	लहे	पदवी विख्यातो जी ॥ ४ ॥
पेहली	नरक	रो	नीकल्यो,	पदवी	सोले	पावे	जी ।
दुजी	रा	पनरा	लहे,	चक्रवर्त्त	नही	थावे	जी ॥ ५ ॥
तीजी	रा	तेरा	लहे,	टलिया	बल	वासुदेवो	जी
चोथी	रा	बारा	लहे,	न	हुवे	देवाधिदेवो	जी ॥ ६ ॥
पांचमीं	नरक	इग्यार	छे,	केवलग्यानी	न	होयो	जी ।
छठी	रा	दश	रिघ	लहे,	साधु	न थाये	कोयो जी ॥ ७ ॥
सातमीं	नरक	रा	नीकल्या,	तिर्यच	मांहि	आवे	जी ।
हय	गय	समकित	जाणज्यो,	पदवी	तीनज	पावे	जी ॥ ८ ॥
पृथवी		पांणी	वनस्पति,	तिर्यच	मिनष	बखाणो	जी ।
काल	करी	ने	रिघ	लहे,	संख्या	उगणीस	परमाणो जी ॥ ९ ॥
तीर्थकर		चक्रवर्ति	नी,	टलिया	बल	वासुदेवो	जी ।
तेवीस		पदवी	माहिली,	च्यार	पदवी	नही	लेवो जी ॥ १० ॥
बे	ते	चोइन्नी	जीवडा,	रिधि	अठारे	पावे	जी ।
च्यार	बोल	ल्यो	पाछला,	वले	केवलग्यानी	न थावे	जी ॥ ११ ॥
तेउ	बाउ	रा	नीकल्या,	पदवी	नव	बखाणो	जी ।
एकेन्नी		साते	सही,	वले	घोडो	ने हाथी	जाणो जी ॥ १२ ॥
भवन	पति	ब्यंतर	ज्योतिषी,	पदवी	इम	इकवीसो	जी ।
तीर्थकर		वासुदेव	नीं,	वे	न लहे	कही	जगदीसो जी ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तात्त्विक ढालां : ढाल २

पेह्ला	वीजा	देवलोक	रा,	पदवी	तेवीस	पावे	जी ।
तीजा	सू	आठमां	लगे,	एकेन्द्री	नही	थावे	जी ॥ १४ ॥
च्यार	देव लोक	नव ग्रीवेक	नां,	रिधि	लहे दग	च्यारो	जी ।
घोडो	ने हाथी	टल	गया,	लेज्यो	चतुर	विचारो	जी ॥ १५ ॥
पांच	अनुत्तर	विमाण	रा,	पदवी	आठज	पावे	जी ।
चवदे	रत्न	चक्रवर्ती	नां,	बले	वासुदेव	न थावे	जी ॥ १६ ॥
ए	तेवीस	पदवी जिण	कही,	भव	जीवां	रे भागो	जी ।
भणे	गुणे	सुणे	सांभले,	आणज्यो	घट	वेरागो	जी ॥ १७ ॥



ढलल : ३

दुहल

ँक आंघो नें ँक ढांगलो, दोनूं ढडलडल अटवी ढांढ ।
 इणरे आंख नहलं उणरे ढग नहलं, तूढां सू नगर गडो नहलं डलड ॥ १ ॥
 आंघो इंडडल डलरतुो थकूं, आडुो सलहडूं डडलेड डलत ।
 ढांगलो ढडलडुो तलहलं आडलडुो, दोनूं करे ढलंहुोडलं हलत ॥ २ ॥
 ढांगलो कहे हूं दुखलडुो घणुो, हूं ढडलडुो छूं अटवी ढांढ ।
 दोनूं ढग नहलं डलई डलंहरे, डुुसूं नगर गडुु नहलं डलड ॥ ३ ॥
 डद आंघुु कहे हूं ढलण दुखलडुु घणुु, हूं ढलण डललं अटवी डें इंडड ।
 आंखुडल डलण नगर ढुहुचूं नहलं, नुुनूं कुण डतलडे डलत ॥ ॡ ॥
 डुु तं डलंघे डेसे डलंहरे, तूं डुुनूं डलरग चलड ।
 तुु आंढलं दोनं डणल, नगरुी ढहुंढल डलड ॥ ॡ ॥

ढलल

[डलड नुं डलडलक नुु डुुरे]

ढांगलो सुण हरखुुु तलहल, डलसललत कूडुी डलंहुुडलं हल ।
 ढांगलल नुु उडलडुु आंघे, डेसलणुुु ढुुतलरल डलंघे ॥ १ ॥
 ढांगलुु नुु आंघल नें चललडे, संनुुनकर डलरग डतलडे ।
 इण डलड अटवी ललंघी तलहल, दोनूं आडल छूं नगरुी डलं हल ॥ २ ॥
 नगरुी आडल तुु सुखलडल हुडल, अलन ढलंणी डलनलं नहलं डुुडल ।
 ँ डलडलनत लडुुी रलत डलंणुुं, संसलर नुु डुुगत ढलडुुणुु ॥ ३ ॥
 डुुडुी अटवी डलड संसलर, तलण डें दुखलडल डलड अढलर ।
 नगरुी डलड डुुगतल नुु डलंणुु, तलण नें लडुुी रलत नलडुुणुु ॥ ॡ ॥
 आंघल डुुं डलड गुुलन रहलत, अगुुडलंनल डलडुुडलत सलतलत ।
 तलण रे कुरलडल रुढ नहलं ढलड, ते डुुगत नगरुी कुरलड डलड ॥ ॡ ॥
 ते डलड कुरलड करडल ललगुु, ढलण नहलं डलणुु डुुगत रे डलगुु ।
 डलण आगड नुु डलंण नलं हलं, डलडलडलक न डलणुु कलं डलं ॥ ॢ ॥
 ते डुुगत नगरुी कुरलड डलड, संसलर डें नुुनुुलल डलंघे ।
 ते तुु आंघल डेड अलुुडुु, गुुलन डलनलं संडुुलो न सुुडुु ॥ ॣ ॥
 कडल डलडलडलक नुु हुडुु डलंण, डुुढ ढलरग ललडुु ढलडुुणुु ।
 ढलण कुरलड करणुी नहलं आंघे, तुु ढलण डुुगत नहलं डलडे ॥ ॢ ॥

मललया ढांघो ने पांगलो दोय, मुखे नगर पोंहता सोय ।
 ज्युं ग्यान क्रिया नों सयोग थाय, तो जीव मुगत माहे जाय ॥ ९ ॥
 क्रिया तो ग्यान छे नाही, क्रिया तो जाणे देखे नहीं काइ ।
 क्रिया तो सुमता रस भाव, कर्म रोकण तोडण रो सभाव ॥ १० ॥
 ग्यान दरसन छे उपयोग, ते जाणे देखे लोक बलोक ।
 कोइ क्रिया नें कहे उपयोग, तिण ते मोटो मिथ्यात रो रोग ॥ ११ ॥
 ग्यान क्रिया छे दोय, त्यां ने एक म जाणो कोय ।
 त्यांरो सभाव जूवो जूवो जाणो, त्याने रुडी रीत पिछाणो ॥ १२ ॥

ढाल : ४

डुहा

केड अर्यांनी डड कहेँ एकेन्द्रिय ना पुन्य अन्व मात ।
त्यांनीं मार पवेन्द्री पोषियां, तिण में कहेँ धर्म साख्यात ॥ १ ॥
तिण एकेन्द्री नें वेदना हुवे, ते भोळां नें खवर न कांय ।
तिणरी गोतम स्वांमी पूछा करी, जव दीवी वीर वताय ॥ २ ॥

ढाल

[स्वांमी म्हारा राजा नें धर्म सुराज्यां]

हाय जोडी विनती करे, नीचो शीप नमाय हो । स्वांमीः ।
पृथवी काय हणियां यकां, वेदना केहवी शाय हो । स्वांमीः ।
वरज कहेँ छें विनतीः ॥ १ ॥
तिणरे आंल कांन नासिका नहीं, जिम्या पिण नहीं ताय हो । स्वां ।
बले मन वचन विण वेदना, भोगे छे किण न्याय हो ॥ स्वांः २ ॥
बल्ला वीर इसडी कहे, अति वेदन हुवे ताय हो । गोतम ।
दिष्टांत देड नें कहेँ तो कले, सुण तूं चित ल्गाय हो । गोतम ।
उपकानी इम उनदिचे ॥ ३ ॥
कोड गुंगो पुरुष छे जन्म रो, वहरो जन्म रो जाण हो ।
ते पिण आंधो ने पांगुलो, बले रोग घेरित छे आण हो ॥ गोः ४ ॥
तिण अंध पुत्प नें भालां करी, भेदें जायगां वत्तीस हो ।
बले वत्तीस जायगां खडगे करी, छेदे कर कर रीस हो ॥ ५ ॥
तिण अंध पुरुष नें हुवे वेदनां, छेदे भेदे तिण वार हो ।
एहवी वेदन पृथवी काय नें, हुवे छे दीयां परिहार हो ॥ ६ ॥
ते रांक गरीव छें वापडा, त्यांरी करे हर कोड घान हो ।
त्यांरी प्रकार लागें किण आगले, ए इसड जिव अनाय हो ॥ ७ ॥

अ्यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढाल : ॡ

दुहा

मेण लाख लकडा तणों, चोथो माटी रो ताहि ।
 ए च्याळुंड गोला कहा, सूतर अंगायंग मांहि ॥ १ ॥
 ज्यूं च्यार जात रा मानवी, इण संसार मभार ।
 केइ गीदड केइ सूरमां, ते सुणज्यो विस्तार ॥ २ ॥
 साधां री वांणी सुणी च्याळं जणा, आयो मन वेराग ।
 आपे इतला दिन आंवां वूहा, अबे उषडिया भाग ॥ ३ ॥
 हिंवे थांनक बारे नीकल्या, केइ लोक बोल्या छे तडकी ।
 थे वेठ मूंडो बांच ने, भली गमाइ घरकी ॥ ४ ॥
 केइक तो इम बोलिया, केइकां दीची गाल ।
 मेण गोला ज्यूं परगल्यो, ताप लागो ततकाल ॥ ५ ॥
 मेण गोलो सूर्य रा ताप थी, गल ने हुवो नरम ।
 ज्यूं इण लोकां रा ताप थी, छोड दीयो जिण धर्म ॥ ६ ॥
 तीन पुरुष गाढा रह्या, त्यांने पाछा उत्तर आप ।
 पोता पोता रे घरे आवियां, जिहां वेठ छे मा बाप ॥ ७ ॥
 मात पिता ने इम कहे, म्हें सुणी साधां री वांच ।
 त्यां वचन अमोलक बागख्या, म्हाने लागो अमिय समाण ॥ ८ ॥
 जब माता त्रिसूलो चाढ नें, बोली मुख सूं गेर ।
 निकल म्हारा घर थी, लेने थारी वेर ॥ ९ ॥
 ते हाथ जोडी ने इम कहे, तूं म्हारे जन्म री दाता ।
 हूं साधां कने जाऊं नही, आज पछे हे माता ॥ १० ॥
 सूर्य ताप थी नही पिगलियो, तिण ने लागी अग्नि री भाल ।
 लाख तणो गोलो हुतो, पिगलियो ततकाल ॥ ११ ॥
 माता वचन करडा कहा, तिण ने अग्नि जिम भाल ।
 पोते लाख गोला जिसो, ते भिष्ट हुवो ततकाल ॥ १२ ॥
 दोय पुरुष गाढा रह्या, न हुवा मूल उदास ।
 माता पिता ने उत्तर दीया, हिंवे आया नारी रे पास ॥ १३ ॥
 नारी पूरी कलेसणी, तिण रे धर्म न आवे दाय ।
 तीन लिलाडी सल चाढ ने, किण विघ बोले वाय ॥ १४ ॥
 तडक भडक बोली इसी, कर आवे ज्यूं दाय ।
 ओ घर ने ए टावख्या, हूं कूवे पड स्यू जाय ॥ १५ ॥

हूं जीमण राधूं जुगत सूं, तूं आवे खाण नें हूंस्यो ।
 तूं जाय बेटो मुख बांध नें, बडो धर्म को धूंस्यो ॥ १६ ॥
 ए वचन सुणी नारी तणा, भय पाम्यो छे अतंत ।
 आ मरसी मो ऊमरे, तो करवो कुण विरतंत ॥ १७ ॥
 आ मरती दीसैं खरा खरी, तो हिवैं छोड देवूं जिण धर्म ।
 ज्यूं सगा संबंधी लोकां मझे, रहे ज्यूं म्हांरी समं ॥ १८ ॥
 ओ नारी सूं डरतो कहे, राखो म्हांरी समं ।
 थें कूवे कदे पडज्यो मती, हूं कदे न करसूं धर्म ॥ १९ ॥
 सूर्य अग्नि रा ताप सूं, पिगल्यो मेंण नें लाख ।
 त्यां काठ गोली काठो रछ्यो, ते हुवो अग्नि सूं राख ॥ २० ॥
 हूं कोड घणो परण्यो हुंतो, घणां लोका री साख ।
 काठ गोला सारिखो थो गीदर्यो, ते बल नें होय गयो राख ॥ २१ ॥
 स्त्री अग्नि जिसी कहीं, तिण री भरे सहु कोइ साख ।
 काठ गोला जिसो हुंतो, तिण नें बाल कीयो छे राख ॥ २२ ॥
 जे आग्याकारी नार नां, ते पडिया इण रे पास ।
 ते नित डरता रहे तेह सूं, जाने आग्याकारी दास ॥ २३ ॥
 उठ वेस आव जाव रो, कर अमकडियो काम ।
 बानर जेम नचावियो, जांणे असल गुलाम ॥ २४ ॥
 इसडा गीदड बापरा, तिण सूं धर्म कीयो किम जात ।
 हिवैं चोथो गार गोला जिसो, सुणज्यो तिण री बात ॥ २५ ॥
 तिण लोका ने उत्तर दीया, कर मा बाप सूं जाव ।
 निज स्त्री बेठी तिहां, आयो तुरत सताव ॥ २६ ॥
 तिण स्त्री ने मांडी कहीं, मे जिण धर्म जाण्यो आज ।
 हिवैं सामायक पोसा करी, सारूं आतम काज ॥ २७ ॥
 ए वचन सुणी ने स्त्री, कीघो क्रोध अपार ।
 अगल डगल बोली घणी, तीन लीटी चाडी निलाड ॥ २८ ॥
 थे मूंडे बांधी मुंहपती, मांड्यो घर में फेन ।
 हूं जहर फांसी खाये मरूं, थे किस्तो एक पावो चैन ॥ २९ ॥
 पापंड छोडी चालो पादरा, थें मानों म्हांरी वात ।
 नहीं तो हूं थां ऊमरे, मर सूं कर अपघात ॥ ३० ॥
 जब इम जाण्यो आ पापणी, नाहरी सम छे नार ।
 कह्यो कहां जो एहनों, तो न्हांखे नरक मम्मर ॥ ३१ ॥

जो हूं नरमाइ कर्हं, तो आ उलटी पाड बाबे ।
 तो वणसी म्हारा भाग री, हिवे देऊ पादरा जाब ॥ ३२ ॥
 तूं कूवे बावडी पड मरे, थारे उदे हुआ छे कर्म ।
 पिण हूंतो थारे कारणे, छोडूं नहीं जिण धर्म ॥ ३३ ॥
 म्हारे बंधन छे एक तांहरो, तो तुट जावे इणवार ।
 तूं कूवे बावडी पड मरे, तो हूं लेसूं संजम भार ॥ ३४ ॥
 कंत वचन इसडो कह्यो, जब पीहर गइ रीसाय ।
 घणो ओसीयालो होय नें, मोनें ले जासी मनाय ॥ ३५ ॥
 स्त्री आगे मूल चलयो नही, ओ अडिग रह्यो व्रत माल ।
 ओ तों गार गोला जिसे, ज्यूं घमे ज्यूं लाल ॥ ३६ ॥
 इण लारे तेलो करे, आडा जडे किवाड ।
 तीन पोसा ठाय नें, धर्म ध्यान ध्यावे तिणवार ॥ ३७ ॥
 स्त्री बाट जोए रही, मनाय लेजावे मोय ।
 तीन दिन विचे गया, पिण अजे न आयो कोय ॥ ३८ ॥
 छोरा छोरी पीहर तणा, भेला कर मेल्या सोय ।
 थारो बेनोइ काई करे, पाछो आय कहिज्यो मोय ॥ ३९ ॥
 ते भेला होय ने आविया, जोवे छेकली मांहि ।
 मस्तक उषाडे मुंह मुंहपती, बेठो दीठो घर मांहि ॥ ४० ॥
 ते देखी पाछा आय ने, मांड कही सर्व बात ।
 जब धसको पड्यो तेहने, घर गयो दीसे साल्यात ॥ ४१ ॥
 बेंन भाइ मा बाप ने, साथे ले आइ तेह ।
 हिवें हाथ जोडी ने इम कहे, मोने कदे म दीजो छेह ॥ ४२ ॥
 टाबरियां घर तणी, थानें छे आशर्म ।
 उदे मुनिवर मोटा जती, थे करो जोख सूं धर्म ॥ ४३ ॥
 मै संजम री सुणी बारता, म्हारा गल गल हुवा नेंण ।
 थें बुरो मूल मानो मती, म्हे हसती बोल्या वेंण ॥ ४४ ॥
 हू कह्यो न लोपूं तुम तणो, हूं रहसूं आग्याकार ।
 थें घर बेठाइ करो धर्म, मत लो संजम भार ॥ ४५ ॥
 जब कंत कहे सुण कांमणी, ओ हूं कर्हं नही करार ।
 जब म्हारो मन उठसी, तब लेसूं संजम भार ॥ ४६ ॥
 जब स्त्री मन मांहि जाणियो, ओ रखे छोडेल्ला मोय ।
 तो विनय भक्ति कर्हं घणी, इण रो कह्यो न लोपूं कोय ॥ ४७ ॥

ढाल : १

दुहा

अणुकंपा नें आदरे, कीजों घणा जतन ।
जिणवर ना धर्म मांहिली, समकत पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भेस आक थोर नों, ए च्वाख्ई दूध ।
तिम अणुकंपा जाणजों, राखे मन में सूष ॥ २ ॥
आक दूध पीघां थकां, जुदा करे जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अणुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोलेंई मत भूलजों, अणुकंपा रे नाम ।
कीजो अंतरंग पारखा, ज्यूं सीमें आतम काम ॥ ४ ॥
अणुकंपा में आगन्यां, तीथंकर नी होय ।
सावद्य निरवद ओल्खों, सूतर साहां जोय ॥ ५ ॥

ढाल

[समकित वमियो नन्दश०]

मेघ कुंमर हाथी ना भव में, श्री जिण भाषी दया दिल आई ।
उंचो पग राख्यों सुसीयो न माख्यों, या करणी श्री वीर सराई ।
या अणुकंपा जिण आगन्या में* ॥ १ ॥
कष्ट सह्यो तिण पाप सूं डरतें, मन दिढ सेठी राखी तिण काया ।
बलता जीव दावानल जांणी, सूंड सूं गिर गिर बारे न ल्याया ॥ या० २ ॥
परत संसार कीयो तिण ठामें, उपनो श्रेणक नें घर आई ।
भगवंत आगला दीध्या लीची, पेंहला अघेन गिनाता मांहि ॥ ३ ॥
मांडली एक जोजन रो कीचो, घणा जीव बचीया तिहां आई ।
तिण बचीयां रो धर्म न चाल्यो, समकत आयां विण समझ न कांई ।
या अणुकंपा सावद्य जांणो ॥ ४ ॥
नेम कुंमर परणीजण चाल्या, पसू पंखी देख दया दिल आंणी ।
एहवो काम सिरें नहीं मोनें, म्हारे काज मरें बहु प्रांणी ॥ ५ ॥
परणीजणा सूं परिणाम फिरिया, राजमती नें उभी छिट्काई ।
कर्म तणा वंघ सूं नेम डरीया, तोडी आठ भवां री सगाई ॥ ६ ॥
आप सूं मरता जीव जांणी नें, कडवा तूंबा रो कीचों आहारो ।
कीडीयां री अणुकंपा आंणी, घिन घिन धर्म रूची अणगारो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

फोडवी लब्ध अणुकंपा आंणी, गोसाला नें वीर वचायो ।
 छ लेस्या छदमस्थ हूँता, मोह कर्म वस रागज आयो ।
 या अणुकंपा सावध जांणी ॥ ८ ॥
 असंजती गोसालो कुयातर, तिणनें साहज सरीर रो दीघो ।
 धर्म जाणे तो जगत दुखी था, वले वीर ए काम कांय न कीवो ॥ ९ ॥
 तेजु लेस्या मेल गोसालें, बाल्या दोग साव भसम करी काया ।
 लब्ध धारी था साव घणाई, मोटा पुरुषां नें क्युं न वचया ॥ १० ॥
 जिण राखिये अणुकंपा कीची, रेणा देवी तिण साह्यो जोयो ।
 सेलय जष हेठो उताख्यो, देवी आंण खडग में पोयो ॥ ११ ॥
 भगता हिरण गमेषी नी सुलसा, कीची अणुकंपा विलखी जांणी ।
 छ वेटा देवकी रा जाया, सुलसा रें घर मेल्या आंणी ॥ १२ ॥
 जगन वाडे हरकेसी आया, असणादिक तेहने नहीं दीघो ।
 जषदेव अणुकंपा आंणे, रुद्र वमंता ब्राह्मण कीघां ॥ १३ ॥
 मेघकुमार गर्भे हूँता जब, सुख रें ताई कीचां अनेक उपायो ।
 धारणी रांणी कीची अणुकंपा, मन गमता असणादिक खायो ॥ १४ ॥
 अभयकुमार रो मित्री देवता, तिण अभयकुमर री अणुकंपा आंणी ।
 धारणी रांणी रो डोहलो पूर्यो, अकाले विरषा कर ने वरसायो पांणी ॥ १५ ॥
 किसनजी नेम वंदण नें जातां, एक पुरुष नें दुखीयो जांणी ।
 साज दीयो अणुकंपा कीची, इंट उठाय उपरे घर आणी ॥ १६ ॥
 दुखीया दोहरा देख दलद्री, अणुकंपा उगरी किण आणी ।
 गाजर मूलादिक सचित्त खदावे, वले पावे काचों अणगल पांणी ॥ १७ ॥
 दुखीया जीव मारग माहिं देखी, टल जाए साव संकोची काया ।
 आप हणे नही पाप सू डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया ॥ १८ ॥
 उपाडे नें जो छाया मेले तों, असंजती नीं वीयावचा लागी ।
 या अणुकंपा साव करें तो, जाए पांचूई महावरत भागी ॥ १९ ॥
 सो साव त्रिषमकाल उन्हालें, पांणी विनां हुवे जुदा जीव काया ।
 अणुकंपा आंणे नें असुघ वेंहरावें, छ काया रा पीहर साधु वचाया ॥ २० ॥
 गज सुखमाल ले नेम री आग्या, काजसग कीयो मसंगा में जाई ।
 सोमल आंण खीरा सिर घाल्या, सीस न धूम्यो दया दिल् आई ॥ २१ ॥
 साधु विनां अनेरा सर्व जीवां री, अणुकंपा आंणे साव वांचे वंचावें ।
 तिणनें नसीत रे वारमें उद्देसैं, तिण साव नें चोमासी प्राद्धित आवे ॥ २२ ॥

रासडीयादिक सू तस जीव बघ्या छे, ते तों भूख तिरवादि सुं अतंत दुख पावे ।
 त्याने अणुकंपा आणे ने छोडे छोडावे, तिण साव ने चोमासी प्राच्छित आवे ॥ २३ ॥
 व्याध कसटादिक रोगीलो सुण ने, तिण उपर वेद चलाए नें आवें ।
 साजो करे अणुकंपा आणे, गोली चूरण दे रोग गमावें ॥ २४ ॥
 लवदघारी ना खेलादिक थी, सोलेई रोग जडां सुं जावें ।
 वले जाणे साव ए रोग सू मरसी, अणुकंपा आणे रोग नहीं गमावे ॥ २५ ॥
 जो अणुकंपा साव करे तों, उपदेस देई वेराग चढावे ।
 चोखे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्याहई आहार नां त्याग करावे ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २६ ॥
 गृहस्थ भूलो उजाड वन मे, अटवी ने वले उजड जावे ।
 अणुकंपा आणे - साव मारग बतावे, तो च्यार महीनां रो चारित जावे ॥ २७ ॥
 अटवी मे भूला ने अतंत दुखी देख, च्याहई सरणा साव दिरावें ।
 मारग पूछे तो मुनज सामे, बोले तो भिन भिन धर्म सुणावें ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २८ ॥

अणुकम्पा री चौपई : ढाल २

सिध वायादिक मंजारी, हिसक जीव देखी आचारी ।
 त्यानें मार कऱ्यां हिंसा लागे, पेंहलोई महावरत भागें ॥ १० ॥
 मत मार कऱ्यां उणरो रागी, तीजे कारण हिंसादिक लागी ।
 सुयगडाअंग छें साखी, श्री वीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥
 गृहस्थ नां सरीर ममता में, साधु वेठें समता में ।
 रह्या धर्म सुकल ध्यान ध्याई, मूंडा गयां फिकर न काई ॥ १२ ॥
 इह लोक नें पर लोक, जीवणो मरणो काम भोग ।
 ए तो पांचूई छे अतिचार, बांध्यां नही धर्म लिंगार ॥ १३ ॥
 आपणोई बांछें तो पाप, पर नो कुण चाले संताप ।
 घणों जीवणो बांछे अग्यानी, समभाव राखें ते ग्यांनी ॥ १४ ॥
 वायरो विरषा सी ताम, रह्यो न रह्यो चावे तो पाप ।
 राज विरोध रहीत सुकाल, उपद्रव जावो ततकाल ॥ १५ ॥
 साता बोलां रो ए विसतार, ओलखीयो ते अणगार ।
 घट माहें जो सुमता आवे, हुवा न हुवा एको ही न चावे ॥ १६ ॥
 एकण रे दे रे चपेटी, एकण रो दे उपद्रव मेटी ।
 ए तो राग द्वेष नों चालो, दसवीकालक संभालो ॥ १७ ॥
 साव बेठो नावा में आई, नावडीए नाव चलाई ।
 नावा फूटी माहे आवे पाणी, साव देखे लोकां नही जांणी ॥ १८ ॥
 आप हूवे अनेरा प्रांणी, किणरी अणुकंपा नांणी ।
 वतायां वरत रो भंग, तिणरो साखी आचारग ॥ १९ ॥
 सांनी कर साव जतावे, लोक कुसले खेमें घर आवे ।
 इबा पिण साव न चावें, रह्या चावे तो तुरत वतावे ॥ २० ॥
 मून साव रह्या ते संत, तिके करे संसार नो अंत ।
 परिणामज राखे सेठा, धर्म ध्यान माहे रहे वेठां ॥ २१ ॥

ढाल : ३

ढुहा

वाँछें मरणों जीवणों, तो धर्म तणों नहीं अंस ।
 ए अणुकंपा थकां, वधें कर्म नों वंस ॥ १ ॥
 मोह अणुकंपा जे करे, तिणमें राग नें धेष ।
 भोग वधें इद्रयां तणो, अंतर उंडो देख ॥ २ ॥
 दया अणुकंपा आदरे, तिण आतम आंणी ठाय ।
 मरतो देखे जगत नें, सोच फिकर नहीं कांय ॥ ३ ॥
 कष्ट सह्या घर में थकां, पाल्या वरत रसाल ।
 मोह अणुकंपा श्रावकां, त्यां पिण दीधो टाल ॥ ४ ॥
 काचा था ते चल गया, ते होय गया चकचूर ।
 के सेठां रह्या चलीया नहीं, त्यानें वीर वंखांप्या सूर ॥ ५ ॥

ढाल

[तुम जायेज्यो रे स्वारथ ना सगा]

चंपा नगरी नां वांणीयां, ज्याज भर नें समुदर में जाय - रे ।
 हिचें तिण अवसर एक देवता, त्यानें उपसर्ग कीधो आय रे ।
 जीव मोह अणुकंपा न आणीए ॥ १ ॥
 मिनका सीयाल खाधें वेसांग नें, गलें पेंहरी छे हंड माल रे ।
 लोही राव सू लीप्यो सरीर नें, हाथे खडग दीसैं विकराल रे ॥ जी० २ ॥
 लोक धड धड लागा धूजवा, ओर देव रह्या मन ध्याय रे ।
 अरणक श्रावक डरीयो नहीं, तिण काउसग दीधो ठाय रे ॥ ३ ॥
 सागारी अणशण कीर्यो, धर्म ध्यांन रह्यो चित्त ध्याय रे ।
 सगलां नें जांप्या डूवता, अणुकंपा न आंणी कांय रे ॥ ४ ॥
 अरणक श्रावक ने डिगायवा, देव वदि वदि बोले वाय रे ।
 जो अरणक धर्म न छोडसी, तो ज्याज डबोवं जल माय रे ॥ ५ ॥
 उंची उपाड नें उंची न्हांख नें, कर सुं सगलां री घात रे ।
 काली बोली अमावस रा जप्या, मान रे तूं अरणक वात रे ॥ ६ ॥
 ग्यांन दरसन म्हांरा वरत नें, इणरो कीधो विघन न धाय रे ।
 हूं सेवग छूं भगवान रो, मोने कोइ न सकें चलाय रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

लोक विल विल करता देख नें, अरणक रो न विगड्यो नूर रे ।
 मोह करुणा न आंणी केहनी, देव उपसर्ग कीषो दूर रे ॥ ८ ॥
 देव घिन घिन अरणक ने कहे, तू तो जीवादिक नो जाण रे ।
 थारा सुधर्मो समा मजे, इंद्र कीया घणा वखाण रे ॥ ९ ॥
 अरणक श्रावक रा गुण देख नें, आया देव री दाय रे ।
 दोय कुंडल री जोडी आप ने, देव आयो जिण दिस जाय रे ॥ १० ॥
 नमीराय रिषि चारित लीयो, ते तों उभो बाग में आय रे ।
 इंद्र आयो तिणनें परखवा, ते किण विघ बोलें वाय रे ॥ ११ ॥
 थारी अगन ऊरी मिथला बले, एकर सू साह्यो जोय रे ।
 अतेवर बलतो मेलसी, ए वात सिरें नही तोय रे ॥ १२ ॥
 सुख वपराय सारा लोक में, विलखा देख पुत्र रतन रे ।
 जो तूं दया पालण नें उठीयो, तो कर तूं थारा जतन रे ॥ १३ ॥
 नमी कहे वसूं जीवूं सुखे, म्हारी पल पल सफला जात रे ।
 या मिथला नगरी दाभतां, म्हारो बले नही तिलमात रे ॥ १४ ॥
 मोने हरष नही मिथला रहां, बलीयां नही सोग लिंगार रे ।
 मै सावद्य जाण त्यागी जका, रही बली न चावे अणगार रे ॥ १५ ॥
 नमिराय रिषी आंणी नही, मोह अणुकंपा नी वात रे ।
 समभाव राखे मुगते गयां, करे अष्ट कर्मा री घात रे ॥ १६ ॥
 श्री केसव केरो बंधवो, यो तो नामे गजसुखमाल रे ।
 तिण दीख्या ले काउसग्ग रह्यो, सोमल आयो तिण काल रे ॥ १७ ॥
 माथे पाल वाघो माटी तणी, माहे घाल्या लाल अंगार रे ।
 कष्ट उमनों वेदन अति घणी, नेम करुणा न आंणी लिंगार रे ॥ १८ ॥
 श्री नेम जिणेसर जाणता, होसी गज सुखमाल री घात रे ।
 पिण अणुकंपा आंणी नही, ओर साव न मेल्या साथ रे ॥ १९ ॥
 श्री वीर जिणद चोवीसमां, कल्यातीत मोटा अणगार रे ।
 त्याने देव भिनष तिरजंच ना, उपसर्ग उपनां अपार रे ॥ २० ॥
 संगम देवता भगवंत ने, दुख दीवा अनेक प्रकार रे ।
 अनार्य लोकां पिण वीर ने, स्वानादिक दीवा लार रे ॥ २१ ॥
 चोसठ इंद्र मोहछव आवीया, दीष्या दिन मेला होय रे ।
 पिण कष्ट पड्यो भगवानं ने, नायो उपसर्ग टालण कोय रे ॥ २२ ॥
 दुख देता टेखी जगनाय ने, किण अलगा न कीवा आय रे ।
 संभदिष्टी देव हुंता घणां, त्यां करुणा न आंणी कांय रे ॥ २३ ॥

देवता जाण्यो श्री निरखमांन रे, उदे आया दीसैं छे कर्म रे ।
 अणुकंपा आंण विचें पड्यां, ए जिण भाण्यो नही धर्म रे ॥ २४ ॥
 धर्म हुवें तो आधों नही काढता, वले वीर नें दुखीया जांण रे ।
 परीसो देवण आवे तेहनें, देव अलगो करता तांण रे ॥ २५ ॥
 मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रां मांय रे ।
 भगवंत कहे जो इंद्र नें, तो थोडा में दीयें मिटाय रे ॥ २६ ॥
 पडती जाणें अंतराय नें, तो अचित खवारें पूर रे ।
 एहवी सकत घणी छे इंद्र नीं, पिण कर्म न हुवे दूर रे ॥ २७ ॥
 चूलणी पीया ने पोसा ममें, देव दीघा छें दुख आय रे ।
 कुण कुण हवाल तिण कीया, ते सांमलजो चित्त ल्याय रे ॥ २८ ॥
 तीन बेटां रा नव सूला कीया, तिणरा मूंहडा आगें लाय रे ।
 तेल उकाल नें माहें तल्या, बलबलता सूं छांटी काय रे ॥ २९ ॥
 समें परिणामां वेदना सही, जांणी आपणा संच्या कर्म रे ।
 अणुकंपा नांणी अंगजात री, तिण छोड्यो नहीं जिण धर्म रे ॥ ३० ॥
 मत मारण रो कह्यो नहीं, ते तो जाण्यों सावव वाय रे ।
 करुणा नांणी मरता देख ने, सेंठों रह्यो धर्म ध्याय रे ॥ ३१ ॥
 जो तूं धर्म न छोडसी, तो थारें देव गुर जिण छे माय रे ।
 तिणने मारुं विघ आगली, थारा मूंहडा आगें ल्याय रे ॥ ३२ ॥
 जद आरत ध्यान तूं ध्याय नें, परसी माठी गति में जाय रे ।
 सुणनें चूलणीपीया चल गयो, मानें राखण रो करें उपाय रे ॥ ३३ ॥
 ओ तों पुरष अनर्थ करे जिसो, भाल राखूं ज्यूं न करे घात रे ।
 ते तों भद्रा वचावण उठीयो, इणरें थाभो आयो हाथ रे ॥ ३४ ॥
 अणुकंपा आंणी जणणी तणी, तो भागा वरत ने नेम रे ।
 देखो मोह अणुकंपा एहवी, तिणमें धर्म कहीजें केम रे ॥ ३५ ॥
 चूलणीपीया नें सुरादेव नां, चलशतक ने सकडाल रे ।
 यां च्यांरा रा मारुया दीकरा, देव तलीया तेल उकाल रे ॥ ३६ ॥
 बेटां नें मरता देखीया, नांणी मोह अणुकंपा पेम रे ।
 उठ्या मात त्रियादिक राखवा, तो भागा वरत ने नेम रे ॥ ३७ ॥
 मात त्रियादिक राखतां, भागा वरत नें बंध्या कर्म रे ।
 तो साध विचे जाए पडीयां थकां, यांनें किण विव होसी धर्म रे ॥ ३८ ॥
 चेडा ने कोणिक री वारता, निराबलिका भगोती साल रे ।
 मानव मूंआ दाय संगरांम में, एक कोड ने असी लाख रे ॥ ३९ ॥

भगवंत अणुकंपा आंग नें, पोतें न गया न मेल्या साव रे ।
 यानें पेंहेला पिण वरज्यां नही, घणा जीवां री जाणे विराघ रे ॥ ४० ॥
 ए दया अणुकंपा जाणता, तो वीर बडालें जाय रे ।
 सगला ने साता वपरावता, थोडा में देता चकाय रे ॥ ४१ ॥
 कोणिक भगता भगवान रो, चेडो बारें वरतघार रे ।
 इंद्र भीडी आयो ते समकती, अं किण विघ लोपता कार रे ॥ ४२ ॥
 ग्यांन दरसण चारित माहिलीं, वघतो जाणें किणरों उपाय रे ।
 तो करें अणुकंपा भव जीव री, वीर विनां बोलायां जाय रे ॥ ४३ ॥
 समुद्र पाली सुखां में झिल रह्यो, संसार विषें रस लाग रे ।
 चोर ने मारतो देखी ऊपनो, उत्कण्टो परम वेंराग रे ॥ ४४ ॥
 चारित लीयो कर्म काटवा, जाणें मोष तणो उपाय रे ।
 पिण करुणा न आंणी चोर नी, छोडावण री न काढी वाय रे ॥ ४५ ॥
 साव श्रावक नीं एक रीत छें, तुमे जोवो सूतर नों न्याय रे ।
 देखो अंतर माहे विचार नें, कूडी कांय करों बकवाय रे ॥ ४६ ॥



ढाल : ४

दुहा

दुखीया देखी तावडें, जो नही मेलें छाया ।
 साध श्रावक न गिणें तेहनें, ए अन तीरथी नीं वाय ॥ १ ॥
 माख्यां मरायां भलो जांगीयां, तीनुईं करणां पाप ।
 देवण वाला नें जे कहें, ते छोट्य कुगुर सराप ॥ २ ॥
 करमां कर नें जीवडा, उपजें ने मर जाय ।
 असंजम जीतव्य तेहनौं, ते साध न करें ज्पाय ॥ ३ ॥
 देखे मांहोमांहि विणसता, अलग्गो करदां जाय ।
 एहवो कहें तिण उपरें, साध वतावें न्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव काई तुमें]

नाडो भरीयो छे डेडक माछल्यां, मांहें नीलण फूलभा रो पूर हो । भविकजण ।
 लट फुहारा आदि जलोक सूं, तस थावर भरीया अरुड हो । भविकजण ।
 करजों पारख जिण धर्म री * ॥ १ ॥
 सुलीया धान तणो ढिगलो पख्यो, मांहें लटां ने ईल्यां अथाय हो ।
 सुलसल्यां इंडादिक अति घणा, किल विल करें तिण मांय हो ॥ २ ॥
 एक गाडो भख्यो जमीकंद सूं, तिणमें जीव घणा छे अनंत हो ।
 च्यार प्रज्या च्यार प्राण छे, माख्यां कष्ट कह्यो भगवंत हो ॥ ३ ॥
 काचा पांणी तणा माटा भख्या, घणा जीव छें अणगल नीर हो ।
 नीलण फूलण आदि लटां घणी, त्यामें अनंत वताया छे वीर हो ॥ ४ ॥
 खात भीनों उकरडी लटां घणी, गीडोला गधईया जाण हो ।
 टलबल टलबल कर रह्या, याने कर्मा नाख्या छे आण हो ॥ ५ ॥
 कांयक जायगां में उंदर घणा, फिरें आमां ने सांहा अथाग हो ।
 थोडों सो खडकों सांभलें, तो जाअें दिशोदिश भाग हो ॥ ६ ॥
 गुल खांड आदि मिसटांन में, जीव चिहुं दिस दोड्या जाय हो ।
 माख्यां नें मांका फिर रह्या, ते तों हुचकें मांहोमा आय हो ॥ ७ ॥
 नाडों देखी नें आवें मेलीयां, धान डूकें बकरा आय हो ।
 गाडें आवें बलद पाघरा, पाटो आय उमी छें गाय हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पखी चूनों उकरली उपरे, उंदर पासें मिनकी जाय हो ।
 माखी ने माका पकड ले, साधु किणने वचावें छोडाय हो ॥ ९ ॥
 भेस्यां हाकल्यां नाडा माहिलां, सगलां रें साता थाय हो ।
 बकरां ने अलगा कीयां, इंडादिक जीव ते वच जाय हो ॥ १० ॥
 थोडा सा बलदां ने हाकल्यां, तो न मरें अनंत काय हो ।
 पांणी फूंहारादिक किण विघ मरें, नेंडी आवण न दें गाय हो ॥ ११ ॥
 लट गीडोलदिक कुसले रहे, जो पंखी ने दीये उडाय हो ।
 मिनकी छ्छकार नसार वे, तो उंदर घर सोग न थाय हो ॥ १२ ॥
 मांका ने बाघो पाछो करे, तो माखी उड नाडी जाय हो ।
 साबां रे सगला सारिषा, ते तों विचे न पडे जाय हो ॥ १३ ॥
 मिनकी धाकल उदर वचाय ले, माखी राखे माका ने धकाय हो ।
 ओर मरता देख राखें नही, यामें चूक पड्यो ते वताय हो ॥ १४ ॥
 साध पीहर बाजे छ काय नां, एक छोडावे तस काय हो ।
 पांच काय मरती राखें नही, तो पीहर किण विघ थाय हो ॥ १५ ॥
 रजुहरण लेई ने उ उठीयां, जोरी दावे दीयो छुडाय हो ।
 ग्यांन दरसण चारित मांहिलो, यारें बधीयो ते मोय वताय हो ॥ १६ ॥
 ग्यांन दरसण चारित तप विनां, ओर मुगिति रो नहीं उपाय हो ।
 छोडा मेला उपगार संसार नां, तिण थी सद गति किण विघ जाय हो ॥ १७ ॥
 जितरा उपगार संसार नां, ते तो सगलाइ सावद्य जाण हो ।
 श्री जिण धर्म मे आवे नही, कूडी म करो तांण हो ॥ १८ ॥
 अग्यांनी रो ग्यानी कीया थकां, हुवो निरुचें पेलो रो उवार हो ।
 कीयो मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयो भव पार हो ॥ १९ ॥
 असंजती नें कीयो संजती, ते तों मोष तणा बलाल हो ।
 तपसी कर पार पोहचावीयो, तिण भेट्या सर्व हवाल हो ॥ २० ॥
 ग्यात दरसण चारित ने तप, यारों करें कोइ उपगार हो ।
 आप तिरें पेलो उवरे, दोयां रो खेवो पार हो ॥ २१ ॥
 ए च्यार उपगार छें मोटका, तिणमे निरुचेई जांणों धर्म हो ।
 शेष रह्या कार्य संसार नां, तिण कीषां वंचती कर्म हो ॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

जीव दया छें उपरें, मुलगा तीन दिष्टत ।
आगें विसतार करें जितों, ते सुणजो कर खंत ॥ १ ॥

ढाल

[सहेल्या ए वादो रुडा साध नें]

एक चोर चोरें घन पार को, वले दूजो हों चोरावें आगेंवाण ।
तीजों कोइ करें अनुमोदनां, ए तीनां रा हो खोटा किरतब जाण ।

भव जीवां तुमें जिण धर्म ओलखों* ॥ १ ॥

एक जीव हणें तसकाय ना, हणावे हो बीजों पर नां प्राण ।

तीजों पिण हरखे मारीयां, ए तीनूई हो जीव हिंसक जाण ॥ भ० २ ॥

एक कुसील सेवें हरष्यों थको, सेवाडे हो ते तो दूजे करण जोय ।

तीजों पिण भलो जाणें सेवीयां, ए तीनां रे हो कर्म तणों बंध होय ॥ ३ ॥

ए सगला नें सतगुर मिल्या, प्रतिबोध्या हो आंण्या मारग ठाय ।

किण - किण जीवां नें साधां उधख्या, तिणरो सुणजो हो विवरा सुघ न्याय ॥ ४ ॥

चोर हिंसक नें कुसीलीया, यारें ताई रे दीवो साधां उपदेस ।

त्यांनें सावद्य रा निरवद कीया, एहवो छें हो जिण दया धर्म रेत ॥ ५ ॥

ग्यांन दरसण चारित तीनू - तणों, साधां कीवो हो जिण थी उपगार ।

ते तो तिरण तारण हुआं तेहनां, उताख्या हो त्यांनें संसार थी पार ॥ ६ ॥

ए तो चोर तीनू समभ्यां थकां, धन रह्यो रे धणी नें कुसले खेम ।

हिंसक तीनू प्रतिबोधीयां, जीव बचीया हो कीवो मारण रो नेम ॥ ७ ॥

सील आदरीयो तेहनी, अस्त्री पडी हो कूया माहें जाय ।

यांरो पाप धर्म नहीं साध नें, रह्या मूंवा हो तीनू इविरत मांय ॥ ८ ॥

धन रो धणी राजी हुवों धन रह्यां, जीव बचीया हो ते पिण हरषत थाय ।

साध तिरण तारण नहीं तेहनां, नारी नें पिण हो नहीं डबोई आय ॥ ९ ॥

कोइ मूंड मिथ्याती इम कहें, जीव बचीया हो धन रह्यो ते धर्म ।

तो उणरी सरवा रे लेखें, अखी मूंई हो तिणरा लागें कर्म ॥ १० ॥

जीव जीवें ते दया नहीं, मरें ते हो हिंसा मत जाण ।

मारण वाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तों दया गुण खाण ॥ ११ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

नीब आंबादिक विरष नो, किण ही कीवो हो वाढण रो नेम ।
 इविरत घटी तिण जीव नी, विरष उभो हो तिणरो धर्म केम ॥ १२ ॥
 सर द्रह तलाव फोडण तणों, सुंस लेइ हो मेट्या आवता कर्म ।
 सर द्रह तलाव भख्या रहें, तिण माहि हो नही जिणजी रो धर्म ॥ १३ ॥
 लाडू घेवर आदि पकवान नें, खाणा छोड्या हो आतम आंणी तिण ठाय ।
 बेंराग वध्यों तिण जीव रें, लाडू रह्यो हो तिणरो धर्म न थाय ॥ १४ ॥
 दव देवो गांम जलायवो, इत्यादिक हो सावच्च कार्य अनेक ।
 ए सर्व छोडावें समभाय नें, सगला री हो विव जाणों तूमें एक ॥ १५ ॥
 हिबें कोइक अग्यानी इम कहें, छ काय काजें हो धां छां धर्म उपदेस ।
 एकण जीव नें समभवावियां, मिट जाए हो घणा जीवां रो कलेश ॥ १६ ॥
 छ काय घरे साता हुइ, एहवो भाषे हो अण तीरथी धर्म ।
 त्यां भेद न पायो जिण धर्म रो, ते तो भूला हो उदें आयो मोह कर्म ॥ १७ ॥
 हिबें साध कहे तुमे सांभलो, छ काया रे हो साता किण विव थाय ।
 सुभ असुभ बांच्या ते भोगवे, नही पाम्यां हो त्यां मुगत उपाय ॥ १८ ॥
 हणवा सुंस कीया छ काय नां, तिणरे टलीया हो म्नेला असुभ कर्म पाप ।
 ग्यांनी जाणें साता हुई एहने, मिट गया हो जनर्म मरण संतोष ॥ १९ ॥
 साध तिरण तारण हुआ एहना, सिध गति में हो मेल्यों अविचल ठाम ।
 छ काय लारे भिल्लती रही, नही सभ्नीया हो तिणरा आतम काम ॥ २० ॥
 आगें अरिहंत अनंता हुआ, कहतां कहतां हो कदे नावे त्यांरो पार ।
 आप तिख्या ओरां ने तारीया, छ काया रे हो साता न हुइ लिंगार ॥ २१ ॥
 एक पोतें बच्यो तें मरवा धकी, दूजे कीवो हो तिणरें जीवण रो उपाय ।
 तीजों पिण हरष्यों उण जीवियां, यां तीनां में हो कुण सुघ गति जाय ॥ २२ ॥
 कुसले रह्यो तिणरे इविरत घटी नही, तो दूजा ने हो तुमें जाणजो एम ।
 भलो जाणें तिणरे विरत न नीपनी, ए तीनूंई हो सुघ गति जासी केम ॥ २३ ॥
 जीवियां जीवायां भलो जाणीयां, ए तीनूंई हो करण सरीपा जाण ।
 कोइ चतुर होसी ते परखसी, अणसमझ्यां हो करसी तांणा तांण ॥ २४ ॥
 छ काया रो बांछें मरणो जीवणों, ते तो रहसी हो संसार मभार ।
 ग्यांन दरसण चारित तप भला, आदरीयां हो आदरायां खेवो पार ॥ २५ ॥

ढलल : ६

दुहल

पोतें हणे हणवें नहीं, पर जीवां ना प्राण ।
 हणे जिणें भलो जाणें नहीं, ए नव कोटी पचबाण ॥ १ ॥
 ए अमय दान दया कही, श्री जिण आगम मांय ।
 तो पिण दंड उठावीयों, जेंनी नाम घराय ॥ २ ॥
 अमय दान न ओलख्यो, दया री खबर न कांय ।
 भोला लोकां आगले, कूड चोज लगाय ॥ ३ ॥
 कहें साध बचावें जीव नें, ओरां नें कहें तूं बचाय ।
 भलों जाणें वचीयां थकां, पिण पूछ्यां पलटे जाय ॥ ४ ॥

ढलल

[जगत-गुरु तिसला नन्दन वीर]

इण सावां रा भेष में जी, बोलें एहवी वाय ।
 म्हें पीहर छां छ काय ना जी, जीव बचावां जाय ।
 चतुर नर समझो ग्यान विचार ॥ १ ॥
 एहवी करें परूपणा जी, बोले बंध न होय ।
 पलट जाए पूछ्यां थकां जी, भोलां खबर न कोय ॥ चु० सं० २ ॥
 पेट दुखे सो श्रावकां जी, जुदा हुवें जीव काय ।
 साध आया तिण अवसरे जी, हाथ फेर्यां सुख थाय ॥ ३ ॥
 साध पचाख्या देख नें जी, गृहस्थ बोल्या वाय ।
 थें हाथ फेरो पेट उपरें जी, जें श्रावक जीवां जाय ॥ ४ ॥
 जब कहें हाथ न फेरणो जी, ए साध नें कल्पें नांय ।
 थें कहिता जीव वचावणो, तो बोल ने बदलो कांय ॥ ५ ॥
 गोसाला नें वीर वचावीयो जी, तिणमें कहे छे धर्म ।
 सो श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी सरधा रो निकल्यो भर्म ॥ ६ ॥
 गोसाला रे कारणे जी, लब्ध फोडी जगनाय ।
 सो श्रावक मरता देख नें, ते कांय न फरो हाथ ॥ ७ ॥
 धर्म कहे भगवंत नें, पोतें कांय छोडी रीत ।
 सो श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी कुण मांनं परतीत ॥ ८ ॥

गोसाला ने वचावीयां मे, धर्म कहे साख्यात ।
 तो सों श्रावक नही वचावीयां, त्यांरी विगडी सरवा त्रात ॥ ६ ॥
 इम कहां जाव न ऊमजे, जब कूडी करें बकवाय ।
 हिवे साध कहें तुमे सांभलो जी, गोसाला रो न्याय ॥ १० ॥
 साध नें लब्द न फोडणी, कह्यों सूतर भगोती रे मांय ।
 पिण मोह कर्म वस राग थी जी, लीयो गोसालो वचाय ॥ ११ ॥
 छ लेस्या हृती जद वीर में जी, हूता आठूंई कर्म ।
 छदमस्थ चूका तिण समें जी, मूर्ख थापे धर्म ॥ १२ ॥
 छदमस्थ चूक पड्यो तिकों जी, मुंढे आणे बोल ।
 निरवद कोइ म जाणजो जी, अकल हीया री खोल ॥ १३ ॥
 ज्युं आणंद श्रावक नें घरे जी, गोतम बोल्या कूड ।
 पडीया छदमस्थ चूक मे जी, सुघ हुवा वीर हजूर ॥ १४ ॥
 इम अवस उदे मोह आवीयो, नही टाल सक्या जगनाथ ।
 ते तो न्याय न जाणीयो, त्यांरे माहे मूल मिथ्यात ॥ १५ ॥
 गोसाला ने नही वचावता तो, घटतो अछेरे एक ।
 निरवे होणहार टले नहीं जी, समभो आण ववेक ॥ १६ ॥
 गोसाला नें वचावीयो तो, वधीवो घणों मिथ्यात ।
 लोहीठाण, कीयो भगवंत नें, वले दाय साधां री घात ॥ १७ ॥
 गोसाला ने वचावीयां में, धर्म जाणें ए सांम ।
 तो दाय साध वचावत आपणा, वले करता ओहिज कांम ॥ १८ ॥
 गोसाला नें वचायने जी, धर्म जाणें जिणराय ।
 दाय साध न राख्या आपणा, यो किण विघ मिलसी न्याय ॥ १९ ॥
 जगत नें मरता देख नें जी, आडा न दीघा हाथ ।
 धर्म जाणें तो आगो न काढतां, अें तिरण तारण जगनाथ ॥ २० ॥
 ए विवरा सुघ वतावीयो जी, सूतर भगोती रे न्याय ।
 कुबर्दी करें कदागरों जी, सुबुधी री आवे दाय ॥ २१ ॥
 साधां रा मुख आगलें, पंखी पडीयो माला थी आय ।
 कहे मेहलां ठिकाणे हाथ सूं तो, दया रहें घट मांय ॥ २२ ॥
 तपसी श्रावक उपासरे जी, काउसग दीयो ठाय ।
 तांगी मिरगी आय ढहि पखो जी, गावड भागे जीव जाय ॥ २३ ॥
 कोइ गृहस्थ आंण ने कहें जी, थे मोटां मुनिराज ।
 धें वेठें न कख्यो एहने जी, ओ मर छे गावड भांज ॥ २४ ॥

जब तो कहें मूँ साव छां जी, श्रावक बेठों करां केम ।
 मांहेरे कांम कांई गृहस्थ सूं जी, बोलें पावरा एम ॥ २५ ॥
 श्रावक बेठों करे नहीं जी, पंखी मेले माला मांय ।
 देखो पूरो अंधारों एहनें जी, ए चोडें भूला जाय ॥ २६ ॥
 पंखी माला में मेल्तां जी, सके नहीं मन मांय ।
 तो श्रावक नें बेठों कीयां में, धर्म न सरखे कांय ॥ २७ ॥
 इतरी समझ पडे नहीं, त्यानें समकत आवे केम ।
 छकीया मोह मिथ्यात में, बोलें मतवाला जेम ॥ २८ ॥
 कहें साव नें उंदर छोडावणो जी, मिनकी पाछें जाय ।
 श्रावक नें बेठों करे नहीं, अं किण विव मिलसी न्याय ॥ २९ ॥
 मुंसादिक वचावतां जी, मिनकी नें दुख घाय ।
 श्रावक नें बेठां कीयां जी, नहीं किण रे अंतराय ॥ ३० ॥
 मुंसादिक नें कारणें जी, मिनकी नें न्हासावे डराय ।
 श्रावक मरें मुख आगलें, बेठों न करे हाथ संभाय ॥ ३१ ॥
 ए प्रतख वात मिलें नहीं जी, तावडा छांया जेम ।
 श्री जिण मारग ओलख्यों, त्यारें हिरदे वेसें केम ॥ ३२ ॥
 लाम लागें तो ढांढां खोल नें, साव काहें उधाडें दुवार ।
 श्रावक नें बेठों करे नहीं, आ सरवा करसी खुवार ॥ ३३ ॥
 ढांढां नें तो खोलतां जी, खप घणी छें ताप ।
 सों श्रावक हाथ फेख्यां वचें, त्यारी नाणे कांई मन मांय ॥ ३४ ॥
 कहें ढांढां खोल वचावसां, पिण श्रावक रें न फेरं हाय ।
 एह अग्यांनी जीव री जी, कोइ मूर्ख मानें वात ॥ ३५ ॥
 गाडा नीचें आवें डावडों, कहें साव ने लेणों उजाप ।
 श्रावक नें बेठो करे नहीं, ओ उचें पंथ इण न्याय ॥ ३६ ॥
 रिता वरसाला नें समें जी, जीव घणा छें ताप ।
 लटां गजायां नें कातरा जी, पडीया मारग मांय ॥ ३७ ॥
 साव वारे नीकल्या जी, जोय जोय मूकें पाय ।
 लारें ढांढां देख्या आवतां, पिण साव न लेवें उजाप ॥ ३८ ॥
 जे वालक लेवें उजाप नें, यां जीवां नें न ले उजाप ।
 तो उणरी सरवा रें लेवें, उणरे दया नहीं घट मांय ॥ ३९ ॥
 जो वालक नें लेवें उजाप नें, जोर जीव देखी ले नांय ।
 इण सरवा री करजों पारिखो, कोइ रखे पडों फंद माय ॥ ४० ॥

ढाल : ७

दुहा

मल्ल गलागल लोक में, सबला ते निबलां नें खाय ।
 तिण में घर्म पल्पीयो, कुगुरां कुनुद्ध चलाय ॥ १ ॥
 मूला जमीकंद खवावीयां, कहें छें मिश्र घर्म ।
 आ सरवा पाबंध्यां री आदख्यां, जाडा बंधसी कर्म ॥ २ ॥
 मूला खवायां पांणी पावीयां, ओर सचित्तादिक अनेक ।
 खावा खवायां भलो जांणीयां, यां तीनां री विघ एक ॥ ३ ॥
 ए तो न्याय न जांणीयो, उजड पडीया अजाण ।
 करण जोग विगटावीया, अे मिध्यादिष्टी अेलण ॥ ४ ॥
 कुहेत लगाए लोक नें, हिंसा घर्म भाषंत ।
 हिवे सात दिष्टत साघ कहे, ते सुणजो घर खंत ॥ ५ ॥
 मूला पांणी अम नों, चौथो हूका रो जाण ।
 तस जीव कलेवर तस तणों, सातमो मिनष वखाण ॥ ६ ॥
 यामें तीन दिष्टत करडा कहा, जाणे अग्यानी विह्व ।
 समदिष्टी जिण घर्म ओलख्यो, ते न्याय सूं जाणे सुघ ॥ ७ ॥
 केसी कुमर दिष्टत करडा कहा, तो छोडी प्रदेसी ह्व ।
 न्याय मेले हुवो समक्ती, भगडो भाले ते मूढ ॥ ८ ॥
 जिणरी बुध छे निरमली, ते लेसी न्याय विचार ।
 सुणे भारीकर्मा जीवडा, तो लडवा ने छे तयार ॥ ९ ॥
 ए सात दिष्टत धुर सूं चले, आगे घणों विसतार ।
 भिन भिन भवियण सांभलो, अंतर आख उघाड ॥ १० ॥

ढाल

[वीर सुखो मोरी वीनती]

मूला खवायां मिश्र कहें, लगावे हो खोटा दिष्टत एह ।
 कहे पाप लागो मूलां तणो, घर्म हूवो हो खावां बचीया एह ।
 भवियण जिण घर्म ओलखो ॥ १ ॥
 कहे कूया वाव खणावीयां, हिंसा हूइ हो तिणरा लाग कर्म ।
 लोक पीये कुसले रहां, साता पामी हो तिणरो हूवो घर्म ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

इम कहेँ मिश्र परूपातां, नहीं सकि हो करता बकवाय ।
 इण सरधा रो प्रश्न पूछीयां, जाब नावें हो जब लोक लाय ॥ ३ ॥
 हिवें सात दिष्टंत री थापनां, त्यांरी सुणजो हो विवरां सुध बात ।
 निरणो करजों घट भितरें, बुचवंता हो छोड नें पखपात ॥ ४ ॥
 सो भिनषां नें मरता राखीया, मूला गाजर हो जमीकंद खवाय ।
 वले कुसले राख्या सो मानवी, काचो पांणी हो त्यांनें अणगल पाय ॥ ५ ॥
 पोह माह महीनें ठारी परें, तिण काले हो वाजें शीतल वाय ।
 अचेत पख्या सो मानवी, मरता राख्या हो त्यांनें अग्न लाय ॥ ६ ॥
 पेट दुखें तलफल करें, जीव दोरो हो करे हाय विराय ।
 साता वपराइ सो जणा, मरता राख्या हो त्यांनें होको पाय ॥ ७ ॥
 सो जणा दुरभख काल में, अन्न विनां हो मरें उजाह माय ।
 कोइ एक मारें तसकाय ने, सो जणां नें हो मरता राख्या जीमाय ॥ ८ ॥
 किण ही कालें अन्न विनां, सो जणा रा हो जुदा हुवें जीव काय ।
 सहजें कलेवर मूंजो पड्यो, कुसले राख्या हो त्यांनें एह खवाय ॥ ९ ॥
 मरता देखी सो रोगला, ममाइ विण हो ते तो साबा न थाय ।
 कोइ ममाइ कर एक भिनष री, सो जणां रे हो साता कीधी बचाय ॥ १० ॥
 जमीकंद खवायां पांणी पावीयां, त्यामें थापें हो धर्म ने पाप दोय ।
 तो अग्न लगायां होको पावीयां, इत्यादिक हो सगले मिश्र होय ॥ ११ ॥
 जो धर्म सरखे बचीया तिकों, हिसा तिणरा हो लाग जाणे कर्म ।
 तो सातूई सारिषा लेखवे, कहि देणों हो सगलें पाप नें धर्म ॥ १२ ॥
 जो सातां में मिश्र कहे नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्या री परतीत ।
 आप थापें आप उथपें, तो कुण मानें हो आ सरधा विपरीत ॥ १३ ॥
 जो सातांइ में मिश्र कहे, तो नही लागें हो गमती लोकां ने बात ।
 मिलती कहां विण तेहनीं, कुण करे हो कूडां री पखपात ॥ १४ ॥
 एक दोय बोलां में मिश्र कहेँ, सगलां में हो कहितां लाजें मूढ ।
 एहवो उलटों पंथ भ्रालीयो, त्यांरें केडें हो तांणें मूखें रुढ ॥ १५ ॥
 सो सो भिनष सगलें बच्या, थोडी घणी हो सगलें हुइ घात ।
 जो धर्म बरोबर न लेखवें, तो उथप गई हो मूला पांणी री बात ॥ १६ ॥
 बात उथपती जाण नें, कदा कहिवें हो सगलें पाप नें धर्म ।
 पिण समदिष्टी सरखे नही, ए तों काढ्यो हो खोटी सरधा रो भर्म ॥ १७ ॥
 असंजती रों मरणो जीवणो, बंधा कीचां हो निरुवें राग नें धेप ।
 ओ धर्म नहीं जिण भाखियो, सांसो हुवें तो हो अंग उपंग देख ॥ १८ ॥

काच तणा देखी मिणकला, अण समझा हो जाणे रतन अमोल ।
 ते निजर पड्यो सराफ री, कर दीघो हो त्यारो कोड्या मोल ॥ १६ ॥
 मूला खवायां मिश्र कहे, या सरघा हो काच मणी समान ।
 तो पिण भाली रतन अमोल ज्युं, न्याय नं सुझे हो चाला कर्मां रा जाण ॥ २० ॥
 जीव मारें भूठ वोल ने, चोरी करने हो पर जीव वचाय ।
 बले करें अकार्य एहवा, मरता राख्या हो मड्युन सेवाय ॥ २१ ॥
 घन वे राखें पर प्राण ने, क्रोधादिक हो अठारे सेवाय ।
 ए सावद्य कांम पोते करी, पर जीवा ने हो मरता राखें ताय ॥ २२ ॥
 जो हिंसा करे जीव राखीयां, तिणमें होसी हो धर्म ने पाप दाय ।
 तो इम अठारेंइ जाणजो, ए चरचा में हो विरलो समके काय ॥ २३ ॥
 जो एकण में मिश्र कहे, सतरां में हो भापा बोले ओर ।
 उबी सरघा रों न्याय मिलें नही, जव उलटी हो कर उठे भोड ॥ २४ ॥
 जीव मारें जीव राखणा, सूतर में हो नही भगवत वेंग ।
 उंधो पंथ कुगुरा चलावीयो, सुघ न सूफे हो फूट अतर नेण ॥ २५ ॥
 कोइ जीवता मिनप तिर्यच नां, होम करे हो जुच जीतण संगराम ।
 एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो बीजों सावद्य कांम ॥ २६ ॥
 कोइ नाहर कसाइ मार नें, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक ।
 जो गिणें दोग्यां ने सारिषा, त्यारी विगडी हो सरघा वात ववेक ॥ २७ ॥
 पेहला कहिता जीव वचावणा, तिण लेखें हो बोले सुघ न कांय ।
 जीव वचीया रों धर्म गिणें नही, खिण थापें हो खिण में फिर जांय ॥ २८ ॥
 देवल घजा तेहनी परे, फिरता बोले हो न रहे एकण ठाम ।
 त्यांनीं पापडी जिण कह्या, भमडो माल्यो हो नही चरचा रोकांम ॥ २९ ॥
 जो एकण नें अवर्म कहे, तो दूजा ने हो कहणो धर्म ने पाप ।
 ए लेखो कीयां तो लड पडे, त्यांरा घट मे हो खोटी सरघा री थाप ॥ ३० ॥
 बले सरणो लेइ श्रेणक तणो, सावद्य बोले हो तिणरी खबर न काय ।
 जोरी दावे पेला नें बरजीया, तिण मांहे हो जिण धर्म बताय ॥ ३१ ॥
 कहे श्रेणक फडहो फेरावियो, हणों मती हो फेरी नगरी मे आण ।
 तिण मोष हेते धर्म जांणीयो, एहवो भावे हो मिथ्या दिष्टि अजाण ॥ ३२ ॥
 कहे राय श्रेणक तो समकती, धर्म विनां हो किम करसी ए काम ।
 इम कहि कहि भोला लोक नें, फंद में न्हाखे हो श्रेणक रो ले नाम ॥ ३३ ॥
 श्रेणक नें करे मुख आगले, आह्मी साह्मी हो माडे खांचा ताण ।
 आप छारें उटकां मेलतां, कुण पाले हो श्री जिणवर आंण ॥ ३४ ॥

समदिष्टी तर्णों कोइ नांम ले, भरमावे हो अणसमइया अजाण ।
 तो सकंद्र समदिष्टि देवता, जिण भगता हो एका अवतारी जाण ॥ ३५ ॥
 ते भीड आए कोणक तणी, जुष कीघा हो तिण सावध जाण ।
 एक कोइ -असी लाख उपरें, भिनषां रो हो कर दीयो घमसांण ॥ ३६ ॥
 श्रेणक राय फड्हो फेरावीयो, ए तो जांणो हो मोटां-राजां रो रीत ।
 भगवंत न सरायो तेहनें, तो किम आवें हो तिणरी परतीत ॥ ३७ ॥
 फड्हो फेख्यों हणो मती, इतरी छें हो सूतर में बात ।
 कोइ धर्म कहें श्रेणक भणी, ते तो बोलें हो चोडें भूठ-विख्यात ॥ ३८ ॥
 लोकां सुं मिलती बात जांण नें, कर रह्या हो कूडी बकवाय ।
 मिश्र कहे ते पिण अटकलां, साचा हुवें तो हो सूतर मे दे बताय ॥ ३९ ॥
 ए तो पुत्रादिक जायां परणीयां, ओछवादिक हो ओरी सीतला जाण ।
 एहवो कारण कोइ उपजे, श्रेणक राजा हो फेरी नगरी में आण ॥ ४० ॥
 ते रकीया नहीं कर्म आवतां, नही कटीया हो तिणरा आगला कर्म ।
 नरक जातो रह्यो नही, न सीखायो हो तिणनें भगवंत धर्म ॥ ४१ ॥
 भगवत्ते मोटा मोटा-राजवी, प्रतिबोध्या हो आप्या मारग आय ।
 साध श्रावक धर्म बतावीयो, न सीखायो हो फड्हो फेरणो ताय ॥ ४२ ॥
 तो श्रेणक सीख्यो किण आगलें, भगवंत हो-पूछ्या-सझे मून ।
 बले न जणावें आंमना, आया विण हो करणी जाणो जवून ॥ ४३ ॥
 वासुदेव चक्रवत मोटकां, त्यांरी वरती हो तीन छ खंड में आण ।
 जो फड्हो फेख्यां मुगत मिले, तो कुण काडें हो आषो जिण धर्म जाण ॥ ४४ ॥
 कोउ रांगण दीवादिक सिनांन नें, विसन-सातू हो विना मन दे छोडाय ।
 जो इण विघ जिण धर्म नीपजे, तो छ खड मे हो वरजे आंण फेराय ॥ ४५ ॥
 फल फूल अनंत काय ने, हिसादिक हो अठारें पाप नें जाण ।
 जोरी दावें पेंला नें मना कीयां, धर्म हुवे तो हो फेरे छ खंड में आण ॥ ४६ ॥
 तीर्थकर घर मे थकां, त्यांने हुता हो तीन ग्यान वणेप ।
 हाल हुकम थो लोक में, त्या नही फेख्यों हो फड्हो सूतर देख ॥ ४७ ॥
 बल देवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पाप पचखाण ।
 श्रेणक जिम फड्हो न फेरीयो, जोरी दावे हो न वरताइ-आण ॥ ४८ ॥
 ब्रह्मदत्त चक्रवत तेहने, चित्त मुनी हो प्रतिबोधण आय ।
 साध श्रावक नो धर्म कह्यों, फड्हारी हो न कही आंमना काय ॥ ४९ ॥
 बीसां भेदां स्कें कर्म आवतां, बारें भेदा हो कटें आपला कर्म ।
 ए मोष रा मारग पावरा, छोला मेला हो सगला पापंड धर्म ॥ ५० ॥

दोय वेस्या कसाइवाडें गइ, करता देख्या हो जीवां रा संघार ।
 दोनूं जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव एक हजार ॥ ५१ ॥
 एकण गेंहणो देइ आपणो, तिण छोडाया हो जीव एक हजार ।
 दूजी छोडाया इण विधे, एकां दोया हो चोथो आश्रव सेवार ॥ ५२ ॥
 एकण नें पापंठी मिश्र कहे, तो दूजी ने हो पाप किण विध होय ।
 जीव बरोबर बचावीया, फेर पडीयो हो ते तो पाप में जोय ॥ ५३ ॥
 एकण सेबायो आश्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेबाय ।
 फेर पड्यो तो इण पाप में, धर्म होखी हो ते तो सरोषो थाय ॥ ५४ ॥
 एकण ने धर्म कहितां लाजें नही, दूजोडी नें हो कहितां आवे संक ।
 जब लोकां सूं करे लग्गावणी, एहवो जाणो हो चोडे कुगुरां रा डंक ॥ ५५ ॥
 एक वेस्या सावद्य कांमो करी, सहस्र नांणो हो ले वडी घर मांय ।
 दूजी किरतव करी आपणा, मरता राख्या हो सहस्र जीव छोडांय ॥ ५६ ॥
 धन आय्यो खोटा किरतव करी, तिणरें लगा हो दोनूं विध कर्म ।
 दूजी जीव छोडाया तेहने, उण लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥ ५७ ॥
 पाप गिणें मइथुन मे, जीव बचीयां हो तिणरो न गिणे धर्म ।
 पोतें सरघा री खबर पोते नही, ताणे ताणे हो वावे भारी कर्म ॥ ५८ ॥
 ए प्रश्नां रो जाव न उपजे, चरवा मे हो अटके ठाम ठाम ।
 तो पिण निरणो करे नही, वक उठे हो जीवां रो ले नांम ॥ ५९ ॥
 जीव जीवे काल अनाद रो, मरे तेहनीं हो पर्याय पलटी जाण ।
 संवर निरजरा तो न्यारा कहा, ते ले जावें हो जीव ने निरवांण ॥ ६० ॥
 पृथवी पांणी अग्न वाय ने, वनस्पति हो छ्ठी तसकाय ।
 मोल ले ले छोडावें तेहने, धर्म होसी हो ते तों सगलां में थाय ॥ ६१ ॥
 उसकाय छोडाया धर्म कहे, पांच काय में हो नहीं बोलें निसक ।
 भर्म में पाह्या लोक ने, त्यां लग्गाया हो मिथ्यात रा डक ॥ ६२ ॥
 त्रिविधे त्रिविधे छ्त्रकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंत री वाय ।
 मोल लीयां कर्म कहे मोष रो, ए फंद माह्यो हो कुगुरां कुबद चलाय ॥ ६३ ॥
 देव गुर धर्म रतन तीनूं, सूतर में हो जिण भात्या अमोल ।
 मोल लीयां नही नीपजें, साची सरखो हो आंख हिया री खोल ॥ ६४ ॥
 ग्यान दरसन चारित नें तप, मोष जावा हो मारण छें च्यार ।
 त्याने भिन भिन ओलखे आदरें, सुष पालें हो ते पामे भव पार ॥ ६५ ॥

ढाल : ८

दुहा

दया दया सहको कहें, ते दया बन छें रीक ।
 दया बोल्ख नें पान्सी, त्यानें मुगत नजीक ॥ १ ॥
 वा दया तो पहिलो व्रत छें, साव श्रावक नों बन ।
 पाप रकें तिण सूं वादजा, नवा न लणें कर ॥ २ ॥
 छु कय हणारें नहीं, हणीयां नञो न जांनं ताय ।
 मन बचन काया करी, आ दया कही जिनराय ॥ ३ ॥
 आ दया चोखें चित्त पालीयां, तिरें घोर खर संसार ।
 बले आहीज दया पलनं, भव जीवां उतारें पार ॥ ४ ॥
 एक नाम दया लोकीक री, तिजरा भेद अनेक ।
 तिगनें भेदवारी नूज घगा, ते सुगर्जों जांप बवेक ॥ ५ ॥

ढाल

[फाईड नत सं निररों कीजं]

दवे लाय लागी भावे लाय लागी, दवे कूबो नें भावेई कूबो ।
 ए भेद न जांणें नूंड मिय्याती, संसार नें मुगत रो मारण कूबो ।
 भेद घर नें भूजा रो निररों कीजो ॥ १ ॥
 कोइ दवे लाय सूं बल्लों रावें, दवे कूबो पडता नें भाल बचावें ।
 ओं तो उगार कीयो इण भव रो, जो बवेक विचल तानें खर न कायो ॥ भेद ॥
 घट नें ग्यान घाल नें पाप पचखावें, तिग पडतो राख्यो भव कूबा मांझों ।
 भावे लाय सूं बल्ला नें काठें रिपेखर, ते पिग गेहलां भेद न पायो ॥ ३ ॥
 सूनें चित्त सूतर खाचे निध्याती, त्यारे दव नें नाव रा नहीं निवेरा ।
 पिरवार सहीत कुसंथ में पडीअ, त्यां नरक सूं सतपूख दीवा डेरा ॥ ४ ॥
 गृहस्थ नें ओपव भेद देइ नें, अनेक उपाय करे जीवां बचावें ।
 ए संसार तपा उपगार कीयां में, मुगत रो मारण नूंड बचावें ॥ ५ ॥
 करे नितर जंतर माडा नें नसटा, सत्पादिक नों उँहर देवें उतारी ।
 काठें डाकण सांकण नूत जपादिक, ति-भेई बन कहें सांगवारी ॥ ६ ॥
 एहवा किरतव सादध जाणें, त्रिविधे त्रिविधे सावां त्याग कीवें ।
 भेदवारी लोकां सूं मिल्लें अग्यांनी, त्यां जीव बचावन रो सररों लीवें ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गायक के अन्त में है ।

उवे जीव बचावण रो मुख सूं कहें पिण,
 भोला नें भर्म में पाड विगोया,
 कीड्यां मकोडा नें लटां गजायां,
 भेषघारी कहे म्हें जीव बचावां,
 कोइ आखो चोमासो उपदेस देवें तो,
 जो उद्यम करें च्यार महीनां माहे,
 सो घर रे आंतर कोइ लेवे संथारों,
 सो पगलां गयां जीव लाखां बचें छे,
 घर छोडतों जाणे सो कांसों उपरें,
 एक कोस गयां जीव कोडां वचे छें,
 जब तो कहें म्हारो कल्प नहीं छे,
 कव ही कहे म्हें जीव बचावां,
 साव तो आपरा व्रत राखण नें,
 संसार माहे जीव पच रह्या छे,
 जीवणों मरणों त्यांरो नहीं चावें,
 ग्यानादिक गुण घट माहे घाले,
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव आवें तो,
 ते पिण जीव बचावण काजें,
 झविरती जीवां रो जीवणो वांछें,
 आ सरवा अग्यानी री पग पग अटके,
 गृहस्थ रे तेल जाअें मूण फूटां,
 बिच मे जीव आवे ते तेल सूं वहिता,
 जो अन्न उठें तो लाय लागें छे,
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावे,
 पग सूं मरता जीव बतावें,
 आ खोटी सरवा उघाडी दीसैं,
 वले भेषघारी विहार करतां मारग में,
 ते मारग छोड नें उज्जड पडीयां,
 श्रावकां ने उज्जड पडीयां जाणें,
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव बतावे,

कांम पड्यां बोलें फिरती वाणों ।
 ते पिण डूबें छे कर कर तांगो ॥ ८ ॥
 ढांढां रा पग हेठें चींध्या जावे ।
 तो चुण चुण जीवां ने कयूं न बचावें ॥ ९ ॥
 दण पांच जीवां नें दोहरा समझवें ।
 तो लाखां गमे जीव तेह बचावें ॥ १० ॥
 तो तुरत आलस छोडी देवण जावें ।
 त्यां जीवां नें जाए कयूं न बचावें ॥ ११ ॥
 तो सांग पेहरावण सताब सूं जावें ।
 त्यां जीवां जाय कयूं न बचावें ॥ १२ ॥
 म्हें तो संसार सूं हूआ न्यारा ।
 उवे वांगी न वोलें एकण धारा ॥ १३ ॥
 त्रिविध त्रिविध जीव नहीं सतावें ।
 त्यांसूं तो साव हुव निरदावे ।
 आ सरवा जिणवर भ्राखी ॥ १४ ॥
 समझतो देखें तो साध समझवें ।
 मुगतनगर मे साव पोहचावे ॥ १५ ॥
 भेषघारी कहें म्हे तुरत वतावां ।
 म्हे सर्व जीवां रों जीवणो चावां ॥ १६ ॥
 तिण भर्म रो परमारथ नहीं पायो ।
 ते सांभलजों भवियण चित्त ल्यायो ॥ १७ ॥
 ते कीड्या रा दर माहे रेलो आवे ।
 वले तेल बुहो बुहो अगनि में जावें ॥ १८ ॥
 तो तस थावर जीव माख्या जावें ।
 तो तेल डूळें ते बासण कयूं न बतावें ॥ १९ ॥
 तेल सूं मरता जीवां नें नहीं बतावें ।
 पिण अभितर आंघां रे निजर न आवें ॥ २० ॥
 त्यानें श्रावक साह्यां मिलीया आयो ।
 तस थावर जीवां नें चीथता जायो ॥ २१ ॥
 तस थावर जीवां नें मरता देखें ।
 तो मारग बताय देणो इण लेखें ॥ २२ ॥

एक पग हेठें जीव मरें ते बतावें,
 श्रावकां नें उज्जड-सूं मारग घाल्या,
 एक पग हेठें जीव बचावे अग्यांनी,
 त्यांनै श्रावक उजाड में मारग पूछें तो,
 थोडी दूर बतायां थोडो धर्म हुवें तो,
 घणी दूर रों नांम लीयां बक उठे,
 कोइ आंधो पुरुष गामांतरें जातां,
 कीड्यां माकादिक चीथतो जावें,
 भेषधारी. संहजाइ साथे जातां,
 जो पग पग जीवां नें नहीं बतावें,
 त्यांनै बताय बताय नें जीव बचावणा,
 इण. धर्म करण सूं तो पोतेंइ लाजें,
 वले इल्यां सुल सलीयां सहीत आटो छे,
 तपती रेत उनाला री तिण में,
 गृहस्थ्यं नहीं देखे आटो दुलतों,
 उवे पग सूं मरता जीव बतावें,
 इत्यादिक गृहस्थ्य रा अनेक उपध सूं,
 ते पग हेठें जीव बतावें त्यांनै,
 किण हीक ठोडें जीव बतावें,
 समरू पड्यां विण सरघा परूषें,
 ए-पग पग जाव अटकता देखे,
 कूड कपट करे मत कुसले राखण नें,
 गृहस्थ्य रों न वांछणों जीवणों मरणों,
 राग धेष रहीत रहिणो निरदावे,
 समोसरण ते एक जोजन मांडला में,
 अरिहंत आगें वाणी सुणवा त्यांनै,
 च्यार कोस माहे तस थावर हुंता,
 नर नाख्यां रा पगां सूं विण उपीयोग,
 नंद मिणीयारो डेडकों हुय नें,
 तिणनै चीथ माख्यो श्रेणक रे वछेरे,
 गृहस्थ्य रा पग हेठे जीव आवे ते,
 भारी कर्मां लोकां नें मिष्ट करण नें,

तो थोडा सा जीवां नें बचता जाणो ।
 घणां जीव वचें तस थावर प्राणो ॥ २३ ॥
 ठाला बादल अंबर ज्यूं गाजें ।
 मोन सामे बोलता कांय लाजें ॥ २४ ॥
 घणी दूर बतायां घणो धर्म जाणों ।
 त्यांरी खोटी सरघा रो ए अहलांगो ॥ २५ ॥
 ऊ आख विनां जीव किण विध जोवें ।
 तस थावर जीवां रो घमसाण होवें ॥ २६ ॥
 आंघां रा पग सूं जीव मरता देखें ।
 तो खोटी सरघा जाणजों इण लेखें ॥ २७ ॥
 कें पूंजी पूंजी नें करणा दूरो ।
 तो दूजें कुण मानसी यो मत कूडो ॥ २८ ॥
 ते गृहस्थ्य रे दुलें मारग मांयो ।
 ते परत पांग जुदा हुवें जीव कायो ॥ २९ ॥
 ते भेषधाख्यां री निजख्या आवे ।
 आटे दुलतें मरता जीव क्यूं न बतावें ॥ ३० ॥
 तस थावर जीव मंवा नें मरसी ।
 सगली ठोड बतावणां पडसी ॥ ३१ ॥
 किण हीक ठोड संका मन आणें ।
 पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं ताणें ॥ ३२ ॥
 कदा सर्व आरे हुवें अग्यांनी थूलो ।
 पिण बुधवंत बात न माणें मूलो ॥ ३३ ॥
 ते वाछें बतायां लागें पाप कर्मां ।
 एहवों निकेवल श्री जिण धर्मां ॥ ३४ ॥
 तठें नर नाख्यां रा ब्रद आवें नें जावें ।
 भगवत भिन भिन भाव सुणावे ॥ ३५ ॥
 मर गया जीव उराणें आया ।
 पिण भगवत कठेय न दीसे बताया ॥ ३६ ॥
 वीर बांधण जांतो मारग मायां ।
 वीर साध साह्यां महली क्यूं न बचायो ॥ ३७ ॥
 साधां नें बतावणां कठेय न चाल्यां ।
 ओ पिण घोचो कुंगुरा रो घाल्यां ॥ ३८ ॥

जव साधां रो नांम तो अलगां मेले,
साव सूं मरता जीव साव बतावें,
सिधंत रा बल विण बोलें अग्यानी,
अं गालां रा गोला मुख सूं चलाया,
साधां रा पग हेठे जीव मरे ते,
तो अरिहत नी आग्या लोपावें,
साव तो साधां ने जीव बतावें,
श्रावक श्रावकां ने जीव नही बतावें,
श्रावक श्रावकां ने न बतायां पाप लागो कहे,
श्रावकां रें संभोग साधां ज्यूं हुवें तो,
पाट बाजोटादिक साव बारे मेले,
लारें ओर साव त्यांनैं भीजतो देखें,
रोगी गरढा गिलांण साव री वीयावच,
महा मोहणी कर्म तणो बंध पाडें,
आहार पांणी साव वेहरे आणें,
आप आण्यो जांण इधिको लेवें तो,
इत्यादिक साव साव रे अनेक बोलां रो,
याहिज बोलां रो श्रावक श्रावकां रे,
श्रावकां रे संभोग साधां ज्यूं हुवें तो,
ए सरधा रो निरणों न काडें अग्यांनी,
जो ए श्रावक श्रावकां रा नही करें तो,
त्यां श्रावकां रें संभोग साधां ज्यूं फल्प्यो,
श्रावक रें संभोग तो श्रावक सूं छे,
त्यांरो संभोग तो अविरत में छें,
त्यांसूं सरीरादिक रो संभोग टले नें,
उपदेस देइ निरदावे रहिणो,
लाय लागी जो गृहस्थ देखे तो,
ए सावद्य किरतव लोक करे छें,
अगन पांणी छे काय मूई त्यांरों,
ओर जीव वच्या त्यारो धर्म बतावे,
ए पाप नें धर्म रो मिश्र परुषे,
त्यां भेषधाख्यां री परतीत आवे तो,
ई६

श्रावकां री चरचा मुख ल्यावे ।
ज्यूं श्रावक श्रावकां नें जीव बतावे ॥ ३९ ॥
श्रावका रो संभोग साधां ज्यूं बतायो ।
ते न्याय सुणो भवीयण चित्त ल्यायो ॥ ४० ॥
सभोगी साव देखी जो नहीं बतावे ।
पाप लागो नें विरावक थावें ॥ ४१ ॥
ते पोता रो पाप टलावण रे काजे ।
तो किसो पाप लागो किसो वरत भाजें ॥ ४२ ॥
ओ भेषधाख्यां मत काढ्यो कूडो ।
पग पग बंध जायें पाप रा पुरो ॥ ४३ ॥
ठरळें मातरादिक कारज जावे ।
जो ओ न ल्यावें तो प्राच्छित्त आवे ॥ ४४ ॥
साव न करे तो श्री जिण आगना बारें ।
इह लोक नें परलोक दोनूं बिगाडे ॥ ४५ ॥
संभोगी साव नें वांटे देवा री रीतों ।
अदत्त लागें ने जावें परतीतो ॥ ४६ ॥
संभोगी साव सूं न कीयां अटकें मोषो ।
न करे तो मूल न लागें दोषो ॥ ४७ ॥
श्रावक श्रावकां नें पिणइण विव करणों ।
त्यां वितल थइ लीयो लोकां रो सरणों ॥ ४८ ॥
भेषधाख्यां रे लेखें भागल जाणो ।
ते पड गया मूर्ख उलटी तांणो ॥ ४९ ॥
बले मिथ्याती सूं राखें भेलापो ।
ते त्याग कीया सूं टलसी पापो ॥ ५० ॥
ग्यांनादिक गुण रो राखें भेलापो ।
पॅलो समझे नें टाळें तो टलसी पापो ॥ ५१ ॥
तुरत बुझवें छे काय नें मारी ।
तिण माहें धर्म कहे सांगचारी ॥ ५२ ॥
थोडो सो पाप कहे हुवें कानी ।
लाय बुझावण री करें सांती ॥ ५३ ॥
तोटा विचें लाभ धणों बतावे ।
लाय बुझावण दोखा जावें ॥ ५४ ॥

ढलल : ६

दुहल

जीव हलसल छे अतल बुरल, तलण मलहें ओगुण अनेक ।
दयल घरुम मे गुण घणल, ते सुणओ आण ववेक ॥ १ ॥

ढलल

[ओ मल रे सीतल पतल आओ]

दयल भगुतल छे सुखदलई, ते मुगत पुरल नल सलइ जी ।
सलठ नलम दयल रल कहुल जलण, दसमल अंग रे मलहल जी ।
दयल घरुम श्री जलणओ रल वलणुओ ॥ १ ॥

पूजणीक नलम दयल रल भगुतल, मंगलुीक नलम छे नलकुओ जी ।
जे भव जीव आयल इण सरणे, तयलने छें मुगत नओकुओ जी ॥ २ ॥

तुरलवलवे तुरलवलवे छु कलड न हणवुी, आ दयल कहुी जलणरलओ जी ।
तलण दयल भगुतल रल गुण छे अनंतल, ते पूरल केम कहुवलओ जी ॥ ३ ॥

तुरलवलवे तुरलवलवे छु कलड जीवल ने, भय नहुी उपजलवे तलमओ जी ।
ए अमडदलन कहुओ भगवते, ए पलण दयल रल नलमओ जी ॥ ॡ ॥

तुरलवलवे तुरलवलवे छु कलड मलरण रल, तयलग करे मन सुवे जी ।
आ पूरल दयल भगवते भलषुी, तलण सू पलप रल वलरणल रुंवे जी ॥ ५ ॥

तयलग कलडल वलण हलसल टलले, तल करुम नलरजुरल थलओ जी ।
हलसल टललुडल सुभ ओग वरते छे, तलहलं पुन रल थलट वधलओ जी ॥ ६ ॥

इण दयल सू पलप करुम रुक जलवे, वले करुम करे वकचूरुओ जी ।
यलं वुड गुणल मे अनंत गुण आयल, ते पललें छें वलरलल सूरुओ जी ॥ ७ ॥

आहुीज दयल छे महुलवरत पहलुओ, तलणमे दयल दयल सरुव आई जी ।
ते पूरल दयल तल सलध जी पलले, वलकुी दयल रहुी नहुी कलई जी ॥ ८ ॥

छु कलड नें हणें हणलवें नहुी, वले हणतलं ने नहुी सरलवे जी ।
इसडुी दयल नलरतर पललें, तयलरे तुले वुीओ कुण आवे जी ॥ ९ ॥

आहुीज दयल ओखें वलत पलले, ते केवलुीयलं रल छे गलदुी जी ।
आहुीज दयल सभल मे पुरुषे, तलणनें वुीर कहुओ नुडलडवलदुी जी ॥ १० ॥

आहुीज दयल केवलुीयलं पललुी, मन-परडव अवधल गुडलंनल जी ।
वले मतल गुडलंनल नें सुरत गुडलंनल, आहुीज दयल मन मलंनल जी ॥ ११ ॥

यह आंकड़ल प्रत्येक गलथल के अन्त मे हल ।

आहीज दया लब्ध घाखां पाली, आहीज पूर्व घर ग्यानी जी ।
 संका हुवें तो निसंक सूं जोवो, सूतर में नहीं छे बात छांनी जी ॥ १२ ॥
 देस थकी दया श्रावक पालें, तिणनें पिण साघ बखाणें जी ।
 ते श्रावक हिंसा करें घर बेठां, पिण तिण माहें धर्म न जाणें जी ॥ १३ ॥
 प्राण भूत जीव नें सतव, त्यारी घात न करणी लिगारो जी ।
 या तीन काल नां तीर्थकर नीं वांणी, आचारंग चोथा अघेन मभारो जी ॥ १४ ॥
 मत हणों मत हणों कह्यो अरिहंतां, अं जीव हणे किण लेखें रे ।
 ज्यारी अभितर आख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो न देखें रे ॥ १५ ॥
 जीवां री हिंसा छे महा दुखदाई, ते नरक तणी छे साई जी ।
 खोटा खोटा नाम तीस हिंसा रा, कह्या दसमां अंग रे माहि जी ।
 प्राण घात हिंसा छे खोटी, हिंसा धर्म कुगुरां री वांणी* ॥ १६ ॥
 तिण जीव हिंसा माहें अवगुण अनेक, ते सर्व जीव नें दुखदायो जी ।
 केइ कहें म्हें हिंसा कीयां में, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ १७ ॥
 पिण हिंसा कीयां विण धर्म न हुवें, जाणां छां पाप एकंतो जी ।
 केइ कहें म्हें हणां एकेंद्री, म्हे किण विघ पूरा मन खंतो जी ॥ १८ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, पंचेंद्री जीवां रे ताई जी ।
 एकेंद्री थी पंचेंद्रीय नां, धर्म घणों तिण माहि जी ॥ १९ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, मोटां घणा पुन भारी जी ।
 केइ इसडों धर्म धारे नें बेठा, म्हांनें पाप न लागें लिगारी जी ॥ २० ॥
 निसंक थका छ काय नें मारें, ते तो कुगुरां तणा सीखायो जी ।
 कोइ पांच थावर नें सहल गिणी नें, बले मन माहें हरषत थायो जी ॥ २१ ॥
 तिण सूं त्यानें हणतां संक न आणें, माखां न जाणें पापो जी ।
 पांच थावर नां आरंभ सेती, ओ तो कुगुरां तणो परतापो जी ॥ २२ ॥
 कह्यो दसवीकालक छठें अघेने, दुरगत दोष बवारें जी-
 छ काय जीवां ने जीवां मारे नें, तो बुधवंत किण विघ मारें जी ॥ २३ ॥
 ए प्रतख सावद्य संसार नों कामो, सगा सेंण न्यात जीमावें जी ।
 जीवां नें मारे जीवां नें पोषें, तिण माहें धर्म बतावें जी ॥ २४ ॥
 तिण माहें साघ धर्म बतावें, ते तो मारग संसार नों जाणो जी ।
 मूला गाजर सकरकंद कांदा, ते पूरा छें मूढ अयाणो जी ॥ २५ ॥
 ते पिण दांन दीयां में पुन परूपें, इत्यादिक नीलोती अनेको जी ।
 केइ जीव खवायां में पुन परूपें, ते बूडें छे विना धवेको जी ॥ २६ ॥
 ए दोनूइ हिंसा धर्मी अनार्य, केइ मिश्र कहें छें मूढो जी ।
 ते बूडें छें कर कर रुढो जी ॥ २७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जीवां री हिंसा में पुन परुषे, त्यांरी जीम वहे तलवारो जी ।
 वले पहरण सांग साधु रो राखे, धिग त्यांरो जमवारो जी ॥ २८ ॥
 केइ साध रो विडद घरावें लोकां मे, वले वाजे भगवंत रा भगता जी ।
 पिण हिंसा माहें धर्म परुषे, त्यारा तीन वरत भागे लगता जी ॥ २९ ॥
 छ काय माख्यां माहें धर्म परुषे, त्याने हिंसा छ काय री लागे जी ।
 तीन काल री हिंसा अणुमोदी, तिण सूं पेहलो महावरत भागें जी ॥ ३० ॥
 हिंसा में धर्म तो जिण कह्यो नांही, हिंसा धर्म कहां भूठ लागें जी ।
 इसडी भूठ निरंतर बोळें, त्यांरो बीजोइ महावरत भागें जी ॥ ३१ ॥
 ज्या जीवां ने माख्यां धर्म परुषे, त्यां जीवां रो अदत्त लागो जी ।
 वले आग्या लोपी श्री अरिहंत नी, तिण सूं तीजोई महावरत भागो जी ॥ ३२ ॥
 छ काय माख्यां माहे धर्म बतावे, त्यारी सरघा घणी छें उघी जी ।
 ते मोह मिथ्यात मे जड्यीया अग्यानी, त्याने सरघा न सुफे सूधी जी ॥ ३३ ॥
 त्यानें पूछ्यां कहे म्हे दयाधर्मी छां, पिण निस्चे छ काय रा घाती जी ।
 त्या हिंसाधर्म्यां ने साध सरघे केइ, ते पिण निस्चे मिथ्याती जी ॥ ३४ ॥
 केइ कहें साध जीव बचावे, राखे रखावे भलो जाणें जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, इसडी चरचा आंणे जी ॥ ३५ ॥
 साध तो जीवां ने क्याने बचावे, ते पचे रह्या निज कर्मों जी ।
 कोइ साध री संगत आय करें तो, सीखाय देवे जिण धर्मों जी ॥ ३६ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावे जी ।
 त्यारो जीवणो मरणो साध वंछे तो, राग धेष बेहूं आवे जी ॥ ३७ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो खोटों जी ।
 त्यानें हणवा रो त्याग कीयो तिण माहे, दया तणों गुण मोटों जी ॥ ३८ ॥
 असंजम जीतव नें बाल मरण, या दोयां री वछां न करणी जी ।
 पिडत मरण नें संजम जीतव, यांरी आसा वछां मन धरणी जी ॥ ३९ ॥
 छ काय रा सहस्र जीव इविरती, त्यारो असंजम जीतव जाणो जी ।
 सर्व सावद्य त्याग कीया त्यारो, संजम जीतव एह पिछाणों जी ॥ ४० ॥
 त्रिविधे त्राइ छ काय रा साध, त्यांरी दया निरंतर राखे जी ।
 ते छ काय रा पीहर छ काय नें माख्यां, धर्म किसे लेखे भापे जी ॥ ४१ ॥
 छ काय रा जीवां नें हणें ससारी, त्यारें विचे पडें नही जायो जी ।
 विचें पड्यां वरत भागे साध रो, ते विकलां ने खवर न कायो जी ॥ ४२ ॥
 केइ तो कहे साघां ने विचे न पडणो, केइ कहे विचें पडणो जी ।
 साघां ने समभावे रहणो, ते विकलां रे नही छें निरणो जी ॥ ४३ ॥

साधां नें बिचें पडणों त्रिविधे निषेध्यों, ते हणतां बिचें न पडें जायो जी ।
 पिण गृहस्थ नें धर्म कहे बिचें पडीयां, तो घर रों धर्म कांय गमायो जी ॥ ४४ ॥
 हणे जीतब नें परसंसा रे हेतें, हणें मान नें पूजा रे कांमो जी ।
 वले जनम मरण मूकावा हणें छें, हणें दुख गमावण तांमो जी ॥ ४५ ॥
 यां छ कारणं छ काय नें मारें तो, अहेत रो कारण थावें जी ।
 जनम मरण मूकावण हणें तो, समकत रतन गमावें जी ॥ ४६ ॥
 ए छ कारणें छ काय ने माख्यां, आठ कर्मां री गांठ बंधायो जी ।
 मोह नें मार वधें घणी निश्चें, वले पडें नरक में जायो जी ॥ ४७ ॥
 अर्थ अनर्थ हिसा कीवा, अहेत रो कारण तासो जी ।
 धर्म रें कारण हिसा कीवां, बोध बीज रो नासो जी ॥ ४८ ॥
 ए छ कारणें छ काय नें मारें, ते तो दुख पावें इण संसारो जी ।
 ए तो आचारंग रे पेंहलें अधेनें, छ उदेसा में कह्यो विसतारो जी ॥ ४९ ॥
 केइ समण माहण अनार्य पापी, करें हिसा धर्म री थापो जी ।
 कहें प्राण भूत जीव नें सतव, धर्म हेते हण्यां नही पापो जी ॥ ५० ॥
 एहवी उंधी परूपणा करे अनार्य, त्यानें आर्य बोल्या घर पेमें जी ।
 थें भूडो दीठो ने भूडो सांभलीयो, भूडो मान्यो भूडो जाण्यो एमो जी ॥ ५१ ॥
 जीव माख्यां मे धर्म परूपे, ए तो अनार्य री बाणो जी ।
 ते तो मूढ मिथ्याती भारीकर्मां, त्यांरी सुघ बुध नही ठीकाणो जी ॥ ५२ ॥
 त्यां हिसाधर्मी नें आर्य पृष्ट्यो, थानें माख्या धर्म कें पापो जी ।
 जब तो कहें म्हांनें माख्यां छे पाप एकत, साच बोले कीधी सुघ थापो जी ॥ ५३ ॥
 जब आर्य कहे थाने माख्यां पाप छे, तो सर्व जीवां नें इम जाणो जी ।
 ओरां नें माख्यां धर्म परूपें, थें कांय बूडो कर कर तांणो जी ॥ ५४ ॥
 इम हिसाधर्मी अनार्य त्यानि, कीधा जिण मारग सूं न्यारो जी ।
 जोवो अचारंग चोधा अधेन माहे, बीजें उद्देसें विसतारो जी ॥ ५५ ॥
 ओरां ने माख्यां धर्म परूपें, आप नें माख्यां पापो जी ।
 आ सरघा विकलां री उंधी, तिणमें कर रह्या मूढ विलापो जी ॥ ५६ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे काजें, जीव हणें छ कायो जी ।
 तिणनें मंद बुधी कह्यो दसमा अंग में, पेंहला अधेन रे मायो जी ॥ ५७ ॥
 छ काय जीवां रो घमसांण करनें, श्राक्कां ने जीमावें जी ।
 उणनें मंद बुधी तो कह दीयो भगवंत, तिणनें धर्म किसी विध थावे जी ॥ ५८ ॥
 कोइ तो जीवां नें मार खवावें, कोइ जीव खवावे आवा जी ।
 तिण माहें एकत धर्म परूपें, ते अनार्य री भाषा जी ॥ ५९ ॥

केइ जीव माख्यां माहें धर्म कहें छे, ते पूरा अग्यांनी उंवा जी ।
 त्यानं जाण पुरुष मिले जिण मारग रो, किण विघ बोलावे सुधा जी ॥ ६० ॥
 लोह नों गेलो अगन तपाए, ते अगन वर्ण करें तातो जी ।
 ते पकड संडासे आयो त्यां पासैं, कहें बळतो गोलो थें भालो हायो जी ॥ ६१ ॥
 जब पाषडीयां हाथ पाछो खांच्यो, जब जाण पुरुष कहें त्यानं जी ।
 ये हाथ पाछो खांच्यो किण कारण, थारी सरघा म राखों छाने जी ॥ ६२ ॥
 जब कहे गोलो म्हे हाथे त्यां तों, म्हारो हाथ वळें लागे तापो जी ।
 तो थारो हाथ बाले तिणने पाप के धर्म, जब कहे उणनं लागो पापो जी ॥ ६३ ॥
 थारो हाथ बाले तिणने पाप लागे तो, ओरां नें माख्या धर्म नाही जी ।
 थें सर्व जीव सरीपा जाणों, थें सोच देखों मन माहि जी ॥ ६४ ॥
 जे जीव माख्यां मे धर्म कहे ते, रूले काल अनतो जी ।
 संगडा अंग अघेन अठारमें, तिहां भाष गया भगवंतो जी ॥ ६५ ॥
 स्थानक करावे छ काय हणें ते, करे अनत जीवां री घातो जी ।
 अहेत नो कारण निश्चे हुवो छे, धर्म जाणे तो आवे मिथ्यातो जी ॥ ६६ ॥
 जब कहे म्हे स्थानक करावां तिणमें, जाणां छा एकंत पापो जी ।
 तिण कहिवा ने पाप कष्टो भूठ बोले, सरघा गोप विगोयो आपो जी ॥ ६७ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो छे तिण काले, धन उदके स्थानक काजो जी ।
 जो उ पाप जाणें तो पर भव जातें, इसडो कांय कीयो अकाजो जी ॥ ६८ ॥
 घर रो धन देने जीव मराया, ते अर्थ न दीसे कांई जी ।
 अनर्थ पिण जाण्यो नही दीसे, धर्म जाण्यो दीसे तिण माहि जी ॥ ६९ ॥
 हिंसा री करणी मे दया नही छे, दया री करणी मे हिंसा नाही जी ।
 दया ने हिंसा री करणी छे न्यारी, ज्यू तावडो नें छांही जी ॥ ७० ॥
 ओर वसत मे भेल हुवे पिण, दया में नही हिंसा रो मेलो जी ।
 ज्यू पूर्व ने पिछम रो मारग, किण विघ खाये मेलो जी ॥ ७१ ॥
 केइ दया ने हिंसा री मिश्र करणी कहे, ते कूडा कुहेत ल्मावे जी ।
 मिश्र धापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोका ने भरमावे जी ॥ ७२ ॥
 जो हिंसा कीयां थी मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवे पाप अठारो जी ।
 एक फिच्छां अठारे फिरे छे, कोइ बुववंत करजो विचारो जी ॥ ७३ ॥
 जिण मारग री नीव दया पर, खोजी हुवे ते पावे जी ।
 जो हिंसा माहे धर्म हुवें तो, जल मथीयां धी आवे जी ॥ ७४ ॥
 संवत अठारे ने वरस चमालें, फागुण सुद नवमी रिक्वारो जी ।
 जोड कीवी दया धर्म दीपावणां, वगडी सहर मस्कारो जी ॥ ७५ ॥

ढाल : १०

दुहा

नमूं वीर सासण घणी, गणघर गोतम सांम ।
 त्यां मोटा पुरुषां रा नांम थी, सीमे आतम कांम ॥ १ ॥
 त्यां घर छोडे संजम लीयो, भगवंत श्री विरघमान ।
 बारे वरस नें तेरे पखे, छदमस्थ रखा भगवान ॥ २ ॥
 त्यां गोसाला ने चेलो कीयो, ते तो निश्चें अजोग साख्यात ।
 सराग भाव आयों तेह थी, ते पिण छदमस्थ पणारी बात ॥ ३ ॥
 तीथंकर साघ छदमस्थ थकां, चेलो न करें दीख्या देवे नाही ।
 धर्मकथा पिण कहे नहीं, नव मे ठाणे अर्थ मांही ॥ ४ ॥
 बारें वरस नें तेरें पख मझे, दीख्या देचेलों न कखो कोय ।
 एक गोसाला अजोग नें चेलो कीयों, निश्चें होणहार टलें नही सोय ॥ ५ ॥
 तीथंकर साथें दीख्या लीयें, तिणने दीख्या दे जिणराय ।
 पछें केवली हुवें नही त्यां लगें, कीण नें दीख्या देवें नांय ॥ ६ ॥
 गोसाला नें वीर बचावीयो, छदमस्थ पणा रो सभाव ।
 मोह राग आयो तिण उपरे, तिणरो विकल न जाणेंन्याव ॥ ७ ॥
 गोसाला ने वीर बचावीयों, तिणनों मूर्ख थापे धर्म ।
 सूनें चित बकबो करें, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ८ ॥
 कहे भगवंत दीख्या लीयां पछें, न कीयो किंचित परमादने पाप ।
 जाणतां नें अजाणतां, कदे दोष नसेव्यों जिण आप ॥ ९ ॥
 इम कही भोला लोकां भणी, न्हांखे छे फंद मांय ।
 तिणरो न्याय निरणो जथा तथ कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[पाण्ड वधसी आरे पाचमे]

गोसाला नें बचायों वीर सराग थी रे, तिण मांहे धर्म नही लिगार रे ।
 ओ तो निश्चें होणहार टलें नहीं रे, तिणरो भोला नहीं जाणें मूल विचार रे ।
 कुपातर नें बचायो वीर सराग थी रे, कुपातर नें बचायां धर्म किहां थकी रे* ॥ १ ॥
 संका हुवें तो भगोती रों अर्थ देखनें रे, तिणमें म जाणों कोइ कूड रे ।
 खोटी सरघा नें कर दो दूर रे ॥ कु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भारीकर्मा जीवा ने समभ पडे नही रे, ते तो कुगुरां रे बदले बोले कूड रे ।
ताणा ताण मे जासी ताणीया रे, वेहती अगाव नंदी रे पूर रे ॥ ३ ॥
गोसालो तो अघर्मी अवनीत थो रे, भारीकर्मा कुपातर जीव रे ।
बले दावानल छे जिण घर्म रो रे, दुष्टया में दुष्टी घणो अतीव रे ॥ ४ ॥
भगवत ने भूठ पाडण पापीये रे, तिल नें उखणीयो पापी जाण रे ।
मिथ्यात पडवजीयो श्री भगवानं थी रे, त्यांरी मूल न राखी पापी काण रे ॥ ५ ॥
जगत तणा सगला चोरां थकी रे, गोसालो छे इधको चोर निसंकरे ।
बले कूड नें कपट तणो थो कोथलो रे, तिणरे करडो मिथ्यात तणों छे डंक रे ॥ ६ ॥
तिणने वीर वचायो वलतों जाण ने रे, लवद फोडवे सीतल लेस्या मूंक रे ।
राग आय्यो तिण पापी उपरे रे, छदमस्थ गया तिण काले चूक रे ॥ ७ ॥
केइ मेपघारी भागल इसडी कहे रे, गोसाला ने वचायां हूवो घर्म रे ।
त्या घर्म जिणसर नो नही ओलख्यो रे, ते तो भूल गया अग्यांनी भर्म रे ॥ ८ ॥
बले कहे छे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, दोष न सेव्यो मूल लिंगार रे ।
परमाद किंचत मात्र सेव्यो नही रे, बले आश्रव न सेव्यो किण ही वार रे ॥ ९ ॥
इम कहि कहि नें सचवादी हुवे रे, पिण एकंत बोले छे मूसावाय रे ।
त्या घर्म जिणसर नों नही ओलख्यो रे, फूटा ढोले ज्यूं वोलें विरुआ वाय रे ॥ १० ॥
ते भूठ बोले छे सुघ बुच वाहिरो रे, त्यांरी सरखा री त्यांने खबर न काय रे ।
त्या विकला री सरखा ने परगट करू रे, ते भवीयण सांभलजो चित ल्याय रे ॥ ११ ॥
भगवंत आहार कीयो छे जाण ने रे, तिणमें कहे छे परमाद ने आश्रव पाप रे ।
बले निद्रा लीत्रां में कहे पाप छे रे, ते निद्रा पिण लीघी भगवंत आप रे ॥ १२ ॥
परमाद न सेव्यो कहे भगवान ने रे, बले कहितां जाअें पापी परमाद रे ।
न्याय निरणो विकला रे छे नही रे, यूही करे कूडो विषवाद रे ॥ १३ ॥
मोह करम उदय सू सावद्य सेवीयो रे, छदमस्थ थकां थी भगवानं रे ।
अजाणपणें ने विण उपीयोग छे रे, ते वुधवत सुणो सुरत दे कांन रे ॥ १४ ॥
दस सुपना पिण भगवत देखीया रे, दस सुपना रो पाप लागो छे आण रे ।
ते पिण दस सुपनां रो पाप जुओ जुओ रे, तिणरी सका मत करजो चतुर सुजाण रे ॥ १५ ॥
कोइ कहे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, पाप रो अंस न सेव्यो मूल रे ।
ओ जवे सुपना देख्या मे पाप पळ्यसी रे, तो त्यारे लेखे त्यांरी सरखा मे घूर रे ॥ १६ ॥
सात प्रकारे छदमस्थ जाणीये रे, कह्यो छें ठाणाज ग सूतर मांहि रे ।
हिंसा लागें छे प्राणी जीव री रे, बले लागे मृपा ने अदत्त ताहि रे ॥ १७ ॥
शब्दादिक आस्वादे रागे करी रे, पूजा सतकार वांछे छें मन मांय रे ।
कदे असणाविक पिण सावद्य भोगवे रे, वागरें जेसो करणी नावे ताय रे ॥ १८ ॥

ए सातोई सावद्य रा थानक कहा रे, छद्मस्थ सेवें छें किण ही वार रे ।
 त्यांरो पिण प्राद्धित जथायोग छें रे, जाण अजाण सेव्यां रो करे विचार रे ॥ १६ ॥
 ए सातोई बोल न सेवें केवली रे, छद्मस्थ पिण निरंतर सेवें नाहि रे ।
 सेवें तो मोह कर्म उदें हुआं रे, संका हुवें तो जोवों सूतर माहि रे ॥ २० ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तिण दिनें रे, छद्मस्थ हुंता जिण दिन भगवानं रे ।
 मोह राग आयों भगवंत नें तिण दिनें रे, निरुचें होणहार टालण नहीं आसांन रे ॥ २१ ॥
 छद्मस्थ थकां पिण श्री भगवानं नें रे, समें समें लागता कर्म सात रे ।
 मोह कर्म वशेष थकी उदें हुवो रे, कुपात्र नें बचाय लीवों साख्यात रे ॥ २२ ॥
 गोसालो दावानल श्री जिण धर्म नो रे, ते दुष्टां में दुष्टी घणो अतीव रे ।
 वले कोथलो कूड कपट रो तेहनें रे, बचायां रा फल सुणों भव जीव रे ॥ २३ ॥
 गोसाले तेजू लेस्या मेलनें रे, दोय साधां री कीधी घात रे ।
 उंधो अंवलें बोल्यो भगवानं नें रे, वीर सूं पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या मेली पापी वीर नें रे, त्यांरी पिण एकंत करवा घात रे ।
 तिण जाण्यो जमाउ सासण मांहरो रे, एहवो गोसालो दुष्ट कुपात रे ॥ २५ ॥
 तिल रो, प्रश्न पूछ्यां भगवंते कहा रे, सुगली माहें तिल बताया सात रे ।
 जब वीर ने भूठा घालण पापीयें रे, तिल उखण नें कीधी घात रे ॥ २६ ॥
 तेजू लेस्या सीखाइ गोसाला भणी रे, तिण लेस्या सूं कीधी साधा री घात रे ।
 वले लोही ठाणे कीधी भगवंत नें रे, इसडा कांम कीया पापी साख्यात रे ॥ २७ ॥
 गोसाला पापी नें वीर बचावीयो रे, तो बधीयो भरत में घणो मिथ्यात रे ।
 घणा जीवां नें पापी बोवीया रे, उंधी सरघा हीया में घात रे ॥ २८ ॥
 कूड कपट करे ने पापीयें रे, भूठोइ सासण दीयो थाप रे ।
 अणहूतो तीर्थकर वाज्यो लोक में रे, वीर नो सासण दीयो उथाप रे ॥ २९ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तठा पछे रे, घणा जीवां रें हुवो बिगाड रे ।
 ओ पापी धाडायत हूवो धर्म रो रे, इण गुण तो न कीधो मूल लिंगार रे ॥ ३० ॥
 गोसाला पापीडो बचीयां पछें रे, तिण कीधा पापीडे अनेक अकाज रे ।
 तिण दुष्टी नें बचायां धर्म किहा थकी रे, विकलां नें मूल न आवें लाज रे ॥ ३१ ॥
 गोसाला नें बचायां धर्म कहे तके रे, गोसाला रा केडायत जाण रे ।
 त्यां धर्म न जाण्यो श्री जिणराज रो रे, यूं ही बूडें अग्यांनी कर कर तांण रे ॥ ३२ ॥
 जो धर्म होसी गोसाला ने बचावीयां रे, तो छ ही काय बचायां होसी धर्म रे ।
 जो उवे जीव बचायां धर्म गिणें नहीं रे, तो विकलां री सरघा रो निकल्यो भर्म रे ॥ ३३ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो जिण विधे रे, श्रावक ने तिण विध बचावें नाहि रे ।
 कहे छें तिण हीज विध करे नहीं रे, तो धूर छें त्यांरी सरघा माहि रे ॥ ३४ ॥

पेट दुखे छें सो श्रावकां तणो रे, जूदा हुवे छे जीव नें काय रे ।
 साव पधाख्या छे तिण अचसरे रे, त्यारें हाय फेरें तो साता थाय रे ॥ ३५ ॥
 लवद्वारी तो साव पधाख्या देख नें रे, गृहस्थ बोल्या छे इम वाय रे ।
 हाय फेरो त्यांरा पेट उपरे रे, नहीं फेरो तो श्रावक जीवां जाय रे ॥ ३६ ॥
 जब कहे म्हाने तो हाथ न फेरणा रे, अँ मरो भावें दुखी घणा हुवो तांम रे ।
 मरणो जीवणो मूल न वाछे तेहनो रे, म्हारें गृहस्थ सूं काई कांम रे ॥ ३७ ॥
 तो गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे कही छो निकेवल धर्म रे ।
 तो श्रावक मरतां ने नहीं बचावीयां रे, त्यांरी सरघा रो त्याहीज काढ्यो भर्म रे ॥ ३८ ॥
 श्रावक ने बचायां धर्म गिणे नहीं रे, गोसाला ने बचायां गिणें धर्म रे ।
 ते बवेक विकल छे सुघ बुझ वाहिरा रे, उंधी सरघा सू बांवे पाप कर्म रे ॥ ३९ ॥
 गोसाला पापी दुष्टी रे कारणे रे, लवद फोडी छे श्री जगनाथ रे ।
 तो सो श्रावक जीवा मरतां देख नें रे, थे काय न फेरो त्यारे हाथ रे ॥ ४० ॥
 धर्म कहे गोसाला ने बचावीयां रे, तो पोते कांइ छोखी धर्म री रीत रे ।
 सो श्रावक मरता ने बचावे नहीं रे, त्यां विकलां री विकल करे परतीत रे ॥ ४१ ॥
 गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे धर्म कहे साख्यात रे ।
 सो श्रावक मरता ने नहीं बचावीया रे, त्यां विकलां री बिगडी सरघा बात रे ॥ ४२ ॥
 श्रावक आखड ने पड मरतो हुवे रे, जिण ने पडता भेले राखे नाहि रे ।
 गोसाला ने बचायां में कहे छे धर्म रे, ओ पिण अंधारो त्यारे माहि रे ॥ ४३ ॥
 ग्यान वरसन ने देस चारित श्रावक ममे रे, गोसालो तो एकत अधर्मी जाण रे ।
 तिणने बचाया धर्म किहा थकी रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ अयाण रे ॥ ४४ ॥
 गोसाला ने बचाया रो कहे धर्म छे रे, श्रावक ने बचायां कहे पाप रे ।
 एहवो अधारो छे विकला तणे रे, उंधी सरघा री कर राखी छें थाप रे ॥ ४५ ॥
 वारे वरस नें तेरे पख ममे रे, छदमस्थ रह्या छे श्री भगवान रे ।
 तिणमे एक गोसाला ने बचावीयो रे, किणने न बचायां श्री विरघमान रे ॥ ४६ ॥
 गोसाला दुष्टी नें बचावीया रे, जो धर्म कठेइ जाणे सांम रे ।
 तो दौनुइ साव बचावत आपणा रे, बले रात दिन करता ओहीज कांम रे ॥ ४७ ॥
 गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, तिण मांहे धर्म जाणे जिणराय रे ।
 दोय साव मरता नहीं राख्या आपणा रे, ओ पिण किण विघ मिलसी न्याय रे ॥ ४८ ॥
 अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीघा भगवंत हाथ रे ।
 धर्म हुवे तो भगवत आघो नहीं काढता रे, निरुचेइ तिरण तारण जगनाथ रे ॥ ४९ ॥
 अंत चोवीसी तो आगें हुइ रे, हिबडां तो रिषमादिक चोवीस रे ।
 त्यां ताख्या भव जीवां ने समभाय ने रे, पिण मरता न राख्या श्री जगदीस रे ॥ ५० ॥

एक गोसालो वीर बचावीयो रे, ते तो निश्चेइ होणहार रे।
 मोह राग आयो भगवांन ने रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ गिवार रे ॥ ५१ ॥
 संवत अठारे तेपने समें रे, आसाड विद इग्यारस मंगलवार रे।
 गोसाला कुपातर नें ओलखावीयो रे, जोड कीषी छें माढा गाव मभार रे ॥ ५२ ॥



ढाल : ११

दुहा

दोय उपगार श्री जिण भाषीया, त्यांरो बुधवंत करजो विचार ।
 तिणमे एक उपगार छे मोष रो, बीजो संसार नो उपगार ॥ १ ॥
 उपगार करें कोइ मोष रो, तिणरी जिण आगनां दे आप ।
 उपगार करें ससार नों, तिहां आप रहे चुपचाप ॥ २ ॥
 उपगार करे कोइ मोष रो, तिणने निश्चेइ धर्म साख्यात ।
 उपगार करे ससार नों, तिणमें धर्म नही तिलमात ॥ ३ ॥
 दोनूं उपगार छे जुवा जुवा, ते कठेंइ न खाअें मेल ।
 पिण मिश्र पाषड्यां परूप नें, कर दीयो मेल समेल ॥ ४ ॥
 कुण कुण उपगार छे मोष रो, कुण कुण ससार ना उपगार ।
 त्यांरा भाव भेद परगट कर्हं, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगना में]

ग्यान दरसण चारित ने बले तप, या च्यारां रो कोइ करे उपगार ।
 तिणने निश्चेइ निरजरा धर्म कह्यो जिण, बले श्री जिण आगना छे श्रीकार ।
 ओ तो उपगार निश्चेइ मुगत रो ॥ १ ॥
 ग्यान दरसण चारित ने तप, या च्यारा बिना कोइ करे उपगार ।
 तिणने निश्चेइ धर्म नही जिण भाष्यो, बले जिण आगना पिण नही छे लिगार ।
 ओ तो उपगार संसार तणो छें# ॥ २ ॥
 ससार तणो उपगार करे छे, तिणने निश्चेइ ससार बधतो जांणो ।
 मोष तणो उपगार करे छे, तिणने निश्चेइ नेडी दीसैं निरवाणो ॥ ३ ॥
 कोइ दलदरी जीव ने धनवत कर दे, नव जात रो परिग्रहो देड भर पूर ।
 बले विवय प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दलदर कर दे दूर ॥ ओ० ४ ॥
 छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारी साता पूछी ने साता उपजावे ।
 त्यारी करे वीयावच विवध प्रकारे, तिणने तीथकर देव तो नही सरावे ॥ ५ ॥
 शुहस्य री साता पूछ्यां ने वीयावच कीवां, तिण सूं साव तो होय जाअें अणान्कारी ।
 तो त्यारी साता पूछ्यां ने वीयावच कीयां में, जिण आगना पिण नही छे लिगारी ॥ ६ ॥

यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साता पृथ्यां तो साध नें पाप लागे छें,
 पिण मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 कोइ मरता जीव नें जीवां बचावें,
 बले अनेक उपाय करें नें तिणनें,
 कोइ मरता जीव नें सूंस करावे,
 ग्यांन ध्यांन माहें परिणाम चढावें,
 श्रावक नों खाणों पीणो छे सर्व इविरत में,
 बले नव ही जात रो परिग्रहो इविरत में,
 श्रावक नों खाणो पीणों छे सर्व इविरत में,
 बले नव ही जात रों परिग्रहो इविरत में,
 कोइ लाय सूं बलतां नें काढ बचायों,
 तलाब माहे डूबा नें बारें काढें,
 जनम मरण री लाय थी बारें काढें,
 नरकादिक नीची गति माहे पडतां नें राखें,
 किणरें लाय लागी घर बले छें,
 कोइ लाय बुझाय त्यांनें बारें काढें,
 किणरें तिसणा लाय लागी घर भितर,
 उपदेस देइ तिणरी लाय बुझावें,
 कोइ टाबर पाले नें मोटा करे छें,
 बले मोटें मंडाण करे परणावें,
 कोइ बेटा नें रुडी रीत समझाप,
 काम भोग अस्त्रीयादिक खावों नें पीवों,
 मात पिता री सेवा करे दिन रात,
 बले कावड कांवे लीयां फिरें त्यांरी,
 कोइ मात पिता नें रुडी रीतें,
 ग्यांन दरसण चारित त्यांनें पमावें,
 जिणरो खाणो पीणो गेहणो इविरत में,
 बले मांगे जिको तिणनें धन धान आपें,
 जिणरों खाणो पीणों गेहणो इविरत मे छें,
 तिणरें ग्यांनादिक गुण घट में घाले,
 किणरा वाला काढे किणरा कीडा काढे,
 कानसिलाया बुगादिक काढे,

तो साता कीचां में धर्म किहां थी होवें ।
 ते श्री जिण आगनां सगहों न जोवें ॥ ७ ॥
 भ्रमळ भ्रमटा करे ओषध देइ तांम ।
 मरतों राख्यों साजो कीयो तमांम ॥ ८ ॥
 च्याळूं सरणा देइ नें करावें संथारों ।
 न्यातीलां सूं देवें मोह उतारो ॥ ९ ॥
 ते सेवें तो सावद्य जोग व्यापारो ।
 तिणनें सेवारें छें कोइ वाहवारो ॥ १० ॥
 तिणरों त्याग करावें चढाय वेंरगों ।
 ते छोडें छोडावे त्यारे सिर भागो ॥ ११ ॥
 बले कूअें पडता नें भाल बचायों ।
 बले उंचा थी पडतां नें भाले लीयो ताहों ॥ १२ ॥
 भव कूआ माहि थी काढें बारें ।
 संसार समुद्र थी बारें काढ उघारे ॥ १३ ॥
 तिणमें नान्हा मोटा जीव बलें लाय माहि ।
 घणां रें साता कीची लाय बुझाई ॥ १४ ॥
 ग्यांनादिक गुण बलें तिण मांय ।
 रूम रूम में साता दीधी वपराय ॥ १५ ॥
 आछी आछी वस्त तिणनें खवाय ।
 बले धन माल देवें कमाय कमाय ॥ १६ ॥
 धन माल सगलोइ देवें छोडाय ।
 भली भांत सूं त्याग करावे ताय ॥ १७ ॥
 बले मन मान्यां भोजन त्याने खवावें ।
 बले बेहूं टकां रो सिनान करावे ॥ १८ ॥
 भिन भिन कर नें धर्म सुणावे ।
 काम भोग शब्दादिक सर्व छोडावें ॥ १९ ॥
 तिणनें मन माने ज्यूं खवावे पीवावे ।
 बले विवध पर्णें तिणनें साता उपजावें ॥ २० ॥
 तिणनें उपदेस दइ ने परहो छोडावे ।
 तिणरी तिसणा लाय ने परी मिटावें ॥ २१ ॥
 बले लटा जुंजादिक काढें छे ताहि ।
 घणी साता उपजावें शरीर रें माहि ॥ २२ ॥

क्रिणरे बाला कीडा ने लटां जूंआदिक,
 तिणने वारे काढण रा त्याग करावे,
 गृहस्थ भूलो उज्जड वन में,
 तिणने मारग बताय ने घरे पोहचावे,
 संसार रूपणी अटवी में भूला ने,
 सावध भार ने अलगो मेलाए,
 नाग नागणी हुता बलता लकडा में,
 अगन मे बलता ने राह्या जीवता,
 पारसनाथ जी घर छोडे काउसग कीर्षो जब,
 जब पदमावती हेठे कीर्षो सिंघासण,
 नाग नागणी ने नोकार सुणाए,
 ते सुभ परिणांमां सूं मरने हूआ,
 सृग्रीव सूं उपगार कीर्षो राम लछमण,
 सीता री खबर आणे रावण ने मरायो,
 कोइ दुधी जीव जूं ने मारतो थो,
 ते जू रो जीव मिनष हुवों जब,
 घणी रा मूढा आगे सेवग मरे ने,
 जब घणी तूठे थको रिजक रोटी दे,
 दोय इदर आयां कोणक री भीडी,
 एक कोड असी लाख मिनषां ने मारें,
 एकीका जीव ने अनंती वार बचाया,
 आमां साह्यां उपगार संसार नां कीर्षां,
 हांती नेहतादिक देवे आमां साह्यां,
 अथवा कोइक आघाइ पिण देवे,
 संसार नों उपगार करे जिण सेती,
 ए तो उपगार एकीका जीर्षां सूं,
 संसार नां उपगार सव ही फीका,
 संसार नां उपगार फीका छें,
 संसार तणा उपगार कीर्षां में,
 ते श्री जिण मारग ओल्ल्खीयां विण,
 जितला उपगार संसार तणा छे,
 साध तो त्यांनं कदे न सरावे,

शरीर में उपनां जीव अनेक ।
 कहे सरीर वारे काढणो नही छे एक ॥ २३ ॥
 अटवी ने वले उजाड जावे ।
 वले थाको हुवें तो काधें बेसावे ॥ २४ ॥
 ग्यांनादिक सुघ मारग बतावे ।
 सुखे सुखे सिवपुर मे पोहचावे ॥ २५ ॥
 त्याने पारसनाथ जी काढ्या कहे छे वार ।
 पांणी ने अगनादिक रा जीवां ने मार ॥ २६ ॥
 कमठ उपसर्ग कर वरपायो पांणी ।
 घर्णिन्द्र छत्र कीर्षो सिर आंणी ॥ २७ ॥
 च्याखूं सरणा ने सूस दराया जांणी ।
 घर्णिन्द्र ने पदमावती रांणी ॥ २८ ॥
 जब सुग्रीव हुवो त्यारो सखाइ ।
 तिण पाछो उपगार कीर्षो मीड आइ ॥ २९ ॥
 तिणने वरजे ने जूं ने वचाइ ।
 इणरो कजीयो इण पिण दीयो मिटाइ ॥ ३० ॥
 घणी ने जीवतो कुसले खेमें काढे ।
 इणरो इहलोक रो काम सिराडें चाढे ॥ ३१ ॥
 कोणक रे साता कर दीधी तांम ।
 कोणक रो सुघान्खो काम ॥ ३२ ॥
 त्यां पिण इणनं अनती वार बचायो ।
 त्यांसू तो जीव री गरज सरीनही कायो ॥ ३३ ॥
 लाडू खोपरादिक देवे आमां साह्यां ।
 इत्यादिक छे अनेक संसार नां कामा ॥ ३४ ॥
 कदा ते पिण पाछों करे उपगार ।
 कीर्षा छें अनंत अनंती वार ।
 आ सरघा श्री जिणवर भापी ॥ ३५ ॥
 ते तो थोडा मांहे विलें होय जावें ।
 त्यांसू मुगति तणा सुख कोयन पावें ॥ आ० ३६ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती घर्म वतावे ।
 मन मानें ज्यूं गालां रा गोला चलवे ॥ ३७ ॥
 जे जे करे ते मोह वस जांणो ।
 संसारी जीव तिणरा करसी वखांणों ॥ ३८ ॥

संसार तगा उगार कीया में,
 संसार तगा उगार कीया में,
 किण ही जीव नें खर कर नें बचायो,
 जो धर्म होसी तो बिया नें धर्म होसी,
 बचावन बाचा बिचें तो उगारवन बाचों,
 यारो निरणो कीया विण धर्म कहें छे,
 बचावन बाचों नें उगारवन बाचों,
 एह्वा उगार करे जाना नाह्यां,
 जीव नें जीवां बचलें तिग नूं,
 जो पर नव नें क आय निरें तो,
 जीव नें जीव नाहें छे तिग नूं,
 ने पर नव में उ आय निरें तो,
 निजी सूं निजीगों बचीयो जावें,
 छे तो राग बेष बना रा चाचा,
 कोइ जगुकरा कांजी घर नंडावे,
 ओ प्रवह राग नें बेष उगारो,
 कोइ तो पैला रा काम भोग बवारें,
 ओ पिग राग नें बेष उगारो,
 कोइ पैला रां बन गनीयो बतवे,
 कोइ काम नें तोटो लोकां नें बतवे,
 कोइ बेंदगों करे करे ने कोकां रां,
 ओ उगार कोकां सूं कीकां,
 कहि कहि नें किरांएक कहूं,
 रघां वरुग चाग्नि नें तप दिनां,
 मंत्र ना मंत्र गीम कहुया जिण,
 ओ ब्दीसुंइ केर उगार कुत रा,
 संसार नें मोष तगा उगार,
 तिग निव्याती नें बरु उहें नहीं बूदी,
 संसार नें मोष रो नाग जोखदावग,
 मंडन कठारे नें वरु चोपनें,

जिग धर्म रो अंम नहीं छे निगार ।
 धर्म कहें ते तो नूड गिवार ॥ ३६ ॥
 किण ही जीव उगारय नें कीयो मोटों ।
 जो तोटों होसी तो बिया नें तोटों ॥ ४० ॥
 संभ्रत चीन उगारो मोटों ।
 यारो तो नर निरिहल होटों ॥ ४१ ॥
 ओ तो बोनु संसार तगा उगारो ।
 तिगन केवली रो धर्म नहीं छे निगारो ॥ ४२ ॥
 अंध जाबे तिगयें राग सनेह ।
 देहत पांग जागे तिग सूं नेह ॥ ४३ ॥
 अंध जाबे तिग नूं बेष बरोख ।
 देहत पांग जागे तिग नूं बेष ॥ ४४ ॥
 बेंरी सूं बेंरीगों बचीयो जावें ।
 ते श्री जिग धर्म नाहें नहीं जावें ॥ ४५ ॥
 कोइ मंडता घर नें केवें संगय ।
 ते काणें ल्या दीनुं बचीया जाय ॥ ४६ ॥
 कोइ दान भोग री दे अंतगय ।
 ते काणें ल्या दीनुं बचीया जाय ॥ ४७ ॥
 बले अस्त्रीयांदिग निग गनीया बतवें ।
 तिग सूं काणें ल्या राग बचीयो जावें ॥ ४८ ॥
 नेग प्रनाय नें जीवां बचावें ।
 काणें ल्या राग बचीयो जावें ॥ ४९ ॥
 संसार तगा उगार अनेक ।
 मोष तगां उगार नहीं छे एक ॥ ५० ॥
 निरजरा तगा नेड कहुया छे वार ।
 ओर मोष सें उगार नहीं छे निगार ॥ ५१ ॥
 समधिष्टि हूवे ते न्कार न्यार जाणें ।
 तिग सूं मोह कलें कम उंशी ताणें ॥ ५२ ॥
 जोइ कीबी छें खेरवा नहर मत्तार ।
 जानोज बुद्धि दीज नें मुकरवार ॥ ५३ ॥

ढाल : १२

ढुहा

चोवीसमां जिणवर हुआ, महावीर विल्यात ।
 त्यांरी पहली बांणी निरफल गई, ते हुवो अछेरो इचरज वात ॥ १ ॥
 जंभीक गाम ने वाहिरे, सांम नांम करपणी रे खेत ।
 तिहां साल नांमा विरख थो, गहर गभीर पांन समेत ॥ २ ॥
 तिण साल विरख हेठें आवीया, भगवंत श्री विरघमान ।
 वेसाख सुदि दसम दिने, उपनो केवल ग्यांन ॥ ३ ॥
 केवल महोछव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक ।
 पिण मिनपा ने ठीक पडी नही, तिणसूं मिनप न आयो एक ॥ ४ ॥
 देवता आमे वाणी वागरी, थित साचववा कांम ।
 कोड साच थावक हुवो नही, तिणसूं वांणी निरफल गईआम ॥ ५ ॥
 जो धन थकी धर्म नीपजे, तो देवता पिण धर्म करंत ।
 वीर बांणी सफली करे, मन माहे पिण हरष धरंत ॥ ६ ॥
 वरत पचखाण न हुवे देवता थकी, धन सूं पिण धर्म न थाय ।
 तिण सूं वीर बांणी निरफल गई, तिणरो न्याय सुणों चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अशुकम्या न आशिषे]

जिण धर्म हुवे सोनइयां दीयां, तो देवता देता हाथो हाथ जी ।
 पुरत मनोरथ मन तणा, वीर बांणी निरफल न गमात जी ।
 भव करजों परख जिण धर्म री* ॥ १ ॥
 रतन हीरा ने माणक पना, मन माने ज्यू देवता देत जी ।
 वीर री वाणी सफल करे, देवता पिण लाहो लेत जी ॥ भ० २ ॥
 धन दीयां हुवे धर्म जिण भाखीयों, देवता दान दे दग चाल जी ।
 यूं कीयां वीर बांणी सफल हुवे, तो अछेरो नही हुवे तिण काल जी ॥ ३ ॥
 धन धानादिक लोकां ने दीयां, ए तो निश्चेइ सावध दान जी ।
 तिणमे धर्म नही जिण राज रो, ते भाष्यो छे श्री भगवान जी ॥ ४ ॥
 जो जीव बचायां जिण धर्म हुवे, ओं तो देवता रे भासान जी ।
 अनंता जीवां ने बचाय ने बांणी सफल करता देवां न जी ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

असंख्याता समदिष्टि देवता, एकीको वचावत अन्त जी ।
 जो धर्म हूवें तो आशो न कावता, वीर नौं बांगी सफल करंत जी ॥ ६ ॥
 साध श्रावक रौं धर्म छे विरत नें, जीव हणवा रा करे पचखाण जी ।
 ए धर्म देवता थी हूवें नहीं, तिगसूं निरफल गई वीर बाण जी ॥ ७ ॥
 जीवां नें जीवां वचावीयां हूवें, संसार तपों उपहार जी ।
 यूं तो सरुच न हूवें बांगी वीर नौं, धर्म रो नहीं असं लिंगार जी ॥ ८ ॥
 असंजती नें जीवां वचावीयां, बले असंजती नें वीयां दांन जी ।
 इन क्रीयां वीर बांगी सरुल हूवें, ओ तो देवतां रे पिण आतांन जी ॥ ९ ॥
 कुमातर जीवां नें वचावीयां, कुमातर नें वीवां दांन जी ।
 ओ सावद्य किरतव संसार नौं, भाप्यो श्री भगवान जी ॥ १० ॥
 उत्तरावेन अजावीतनें कहौं, मोष नां मारु भाप्या च्यार जी ।
 बाकी सर्व कांसा संसार नां, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ११ ॥
 जो धर्म हूवें सावद्य दांन में, असंजती नें वचायां हूवें धर्म जी ।
 तो निश्चैइ समदिष्टी देवता, ओ धर्म करे काटे कर्म जी ॥ १२ ॥
 कर्म कटें इण सावद्य धर्म नूं, एहवा सावद्य कांसा अनेक जी ।
 ते तो थोडा सा परगट कहूं, ते मुणजौं बाण वके जी ॥ १३ ॥
 मछ गलगल ला रही, सारा दीप समुद्रां भांय जी ।
 मोटो मछ छोटा नें मखें, उगसूं मोटौं उणनेंइ खाय जी ॥ १४ ॥
 जो उद्यम करे एक देवता, तो एक दिन में वचावें अनेक जी ।
 धर्म हूवें तो आशौं काटें नहीं, ओ तो छे देवता नें वके जी ॥ १५ ॥
 जीव वचायां अन्य दांन हूवें, तो अभय दांन प्रणां नें वेत जी ।
 धर्म जांघे जीव वचावीयां, देव भव में पिण लाहो लेउ जी ॥ १६ ॥
 मछला वचावें एक दिन मने, लाखां कोडाइ निगिया न जाय जी ।
 इणमें धर्म हूवें जिण भापीयां, तो देवता देवें मछला छुडाय जी ॥ १७ ॥
 मच्छ आगा सूं मछ छोडावीयां, उजरे परती जांघे वंतराय जी ।
 तो अचित्त मछ उजजाय नें, उगलें पिण देवे खवाय जी ॥ १८ ॥
 जो धर्म हूवें मछला नें वचावीयां, मछला नें पोप्यां हूवें धर्म जी ।
 एहवा धर्म तो हूवें देवता थकी, यूं कर कर काटें कर्म जी ॥ १९ ॥
 जो धर्म हूवें तो देवता, असंख्याता मछला ने वचाय जी ।
 असंख्याता पोपें माछला, बाल्त पिण न करे ताय जी ॥ २० ॥
 पृथवी पांगी तेउ बाउ भमे, जीव कहा छे असंख्यात जी ।
 वनसपती में अन्त छे, यांनै पिण देव वचात जी ॥ २१ ॥

तीन विकलेद्री मिनष तिर्यच ने, बचायां धर्म जाणें जो देव जी ।
 तो त्यानेइ बचावण री खप करें, समदिष्टी देवता स्वमेव जी ॥ २२ ॥
 नाहर चित्तादिक दुष्ट जीव छें, करें गायादिक री घात जी ।
 गायादिक ने तो खावा दें नही, त्यांनै पिन देव अचित्त खवात जी ॥ २३ ॥
 जीव जीव तणो भक्षण करें, त्यांनै बचावें अचित्त खवाय जी ।
 जो यूं कीयां में धर्म नीपजे, तो देवता करे ओहीज उपाय जी ॥ २४ ॥
 अढाइ दीप मिनषां तणे, घर घर आरंभ करें जाण जी ।
 ते तो कतल करे जीवां तणी, छ ही काय तणो घमसांण जी ॥ २५ ॥
 नित एकीका घर मे जूजूओ, आरंभ हुवें दिन रात जी ।
 छेदन भेदन करे निलोतरी, करें अनंत जीवां री घात जी ॥ २६ ॥
 दलणो पीसणो नें पोवणो, घर घर चूहलो धुकावे तास जी ।
 आवट कूटों करें छ काय नों, करें अनंत जीवां रो विणास जी ॥ २७ ॥
 एकीका समदिष्टी देवता, त्यारी शक्त घणी छे अतंत जी ।
 अढी दीप रें आरभ भेट ने, बचावें जीव अनंत जी ॥ २८ ॥
 अढी दीप तणा मिनषां भणी, भूखा तिरषा न राखे कोय जी ।
 अचित्त अन पाणी नीपजाय ने, सगला ने करे तिरपत सोय जी ॥ २९ ॥
 विवध प्रकार नां भोजन करे, विवध प्रकार नां पकवान जी ।
 खादिम सादिम विवध प्रकार नां, विवध प्रकारे सीतल पांन जी ॥ ३० ॥
 साग व्यंजण विवध प्रकार नां, फल नीलोती विवध प्रकार जी ।
 मनसा भोजन सगला मिनषां भणी, करावें देवता वार वार जी ॥ ३१ ॥
 ठांम ठांम अचित्त पाणी तणा, कूड भर भर राखे तांम जी ।
 वले भोजन विवध प्रकार नां, त्यांरा ढिगला करे ठांम ठांम जी ॥ ३२ ॥
 न्यारुइ आहार अचित्त नीपाय नें, दीघां हुवें धर्म ने पुन तांम जी ।
 वले धर्म हुवे जीव बचावीयां, तो देवता करें ओहीज कांम जी ॥ ३३ ॥
 देवता खाणों देवे मिनषां भणी, तो खेती रो आरंभ टल जाय जी ।
 वले गेंहणा कपडा देवें देवता, तो घणा जीव मरे नही ताय जी ॥ ३४ ॥
 घर हाट हवेली मेंहलायतां, इत्यादिक कमठाणा ताय जी ।
 अे पिन निपजाय देवे देवता, तो अनंता जीव मरता रहि जाय जी ॥ ३५ ॥
 ते छावणा लीपणा ना पडे, ते तो सुदर ने सोभाय मांन जी ।
 ते पिन दिसें घणा रलीयांमणा, देवता ने करता आसान जी ॥ ३६ ॥
 एहवी करणी कीयां धर्म नीपजे, तो देवता आघो नही काढंत जी ।
 आ करणी करे कर्म काट ने, कांम सिराडे देता चाढंत जी ॥ ३७ ॥

दांन दीयां नें जीव बचावीयां, जो कर्म तणों हुवें सोख जी ।
 तो दांन दे जीव बचाय नें, देवता पिण जावे मोष जी ॥ ३८ ॥
 अनेरा नें दीयां पुन नीपजे, देवता रे हुवें पुन रा थाट जी ।
 वले धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो देव मोष जावें कर्म काट जी ॥ ३९ ॥
 असंजती जीवां रो जीवणों, ते सावद्य जीतव साख्यात जी ।
 तिणनें देवे ते सावद्य दांन छें, तिणमें धर्म नहीं असमात जी ॥ ४० ॥
 धर्म हुवें तो सगला मिनषां तणे, रतनां जड्या कर दे मेहल जी ।
 ते पिण थोडा में नीपजाय दें, देवता नें करता सेंहल जी ॥ ४१ ॥
 खाणो पीणो गेंहणों कपडादिक, गृहस्थ तणा सारा काम भोग जी ।
 त्यांरी करें वधोतर तेहनें, बंधें पाप कर्म नो संजोग जी ॥ ४२ ॥
 काम नें भोग सारा गृहस्थ नां, दुख नें दुख री छे खान जी ।
 त्यांनें किंपाक फल री ओपमां, उतरावेन में कहीं भगवानं जी ॥ ४३ ॥
 त्यांनें भोगवावें धर्म जाण नें, तिणरे बंधे छे पाप कर्म जी ।
 तिणमें समदिष्टी देवता, असमात न जाणें धर्म जी ॥ ४४ ॥
 केइ अग्यानी इम कहे, श्रावक नें पोष्यां छें धर्म जी ।
 लाडू खवाए दया पलावीयां, तिणरा कट जाए पाप कर्म जी ॥ ४५ ॥
 लाडूआ साटें उपवास बेला करे, तिणरा जीतव नें छे धिकार जी ।
 तिणनें पोषें छें लाडू मोल लें, तिणमें धर्म नहीं छें लिंगार जी ॥ ४६ ॥
 लाडूआ साटें पोषा करे, तिणमें जिण भाष्यों नही धर्म जी ।
 ते तो इह लोक रे अरथे करे, तिणरो मूरख न जाणें मर्म जी ॥ ४७ ॥
 धर्म हुवें तो समदिष्टी देवता, अचित्त लाडूआदिक नीपजाय जी ।
 वले पाणी पिण अचित्त नीपजाय नें, श्रावकां नें जिमावें ताहि जी ॥ ४८ ॥
 जाव जीव सगला श्रावकां भणी, लाडूआदिक अचित्त खवाय जी ।
 अढी दीप तणा श्रावकां भणी, दया पलावें पोषा कराय जी ॥ ४९ ॥
 त्यांने आरम्भ करवा दें नही, त्यांनें कल्पे ते देवता देत जी ।
 धर्म हुवे तो वाघो नहीं काढता, ओ पिण देवता लाहो लेत जी ॥ ५० ॥
 श्रावकां नें वस्त दें चावती, उणायत राखें नही कांय जी ।
 धर्म हुवे तो वाघों काढें नही, त्यारें कुमीय न दीसे कांय जी ॥ ५१ ॥
 जो धर्म हुवें श्रावक ने पोषीयां, तो देवता पिण करें ओ धर्म जी ।
 असंख्याता श्रावकां नें पोष नें, काटता निज पाप कर्म जी ॥ ६२ ॥
 असंख्याता दीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छें तांम जी ।
 त्यांनें पोषें समदिष्टी देवता, जो जाणें धर्म नो काम जी ॥ ५३ ॥

श्रावक रो खाणो पीणों सरवथा, इविरत में कहा छे आम जी ।
 तिण सूं समदिथी देवता, एहवो किम करसी काम जी ॥ ५४ ॥
 सकेद नें इसांग इंद्र छें, तिरछा लोक तणा सिरदार जी ।
 हाल हुकम छें सगलां उपरें, असंख्याता दीप समुद्र मभार जी ॥ ५५ ॥
 मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
 जो घर्म हुवें जीव बचावीयां, तो इंद्र थोडा में देवें मिटाय जी ॥ ५६ ॥
 भगवंत कहाँ हुवें इंद्र नें, जीव बचायां घर्म होय जी ।
 तो दोनूं इंद्र जीव बचावता, आलस नही करता कोय जी ॥ ५७ ॥
 मछ आगा सूं मछ छोडाय नें, मछां नें देता जीवां बचाय जी ।
 त्याने पिण भूखा नही राखता, अचित्त मछ कर देता खवाय जी ॥ ५८ ॥
 सूं कीयां जिण घर्म नीपजें, तो भगवंत सीखावत आप जी ।
 बले आगना देता तेहनें, बले चोडें करता आहीज थाप जी ॥ ५९ ॥
 जीव ने जीवां बचावीयां, ओ तो संसार नों उपगार जी ।
 तठें जिण आगना जात्रक नहीं, घर्म पिण नहीं छे लिंगार जी ॥ ६० ॥
 छ काय नां सस्त्र बचावीयां, छ काय रो बेरी होय जी ।
 त्यारो जीतब पिण सावद्य कहो, त्याने बचायां घर्म न होय जी ॥ ६१ ॥
 असंजती रा जीवणां मभे, घर्म नही उंसमात जी ।
 बले दान देवें छे तेहनें, ते पिण सावद्य साख्यात जी ॥ ६२ ॥
 दान देवों नें जीव बचायवों, यो तो देवता नें आसांन जी ।
 सूं कीया घर्म हुवे तो देवता, जाबें पांचमी गति परबान जी ॥ ६३ ॥
 जीव बचावणो नें सावद्य दान नें, ओलखायो पुर सहर मभार जी ।
 सवत अठारें वरस सातवनें, काति विद चोदस नें सुकरवार जी ॥ ६४ ॥



रत्न : ३१

विरत इविरत री चौपई

ढाल : १

[चतुर विचार करी ने देखो]

साध नें श्रावक रतना री माला, एक मोटी दूजी नांनी रे ।
गुण गुंथ्या च्याहं तीरथ नां, इविरत रह गइ कांनी रे ।
चतुर विचार करी नें देखो ॥ १ ॥

समणोवासय पडिमा आदर नें, आपणी न्याति में लीघो रे ।
तिणें च्याहं आहार वेहराय, परित संसार न कीघो रे ॥ २ ॥

ए तो गोचरी आपणे छांदे, जोवो सिघंत संभाली रे ।
दासार ने लेवाल वेहू मे, जिण आग्या किण पाली रे ॥ ३ ॥

श्रावक नो खांगो पीणो नें गेंहणो, इविरत मांहे घाल्यो रे ।
उवाइ सुयगडा अंग मांहे, पाठ उघाडो चाल्यो रे ॥ ४ ॥

सेवायां इविरत कर्मज लागें, ए तो सरघा सुंघी रे ।
कर्म तणें वस धर्म परुषें, अकल तिणां री उंची रे ॥ ५ ॥

करण जोग विगटावे अग्यांनी, लाग रह्या मत भूठें रे ।
न्याय करे समभ्रातें तिण सुं, क्रोध करे लडवा उठें रे ॥ ६ ॥

खायां पाप खवायां धर्म, ए अन्य तीर्थी री वायी रे ।
विरत इविरत री खवर न कांई, भोलां ने दे भरमायो रे ॥ ७ ॥

कहें ममता उत्तरीया धन सुं, दे उपजावे साता रे ।
इसडो धर्म ब्रतावें लोकां मे, जके मोह मिथ्यात मे राता रे ॥ ८ ॥

द्रव्ये साता नें भावे साता, मूरख भेद न जाणें रे ।
सावध साता जिण धर्म बारें, ग्यांनी विण कुण पिछाणें रे ॥ ९ ॥

कहे श्रावक रतनां रो भाजन, तिण पोष्यां नहीं तोटी रे ।
च्याहं आहार वेहराय ने हर्षें, तिण ने लामज मोटी रे ।
कुगुर तणे उपदेस म भूलो ॥ १० ॥

ए तो सरघा अनारज केरी, लोक रीभावण लाग्गा रे ।
जे कोइ साध कहे तो उपरा, पाचूंइ महाव्रत भाग्गा रे ॥ ११ ॥

रतनां रो भाजन ब्रतां करनें, गुण आदरीया हूवो रे ।
खावो पीवो लेवो ने देवो, ए तो भारग जूवो रे ॥ १२ ॥

श्रमण निर्ग्रथ नें दान रा दाता, बारमा व्रत में आग्या रे ।
परित संसार कीघो सुघ देने, ज्यानें श्री मुख वीर वखाण्या रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सामायक संवर पोपां में, सावां नें हृषं वेहरावें रे ।
 सो थावक तेला रे पारणें, त्यानि क्यूं न जीमावें रे ॥ १४ ॥
 आ करणी जिण आग्या वारें, व्रतां माहें न आवें रे ।
 सावद्य जोग ग त्याग कीया तिण, थावक केम जीमावें रे ॥ १५ ॥
 थावक नां च्यार विन्नामा तिण में, छोड्यो ते माठो जांणी रे ।
 सावद्य भार नें अन्नो मेल्यो, जिण आग्या आगेवांणी रे ॥ १६ ॥
 बार बार दांन नें प्रससे, मेद न जाणें मिथ्यानी रे ।
 सुयगढा अंग अवेन इयारमें, कह्यो छकाय रो घाती रे ॥ १७ ॥
 दांनमात्रा मांडी प्रदेसी, मोप रो हेत न जांण्यो रे ।
 च्याहं भाग राज रा कीवा, सावां नहीं बखांण्यो रे ॥ १८ ॥
 तीन भागां में पाप कहो थें, एकण री कांय तांणी रे ।
 केसी कुमार तो मुनज साजी, च्याहं वरावर रा जांणी रे ॥ १९ ॥
 आणंढ थावक व्रत वादर नें, एहवो अमिग्रहो लीवो रे ।
 अन्य तीरथी नें दांन न देवूं, श्री जिण आगल कीवो रे ॥ २० ॥
 छ छंडी रो आमारज राख्यो, थापणी जांण कचाड रे ।
 सामायक संवर पोपा में, ते पिण दे छिटकाइ रे ॥ २१ ॥
 एक तो त्याग करे नें वेठों, एक दांनसात्रा मंडावें रे ।
 भगवंत री आगना किण पाली, सावु किण नें सरावें रे ॥ २२ ॥
 धर्मजती दांन दीयां में, धर्म नें पुन कांय थापो रे ।
 धीर कह्यो भगोती माहें, निरजरा नहीं एकंत पापो, रे ॥ २३ ॥
 जिणनें अन दीयां नीपजें पुन, नमसकार इम जांणी रे ।
 उलटा पड पड कर्म म वांघो, कर कर तांणा तांणी रे ॥ २४ ॥
 निरणो न कीवां नव बोलां रो, तिणरें मोलय मोटी रे ।
 नव ही बोला सरीपा न थापें, तिणरी सरवा खोटी रे ॥ २५ ॥
 जिनरा द्रव्य मुनातर वेहरें, तेहीज द्रव्य वताया रे ।
 गायं भेंस्यां धन धांन घरती, त्यानें क्यूं न जनाया रे ॥ २६ ॥
 कर्ता पाप देखीं म्हें वरज्यां, धर्म करावां माडांणी रे ।
 मिथ टिकाणें मुनज साभां, ए कुंदसण्या नी वांणी रे ॥ २७ ॥
 साव थावक नों एकज मारग, दोय धर्म वताया रे ।
 ते पिण दोनूं आग्या माहें, मिथ अणहूंनो ल्याया रे ॥ २८ ॥
 मिथ पप नें मिथ भापा, मिथ गुणठांणो चाल्यो रे ।
 इणरो ले ले नांम अग्यांनी, झूटो झगडो झाल्यो रे ॥ २९ ॥

या तीनां रो तार काढ्यो तिण, जिण सीखावण मांनी रे ।
 मिश्र धर्म नें किण विघ सरधे, भगवंत रा संतानी रे ॥ ३० ॥
 हाथी घोडां रथ बेसीं नें, वीर वांदण नें चाल्या रे ।
 सिनान कीया गंहणा फूल पहच्या, श्री मुख सूं नही पाल्या रे ॥ ३१ ॥
 पाप तणा फल कडवा वताया, ए वायक जगनाथो रे ।
 सुण सुण नें बेराग हुंता ज्यां, सूस लीया जोडी हाथो रे ॥ ३२ ॥
 मूला गाजर ने काचो पांणी, कोइ जोरी दावे ले खोसी रे ।
 जे कोइ वस्त छोडावें विनां मन, इण विघ धर्म न होसी रे ॥ ३३ ॥
 भोगी नां कोइ भोगज रुंघें, वले पाडें अतरायो रे ।
 माहामोहणी कर्मज वांधें, दसाश्रुतखंघ माहि वतायो रे ॥ ३४ ॥
 देव गुर धर्म नें कारण, मूढ हणे छक्रायो रे ।
 जलटा पडीया जिण मार्ग थी, कुमुरां दीया बेहकायो रे ॥ ३५ ॥
 धर्म हैतें धावक नेंतरीयो, मन मे अधिक हूलासो रे ।
 आरंभ कर जीमायां धर्म जाणें, तो बोध बीज रो नासो रे ॥ ३६ ॥
 वीर कह्यो आचारंग माहें, जिण ओलखीयो तत सारो रे ।
 समविष्टी धर्म नें कारण, न करें पाप लिंगारो रे ॥ ३७ ॥
 एकंद्री मारे पचंद्री पोषे, ते निरुचें वाधें कर्मो रे ।
 मच्छ गलागल चोडे मांडी, ए पाषडीयां रो धर्मो रे ॥ ३८ ॥
 लोही खरड्यो जो पितंबर, लोही सू केम घोवायो रे ।
 तिम हिंसा में धर्म कीयां थी, जीव उजलो किम थायो रे ॥ ३९ ॥
 कहे म्हे पाप करा थोडो सो, पछे होसी धर्म अपारो रे ।
 सावद्य काम करां इण हेते, तिणथी खेवो पारो रे ॥ ४० ॥
 चोखी सिन्यासण धर्म कह्यो तिण, दान सिनान वतायो रे ।
 आठमा अघेन गिनाता मांही, घणा लोक दीया भरमायो रे ॥ ४१ ॥
 जिम कोइ सावद्य दान दिडाइ, मन मे हुवें रलियायत रे ।
 लोकां रे मन गमता बोले, चोखी जोगण ना केडायत रे ॥ ४२ ॥
 वा सरघा सुखदेव, सिन्यासी री, सहस जणा सिप्य जाणी रे ।
 सेठ सुदंसण तिण रो भगता, हाड मिजा रगाणी रे ॥ ४३ ॥
 कर्म थोडा नें सुलटो सुद्धयो, अतर गति निरणो कीघो रे ।
 थावचे अणगार प्रतिबोध्यो, खोटी छोड सजम लीघो रे ॥ ४४ ॥
 चतुरविघ सधना कोठा ठाख्या, पाच्छळ भव दांन वतायो रे ।
 सनत कुमार इंद्र हूवो तेथी, ए पिण मूंसा वायो रे ॥ ४५ ॥

ए तो पूछा वर्तमान काले, पाछिल भव री नहीं चाली रे ।
 फंद में नाखे अजांण लोकां ने, कुब्द हीया में घाली रे ॥ ४६ ॥
 तीनां काल री समरु पडे नही, तो हेत ने सुख वतावों रे ।
 च्याहं आहार नो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे ॥ ४७ ॥
 अंबर ना सिष्य सात सो हूंता, अण दीवो नही लीवो रे ।
 काचो पांणी अघर्म जांण पीता, अण मिलीयां अणसण कीवो रे ॥ ४८ ॥
 जे कोइ मिलतो दातार तिणा नें, हणें वेहरावत पांणी रे ।
 लेवाल तो अविरत में लेता, इमहीज दातार जांणी रे ॥ ४९ ॥
 ग्यांनी पुरपां दोनुं जणां री, सावच्च करणी जांणी रे ।
 दातार ने कोइ घर्म कहें तो, अन्य तीर्थ नी बांणी रे ॥ ५० ॥
 समकत वमीयो नंदगमणीयारे, साची सरवा भागी रे ।
 तेलो करे तीन पोपा ठाया, भूख तिरपा अति लागी रे ॥ ५१ ॥
 संगत पायंडीयां री करने, उलटो मारग लीघो रे ।
 घिन घिन कूजा तलाव खणावे, तिण सफल जमारो कीवो रे ॥ ५२ ॥
 पोषो पार श्रेणक नें पूछे, पोखरणी दाव खणाइ रे ।
 घन खरचे जस लीयो लोकां में, वले वांसाला मंडाइ रे ॥ ५३ ॥
 सोलें रोग सरीरे उपनां, मूओ अति ध्यान ध्यायो रे ।
 आप खणाइ में जावे पडियो, डेडक रो भव पायो रे ॥ ५४ ॥
 आर्द्र कुमार नें ब्राह्मण वोल्या, छोड तूं सगला परचा रे ।
 म्हांरो घर्म उत्तम नें उजल, सुण तूं मोरी चरचा रे ॥ ५५ ॥
 दोय सहंस ब्राह्मण जीमाड्यां, परलोक में सुख दायक रे ।
 देव हूवे पुन खंउ उपाजीं, वेद तणो ए वायक रे ॥ ५६ ॥
 आर्द्रकुमार कह्यो अपात्र ने, नित जिमाडे तेही रे ।
 दोय सहंस ब्राह्मण ने दाता, नरक पहुंचे वेही रे ॥ ५७ ॥
 मंजारी जिम रसना गिरवी, कहि दीयो - सर्म न राखी रे ।
 घर्म ने पुन रो अस न भाप्यो, सूनगडा अंग छे साखी रे ॥ ५८ ॥
 भगू पिरोहित कहे वेटां नें, सांभल मोरी सिप्या रे ।
 वेद भणी ब्राह्मण जीमाडी, लेजो थे पछे दील्या रे ॥ ५९ ॥
 ब्राह्मण जीमाड्यां ए फल लागें, पहुंचाडें तमतमा रे ।
 उत्तराघेन चवदमें भाप्यो, ए तो सावच्च घमां रे ॥ ६० ॥
 खोटी सरवा नें हीण आचारी, पूजा श्लागा रा भूखा रे ।
 कर्म घणा नें संवली न सूमें, कदागरो करवा हुका रे ॥ ६१ ॥

राते भूला तो आसा राखें,	दीयां सुझसी सूला	रे ।
कहो ने आसा राखे किण विघ,	दीयां दोपारां रा मूला	रे ॥ ६२ ॥
भाव मारग थी भूला अग्यांती,	उजड चलीया जायो	रे ।
मन में आसा मुगत्त री राखे,	दिन दिन अलगा थायो	रे ॥ ६३ ॥
सूतर नी चरचा अलगी मेले,	लोक कीया पखपाती	रे ।
साची सरधा किण विघ आवे,	हूआ घणा रा साथी	रे ॥ ६४ ॥
जो थारें दिल काय न वेसैं तो,	सगलो भगडो चूको	रे ।
समता आदर ने कजीया छोडो,	जिण तिण आगे म कूको	रे ॥ ६५ ॥
इविरत ओलखो उत्तम प्राणी,	छोड चो राग ने घेखो	रे ।
मानव नों भव अहल म हारो,	परभव सांमो देखो	रे ॥ ६६ ॥



ढलल : २

[चतुर विचार करी न देखो]

संख नें पोखली जिमण कीचो, ते तो आपणों छांदो रे ।
तिणनें सरावें मूंड अग्यांनी, कर्मा रा पूंज वांचे रे ॥ १ ॥
तिण जीमग नें माठो जांणी, पोपो कर दीवो त्यागी रे ।
पखी रे दिन पाप नें पचख्यो, संख वडो बेरागी रे ॥ २ ॥
उपला श्रावका पोखली घर आयां, विनों कीयो सीस नमायो रे ।
ते तो छांदो आणों जांण्यों, भगवंत नहीं सिखव्यो रे ॥ ३ ॥
नमसकार अंतर नें कीयो चेलां, ते तो सूतर उवाइ में चाल्यो रे ।
भगवंत भाव दीठा जिम भाप्या, जिण धर्म माहिं न घाल्यो रे ॥ ४ ॥
नवकार ना पद पांच परुप्या, श्रावक नें दीवो टालो रे ।
जिण आग्या नहीं ग्रहस्य वांदण री, भगवंत वचन संभालो रे ॥ ५ ॥
मांहोमाहि वीनों वीयावच कीवां, भगवंत नहीं बखाण्यां रे ।
ग्रहस्य ना कार्य सावद्य वीठा, मनकर भला न जाण्या रे ॥ ६ ॥
कहें म्हें अचिरत सेवां जिण में, जाणां छां वंघता कर्मा रे ।
पिण कोइ सेवारें इविरत माने, जिणनें हूवें छें धर्मा रे ॥ ७ ॥
आ सरवा श्रावक नहीं राखें, न दें किण नें दगो रे ।
धर्म ठिकाण भूठ वोलतो, जिण सासण में ठगो रे ॥ ८ ॥
आपतो अचिरत माहिं आणें, भोला नें धर्म वताइ रे ।
श्रावक एहवो भूठ न वोलें, जिण धर्म माहि आइ रे ॥ ९ ॥
साव नें कोइ असुव वेंहरावें, ते गर्म में आडो आवें रे ।
श्रावक नें कोइ सचित खवरावें, ते सुद गति किण विव जावें रे ॥ १० ॥
एक एक मानव कर्म तणें वस, कर रह्या उंची तांणो रे ।
सचित असुव रोकड छां मानें, होसी धर्म संका म आंणो रे ॥ ११ ॥
पेट रें कारण अनरय भायें, परभव सांभो न जावे रे ।
वले पखनात करे कुगरां री, मानव नो भव खोवे रे ॥ १२ ॥
दांन सील तप मात्रना च्याहं, मुगत नगर ले जावें रे ।
तिण में वान सुपातर आयो, ते इविरत माहिं न ल्यावे रे ॥ १३ ॥
समचें दांन में धर्म कहें तो, नाइ जिण धर्म सेली रे ।
आक नें गाय रो दुव अग्यांनी, कर दीवो मेल समेली रे ॥ १४ ॥

इविरत मे दांन ले पेंलां रो, मोष रो मार्ग वतावें रे ।
 धर्म कइयां विण लोक नहीं दे, जब कूर कपट चलावें रे ॥ १५ ॥
 कहें ओर जायगां धन देता देखें, खरच हूं लेखे लेखें रे ।
 ए श्रावक सुपातर त्यानें, दांन दे तूं वसेखे रे ॥ १६ ॥
 कल्पें ते वस्त श्रावक नें देनं, गोत तीर्थकर बांधे रे ।
 एहवो धर्म अनारज भाषें, ते किण विध लागे सांघो रे ॥ १७ ॥
 आगार ने सुपातर कहि कहि, सांनी कर सावु दरावें रे ।
 तिण रें दीसे घोर अंधारो, समकत किण विध आवें रे ॥ १८ ॥
 खेती करे व्याज वोहरावे पालें, घर रो काम चलावें रे ।
 करें सगपण आरा ने मोसर, वेटा वेटी परणावें रे ॥ १९ ॥
 सावां रें आहार नें पाणी वधें तो, परठ दें एकंत जायो रे ।
 इग्यारमी पडिमा रो श्रावक मांगे तो, तिण नें न दें किण न्यायो रे ॥ २० ॥
 धरती परठ्यां तो व्रत रहे छें, दीघा दोप उघाडा रे ।
 पांच महाव्रत मूलगा तिण में, सगला पडीया वधारा रे ॥ २१ ॥
 धरती परठ्यां तो अरथ न आवें, ए करणी नही नीची रे ।
 दीघां दराया ने भलो जाण्या, सावद्य इविरत सीची रे ॥ २२ ॥
 जगन मम्मिम उतकष्टा श्रावक, तीनां री एकज पांतो रे ।
 इविरत छे सगलां री माठी, तिणमे म राखो भ्रांतो रे ॥ २३ ॥
 कोइ श्रावक ना व्रत ले सावां पे, आयो जिण दिस जायो रे ।
 मार्ग मा दोय मित्री मिलिया, ते वोल्या जूदी जूदी वायो रे ॥ २४ ॥
 एक कहे व्रत चोखा पाले, ज्यूं कटें आठोइ कर्मो रे ।
 काल अनादि रे भमते भमते, पायो जिणवर धर्मो रे ॥ २५ ॥
 एक कहें तूं आगार सेवे, सच्चितादिक सर्व संभाली रे ।
 जतन घणा कीजें डीलां रां, वले कूटंब तणी प्रतपाली रे ॥ २६ ॥
 व्रत पालण ही आग्या दीघी, ए तो धर्म रो मित्री मोटो रे ।
 अविरत आग्या दीघी तिण नें, ग्यानी तो जाणें खोटो रे ॥ २७ ॥
 गुर तो मिलिया जावक आंधा, चेला पूरा निरंदो रे ।
 ए तो जाल रच्यो तिण चोडें, कोइ आय पडें तिण फंदो रे ॥ २८ ॥
 न्याय री चरचा रो काम पडें तो, एके होय माडें लडणों रे ।
 पापंडीयां सूं जाय मिलिया वले, लीयो लोकां रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 अत ही दृष्ट हुवे हिंसाधर्मो, निन्दा करे परपूठे रे ।
 कोइ खांच ताण सावां पें आणें, तो अवगुण लेनं उठें रे ॥ ३० ॥

कहें दान दीयो तीर्थकर तिण में, जांणां छां कटीया कर्मों रे ।
 ते तो सोनइयां देवां आण दीघा, त्यानें पिण हुसी धर्मों रे ॥ ३१ ॥
 कर्म कटें सोनइयां साटें, तो करणी नहीं करता रे ।
 ए मारग थी सिवपुर पोहचें, तो घर छोड दुख में न पडता रे ॥ ३२ ॥
 सोनइयां दीघां कर्म कटें तो, वरस री जेज न पाडत रे ।
 लोकां रा घर भर सोनइयां, देता कर्म विहारत रे ॥ ३३ ॥
 कहें लीघा पाप ने दीघां धर्म, तिण लेखे रह गया कोरा रे ।
 देवां कनें ले मिनष नें दीघा, पडीया अणहुंता फोडा रे ॥ ३४ ॥
 एक कोड आठ लाख सोनइया, निकल्या वर्सादान देइ रे ।
 मुगत रों मारग तिणमें न जाण्यो, संवर निरजरा न बेइ रे ॥ ३५ ॥
 वर्सां दान महोच्छव सगला, केवलीयां नहीं वखाण्यो रे ।
 तीर्थकर नें देव दोनूं इविरती, त्यां पिण धर्म न जाण्यो रे ॥ ३६ ॥
 भगवंत दीख्या लीघी तिण कालें, चढीया अतंत वेंरागो रे ।
 सावद्य दान सिनांन सोनइयां, माठा जांणी दीघा त्यागो रे ॥ ३७ ॥
 भगू पिरोहित धन छोड निकलीयो, इखुकार राजा मंगायो रे ।
 धन सूं धर्म ने कर्म कटे तो, अेली साटें कांय गमायो रे ॥ ३८ ॥
 घर छाडें त्यांमें अकल घणी थी, आलस कर आघो न काडत रे ।
 धन सूं धर्म हुवें ते करनें, काम सिराडे चान्त रे ॥ ३९ ॥
 धर्म री धुरा धन सूं न चालें, भगू नें कह्यो बेटां दोइ रे ।
 माहोमां धन दीयां धर्म थापें, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ४० ॥
 रिषभदत्त ब्राह्मण ने देवानंदा, वांणी सुण आयो वेंरागो रे ।
 त्यां पिण धन नें छोड्यो अघर्म जाण, धर्म हुवें तो न काडत आघो रे ॥ ४१ ॥
 कहें आरा मोसर डायचादिक में, मिश्र धर्म कर रह्या तांणो रे ।
 राय उदाइ राज दीयो भाणेजा नें, तिण लेखें तो मोटो लाभ जांणो रे ॥ ४२ ॥
 ए परिग्रह छे अनरथ रो मूल, करें बोध बीज री घाता रे ।
 वीर कह्यो छें दसमां अंग में, ए नरक तणों छें दाता रे ॥ ४३ ॥
 ठाम ठाम सूतर सिद्धांतां में, धन सूं धर्म न थाप्यो रे ।
 किण विध कर्म कटें दाता रा, ए तो अविरत माहें आप्यो रे ॥ ४४ ॥
 जबूकुमार आठ परणे आयो, डायचे रिघ लीयो अपारी रे ।
 कोड निनाणू तो पेंरावणी रो, वले घर में हुंती रिघ भारी रे ॥ ४५ ॥
 कनक कामणी सूं विरक्त भावें, उत्तम चारित लीघो रे ।
 वेंराग आणे धन छोड दीयो पिण, धन सूं धर्म न कीघो रे ॥ ४६ ॥

विरत इविरत री चौपई : डाल २

बीस हजार सोना रूपा ना आगर, खूटें नही अखूट भंडारो रे ।
 चक्रवत् छे खंडकेरो साहिब, तिणरी रिघ रो घणो विस्तारो रे ॥ ४७ ॥
 एहवी रिघ मे काल कीयो तिण, नरक पढ्या बांधो कर्मो रे ।
 दुरगति टल जाय घन दीघां, तो दे दे करता घर्मो रे ॥ ४८ ॥
 श्रावक तो जिण कालेइ हुंता, घन लेवा नें तयारो रे ।
 यतिं दीया उवार हुवें तो, दे उत्तरें भवं पारो रे ॥ ४९ ॥
 चित्त मुनी संभूत समझावा, साध श्रावक धर्म बतायो रे ।
 घन सूं सुद गति जाय विराजें, इसडो न कह्यो उपायो रे ॥ ५० ॥
 कहें साध आहार करें इविरत में, संजम नो छें ओटो रे ।
 एतो वचन अनारज करों, तिण आदरीयो मत खोटो रे ॥ ५१ ॥
 इविरत नें परमाद वेहूं नें, संजम नों छें घको रे ।
 ओटो कहें तिणरी उंधी सरघा, तिण गिरीयो मिध्यात नें पको रे ॥ ५२ ॥
 साधां सावद्य सगलो त्यागयो, पाप रो नहीं आगारो रे ।
 इविरत में आहार ल्यावें खावें, ते निश्चें नहीं अणगारो रे ॥ ५३ ॥
 च्यार गुणठांणां में अकेली इविरत, श्रावक में दोनूं पावें रे ।
 साधां रे इविरत मूल न दीसैं, कुब्दी कूड चलावें रे ॥ ५४ ॥
 इविरत में साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं देता रे ।
 पाप- जाणें तो मुनज सामेंत, ए पिण आग्या न लेता रे ॥ ५५ ॥
 प्रतख पाप जाणें आहार कीघां, कर्म तणो बंध होवें रे ।
 तो आग्या ले गुरनी मुख, गुर नें कांय डबोवे रे ॥ ५६ ॥
 गुरनी आग्या ले पाप करण री, ते तो मलेछ अनारज रे ।
 विनैं सहित कोइ सावद्य सेवें, तिण मोटो कीयो अकारज रे ॥ ५७ ॥
 त्याने गुर पिण मिलियो अतंत अग्यांनी, कर्मा कर सुइयो भूंडो रे ।
 पाप- करण री आग्या देणें, पोते अली साटें कांय बूडो रे ॥ ५८ ॥
 चेला नें आग्या इविरत री दे, घाल्यो पाप में सीरो रे ।
 देखो अकल गइ तिण गुर री, इण नें कांई पडी थी भीरो रे ॥ ५९ ॥
 पाप करण री आग्या देसी, ते निश्चें होसी भारी रे ।
 कुण चेलो गुर ने गुर भाइ, जोबो अंतर माहें विचारो रे ॥ ६० ॥
 साध आहार कीयां परमाद नें इविरत, तो दातार नें नहीं घर्मो रे ।
 इविरत री इविरत में घाल्यो, तो दोयां रे बंधसी कर्मो रे ॥ ६१ ॥
 कर्म तणे वस मूंड अग्यांनी, सबली सीख न घारें रे ।
 आप डूवे इविरत में ल्याइ, ते ओरां नें किण विघ तारें रे ॥ ६२ ॥
 ७३

साध आहार कीयां में पाप परूषें, त्यारें मोह मिथ्यात रो चालें रे ।
 तीन काल रा मुनीसरां नें, दीयो अणहंतो आलो रे ॥ ६३ ॥
 आहार करण री सुघ साधां नें, भगवंत आग्या दीधी रे ।
 तिण में पाप वतावे अग्यानी, खांच गला में लीधी रे ॥ ६४ ॥
 जो थानें समझ पडे नहीं पूरी, तो राखो जिण परतीतो रे ।
 आग्या माहें पाप परूषें, एहवी म करो अनीतो रे ॥ ६५ ॥
 जिण आग्या में पाप परूषें, ते भूला भरम अग्यानी रे ।
 आग्या वारे धर्म कहें त्यांनै, किण विघ कहिजें ग्यानी रे ॥ ६६ ॥
 गुण विण भेख धरे साधु रो, करें विकलां री थापो रे ।
 छ कारणां विण आहार करसी, तिणनैं छें एकंत पापो रे ॥ ६७ ॥
 छ कारणें साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं लोपी रे ।
 पाप तिणां ने किण विघ लागें, संवर कर आतम गोपी रे ॥ ६८ ॥
 निरवद गोचरी रिषेसरां री, मोप री सावन भाखी रे ।
 पाप कर्म आहार करतां न लागे, दसवीकालक साखी रे ॥ ६९ ॥
 सात कर्म साध ढीला पाडें, आहार करे तिण कालो रे ।
 सुघ भोगवीयां ए फल लागें, सूतर भगोती संभालो रे ॥ ७० ॥
 सेलक जप रे कांघें घेस नीकलीयो, राखी रेंगा देवी सूं पीतो रे ।
 अणुकंपा आणें साह्यो जोयो, जिणरिष हूवो फजीतो रे ॥ ७१ ॥
 सेलक जप जिम संजम जाणो, रेंगा देवी ज्यूं इविरत मेंली रे ।
 मुगत नगर नें संत नीकलीया, त्यां इविरत छोडी पेंली रे ॥ ७२ ॥
 सेलक जप ने रेंगादेवी रे, मांहोमां नहीं मेलपो रे ।
 विरत सूं धर्म ते पार पोहचावे, इविरत लगारें पापो रे ॥ ७३ ॥
 रेणा देवी एक भव दुखदायक, इविरत अन्ततो कालो रे ।
 सांसो हूवे तो गिनाता माहें, नवमों अघेन संभालो रे ॥ ७४ ॥

ढाल : ३

[चतुर विचार करी ने देखो]

मुयगडां अंग अघेन इग्यार में, त्यां दान रो कीधो निचोडो रे ।
 मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते करे अणहूती भोडो रे ॥ १ ॥
 चतुर विचार करी ने देखो* ।
 सोलमी गाथा सू लेइ इकवीसमी ताई, ए छव गाथा रा अर्थ छे सूंधा रे ।
 तिहा सावद्य दान मे मिश्र थापण नें, अर्थ करे छे उंधा रे ॥ च० २ ॥
 ते सावद्य दान संसार नां कारण, तिण में निरवद रो नही भेलो रे ।
 ससार ने मुगत रा मारग न्यारा, ते कठें न खावे मेलो रे ॥ ३ ॥
 ए छ गाथा रा अर्थ छें भारी गूढा, त्यांरो निरणो कीजों बुधवांनो रे ।
 ते अर्थ विवरां सुध त्यांरो, सुणजों सुरत दे कांनो रे ॥ ४ ॥
 दान रे अर्थ जीव हणें त्यांने, साधु तो भलो न जाणे रे ।
 देवे पो सतुकार खोदावे कूवादिक, लाभ जाणें सरघा परमाणे रे ॥ ५ ॥
 ते आय साधां नें प्रश्न पूछे, ते आरंभ लीयां बोले बांणी रे ।
 इण करणी में पुन हुवे के नाही, जब साध करे मून जांणी रे ॥ ६ ॥
 पुन पिण साध न कहे तिणने, वले न कहे थारे पुन नांही रे ।
 वैह प्रकारें माहा भय रो कारण, मून करे ते कारण काई रे ॥ ७ ॥
 दान रे कारण लोक करे छे, तस धावर री घातो रे ।
 पुन कहां त्यांरी दया उठे छे, दया विण नही पुन साख्यतो रे ॥ ८ ॥
 असंजती नें उदीरी उदीरी, आरभ कर जीमावे अन पांणी रे ।
 पुन नही कह्या अंतराय पडे छे, ओहीज कारण जांणी रे ॥ ९ ॥
 साधु तो अंतराय किणने न देवे, उण वेलं जीम क्यांने हलावें रे ।
 चरचा रो कांम पडें तिण काले, हुवे जिंसा फल बतावें रे ॥ १० ॥
 जे कोइ दान प्रससे तिणने, कह्यो छकाय रो घाती रे ।
 तो देवे दिरावें त्यांरो स्युं कहिवों, ए पिण उणरा साथी रे ॥ ११ ॥
 हिंसा भूठ चोरी कुसील प्रससे, ते बूड गया काली धारो रे ।
 तो करण करावण वाला रों, किण विध होसी उवारो रे ॥ १२ ॥
 कोइ गांव जलावे ने गायां कटावे, इत्यादिक कारज सव मूडां रे ।
 त्यांने सरावे ते वूड गया छें, तो करण वाला तो वशेष वूडां रे ॥ १३ ॥
 ज्यु सावद्य दान प्रससे तिणने, कह्यो छे छकाय रो घाती रे ।
 देवे तिणने धर्म मिश्र कहे त्यांने, कहीजें मूढ मिथ्याती रे ॥ १४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

माठो काम सरायां वूडें छें, तो कीधां वूडसी गाढो रे ।
 वा सरवा सुण सेंठी धारो, थें सल अमितर काढो रे ॥ १५ ॥
 सावद्य दान प्रससैं तिणरा, माठ फल कहुआ जिण रायो रे ।
 हिवें दान नपेवणों नहीं साधु नें, तिणरो पिण सुणजों न्यायो रे ॥ १६ ॥
 दातार दान देवें तिण कालें, लेवाल लेवें घर पीतो रे ।
 जब साध कहे तूं मत दें इणनैं, नपेवणों नहीं इण रीतो रे ॥ १७ ॥
 जो दान देता नें साध नपेदें तो, लेवाल रे पडें अंतरायो रे ।
 अंतराय दीयां फल कडवा लागें, तिणसूं नपेव न करें इण न्यायो रे ॥ १८ ॥
 अंतराय सूं डरता साधु न बोलें, ओर परमारथ मत जाणो रे ।
 ते पिण मून छें वरतमान कालें, बुधवंत कीजों पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 उपदेस देवें साध तिण कालें, दूध पांणी ज्यूं करें नीवेडो रे ।
 विनां वतायां च्यार तीरथ में, किण विव मिटें अंबेरो रे ॥ २० ॥
 दोनूं भापा साधु नहीं बोलें, पुन छें अथवा पुन नांही रे ।
 ते वरज्यों वरतमान काल आसरी, थें सोच देखों मन मांही रे ॥ २१ ॥
 कोइ कहें पुन कहणों न कहणों वरज्यों, तो पुन में पाप रो भेल जाणो रे ।
 तिणसूं मिथ ठिकाणों ले उठ्या अग्यांनी, ते कर कर उंबी तांणो रे ॥ २२ ॥
 पुन छे कें नहीं रो प्ररुन पूछ्यो, पाप रो कथन न चाल्यो रे ।
 मिथ री सरवा बाले अग्यांनी, घोचो मिथ रो बाल्यो रे ॥ २३ ॥
 दान में मिथ नहीं जिण भाप्यों, पुन होसी कें पापो रे ।
 सुपातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, पिण खोटी मिथ री थापो रे ॥ २४ ॥
 बले सुयगडा अंग अघेन इकवीसमें, दोय वातां जिण भाखी रे ।
 त्यां पिण न कहुओ छें मिथ ठिकाणों, जोवों वतीसमीं गाथा साली रे ॥ २५ ॥
 दातार नें देतां लेवाल नें लेतां, साधु इसडों देखें विरसंतो रे ।
 जब गुण अवगुण न कहें तिण कालें, तिहां मून करें एकंतो रे ॥ २६ ॥
 तिण दान तणा साधु गुण करें तो, असंजम री अणुमोदनां लागें रे ।
 असंजम छें ते एकलो अघर्म, त अणुमोद्यां संजम भागें रे ॥ २७ ॥
 जिण दान नें साधु भलो न जाणें, भलो जाण्यां ववें पाप कर्मो रे ।
 तो तिणहीज दान तणा दाता नें, किण विव होसी मिथ नें धर्मो रे ॥ २८ ॥
 पाप अणुमोद्यां तो पाप हुवें छें, धर्म अणुमोद्यां धर्म होयो रे ।
 तो मिथ अणुमोद्यां मिथ चाहीजें, ते मिथ न वीसैं कोयो रे ॥ २९ ॥
 दान देवें दिवरावें भलो जाणें, यां तीनां री एकज पांतो रे ।
 पुन पाप मिथ होसी तो तीनां नें, तिणमें म राखों भ्रांतो रे ॥ ३० ॥

जिण दान तणा गुण कीवां साधु नें,
 ते दान असंजम में जिण घाल्यो,
 दान तणा ओगुण कीवां में,
 अंतराय देंगी ते साधु नें न कल्पें,
 इण न्याय साधु नें मून कही छे,
 इण दान में मिश्र ने धर्म थापें तो,
 गुण कहां असंजम अणुमोदीजे छें,
 यां दीयां सूं डरतो साधु न बोलें,
 साधु मून करे वरतमान कालें,
 द्रव्य खेतर काल भाव देखें तो,
 मिश्र थापण नें मूढ अग्यांनी,
 सूतर में ओर बोल घणा छें मिश्र रा,
 कोइ कहे पाप कहे तिण देतां पाल्यो,
 ए दोनूं भाषा ने एकज सरखे,
 कोइ कहे पाप कहे तिण दान निषेद्धो,
 सावध दान नें थापण अग्यांनी,
 दान देता नें कहे तूं मत दें इण ने,
 पाप हुतो ने पाप बतायो,
 असजती ने दान दीयां में,
 त्या दान नें वरज्यो निषेद्धो नाही,
 किण ही साधु ने कहाो आज पछे तूं,
 किणही ए करडा वचनज बोल्यो,
 सावां ने वरज्यो तिण घर में न पेसैं,
 निषेद्धो ने करडो बोल्यां ते,
 ज्यूं कोइ दान देतां वरज राखे,
 ए दोनूई भापा जुदी जुदी छे,
 कोइ रांक गरीब ने मरता देखी नें,
 जब पॅला रों माल चोरी कर पोते,
 घणी नें विण पूछ्यां चोरी कर देवें,
 उणरी सरखा रे लेखें तो इणनेइ मिश्र,
 माल घणी रे दाह दीवी तिणरो,
 तो रांकां नें दीयो ते अणुकंपा आणे,

असंजम री अणुमोदनां लागे रे।
 ओगुण कहां रो बोलतो आमें रे ॥ ३१ ॥
 लेवाल रें पढें अंतरायो रे।
 तिण सूं मून करे मुनीरायो रे ॥ ३२ ॥
 पिण मिश्र न जाणें तिणमें रे।
 कोरो मिथ्यात छें तिण में रे ॥ ३३ ॥
 अवगुण कहितां लागें अंतरायो रे।
 अठे मिश्र किहां थी थायो रे ॥ ३४ ॥
 पिण उपदेस में मून न राखे रे।
 हुवे जिसा फल दाखें रे ॥ ३५ ॥
 छल छिद्र रह्यो नित देखो रे।
 त्यामें मिश्र दान दे टेको रे ॥ ३६ ॥
 इसडी बोलें छे वाणों रे।
 ते भाषा तणा मूढ अयांगो रे ॥ ३७ ॥
 ते पिण भाषा रा अजाणो रे।
 बोले छे उंची वाणो रें ॥ ३८ ॥
 तिण पाल्यो निषेद्धो दांगो रे।
 तिणरो छे निरमल ग्यांगो रे ॥ ३९ ॥
 कहि दीयो भगवंत पापो रे।
 हुंती जिसी कीवी थापो रे ॥ ४० ॥
 म्हारे घर कदे मत आयो रे।
 हिवे साधु किसे घर जायो रे ॥ ४१ ॥
 करडा कहा तिण घर माहि जावे रे।
 दोनूं एकण भाषा मे न समावे रे ॥ ४२ ॥
 कोइ दीघा में पाप बतावे रे।
 ते पिण एकण भाषा में न समावे रे ॥ ४३ ॥
 त्यारी अणुकंपा मन माहे आवे रे।
 रांका ने हाथ सूं पकडवें रे ॥ ४४ ॥
 रांकां री अणुकंपा काजें रे।
 अठें मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ ४५ ॥
 हुवो एकंत पाप कर्मो रे।
 उणरे लेखें ओ प्रतख धर्मो रे ॥ ४६ ॥

पैलां रो धन खोस रांकां नें देवें,
तो उठ गई मिश्र री सरधा,
पर रो धन चोर रांकां नें दीघां,
तो जाबक जीव हणे रांक नें पोषे,
कोइ चोरी कर रांकां नें पोषे,
इण एकंत पाप में मिश्र कहे,
रांकां नें पोषे घणा जीव हणे ने,
ते चोरी तो त्यांरा सरीर री लागी,
रांकां नें पर धन चोर देवें त्यांने,
ए दोनू किरतब करे अणुकपा आंगे,
पर नीं चोरी करे रांकां ने देवे,
तो हिंसा कर ने कुपातर पोषे,
कहे आराधवी विराधवी मिश्र भाषा छे,
आराधवी जितरो छे एकलो धर्मो,
इम कहि कहि मिश्र करणी थापे,
इम आंटी घाले सावद्य दांन माहे,
ते मिश्र भाषा छे एकंत सावद्य,
महामोहणी कर्म बंधे तिण सूं,
आराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही,
अठें पाप धर्म रो कथन न चाल्यो,
आराधवी कही छे सत भाषा नें,
ते साची भाषा छे सावद्य निरवद,
साची भाषा सावद्य तिणने,
पिण एकंत पाप बंधे तिण बोल्यां,
ववहार भाषा नें कही छे जिणेसर,
ते पिण कही छे बोलवा लेखे,
धर्म अधर्म लेखे तो ववहार भाषा,
निरवद ने आराधवी जांणो,
जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखे,
तो ववहार भाषा बोलखी तिणने,
जो साची भाषा बोले धर्म रे लेखे,
तो साची भाषा सावद्य बोल्यां,

तिणमें मिश्र कहें नांही रे ।
थें सोच देखो मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
तिण में मिश्र हुवें नांहीं रे ।
अठें मिश्र कठें तिण मांहीं रे ॥ ४८ ॥
कोइ जीव हण नें पोषे रांको रे ।
त्यांरी सरधा में पूरो छे बांको रे ॥ ४९ ॥
तिणनें चोरी हिंसा लागें दोयो रे ।
जीव हणीयां री हिंसा होयो रे ॥ ५० ॥
एक चोरी तणों पाप होयो रे ।
ते गया जमारो खोयो रे ॥ ५१ ॥
इण किरतब सूं जो बूडें रे ।
ते क्यूं नही बेंससी तूडें रे ॥ ५२ ॥
ते भाषा छे धर्म अधर्मो रे ।
विराधवी सूं लागे पाप कर्मो रे ॥ ५३ ॥
तिण करणी में कहें धर्म पापो रे ।
करे मिश्र री थापो रे ॥ ५४ ॥
तिम बोल्यां बंधे पाप कर्मो रे ।
तिणमें किहां थी धर्मो रे ॥ ५५ ॥
ते तो बोलवा लेखे रे ।
तिणरा मुणजो भेद वरोखे रे ॥ ५६ ॥
ते पिण बोलवा लेखे पिछांणो रे ।
तिण सावद्य में धर्म म जांणो रे ॥ ५७ ॥
आराधवी कही बोलवा लेखे रे ।
ते मिश्र में मूढ पाप न देखे रे ॥ ५८ ॥
आराधवी विराधवी नांही रे ।
धर्म अधर्म लेखो नही यांहीं रे ॥ ५९ ॥
आराधवी विराधवी जांणो रे ।
विराधवी सावद्य नें पिछांणो रे ॥ ६० ॥
आराधवी विराधवी होइ रे ।
धर्म अधर्म नही कोइ रे ॥ ६१ ॥
थापे आराधवी कोयो रे ।
एकंत धर्मज होयो रे ॥ ६२ ॥

जो मिश्र भाषा माहे मिश्र हुवें तो, सत भाषा मे एकंत घर्मो रे ।
 ववहार भाषा तो सुन होय जावें, बोल्यां नही घर्म ने पाप कर्मो रे ॥ ६३ ॥
 ए तो बोलवा आश्री च्यांरुई भाषा, आराधवी विराधवी जांगो रे ।
 अठे घर्म अघर्म रो कथन न चाल्यो, पनवणा सूं करो पिछांगो रे ॥ ६४ ॥
 सत असत मिश्र ने ववहार, ए च्यार भाषा जिण भाखी रे ।
 त्यामें असत नें मिश्र तो जावक सावद्य, जोवो दसवीकालक साखी रे ॥ ६५ ॥
 सत भाषा ने ववहार भाषा, ए तो सावद्य निरवद्य दोई रे ।
 ते सावद्य टाले ने निरवद्य बोलें, तो पाप न लागें कोई रे ॥ ६६ ॥
 असत ने मिश्र तो जावक छोडणी, ते बोल्यां बूडे जावे वहिता रे ।
 जो मिश्र भाषा माहे मिश्र घर्म हुवे तो, जावक छोडणी नही कहितां रे ॥ ६७ ॥
 घर्म अघर्म आश्री च्यांरुई भाषा, बोलवी नही बोलवी चाली रे ।
 सत ने ववहार विचार बोलवी, असत मिश्र ने सरवथा पाली रे ॥ ६८ ॥
 तीसां बोलां वंधे महामोहणी कर्म, ते एकंत छे पाप कर्मो रे ।
 तो मिश्र भाषा बोले तिण माहे, किण विघ होसी पाप ने घर्मो रे ॥ ६९ ॥
 जो गुणतीस बोलां में एकलो पाप, तो मिश्र भाषा मे एकत पापो रे ।
 कोइ मिश्र भाषा माहे मिश्र घर्म कहे, तिण आगम दीया उथापो रे ॥ ७० ॥



ढलल : ॡ

दुहल

श्री ऒण आगम मलहें इम कहूलें, धर्म अधर्म करणी दलय ।
धर्म करणी मलहे ऒण आगनल, अधर्म करणी में आगनल न कुलय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म करणी कुई कुई, ते कुठें न खलवें मेल ।
ऐ मूढ मिथुयलती ऐवडल, तुयलं कर दीधी मेल सभेल ॥ २ ॥
कुतुर वुयलपलरी वलणऐ करें, ऐंहर ने इमृत दलय ।
मलंगें ते वसत देवें गरक नें, पलण ओर न देवें कुलय ॥ ३ ॥
ववेक वलकल वुयलपलरी हुवें, तलणनें वसुत री खबरन कलंय ।
ऐंहर डललें इमृत मभे, इमृत डललें ऐंहर रे मलंय ॥ ॡ ॥
ऐुयलनें वसत री ठीक पडें नहें, ते डललें ओर री ओर मलंय ।
दे नलश करें नीवी तणें, तलम ऐलंणें धर्म रो नुयल ॥ ॡ ॥

ढलल

[कुतुर वलकलर करी ने देखु]

ऐलम कुओइ डुरत तंवलखू वलणऐं, पलण वलसण वलगत न पलडें रे ।
डुरत लेई तंवलखू में डललें, ते दूनूई वसत वलगलडें रे ॥ १ ॥
कुतुर वलकलर करी ने देखु* ।
ऐुं इवलरत रो डलंन वलरत में डललें, पलण वलरत री वलगत न पलडें रे ।
वलरत री वलगत पलडुडलं वलण डलंगल, सुंनें कुवलत डलंन पूकलरें रे ॥ कु० २ ॥
शुरवलक मलहोमलहि ऐीमें ऐीमलवें, ते तो एकंत आशुरव ऐलंणु रे ।
तलण मलहे धर्म पलरुपें अगुयलंनी, ते पूरल मूढ अगुयलंणु रे ॥ ३ ॥
ऐीम रो ओषद आंखुयलं में डललुयुं, आंखुयलं रो ओषद ऐीम में डललुयुं रे ।
तलण री आंखुई फूटी नें ऐीमइ फलटी, दूनूइ इंद्री खुयुं डललुयुं रे ॥ ॡ ॥
ऐुं अधर्म रल कलंमल धर्म मलहें डललुयुं, धर्म रल कलंमल अधर्म में डललुयुं रे ।
दूनूई वलध कर्म डलंवे अगुयलंनी, दुरगत मलहे डललुयुं रे ॥ ॡ ॥
सलवडु कलरतडु में धर्म ऐलंणें, नलरवद में पलप ऐलंणें रे ।
सलवडु नलरवद में नहें सलमभें, अगुयलंनी थकल उंधी तलंणें रे ॥ ॢ ॥
सकुवलत अकुवलत दीडलं कुहें पुन, वले सुव असुव दीडलं कुहे पुनु रे ।
वले पुन कुहे पलतर कुपलतर नें दीडलं, ओ मत ऐलबक ऐडूनुनु रे ॥ ॣ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

पातर कुपातर दोनां नें दीघां, पुन कहे छें कर कर तांणी रे ।
 तिण पातर कुपातर गिणीया सारीघां, आ पाबंडीयां री वांणी रे ॥ ८ ॥
 कूडाघर्मी कूडें वेंस जीमें जब, मेला जीमें एकण कूडा माह्यो रे ।
 जात कुजात नें चोखा अचोखा, त्यांरी भिन न राखे कांयो रे ॥ ९ ॥
 ज्यं पातर कुपातर सर्व नें दीघां, पुन कहे एक धारो रे ।
 ओ मत कूडापंथी जिम जांणो, किण सूं भिन न राख्यो लिंगारो रे ॥ १० ॥
 केइ जहा हुवें ते कूडा पंथ्यां ने, न्यात जात सूं जाणें भिष्टी रे ।
 ज्यु पून कहे दांन कुपातर दीघां, त्यांनें ग्यानी जाणें मिथ्यादिष्टी रे ॥ ११ ॥
 श्री वीर कह्यो पातर दांन दीघां, धर्म ने पुन दोनूं होयो रे ।
 कुपातर दांन में पुन कहे ते, गया जमारो खोयो रे ॥ १२ ॥
 श्रावक नें एकंत सुपातर कहे नें, तिण पोख्यां में धर्म बतावे रे ।
 दसही परूपणा कर कर अग्यानी, भोला लोकां ने इम भरमावें रे ॥ १३ ॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छे, ते पूरा मूढ अग्यानी रे ।
 त्यांनें श्रावक पिण इसडाइज मिलीया, त्यां पिण सरघा साची कर मांनी रे ॥ १४ ॥
 नांव मातर श्रावक ववेक रा विकल, त्यांनें निज अवगुण नहीं सूंमें रे ।
 त्यांनें गुर पिण मिलीया त्यांहीज सरीघा, तिण सूं दिन दिन इधका अलूमे रे ॥ १५ ॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर कहे, ते तो उठी जठाथी भूठी रे ।
 सावद्य किरतव मूल न सूंमे, त्यांरी हीया नीलाडी री फूटी रे ॥ १६ ॥
 आषा मिनव ने आंघो मिलीयो, जब कुण बतावे वाटो रे ।
 ज्यु श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छे, त्यारे आयो अभितर पाटो रे ॥ १७ ॥
 श्रावक सुपातर विरता रे लेखे, इविरत लेखे जेहर रो बटको रे ।
 इविरत रो इणरे काम पडे जब, छकाय रो कर जाय गटको रे ॥ १८ ॥
 श्रावक सुपार वरतां सूं हूवो, इविरत सूं अघर्मी जांणो रे ।
 इविरत रो इणरें काम पडे तो, छकाय रो करें घमसांणो रे ॥ १९ ॥
 छकाय जीवां रो गटको करे छे, छकाय रो करें घमसांणो रे ।
 इण किरतव ने सुपातर जाणे, ते जिण मारग रा अजाणो रे ॥ २० ॥
 श्रावक अस्त्री सेवे सेवावे, वले परणें नें परणावें रे ।
 तिणें एकत सुपातर थापे, ते तो गाला रा गोला चलावे रे ॥ २१ ॥
 केइ श्रावक रे हुवें अस्त्री हजारं, पासवांन खवासण अनेको रे ।
 एहवा भोगी भमर नें सुपातर जाणें, त्या विकला नें नहीं ववेको रे ॥ २२ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मइथुन सेवे, परिग्रह मेले विवव प्रकारो रे ।
 तिणें एकत सुपातर परूपे, त्यांरा मत मांहे पुरो अंधकारो रे ॥ २३ ॥
 ७४

श्रावक लाखां बीघां घर खेती करें छें, कोडां मण काढे अणगल पांणी रे ।
 त्यांनं पिण एकंत सुपातर कहें छें, ते तो पाषंडीयां री वांणी रे ॥ २४ ॥
 दमडी काजें पागडा पाहें पडावें, आंमी साहीं पेजारां चलावें रे ।
 एहवा श्रावक नें सुपातर कहितां, विकलां नें लाज न आवें रे ॥ २५ ॥
 कजीयाखोर बथोकडा बगीया, मन मानें ज्यूं बोलें भूंडा रे ।
 ममा चचा री गाल्यां तो बस रही मूढें, त्यांनं सुपातर सरधे कांय बूडा रे ॥ २६ ॥
 केइ नागडा निरलज फीटा बोलें, ते दीसैं उघाडा कुपातर रे ।
 केइ एहवा कुपातर नें कहें छें सुपातर, त्यांने पिण कहीजें एहवा सुपातर रे ॥ २७ ॥
 केइ दगा दगी रो विणज करें छें, कपडादिक बेवें नग बदलावें रे ।
 त्यांनं एकंत सुपातर कहि कहि, ते विकलां नें विकल रीभावें रे ॥ २८ ॥
 श्रावक तो घर माहें बेटों, करें छें अनेक अकाजो रे ।
 तिण घरबारी नें सुपातर कहितां, विकलां नें न आवे लाजो रे ॥ २९ ॥
 आगें मोटा मोटा राजा श्रावक हुआ, जीवादिक नवतत रा जांगो रे ।
 ते रिण संगराम चढ्या तिण काले, घणां भिनवां रा कीयां घमसांगो रे ॥ ३० ॥
 एक कागादिक मारण रा त्यांग कीयां, ते पिण श्रावक री पांत माहीं रे ।
 बाकी रा सर्व किरतब खोटा करें छें, ते सुपातर पणां में नाहीं रे ॥ ३१ ॥
 श्रावक नें सुपातर किण न्याय कहीजें, किण न्याय अधर्मी कुपातर रे ।
 सूतर माहे जोए भव जीवां, हीया माहें करो जमें खातर रे ॥ ३२ ॥
 सूयगडांग अघेन अठारमें, तीन पष तणो विसतारो रे ।
 धर्म अधर्म मिश्र पष तीजें, यां तीनां रो सुणो भेद न्यारो रे ॥ ३३ ॥
 सर्व विरत नें धर्म पष कहीजें, इविरत नें अधर्म पष जांगो रे ।
 कांयक विरत नें कांयक इविरत, मिश्र पष एह पिछांगो रे ॥ ३४ ॥
 धर्म पष माहें एकंत साघां नें घाल्या, त्यांरे सर्व थकी विरत जांगो रे ।
 अधर्म पष माहे असंजती घाल्या, त्यांरें जावक नही पचखाणो रे ॥ ३५ ॥
 मिश्र पष माहें श्रावक नें घाल्या, तिणरो न्याय सुणो चित ल्यायो रे ।
 जे विरत कीया ते धर्म पष माहें, इविरत छें अधर्म पष माहों रे ॥ ३६ ॥
 तिण सू श्रावक नें कहीजे धर्मी अधर्मी, संजती नें असंजती जांगों रे ।
 वले श्रावक नें कहीजे विरती इविरती, पिछत नें बाल दोनूं पिछांगो रे ॥ ३७ ॥
 श्रावक नें वरतां कर संजती कहीजें, गुण रतनां री खाणो रे ।
 वरत आदरतां इविरत - राखी, तिण सू कोरो असंजती जांगों रे ॥ ३८ ॥
 श्रावक रो खाणों पीणों नें गेंहणों, इविरत माहें जांगो रे ।
 तिण इविरत नें असंजती कहीजे, तिण माहें धर्म म जांगो रे ॥ ३९ ॥

कोइ श्रावक नें असणादिक देवें, ते तो असंजतीपणा माह्यो रे ।
 असंजती नें दान दें त्यारें, आछा फल नही लागे ताह्यो रे ॥४०॥
 असंजती ने दान दीयां में, पाप कह्यो छें एकंतो रे ।
 भगवती आठमें सतक छठे उद्देशें, इम भाष गया भगवंतो रे ॥४१॥
 साव श्रावक विण सर्व संसारी, एकंत असंजती जाणो रे ।
 श्रावक री इविरत पिण असंजती छें, ते रुडी रीत पिछाणो रे ॥४२॥
 अवर्मी जीव च्यारां गुण ठांगां, श्रावक रो पांचमो गुण ठाणो रे ।
 बाकी नव गुण ठाणा साव रिषेसर, ए संसार में सर्व जीव जाणो रे ॥४३॥
 पांचू इद्री मोकली मेल्यां पाप, मेल्यां पिण लागे छें पापो रे ।
 पांचू इद्री नी तेवीस विषे सेवायां, पाप कह्यो जिणेसर आपो रे ॥४४॥
 कोइ श्रावक नी रस इद्री पोषें, पांचू रस मन गमता जीमावे रे ।
 तिण रस इद्री नी विषे सेवाइ, तिण में धर्म अग्यानी बतावे रे ॥४५॥
 कोइ श्रावक री पांचू इद्री पोषे, विषे सेवारे तेवीसो रे ।
 तिण माहे धर्म पळवें मिथ्याती, ते वूडा छे विसवावीसो रे ॥४६॥
 केइ मूढ मती जीव अतंत अग्यानी, ते इसडी चरचा आणे रे ।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो च्यार तीरथ मे क्यूं जाणे रे ॥४७॥
 च्यार तीरथ ने कही रतनां री माला, तिण माला रा भेद न जाणे रे ।
 गुण अवगुण सर्व माला में घाल्या, ग्यानी थकां उधी ताणे रे ॥४८॥
 च्यार तीरथ छे गुण रतना री माला, तिण मे इविरत नही लिंगारो रे ।
 माला माहें श्रावक रा वरत घाल्या, इविरत ने काढे दीधी बारो रे ॥४९॥
 इविरत ने एकलो अवर्मी कहीजे, तिणरा अनेक माठा माठा नामो रे ।
 ते रतनां री माला में किण विघ घाले, ते तो सगलाई सावद्य कामो रे ॥५०॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर थापण, कोइ इसडी चरचा ल्यावे रे ।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो देवलोकं किम जावे रे ॥५१॥
 श्रावक जावे छे देवलोक माहे, ते तो समकत वरत सूं जाणो रे ।
 एक समकत सूं पिण देवलोक जावे, तो श्रावक रे छे समकत पचखाणो रे ॥५२॥
 इविरती समदिष्टी चोथे गुण ठांगे, ते एकत असंजती जाणो रे ।
 ते पिण देवलोक माहे जावे छे, ते समकत गुण पिछाणो रे ॥५३॥
 श्रावक देवलोक माहें जावे छे, ते तो समकत वरत मे पूरा रे ।
 त्यारे पुन वंवे छे शुभ जोगां सूं, वले पाप कर्म करे दूरा रे ॥५४॥
 जे देवलोक जावे ते निरवद गुण सूं, अवगुण लेजावे दुरगत ताणो रे ।
 ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छे, ते तो गुणां री वोहलता जाणो रे ॥५५॥

अंभवी जीव एकंत मिथ्याती, ते निश्चें सुपातर नाही रे ।
 ते पिण कष्ट तणें परतापें जावे छें, नवमा श्रीवेक तांड रे ॥ ५६ ॥
 ते तो समदिष्टी साध श्रावक पिण नाही, ते पिण नवमे श्रीवेक जावें रे ।
 वले सिन्यासी नें गोसाला मती पिण, ते पिण विमांणीक थावे रे ॥ ५७ ॥
 वले कृष्ण पषी तिरजंच मिथ्याती, ते पिण आठमें देव लोक जायें रे ।
 जो देवलोक जावें ते सर्व सुपातर, तो ए पिण सुपातर माह्यो रे ॥ ५८ ॥
 बारे देवलोक ने नव श्रीवेक मांहे, जीव गयो अंनती बारो रे ।
 जे देवलोक गया ते सुपातर हुवे तो, नहीं छले अंनंत संसारो रे ॥ ५९ ॥
 समदिष्टी नें पिण कहीजे सुपातर, ते तो समकत ग्यान सूं जाणो रे ।
 जणरी इविरत नें खोटा किरतब कीषां, एकंत कुपातर पिछांणो रे ॥ ६० ॥
 वले मिश्र पष में पाषंड्यां ने घाल्या, कष्ट नें कहिवा रे लेखें जाणो रे ।
 ते समकत विण छें एकंत इविरती, अधर्मी पेंहलो गुण ठाणो रे ॥ ६१ ॥
 जो किरतब सूं मिश्र पष हुवें तो, सामु पिण हुवे मिश्र पष माह्यो रे ।
 साधु नें पिण कषाय माठी लेख्या आवे, माठ जोग पिण वरते ताह्यो रे ॥ ६२ ॥
 कवे आरत ध्यान साधां ने पिण आवे, माठ आवे अधवसाय परिणांमो रे ।
 तो पिण साधां नें मिश्र पष में न घाल्या, ते तो सगला सावध था कांमो रे ॥ ६३ ॥
 माठ किरतब ने कुमारग कहीजें, इविरत ने अधर्मी कही ताह्यो रे ।
 अधर्म नें कुमारग न्यारा कह्या छे, ठाणांग दशमा ठाणा माह्यो रे ॥ ६४ ॥
 धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी, भिनषां मांहे तीनुई जाणो रे ।
 तिरयंच मांहे छें धर्मी अधर्मी, बाकी सर्व अधर्मी पिछांणो रे ॥ ६५ ॥
 जो किरतब सूं धर्माधर्मी हुवें तो, देवता पिण धर्माधर्मी होथो रे ।
 देवता पिण निरवद किरतब करे छें, जोग लेख्या भला हुवे सोयो रे ॥ ६६ ॥
 देवता ने एकंत अधर्मी कह्या छें, ते तो इविरत रे न्याय जाण्यो रे ।
 ज्यूं धर्मी अधर्मी धर्माधर्मी, विरत इविरत में तीनुं आण्यो रे ॥ ६७ ॥
 संवत अठारें वरस तयाळें, आसोज विद दसम रिचवारो रे ।
 पातर कुपातर ओलखावण काजें, जोड कीषी नाथ दुवारा मभारो रे ॥ ६८ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

आगनल श्री अरिहंत नल, नलरवद दलंन में ऑलण ।
 सलवद दलंन नें थलपवल, मूरख मलंडे तलंण ॥ १ ॥
 मलश्र धरुम पखुपीयो, ते नही सुतर रो नुयल ।
 न्हलखे फद में लोक नें, कूडल कुहेतु लगल ॥ २ ॥
 इवलरत आश्रव में कही, श्री ऑण मुख सुं आप ।
 सेवुयल सेवलयल भलो ऑणुीयल, तीनुई करणल पलप ॥ ३ ॥
 वलरत में धरुम श्री ऑण तणुु, इवलरत अधरुम ऑलंण ।
 मलश्र मूल दीसें नही, करे अगुयलंनल तलंण ॥ ॡ ॥

ढलल

[अधरुम अवनुीत...]

ऑण	भलखुयल	पलप	अठलर,	सेवुयलं	नही	धरुम	लगलर ।	
संकल	मत	आंणऑु	ए,	सलओु	कर	ऑलणऑु	ए ॥ १ ॥	
ऑु	थुओुडे	घणुु	करुु	पलप,	तलण	थुी हुवे	संतलप ।	
मलश्र	नही	ऑण	कहूँ	ए,	समदलदुी	सरधलरुीं	ए ॥ २ ॥	
कहे		अगुयलंनल	एम,	श्रलवक	नही	पुखलं	केम ।	
भलऑन	रतनलं	तणुु	ए,	नफुु	अतल	घणुु	ए ॥ ३ ॥	
इणरुु	नही	ऑलंण	नुयल,	तुयलने	कलम	आंणुी ऑे	ठल ॥	
भुगडुु		भललुीयुं	ए,	वेदुु	घललुीयुु		ए ॥ ॡ ॥	
हलवे	सुणऑु	ओतुर	सुऑलन,	श्रलवक	रतनलं	रुी खलंण ।		
व्रतलं	कर	ऑलंणऑु	ए,	उललतुी	मत	तलंणऑु	ए ॥ ॡ ॥	
केइ	खंड	वलग	मे हुुु,	आंब	घतूरल	दुुुु ।		
फल	नही	सलरलखल	ए,	करऑु	पलरलखल		ए ॥ ६ ॥	
आबल		सुं	ललवललुय,	सुीओे	घतूरुु	आय ।		
आसल	मन	अतल	घणुी	ए,	अंब	लेवल	तणुी	ए ॥ ॡ ॥
पलण	आंब	गुुु	कुमलुय,	घतूरुु	रहुुु		इहलडल ॥	
आय	ने	ऑुवे	ऑेरे	ए,	नेणल	नुरुु	भरुुे	ए ॥ ६ ॥
इण		दलरुुते	ऑलण,	श्रलवक	व्रत	अंब	समलंण ।	
इवलरत		अलगुी	रहुी	ए,	घतूरल	सम	कही	ए ॥ ६ ॥

सेवारे	इविरत	कोय,	व्रतां	साह्यो	जोय ।
ते	भूला	भर्म	में	ए, हिंसा	धर्म में ए ॥ १० ॥
इविरत	सूं	बंधे	कर्म,	तिणमें	नहीं निश्चें धर्म ।
तीनूं	करण	सारखा	ए,	ते विरला	पारिखा ए ॥ ११-॥
कहे	खाधां	बंधइ	कर्म,	खवायां	मिश्र धर्म ।
ए	भूठ-	चलावीयो	ए,	मूरख-	मन भावीयो ए ॥ १२ ॥
ए	मिश्र	नहीं	साख्यात,	तो कांय	सरधे ए बात ।
अकल	नही	भूढ	में	ए, ते	पडिया रुढ में ए ॥ १३ ॥
पोतें	नहीं	बुध	प्रकास,	लागो-	कुगरां रो पास ।
ते	निरणों	नहीं	करे	ए, ते	भव कूवे पडे ए ॥ १४ ॥
साधु	संगत	पाय,	सुणें	एक	चित्त लगाय ।
पखपात	-परहरें	ए,	खबर	बेगी	पडें ए ॥ १५ ॥
आणंद	आदि	दे	जाण,	श्रावक	दसूंई वखाण ।
त्यां	पडिमा	आदरी	ए,	ते चरचा	पाधरी ए ॥ १६ ॥
जे	जे	कीधो	छे	त्याग,	आंणी मन वेंरग ।
ते	करणी	निरमली	ए,	करने	पूरी रली ए ॥ १७ ॥
पिण	बाकी	रह्यो	-आगार,	इविरत	मे आंण्यो आहार ।
आपणी	न्यात	में	ए,	समझो	इण बात में ए ॥ १८-॥
इविरत	मे	दे	दातार,	ते	किम उतरे-भव पार ।
मारग	नहीं	मोष	रो	ए,	छांदो लोक रो ए ॥ १९ ॥
दाता	नें	अन	सुध	-थाय,	पिण पातर इविरत में ल्याय ।
ते	किम	तारसी	ए,	पार	उतारसी ए ॥ २० ॥
जूनो	छे	गूढ	मिध्यात,	तिणरें	किम बेसे ए बात ।
कर्म	घणा	सही	ए,	समझ	पडे नहीं ए ॥ २१ ॥
उपासग	उवाई	उपंग,	वले		सूयगडाअंग ।
सूतर	थी	उधरी	ए,	इविरत	अलगी करी ए ॥ २२ ॥
आगम	नी	दे	साख,	श्री	वीर-गया छें भाख ।
भवीयण	निरणो	करें	ए,	तो	भव सागर तिरे ए ॥ २३ ॥
देइ	सुपातरां	दांन,	न	करें	मन अभिमांन ।
संसार	परत	करे	ए,	सिव	नगरी वरे ए ॥ २४ ॥
दांन	सू	तिख्या	अनंत,	भाष्यो	श्री भगवंत ।
ते	दांन	न	जांणीयो	ए,	न्याय न छांणीयो ए ॥ २५ ॥

ढलल : ६

दुहल

दस दलन भगवते भलषीयल, सुतर ठलणलंग मलंय ।
गुण नलपन्न ज्यलरल नलंम छे, पलण भोललं नें खबर न कलंय ॥ १ ॥
धर्म अघर्म दलय मूलगल, प्रसलख लुक में एह ।
आठलं रलय अर्थ उंवल करे, मलश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मलश्र धर्म परूप नें, कूडलय वलद करंत ।
पलण आठे अघर्म में जलण कहुल, सलंभलय एक दलषुंत ॥ ३ ॥
आंभल ने नलंन खूख नलय, जूदलय जूदलय वलसतलर ।
नलंनभर नलंनलय तेल खल, ए नलंन तणलय परलवलर ॥ ॡ ॥
इम आठेइ दलंन जलंणज्यलय, अघर्म तणलय परलवलर ।
धर्म दलंन में आंन नही, श्री जलण आग्यल बलर ॥ ५ ॥
इतरे समभ पडे नही, तलय सुणलय जूजूलल भेद ।
वलवलरलय सुध वतलवीयलं, म करलय कुष नें खेद ॥ ६ ॥

ढलल

- [जलण छे रलय तूं एत]

कलरपण दलय अनलथ ए, मलेछुलदलक त्यलरी जलत ए ।
रलय सलय नें आरत ध्यलंन ए, त्यलने दे ते अणकंपल दलंन ए ॥ १ ॥
देवलं मूललदलक जमीकंद ए, त्यलमें अनंत जीवलं रल फंद ए ।
इण दीघलं कहे मलश्र धर्म ए, ज्यलरे उदें आयलय मोह कर्म ए ॥ २ ॥
लूण आदल दे पृथवी कलय ए, आंन अगन पलंणी डले वलय ए ।
देवलं ससुत्र वलवध प्रकलर ए, ए दलंन श्री रूलें संसलर ए ॥ ३ ॥
बंदीवलंनलदलक नें कलज ए, त्यलंन कषुट पडुयलं दे सलभ ए ।
थोरलय बलवरी भील कसलइ नें ए, सवलतुतलदलक द्रव्य खवलइ नें ए ॥ ॡ ॥
छुडलवें गर्थ दे तलंम ए, संग्रह दलंन छे तलण रलय नलंम ए ।
ए तलय संसलर नलय उपगलर ए, अरलहंत नलय आग्यल बलर ए ॥ ५ ॥
ग्रह करडल आयल जलंण ए, सुणलय ललगलय पनलय तींण ए ।
फलकर धणलय मरवल तणलय ए, वले कुटंब तणलय जतन भणलय ए ॥ ६ ॥

भय रो घालीयो देवे आंम ए,	भय दान छे तिणरो नाम ए ।
ते ले छे कुपातर आय ए,	तिण में धर्म किहां थी थाय ए ॥ ७ ॥
खरच करे मूआ नें केडे ए,	जीमावे न्यात नें तेडें ए ।
तीनां वारां दिना उनमान ए,	ते चौथो कालुणी दान ए ॥ ८ ॥
वने वरस छ मासी सराव ए,	जिम जिम छे कुल मरजाद ए ।
मूआ पेंली खरचे कोय ए,	घणा नें करे तिरपत सोय ए ॥ ९ ॥
आरंभ कीयां नही धर्म ए,	जीमायां पिण वंधइ कर्म ए ।
बुववंत करो विचार ए,	नही सवर निरजरा लिगार ए ॥ १० ॥
घणा नी लज्या वस थाय ए,	साकडे पडीयो देवें ताय ए ।
देवें सचितादिक धन धान ए,	ते पांचमो लज्या दान ए ॥ ११ ॥
ए सावद्य दान साख्यात ए,	ते दीयो कुपातर हाथ ए ।
कोइ कहे हुवो मिश्र धर्म ए,	ते निश्चे वांछें कर्म ए ॥ १२ ॥
मूकलावो पंराणी मुसाल ए,	सगा ने जूआ जबा संभाल ए ।
जे द्रव्य दे जस रे काम ए,	गरव दान छें तिणरो नाम ए ॥ १३ ॥
किरतनीया वादी मल ए,	रावलिया रामत चल ए ।
नट भोपा आदि वशेप ए,	दान दे त्यानें द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥
ए दान थी वधे कर्म ए,	मूरख कहे मिश्र धर्म ए ।
ज्यांरी प्रतख भूठी वात ए,	खोटी सरधा मूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥
गणिकादिक सेवा कुशील ए,	दान दें त्यानें करवा कील ए ।
ए प्रतख खोटो काम ए,	अधर्म दान छें तिणरो नाम ए ॥ १६ ॥
सूतर अर्थ सीखाय ए,	सुख मारग आणे ठाय ए ।
आपे समकत चारित एह ए,	धर्म दान छें आठमों तेह ए ॥ १७ ॥
वले मिले सुपातर आण ए,	देवे निरदोपण द्रव्य जाण ए ।
ए दान मुगत रो माग ए,	दीयां दलदर जावे भाग ए ॥ १८ ॥
छकाय मारण रो त्याग ए,	कोइ पचखें आण वेंराग ए ।
अमय दान कह्यो जिणराय ए,	धर्म दान में मिलियो थाय ए ॥ १९ ॥
सचितादिक द्रव्य अनेक ए,	उवारा जिम देवें वदोख ए ।
पाछो लेवा रो मन ध्यान ए,	नवमों कार्यति दान ए ॥ २० ॥
लेणात ने जिम दे जेह ए,	हांती नेहतादिक दे देह ए ।
पाछो लेवा रो एकत काम ए,	कतंती दान तिणरो नाम ए ॥ २१ ॥
नवमे दसमे दान ए चाल ए,	धुर वाहरा वालो भ्याल ए ।
ग्यांनी जाणें सावद्य माय ए,	तो मिश्र किहां थी थाय ए ॥ २२ ॥

ए दस दांत तर्को विचार ए, संखेन कखों विसतार ए।
 वीर नीं आग्या में एक ए, आग्या वारे दांत बनेक ए ॥ २३ ॥
 असंजती आवक घरे आवियो ए, निरदोषण आहार वेहरावियो ए।
 तिग्ले वीयां एकत्र पाव ए, भगोती में कहीं जिग आप ए ॥ २४ ॥
 इम सांमळ करो विचार ए, अठे अचर्म तयो पिरवार ए।
 बना सूजयं नीं छात्र ए, श्री वीर गया छे भाप ए ॥ २५ ॥
 घनं अघनं दांत छे दोष ए, विप मित्र म जांगो कोष ए।
 किन सरखे निश्याती चीव ए, नूल में नहीं समकत नीव ए ॥ २६ ॥

ढाल : ७

दुहा

केइ भेषचारी भागल थकां, त्पारें दया नही घट मांय ।
 हिसा धर्म पखीयो, ते नही सूतर रो न्याय ॥ १ ॥
 दया दया मुख सूं कहें, पिण दया री खबर न कांय ।
 भोला नें पाड्या भरम में, ते हणें जीव छकाय ॥ २ ॥
 उवें हिसा धर्म दिदावता, वले बोलें फिरता वेंण ।
 आप हूवें धीरां नें डबोवता, फूटा अभितर नेण ॥ ३ ॥
 हिसावमीं री परतीत सूं, हूवा जीव अनेक ।
 त्पारी खोटी सरवा परगट कळं, ते सुणजों आंण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगना मे]

भावक नें मांहोमांहि छकाय खवावें, वले छकाय मारे नें जीमावे ।
 ए जीव हिसा रो राहज खोटे, तिण मांहें धर्म अनारज बतावे ।
 यां हिसा धर्म्यां रो निरणो कीजो ॥ १ ॥
 छ काय जीवां रो तो घमसांण कीघो, जीमाय कीयो उणें कर्मा सूं भारी ।
 दोनूं कानीं जोयां दीसैं दिवालो, इण मांहें धर्म कहे भेषचारी ॥ २ ॥
 छ काय जीवां नें खावां खवायां, अरिहंत भगवंत पाप बतावें ।
 ए वचन उयापें ने मिश्र पळपे, तिण दुष्टी रे दिल दया न आवें ॥ ३ ॥
 रांकां ने मार धीगां नें पोख्यां, ए तो बात दीसे घणी गेंरी ।
 तिण मांहें दुष्टी धर्म बतावे, ते रांक जीवा रा उठ्वा वेंरी ॥ ४ ॥
 पाडिल भव पाप उपाया तिण सूं, ते हुआ एकद्री पुन पखारी ।
 त्यां रांक जीवां रे उसम उदें सूं, लोकां सहित लागू उठ्वा भेषचारी ॥ ५ ॥
 कुपातर वान में पुन पळवें, तिणसूं लोक जीवां ने हणें वसेप ।
 कुगुर एहवा चाला चलावें, ते मिष्ट हुआ लेइ सावु रो भेष ॥ ६ ॥
 कोइ पूछें तो कहे मून साभां म्हें, पिण सांनी कर जीव मरावण लागा ।
 हेठ्ठो जोबरो खेच अलगा हुवें, ते विरत विहुणा कहीजे नागा ॥ ७ ॥
 कोइ माली रे ओडो मूळो आय उमों, तिणनें मूला गाजर घपाय खवावें ।
 ए एकंत पाप उचाडो दीसैं, तिणमैंइ मूरख धर्म बतावे ॥ ८ ॥

अह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढलल : ८

दुहा

जिण आगना बारली किरिया करें, तिहां जीव तणी हुवें घात ।
 जे हिंसाधर्मी छें जीवडा, तिणरो पाप न गिणें तिलमात ॥ १ ॥
 जीव मारें छें छ काय रा, तिणरो पाप न गिणें लिगार ।
 त्यांरी खोटी सरघा परगट करूं, ते सुणजो विसतार ॥ २ ॥

ढलल

[चतुर विचार करी नै देखो]

अति ही दुष्टी हुवें हिंसाधर्मी, ते तो हिंसा धर्म विढाव रे ।
 दया धर्म तिणसूं भिड्कावें, दुरगति माहें पोंहचावे रे ।
 हिंसा धर्मी रो संग न कीजें* ॥ १ ॥
 साध नें तपावें अगन सूं अग्यांनी, ते तो पाप अठारां में पेंहलो रे ।
 तिण माहें पुन परुवें अग्यांनी, तिणें पिंडत कहीजे के गेंहलो रे ॥ हि० २ ॥
 साधु नें तपायां में पुन परुवें, ते तो मूढ मिथ्याती छे पूरो रे ।
 अगन री हिंसा में पाप न जाणें, ते मत निश्चेंद कूडो रे ॥ ३ ॥
 सभाय स्तवन कहें मुख उघाडे, जब वाउ जीवां री हुवें घातो रे ।
 केइ कहें वाउकाय रो पाप न लागें, आ उंव मती री छें बातो रे ॥ ४ ॥
 श्रावक नें मांहोमां छ काय खवावें, छ काय मारे नें जीमावें रे ।
 ए प्रतष पाप उघाडो दीसैं, तिणमें कुगुर धर्म बतावें रे ॥ ५ ॥
 साधां नें वांदण जाता मारग में, तस थावर री हुवें घातो रे ।
 ज्यां सूं जीव मूआ ज्यानें पाप न सरखें, त्यांरा घट माहें धोर मिथ्यातो रे ॥ ६ ॥
 विण उपीयोगे मारग माहे चालें, जब मरें जीव छ कायो रे ।
 ए प्रतष पाप उघाडो दीसैं, पिण विकलां नें खबर न कायो रे ॥ ७ ॥
 विण उपीयोगे मारग माहें चालें, कदे न मरें जीव किण बारो रे ।
 तो पिण वीर कहों छें तिण नें, छ काय रो मारणहारो रे ॥ ८ ॥
 जो जीव मूआ त्यांरो पाप न लागें, तो जोय जोय नें कुण हालें रे ।
 निसंक थकां छ काय जीवां नें, मरदता मरदता चाले रे ॥ ९ ॥
 मोटा मोटा राजा गया वीर वांदण नें, चउरंगणी सेन्या ले साथो रे ।
 त्यां आरंभ कीघा अनेक प्रकारे, तिहां हुइ छ काय री घातो रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ कहें जीव मूआ रो पाप न लागो, ते तो उठी जठा थी भूठी रे ।
 ए प्रतप पाप उवाडो न सूभे, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे ॥ ११ ॥
 जो वांदण जावें ईया जोवतां, तो जीवां री हिंसा न थायो रे ।
 विण जोयां चालें तो प्रतप हिंसा, तिण सूं निश्चे लागे आयो रे ॥ १२ ॥
 कूंडापंथी रो आचार कूंडापंथी सूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे ।
 एको दुको मिले कोइ आप सारीषो, तिण आगे कांयक बतावें रे ॥ १३ ॥
 उणने भरमाय भरमाय कूंडे घेसावें, माठी माठी वसत खवावें रे ।
 पछें वीरां वीरां ओ पिण इसडो हुवें, जब ओ पिण कूंडा घर्म दिडावें रे ॥ १४ ॥
 ज्युं जीव खवायां में पुन कहे त्यांसूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे ।
 एको दूको कोइ आय मिलें जब, थोडोसों रहस्य बतावें रे ॥ १५ ॥
 इम भोलां नें भरमाय मत मांहे घालें, पछे हिंसा में घर्म सीखावें रे ।
 पछें ते पिण त्यां सा रीषो होय जावें, जब जीव मारतां संका न आवें रे ॥ १६ ॥
 कूंडाघर्मीं कूंडे बेंस जीमें जब, मन रलीयायत थायो रे ।
 ज्युं हिंसाघर्मीं हरषें जीव खवायां, पुन नीपनो जाणें तिण माह्यो रे ॥ १७ ॥
 जीव खवाया में पुन जाणे छे, त्यांरी दया घट मांहीं सूं न्हाठी रे ।
 वले छ काय हणें जीमायां घर्म जाणें, एहवी कुगुरां वीधीं मति माठी रे ॥ १८ ॥
 जीव खवायां पुन कहे छें, पिण पूछ्यां पलटे वाणो रे ।
 ते छानें छाने सरघा सीखावे, ते तो जार गरम जिम जाणों रे ॥ १९ ॥
 जमीकंद मे जीव अनंता, ए भगवंत वायक जांणी रे ।
 मूला खवायां में पुन परुषें, आ कुगुरां री वांणी रे ॥ २० ॥
 कर्म घणा नें बोहल संसारी, आ सरघा साची कर मांनी रे ।
 कुगुर तो वीद वण्या नरक जावा, विकलां नें साथे लिया जांणी रे ॥ २१ ॥
 बाका बंगाला ने कांगरु देस रा, वीडा मंतर धुतारो रे ।
 इण सरघा रो इचरज आवें, ओ घर्म सीखायो कें धारो रे ॥ २२ ॥
 खरव आगरणी ने भात व रोटी, सगा सेंण नेहत जीमायो रे ।
 इण लूटा लूट में पुन परुषें, ओ कुगुरां कूड चलायो रे ॥ २३ ॥
 आ सरघा घराए लोकां नें, हुवा नरक अचिकारी रे ।
 बडा जंट जिम आगे चालें, विकलां लारें बांधी कतारी रे ॥ २४ ॥
 छ काया रा तो पीहर वाजें, सांग साघां रो धरीयो रे ।
 जीव खवायां में पुन परुषें, ओ पीहर पूरो पडीयो रे ॥ २५ ॥
 गृहस्य ने मांहोमां छ काय खवावे, ते पाप थानक छें पेंहलो रे ।
 तिण मांहे मूरख घर्म बतावें, ते पिंडत कहीजे कें गेहलो रे ॥ २६ ॥

संवत् अठारें नें वरस तयाले, आसोज विद आठम सुकरवारो रे ।
 हिसाधर्मी ओलखावण काजे, जोड कीधी नाथ दुवारा मम्मारो रे ॥ २७ ॥



ढलल : १

दुहल

जिण आगम मलहे इम कह्यो, श्री जिण मुख सू आप ।
 अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जीव हण्यल छे पाप ॥ १ ॥
 केइ अग्यांती इम कहें, धर्म काजें हणें जीव कोय ।
 चोखल परिणलंमल जीव मारीयलं, त्यलंरो जलवक पाप न होय ॥ २ ॥
 जीव मारे छे उदीर ने, तिणरल चोखल कहे परिणलंम ।
 ते ववेक विकल सुच बुच विलं, वले जेंनी धरलवें नलंम ॥ ३ ॥
 सलधल नें वलदण जलतलं ने वेहरलवतलं, तिलहलं जीव तणी हुवें घलत ।
 तिणरें कहें पाप ललगें नही, एहवी उंच मत्यलं रीछे वलत ॥ ॡ ॥
 इण विघ करें छें परूपणल, ते विकललं मलंने लीघी वलत ।
 त्यलरी खोटी सरधल परगट कहं, ते सुणजो विख्यलत ॥ ५ ॥

ढलल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ गलडी जोतर सलधलं नें वलदण, चोमलसल में सो कोसलं जलवें रे ।
 जब लटलं गजलयलं ने कीडी मकोडल, मलरग मलहें बोहत चिंथलवें रे ।
 यलं हिसल धर्म्यलं रो संग न कीजें* ॥ १ ॥
 वले नीले अललो नीलण फूलण चोमलसें, ते पिण जीव चीथ्यल जलवे रे ।
 वले नदीयलं अनेक उतरे मलरग में, ठलंम ठलंम रसोई नीपजलवें रे ॥ यलं० २ ॥
 इत्यलदिक हिसल कीघी अनेक प्रकलरें, तिण रो पाप ललगें कहें नलंही रे ।
 इण विघ हिसल मलहे धर्म थलपे, ते विकललं री परषदल मलंहीं रे ॥ ३ ॥
 कहे सलधलं ने वलदण चलल्यो जठलथी, सगलोई धर्म कलरज जलंणो रे ।
 विचें जीव मूअल त्यलंरो पलप न ललगें, आ पलषंडीयलं री वलंणो रे ॥ ॡ ॥
 पलणी री भीक पडे तिण कललें, कोइ वरसतलं वलदण जलवें रे ।
 पलणी रल जीव मूअल छे त्यलंरो, पलषंडी कहे पलप न थलवें रे ॥ ५ ॥
 वले उघलडे मुख वलतलं करतलं चलें, सगपण सोदल करे मलरग मलंही रे ।
 इत्यलदिक सलवघ करे छे वलदण जलतलं, तिणरो पिण पलप कहे छे नलंही रे ॥ ६ ॥
 इण विघ जीव मूअलं रो पलप न जलंणें, तिण रो नियमल निश्चें मत कुडो रे ।
 ते भूठल थकल जेंनी नलंम धरलवे, पिण जिण मलरग थी हूरो रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गायल के अन्त मे है ।

केइ ईयां जोवतां वांढण जावें, केइ जीवां नें मरदता जावें रे ।
 केइ गाडें घोडे रथ बेंसनें जावें, कहें किणनेंइ पाप न थावें रे ॥ ८ ॥
 इण लेखें तो इयां जोवण वाला नें, लाम हुवो नहीं कांई रे ।
 हिवें इसडो हिंसा धर्म्या री सरघा रा, जाब धारों मन मांहीं रे ॥ ९ ॥
 सामायक संबर पोषा में, साधां नें वांढण जावें रे ।
 जब जीव तणी कोइ घात हुवें तो, ते प्राच्छित ले सुघ थावें रे ॥ १० ॥
 सामायक मांहें वांढण जातां हिंसा हुवें, तिणरो पाप लागं प्राच्छित आवें रे ।
 तो ओर वांढण जातां हिंसा हुवें छें, तिण ने पाप क्यूं नही थावें रे ॥ ११ ॥
 साधां नें वांढण जातां मारग में, करे जिंसा फल पावें रे ।
 सावद्य निरवद - तीनूं जोगां सूं, पुन पाप न्यारा न्यारा थावें रे ॥ १२ ॥
 वांढण जातां मन जोग सुघ हुवें तो, एकंत निरजरा थायो रे ।
 वचन नें काया असुघ हुवें तो, तिण सूं पाप लागें छें आयो रे ॥ १३ ॥
 कदे काया नें वचन दोनूं जोग सुघ हुवें, त्यांसूं पिण हुवें निरजरा धर्मो रे ।
 एक मन रो जोग असुघ रह्यो बाकी, तिण सूं लागें पाप कर्मो रे ॥ १४ ॥
 कदे तीनूंइ जोग सुघ हुवें तो, पाप न लागें लिंगारो रे ।
 इण बिध वांढण जातां मारग में, तीनूं जोगां रो व्यापार न्यारो रे ॥ १५ ॥
 उसभ जोगां सूं पाप सुभ जोगां सूं पुन, तिण मांहें म जाणों फेरो रे ।
 सावद्य निरवद रा फल जूवा जूवा छें, दूध पांणी ज्यूं जाणो निवेडो रे ॥ १६ ॥
 पछें भाव सहीत तिण साधां नें वांढा, करमां री कोड खपावें रे ।
 उत्कर्षो पद तीर्थकर पायें, मुगत में बेगो सिधावें रे ॥ १७ ॥
 साधां नें वांढण जावण आवण रो, ए पिण दोनूं किरतब न्यारो रे ।
 बले तीजो किरतब वंदणा रो न्यारो, यां तीनां रो सुणों विसतारो रे ॥ १८ ॥
 साधां नें वांढण जावें ते वंदणा रे कारण, पाछो घर रे कारण घरे आवें रे ।
 साधां नें वंदणा कीधी तिलुतो करनें, ए तीनूं करणी भेली न थावें रे ॥ १९ ॥
 कोइ उघाडे मुख बोल साधां नें बेहरावें, जब मारें छें वाउकायो रे ।
 ते वाउकाय मूयां रो कहें पाप न लागें, इम बोलें पाषंडी वायो रे ॥ २० ॥
 कोइ साधां नें असणादिक आहार बेहरावें, ते बोलें छें मुख उघाडे रे ।
 काया रो जोग तो निरवद तिणरो, वचन सूं वाउकाय नें मारें रे ॥ २१ ॥
 उघाडें मुख बोलें वाउकाय मांख्यां, तिणरो लागें पाप कर्मो रे ।
 काया रा जोग सूं जेणों करनें बेहरायों, तिणरो छें एकंत धर्मो रे ॥ २२ ॥
 काया रा जोग सूं साधां नें बेहरावें, जो काया सूं हुवें जीव घातो रे ।
 जब तो साधु तिण रा हाथां सूं, बेहरें नही तिल मातो रे ॥ २३ ॥

काया रा जोग सूं करतो अजॅणा, साधां नें असणांदिक देवे रे ।
 फूंक देवे करे भटको फटको, जब तो साधु मूल न लेवे रे ॥ २४ ॥
 मन वचन तणा जोग दोनूं असुघ, एक काया तणों जोग चोखो रे ।
 तिणरा हायां सूं साध वेहरें तो, मूल नहीं छे दोखो रे ॥ २५ ॥
 साधु वेंहरें काया रो सुघ जोग हुवें तो, -जब वेंहखां वेंहरायां घर्मनिसकघर्मी रे ।
 मन वचन रा जोग असुघ हुवें तो, तिणरो तिणनें इज लागें कर्मों रे ॥ २६ ॥
 संवत अठारें नें बरस तयाळें, आसोज सुद चवदस सनीसर वारो रे ।
 हिंसावर्मी ओलखावण काजे, जोड कीची कोठाखां मभारो रे ॥ २७ ॥



ढाल : १०

दुहा

केह साधु बाजें लोक में, त्योंरी सरवा अतंत बजोग ।
ते जयातय परगट कहं, ते सांमलजो सहू लोग ॥ १ ॥
जीव मारे नें जीव बचावीयां, कहें धर्म नें पाप ।
ए कर्म उदें पंथ काइ नें, कीबी मिश्र री थाप ॥ २ ॥
इम मिश्र कहें छें तेहनें, न्याय निरणों नहीं घट माय ।
बले बंध नहीं त्योंरें बोलीयें, प्रबल पूछ्यां सुरंत फिर जाय ॥ ३ ॥
त्योंरी सरवा छें मिलती लोक सूं, जिण मारग थी विपरीत ।
त्योंरी एक बारा बांणी नहीं, बोली माहें फूट फजीत ॥ ४ ॥
सरवा परमांगें बोलें नही, बोलें आवें ज्यूं मन दाय ।
हिवें सरवा कहें छूं तेहनीं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[एक चोर चोरें धन पार को०]

काचो पांणी पावें अणुकम्मा आंग नें, तिण रो कहें छें रे मिश्र धर्म ने पाप ।
धर्म अणुकम्मा रो पाप पांणी तणों, इण त्रिवरें करें मिश्र री थाप ।
भव जीवां तुम्हे मिश्र म मानजो * ॥ १ ॥
जो काचो पांणी पायां मिश्र धर्म हुवें, ते पांणी खोस्यां रे तोपिण मिश्र धर्म होय ।
अणुकम्मा आंगे पांणी रा जीवां तणी, पाप लागो रे अंतराय तणों सोय ॥ अ० २ ॥
कोइ अणुकम्मा आंग पंलिया तणी, मुख आंगें रे न्हाखें एकंद्री आंग ।
कोइ अणुकम्मा आंग एकंद्री तणी, उरा लेई रे मेलें एकंत आंग ॥ ३ ॥
पंलियां री अणुकम्मा आंग नें, एकंद्री न्हाव्यां रे धर्म नें पान होय ।
तो एकंद्री नी पिण अणुकम्मा आंग नें, पंवी आगा सूं रे उरा लीवां मिश्र जोय ॥ ४ ॥
जमीकंद आदि दंगण बालोल नें, दांन देवें रे अणुकम्मा आंग ।
कोइ अणुकम्मा आंग जमीकंद री, खोस लेवें रे खातां आगा सूं तांग ॥ ५ ॥
अणुकम्मा आंग जमीकंदादिक दीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तो जमीकंदादिक री अणुकम्मा आंग नें, खोस लीवां रे दोनूं बयूं नहीं होय ॥ ६ ॥
कोइ अणुकम्मा आंग रांक गरीब री, छ ही काया रे हण्णें देवें सतुकार ।
कोइ अणुकम्मा आंग छकाय री, बरज राखें रे कहें तूं मत दें लिगार ॥ ७ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छ ही काय हण रांकां नें पोखीयां,
तो अंतराय दे राखी छ काय नें,
खरच व रोटि आदि जीमण करे,
तिण नें धर्म ने पाप दोनूं कहे,
छ काय हणे नें न्यात पोषीयां,
तो अंतराय दें राखे छ काय नें,
खणावें कूवा बाव तलाव ने,
घणा रे साता हुइ रो धर्म हुवों कहे,
तो कूवा तलाव खणावे तेह ने,
घणा जीव वच्यां रो धर्म हुवे,
जिण जिण किरतव मे मिश्र कहे,
जो अतराय तणों पाप लागसी,
धर्म पाप हुवे एक करणी कीयां,
ते बरज राख्यां पिण दोनूं नीपजें,
पाप छूटा रे छूटें छे धर्म तेहनों,
इसडी दोघड लागी मिश्र धर्म मे,
दान दीघां धर्म पाप दोनू हुवे,
तिण में सदा इविरत तिण रे पापी री,
असजती इविरती जीव तेहने,
भगोती रे सूत खष आठ में,
तिण दान ने साधां जावक छोडीयो,
भलो पिण नही जाणें तिण दान ने,
इण दान तणी परससा करे,
सूयगड अग अघेन इग्यार में,
तिण दान नें परससे अग्यानी थकां,
श्री वीर वचन उथाप ने,
मिश्र करणी माहे लेस्या किसी,
परिणाम मिश्र मे बरतें केहवा,
लेस्या ध्यान अघवसाय परिणाम ते,
धर्म भला माहे पाप भूंडा ममे,
इम पूछ्या रो जाव न उपजे,
तिण सूं आल पंपाल बकें घणो,

तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ॥ ८ ॥
छ काय हण नें रें पोषेघणां जीवा नें ताय ।
पाप आरंभ रो रे धर्म पोष्यां रो थाय ॥ ९ ॥
तिण ने होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
मिण ने पिण रे धर्म नें पाप होय ॥ १० ॥
तिण नें पिण रे कहे मिश्र धर्म ।
हिंसा हुइ रे तिण रो लागो कहे पाप कर्म ॥ ११ ॥
बरजें राख्यां रे हुवे मिश्र धर्म ।
अंतराय दीघी रे तिण रो लागे पाप कर्म ॥ १२ ॥
तिण किरतव नें रे बरज्यां पिण मिश्र जोय ।
तो जीव बचीयां रे तिण रो धर्म क्यू न होय ॥ १३ ॥
ते करणी रे करायां पिण दोनूं होय ।
ते पिण निरणो रे तिण रे नही कोय ॥ १४ ॥
धर्म छटा रे छूटे छे तिण रो पाप ।
तिण मिश्र ने रे कीघां बोहत संताप ॥ १५ ॥
ते तो देसी रे जब होसी पाप धर्म ।
तिण सू बवे रे समें समें सात कर्म ॥ १६ ॥
दान दीघां रे होसी एकंत पाप ।
छठें उद्दें रे कन्हो श्री जिण आप ॥ १७ ॥
देवे नही रे दरावें नही कोय ।
तिण माहे रे धर्म किहाथी होय ॥ १८ ॥
तिण ने कन्हो रे छ काय रो घाती वीर ।
तिण माहे रे साधु किम घाले सीर ॥ १९ ॥
तिण माहे रे कहे धर्म ने पाप ।
खोटी कीघी रे निश्चे मिश्र री थाप ॥ २० ॥
ध्यांन किसो रे किसा वरते अघवसाय ।
इम पूछीजे रे मिश्रवालां नें ताय ॥ २१ ॥
ए तो च्यांरू रे भला के भूंडा जांग ।
मिश्र नही रे तिणरी करजो पिछांग ॥ २२ ॥
जब उ जाणे रे पिडताइ में पडती घूड ।
मिश्र थापण ने रे दोलें अनेक विघ कूड ॥ २३ ॥

हं कहि कहि नैं कित्तरो कहूं घणी खोटी रे सरघा मिश्र री जाण ।
 भारी कर्मा जीवां त्यां व्यादरी, कर्मा वस रे वूडें कर कर तांण ॥ २४ ॥



ढाल : ११

दुहा

केइ भेषधाखां री सरघा बुरी, तिण सुं कर रह्या मूढ विलाप ।
 त्पारे उसभ उदेंरा जोग सुं, किधी मिश्र री थाप ॥ १ ॥
 त्पां गाला मांसुं गोला करे, फेंक्या लोकां मांय ।
 ते मिश्र कहे छें मून में, ते पिण समरु न कांय ॥ २ ॥
 कहे म्हें करणों न करणो कवां नहीं, आगना पिण न खां कोय ।
 ते करणी ग्रहस्थ करे, तिण में पाप धर्म हुवें दोय ॥ ३ ॥
 जो धर्म हुवे तो खां आगना, पाप हुवें तो वरजां तांम ।
 पाप धर्म दोनूं हुवें, तठें मून करां तिण ठांम ॥ ४ ॥
 इण विष करे छें पक्षुषणा, मिश्र कहे छें निसंक ।
 त्पांनं त्पां सारिषा आए मिल्या, त्पारें लागा मिथ्यात रा डंक ॥ ५ ॥
 कहिवा नें मिश्र मुख सुं कहे, त्पांनं पूछ्यां रा नावें जाब ।
 जब बंध नही त्पारें बोलीये, फिर जावें तुरत सताब ॥ ६ ॥
 पाप धर्म रो मिश्र कहे मून में, तिणरी सरघा में वोर अंधार ।
 हिवें किण किण ठिकाणें मून छें, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी नै देखो]

कोइ धुर नें दांन दें बांवी सारें, ते पिण निनांग नें काजें रे ।
 त्पांनं देतां लेतां साधु निजरा देखें तो, बोले नही मून सामें रे ।
 मून में मिश्र कहे छें अग्यानी* ॥ १ ॥
 कोइ साधु देखतां करे सगाई, तिहां साधु तो रहे मून सामो रे ।
 जो मून सामें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेइ मिश्र छें ताजो रे ॥ मू० २ ॥
 कोइ शोरी बावरी नै ससत्तर देवें, ते साधु देखें तो सामें मूनो रे ।
 जो मून में मिश्र होसी तो इणरेइ मिश्र छें, यो किम रहसी निमूनो रे ॥ ३ ॥
 कोइ धान पीसण नै देवें घरटी, वले उखल मूसल देवें कोयो रे ।
 तो साधु देखें तो मून करे छें, तो इणरें पिण मिश्र होयो रे ॥ ४ ॥
 कोइ धास काटण नें देवे दांतरलो, कोइ विरष काटण नें देवें कुहारो रे ।
 जो साध मून साइयां मिश्र हुवें तो, इणरेइ मिश्र छें तयारो रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साध कसी कूदालादिक देतां देखें तो, मून सामें निरदोषों रे ।
 जो मून सामें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोखों रे ॥ ६ ॥
 ससतर अनेक साध देतां देखें तो, साध न बोलें तिण ठोडें रे ।
 जो मून सामें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोडें रे ॥ ७ ॥
 कोइ होको पीवण नें देवें तमाखू, कोइ अगन पांणी घालें तांमो रे ।
 कोइ भांग तिजारो घोटी पावें, साध रे मून सगली ठांमो रे ॥ ८ ॥
 घांणी अरटको सीटों खडवा, बले गाडा हल खडवा काजें रे ।
 त्यानिं बलद कोइ मांग्या देवें, ते साध देखें तो मून सामें रे ॥ ९ ॥
 कोइ रोटी करण ने चूलो देवें, कोइ छांणा देवें बालण काजें रे ।
 कोइ छ काय हणी नें कर दें रसोड, कोइ साध देखें तो मून सामें रे ॥ १० ॥
 कोइ अणगल पांणी रात रो पावें, सुलीयों धान खवावे रांधी रे ।
 कोइ भडमूंजा नें धान देवें सुलीयो, ते साध देखें नें मून सांधी रे ॥ ११ ॥
 कोइ गेंहणा कपडा फूल पेंहरावें, करावें मरदन पीठी रे ।
 बले काचा पांणी थी सिनांन करावें, ते साध देखें तो मून मीठी रे ॥ १२ ॥
 कोइ सोर सीसों सिकारी नें देवें, मछीगर नें सूत जाली काजें रे ।
 कसाइ नें नाणों दें जीव ल्यावण नें, ते साध देखें तो मून सामें रे ॥ १३ ॥
 कोइ अर्थ अनर्थ हिंसक जीव पोषें, कोइ पांणी काढण नें देवें नांणो रे ।
 कोइ चोर नें धान दें चोरी करावण, साध रे तो अठेंइ मून जांणो रे ॥ १४ ॥
 कोइ सावण करण नें तेल खरीदें, कोइ लोहडो देवें ससतर काजें रे ।
 कोइ लोह धवण नें धवण देवें छें, तिहां मून करें ते मुनीराजो रे ॥ १५ ॥
 कोइ हाट हवेली आदि व्याह थापणा रा, मोहरत देवें विवध प्रकारो रे ।
 इसडो वरतमान साधु देखें तो, तिहां साधु न बोलें लगारो रे ॥ १६ ॥
 कोइ लूण पांणी देवें अणुकंपा आणे, बले घालें अगन नें वायो रे ।
 बले वनसपती तस काय देता देखें, मून करें ते मुनीरायो रे ॥ १७ ॥
 कोइ सचित देवें बंदीवानादिक नें, डाकोतादिक नें देवें भय काजें रे ।
 बले खरच करें छें मूआ नें केडें, साधु तो सगलेई मून सामें रे ॥ १८ ॥
 लज्या रो घाल्यों देवें मलेछादिक नें, राबलीयादिक नें देवे मान आंणो रे ।
 कोइ देवें उचारों कोइ पाछो देवें, तिहां साधु रे मून पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 कुसील सेवण नें देवें गणकादिक नें, ते साध देखें तो मून सामें रे ।
 जो मून में मिश्र तो इणरेंइ मिश्र छे, इणनें मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ २० ॥
 सुरियाभ देवता नाटक करण री, आग्या मांगी भगवंत पासो रे ।
 जब भगवंत मून सामी नही बोल्या, त्यां एकंत जांण तमासो रे ॥ २१ ॥

जमाली आग्या मांगी विहार करण री, वीर समीपे आणों रे ।
 काई कारण देखी भगवंत नही बोल्या, पिण नही जाण्यो मिश्र ठिकाणो रे ॥ २२ ॥
 सिष्य होण रो कह्यो भगवंत नें गोशालो, भगवंत कीधी मून तामो रे ।
 अजोग जाणी वीर आरे न कीघो, पिण मिश्र न जाण्यो तिण ठामो रे ॥ २३ ॥
 चित्तजी विनती कीधी केशी कुमार नें, आप सेवीया नगरी पघारो रे ।
 नही जाण रा परिणाम तिण सूं न बोल्या, पिण मिश्र न जाण्यो लिंगारो रे ॥ २४ ॥
 इत्यादिक मून रा बोल अनेक छें, ते कहितां न आवें पारो रे ।
 जो मून में मिश्र तो सगलें मिश्र छें, कहि देणो एकण घारो रे ॥ २५ ॥
 किणहीक मून में मिश्र कहि दे, किणही मून माहे कहें पापो रे ।
 जो सगलेंई मिश्र कहितां लाजे, तो उड गई मिश्र री थापो रे ॥ २६ ॥
 जो मून मे मिश्र कहे छें चोडे, ते पाप कहसी किण लेखें रे ।
 जो पाप कहें तो मिश्र उठें छें, जब किसी सरघा साह्यो देखें रे ॥ २७ ॥
 जो सगले मिश्र कह्यां लोक न मानें, होय जावें जाबक फितुरो रे ।
 जब किण ही मून माहे पाप पिण कहि दे, तो पडी मिश्र माहें घुडो रे ॥ २८ ॥
 जो मिश्र अणहुंतो चलायो अग्यांनी, ते सुतर माहें कठेय न चाल्यो रे ।
 भारी कर्मा जीवां ने डबोवण, घोचो अणहुंतो चाल्यो रे ॥ २९ ॥
 देव गुर तो मिश्र न होवें, तो धर्म मिश्र किण लेखें रे ।
 अभिन्तर आख हीया री फूटी, ते सुतर साह्यो न देखें रे ॥ ३० ॥
 मून में मिश्र कहे छ अग्यांनी, ते उठी अठायी भूठी रे ।
 एक करणी मे पाप धर्म दोनूं कहे त्यांरी, हीया निलाड री फूटी रे ॥ ३१ ॥
 मून मे पाप धर्म दोनूं कहि कहि, घणां लोकां नें विगोया रे ।
 वले सिष सिषणी पोता रा हुता, त्यांने तो जाबक बोया रे ॥ ३२ ॥
 मून मे मिश्र री करें परूपणा, ते खोटें घणों छें दिल को रे ।
 ते श्री जिण आगना उलंघे अग्यांनी, ते थोथो जमायो खिलको रे ॥ ३३ ॥
 अवसाय परिणाम ध्यान नें लेस्या, च्याळं भला के भूंडा आणों रे ।
 भला में धर्म भूंडा में अधर्म, मिण मिश्र रो नही छे ठिकाणो रे ॥ ३४ ॥
 विरत माहे धर्म इविरत माहें अधर्म, पिण मिश्र रो नही छे ठिकाणो रे ।
 इविरत सेवायां एकंत अधर्म, तिण माहे शंका मत आणो रे ॥ ३५ ॥
 पाप अठारे सेव्यां एकंत पाप, ते सेव्यां नही धर्म होयो रे ।
 पाप धर्म री करणी छे न्यारी, पिण मिश्र करणी नही कोयो रे ॥ ३६ ॥
 इण मिश्र रो मुंहमाथो नही दीसैं, ओ निश्चें अणहुंतो गोले रे ।
 ते जिण मारग सूं चोडे भूला, त्यां लीयो मिश्र रो ओलो रे ॥ ३७ ॥

कुपातर दान ते एकत सावद्य, तिणमें श्री जिण आगन्यां नाहीं रे ।
 अंतराय पडें तिण सूं भूनज साभें, पिण धर्म नही तिण मांहीं रे ॥ ३८ ॥
 कुपातर दान नें साधां त्रिविधे त्याग्यो, तिणनें मन करे भलोई न जाणें रे ।
 तिण दान में धर्म पल्पें, ते जिण धर्म केम पिच्छाणें रे ॥ ३९ ॥
 सामायक पोषां मांहीं श्रावक, साव विनां ओरां नें देवा त्यागो रे ।
 जो उ ओर कनें सांनी करे दिरावें, तो सामायक पोषो भागों रे ॥ ४० ॥
 जिण दान सूं भागें सामायक पोषो, वले सावपणों पिण भागें रे ।
 एहवो सावद्य दान छे खोटो, तिणरा आछा फल किम लागें रे ॥ ४१ ॥
 अन पुने पाण पुने कह्यो सूतर में, लेंग सेंग वसतर पुन चाल्यो रे ।
 ते पातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, ओ धोचो मिश्र रो काई घाल्यो रे ॥ ४२ ॥
 अन मिश्रे पाण मिश्रे न चाल्यो, लेंग सेंग वसतर मिश्र नही रे ।
 मिश्र धर्म भगवते न भाष्यो, किणही सूतर रे मांही रे ॥ ४३ ॥
 दस दान कंह्या ठाणांग मांहे, गुण जिसाइ त्यारा नामो रे ।
 आठां दानां रा अर्थ उंवा करे नें, मिश्र ले उठ्या तांमो रे ॥ ४४ ॥
 कहे धर्म अधर्म दान कर दीया न्यारा, आठ दाना रो विवरो नांही रे ।
 तिण सूं मिश्र कहां धर्म अधर्म रो, आठूइ दान रे मांही रे ॥ ४५ ॥
 इण विध मिश्र कहें छें अग्यानी, ते गाढो रह्या मत झाली रे ।
 साची बात सूतर री न मानें, त्यारे आडी छें कर्म रूप राली रे ॥ ४६ ॥
 नव पदारथ मांहे जीव अजीव, न्यारा न्यारा बतावे रे ।
 इण सरधा रे लेखे सात पदारथ, जीव अजीव रों मिश्र थावें रे ॥ ४७ ॥
 नव पदारथ में धुर सूं जीव अजीव, बाकी गुण जिसा नाम सातोई रे ।
 जो आठ दान मांहे मिश्र होसी तो, ए पिण सातोई मिश्र होइ रे ॥ ४८ ॥
 जो सात पदारथ मांहे मिश्र न थापें, तो दान मिश्र नहीं आठो रे ।
 उठें जीव अजीव अठें धर्म अधर्म, बाकी समचे सूतर रो पाठो रे ॥ ४९ ॥
 पुनादिक सात पदारथ मांहे, जीव अजीव रो भेल नांही रे ।
 ज्यूं मेला नहीं छें धर्म अधर्म, आठूइ दान रे मांहीं रे ॥ ५० ॥
 दान साला मंडावें लूण पाणी अगन री, वाउ वनसपति ने तसकयो रे ।
 आय मांगें त्याने दान दे दगचाले, खावा पीवा भोगववा ताह्यो रे ॥ ५१ ॥
 छे काय रा जीवां नें जीवां मारी नें, मन मांनें त्यानें खवावें रे ।
 अथवा हाथां सूं छे काय जीवां रो, कहि कहि नें गटको करावें रे ॥ ५२ ॥
 जो पाप होसी तो सगलां नें पाप, मिश्र होसी तो सगलां नें मिश्रो रे ।
 जो किणही एक बोल में पाप कहें तो, मिश्र होय गयो फिस्तरो रे ॥ ५३ ॥

जीव ने जीव खवावण नें देवें, वले हायां सूं मार खवावें रे।
 ए प्रतष पाप उघाडो दीसैं, तिणमें मिश्र किहाथी थावें रे ॥ ५४ ॥
 जीव खवाया में मिश्र परुमें, ते सरघा घणी छे खोटी रे।
 इण सरघा सूं नरक गया अनता, त्यां लीषी छे अटवी मोटी रे ॥ ५५ ॥
 इण मिश्र मे ओगुण अनेक कह्या जिण, ते पूरा कहणी न आवें रे।
 इम सामल उतम नरनारी, मिश्र रे संग न जावें रे ॥ ५६ ॥

ढाल : १२

दुहा

जिण शासण में जिण आगन्यां बडी, ते ओलखे बुधवांन ।
ज्यां जिण आगन्यां ओलखी नहीं, ते जीव विकल समान ॥ १ ॥
दोय करणी संसार में, सावद्य निरवद जाण ।
निरवद करणी में जिण आगन्यां, तिणसूं पामें पद निरवाण ॥ २ ॥
सावद्य करणी संसार नी, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांही ।
संसार वधें छें तेहथी, धर्म नहीं तिण मांही ॥ ३ ॥
हिंवें किहां किहां छें जिण आगन्यां, किहां किहां आगन्यां नांहिं ।
बुधवंत करे विचारणा, निरणों करों मन मांहिं ॥ ४ ॥

ढाल

कोइ करें पचखांण नोकारसी, तिणरी आगन्यां द्यो जिण आप हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो ।
जिण आगन्यां सहीत नोकारसी, कीधां कटें सात आठ कर्म हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, ते तो आपरो भाष्यो नहीं धर्म हो ॥ १ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडो, तिणरी आग्या द्यो थे जिणराज हो ।
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दें, तठे आप रहो मून साम हो ॥ २ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, ते तो आपरो सीखायो छें धर्म हो ।
तिण सूं कर्म कटें तिण जीव रे, उत्तकट्टा पामें सुख परम हो ॥ ४ ॥
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दे, ते तो आपरो सीखायो नहीं धर्म हो ।
ओ तो उपगार संसार नों, तिणसूं कट्टा न जाण्या आप कर्म हो ॥ ५ ॥
कोइ साधां नें वैहरावें एक तिणखलो, तिणरी आग्या द्यो आप साण्यात हो ।
कोइ श्रावक जीमावें कोडांग में, तिणरी आग्या न द्यो अंसमात हो ॥ ६ ॥
साधां ने वैहरावें एक तिणखलो, तिणरें बारमों वरत कह्यो आप हो ।
तिण सूं आग्या दीवी आप तेहनें, वले कट्टा जाण्या तिणरा पाप हो ॥ ७ ॥
कोइ श्रावक नें जीमावें कोडांग में, ते तो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ।
उण छ कय रो सख पोखीयो, तिण में धर्म री न करी थे थाप हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ करें वीयावच श्रावकां तणी,
 उण तीखो कीयों सख छ काय रो,
 उघाडे मुख गुणें छें सिघंत ने,
 जिण मे आप तणी आगन्यां नही,
 उघाडे मुख गुणें छे नवकार नें,
 तिणमे धर्म सरखें भोला थका,
 जेणा सूं गुणें एक नवकार ने,
 तिणमे आप तणी छे आगन्यां,
 केइ साधु नाम धराय ने,
 त्या मेष भांड्यो भगवानं रो,
 मून कही थे साधु रें सावद्य दान मे,
 तिणरो फल ते सूतर में बतावीयो,
 प्रदेसी राजा कह्यों केसी सामं ने,
 म्हारे सात सहंस गाम छे खालसे,
 एक भाग राण्यां निमते करे,
 तीजो भाग घोडा हाथ्या निमते करें,
 च्याहू भाग सावद्य कांमो जांग ने,
 जो उवे धर्म कटेइ जांगता,
 सावद्य किरतब च्याहू भाग राज रा,
 तिण सू च्याहू बरोबर जाण ने,

दान देना मांडी दानसाल नें,
 सात सहंस गांम हुता खालसे,
 च्याहू भाग करे आप न्यारो हुवो,
 तिण तिथ न कीधी तिण राज री,
 ओ तो दान ओरां ने भलाय ने,
 चवदें प्रकार नो दान साध ने,
 चोथो भाग ते दान रे ताल के,
 तीन भाग ज्युं इण ने पिण थापीयो,
 साब सतरसो गांम दान ताल के,
 त्यांरा हासल रो दान रंवाय ने,
 टालवा गांम जाणीजें खालसे,
 हासल आयो ते तो जाणीजे घणो,

तठें पिण आपरें छें मून हो ।
 ते किरतब जाणों आप जबून हो ॥ ९ ॥
 वले कोडांग में गुणे छे नवकार हो ।
 तिण मे धर्म न सरखूं लिगार हो ॥ १० ॥
 तिण वाउ काय माख्या असंख हो ।
 तिणरें लागा कुगुरां रा डंक हो ॥ ११ ॥
 तिण सूं कोडा भवां रा कटें कर्म हो ।
 तिणरे निश्चे छे निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 प्रससे छे सावद्य दान हो ।
 त्यारा घट माहे घोर अग्यांन हो ॥ १३ ॥
 ते तो अंतराय पडती जाण हो ।
 तिणरी बुधवंत करसी पिछांग हो ॥ १४ ॥
 म्हारे तो छें चढतों बेराग हो ।
 तिणरा करे च्यार भाग हो ॥ १५ ॥
 बीजो भाग करे खजान हो ।
 चोथो भाग करे देवा दान हो ॥ १६ ॥
 मून सामे रह्या केसी सामं हो ।
 तो करता तिणरा गुणग्राम हो ॥ १७ ॥
 त्यामें जीवां री हिंसा अतंत हो ।
 मून सामी मतवंत हो ।
 हूं बलिहारी हो श्री जिणजी री मून में ॥ १८ ॥
 परदेसी राजान हो ।
 तिणरो चोथो भाग दीयों दान हो ॥ १९ ॥
 तिण जाण्यो संसार नो माग हो ।
 रह्यो सुगत सं सनमुख लाग हो ॥ २० ॥
 तिणरी पूछी न दीसे बात हो ।
 ओ तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ २१ ॥
 नही राख्यो पोता रे हाथ हो ।
 छ काय जीवां री जांणी घात हो ॥ २२ ॥
 दिन दिन प्रते मठेर पांच गांम हो ।
 दानसाला माडी ठाम ठाम हो ॥ २३ ॥
 ते तो चोथा आरा रा था गाम हो ।
 नेपे हुंती घणी अमांम हो ॥ २४ ॥

हासल आयो हुवें एकीका गांम रो,
 दिन दिन प्रतें मठेरा पांच गांम रो,
 इण लेखें हुवो एक वरस तणों,
 इधको ओछो तो आप जाणें रहा,
 पांणी लागें पांच कोड मण आसरें,
 अगन पिण एक कोड मण जांणीजें,
 नित धान हजारों मण रांधतां,
 तठें लूण मणा बंध लागतो,
 फूंहारादिक अनेक पांणी मभे,
 धान हजारों मण रांधतां,
 दिन दिन प्रतें मारी छें छ काय नें,
 त्यांरी हिंसा रो पाप गिणें नहीं,
 एहवा दुष्ट हिंसाधर्मी जीव नें,
 तिणरें पिण घट में घोर अंधार छें,
 केइ जीव खवायां मे पुन कहे,
 ए दोनूई बूडें छे बापडा,
 जीव खाधां खवायां भलो जांणीयां,
 आ सरधा परूपी छें आपरी,
 केइ कहें जीवां नें माख्यां बिनां,
 जीव माख्यां रो पाप लागें नहीं,
 केइ कहें जीव माख्यां बिनां,
 पिण जीव मरण री सांती करे,
 केइ धर्म नें मिश्र करवा भणी,
 तिणरा चोखा परिणाम किहां थकी,
 कोइ जीव खवावें छे तेहनां,
 कहें धर्म नें मिश्र हुवें नहीं,
 जीव खाण रा परिणाम छें अति बुरा,
 यूही भोलां नें न्हांखें भरम मे,
 जिण ओलख लीघी आपरी आगन्यां,
 तिण आप नें पिण ओलखे लीया,
 जिण आग्या न ओलखी आपरी,
 तिण आपनें ओलख्या नहीं,
 दस सहंस मण रें उनमान हो ।
 उणो पचास हजार मण धान हो ॥ २५ ॥
 पूणा दोय कोड मण धान हो ।
 म्हें तो अटकलूं सं बांध्यो उनमान हो ॥ २६ ॥
 पूणा दोय कोड मण रांध्यां धान हो ।
 लूण छ लाख मण रें उनमान हो ॥ २७ ॥
 अगन पांणी हजारों मण जाण हो ।
 वाउकाय रो ई बोहत धमसांण हो ॥ २८ ॥
 वले वनसपती पांणी मांय हो ।
 तिहां अनेक मूजा तसकाय हो ॥ २९ ॥
 कीधी अनत जीवां री घात हो ।
 तिणरे हिंसा धर्मी रो मिथ्यात हो ॥ ३० ॥
 केइ जाणे छें अग्यांनी साध हो ।
 ते पिण नीमाइ निश्चें असाध हो ॥ ३१ ॥
 केइ मिश्र कहे छे मूढ हो ।
 कर कर मिथ्यात री रूढ हो ॥ ३२ ॥
 तीनूई करणां पाप हो ।
 ते पिण दीघी आगन्यां उथाप हो ॥ ३३ ॥
 धर्म न हुवें तांम हो ।
 चोखा चाहीजे निज परिणाम हो ॥ ३४ ॥
 मिश्र न हुवें छे तांम हो ।
 ले ले परिणामां रो नांम हो ॥ ३५ ॥
 छ काय रो करें धमसांण हो ।
 पर जीवां रा लूटें छें प्राण हो ॥ ३६ ॥
 चोखा कहे छें परिणाम हो ।
 जीव खवायां विण तांम हो ॥ ३७ ॥
 खवावण रा पिण खोट परिणाम हो ।
 ले ले परिणामां रो नांम हो ॥ ३८ ॥
 जिण ओलख लीघी आपरी मूंन हो ।
 तिणरी टल्गी माठी माठी जूंन हो ॥ ३९ ॥
 आपरी नहीं ओलखी मूंन हो ।
 तिणरें बघसी माठी माठी जूंन हो ॥ ४० ॥

केइ जिण आगन्या बारें धर्म कहे, जिण आग्या मांहे कहे छें पाप हो ।
 ते दोनूं विघ बूडे छे बापडा, कूडों कर कर अग्यांनी विलाप हो ॥ ४१ ॥
 आपरो धर्म आपरी आग्या मभे, आपरो धर्म नहीं आपरी आग्या बार हो ।
 जिण धर्म जिण आग्या बारे कहे, ते पूरा छे मूंड गिवार हो ॥ ४२ ॥
 आप अवसर देखी नें बोलीया, आप अवसर देखे साप्पी मून हो ।
 जिहा आप तणी आगन्यां नही, ते करणी छें जाबक जबून हो ॥ ४३ ॥
 भेषवारी थापे सावच्च दांन नें, तिण दांन सू दया उठ जाय हो ।
 वले दया कहे छ काय बचावीयां, तिण सू दांन उथप गयो ताय हो ॥ ४४ ॥
 छ काय जीवां ने जीवां मार ने, कोइ दांन दे संसार रे मांय हो ।
 तिणरे तो - छ काय जीवां तणी, घट मे दया रहे नही कांय हो ॥ ४५ ॥
 कोइ दांन देवें तिणने वरज नें, जीवां बचावें छ काय हो ।
 ते जीव बचायां दांन उथपें, त्यांसूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ ४६ ॥
 छ काय जीवां नें मारें दांन दें, तिण दांन सू मुगत न जाय हो ।
 वले फिर फिर बचावे छ काय ने, तिण सू कर्म कटे नही ताय हो ॥ ४७ ॥
 सावच्च दांन दीयां दया उथपें, सावच्च दया सू उथपें अभय दांन हो ।
 ते सावच्च दया दान संसार नां, त्यांने ओलखे ते बुचवान हो ॥ ४८ ॥
 त्रिविधे त्रिविधे छ काय हणवी नही, आ थें दया कही जिण राय हो ।
 दान देणों सुपातर ने कह्यो, तिण सू मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ ४९ ॥
 दांन दया दोनूं मारग मोष रा, ते तो आपरी आगन्यां सहीत हो ।
 याने हूडी रीत आराधीयां, ते गया जमारो जीत हो ॥ ५० ॥
 आप तणी आगन्यां ओलखायवा, जोड कीधी धेनावस मझार हो ।
 संवत अठारे चमालेसमे, माहा सुदि सातम विसपतवार हो ॥ ५१ ॥



दुहा

केइ भेषधारी कहें म्हें धर्म री, आगन्यां छां छां तांम ।
 पाप करतां नें वरज छां, मून करां मिश्र नें ठाम ॥ १ ॥
 राइ पाप नें धर्म मेरू जितों, धर्म राइ नें मेरू सम पाप ।
 अनेक भांगा छे इण मिश्र ना, तठे रहां चुप चाप ॥ २ ॥
 पाप करण री आगन्यां छां नहीं, मिश्र री पिण आग्या छां नांय ।
 मिश्र करता नें पिण वरजां नही, म्हें जाण रहां मन मांय ॥ ३ ॥
 इण विध करे छें पल्पणा, पिण बोले नही बंध लगार ।
 प्रश्न पूछ्यां रा जाब न उपजें, जब फिरतां न लगें बार ॥ ४ ॥
 कहें एकंत धर्म री छां आगन्या, पाप करतां नें वरजां साख्यात ।
 मून करां मिश्र नें बोलां नहीं, पिण यां तीनुइ में फिरजात ॥ ५ ॥
 हिवें कुण कुण प्रश्न पूछ्यां, त्यांरी सरघा रो पडें उघाड ।
 ते चित लगाय नें सांभलो, अल्प मातर कहूं विसतार ॥ ६ ॥

ढलल

[तीजी सुमत धे यषशा य]

श्रावक श्रावक री वीयावच करे, सामायक नें पोषा मांही रे ।
 तिणमें धर्म कहें छें निसंक सुं, तिणरी आगन्यां देवें नांही रे ।
 सरघा सुणजो निनवा तणी* ॥ १ ॥
 पेंहला कहिता धर्म री छां आगन्यां, धर्म सरखें आग्या देवें नांही रे ।
 त्यांरा बोल्यां री ठीक त्यांनं नही, सुच ववेक नही त्यां मांहीं रे ॥ स० २ ॥
 श्रावक श्रावक री पडिलेहण करे, साता पुछें करे नमसकारो रे ।
 तिण में पिण धर्म चोडे कहें, तिणरी पिण आग्या नही दे लगारो रे ॥ ३ ॥
 श्रावक श्रावक नें देवें सामायक मभे, पुंजणी कपडादिक जांणी रे ।
 तिण ने धर्म जाणे पिण न दें आगन्यां, ते तो पूरा छें मूढ अयांणो रे ॥ ४ ॥
 इत्यादिक बोल अनेक में, कहें छे एकंत धर्मों रे ।
 तिण धर्म री नहीं दें आगन्यां, जब नीकल गयो सरघा रो भर्मो रे ॥ ५ ॥
 कहें म्हें धर्म करण री छां आगन्यां, यूंही बोले अनांखी कूडो रे ।
 जो धर्म करण री आगन्यां दें नहीं, जब सरघा में पड गइ धूडो रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

करणे करण रो उपदेस दे,
 वले धर्म निकेवल कहें तेह में,
 पाप लागे जाणें आगन्यां दीयां,
 एहवी उधी सरधा छे तेहनीं,
 पाप कहें धर्म री आगन्यां दीयां,
 धर्म करण री आगन्या देतां डरें,
 कदा जाव अटकता जाण ने,
 धर्म कह्यो पाछिलां बोलां मभे,
 दोय बाना मिश्र कहें तेह ने,
 त्यानें पाछो जाव न उपजे,
 तो सामायक पोषा मभे,
 ते दोय बांन मिश्र कीयां,
 जब उ कहे दोय बाना मिश्र कीयां,
 एहवी उधी ले उठे तेहने,
 मिय कीयां सामायक भागें नहीं,
 तो उवे मिश्र सरधे छे सावद्य दान में,
 आठ दाना ने पिण मिश्र कहे,
 मिश्र दान भगवेंते न भाषीयो,
 ओ मिश्र कीया सामायक भागे नांहीं रे,
 जो आठ दान सामायक में दे नहीं,
 श्रावक ने अनेक दरब दीयां,
 मिश्र कीयां सामायक भागे नहीं,
 धर्म तणी तो नहीं देवे आगन्यां,
 वले पाप तणी देवें आगन्यां,
 कहें म्हे पाप करता ने वरज थां,
 त्यारी सरधा री समरु त्यानें नहीं,
 साध चेला चेली करे तेहमें,
 पाप जाणें न देवें आगन्यां,
 साध साववी असणादिक भोगवे,
 तिणमें पाप जाणें न देवे आगन्यां,
 वीयावच करावें तिण साध नें,
 तिणरी पिण देवें छे आगन्यां,

तिणरी प्रससा गुणग्राम करता रे ।
 तिणरी आगन्यां नहीं दें डरता रे ॥ ७ ॥
 प्रससा कीयां जाणें धर्मो रे ।
 त्यारि मोटें मिथ्यात नो भर्मो रे ॥ ८ ॥
 ते उठी जठायी भूठी रे ।
 त्यारो हीया निलाड री फूटी रे ॥ ९ ॥
 तो उ फिर जावे करे तांना मांना रे ।
 त्यामे कहि दे मिश्र दोय बांना रे ॥ १० ॥
 न्याय चरचा माहे वांघ लीजें रे ।
 एहवा प्रश्न पूछीजे रे ॥ ११ ॥
 राख्यो छे तिण उपरंत त्यागो रे ।
 सामायक ने पोषो भागो रे ॥ १२ ॥
 सामायक पोषो भागें नांहीं रे ।
 भूठ बोलण री संक न काई रे ॥ १३ ॥
 ते पिण चोडें कूड चलायो रे ।
 ते पिण देणों सामायक माह्यो रे ॥ १४ ॥
 ते पिण एकंत मूसावायो रे ।
 ओ पिण गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ १५ ॥
 तो आठ दान सामायक में देणा रे ।
 त्यां विकलां री बोली रा क्या कॅणा रे ॥ १६ ॥
 दोय बांना मिश्र कहें ताह्यो रे ।
 तो श्रावक ने देणा सामायक माह्यो रे ॥ १७ ॥
 ते मत जावक कुडो रे ।
 तिण सरधा रो सुणजों फित्तूरो रे ॥ १८ ॥
 ते पिण थोडा माहें फिर जायों रे ।
 आ पिण कूडी करे वकवायों रे ॥ १९ ॥
 पाप जाणें छे मूढ अग्यानी रे ।
 त्यानें किण विच कहीजे ग्यानी रे ॥ २० ॥
 कपडादिक दरब वशेष रे ।
 निज बोल्या साह्यो नहीं देखे रे ॥ २१ ॥
 तिणमें पाप निकेवल थापें रे ।
 आपरी सरधा आप उथापें रे ॥ २२ ॥

साध नदी उत्तरें छें तेहमें, पाप निकेवल जाणें रे ।
 तिणरी पिण आग्या देतां थकां, संका मूल न आणे रे ॥ २३ ॥
 इत्यादिक साधां रा क्राम करावतां, ते पिण निरवद नें निरदोषों रे ।
 तिणमे पाप जाणें दें आगन्यां, त्यांरा बोल्या गया सर्व फोको रे ॥ २४ ॥
 पेंहला कहितां वरजां निसंक सूं, पाप करतां नें जोयों रे ।
 ते वरजणों तो जिहांइ रह्यो, उल्टा आगन्यां देवें छें ताहों रे ॥ २५ ॥
 पाप री करणी जाणें छें तेहनें, तिणरी आगन्यां देवण सूरा रे ।
 धर्म करणी जाणें न दें आगन्यां, दोनूं परकारें मूढ छें पूरा रे ॥ २६ ॥
 हरीया जब देखें नें भिडकें मिरगला, डरता थका दूर जायो रे ।
 पास मांड्या देख डरे नाहीं, जाय पडें जाल माह्यो रे ॥ २७ ॥
 मिरग सरीषा अग्यांनी जीवडा, धर्म जाणें आगन्यां दे नाहीं रे ।
 पाप करणी जाणें देवें आगन्यां, ते खूता मिथ्यात रे माहीं रे ॥ २८ ॥
 कहितां धर्म करण री छां आगन्यां, पाप करता नें वरजां ताहों रे ।
 यां दीयां बोलां में भूठा पड्यां, मिश्र में भूठा किण विघ थायो रे ॥ २९ ॥
 उघाडे मुख गुणें छे नोकार ने, वले सूतर बोल सप्तायो रे ।
 तिणमें दोय बांना मिश्र कहे, मिश्र में मून कहें छे ताह्यो रे ॥ ३० ॥
 उघाडे मुख गुणें छें तेहनें, कहें मत गुण उघाडें मूढें रे ।
 कहे मून करां म्हें मिश्र में, तो ए मून भागे कांय बूडे रे ॥ ३१ ॥
 सामायक वालों छूटा रो विनो करें, वले वीयावच ने नमसकारो रे ।
 तिणमे मिश्र सरधें नें वरज दे, जब पड गयो मून में बगारो रे ॥ ३२ ॥
 इत्यादिक बोल अनेक मे, मिश्र जाणें छें मूढ अयाणो रे ।
 ते पिण मिश्र करतां नें वरज दे, मून भांग दीधी मूढ जाणो रे ॥ ३३ ॥
 कहे म्हे मिश्र ठिकाणे बोल बोलां नहीं, तेहीज वरजें मिश्र ने जाणो रे ।
 मून छोडे नें लागा बोलवा, त्यारे ते पिण नही छें पिछाणो रे ॥ ३४ ॥
 दोय बांना तो मुख सूं कहें दीया, तो ए मून कहें किण लेखें रे ।
 दोय बांना कह्यां तो मून उड गइ, तिण साह्यो मूढ न देखें रे ॥ ३५ ॥
 दोय बांना मिश्र जाबक नही, ए तो यूं ही चलावे कूडो रे ।
 तेहीज मिश्र करतां नें वरज दें, जब पड गइ मून में धूडो रे ॥ ३६ ॥
 मून मे दोय बांना मिश्र कहें, ते तो उठी जठथी भूठी रे ।
 सावद्य में पुन पाप दोनूं कहे, त्यारी हीया निलाखी री फूटी रे ॥ ३७ ॥
 मून वाला नें मूल बोलणो नही, कोइ परुषें कयूं ही रे ।
 मिश्र थाप्या तो मून उठे गइ, ए तो मूनं बतवें यूं ही रे ॥ ३८ ॥

मून करो भावे मिश्र कहो, यांरो परमारथ एक जाणो रे ।
 एह्वी ज्वी करे छे परूपणा, मिश्र थापण नें मूढ अयाणो रे ॥ ३६ ॥
 कोड प्रश्न पूछें साव नें, लोकां ना मारग सुं मिलता तांमो रे ।
 जब जाणें नही तिणने समभत्ता, जब मून करें तिण ठामो रे ॥ ४० ॥
 जो जाव देवे जयातथा तेह नें, तो उ करे जिण धर्म री हेला रे ।
 प्रवचन तणी थावें हीणता, जब मून सामें तिण बेलं रे ॥ ४१ ॥
 इत्यादिक अनेक कारण पड्यां, जब साधु तो मूल म बोले रे ।
 पिण मिश्र न जाणे तेह ने, अवसर देखें तो बोले मून खोले रे ॥ ४२ ॥
 मिश्र दांन कहें छे तेह नें, घट माहे घोर अंधारो रे ।
 आप डूवे ओरां ने डवोवता, ते गया जमारो हारो रे ॥ ४३ ॥
 दस दांन भगवते भाषीया, त्यामें मिश्र दांन नही कोइ रे ।
 कोइ आठ दांनां में मिश्र कहें, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ४४ ॥
 दस दांन कहा छें तेह में, केयक आछां ने केयक भूंडा रे ।
 पिण मिश्र दांन जावक नही, मिश्र सरचे अग्यांनी कांय वूडा रे ॥ ४५ ॥
 कहि कहि नें कितरो कहूं, दांन मिश्र तो नांही रे ।
 ज्यां मिश्र दांन पल्पीयो, ते खूता मिथ्यात रे माही रे ॥ ४६ ॥
 मिश्र दांन मिथ्यात ओलखायवा, जोड कीधी पाली सहर मकारो रे ।
 संवत अठारे वरस बावने, सांवण विद तेरस मगलवारो रे ॥ ४७ ॥



ढाल : १४

दुहा

केइ मेघ घास्यां तणी, सरदहणा खोटी घणी छें अतंत ।
वले खोटी करें छे परूपणा, हीयाफूट ज्यूं मूढ बकंत ॥ १ ॥
श्रावक श्रावक रों विनो वीयावच करें, तिण में कहें छें धर्म ।
वले धर्म कहें साता पूछीयां, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ २ ॥
साध साध रो विनों वीयावच करें, तिणरें कटें छें पाप कर्म ।
ज्यूंश्रावक श्रावकां रों विनों वीयावच करें, तिणनें पिण छें धर्म ॥ ३ ॥
साध साध रों विनों वीयावच करें, तिम श्रावक श्रावक रो जाण ।
यो विनें मूल धर्म जिण भाषीयो, इसडी कहें छें मूढ अयाण ॥ ४ ॥
त्यांरी सरधा री खबर त्यांने नही, यूंही करें बकवाय ।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आग्या मे]

साध रो विनों वीयावच साध करें छें, ज्यूं श्रावक ने श्रावक रो करणों ।
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपें, त्यांरी खोटी सरधा रो सांभलजो निरणों ।
इण उंची सरधा रो निरणों कीजों* ॥ १ ॥
एकण कागादिक मारण रो नेम कीघो, ते समदिष्टी हुवो श्रावक व्रतघारी ।
तिण पाछें एकण बारे व्रत लीघा, सांकडा सांकडा सूंस कीघा भारी ॥ २ ॥
कागादिक मारण रो सूंस पेंहला कीयो छें, ते तो श्रावक छें उण सेती मोटों ।
तिणरो विनों करणों साघां रे रीत छें तिम, न करे तो यांरें लेखें यारो मत खोटों ॥ ३ ॥
उणते आवतों देख उभो होणों, आसण छोड विनों करणों सीस नमाय ।
साता पूछणी दोनूं हाथ जोडी नें, आपथी उंचें आसण बेसावणों ताय ॥ ४ ॥
इत्यादिक विनों साघ रो साध करें तिम, श्रावक रो विनो श्रावक नें सारोइ करणों ।
न करे तो यांरो मत याहीज उथाप्यो, आप राबोल्यां रो नहीं आप रें निरणों ॥ ५ ॥
छोटा साध नें साध री आग्या में रहणों, ज्यूंश्रावक नें आवकां री आग्या मांहे रहणों ।
छोटा साध नें साध आग्या में चलावें, ज्यूंश्रावक नें श्रावकां री आग्या पालण रो कहिणों ॥ ६ ॥
छोटा साध बडा री आग्या में न चालें, ते तो च्यार तीरथ दीसे छें भूंडा ।
ज्यूं यारा श्रावक उणरी आग्या नहीं पालें, तो यांरा श्रावक यांरें लेखें सगलाई बूडा ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

छोटा साधां ने बडा सर्व साधां री,
 ज्यूं यांरा श्रावक ने बडा सर्व श्रावकां री,
 यारा छोटा श्रावक बडा सर्व श्रावकां री,
 तो यारे लेखे यांरां सगलाइ श्रावक,
 बडा श्रावक रो करें विनो वीयावच,
 धर्म कहे पिण आगन्या न देवे,
 कोइ मा बाप पेहली बेटो श्रावक हुवों,
 यारे लेखे बेटा री आग्या मांहे रहणों,
 पेहिला श्रावक रा व्रत बेटे लीया छे,
 तिणरो विनों करणों साधां रे रीत छे तिम,
 बेटा ने आवतां देख ऊभो हुणो,
 साता पूछणी दोनूइ हाथ जोडी ने,
 मन गमती वियावच करणी बेटा री,
 बले रेकारो बेटा ने कदे नही देणों,
 इत्यादिक साध रो साध विनों करे तिम,
 न करे तो यारो मत यांहीज उथाप्यो,
 छोटा साध नें बडा साधां री आग्या में रहिणो,
 जो छोटा साध नें बडा साध आग्या में चलावे,
 छोटा साध बडा री आग्या ने न चालें,
 जो उ बाप बेटा री आग्या नहीं पाले,
 छोटा साध ने बडा सर्व साधां री,
 ज्यू बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे,
 जो मा बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे,
 तो यारें लेखे मा ने बाप दोनूइ,
 कोइ बाप पेहली बेटो साध हुवो छे,
 ज्यूं यारे लेखे विनो करणों बेटा रो,
 पेहला तो बेटा री बहुयां श्रावका हुइ,
 यांरी सरघा रें लेखे सासू ने बहुयां रो,
 बडा साध रो विनो वियावच करे तिम,
 न करें तो सासू अवनीत बहुयां री,
 जो उवा सासू बहुयां ने पगे ल्हावे,
 यारे लेखें तो इण अवनीत पणा सूं,

आसातणा टालणी छे तेतीस ।
 आसातणा टालणी निसदीस ॥ ८ ॥
 आसातणा न टाले रूडी रीत ।
 चोडे दीसे उघाडा अवनीत ॥ ९ ॥
 यारें लेखें तो ओहीज विने मूल धर्म ।
 थें भूला रे भूला अग्यांनी भर्म ॥ १० ॥
 पछें मा बाप श्रावक हुआ वरत धार ।
 नित नित बेटा ने करणों नमसकार ॥ ११ ॥
 ते मा बाप थी तो छे श्रावक मोटों ।
 न करें तो यारें लेखें यांरों मत खोटो ॥ १२ ॥
 आसण छोड विनो करणों सीस नमाय ।
 आप थी उंचे आसण बेंसावणों ताय ॥ १३ ॥
 सेवा भगत करणी बेटा री दिन रात ।
 बात करतां विचे नही करणी वात ॥ १४ ॥
 बेटा रो विनो मा बाप ने सारोइ करणों ।
 आप रा बोल्यां रों नही आप रे निरणों ॥ १५ ॥
 ज्यू मा बाप ने बेटा री आग्या मे रहिणो ।
 तो बाप ने बेटा री आग्या पालण रों कहिणों ॥ १६ ॥
 ते तो च्यार तीरथ माहे दीसे छे भूंडा ।
 तो यारे लेखे मा नें बाप दोनूइ बूडा ॥ १७ ॥
 आसातणा टालणी तेतीस ।
 तिणरी आसातणा टालणी निसदीस ॥ १८ ॥
 तिणरी आसातणा न टालें रूडी रीत ।
 चोडे दीसे उघाडा अवनीत ॥ १९ ॥
 तिणरों विनो करे दिष्या में बडो जाण ।
 आप सूं वरतां मांहे बडो पिछाण ॥ २० ॥
 पछे सासू हुइ बारे व्रत धारी ।
 विनो करणों रहिणो आगन्या कारी ॥ २१ ॥
 बहुआ रो विनो सासू ने करणों ।
 विने मूल धर्म गयो किम तरणों ॥ २२ ॥
 जव तो यारें लेखें सासू गाढी वूडी ।
 सासू ने बहुयां सारी जासी नरक नी तूडी ॥ २३ ॥

राजा रा अमराव नें चाकर बांदा,
 राजा सूं पेंहला श्रावक व्रत लीघा,
 वले छतीस पवन माहें श्रावक बडा छें,
 त्यारो विनो करणों साघां री रीत छें तिम,
 चक्रवत् सूं बडो छें दास रो दास,
 ज्यूं यारें लेखें राजा नें छतीस पवन रों,
 छोटो श्रावक सामायक पोषां माहें बेठों,
 तिणरो विनों करणो साघां रे रीत छें तिम,
 जब तो कहे ओ तो सामायक माहें वेठों,
 इण बंधीया नें छूटा रें विनों न करणों,
 बडो श्रावक तो छोटा नें नही वादे,
 ए दोनूइ मांहोमां अंठठ हुआ छे,
 जब तो यारें लेखें छोटां नें बडां रो,
 सांकडा पचखाण वाला श्रावक ने,
 छोटा श्रावक रे विरत मेरु जिती छे,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करे तो,
 छोटें श्रावक तो सील रतन आदरीयो,
 जो सामाइ में बडां रों विनों न करें तो,
 बडां श्रावक रें वरत पचखाण छें थोडा,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करणों तो,
 पेंहला तो छोटें श्रावक सामाइ कीधी छे,
 जब तो छोटे बडां रों विनों करें छें,
 वरतां लेखें तो बडां रो विनो न कीघों,
 इण बडां रो विनों कीयो किण लेखे,
 सामायक में सामायक वालो वादे छे,
 जिण पेंहली सामाइ करी ते बडो छे,
 सामाइ में तो बडा रो विनों न कीघो,
 पछे वरता मे बडा ने सामायक वादे,
 साघा रो विनों साघ करे तिम,
 तो श्रावक श्रावक ने तीखूता सूं वादे,
 घणो विनों कीया घणो धर्म होसी,
 श्रावक री तीखूता सू वदणा उथापे,

वले ढोली डूंबादि सरगडा तांम ।
 त्यारो राजा नें विनो करणों सीसनांम ॥ २४ ॥
 त्यारो राजा नें पूछ नें काढणो निरणों ।
 ज्यूं आप सूं बडा श्रावक रो विनो करणों ॥ २५ ॥
 तिणरो चक्रवत् विनों करें बडो जाण ।
 विनों करणो वरतां माहें बडा पिछाण ॥ २६ ॥
 कोइ बडो श्रावक तिणरें पासें आयों ।
 यारें लेखे तो कमीय न राखणी कायों ॥ २७ ॥
 बडो श्रावक तो इविरत माहें छूटो ।
 इण ही लेखें पिण यारो हियो फूटों ॥ २८ ॥
 छोटे श्रावक पिण बडा नें वादे नांही ।
 हिवें तो यारें विनों न दीसे काई ॥ २९ ॥
 कारण मूल न दीसैं काई ।
 बडा श्रावक नें वादणा नांही ॥ ३० ॥
 बडा श्रावक रे विरत राइ समान ।
 ओ पिण बडां रों विनो करसी किण ग्यांत ॥ ३१ ॥
 बडां रे सीलादिक नही विरत वशें ।
 ओ पिण बडां रो विनों करें किण लेखें ॥ ३२ ॥
 छोटा रें वरत पचखाण सूंस वशें ।
 इण बडां रो विनो करणो किण लेखें ॥ ३३ ॥
 पछें बडे सामाइ कीधी छें आय ।
 तिण बडां रो विनों करे किण न्याय ॥ ३४ ॥
 सामाइ लेखें पछें कीधी ते छोटों ।
 सामाइ लेखे तो छोटे श्रावक मोटों ॥ ३५ ॥
 तो वरता बडां रो कारण नही काई ।
 तो उ किण लेखे पडे बडां रा पगा माहीं ॥ ३६ ॥
 जब तो बडा श्रावक रो बडपण गमायो ।
 हिवे बडां रो बडपण कठा सूं आयो ॥ ३७ ॥
 श्रावक रो विनो करणो श्रावक नें थापे ।
 तो तीखूता री वदणा ने काय उथापे ॥ ३८ ॥
 थोडा विनों कीया छे थोडोइज धर्म ।
 त्यांरी सरघा रो त्यांहीज काडियो भर्म ॥ ३९ ॥

केइ भेषधाख्यां रे इसडी छे सरघा,
सामाइ ने पोसा तो उत्तर गुण विरत,
मूल गुण तो श्रावक रे जाव जीव छे,
मूल गुण विरत जिण पेहली कीया छे,
तिण लेखे सामाइ ने पोसा रे मांहे,
जो सथारो करे तो बडां श्रावक रे,
या तो छोटा रा विनो सामाइ में थाप्यो,
यामे किण री साची किण री खोटी सरघा छे,
श्रावक रो विनो थापे छे साध तणी पर,
त्यां विकलां री सरघा तो पग पग पर अटके,
श्रावक श्रावक रो विनों साध तणी पर,
यूही वकरोल करे छे अन्हाखी,
छोटो श्रावक भारी भारी वसतर पेंहरे,
जो उ वडां ने आछा वसतर नही देवे तो,
यांरां छोटा श्रावक रे भारी भारी गेहणा,
जब छोटी वडां श्रावक ने गेहणों न देवे,
छोटो श्रावक जीमें साल दाल ने मोदक,
यारें लेखे आछो आहार न दे वडा नें,
छोटो श्रावक रे चोखा हाट हवेल्यां,
जो उ हाट हवेल्या वडां नें न आपे,
छोटो श्रावक तो हाथी घोडे रथ वेठां,
त्यां पिण खोयो त्यारो विने मूल धर्म,
छोटो श्रावक चाले छे पालखी वेठो,
यारें लेखे पिण छोटके श्रावक,
छोटो श्रावक रे घर में धन धणो छे,
यारें लेखे यांरा छोटा श्रावक ने कहिणो,
इत्यादिक छोटा श्रावक रे वसत अनेक,
जब यो पिण यारें लेखे अवनीत श्रावक,
विनों विनों कर रह्या मूरख,
श्रावक रो विनो करणों कहे साध तणी परें,
यांरो वडो श्रावक पिण छोटा श्रावक ने,
जब घूल पडी त्यांरा विने धर्म में,

सामाइ में छोटा नें तीखूता सूं वांदे ।
मूल गुण वाला वडां रें चालणो छइदे ॥ ४० ॥
उत्तर गुण विरत इघकाइ रा तांम ।
जाव जीव छोटा सूं बडो छे तांम ॥ ४१ ॥
बडां श्रावक रो विनों साधां ज्यूं करणो ।
सीस नमाय ने पगां में पडणो ॥ ४२ ॥
थां छोटा रा विना में पाप वतायों ।
ते पिण विकलां ने खबर न कायो ॥ ४३ ॥
ते मत निश्चेंइ जाणजो कूडो ।
त्यांरी खोटी सरघा रो सुणजो फित्तुरो ॥ ४४ ॥
करतां तो किण ही नें निजरां न दीठो ।
तिणनें प्रश्न पूछ्यां पडे पग पग फीटो ॥ ४५ ॥
बडां रे लीलर कपडा ने लीलर पागो ।
जब यारें लेखे छोटा रो पूरो अभागो ॥ ४६ ॥
वडां श्रावक नें गेहणो नही एक मासो ।
तिण तो कीयो विनें मूल धर्म रो न्हासो ॥ ४७ ॥
बडो श्रावक जीमें छे कूकस कूर ।
तो विने मूल धर्म में पड गड घूर ॥ ४८ ॥
वडां रे छोटी टपरी छे तो पिण तूटी ।
जब यांरो विनों धर्म गयो उठी ॥ ४९ ॥
वडो श्रावक मूढा आगे चाले पालो ।
इण लेखे यांरी सरघा ने लागे छे कालो ॥ ५० ॥
वडो श्रावक पालखी लीची छे कांवे ।
विने मूल धर्म ने खोयो छे कांवे ॥ ५१ ॥
वडो श्रावक दलदरी तिणने न आपे ।
तू विने मूल धर्म ने काय उथापे ॥ ५२ ॥
ते वडो श्रावक मांगे तो देवे नाहीं ।
तिणमें विने मूल धर्म न दीसे काई ॥ ५३ ॥
ते विनों करणो तो साधां रो चाल्यो ।
ओतो घोचो अणहंतो कुगुगं रो घाल्यो ॥ ५४ ॥
उलटो सीस नमाय करे नमस्तनगर ।
यांरी सरघा नें दीजे तीन विनार ॥ ५५ ॥

श्रावक रो विनों थापें साध तणी परें, आ तो सरघा उठी जठाथी भूठी ।
 ग्रहस्थ रा विनां माहें धर्म कहें त्यारी, हीया निलाड री दोनुंइ फूटी ॥ ५६ ॥
 श्रावक तो निश्चें ग्रहस्थ सागे, वले अर्घामियां सूं करे संभोग ।
 तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यारे मोटो छें मिथ्यात रो रोग ॥ ५७ ॥
 श्रावक तो मांहोमां पागडी पाडे, कांम पढ्यां मांहोमां करे जीव घात ।
 तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरो गाढो घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 छ् काय जीवां रो करे घमसाण, वले छ्,काय जीवां रो कर जाय गटको ।
 तिणरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरी सरघा नें जाणजो जेंहर रो बटको ॥ ५९ ॥
 केइक तो मिथ्यातां विचेंई, केइ श्रावकां रे त्यांसूं इधको आरंभो ।
 त्यांरी विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यां विकलां री सरघा रोजोयजो अचंभो ॥ ६० ॥
 श्रावक मांहोमां करे छें विनों वीयावच, वले हाथ जोडी साता पूछें वशेख ।
 नमसकार करे नीचो सीस नमाए, ते जिण आगन्यां मांहिलो नही एक ॥ ६१ ॥
 इत्यादिक सगलाइ छें सावद्य कांमा, तिणमें श्री जिण आगन्यां नही छें लिंगार ।
 तिण माहें धर्म कहें छें अग्यांनी, त्यांरा घट माहे छें पूरो घोर अंधार ॥ ६२ ॥
 श्रावक श्रावक रा करणा गुण ग्राम, छत्ता गुण ढांक त राखणा तिणरा ।
 उणरा दीपावणा ग्यांनादिक गुण ने, जिण आग्या सहीत गुणग्राम करणा तिणरा ॥ ६३ ॥
 सुसरका विनों तो साध रो करणों, श्रावक रा तो करणा गुणग्राम ।
 इमहीज विनों मतग्यांनादिक रो, जोय लेवो सूतर में ठाम ठाम ॥ ६४ ॥
 श्रावक मांहोमां आरंभ कर जीम्या, नमसकार कीयो ते सूतर में चाल्यो ।
 भगवंत भाव दीठा जिम भाप्या, ते जिण धर्म में भेषघाच्या चाल्यो ॥ ६५ ॥
 जोड कीधी सावद्य विनों ओलखावण, पाली सहर मे कीयो विचार ।
 संवत अठारे वरस बावनें, आसोज विद पाचम शुकरवार ॥ ६६ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी भिष्ट भागल हुआ तिके, करें असुघ वेंहरण री थाप ।
चोर ज्यूं असुघ अर्थ हेरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहां एक पाठ छे सूतर में, तिणरो न्याय मेलें नहीं मूढ ।
सावा नें असुघ वेंहरायां घर्म कहें, एहवी कर रहा पापी रुढ ॥ २ ॥
एक पाठ छें भगोती मभे, शतक आठमा मांय ।
अर्थ करण वालो पिण डरपीयां, तिणकेवलीयां नें दीयो छें मलय ॥ ३ ॥
साधां नें सचित्त असुघ दीयां, कहें निरजरा बोहत अल्प पाप ।
ते उबी सरवा रों निरणों कहुं, ते सुणजो चुपचाप ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिष आग्या में]

अफासू आहार ने सचित्त कहीजें, अणेसणीजेणं ते असूमत्तों जाणों ।
ते दीधां कहे अल्प दोष नें बोहत निरजरा, त्यां विकलां री सरधारी करजो पिछाणों ।
भाषो पाणी कोरों अन साधु नें वेंहरावें, भेषघर ने भूलां रो निरणो कीजो ॥ १ ॥
ए च्यारुइ आहार सचित्त ने असुघ वेंहरावें, बले खादिम सादिम सचित्त वेंहरावे ।
अफासू नें अणेसणी पाठ छें चोडें, तिणरें अल्प दोष नें बोहत निरजरा बतावें ॥ मे० २ ॥
जयातय तिणरो अर्थ करें तो, घणा लोका माहें सेखी उड जावे ॥ ३ ॥
तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक बतावें, कदे कारण पडियां रो नाम बतावें ।
कदे ओर सूतर सं घुचलाइ घालें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ ४ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर में घाल्यो छें, पिण आंघां रें अंतरंग नही छें पिछाणों ।
च्यारु आहार सचित्त नें असुघ वेंहरायां, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयाणो ॥ ५ ॥
फासू एसणीक साधु ने देवे श्रावक, ठाम ठाम बहू सूतरां रें मांही ।
ते सचित्त असुघ सुघ जाणें किम देवें, बले बोहत निरजरा जाणें किम ताहि ।
असुघ वेंहरण री थाप करो मत कोइ ॥ ६ ॥
इण पाठ नें मूडे आणे वारुंबार, त्यांरा सचित्त ने असुघ खावा रा परिणाम ।
जो असुघ वेंहरण रा परिणाम नही छें, तो यूंही क्यांनं बकसी बेकाम ॥ ७ ॥

१५ यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्याह्नं आहार सचित्त नें असुध वेंहरावें,
 भगोती पांचमें सतक छठें उद्देशें,
 साधु जाण नें भोगवे आघाकर्मी,
 ते तो नरक निगोद में भीका खासी,
 साधु नें जाण नें आघाकर्मी वेंहरावें,
 ते पिण नरक निगोद में भीका खावें,
 आघाकर्मी वेंहरायां छें एकंत पाप,
 च्याह्नं आहार सचित्त नें असुध वेंहरायां,
 साधां ने असुध आहार तो अभष कह्यो जिण,
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते,
 साधां ने आहार असुध देवण रों,
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणें छें,
 वले साधां नें अंतराय आहार री पाडी,
 अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी,
 श्रावक साधां नें असुध जाण नें वेंहरावें,
 ते दोय वांना नें मिश्र दांन कहो थें,
 थें कहो छों मिश्र दांन तणा म्हे,
 इण मिश्र दांन रा सूंस करायां,
 मूला गाजर जमीकंद दांन देवे छें,
 तिण दांन रा सूंस करावो नाही,
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणों छों,
 बोहत पाप नें निरजरा अल्प जाणों थें,
 साधां नें असुध वेंहरावें तिणरो,
 जब ओ कहें तिणरो बारमो व्रत भागों,
 जो असुध वेंहरायां बारमों व्रत भागें छें,
 व्रत भांग्यां तो निरुचेंइ भूडों होसी,
 साधां नें असुध वेहरावें जाण नें,
 केइ अल्प दोष ने बोहत निरजरा कहें छें,
 मिश्र तणा बोल अनेक चाल्या छें,
 भारीकर्मा जीवां रे उसम उदें सूं,
 मिश्र पष नें मिश्र भाषा कही जिण,
 वले मिश्र पाणी नें मिश्र शब्द कह्या छें,

तिणरे तो अल्प आजखों बंधाय ।
 वले तीजें ठणें ठाणांग मांय ॥ ८ ॥
 ते तो बावें छें उसम कर्म रा जाल ।
 उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल ॥ ९ ॥
 ते तो चारित्त धर्म रो लूटणहार ।
 उतकष्टों रुलें तो अनंतो काल ॥ १० ॥
 सचित्त नें असुध वेंहरायां ओ पिण पाप ।
 तिणनें मूढ करे बोहत निरजरा री थाप ॥ ११ ॥
 ते अभष आहार देवें दातार ।
 ते तो भूला रे भूला थें मूढ गिवार ॥ १२ ॥
 ओ त्याग करावें छें किण न्याय ।
 तिणरें निरजरा री कांय देवें अंतराय ॥ १३ ॥
 दातार नें अंतराय आहार दीधी वरोखें ।
 तिणनें सूंस करायों छें किण लेखें ॥ १४ ॥
 तिणनें धर्म नें पाप दोनूइ जाणों ।
 तिण दांन रा क्यूं करावो पचखाणों ॥ १५ ॥
 किणनेंइ सूंस करावां नाही ।
 थारी सरघा री वरण बूहा नही काई ॥ १६ ॥
 तिणमें धर्म थोडों नें घणों कहो पाप ।
 मिश्र दांन जाणी रहो चुपचाप ॥ १७ ॥
 तिण दांन तणा पचखाण करावो ।
 तिण दांन रा सूंस न करावो छों किण न्यावो ॥ १८ ॥
 बारमों व्रत भागों कें नांय ।
 तो बोहत निरजरा नही छे तिण मांय ॥ १९ ॥
 तो बोहत निरजरा तिण मे कदे म जाणों ।
 तिणरी बुधवंत हीया में करसी पिछाणों ॥ २० ॥
 तिणनें एकंत पाप कह्यां नही कूड ।
 त्यांरी सरघा तो जाणजो फेंन फित्तुर ॥ २१ ॥
 मिश्र दांन तो कठेय न चाल्यो ।
 मिश्र दांन रो घोचों पाषंड्यां घाल्यो ॥ २२ ॥
 मिश्र गुण ठाणों नें मिश्र परिग्रह दाख्यो ।
 वले मिश्र जोग भगवते भाख्यो ॥ २३ ॥

इत्यादिक दोग मिलीयां सूं मिश्र हुवें छें, त्यांरा नांम सूतर में जूवो जूवो चाल्यो ।
 पिण मिश्र दांन सूतर में न चाल्यो, ओ तो भेष घाख्यां भूठो भगडो म्हाल्यो ॥ २४ ॥
 सुपातर ने कुपातर दांन तो चाल्या, पिण मिश्र दांन तो सूतर में नांही ।
 पिण हीया फूट गधा रा साथी, ते खूता छे मिश्र दांन री सरघा रे मांहीं ॥ २५ ॥
 श्रावक ने नेहत जीमावे तिण ने, केइ भेषघारी मिश्र दांन बतावे ।
 भोला ने मिष्ट करण नें अग्यांनी, कुण कुण कूडा कुहेत लगावें ॥ २६ ॥
 नीव रा रुख में आंवो रुंख उगो, तिण नीव रा रुंख में पांणीं पावें ।
 जब दोनूई रुखा मे पाणी पोहचे छे, नीव नें आंवो दोनूई फल फूल थावें ॥ २७ ॥
 ज्यु श्रावक ने असणादिक आहार जीमावे, जब विरत नें इविरत दोनूं सीचांणी ।
 तिणरे दोग बाना मिश्र दांन नीपनों, एहवा कुहेत लगावें छें मूंड अयांणी ॥ २८ ॥
 जो जीमावण वाला ने दोग वांना मिश्र छे, तो जीमण वाला ने इण लेखें मिश्र होय ।
 इण पिण इण री विरत नें इविरत सीची छें, यारे लेखें इण नें एकंत पाप न कोय ॥ २९ ॥
 श्रावक तो अनेक नीलोती खायें छें, वले पीयें छें काचों अणगल पांणी ।
 इत्यादिक भोगवे छे दरब अनेक, यारें लेखे तो विरत इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३० ॥
 श्रावक ने दरब अनेक खवावे तिणने, विरत ने इविरत दोनूंइ सीची वतावे ।
 श्रावक घर रा दरब खावें छे तिण ने, विरत इविरत सीची कहतां लाज कयूं आवे ॥ ३१ ॥
 घर रा दरब खाद्या कहे इविरत सीचांणी, पार को खाधां दोनूं कठाथी सीचांणी ।
 विरत इविरत पोखी कहे श्रावक जीमायां, ते पूरा छे मूरख मूंड अयांणी ॥ ३२ ॥
 जो श्रावक असणादिक आहार खाधां थी, जो विरत इविरत दोनूं पोखांणी ।
 इण लेखे श्रावक रे कुसील सेव्या थी, विरत ने इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३३ ॥
 श्रावक असणादिक सू साता पावे छें, तो कुसील सूं साता पामें बशेखो ।
 असणादिक सू विरतने इविरत सीचांणी, तो अस्त्री सेव्यां पिण ओहिज लेखो ॥ ३४ ॥
 यारें लेखें तो असणादिक रो त्याग कीघो, वले कुसीलादिक रों कीयो पचखांणों ।
 जब पिण श्रावक रे विरत इविरत पोषांणी, यारी सरघा रे लेखे तो ओहीज जांणो ॥ ३५ ॥
 जो अणार सेव्या विरत इविरत सीचांणी, तो त्याग कीयां पिण दोनूं सीचांणी ।
 ओ तो उबी मत्या री सरघा रो लेखों, त्यां विरत इविरत हीया मे नही पिछांणी ॥ ३६ ॥
 उपमोग परिभोग श्रावक भोगवें छें, तिण सूं तो एकंत इविरत सीचांणी ।
 तिणरो त्याग कीया थी विरत वघे छे, विरत सीची कहे ते पाषंडी री वांणी ॥ ३७ ॥
 श्रावक रे वारें विरत ने वारे इविरत छे, त्यांरा फलकोड बुचवंत लेसी पिछांणो ।
 इविरत सेव्या सेवाया छे एकत पाप, विरत सेवायां एकंत घर्मज जांणो ॥ ३८ ॥
 विरत इविरत सीचे कहें छेश्रावक ने जीमायां, आ तो सरघा उठी जठाथी भूठी ।
 श्रावक नें जीमाया मिश्र दांन कहे छे, त्यांरी हीया नीलाडी री दोनूंइ फूटी ॥ ३९ ॥

श्रावक रा काम भोग तो इविरत में छें, ते तो भोगव्यां उसभ कर्म लागें छें आणों ।
 ते किपाक फल री छें ओपमा त्यानें, तीनुइ करण सारीषा जाणों ॥ ४० ॥
 किपाक फल तो भोगवता मीठा, तिणरो सवाद लागें जाणें अमीय समाणों ।
 नाडो नाड परगमीया पाछें, जूदा हुवें जीव काया प्राणों ॥ ४१ ॥
 ज्यू काम भोग भोगवता मीठा, ते भोगवतां लागें अमीय समाणो ।
 तिण सू कर्म लागें ते उदें आवें जब, भव भव में दुख उपजें आणो ॥ ४२ ॥
 किपाकफल तो एक भव दुखदाइ, काम नें भोग भव भव में दुखदायों ।
 ते काम नें भोग श्रावक नें सेवायां, धर्म नें मिश्र किहांथी थायों ॥ ४३ ॥
 किपाकफल खवावें तिणनें, ववेक विकल जाणें मित्री छें म्हारों ।
 जे चतुर विचषण डाहा हुवें ते, वेंरी जाणें घात रों करणहारों ॥ ४४ ॥
 ज्यू काम नें भोग भोगवावें छें तिणनें, ववेक रा विकल जाणें ओ मित्री छें रूडों ।
 जो चतुर विचषण डाहा हुवें ते, पाप कर्म रो दाता वेंरी जाणें पूरों ॥ ४५ ॥
 श्रावक तो जीवादिक पदार्थ जाणें, बले सावद्य निरवद भिन भिन पिछाणें ।
 ते तो श्रावक मांहोमां जीमें जीमावें, तिणमें धर्म तणों अंस कदेय न जाणें ॥ ४६ ॥
 श्रावक रा काम भोग शब्दादिक छें त्यानें, किपाकफल री ओपमा जाणी ।
 तीनां करणां नें पाप जाणें छें एकंत, तिण श्री जिण आग्या नें रूडी पिछाणी ॥ ४७ ॥
 रूख बाढण नें साध कूहाडो दीघों, तिण कुहाडा सू रूख बाढें छें आणों ।
 रूख बाढें तिणनें साज दीयों छें, त्यां दोयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४८ ॥
 घान पीसण नें साभ घरटी दीघों, तिण घरटी सू घान पीसें छे आणों ।
 घान पीसें तिणनें साभ दीयों छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४९ ॥
 गांम बालण नें साभ अगन रों दीघों, तिण अगन सू गांम बाले छें आणो ।
 गांम बालें तिणनें साभ देवें तिणनें, यां दोयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५० ॥
 इत्यादिक अनेक सावद्य रों साभ देवें छें, तिण सू सावद्य काम करें छें जाणो ।
 सावद्य करें तिण नें साभ दीयों छें तिणनें, यां दोयां नें एकंत पाप पिछाणो ॥ ५१ ॥
 ज्यू श्रावक नें साभ असणादिक रो दीघों, ते असणादिक भोगवें अन पाणों ।
 खायें पीयें तिणनें साभ दीयो छें तिणनें, यां दोयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५२ ॥
 पाप करण रों साभ देसी तिणनें, एकंत पाप लागें छे आणो ।
 पाप रो साभ दीयां नहीं धर्म नें मिश्र, समझी रे समझो थें मूढ अयाणो ॥ ५३ ॥
 विरत इविरत पोषी कहो श्रावक जीमायां, तो मिथ्याती पोष्यां इविरत पोषी जाणो ।
 इविरत पोष्यां एकंत पाप उघाडो, तिणरी पिण मूरख करें छें ताणों ॥ ५४ ॥
 तो मिथ्याती नें पोष्यां मिश्र किण लेखें, इणरी तो एकंत इविरत पोषाणी ।
 इविरत पोष्यां रों थें पाप बतायों, हिवे मिश्र कठा थी आयो अयाणी ॥ ५५ ॥

श्रावक भोगवें छें दरब अनेक, ते तो एकंत इविरत मांहें जाणो ।
 जीमावण वालों पिण इविरत में जीमावें, तिणमें, घर्म नही छें रे मूढ अयांणों ॥ ५६ ॥
 श्रावक जीमायां नें मूढ मिध्याती, विरत नें इविरत दोनूं पोषांणी जाणें ।
 जिण मारग रा अजांण अग्यानी, पीपल बांधी मूरख जिम ताणें ॥ ५७ ॥
 श्रावक रा शब्दादिक भोग ओलखावण, जोड कीधी पाली सहर मझार ।
 सवत अठारे नें वरस बावनें, आसोज विद अमावस सोमवार ॥ ५८ ॥



ढाल : १६

ढुहा

भेषघारी भूला जिण घर्म थी, ते कहे छैं मिश्र दांन ।
 सूतर विण करे छैं पल्पणा, त्यांरां घर माहें घोर अग्यांन ॥ १ ॥
 सूतर ठाणांग तेह में, दस दांन कह्या भगवांन ।
 गुण निपन त्यांरां नांम छे, पिण मिश्रन कह्या जिणदांन ॥ २ ॥
 देवा नो नांम दांन छें, लेवा रो नांम लाभ ।
 मिश्र दांन ने मिश्र लाभ नों, कठे नही सूतर में जाव ॥ ३ ॥
 मिश्र दांन उठाय वेठों कीयो, त्यांरी सरघा नहीं छें सुव ।
 ते तो माठी मत रा मांनवी, त्यांरी भिट हुइ छें वुष ॥ ४ ॥
 सावच्च निरवद दोनूं दांन चालीया, सुतर में ठंम ठंम ।
 मिश्र दांन पाषंडीयां पल्पीयो, भूठा ले ले सूतर रो नांम ॥ ५ ॥
 निज मत उचपतों जाण ने, थाप्यों छें मिश्र दांन ।
 त्यांरी खोटी सरघा परगट कळ, ते सुणो सुख दे कांन ॥ ६ ॥

ढाल

[२ भवियख सेवो २]

दुरवल दुवीया री अणुकंपा आंणे, तिणनें दे ते अणुकंपा दांन ।
 तिग दांन नें मिश्र दांन कहे त्यांरो, भिट हुवो विगनांन रे ।
 भवियण मिश्र दांन कोइ मत मांनो, ओ गूढ मिथ्यात छे छांतो रे । कुमत्यां* ।
 आ सरघा छें जहर समांनों ॥ १ ॥
 तिणनें सचित अचित दोनूइ देवें, छ ही काय हणी दें कोय ।
 यो दांन संसार नो दीसे उघाडो, तिण में मुगत रो भेल न होय रे ।
 मिश्र दांन कठा न थी काढ्यों, इण मिथ्यात थी जगत ने दाढ्यों रे । कु० ।
 आत्मा नें कलंक कांय चाढयो रे ॥ २ ॥
 वंदीवांनादिक नें दांन दे तिणनें, संग्रह दांन कह्यो जिण आप ।
 तिण वान नें मिश्र दांन कहे, तिण वीर ना दीया वचन उथाप रे ॥ ३ ॥
 ओ पिण दांन संसार नों तिण में, भोष मारग रो भेल नही ।
 कोइ चतुर विचपण डाहा हुवें ते, विचार देखों मन मांही रे ॥ ४ ॥
 भय रो घालीयो दांन दे तिणनें, भय दांन कह्यो भगवांन ।
 ए एकंत दांन संसार तणो छें, तिणनें मूढ कहे मिश्रदांन रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ग्रह करडा जाण भय रो घाल्यो,
 तिणमें जिण धर्म रो भेल बतावें,
 खरच करें मूआं रें केडें,
 ए तो एकंत दान संसार नों तिण सूं,
 ए दान संसार तणों किरतब छें,
 तिणमें तो मोष रा मारग रो भेल बतावें,
 सांकडें पडीयो दे लज्या रो घाल्यो,
 तिण दान नें मिश्र दान कहें त्यारें,
 सासरा में जमाइ लज्या तणें वस,
 ओ पिण एकत दान संसार तणों छें,
 देवें रावलीया भांड भवइयादिक नें,
 मुक्लावों पेंहरावणी देवें मूसालों,
 ओ एकंत दान संसार नो,
 इणमें मोष रा मारग रो भेल बतावें,
 गणिकादिक नें दान देवें छें,
 ओ तो दान उघाडो सावछ,
 आठमो धर्म दान छें मोष रो मारग,
 सासता सुख पामे सिव रमणी रा,
 आपे ग्यान दरसन चारित नें तप,
 ए च्याळ्इ दान धर्म दान में घाल्या,
 छ ही काय हणवां रा त्याग करें छे,
 तिण सूं आवता पाप कर्म रुक जावें,
 निरदोषण दरब सावां ने देवें,
 तिण दान नें पिण धर्म दान में घाल्यो,
 छ काय हणवा रो त्याग करें छें,
 आपे छें ग्यान दरसन ने चारित,
 हांती नेहतादिक देवें सेण सगां ने,
 तिण पाछो लेवा री आसा सूं दीघो,
 हांती नेहतादिक देवे सेण सगां ने,
 पेंहलां दीघो त्यान पाछों देवें छे,
 आंमी साह्मी हांती देवे जीमे जीमावे,
 ए. तो एकंत दान संसार ना दोनुं,

देवें थावरीयादिक रें हाथ ।
 तिणरे बुक्सीयो मिथ्यात रे ॥ ६ ॥
 ते तो चोथो कालुणी दान ।
 वघे लोकां में मान रे ॥ ७ ॥
 तिणमें मोष रो मारग नांही ।
 ते तो भूल गया भर्म मांहीं रे ॥ ८ ॥
 तिणनें जिण कहुओ लज्या दान ।
 घट मांहे घोर अग्यान रे ॥ ९ ॥
 देवें जाचकादिक रे तांई ।
 तिणमें जिण धर्म रो भेल नांही रे ॥ १० ॥
 भोपादिक नें देवें धर मान ।
 गरब सूं देवें ते गरब दान रे ॥ ११ ॥
 तिणमें संवर निरजरा नहीं अंसमात ।
 तिण पडिवजीयो मिथ्यात रे ॥ १२ ॥
 कुसीलादिक सेवण काम ।
 अघर्म दान छें तिणरो नांम रे ॥ १३ ॥
 तिण सूं उतर जायें भव पार ।
 तिणरो सांभलजो विसतार रे ॥ १४ ॥
 तिण सूं पामें पद निरवाण ।
 केवल ग्यानीयां ग्यान सूं जाण रे ॥ १५ ॥
 ते अभेदान कहुओ जिण राय ।
 तिणने घाल्यो धर्म दान रे मांय रे ॥ १६ ॥
 तिणने कहुओं सुपातर दान ।
 भगवंत श्री विरघमान रे ॥ १७ ॥
 सुपातर दान देवे छे तांम ।
 धर्म दान छें तिणरो नांम ॥ १८ ॥
 नेहत घालें वनोला दें तांम ।
 कायती दान तिणरो नांम रे ॥ १९ ॥
 नेहत घाले बनोला दे तांम ।
 कतंती दान तिणरो नांम रे ॥ २० ॥
 नेहत पिण घालें आंमी साह्मी ।
 लेवा ने देवा रा छे कांमी ॥ २१ ॥

नवमों दसमों दान देवो नें लेवो,
 तिणमें जिण धर्म रों भेल बतावें,
 ए दस विघ दान कहा भगवते,
 केइ आठ दानां नें मिश्र कहें छें,
 त्यारें बडा बडेरा आगें हुआ त्यां,
 मिश्र दान परूपें बडां नें विगोया,
 गिभ्र दान रों धापण वालो,
 भूठी २ साख सूतर री दीधी छें,
 सूयगडाअंग इग्यारमें अधेनें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान न काढें,
 सूयगडाअंग दूजें पांचमें अधेनें,
 बतीसमी गाथा री साख दीधी छें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान काढें,
 केइ चतुर विचषण डाहा होसी ते,
 आठ दानां में मिश्र दान बतावें,
 जो साची साख सूतर री दीधी हुवें तो,
 बले तीजा ठाणा री साख देइ नें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान न काढें,
 बले घणा सूतरां नाम बतावें,
 जो किण ही सूतर में मिश्र दान न काढें,
 मिश्र दान परूपण वालें,
 बले सिष सिषणी छें निज पोता रा,
 मिश्र दान नें मिश्र धर्म,
 भारीकर्मा जीवां रें उसभ उदे सूं,
 मिश्र दान कहो भावे मिश्र धर्म कहीं,
 मिश्र दान होसी तो मिश्र धर्म छें,
 किणही मिश्र दान तो कह दीयो चोडे,
 हिवें मिश्र दान तो कहितां न लाजे,
 सावद्य दान नें निरवद दान,
 पिण मिश्र दान सूतर में नाहीं,
 आठ दानां नें पिण सावद्य कहें छें,
 सावद्य कहाो तिण अवर्म कहाो छें,

ख्याल छें घुर वोहरा वालें।
 तिण सरखा रो कीजो टालो रे ॥ २२ ॥
 मिश्र दान कहाों नहीं एक।
 ते बूडें छें विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 मिश्र दान कहाों दीसैं नांही।
 पडीया पाण्ड पंथ रें माहीं रे ॥ २४ ॥
 भूठ बोलतों संक्यों नांही।
 पिण नहीं छें सूतर रे माहीं रे ॥ २५ ॥
 तिणरी साख दीधी ते कूडा।
 तो मूडे पडसी घूड रे ॥ २६ ॥
 मिश्र दान कहें छें तांम।
 साचा हुवे तो काढों तिण ठाम रे ॥ २७ ॥
 तो सरखा फेन फित्तुरों।
 थारो जाण लेसी मत कूडो रे ॥ २८ ॥
 ठाणाअंग दसमें कहें तांम।
 काढ दिखानो तिण ठाम रे ॥ २९ ॥
 कहें छें मिश्र दान।
 तो यूंही वके जिम स्वान रे ॥ ३० ॥
 मिश्र दान कहें छें साष्यात।
 तो सरखा छे भूठ मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥
 घणा जीवां नें विगोया।
 त्यांनें तो जाबक वोया रे ॥ ३२ ॥
 ए तो सूतर माहे न चाल्या रे।
 ए तो घोचा अणहुंता घाल्या रे ॥ ३३ ॥
 ए तो परमारथ एक।
 समझों आण ववेक रे ॥ ३४ ॥
 तिण कह दीयों मिश्र धर्म।
 मिश्र धर्म कहितां आवें सर्म रे ॥ ३५ ॥
 दोनूं दान तो सूतर माह्यो।
 ओ तो गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ ३६ ॥
 बले सावद्य में सरधें छे दीय।
 ते पिण विकलां नें खवर न कोय रे ॥ ३७ ॥

मिश्र दांन कहे तिणरी सरघा रें लेखें, सावद्य दांन न कहणो ।
 मिश्र सावद्य के मिश्र निरवद कहिणो, पुच्छ्यां रो जाब सुधो देणो ॥ ३८ ॥
 सावद्य नें तो मिश्र कहितां लाजे, निरवदनेइ मिश्र कहितां लाजे ।
 दांन मिश्र कहितां नही लाजे, ते तो पिंडत भोलां में बाजे रे ॥ ३९ ॥
 सावद्य खोटें ने निरवद आछों, आ तो सरघा छे सूधी ।
 सावद्य मे धर्म ने पाप सरघे, अकल तिणां री उधी रे ॥ ४० ॥
 सावद्य किरतव ने अधर्म जांणो, अधर्म ने सावद्य जांणो ।
 सावद्य मे कोइ मिश्र जांणे छे, ते बूडे छें कर कर तांणो रे ॥ ४१ ॥
 सावद्य कह्यो तिण कह दीयो अधर्म, निरवद कह्यो तिण कह दीयो धर्म ।
 पिण पोत रा बोल्या री समभ न पोतें, ते तो मूला अग्यानी भर्म रे ॥ ४२ ॥
 असणादिक दातार देवे छे, तिणने दांन कह्यो जिणराय ।
 तिणमें पातर में पुन कुपातरे पाय, ते तो जोय लें सूतर माय रे ॥ ४३ ॥
 अन्न पाण पुने लेण ने सेण पुने, कथ पुने कह्यो जगनाथ ।
 यानें मिश्र कहसी कोइ मूढ मिथ्याती, तिणरी प्रतष भूठी बात रे ॥ ४४ ॥
 अन्न मिश्र पाण मिश्र न चाल्यो, लें ने सेण मिश्र नांही ।
 कथ मिश्र भगवते न भाख्यो, जोवो सूतर रे मांही रे ॥ ४५ ॥
 ए पाचूं बोला मिश्र दांन हुवे तो, आश्रव संवर मिश्र होय जाय ।
 कले निरजरा पिण मिश्र होय जावे, जोवो सूतर रे माय रे ॥ ४६ ॥
 आठ दांन देवण री भावना भावे, तिणरा किंसा अधवसाय परिणाम ।
 तिणरी लेस्या किसी ने ध्यान किंसी छे, च्यारां मांयलो कह छो ताम रे ॥ ४७ ॥
 ध्यान लेस्या अधवसाय परिणाम, ए तो मिश्र चाल्या नही कोय ।
 ए च्याहं भला के च्याहं भूडा छे, मिश्र हुवे तो बतावो मोय रे ॥ ४८ ॥
 ए आठूह दांन संसार ना दांन, त्यामे संवर निरजरा नांही ।
 यामे मोष रा मारग रो भेल बतावे, ते तो खूता संसार ने मांही रे ॥ ४९ ॥
 पातर कुपातर हर कोइ ने देवे, तिणने कहीजे दातार ।
 तिणमें पातर दांन मुगत रो पावडीयो, कुपातर सूं रूले संसार रे ॥ ५० ॥
 विम्यां सुरा कह्या अरिहंता, तवे सुरा कह्या अणगार ।
 दांने सुरा कह्या वेसमण देवता ने, जूमे सुरा वासुदेवा धार रे ॥ ५१ ॥
 यामे दोय सुरा तो संसार ना सुर, ते तो जस कीरत रा कांमी ।
 वाकी दोय सुरा निज आतम जीते, कर्म काटें हुवें सिव गामी रे ॥ ५२ ॥
 संसार नो दांन ने मुगत रो दांन, पिण मिश्र दांन न कोय ।
 मोष रा दांन सूं हुवें संवर निरजरा, संसार ना दांन सूं आश्रव होय रे ॥ ५३ ॥

आठ दाँन री साध परसंसा करें तो, छ काय रों वध वंछणहारो ।
 देण वाला रे फल लागें ते, बुधवंत लेजों विचारो रे ॥ ५४ ॥
 ए बावीस टोलां नें साध कहें छें, ते पिण मिश्र दाँन न मानें ।
 मिश्र दाँन कहें तिणनें मूठो जाणें छे, सुध सरघा सूं कर दीयो कांनं रे ॥ ५५ ॥
 अधर्मी जीवां नें दाँन देवें छें, ते एकंत अधर्म दाँन ।
 धर्मी नें दाँन निरदौषण देवे, ते धर्म दाँन कह्यो भगवानं रे ॥ ५६ ॥
 सुपातर नें दीयां ससार घटें छें, कुपातर नें दीयां वधे संसार ।
 ए वीर वचन साचा कर जाणों, तिणमें संका नही छे लिगार रे ॥ ५७ ॥
 संसार ना दाँन नें साध परससैं, तिणनें कह्यो छ काय रों घाती ।
 तिणमे मुगत रा मारग रो भेल बतावें, ते तो पूरा छे मूढ मिथ्याती रे ॥ ५८ ॥
 जोड कीधी मिश्र दाँन निषेदण, सोभत सहर मभारो ।
 संवत अठारे ने वरस तेपने, सावण सुदि छठ नें सोमवारो रे ॥ ५९ ॥

ढाल : १७

दुहा

भेषधारी भूला फिरे जेन रा, बाजे लोकां मे अणगार ।
 ते धर्म कहे हिंसा कीयां, ज्यांरी जीभ बहे ज्यूं तरवार ॥ १ ॥
 ते खोटी करे छे पक्ष्यणा, जाबक सूतर विरुध ।
 त्या जिण मारग नही ओलख्यो, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ २ ॥
 जीव हया त्यांरा घट में नही, हिंसा रो उपदेस दे तांम ।
 त्यांरो उपदेस सुणे छे तेहनां, रहे जीव मारण रा परिणाम ॥ ३ ॥
 सावच्च दान संसारी जीवां तणों, तिणमें छ ही काय री घात ।
 तिणमे धर्म ने पुन पक्ष्यता, पापी सके नहीं तिलमात ॥ ४ ॥
 बेरी उठ्यां छें पापी छ काय ना, धर्म कहि कहि हणावे छ काय ।
 किण विष करे छे पक्ष्यणा, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगत्या मे]

छ काय रा पीहर बाजे लोकां मे, पिण सानी करे छ ही काय ने मरावे ।
 छ काय हणे कोइ दान देवे छे, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ।
 आ सरवा केइ भेष धारयां री ॥ १ ॥
 मुरड माटी खडी आवि अनेक पृथवी छें, त्यांरी जुदी जुदी दान साला मडावे ।
 दगचाल पाख्यां त्यांरो दान देवें छे, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ २ ॥
 कूआ बाव खणावे तलाव खोदावे, अथवा पाणी री पिण पो मंडावे ।
 दगचाल पाख्यां दान देवे पाणी रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ३ ॥
 अगन रा खीरां भोमर ने भरसाइ, इत्यादिक अगन री दानसाला मंडावे ।
 दगचाल पाख्यां दान देवे अगन रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ४ ॥
 वाया गया ने वायरो घालण, बीजणां री दानसाला मडावे ।
 दगचाल पाख्यां सहू ने वायरों घालें, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ५ ॥
 प्रतेक ने साधारण वनसपती री, त्यांरी जुदी जुदी दानसाला मंडावे ।
 दगचाल पाख्यां दान देवे वनसपती नो, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ६ ॥
 लवा तीतरादिक तस जीव अनेक, त्यांरी जुदी जुदी दानसाला मंडावे ।
 तस जीव रो दान देवें दगचाल, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ७ ॥

अथवा छ कय जीवां. नें जीवां हणे नें,
 दगचाल पाड्यां दांन देवें जीव हणी ने,
 कोइ छ काय जीवां रो गटकों करावें,
 ओ जीव हिंसा नों राहज खोटें,
 कोइ श्रावक री अणुकंपा आंणी नें,
 अथवा नीलोती रांघ खवावें,
 बेगण बालोदिक अनेक नीलोती,
 तिण मे इ धर्म कहे भेषधारी,
 गाजर मूला ने सकरकंद कांदा,
 अथवा जमीकंद नें रांघ रांघ खवावें,
 केइ बेगण बालोदिक भडथा करे ने,
 तिण मे भेषधारी धर्म बतावे,
 कोइ धर्म जाणे श्रावक रे काजें,
 तिण माहे दुष्टी धर्म बतावे,
 श्रावक ने नीलोती विवध प्रकारें,
 तिण माहे धर्म कहें भेषधारी,
 कोइ कोडां मण जमीकंद रांधी ने,
 तिण दातार री लेस्या नें भली कहें छें,
 श्रावक नें उन्हों पांणी कर पावे,
 तिण में धर्म कहें भेषधारी अनारज,
 श्रावक री अणुकंपा आंणी नें,
 हरकोइ काम करवा रें काजें,
 श्रावक ने कल्पें ते वस्त दीयां में,
 श्रावक तो हरकोइ वसत लेवें छें,
 श्रावक तो वसत इविरत मे लेवें छे,
 इण बात रो निरणों कीयां विण विकलां,
 अंबडना सिष्य सातसों हुंता,
 तिण माहे धर्म कहें भेषधारी,
 आगन्या रे देवाल तो निसंक पणा सूं,
 सर्व नंदी री आगन्या दीधी छें तिण रा,
 असंख्याता जीव तो पांणी तणा छें,
 त्यारो गटकों. करण री आगन्या दीधी,

त्यारी जुदी जुदी दांनसाला मडवें।
 तिण में एकत धर्म नें पुन बतावें ॥ ८ ॥
 अथवा छ काय मारे ने खवावें।
 तिण में एकत धर्म नें पुन बतावें ॥ ९ ॥
 कोरी नीलोती सचित खवावें।
 तिण में मूरख धर्म बतावें ॥ १० ॥
 राघ रांघ जीमावें श्रावक जांणी।
 त्यांरी भाषा छें जाणें बहती घाणी ॥ ११ ॥
 इत्यादिक जमीकंद श्रावक ने खवावे।
 तिण माहें धर्म अनारज बतावें ॥ १२ ॥
 श्रावक ने जीमावण त्यारी कीधा।
 त्या नरक सूं डेरा सनमुख दीघा ॥ १३ ॥
 कोरी कवली नीलोती छमक वधारी।
 त्यारें नरक जावा री हुइ तयारी ॥ १४ ॥
 कोरी काची खवावे वधार धूगारी।
 त्यांरी भव भव में होसी घणी खवारी ॥ १५ ॥
 श्रावक श्रावक ने देवें अणुकंपा आणी।
 केइ भेषधारी बोलें एहवी वांणी ॥ १६ ॥
 वले पावें काचो अणगल पांणी।
 त्यांरी जीभ बहें जाणें बहती घाणी ॥ १७ ॥
 खपें सो देवें अणगलीयो पाणी।
 तिण में धर्म कहें छें मूढ अयांणी ॥ १८ ॥
 धर्म कहें भेषधारी दिढाय दिढाय।
 आ पिण विकलां नें समरु न कांय ॥ १९ ॥
 देवाल पिण इविरत में दीधी।
 खोटी खोटी परुपणा पापीयां कीधी ॥ २० ॥
 त्यांनं काचा पाणी री आगन्यां दीधी।
 आ पिण खोटी परुपणा कीधी ॥ २१ ॥
 सर्व नदी री आगन्या दीधी छें तांम।
 भेषधारी कहें चोखा परिणाम ॥ २२ ॥
 वले नीलण फूलण रा जीव अनंत।
 तिण नें भेषधारी धर्म भाखंत ॥ २३ ॥

काचा पाणी री आगन्या दीधी छे तिणनें,
 भेषवारी भागल सरघा रा मिष्टी,
 जिण भाषीया तो सूतर बांचे,
 नंदी रा पांणी री आगन्या दीधी,
 कोडं मण काचो अणमल पांणी,
 तिण मांहे पुन कहे भेषवारी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 तिण सू आप डूबे अनेरां नें डबोवे,
 जीव खवायां मे पुन परूपे,
 पर जीव री पीडा न ओलखी त्यांरी,
 जीव खवाया में पुन परूपे,
 त्यारी जीम बहे तरवार सू तीखी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 ते दया रहीत छें दुष्ट अनारज,
 जीव खवायां पुन कहे जेनी होय ने,
 समकित श्रावक नें साध पणों हुवे,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 इण सरघा सू नरक में भीका खासी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 वले दुसमन रो जोग मिलसी तिणां ने,
 जीव खवाया पुन कहे भेषवारी,
 पापीया जेन रो भेष लजायां,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 छाने छाने तो सरघा सीखावें,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 परगट कहितां भूंडा दीसे,
 जीव खवायां पुन कहे त्यांरी सरघा,
 ते जेन तणा विगडायल पापी,
 कदे तो पुन कहे जीव खवायां,
 यां दोयां रो निरणो न कीयो विकलां,
 चोर चोरी री वसत छानें छानें बेचे,
 ज्यू जीव खवायां पुन कहे त्यांसूं,

साधु तो त्रिविधे त्रिविधे नही सरावे ।
 ते निसंक पणे तिण ने धर्म बतावे ॥ २४ ॥
 वले लोकां में जेन रा साध बाजे ।
 तिण नें धर्म कहितां मूल न लाजे ॥ २५ ॥
 तिणरी आगना देवे हर कोइ ।
 त्यां मानव नो भव दीधो खोइ ॥ २६ ॥
 त्यां विकलां री सरघा छे जेहर समान ।
 ते भव भव मे होसी घणा हिरान ॥ २७ ॥
 आ तो सरघा उठी जठायी भूठी ।
 त्यारी हीया नीलाड री दोनूइ फूटी ॥ २८ ॥
 त्यां दुष्टयां ने कहिजे निश्चे अनारज ।
 त्यां विकला रा किण विध सीभसी कारज ॥ २९ ॥
 वले चिठाय चिठाय नें बोले सेठा ।
 नरक निगोद रा प्रावण होय बेंठा ॥ ३० ॥
 ते नरक निगोद नें त्यारी हुवों ।
 त्यारे तीनूइ बोलां में उठीयो धूंओ ॥ ३१ ॥
 त्या सुध बुव अकल ने जावक खोइ ।
 तिहां छोडावण वालो नही छे कोइ न कोइ ॥ ३२ ॥
 त्यारे बाहला तणो पडजाय विजोग ।
 वले बधतो जासी त्यारे रोग ने सोग ॥ ३३ ॥
 मुहपती बांधी री पिण वरग न बूहां ।
 विरत विहूणा नागडा निरलज हुआ ॥ ३४ ॥
 त्यांने पूछ्यां थकां पलटे जावे वाणों ।
 त्यांरी सरघा ने जार गरभ जिम जाणो ॥ ३५ ॥
 ते सीह तणी परे कदे न गूंजे ।
 त्यांने प्रश्न पूछ्यां गाडर जिम धूजे ॥ ३६ ॥
 चोडे निसंक सू निश्चेइ उधी ।
 त्यांरी भाषा पिण किण विध नीकलेसूंधी ॥ ३७ ॥
 कदे कहे जीव वचायां पुन ।
 यूं ही बके गेहला ज्यूं हीयासून ॥ ३८ ॥
 चोडे घाडें तिण सू वेचणी नावे ।
 चोडे लोकां में वतावणी नावे ॥ ३९ ॥

जीव खवायां पुन फल्पे, त्यांरी सरघा अतत छे माठी सूं माठी ।
 आ उंधी सरघा वेंठी उसभ उदें सू, त्यांरी सुघ बुघ अकल जाबकगड न्हाठी ॥ ४० ॥
 जीव खवायां पुन कहें त्यांरी सरघा, मांस अहारी ने हिंसा घर्म्यां सूं भिलती ।
 एहवा अनारज तो आ सरघा सरासी, पिण जिण मारग सूं तो जाबक टलती ॥ ४१ ॥
 जीव खवायां पुन कहें ते पापी, पाघरा नरक निगोद में जासी ।
 तिहां छेदन भेदन विवध प्रकारे, बले मार मे मार अनती खासी ॥ ४२ ॥
 जीव खवायां पुन कहें त्यां पापीयां नें, तातो ताबो उकाल नें नरक में पासी ।
 बले जीभ काढसी त्यांरी जड सूं तांणी नें, खाल उतार नें बले खार लगासी ॥ ४३ ॥
 जीव खवायां पुन कहे भेषधारी, त्यांनें नरक री मार रों छेह न पारों ।
 छद्मस्थ सूं पूरी कहणी न आवें, पल सागरा लग खासी मारों ॥ ४४ ॥
 ते नरक मांसूं नीकल नें पापी, पछे छलतो छलतो निगोद में जासी ।
 तिहां जन्म नें मरण करसी अनंता, अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४५ ॥
 नरक निगोद ने तिरजंघ गति मे, आमां साह्यां घणा गोता खासी ।
 तिणरी मार तणो छेह बेगो न आवे, अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४६ ॥
 नरक निगोद सूं नीकल नें पापी, नीठ नीठ नर नो भव पासी ।
 घणो दो भागीयों ने दलदरी होसी, तिणनें निजरां दीठां पिण किणने न सुहासी ॥ ४७ ॥
 उगता रा मात पिता मर जासी, बले बाहलां तणो पड जासी विजोग ।
 दुसमण तणों संजोग आए मिलसी, बले वघतो जासी तिणरे रोग नें सोग ॥ ४८ ॥
 जीव खवायां पुन कहें भेषधारी, त्यां दुष्टया री रगत दूर निवारो ।
 दया धर्मी री संगत कर नें, तिरण तारण गुर माथें धारो ॥ ४९ ॥
 बले कहि कहि नें कितरा एक केहुं, जीव खवायां पुन कहे त्यारा दुख ।
 ते भमन करसी अरट घटकारे त्याये, तिण पापी नें किण विघ होसी सुख ॥ ५० ॥
 हिंसाधर्मी ओलखावण काजे, जोड कीधी पाली सहर मभारे ।
 संवत अठारे ने पचावनें वरसें, आसोज सुद एकम नें बुववारे ॥ ५१ ॥

ढाल : १८

दुहा

केइ भेषधारी भागल थया, त्यांरी मिष्ट हुइ सुष वृष ।
 त्यां पेट भरण रे कारणे, कीधी परूपणा असुष ॥ १ ॥
 ग्रहस्थ लाडू आदि मोल आण नें, अयवा घरे नीपाए तांम ।
 ते जीवावे त्यांरा श्रावकां भणी, तिणरो दया दीयों छे नांम ॥ २ ॥
 एहवो धर्म सीखायों श्रावकां भणी, तिण सूं उलटा बांधे छे कर्म ।
 जेसा कूं तेसा मिल्या, भूला अग्यांती भर्म ॥ ३ ॥
 लाडू खवायां धर्म परूपीयो, ते आप रे सुतलव कांम ।
 रस गिधी जीभ्या रा लोलपी, यारें आछा खावां री मनहांम ॥ ४ ॥
 दया पलाइ सुख सूं कहे, पिण प्रतप दीसं गोठ ।
 तिण गोठ रो नांम दया दीयों, ते चोडे चलायो खोट ॥ ५ ॥

ढाल

[३ भवीयण सं०]

केइ दया पलावण चोखां रे तांइ, मूसलां सूं साल खंडावे ।
 एकीका मूसलरें धमके, असंख्याता वाउकाय मर जावे ।
 रे भवीयण आ दया कठ थी काढी, ओछा वेवज पेट रें कारण ।
 जिण धर्म तणी वरत वाढी रे, थे समभाया पिण समभो नांही ।
 थारें चोकडी दीसं जाडी रे ॥ १ ॥
 जंबूदीप भरें तिजारा रा दांगां थी, ते तो गिणती रा जीव असंख्यात ।
 तिण थी असंख्यात गुणा वाउ रा जीवां री, एके धमके हुवें घात रे ॥ २० २ ॥
 पछें छाज में घाले भाटक पछाटे, तुसने चावल करे जुआ ।
 तिहां पिण एकीका छाज रें फरके, असंख्याता वाउकाय भूया रे ॥ ३ ॥
 दया पलावण चोखा पीसें ते, घरटी नें धमकावें ।
 एकीका घरटी रा फेरा में, असंख्याता वाउकाय मर जावे ॥ ४ ॥
 वले घरटी फेर्यां तेउकाय उठें छे, तिण अगन तणी हुवे घान ।
 एकीका घरटी रा फेरा में, तेउकाय मरे असंख्यात रे ॥ ५ ॥
 वले मेदां में घी ऊन्हों करे घाले, तिहां तेउ तणी हुवें घान ।
 खांड घाले दया रा लाडू वणावे, तठे दया नही तिलमात रे ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

केइ लाडू भुजीया नें मुरमुरीयां,
 ओ पिण क्रय विक्रय नों दोष छे भारी,
 वले दया पलावण नें सूंठ भीजोवे,
 वेंसवाख्या भूंगडा पिण ल्यावें,
 हलवाइ तो लाडू मोल बेचण कीघा,
 एहवा लाडू खावे खवावें,
 गाम परगाम थी दही मोल मंगावें,
 नीलण फूलण रा जीव मारें अनंता,
 वले जातां नें आवतां नीलो चीथ्यो,
 बाउकाय मरें उघाडें मुख वोल्यां,
 साध साधवीयां नें श्रावक श्रावकां रो,
 दया पलावण धर्म रे लेखें,
 मुदे तो रातां हाथ री बायां बुलावें,
 थें दया धर्म रा लाडू खाय नें,
 ए तो निरलजीयां इण कामां ने बेंठी,
 पेलां रे घरे जाय उमाइ,
 भेषधाख्यां नें घर सूं जाय बोलवें,
 बारमो वरत नीपजावों म्हारें,
 त्यांनें तेड्यां ततकाल जावें तिण घर,
 ताजे आहार तूटा वडें पापी,
 लाडूआं री दया तो यांहीज सीखाइ,
 ए सगला लाडू खाए ते वेहरे,
 बायां नें लाडू दया रा खवायां,
 भेषधाख्यां नें लाडू तेड बहराया,
 लाडू खाती खाती लेवे दही रा सबडका,
 धर्म रा लाडू खाती नहीं लाजें,
 उपवास री वांथवा कर लाडू खवावें,
 भीकों उडावे लाडू खावारों,
 ताजी ताजी वसतां खावे शिघीपणा सूं,
 तो भांड ज्यूं भांडे तिणनें भांडोंकाडीयां,
 ताजों आहार सराय सराय नें खावे,
 त्यां विकलां नें जीमायां धर्म जाणें,

दया पालण ने मोल मंगावें ।
 अठें पिण हिंसादिक थावें रे ॥ ७ ॥
 वले अथाणो मोल मंगावें ।
 केइ पापड पिण सेकावें रे ॥ ८ ॥
 मोल लेवें त्यारें आघाकर्मी ।
 त्यांनें निश्चे जाणो अघर्मी रे ॥ ९ ॥
 नदी वाहला उलंधी ल्यावें ।
 पांणी फूंवारादिक माख्या जावे ॥ १० ॥
 तस थावर तणी हुवें घात ।
 तठे पिण दया नहीं तिलमात रे ॥ ११ ॥
 सारां रो भेलों बांधें तुमार ।
 इण विष नीपजावें आहार रे ॥ १२ ॥
 आप म्हारें आंगण पधारो ।
 म्हारा जीवां रो करो उधारो रे ॥ १३ ॥
 ते तो सुणनें हरषत थावें ।
 दया धर्म रा लाडू खावें रे ॥ १४ ॥
 म्हारें घरे आप पधारों ।
 तिणसूं म्हारो होसी उधारो रे ॥ १५ ॥
 जाणें डोरी ताण्यो स्वान ।
 यारें पेट भरण रो तांन रे ॥ १६ ॥
 ते तो आघों काढसी केम ।
 पूरे मन रा मनोरथ एम रे ॥ १७ ॥
 त्यांसूं उपवास रो करे करार ।
 त्यांसूं करार न कीधों लिंगार रे ॥ १८ ॥
 सवाद सूं खावे मुरमुरी भुजीया ।
 ते तों छोडो लोकीक री लजीया रे ॥ १९ ॥
 ते खावा री ओछ राखें किण लेखें ।
 चांप चांप खावें वशेले रे ॥ २० ॥
 जो एक वसत माहें हुवे कजी ।
 तिणरी निदा करें निरलजो रे ॥ २१ ॥
 ते तो कर्म तणा पूंज बांधें ।
 तिण धर्म न ओलख्यो आछे ॥ २२ ॥

आछो आछो खाये तिणरी दया सुधारे, उणी रहे तो उवा दया बिगाडे ।
 एहवी रस ग्रिवणीयां जीभ्या री लपटण, ते पेला नें कदेय न तारे रे ॥ २३ ॥
 मिनष आंतरीयो घुरल कें जूतों, तिण उपर दया पलावे ।
 उणरें प्रांग छुटण री त्यारी हुइ छे, तिण घर बेठी लाडू खावें रे ॥ २४ ॥
 उण मांदा तणा मुर बाज रह्या छे, दोहरा लेवें छे सांस उसांस ।
 ए लाडू खाती दही रा लेवे सबडका, वले मन मे आंण हुलास रे ॥ २५ ॥
 तिण मादा नें तिण दिन मरतों जाणें ने, लाडू दही तिहां थी उठावे ।
 हुजे टक खावा रे तांइ, ओर जायगा आंणे नें खावें रे ॥ २६ ॥
 मिनष आंतरीयो घुरलके जूतो, तिणरा मुख सूं दया बोलावे ।
 ते मूंआ पछे तिणरा न्यातीलां रे घर, घूरलाका रा दांन रा लाडू खावे रे ॥ २७ ॥
 एहवी, रीता हाथा री बायां बारणें बेंसाणे, त्याने जीमाया भलो न होगा ।
 ए अतप कुसावण दीसे लोकां रे लेखें, जांणे मांदा उपर नाचें भोगा ॥ २८ ॥
 मंजारी जिम फिरती रहे छे, जीमणवार री खबर रें तांइ ।
 आछा खावा रो ध्यान लग रह्यो त्यारी, तांणां बेजा लगा तिण माहीं ॥ २९ ॥
 किणरे आरो मोसर जीमण करतां, बारदानो वधीयो सुणें ताय ।
 जब रस ग्रिवणीयां जिभ्या री लपटण, तिण दोली फिरें छें जाय ॥ ३० ॥
 कहे मोनें लाडू खाय नें दया पलावें, थाने इण बात रो होसी धर्म ।
 म्हे लाडू खाय ने उपवास करस्या, तिणसूं थारे पिण कटसी कर्म ॥ ३१ ॥
 जब वा वाइ थोडो हुंकारो मरे तो, ए खावा ने होय जावे तयार ।
 धर्म रा लाडू खाती नही लाजे, त्यां विकलां ने तीन धिकार रे ॥ ३२ ॥
 ठडी रोटी ने घाट सूं दया पलावें, तो मुख सूं कर दें नाकारो ।
 तागा माल साटें त्याने दया पलावे, तो ए तुरत हुवे खावा ने तयारो रे ॥ ३३ ॥
 ओ तो खावा तणी गटकायां उघाडी, त्याने पोष्यां बंधे पाप कर्मो ।
 तिणमें धर्म जाणे कुगुरां रा कह्या थी, ते पिण भूला अग्यांनो भर्मो रे ॥ ३४ ॥
 एहवी खावा तणी गटकाइ त्याने, बुधवत जाणे धर्म ठगो ।
 धर्म रे ओलें खाए ते धर्म ठगारी, भोला लोकां नें देवे छें दगो ॥ ३५ ॥
 दस बीस कोस उपर पकवानं सुणें तो, हीडोला खावां ने दोड्या जावे ।
 ए तो घरे बेठी गुर री दलाली सूं, दोनू टका लाडूडा खावे रे ॥ ३६ ॥
 हीडोला मे बीस कोस खावा पड्या जब, एक टक पिण नीठ सूं खावे ।
 याने घरे बेठा मिले दोनू टक लाडू, त्यांसूं लाडू छोड्या किम जावे रे ॥ ३७ ॥
 हीडोला तो जाये जीमें न्यात रे लेखें, ते पिण निरलज हीडोला बाजे ।
 ए पिण धर्म रा लाडू खावे निरलजीयां, बेसरम्यां मूल न लाजे ॥ ३८ ॥

ओसर मोसर विनां पेंलारें घरे, जाए वेंडी पग पसार ।
 हीडोला जिम जीमें धर्म रे लेखे, धिम त्यारो जमवार रे ॥ ३६ ॥
 मोटका घर रा केइ डहा हुवें ते, विचार करें मन मांही ।
 आपरा घर री लाडू खावा जाती हुवे, तिणनें पर घर जावा दें नांहीं ॥ ४० ॥
 रलीयार ढोर ज्यूं रलीयार हुवे ते, वरजें तोही वरजी न लगें ।
 दया पलावण रा लाडू काने सुणें तो, होय जाए सगला रे आगे रे ॥ ४१ ॥
 दया रा लाडू खावा ने उमाइ, आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें ।
 त्यांसूं जिभ्या तणो चट रस नही छूटे, गटकायां हिली छें गटके रे ॥ ४२ ॥
 यारें मूदें तो रीता हाथा री बायां, कदा कांयक सुहागण आवें ।
 तिणनें पिण कर दे गटकाइ, तिण सूं आ पिण त्यामिं जावें रे ॥ ४३ ॥
 बीजासणीयां में खेतलो देवें, खेतला विण बिजासणीयां नांहीं ।
 ज्यूं रीता हाथां री दया पालें छे, तो ही भेषधारी त्यां मांही रे ॥ ४४ ॥
 याने दया तणा लाडू खावा री, भेषवाख्यां कुवद सीखाइ ।
 आप तणा मुतलव रें तांइ, आ कुगुरां कुवद चलाइ रे ॥ ४५ ॥
 गाय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवें, कूप हुवें तो अवलें आवे ।
 जाणें यानें खवावसी तो मानेंइ वेंरासी, तिण कारण ए चाला चलावें रे ॥ ४६ ॥
 कोई पांच तिथां उपवास करती न दीसें, न करे एक टक पोहर वेपारी ।
 तिणनें लाडूआ साटे उपवास करावें, तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे ॥ ४७ ॥
 जो यारें दया पालण रा परिणाम हुवें तो, घर री रोटी खाए दया पालो ।
 उपवास करें वले करदों पोसो, छ काय तणो करो टालो रे ॥ ४८ ॥
 ए सांप्रत लाडू खाए धर्म लेखे, त्यानें पूछ्यां बोल जाए कूर ।
 मूहपती बांधे नें भूठ बोले छें, त्यांरी दया में पड गइ घूर रे ॥ ४९ ॥
 ब्राह्मण तो मनसा भोजन धर्म रो जीमें, त्यांरो तो कुल में चेहरो न थाय ।
 माहजन री वेठ्यां धर्म रा लाडू खाए तो, त्यांरी निद्या हुवें लोकां मांय रे ॥ ५० ॥
 ब्राह्मण तो धर्म रे लेखे आता लेवें, दिवणा दीयां लेवें धन धान ।
 इत्यादिक याने देवें ते लेवें, ते तो लेता न करे अभिमान रें ॥ ५१ ॥
 याने मनसा भोजन आदि देवें नें लेवें, यांरा कुल री छें आहीज रीत ।
 जो इण रीते दान महाजन री वेठ्यां लेवे, तो लोकां मे हुवें फजीत रे ॥ ५२ ॥
 आंतरीया ऊपरला लाडू खावे, त्यानें भातादिक देवें सर्व लेंगों ।
 ब्राह्मण तो दातार नें धर्म कहेछें, ज्यूं याने पिण धर्म केंगो रे ॥ ५३ ॥
 धर्म रा लाडू तो खाती नहीं लाजें, तो भातादिक लेती लाजे कांय ।
 धर्म रो लेंगो मांड्यो तो सब ही लेंगों, लेखो कर देखो मन मांय रे ॥ ५४ ॥

जाए वेंडी पग पसार ।
 धिम त्यारो जमवार रे ॥ ३६ ॥
 विचार करें मन मांही ।
 तिणनें पर घर जावा दें नांहीं ॥ ४० ॥
 वरजें तोही वरजी न लगें ।
 होय जाए सगला रे आगे रे ॥ ४१ ॥
 आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें ।
 गटकायां हिली छें गटके रे ॥ ४२ ॥
 कदा कांयक सुहागण आवें ।
 तिण सूं आ पिण त्यामिं जावें रे ॥ ४३ ॥
 खेतला विण बिजासणीयां नांहीं ।
 तो ही भेषधारी त्यां मांही रे ॥ ४४ ॥
 भेषवाख्यां कुवद सीखाइ ।
 आ कुगुरां कुवद चलाइ रे ॥ ४५ ॥
 कूप हुवें तो अवलें आवे ।
 तिण कारण ए चाला चलावें रे ॥ ४६ ॥
 न करे एक टक पोहर वेपारी ।
 तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे ॥ ४७ ॥
 घर री रोटी खाए दया पालो ।
 छ काय तणो करो टालो रे ॥ ४८ ॥
 त्यानें पूछ्यां बोल जाए कूर ।
 त्यांरी दया में पड गइ घूर रे ॥ ४९ ॥
 त्यांरो तो कुल में चेहरो न थाय ।
 त्यांरी निद्या हुवें लोकां मांय रे ॥ ५० ॥
 दिवणा दीयां लेवें धन धान ।
 ते तो लेता न करे अभिमान रें ॥ ५१ ॥
 यांरा कुल री छें आहीज रीत ।
 तो लोकां मे हुवें फजीत रे ॥ ५२ ॥
 त्यानें भातादिक देवें सर्व लेंगों ।
 ज्यूं याने पिण धर्म केंगो रे ॥ ५३ ॥
 तो भातादिक लेती लाजे कांय ।
 लेखो कर देखो मन मांय रे ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण तो दातार नें आसीस देवें छे, दोनू हाथ जोडी नमे सीस ।
 जू ए पिण धर्म रा लाडू खाए नें, दातार ने देणीं आसीस रे ॥ ५५ ॥
 आणद आदि देई श्रावक अनेक हुआ त्या, एहवी दया तो किण ही न पलाइ ।
 किण ही सूतर में चाली नहीं दीसे, थे आ कुबद कठायी चलाई रे ॥ ५६ ॥
 त्यारे कोडाग में धन घर माहें हुंतो, जीव रा पिण किरपण नांही ।
 एहवी दया पलाया मे धर्म जाणे तो, आघो न काढता काई ॥ ५७ ॥
 आगे गौतमादिक साध अनेक हुआ त्यां, एहवी दया पालणी कही नांही ।
 लाडू खाया खवायां तो हिंसा उघाडी, तिणमें कला मत जाणो काई रे ॥ ५८ ॥
 एहवी दया भेषधास्यां सीखाई, तिणमें दया नहीं तिलमात ।
 लोलपणो तो उघाडो दीसे, बले छ काय तणी हुवे घात ॥ ५९ ॥
 लाडूवा खांणी दया ओलखावण, जोड कीघी नाथ दुवारा मभार ।
 सवत अठारे ने वरस छपने, पोह विद बीज सनीसरवार रे ॥ ६० ॥

दुहा

अंबरसिन्यासी श्रावक थयो, ते हुवो साघां रो सुवनीत ।
तिण लीघा व्रत चोखा पालीया, पिण छोडी नही मत रीत ॥ १ ॥
तिणरे भगवा वसतर पेंहरणें, डंड कमडल तिणरें हाथ ।
ओर उपगरण सिन्यासी तणां, ते लीया फिरें छें साथ ॥ २ ॥
काचों पाणी नदी तणां, ते पिण निरमल बेंहर्तो जाण ।
ते पिण दीघो दातार नो, ते पिण पांणी लेणो छाण ॥ ३ ॥
ते पिण पांणी सावंच जिण कह्यो, तिण पांणी रों अंबर नें अगार ।
अचित पांणी ने उन्हां पांणी तणो, तिण त्याग कीयो परिहार ॥ ४ ॥
आ रीत छें सिन्यासी तणी, छूटी नहीं दीठी तास ।
तिण श्रावक रा व्रत आदख्यां, श्री वीर जिणंद रें पास ॥ ५ ॥
तिणरें विरत आदरतां इविरत रही, ते एकंत अघर्म जाण ।
ते आश्रव पाप ना बारणा, तिण सूं पाप लागें छें आण ॥ ६ ॥
तिणरों खाणों पीणों नें पेंहरणों, बले उपधि उपभोग परिभोग ।
ते सगलाइ राख्या ते इविरत में, त्यानें भोगव्यां सावच जोग ॥ ७ ॥
भोगवे ते पेहले करण पाप छें, भोगवावे ते दूजे करण जाण ।
सरावे ते करण तीसरें, सारां रे पाप लागे छें आण ॥ ८ ॥
केइ अग्यानी इम कहें, अंबर नें जीमायां धर्म ।
त्यां जिण मारग नही ओलख्यो, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ ९ ॥
अंबर कीघो छें सों घरां पारणों, ते निश्चेइ इविरत में जाण ।
ते जथा तथ परगट करूं, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ १० ॥

ढाल

[दया भगवती छे सुख दायी]

केइ कहें अंबर सिन्यासी श्रावक, सो घरां पारणों कीघो तांमो जी ।
सो घरां रात रों बासो कीघों, ते धर्म दीपावण कामो जी ।
सो घरां अंबर पारणों कीघों, बुधवंत ग्यांन करी ने देखोः ॥ १ ॥
कोइ धर्म दीपावण रो नाम लेखें छे, सों, घरां बासों लीयों ताह्यो जी ।
ते एकंत, मूषावायो जी ॥ बु० २ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सो घरा अंबर पारणो कीघों, सो घरा बांसों लीयों ताहों जी ।
 तिणरो न्याय न जाणे अग्यानी, थोथी करे बकवायो जी ॥ ३ ॥
 अंबर सिन्यासी सों घरां पारणों किघो, सो घरां बीसो कीयो छे तांमो जी ।
 तिण घणां लोकां नें विसमय उपजावण, वेक्रे लवध फोरवी इण कांमो जी ॥ ४ ॥
 वेक्रे लवध फोरवी ते सावध जोग, वेक्रे सरीर कीयो तिण कालो जी ।
 वेक्रे सरीर करतां पांच किरिया लागी, तिण सू पाप लागो दग चालो जी ॥ ५ ॥
 काइया अहिगरणीया नें पाउसीया, पारितावणीया पाणाइवायो जी ।
 ए पांच किरिया लागे वेक्रे कीघां, पन्नवणा छतीसमां पद माह्यो जी ॥ ६ ॥
 वेक्रे करने सों घरां बासो लीघो, वेक्रे कर सों घरा कीयो आहारो जी ।
 ए तीनूं किरतव जिण आगन्या बारे, ते सावध जोग व्यापारो जी ॥ ७ ॥
 धुर सू वेक्रे कीयो ते सावध जोग, दूजो सो घरा कीयो आहारो जी ।
 तीजो सों घरां वासो लीघों, ए तीनूं सावध जोग व्यापारो जी ॥ ८ ॥
 ए तीनूह किरतव सावध कीघा, ते तो विसमे उपजावण कांमो जी ।
 कोइ कहे धर्म दीपावण कीघा, ते भूठ बोले बेफांमो जी ॥ ९ ॥
 धर्म दीपावण सो घरां पारणों कीघो, तो थे सूतर में काढ बतावो जी ।
 जो थे सूतर माहे नही काढो तो, गाला रा गोला मती चलावो जी ॥ १० ॥
 पारणो कीघों सो घरां धर्म दीपावण, आ तो उठी जठायी भूठी जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, त्यारी हीया निलाड री फूटी जी ॥ ११ ॥
 सो घरां पारणो कीयो विसमय उपजावण, ते तो उघाडो सावध साख्यातो जी ।
 तिण माहे धर्म कहे छें अग्यानी, ते प्रतख भूठ मिथ्यातो जी ॥ १२ ॥
 लवध फोडवीयां जिण मारग दीपे तो, गोतमादिक साध अनेको जी ।
 त्यामें तो लवध घणेरी हुंती, ते तो मारग दीपावत वशेवो जी ॥ १३ ॥
 साधु आप नें ओरां नें विसमय उपजावे, तिणने चोमासी प्राच्छित आवे जी ।
 नसीत रें इयारमे उदेसे, तिणमे धर्म किहांथी थावे जी ॥ १४ ॥
 विसमे ने इचरज कतोहलादिक विद्या, मंत्र इद्रजालादिक जाणो जी ।
 ते विसमे उपजावण अंबर सिन्यासी, फोडवी लवध पिच्छांणो जी ॥ १५ ॥
 साधु विसमें उपजावें तों प्रायच्छित आवे, लागे एकंत पाप कर्मो जी ।
 तो अंबर सिन्यासी विसमय उपजाइ, तिणने किण विच होसी धर्मो जी ॥ १६ ॥
 केइ कहे श्रावक रतना रो भाजन, तिण पोख्यां छे एकंत धर्मो जी ।
 पाप रों अंस तो मूल न लागे, कटें निकेवल कर्मो जी ॥ १७ ॥
 जो श्रावक ने पोख्यां में पाप हुवे तों, अंबर ने पारणों नही करावत जी ।
 अंबर सिन्यासी पिण श्रावक हूतो, सों घरां पाप नही लगावत जी ॥ १८ ॥

'यूं कहि कहि अग्यानी श्रावक जीमायां,
 तिणनें विरत इविरत री खबर न काई,
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीघो,
 तिणरें खांणो पीणो सारो इविरत में थो,
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीघो,
 तिणनें पारणो कराय पाप लगायो,
 अंबर नें पेंलें करण पाप हूवो छें,
 सरावण वालों तीजे करण पापी,
 अंबर नें काचो पांणी लेवण री,
 तिणने धर्म कहे छें अग्यानी,
 जीव रो गटको करण री आगन्या देसी,
 तिण माहे धर्म कहे छें पाखंडी,
 तीन काल रा श्रावक त्यांरो,
 ते अंबर ने पारणो करायां,
 अंबर पारणो कीघो छें तिणरो,
 करावण वाला नें करावण रों पाप,
 पेंला रों लगायो तो पाप न लागें,
 सावद्य जोग दोया रा जूआ जूआ बरत्या,
 अंबर तो सो घरां पारणो कीघों,
 करणवाला ने करावणवाला नें,
 अंबर सो घरां पारणो कीघो,
 तिण सावद्य काम कीयो जब लोकां,
 जिण मारग माहें कोइ लबध फोडवी तो,
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध,
 अनेरा भेष मे केवल ग्यान उपजे,
 त्यां कने दिष्या लेवे तो दिष्या न देवें,
 वाणी वागरीया लोक सुणे इम बोले,
 अनेरा मत री वधे परससा,
 केवल ग्यानी अनेरा मत री,
 पाखंड मत ने वधतो देख्यो,
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध,
 तिण विसमे उपजावणा फोडवी लबध,

थापे' छे एकंत धर्मो जी ।
 भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ १९ ॥
 तिणने सों घर रो पाप लागो जी ।
 इविरत सेवी पिण वरत न भागो जी ॥ २० ॥
 सो घरां रो लागो छे पाप कर्मो जी ।
 त्यांनं किण विघ होसी धर्मो जी ॥ २१ ॥
 तो करावण वालो दूजें करण जाणो जी ।
 यानें रूडी रीत पिछाणो जी ॥ २२ ॥
 सर्व नदी री आगन्या दीघी जी ।
 तिण हिंसा धर्म री थापना कीघी जी ॥ २३ ॥
 तिणरें निश्चें बंधसी पाप कर्मो जी ।
 ते भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ २४ ॥
 खांणो पीणो एकंत अधर्मो जी ।
 किण विघ होसी धर्मो जी ॥ २५ ॥
 अंबर ने पाप लागो छे तामो जी ।
 यांरा जूआ जूआ परिणामो जी ॥ २६ ॥
 आपरो लगायो पापज लागे जी ।
 त्यांरो पाप लागो छे सागें जी ॥ २७ ॥
 तिणनें सिन्यासी जाण करायो जी ।
 भगवते नहीं सरायो जी ॥ २८ ॥
 सो घरा वासो लीयो ताह्यो जी ।
 सिन्यास्यां रो मारग दीपायो जी ॥ २९ ॥
 भगवंत नही सरावें जी ।
 तिण में धर्म केम बतावे जी ॥ ३० ॥
 ते तो नहीं बागरें वाणी जी ।
 मिथ्यात वधतो जाणी जी ॥ ३१ ॥
 यामेंइ उपजे केवल नाणो जी ।
 वाणी नहीं बागरें इम जाणो जी ॥ ३२ ॥
 महिमा वधती जाणी जी ।
 यूं जाणे नही बागरी वाणी जी ॥ ३३ ॥
 तिणने लबध जीरवी नांही जी ।
 तिणमे धर्म नही छें काई जी ॥ ३४ ॥

सिन्यासी रा भेप मे लवद फोडवी,
 आपरे छोदे लवद फोडवी तिणनें,
 जब कोइ कहे अबर ने कह्यो अराधक,
 पांचमें देवलोकें देवता हूवो,
 अबर तो अराधक हूवो,
 पिण लवव फोडवी तिण सूं नही हूवो,
 अनेरा भेप मे केवल ग्यान उपनो,
 त्यानें साध श्रावक जाणे केवल ग्यानी छे,
 तिण भेप थका साध श्रावक वांदे,
 जाणें म्हाराइ मत मे केवल ग्यान उपजे,
 कदा साध श्रावक जो त्यानें वांदे,
 घणा लोक त्यांरी देखा देख वांदे,
 गोतम सांमी पूछ्यो भगवत ने,
 इण काई करणी करे लवव पाइ छे,
 जब वीर जिणसर कहें गोतम ने,
 अंबर सिन्यासी प्रकत रो मत्रीक छे,
 अंबर सिन्यासी वेले वेले निरंतर,
 दोनूइ बाह्यां उंची राखी नें,
 आतपना भूम नदी तट माहे लेतां,
 भला अधवसाय आया तिण काले,
 एकदा प्रस्ताव तदावर्णी कर्म,
 विचारणा करता तिण काले,
 वेकें करवा री सक्त पांमी,
 वीर्य लवद छता रूप सक्त,
 वेकें लवद फोडवे वेकें रूप कर नें,
 वेले वासो सो घरां मे लीघो,
 वेले गोतम सामी पूछ्यो भगवत ने,
 जब वीर कहे पांचमें देवलोकें,
 देव चवी महाविदेह षेतर में,
 आठोई कर्म तणो षय कर नें,
 अंबर सिन्यासी री वेकें लवद ओलखावण,
 सवत अठारे सतावनें वरसें,

तिण सिन्यासी री महिमा वधारी जी ।
 जिण आगन्यां नही छे लिंगारी जी ॥ ३५ ॥
 तिणनें वीर जिणंद सरायो जी ।
 ते मिनष थइ मोप जायो जी ॥ ३६ ॥
 चोखा वरत पाल्यां सूं जाणो जी ।
 तिणरी सूतर सूं कीजो पिच्छाणों जी ॥ ३७ ॥
 ते भेप छें पेहरण तांमो जी ।
 पिण वादे नही सीस नांमो जी ॥ ३८ ॥
 तिण मत रा पाखडी गूंजे जी ।
 त्यानें उंडी तो मूल न सूके जी ॥ ३९ ॥
 तो विगडे छे जावक बातो जी ।
 जब वधो घणो मिथ्यातो जी ॥ ४० ॥
 अंबर सिन्यासी छें तांमो जी ।
 लवद फोडवे छे किण कामो जी ॥ ४१ ॥
 सुण तूं अबर री बातो जी ।
 जाव विनेवंत साख्यातो जी ॥ ४२ ॥
 आंतरा रहीत तपसा कीधी जी ।
 सूर्य सांमी आतापना लीधी जी ॥ ४३ ॥
 आया सुम परिणामो जी ।
 निरमली लेस्या वरतीं तांमो जी ॥ ४४ ॥
 षयोपसम कर्म हूवा चकचूरी जी ।
 वीर्य लवद पांमी छे रुडी जी ॥ ४५ ॥
 वेले पांमीयो अवधि गिनांनो जी ।
 वेकें सूं करे रूप असमानो जी ॥ ४६ ॥
 सो घरां पारणो कीयो तांमो जी ।
 ते विसमे उपजावण कामो जी ॥ ४७ ॥
 अंबर मरनें किहां जासी जी ।
 महीढीक देवता थासी जी ॥ ४८ ॥
 चारित पाली निरदोषो जी ।
 पाघरो जासी मोखो जी ॥ ४९ ॥
 जोड कीधी गोघदा मभारो जी ।
 चेत सुदि चोथ ने बुधवारो जी ॥ ५० ॥

दुहा

केइ हिंसा धर्मी जीवडा, ते जीव माखां कहे धर्म ।
 ववेक विकल सुघ बुघ विनां, भूला अग्यांनी मर्म ॥ १ ॥
 जिण आगम अर्थ ऊंचा करे, वले कूडा कुहेत लग्गाय ।
 हिंसा कराय जीवां तणी, घणो हरस घरे मन मांय ॥ २ ॥
 टीका चूर्ण भास नियुक्ति नां, यांरा करे घणा वखांण ।
 ए च्याह्दई नही जिण भाखीया, त्यांरी बुघवंत करजो पिछांण ॥ ३ ॥
 एबारें काली पछें कीया, मिष्ट आचाखां आप रे छंद ।
 त्यांमें विवध पणे भूठ गूथ नें, चोडें मांड्यां भोलां नें फंद ॥ ४ ॥
 ज्यूं ज्यूं अणाचार सेवीयां, ज्यूं ज्यूं घाल्या टीकादिक माहि ।
 वले उंधी उंधी सरधा घणी, ते घाली टीका में ताहि ॥ ५ ॥
 जीव हणवा रों उपदेस दें, घणी खोटी परुषें छें ताय ।
 धीडी सी परगट कळें, ते सुणजों चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

दाल

[३ प्राणी कर्म समो नही...]

देव गुर संघ काजें चक्रवत री सेना, कहे साघ करे चकचूरों ।
 जो नही करे तो दसमो प्राछित आवें, बे इसडो म भाषो कूडो रे ।
 कुमत्यां हिंसा धर्म कांय थापो रे* ॥ १ ॥
 बे भगवंत भाष्या सूतर बाचो, वले साघ लोकां माहे बाजों ।
 जीव माखां में धर्म परुषों, इसडो म करों अकाजो रे ॥ कु० २ ॥
 गोसाले दोय साघ भगवंत रा बाल्या, वले वीर नें कीयां लोही ठाण ।
 त्यां साधां में सकत थी गोसाला बालण री, पिण खमता कीची सुमता आंण रे ॥ ३ ॥
 ओ प्रतख गोसालो प्रतणीक हुवो, तिणरी साधां न करी घात ।
 थे प्रतणीक माखां में धर्म बतावों, ते मूरख मानें बात रे ॥ ४ ॥
 प्रतख गोसालो प्रतणीक नें, जो नही हणीया प्राछित आवें ।
 तिण लेखे भगवंत रा साघ लब्द धारी, प्राछित लीयां सुघ थावें रे ॥ ५ ॥
 सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, ते पिण मुख सुं बोलसी न्याय ।
 हुं छती सकत समर्थ नही खमवा, अवगुण काढसी आप मांय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विरत इविरत री चौपई : ढाल २०

बले दोग साधां रा ने वीर रा गुण गावसी, कहसी तोनें न बाल्यो तिण वार ।
 त्यांरी छत्री सकत चोखें चित खमीयो, ते घन मोटां अणगार रे ॥ ७ ॥
 सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, तिणनें वतावो थे घर्म ।
 ते क्रोध करे घात करसी राजा री, तिणरे बंधसी निकेवल करम रे ॥ ८ ॥
 कोइ लब्द धारी साध लब्द फोड नें, करें मिनषादिक नीं घात ।
 ते जिण आग्या लोपे हुवो विराधक, तिणमें घर्म कहे ते मिथ्यात ॥ ९ ॥
 निदक जीवां नें माख्यां घर्म थापो थें, ते चोडे कहो छो लोकां नें ।
 बले घर्म कहो निदक ने माख्या, ते तो मूढ मिथ्याती माने रे ॥ १० ॥
 तीन सो तेसठ पाखंडी हुंता, त्यां घणां जीव मिथ्यात में पाढ्यां ।
 बले निदक पूरा श्री जिण घर्म रा, त्यांने साधां क्यूं नहीं माख्यां रे ॥ ११ ॥
 देवल काजे बलद मूंआ तिणने, आठमो सरग बतावो ।
 एहवा गोला थें गाला मां सूं फेको, भोलां ने कांय थे भरमावों रे ॥ १२ ॥
 काजी मुल्ला जबें करे छें, ते कहे म्हे करां छां हलाल ।
 म्हे जीव मारां ते भिसत पोंहचावां, एहवो थें पिण मांड्यो छे ल्याल रे ॥ १३ ॥
 थे बलदां नें मारे देवलोक पोंहचावों, ते एकत मूसा बायो ।
 हिवें ओहीज प्रश्न पूछीयां थानें, मत करजो बकवायो रे ॥ १४ ॥
 थारा गुर गुर भाई कुटंब न्यातीला, त्यांने संधारो कांय करावो ।
 थारे पिण माथे मोटी सिला देई नें, सुध गति क्यूं नहीं पोंहचावो ॥ १५ ॥
 थे देवल काजे पथर आणो जब, थारे माथें पिण आंण्यां किम दोष ।
 यानें पिण बलदां जिम मारे, क्यूं नहीं मेलो मोख रे ॥ १६ ॥
 देवल काजें साध श्रावक मारे, तिणनें किम गिणसो दोखो ।
 तो ही श्रावक ने बारमें देवलोक नहीं मेलो, साधां ने पिण नहीं मेलो मोखो रे ॥ १७ ॥
 साध श्रावक ने इम सुध गति नहीं मेलो, त्यांरो जीतव नहीं थे सुधारो
 तो रांक गरीब बापडा बलदां ने, देवल काजें कांय मारो रे ॥ १८ ॥
 जो बलद मरे आठमें सरग जावे, वा बात जाणो थे साची ।
 तो पथर रा जीवां री देवल प्रतिमा हुई, थारी पिण गति होसी आछी रे ॥ १९ ॥
 बले छ काय मूई मरे नें बले मरसी, ते पिण देवल रे कामें ।
 जो बलद मूंआ आठमें सरग जावें, तो सगलाई सदगति पामें रे ॥ २० ॥
 बलद मरे ते पर वस दुखीया, थारे उसभ उदे हूया आयो ।
 त्यांने विनां परिणामा सदगति किम होसी, बले इम हीज जाणों छ कायो रे ॥ २१ ॥
 सिलावट मरे कोइ देवल करतो, तिणनें कहो बारमों देवलोक ।
 ओ पिण गोलो निकेवल गालां रो, ते पिण जाणों फोको रे ॥ २२ ॥

हिसाधर्मी जीव मरायां रो, मूल गिणें नही दोख ।
 भोलां नें भरमावें अग्यानी, वले कहें याने होसी मोख रे ॥ २३ ॥
 पेंलां नें माख्यां धर्म परुवें, आप नें माख्यां न कहें धर्मों ।
 ववेक विकल सुध बुध विनां बोले, ते मूला अग्यानी भर्मों रे ॥ २४ ॥
 धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरो, मत छें जाबक भूंडो ।
 त्यांरो सरधा कोइ मूरख मानें, ते पिण नर भव खोय बूडो रे ॥ २५ ॥
 केइ ब्राह्मण कहें बकरा होमण रो, मुख सूं किण विव कहिसो ।
 जे थारे करणो छें होम बकरा रो, तो थें सावधान थकां रहिसो रे ॥ २६ ॥
 म्हें वेद भणतां भणतां बोलां जब, कहां अजा होमण रो पाठ ।
 जब थें अजा होम छाली रा जायां रो, होम में न्हांखज्यो सिर काट रे ॥ २७ ॥
 ज्यू थें पुफांरो हण नें फलां रो हणवा रो, पाठ कहें नें समभावो ।
 उवें जीव होमें नें जज्ञ करावें, ज्यू थें पिण पूजा करावो रे ॥ २८ ॥
 यांरा यज्ञ होम में थें पाप बतावो, तो थानें धर्म होसी किण लेखे ।
 ओ तो किरतब छें दोयां रो बरोबर, निज खोटी सरधा नहीं देखे रे ॥ २९ ॥
 उवें सिर कटाय होम मांहें नखावें, थें प्रतिमा काजे हणावों ।
 जो थानें पाप तो थानेंई पाप छें, ओ जोवो उघाडो न्यावो रे ॥ ३० ॥
 केइ सिरदार चोरादिक नें मरावें, जब कहें दूध पीवा जाय ।
 जब अटवी मांहें तिणने ले जावें, जुदा करे जीव काय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यू थे पिण छ काय रा जीव मरावो, जब पूजा रो नाम बताय ।
 जब गृहस्थ तो छ काय जीवां रा, जुदा करे जीव काय रे ॥ ३२ ॥
 चोरादिक मरावें ते खून कीयां थी, ते मन मांहें पिण पिछतावें ।
 थें हर्ष धरी धर्म हेत मरावो, थानें पिछतावो पिण नहीं आवे रे ॥ ३३ ॥
 कसाई जीव हणियां तो पाप जाणें छें, तिणसूं मरावें छें गरथ देई ।
 थें जीव हणयां रो पाप न जाणों, तो क्यूं नहीं मरावो छो थेंई रे ॥ ३४ ॥

रत्न : ३२

श्रद्धा री चौपई

ढलल : १

दुहल

ठंगल अंग ढलहें कहुओ, दस प्रकलर रओ ढलथुडलत ।
 तुडलरओ वलवरल सुध नलरणओ कहुं, ते सुणओ वललुडलत ॥ १ ॥
 अधरुढ ने धरुढ सरदहे, धरुढ नें सरधे अधरुढ ।
 ते ढूढ ढलथुडलतुओ ओवडल, ढूलल अरुडलनी ढरुढ ॥ २ ॥
 अओव ने ओव सरदहे, ओव ने सरधे अओव ।
 उण ओव अओव न ओललुडल, ते ढलण ढलथुडलतुओ ओव ॥ ३ ॥
 कुडलरग ने डलरग ओणुओ ढुष रओ, डलरग ने कुडलरग ओणुं ढूढ ।
 ते ढलथुडलतुओ सुध वुध वलहलरल, कर रहलल कुडुी रुड ॥ ॡ ॥
 केई असलध ने सलध सरधतल, केई सलध ने सरधे असलध ।
 ते वूडल ढुह ढलथुडलत ढे, शुरी ओण वचन वलरलध ॥ ॡ ॥
 ढुष न गडल करुढ खडलड ने, तुडलने सरधे अरुडलनी ढुष ।
 ढुष गडल ने ढुष सरधे नहुी, ते सरधल घणुी छे सदुष ॥ ॢ ॥
 ए दस प्रकलर नलं ढलथुडलत ढें, ऊधुओ सरधे एक डुल ।
 तुडलने नलरुधुं ढलथुडलतुओ सरधओ, अलख हुीडल री खुल ॥ ॣ ॥
 ढेधधलरुी वडेक रल वलकल घणल, तुडलरुओ ओडुओ ओडुओ सडदलड ।
 उंधुी सरधल ढलण डलरुी ओू ओूई, ढलण अलधलं नें खडर न कलंड ॥ । ॥
 तुडलरुओ सरधल अलकलर नहुी सलरलखुओ, तुओहुी सरधे डलहुओडलं सलध ।
 तुडलरुे डुलेइ वंध देते नहुी, डलंहुीडलं ढलण करुे वलषवलद ॥ ॥ ॥
 अंधकलर घणुओ डलरल ढेध ढे, तलणरुओ कुण कलडे नुीकलल ।
 हलवे थुओडुओसुओ ढरगड करु, ते सुणओ सुरत संडलल ॥ १० ॥

ढलल

[धलओ करुे सीतल सतुी रे ललल]

डलरुे ढेहरण सलंग सलधल तणुओ रे, वले रहलल लुओकलं ढे ढुओडलड रे सुगुणनर* ।
 ए कुडदुी खेलल ओू नलकतल रे ललल, ढलण वलकलं ने खडर न कलंड रे सुगुणनर ।
 ओडुओओ अंधलरुओ ढेध ढें रे ललल ॥ १ ॥
 केई सुतर सलदुडलं रल नुडलड सुं रे ललल, ओड करुे सुध डलन रे । सु० ।
 तलणढे केडक तुओ अधरुढ कहे रे ललल, केई सरधे एकत धरुढ धुडलंन रे ॥ सु० ओओ २ ॥

*डह अलकडुी ढुरतुडेक गलथल के अलनुत ढे हुै ।

जोड करणी निपेदे ते याने गिणें रे लाल, निन्हवां री पांत मांय रे ।
 ते नाम ले सुयगडा अंग नो रे लाल, तेरमों अघेन वताय रे ॥ ३ ॥
 वले जोड करे त्यानिं घालीया रे लाल, वेस्या रा करंडिया मांय रे ।
 पलमां रा गेंहणा सरीषा कीयां रे लाल, ठांणा अग चौथो ठांणो वताय रे ॥ ४ ॥
 इत्यादिक अवगुण कहे घणा रे लाल, जोड करे तिण मांय रे ।
 वले भूठा बोला सरखे तेहने रे लाल, याने जावक दीया उडाय रे ॥ ५ ॥
 जोड करणी थापें ते याने इम कहें रे लाल, ए भूठ वोले वेफाम रे ।
 जोड करणी उथापे अन्हावी थकां रे लाल, भूठा भूठा ले सूतरां रा नाम रे ॥ ६ ॥
 कहे साधु तो जोडे जुगत सूं रे लाल, सूतर केरे न्याय रे ।
 पिण कुवदी करे कदाग्रहो रे लाल, पिण सुवुधी रे आवे दाय रे ॥ ७ ॥
 वीर वखाणी वुध उतपात री रे लाल, नन्दी सूतर रे मांय रे ।
 वले श्रुत गिनांन रा भेद सूं रे लाल, म्हें जोड करां इण न्याय रे ॥ ८ ॥
 वले ठांणा अंग नवमां ठांणा मभे रे लाल, उत्तराघेन गुणतीसमां मांय रे ।
 यांरा अर्थ तणा विसतार सूं रे लाल, म्हें जोड करां इण न्याय रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सूतरां तणा रे लाल, नाम ले ले थापे करणी जोड रे ।
 जोड करणी उथापे तेहमें रे लाल, सरखे छे मोटी खोड रे ॥ १० ॥
 एक थापें एक उथपे रे लाल, इण विघ करे मांहोमां विवाद रे ।
 यांरे भगडो लागो पीढीयां लगे रे लाल, यामें कुण छे साव असाम रे ॥ ११ ॥
 यामें कुण साचो कुण भूठो अछे रे लाल, कुण सूतर रो जाण अजाण रे ।
 यामें साची सरखा रो कुण समकती रे लाल, यामें कुण छे मिथ्याती अयाण रे ॥ १२ ॥
 भूठ वोल्यां भागे विरत दूसरो रे लाल, उंचो सरख्यां आवे मिथ्यात रे ।
 सूतर जोय निरणों करो रे लाल, आ मूंडा री नही छे वात रे ॥ १३ ॥
 कैई अधर्म ने धर्म सरदहे रे लाल, धर्म नें सरखे अधर्म सदीव रे ।
 त्यानिं ठांणा अंग दसमें ठांणेकह्यो रे लाल, ये दोनूं मिथ्याती छें जीव रे ॥ १४ ॥
 यांरे लेखें उवे भूठ वोले घणो रे लाल, यांरे लेखें उवे वोले भूठा वाय रे ।
 वले सरखा पिण मांहोमां उंधी कहे रे लाल, चोडे असाम कहे छे मांहोमांय रे ॥ १५ ॥
 त्यांरे काम पडे मुतलव तणो रे, जव याने पिण कह दे असाम रे ।
 ए कूड कपट केलवे घणो रे लाल, यांरे किण विघ होसी समाव रे ॥ १६ ॥
 उंधी सरखा नें भूठा बोला तेहने रे, साव सरखे ते मूंड अयाण रे ।
 ते निहचे मिथ्याती जीव छे रे लाल, जिण मारग रा अजाण रे ॥ १७ ॥
 मांहोमांहीं साव थापें ने उथपें रे, करे विकलां वाली वात रे ।
 ए सूने चित्त वकवो करे रे, यांरा घट मां सूं न गयो मिथ्यात रे ॥ १८ ॥

यामें केयक तो करे घणा रे, नरकादिक ना चित्तराम रे ।
 तिणमें केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई धर्म कहें छें तांम रे ॥ १६ ॥
 चित्तराम निषेधे करणा साध नें रे, वरज्यो कहे नशीत रे मांय रे ।
 चित्तराम करणा थापें साध नें रे, ते देवे नन्दी सूतर मे बताय रे ॥ २० ॥
 यामे कुण साचो कुण भूजे अछे रे, कुण सूतर रो जाण अजाण रे ।
 यामे कुण मिथ्याती नें कुण समकती रे, आ पिण न करे पिच्छाण रे ॥ २१ ॥
 एक वचन उथापें सिघात नों रे, हले उत्तकटो काल अनंत रे ।
 तो अनत संसारी कुण एह मे रे, इणरो निरणो करो बुधवंत रे ॥ २२ ॥
 वले साध मांहोमां ए सरदहे रे, ए इसडा छे मूढ अजाण रे ।
 याने वादे पूजे गुर जाण नें रे, ते पिण विकल समाण रे ॥ २३ ॥
 वासी ठबी रोटी लालरी मझे रे, केई कहे छें बेइंद्री जीव रे ।
 केई कहे जीव निश्चे नही रे लाल, इम कर रह्या ताण अतीव रे ॥ २४ ॥
 ठबी रोटी में जीव सरखे तिके रे, टाले ग्रीपम रिंत ने चोमास रे ।
 ठबी रोटी में सरखे नही रे, ते वेहरे बारोई मास रे ॥ २५ ॥
 ठबी रोटी लेनी थापे साध ने रे, ते वतावें अचारंग री साख रे ।
 वले नाम ले दसमां अंग नो रे लाल, यामे वीर गया छे भाख रे ॥ २६ ॥
 ठबी रोटी न लेणी कहे साध नें रे, ते बतावे रस चल्ति रो पाठ रे ।
 एक थापें एक उथापे रे लाल, यारे ओ पिण माहोमा छे फांट रे ॥ २७ ॥
 ठबी रोटी में कहे छें बेइंद्री रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे ।
 जीवां ने खाय भूठ बोले तेह सूं रे, कहे भागा महावरत दोय रे ॥ २८ ॥
 एकद्री जीव खाए तेहने रे, साध सरखे त्यारे छे वूड रे ।
 तो ए खाए यारे लेखे बेइंद्री रे, त्याने साध सरखे तो एहीज मूढ रे ॥ २९ ॥
 ठबी रोटी में जीव सरखे नही रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे ।
 ए भूठ बोले छे घणा दिनां रे, यां दूजो वरत दीयो खोय रे ॥ ३० ॥
 ठबी रोटी मे कहे छे बेइंद्री रे, त्यानें निश्चे जाणे छे देता आल रे ।
 जो एहीज याने साध लेखवे रे, तो ए पिण अग्यानी बाल रे ॥ ३१ ॥
 इण विघ करे मांहोमा निषेधणा रे, वले सरखे मांहोमाहि साध रे ।
 ए दौनुं बूडे छे वापडा रे, ए कर कर कूडो विपवाद रे ॥ ३२ ॥
 यारे न्याय निरणो तो दीसे नही रे, कूडी मांड रह्या घमडोल रे ।
 वले केच नही यारे बोलीए रे, यांरा मत माहे मोटी भोल रे ॥ ३३ ॥
 कहिवा ने लोकां आगे तो इम कहे रे, म्हे तो साध सरखां माहोमांय रे ।
 पिण जावक उडावे जडां मूल सूं रे, तिणरी रस सुणो चित्त ल्याय रे ॥ ३४ ॥

ज्यानें साध चोडें मुख सूं कहें रे, त्यांरी बंदणा देवें छुडाय रे।
 आप आप तणा श्रावकां कनें रे, अवगुण अनेक दरसाय रे ॥ ३५ ॥
 पछें श्रावक त्यानें वादे नहीं रे, केइ उंचोई न करें हाथ रे।
 तो साध मांहोमां सरघण तणी रे, विखर गई विकलां री बात रे ॥ ३६ ॥
 यांरे श्रावक त्यानें वादे नहीं रे, जब मूल न राखी त्यांरी आव रे।
 तोही कहें म्हांनें साध लेखवें रे, आव पाडी ते पिण देवे दाब रे ॥ ३७ ॥
 सुध साधां री संका घाल नें रे, त्यांरी बंदणा छुडवें कोय रे।
 ते बूडा भव सागर ममे रे, केई अनत संसारी होय रे ॥ ३८ ॥
 ए साध मांहोमां चोडें कहें रे, वले बंदणा छुडावे मांहोमांय रे।
 ओ पिण न्याय निरणों नहीं रे, ए चोडें भूला जाय रे ॥ ३९ ॥
 यांमैं आवें त्यांरा टोलां मांहिलो रे, तिणनें दिज्या दे लेवें मांय रे।
 जब तो यांनें असाध निरचें गिण्या रे, यांरी कांण न राखी कांय रे ॥ ४० ॥
 वले केकण नें दिज्या विण मांहें लीए रे, जब यांरी पिण नही परतीत रे।
 कदे थापें कदे उथपें रे, यांरे गंहुलां वाली छे रीत रे ॥ ४१ ॥
 दिज्या नही आवे तिणनें दिज्या दीये रे, दिज्या आवे तिणने देवें नांहि रे।
 तिणनें दिज्या आवे इण डंड में रे, जोवो वेतकल्प रे मांहि रे ॥ ४२ ॥
 इसडा दोष यांमैं बतायां थकां रे, तिणरो नहीं काडे नीकाल रे।
 कुड कुड नें कूके घणा रे, जांणें सीयाला रा स्याल रे ॥ ४३ ॥
 यांरे साध कहितां विरीयां नही रे, असाध कहितां नहीं कोइ बार रे।
 ज्यानें रात दिवस निवेदतां रे, त्यांसूं प्राद्धित विनाइ कर ले आहार रे ॥ ४४ ॥
 आहार पांणी भेलो कीयां पछें रे, जब तो सरघे मांहोमां साध रे।
 वले आहार पांणी तूटां पछें रे, करे मन मानें ज्यूं विषवाद रे ॥ ४५ ॥
 यांरे उसभ उदे रा जोग सूं रे, दिन दिन इधको बधें छें मिथ्यात रे।
 वले वेधा उठयां रे नव नवा रे, ते इचरज वाली बात रे ॥ ४६ ॥
 धर्म अधर्म टाले आठ दांन में रे, केई कहें छें निकेवल धर्म रे।
 केई मित्र कहें छें आठ दांन में रे, ए तो भूला मांहोमांहि भर्म रे ॥ ४७ ॥
 नव प्रकारे पुन नीपजें रे, यांरे ते पिण सरघा नही एक रे।
 उंची करें मांहोमां परूपणा रे, तिणमें विगटें छें बोल अनेक रे ॥ ४८ ॥
 केइ कहें सुपातर कुपातर मणी रे, सचित्त अचित्त देवें हर कोय रे।
 तिणमें एकंत धर्म पुन नीपजें रे, केइ कहे मित्र धर्म होय रे ॥ ४९ ॥
 कोरो काचो अनादिक रांध सेक ने रे, सर्व जीवां नें देवें कोय रे।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें धर्म नें पाप दोय रे ॥ ५० ॥

आघाकर्मी वेंहरावे कोइ साघ नें रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे ॥ ५१ ॥
 कोई नेंहत जीमावें श्रावकां भणी रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे ॥ ५२ ॥
 भात बरोटी खरचादिक जीमण करे रे, आरंभ कर कर जीमावे सारी न्यात रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे विख्यात रे ॥ ५३ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, सगलां ने देवे अणुकम्पा आंण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांण रे ॥ ५४ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, राघे रांवे सगला ने देवे कोय रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें छे धर्म ने पाप दोय रे ॥ ५५ ॥
 खणावें तलाव कूआ बावडी रे, घणा जीवां री अणुकम्पा आंण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तांण तांण रे ॥ ५६ ॥
 कोइ काचो पांणी पावे सकल नें रे, ते पिण अणगलीयो तिणमें तसकाय रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण माय रे ॥ ५७ ॥
 काचो पांणी उकाले भर भर ठामडा रे, साघां ने बेहरावण ताहि रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माहि रे ॥ ५८ ॥
 काचो अणगल पाणी उंनो करे रे, सगलां ने पावा काम रे ।
 तिण में केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र धर्म कहे तांम रे ॥ ५९ ॥
 केई जायगां करावे छे जू जूइ रे, सगलां ने माहे रहवा काम रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण ठाम रे ॥ ६० ॥
 मठ आसन बंधावे जोगी कारणे रे, भगत काजे मढी ने धर्मसाल रे ।
 तकीयो बंधावे फकीर रें रे, जती काजे उपासरो पोसाल रे ॥ ६१ ॥
 धानक करावे केई साघ रें रे, श्रावक काजे पोषघ साल रे ।
 घर हाटादिक भवन मेंहलायतां रे, करावे जथाजोग संभाल रे ॥ ६२ ॥
 इत्यादिक जायगां कर कर देवें सकल नें रे, ते हण हण जीव छ काय रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण मांय रे ॥ ६३ ॥
 पाट वाजोट करावे विरष वाढ नें रे, पछे देवे सगला नें दान रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें कर कर तांन रे ॥ ६४ ॥
 केई वसतर वणाय घोवाय ने रे, पछे देवे सगलां ने ताहि रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण मांहि रे ॥ ६५ ॥
 केई दोपद चोपद देवें सकल ने रे, देवे सोना रूपादिक सारी घात रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे ॥ ६६ ॥

देवें लूणादिक पृथ्वी काय नें रे, वले सगलां नें घालें तेउकाय रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छें तिण मांय रे ॥ ६७ ॥
 इत्यादिक दान देवें छे ग्रहस्थी रे, त्यां दरबां रा नांम अनेक रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र री कर रह्या टेक रे ॥ ६८ ॥
 उंधी सरधा मांहोमां यारे दान री रे, तिणरो कहितां कहितां न आवें पार रे ।
 उंधो सरधे छें बोल अनेक में रे, यारे इसडो छें मांहोमां अंधार रे ॥ ६९ ॥
 सुध असुध सगलां ने देवें तेह में रे, जोग वरतें मन वचन नें काय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७० ॥
 सुध साधां नें असुध देवें तेहमें रे, जोग वरतें मन वचन काय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७१ ॥
 धर्म कहें कुपातर दान में रे, ते गमावें मिश्र रो खोज रे ।
 कहें मिश्र री सरधा माठी घणी रे, तिणनें छोड दो सूतर सोभ रे ॥ ७२ ॥
 कहे ध्यान लेस्या मिश्र नही रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणाम रे ।
 ए च्याहं भला के च्याहं बुरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥ ७३ ॥
 सचित अचित सगलां ने दान देवतां रे, भला परिणाम भला अधवसाय रे ।
 वले ध्यान भलो लेस्या भली रे, जे मिश्र कहें ते मूसावाय रे ॥ ७४ ॥
 छ काय हणे पोषें सकल नें रे, तिणमें धर्म कहां म्हें इण न्याय रे ।
 उण रा परिणाम दान देवां तणा रे, जीव हणवा रा नहीं अधवसाय रे ॥ ७५ ॥
 दान देवां काजे हणे छ काय नें रे, तिणनें पाप न लागें अंस मात रे ।
 सर्व जीवां नें पोष्यां धर्म एकलो रे, मिश्र कहें ते मिथ्यात रे ॥ ७६ ॥
 मिश्र कहें कुपातर दान में रे, धर्म कहे त्याने करें भंड रे ।
 उणरी सरधा उठावे जडां मूल थी रे, वले देवें प्रायछित डंड रे ॥ ७७ ॥
 छ काय हणे छे उदीरनें रे, तिणरो मूल न सरधे छें पाप रे ।
 ए तो मारग छोड उजड पड्या रे, करे हिसा में धर्म री थाप रे ॥ ७८ ॥
 धर्म कहे कुपातर दान में रे, त्याने जाबक भूठा ठहराय रे ।
 करे मिश्र धर्म री थापना रे, कूडा कूडा कूहेत लागाय रे ॥ ७९ ॥
 छ काय हणी ने पोषें सकल ने रे, हिसा हुई तिणरा लागा कर्म रे ।
 धर्म हूवो साता पाई तेहनों रे, इण लेखें कहां छां मिश्र धर्म रे ॥ ८० ॥
 इण विध करें मिश्र री थापना रे, धर्म कहें त्याने भूठा घाल रे ।
 एक एक री करे उथापना रे, यारे सोकां वालो जाणों साल रे ॥ ८१ ॥
 यारे सरधा परूपणा तो जू जूई रे, रह्या जूदो जूदो मत भाल रे ।
 वले साध मांहोमांहि लेखवे रे, आ तो चोडें पाषंडीयां री चाल रे ॥ ८२ ॥

याने कडे मांझेमा लाव लेखवे रे। कडे लेखवे मांझेमा असाव रे।
 याने गेल्लो वाजो जाणो पेंहरागो रे। ए जो मांझेमां करे उपाव रे ॥ ५३ ॥
 गेल्ले कडे तो पेंहे जेप मूं रे। कडे नगन वूडे कपडा न्हांव रे।
 थं ए माव थप ने वलें उधपें रे। थारी फूटी अन्तर वांळ रे ॥ ५४ ॥
 क कप ह्यी ने पोरें तकाव ने रे। तिगमें कडे कहे बर्म एकत रे।
 कडे मिय कहे पाव बर्म रे रे। ए दोनुडे मुठ मळत रे ॥ ५५ ॥
 मिय कहे कुयतर वंन मं रे। तिग गाला मांसे गोला फेळ रे।
 कय जमन उडे पंय काडोये रे। तिगमें लोंक रह्या कडे वेका रे ॥ ५६ ॥
 मिय कहे कुयतर वंन मं रे। तें किगही मूरर मं न्ही वात रे।
 मां मिय मूरर रो फळीयां रे। तिगण वट माहे वार मिय्यात रे ॥ ५७ ॥
 किगने मत्त मित्ता री न्यात मु जुड रे। तिगणे कही छे वृकत जात रे।
 ज्युं काडे मिय पळें पाप बर्म रे रे। तिगणे वृकसीयां मिय्यात रे ॥ ५८ ॥
 मिय कहे कुयतर वंन मं रे। तिगणे कडे कट रो न्ही थप रे।
 कळ किळ तिग माहे अन कणा रे। उण रे कुडुव कडयह रो माग रे ॥ ५९ ॥
 किग ने वंन किगण रो मन करे रे। अज रड जितो कहे पाप रे।
 कडे कहे मेळ जितो रे। करे एव्हा मिय रे थप रे ॥ ६० ॥
 किगने वंन किगण रो मन न्ही रे। अज मेळ जितो कहे पाप रे।
 कडे कहे रडे जितो रे। करे एव्हा मिय री थप रे ॥ ६१ ॥
 कडे कहे काम थोडे ने तोंटे धणो रे। कडे कहे थोडे धणो काम रे।
 कय रा कडे कट रो वेंहो न्ही रे। मन मांजे ज्युं जाहे जज रे ॥ ६२ ॥
 थोरे वंनो कय ल्यावे वाडे पाळ ने रे। पळे ल्याने भागे तारी वळ रे।
 थुं मिय पळें वंन मं रे अल तिगणे वाला अरिद अनेक रे ॥ ६३ ॥
 मंकर जेजो मीग मं रे। सीग सीग मं सीग रे।
 थुं मिय पळें त्यारी वात मं रे। बीग बीग मं बीग रे ॥ ६४ ॥
 वाकळ वाडे धाकरी रे। अज उडे कुर कुर मं कुर रे।
 थुं मिय पळें त्यारी वात मं रे। कुर कुर मं कुर रे ॥ ६५ ॥
 वाजरे वंन वाके नरे रे। व्हडे वंन मं व्हडे रे।
 थुं मिय पळें त्यारी वात मं रे। मुठ मुठ मं मुठ रे ॥ ६६ ॥
 वेंन मिले उकाड मं रे। करे मयट मयट मं मयट रे।
 थुं मिय पळें त्यारी वात मं रे। कट कट मं कट रे ॥ ६७ ॥
 वेरुळ वंन मूले तिहं रे। वंज वंज मं वंज रे।
 थुं मिय पळें त्यारी वात मं रे। वंज वंज मं वंज रे ॥ ६८ ॥

कपटी आलोचन करे तेहनें रे, रहे सल सल में सल रे।
 ज्यू मिश्र परुषे त्योंरी बात में रे, गल गल में गल रे ॥ ६६ ॥
 थोरी नेवर नें मगरे छेड्य्यां रे, लागे तोट तोट में तोट रे।
 ज्यूं मिश्र परुषे त्योंरी बात में रे, खोट खोट में खोट रे ॥ १०० ॥
 बलतो दीवो तिहां थाय नें रे, मरे पतंगीयो भांफ रे।
 ज्यूं मिश्र धर्म नें थापवा रे, पापी मारे फांफां में फांफ रे ॥ १०१ ॥
 धर्म अधर्म करणीं जू जूई रे, बले जुदा जुदा छे पुन ने पाप रे।
 एक करणीं में दौय न नीपजे रे, भूठी कीची मिश्र री थाप रे ॥ १०२ ॥
 ध्यान लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणाम रे।
 ए च्याहं भला के च्याहं बुरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥ १०३ ॥
 छ काय हणी पोषे कुपातरां रे, त्योंरी माठी लेस्या माठो ध्यान रे।
 अधवसाय परिणाम माठा तेहना रे, ते निरणो करो बुधवानं रे ॥ १०४ ॥
 धर्म अधर्म मारग दौय छे रे, पिण तीजो पंथ न कोय रे।
 तीजो मिश्र मिथ्याती भूठो कहे रे, आप डूबें ओरां नें डबोय रे ॥ १०५ ॥
 छ काय हणे पोषे कुपातरां रे, तिणमें कहे निकेवल धर्म रे।
 ते मारग छोड उजड पड्या रे, भूला अग्यानी भर्म रे ॥ १०६ ॥
 छ काय हणे पोषे कुपातरां रे, तिणरा चोखा कहे अधवसाय रे।
 ध्यान लेस्या परिणाम पिण चोखा कहे रे, ते तो चोडे भूला जाय रे ॥ १०७ ॥
 पाप न गिणे छ काय हणी तेहनो रे, धर्म गिणे कुपातर पोष्यां मांय रे।
 ते दोनूं विघ बूडा बापडा रे, साधु नाम धराय रे ॥ १०८ ॥
 प्रतष हणी छ काय उदीर नें रे, त्योंरा हणवा रा न गिणे अधवसाय रे।
 ओ मत साकमती पाषंडी तणो रे, जोवो सूयगडा अंग मांय रे ॥ १०९ ॥
 साकमती पाषंडी इम कहे रे, कोइ हणे बालक जांणी सोय रे।
 जो उ राखें परिणाम तूंबडा तणा रे, तो बालक रो पाप न होय रे ॥ ११० ॥
 इत्यादिक यांरी उंधी सरखा सुणी रे, जब आदर कुमार बोल्यो ताम रे।
 प्रतष बालक मारे उदीरनें रे, त्योंरा चोखा किहां थी परिणाम रे ॥ १११ ॥
 बालक माख्यां रो पाप थे गिणो नहीं रे, तो थें बूडा खोटो मत भाल रे।
 याने आदर कुमार निषेध्यां घणा रे, जाबक भूठा घाल रे ॥ ११२ ॥
 ज्यूं केई हणे छ काय उदीरनें रे, पछे पोषे कुपातरां रा थाट रे।
 तिणमें धर्म निकेवल कहे तिके रे, साकमती पाषंडी रे पाट रे ॥ ११३ ॥
 ज्यूं केई जीव हणे छ काय नां रे, पोषें कुपातरां नें ताय रे।
 त्योंरा ध्यान लेस्या खोटा घणा रे, बले खोटा घणा परिणाम अधवसाय रे ॥ ११४ ॥

धर्म कहे कुपातर पोषीयां रे, त्यांरी प्रतष मूळी बात रे।
जीव हिंसा रा पाप न लेखवें रे, त्यारे मारी छें गूढ मिथ्यात रे ॥११५॥
आगे हिंसावर्मा हुवा घणा रे, त्यां हिंसा धर्म री कीधी थाप रे।
पिण ए सगला हिंसा घम्यां सिरे रे, ते जीव माखां रो न गिणे पाप रे ॥११६॥
नमसकार पुन कह्यो सिधंत में रे, यारे ते पिण सरघा नही एक रे।
करे जुदी जुदी परूपणा रे, तिणमें विगटे छे बोल अनेक रे ॥११७॥
नमसकार कुपातर नें करे रे, नीचो सीस नमी जोडे हाथ रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे विख्यात रे ॥११८॥
सात नरक में नेरीया रे, ते खाए छे मार अनंत रे।
केई पुन कहे त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छें एकंत रे ॥११९॥
भड सूर्रा गधा कुता कागला रे, त्यानें नमसकार करे कोय रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई कहे एकंत पाप होय रे ॥१२०॥
जलचर मछ कच्छादिक डेडका रे, थलचर चोपदादिक जाण रे।
वले उरपर भुजपर ने घेहचरा रे, ए तिरजच भेद पिछांण रे ॥१२१॥
इत्यादिक तिरजच ने तिरजचणी रे, त्यांरो कहितां कहितां नावे अंत रे।
केई पुन कहे त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छे एकंत रे ॥१२२॥
भील कसाई थोरी बावरी रे, तुरक मेर मंगादिक जाण रे।
वले भंगी ढोली ने सरगरा रे, ढेढ जटीया अनेक पिछांण रे ॥१२३॥
वले तीनसो तेसठ पाषंडीयां रे, उच नीच सगला मिनष नांम रे।
केई पुन कहे त्यानें वादीया रे, केई पाप कहे छे तांम रे ॥१२४॥
च्यार जात रा देवी नें देवता रे, त्याने वादे कोइ सीस नाम रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे तांम रे ॥१२५॥
भवानी भेरुं ने खेतला रे, गोगा मोगा अनेक विघ जाण रे।
जष भूतादिक चूरामणी रे, ए विन्तर जात पिछांण रे ॥१२६॥
इत्यादिक मेला देवी ने देवता रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२७॥
जीव अजीव री सगली थापना रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२८॥
नमसकार पुन में यारे वेदो घणो रे, ते कहितां कहितां नावें पार रे।
एक थापे एक उथपें रे, यारे इसडो छे मांहोमांहि अंवार रे ॥१२९॥
ते न्याय निरणो थारे नही रे, ए बूडे छे कर कर रुढ रे।
वले साध मांहोमांहि लेखवें रे, ए इसडा अग्यांनी छे मूढ रे ॥१३०॥

पातर कुपातर उंच नीच नें रे, सगलां नें कीयां नमसकार रे।
 तिण माहें लाभ कहें तिके रे, विनेवादी पाषंडी रो पिरवार रे ॥ १३१ ॥
 विनेवादी पाषंडी इम कहे रे, सगलां नें नम्यां गुण होय रे।
 ज्युं पुन कहें सगलां नें नम्यां रे, त्यांने पिण जाणो तिमहिज सोय रे ॥ १३२ ॥
 नमसकार सगलां नें कीयां थकां रे, केई कहें बंधे पुन थट रे।
 ते विनेवादी पाषंडी तणो रे, यां राख्यो अग्यांत्यां पाट रे ॥ १३३ ॥
 केई वांटे पूजें छें कुपातरा रे, वले वांटे अजीव नें कोय रे।
 तिणमें पुन पर्यें विकल थकां रे, त्यांमें निश्चें समकत न होय रे ॥ १३४ ॥
 साधु आहार करें छे कारणें रे, तिणमें कहे छें पाप रे।
 केई कहे धर्म एकलो रे, यारे ये पिण नहीं छें मिलाप रे ॥ १३५ ॥
 साधु आहार करें छे कारणें रे, तिणमें पाप कहे ते बोलें भूठ रे।
 त्यां भेष भांड्यो भगवान रो रे, दीधी मुगत मारग ने पठ रे ॥ १३६ ॥
 यारे सरघा साम्ग्री तो जू जू रे, जुदी जुदी परूपणा छें ताहि रे।
 कदे आय पडें यांमें सांकडी रे, जब भूठ बोली मिल जाय रे ॥ १३७ ॥
 परदल कटक देखें आवतो रे, जब सगला नूनर एके हो जाय रे।
 परदल कटक पाछो फिच्यां रे, सगला नूनर बीखर जाय रे ॥ १३८ ॥
 ज्युं साधु आयां देखे गांम नगर में रे, सगला भेषधारी एके थाय रे।
 वले साधु बीहार कीयां पछें रे, ये पिण खोटा कहें मांहोमांय रे ॥ १३९ ॥
 ए कदेक मांहोमां उथपें रे, कदेक देवें मांहोमां थाप रे।
 मोह कर्म उदे रा मतवाल सू रे, ए बांधे छें बोहला पाप रे ॥ १४० ॥
 यारे सरघा साम्ग्री मत जू जू रे, त्यांरे विगटें छे बोल अनेक रे।
 पिण सुध सावां नें निषेधवा रे, हुवे मांहोमांहि पापीडा एक रे ॥ १४१ ॥
 मांहोमां करें कलेस कदाग्रहो रे, यारे सरघा खोटी घणी गॅर रे।
 यारे साधु तो निजर पड्यां थकां रे, जाणो जाग्यो पूर्वलो बॅर रे ॥ १४२ ॥
 जो तुरक देखे करकांटीयो रे, तो जागे तुरकां नें, घेष रे।
 ज्युं भेषधारी देखे साध ने रे, त्यांने जागे घेष विशेष रे ॥ १४३ ॥
 तुरक कहे इण करकांटीये रे, म्हांरा सॅद मरया इण बताय रे।
 तिणसूं वॅरी म्हांरो करकांटीयो रे, उ बेर मांगां छा ताय रे ॥ १४४ ॥
 ज्युं भेषधारी कहे छे सावां मणी रे, यां कीवो छे म्हांरो उवाड रे।
 करडी कर कर परूपणा रे, म्हांरा श्रावक लीवां पाड रे ॥ १४५ ॥
 किरकांटीयां नें तुरक देखे नें रे, मारें कूटे बोले घणा गॅर रे।
 ज्युं भेषधारी देखे साध ने रे, तो जागें अभितर बॅर रे ॥ १४६ ॥

श्रद्धा री चौपई : ढाल १

भेष अंधारी परगट करी
संवत अठारें छतीसे समे

रे,
रे,

बागडी
काती

सहर सुद पुनम

मझार
मंगलवार

रे।
रे ॥ १४७ ॥



ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

केई आहार न मानें केवली भणी रे, केई कहें केवली करे आहार रे सुगुणनरः ।
 यामें साची भूठी सरघा केहनीं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छें विचार रे ॥ सु० न० ।
 जोयजो अंधारो भेप में रे लालः ॥ १ ॥

यां दोयां जणां में एकण तणी रे, खोटी सरघा साख्यात रे ॥ सु० ।
 बले साब मांहोमांहि लेखवें रे, ते दोयां जणां रे मिथ्यात रे ॥ सु० जो० २ ॥
 देस उणो कोड पूर्व लगे रे, विनां कीयाई आहार रे ।
 दोलें चालें जीवें किण विघे रे लाल, आ पिण नहीं समझ लिगार रे ॥ ३ ॥
 केई कहें तीथंकर बोले नहीं रे, यारे अतिसय गुंजे रह्यो मांय रे ।
 केई कहें तीथंकर बोलता रे लाल, बवहार भापा नें सत बाय रे ॥ ४ ॥
 यामें एक तो भूठो असाध निश्चें खरो रे, तो ही गिणे मांहोमां साध रे ।
 ते निरणों नहीं घट भित्तरे रे, त्यारे किण विघ होसी समाध रे ॥ ५ ॥
 जो तीथंकर बोले नहीं रे, तो किण कह्यो पूर्व ग्यान रे ।
 लोक अलोक तणा भाव किण कह्या रे, केवली विण किण नें आसान रे ॥ ६ ॥
 केई अछेरा दस मानें नहीं रे, केई मानें अछेरा तीन काल रे ।
 यामें एक तो भूठो निसंक सू रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छे नीकाल रे ॥ ७ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिणरी सरघा कहें छें असुध रे ।
 बले तेहीज तिणनें साधु गिणे रे लाल, तो दोनुं जणां री भिट बुध रे ॥ ८ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिण सूतर दीया उथाप रे ।
 ते आप छ्दि उंधी अकल सू रे लाल, ते कर रह्या कूड विलाप रे ॥ ९ ॥
 केई कहें केवल ग्यान साब नें रे, उपजे वारा थी भाव रे ।
 केई कहें केवल ग्यान उपजे रे, ते तो मांहि थी परगट बाय रे ॥ १० ॥
 केवल ग्यान वारा थी उपनों कहे रे, तिणरी खोटी छे मिथ्याविट रे ।
 तिण जीव नें ग्यान न्यारो गिण्यो रे, तिणनें साध गिणे ते ही भिट रे ॥ ११ ॥
 केई कहें महावरत देसथी रे, तिणमें इविरत रो आगार रे ।
 केई कहें महावरत सर्व थी रे लाल, साध रे नहीं इविरत लिगार रे ॥ १२ ॥
 जिण साधु रे महावरत देसथी रे, ते नियमा निश्चें नहीं साध रे ।
 तिण देस विरती नें साध कहे रे, ते पिण निश्चें असाव रे ॥ १३ ॥
 साधु रे महावरत सर्व थी रे, ठांणा अंग दसवीकाल मांय रे ।
 बले उवाइ सुयगडा अंग में रे, साधु रे नहीं इविरत कांय रे ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल २

पाच महावरत सर्व थी रे, तिणमें कूड नही तिल मात रे।
 केई कहे महावरत देस थी रे, ते निक्के मिथ्याती साख्यात रे ॥ १५ ॥
 देस महावरत तो हुवे नही रे, महावरत तो सर्व थी होय रे।
 देस विरत कीयां श्रावक हुवे रे, तिणने साव म जाणों कोय रे ॥ १६ ॥
 कोइ देस विरती ने सावु कहे रे, ते पूरा मूंड गिबार रे।
 ते निक्के मिथ्याती मूल्या रे लाल, सावु श्रावक री पात वार रे ॥ १७ ॥
 आहार उपच सावु भोगवे रे, तिणमें केई कहे निरजरा धर्म रे।
 केई परमाद ने इविरत कहे रे, तिण संलगो कहे पाप कर्म रे ॥ १८ ॥
 आहार उपच सावु भोगवे रे, तिणमें जाणे मिथ्याती पाप कर्म रे।
 तिण मूंड मती ने सावु गिणे रे, ते पिण भूला अयानी मर्म रे ॥ १९ ॥
 साव आहार कीयां माहे पाप छे रे, तिणरो किण विच होसी उवार रे ॥ २० ॥
 तिण सावु ने पाप भेला कीयां रे, ज्यो ज्यो छे त्यारो समाव रे।
 नवपदारथ छे जूवा जूवा रे, त्यारो मूड न जाणे न्याव रे ॥ २१ ॥
 गिने रूडी रीत न ओल्ल्या रे, आठ जीव ने एक अजीव रे।
 केई नवपदारथ ने इम कहे रे, आठ जीव ने एक अजीव रे।
 एहवी करे छे पल्पणा रे लाल, कर कर खांच अजीव रे ॥ २२ ॥
 केई नव पदारथ ने इम कहे रे, एक जीव ने एक अजीव रे ॥ २३ ॥
 सात जीव तणी परजाय छे रे, ते तो नही छे जीव अजीव रे।
 केई नवपदारथ ने इम कहे रे, पाच जीव ने च्यार अजीव रे ॥ २४ ॥
 एहवी करे छे पल्पणा रे, कर कर खांच अजीव रे।
 ए तीनोइ सरवा छे जू जूइ रे, एकण टोला मभार रे।
 कले साव मांहोमां सरव ने रे, भेलो करे अयांनी अहार रे ॥ २५ ॥
 त्यांरी सरवा तो मांहोमां जू जूइ रे, नही माने एक एक री बात रे।
 तोही करे संभोग साव सरव ने रे, त्यारो प्रतव देखो मिथ्यात रे।
 याने इतरी तो समरु पडे नही रे, ते तो पूरा छे मूंड गिबार रे।
 ते व्हेक किकल सुच कुब विनां रे, त्याने मूर्ख सरवे अणगार रे ॥ २७ ॥
 त्याने श्रावक पिण इसडा मिल्या रे, त्यांरा चट माहे घोर अंधार रे।
 त्याने इतरी पिण समरु पडे नही रे, ते पिण पूरा छे मूंड गिबार रे ॥ २८ ॥
 केई कहे पुन पाप जीव छे रे, केई कहे पुन पाप अजीव रे।
 केई कहे जीव अजीव दोनू नही रे लाल, यामें कुण छे मिथ्याती जीव रे ॥ २९ ॥
 जो तीनोइ ने कहे समकती रे, तो वूड गई छे त्यांरी बात रे।
 छोटी ने साची सरवा रो निरणो नही रे, त्यांरे आय चूकों छे मिथ्यात रे ॥ ३० ॥

कई आश्रव नें कहे जीव छें रे, कई आश्रव नें कहे अजीव रे।
 कई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे लाल, जूवा जूवा बोलें छें निसदीव रे ॥ ३१ ॥
 संवर निरजर मोष नें रे, कई कहें छें जीव साख्यात रे।
 कई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण वद वद बोलें छें विख्यात रे ॥ ३२ ॥
 कई कहें छें बंध अजीव छें रे, कई कहें छें बंध छें जीव रे।
 कई कहें जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण कर कर तांण अतीव रे ॥ ३३ ॥
 इण विध सरखा छे जू जूइ रे, वले भेलो छें त्यारो संभोग रे।
 त्यामें संजम समक्त किहां थकी रे, त्यारे मोटो मिथ्यात रो रोग रे ॥ ३४ ॥
 यारे सरखा तो मांहोमाहि जू जूइ रे, वले सरखे मांहोमां साध रे।
 सुध साधां ज्यूं लोकां में पूजावता रे, त्यारे किण विध होसी समाध रे ॥ ३५ ॥
 याने श्रावक वादि साध जांण नें रे, ते श्रावक विकल समान रे।
 थूंही वूडे छे बापडा रे, त्यांरा घट मांहें घोर अग्यांण रे ॥ ३६ ॥
 वले तिरण तारण जाणें एहनें रे, इसडी गाढी बेठ छे धार रे।
 तें सुध बुध विनां जीव बापडा रे, भव भव में होसी खुवार रे ॥ ३७ ॥
 त्यां विकलां ने छेरख्यां थकां रे, तो लडवा नें छे तयार रे।
 त्यां सूं न्याय निरणो हुवे नहीं रे, करवा बेठ छे भगडो ने राठ रे ॥ ३८ ॥
 यारे सरखा रो मूंह माथो नहीं रे, वले मिष्ट छे आचार रे मांहि रे।
 ते विकलां नें समझ पडे नहीं रे, कूडी पख भाले रह्या ताहि रे ॥ ३९ ॥
 साधां रे आल देतां सके नहीं रे, वले निन्दा करण नें सूर रे।
 भागल मिष्ट नें वादि गुर जांण ने रे लाल, त्यां सूं दुरगति नहीं छे दूर रे ॥ ४० ॥
 खोटी सरखा रा मिष्टी ओलखायवा रे, जोड कीषी माघोपुर मझार रे।
 संवत अठारे अडतालैसमें रे लाल, आसोज सुद छठ ने सोमवार रे ॥ ४१ ॥

ढाल : ३

ढुहा

नमूँ वीर सासण घणी, ते पोंहता पद निरवाण ।
 जनम मरण दुख खेय करी, मेट्या आवण जाण ॥ १ ॥
 जे भाव भगवंते परूपीया, ते गणधरे गूंध्या जाण ।
 ते भेषघारखां रे पाने परखा, उंवा करे अर्थ अयाण ॥ २ ॥
 ते छठे गुण ठाणे निरंतर कहें, आरत ने धर्म ध्यान ।
 ते परमारथ पायां विनां, बोले विकल समां ॥ ३ ॥
 श्री वीर कह्यो एकण समें, दोये ध्यान न ध्यावे कोय ।
 आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, धर्म ध्यान किहा थी होय ॥ ४ ॥
 एहवी पिण समक पडे नही, बले ओर परूपें विरुध ।
 आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, कहे लेस्या तीनुई सुध ॥ ५ ॥
 आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, आछी लेस्या किहां थी होय ।
 जे बवेक विकल हुवा तेहने, आ पिण खवर न कोय ॥ ६ ॥
 लेस्या नें आरत ध्यान री, यारा लखणा सू खबर पडंत ।
 त्यांरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो कर खत ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अरुणकम्या विश आगन्या मे]

आरत ध्यान ध्यायां माठी लेस्या आवें, तिण मांहे संका मूल म आणो ।
 आ प्रतप साची वात उथापें, कांय बूडो कूडी कर कर ताणो ।
 माठो ध्यान ध्याया माठी लेस्या आवें ॥ १ ॥
 कहे छठे गुणठाणे आरत ध्यान ध्यायां, जब पिण कहे लेस्या वरते छे रही ।
 इसही परूपे लोकां में अग्यानी, त्यांरी प्रतप सरघा कूडी रे कूडी ॥ १० ॥ २ ॥
 ध्यांरे भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने तो जाबक साब न सरघे ।
 ए प्रतप लोकां आगे परूपी, ते तो छानी वात न राखी पडे ॥ ३ ॥
 भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने जो उ साघ सरघे तो दीसती मूडे ।
 जो छ लेस्या वाला नें साघ सरघे वांटे, तो उ आप री सरघा रे लेखेंई कुडे ॥ ४ ॥
 कदे उसम जोग साधु रा वरतें, जब लेस्या पिण साधु रे माठी कर्णें ।
 तिण उसम जोगां में मूढ मिथ्याती, लेस्या तिनेई लडी कर्णें ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक भाषा के अन्त में है ।

कदे साधु चारितीयो मोहकर्म वस,
 खेती करसण आदि करे सुपनां में,
 वले विणज करे सुपनां में साधु,
 वले माठई जोग नें माठीई लेस्या,
 कदे विषे कषाय माठा जोग वरतें,
 हस्त कर्मादिक कोइ करे कुचेष्टा,
 कदे कलहो करे साधु कर्म तणें वस,
 करडा काठा वचन काढे कर्म तणें वस,
 कदे लोलपणो आवे आहारादिक सूं,
 कदे फोरवे लब्ध कतूहल निमते,
 कदे शब्दादिक गमता अणगमता,
 कदे इरषा मांन बडाई पिण आवे,
 इत्यादिक जागतां सूतां सुपनां माहे,
 जब माठोई ध्यान माठी लेस्या आवे,
 उसभ जोग आरतध्यान सरधे साधु रे,
 ते सुने चित सूतर बांचे मिथ्याती,
 आगे आगे हुआ मोटा साध रिषेसर,
 त्यां आलोई पडिकमे प्रायच्छित लीवो,
 सीहो मुनी मोटें मोटें शब्दे रोयो जब,
 जब पिण सीहामें आछी लेस्या बतावे,
 बाल भाव एमंता मुनीसर नें आयो,
 ए प्रतष सावद्य किरतब कीवो,
 रहनेम चलो देख राजमती नें,
 त्यांनें पिण माठो ध्यान माठी लेस्या आई,
 इत्यादिक मोटा मोटा संत रिषेसर,
 ते आलोइ पडिकमी प्रायच्छित लीवा,
 केई भेष धाख्यां री एहवी सरधा,
 ते सूतर अर्थ जाणें नही मोला,
 पेहले सतक भगोती रे पहले उदेंसे,
 तिणरा पाठ अर्थ री समझ पड्यां विण,
 द्रव ने भाव लेस्या रा गुण नहीं जाणें,
 भाव लेस्या री ठोड कहे द्रव लेस्या,

सुपनां माहें सेवे काम नें भोग ।
 जब माठी लेस्या नें माठा जोग ॥ ६ ॥
 वले पड जाए सुपनां में आल जंजाल ।
 थें समझो रे समझो सुरत संभाल ॥ ७ ॥
 कदे मईथुन संग्या साधुरे आवें ।
 जब पिण माठी लेस्या साधु में पावें ॥ ८ ॥
 आहार पांणी सिखादिक रे काम ।
 जब माठी लेस्या ने माठा परिणाम ॥ ९ ॥
 कदे आंसू पिण मोह कर्म वस आवे ।
 जब पिण माठी लेस्या साध में पावे ॥ १० ॥
 त्यांसू पिण कदे थाए हरष ने सोग ।
 जब माठी लेस्या ने माठा जोग ॥ ११ ॥
 कदे साधु रा वरते छे उसभ जोग मेला ।
 ते परमारथ जाणें नही गेला ॥ १२ ॥
 पिण लेस्या नें सरधे साधु माहें मूडी ।
 परमारथआयां विण त्यांरी पिडताईबूडी ॥ १३ ॥
 त्यांने माठी लेस्या आई उचडी ।
 ते सांभलजो भवीयण विसतारी ॥ १४ ॥
 आरतध्यान ने माठी लेस्या आई ।
 त्यां विकलां नें सूतर री समझ न काई ॥ १५ ॥
 जब पांणी पातरो दीयो तिराई ।
 जब माठोई ध्यान माठी लेस्या आई ॥ १६ ॥
 खोटा मन सूं काढी खोटी वाय ।
 तिण माहें संका मत आंणो कांय ॥ १७ ॥
 त्यांने कर्म जोगे माठी लेस्या आई ।
 पिण ववेक विकला नें खबर न काई ॥ १८ ॥
 कहे साधां नें माठी लेस्या नही आवे ।
 गाला रा गोला घड घड चलवे ॥ १९ ॥
 वले ठांणां अंग रे तीजे ठांणे ।
 पीपल बांधी मूरख ज्यू ताणे ॥ २० ॥
 ते तो द्रव लेस्या री ठोड भाव लेस्या बतावे ।
 ते ववेक विकल भोलां ने भरमावें ॥ २१ ॥

भाव ने द्रव लेस्या जिणेसर भाषी,
 त्यारो विवरो कहूं सूतर में भाख्यो जिम,
 भूडा भला वरण गन्ध रस परस छे,
 जब जीव रा लखण भूडा भला आवे,
 पांच आश्रव परमाद आरभ ना जोग,
 यां माहिला केयक छठे गुणठांणे,
 इरषा ने मिरषा विषे अभिलाषा,
 रस रा लोलपी ने साता रा गवेषी,
 वचनं करे बाकां ने बंक आचरले,
 बले राग नें वेष अवत मछर भाव,
 तीन माठी लेस्या माहिला लषण,
 जो छठे गुणठांणे आरत ध्यान सरधो,
 आरत ध्यान नें तीन माठी लेस्या रा,
 जो मिले सारिषा तो सरबलो एक,
 आरत ध्यान रा च्यार भेद कहाा जिण,
 अणगमता शब्दादिक आय मिलीया,
 मन गमता शब्दादिक आय मिलीया,
 आतंक रोग आय सरीरे उपनों,
 सेवीया काम भोग रा संजोग मिलीयां,
 ए आरत ध्यान रा भेद चारुई माठा,
 जे करे आरुंद मोटे मोटे सब्दे,
 दलगीर होय आंसू न्हाखे रोवे,
 ए च्यारु माठा लषणां आरत ध्यान जाणो,
 ए माठी ध्यान ध्यायां माठी लेस्या आवे,
 कदे आरत ध्यान साधु रे आवे जब,
 आरत ध्यान ध्यावे साधु तिण माह्ने,
 ए तो आरत ध्यान रा भेद ने लषण,
 एहवो आरत ध्यान साधु ध्यावे जब,
 आरत ध्यान आयो साधु रे वतावे,
 कोइ एहवी परूपे मूढ मिथ्याती,
 भेषवारी कहे म्हांरा सर्व टोला मे,
 त्याने आप तणा किरतव नही सूभे,

त्यांरा लखण जूया जूया ओलख लीजे ।
 ते सुण सुण घट माह्ने निरणो कीजे ॥ २२ ॥
 एहवा गुण सू दरब लेस्या पिछ्ठांणो ।
 ते गुण सू भाव लेस्या ने जांणो ॥ २३ ॥
 इत्यादिक लषणां किस्न लेस्या पिछ्ठांणो ।
 साधु नें कदेयक लागता जांणो ॥ २४ ॥
 बले वेष परमाद बोले भूठ वाय ।
 ए लषणां सू लेस्या नील कहवाय ॥ २५ ॥
 बले कपट ने दोष रो ढांकण हारो ।
 इत्यादिक माठा लषण कापोत रा वारो ॥ २६ ॥
 तेहीज लषण आरत ध्यान रा जांणो ।
 तो माठी लेस्या सरधण री कांय मांडी तांणो ॥ २७ ॥
 कोइ लषण मीढी जोय करो विचारा ।
 न मिले तो सरबलो न्यारा ॥ २८ ॥
 ते सांमलज्यो भवीयण चित्त ल्याय ।
 जब तिणरो विजोग वाछे वेष ल्याय ॥ २९ ॥
 ते संजोग वाछे रागी थको जांण ।
 तिणरो विजोग वाछे वेष आंण ॥ ३० ॥
 ते पिण संजोग वाछे राग आंण ।
 त्यांरा लषणां री बुधवंत करजो पिछ्ठांण ॥ ३१ ॥
 बले दीन पणो करे सोग संताप ।
 बले करे अनेक विध मोह विलाप ॥ ३२ ॥
 च्यार भेद कहाा ते पिण माठा जांणो ।
 तिण माह्ने संका मूल म आंणो ॥ ३३ ॥
 लेस्या पिण साधु रे माठी आवे ।
 मूढमती लेस्या आच्छी वतावे ॥ ३४ ॥
 उवाइ उपंग ने ठांणाअग मांय ।
 लेस्या पिण माठी व्यापें आय ॥ ३५ ॥
 जब माठी लेस्या आड नही वतावे ।
 इसडा अन्हाखी ने कुण समभावे ॥ ३६ ॥
 माठी लेस्या कदे नही व्यापे आय ।
 त्यांरा टोला रा चारित सुणो चित्त ल्याय ॥ ३७ ॥

आहार पांणो रे कारण करे लडाई, बले लडतां चिद्धतां लोट पातरा फूटे ।
 जब पिण कहें माठी लेस्या न आई, ते निश्चें अग्यांनी लगा मत भूठे ॥ ३८ ॥
 बले चेला चेली थाप करवा काजें, करे मांहोमांहि भूठ भगडा ।
 जब पिण कहे माठी लेस्या न आई, एहवा भूठ बोले पापंडी बगडा ॥ ३९ ॥
 त्यांरा टोला में पग पग इसको खेवो, बले पग पग कर रह्या भगडा ने राड ।
 ए प्रतप उघाडी माठी लेस्या देखो, पिण समझे नही मुँढ मिध्याती गिवार ॥ ४० ॥



ढलल : ॡ

दुहल

केई भेषघलरी जेन रल, ते भलषे अग्यलनी अललल ।
 त्यलनेश्रलदुक ववेक वलकल मलल्यल, ते पूरल अग्यलनी वलल ॥ १ ॥
 ते सूतर अर्थ उंवल करी, भलषे हलंसल घर्म ।
 त्यलरी सरघल सुण सुण वलपडल, वलंघे बोलुल कर्म ॥ २ ॥
 कहे सलवल री अणुकम्मल आण नें, जीव मलरे मलथ्यलती कुओय ।
 तलणरे एकंत पुन नीपने कुहे, पलप रओ वंघ न हुओय ॥ ३ ॥
 सलधु कंपतओ देखे सीतकल में, कुओइ गूहसुथ अगन ललगलय ।
 पकड तपलवे तलण सलघ ने, तलणरे पुन तणुओ वंघ थलय ॥ ॡ ॥
 इण वलघ पुन कहे हलंसल कुीयलं, ते वलकललं नें खबर न कलय ।
 त्यलरी सरघल परगट कुीयलं थकलं, ते फलरतलं पलण वलर न कलंय ॥ ५ ॥
 यलंरी सरघल ने कुड कपट री, कही कडल लग कलय ।
 हलवे थुओडी सी परगट कलं, ते सुणकुओ कुलत ललय ॥ ६ ॥

ढलल

[३ प्रलखी कर्म सडुओ नही कुओइ...]

सलधु ने कंपतओ देख सीयलले, कुओइ अणुकम्मल मलथ्यलती आणे ।
 तलण अगन ललगलए सलधु ने तपलयुओ, तलणमे पुन अग्यलनी कलंणे रे ।
 कुमत्यलं हलंसल मे घर्म कलय थलपुओ* ॥ १ ॥
 तलण अगन ललगलए सलधु ने तपलयुओ, ते हुंतुओ जीव मलथ्यलती ।
 सलघ थई इण में पुन परुपे, ते पलण उणरुओ सलथी रे ॥ कु० २ ॥
 सलधु तुओ मुख सूं नलं नलं कहुलतल, तुओही पकड वेंसलण तपलयुओ ।
 तलण डुओतुओ अकलरुथ कुीयुओ अग्यलंनी, तलणमे पुन कलहलं थी थलयुओ रे ॥ ३ ॥
 सलधु अगन रओ आरंभ अनरुथ कलंणुओ, कड कहुओ डुओनें कल्पे नलंही ।
 तुओने पलण ए कलंम कुगतुओ नही छे, पलप कलंण नलषेघुओ त्यलंही रे ॥ ॡ ॥
 कुओ पुन कलंणे तुओ सलधु नही नलषेघतल, नलषेघुओ कड कलंणुओ छे पलप ।
 अनरुथ पलप कलंणुओ तलण मलंहे, पुन री कलंम करसी थलप रे ॥ ५ ॥
 सलधु ने तपलवे अगन ललगलए, तलणमे सलधु तुओ पुन कहे नलंहल ।
 केई जेन तणल भेषघलरी अग्यलनी, पुन कहे तलण मलंहल रे ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

साधु तो पहेलां अनर्थ जाण निषेद्यो, पछें कह्यो थारे पुन बंधाणो।
 इसडो भूठ साधु किम बोले, धांनें वा पिण नही छे पिछांणो रे ॥ ७ ॥
 साधु ने अगन लग्गाए तपाए, तिणमें पुन कहे छे पापंवी।
 वले साधपणा रो नाम घरावे, तिण भेष ले आतम भंडी रे ॥ ८ ॥
 साधु ने अगन लग्गायो तपायो, तिणरी लेस्या कहे छे ल्खी।
 वले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, सरथा छे जाक्क कूडी रे ॥ ९ ॥
 साधु ने अगन लग्गाय तपायो, तिणरी लेस्या घणी छे भूंडी।
 वले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, बुध अकल गई बूडी रे ॥ १० ॥
 एक चिरमी जितरी तेउकाय में, जीव असंघ बतावें।
 तो अगन जाले नें साधु नें तपायो, पुन कहितां लज न आवें रे ॥ ११ ॥
 अगन रा आरंभ सूं दुरगत बंधे छे, दसवीकालिक छटो घेन जोय।
 तो साधु नें तपावण अगन जलायां, पुन किहांथी होय रे ॥ १२ ॥
 केइ जनम मरण मुंकावण काजें, तेउकाय हणे छे कोय।
 अहेत ने अबोध कह्यो छे तिणरें, आचारंग पहेलो घेन जोय रे ॥ १३ ॥
 आठ कर्म गांठ बंधे अगन आरंभ सूं, वले मोह मार नरक होय।
 इसडा फल लागे अगन हण्यां सूं, तो पुन किहांथी होय रे ॥ १४ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे हेतें, मदबुधी हणे तेउकाय।
 वले मार अनती नरक निगोद में, ते जोवो दसमां अंग मांय रे ॥ १५ ॥
 साधु नें तपायां में पुन जांणे ते, ख्रध्यान तणो भेद तीजो।
 जो बंध पडे तो पडे नरक रो, ठांणाअंग जवाई जोय लीजो रे ॥ १६ ॥
 साधु रे काजें अगन लग्गाए, पछे साधु ने पकड तपावे।
 तिणरी आछी लेस्या नें पुन बंध कहितां, विकलां नें लज न आवे रे ॥ १७ ॥
 कोइ त्रिषा सूं पीढ्या साधु नें पकड नें, मुख फाडे काचो पाणो पावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावें रे ॥ १८ ॥
 कोइ भूख सूं पीढ्या साधु नें पकड नें, मुख फाड ने सचित खवावे।
 जो अगन तपायां पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ १९ ॥
 उजाह माहे थाका साधु नें पकड नें, गाढे उंट घोडे बेंसावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २० ॥
 कोइ सीयां मरता साधु नें पकड नें, अगन अणमिलियां राली ओढावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २१ ॥
 कोइ साधु रो पेट दुख्यो जाणे अब, अबमादिक उकाली पावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावे रे ॥ २२ ॥

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल ४

कोइ साधु रो शरीर मेला देखी ने, पकडे सिनांन करावे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २३ ॥
 कोइ साधु रा कपडा मेला देखी ने, खोस नें काचा पांणी सूं घोवे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन होवे रे ॥ २४ ॥
 कोइ साधु रा काजें जायगां कराए, साधु नें राखें तिण मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, तिणरो पिण पुन थाय रे ॥ २५ ॥
 इत्यादिक अनेक बोलां में, साधु काजें हणें छे काय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, सगलां में पुन थाय रे ॥ २६ ॥
 जो किण ही बोला में पुन बतावे, किण ही में कहे पुन नाहीं ।
 तो उण रे लेखें उण री बोली में, अंधारो घणो घट मांही रे ॥ २७ ॥
 पुन कहे साधु नें अगन तपायां रे, ते उठी जठथी भूठी ।
 तेउकाय माखां रो पाप न जाणें, त्यारी दया दिल सूं गइ उठी रे ॥ २८ ॥
 कोइ संघारा माहें मुख फाडे ने, असणादिक घाले मुख मांय ।
 जो अगन तपायां रो पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ २९ ॥
 कोइ त्यागवाला रो मुख फाडे नें, त्यागी वसत घाले मुख मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ ३० ॥
 त्याग वालां रो त्याग भंगवे, ते जीव छे भारी कर्मों ।
 सूस भाग्या भंगयां निद्वे पाप बंधे छे, पिण निद्वे नही पुन घर्मों रे ॥ ३१ ॥
 ओर रो सूस भंगयांइ बूडे छे, बंधे छें पाप कर्म ।
 तो साधु रा सूस भंगवे तिण रे, किण विघ होसी पुन नें घर्म रे ॥ ३२ ॥
 सूसवालो जो सेठें रहेसी, तिणरो तो सूस न भांगो ।
 पिण सूस भंगवण वालो तो बूडो, तिणरे निद्वेइ पाप कर्म लागे रे ॥ ३३ ॥
 आहार सेज्या वसतर नें पातरा, साधु नें असुख वेंहरावे ।
 तिणनेइ एकंत पाप हुवे छे, तो अगन तपायां पुन किम थावे रे ॥ ३४ ॥
 साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे तिणरी बुव माठी ।
 ते कहिणवालां ने सरघवालां रे, हीया आडी बाइ छें पाटी रे ॥ ३५ ॥
 साधु नें अगन तपावें तिणमें, पुन कहे मिथ्याती काय ।
 तिणनें सूतर ससतर ज्यूं परगमीया, ते बूडा मानव भव खोय रे ॥ ३६ ॥
 साधु ने अगन सूं तपावें तिणमें, पुन कहे ते भारी कर्म जीव ।
 तिण आल दीयो अनता अरिहंत ने, घणी करसी नरकां में रीव रे ॥ ३७ ॥
 साधु ने अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे ते बोले छें कूड ।
 ते प्रतप हिसावमीं अनारज, त्यांरा पिडतपणा में घूड रे ॥ ३८ ॥

साधु नें तपायां में पुन पर्ये, तिणरी अकल में घणो छे अंधारो ।
 बले विवध मिथ्यात छे तिणरा मत में, कहितां न आवे पारो रे ॥ ३६ ॥
 मिथ्याती साधु नें तपावे अगन सूं, तिणने थें पुन बतायो-
 श्रावक तपावे तिणने पाप बतावो, ओ किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ ४० ॥
 श्रावक ने पाप मिथ्याती नें पुन, ए उंधी सरघा कांय ज्ञापो रे ।
 अगन रो आरंभ दोनूं जणा नें, कीघां छें एकंत पापो रे ॥ ४१ ॥
 साधां ने अगन सूं तपावे श्रावक, तिणने पाप कहो ते ती न्याय ।
 मिथ्याती तपावे तिणने पुन कहें छें, ओ तो निश्चे उवाडो अन्याय रे ॥ ४२ ॥
 ए हिंसा धर्मी ओलखावण काजें, जोड कीवी नाथ दुवारा मभारो रे ।
 संवत अठारे वरस तयाले, सावण विद अमावस-मंगलवारो रे ॥ ४३ ॥



ढाल : ५

दुहा

केयक विगडायल जेन रा, त्यारे ग्यांन नहीं घट मांय ।
भूठ बोले अग्यांनी निडर थकां, त्यांनं परभव चिता न कांय ॥ १ ॥
कोइ तपसा करे साव साववी, त्यांरी निद्या करे दिनरात ।
आल अणहूता टेक दे, त्यांरी मूरख माने वात ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

घोवण पाणी चास आछ राखे नें, कोइ तपसा करे मोटी नानी रे ।
तिण तपसा ने मूरख छोटी जाणे, ते पूरा मूढ अग्यांनी रे ।
यां भूठबोलां रो संग न कीजे* ॥ १ ॥
चास पाणी राखे ओर सगलोई त्याग्यो, ते तो अणोदरी तप मोटें रे ।
तिण तपसा री निद्या करे पापडी, त्यांरों नीमा निश्चे मत खोटें रे ॥ यां० २ ॥
तपसी तणा गुण ग्राम करे तो, करमां री कोड खपावे रे ।
उतकष्टो पद तीथकर पामे, तिणरा ओगण अग्यांनी गावे रे ॥ ३ ॥
तपसी तणा गुण कीघाई धर्म, तो तपसा कीघा में इधको छे धर्मो रे ।
कोइ तपसा करे त्यांरी निद्या करे छे, ते तो निश्चे बावे जाडा कर्मो रे ॥ ४ ॥
तपसी तणा गुण हर कोइ गावे, ते गुण खमणी न आवें रे ।
तिण सू अजाण लोका ने कर कर तीखा, त्यां आगा सू ओगुण बोलावें रे ॥ ५ ॥
तपसी रा ओगुण बोले बोलावे, ते तो दोनू परकारे वूडे रे ।
ते माठी गति जावा ने वीद वण्णा छे, भारी होय जाती नरक रे तूडे रे ॥ ६ ॥
भगवंत भावी वारे भेडे तपसा, तिणरो मूरख त्याय नें जाणें रे ।
तिणसू मूढ मिथ्याती भारीकर्मा, निद्या करता संक न आणें रे ॥ ७ ॥
एक सीत मातर कोइ ओछो खाए, ते जिगन अणोदरी जाणो रे ।
जिम जिम उदर उणो इधको राखे, तिम तिम अणोदरी तप पिछाणो रे ॥ ८ ॥
पांच विगें एक विगें किण त्यागी, ते पिण तपसा जाणो रे ।
तो पांचोइ विगें सर्वथा त्यागी, ए रस त्याग तपसा पिछाणो रे ॥ ९ ॥
इण अणुसारे तपसा रा भेद घणा छे, तिण में लाभ कह्यो जिणराया रे ।
तो चास पाणी राखें सगला दरबं त्याग्यां, तिणमें तो बोहत निरजरा थायो रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक सीत त्याग्यां एक विों त्याग्यां में, तिणमें पिण कटें छें कर्मों रे ।
 तो चास उपरंत सारी वसत त्यागी, ते मोटो तप निरजरा धर्मों रे ॥ ११ ॥
 एक दिन चास राखें सारी वसत त्याग्यां, तिणमेंइ निरजरा थावे रे ।
 तो चास राखें त्याग करें महीना लग, ते कर्मा री कोड निश्चें खपावें रे ॥ १२ ॥
 तिण तपसा रा कोइ ओगुण बोलें, आतमा नें लगावे छे कालो रे ।
 तिण अरिहंत वचन उथाप्यो अग्यांनी, दे दे अणहूंतो आलो रे ॥ १३ ॥
 चास टाले ओर सगली वसत त्यागी, ते गुण मूले न सूभें रे ।
 मोह मिथ्यात ते उसभ उदें सूं, दिन दिन इघका अलूमें रे ॥ १४ ॥
 तिणनें श्रावक मिलीया अतंत अग्यांनी, त्यांनं आंघा ज्यूं मूल न सूभें रे ।
 त्यां आगें मन मांनं ज्यूं गोला चलावें, तो पिण बलतो जाब न बूमें रे ॥ १५ ॥
 थारा मत मांहे कोयक बुववंत हुवें तो, तुरत जाणें तिणनें कूडो रे ।
 तो छोड देंत तंतकाल खोटो जाणीं, भूठा बोला रे मुख देइ धूडो रे ॥ १६ ॥
 तपसी तणा गुण कांनं मुणे जब, वलें अग्यांनी री छाती रे ।
 वले उलटा ओगुण काढें तपसा, ते निश्चें जीव मिथ्याती रे ॥ १७ ॥
 संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद नवमी सनीसर वारो रे ।
 मड मती ओल्लावण काजें, जोड कीवी नाथ द्वारा मभारो रे ॥ १८ ॥

ढलल : ६

दुहल

च्यलर सलघवलरलं चलमलसुु कलरुु, डलहु गलं डडलर ।
तलण डें दुषुत डलडु डलवलडल, ललल दलघल वलवघ डुरकलर ॥ १ ॥
कुण-कुण ललल उठलड नें, दलडल लुकलं डें डुललड ।
डुडल सल डुरगट कहुं, ते सुणऑुु वलतुत लुडलड ॥ २ ॥

ढलल

[ललरलद सडकलत उवरु रे ललल]

दुलखुडल लुवल नें उठलडु, तलणरुु लेले दुडरुडलनी नलं ड ।
तलण वेंहरलड वसुतु, असुडडतुु, सुंखडुडलदलक तलं ड रे ।
दुषुत ललल देतल संकुडल नहुु* ॥ १ ॥
डलसल रुडलडलं रल सुंखडु, सलघवलरलं नें वेहरलड ललंण रे ।
डुल डंगलड डेडुतल थकु, इसडु कहे छे कर कर तलंण रे ॥ दु० २ ॥
डुल ललंण वेहरलड सुंठुनें, ते डलण वेहर लुडुडु ततकलल रे ।
वलु वलसुु रलखुु कहे सुंठ नें, लु डलण दलडु ललरुडलनी ललल रे ॥ ३ ॥
सलघवलरलं कलं सलरुु करलड नें, सलघवलरलं नें दलघु वेंहरलड रे ।
लु डलण ललल दलडु छे डलडलडलं, वलु दलडु लुकलं डें डुललड रे ॥ ॡ ॥
घुत नुे खुुडलरलदलक डुल ले, सलघवलरलं नुे वेंहरलडल तलं ड रे ।
डुहलु वलत उठलड डलडलडल, वकवु करुे ठलं डलं ड ॥ ॡ ॥
डलवडल नें सुंस लरुडलं दलडल, डुरणवल रल करलडल तुडलग रे ।
लु डलण ललल दलडु छे डलडलडलं, तुडलरुु ऑलंणऑुु डुरुु ललडलग रे ॥ ६ ॥
छुकलड हणवल रल सुंस करलवलडल, घर डें रहलवल रल तुडलग करलड रे ।
डलं तलनलं नें उचकलडल लरुडलं, लु डलण डुकंत डुसलवलड रे ॥ ७ ॥
डुऑ डलतुर रलखुु कहे सलघवुडलं, वसुुकरणलदलक करवल तलहु रे ।
लु डलण ललल देडु नें डलडलडलं, डुललडु लुकलं डलंहु रे ॥ ॡ ॥
रलते थलंनक डुे रलखुु डलवडल, लु डलण वुलुु लुलललल डुुठ रे ।
तलणरुु वलख घणुु लरुडलं थकु, लुकलं डें कलडु डुुठु डलतुर रे ॥ ॡ ॥
डुक ऑणुु ललल इसडु दलडु, डुलणल रुरुुतुडलं कर कर च्यलर रे ।
डुे तुु वेंहरलड लरुडलं डणुु, डुकण दलन डडलर रे ॥ १० ॥

* डहु लरुकडुु डुरतुडुक गलथल कुे लनुत डें हु ।

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे माहि रे ।
 कर्मा वरा बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नाहि रे ॥११॥
 दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातालां उठाइ बात रे ।
 त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे ॥१२॥
 वले भेषधाख्यां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे ।
 ते आल, फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे ॥१३॥
 केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यां सावां सूं धेष अतंत रे ।
 त्यां अणहुंता दोष उतराय नें, त्यां री पिण पूरी मन खंत रे ॥१४॥
 ते तो आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे ।
 ते तो दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हारे हाथ रे ॥१५॥
 फिरे छें ठाम ठाम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठाम ठाम रे ।
 आयां री उतारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणाम रे ॥१६॥
 केइ दोष उतारे आणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे ।
 साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पडिवजियो मिथ्यात रे ॥१७॥
 भूठ दोष उताख्या पापियां, ते पापणी लिया उतार रे ।
 त्यां री बात साची कर मानसी, ते पिण बूडसी कालीधार रे ॥१८॥
 दोष उतारिया त्यां पृच्छणों, थें दोष उतारिया किण काम रे ।
 ए थें साचा उतारिया जाण नें, के थें भूठ जाणें नें ताम रे ॥१९॥
 ए तो दोष कहे लोकां मरुं, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे ।
 आयां री उतारणें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे ॥२०॥
 त्यां लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिता न काय रे ।
 भूठ बोलती पिण सके नहीं, मन मानें ज्यूं बोले ताय रे ॥२१॥
 आल उतार आयां तणा, पांमी मन मांहे हरष रे ।
 जाणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे ॥२२॥
 ए तो आगेइ त्वारित भांग नें, आरे कर बेठीं अनंत संसार रे ।
 ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नहीं छें लिगार रे ॥२३॥
 आहार अशुद्ध वेंहख्यो छे जाण नें, वले कहे मै वेंहख्यो निरदोष रे ।
 इम भूठ बोले जाण जाण नें, एहवा मिष्टी न जाए मोष रे ॥२४॥
 आहार पाणी वेंहख्यो छे सुभतो, वले पूछ करे निरधार रे ।
 त्यां भारीकर्मा केइ जीवडां, आल देता न सके लिगार रे ॥२५॥
 यां दोषां रो निकालो काढियो, पाद्गाम मभार रे ।
 घणा बाई भाई बेठीं थकां, आयां में नहीं दोष लिगार रे ॥२६॥

आल : दीयो अन्हांवी : पापिया, त्यांरो हुवो : घणो फितूर रे ।
 तोही, नागा निरलज लाजे : नहीं, त्यांरा जन्म जीतव ते विकार रे ॥ २७ ॥
 यां : आल दीयो अन्हारविया, त्यांरी मानी छे साची वात रे ।
 ते पिण बूड गया छे, वापडा, तिण में संका नहीं, तिलमात रे ॥ २८ ॥
 एहवा : आल सुणे भेषचारिया, साचा कर मान लीघा ताय रे ।
 ए पिण गांम नगर कहता फिरें, मन में हेस्वत थाय रे ॥ २९ ॥
 भेषवाच्यां ने वोया पापियां, आर्यां ने झूठा दे आल रे ।
 ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढें नहीं निकाल रे ॥ ३० ॥
 यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसें एहिज परिणाम रे ।
 ए दोष सुण ने हरखे घणा, जाणें सरिया मन वछित काम रे ॥ ३१ ॥
 त्यांनें परभव रे चित्ता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे ।
 वले नागडा भडंग हुवा तिके, सके नहीं देता आल रे ॥ ३२ ॥
 ओर जीवां नें कोड आल दे, ते पिण रुले घणो संसार रे ।
 जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामें वाखंवार रे ॥ ३३ ॥
 तो सावां नें कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे ।
 भारी कर्म बांध्या तिण पापिए, तिण सूं पामें दुख अथाग रे ॥ ३४ ॥
 कदा बंव पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मझार रे ।
 तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे ॥ ३५ ॥
 सावां रे आल देवे पापिया, मन मांहे उजम आण रे ।
 तिणरी परमाधामी देवता, जीम काढें जडां सूं ताण रे ॥ ३६ ॥
 सावां नें आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज ने सम रे ।
 घणा मे मिश्र भापा बोल्ता, बांधे महा मोहणी कर्म रे ॥ ३७ ॥
 केइ भूठ बोले ने पापिया, सावां ने देवे आल रे ।
 ते भ्रमण करे संसार मे, उतकष्टों अनतो काल रे ॥ ३८ ॥
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते तो प्रस्न व्याकरण मांहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मझार रे ॥ ३९ ॥
 कदा पाप उदे हुवे इण भवे, तो बवें घणो रोग सोग रे ।
 छहडो आवे रिद्धि संपत्ति तणो, पडे बालां तणो विजोग रे ॥ ४० ॥
 केइ आंघां होय जावे इण भवे, जाबक होय जावे निरावार रे ।
 भीख भमता होवे इण भवे, सावां नें आल रो देवणहार रे ॥ ४१ ॥
 केइ तो अन्न विहूणा मरे, करता थकां विल विलाट रे ।
 सावां नें आल देवे तेहनां, भव भव में हुवे ओहिज घाट रे ॥ ४२ ॥

साधु साधवियां नें आल दे, तिणरो भव भव माहिं अभाग रे ।
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो बेगो न आवे थाग रे ॥४३॥
 इम सांमल नें नर नारियां, किणनेइ म दिज्यो आल रे ।
 आल दीघां रा फल छे पाडुवा, श्री जिण वचन संमाल रे ॥४४॥
 आल दीघां रा फल ओलखायवा, जोड क्रीषी ईडवा मभार रे ।
 संवत अठारे वर्ष चौपनें, नेत विद घोथ नें बुधवार रे ॥४५॥



ढलल : ७

दुहल

केई अग्यानी इम कहे, सलघु नें जोड करणी नलंही ।
ते अन्हाखी बकवोकरें, त्यारे ग्यांन नहीं घट मलंही ॥ १ ॥
त्यां सलवद्य नलरवद्य न ओलख्यो, नही ओलखी भलषल च्यलर ।
ते जोड करणी उथलपवल, हुवल अग्यानी त्यलर ॥ २ ॥
श्री अरलहंत भलष्यल अर्थ नें, ते गणघरे गुथ्यो सलघंत ।
त्या जोड करी सूतरलं तणी, त्यलरो अर्थ करे मतवंत ॥ ३ ॥
रलषभ देवजी रल सलघलं जोडीयल, पडनल चोरलसी हुजलर ।
श्री वीर तणल सलघलं कीयलं, चवदे हुजलर पडनल सलर ॥ ४ ॥
वले वलचलल वलवीस तलथंकरलं तणलं, सलघलं कीघलं पडनल अनेक ।
तो हलवडलं जोड नलरवद्य करें, त्यलमें दोष म जलंगो एक ॥ ५ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करी ने देखो]

केई केईं सलघलं ने जोड न कहुणी, कहुतलं बंधे ग्यांनलवरणी कर्मो रे ।
दरसणलवरणी कर्म बंधे जोड सुणीयलं, तलण जोड कहुलं नही घर्मो रे ।
चतुर वलचलर करी ने देखो* ॥ १ ॥
पेंहललं तो सलघलं ने जोड कहुणी नषेघी, ते ही जोड कहुवल ललगल रे ।
त्यां वलकललं ने सलघु कलण वलघ कहुजे, ए तो वरत वलहुंणल नलगल रे ॥ २ ॥
जोड कहुलं ग्यांनलवरणी कर्म बंधे छें, सुणे ते दरसणलवरणी बलंधे रे ।
हलवे तेहीज जोड कहे तलणरे लेखे, समकत चलरलत खोयो आंधे रे ॥ ३ ॥
वले जोड कहे त्यलंनें इण वलघ कहुतलं, गीतेरण ज्युं गलवें गीतो रे ।
ते पलण जोड नें मलल मलल गलवे, त्यलरी वलकल मलंने परतीतो रे ॥ ४ ॥
जोड कहुणी नषेघे ने कहुवल ललगल, त्यलंने आय कहे कोड आमो रे ।
थे सलघल ने जोड कहुणी नषेघी, थे जोड कहुो कलण कलर्मो रे ॥ ५ ॥
जब कहे म्हे जोड नें भली न जलणलं, म्हे कहुलं अनेरल नी कीघी रे ।
परनी कीघी जोड कहुलं परपेखल, म्हेलनें आय मलली छे सीघी रे ॥ ६ ॥
मूठ ललगें जोड करणवलल नें, म्हेलने तो कहुतलं मूठ न ललगें रे ।
म्हे तो जलसी हुवे जलसी कहे वतलवलं, लोक सुणे त्यलं आगें रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

पेंलां री जोड कीधी जोड भूंडी जाणों छो, तो थें कांय कहो लोकां आगें रे ।
 लोक पिण जोड सुण नें घणी सरावे, जब सगलां नें भूठ लागें रे ॥ ८ ॥
 जो पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, तो कहि देणों लोकां आगें रे ।
 खोटी जोड नें थें मतीय सरावो, जब किणनेई भूठ न लागें रे ॥ ९ ॥
 खोटी जोड कहे नें थें घिन घिन कहावों, जब बक्ता सुरता दोतूं बूडा रे ।
 अठें तो ठागा सूं कांम चलावे, आगे चिहूं गति में दीससी भूंडा रे ॥ १० ॥
 पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, पिण मन माहें खोटी जाणों रे ।
 तो होली रा गीत नें गाल परपेखा, ते कहितां संक क्यूं आणों रे ॥ ११ ॥
 यांरा कहिण रे लेखे सगली जोड भूंडी, तो कांय करो टाल टोले रे ।
 कांई जोड कहो कांई कहिता संको, आ पिण थारे लेखे थामें भोली रे ॥ १२ ॥
 जोड कहणी निषेधे ने कहिता जाए, त्यां विकलां री नहीं परतीतो रे ।
 सावद्य निरवद्य विण ओलखीयां, यूंही बोले घणा विपरीतो रे ॥ १३ ॥
 केई सावद्य चोरी अनेरा नी कीधी, ते पिण चोप्या कहवा लागा रे ।
 तिण माहें भूठ छें विवध प्रकारें, ते पिण जोड कहिवा नें आगा रे ॥ १४ ॥
 एहवी पिण खोटी जोड कहे नें, लोक रीभ्रवण लागा रे ।
 वले साधु रों विडद घरवें अग्यांनी, ते पिण विरत विहूणा नागा रे ॥ १५ ॥
 वले जोड कहे त्यानें निनव कहें छें, वले भूठाबोलां कहें तांमो रे ।
 सुयगडाअंग तेरमावेन रो, ले ले अणहंतो नामो रे ॥ १६ ॥
 वले जोड कहें त्यानें वदवद घाल्या, वेस्या रा करंडीया माह्यो रे ।
 ठाणाअंग चोथा ठाणा रो नाम लेइ नें, ते पिण मूंसावायो रे ॥ १७ ॥
 निन्व ने वले भूठाबोला कहें छें, वले वेस्या जोडे दीघा रे ।
 वले दोष अनेक कहे जोड कीधां, त्यांरा वचन विकलां मान लीघा रे ॥ १८ ॥
 जोड करे त्यांनं कहें खोटा नें निन्व, जोड ने पिण कहें छें खोटी रे ।
 तेहीज जोड नें पोते कहें छें, ते विकलां रे भोल्प मोटी रे ॥ १९ ॥
 वले जोड करे त्यांसूं संभोग भेलो, तिणनें साध गिणें आप सारिखो रे ।
 ते पिण रेलो आप में आवें, त्यांनं आ पिण नहीं छे ठीको रे ॥ २० ॥
 साधां नें निरवद्य जोड करणी उथापें, ते पूरा मूंड गिंवारो रे ।
 निरवद्य न्याय करे जोड साधु, तिणमें नहीं दोष लिगारो रे ॥ २१ ॥
 मतिग्यांन तणा दोय भेद कह्या जिण, नंदी सूतर रे माह्यो रे ।
 सूतर री नेश्राय सूं अर्थ बघारें, सूतर विण बुध फॅलावें तांह्यो रे ॥ २२ ॥
 सूतर विनां कोइ बुध फॅलावें, ते जोड करे निरदोषो रे ।
 च्यार भाषा तणा जे जाण होसी ते, जोड करसी तिको ग्यांन चोखो रे ॥ २३ ॥

ते उतपात री बुध वीर क्खांणी, ते तो मेल दे वचन रसालो रे ।
 जिसरो नर देखे जिसरोइज साचों, .उतर दे ततकालो रे ॥ २४ ॥
 सूतर विनां कोइ बुध फेलावे, ते तो बुध घणी छे भारी रे ।
 सावद्य निरवद्य अकल सूं जाणो, ते तो करसी जोड विचारी रे ॥ २५ ॥
 अणदीठो अणसांभल्यो काने, मन में पिण न कीयो विचारो रे ।
 एहवो प्रश्न कोइ आय पूछे जब, ततपण जाव दे तिणवारो रे ॥ २६ ॥
 भारत रामायणादिक सास्त्र अनेक, ते अनतीर्थी कीया ग्रंथो रे ।
 ते साधु भणें सम सूतर हुवें, ते बुध सूं संवलो करे अर्थो रे ॥ २७ ॥
 अण तीरथीयां रा कीघा सासत्र, त्याने हुता ज्यू रा ज्यूं जाणों रे ।
 तो पोते जोड करसी तिण मांहे, सावद्य किण विघ आणो रे २८ ॥
 केई मिथ्याती जोड करे तिण मांहे, कांई सांच कांई कूडो रे ।
 ते सुणीयां थकां रंग किण विघ आवे, जाणे मिली केसर मांहे धूरो रे ॥ २९ ॥
 साधु तो कुड ने काने करेनें, साच कहे मुखदायो रे ।
 जाणे गंगोदक में केसकर घाली, ज्यूं रग दीये चढायो रे ॥ ३० ॥
 साधु तो जोड करे छे जुगत सूं, सूतर करे न्यायो रे ।
 पिण कुबदी जीव कदागरो माडे, सुबदी री आवे दायो रे ॥ ३१ ॥
 अनतीरथी री कीधी जीड मांहिलो, कूड काने करे ताह्यो रे ।
 तो इसडी ओलखणा घट ज्यारे, ते न करें, जोड अन्यायो रे ॥ ३२ ॥
 आचारंग आदि दे सूतर अनेक, ते भाष्या अरिहत भगवानो रे ।
 तेहीज सूतर जाणें मिथ्याती, तिणरे हुवे मति अग्यानो रे ॥ ३३ ॥
 पुराण कुराण नें श्री जिण आगम, मिथ्याती जांणे तो अग्यांनो रे ।
 तेहीज समदिष्टी जाणें तो ग्यांन, तिणरो निरमल मति गिनानो रे ॥ ३४ ॥
 सत असत नें वले मिश्र ववहार, ए च्याह्दई भाषा जांणे सोयो रे ।
 ते जोड करणी क्यांनें उथापे, साधु ने भाषा बोलणी दोयो रे ॥ ३५ ॥
 सत नें ववहार भाषा दोय बोले, ते पिण निरवद्य ने निरदोषो रे ।
 यां दोय भाषा सूं जोड करे छे, त्यांरो मति ग्यांन छे चोखो रे ॥ ३६ ॥
 ए दोय भाषा बोलण री साघां ने, भगवंत आग्या दीधी ताह्यो रे ।
 दसवीकालक सातमा अधेने, तीजी गाथा माह्यो रे ॥ ३७ ॥
 केई जोड करें केई जोड कहे छे, अथवा केई जोड सरावे रे ।
 जो धर्म होसी तो सगलां ने होसी, पाप होसी तो सगलां ने थावे रे ॥ ३८ ॥
 वले उतराधेन गुणतीसमें धेने, तिहां अर्थ में गाथा विसतारों रे ।
 जोड करे प्रवचन दीपावें, तिणने होसी लाम अपारो रे ॥ ३९ ॥

ववहार समकत रा सतसठ बोल, तिणमें पिण ओहीज न्यायो रे ।
 तिणमें आठां बोलां प्रवचन दीपावें, तिहां जोड करणी तिण माह्यो रे ॥ ४० ॥
 वले ठाण अंग नवमां ठाणां माहें, तिहां अर्थ कह्यो छे आंमो रे ।
 नवूं ही पाप सासत्र साध भणें तो, धर्म पुसटों करें तांमो रे ॥ ४१ ॥
 वले चौथें ठाणें च्यार काव्य कह्या छें, गदबंध कथा गीतो रे ।
 ते जोड कह्यां विण किण विघ गावें, ते पिछांण कीजों रूडी रीतो रे ॥ ४२ ॥
 किण ही जेंहर नीपाए नें पीघों, किणही जेंहर पीघों जाणें सीघो रे ।
 तिण जेंहर थकी दोनूं जणा ततषण, अकाले आउषो पुरो कीघो रे ॥ ४३ ॥
 ज्यूं कोइ जोड करे नें कहें छें, कोइ जोड कहें सीघी जाणों रे ।
 जो जेंहर सरीषी जोड झूठी छे, तो दोयां नें पाप लागसी आणों रे ॥ ४४ ॥
 जिण जेहर नीपाए नें पीघो ते मूंओ, सीघो जेंहर पीघो तेही मूंओ रे ।
 ज्यूं जोड करे नें कह्यां पाप लागें, तो सीघी कही त्यांनैं पाप हूवो रे ॥ ४५ ॥
 जो निरवद्य जोड हुवें इमरत सरीषी, ते कह्यां थकां कटे कर्मों रे ।
 एहवी जोड करे नें कह्यां धर्म निश्चे, सीघी कहणवालांनैं धर्मों रे ॥ ४६ ॥
 त्यां जोड करणी साधां नें निषेधी, तेहीज जोड करवा लागा रे ।
 ते प्रतष चोडें झूठबोला छें, ते वरत विहूणा नागा रे ॥ ४७ ॥
 पेंहलां तो कहितां साधां नें जोड न करणी, ते पिण जोड करवा नें दूका रे ।
 वेण सगाइ तो मेल न जाणें, यूंही कुडीया थका करें कूका रे ॥ ४८ ॥
 त्यांरा बडा बडेरा आगें हूवा ते, साधां नें जोड करणी न थापी रे ।
 त्यानें पिण जाबक झूठा घाले नें, खोटी जोड करवा लागा पापी रे ॥ ४९ ॥
 कोइ निरवद्य जोड सूतर न्याय करता, त्यांरी निद्या करता दिन रातो रे ।
 हिवे जोड करे त्यांनें आछा जाणें, तिण लेखें आगे हंतो मिथ्यातो रे ॥ ५० ॥
 संवत अठारे नें वरष तयांले, काती सुदि तेरस नें सनीवारो रे ।
 निरवद्य जोड करणी ओलखावण काजे, जोड कीघी कोठाखा मभारो रे ॥ ५१ ॥

ढाल : ८

ढुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते तों बूडें छें कर कर तांण ।
 ते ववेक विकल सुघ बुच विनां, जिण मारग रा अजाण ॥ १ ॥
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विनां, कहे सामायक नहीं होय ।
 एहवी उंधी करे छे परूपणा, त्यां सुघ बुच दीधी खोय ॥ २ ॥
 पेंहिली करणी छें इरीयावइ तसोतरी, पछेकाउसग करणो एक ठाम ।
 पछे लोगस्स कहे सामायक पचखाणी, पछे कहिणों नमोयुणं तांम ॥ ३ ॥
 ए च्यार पाटी नें काउसग कीयां विनां, सावद्य जोग रा करे पचखाण ।
 तिणरे सामायक नहीं नीपजे, इसडी कहे मूढ अयाण ॥ ४ ॥
 सका घालें लोकां नें अन्हांली थका, सामाइ री देवें अंतराय ।
 रात दिवस बकवोकरें, तिणरा जाबसुणो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[३ भवियण सेवो ३ साध सथाणा]

च्यार पाटी कहां विण समाइ न करणी, इम कहें त्यांरी सरवा खोटी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, त्यांरी अकल मे खांभी छें मोटी रे ।
 भवियण जोवो हिरदय विचारी, थें काय करो आतम भारी रे ।
 भवियण थें छोड दो रुढ हीया री* ॥ १ ॥
 छ आवसग मांहे पेहली समाइ, पछें चोवीसत्थो चाल्यो ।
 ते वीर बचन उथापे अग्यानी, ओ घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ भ० २ ॥
 उतराधेन गुणतीसमे घेने, पेंहलां सामायक रो फल भाख्यो ।
 पछे चोवीसत्था सूं पचखाण लग, त्यांरो फल अनुक्रमें दाख्यो रे ॥ ३ ॥
 अनुयोग दुवार मे छ आवसग चाल्या, पेहिलो आवसग समाइ जाणों ।
 पछे चोवीसत्थो वंदणा पडिकमणो, पछे काउसग नें पचखाणो रे ॥ ४ ॥
 समाइ चोइत्थो वंदणा पडिकमणों, काउसग नें पचखाणों ।
 थे सांफ सवेर रो करो पडिकमणो, जव थें इम काय बोले वाणों रे ॥ ५ ॥
 थारे लेखें याने पेहलां कहिणों चोइत्थो, पछे कहिणी थानें समाइ ।
 जो थे पेंहलां नाम सामायक रो लेसो, तो थां में सपफ न दीसैं काई रे ॥ ६ ॥

*यह आंकिडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार पाटी कहाँ विण पचखें समाइ, तिणरी थें न गिणों समाइ ।
 जो थें साचा हुवों तो सूतर में बतावो, नहीं तो कूडी कुबद चलाइ रे ॥ ७ ॥
 यारें लेखें तो च्यार पाटी समाइ, ते पिण विकलां नें समझ न काई ।
 सामायक चोइत्यो ओलख्यां विण, यूही करे लपराइ रे ॥ ८ ॥
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, आतमा सुघ नहीं होय ।
 आतमा सुघ कीयां विण करे समाइ, तो सामायक नही नीपजें कोय रे ॥ ९ ॥
 एहवी उंधी परूपणा कर कर लोकां में, सामायक री देवें अंतराय ।
 त्यांनैं सूतर सख ज्यूं परगमीया, तिण सूं कूडी करें वकवाय रे ॥ १० ॥
 एहवा मूढ मिथ्याती नें पूछा कीजे, जिण भाष्या बारें वरत सोय ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसों किसों वरत नहीं होय रे ॥ ११ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह, ए पांचूइ आश्रव जोय ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा आश्रव ना त्याग न होय रे ॥ १२ ॥
 हिंसादिक अठारे पाप रो सेवण, ते सबंधा सावद्य जाण ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा पाप रा न हुवें पचखाण रे ॥ १३ ॥
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे, जब बोलें अग्यानी अंधा ।
 त्यारे कर्म जोगें डंक लगा कुगुरां रा, ते किण विघ बोलें सूंधा रे ॥ १४ ॥
 त्याग वेंराग री जेभ न करणी, पाप रो क्यांसूं होसी समाइ ।
 वीर कहाँ उतराघेन दसमें अघेन नें, एक समों न करणो परमाइ रे ॥ १५ ॥
 सामायक चारित वीर लीयों जद, च्यार पाटी तो गुणी न दीसैं ।
 सर्व पाप करणो नही मोनैं, इम कहाँ छें श्री जगदीसैं रे ॥ १६ ॥
 इरीया तसोतरी कहे काउसग कीघो, पछें लोगस कहाँ तिण ठाम ।
 इतला माहे घर काम उपनों, तो उ जाय करें घर काम रे ॥ १७ ॥
 पहला सावद्य जोग रा त्याग करे नें, समाइ कर बेंठो एक ठाम ।
 तठा पछें कोइ घर काम उपनों, तो उ जाय न करे घर काम रे ॥ १८ ॥
 च्यार पाटी कहितां नें काउसग करतां, समा व्हें असंषज कालो ।
 जब लग आश्रव नाला छूटा राख्यां, त्यामैं पाप आवें दगचालो रे ॥ १९ ॥
 ते तो समे समें सात कर्म लागें छें, हिंसादिक नाला करे प्रवेस ।
 एक एक कर्म रा प्रदेस अनंता, जीव रें लागे एक प्रदेस रे ॥ २० ॥
 किणनैं वेंराग आयो समाइ करण रो, ते हुवो समाइ नें तयार ।
 त्यारें लेखें तो तिणनैं सामायक न करणी, उणनैं पाटी न आवे च्यार रे ॥ २१ ॥
 कोइ तो च्यार पाटी विनां कहाँइ, सामायक करे हरषत होयो ।
 तिण यांरी सरधा सुण छोडी सामाइ, तिणनैं तो यां जाबक बोयो रे ॥ २२ ॥

च्यार पाटी विनां जो न हुवें सामाइ,
 तो इण लेखें तो च्यार पाटी कहां विण,
 च्यार पाटी कहां विण दस वरत न सरखो,
 ओ तो अपछ्छंदे ने उंची सुम्नी,
 इरीयावही तसोतरी काउसग,
 त्यांनं कहां विनां सामाइ न सरखे,
 लोगस न नमोत्थुणं त्यांमं,
 त्यांनं कहां विण सामाइ न सरखे,
 यांनं मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं,
 वले प्रवल राग ने घेष उदें छें,
 दावल छुटी घर में आवे कजोडो,
 त्यांमं केई चतुर करे थोडा में,
 केई घर मांसू काढे कजोडो,
 पछे कजोडो बुहारे करे भेलो,
 केई किवाड जड्यां विण बुहारे देवें,
 बुहारे देवे पिण कचरो न रहें आवतो,
 ज्यू जीव रूपीया घर में कर्म कजोडो,
 त्यांमं केइ चतुर चतुराई करे तो,
 घर जिम तालाव ने रीतो करणों,
 मांहिलो पांणी मोरीयादिक सूं काढे,
 जीव रूपीयो तलाव छे तिणरें,
 पछे तपसा करे ने कर्म खपावें,
 ए उतराधेन रे तीसमें अवेनें,
 ज्यू आश्रव रुधे च्यार पाटी कहां विण,
 संवर निरजरा गुण छें दोनुंइ,
 च्यार पाटी कहां विण समाइ न सरखे,
 समायक उयापण नें मूंड मिथ्याती,
 पिण जिण मारग ओलखीयो छे त्यांरे,
 च्यार पाटी ने काउसग कीयां विण,
 त्यांरी खोटी सरखा ओलखावण काजें,
 संवत अठारे नें वरष पचासे,
 ते सुण सुण नें उत्तम नरनारी,

आ सरखा वारे बेंठो कोइ ।
 वरत न हुवें वारोंइ रे ॥ २३ ॥
 नही सरखो सामाइ नें पोसों ।
 ओ तो कर्म तणो छे दोषो रे ॥ २४ ॥
 ए तो पडिकमणा री पाटी ।
 त्यांरी अकल कर्म सूं दाटी रे ॥ २५ ॥
 अरिहंत रा गुणग्राम ।
 ते तो यूंही बके बेफाम रे ॥ २६ ॥
 संवली तो मूल न सुमं ।
 तिणसूं दिन दिन इधिक अलुमं रे ॥ २७ ॥
 ते घर सुव किण विष थायो ।
 विकलां सूं सुघ कीयो न जायो रे ॥ २८ ॥
 जब पेंहलां जडे आडा किवाडो ।
 पछे न्हाख दे घर रे बारो रे ॥ २९ ॥
 ते कचरो उड उड पाछो आवें ।
 ते घर सुघ किम थावे रे ॥ ३० ॥
 समें समे निरंतर आवें ।
 जीव रूपीयो घर सुघ थावें रे ॥ ३१ ॥
 जब तो नाला रुंधणा पेंहला ।
 जब तालाव खाली हुवेला रे ॥ ३२ ॥
 पेहला आश्रव नाला रुंध ।
 जब निरमल हुवें जीव सुघ रे ॥ ३३ ॥
 पेहला तो आश्रव रुंधवा चाल्या ।
 तिणमेंइ घोचा कुयातरां चाल्या रे ॥ ३४ ॥
 पेला पछे कीयां नहीं दोष ।
 आ उंची सरखा छे फोक रे ॥ ३५ ॥
 कूडा कुहेंत लगावें अनेक ।
 थांरी बात न माने एक रे ॥ ३६ ॥
 नही सरखे छे मूंड समाइ ।
 जोड कीधी सिरीयारी मांहि रे ॥ ३७ ॥
 आसाढ सुद वीज नें रिववारो ।
 कोइ संका म राखो लिंगारो रे ॥ ३८ ॥



ढलल : ६

दुहा

सासण श्री विरघमान रों, ग्यांनादिक गुण भंडार ।
साध साधवी श्रावक श्रावका, अे तीरथ कहा जिण च्यार ॥ १ ॥
सर्व विरत धर्म साध रो, देस विरत श्रावक धर्म जाण ।
ए दोनूँइ धर्म छें निरमला, समदिष्टीयां लीया छे पिच्छाण ॥ २ ॥
बीस भेद कहा संवर तणा, बारां भेदां निरजरा जाण ।
संवर निरजरा में श्रीजिण आगन्या, तिणसूं जीव पोंहचें निरवाण ॥ ३ ॥
साध श्रावक रा धर्म में, हिंसादिक नहीं तिलमात ।
ओ निरबद्ध धर्म परूपीयो, चोवीसमें जगनाथ ॥ ४ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
ते भिष्ट छें सरघा आचार में, अरू बरू लो देख ॥ ५ ॥
ते पिण साधु बाजें छें लोक में, भूला अग्यांनी भर्म ।
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रह, यामें कहे छें धर्म ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रहो, यामें जिण कह्यो एकंत पाप ।
त्यामें धर्म परूप्यों अनार्या, श्री जिण वचन उथाप ॥ ७ ॥
ते चोरें कहितां तो लाजा मरे, वले कांम पड्यां फिर जाय ।
ते सरघा कहे छें किण विवें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ८ ॥

ढलल

[२ भविष्य जिण आगन्या...]

कहें समदिष्टी नें पाप न लागे, जो उ करे हर कोइ कांम ।
इसडी परूपणा करे अग्यांनी, भूठो ले ले सूतर रो नांम रे ।
कुमत्यां आ सरघा कठा सू घारी रे, थें कांय करो आतम भारी रे ।
इण सरघा सू घणी खुवारी* ॥ १ ॥
कहें समदिष्टी सतरें पाप सेवें, त्यांनें पाप रों अंस न लागों ।
इसडी उंधी सरघा परूपें छें त्यांरे, मोटो लागों मिथ्यात रो दागों रे ॥ ई० २ ॥
कहें समदिष्टी देवता नें देवी, भोग भोगवें विवध प्रकार ।
वले कीला करै छें अनेक प्रकारें, त्यांनें पाप न कहो लिगार रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सक्र इन्द्र कोणक री भीड आए ने,
 एक कोड असी लाख मानव मूआ,
 काली कुमरादिक दसोंइ भायां नें,
 थें चेडा राजा नें पाप लागो नही जाणों,
 भरतादिक चक्रवत हुआ समदिष्टी,
 बले अनेक अस्त्रीयां सूं भोग भोगवीया,
 सकडाल पुतर थो वीर नो श्रावक,
 थें तिणमेंइ पाप न सरघो रे विकलां,
 वीर तणो श्रावक आणंद हुंतो तिण,
 तिणने खेती रो पाप लागो नही सरखें,
 समदिष्टी श्रावक घर माहें बेंठा,
 त्यांने आरंभ कीयां रो पाप न जाणें,
 त्यांनैं चोडे प्रश्न पूछ्यां लाजां मरें जब,
 कूड कपट करे निज सरघा ढांकण ने,
 दरबे पाप तो पाप छें नाहीं,
 दरब तीर्थंकर ते तीर्थंकर नाही,
 दरबे साध ने दरबे तीर्थंकर,
 ज्युं दरबे पाप कहिवा नें कहीजे,
 त्यां विकलां ने बले पूछा कीजे,
 तो थे दोनूंइ पाप रा जूआ जूआ फल,
 भावे पाप तणा फल कडवा बतावो,
 ए बिस्व बात बताया लोकां में,
 दरबे नें भावे दोग्य बतावो,
 जब तो दरब भाव एक कहा थे,
 था भूछी बकरोल करे लोकां में,
 दरबे ने भाव रो नाम लेइ नें,
 समदिष्टी ने पाप लागो न सरघो,
 थें तो हीयाफूट गधा रा साथी,
 थारी अंतरग में सरघा उंधी,
 समदिष्टी भोग भोगवें त्यांनैं,
 सतरे पाप सेळे समदिष्टी तिणमे,
 बले पुन तणा थट बंधीया जाणो,
 ८७

दोग्य दोग्य संगराम कीघा भारी ।
 इंद्रां ने पाप न कह्यो लिआरी रे ॥ ४ ॥
 चेडे माख्या एकेके वाण ।
 तो थें पूरा छो मूंड अयाण रे ॥ ५ ॥
 राज कीघो छ घंड रो आपो ।
 त्यांनैं मूल न सरघो थें पापो रे ॥ ६ ॥
 तिण घाल्या सडकडां निहाव ।
 थें पको कीघो वुडण रो उपाव रे ॥ ७ ॥
 पांचसो हलवा खेती कीघी ।
 तिण नरक तणी नीब दीघी रे ॥ ८ ॥
 त्यां आरंभ कीघा अनेक ।
 ते वूडें छें विनां बवेक रे ॥ ९ ॥
 दरबे पाप लागो बतावे ।
 ज्युं त्युं कर नें पार होय जावे रे ॥ १० ॥
 दरबे साध ते साधु नाही ।
 विचार देखो मन मांही रे ॥ ११ ॥
 त्यांने गिणती में गिणीया नाहीं ।
 तिण सूं दुख उपजे नही काई रे ॥ १२ ॥
 पाप कहो थे दरब ने भावो ।
 जयातथ कहि बतावो रे ॥ १३ ॥
 दरबे पाप रा फल कहो मीठा ।
 परोला हाथां सूं फीटा रे ॥ १४ ॥
 जो दोग्य रा फल कडवा बतावो ।
 दोग्य कहा किण न्यावो रे ॥ १५ ॥
 भोलां नें कांय भरमावो ।
 गोला कांय चलावो रे ॥ १६ ॥
 पाप लागो कहो किण लेखे ।
 निज सरघा साह्यो ब्युं नही देखे रे ॥ १७ ॥
 जावक खोटी जवन ।
 सरघो छो निरजरा पुन रे ॥ १८ ॥
 थे जाणो छो कटता कर्म ।
 थारे मूदे तो ओ तंत घर्म रे ॥ १९ ॥

समदिष्टी श्रावक र इण विघ, नीपनों जाणो छो धर्म ।
 कांम भोग तणी अभिलाषा हुवें जब, भोग भोगवे ने तोडें कर्म रे ॥ २० ॥
 समदिष्टी आरंभ करें अनेक प्रकारें, खेती आदि दे विणज व्यापार ।
 इण किरतब में निरजर रा पुन जाणें, यांरी सरघा नें तीन धिकार रे ॥ २१ ॥
 केई समदिष्टी तो घर हाट करावें, करें छ काय संघार ।
 तिणमेइ पाप न जाणों रे कुमत्यां, थें बुड गया काली धार रे ॥ २२ ॥
 समदिष्टी श्रावक रे कांम पडें तो, करें संगराम अनेक ।
 तिणमेइ थें धर्म ने पुन जाणों, थें बुडें छो विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 केई समदिष्टी खाएं चुगली नें चाडी, पॅला रो घर देवें गमाई ।
 तिणमें धर्म जाणों पिण पाप न जाणों, आ पूरी थारी विकलाइ रे ॥ २४ ॥
 केई समदिष्टी करें सिनांन सपाडा, रंगा चंगा रहें नित न्हाइ ।
 त्यांनं पिण पाप लागो नही सरघो, थारी अकल गइ दपटाइ रे ॥ २५ ॥
 श्रावक समदिष्टी मइथुन सेवे, ते भोग तणी छें लील ।
 श्रावक रा मइथुन नेश्चें कुसील, तिण कुसील नें जाणो सुसील रे ॥ २६ ॥
 हिवें कहि कहि नें कितरोक कहूं, समदिष्टी करें अनेक आरंभो ।
 तिणनें पाप लागो नहीं सरघो, थारी सरघा रो बडो अचंभो रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी नें पाप लागो नहीं सरघो, आ तो उठी जठायी भूठी ।
 प्रतष पाप कीयां में पाप न जाणों, थारी हीयां निलाड री फूटी ॥ २८ ॥
 समदिष्टी श्रावक नें पाप लागो न सरघो, आ सरघा कठा सूं काढी ।
 आगम उथाप नें अंवाला पडीया, मोष तणी वरत वाढी रे ॥ २९ ॥
 श्रावक नें सुसीलीयो कह्यो छे, तिणरो थें भेद न जाणो ।
 थें कुसील ने सुसील जाणों नें, पीपल बांधी मूर्ख जिम ताणो रे ॥ ३० ॥
 इविरती समदिष्टी अधर्मी, श्रावक धर्मीअधर्मी दोनुंइ ।
 श्रावक नें एकंत धर्मी सरघे, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ३१ ॥
 इविरत रो पाप लागें श्रावक नें, किरतब करें जिसों पाप होइ ।
 श्रावक रें पाप लागो न सरघे, ते चाल्या जनम विगोइ रे ॥ ३२ ॥
 उवाइ सुयगडाअंग माहें, श्रावक धर्मीअधर्मी चाल्यो ।
 श्रावक नें एकलो धर्मी कहनें, थें घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ ३३ ॥
 श्रावक नें पाप लागो न कहे मिथ्याती, त्यांनं ओलखावण ताहि ।
 मव जीवां नें समभावण काजें, जोड कीची गुदवच रे माहि रे ॥ ३४ ॥
 संवत अठारें नें वरस एकावनें, वेंसाष सुदि इग्यारस वार बुध ।
 ते सुण सुण नें उत्तम नर-नारी, सरघा धार राखो सुध रे ॥ ३५ ॥

ढाल : १०

दुहा

केई भारीकर्मा जीवडा, त्यांरा घट माहे घोरअग्यांन ।
 त्यांरा बोल्यांरी समझत्यांने नही, ते जीव विकल समांन ॥ १ ॥
 नारकी देवता में भेद जीव रा, तीन तीन कहे छे अयांण ।
 इग्यारमो तेरमों ने चवदमों, इण लेखे विकल समांण ॥ २ ॥
 ते सूतर बांचे छे जिण भाषीया, त्यांरी रहस न जाणें मूंड ।
 ते तांण करे छें भूठा थकां, पिण लीवी न छोडें व्हड ॥ ३ ॥
 त्यांरी पीढ्यां खपी भूठ बोलतां, पिण किण ही न काढ्यो निकाल ।
 ववेक विकल सुघ बुघ विनां, भूठी करे छे मखाल ॥ ४ ॥
 कदा अजाणपणे भूठ बोलीयो, पछेइ निरणो करे सोय ।
 ते आलोएनें सुघ हुवो, व्हड राखे ते बूडा सोय ॥ ५ ॥
 नारकी ने सर्व देवता मभे, दोय भेद कह्या जिणराय ।
 तेरमो नें वले चवदमो, तिणमे सका न जाणो कांय ॥ ६ ॥
 तीन भेद कहे छें तेहनें, भूठा घालीजे एम ।
 त्यांरा भाव भेद परगट कळं, ते सुणजो घर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या मे]

जीव रा तीन भेद कहे देवतां में, ए वात उठी छे तठाथी भूठी ।
 इण बोल रो निरणो न करें छे त्यांरी, हीया ने निलाड री दोनूइ फूटी ।
 इण भूठाबोला रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 इग्यारमों भेद जीव रों निश्चें निपुंसक, देवता नहीं छे निश्चे निपुंसक तांम ।
 देवता मे इग्यारमों भेद कह्यो तिण, देवता ने निपुंसक कहि दीया आंम ॥ २ ॥
 देवता ने तो निपुंसक कहितां लाजे, तो इग्यारमों भेद कहे किण लेखे ।
 त्यांरी अभितर आख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो मूल न देखें ॥ ३ ॥
 इग्यारमो भेद कहे पिण न कहे निपुंसक, एहवो छे मेष घाख्वां रे अंधारो ।
 वले पिंडत नाम धरावे मूखं, त्या विकलां ने विकल मिल्या परवारो ॥ ४ ॥
 इतरो पिण समझ पडें नही त्याने, साची सरखा किण विघ आवें ।
 सरखा तो परम दुलम कही छे, एहवा विकलां ने कुण समझावे ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वले देवता नें असनी कहे छें,
 त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी,
 असनी पचिंद्री 'रो अप्रजापतो छें,
 परजाय बांधे तो बारमों भेद होसी,
 इग्यारमो भेद परजाय बांध्यां बारमों हुवे,
 इग्यारमो परजाय बांध्यां चवदमो कहे छें,
 पेहला भेद परजाय बांध्यां बीजों हुवे,
 पांचमो भेद परजाय बांध्यां छठो होवें,
 नवमो भेद परजाय बांध्यां दसमों हुवे छें,
 इग्यारमो परजाय बांध्यां थिन हुवे चवदमों,
 तेरमो जीव रो भेद परजाय बांधें ते,
 पिण इग्यारमां भेद रो न हुवें चवदमों,
 इग्यारमो भेद कहे नारकी देवतां में,
 इग्यारमां सूं चवदमों हुवो कहें छें,
 पाचसो नें तेसठ जीव रा भेद,
 जब तो नारकी नें सर्व देवतां में,
 कठेक तो नारकी देवतां में,
 कठेक त्यांमें कहे दोय भेद छें,
 ए पीढीयां खप भूठ बोलता आवें,
 जेसा हुंता तेसा चेला पिण आय मिलीया,
 सातमे आठमें नें दसमें,
 त्यारे सुभ जोग नें सुभ लेस्या वरतें छें,
 त्यांने पिण भूठाबोला जाणें अग्यांनी,
 वले भूठो मन परवरतावता जाणें,
 ज्यांरा माठा जोग वरतें छे ते तों,
 अपरमादी साध नें भूठाबोला कहे छें,
 जथा तथ चाले जथाख्यात चारितीयो,
 त्यांने पिण भूठा बोलता कहें अग्यांनी,
 इग्यारमें बारमें गुणठाणें त्यांरें,
 भूठ बोलें छें त्यांने तो पाप लागे छें,
 भूठ बोलें कहें जथाख्यात चारितीयो,
 भूठ बोलें पिण पाप न लागें,

इग्यारमों भेद जीव रों त्यांमें बतावें ।
 त्यां ववेक रा विकलां नें कुण समभावें ॥ ६ ॥
 तिणमें जीव रो भेद इग्यारमो जाणो ।
 ते चवदमो किहां थो होसी रे अयाणो ॥ ७ ॥
 चवदमों हुवें तो कदेय म जाणो ।
 ते तो जिण मारग रा निश्चे अयाणो ॥ ८ ॥
 तीजो भेद बांध्यां चोथो होय ।
 सातमो परजाय बांध्यां आठमो जोय ॥ ९ ॥
 इग्यारमो परजाय बांध्यां बारमों जाणों ।
 चवदमो भेद कहे ते विकल समाणो ॥ १० ॥
 जीव तणो भेद चवदमो जाणो ।
 समभो रे समभो थें मूढ अयाणों ॥ ११ ॥
 त्यांने एकंत भूठाबोला जाणो ।
 ते यूंही बूडें छें कर कर ताणो ॥ १२ ॥
 पोते सीखे नें ओरां नें पिण सीखावे ।
 जीव रा दोय दोय भेद बतावें ॥ १३ ॥
 जीव रा तीन भेद कहें छें ताय ।
 त्यांरा बोल्यां री त्यांनेइ समझ न काय ॥ १४ ॥
 पिण इणबोल रो किण ही न काढ्यां निकालो ।
 अभितर फूटी आडा आया कर्म जालो ॥ १५ ॥
 वले इग्यारमें नें बारमें गुण ठाणें ।
 त्यांरा माठा जोग अग्यांनी जाणें ॥ १६ ॥
 मिश्र भाषा पिण बोलता जाणें छें थानें ।
 मिश्र मन परवरतावता जाणें छें त्यांने ॥ १७ ॥
 ते अपरमादी निश्चेइ न थाय ।
 ते तो निश्चेइ चोडे भूला जाय ॥ १८ ॥
 तिणनें पाप रो अंस न लागें ताहि ।
 ओ पिण अंधारो विकलां रे माहि ॥ १९ ॥
 जथाख्यात चारित श्रीकारो ।
 पिण यांनें तो पाप न लागें लिंगारो ॥ २० ॥
 आ पिण विकलां रे भोलप मोटी ।
 आ पिण सरघा छे जाबक खोटी ॥ २१ ॥

आरंभ री किरिया लागे छठे गुणठाणे,
उसभ जोग न वरतें जब अणारंभी छे,
सातमां गुणठाणा थी अणारंभी छे,
ज्यूं ज्यूं आगले गुणठाणे चढे जब,
अप्रमादी ने अणारंभा कहुआ छे,
संका हुवे तो भगोती सूतर मांहे जोवों,
सातमां सूं ले ने वारमे गुणठाणे,
त्याने भूठाबोला कहे मूढ मिथ्याती,
त्यांरा श्रावक त्यारे बदले भूठ बोलें,
ते पिण वूड गया त्यारे केडे,
वले अनेक भूठ त्यारे वासठीया मे,
जीव रा तीन भेद कहे नारकी मे,
दस भवण पती ने वांण मंतरा मे,
जीव रा तीन तीन भेद वतावें,
अवेदी मे जोग इग्यारे वतावें,
ओ पिण भूठ बोले छे अग्यांनी,
सुपम सपराय ने जथाख्यात चारित मे,
ओ पिण निरणो कीयां विण अग्यांनी,
तीन तीन भेद कहे नारकी देवता मे,
त्यारी पिंडताइ मांहे पड गइ धूर,
देवता ने निपुंसक कहे छे त्यांनं,
पोते निपुंसक कहे तिणरी ठीक नही छे,
देवता मांहे तो कहे छे मूढ मिथ्याती,
जब देवता ने कहुआ निश्चे निपुंसक,
देवता तो निपुंसक निश्चे नही छे,
देवता ने असनी ने निपुंसक कहे छे,
सतावन भेद सवर रा कहे छे,
ते पीढीया खप चालीया जाए छे,
बावीस परीसां पांच सुमत तीन गुध,
पाच चारित घाल्यां ए बोल सतावन,
बावीस परीसां ते जीव री सक्त छे,
चोखा परिणाम ते निरजरा री करणी,

ते तो उसभ जोगां सूं लागे छे तांम ।
आगे सुभ जोग नें सुभ लेस्या परिणांम ॥ २२ ॥
त्यारे तो उसभ जोग वरतें नही तांम ।
चढती लेस्या नें ध्यान चढता परिणांम ॥ २३ ॥
त्यारा उसभ जोग तो वरतें छे नाहीं ।
पेहला सतक रा पेहला उद्देसा मांही ॥ २४ ॥
त्यांरा जोग कदे वरते नहीं भूंडा ।
ते तो पीढीयां खप जाए छे वूडा ॥ २५ ॥
समम्क पढ्यां विण करे छें तांणों ।
न्याय निरणा विण बोले छे विकल समांणो ॥ २६ ॥
ते सांभलजो भवीयण चित ल्यायो ।
तीन भेद कहे वले देवता माह्यो ॥ २७ ॥
वले कहे पेहली नरक रे माह्यो ।
ओ पिण बोले छे मूसावायो ॥ २८ ॥
अकसाइ में जोग नव बतावे ।
दर पीढ्यां भूठ बोल्ता आवे ॥ २९ ॥
यामे पिण नव नव जोग बतावें ।
गालां रा गोला मुख सूं चलावे ॥ ३० ॥
सूतर भगोती देवे छे साख ।
यूही अलाल भाखे छें अन्हाख ॥ ३१ ॥
एकंत भूठा बोला जाणे ।
पीपल वाधी मूर्ख ज्यूं ताणे ॥ ३२ ॥
जीव तणो इग्यारमों भेद ।
इग्यारमो भेद असनी निपुंसक वेद ॥ ३३ ॥
वले असनी पिण नही देवता तांम ।
ते तो निश्चेइ भूठ बोलें बेफांम ॥ ३४ ॥
त्यांमें पिण खोटा छे बोल अनेक ।
ते पिण विकलां रे नही छें ववेक ॥ ३५ ॥
दस विव जती घर्म नें भावना वारे ।
यां सारां नें संवर कहें विनां विचारे ॥ ३६ ॥
विचार खमें ते चोखा परिणांम ।
त्यांनं संवर कहे ते भूठाबोला आंम ॥ ३७ ॥

पांच सुमत नें संवर कहें छें अग्यानी,
 पांचसुमत तो छें निश्चें निरजरा री करणी,
 दस विव जती धर्म जिणेशर भाप्यों,
 दसूँइ बोलां नें संवर सरखें छें,
 वारें भावना निरजरा री करणी छे निश्चें,
 त्यांनं संवर री ओलखणा नाहीं,
 संवर रा बोलां नें निरजरा में घालें,
 त्यांरी अमितर आख हीया री फूटी,
 कर्म ग्रंथ सेतम्बर दिगम्बरा कीवा,
 ज्यां जिण मारण ओलखीयों होसी,
 कर्म ग्रंथ माहें कर्मा री प्रकृत,
 तिण माहें पिण छें भूठ अनेक,
 तिरजंच नें मिनप तणों आउखों,
 तिणमें असनी मिनप तणों आउखों,
 पांच थावर सुपम अपरयापता छें,
 यांरो पिण छें तिरयंच रो आउखों,
 पांच थावर नें बले तीन विकलेंद्री,
 आ पिण पाप री प्रकृत उवाडी,
 इत्यादिक छें तिरजंच रो आउखों,
 त्यांमें केकां रों आउखों पाप री प्रकृत,
 च्यारें प्रकारें वावें तिरजंच रो आउखों,
 त्यांसूं तो पाप री प्रकृत वंवे छें,
 तिरजंच जुगालीयां रो सुभ आउखों,
 अन तिरजंच रो आउखों पाप री प्रकृत,
 माठा माठा अघवसाय सूं वंवे आउखों,
 संका हुवें तो भगोती सूतर में जोवों,
 देवता नें नपुंसक कहे त्यांनं ओलखावण,
 संवत अठारे वरस तेपनें,

ओ पिण भूठ उवाडो बोले ।
 आ पिण आख हीया न खोले ॥ ३८ ॥
 त्यांमें पिणकेई बोल निरजरा राजांगो ।
 त्यांनं पिण जाणजों मूंड अयांगों ॥ ३९ ॥
 त्यांनं पिण संवर सरखें छें मूंड भिव्याती ।
 त्यां विकलां रें निरणा तणी नहीं वाती ॥ ४० ॥
 निरजरा रा बोलां नें संवर में घालें ।
 ते मारण छोडी नें उजड चालें ॥ ४१ ॥
 तिण माहें बोल घणा छें विरघ ।
 ते विरघ टाले नें कर लेसी सुघ ॥ ४२ ॥
 पुन पाप री प्रकृत न्यारी ठहराई ।
 ते पिण विकलां नें खवर न काई ॥ ४३ ॥
 तिणनें कहें छें एकंत पुन ।
 आ तो पाप तणी प्रकृत छें जवून ॥ ४४ ॥
 त्यांरा पिण आउला नें कहे छें पुन ।
 पाप री प्रकृत जावक जवून ॥ ४५ ॥
 त्यां अप्रज्यापता रो आउखों जवून ।
 सूतर में कठेय न दीसें पुन ॥ ४६ ॥
 विवघ प्रकार कह्यो जिणराय ।
 केकां रों आउखों दीसे पुन रे मांय ॥ ४७ ॥
 ते च्याहेंद बोल सावघ नहीं रुडा ।
 त्यांरो आउखों पुन कहे ते कूडा ॥ ४८ ॥
 ते तो पुन री प्रकृत दीसती जाणों ।
 ते सूतर सूं बुववंत करसी पिछाणों ॥ ४९ ॥
 ते आउखों पाप री प्रकृत जाणो ।
 चोवीसमें सतक मांसूं पिछाणों ॥ ५० ॥
 जोड कीवी छे खेरवा शहर ममारो ।
 आसोज विद अमावस नें बुववारो ॥ ५१ ॥

ढाल : ११

ढुहा

केई साधु नांम घरावतां, पिण हीया फूट ढोर समांन ।
 त्यांरी बोल्यां री समझ त्याने नही, त्यांरा घटमांहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥
 कहे साधां नें नही राखणों, रात बासी रोगांन ।
 पिण तेहीज रोगांन राखे रात रो, यूंही करे छे अभिमांन ॥ २ ॥
 रात बासी राखे छे रोगांन ने, पूछ्यां कहे म्हें राखां नांहि ।
 कपट सहीत भूठ बोळता, ते पिण समके नहीं मन मांहि ॥ ३ ॥
 रोगांन बासी राखें रात रों, वले बोलें भूठ मिथ्यात ।
 ते जथातथ परगट कळं, ते सुणजो विवरा सुघ बात ॥ ४ ॥

ढाल

[जिण आगन्या सुखदायी]

टोपसी में रोगांन वेंहरे आंण्यों, पातरा रें देवें लगाय ।
 ते रोगान रात रों नीलो रहे छे, ते निश्चे रात राख्यो ताय रे ।
 भवीयण बोलवो वचन विचारी, थे कांय करो आतम भारी रे ।
 भवियण छोड दो रुढ हीया री* ॥ १ ॥
 पातरा में राखो भावें टोपसी में राखों, उहीज रोगांन राख्यो रात ।
 पातरा मे राखो ने टोपसी में न राखों, आ कित्सा सूतर री बात रे ॥भ०२॥
 पातरा रे रोगांन जाडों लगावे, बीजे दिन लूही लूही रोगांन ।
 ते रोगांन ओर ठांमां रे लगावें, एहवा कांय करो तोफांन रे ॥ ३ ॥
 लोट ने पातरा रे रोगांन लगावे, सुकर्ता लागें दिन दाय च्यार ।
 ज्या लगतो राते नीलो रोगांन राख्यो, इणमें तो नहीं संका लिगार रे ॥ ४ ॥
 रें रात रो रोगान राखता जावों, वले कहो म्हें राखां नांही ।
 ए सांप्रत भूठ उघाडो बोलो, हीया फूटा ने खबर न कांई रे ॥ ५ ॥
 रोगांन सूको पातरा रे राखो, घणा वरसां लग तांइ ।
 सूका रोगांन ने पिण रोगांन कहीजे, तिणमें फेर न दीसैं कांई रे ॥ ६ ॥
 रोगांन बासी राखे छे तिणने, न गिणे ग्रहस्थ नें साग मांहीं ।
 वले दसवीकालक री गाथा बोलाए, त्यांने जावक दीया उडाई रे ॥ ७ ॥
 रोगांन ने बासी राखणों निषेधें, ते तो गिणे छे आहार रे मांहीं ।
 तिण लेखे तो नीलों सूको रोगांन, लागो न राखणों कांई रे ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

रोगानं नें आहार गिणी पातरा रे, लागो, राखें किण लेखें ।
 अर्भितर आंख हीया री फूटी, लागों अरु वरु नहीं देखें रे ॥ ९ ॥
 जब कहे नीलो रोगानं छे, तिणनें, गिणां छां आहार रे मांही ।
 सूको रोगानं पातरा रे लागो, तिणनें आहार में गिणे नांहीं रे ॥ १० ॥
 तिण लेखें तो नीली चासणीयादिक, राखणी पातरा रे लगाय ।
 नीली छे त्यां लग आहार में गिणणी, सूकां पछे नही आहार रे मांय रे ॥ ११ ॥
 इत्यादिक वस्तु अनेक नीली ते, लोट ने पातरा रे लगाय ।
 त्यांनें पिण आहार मांहे जावक नही गिणणी, जब तो वासी राखणा छे ताय रे ॥ १२ ॥
 सूकां नें नीला रो नाम लेइ नें, भोला लोकां नें भरमावें ।
 पिण सूको रोगानं ने नीलो रोगानं दोनूइ, वासी राखता जावें रे ॥ १३ ॥
 रोगानं ने आहार मांहे गिणे नें, वासी राखता पिण जावें ।
 इसरा हीयाफूटेरा मानव, त्यांनें साधु किम समभावें रे ॥ १४ ॥
 वले रोगानं वासी राखें छें त्यांसूं, भेलो करे छे आहार ।
 त्यांरा वोल्या री परतीत मूर्ख करसी, त्यांरे अकल में घणों अंधारो रे ॥ १५ ॥
 रोगानं ने वासी राखें छे त्यांसूं, प्राच्छित दीयां विण कीयो संभोग ।
 त्यांरें बोलीयें बंधतो मूल न दीसें, त्यांरें लागों जोग नें रोग रे ॥ १६ ॥
 त्यांमें केई तो कूड नें कपट करेनें, वासी राखें छें रोगानं ।
 असेक रोगानं में भेल घालें, इण विघ वासी राखें छें ताम रे ॥ १७ ॥
 वले रोगानं नें वासी राखें इण विघ, रोगानं सहित ठाम नें ल्यावें ।
 आण मेलें आप रा थानक में, लोट नें पातरां रे लगावें ॥ १८ ॥
 अनेक दिन लग रोगानं रो ठाम, वासी राखें थानक मांय ।
 लोट नें पातरां रे संपूरण लगाए, पाछो सूपें घणी ने जाय रे ॥ १९ ॥
 जो रोगानं नें आहार मांहे गिणे तो, इण विघ राते राखणो नही ।
 इण विघ आहार थानक मांहे राख्यां, ते तो नहीं साधां री पांत मांही ॥ २० ॥
 इण लेखें तो प्रतादिक रा ठाम, आण मेलणां थानक मांय ।
 खातां खातां वाकी रह्यो प्रतादिक, ग्रहस्थ नें पाछो सूपणों जाय ॥ २१ ॥
 रोगानं नें आहार गिण इण विघ राखें, इण विघ राखणा च्यार आहार ।
 रोगानं ज्यूं आहार तणी रखवाली, करणी दिन रात मभार ॥ २२ ॥
 रोगानं नें आहार मांहे गिणे छें, अकल तिणां री उंधी ।
 आहार गिण नें लागों राखें पातरा रे, मिष्ट हुइ छे त्यांरी वुधि ॥ २३ ॥
 आहार तो लेप मातर लागों न राखें, जोवो दसवीकालक मांय ।
 रोगानं नें आहार गिणे नें, लेप लगाय राखें किण न्याय रे ॥ २४ ॥

कहि कहि ने कितरो एक कहूं, आहार मांहे गिणे रोगांन ।
ते सूने चित्त बके दिन राते, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन रे ॥ २५ ॥
रोगांन राखणो निषेधें तिण उपर, जोड कीची मेडता मभार ।
संवत अठारें वरस चौपनें, वेंसाखी अमावस सोमवार रे ॥ २६ ॥



ढाल : १२

दुहा

आजुणा काल आरें पांच में, तीर्थकर तों निश्चें नही होय ।
 सुरत केवली पिण दीसैं नही, आगम वीहारी पिण नही कोय ॥ १ ॥
 घणा भारीकर्मा जीव उपनां, इण पांचमां आरा मांहि ।
 त्यांरें न्याय निरणा री बातां नही, पख झल रह्या छे ताहि ॥ २ ॥
 त्यांनैं समकत सरखा तो परम दोहिली, ते किण विघ करें तहतोक ।
 मोटो परव पजूसण सवंच्छरी, तिणरी पिण नहीं ठीक ॥ ३ ॥
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांय ।
 ओ गच्छवास्यां रे' पिण वेदो पड्यो, त्यांरो कुण निवेडे न्याय ॥ ४ ॥
 त्यां पाछें लंका नीकल्या, त्यांरें पिण वेदो पडगयो ताहि ।
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांहि ॥ ५ ॥
 त्यां मांसू नीकलिया हूंढीया, त्यांरें पिण पडी मांहोमां तांण ।
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवे जांण ॥ ६ ॥
 गच्छवास्यां रा भगडा ममे, साधु नैं परणों नांहि ।
 उवें तों बांधी चाले छें रीत गछ तणी, आप आप तणा गछ मांहि ॥ ७ ॥
 पिण ए साधु नांम घरावता, बाजें लोकां मे अणमार ।
 ते पिण करें सावण में सवंच्छरी, यांरें पिण घोर अंधार ॥ ८ ॥
 न्याय निरणो तो सवंच्छरी तणों, चाल्यों सूतर मांय ।
 ते जथातथ परगट कळें, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[रे भवीयण सेवो रे]

सवंच्छरी पडिकमीयां पाछे, सितर दिवस तिहां रहणो ।
 ए समवायंग रे सितरमें ठाणे, भगवंत नां ए वेणों रे ।
 भवीयण जोवो हिरदे विचारी, छोड दो तांण हीयारी रे ।
 भवियण तांण सूं घणी खुवारी रे* ॥ १ ॥
 चोमासी पडिकमीयां पाछें, बीतो छे महीनों नैं दिन बीस ।
 जद सवंच्छरी पडिकमणो करणों, इम भाष्यों छें श्री जगदीस रे ॥ २ ॥
 बीस दिन ने महीनो सवंच्छरी पेंहलां, सितर दिन दीया पाछिला मेल ।
 इण रीतें भगवते भाष्यो, च्यार महीनां रो मेल रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जो सवच्छरी पेहली महीनो बधे तो, कदा सवच्छरी पाछे इधको महीनो हुवे तो, उन्हाला में इधको महीनो हुवे तो, चोमासा में महीनो बधे तो, जो सवच्छरी पेहला इधिक महीनो हुवे, जो सवच्छरी पाछे महीनो बधे तो, ओ तो न्याय उघाडो दीसे, थे अंतर हीया में जोय विमासों, कोइ रिष पाचम ने भादरवा महीनां री, विनां विचास्थां आप रे छादे, त्यांने पूछ्यां कहे म्हे चोमासो ठायं थी, सवच्छरी करां म्हे विनां भादरवे, गुणचास पचास दिन कहे ने, सितर दिन सवच्छरी पाछे चाल्या छे, गुणचास पंचास दिन सूतर मे चाल्या, गुणचास थापे सितरां नें उथापे, गुणचास पचास री थापनां कर ने, प्रतप सूतर रों पाठ उथापे, गुणचास पचास दिन काढेनें, पाछिला सितर दिन काढेनें, सावण री सवच्छरी कीधी तिणनें, आसोजी पूनम रो कर पडिकमणो, यारे लेखे काती में रहें ते-अन्याड, तो यारे लेखे यांने कातकी पूनम, इधिक महीना रा दिन गिणेने, तो महीनों पिण गिणने आसोज महीना रो, कातकी पूनम रो चोमासो करे जब, इधिक महीना रा दिन सवच्छरी कीधी, मेद गुंवडो नें मसादिक बधे ते, तिणरे बदलें नाक कांनादिक काटे, ज्युं किणहीक वरस में मास बधे जब, तिणरे वदले आगों पाछो गलत करे छे,

तिणने तो त्यांहीज गलत करणों। तिणनें पिण त्यांहीज नही गिणणो रे ॥ ४ ॥ उन्हाला में गलत करणो। चोमासा माहें नही गिणणो रे ॥ ५ ॥ तो तेरे महीने सवच्छरी ठवणी। आगली तेरे महीने करणी रे ॥ ६ ॥ तिणमे संका मूल म आणों। मत करों कूडी ताणो रे ॥ ७ ॥ सवच्छरी कीधी उथापी। सावण माहें सवच्छरी थापी रे ॥ ८ ॥ दिन काढें गुणचास पचास। इणमें दोष नहीं छे तास रे ॥ ९ ॥ सवच्छरी करे सावण मांहि। त्यांनें जावक दीया उडाय रे ॥ १० ॥ सितर दिन पिण सूतर में चाल्या। ए तो घोचा अणहुता घाल्या रे ॥ ११ ॥ सितर दीनां ने दीया उथापी। सावण माहे सवच्छरी थापी रे ॥ १२ ॥ सवच्छरी करी सावण में तांम। त्यांनें छोड देणो ते गांम रे ॥ १३ ॥ रहिणो नही तिण गांव मझार। काती विद पडिवा करणों विहार रे ॥ १४ ॥ अन्हाखी थकां न करे निरणो। पंच मासी पडिकमणो करणों रे ॥ १५ ॥ सावण माहे सवच्छरी थापी। चोमासी कांय उथापी रे ॥ १६ ॥ इधिक मासो न गिणीयों लिंगार। ते महीनो कांय घाल्यो विसार रे ॥ १७ ॥ तिणने दूर करे छे काटी। तिणरी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ १८ ॥ तयारो त्यांहीज गलत करणों। त्या जावक न कीयो निरणो रे ॥ १९ ॥

असाढी पुनम नें कातकी पुनम, तीजी फागण री पुनम जाणों ।
 यां तीनां मासां विण न हुवें चोमासी, तिणमें संका मूल न आणों रे ॥ २० ॥
 ज्युं भादरवा विण सवंच्छरी न हुवे, तिण माहें पिण संका मत आणों ।
 ज्यां सावण माहें सवंच्छरी कीधी, ते जिण मारग रा अजाणों रे ॥ २१ ॥
 किण ही साहुकार रे पांच पूतर छें, तिणमें च्यार पूतर श्रीकारो ।
 पांचां में हजों पूतर निपुंसक तिण रों, मडें नहीं घरवारो रे ॥ २२ ॥
 ओ तो मरत गलत पूरो पड जासी, तिणरों वंस न वधें लिगार ।
 तिणनें जन्म्यों जठा सूं एसोइ जाण्यों, कदे जाणी नहीं भली वार रे ॥ २३ ॥
 कोइ निपुंसक रो घर मंडावे, ते तो छें विकल समान ।
 तिणरें बदलें ओर नें राखें कवारों, ते जीव छें अगाध अग्यान रे ॥ २४ ॥
 ज्युं किणही एक चोमासें पांच महीनां हुवेंजब, लूण महीनो वधीयो कहें लोग ।
 तिण लूंड महीना नें निपुंसग जिम जाण, तिणनें यूंही गमावणो फोक रे ॥ २५ ॥
 कोइ लूण महीना नें गिणती में गिण नें, सावण माहें सवंच्छरी थापी ।
 त्यां विनां विमासीयों घोचों घालें, सवंच्छरी भादरवा री उथापी रे ॥ २६ ॥
 कहि कहि नें कितरोएक कहूं, भादरवा विण सवंच्छरी नाहीं ।
 सूतर कया न्याय निरणों जोए, विचार देखो मन माहीं रे ॥ २७ ॥
 सवंच्छरी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली मभार ।
 संवत अठारें पचावनें वरसें, चोमासा माहें सुध विचार रे ॥ २८ ॥

ढाल : १३

दुहा

केई भेषवारी भूला फिरे, त्याने जिण धर्म री नही सुध।
 उंची उंची करे छे परूपणा, त्यारी मिष्ट हुइ सुध बुध ॥ १ ॥
 साघां दिष्या दीधी चोमासा मभे, कीयो ग्रहस्थ नो अणंगार।
 तिण सू भेषवारी बकता फिरे, त्यामें सुध न दीसे लिगार ॥ २ ॥
 केई तो कहे चोमासा मभे, साघां ने दिष्या देणी नांहि।
 दिष्या दीधी त्यामें दोष छे, एहवो अघारो छे घट मांहि ॥ ३ ॥
 त्यां श्रावक पिण केई विकल थां, त्यां माने लीधी त्यारी बात।
 त्यांरा गुर नें त्यांरा श्रावक तणों, घट मांहि घोर मिथ्यात ॥ ४ ॥
 दिव्या देणी निषेची चोमासा मभे, ते अंध अग्यांनी बाल।
 त्यांमें फोडा पडे संसार मे, उतकष्टो अनंतो काल ॥ ५ ॥
 दिष्या देणी कही चोमासा मभे, तिणमें संका म जाणो कोय।
 थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या में]

बावीसमां श्री नेम जिणेसर, त्यां पिण दिष्या लीधी चोमासा मांहि।
 सांण सुदि चादणी छठि तणें दिन, सहंस पुरप साथे दिष्या लीधी ताहि।
 चोमासा में दिष्या निसंक सूं देणी* ॥ १ ॥
 राजमती दिष्या चोमासा में लीधी, तीनसो जणीया दिष्या लीधी त्यारी लार।
 तिणने नेम जिणेसर मुदे थापी, तिण सूं छोटी आयां चालीस हजार ॥ २ ॥
 पदम प्रभूनाथ छठा तीथंकर, त्यां पिण दिष्या चोमासा मे लीधी।
 काती विद तोज रे दिन सहस जणा सूं, चोमासे दिष्या लीधी त्यां आछी कीधी ॥ ३ ॥
 अनंता तीथंकर चोमासा मांहि, त्यां पिण दिष्या लीधीं सयमेव।
 वले अनता ने पिण दील्या दीवी, जेज नहीं कीधी दिष्या दीधी तताखेव ॥ ४ ॥
 इम कहां उंचा बोले भेषवारी, तीथंकर नी बात क्याने चलावों।
 साघां ने चोमासा मे दिष्या न देणी, दिष्या देणी हुवें तो सुतर में वतावो ॥ ५ ॥
 इणरो जाव कहां आचारंग मांहि, केवलीये कीधी ते छद्मस्थ ने करणों।
 जे केवलीया चोमासा में दिष्या दीधी, ओ छद्मस्थ रों पिण काढीयो निरणों ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केवलीयें कीघो ते छदमस्थ कीघो,
 यां तो चोमासा माहें दिष्या लीघी छें,
 कुमती कदाग्रही साधां रा निदक,
 केई भेषधारी भूठा बोला अन्हाखी,
 उत्तराधेन रे दशमें अधेनें कह्यो जिण,
 तो चोमासा में दिष्या देणी निषेधी,
 दिष्या देणी निषेधे चोमासा माहें,
 तूं चोमासा में दिष्या देणी निषेधे,
 जो उ सूतर माहें नहीं बतावें,
 वले घणा लोकां माहें फिट फिट कीजें,
 घणा टोलां तणा साध बाजें लोकां में,
 त्यां माहें तो दोष न सरधें लग्गार,
 चोमासा माहें दिष्या देवे छें त्यांनें,
 सुध साध चोमासा में दिष्या दीघी,
 वले कहें दिष्या दीघी तिण गांम नें ठांम,
 ओ पिण भूठ बोलें भेषधारी,
 चोमासा माहें दिष्या देणी निषेधें,
 तिण जिण धर्म नही ओलखीयां आवें,
 चोमासा माहें दिष्या देणी निषेधी,
 उण उंधी सरधा तणें परतापें,
 चोमासा में दिष्या देणी निषेधें,
 त्यांमें दुख में दुख संसार में पडसी,
 चोमासा में दिष्या देणी निषेधें,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 चोमासा में दिष्या देणी निषेधें,
 त्यां विकला नें साध सरधे नें बूडा,
 चोमासा में दिष्या देणी निषेधें,
 ते पिडत बाजे छें विकल लोकां में,
 चोमासा में दिष्या देणी निषेधे,
 त्यां तीन काल रा तीथंकरां नें,
 चोमासा माहें दिष्या देणी निषेधें,
 सूनें चित सूतर बाचें अग्यांनी,

यांनें पाप कठायी लागो रे पापी ।
 थें चोमासे में दिष्या देणी कांय उथापी ॥ ७ ॥
 साधां रें आल देता सके नहीं पापी ।
 त्यां चोमासे में दिष्या देणी उथापी ॥ ८ ॥
 एक समों पिण नही करणो परमाद ।
 त्यां विकलां रें किण विध होसी समाद ॥ ९ ॥
 तिण भूठा बोला नें पूछीजें ताय ।
 ते सूतर माहें तूं काढ बताय ॥ १० ॥
 तिण मूरख नें घालीजें कूरो ।
 समभू लोकां में करणों घणों फितूरो ॥ ११ ॥
 ते तो चोमासा में दिष्या देवें ।
 सुध साध रो नांम अणहंतो लेवें ॥ १२ ॥
 साध सरधे नें मुख सूं सरावें ।
 तिण माहें पापी दोष बतावें ॥ १३ ॥
 तिण गांम नें ठांम तिणनें नहीं रहणो ।
 त्यां विकलां री सरधा तणों काई कहणों ॥ १४ ॥
 त्यां श्री जिण वचन दीया छें उथापी ।
 तिणनें जाण लीजे महा पापी ॥ १५ ॥
 तिण मूरख री करसी मूरख परतीत ।
 चिहूँ गति माहें हुसी फजीत ॥ १६ ॥
 ते तो अंध अग्यांनी जाबक बूडा ।
 वले चिहूँ गति माहें दीससी भूडा ॥ १७ ॥
 आ तो उठी जठा थी भूठी ।
 त्यांरी अर्भितर आंख हीया री फूटी ॥ १८ ॥
 त्यांनें साध सरधें ते पिण मूढ मिथ्याती ।
 वले बूढ गया त्यांरा पखपाती ॥ १९ ॥
 ते तो नीमाइ निश्चें विकल समान ।
 पिण घट माहें त्यांरे छें घोर अग्यांन ॥ २० ॥
 ते भूठा भूठा ले सुतर रो नांम ।
 पापी आल देता डरीया नहीं ताम ॥ २१ ॥
 ते निमाइ निश्चें मूढ मिथ्याती ।
 हीया फूट गघा रा साथी ॥ २२ ॥

चोमासा मे दीष्या देणी निषेधे, तिणरा श्रावक पिण सुण सुण ने गूजे ।
 ए पिण हीया फूट गघा रा साथी, इण बात रो न्याय निरणों न बूके ॥ २३ ॥
 अतंता साघां दिष्या चोमासा में दीधीं, तिण मांहे दोष वतावें पापी ।
 इसडा केई भेषघारी अन्हाखी, त्यां चोमासा में दिष्या देणी उथापी ॥ २४ ॥
 केई भेषघारी चोमासा मे दिष्या देवे, त्यानें तो मूरख सरखे छे साघ ।
 साघ चोमासा मांहे दिप्या देवे, त्याने असाघ कहे नें करे विषवाद ॥ २५ ॥
 चोमासा मांहे साघ दिष्या दीवी, त्यां किसो अकारज कीघो रे पापी ।
 आ तो पाप सेवण रा पचखांग कराया, थे चोमासा मे दिष्यादेणी कांय उथापी ॥ २६ ॥
 चोमासा मे दिप्या देणी निषेधे, त्यां विकलां री विकल राखे परतीत ।
 ते तो चोडे भूला छे अंच अग्यांनी, ते तो चिहंगति मांहे होसी फजीत ॥ २७ ॥
 चोमासा मांहे दिष्या देणी ओलखावण, जोड कीघी छें केलवा सहुर मभार ।
 संवत अठारे पचावने वरस, फागुण विद एकम नें गुरवार ॥ २८ ॥

ढाल : १४

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते बोलें नही वचन विचार ।
साघां नें विहार/ करणो नही, चोमासे रे मभार ॥ १ ॥
कारण पडियां साधु नें, चोमासा माहें करणो विहार ।
श्री वीर जिणेशर भापियो, ठांगा थंग सूतर मभार ॥ २ ॥
केई पिंडत वाजे लोक में, पिण घट में घोर अंधार ।
ते पिण कहें छें चोमासा मझे, साघां नें नही करणो विहार ॥ ३ ॥
ते निदक छे, साघां तणा, तिणसूं संवलो न सुझें लिंगार ।
परती करवा साघां तणी, तुरत होय जाय तयार ॥ ४ ॥
चोमासा में विहार करण तणा, कारण कहा जिनराय ।
ते जथातथ प्रगट कलं सुणजो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[जीव मोह अशुकम्पा न आशिषे]

दुष्ट राजादिक बेरी नो भय हुवे, जाणे उपधादिक ना लूसणहार जी ।
त्यां उपधादिक नें राखवा भणी, चोमासा मे करे विहार जी ।
श्री वीर निणेश्वर भापियो* ॥ १ ॥
साधु भिख्या नें अभावे करी, नही मिले पाणी नें आहार जी ।
जब थिर परिणाम रहे नही, चामासे में करे विहार जी ॥ २ ॥
कोइ प्रत्यनीक छे साघां तणो, तिण ग्रामादिक मभार जी ।
ते साधु ने काढे तिहां थकी, चामासे में करे विहार जी ॥ ३ ॥
गंगादिक ने उन्मार्गो, पाणी आवतो जाणे तिणवार जी ।
तिण पाणी सूं जाणे डूवता, चामासे में करे विहार जी ॥ ४ ॥
कोइ आवे छे मोटे आडम्बरे, जीतव चारित्र ना लूसणहार जी ।
ते म्लेच्छादिक दुष्ट जाणेलिया, चोमासे में करे विहार जी ॥ ५ ॥
ए पांच बोला मांहिलो हुवे, तो चोमासा में करे विहार जी ।
तिण री जिन आग्यां छे साधु ने, तिणमें दोष नहीं छ लिंगार जी ॥ ६ ॥
बले पांच प्रकारां करी चोमासा में करणो विहार जी, ते पिण कह्यो छे घणा आगम मझे ।
ते सांभलज्यो विस्तार, चामासे में करे विहार जी ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ अनेरो आचार्य मोटको, अपूर्व ग्यान तणो भंडार जी ।
 त्यां कने जाये ग्यान भणवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ८ ॥
 बले दरसन प्रभावना कारणे, ते पिण सास्त्र नो छे भंडार जी ।
 ते शास्त्र भणवा कारणे, चोमासे मे करे विहार जी ॥ ९ ॥
 आचार्य उवभाय मुनिसरू, त्यां कीधो सुणियो संथार जी ।
 त्यांनें बांदवा ने कारणे, चोमासे में करे विहार जी ॥ १० ॥
 आचार्य उवभाय रह्या तिहां, साध छे ओर क्षेत्र मभार जी ।
 त्यांरी वैयावच करवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ११ ॥
 गगायमुना नें सरस्वती कोसिया नें एरावती जाण जी, ए पांचूं नदी नावा सूं उतरे ।
 महीना मे एकवार प्रमाण जी, चोमासे में करे विहार जी ॥ १२ ॥
 बले पांच कारण पडियां थकां, नदी उतरे वार अनेक जी ।
 एक दोय वारनो कारण नही, ते सुणज्यो आण ववेक जी ॥ १३ ॥
 भयनें भिल्याने अभावे करी, कोइ काढे गामादिक वार जी ।
 पाणी रो आगम जाण नें, बले म्लेच्छादिक नी सुण मार जी ॥ १४ ॥
 एहीज पांचूं कारण करी, चोमासे मे करे विहार जी ।
 तैहीज कारण पडियां साध ने, ए नदी पिण उतरे वारूं बार जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक कारण पडियां साध नें, चामासा मे करणो विहार जी ।
 त्यांनें अरिहंतनी छे आगन्या, साधु नें नही दोष लिंगार जी ॥ १६ ॥
 साधु विहार करे चोमासा मभे, तिणमें दोष नही तिल मात जी ।
 तिणमें दोष कहे अन्हाखी थका, त्यां साधां सूं पडिवजियो मिथ्यात जी ॥ १७ ॥
 ते तो दोष अणहूतो काढता, बकबो करे दिन रात जी ।
 त्यांने परभव री चिंता नही, न डरे भूठी करता बात जी ॥ १८ ॥
 चोमासा में, विहार करण तणी, जोड कीधी गुरला गाम मभार जी ।
 संवत अठारे नें वरस सतावनें, काती विद पांचम मंगलवार जी ॥ १९ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी थानक ने रात रों, जहें उघाडें कमाड ।
तिहां हिंसा करे जीवां तणी, पिण संक न आणें लिगार ॥ १ ॥
वेतकल्प माहें कह्यो साघ नें, रहणो उघाडे दुवार ।
ए वीर वचन नें आरावसी, ते किम जडे आडा कंवाड ॥ २ ॥
बले उत्तराघेन में वर्जियों, पेंतीसमाघेन माहि ।
हाथां सूं तो जडवो जिहांइ रह्यो, मन सूं पिण वांछणो नाहि ॥ ३ ॥
केइ श्री जिण आग्यां लोप नें, जहें उघाडें कमाड ।
त्यांनं छेडवीयां अवला पडें, बले बक उठें तिणवार ॥ ४ ॥
पाछो जाव देवा तो समर्थ नहीं, दोष छोडणरा नही परिणाम ।
तिण सूं कवाडीया रो नाम लें, दोष ढांकण रे काम ॥ ५ ॥
मोटा कवाड नें कवाडीयां, थापें अग्यांनी एक ।
बले बदलतां विरीयां नहीं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आग्या मे]

भेषधारी कमाड नें जहें उघाडें, त्यांमिं खूंचणो काढ्यां घणों दुख पावें ।
ते आपणा दोष ढांकण ने मूर्ख, कवाडीया माहें दोष बतावे ।
कुगुर चिरत सुणो भव जीवां ॥ १ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जड्यां में, जो ओ म्हांनं दोष लागें छें मोटो ।
तो कवाडीया रो आहार लेवें छें, त्यांने पिण दोष लागें छें छोटो ॥ २ ॥
कवाडीया माहें दोष बतावें, ते तो कवाड री थाप करवा काजें ।
जो भूठ बोलीनेइ दोष बतावों, तो एं दोषीलो आहारलेता क्यून लाजे ॥ ३ ॥
कवाडीया मांसूं आहार लीयां रो, कह दीयो चोडे दोष उघाडो ।
त्यांनं भारी परसी ए दोष परूपां, ते सांभलजो भवीयण विस्तारो ॥ ४ ॥
जिण जाणेनें आहार दोषीलो बहखो, तिण रा साघ पणारी हूइ धूर घांणी ।
तिण खावारेण कारण जन्म विगोयो, दोषीलो आहार लीयो जांणी ॥ ५ ॥
जांणी ने आहार दोषीलो लेवें, ते निरलज परभव सांहीं न देवें ।
तो यांरा श्रावक अकल रा मुंढ मिथ्याती, ते वारमों वरत भागें किण लेवें ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कवाडीया मांहे तो दोष बतावे,
 त्यां दोषीलो आहार खाए दिन काढ्यां,
 वले पल्पण करता इम बोले,
 ते तो चारित धर्म रो लूटणहारो,
 साधा नें आहार असुध बहरावे,
 उणरे दरबेइ तोटो ने भावेइ तोटो,
 एहवी पल्पणा करता नही संके,
 जो उवे कवाडीया माहे दोष बताए,
 यारी सरवा रे लेखे यांरा साध श्रावकां मे,
 या असुध आहार जांणी वेहश्चो वेंहरायो,
 कोइ आप रो नाक काटे नकटो हुवे,
 ज्यू साधां ने दोषीला करण भेषघारी,
 उ तो ओर सबण ले गांव सिचायो,
 पिण नकटो दुखी हूओ जीवे जठ लों,
 ज्यू साध तो कवाड किवाडीया ने,
 भेषघारी कवाडीया में दोष बताए,
 ते तो रातरो कवाड जडवारे काजे,
 ए पहिला तो दोष कदे नही सुणीयो,
 ते तो किवाडीया माहे दोष बतावें,
 यांरा श्रावक मिल यारी परख करे तो,
 यांरा श्रावक याने इण विघ पूछे,
 किवाडीयो खोल ने आहार बहरायां,
 म्हारो सूंस न भागे तो हूं खोल वेहराऊं,
 जब तो कहें इण रो दोष म जांणो,
 यारा श्रावक याने वले इण विघ पूछे,
 कवाड खोल ने आहार वेहरायां,
 म्हारो सूंस न भागे तो हूं खोल वहराउ,
 साच बोले कहे दोष कमाड खोल्यां,
 ए साच बोले ते तो सांकडे पडीया,
 भूठ वोलण री काइ सेरी न दीसे,
 कवाड ने कवाडीयो एक कहुंता,
 कवाड माहे तो दोष बतायो,

तो यांरी पीढीयां लग सगलाइ वूडा ।
 ते चिहुं गति मे दीसरी अति मूंडा ॥ ७ ॥
 साधां ने आहार असुध बहरावें ।
 ते दातार गर्भ में आडा आवे ॥ ८ ॥
 त्यांरे कर्म बधे घर रो माल खूटे ।
 ते तो सतगुर रा संयम ने लूटे ॥ ९ ॥
 ते सूरपणो लोकां नें मनावे ।
 तो कवाडीया रो वेहरे क्यूं ल्यावे ॥ १० ॥
 ज्याळ तीर्थ में छे मोटी खामी ।
 ते सगला छे दुरगत जावा रा कांमी ॥ ११ ॥
 ते तो पेंला ने कुसवण करवा काजे ।
 आप दोषीला हुंता नहीं लाजे ॥ १२ ॥
 ते तो कुसले खेमें माल कमाय ल्याओ ।
 पिण नाक गमायो ते पाछो न आयो ॥ १३ ॥
 यां दोयां ने सरवे छे जुआ जुआ ।
 पीढीयां लग दोषीला हाथां सूं हूआ ॥ १४ ॥
 कवाडीया माहे दोष बतायो ।
 ए गाला सूं गोलो घडनें चलायो ॥ १५ ॥
 वले वतलायां बोले अन्हाखी ऊवा ।
 भेषघारी मुख बोले सूचा ॥ १६ ॥
 म्हारे साधां नें सुध बहरावण रा त्यागो ।
 म्हारो सूंस रहेसी के जासी भागो ॥ १७ ॥
 हिवे उण वेला किण विघ बोले ऊवा ।
 वेहरण रे काम पड्यां बोले सूचा ॥ १८ ॥
 म्हारे साधां ने असुध वेंहरण रा छेत्यागो ।
 म्हारो सूंस रहसी के जासी भागो ॥ १९ ॥
 जब तो पिण केयक बोले सूचा ।
 चोडे घाडे किम बोले ऊवा ॥ २० ॥
 त्यांने सतवादी कदे मत जांणो ।
 तिणसूं साच बोले पिण न छोडे तांणो ॥ २१ ॥
 पिण अठे तो कर दीया जूजूआ दोइ ।
 कवाडीया माहे तां कहुओ दोप न कोइ ॥ २२ ॥

यांरा श्रावक चतुर विषयण हुवें तो,
 ये कवाडीया मांहे दोष वताए,
 इणविध दुधवंत काडे निकालो,
 पिण आंघां नें साचो वात न सूभें,
 जे प्रतप भूठा नें साचो कहे छें,
 जे कुगुर तणी पपपात करें त्यांरे,
 वले कंवाडीयो नपेधवा काजे,
 यां दोयां रो साधु नें संघटो न करणो,
 इत्यादिक भूंडा भूंडा दिष्टंत देइ,
 वले आपतो आहार कवाडया रो वहरें,
 छोटी नें मोटी दोनूइ अस्त्री त्यागी,
 कवाड नें कवाडीयो एक कहे ते,
 छोटी ढावडी ज्यूं कवाडीयो जांगो,
 कवाडीयारो दोप जाण जाण सेवे,
 साधु तो कवाड कवाडीया नें,
 भेषधारी कवाडया में दोष वताए,
 वले केयक भेषधारी इम वोलें,
 पिण जडणो उघाडणों वरज्यो न दीसें,
 दोप नही कहें हाथां सूं जडीयां,
 तिणनें ग्रहस्थ उघाडे नें आहार वहरावे,
 इम भूठ वोलें कांम चलावे,
 ते निरलज्ज भारी करमा अयांनी,
 केइ भेषधारी कहे कवाड जडयां सूं,
 जो पहलो महावरत भागे कवाड जडयां सूं,
 इम साधवीयां रो नांम लेइनें,
 ते कल्प न जाणें साधवीयां रो,
 साधवीयां तो च्यार पछेंवडी राखें,
 जो च्यार पिछेंवडी साधु राखें तो,
 वले जांगीयो कांचूओ राखें साधवीयां,
 जो जांघीयो कांचूओ साध राखें तो,
 वले साधवीयां एकण गांव माहे,
 जो सेषाकाल साधु जो बिमास रहें तो,

इम भूठा घाली मुत्त देवें धूडे ।
 इतरा दिन कांय बोलीयो कूडे ॥ २३ ॥
 ते तो भूठवोलां नें जाण ले भूंडा ।
 ते तो कुगुर तणी तांण कर-कर वूडा ॥ २४ ॥
 ते दिन दिन कर्म बांधे हुवे भारी ।
 टांको भले तो हुवे अनंत संसारी ॥ २५ ॥
 मोटी छोटी लुगाइ रो दिष्टंत देवें ।
 ज्यूं कवाडीया रोइ आहार न लेवें ॥ २६ ॥
 कवाडीयां नें नपेधण सूर ।
 ते हाथां सूं मूख पडे छें कूडा ॥ २७ ॥
 ते कवाडीया रो आहार लेवें किण लेखें ।
 आपरी सरखा सांहाओ क्यूं नही देखें ॥ २८ ॥
 वले आहार लेवें खोलाए कोठे ने आलो ।
 ते छोटी ढावडी रो किम करसी टालो ॥ २९ ॥
 यां दोयां नें सरखें छें जूजा जूजा ।
 पीडीया लग दोषीला हाथां सूं हुवा ॥ ३० ॥
 साधु ने रहणो कहाँ छें उघाडें दुवारो ।
 तिणरे लेखें तो दोष नही छें लिगारो ॥ ३१ ॥
 तिण भूठ बोले कीची जडवा री थाप ।
 तो तिण बहस्थां में कांय परुषें पाप ॥ ३२ ॥
 पिण छोडें नही अडो जडवो कवाड ।
 त्यां गहलां नें सीख न लागें लिगार ॥ ३३ ॥
 साधां नें दोष जाबक नही लागे ।
 तो साधवीयां रो पिण पेंहलें महावरत भागो ३४ ॥
 ते निसंक सूं जडवा लागा कवाडो ।
 ते सांभल जो भवीयण विस्तारो ॥ ३५ ॥
 त्यांनें तो दोष लिगार न लागें ।
 जिण आप्यां लोप्यां तीजो वरत भागे ॥ ३६ ॥
 त्यांरो पिण दोष भगवंत न कहाँ लिगारो ।
 हुइ जाएं श्री जिण आज्ञा वारो ॥ ३७ ॥
 ए तो सेषाकाल रहे दोय मास ।
 जिण आगन्यालोप्यां हुवे वरत विणास ॥ ३८ ॥

साध तो राते रहे चोहटा विच में,
 साधवीयां राते रहे चोहटा विचें तो,
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक,
 त्यानें आपण आपण कल्प में रहणो,
 साधवीयां नें कल्पें ते राखे साधवीयां,
 ज्यूं साधां ने कल्पे कह्यो दुवार उघाडे,
 जब केयक बापडा पाधरा बोलें,
 केइ कहे जळीयां दोष न लागें,
 इम सांभल ने उत्तम नर नारी,
 जो कुगुरां ने छोडे नें सतगुर सेवे,
 केई भेषधारी इम बोलें अग्यांनी,
 उघाडो राख्यां माल जाएं ग्रहस्थ रो,
 ग्रहस्थ रो माल जो चोर ले जावे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 ग्रहस्थ रो माल जो साध खालें,
 वले हिंसा सुं पहिलोइ माहावरत भागो,
 घर रो धन माल जहर जांणी छोड्यो,
 तिण समकत सहित साधपणो खोर्यो,
 ग्रहस्थ रा माल रखवालवा काजे,
 कदा जावतो करतां ढांडा माहे आवे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 कदा जावता करतां माहे चोर आवे,
 नालेर कोपरादिक वस्त अनेक,
 धन राखवा काजे कवाड जडें त्यानें,
 ग्रहस्थ रा धन काजे जडसी कवाड,
 ढुले फूटे उजाड हुवे तो,
 ग्रहस्थ रे परिगरो नव जात रो छे,
 ते भोला लोकां ने गमता लागें,
 केइ भेषघाख्यां नें जाव न आवे,
 माने ग्रहस्थ घर माहे रहिवा न दे छे,
 ते सूनो घर हाट उपाश्र्यो थानक,
 एहवा प्रश्न पुछ्यां रा जाव न आवे,

ते पिण खुलीए अवंग दुवारे ।
 ते तो हुवे जाए श्रीजिण आगन्यावारे ॥ ३६ ॥
 ते तो साध साधवीयां रा न्यारा न्यारा ।
 पिण साधुनें न जडणो साधवीयां री लारा ॥ ४० ॥
 उतरा साधु राख्यां साधु रा वरत भागें ।
 जडे जिण साधु नें दोष क्यूं नही लागें ॥ ४१ ॥
 किवाड जड्यां माने लागें छे दोषो ।
 ए भूळा बोल किम जासी मोखो ॥ ४२ ॥
 एहवा भूळाबोलां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चतुर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ४३ ॥
 म्हे उतरां ओरा साल नें पोलमभारो ।
 तिण कारण आडा जडा कवाडो ॥ ४४ ॥
 तो उ ग्रहस्थ दुख पावें छे गाडो ।
 म्हे सेठो जड राखां कवाड नें आडो ॥ ४५ ॥
 तो प्रतष पांचमों माहावरत भागो ।
 जिण आगन्या लोप्यां अदत पिण लागो ॥ ४६ ॥
 जो उ ग्रहस्थ रा धन रो करे रखवालो ।
 तिणने सासण मासूं दीयो बीर टालो ॥ ४७ ॥
 भेषधारी आडा जडें कवाड ।
 तिण लेखें तों धाकल काढणा वार ॥ ४८ ॥
 भेषधारी आडा जडे कवाड ।
 तो धणीने जाय कहणो तिणवार ॥ ४९ ॥
 त्यां उपर स्वानादिक ढूकें आय ।
 यानें पिण अलमा कर देणा जाय ॥ ५० ॥
 त्याने पोहरो देइ कांडणो दिन रात ।
 विगडवा नही देणों तिलमात ॥ ५१ ॥
 त्यारी भेषधारी करे रखवाली ।
 जाणें वावो रो वावोने हाली रो हाली ॥ ५२ ॥
 जब भूठ बोले वात लेवें संवार ।
 तिण कारण आडा जडां कवाड ॥ ५३ ॥
 उठें किण लेखें जडे छे कवाड ।
 जब आलल भाषण नें हुय जाय तयार ॥ ५४ ॥

सवत अठारें वरस तेतीसैं, जेठ सुद बारस मंगलवार ।
 ए कुगुर तणा चरित परगट कीधी, सहर पीपाड तणें रें मझार ॥ ५५ ॥



ढाल : १६

दुहा

केइ साधु नांम घरायनें, आडा जडे छें किवाड ।
त्यामे केइ तो कहे दोष छे, केइ न कहें दोष लिगार ॥ १ ॥
त्यामें दोष बतावे कमाड नो, तिण रो जाब न देवे तांम ।
दोष कहें कवाड्या तणो, बकता फिरे गांम गांम ॥ २ ॥
कमाड तणों दोष ढांकवा, लेवे कवाड्या रो नांम ।
कहे कवाड कवाड्यों एक छे, एहवो बेदो धाल्यों छें तांम ॥ ३ ॥
कहिवाने एक कह दीयो, पिण त्यांहीज करवीया दोय ।
कवाड उघाड देवे तो लेवे नही, किवाड्या रो न छोडें कोय ॥ ४ ॥
दोष बतावे कवाड्या तणो, पिण वेहेरे किवाड्यो खोलाय ।
एहवा विकला री वात में, कला म जाणो काय ॥ ५ ॥
साधु दोष जाणें कवाड्या तणों, तो छोड दे तुरत सताव ।
हिंवे कवाड ने कवाड्या तणो, सुणो मुरत दे जाब ॥ ६ ॥

ढाल

[३ भविष्य संतो रे साध सयाणा]

कवाड जडवो तो साधुने वरज्यो सुतरमें ठांम ठांम, कवाड्या रें तो आहार कठें न वरज्यों ।
वरज्यो हुवे तो बतावो ताम रे, भवीयण जोवो हिरदय विचारी ।
म करो तांण हीया री रे, तांण कीघां सुं घणी खुबारी* ॥ १ ॥
पूरे मासे बाइ उठ बेस वेहरावे, तो साधु नें वेहरणों नांही ।
ओछा गर्म री उठ बेस वेहरावे, ते वरज्यो नही सुतर रे मांही ॥ भ० २ ॥
कोइ कहे कवाड्यों कठे चाल्यो छे, तिण रें जाब सुणो चित्त ल्याय ।
कवाड वरज्यो कवाड्यो नही वरज्यो, जो देखों उघाडें न्याय रे ॥ ३ ॥
ज्यूं पूरे मासे बाइ उठ वेहरावे, ते तों वरज्यो सुतर रे मांही ।
ओछा गर्म वाली रो वरज्यो नांही, जव लेणो ठहरायों छे ताहि रे ॥ ४ ॥
इण दिष्टते कवाड्यां रो आहार, वेहखां में दोषण नांही ।
छोटो गर्म री ने कवाड्यां रो आहार, वरज्यो नहीं सुतर मांही रे ॥ ५ ॥
ज्यूं मोटा ने छोटो गर्म मे फेर जाणो, ज्यूं कवाड किवाड्यो में जाणो ।
कवाड्यो खोले साधु नें वेहरावे, तिणरी म करो तांणों रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्यांरा बज बडेरा आगे हूआ ते, वहख्यो कवाड्यां रो आहार ।
 तिण में दोष कह्या त्यांरा बज बडेरा, गया जमारो हार रे ॥ ७ ॥
 थोडा नें घणा उंचा थी वेंहरण रों, सूतर में नहीं उनमान ।
 थोडा नें घणा विच आंतरों नाहीं, ते पिण जाण लेसी बुधवान रे ॥ ८ ॥
 हाथ रें आसरें उंचा थी वेंहरावें, साधु नें अन्न पाणी ।
 जब तो साधु वेंहरतो संक न आणें, वेंहर छें निरदोष जाणी रे ॥ ९ ॥
 घणा उंचा थी आहार साधु ने वेंहरावें, जब तों साधु करे छें टालों ।
 आसरों उनमान अटकल ने वेंहरें, तिणरो सूतर में नहीं निकाले रे ॥ १० ॥
 थोडा उंचा थी वेंहरायां दोष न जाणें, दोष जाणें उंचा थी वेंहरायां ।
 तिम कवाड्यां रा दोष तणी तांण, छूटें न्याय हीया भें आयां रे ॥ ११ ॥
 धीरें धीरें चालें साधु नें वेंहरावें, तो साधु वेंहरें अनादिक पाणी ।
 जो उतावलों ने दोडे वेंहरावें, तो नहीं वेंहरे अजेंणा जाणें रे ॥ १२ ॥
 उतावल सूं चाल्या नें कमाड खोल्या रों, अं तो दोष उघाडों दीसें ।
 धीरें चाल्या नें कवाख्यो खोल्या रों, दोष नहीं कह्यो जगदीसें ॥ १३ ॥
 बावन अनाचार कह्या दशवीकालक में, चोथो अणाचार साह्यो आण्यो ।
 तिण सूं साह्यो आण्यो तो साधु न बहरें, मोटो दोष अणाचार जाण्यो ॥ १४ ॥
 समवें तों कह्यो साह्यो आण्यो न लेंणों, इण ठामे तो मरजाद न कांइ ।
 थोडी दूर सूं तो साह्यो आण्यो वेंहरें, ज्यू कवाड्यो जाणों मन मांहि रे ॥ १५ ॥
 तीनां घरां थकी साह्यो आण्यो वेंहरें, तिण दूरी री विगत न कांइ ।
 तिमहीज कवाड्या नें जाणो, विचार करो मन मांही रे ॥ १६ ॥
 तीनां घरां सूं तों साह्यो आण्यो वेहरे छें, ते पिण कदा घणी दूर जाणें ।
 तो पिण साधु नें वेंहरणों नाहीं, अकल सूं उनमान पिछाणें रे ॥ १७ ॥
 ज्यू कवाड उघाडे नें आहार देवें तों, लेंणो वरज्यो सूतर रे मांही ।
 कवाड्या रों आहार कठे नहीं वरज्यो, सूतर मांहे नकार छें नांही ॥ १८ ॥
 घणी दूर सूं साह्यां आण्या रा दोष, थोडी दूर रो दोष म जाणों ।
 ज्यू कवाड रो दोष कवाड्या रो नाहीं, ए ह्डी रीत पिछाणो रे ॥ १९ ॥
 इण अणुसारे कवाडीया उपर, दिष्टन्त छें रे अनेक ।
 कहि कहि नें कितराएक कहुं, समझों आण ववेक रे ॥ २० ॥
 कोइ कहे कवाड्यो कितोएक मोटो, तिणरो सूतर में नहीं उनमान ।
 इणरो उनमान तों जीतववहार सेती, थाप करसी बुधवान रे ॥ २१ ॥
 हाथ सवा हाथ रे आसरें लांबो नें पेंहलो, एह्वो बांध्यो उनमान ।
 इण वात रो निश्चो केवली जाणें, उनमान सूं जाणें बुधवान ॥ २२ ॥

ज्यू साध साधवी रे पिछेवरी रो, पेंहली तीन हाथ उनमानं ।
 पिण लांबी रो निकाल तों नही सूतर मे, पांच हाथ थापी बुधवानं रे ॥ २३ ॥
 ज्यू कवाडीया लांबा नें पेंहला री, आ पिण थाप करी छें तांम ।
 ते निश्चों तों केवलम्यांती जाणें, तिणरी खांच तणो नही कामं रे ॥ २४ ॥
 कवाडीयो खोले आहार वेंहरावें, तिणमें कोइ दोष मत जाणो ।
 कवाड कवाड्यो शरीषा नाहीं, हिवे तिणरों न्याय पिछाणों रे ॥ २५ ॥
 कवाडीयो नहीं धरती लगतो, कवाडीयो तो उंचो जाणों ।
 कोठ कोठी ने आलादिक में, तठे जीव रो नही ठिकाणों रे ॥ २६ ॥
 कीडी मकोडादिक जीवां रो ठिकाणो, धरती उपर फिरता जाणो ।
 आंमा साहमा फिरे भवलेटी खाता, तठे हिंसा तणो छे ठिकाणो रे ॥ २७ ॥
 कमाड रो चूलीयो तो धरती उपर फिरे छें, तठें हिंसा तणों छे ठिकाणो ।
 तिणसूं कवाड नें जडवो वरज्यो छे, तिंम कवाड्यां नें मत जाणो रे ॥ २८ ॥
 उंची तो कीड्यां चीगटादिक परसंगे, कीड्यांदिक री नाल वंधावे ।
 पिण कवाड्यां रा चूलीया हेठे, चीगट किहांथी पावें रे ॥ २९ ॥
 जो कवाडीया रो आहार ठले तिण ने, टालणा पडसी बोल अनेक ।
 तिण अनुसारे तिण सरीषा कहूं छुं, ते सुणज्यो आंण ववेक रे ॥ ३० ॥
 दही दूध री जावणी कोठा मासु काडे, साधु नें वेंहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवे, तिणने ए पिण न लेणा ताय रे ॥ ३१ ॥
 घृत रो चाडों कोठा मा सूं काडे, साधु ने वेंहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवें, तिणने घी पिण न लेणो ताय रे ॥ ३२ ॥
 कवाडीया री चूक ने चूलियां फिरियां, आहार न वेहरे कांइ ।
 तो जावणीयां रो तूंडो कोठा फिरियां, दही ने दूध वेंहरणों नाही रे ॥ ३३ ॥
 वले कोठा माहे घी रा चाडा रो तूंडो, फेर नें वारे आंण वेंहरावे ।
 कवाडीया रो चूलीयो फिरियां न लेवे, तो घी पिण न लेणो इण न्यावें रे ॥ ३४ ॥
 इत्यादिक ठाम कवाडीया माहे, त्यांरा तूंडा फेरी देवे ताय ।
 कवाडीया रो आहार न लेवें, त्यांनं ओ पिण लेणो नही इणन्याय रे ॥ ३५ ॥
 कोठी उपरला ठाम ने फेर वेहरावें, फेरें ठाम उपर ला ठाम ।
 कवाड्या फेर्या रो आहार न लेवे, त्यांनं ओ पिण लेणो नही तांम रे ॥ ३६ ॥
 केइ केहे कवाड्यो उधाड्यां, हिंसा तणी छें संक ।
 इण लेखें तो तिण ने अनेक वोलां रों, किण विष करसी निसंक रे ॥ ३७ ॥
 केइ वाइ भाइ चालेने वेंहरावे, केइ उमा ते वेस वेहराय ।
 जूंआदिक री हिंसा री संका, ते संका कम कडाय रे ॥ ३८ ॥

किण्ही भाइ री पाग में धान रो दाणों, उच्छल नें पडीयो आय ।
 तिणरा हाथ सूं वैहरतां संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ३९ ॥
 खांडादिक वैहरावें तिणमें, सचित्त री खबर न काय ।
 माहे धान रा दाणा री संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ४० ॥
 ध्रत री गोली मां सूं ध्रत वैहरावें, तिणरें विच में फूलण होवें ताय ।
 ते वैहरतां संका पडें साधू रे, ते संका केम कढाय रे ॥ ४१ ॥
 इम इत्यादिक अनेक वस्त में, संका पडें मन मांहि ।
 पिण व्यवहार में सुघ हुवें तों, साधु वैहर लेवें ताहि रे ॥ ४२ ॥
 तिम कवाड्यां रो व्यवहार सुघ जाण नें, साधु वैहरें छें तांम ।
 इण बात रों निश्चे तों केवली जाणें, खांच तणों नही कांम रे ॥ ४३ ॥
 जो कवाडीयां रा दोष री संका, तो इण लारें छें संका अनेक ।
 लारें संका कही ते सगली टालणी, समभों आण ववेक रे ॥ ४४ ॥
 आगें लूका नें ढूंढीया नीकलीया, जब तों हुंता वेंरागी विवोषों ।
 त्यां पिण कवाड्यो टाल्यों न दीसैं, हीयें विमासी देखो रे ॥ ४५ ॥
 सुघ साधु तों यांरो सरणों न लेवें, पिण सूतर में वरज्यो नांही ।
 जो कवाडीया रो दोष कहों छो, ते काढो सूतर रे मांहीं रे ॥ ४६ ॥
 सूतर मांहे तो मूल न वरज्यो, परम्परा मे पिण वरज्यो नांही ।
 तिण सुं जीत व्यवहार निरदोष थाप्यां री, संका म करो मन मांही रे ॥ ४७ ॥
 जो कवाडीयां री संका पडें तो, संका छें ठांम ठांम ।
 ते कहि कहि नें कितराएक केहूं, संका रा ठिकाणा तांम रे ॥ ४८ ॥
 साधु तो हिंसा रा ठिकाणा टालें, छदमस्थ तणें व्यवहार ।
 सुघ व्यवहार चालतां जीव मर जाएं, तो विराधक नही छें लिंगार रे ॥ ४९ ॥
 जिण जिण बोलां रो नीकालो नही छें, ते केवलीयां नें भलावों ।
 कवाडीया री तांण करेनें, मत कोइ भूठ लगावो रे ॥ ५० ॥
 मोने तो कवाड्यां रो दोष न भासैं, जाणें नें सुघ व्यवहार ।
 जे निसंक दोष कवाड्यां मे जाणों, ते मत वहरजो लिंगार रे ॥ ५१ ॥
 कवाड्या रो दोष कहे तिण उपर, जोड कीवी पाहू मभारे ।
 संवत अठारें नें वरस चोपनें, वेंसाख विद दसम ने मंगल वारो रे ॥ ५२ ॥

ढलः १७

दुहा

केइ नांम घरावें साघ रों, पिण पूरा मूढ अयाण ।
 त्यांरी ववेक विकल छे साघव्यां, तेपिण जिणमारग री अजाण ॥ १ ॥
 त्यांनैं समझ नही त्यांरे बोलीये, कूडी करें बकरोल ।
 त्याने खबर नहीं त्यांरा वरतरी, करे रही करम किलोल ॥ २ ॥
 सूघ साघां ने उथापण भणी, उंधी कीधी परूपणा तांण ।
 तिणसूं उलटो उघाढ हूओ आपरो, पडी गला ने आंण ॥ ३ ॥
 इण रें वडा वडेरा आगे हूआ, दर पीढ्यां लग वाज्या साघ ।
 इण सूतर अर्थ उंघा करे, कीया सगलां ने असाघ ॥ ४ ॥
 इण किण विघ कीधी परूपणा, असाघ ठहराया इण केम ।
 इण चोडे करी छे, परूपणा, ते सांभलजो घर प्रेम ॥ ५ ॥

ढल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्था मे]

कठोतरी हाडाविक रा घोवण ने, दोय घडी तांइ कहे काचो पांणी ।
 एहवी परूपणा कीधी पांना वाचेने, निसंक थका कहे कर कर तांणी ।
 आ सरघा छे मूढ मती रीः ॥ १ ॥
 तिणसू साघां ने घोवण पूछेने लेणों, दोय घडी तांइ घोवण काचो पांणी ।
 विण पूछ्या लीयो तिणकाचों पांणी वेहख्यो, वले अरिहंत नी आगना लोपांणी ॥ आ० २ ॥
 जे सूतर न्याय चाले छे तिणने, दोय घडी हूआ पछें वेहरणो घोवण ।
 पेहला वेहख्यों तिणतो काचो पाणी वेहख्यों, ते तो अरिहंत री आगनारा खोवण ॥ ३ ॥
 एहवी परूपणा कीधी तिणने पूछ्यो, थे दोय घडी पहिली वेहरो के नांय ।
 जब निसक थका कह्यो म्हें तो वेहरां, ए उतकष्ट बाजे ने बहरो कांय ॥ ४ ॥
 जब लोकां पूछ्यो थे किण लेखे वेहरो, सांप्रत जाणने काचो पांणी ।
 जब कहे म्हारे वडा वडेरें वहख्यो, तिणसूं म्हे पिण वेहरां त्यांरी परतीत आंणी ॥ ५ ॥
 पिण घोवण तो निश्चेइ करने, दोय घडी तांइ काचो पांणी ।
 तिणसूं सुघ साघांने वेहरणों नांही, एहवी अरिहंत बोली छे वांणी ॥ ६ ॥
 म्हारें तो थेटसूं वेहरतां आवां, म्हां ढीला पर्या सांहमों ए क्यूं देखे ।
 म्हे तो आगना लोपी नें लोपी कहां छां, आं आगना लोपी किण लेखे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए कहेँ म्हेँ आगना माँहेँ चालाँ छाँ,
 दोय घडी ताँइ धोवण काचो पांणी छेँ,
 सुध साधाँ नें उथापण काजेँ,
 दोय घडी धोवण नें काचो पांणी थापे,
 ज्यूं कोइ पेंला नें कुसवण करण नें,
 ज्यूं सुध साधाँ नें असाध थापणनेँ,
 काचो पांणी जाणे जाणे नित वहरें,
 एहवा भेषधारी भिष्ट भोला लोकाँ में,
 दोय घडी पेहली म्हेँ धोवण पीयाँ ते,
 इम सांभल नें त्यानेँ साध सरखेँ छेँ,
 साध होय नें काचो पांणी वेहरी बूडा,
 एं तोँ दोनूँ जणाँ च्यार तीर्थ बारें छेँ,

साधाँ नें काचो पांणी जाणेनेँ वेहरायोँ,
 साध पिण जाण वेहरें काचो पांणी,
 एहवी परूपणा कीधी तिण लेखेँ,
 वले बावीस टोला रा साध वाजेँ छेँ,
 काचा पाणी रे संघटेँ तो आहार न वेहरें,
 एहवाइ विकल साध वाजेँ लोकाँ में,
 असुध आहार साधु नें अभष कह्योँ छेँ,
 भगोती गिनाता नें निरावलिका में,
 असुध आहार साधुनेँ अभष कह्योँ छेँ,
 जाण जाण असुध आहार अभष वेहरें छेँ,
 दोय घडी धोवण नें कह्योँ काचो पांणी,
 काचो पाणी कहे नें पीता जाएँ,
 धोवण नें दोय घडी काचो पांणी जाणेँ,
 तेहीज पांणी पोतेँ जाण पीयेँ,

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तो एं जिन आगना स्थांमोँ क्यूं नहीं देखें ।
 तिण धोवण नें वेहरें किण लेखें ॥ ८ ॥
 आप तणा वडेराँ नें कांय विगोया ।
 साधपणा सगलाँ रा खोया ॥ ९ ॥
 आपरो नाक काटे नें करे असमाध ।
 आप री पीढियाँ खप हुवाँ असाध ॥ १० ॥
 वले साधपणा रो नाम धरावेँ ।
 सुध साधाँ ज्यूं वंदावेँ पूजावेँ ॥ ११ ॥
 काचोँ पांणी कहेँ ते तो वात न भूठी ।
 त्यांरी हीया निलाड री दोनूँइ फूटी ॥ १२ ॥
 वेहरावण वाला पिण बूडा छे विशेष ।
 जो सांसोँ हुवेँ तो सूतर माँहेँ देखो ।
 आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ १३ ॥
 तिण श्रावक रो बारमोँ व्रत भागोँ ।
 ते तो निश्चें वरत विहूणा नागो ॥ आ० १४ ॥
 इण रा वड वडेरा तो निश्चें नहीं साधो ।
 त्यानेँ पिण दर पीढ्याँ कीया असाध ॥ १५ ॥
 काचोँ पांणी रो जाणनेँ कर जाएँ गटकोँ ।
 त्यानेँ विकल होसी ते करसी लटकोँ ॥ १६ ॥
 तिणमें सचित नें अभष कह्योँ छेँ विशेषोँ ।
 जो सांसो हुवेँ तोँ तीनूँइ सूतर देखो ॥ १७ ॥
 तिण माँहेँ संका नहीं छेँ लिगार ।
 ते तो नियमाइ निश्चें नहीं अणगार ॥ १८ ॥
 साधाँ में दोष ढाकण नें चलायो भूठोँ ।
 त्यांरोँ साधपणोँ तो जावक गयो उठोँ ॥ १९ ॥
 ते तो भूठा थका करें फेंन फित्तरोँ ।
 त्यांरा संजम सरधा मे पड गइ धूरो ॥ २० ॥

ढलल : १८

दुहल

कहे नलंव धरलव सलघ सलघवी, ढलण उमूढ चललीयल जलड ।
उंवी उंवी करेँ छेँ ढरूढणल, ते सुणजो चलत ल्यलड ॥ १ ॥

ढलल

[सलधु ढत जलणो इण चलगत सु]

कहे सुघ सलघलं ने आहलर वहरणो, तीजल ढोहर ढभलर जी ।
जे च्यलरू ढोहरमें करे गोचरी, ते श्रीजलण आग्यल वलर जी ।
आ सरधल छे मूढ ढत्यलं री* ॥ १ ॥
तलण मूढढती ने ढूछल कीधी, थे सलधु नलंव धरलड जी ।
थे च्यलरू ढोहर ढे करो गोचरी, ते कलण लेखे कलण न्यलड जी ॥ २ ॥
जब कहे म्हे तो जलण आग्यल वलरे, ओ दोढण छे म्हलरे ढलंय जी ।
एँ उतकधल होड दोषण कलंय सेवेँ, वले आग्यल लोढी कलंय जी ॥ ३ ॥
तीजे ढोहरे गोचरी थलणेँ, सलघलं ने उथलढण कलज जी ।
त्यलरे उलटी आड ढडी गलढेँ, त्यलं छोडी संजढ ललज जी ॥ ॡ ॥
तीजे ढोहरे गोचरी थलणे, करे च्यलरू ढोहर ढभलर जी ।
वले ढुख सुँ कहे म्हेँ आग्यलं लोढी, त्यलने कुण कहसी अणगलर जी ॥ ॡ ॥
तीजे ढोहरे गोचरी थलणेँ, करे च्यलरू ढोहर ढभलर जी ।
ते ढेटढरल उधलड दीसे, धलण त्यलरो जढवलर जी ॥ ॢ ॥
च्यलरू ढोहर तणी गोचरी सलघ ने, कलह दीधी श्रीजलण आढ जी ।
ते वीर वचन उथलढ्यो त्यलरेँ, उदे हुवल छे ढलढ जी ॥ ॣ ॥
सलधु च्यलर ढोहर ढेँ करेँ गोचरी, त्यलरो ढूढो करेँ ढलतूर जी ।
ढोतेँ च्यलरू ढोहर ढेँ करेँ गोचरी, त्यलरल सलघ ढणढे धूर जी ॥ । ॥
कहे सुघ सलघलं ने एकण दलनढेँ, आहलर करणो एक वलर जी ।
दोड ने तीन वलर आहलर करे ते, श्री जलण आग्यल वलर जी ॥ । ॥
जब लोकां इणनेँ ढरूण ढूछुंयोँ, थे एकण दलन ढभलर जी ।
थे कलतरी वलरीयलं आहलर करो छोँ, ए उततर दो इण वलर जी ॥ ॥ ॥
जब कलह दीयोँ म्हेँ एकण दलन ढेँ, आहलर करलं धणी वलर जी ।
म्हे चोडे कलहलं जलण आग्यल लोढी, दोष सेवे करलं म्हे आहलर जी ॥ ११ ॥

*थलह आँकडी ढरूत्येक गलथल के अन्त ढेँ हे ।

पिण एंतो कहें म्हें उतकष्टां छां, जिण आग्या रा पालण हार जी ।
 तो एं आग्यां लोप दोषण कांय सेवें, कांय करें घणी वार आहार जी ॥ १२ ॥
 म्हें तो दर पीढ्यां लग करता आया, च्याहं पोहर में आहार जी ।
 एक दोय विरीयां रो कारण नाहीं, म्हारो तो ओहीज आचार जी ॥ १३ ॥
 इण रें लेखे इण री दर पीढ्यां में, साघ हुवो नहीं एक जी ।
 त्यां पिण असणादिक एकण दिन में, कीयों वार अनेक जी ॥ १४ ॥
 जो भगवंत क्ह्यो हुवें सुघ साघां नें, बीजी वार न करणो आहार जी ।
 अनेक वीरीयां आहार करें छे, त्यांनं कुण कहिसी अणगार जी ॥ १५ ॥
 एकवार साघनं आहार परूपें, तिण चोडे चलायों कूड जी ।
 आप तो आहार करें बहु वीरीयां, तिण रा साघपणां में धूर जी ॥ १६ ॥
 साघ नें आहार छ कारणों करणों, कारण विण करणों नांहि जी ।
 एक दोय वार रो नाम न चाल्यो, जोवो सूतर रे मांहि जी ॥ १७ ॥
 कहे नितको साघ नें आहार न करणों, करें ते आग्या वार जी ।
 जब उण नें पूछ्यो थें कांय करो नित, असणादिक च्याहं आहार जी ॥ १८ ॥
 जब क्ह्यो म्हें तों जिण आग्या लोपी, ओ दोषण छे म्हारें मांय जी ।
 एं उतकष्टा वाज दोषण कांय सेवें, जिण आग्या लोपी कांय जी ॥ १९ ॥
 म्हें तो दर पीढ्यां लग खाता आवां छां, नितरा नित च्याहं आहार जी ।
 वले कह दियो चोडें लोकां में, म्हें तो जिण-आग्यां वार जी ॥ २० ॥
 तीजा पोंहर टाल गोचरी न करणी, एक टक विण न करें आहार जी ।
 वले नित रो नित आहार नहीं करणो, ओ साघ तणों आचार जी ॥ २१ ॥
 म्हें कहां म्हें तों पूरों नहीं पालां, म्हें तों पालां जिसें फल होय जी ।
 इसी कहे नें पलो छुडावें, पिण भोलां खबर न कोय जी ॥ २२ ॥
 उंची सरघा भेष धाखां नी परगट कीधी, सिरियारी सहर मभार जी ।
 संवत अठारें वरस एकावने, काती विद चवदस बुधवार जी ॥ २३ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधारी भागल मिष्टी थया, त्यासूं पले नही आचार ।
 ते ववेक विकल सुध वुध विना, ते बोले नही मूढ विचार ॥ १ ॥
 वधोतर देखे जिण धमं री, जब लागें अभितर लाय ।
 जब कूडा कूडा आल दे साघां भणी, पछे लोकां माहें देवें फॅलाय ॥ २ ॥
 पोते तो हूआ ठाला ठीकरा, पांचूं महाव्रत दीया छें बोलाय ।
 धीग होय बॅठा छें बाबा तणा, त्यारिं भूठ री सृग न काय ॥ ३ ॥
 मत विखरतो देखे आप रो, फिरता देखे श्रावकां नें ताय ।
 तिणसुं छल छिदर जोवे साघां तणा, आल देवण रो करे छें उपाय ॥ ४ ॥
 जस कीरत देखे साघां तणी, त्यासूं एदुख सच्चों रेन जाय ।
 तिण सूं आल दीयो अन्हारवी थकें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिश आगन्या में]

मेंला चीगटा कपडा मेह तां भीना, तिण में ज्यां लग सचित्त तणी हुवें संक ।
 तिण संका सहीत साधु कपडों नीचोवें, तिण साधु नें दोष लागें छें निसंक ।
 भेषधारी तो आल देता नहीं सके* ॥ १ ॥
 भूठ बोलण री त्यारिं सृग नही छें, ते जेन तणा विगडायल गेरी ।
 ते नरक निगोव तणा होय बॅठा, सुध साघां तणा छें अंतरंग बेरी ॥ २ ॥
 मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, तिण मे सचित री संका न हुवें लिगार ।
 तिण कपडा ने निसंक निचोवें साधु, तिण में दोष वतावे छें मूंड गिवार ॥ ३ ॥
 संका रहीत कपडा नें साघ नीचोवें, त्यांरा पांचोइ महाव्रत कहे छें भागा ।
 केई भेषधारी तो इसडी पख्ये, ते तों समकत विरत बिहूणा नागा ॥ ४ ॥
 पांणी सचित हुवो अथवा अचित पांणी हुवों, साधु नें कपडो नीचोवणो नाहीं ।
 नीचोयां साघपणा रो खेरोइ न रहे, इण सूं इधिको आकार्य नही छें काई ॥ ५ ॥
 म्हारा बावीस टोला माहें विगडायल, ते पिण कपडो नही नीचोवे ।
 एहवी उंधी पखणणा कर कर पापी, भोला लोकां नें निसंक डबोवे ॥ ६ ॥
 किणही ववेक रे विरल आय कह्यो जब, तिणरो तो पुरों न काढे निकालों ।
 अंतरंग घेष रो घालीयो पापी, सुध साघां नें दीयो अणहंतो आलो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बावीस टोला कहें छें, तिणमें,
 तिण टोला तणा टाणोकड भिष्ठी,
 आप रो मत थापण मूढ मिथ्याती,
 तिण रा थावकां पासें बके दिन राते,
 इण भूठाबोलां री बात माने छें,
 तिण भूठाबोलां री पषपात करसी,
 मेंमंत वरसात मंडीयो तिण काले,
 तिण मांहे तो नीलण फूलण रा जीव,
 सरदी मिटे नही तठा तांइ कपडा में,
 समे समे पिण विणसें छें अनंता,
 पांणी अचित्त हुआ कपडो नही नीचोवे,
 तिण हिसारा पाप थकी साध रे,
 पहिलों महाव्रत राखण रे तांइ,
 तिण मांहे दोष कहें छें अग्यानी,
 अचित्त पांणी हुआं साध कपडों नीचोवे,
 ते बवेक तणो विकल छें मूर्ख,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवे,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवे,
 तिण बवेक रा विकल नें साध सरधें छें,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडो नीचोवे,
 तिण जीवां री दया तों ओलखी नांही,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवे,
 ते सुनें चित्त हीयाफूट ज्यू बोले,
 एहवो आल अन्हाखी साधां नें दीधो,
 कदा टांकीं भले इण आल दीयां थी,
 एहवों आलदेइ लोकां में फेलायो,
 तिणरा सेवग सुण सुण हरष हुआ छें,
 आल देणवाला नें हरषणवाला,
 ते हीयाफूट गधां रा साथी,
 भेषधारी आल अणहूंतों दीधो,
 इण लेखें उण नें इतरो प्राच्छित आवें,

ढीला में ढीलें टोलों विशेष ।
 आप रा किरतव स्हांमों मूल न देखें ॥ ८ ॥
 सुध साधां ने दीयो अणहूंतों आलो ।
 ते पिण साच नें मूठ रो नकाहेंनिकालो ॥ ९ ॥
 ते पिण तिण करे जावक वूडा ।
 ते पिण चिहूं गति मांहे दीससी भूंडा ॥ १० ॥
 मेंला चीगटा कपडा भीना राखें जाण ।
 समे समे अनंता उपजे छें आण ॥ ११ ॥
 समे २ अनंता उपजे छें ताम ।
 निरंतर मंडीयो रहे संग्राम ॥ १२ ॥
 तो अनंत जीवां री हिंस्या साधु नें लागे ।
 पेंहलो माहाव्रत निश्चेइ भागे ॥ १३ ॥
 पांणी अचित्त हुआ साधु कपडों नीचोवे ।
 साधां नें आल देइ नें आत्मा डबोवे ॥ १४ ॥
 तिण मांहे दोष कहें छें पापंडी ।
 तिण भेषलइ आत्मा नें भंडी ॥ १५ ॥
 तिणमें दोष कहें छें मूढ मिथ्याती ।
 तिण विकलां री अकल रही छें जाती ॥ १६ ॥
 तिणमें दोष कहें तिण री भिष्ट छें बुध ।
 त्यांमें पिण काइ म जाणजो सुध ॥ १७ ॥
 तिण मांहे तो दोष माठी मत रों जाणें ।
 पीपल बांधी, मूर्ख जिम ताणें ॥ १८ ॥
 त्यांरा पांचोइ माहाव्रत कहें छें भाग ।
 ते विरत विहूणा कहीजें नाग ॥ १९ ॥
 ते निश्चेइ बूड गयो कालीघार ।
 तो पाचरो जाए नरक निगोद मझार ॥ २० ॥
 तिण दुष्टी रे संसार दीसें छें जादा ।
 जाणें पमां रे गूगर बांधा ॥ २१ ॥
 साराइ कर्म तणा पूज बांधे ।
 त्यां श्री जिण धर्म न ओलख्यो बांधे ॥ २२ ॥
 अणहूंताइ माहाव्रत साधां रा उडया ।
 कह्यो छें वैतकल्प नें ठाणांग मांहे ॥ २३ ॥

उणमे सावणणो तो आगेंइ न दीसैं,
 पिण उणरें लेखे उण ने सावणणो आवे,
 तिणने सावणणों फेर दीधां विनाई,
 एहवा प्राच्छित रो गाला गोलो करे त्यामें,
 जिण टोला मे दसमो प्राच्छित सेव्यो,
 एहवा पिण प्रायच्छित गउ कर बेठा,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडा नीचोवे,
 तिण तीनोइ कालना रषेसरं नां,
 अचित्त पाणी हूवा निसंक सूं साधां,
 वले आगमीये काल साध कपडा नीचोसी,
 अचित्त पांणी हूआं कपडा नही नीचोवे,
 आ पिण समक नही विकलां ने,
 अचित्त पांणी हूआ कपडा नही नीचोवें,
 नीचोयां थकां पाप किसो लागे छे,
 साधु तो पाप अठारेइ त्याग्या,
 अचित्त पांणी हूआं पछे कपडा नीचोवें,
 अचित्त पांणी हूआं साधां कपडों नीचोवे,
 तो पाप अठारे जिण कहुं तांमें,
 पांणी सचित्त हूवो अथवा अचित्त पाणी छे,
 माहें नीलण उपजो भावे फूलण उपजो,
 नीलण फूलण सहीत कपडो सुके जब,
 अचित्त पांणी हूओ छे तोही कपडा ने,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें,
 इम कहि कहि अग्यानी भोला लोकां रे,
 जब तो वरस तो मेह उभो रह्यां पछें,
 जब तो तिण पांणी में पग नहीं देणों,
 ग्रहस्य रे घरे धोवण रो कूडो मख्यो छे,
 तिण लेखे तों धोवण नही वहरणो,
 दूब दही चास आदि अनेक दरब छे,
 तिण लेखें या दरबांने वहरणो नाहीं,
 इम प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें,
 तो अचित्त पांणी हूआं पछे कपडो नीचोयों,
 ६१

पिण सावांनं आल दीयो छें अन्हाखी ।
 ठांणाअंग ने वृहतकल्प छें साखी ॥ २४ ॥
 इण सूं केइ भेलो करसी आहार ।
 सावणणा रो खेरो न दीसैं लिहार ॥ २५ ॥
 अकार्य अकार्य हूआ विशेषें ।
 ते तो प्राच्छित लेसी किण लेखें ॥ २६ ॥
 त्यांरा पांचोइ महावरत भागा ठेहराया ।
 पांचोइ माहावरत जाबक उढाया ॥ २७ ॥
 कपडा ने नीचोया छें गयें कालो ।
 त्यां सगला ने दुष्टी दीयो छे आलो ॥ २८ ॥
 तो नीलण फूलण राजीव अनंता रों घाती ।
 ते हीयाफूट गधां रा साथी ॥ २९ ॥
 भीनो राखें ते कारण कांइ ।
 ओ पिण विकलां रे निरणों छे नाही ॥ ३० ॥
 चोखी छें त्यांरी सुमत ने गुपती ।
 त्यांनं पाप कठा सूं लागे रे कुमती ॥ ३१ ॥
 त्यारो सावणणों पापी कहें छे भागों ।
 ते किसों पाप साधां ने लागो ॥ ३२ ॥
 पिण साधां ने कपडो नीचोवणों नाही ।
 तिणरो साधु ने पाप न लागें कांई ॥ ३३ ॥
 साधू नें कपडा रे लगावणो हाथ ।
 साधू ने नीचोवणो नहीं असमात् ॥ ३४ ॥
 ते नीचोवणो किण ही सुतरमें न चाल्यो ।
 हीया में घोचो अणहुंतों घाल्यो ॥ ३५ ॥
 पांणी वहे छे वजार रे मांहि ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३६ ॥
 काचो पांणी घाल्यो तिण धोवण मांहीं ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३७ ॥
 काचों पांणी घाल्यो छें त्यां मांही ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाहीं ॥ ३८ ॥
 जब तो कहे म्हें तो अचित्त हूआं ल्या छों ।
 तिणमें दोष कहें आल किण लेखें घो छो ॥ ३९ ॥

अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोयों,
तो थे पिण पछे बोल कह्या त्यारों,
अचित्त पांणी हुआ कपडो नीचोयों तिणमें,
तिण साधपणों ओलखीयों न दीसैं,
पातरा माहे दूध दही चास घोवण,
त्यानैं तो खाता पीता नहीं संकें,
गोचरी करता छांट पूंहरा आया,
तो अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोवें,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडो नीचोयो,
अण विचाखा आल पाषंडीयां दीघो,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोयों,
त्यानैं बांढें पूजें सुघ साध जांणेने,
इण भूठाबोलां री परतीत न करणी,
तिण पूछ्या रा जाब न आवे पूरा,
इण भूठाबोलां री परतीत करसी,
न्याय निरणा विना आल साधां नें देसी,
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना,
तिणमें नीलण फूलणादिक कंथूआ उपजें,
दोय च्यार महीना तिण कपडा माहें,
जीव उपजें तो नचित्त सू उपजों,
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना,
तो पिण कपडा ने भीनों राखणों,
अचित्त पांणी हुआ पछे कपडो नीचोवे,
इतरी पिण ओलखणा नही तिणनैं,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडो नीचोवेणो,
समत अठारें सतावने वरसैं,

त्यानैं कहो थें सुतर में काढ दिखावो ।
सुतर मांसूं काढ वतावो ॥ ४० ॥
दोस कहें त्यारे पुरों अंधारो ।
भेष पहर नें आत्म कीवी खुवारो ॥ ४१ ॥
तिण माहे काचों पांणी पडीयो छें आयों ।
तो कपडों नीचोयां दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४२ ॥
जब उभा रहें ग्रहस्थ रा घर माह्यो ।
तिण-माहे दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४३ ॥
तिणमें दोष कहें छें ते बोलें छें उंधा ।
ते भारीकर्मा किम बोलसी सूधा ॥ ४४ ॥
तिणमें दोष कहें मूढ विना विचारों ।
त्यारें पिण जाणजों पुरों अंधारो ॥ ४५ ॥
ओं तों कायों हूओ कहि दे काचो पांणी ।
जब थोडां में बोलें फिरती बांणी ॥ ४६ ॥
ते भव २ माहे घणा पिछतासी ।
ते नरक निगोद में भीका खासी ॥ ४७ ॥
पांणी अचित्त हुआइ नीचोवणों नाहीं ।
तिणरो साधू ने पाप न लागो कांइ ॥ ४८ ॥
नीलण फूलणादिक जीव उपजें आय ।
पिण कपडा ने नीचोवणों नही ताय ॥ ४९ ॥
पोहर हुवें तथा आधीरात ।
पिण नीचोवणा नही अंसमात ॥ ५० ॥
तिण में दोष कहे छें मतहीण भिष्टी ।
निश्चेंइ साध न जाणें समदिष्टी ॥ ५१ ॥
ते ओलखायो पुर सहर मम्मार ।
आसोज विद नवमी नें सुकरवार ॥ ५२ ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ भेषधारी सुघ बुघ विना, बोले नही वचन विचार ।
कहे हिवडा आरो छे पांचमो, पूरों पले नहीं आचार ॥ १ ॥
म्हे दोष सेवां छा भारी २ जाण ने, तिणरो प्रायच्छित्त पिण न ल्यां तिलमात ।
तो पिण म्हे सुघ साध, छां, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
म्हे बाजार में परठां मातरो, तिणरो चोमासी प्राच्छित्त साख्यात ।
ते म्हे परढ्यो परठां परठसां, तिणरो प्राच्छित्त न ल्यां अंसमात ॥ ३ ॥
कोइ आवें नही ने देखे नही, तठे मातरो परठणों विचार ।
ते म्हे परठा छा लोकां देखता, तिणरो प्राच्छित्त नही ल्यां लिगार ॥ ४ ॥
इत्यादिक दोष अनेक छे, ते पिण सेवां छा वालंवार ।
ते म्हे दोष सेवां छां जाण २ ने, तिणरो प्राच्छित्त नहीं ल्यां लिगार ॥ ५ ॥
बाजार में परठां छां मातरो, भारी दोष जाणे तिण मांय ।
तिण लेखे त्यामें साधपणो नही, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[५० जिख आग्या०]

दस पांच वार एकण दिन मांहे, मातरों परठे बाजार मांय ।
यारी सरघा रे लेखे जित्ती वार परठे, जितरा चोमासी प्रायच्छित्त आय रे ।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करों आत्म भारी रे ।
भवीयण सूत्र जोय करो निसतारी ॥ १ ॥
एक दिन मातरो परठे तिणरो, चोमासी प्रायच्छित्त आवे ।
इण लेखे एक दिन रा मातरा परठण मे, अनेक दिनां रो साधपणो जावे रे ॥ २ ॥
तो ए नित २ अनेक चोमासी रो प्राच्छित्त, जाण २ सेवे दिन रात ।
इण लेखे तो यामे साधपणा री, वाक्की रह्यो नही असमात रे ॥ ३ ॥
इण विचे तो अनेक भारी २ दोष, नित २ सेवे छे ताहि ।
यारो साधपणों वहि गयो जाबक, मातरा परठण रा दोष मांहि रे ॥ ४ ॥
यां मातरा परठण मे दोष वतायों, तिण लेखें त्यां साधपणों खोयो ।
तो बीजा भारी २ दोषां रो प्रायच्छित्त, त्यांरी तिथ न करणी कोयों रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक पइसा रा लेंगायत आगें, देवाल्लों कांढे दीयों नगें ।
 जब भारो र वोहरा हुता ते, तिण पासे आयनें कांइ मागे रे ॥ ६ ॥
 तो एक मातरों परठें बाजार में तिणरों, यांहीज दोष अणहंतो बतायो ।
 इण लेखें तो यांहीज यांरो साधपणों, अमारो घूएं जाबक उडायो रे ॥ ७ ॥
 साधां नें दोषीला थापण नें, आपरोइ साधपणों गमायो ।
 बाजार में मातरों परठण रो, अणहंतो दोष बतायो रे ॥ ८ ॥
 कोइ पेंला नें कुसावण करवा, आपरो नाक देवें कटाय ।
 ज्यू ए साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होय जाय रे ॥ ९ ॥
 यांरा बडबडेरा आगें हुआ त्यां, मातरों परठ्यां बाजार माह्यो ।
 तिण माहें चोमासी दोष बताए, यांरा बडां नें दीया उडायो रे ॥ १० ॥
 यांरा बडा बडेरा आगें हुआ ते, ओं तो दोष किणही न बतायो ।
 बाजार माहें मातरा परठण रों, ओं तो यांहीज दोष बतायो रे ॥ ११ ॥
 साधु तो बाजार में मातरों परठें, घणा लोकां देखंता ताहि ।
 तिण माहें दोष अणहंतो बतायो, तिण रो मूढ न जाणें न्यायो रे ॥ १२ ॥
 उचार पासवण परठण रों प्राछित कह्यो ते, उचार आश्री प्राछित जाणें ।
 पासवण परठ्यां रो प्राछित, नही छें, तिणनें रुडी रीत पिछाणों रे ॥ १३ ॥
 पासवण तो कही छें उचार रें सहचर, एकली पासवण कही छें नाही ।
 तिणरों निरणों कहुं छूं नसीत सूतर सूं, ते विचार करे देखों मन माही रे ॥ १४ ॥
 नसीत सूतर रे चोथें उदेशें, उचारपासवण परठ्यां पछे सुच करणों ।
 कह्यो छें उचार रों असुच टालण नें, तिणरो बुधवंत कीजो निरणों रे ॥ १५ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, कपडा सूं लूहें नाही ।
 तिणनें मासीक प्रायछित आवें, नसीत सूतर रे माही रे ॥ १६ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, लकडी नें वांस तण खपाट ।
 बले आंगुली ने सिलका करी लूहें, तिणनें मासीक प्राछित रो पाठ रे ॥ १७ ॥
 कपडा सूं लूहणों चाल्यो, लकडादिक सूं लूहणो नाही ।
 ते पिण उचार आश्री कह्यो छें, पासवण रो लूहसी कांइ रे ॥ १८ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, सुच नहीं लेवें ताय ।
 असुच तणों लेप लागों राखें, तिणनें मासीक प्रायछित आय रे ॥ १९ ॥
 लेप टालणों कह्यो छें सुच लेइ नें, ते तों उचार आश्री छें तांम ।
 पासवण तो पोंतेंइज सुच छें, इणरो सुच तणों कांइ कांम रे ॥ २० ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, तिण उपर सुच लेवें ताहि ।
 तिणनें मासीक प्राछित कह्यो छें, नसीत सूतर रे माहि रे ॥ २१ ॥

उचारपासवण परठीयां पछे, तिहांइज सुच लेवणो नाही ।
 ते पिण उचार उपर लेणो वरज्यो, अठे पासवण रों कांम कांइ रे ॥ २२ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछे, सुच लेवे घणों अलगो जाय ।
 तिणनें पिण मासीक प्रायच्छित आवे, ते पिण उचार आश्री छें ताहि रे ॥ २३ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, सुच लेणो क्हो जिणराय ।
 तीन पुसली सूं पाणी इघको लेवे, तिणने मासीक प्रायचित्त आय रे ॥ २४ ॥
 तीन पुसली सूं सुच लेणो चाल्यो छें, उचार आश्री क्हो छे तांम ।
 पासवण तां पोतेंइ सुच छे, पासवण ने सुच रो नही कांम रे ॥ २५ ॥
 इतरा तो बोल नसीत में चाल्या, चोथा उदेसा मांहि ।
 वले चोमासी प्राच्छित रा बोल अनेक, पनरमे उदेशें छें ताहि रे ॥ २६ ॥
 कोइ आवे नहीं वले देखे नही, तिहां परठणों क्हो जिणराय ।
 उत्तरावेन चोवीस में घेने, तिणरो पिण न जाण्यो न्याय रे ॥ २७ ॥
 उचारपासवण तो लघू बडी नीत, खेल ते मुख नो बलखों जाणो ।
 संघाण ते नाक नो छे सलेषम, जल ते मेल लीजों पिछांणो रे ॥ २८ ॥
 आहार ते असणादिक च्याळं, उपवि ते सारा उपगरण जांणो ।
 देह सरीर जीव सूं रहीत हूवो ते, इत्यादिक दरव अनेक पिछांणो रे ॥ २९ ॥
 यांमें तथाविघ छे परठवा जोग, सुध थडले परठणा तांम ।
 जेणा ने उपयोग सहीत सूं, राखेने सुध परिणाम रे ॥ ३० ॥
 कोइ आवे नहीं वले देखे नाही, तिहां परठणो क्हों जिणराय ।
 तिणमे किणही एक दरव आश्री क्हों छे, उचारपासवण रे न्याय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यूं मिनष में उपीयोग वारे क्ह्या छे, पिण एकण मे वारें छे नाही ।
 ज्यूं समचे क्हों आवे देखे नाही, तिहां परठण री विव जांणजों यांही रे ॥ ३२ ॥
 कोइ आवे नहीं वले देखें नही तिहां, सरीरादिक परठणो जाय ।
 तिण सग्रह शब्द में सगला क्ह्या पिण, सगला नही छे ताय रे ॥ ३३ ॥
 आहार उपवि गृहस्थ रे कांम आवे छे, तिण देखतां परठणों नाही ।
 अथवा तिण देख्यां हेला निघा हूवें, ते विचार करणों मन मांही रे ॥ ३४ ॥
 जब कोइ कहे गृहस्थ देखतां, परठणो नही लिगारो ।
 उत्तरावेन मे सगलो वरज्यो छे, ओ देखलो पाठ उघाडो रे ॥ ३५ ॥
 इम कहे तिणनें गृहस्थ देखतां, काजो पिण परठणो नाही ।
 पग पूजें नें रज दूर न करणी, राखादिक नही परठणी कांड रे ॥ ३६ ॥
 पांणी नीतारीया पछें लारलो गरदो, ते पिण देखता परठणो नाही ।
 भोलो लूहणों गलणो घोया पछे, घोवण देखतां परठणो नही कांइ रे ॥ ३७ ॥

वधे धोवण पांणी पीतां बधे तों,
 बले फूफदादिक नें सरीर मेंल,
 देखतां नहीं धोवण खोलीयादिक नें,
 गोबरादि पगां रे लगों हुवें तो,
 भाठो ढलीयों बगदो नें रेत,
 बले खेल संघाण नें मातरादिक,
 जो सगला दरब देखतां बरज्या छें,
 त्यांरी अंभितर आंख हीपारी फूटी,
 जब तों कहें म्हे दोष जाणे नें सेवां,
 पिण ए सुध साध बाजें लोकां में,
 इम कहे नें अग्यानी पार होय जावें,
 परठण रो दोष अणहूतो बतावें,
 साधां ने दोषीला थापण,
 आपरो साधपणो जाबक उठें छे,
 पिण एंतां अनेक दरब देखतां परठे,
 बले साधपणां रो नांव धरावें,
 ओर तो भारी भारी दोष अनेक,
 पिण यां परठण रो दोष बतायो तिणमें,
 अंग उपंग उघाडा करनें,
 तिहां आवे नहीं देखे नहीं ग्रहस्थ,
 आहार सुखडी खादिम सादिम घणा हुवें,
 ते असणादिक ग्रहस्थ रें काम आवें,
 उपधि कपडादिक घणा हुवें तों,
 ए पिण ग्रहस्थ रें काम आवें छे,
 जीव रहीत सरीर हुवे जब,
 ते एकंत जायगा नहीं परठें तो,
 त्यामें केइ दरब तो मारग मांहे परठ्यां,
 तिण सूं मारग टाले नें एकंत परठे,
 जे जे दरब देखतां परठ्यां,
 बले हेला निदा अजेंणा न हुवें तो,
 असणादिक सीतमात्र खारा खेरों,
 ते अजेंणा निदा टालनें देखतां परठ्यां,

ते पिण देखतां परठणों नाहीं।
 देखतां नहीं परठणो कांइ रे ॥ ३८ ॥
 पगादिक पिण धोवणा नांही।
 देखतां अलगो करणों नहीं त्यांही रे ॥ ३९ ॥
 ए पिण देखतां परठणा नांही।
 देखतां परठणो नहीं कांइ रे ॥ ४० ॥
 तों ए परठें छे किण लेखे।
 पोतें बोल्या री पोतें न देखें रे ॥ ४१ ॥
 तिण सूं देखतां परठं छा ताय।
 ते दोष सेवें किण न्याय रे ॥ ४२ ॥
 साधां नें उथापण विशेषें।
 पिण सूतर साह्यां न देखें रे ॥ ४३ ॥
 पोतें पिण दोषीला जाय।
 तिणरी खबर न काय रे ॥ ४४ ॥
 एक दिन माहें वार अनेक।
 ते बूडे छे विनां बवेक रे ॥ ४५ ॥
 सेवें छे दिनरात।
 साधपणों न रह्यो अंस मात रे ॥ ४६ ॥
 उचार परठणो एकंत जाय।
 तो निद्या लोकां में न थाय रे ॥ ४७ ॥
 ते पिण देखतां परठणों नाही।
 बले निद्या पामें लोका मांही रे ॥ ४८ ॥
 लोकां देखतां परठणों नांही।
 बले निदा पामें लोकां मांही रे ॥ ४९ ॥
 ते पिण देखतां परठणों नाही।
 हेला निद्या पामें लोकां मांही रे ॥ ५० ॥
 बेइन्द्रियादिक आवें साख्यात।
 तो टलें जीवां री घात रे ॥ ५१ ॥
 ग्रहस्थ रे काम नावें काइ।
 देखतां परठ्यां दोष छे नांही रे ॥ ५२ ॥
 उपकारणादि अंसमात।
 तिणमें दोष नहीं तिलमात रे ॥ ५३ ॥

दस दोष रहीत षेत्र हुवें तिहां, परठणो ह्यी रीत जाण ।
 सगला बोला रो षेत्र समचे कह्यो छे, तिण री वृषवंत करजों पिछाण रे ॥ ५४ ॥
 आवे नही वले देखे नांही, संजम प्रवचन विराधीजे नांही ।
 वले उची नीची भूम नही हुवें, त्रिणा पत्रादिक नहीं त्यांही रे ॥ ५५ ॥
 थोडा कालनों अचित थडलों हुवे, विसतीरण कही जगनाथ ।
 च्यार आंगुल कही अचित उपरली, गांमादिक थी दूर विल्यात रे ॥ ५६ ॥
 बिल उंदरादिक नही रुंधाड, तस प्राण बीजादिक रहीत ।
 दस बोल कह्या छे समचे दरबां रा, ज्युं उचार पासवण री रीते रे ॥ ५७ ॥
 पिण सगलाइ दरब परठण रे उपर, दस दस बोल कह्या छे नांहीं ।
 कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें, ते, विचार करो मन मांही रे ॥ ५८ ॥
 तीन च्यार मारग मेला हुवे तिण ठामें, वले मझ वाजार रे मांही ।
 तिण ठामें साध ने उतरणो चाल्यो, ते क्यूं मातरो परठसी नाही ॥ ५९ ॥
 मातरा ने ओर दरब परठण री, विघ ओलखाइ पुर सहर मझार ।
 संवत अठारे सतावनें वरसे, आसोज सुद तेरस मंगलवार रे ॥ ६० ॥



सचित्त पांन डोडादिक असुमता छें, ते साधां नें श्रावक जाणे वेंहरावे ।
 तिण दीघां मे मूढ मिथ्याती जीव, अल्प तो पाप ने बोहत निरजरा वतावे ॥ ५ ॥
 च्याह्णं आहार सचित्त नें असुमता छें, ते साधांनें श्रावक जाणे वेहरावे ।
 तिण दीघां में मूढ मिथ्याती जीव, तिणनें अल्प पापनें बोहत निरजरा वतावे ॥ ६ ॥
 साधांनें आहार सचित्त ने असुघ वेहरावें, तिण श्रावक रो बारमो व्रत भागों ।
 साधु जाणेनें सचित्त असुमतो लेवें तो, ओ पिण व्रत भागे ने होय गयों नागो ॥ ७ ॥
 साधां रें आहार सचित्त ने असुघ लेवण रा, जीवें ज्यां लग छें पचखांण ।
 रोगादिक पीड्यां साधू रा प्राण जाएं तोंही, सचित्त नें असुमतो नही लेवें जाण ॥ ८ ॥
 असल श्रावक ते साधांने असुघ न देवें, सुघ साधां रा जाता देखें तोही प्राण ।
 असुघ देइने साधां रो साधपणों न लूटे, पोता रा लीघा चोखा पाले पचखांण ॥ ९ ॥
 कदा राग रों घाल्यो असुघ वेंहरावे, तिणमें संवर निरजरा अंस न जाणे ।
 व्रत भांगो ने पाप लागो छें तिणरो, प्राच्छित्त ले व्रत राखें ठिकाणें ॥ १० ॥
 च्याह्णं आहार सचित्त नें असुमता छें, ते साधां नें श्रावक जाणे केम वेंहरावें ।
 सुघ साधू तो जाणेने असुघ न वेंहरें, अल्प पापनें बोहत निरजरा किम थावे ॥ ११ ॥
 अफासु नें अणेसणीज्जे पाठ सूतर में, तिण पाठ रों अर्थ सूघो कहणी नावें ।
 जथातथ तिणरो अर्थ करे तो, घणां लोकां में सेखी उड जावें ॥ १२ ॥
 तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक वतावे, कदे कारण पडीयां रो नांम वतावे ।
 वले विविध प्रकारें घुचलाइ घाले नें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ १३ ॥
 ओ तो पाठ भगोती सूतर में छे, पिण आंघां रे अतरंग नही छे पिछांणो ।
 च्याह्णं आहार सचित्त ने असुमता दीघां में, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयांणो ॥ १४ ॥
 फासु एषणीक साधु नें देवे श्रावक, ठाम ठाम बहु सूत्रां रे मांहीं ।
 ते सचित्त असुघ जाणे किम देवे, वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि ॥ १५ ॥
 इण पाठ ने मूढे आंणे वांख्वार, त्यांरा सचित्त ने असुघ खावा रा परिणाम ।
 जो असुघ वेंहरण रा परिणाम नहीं छें, तो यूही क्यां ने बकसी वेकांम ॥ १६ ॥
 च्याह्णं आहार सचित्त नें असुघ वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आजघो वंधाय ।
 भगोती पांचमें सतक छठे उदेसें, वले तीजें ठांणे ठांण अंग भांय ॥ १७ ॥
 साध नें आहार सचित्त नें असुघ वेंहरावें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा थाय ।
 जब तो ठांण अंग ने भगोती सूतर रो, पाठ ने अर्थ दोनूइ उथप जाय ॥ १८ ॥
 साधू नें जाणनें आघाकर्मी वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूटणहार ।
 ते पिण नरक निगोद में म्नीकां खावे, उतकर्षे रूले तो अनंतो काल ॥ १९ ॥
 आघाकर्मी वेहरायां छें एकंत पाप, सचित्त नें असुघ वेंहरायां ओ पिण पाप ।
 च्याह्णं आहार सचित्त नें असुघ वेंहराया, तिणनें मूढ करे वोहत निरजरा री थाप ॥ २० ॥

साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, ते अभष आहार देवें दातार ।
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहे ते, भूल गया मूढ विना विचार ॥ २१ ॥
 साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, निरावलिका भगोती गिनाता मांय ।
 ते अभष आहार साधां नें श्रावक वेंहरायां, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थाय ॥ २२ ॥
 कुसीलीया ते हीण आचारी, विणा विचारीयां बोलसी वेणो ।
 रोगीयादिक गिलाण नें अर्थे, आधाकर्मियादिक जाणें लेंणो ॥ २३ ॥
 ए तो आचारंग रे छठें अधेन नें, ते जोयलें चोथा उदेसा मांय ।
 तो सच्चित्त नें असुभत्तो साधां नें दीधां, अल्प पाप ने बहोत निरजरा किम थाय ॥ २४ ॥
 नही कल्पे ते वस्तु साधु वेंहरें तो, तिणनें तो चोर कह्यो जिणराय ।
 कह्यो छें आचारंग पेहलें सतखंधें, अठमांधेन पहिला उदेसा मांय ॥ २५ ॥
 ठाम ठाम सूतरमें नषेध्यों, साधां नें असुध लेंणो नही कांई ।
 श्रावक नें पिण असुध न देंणो, असुध दीयां में धर्म छें नाहीं ॥ २६ ॥
 च्यार आहार सच्चित्त ने असुभत्ता छे, त्यानें श्रावक तो निसंक सू जाणें सुध मान ।
 आपरी तरफ सू सुध व्यवहार करणें, साधां नें हरष दीयो छें दान ॥ २७ ॥
 तिणरी पागमें सच्चित्त पंखीयादिक न्हाख्यो, अथवा सच्चित्त रजादिक लागी छें आयं ।
 तिणरी श्रावक नें कांइ खबर नहीं छें, पिण व्यवहार सू सुध जाण दियो वेंहराय ॥ २८ ॥
 इण रीते आहार सच्चित्त नें असुभत्तो छें, पिण श्रावक तो सुध जाणें नें वेंहरावें ।
 अल्प पाप ते पाप तणो छें नकारो, चोखा परिणांम सू बहोत निरजरा थावे ॥ २९ ॥
 कें तो अजाणपणें साधु नें वेंहरावे, तिणरी तरफ सू फासु नें सुभत्तो जाण ।
 इण रीते ए पाठ नो अर्थ हुवें तों, ते पिण केवल ग्यानी वदे ते प्रमाण ॥ ३० ॥
 उनो पांणी निसंक सू श्रावक जाणें छें, तिण पाणी नें घर रां बाबर दीयो ताय ।
 तिण ठाम में काचों पांणी घर रां घाल्यो, तिणरी तो श्रावक नें खबर न कांय ॥ ३१ ॥
 तिण पाणीनें श्रावक उनों जाणें, निसंक सू साधां नें दीयो वेहराय ।
 तिणरे अल्प पाप ने बोहत निरजरा हुवें तो, ते पिण केवल ग्यानी नें देंणो भलाय ॥ ३२ ॥
 कोरा चिणा पड्या छे भूंगडादिक में, सच्चित्त गेहूं पड्यां छें धांणी रे मांय ।
 तिणरी श्रावक नें खबर न कांई, सुभत्ता जांणी साधां ने दीयां वेंहराय ॥ ३३ ॥
 अचित्त दाखां में सच्चित्त दाखां पडी छे, अचित्त खादम में सच्चित्त खादम छे ताय ।
 तिणरी श्रावक ने तो खबर न काइ, ते सुभत्तो जाणनें दीयो वेंहराय ॥ ३४ ॥
 इत्यादिक अनेक सच्चित्त वस्तु छें, ते श्रावक निसंक सु अचित्त जाण ।
 ते पिण आपरी तरफ सु चोक्स करणें, साधां नें वहरावें घणो हरष आण ॥ ३५ ॥
 इण रीते श्रावक रें बहोत निरजरा हुवें, तो पिण केवल ग्यानी जाणें ।
 म्हें तो अटकल सू उनमान कर्यो छें, वले सुतर रा अनुसारा प्रमाणें ॥ ३६ ॥

आघाकर्मी साधु जाणें भोगवे तो, असुघ देवे ते संजम रो लूटणहारो, आघाकर्मी साधु अजाणें भोगवें तों, तिण दातार ने पूछें निरणो कर लीघो, आघाकर्मी आहार कीयो तिणरे घर, ते आहार अनेक घरां रे आंतरे, तिण आहार भोगवतां सुघ साधु रे, सुयगडाजंग इकवीसमें अघेने, च्यार आहार सचित ने असुभता छे, ते सुभता जाणें साघां ने बेहरावे, च्यार आहार अचित्त नें सुभता छे, ते सका सहीत साघां ने बेहरावे, सावद्य जोग सू एकंत पाप लागे छे, थोडो पाप ने बोहत निरजरा बतावे, सका सहीत आहार साघां ने बेहरांयो, तो सचित नें असुभतो जाणने देसी, सुघ साघां भेलों तो अभवी रहे छे, तिण अभवी ने साघ्र वादे पूजे छे, साघा भेलो रहे चोथा व्रतरो भागल, तिणने वादे पूजे आहार पांणी देवे छे, अभवी भागल ने जाणे मांहे राखे, ज्यू सचित ने असुभतो जाण बेहरायां, सचित ने असुभतो आहार दीया मे, दौय वाना सरध्यां मिश्र दान थपे छे, मिश्र वालां री सरघा नें खोटी कहे छे, आपरा बोल्यां री आपनें समझ न कांड, मिश्र थापण वालां री तो सरघा खोटी छे, मिश्र दान रा सुंस न करावां म्हे किण ने, साघां नें आहार असुघ देवण रो, अल्प दोष नें बहोत निरजरा जाणें छें, वले साघां रे अंतराय आहार री पाडी, अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी,

नरक निगोद मे भीखा खावे । चहुं गति में घणो दुख पावे ॥ ३७ ॥ पाप रो अंस न लागो लिगार । संका सहीत पिण नही लीयो तिणवार ॥ ३८ ॥ उणरे तों घरे साधु वेंहरण गयो नांही । निरणो करे वेहख्यो पातरा मांही ॥ ३९ ॥ पापरो लेप न लागो कांड । जोयकरो निरणो घट मांही ॥ ४० ॥ तिणरी श्रावक ने खवर नही छे लिगार । तिणरा छे निरवद जोग व्यापार ॥ ४१ ॥ पिण श्रावक रें संका पडी तिणवार । तिणरा सावद्य जोग व्यापार ॥ ४२ ॥ निरवद जोग सुं निरजरा ने पुन थाय । तिणने पूछेजे किंसा जोगा सुं हुवे ताय ॥ ४३ ॥ तिण घर रो माल खोयने पाप लगार्यो । तिणरे बोहत निरजरा किण विद्यथायो ॥ ४४ ॥ तिणरो साधु देखे छे सुघ ववहार । तिणरो साघां ने दोप न लागे लिगार ॥ ४५ ॥ ते तो छानो छे तिणरो न पढ्यो उघाड । तिणरो साघां ने दोप न लागो लिगार ॥ ४६ ॥ जब सर्व साघां रो साधुपणों भागे । तिणरे निरवेइ एकंत पापज लागे ॥ ४७ ॥ अल्प पापने निरजरा सरघे किण लेखे । मिश्र उयाप्यो तिण सांमों क्यूं नही देखे ॥ ४८ ॥ पोते पिण मिश्र थापे छे मूंड मिघ्याली । ते तो हीयाफूट गघा रा साथी ॥ ४९ ॥ ते कहे मिश्र मे मुन राखां छां ताय । त्याने पिणत्यांरा भूठरी खवर न काय ॥ ५० ॥ एं त्याग करावे छे किण न्याय । तिणरे निरजरा री कांय देवे अंतराय ॥ ५१ ॥ दातार नें अंतराय दीघी छे विगेखें । तिणने सुंस करार्यो छे किण लेखे ॥ ५२ ॥

श्रावक साधां नें असुघ जाणनें वेंहरावें, तिणनें धर्म ने पाप दोनूंड जाणों ।
 तिणनें असुभतो दान देवण रा, किसे लेखे करावो पचखाणो ॥ ५३ ॥
 मुख सूं कहो मिश्र दान तणा म्हें, किणनेंइ सूस करावां नांही ।
 इण मिश्र दान रा सूस करायां, थांरी सरखा री वरण बूहा नही काई ॥ ५४ ॥
 मूला गाजर जमीकंद दान देवें छें, तिणमें धर्म थोडो नें घणो कहे पाप ।
 तिण दान रा सूस करावों नांही, मिश्र दान जाणी रहो चुपचाप ॥ ५५ ॥
 अल्प पाप ने व्होत निरजर जाणो छो, तिण दान तणां पचखाण करावो ।
 व्होत पाप ने निरजरा अल्प जाणो ये, तिण दान रा सुंस करावो छो किण न्यावो ॥ ५६ ॥
 कोइ कहे यां तो सूतर रो पाठ उथाप्यो, पिण पोतें उथाप्यो ते खवर न कांय ।
 मोह मतवाला व्यूं वोळें अग्यांनी, ते सांभलजो भवीयण चित ल्याय ॥ ५७ ॥
 च्याळं आहार सचित ने असुभता छें, त्यांरा श्रावक त्यांनें कथूं न वेंहरावे ।
 अल्प पाप ने व्होत निरजरा कहे छे, त्यांनें वेंहरावतां संका कयूं ल्यावें ॥ ५८ ॥
 च्यार आहार सचित नें असुभता वेहरे, जव तो यां पाठ साचो करि थाप्यो ।
 च्यार आहार सचित नें असुघ न लेवें, जव पोतेइज थाप्यो ने पोतें उथाप्यो ॥ ५९ ॥
 च्यार आहार सचित साधां ने वेंहरावें, जव श्रावकाइ पाठ साचो कर थाप्यो ।
 च्याळं आहार सचित नें असुघ न देवें, जव त्यांहीज थाप्यो ने त्यांहीज उथाप्यो ॥ ६० ॥
 जेसाइ साध ने जेसाइ श्रावक, यां दोयां रे घट मांहे घोर अंधारो ।
 जेसा कूं तेंसा आय मिलीया छें, उंटरे लारें उंटा वांवी कतारो ॥ ६१ ॥
 अल्प पाप ने व्होत निरजरा उपर, जोड कीची गंगापुर गाम मकार ।
 समत अठारें वरस सतावने, पोह सुद आठम मंगलवार ॥ ६२ ॥

बाल : २२

दुहा

भेषधारी मिष्टी भागलां तणे, भूठ बोलण री संक न काय ।
खोटी खोटी करे छे पळपणा, परभव सूं ढरे नही ताय ॥ १ ॥
धावता बालक री माता भणी, दिव्या देणी नही छे जाण ।
लेणवाली ने पिण लेणी नही, एहवी कहे छे अग्यांनी तांण ॥ २ ॥
तीन च्यार वरस रो बालक हूवो, जाबक हांचल छोडयो छे ताहि ।
ते बालक अन खातो हुवे, तठा पळे दिव्या ले भाहि ॥ ३ ॥
एहवी अछती अछती करे छें पळपणा, लोकां सूं मिलती बात जाण ।
यांरी सरवा सूं एहीज फिट्टा पडे, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

ढाल

[चतुर विचार करीने देखो]

जंबू पद्दना में अठारे नाता चाल्या, ते तो एहीज मिल मिल गावे जी ।
धावतो बालक छोडे दिव्या लीची वेस्या, तिणने तो एहीज सरावें जी ।
भूठबोलां रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
तिण साप्रत धावतो बालक छोडे, एहीज कहे दिव्या लीची जी ।
एहीज इणतें सराय सराय, घणा लोकां में प्रसिध कीची जी ॥ २ ॥
यांरा वड वडेरा दर पीढ्यां लग, इण वेस्या ने घणी सराइ जी ।
वले इणरो खेवो पार हूवो कहे, कहिता सक न आंणी कांड जी ॥ ३ ॥
ए तो साचा जाण ने कहिता आयां, आ तो कूडी न जांणी वातो जी ।
त्यां लारें कुववी कुपातर उठ्या, त्यानेइज भूठा घाल्या साख्यातो जी ॥ ४ ॥
बालक धावतो छोड दिव्या लीची वेस्या, तिणने ठहरायो एकंत कूडो जी ।
इणरा वड वडेरा कहितां आया तयारें, भूठ घाले मूढें दीची धूरो जी ॥ ५ ॥
अठा पळे अठारे नाता एं कहती, ए भूठा ने वले भूठ थासी रे ।
यारे लेखे ए भूठ जाणे जाणे बोले, ते चिहुंति में गोता खासी रे ॥ ६ ॥
बालक घावें तिणरी मानें दिव्या न देणी, ठांणा अंग तीजो ठांणो छे साखी जी ।
ओ पिण भूठ जाणने बोले छे, इसडा भारीकर्मा छें अन्हावी जी ॥ ७ ॥
ठांणा अंग तीजे ठाणे तीन जणां ने, दिव्या न देणी तांमोजी ।
नपुसक व्याधीयो कलीव तीजो, ओर वरज्या नही तिण ठांमोजी ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वले कहे बालक री दया आंणी ने, बालक री माने दिष्या न देंगी जी ।
 सुघ सावां रा घेष रा घाल्या, त्यांरी छे भूठी कहेणी जी ॥ २५ ॥
 वले एहीज बालक री माने, दिष्या लीघी वतावें जी ।
 एहवा भूठा बोलां छे कुपातर, त्यांरा बोल्या री परतीत नावे जी ॥ २६ ॥
 मेणरेहा बालक छोड दिष्या लीघी, तिणने तो एहीज थापे जी ।
 सुघ साघवीयां आगे दिष्या लीघी, तिणने मूठ बोली नें उथापे जी ॥ २७ ॥
 पद्मावती साघवी साघ पणामे, करकण्डू ने जायो जी ।
 तिण मसाण में बालक ने परठ्यो, तिणरी मन मे न आणी कायो जी ॥ २८ ॥
 अठारे नाता मे बालक छोड वेत्या, चारित लीयो कहे साख्यातो जी ।
 सुघ साघवीया आगे दिष्या लीघी, तिण सूं बोले छे मूठ विख्यातो जी ॥ २९ ॥
 पद्मावती मेणरेहा कुबेर सेत्या वेत्या, सजम लीयो सुखदायो जी ।
 भेषघाख्यां रे लेखे तीनां रें, बालक री दया रही नदी कायो जी ॥ ३० ॥
 यां तीनां ने पहिलां तो यांहीज सराइ, हिचे यांने भूठी ठेराइ जी ।
 साधां ने भूठा घालणने पापी, मूठी मूठी बातां उठाइ जी ॥ ३१ ॥
 किण ही वाइरे बंधो दिष्या लेवा रो, बधो पुरो हूवा दीक्षा लेणी जी ।
 तिण दिन बालक हांचल घावे, यारे लेखे तो दिष्या न देणी जी ॥ ३२ ॥
 जो बालक री मां भेष घाख्यां ने पूछे, दिष्या लेउ के बालक घवाउं जी ।
 यामें घणो घर्म हुवे ते मीने बतावो, ज्यूं हूं सुखसाता पाउंजी ॥ ३३ ॥
 इम पूछ्यां भेषघाख्यां ने जाव न आवें, जब अगल डगल उवा बोले जी ।
 न्याय निरणो तो मूल न दीसे, जब मूठ रो टागरो खोले जी ॥ ३४ ॥
 वीर कह्यो उत्तराघेन दसमे अधेने, समो एक न करणो प्रमादो जी ।
 तो बाइ तो दिष्या लेवण नें उठी, तिण री जेज किम करसी साघो जी ॥ ३५ ॥
 भेषघारी कहे उणने दिष्या न देणी, बालक री दया आंणी जी ।
 सूंस भागा रो कारण कोइ नही छे, एहवी बोले कुपातर वांणी जी ॥ ३६ ॥
 सूंस भांग्या तो हुवे छे अनत ससारी, बालक पाल्या वंधे मोह कर्मो जी ।
 किसा बोल्यां री जिण आगना छें, किसा बोला माहे जिण घर्मो जी ॥ ३७ ॥
 सूंस भांगे ने बालक पाले, तिणमे भेषघारी कहे घर्मो जी ।
 बालक छोडेन दिष्या लेवें, तिणरे वंधें पाप कर्मो जी ॥ ३८ ॥
 सूंस न भागे ने दिष्या लेवे, तिणने भगवंत भाख्यो घर्मो जी ।
 सूंस भागे ने बालक पाले, तिणरें वंधसी पाप कर्मो जी ॥ ३९ ॥
 बालक घवायां में घर्म जाणें, ते निदचे पापंडी पूरा जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, जिण भाप्या घर्म सूं दूरा जी ॥ ४० ॥

वाल धवायां में धर्म जाणें छें,
 तो सामायक मांहे बालक न धवावे,
 किणरें मा ने वाप दोनूं छें बूढा,
 वले जावक धन नही घर मांह्यो,
 त्यारें एक वेटो माइतां नें,
 यारि लेखे तो इणनें दिप्या न देणी,
 एक दिप्या लीयां अनेक दुखी हुवें जब,
 दिप्या लीघां किणने दुख न हुवें,
 धावता बालक री मानें दिप्या न देणी,
 जो एं पाछला दुख पावें त्यांनैं दिप्या न देणी,
 धावता बालक री मानें दिप्या न देणी,
 यारी डाहा हुवे ते वात न मानें,
 बालक री मां दिप्या लेवें तिणरा,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 तीरथंकर चक्रवत बलदेवादिक,
 त्यारें लारें अनेक दुखीया हुआ दीसे,
 सेठ सेन्यापती आदि बड बडा राजा,
 त्यारें पिण न्यातीला दुपीया हुआ,
 केइ निरघन भूखा दलदरीयादिक,
 त्यारि न्यातीला बोहत दुखी तिण विना,
 धावता बालक री मां दिप्या लेवें,
 तो राजादिक दिप्या लीधी छें त्यांरा,
 धावता बालक री मा ने दिप्या दीघां,
 तो राजादिक नें दिप्या दीघी त्यां,
 भेषघाखां ने आप तणां बोल्यां री,
 यां कने दिप्या लीघां लारला दुखी हुवें,
 दिप्या लेणवाला नें जेज न करणी,
 पाछला पाछला री कमाइ जासी,
 पाछला दुखी हूवां मोने पाप न लागें,
 यां सूं मोह तोडे अलगा होसी,
 लारला सुखी दुखी री कीरप करसी,
 आ-सावद्य दया छोड संजम लेसी,

दया जाणें छें रूडी जी ।
 आ दया तो पड गइ पूरी जी ॥ ४१ ॥
 त्यांसूं हाल्यो चाल्यो नहीं जावे जी ।
 वले कवडी कमावणी नावे जी ॥ ४२ ॥
 आण देवें चुगो पांणी जी ।
 माइतां री दया घट आंणी जी ॥ ४३ ॥
 तिणनें पिण दिप्या न देणी जी ।
 जब दीक्षा देणो ने लेणी जी ॥ ४४ ॥
 तिण लेखें घणां नें न देणी जी ।
 तो बूड गइ त्यारी केंपी जी ॥ ४५ ॥
 ओं तो चोडें चलाया गोला जी ।
 केइ मानें तके जावक भोला जी ॥ ४६ ॥
 परिणाम पाहें भेषघारी जी ।
 ते भागल मिष्ट अचारी जी ॥ ४७ ॥
 ते संजम ले सुखीया हुआ जी ।
 केइ हीयो फूटीने मूंआ जी ॥ ४८ ॥
 ते दिप्या ले हुआ सूर जी ।
 केइ अकाले पड गया पूरा जी ॥ ४९ ॥
 संजम ले सुखी हुआ जी ।
 अन विना अकाले मूंआ जी ॥ ५० ॥
 कहे बालक दुखीयो थावें जी ।
 न्यातीला पिण दुख पावें जी ॥ ५१ ॥
 बालक री दया न आंणी जी ।
 पाछिलां री दया क्यूं न आंणी जी ॥ ५२ ॥
 आपिण समझ न कांइ जी ।
 त्यांरी एं पिण नाणे मन माहीं जी ॥ ५३ ॥
 म्हारि कर्म काटे जाणो मोखो जी ।
 संजम लेणों निरदोपो जी ॥ ५४ ॥
 सुखी हूवां मोने नही धर्मो जी ।
 त्यांरा कटसी निकेवल कर्मो जी ॥ ५५ ॥
 आ लोकीक दया जाणो जी ।
 ते निरुचें जासी निरवांणो जी ॥ ५६ ॥

यामें एक जणो जो उज्जड चाले, तिण रो न काढे निस्तारो जी ।
 बडा उंट जिम आगें चालें, लारें बूही जाय कतारो जी ॥ ५७ ॥
 भेषवाख्यां री सरघा ओल्लावण, जोड कीवी पीपाड ममारो जी ।
 संवत अठारें वर्ष गुणसठें, चेत सुद तेरस सोमवारो जी ॥ ५८ ॥



दुहा

केइ भेषधारी आरे पांचमे, ते नांम धरावे साध ।
 त्यांरी सरधा असुध छे अति बूरी, त्यांरें कदेय म जांणो समाध ॥ १ ॥
 त्यांरा टोला घणा छे जू जूया, पूछ्यां कहें म्हें सघला साध ।
 पिण सरधा छे त्यांरी जू जूइ, बलेकर रह्यामांहों मां विवाद ॥ २ ॥
 सरधा तो एक एकण तणी, चोडे खोटी कहे छें साख्यात ।
 पिण विकलां नें समझ पडे नहीं, चोडें दीसे उघाडो मिथ्यात ॥ ३ ॥
 कहिवा ने तो इम कहें, म्हें सगलाइ छां साध ।
 त्यांरें आचार सरधातो मिलें नहीं, तिणसूं मांहोमां करे विषवाद ॥ ४ ॥
 त्यांमें केइ कहें जीव खवावीयां, धर्म नें पुन एकंत ।
 केइ कहें जीव खवावीयां, मिश्र दान कहंत ॥ ५ ॥
 मांहों मां उडावें एक एक नें, त्यांरें लागी मांहों मां टोट ।
 एक एक तणी सरधा मभे, कहें खोटा मे खोट ॥ ६ ॥
 त्यांरें मांहों मां सरधा तणो, फेर घणों छें अतंत ।
 पिण थोडो सों परगट करूं, ते सुणजो मतवंत ॥ ७ ॥

ढलल

[आ अणुकम्या जिण आगन्या में]

प्रथवी पांणी अगन ने वाय, वले वनसपती ने छठी तसकाय ।
 छ काय री छ दानसाला मंडावें, तिणमें एकंत पुन कहे छे ताय ।
 त्यांनें साध सरधे छे मूंड मिथ्याती * ॥ १ ॥
 अथवा छही काय ने जीवां हणेने, त्यांरी जूदी जूदी दानसाला मंडावें ।
 पछे हाथां सूं दान देवे दगचाल, तिणमें एकंत धर्म नें पुन बतावें ॥ २ ॥
 ग्रहस्थ ने मांहो मां छ काय खवावे, अथवा छ काय मारेनं खवावें ।
 तिणमें मिश्र कहे त्यांनें खोटा कहेने, एकंत धर्म ने पुन बतावें ॥ ३ ॥
 कोइ गाजर मूला ने सकरकंद देवें, जमीकंद रो दान देवें छें ताहो ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहे त्यांनें दीया उडायो ॥ ४ ॥
 वेगण वालोलादिक अनेक नीलोती, रांघे रांघे मिथ्याती जीवां नें खवावें ।
 तिणमें मिश्र कहें ज्यांने खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन बतावें ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ चिणा सेकी सेकी ने दांन देवे, कोइ गोहा नें सेकी सेकी देवे धांणी ।
 इत्यादिक अनेक धान सेकी नें देवे, तिणमें एकंत पुन कहे मूढ अग्यांणी ॥ ६ ॥
 कोइ कूआ बाव तलाव खोदावें, वले पावें काचो अणमल पांणी ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जांणी ॥ ७ ॥
 श्रावक नें माहोमां छ्काय खवावे, वले छ्काय मारेनैं जीमावे ।
 तिणमें मिश्र कहे त्यांनैं खोटा सरखे नें, एकंत धर्म ने पुन बत्तावे ॥ ८ ॥
 समाइ पोसा रे काजें जागा करावे, छ् काय जीवां रो करे घमसांण ।
 तिणने एकत धर्म ने पुन बत्ताए, इणमे मिश्र कहे त्याने खोटा जांण ॥ ९ ॥
 श्रावक ने देवे छे वस्त अनेक, छ् काय जीवा रो करे घमसाणो ।
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जांणो ॥ १० ॥
 कल्पे ते वस्त श्रावक ने देवे, कल्पे जिण पेटर ने काल में तांम ।
 तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी पाडी मांम ॥ ११ ॥
 साध बिना छें सगलाइ अनेरा, त्यां सगलां ने दान दीयां कहे पुन ।
 सचित्त अचित्त दीयां कहें पुन निकेवल, मिश्र कहे त्यांरी सरखा ने जाने जंबून ॥ १२ ॥
 तीर्थकर दान दीयो ने कीयो सिनांन, वले दिप्या रा महोछव कीया छे पूरा ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने कहे छे कूडा ॥ १३ ॥
 भगवत पधाख्यां री दीवी बघाइ, तिणने धन धान घरती दीवी छें दांन ।
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जांणें विकल समांन ॥ १४ ॥
 दानसाला मंडाइ परदेसी राजा, समाइ ने पोसा जिम जांणें छे तांम ।
 एकत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहे त्याने खोटा कहे ठाम ॥ १५ ॥
 छ् काय रा जीवा ने हणने मिथ्याती, आहार नीपजाए साधा ने देवे छे दांन ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी जांणें छे खोटी सरखान ॥ १६ ॥
 मिथ्याती साधां ने काचो पाणी वेहरावे, वले वेहरावें कोरो काचों लूण धान ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी सरखा ने कर कर हिरान ॥ १७ ॥
 वले वेहरावें साधां नें सचित्त नीलोती, अथवा रांवे रांवे देवे साधां ने दांन ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जाणे छे घोर अग्यांन ॥ १८ ॥
 आधाकर्मी आदि दे आहार दोषीलो, कोइ मिथ्याती साधां ने देवे छे दांन ।
 तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जांणें छे कपट री खान ॥ १९ ॥
 साधु तो धुजतों देख मिथ्याती, साधु ने तपावें छें हेठो बेसांण ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र री सरखा कहे छें जेंहर समांण ॥ २० ॥
 कोइ साध उजाड में थाको छें तिणने, गाडादिक बेसांणीनैं गांव में आणे ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी सरखा ने खोटी जाणे ॥ २१ ॥

मात पिता बले सासू सुसारादिक,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 बले काको बाबो ने सेंग सगादिक,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 इत्यादिक संसारी अनेक जीवां रो,
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 कोइ अणुकम्पा आणी छकाय नें देवें,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 बंदीवानादिक नें सचित्तादिक देवें,
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 कोइ भय रों घालीयो दान देवे छें,
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 खरच करे छें मूथा रे केडें,
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 कोइ लज्या रो घालीयो दान देवे छें,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छें,
 राबलीया कीरतनीया नें भांड भवईया,
 बले देवे सगा ने पेंरावणी मूसालों,
 हांती नेंतादिक आंमा साह्यां देवें छें,
 तिणने मिश्र कहे त्पाने खोटा कहेने,
 अधर्म दान टालेने नवही दान में,
 मिश्र दान कहे त्पाने खोटा कहे छें,
 मिश्र दान उथापण री जोड कीधी छे,
 नव दान में एकंत पुन कहेने,
 मिश्र दान कहे छें तिणने,
 बले कहे जमारो हार गयो छें,
 मिश्र दान परुमें तिणने कहे छें,
 इम कहि कहि नें एकंत पुन थापें,
 बले मिश्र दान परुमें तिण नें,
 बले तेहीज तिणने साघ सरबें तो,
 बले मिश्र कहे छे तिणने,
 बले तेहीज तिणने साघ सरबें तो,

त्यांरो विनो करे छें हरष घणों आणों ।
 मिश्र कहे त्पाने जाणें छें मूंड अयाणो ॥ २२ ॥
 त्यांरो विनो करे घणों हरषमन आणो ।
 मिश्र कहे त्पाने एकंत खोटा जाणो ॥ २३ ॥
 विनो करे मन हरष आण ।
 मिश्र कहे त्यांरी सरघा नें खोटी जाण ॥ २४ ॥
 अथवा छ काय मारी ने खवावे ।
 मिश्र कहे त्यांरी सरघा नें खोटी सरघावें ॥ २५ ॥
 अथवा छही काय हुणेने जीमावें ।
 मिश्र कहे त्यांरी सरघा ने जाबक उठावें ॥ २६ ॥
 थावरीयादिक नें देवे दरब अनेक ।
 मिश्र कहे त्पाने जाणें खोटा विघोस ॥ २७ ॥
 सेंग सगा न्यात जीमावें तांम ।
 मिश्र कहे त्पाने खोटा कहे गाम गाम ॥ २८ ॥
 जाचक डूंबरादिक ने जाण ।
 मिश्र कहे त्यांरी सरघा ने खोटी पिछाण ॥ २९ ॥
 त्यांने दान देवें मन माहे गर्ब आण ।
 तिणमें पुन कहे मिश्र नें खोटी जाण ॥ ३० ॥
 बले आंमा साह्यां जीमें ने जीमावे ।
 एकंत धर्म ने पुन बतावे ॥ ३१ ॥
 एकंत धर्म पुन बतावे ।
 त्यांरी सरघा ने जाबक जड सू उठावे ॥ ३२ ॥
 तिणमें तो त्पाने जाबक दीया उडाय ।
 मिश्र दान में एकंत खोटी कहे ताय ॥ ३३ ॥
 धर्म तणो धाडायत थाप्यो ।
 इम कहि कहि मिश्र दान उथाप्यो ॥ ३४ ॥
 इण पुन तणों कर दीयो छें नास ।
 मिश्र दान री सरघा रो करे विघास ॥ ३५ ॥
 कह दीयो कागला रो साथी ।
 ते पिण पूरा छें मूंड मिथ्याती ॥ ३६ ॥
 देवालें काढ्यो कहे छें निसंको ।
 त्यांरे पिण नही मिटीयो मिथ्यात रो डंको ॥ ३७ ॥

वले मिश्र दान कहे छें तिण नें,
 अठां दांता मे एकंत पुन थापण ने,
 मिश्र दान री सरघा नें जेंहर कहें छे,
 वले तेहीज तिणने साघ कहे तो,
 इत्यादिक जोड अनेक करेनें,
 एकंत धर्म ने पुन थापण नें,
 मिश्ररी सरघा वाला ने खोटा कहे छे,
 ते पिण निश्चें छे मूंड मिथ्याती,
 ज्याने धर्म तणा घाडायत थाप्या,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघें तो,
 वले पुन रो न्हास कीयो कहें ज्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान कहें त्याने कह्या देवाल्या,
 वले तेहीज देवाल्या नें साघ सरघे तों,
 साप रा मूंडा सरीपा कहि दीया त्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघें तो,
 मिश्र दान कहें छे, त्यारी सरघा ने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छे,
 ते पिण जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 जे साघ कहिता पिण वार न ल्यावे,
 त्यांरा थावक पिण छे ववेकरा विकल,
 कोडांन कोडगमे बोल न मिलें,
 तो पिण मांहीमां साघ सरघे छे,
 एकीको बोल उथाप्यां तिणने,
 अनेक बोल उथाप्यां त्याने साघ कहे छे,
 ए जिण जिण ठामे मिश्र ने थापे,
 मिश्ररी सरघा सूं लोक वूडता जाणे,
 ए जिण जिण ठामें एकत पुन थापे,
 एकंत पुन कहे ते तों पापडीयां री सरघा,
 भेपघाख्यां री सरघा ओलखावण काजे,
 संवत अठारे वरस चौपने,

गाजी ने मुल्लाखारी ओपमा दीधी ।
 मिश्र वालारी घणी फजीती कीधी ॥ ३८ ॥
 वले कहे छे मिश्र नें साप रो मूढो ।
 त्यां पिण विकलां रे मिथ्यात री गूढो ॥ ३९ ॥
 मिश्ररी सरघावाला ने घालीयो कूडो ।
 मिश्र री सरघा उपर न्हाखी छें धूरो ॥ ४० ॥
 वले तेहीज त्यानें जो सरघे साघ ।
 त्यां विकलारें कदेय म जाणो समाध ॥ ४१ ॥
 जव तो अनेक चोरां विच कहि दीया भारी ।
 त्यांरी पिण भव भव मे होसी घणी खुवारी ॥ ४२ ॥
 वले कागला रा साथी कहि दीया ज्याने ।
 फिट फिट कहीजें त्यां विकलां ने ॥ ४३ ॥
 देवाल्यां कह्या तिण कह दीया चोर ।
 त्यांरें अवकार मे अघारो घोर ॥ ४४ ॥
 जव तो भारी जांप्यो त्यांरो जहर मिथ्यात ।
 विगड गड विकलांरी वात ॥ ४५ ॥
 भात भात करने खोटी दरसाइ ।
 त्यांरा बोल्या री त्याने पिण समरुन काइ ॥ ४६ ॥
 वले तेहीज त्यानें कहे छे साघ ।
 त्यारे पिण कदेय म जाणो समाध ॥ ४७ ॥
 असाघ कहिता पिण सक न आणे ॥
 गुर री सरघा पिण नही पिछांणे ॥ ४८ ॥
 त्यांरे सरघा मांहे अनेक बोलारो छे फेर ।
 एहवों छे भेप घाख्यां रे अंघेर ॥ ४९ ॥
 निन्वव कह्या छे श्री भगवान ।
 एहवो भेप घाख्यां रे छें घोर अग्यान ॥ ५० ॥
 ए तिण तिण ठामें एकत पुन थापे ।
 तिणसूं मिश्र री सरघा जावक परी उथापे ॥ ५१ ॥
 एं तिण तिण ठामे मिश्र नें थापें ।
 तिणने विपरीत जाणेने परी उथापे ॥ ५२ ॥
 जोड कीधी छें खेंरवा मभार ।
 आसोज सुद एकम वृहस्पतवार ॥ ५३ ॥

ढलल : २४

दुहा

खोटो जाणुे मिश्र नुें उथापीयो, थाप्यो छुें एकत पुन ।

जव मिश्र वालां पिण त्यानुें उडायनुें, कर दीया जाबक जुवुंन ॥- १ ॥

ढलल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्था में]

मिश्र दान उथापुें एकत पुन थापुें, त्यानुें अंतर ग्यान बिना कह्या छुेआंधा ।
अंतर ग्यान बिना आंधा निश्चुें मिथ्याती, त्यानुें समकत आवारा पिण पड गया जादा ।
त्यानुें साध सरखे छुें मूढ मिथ्याती* ॥ १ ॥

मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्यानुें कह दीया निश्चुें हिंसाधर्मी ।
तो निश्चुें मिथ्याती हुवुें छुें, ते तो साध नही छुें निकेवल अधर्मी ॥ २ ॥
वले मिश्र उथापे एकत पुन थापे, त्यानुें कहुें त्त्यारी अकल गद दपटाइ ।
वले कहे भोला लोकाने भर्म में न्हाखुें, कूडा कूडा कुहेत लगाइ ॥ ३ ॥
हिंसाधर्मी मुख सुूं कहि दीया त्यानुें, वले कहुें त्त्यारी अकल गद दपटाइ ।
वले त्याने तेहीज साध सरखे तो, त्यां विकलां में कला म जाणो काइ ॥ ४ ॥
निरवद दान तुें कह दीयो नुिग्रंथ केरो, सावद्य दान संसार नुें कर दीयो कुेरो ।
तिणमें मिश्र उथापे एकत पुन थापुें, त्यानुें निश्चुें पापडी कह दीया चुेरो ॥ ५ ॥
मुख सुूं तुें पाषंडी कह दीया त्यानुें, इण वातनुें निश्चुें न जाणी भूठी ।
हिंवे तेहीज त्यानुें साध सरखुें तो, हीया निलाड री दोनुइ फूटी ॥ ६ ॥
मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्यानुें कहे छुे ग्यान लोचन विण अध ।
वले तेहीज त्याने साध सरखुें, तुें ते पिण अग्यानी अध नरिद ॥ ७ ॥
मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्याने खोटो मत भाल्युें कहे ताय ।
वले तेहीज त्याने साध सरखुें तो, जब ओं पिण मिथ्या चुेडुे भूला जाय ॥ ८ ॥
मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे, त्याने कहुें छुें अमितर पाटो खोलो ।
अमितर पाटा वाला नुें एहीज साध सरखे, तो विकलां रे वाज्यो मिथ्यात रो भोलो ॥ ९ ॥
मिश्र दान उथापुें एकत पुन थापुें, जीव खवायां पाप न गिणे ते आटो ।
त्यांरी सरधा में कहि दीयो दांणो न नीकलुें, वले कहे त्यानुें थोथा मती पछाटो ॥ १० ॥
हाथां सुूं आरभ करने जीमावुें, तुें पिण हिंसा न माने काइ ।
त्त्यारी बुध तो जाबक बूडी कहे छुे, वले कहे छुें हीया वाडी ढांकणी आइ ॥ ११ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

थोथी कण रहीत कही त्यांरी सरघा नें, वले तेहीज त्याने साघ सरघे' तो, मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, जब तो च्यार तीरथ मां सूं वारे काढ्या, अन तीरथीयां रे जोडायत थापे, वले तेहीज त्यानें साघ सरघे' तो, मिश्र उथापे' एकंत पुन थापे', पछे हुइ कहे छे हिस्व्या धर्म री सरघा, कातीयो पीजीयो कपास कीयो छे, वले तेहीज त्यानें साघ सरघे छे, आरंभ करे जीमावे' कोइ सीधो खवावे, त्याने एकत पुन सरीपो कहे छे, मिश्रवाला तो अग्यानी कहि दीया त्याने, वले तेहीज त्याने साघ सरघे' छे, सचित्त अचित्त दीयां कहे पुन सरीपो, इण मतने तों निश्चेइ कह दीयो कूडो, मिश्र दान उथापे एकंत पुन थापे, तिण सूं उंची अकल रा कह दीया त्याने, कूडो मत तो कह दीयो त्यांरो, वले तेहीज त्यानें साघ सरघे' तो, संबत अठारे नें वरस तेतीसे, मिश्र दांन थाप्यो छे निसंक सू चोडे, एकंत पुन कहें सूतर अर्थ मरोडे, ज्यां ने अर्थ उंघाइज सूभे, सूतर अर्थ उंघा करे त्याने, एहवा अवगुण वतावे' त्यानें साघ सरघे', मिश्र दांन उथापे' एकत पुन थापे, जब मिश्र वाला कहे ए मूठ बोले छे, मिश्र दान उथापे' एकंत पुन थापे', साघ श्रावक त्यानें निरणो पूछे' जब, उणरा घर रो एकत पुन वताए, साघ थइ ने सूघा न बोले',

हीया आडी ढांकणी आइ नेकहें वुध मूंडी ।
 त्यां पिण विकलां री सरघा मूंडी ॥ १२ ॥
 त्याने सिव धर्म्यारो जोडायत थाप्या ।
 जडा मूल सूं त्याने जाबक उथाप्या ॥ १३ ॥
 जब हिंसाधर्मी कहि दीया त्यानें ।
 ववेक रा विकल कहीजे यांने ॥ १४ ॥
 ते पहिला दयाधर्मी हुता कहे तासो ।
 यां तो कातीयो पीजीयो कीयो कपासो ॥ १५ ॥
 त्यां तो समकत संजम खोयो अग्यानी ।
 ते पिण निश्चेइ नही छें ग्यानी ॥ १६ ॥
 कोइ बोवण पावे' कोइ काचो पांणी ।
 त्याने मिश्र वाला कहे निश्चे अनांणी ॥ १७ ॥
 अग्यानी तो निश्चे नही समदिष्टी ।
 तो मिश्र वाला पिण निश्चेइ भिष्टी ॥ १८ ॥
 सुघ असुघ दीयां कहे पुन सरीबों ।
 हाथ रा कांकण ने स्यूं आरीसों ॥ १९ ॥
 ते तो तस थावर माख्यां रों पापन जाणे ।
 त्याने जाबक उठावता सक न आणे ॥ २० ॥
 वले उंची अकल रा त्याने जांणें ।
 एं पिण निश्चे पहिले गुणठाणे ॥ २१ ॥
 एकंत पुन कहे छे त्याने दीया उडायो ।
 खोटी जोड करेने ताह्यो ॥ २२ ॥
 वले गुर री पिण परतीत मूल न राखे ।
 पुन कहे त्याने मिश्र वाला इम भाखे ॥ २३ ॥
 वले गुर री परतीत न राखें लिंगारो ।
 त्यारे' पिण जांणजो पूरो अंवारो ॥ २४ ॥
 आठोइ दान ने धर्म दांन मे घालें ।
 यांरो खोटे' मत आघो नही हाले ॥ २५ ॥
 त्याने मिश्रवाला कहे कपट चलवे' ।
 मूठ बोले उण रा घर रो पुन वतावे ॥ २६ ॥
 भरमावे छें लोग लुगाइ ।
 आ खोटी सरघा त्यानें किण सीखाइ ॥ २७ ॥

नव दानां में एकंत पुन पक्षे, त्यानिं मिथ बाल्य जाणिं मोल्य मोटी ।
 साव्यात सुतर गी वात न माने, त्यांगी सरवा नें एकंत कहें छें खोटी ॥ २८ ॥
 सुतर न मानें एकंत पुन थापे, कूड कपट मु भग्मावें लोक ल्याड ।
 यांनं खोटा कहे तेहीज साव मरवे, त्यां पिण विकलां में कल्य न काड ॥ २९ ॥
 मिथ बाल्य कहें मिथ वीर पक्ष्यां, पुन कहे नें म्हांगें मिथ दान उयाप्यां ।
 ते तो जीव माख्या रो पाप न जाणें, त्यांतो धर्म नें पुन एकंत थाप्यां ॥ ३० ॥
 मिथ दान उयापे एकंत पुन थापे, ते तो मूटी करे छें अयांनी मत्तान्ये ।
 ते अंतर ग्यान विना जीव थांवा, त्यां बाढा कहें छें अमितर कर्मजाये ॥ ३१ ॥
 वीर वचन उयाप्या कहें त्यानिं, अंतर ग्यान विना थांवा कहि दीया त्यानिं ।
 वळे तेहीज त्यानिं साव मरवे, तां ववेकरा विकल कहीजे यानें ॥ ३२ ॥
 मटी ल्यावें नें चल् चडावें, वळे चूल्हों वळे रांधें तरकारी ।
 जे कोड धर्म जाणी नें जीमावें, ब्राह्मण तथा वळे थोर भिग्यागी ॥ ३३ ॥
 त्रिण नें एकंत पुन रो कारण कहें छें, देणवात्या नें जावक न कहें तोटों ।
 लेंगवायो उण री गति जाती, इण मत नें मिथवाल्या जाणिं छें खोटों ॥ ३४ ॥
 खोटो मत तो कहे दीया त्यांगी, त्यानिं वळे तेहीज मरवे छें साव ।
 इमडा छें मूड ववेकरा विकल, ते पिण निमाड निच्वें असाव ॥ ३५ ॥
 वाव नयाव नें कृशा म्हांदावें, वळे पो मांडे पावें कानो पांणी ।
 कंद मूळ नें सतूकार देवे, अणुकायां मन माहं थाणी ॥ ३६ ॥
 एणमें जीव माख्यां रो पाप न जाणें, कहे छें एकंत लाम टिकाणो ।
 गृहो धर्म वनावें लोक नें, कहि ० मूढा मू नवमां टाणो ॥ ३७ ॥
 जीव माख्यां रो पाप न जाणें, कुयातर पोल्यां धर्म जे पुन जाणें ।
 त्यानिं पिण तेहीज साव सरवे छें, ते पिण निच्वें पहलें गुण टाणें ॥ ३८ ॥
 जिण टांमं जीवां री हिंस्या हुवे छें, वळे जाणें जीवां रा जावक प्राण ।
 निण टांमं एकंत पुन पक्षे, त्यांगी खोटी सरवा कहें छें टाण ॥ ३९ ॥
 वळे मेथी, ब्रह्मण, अपरवात्या, त्यांगी सरवा छें मिथ वर्मा री लेली ।
 केड कुळ जेंनी हिंसा वर्मा, त्यांगी पिण सरवा त्यांमूं कहें छें नेरी ॥ ४० ॥
 हिंसा में पुन थापें तो कहि दीया त्यानिं, वळे सिववर्मा री त्यांगी सरवा जाणें ।
 त्यानिं वळे तेहीज साव मरवे छें, ते पिण निच्वें पहिलें गुणटाणें ॥ ४१ ॥
 मिथ न जाणें नें पुन वलाणें, इण सरवा नें कहें छें जावक मंडी ।
 वीतरग रा वचन देखतां, वा कथेय न चान्सी खोटी हुंडी ॥ ४२ ॥
 सरवा तां मूडी कहि दीवां त्यांगी, वळे कही त्यांगी सरवा नें खोटी हुंडी ।
 त्यानिं पिण तेहीज साव सरवे छें, जव यांगी पिण सरवा जावक गड वूडी ॥ ४३ ॥

समत अठारे वरस इगतीसे,
 मिश्र दांन पाबंड्यां चोडें थाप्यो,
 इम भगवंत नें आल देडनें,
 त्यां कूडाबोलां रो कांड पकडीजे,
 पुन कहे त्यानें मिश्रवाला कहे छें,
 मिश्र गोपवे नें मून कहे छें,
 त्यांरी सरघा तो त्यांसूं चोडें कहुणी न जाए,
 वले वीर वचन गोपव्या कहे त्यानें,
 वाख्वार कूडाबोला कह दीया त्यानें,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे छे,
 मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे,
 माहा भय तो नरक निगोद माहे छें,
 पुन कहे त्यानें मिश्र वाला कहं छें,
 वले कूडपखी तो कहि दीयो त्यानें,
 माहा भयकारी सरघा कहे छें त्यांरी,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघे तो,
 त्यांसूं निरणो तो मूल कीयो नहीं जाए,
 उजडपडीया कहे त्याने मिश्र वाला,
 मिश्र दांन उथापे एकत पुन थापे,
 त्याने पूछे तो मून ओले छिप जावे,
 मिश्रीया कहे पुन पाप कहुणों जिण पाल्यो,
 ए तो नास्तक मत सूं मिलता बोले छे,
 आठ दांन नें धर्म मे घाले छें त्यानें,
 मून तके सुघ जाब न दीघां,
 नास्तक मत सूं मिलता कही दिया त्यानें,
 वले तेहीज साघ सरघे छे त्यानें,
 दस दांन नें वले नव पुन माहे,
 साबध मे एकंत पुन सरघे,
 बडा अन्याइ तो कहि दीया याने,
 वले त्यानें तेहीज साघ सरघे तो,
 कोरो अन काचो जल दीघां,
 प्रगट कहिता मूंडा दीसें,
 ६४

मिश्र वाला कीधी जोड मेडता माह्यो ।
 पुन कहे त्यानें जावक दीया उडायो ॥ ४४ ॥
 आप तो न्याराइज होय जावे ।
 मून तणे ओले छिप जावे ॥ ४५ ॥
 त्यासूं तो कहे न्याय बोल्यो नही जायो ।
 वले कहे त्यानें चोडें कपट चलायो ॥ ४६ ॥
 वले कहे त्यानें चोडें कपट चलायो ।
 वले घाल्या निन्व नें पाबंड्यां माह्यो ॥ ४७ ॥
 वले भांत भांत त्याने दीयो उडायो ।
 ते पिण पडीया छे अंधकार माह्यो ॥ ४८ ॥
 तिणनें दोष कहे माहा भय रो ठिकाणो ।
 मिश्र वाला कहे यारो ए फल जाणो ॥ ४९ ॥
 यां आघा ने साची सरघा न सूमें ।
 वले कहे त्यानें आघा जेम अलूमे ॥ ५० ॥
 वले भूठाबोला ने आघा कहुया त्यानें ।
 विकलां री पांत में गिणलेजो याने ॥ ५१ ॥
 दस दांन ने वले नव पुन मांही ।
 त्यामें साच रो सींचों न सरघे कांड ॥ ५२ ॥
 त्याने मिश्र वाला कहे एकंत कूडा ।
 खोटी सरघा परुमे ने होय जाए पूरा ॥ ५३ ॥
 म्हे मिश्र कहां छां ते पिण पाल्यो ।
 वले कहे त्याने भूठी भगडो म्हाल्यो ॥ ५४ ॥
 मिश्रीया कहे मिश्र दांन जो न छे ।
 घणा ने घणा पिछ्छताबोला पछें ॥ ५५ ॥
 वले कहे त्यानें पिछ्छताबोला थापे पुन ।
 जब त्यांरी पिण सरघा छें जावक जवून ॥ ५६ ॥
 त्यारो तो विवरो त्यांसूं कीयो न जायो ।
 ओहीज बडो करे छे अन्यायो ॥ ५७ ॥
 वले साफ बोलता त्यानें न जाणे ।
 पीपल वांधी मूर्ख जिम ताणे ॥ ५८ ॥
 पडदे पडदे पुन जणावे ।
 तिणसूं नवमो ठाणो दिखावे ॥ ५९ ॥

कहें ओ देखों अनेराने दीघां, पुन तणी परकत तिणरे बंधायो ।
 भगवंत निरणों मिश्र नहीं दाख्यों, तो म्हां सूं मिश्र केम कहवायों ॥ ६० ॥
 भेषघास्थ्यां ने ओलखावण काजे, जोड कीषी खेरवा सहर मम्हार ।
 संवत अठारे वरस चौपने, आसोज सुदि पूतम वृहसपतिवार ॥ ६१ ॥



ढलल : २५

दुहल

कलणहल थलवक रल व्रत आदखुल, रलटी खलएँ छेँ मलग ।
तलणनें आहलर तलओ मललेँ नहल, तलण वणलओ सलवु रल सलंग ॥ १ ॥
ए सलंग डेहर सलरल हूवुँ, दुनलओ खलदी खुंद ।
जलण सेरल सलधु गलओ, ते सेरल दीधु वूंद ॥ २ ॥
श्रलवक रल व्रतलं मभे, सलध वणुओ कलण नुओल ।
उघलडुँ वलणलओँ ठग लुक मे, ते भुलल नें खवर न कलओ ॥ ३ ॥
श्रलवक थओ सलध रल भेड में, ठग ठग खलए लुकलं रल मलल ।
वूडेँ थुडल सुख रेँ कलरणेँ, डलण आरुँ हुसल हुवल ॥ ५ ॥
तलणरल वललल कलरत तुल अतल घणल, ते डूरल केम कहवल ।
थुडसल डरगट करु, ते सुणओ कलतुललओ ॥ ५ ॥

ढलल

[वलनल रल भलव सुख सुख गुंजे]

गुण वलण डेहखुओ सलधु रल सलंगु, भेड रे ओलखलए छुँ मलगु ।
ते तुल वरत वलदुणु नलगु, डेड रेँ कलजेँ मलंडुओँ ठलगुँ ॥ १ ॥
ते डर घर गुवरी ओवेँ, जठे वुगल धुओनल हुओओ ओवेँ ।
सूभतुओ आहलर ओणु ने देले, तुल डलण घणु डूछेँ वलगुलेँ ॥ २ ॥
ठग थकुओ ओडुओ ओणलवे, भुलल लुकलं ने भरमलवेँ ।
धुरतलई करेँ ओण ओणु, लुक ओणु ओओ उतम डुरलणु ॥ ३ ॥
इम कलओलं लुक रलओ हुओओ ओवे, तुल मलनेँ तलओलं आहलर वेहरलवेँ ।
धु खलंड दूध दहल मलडलन, मलनेँ देसल दे दे सनमलं ॥ ५ ॥
तलणनेँ ओणओओ मलुडकुओ ठगु, भुलल लुकल नें देवेँ छेँ दगु ।
ठग ठग खलए छेँ लुकलं रल मलल, तलणमे भव भव मे हुसल हुवल ॥ ५ ॥
श्रहसुथ रल भेड में मलग खलवेँ, तुल कडुट दगु टल ओवेँ ।
डेलु श्रहसुथ ओणनेँ तलं, श्रहसुथ सलरुँ हुसल डरलणलं ॥ ६ ॥
सलध रल भेड डहरी नें लुओलवेँ, घणल लुकलं ने वलसमें उडओवेँ ।
ते तुल ठगल उडरलुओ ठगु, भेड रे ललरे देवेँ दगु ॥ ७ ॥

ठग तो ठग ठग माल ल्यावे, पेंला ने पाप नहीं लगावे ।
 तिण तो धन तणों दीयो दगों, तिण सूं धन तणों छें ठगो ॥ ८ ॥
 असाधु थको मांगे ल्यावे, ओं तो पेला ने पाप लगावे ।
 पेंले तो साधु जाणने दीघो, इण साधु रा भेष में लीघो ॥ ९ ॥
 पेले दीघां मे जाण्यो धर्म, इण जाण्यो लागों पाप कर्म ।
 तिण सूं ओ तों छें धर्म ठगों, भेष पेहरे मोटो दीयो दगो ॥ १० ॥
 ओ साध वण्यो विण काजें, निरलजा मूल न लाजें ।
 तिणने पूछ्यां न बोले सूघो, घणो छेडवीयां बोले उंधों ॥ ११ ॥
 भारीकर्मा जिभ्या रो लंपटी, धुरत मायावीयो छें कपटी ।
 तिण आपरों मतलब देख, गुण विण पेंहख्यों साधु रो भेष ॥ १२ ॥
 आछें खावा पीव रे कांम, ओ तों साध वण्यो छें तांम ।
 वले चढ गयो मान रे छाजें, अकार्य करतो नही लाजें ॥ १३ ॥
 इण ने उचो करे कोइ हाथ, तिणरें निश्चें बंधें कर्म सात ।
 धर्म जाणें तो भारी मिथ्यात, चिकण कर्म लागें सात ॥ १४ ॥
 तिणने असणादि हरष सूं दीघो, तिण भारी कर्म बंध कीघो ।
 धर्म जाण्यो तिणरी विशेष खुवारी, ते हूवों मिथ्यात सूं भारी ॥ १५ ॥
 तिण घणा जाण ने बोया, पाप माहें पूरा विगोया ।
 माल खाय ने भारी कीघा, धर्म ठिकाणे दगा दीघा ॥ १६ ॥
 ओ तों साध वणे हूवो भारी, घणा लोकां री कीधी खवारी ।
 आप बूडे ओरां ने बोया, घणा लोकां ने पापी विगोया ॥ १७ ॥
 इसडो पापी हरांम खोर, ते तीर्थकर नो चोर ।
 लूं हरांमी हूवो पको, ज्यारो खावो त्याने दीयो धको ॥ १८ ॥
 बड बडा श्वाक नाम धरावे, इण छोटाने पेहली खमावे ।
 यां साराइ में पड गइ खांमी, इण रो विनो करे सीस नांमी ॥ १९ ॥
 वले विनो करे तिणने खमावें, नीचो होयने सीस नमावे ।
 ओ वदण भेले मस्तक हलावे, साघां ज्यू पाछो तिणने खमावें ॥ २० ॥
 वले मन में मगज न मावें, साधु ज्यू लोकां में पूजावे ।
 मगरुडाइ में होय रह्यो सेठों, कुकडधम राजा होय बेठो ॥ २१ ॥
 दीसतों दीसे मोटो अणगार, वणीयो सासण रो सिणगार ।
 ते तो कूड कपट तणों भंडार, पापी पाप सूं न डरे लिगार ॥ २२ ॥
 एहवा कने बेसे केइ जाय, त्यांरी अकल गइ दपटाय ।
 एहवा कने करे समाई, त्यांरी पिण गई अकल ढंकाई ॥ २३ ॥

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल २५

तिणरे सनमुख बेसैं . आंग, तिण कने दरावें वखाण ।
 तिणने कहे थारी सत वांगो, त्यारेंइ मोटी भोलप जाणो ॥ २४ ॥
 श्रावक तिण पासे आवे, जब लोकां में प्रसंसा थावे ।
 भोलातो जाणे ओ साध हडो, करणी करतूत माहे पूरों ॥ २५ ॥
 तिणने केइतो वांद खमावे, केई हरप सूं आहार वेहरावे ।
 केई कपडो देवे चोखों, जाणे ओ तो साधू निरदोषो ॥ २६ ॥
 तिणने वाद्यां पूज्यां जाणे धर्म, कटता जाणे वले कर्म ।
 असणादिक दीये पिण धर्म जाणे, वेहराए घणो हरष आणे ॥ २७ ॥
 ओ पिण छाने छाने कहे आप, मोने दीया म जाणो पाप ।
 घणे ट्या सूं कांम चलावे, इण विघ लोकां रो माल खावे ॥ २८ ॥
 कने बेस करे तिणसूं वात, घणो वघे लोकां में मिथ्यात ।
 कने वेठो तिण वात विगाडी, सावद्य आजीवकाय वधारी ॥ २९ ॥
 केई जाणे छे ओं साध नांही, साध रा गुण नही इण माही ।
 तो ही हरष सूं देवें आहार, करे करे घणी मनवार ॥ ३० ॥
 कपडा पिण मही मही दे जाण, मन मांहे उजम आण ।
 मागे तका वसत करे त्यार, इसडो छे केकारें अंधार ॥ ३१ ॥
 मन मांहे तो इतरोंई न देखें, ओ साध वण्यो किण लेखें ।
 इण मे दीसे छें मोटी खोड, ओ तीथकर नो चोर ॥ ३२ ॥
 इण साधू रो सांग वणायों, इण कीयो उघाडो अन्यायो ।
 तिण नें इतरोंइ पूछे नाही, ओ पिण निरणो नही घट मांही ॥ ३३ ॥
 कोइ चुतर विचखण ह्वैत, तो तिणने नषेघ सांकड छेत ।
 तू साध वण्यो किण लेखे, तूं तो वरता सांहो न देखे ॥ ३४ ॥
 तूं तो श्रावक थको वणीयो साध, मोटी अकार्य कीयो अगाव ।
 जिण मारग में कपट न पावे, श्रावक थको साध वणजावे ॥ ३५ ॥
 लोका री रोटी मागे खावे, साधु रो भेष धारीने ल्यावे ।
 तू तो साध वण्यो छे ठगो, लोकां ने देवाने दगो ॥ ३६ ॥
 तूं तो दीसे उघाडो कपटी, जिम्या तणों दीसे छे लपटी ।
 तो कने बेसणो नही आछो, तूं तो म्हा छे साचेलो साचो ॥ ३७ ॥
 तू तो ट्यां में मोटो छे ठगो, भेष पाछे देवे छे दगों ।
 भांत भांत नषेदे पूरो, इण रो भेष कराय दे दूरो ॥ ३८ ॥
 पाछो ग्रहस्थ रो भेष करावें, उणरों कुर ने कपट छुडावे ।
 जब उण मांहे हुवे बेराग, तो करदे सर्व सावद्य रा त्याग ॥ ३९ ॥

खावा पीवा री न करे परवाही, वेंराग करें मन माहि ।
 ज्यां लग साधां सूं रहूं छूं न्यारो, किणें पिण नही खांज लिगारो ॥ ४० ॥
 मरणो पिण कर दे कबूल, असल साधू ज्यूं चालें सूल ।
 रहें साधां तणे हजर, नहीं रहें साधा सूं दूर ॥ ४१ ॥
 हुवें साधां तणों सुवनीत, उपजावें पूरी परतीत ।
 साधां रो हुवें आग्याकार, आगन्या नहीं लोपें लिगार ॥ ४२ ॥
 हिवे तो भेष लीयोस लीयो, मो सूं दूर नहीं जायें कीयो ।
 सांकडी वणीया कळूं संथाळूं, लीघो भेष ते नही उताळूं ॥ ४३ ॥
 इसडी मन गाढी धारें, साधु भेष नही उतारें ।
 वले करें तिणरा गुणग्राम, ये म्हारो कपट छोडायो तांम ॥ ४४ ॥
 जो उण उपर आवें घेष, तो ज्युरो ज्यूं राखें भेष ।
 उलटो हुवें तिणरो बेरी, केइ इसडा छें पापी गेरी ॥ ४५ ॥
 जो साध रो भेष न करे दूरों, तो उण रो करें लोकां में फितूरों ।
 प्रसिध चावो करे लोकां मांहि, ओ ठा साध वणीयो छें ताहि ॥ ४६ ॥
 ओ तो उघाडो छें दगादार, कूड कपट तणों छें भडार ।
 इणरी संगत न करणी लिगार, जिण मारग रों लजावणहार ॥ ४७ ॥
 इम कहे सारा लोकां रे मांहि, जब लोक पिण जांणीलें ताहि ।
 इणमे कला न दीसैं काई, इण मांडी छें ठाबाजाई ॥ ४८ ॥
 ओ तो गुण विण वणीयो छे साध, दोष काढ्यां करे विषवाद ।
 ओ तो मान वडाई में खूतो, भेष पेहरी नें यूहीं विगूतो ॥ ४९ ॥
 असाधु थकों साधां ज्यूं पूजावें, ठा ठा लोकां रा माल खावें ।
 मान बडाई में नहीं मावें, ते तो दिन दिन भारी थावे ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थी थको वणीयो छें साध, तिणरे भव भव में होसी असमाध ।
 ते चिहूं गति मांहे गोता खावे, संसार में घणो दुख पावें ॥ ५१ ॥
 पाडे माहा मोहणी कर्म नों बंध, पछें होय जाय मोह अंध ।
 तिणने सवली तो मूल न सुभे, दिन दिन इधिक अलुभें ॥ ५२ ॥
 ग्रहस्थी साधु रो वेस वणावे, ठा ठा लोकां रा माल खावे ।
 भेष रें पाछे खाएं रोटी, आ चाल घणी छे खोटी ॥ ५३ ॥
 भारी करमो जीव विशेखें, ओ साध वण्यो किण लेखें ।
 कदा निकाचत कर्म बंध जावे, तो उतकट्टो संसार बंधावें ॥ ५४ ॥
 एहवा पापी नें दूर तजीजे, एहवा ठारों वेसास न कीजें ।
 इणरी संगत आछी नाही, इणसूं भलो न होसी काई ॥ ५५ ॥

एहवा दुष्टी जीव हुवें ताय, ते तों सावां सूं दे मिडकाय ।
 सावां रो हुवें उलटो वेरी, इसडो भारीकर्मो छे गॅरी ॥ ५६ ॥
 वले बोलें घणों विकराल, अणहुंता कूडा कूडा दें आल ।
 इणरें भूठ तणी सुग नाहीं, पापी पापं सूं डरपें नहीं कांड ॥ ५७ ॥
 इणरी मूर्ख करसी परतीत, ते पिण चिहूँ गति में होसी फजीत ।
 एहवारी माने साची बात, तिणरे वेगों आवे मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 एहवा पापी सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा ।
 इसा नें मूढे नही लगावे, तो समकत ने घको न थावे ॥ ५९ ॥
 तिण कर्नें जाय बेसे बाइ, तिणरे वरत भांगण री लागे साई ।
 एकला री किसी परतीत, एकला ने जाण लेणो विपरीत ॥ ६० ॥
 विगडायल फिरें एकलो, तिणने कदेय म जाणो भलो ।
 इणरी बात तो धुर सूं बूडी, तिणरी संगत कीयां दीसे भूडी ॥ ६१ ॥
 इण कर्नें बेठां आवें आलो, तिणरो कुण काढें निकालो ।
 बात लोकार्में फॅल जावें, बात पाछ्छी ठिकारणें न आवें ॥ ६२ ॥
 जे जे लज्यावंत छें बाई, तिण कर्नें न वैसे जाई ।
 घरे आयां पिण न करे बात, ले लज्यावंत साख्यात ॥ ६३ ॥
 इणसूं बात कीयां आछो नाहीं, वले चेचें हुवें लोकां माहीं ।
 यूँही लोकार्में हुवें फितुरो, अणहुंतों आल आवें कूरो ॥ ६४ ॥
 तिण सूं डाही हुवे ते बाई, तिण कने नही बेसे जाई ।
 तिणनें मूढें पिण न लगावें, घरे आयां पिण नही बतलावें ॥ ६५ ॥
 केकांतों वले कपटाइ मांडी, उघाडी करें ओघारी डांडी ।
 ओघे तो साघपणों नही लीघों, इणने उघाडो कांय कीघो ॥ ६६ ॥
 साघ रो भेष तो आप लीघो, तिण भेष नें दूरों न कीघो ।
 आप बणीयो रह्यो साघ, कपट ज्यूं रो ज्यूं राख्यो अगाव ॥ ६७ ॥
 लोक काई जाणें डांडी उघाडी, लोक काई जाणे डांडी ढकवारी ।
 लोक तो देखें साघ रो भेष, तिणने दांन दे हरष विशेष ॥ ६८ ॥
 तिणतो ज्यूंरो ज्यूं राख्यो भेष, तो कपट में कपट विशेष ।
 तिणसूं पावरो ग्रहस्थ रेणों, के सुघ साघ पणे लेंणो ॥ ६९ ॥
 जो पोतीयों. बांधने मांग खावें, कपट दगों तो टल जावें ।
 पेढी मांडे वखांण सुणावे, ते पिण सावद्य आजीवका वधावें ॥ ७० ॥
 तिण कर्नें जाय वखांण मंडावे, मुदें आगोंवाणी आप थावे ।
 जव इणरी देखादेख, लोक भेला हुवे वगेल ॥ ७१ ॥

जब केइ इनने उत्तम जाण, असणादिक देवे हरेष आण ।
 इणरी अजीवका सावद्य वधारी, लोक बूडवाने हुआ त्यारी ॥ ७२ ॥
 इण कने जाय वखाण मंडावे, तो मिथ्यात घणो वध जावे ।
 इम कीयां मत बंध जाअे न्यारीं, घणा लोकां ने करे खुवारों ॥ ७३ ॥
 पोतीयो बांधने गांम गांम, मिथ्यात वधावे ठाम ठाम ।
 ओ पिण मगरूडाइ भाडें, साघांनेइ वंदण छांडे ॥ ७४ ॥
 घणा लोकानें भिडकावें, साघारी वंदण छोडावें ।
 तिणसूं मांगेनें खाएं तिणरी, संगत नहीं करणी जिणरी ॥ ७५ ॥
 तिण कने नही करणी समाई, तिण कने न वेंसणों जाइ ।
 इणरा सीलरी किसी परतीत, इण तो छोड दीधी छे रीत ॥ ७६ ॥
 इणमे अवगुण दीसैं अथाय, ते पूरा केम कहवाय ।
 ओ तो आगुणग्राही चोर अवनीत, उंधी चलनें वले विपरीत ॥ ७७ ॥
 भेष में ठग ओलखवाण ताहि, जोड कीधी पूहना सहर माहिं ।
 सतावनो वर्ष संवत अठार, माह विद बीज सनीसरवार ॥ ७८ ॥

ढाल : २६

दुहा

साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण सासण में तीर्थ च्यार ।
 ते धर्म उगाइ करे नही, अर्मितर हीयें विचार ॥ १ ॥
 त्यामे साध साधवी री गोचरो, निरवद जोग व्यापार ।
 असणादिक करे ते निरवद्य जोग छें, त्याने पाप न लागे लिंगार ॥ २ ॥
 श्रावक ने श्रावका तणो, खाणो पीणो छेइविरत मभार ।
 जे जे दरब श्रावक भोगवे, ते सावज जोग व्यापार ॥ ३ ॥
 श्रावक भोगवें ते पेहले करण छें, भोगवावे ते दूजें करण जाण ।
 अणामोदें ते करण तीसरें, त्याने पाप लागे छें आण ॥ ४ ॥
 केइ श्रावक खाए छे कमाय ने, केइ श्रावक मागेने खाय ।
 ते भेष राखे ग्रहस्थ तणों, आगे हूंतो ज्युरो ज्युं ताय ॥ ५ ॥
 केइ तो लोक ठावा कारणे, कांइ तो राखे ग्रहस्थ रो मेष ।
 कांई भेष बणावे साधू तणो, ते ठावाने लोक वशेष ॥ ६ ॥
 ए अधवेसडो सांग आछो नही, जिण सासण रे मभार ।
 तिणरा ठगा ने परगट कळं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[विने रा भाव सुख सुख गूजे]

पागडी ने भगो दूर कीधो, माथे पोतीयो बांध लीधो ।
 मूढे मूहपती बांधी साख्यात, भोली पातरा लीधा हाथ ॥ १ ॥
 वले ओधो काख माहें घाल्यो, लोकारे घर बेहरण चाल्यो ।
 इण सांग पांछे मिले रोटी, आ चलगत घणी छें खोटी ॥ २ ॥
 ओ तो वणीयो धर्म ठगों, धर्म री छेर देवें छें दगो ।
 इण भेष सु ठगो चलावे, ठा ठा लोकां रां माल खावे ॥ ३ ॥
 इण भेष सूं लोक ठावे, धर्म जांणी ने आछो बेहरावें ।
 त्यां घररोइ माल गमार्यों, उलटो मिथ्यात ववायो ॥ ४ ॥
 मोला तो जांणे हूवों छें धर्म, पिण उलटा लागा पाप कर्म ।
 इण भेष सूं लोक ठावें, घर रो माल इविरत में गमावे ॥ ५ ॥

ओ जाणें मोतें वेंहरायों इणरें, उसम कर्म लागे छे तिणरें ।
 इण भेष पाछें देवें दगों, ते तो निरुचेंद छें धर्म ठगो ॥ ६ ॥
 इण ओ भेष पहख्यों किण लेखे, आपरा किरतब सहमों न देखे ।
 ओ तो दीसैं उघाडो ठगो, देवें छें घणां नें दगो ॥ ७ ॥
 ओ तो ग्रहस्थ तणी पांत माह्यो, ओ तो सांग किण लेखें वणायो ।
 ओ तो एकंत रोट्यां रे काज, अधवेस वण्यों मुनीराज ॥ ८ ॥
 वेस वणायों पेट रें काजें, निरलजा मूल न लाजे ।
 ते तो भेष रो भांडण हारो, कीयो जिण मारग मे विगाडो ॥ ९ ॥
 ए तो सांग घणों छें अजोग, तिण सूं सरम में पड जाएं लोक ।
 तिण आगें भोला लोक ठगावें, केई डाहा पिण कर्म में खावें ॥ १० ॥
 एहुवो सांग पेहख्यां फिरे तास, भोला हुवे ते बेसें तिण पास ।
 डाहा हुवें ते मूडें न लगावें, तिण ने पेंला पिण नहीं बतलावें ॥ ११ ॥
 इणतो साख्यात आप्यों सांगों, जिण मारग माहे पाडीयों भांगों ।
 अद्ध वेस सूं पर घर जावें, तिणनें आ पिण लज्या न आव ॥ १२ ॥
 केई कहें साधणों छें भारी, ते लेवा री आसंग नही म्हारी ।
 तिणसूं श्रावक ना वरत लीघा, मोसूं पले जिसा व्रत कीघा ॥ १३ ॥
 तिणसूं पोतीयो बांधीयो माथें, भोली पातरा लीघा हाथें ।
 ओघो काख में घाली जावां, गोचरी आण मांगीनें खावां ॥ १४ ॥
 इण विघ करां आजीवकाय, म्हामे फोडा न दीसैं ताय ।
 म्हारा व्रत पिण चोखा पाल, सुखे गमावां छा काल ॥ १५ ॥
 तिण नें कहें मांग खावो लोकां रो, ओतो छांदो निकेवल थारो ।
 ओघो मूहपती पातरा हाथ, एं क्यूं ले जावो छो साथ ॥ १६ ॥
 जब ओ कहे इण वांना लारे, म्हारो आग हुवे छें सारें ।
 हरष सहीत आगा बोलावें, रोटी पिण आछी तरें वेंहरावें ॥ १७ ॥
 इण भेष पाछें रोटी आवें, इण भेष विण कुण वेंहरावें ।
 तिण सूं ओ भेष वणायों, हिचे कुमी रहे नही कायों ॥ १८ ॥
 जब ओ कहें थे छो धर्म ठगो, भोला लोकां नें देवों छो दगों ।
 इण भेष सूं लोक ठगावें, जाणे म्हानें धर्म थावे ॥ १९ ॥
 थे तो जाणों छों पाप उघाडो, भेष लारे पाडो छो घाडो ।
 थे जाणों हूं इविरत माहे ल्याउ, इविरत मे पेंलां रो माल खाउ ॥ २० ॥
 इण लेखें थे धर्म ठगो, भेष पेंहरी नें देवो छों दगो ।
 माहामोहणी बंधसी कर्मों, छूट जासी जिण धर्मों ॥ २१ ॥

टाको भलीयां हुवे अनंत संसारी, भव भव मांहे हुवेला खुवारी ।
 जिण सूं ओ भेष परों उतारों, इण भेष में घाडो म पाडो ॥ २२ ॥
 जो थारे मांगेने खांणो, तो पाबरो ग्रहस्थ होय जाणो ।
 जथातथ ग्रहस्थ होय जावें, तो कूडा कपट नही थावे ॥ २३ ॥
 जथातथ ग्रहस्थ होय लेवें, दाता पिण ग्रहस्थ जाण देवे ।
 जब नही कांड कपट ने दगों, तब नही कहीजे धर्म ठगो ॥ २४ ॥
 कोइ कहे साध हूँणो छे मोय, घर रा आग्या न देवे कोय ।
 तिणसू अर्ध सांग वणउं, घणा घर रो मांगेने खाड ॥ २५ ॥
 जब घर रा काया होय जावे, मोने आगन्या वेगी आवें ।
 इण कारण मांगेने खाडं ताहि, जावजीव री नही मन मांहि ॥ २६ ॥
 जब उण ने पाछो केणो ताहों, ओ थे सांग क्यांन वणायो ।
 मांगेने जाये ते थारे छावें, ओ भेष ले कर्म कांय वांवे ॥ २७ ॥
 पाबरो ग्रहस्थ रो हुवे साग, रोटीया खाता थे मांग ।
 तो कूड कपट दगों टल जावे, जिण मारग री हलकी न थावे ॥ २८ ॥
 थोर न्यात रो मांगेने खासो, ओर न्यात रो अन्न पाणी ल्यासो ।
 जब न्यातीला छोड देसी आसो, आग्या वेगी देसी तासो ॥ २९ ॥
 इम मुणे कोई हरणे विशेष, तुरत उतारे साधु रो भेप ।
 कोइ कहे थोरा दिनां रे तांड, भेप उतारणी आवे नाही ॥ ३० ॥
 जब उणने वले केंणो पाछों, ओ भेप नही छे आछो ।
 पिण इतरो कर ले वेराग, पाचू विगे रा कर दो त्याग ॥ ३१ ॥
 लूखोइ आहार जिण रो ल्यावो, तिण ने पाछां इतरो जणावां ।
 म्हा ने थां जिम ग्रहस्थी जांणो, म्हा रे इविरत माहे छे खाणो ॥ ३२ ॥
 मो ने देख म भूलो भर्म, मो ने दीवां रो नही धर्म ।
 धर्म साधा ने दीया थावे, तिण रा पाप कर्म खय जावे ॥ ३३ ॥
 म्हे तों आगन्यां लेवा कीयो सांग, पार की रोटी खाड छू माग ।
 इम कहे पार की रोटी ल्यावे, तो कूड कपट दगो टल जावे ॥ ३४ ॥
 जो इतरी पिण करणी न आवे, भेप पिण उतारणी नावे ।
 जब तो साख्यात छे धर्म ठगों, घणा लोकां ने देवे छे दगो ॥ ३५ ॥
 मोला लोक पिण तिण आगे ठगावे, आछो आछो तिणने वेंहरावे ।
 ओ पिण होय जाए गटकायों, तिणसू संजम लीयो न जायो ॥ ३६ ॥
 ताजे ताजे घर गोचरी जावे, जठी तत्री फिर आछो ल्यावे ।
 ओ तो भेप ले हिलीयो गटके, सरस आहार रे कारण भटके ॥ ३७ ॥

भेष ले हूवो उलटों भारी, सुखसीलीयों साताकारी ।
 जाणें इण भेष में मांग ल्याउं, ठग ठग लोकां रा माल खाउं ॥ ३८ ॥
 साधपणों पिण लेणी न आवे, उलटो साधां मे दोष बतावें ।
 साधां रों उलटो हुवे वेंरी, केई इसडा पिण होय जाएं गेरी ॥ ३९ ॥
 साधां नें पिण वंदणा छोडें, दुष्ट परिणामे बेंसैं गोडें ।
 छिदर जोवे दिन रात, आल दे काढे तुरत साख्यात ॥ ४० ॥
 अणहुंता आंगुण बोलें तांम, गामां नगरा ठाम ठाम ।
 साधां री वंदणा छुडावे, लोकां ने साधा सूं भिडकावें ॥ ४१ ॥
 वले लोका आगे कहें एम, हूं साधपणो लेउं केम ।
 आगलइ साधां रे मांहि, साधपणो न दासैं ताहि ॥ ४२ ॥
 तिणसूं श्रावक पणो पालां चोखो, कांइ मोडे रा जासां मोखो ।
 इम कहि लोकां नें भरमावें, ठागा सूं काम चलावें ॥ ४३ ॥
 केई इसडा पापी होय जावें, सुघ साधां सूं भिडकावें ।
 पोतें सुखसीलीयो होय जावे, तिणसूं साधपणों लेणी नावें ॥ ४४ ॥
 तिणसूं साधां रा अवगुण गावे, आपरा अवगुण सर्व छिपावें ।
 पछें संवलोतो मूल न सूभें, वले दिन दिन इधिक अलूभें ॥ ४५ ॥
 ओं तो विवध पणो बोले कूडो, धर्म नो छे दावानल पुरो ।
 भूठ बोलतों न डरे लिगार, इण आरे कीयो अनंत संसार ॥ ४६ ॥
 श्री जिण मारग छे साचो, एहवो भे वधीयो नही बाछो ।
 एहवा ने देखने केई भोला, त्यांरो मन खाएं डमडोला ॥ ४७ ॥
 जाणे म्हे पिण इसडा होय जावां, इण विध मागे म्हेइ खावां ।
 इम करतां करतां मत बांधें, मिथ्यात री वधीतर साधें ॥ ४८ ॥
 साध मारग रा होय जाएं धेखी, निजर वले साधां नें देखी
 साध वधीयो तो मूल न चावे, ह्वेंतो देखें तिणनें भिडकावें ॥ ४९ ॥
 जिण मारण रा दावानल पका, भोला नें देवें धर्म रा धका ।
 इसडा भारीकर्मा जीव, त्या दीधी नरक री नीव ॥ ५० ॥
 तिणसूं अधवेसडों सांग भूंडो, इण सांग सूं घणा जाएं बूडो ।
 ओ अधवेसडों सांग अजोग, तिणसूं वधें मिथ्यात रो रोग ॥ ५१ ॥
 इम सांमल ने नर नारी, इणरो संग न करणो लिगारी ।
 इण साग में मांगे नें खावें, ते घणा ने दगो लगावें ॥ ५२ ॥
 ओ भेष पेंहरी माग खावे, तिणनें भगवंत नही सरावे ।
 जो ओ भगवंत भेष सरावत, तो ओ भेष घणो वध जावत ॥ ५३ ॥
 भगवंत याने केम सरावें, ओं तो उघाडो ठागों दिखावें ।
 घणा लोकां नें मिथ्यात पमावे, त्याने भगवंत केम सरावे ॥ ५४ ॥

ढलल : २७

दुहल

भेडधरल भलग तणल, थलवक थलवकल अनेक छैतलड ।
 तलडलें केडक तल दुडुतल घणल, तलरल दुडुत घणल डरलणलड ॥ १ ॥
 तलडलें डरडव रल चलतल नहल, ते डले नहलें डूड वलचलर ।
 सलडल नें डलल देतल सके नहल, डलड कडडूं न डरें ललगलर ॥ २ ॥
 कलण हल दुडुतल अडडलनी डलवरे, सलडल ने डलल दीडल छे तलड ।
 तलणरल सलकी डलत ठेहरलड नें, देवे ललकल डे डूलडड ॥ ३ ॥
 ठलड ठलड वकतल डलरें, सलडल रल अडडुण डले दलनरलत ।
 उतलरे सलडल रल आंसतल, कर कर डूडल डलत ॥ ॡ ॥
 तलण डूं भेडधरल रलडी घणल, तलणने थलवक डलणें सुड डलन ।
 डूडू डूडू अडडुण डले सलडल तणल, तलणने सरलडे डूड अडडण ॥ ॡ ॥
 तलणडें डूड कडड रल चलल घणल, ते डूरल डूरल केड कहडडड ।
 थलडलसल डरडड कडड, ते सुणडल चलतलतलडड ॥ ६ ॥

ढलल

[आ अडडुकडडल डलख आडनूड डं]

केडू नलगडल नलरलल डथलकडल छै, ते तल कडीडु करण ने वेठल तलर ।
 ते सलडल नें डलल देतल नहलें सके, आंगुण डूलतल डलण न डरें ललगलर ।
 एहुवल दुड थलवक छै भेड डलरुडल रलड ॥ १ ॥
 ते कलरतघनल संसर रे लेखें, ते न डलणे कलणरुड कलडु डडडलर ।
 ते सलडल नें डलल देतल नहलें सके, डूड 'डूलतल न डरें ललगलर ॥ २ ॥
 चुरल डलरल डलदल कुलंछण तलणडें, वले वेसलसघलतल घणल दडलदलर ।
 ते सलडल ने डलल देतल नहलें सके, ते डलड कडडूं न डरे ललगलर ॥ ३ ॥
 केडू कडीडलखुर वथलकडल डडनड, डरणडं डरलणल तणल डलंजणहलर ।
 ते सलडल नें डलल देतल नहलें सके, तलणलरें डरडव रल चलतल न दलसे ललगलर ॥ ॡ ॥
 वले चलडीखुड चूगल हुवे दुडुतल, वले कूड ने कडड तणल डंडलर ।
 ते सलडल ने डलल देतल नहलें सके, तलण डलतव डनड दीडु छे वलगड ॥ ॡ ॥
 तलण रल सलख ने डरख नहलें हुवे ललकल डें, वले कडीडल रलड ने वेठल छै तलर ।
 ते सलडल नें डलल देतल नहलें सके, वले डलतल डडडल तणल लेंणहलर ॥ ६ ॥

*डह आंकडी डुरतुडे कलथल के अतुत डें है ।

हिण रा वोलयः रीपरतीत नही छें लोकांमें,
 ते साधां ने आल देतो वही संके,
 एहवो भेषघास्थां रे श्रावक हुवे तो,
 तिण कने साधां ने आल देणा सीखावे,
 एहवा दुष्टी जीव नें कुवद सीखावे,
 पछें लोक जाणें ओ निरापेखी छें,
 ऐसा ही सेवग ने एंसाड सांमी,
 ते कलेस कदगारो वधीयां छे राजी,
 एहवा दुष्टी जीव छे भारीकर्मां,
 तिण दुष्टी जीव ने छेरेवे कोई,
 एहवा दुष्टी अघांती जीव छे पापी,
 तिणने छेखीयां तो अवगुण होसी,
 ते तो निदक साधां तणो छे निरंतर,
 वले रात नें दिवस छे घेघी साधां रो,
 साधा रे आल अणहुंता देवे छें,
 तिणरे मूढें तों दलदर बोले उघाडों,
 ले साधा रो निदक दुष्ट घणो हुवे,
 वले भव भव में विजोग पडसी वालां रा,
 वले तांणां तांण मिटे नही तिणरी,
 जिहां जासी तिहां दुखीयो होसी,
 एहवा दुष्टी ते श्रावक वाजे लोकामें,
 वले साधां ने आल देता नही सके,
 सूष साधाने आल दे अन्हाखी,
 भूठ रा पाप सूं न डरे पापी,
 एहवा विकलाने विकल आय मिलीया जब,
 ते तो गाडरी प्रवाह ज्यू होय रह्या छे,
 त्यांमे केयक दुट्टी अतही घणों हुवे,
 ते भूठ भूठ आल लोकां ने सीखावें,
 त्यांरो श्रावक साधां रे आल देवे जब,
 काम पडे जब न्यारा होय जावे,
 थोरी वावरी केई सिकार जावे जब,
 आप तो गोली वावे छें अलगोज उमों,

इत्यादिक अनेक आंगुण रो भंडार ।
 तिणरी वात माने ते वूडा कालीघार ॥ ७ ॥
 तिणनें तों सगला में आगे कीयो राखे ।
 पछे ओ तो फिरीयो २ अकाल भापें ॥ ८ ॥
 आपतो वृगलघ्यानी हो जावें ।
 पिण छांनें २ कूड कपट चलावे ॥ ९ ॥
 जेसा कुं तेंसा मलीया छे आय ।
 तिणमें दुष्टी हुवे तिणने देवे लगाय ॥ १० ॥
 त्या छोडदीघी छे लोकां री पिण लजीया ।
 जब ओ त्यांरी वेठोछे करवा ने कजीया ॥ ११ ॥
 तिण ने भलो मिनप तो छेडवे नांही ।
 भलो ह्वेतों म जांगजो कांई ॥ १२ ॥
 वले आल देवण ने उदमी पूरों ।
 ते नरक निगोद सूं नही छें धूरो ॥ १३ ॥
 तिणरे नियमाइ निश्चे भूंडो ह्वेतो जोणों ।
 वले घरमें पिण दलदर घसतों जाणों ॥ १४ ॥
 तिणनें भव भव में दलदरी ह्वेतों जाणो ।
 तिण मांहे संका मूल म आणो ॥ १५ ॥
 लारे लगी विपद रहें लागी ।
 वले भव भव में होसी घणों दोभागी ॥ १६ ॥
 मुहपती वांचनें बोलें मोटका कूडो ।
 त्यांरा श्रावक पणमें पड गई धूरो ॥ १७ ॥
 वले वकवो करे छें दिन नें रात ।
 सुष साधां थकी पडवजीयो मिथ्यात ॥ १८ ॥
 मन माने ज्यूं गालां रा गोला चलावें ।
 उंट रे केडे उटडां चलीया जावें ॥ १९ ॥
 ते आल देतों सके नही तिलमात ।
 ते पिण वकवोकरें दिनरात ॥ २० ॥
 एं पिण मन मांहे हरषत थावें ।
 पिण कुक्कला ने कुब्द तों एहीज सीखावें ॥ २१ ॥
 सिकारी कुत्ता ने साथे लेजावे ।
 पछें सिकारी कुत्ता त्यां पासें लगावें ॥ २२ ॥

ने स्वान् विग मृत्पत्थादिक गन्क जीवान्,
 न्यागि स्वालडी ने वरु मांस धुगवन्,
 त्रिग स्वान् यकी मिकरगि छे गत्री,
 अयं न्यागिं आदक मावान् आल देवें जव,
 मिकरगि तो स्वान् नें वरज गनें जव,
 ज्यूं गं विग यांग आदकानें वरजे,
 मिकरगि स्वान् नें वरजे किग ल्येवं,
 अयं गं विग आदकानें वरजे किग ल्येवं,
 यांग आदक मावां नें आल देवें ने,
 त्रिगनें निस्वां तो पूरा हृये तहीं आयो,
 मेषवानी मावां नें आल देवें ने,
 त्रिग आल मूं हृयत हृयने पानी,
 कांई अनेरो आल मावां नें देवें ने,
 पछे किगिया किगिया अजांग कोकां नें,
 यांगि मरवा माहिं छे हसडो अंवागे,
 त्रिग ने न्यास निरगो तो मूय न कांडे,
 मारिकनी जीव छे मंड मिथ्यात्री,
 न्यानें कुगुर मिर्कया छे पूरा गार्थी,
 कडि कडि नें कितगे गक केहू,
 ने कुट्यां माहिं मांटे कुट्यां छे,
 कांड कांडी छे आल ग फल आलवादन,
 मंवन अठानें मत्रावनें वरमे,

विगाम करे जीवां मागे छे तांम ।
 ने मान् आवें छे मिकाल्यां नें काम ॥ २३ ॥
 त्रिग मिकरगि नें स्वान् वगों काम आवें ।
 गं विग वगां फलकृत होय जावें ॥ २४ ॥
 स्वान् तो किगही जीव गी न करे वात ।
 तो गृ निगमावां नें आल देतर रहि जान ॥ २५ ॥
 यानें विग छे जीवां ग मान्गहार ।
 पातेई आल देता न हरें लिगार ॥ २६ ॥
 त्रिगरी वात नें प्राच मानें छे तांम ।
 तोही कहित्ता फिरे छे गांम धग्गाम ॥ २७ ॥
 न्यांग आदक न्यांगे मात्र मानें ल तांम ।
 पछे गं विग कहित्ता फिरे छे टांम टांम ॥ २८ ॥
 त्रिग आलग वणी पोनें होय जावें ।
 त्रिग आल नें मावां करे दरमावे ॥ २९ ॥
 मावां नें आल दे त्रिगनें जागे छे यको ।
 यानें कर्मा शीयां छे मोटा वको ॥ ३० ॥
 ने मावां नें आल देवगेनें मृग ।
 मान् व तां मव स्वांयनें वडा छे पूरा ॥ ३१ ॥
 मावां नें आल दे मारी कर्मा अन्दाडी ।
 ने मनमूच वार गया छे मावी ॥ ३२ ॥
 मेवाड माहिं पूर महूर मकार ।
 आंगेइ विड अमावस ने कुहमपनवार ॥ ३३ ॥

ढालः २८

[३ जीवा मोह अशुकम्पा न आशिये]

सुध साध साधवीयां री निद्या करे, वले देवे अणहूँता आल जी ।
ते यूही बूडे छे बापडा, बाधेँ उसम करमां रा जाल जी ।
ते तो माठी गति रा प्रावणा* ॥ १ ॥

ओर हर कोइ री निद्या करें, तो पिण बंधे पाप रा पूर जी ।
तो साधां रा निदक पापीया, ते तो जासी वहुती रें पूर जी ॥ २ ॥

साची ने साची कहे, ते तो निद्या म जाणो कोय जी ।
अणहूँती कहें कोइ पर तणी, ते निदक पापी सोय जी ॥ ३ ॥

खाटा खेटो करें नित साध थी, वले अवगुण बोले दिन रात जी ।
षण लोकां रा ब्रंढ मिलें तिहां, करे साधां री तात जी ॥ ४ ॥

जो उ गुण सुणे साधां तणा, तो उणरे लागें अभितर लाय जी ।
रोम रोम माहे घणो प्रजलें, वले मुख देवे कुमलाय जी ॥ ५ ॥

खीटोर खुराइ करें घणो, छल छिदर जोवें दिन रात जी ।
गुण ग्राम करे लोक साधां तणां, तो इणरें छाती मे न समात जी ॥ ६ ॥

कोइ जस कीरत करे साधां तणी, तिण सूं पिण राखे धेष जी ।
ते तो वीद षण्णा छे नरक ना, त्यानिं अरू बरू ल्यो देख जी ॥ ७ ॥

अणहूँतो अवगुण सुणें साधनो, तिण अवगुण नें साचो ठहराय जी ।
पछे उजम आण उदम करें, घणा लोकां मे देवे फेलाय जी ॥ ८ ॥

न्याय निरणो कीयां विण पापीया, बोलें विरुआ वेण जी ।
त्याने चिंता नहीं परभव तणी, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी ॥ ९ ॥

उण रे साध निजर पडें जदी, जब जागें अभितर धेष जी ।
मांठा परिणामा मूंहुं किगाह दे, जाणे बेरी ज्युं वेर वशेष जी ॥ १० ॥

अनेक जीवां रें आल अनेक दे, एक साध रे आल दें एक जी ।
तो पिण भारी पाप छे एहनो, समझ जो आण ववेक जी ॥ ११ ॥

साधां री निद्या करे तेहने, कडवा फल लागें आण जी ।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चुतर सुजाण जी ॥ १२ ॥

केई धुर सूं तो जाए नारकी, तिहां खाए अनंती मार जी ।
पछे जाय पडें तिरजंच में, तिण दुख रो कहितां नावें पार जी ॥ १३ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

नरक विचें तिरजंच में, दुख अनंत गुणा छें तांम जी ।
 काल अनंतो तिहां रहें, तिहां सुख रो नहीं कोइ ठाम जी ॥ १४ ॥
 कदे नरक निगोद थी नीकलें, पांमें नर अवतार जी ।
 तिहां पिण दुख पांमें घणा, ते कहितां नावे पार जी ॥ १५ ॥



दुहा

केई सुध सावां' रा समदाय मे, केई हुवें अवनीत अजोग ।
 तिणने गुर काढें गच्छ वाहि रें, तिणने फिट फिट करें सहू लोग ॥ १ ॥
 ते तो च्यार तीरथ बारें हुवों, तोही मन मांहे अति अभिमान ।
 तिणनें समदिष्टी साध गिणें नहीं, तो पिण कर रह्यो मूढ गुमान ॥ २ ॥
 सुध सावां नें ढीला कहें, जावक कहें सावां नें असाध ।
 रात दिवस त्यांरी निद्या करे, करे घणों घणो विषवाद ॥ ३ ॥
 ते पोतें विकलाइ करें घणी, हूयो आचार थी भिष्ट ।
 सुध सरधा पिण विगडे गइ, समकत पिण हुइ छें निष्ट ॥ ४ ॥
 केयक भिष्ट हुवा छें इण विघ विघे, सेवा लागा दोष अनेक ।
 ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[आ असुकम्पा जिख आगन्या मे]

नीसरणी मांडनें चढे उतरें छे, रात दिवस मांहें बार अनेक ।
 तिण आगना लोपी श्री अरिहंत नी, तिणरो भिष्ट हूवो छें आन्वार ववेक ।
 जो साध निसरणी चढे उतरें तो, तिणने साधु किण विघ सरधीजे ॥ १ ॥
 दसवीकालक पांचमें अछ्येने, सठसठमी गाथा मांय ॥ २ ॥
 तीन गाथा तिहां लगती कही छें, तिहां छकाय जीवां री कही छे विराध ।
 वले हाथ पगादिक साधू रा भागे, तिण साधु रे श्री जिण कही असमाध ॥ ३ ॥
 नीसरणी तले कीड्यां नें लटादिक, जीव अनेक मेला हुवें आय ।
 षडतां उतरतां नीसरणी सरकें, जब अनेक जीव तिहां मारीया जाय ॥ ४ ॥
 वले नीलण फूलण चोमासें आवें, हेठें उंची नें गात्रादिक मांय ।
 वले छोट लागे मेह बूठां चोमासे, वले विघ प्रकारें अजयणा थाय ॥ ५ ॥
 ते तो सेषाकाल नें वले चोमासा मांहे, सांप्रत दोष सेवे छे साख्यात ।
 तिण दीप ने दोष न सरखे अग्यांनी, तिण चोडेंह पडिवजीयो छे मिथ्यात ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले कल्प मरजादा उल्लंघे अग्यांनी,
 वले भूठी परूपणा करे लोकां में,
 कहे साठ वरसां माहे साध हूवो छे,
 वले सूतर रो नाम ले ले अग्यांनी,
 सूतर माहे कठे नहीं चाल्यो,
 इण ब्रात तणो कोइ निरणो करे तो,
 निसंक सूतर रो नाम बताए,
 लाज सरम छोडे नें अग्यांनी,
 एक मास रही नें विहार कीधो छे,
 सेवा काल पिण महीना थी इधिकों रहे छे,
 हालण चालण री सक्त घटे जब,
 वरसां रो नाम न चाल्यो सूतर में,
 नव दीषत सामायक चारित वालो,
 ते सिज्मातर रो आहार तिणनें खवावें,
 सिज्मातर रो आहार जाण जाण खवावें,
 ओ तो कल्प आचार साधु रो न जाणें,
 ए सांप्रत दोष उघाडो दीसे,
 वले मन माहे जाणें हूं प्रवीण पको,
 चोवीसोइ तीथंकर त्यांरा साघां ने,
 नव दिषत गिलाण नें बालक बूढा नें,
 मोटो दोष जाणें छे कमाड खोल्यां में,
 जीव हिंसा करतो नहीं संक्यो,
 कोइ पूछे तो कूड बोलें कपटी,
 मोनें पाप न लागो जेंणा सूं खोल्यां,
 कलाल तणो कुल मुख सूं निषेध्यों,
 तिणने जातो जांणी नें ग्रहस्थ निषेध्यों,
 ग्रहस्थ वरज्यो जब जातो रह्यो छे,
 दुगच्छपीक रो आहार लेतो न संके,
 मेंणा रा घर री गोचरी थापी,
 वले मेंणा री गोचरी करवा दूको,
 लोकां माहे परूपणा प्रसिद्ध लीधी,
 हूं इणनें अहार देउं पिण इण रो न लेउं,

मनमानें जिता दिन रहिवा लागो ।
 तिण छोड दीयो श्री जिणवर मागो ॥ ७ ॥
 तिणने एक ठिकाणें रहिणों थापे ।
 एहवो भूठ बोले वीर वचन उथापें ॥ ८ ॥
 साठ वरस रा नें रहिणों एक ठिकाणें ।
 तिण भूठबोला नें भूठ बोलो जाणें ॥ ९ ॥
 भोला लोकां नें उपजावें वेसासो ।
 चोमासा उपर थाप्यो चोमासो ॥ १० ॥
 विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें ।
 तिण भागल नें हटकं में कुण चलावें ॥ ११ ॥
 साधु ठाणापती रहें एक ठिकाणें ।
 कारण विनां रहें मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 तिण कनें सिज्मातर रो आहार मंगावें ।
 इसरो चेला नें आचार सीखावें ॥ १३ ॥
 तिणमें दोष कहे तिणनें कहे अजाण ।
 इसरी कहे मूढ कर कर ताण ॥ १४ ॥
 तिण दोष नें कर लीधो छे आसांन ।
 हीण बुधी थको करे थोथों गुमान ॥ १५ ॥
 सिज्मातर पिड न कल्पें लिलार ।
 त्यांने पिण नही खांणो सिज्मातर आहार ॥ १६ ॥
 तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो ।
 हिंसा कीयां थी पेंहलो महावरत भागो ॥ १७ ॥
 म्हे तो जेंणा सूं हाथे खोल्यो कमाड ।
 इण विष भूठ बोलनें होय जाये पार ॥ १८ ॥
 तिणरो आहार लेवा नें होय गयो त्यारी ।
 थे म करो इण मारग री हाथां सूं खुवारी ॥ १९ ॥
 पिण उण रा परिणाम एहीज जाणो ।
 तिण भांग दीधी श्री जिणवर आणो ॥ २० ॥
 छाने छाने खावो मेंणा रो आण्यो अहार ।
 ते पिण लोकां में हूवो छे उघार ॥ २१ ॥
 हूं तो मेंणा रो आण्यो न खाउ अहार ।
 इण भूठ तणों पिण हूवो उघार ॥ २२ ॥

कोइ गांम बारे जाय दिष्या लीघी,
 ते सांप्रत दोषीली सूखडी लेतां,
 जो दिष्या लेतो हुवें तिणरो न्यातीलो,
 जो इधिकी आणें ओर साघां काजें,
 दिष्या लेतो थको आहार साथे लेवें तो,
 बले संका पडें ओर सगला साघां री,
 ओर साघां रे काजे मोल लेइ नें,
 ते सूखडी साराइ साघ खाए तो,
 पेंहलां तो गुर चोलपटादिक घोवें,
 जब आप बोयो ते सहिल गिणनें,
 जब चेलो कहे हूं तो थांहरी देखादेखी,
 जो दोष हुवे तो दोयां में दोष,
 जब गुर कहे आगे घोवता आपे,
 जब चेलो कहे आ तो खबर नही माने,
 कपडा घोवण रो गुर चेला रे,
 जब लोकां माहे पिण भूंडा दीठा,
 सोभा विभूषा करवा नें काजे,
 तिण आगना लोपी श्री अरिहत री,
 अनंता सिधां री साख करने,
 ते पिण सूंस भागे ने चेला कीघां,
 सूंस भागेने चेला करतो नही लाज्यो,
 ते पड गयीं च्यार तीर्थ बारें,
 सगला साघ भेला होय मरजादा बांधी,
 ते पिण सूंस सगलाइ भाग्यां,
 सगला साघां मिल नें मरजाद बाघी,
 अनंता सिधां री साख करने,
 सगला सूंस करे मरजाद बांधी,
 तिण लिखत हेठे सगलां आपर कीघा,
 ए सूंस मरजादा भागे तिणनें,
 वले तिणनें निंदक जाणवो च्यार तीर्थ रो,
 इसडा सूंस कर नें पांना माहे लिखाया,
 ते पिण सूंस सगलाइ भांग्या,

कोइ साघ काजें सूखडी मोल ल्यायीं ।
 लोक लज्या पिण छोडी छें तायो ॥ २३ ॥
 तिणरे तांइ आण नें तिणनें देवें कोय ।
 ते वेहरे तो साघु ने दोषण होय ॥ २४ ॥
 आ पिण लोकां में आछी न लागें ।
 तिणरो न्याय निरणो करे किण किण आंगें ॥ २५ ॥
 दिष्या लेणवालो ले नीकले साथ ।
 तिणने निश्चेइ दोष कह्यो जगनाथ ॥ २६ ॥
 त्यांरी देखा देख चेलो पिण घोयो ।
 चेला सूं तोर ने लोकां माहि विगोयीं ॥ २७ ॥
 चोलपटादिक घोयो निसंक ।
 म्हां एकला माहे नहीं छें वंक ॥ २८ ॥
 ते हिवडां उवा रीत छे नांय ।
 ये पेंहला मोने कह्यो नही कांय ॥ २९ ॥
 एक एक रो मांही मां कीयो उवाड ।
 वले मांही मां कीघा कजीया ने राड ॥ ३० ॥
 साघ थइ कपडादिक घोवें ।
 तिणरी चिहंगति माहे खूरावी होवे ॥ ३१ ॥
 चेला करण रा कीया पचखांण ।
 तिण अनंता सिधा री भांगी आण ॥ ३२ ॥
 ते तो होय गयो निश्चेइ भागल सिष्टी ।
 तिणने किण विघ साघसरघें समदिष्टी ॥ ३३ ॥
 तिण मरजाद मे सूंस कीया अनेक ।
 वले भूठ बोले मूढ विनां ववेक ॥ ३४ ॥
 सगलाइ साघ कीया पचखांण ।
 आपे सगलाइ चालां यां सूंस प्रमांण ॥ ३५ ॥
 ते सूंस लिख्या छे पांना रे मांहि ।
 अनंता सिधां री साख ठेहराइ ॥ ३५ ॥
 गिणवों नही च्यार तीर्थ मांही ।
 तिणने बांदें त्यानें पिण आगना नांहीं ॥ ३७ ॥
 अनंता सिधां री साख करनें तांय ।
 वले जांणी जांणी बोले मूंसावाय ॥ ३८ ॥

कदे तों कहे हं इण लिखत में नाहीं,
 कदे कहे म्हे लिखत मे आखर न कीचां,
 कदे तो कहे म्हे सरमासरमी,
 कदे कहे मोनें कहि नें करायों,
 कदे कहे मोसूं कपटाइ दगों करेनें,
 कदे कहे मोनें एकलो करता जांणी नें,
 कदे तो कहे हूं यांरां टोला मांहें रहूँ सूं,
 कदे कहे लिखत म्हारें तांइ कीघों,
 कदे कहे म्हारें उसभ कर्म उदें आया,
 आतो भोलप होय गइ म्हारो,
 कदे तो कहे हूँ सगलाइ चेलां में,
 हूं छोटों री आग्यां मे किण विघ चालूं,
 कदे तो कहे हूं रह्यो यांरा टोला में,
 पिण आत्मा रो अर्थी कोइ न दीओं,
 कदे कहे अविनारी ढालां जोडी ते,
 चेलां नें कह्यो ठाम ठाम कहो थे,
 इत्यादिक भूठ बोले छें अनेक प्रकारें,
 जांणी जांणी भूठ बोले छें अग्यांनी,
 अनंता सिद्धां री साख करे सूंस कीघा,
 ते हुय गयो अपछंदो अवनीत,
 सुध साधां ने ढीला कहि कहि अग्यानी,
 तिणनें च्यारूइ तीरथ साध न जाणें,
 ज्याने ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्यां सूं नरमाइ करे कह्यो मोनें ल्यों थे,
 थे कहो तो दूर करूं म्हारा चेला,
 थे मोनें चलावो जिण रीत चालूं,
 दोय वार गयो त्यांमें जावानें काजें,
 त्यानें अनेक वार कह्यो मोनें मांहें ल्यो,
 ज्यानें ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्या भागला पिण तिणनें मांहे न लीघों,
 पांचू विगेंरा त्यांग कीया तेही भांग्या,
 सूंस यांने लिख्या ते पांनो ही फाड्यो,

कदे कहे म्हे लिखत आरे न कीघों ।
 कदे कहे म्हे एक ससो कर दीघों ॥ ३६ ॥
 लिखत हेठें आखर कीया ताय ।
 कदे कहे म्हे लिखीयो सांकडे आय ॥ ४० ॥
 लिखत रे हेठें आखर कराया ।
 म्हे डरतें थके आखर कीया छे ताय ॥ ४१ ॥
 तठा तांइ म्हारें छें पचखाण ।
 ए सगलाइ मो उपर कीघा मंठाण ॥ ४२ ॥
 जब लिखत हेठें आखर लिख दीया ताय ।
 तिण बात नें हूं रह्यो छूं पिछताय ॥ ४३ ॥
 हूं वडो हूंतो तिणनें मुदें न कीघो ।
 तिण सूं टोलों म्हे छिटकाय दीघो ॥ ४४ ॥
 आत्मार्थी जोवण काम ।
 तिण सूं एकलो नीकल्यो टोला सूं ताम ॥ ४५ ॥
 सगली ढालां मो उपर कीघो छें ताहि ।
 हिवें हूं किण विघ रहूं टोला रे मांहि ॥ ४६ ॥
 परभव रो डर नाणें मूल लिंगार ।
 खोय दीयो तिण संजम भार ॥ ४७ ॥
 ते सूंस भागे नें हूवो एकलो ।
 तिणनें साध सरध्यां किम होसी भलो ॥ ४८ ॥
 आप भागल थको उतकष्टों वाजें ।
 तो पिण नरलजो मूल न लाजें ॥ ४९ ॥
 त्यां भागलां मे मन जावा रो कीघो ।
 त्यां पिण तिणनें मांहे नहीं लीघो ॥ ५० ॥
 थे कहो ते थानें परतीत उपाय ।
 थे मोनें मांहे ल्यो हूं थां मांहे आउं ॥ ५१ ॥
 जातो अनेक कोसां रो पेंडों कीघो ।
 तो पिण तिणनें त्यां मांहे न लीघो ॥ ५२ ॥
 उतकष्टो प्राच्छित छें त्पारें मांहि ।
 तिण भागल री भोलां खबर न कांइ ॥ ५३ ॥
 वले सुखडी रा सूंस ते पिण भांग्यां ।
 रस गिघी थके एहवा सूंस उलांग्यां ॥ ५४ ॥

उषघादिक वासी राखवा लागों, ते पिण कपटाइ करने ताहि ।
 घणी रो ओषघ घणी नें पाछ्यों न सूप्यो, आप रें काजे सूप्यो अनेरा नें जाय ॥ ५५ ॥
 इणविघ नित रो नित आणनें मेले, घणी नें पाछ्यो न सूपे जाइ ।
 घणा मास दिवस तांइ सेव्यों निरंतर, वले तिण महि दोष न सरखे छें ताहि ॥ ५६ ॥
 इसरा मोटा मोटा दोप जाणेनें सेवे, तिण मिष्टी री भोला करसी परतीत ।
 तिणनें साधु सरधी तीखूतो कर वादे, ते पिण चिहूं गतिमें होसी घणां फजीत ॥ ५७ ॥
 सुध साधाने मूर्ख ढोला परूपे, पोते भारी भारी दोष सेवन लागों ।
 वले कुडा कुडा आल देतों नही सकें, ते तो विरत विहूणो होय गयो नागो ॥ ५८ ॥
 तिण भागल नें ओलखावण काजे, जोड कीची नेणवा सहर मभार ।
 संवत अठारे वरस अडताले, महाविदि अमावस ने सोमवार ॥ ५९ ॥

ढाल : ३०

दुहा

सत्रुंजो पर्वत कह्यो, तीर्थ न कह्यो जिणराय ।
जो संका पडें इण वात री; तो जोवो सूतर रे मांय ॥ १ ॥
तिहां एकंत जायगां जाण ने, घणा साधां कीयां संथार ।
तिहां केवल ग्यान उपजाय नें, पोहता मुक्ति मभार ॥ २ ॥
केड अग्यांनी इम कहें, सत्रुंजो पर्वत बंदनीक ।
तिहां कांकरे कांकरे सिध हुवा, तिण सूं ओ तीरथ ठीक ॥ ३ ॥
तिण सूं तीरथ करां जातरा, जावां दूर थकी चलाय ।
वांदां पूजां सत्रुंजो भाव सूं, तो पातक दूर पुलाय ॥ ४ ॥
इण विष विकलाई करें, जेंनीं नाम धराय ।
भूला अग्यांनी भर्म में, जिण घर्म री खवर न काय ॥ ५ ॥
सत्रुंजा पर्वत मभै, साधु सीधा अनेक तिण ठाम ।
बंदनीक तो सिध साध छें, पर्वत बांदे अग्यांनी तांम ॥ ६ ॥
साधु सीधा जायगां बंदनीक हुवें, तो कुण कुण जायगां बंदनीक ।
ते चित्त लागाय नें सांभलो, ज्यूं पडें पाखंड री ठीक ॥ ७ ॥

ढाल

[२ भविष्य सेवो रे साध सयाणा]

जो थें सत्रुंजा पर्वत नें बांदो, तो बांदणा द्वीप अढाई ।
वले बांदणा थानें समुद्र दोनूई, साधु सीधा एती ठोड मांहि रे ।
भविष्य जोवो रे हिरदे विचारी, थें कांय करो आतम भारी रे ।
कुमत्यां हिंसा नही सुखकारी रे * ॥ १ ॥
लाख पैतालीस योजन मांहि, साधु सीधा छे सगली ठामो ।
सत्रुंजा ज्यूं सगली जायगां नें, बांदे पूजं करणा गुण ग्रामो रे ॥ २ ॥
थारें लेखे सगली जायगां बंदनीक, हिं पग मेलसो किण जागां ।
जो थें बंदनीक जायगां ऊपर पग मेलो, तो अकारज करवा कांय लागा रे ॥ ३ ॥
बंदनीक जायगां ऊपर पग मेले, वले करे कारज अनेक ।
मल मातरो तिण ऊपर न्हांखै, वूडो छो विना विवेक रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सत्रुंजा नें बादे हाथ जोड़ी नें, तिण उमर चढे जोड़ी सूधा ।
 वले मल मात्रो तिण उमर न्हांखै, ए तो पूरा अज्ञानी ऊंजा रे ॥ भ० ५ ॥
 ज्यानें बादे ज्यांरा इज सिर उमर, पग देता न हुवे पाछा ।
 इसडों अंधारो छे घट जेहने, डाहा किम जाणे साचा रे ॥ भ० ६ ॥
 थें सत्रुंजा रे सिर पग मेलो, तिणनें तीर्थ थापे बांदो पूजो ।
 आप थापी नें आप उत्थापो, तो डहो कुण माने दूजो रे ॥ भ० ७ ॥
 साधां रा तो गुण बंदनीक, त्यांरी काया पिण नही बंदनीक ।
 तो जायगो बंदनीक किस विघ होसी, थानें आ पिण नहीं छै ठीक रे ॥ भ० ८ ॥
 साधु सीधां सूं जायगां बंदनीय ह्वै, अकारज कियां सूं नही बंदनीक ।
 इण लेखे तो मनुष्य क्षेत्र में, कोइ जायगां नहीं बंदनीकरे ॥ भ० ९ ॥
 सगली जायगां मांहे अकारज हुवा, साधु पिण सीधा सर्व ठाम ।
 अबंदनीक जायगां थारे किसी थापीजे, थें किसी जायगां बांदो शीश नाम रे ॥ भ० १० ॥
 तो पांच तीर्थ जितरी जायगां में, आगे हुआ अकारज अनेक ।
 जो जायगां बिगड़े अकारज कियां तो, हिंवे तीर्थ न बांदणो एक रे ॥ भ० ११ ॥
 सत्रुंजो १ गिरनार २ अष्टापद ३, समेत ४ शिखर आबु ५ बांदे ।
 ए पांच तीर्थ नें थेटरा कहे छें, वले अनेक थाप्या आप छांदे रे ॥ भ० १२ ॥
 ए आपरे छांदे तीरथ थाप्या, कर कर कूडी टेको ।
 वले नाम लेवे सूत्रां रो चोडे, पिण सूत्र में नही एको रे ॥ भ० १३ ॥
 शिव मारग ने मुसलमानां मे, आपणा कुल साहमो देखे ।
 त्यांरा पुराण कुराण मांहे कछो तिणसूं, त्यां तीर्थ थाप्या इण लेखे रे ॥ भ० १४ ॥
 त्यांरी देवादेव तीरथ थापे, आप छांदे झाल रह्या टेको ।
 ते जिनेश्वर देव तो नही थाप्यो, शंका हुवे तो सूतर मांही देखो रे ॥ भ० १५ ॥
 हरकेशी जी ने ब्राह्मणा पूछ्यो, स्नान करवा नें द्रह कुण थायो ।
 कुण तीर्थ कीर्षां थकां म्हांरा, जन्म मरण मिट जायो रे ॥ भ० १६ ॥
 जब यां जिन धर्म रूपियो द्रह बतायो, मली लेख्या रूप पाणी जाणो ।
 इण स्नान कियां जीव निर्मल होसी, तिण सूं पामे पद निर्वाणो ॥ भ० १७ ॥
 तीर्थ करो तुम्हे शील रूपियो, तिण सूं जीव हुवं निकलंको ।
 शीतलीभूत हुवे मुगत मे जाये, तिण मे म राखो शंको रे ॥ भ० १८ ॥
 शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाष्यो, तिण माहे नहीं छे कूडो रे ।
 ओर तीर्थ सर्व लोकिक रा जाणो, तिणसूं कर्म न हुवे पूरो रे ॥ भ० १९ ॥
 शील रूपियो तीर्थ थापेने, यांनें आणिया मारग ठायो ।
 यांरा कुल रा तीर्थ सर्व छडाय नें, सत्रुंजादिक नही वतायो रे ॥ भ० २० ॥
 ६७

जो सत्रुंजादिक तीर्थ कियां सूं, कटता देखता कर्मों ।
तो ओहिज तीर्थ त्यानें पिण कहिता, त्यां कीधां बतावत धर्मों रे ॥ भ० २१ ॥
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाष्यो, उत्तराध्येन बारमों जोवो ।
थें तीर्थ पर्वत पहाड़ थाप नें, नर भव नें कांय खोवो रे ॥ भ० २२ ॥
वले थावरचा अणगार नें पूछ्यो, सुखदेव संन्यासी आयो ।
जात्रा तुम्हारे छे के नहीं छे, सु यात्रा म्हारे छे सुखदायो रे ॥ भ० २३ ॥
जब सुखदेव कहे थारे जात्रा किसी छे, किसी जात्रा करे काटो कर्मों ।
जब सुखदेव संन्यासी नें कहे थावरचा, तूं सांमल म्हारी जात्रा धर्मों रे ॥ भ० २४ ॥
ज्ञान दर्शन चरित तप नें संजम ते, इत्यादिक सारा गुण निरदोखो ।
यांरा जतन करां ते जात्रां छे म्हारे, तिण सूं पामें अधिचल मोखो रे ॥ भ० २५ ॥
यां पिण ज्ञानादिक गुण री जात्रा कही छे, कांइ बाकी न राखी विशेखो ।
सत्रुंजादिक री जात्रा नहीं दाखी, गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे ॥ भ० २६ ॥
ठग ठम सिद्धान्त में जात्रा कही जिहां, ज्ञानादिक गुण बताया ।
आ जात्रा उत्थापे पर्वत पहाड़ थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २७ ॥
भगवते सूत्र मांहि निरवद्य, तीर्थ जात्रा बताई ।
ते तीर्थ जात्रा थां सूं करणी नावें, तिण सूं मांडी थें विकलाई रे ॥ भ० २८ ॥
साधु साधवी श्रावक नें श्राविका, ए च्याहूं तीर्थ जिनजी बताया ।
थें पांचमों तीर्थ सत्रुंजादिक थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २९ ॥
ए च्याहूं तीर्थ रा गुण तेहिज तीर्थ छे, यांरी काया पिण तीरथ नांहीं ।
तो थें सत्रुंजादिक अनेक कहो छे, ते किम तीरथ मांही रे ॥ भ० ३० ॥
थें सावद्य तीर्थ जात्रा थापेनें, छ काय जीवां नें मरावो ।
इसडो अकारज करो आप छांदै, तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे ॥ भ० ३१ ॥
थें जीव मारेनें धर्म कहो छो, ते भगवंत रा नहीं बेंणो ।
थें मोह मतवाला गहला ज्यूं बोलो, थारा फूटा अमितर नेंणो रे ॥ ३२ ॥
जीव हणया मांहें धर्म परूपें, त्यांरो मत जाबक खोटो ।
ते साधु तणा वचन किम सरवे, त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे ॥ ३३ ॥
थानें हणे छेदे भेदे जीवां मारे, तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मों ।
थें ओर जीव मारे धर्म जांगो, ओ थानें किम होसी धर्मों रे ॥ ३४ ॥
थानें हणे त्यानें पाप कहे ते, आ बात नहीं छें भूठी ।
थें धर्म कहो पेल नें हणियां, तिण सूं अमितर री आंख फूटी रे ॥ ३५ ॥
थें जीव हणेनें वले धर्म सरधो, आ मति किण दीधी माठी ।
आ प्रतष चोडें खोटी सरधा, तिणनें माल रह्या छो काठी रे ॥ ३६ ॥

कटता देखता कर्मों ।
त्यां कीधां बतावत धर्मों रे ॥ भ० २१ ॥
उत्तराध्येन बारमों जोवो ।
नर भव नें कांय खोवो रे ॥ भ० २२ ॥
सुखदेव संन्यासी आयो ।
सु यात्रा म्हारे छे सुखदायो रे ॥ भ० २३ ॥
किसी जात्रा करे काटो कर्मों ।
तूं सांमल म्हारी जात्रा धर्मों रे ॥ भ० २४ ॥
इत्यादिक सारा गुण निरदोखो ।
तिण सूं पामें अधिचल मोखो रे ॥ भ० २५ ॥
कांइ बाकी न राखी विशेखो ।
गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे ॥ भ० २६ ॥
ज्ञानादिक गुण बताया ।
इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २७ ॥
तीर्थ जात्रा बताई ।
तिण सूं मांडी थें विकलाई रे ॥ भ० २८ ॥
ए च्याहूं तीर्थ जिनजी बताया ।
इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २९ ॥
यांरी काया पिण तीरथ नांहीं ।
ते किम तीरथ मांही रे ॥ भ० ३० ॥
छ काय जीवां नें मरावो ।
तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे ॥ भ० ३१ ॥
ते भगवंत रा नहीं बेंणो ।
थारा फूटा अमितर नेंणो रे ॥ ३२ ॥
त्यांरो मत जाबक खोटो ।
त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे ॥ ३३ ॥
तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मों ।
ओ थानें किम होसी धर्मों रे ॥ ३४ ॥
आ बात नहीं छें भूठी ।
तिण सूं अमितर री आंख फूटी रे ॥ ३५ ॥
आ मति किण दीधी माठी ।
तिणनें माल रह्या छो काठी रे ॥ ३६ ॥

रांक जीवां ने माख्यां घर्म कहता, वले सिहू तणी परे गाजो ।
भगवंत रा केडायत वाजो, ते पिण नावे थानें लाजो रे ॥ ३७ ॥

●

ढलल : ३१

दुहल

केई जेनी नलंम घरलय नें, बोले भूठ अतीव ।
 सलघु धोवण व्हरे तेह में, कहे बेइंद्री जीव ॥ १ ॥
 ते पोतें तो धोवण पीवें नहीं, पिये त्यांनैं निदे दिन रलत ।
 ते अन्हलखी थकल वकवो करे, त्यांरल घटमलंहे घोर मिथ्यलत ॥ २ ॥
 जिभ्यल रो स्वलद तज्यलं वलनलं, धोवण पियो किम जलत ।
 तिणसूं धोवण उथलपें वहरणो, भूठी कर कर मुख सूं बलत ॥ ३ ॥
 केई कहे वलसी आहलर में, एकण रलत रे मलंहि ।
 जीव बेइंद्री उपजे, तिणसूं सलधलं ने वहरणो नलंहि ॥ ॡ ॥
 पोतें ठंडो आहलर भलवे नहीं, तिण सूं उंधी परूपें एम ।
 एहवल हलंसलधर्म्यलं रल लक्षण वुरल, ते सुणज्यो घर प्रेम ॥ ५ ॥

ढलल

[धर्म आरलधिे ए]

कसलई विचे तो कुगुर वुरल ए, त्यलरे दयल नहीं लवललेश ।
 छ कलयल मलरण तणो ए, दे पलपी उपदेश ।
 पलखंडी गुर एहवल ए, उन्हों पलंणी वरलवे करे आमनल ए ॥ १ ॥
 पछें भर भर ल्यलवे ठलंम, आधलकर्मलं भोगवे ए ।
 त्यांरल दुष्ट घणल परलणलंम, भविक निरणो करो ए ॥ पल० २ ॥
 करडो कलठो धोवण भलवे नहीं ए, उन्हो पलंणी लगे स्वलद ।
 तिण सूं अन्हलखी थकल ए, करे कूडी वलषवलद ॥ ३ ॥
 कहे धोवण में उपजे घणल ए, दोय षडी पलछें जीव ।
 ए उंधी परूपनैं ए, दे छे कुगलतल नीं नींव ॥ ॡ ॥
 धोवण इकवीस जलतल नो ए, सलघु ने लेणो कह्यो जलण आप ।
 आचलरलंण सूतर में ए, ते कुगुरलं दीयो उथलप ॥ ५ ॥
 इकवीस जलतल सूं मललतो थको ए, घणी जलतल रो धोवण जलंण ।
 ते पलण लेणो कह्यो ए, तिणरी न करे मूढ पलच्छलंण ॥ ६ ॥
 अनेरो सस्रंण परलणम्यलं थकलं ए, वणं ने रस फलर जलय ।
 ते धोवण लेणो सलघु नें ए, ते वलकललं ने खवर न कलथ ॥ ७ ॥

अ्यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

कहे घोवण में जीव उपजे ए, दिय घडी मे आय ।
 ते पिण सूतर में नही ए, मूठा थका बोले मूसावाय ॥ ८ ॥
 ततकाल रो घोवण नहीं वेहरणों ए, घणी बोलां रो घोवण लेणो जाण ।
 दसवैकालक में कह्यो ए, तोही करे अग्यानी तांण ॥ ९ ॥
 कहे घोवण मे जीव उपजे ए, ते अन तणे परवेण ।
 एहवो मूठ बोलनें ए, कर रह्या कूड कलेश ॥ १० ॥
 जो घोवण में जीव उपजे ए, तो रोटी में ई उपजे आंण ।
 दिय घडी मभे ए, ए लेखो वरोवर जाण ॥ ११ ॥
 इमहिज ढाल खीच घाट में ए, इत्यादिक सगलो अन जाण ।
 सगलां में जीव उपजे ए, घोवण सूं याने ल्यो पिछांण ॥ १२ ॥
 कठे पांणी थोडो नें अन घणो ए, कठे अन थोडो पांणी अत्यन्त ।
 पांणी ने अन सर्व में ए, यां सगलां रो एक विरतंत ॥ १३ ॥
 दूध री जावणी रा घोवण मभे ए, यांमें उपजे वेइंद्री आय ।
 तो दूध मे पिण उपजे ए, पांणी मिले छे तिण मांय ॥ १४ ॥
 वले दही ने छाछ रा घोवण मभे ए, यांमें उपजे वेइंद्री आय ।
 तो उपजे दही छाछ में ए, पांणी मिले छें यारे ई मांय ॥ १५ ॥
 जिण जिण दरब रा घोवण मभे ए, जो उपजे वेइंद्री आय ।
 तो दरब में ई उपजे ए, पांणी मिले छे दरब रे मांय ॥ १६ ॥
 इतरा काल पछें जीव उपजे ए, ते सूतर में न कह्यो भगवंत ।
 उपजता जीव जाण ने ए, वदरे नही मतिवंत ॥ १७ ॥
 केई रात बासी रोटी मभे ए, कहे उपजे वेइंद्री आय ।
 ते साधु ने नही वेहरणी ए, एहवी कूडी करे वकवाय ॥ १८ ॥
 ऊन्ही रोटी ततकाल री ए, ते खातां लागे स्वाद ।
 ठंडी भावे नहीं ए, तिण सूं बोले मिरखावाद ॥ १९ ॥
 जीम तणा- लंपटी थका ए, ठंडी रोटी मांहे कहे जीव ।
 न कहे तो लेणी पडे ए, तिणसूं बोले भूठ सदीव ॥ २० ॥
 लाडू लापसी सीरा पकवान ने ए, बासी बहिरे मन चाय ।
 रोटी बहिरे नहीं ए, तिण मांहे जीव वताय ॥ २१ ॥
 जो बासी रोटी में जीव उपजे ए, तो लाडू आदि दे सगलां मे जाण ।
 अन्न पांणी सगलां मभे ए, इणरी न करे मूड पिछाण ॥ २२ ॥
 लाडू लापसी सीरो तो भावे घणो ए, ठंडी रोटी भावे नांहि ।
 तिण सूं अन्हाखी थका ए, जीव कहे ठंडी रोटी मांहि ॥ २३ ॥

पोहर रात गयां रोटी करे ए, तिणने नहीं वेंहरे परभात ।
 तिणमें जाणे जीवडा ए, तीन पोहर निकली कहे रात ॥ २४ ॥
 तो परभाते रोटी नीपजे ए, आथम्यां सूधी खाणी नांहि ।
 पोहर च्यार नीकल्या ए, इण लेखे बेइंद्री तिण मांहि ॥ २५ ॥
 उन्हाला री रात नान्ही हुवें ए, दिन मोटो छें साख्यात ।
 कदे फेर दोढो परे ए, लेखो कीयां विना क्यूं खात ॥ २६ ॥
 रात पड्यां जीव ऊपजें ए, दिन रा न उपजें तिण मांय ।
 तो किण ही सूतर मभे ए, साचा हुवे तो काढ बताय ॥ २७ ॥
 केई बासी वहिरे सीयाला मभे ए, शील सातम सूधी ताहि ।
 आगे वहिरे नहीं ए, ते पिण नहीं सूत्र रे मांहि ॥ २८ ॥
 बासी विणस्यो नें क्यो घणो ए, वले अत्यन्त कूह्यो असार ।
 एहवो आहार भोगवे ए, तो पिण नाणे द्वेष लिंगार ।
 दसमां अग में कह्यो ए ॥ २९ ॥
 वले भगवंत वासी वहरियो ए, जोवो आचारांग मांय ।
 मूरख माने नही ए, चोडे मूला जाय ॥ ३० ॥
 जीभ्या रो लोलपी थको ए, जीव बासी मे कहे ताण ।
 उंधी सरधा थकी ए, बूडे छें मूढ अयाण ॥ ३१ ॥
 जो ठंडी रोटी मे जीव बेइंद्री ए, तो यांरा श्रावक जाण ने कांय खाय ।
 महाजन रा कुल मभे ए, इसडो कांय करे मूढ अन्याय ॥ ३२ ॥
 कदा पोते कुगुरां रा भरभाविया ए, पोते बासी अन्न नही खाय ।
 पिण घर रा मिनख नें ए, ठंडो आहार देवे खवाय ॥ ३३ ॥
 व्यालूं करतां रोटी बचे ए, त्यांनें घरती क्यूं न देवे न्हाख ।
 जाणे छे जीव ऊपना ए, पछे खातां ई नाणे शांक ॥ ३४ ॥
 नित नित खावे बेइंद्री ए, जीव काया करे दूर ।
 दांतां सूं मारेनं गिले ए, त्यांरो श्रावक पणो चकचूर ॥ ३५ ॥
 जीव खाये खवरावे जाण नें ए, त्यां गुर री न राखी परतीत ।
 महाजन रा कुल तणी ए, छोड दीधी त्यां रीत ॥ ३६ ॥
 बासी अन्न मांहि नीलणादिक ऊपजे ए, ते किण ही काल में जाण ।
 देखी नें साधु परिहरे ए, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३७ ॥
 रात्रि भोजन करे तेह में ए, पाप कहे ते न्याय ।
 पिण मुतलब आपरे ए, हुवे जिण सूं दे अधिको बताय ॥ ३८ ॥

भूठ बोले पाप अधिको कहे ए, आपरे उन्हो ल्यावर्ण काज ।
 जिभ्या रा लोलपी थका ए, भूठ बोलता नांणे लाज ॥ ३६ ॥
 पिण भोलां नें खबर पडे नही ए, तिणरो कुण काढे निकाल ।
 विकलां नें कुगुरां न्हांखियो ए, मोटो मिथ्यात रो जाल ॥ ४० ॥
 कोरडू धान ने छाछ भेलां हुवां ए, तो उपजे बेइंद्री तिण मांय ।
 पाखंडी इम कहे ए, ते एकंत मूसावाय ॥ ४१ ॥
 कहे खीच ने छाछ भेलो करी ए, कोई जीमे भाणा मांय ।
 तो उपजे बेइंद्री ए, एहवो दियो भूठ चलाय ॥ ४२ ॥
 जिण जिण धान में कोरडू मिले ए, तिण माहे घाले छास ।
 तो उपजे बेइंद्री ए, ते खाघां हुवे तिण रो विणास ॥ ४३ ॥
 छाछ नें कोरडू धान भेला हुवे ए, विदल दियो तिण रो नाम ।
 एहवा विदल भक्के ए, उपजे बेइंद्री ताम ॥ ४४ ॥
 एहवी करे परूपणा ए, घाले भोलां रे शंक ।
 भिडकावे जिन घर्म थी ए, ओ चोडे कुगुरां रो डंक ॥ ४५ ॥
 आ सरधा विगम्बर मत तणी ए, ते नही माने आगम ज्ञान ।
 केई विगड्या श्वेताम्बरी ए, त्यां पिण लीवी त्यांरी मान ॥ ४६ ॥
 कोरडू धान ने छाछ भेला कियां ए, उपजे बेइंद्री आय ।
 ते नही छे सिद्धांत में ए, ओ कुगुरां दीयो गोलो चलाय ॥ ४७ ॥
 कोरडू धान छाछ भेला कियां ए, जो उपजे बेइंद्री तिण माय ।
 तो इण सरधा रा घणी ए, खाटादिक क्यूं खाय ॥ ४८ ॥
 वेणड तणी रोटी हुवे ए, ते नहीं खाणी छाछ सूं लगाय ।
 इणमें ई जीव ऊपजे ए, उणरी सरधा रो ओहिज न्याय ॥ ४९ ॥
 जाण जाण नें खावे जीव बेइंद्री ए, जो खावे छे बिना आगार ।
 ते भगल ब्रतां तणा ए, त्यांरा श्रावकपणा ने चिक्कार ॥ ५० ॥
 केइ श्वेताम्बर नें दिगम्बरा ए, ते बोले भूठ निसंक ।
 ऊंवी करे परूपणा ए, थारी श्रद्धा माहे मोटो बंक ॥ ५१ ॥
 जो कदा न खावे जाणें ए, आ खोटी मत री छें रुड ।
 इसबी ऊंवी ताणें ए, आगे गया अनंता वूड ॥ ५२ ॥
 बारे कुल री साधां नें कही गोचरी ए, यां कुलां सूं मिलता वले जाण ।
 आचारांग मे कह्यो ए, ते उथापी मूढ अयाण ॥ ५३ ॥
 बारे कुल री कही छे गोचरी ए, ते तो चोथा आरा मांय ।
 हिवडां करणी नहीं ए, एहवो बोले मूषावाय ॥ ५४ ॥

पांचमे आरे साधु साधवी ए, जो चाले सूतर रे न्याय ।
 तो बारह कुल री करे ए, पिण विकला सूं किधी न जाय ॥ ५५ ॥
 ओर कुलां में आछो मिले नहीं ए, पोते भावे सरस आहार ।
 जिभ्यारा लंपटी थका ए, भूठ बोले जनम विगाह ॥ ५६ ॥
 ओर कुल री न करां म्हें गोचरी ए, ओर कुल में तो मद्य मांस खाय ।
 तिण सूं महाजन रा कुल मभे ए, गोचरी करां म्हें जाय ॥ ५७ ॥
 मांस खावे तिण घर वहिरे नही ए, मांस आहारी नें मूंड ले मांय ।
 भिन्न राखे नही ए, एकण पात्रे खाय ॥ ५८ ॥
 जिण कुल रो आहार वहिरे नहीं ए, तिण कुल रा नें माहें ले मूंड ।
 संभोग भेलो करे ए, देखो अग्यान्यां री रूढ ॥ ५९ ॥
 आगे क्षत्री कुल रा राजवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यारे घरे बहिरता ए, साधु साधवी जाय ॥ ६० ॥
 उग्रसेन - राय जीव भोला किया ए, ते गोरो देवा नें ताय ।
 यांरा कुल री रीत थी ए, त्यांरा कुल माहें बहरता जाय ॥ ६१ ॥
 त्यांरा कुल रा हुंता साधु साधवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यांसूं भेला रह्या ए, त्यांरा कुलां में बहरता जाय ॥ ६२ ॥
 ऊंच नीच मध्यम कुल री गोचरी ए, साधु नें कही जिनराय ।
 बारे कुल माहें आविया ए, जोवो सूतर रे मांय ॥ ६३ ॥
 ऊंच कुल क्षत्री राजा तणो ए, मध्यम बाणिया ब्राह्मण जाण ।
 नीच कुल पिण चोखो कह्यो ए, गूजरादिक मिलता पिछाण ॥ ६४ ॥
 बारह कुल री गोचरी निषेधसी ए, तिणरे बोहला पाप ।
 चोर तीथंकर तणो ए, कह्यो जिनेश्वर आप ॥ ६५ ॥
 ऊडू पतासा री परभावना ए, दरावें उपासरा मांहि ।
 वखाण पुरो हूवां ए, ते किण ही सूतर में नांहि ॥ ६६ ॥
 डावारा लोलुपी थका ए, घणा भेला हुवे आय ।
 केवण नें लाडुवा ए, लाजे नहीं मन मांय ॥ ६७ ॥
 आगे आनंदजी आदि श्रावक हुआ ए, त्यारे कोडां रो घन घर मांय ।
 त्यां साधां रा धानक मभे ए, नहीं दीधी परभावना आय ॥ ६८ ॥
 न्हे भगवंत रा मांडला मभे ए, नर नारी मिलता अनेक ।
 जेण दिन पिण श्रावक घणा ए, लाडू बांट्या न दीसे एक ॥ ६९ ॥
 गडू प्रतासा बांटण तणो ए, ओ कुगुरां तणो उपदेश ।
 मुतलब आपरो ए, कोई बुधिवंत जाणे त्यांरी रस ॥ ७० ॥

जो लाडू पतासा बापरे	ए, ते कोई यानें देवे बहराय ।
ए मुतलब आपरो	ए, तिण सूं दीधी कुबुध चलाय ॥ ७१ ॥
वले प्रशंसा बघारवा	ए, मान बडाई काज ।
दरावे परभावना	ए, जाबक छोडे दीधी लाज ॥ ७२ ॥
ज्यारे लाडू पतासा पानें पडे	ए, ते तो करे गुण ग्राम ।
समझे नही धर्म में	ए, त्यारे लाडू पतासा सूं काम ॥ ७३ ॥
धर्म कही कही भोला लोका नें	ए, लाडू पतासा बंदाय ।
घणा रे मन मानियो	ए, तिणरो कुण पूछे न्याय ॥ ७४ ॥
खाणो पीणो विषय इद्रियां तणो	ए, तिण सूं कर्म बंदाय ।
जिनेश्वर इम कह्यो	ए, जोवो सिर्घांत रे मांय ॥ ७५ ॥



रत्न : ३३

आचार री चौपई

ढाल : १

ढुहा

पहिलां अरिहंत नें नर्म, ज्युं सीमे आतम काम ।
 पिण वले विशे वीर नें, ए सासण नायक साम ॥ १ ॥
 कार्य साभी आपणा, ते पोहता निरवाण ।
 सिद्धां नें बंदणा करुं, त्यां भेट्यो आवण जाण ॥ २ ॥
 आचार्य सहुं सारिषा, गुण रत्ना री खाण ।
 ज्वभाय नेः सर्व साध जी, ए पाचूंइ पद वखाण ॥ ३ ॥
 बांदीजे नित एहने, नीचो सीस नमाय ।
 गुण ओलख बंदणा करे, तो भव भव नां दुख जाय ॥ ४ ॥
 सुगुरु कुगुरु दोनूं तणी, गुण विन खबर न काय ।
 पहिलां कुगुरु ने ओलखो, सुण सूतर रो न्याय ॥ ५ ॥
 सूतर साख दीया विना, लोक न माने बात ।
 सांभल नें नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात ॥ ६ ॥
 कुगुरु चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय ।
 थोडा सा परगट करुं, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ७ ॥

ढाल

[आदर जीव विम्यागुस]

ओलखावण दोहरा भव जीवां, कुगुरु चरित अनंत जी ।
 कहितां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंत जी ।
 साधु म जाणो इण चलगत सूं* ॥ १ ॥
 आयाकर्मी थानक मे रहे तो, ते पाडे चारित मे भेद जी ।
 नशीत नें दशमें उदेशे, च्यार महीना रो छेद जी ॥ २ ॥
 अठारे ठणा कहाा जू जूआ, एक विराघे कोय जी ।
 बाल कहाो श्री वीर जिनेसर, साधु म जाणो सोय जी ।
 कुगुरु पिछाणो इण चलगत सूं ॥ ३ ॥
 आहार सिज्या नें वस्त्र पातर, असुध लियां नही संत जी ।
 दसवेकालक छेठे अव्ययने, मिष्ट कहाो भगवंत जी ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

अचित वस्तु ने मोल लरावे, तो सुमत गुप्त हुवे खड जी ।
 महाव्रत, पांचूई भागा, चोमासी नों जी ॥ ५ ॥
 एतो भाव नसीत में चाल्या, उगणीस में उदेश जी ।
 सुध साधु बिन कुण सुणावे, सूत्र नी उंडी रेस जी ॥ ६ ॥
 पुस्तक पातर उपाश्रादिक, लिवरावे ले ले नाम जी ।
 आछा भूंडा कहि मोल बतावे, ते करे ग्रहस्थ नों काम जी ॥ ७ ॥
 गराग नें तो कइयो कहिजे, कुगुरु विचे दलाल जी ।
 बेचगवालो कह्यो वाणियो, तीनां रो एक हवाल जी ॥ ८ ॥
 क्रय विक्रय माहें वर्ते तो, महादोषण छे एह जी ।
 पेतीसमां उत्तराघेन में, साधु न कह्यो तेह जी ॥ ९ ॥
 नितको बहरे एकण घरको, च्यांरा मे एक आहार जी ।
 दसवेकालक तीजा में कह्यो, साधु नें अणाचार जी ॥ १० ॥
 जो ल्यावे नित घोवण पांणी, तिण लोप्यो सूतर नों न्याय जी ।
 बतलायां बोले नहीं सूधा, दोषण दीए छिपाय जी ॥ ११ ॥
 नहीं कल्पे ते वस्तु वेंहरे, तिणमें मोटी खोड जी ।
 आचारांग पेंहले श्रुतस्कंधे, कह दीयो मगवंत चोर जी ॥ १२ ॥
 पेंहलों व्रत तो पूरो पडियो, जब आडा जडे किंवाड जी ।
 कूंटो आगल हुडो अटकावे, तो निश्चें नहीं अणगार जी ॥ १३ ॥
 पोते हाथे जडे उघाडे, ते करे जीवां रा जेन जी ।
 गृहस्थ उघाडी आहार वेंहरावे, तब करे अणहंता फेन जी ॥ १४ ॥
 साधवीयां नें जडवो चाल्यो, तिणरी म करों तांण जी ।
 यां लारें जो साधु जडे तो, ए भागल रा अहनाण जी ॥ १५ ॥
 मन करनें जो बांछे जडवों, तिण नही जाणी पर पीर जी ।
 पेंतीसमा उत्तराघेन में, बरज गया महावीर जी ॥ १६ ॥
 पर निदा में राता माता, चित्त में नही संतोष जी ।
 वीर कह्यो दसमां अंग में, तिण वचन में तेरे दोष जी ॥ १७ ॥
 दिष्या ले तो मो आगे लीजे, ओर कनें दे पाल जी ।
 कुगुरु एहवो सूंस करावे, ए चोडें उंची चाल जी ॥ १८ ॥
 ए बंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सूं भेलप थाय जी ।
 नसीत रे चोथे उदेशे, डंड कह्यो जिणराय जी ॥ १९ ॥
 जीमणधोर में वेहरण जाए, आ साधां री नहीं रीत जी ।
 वरज्यो आचारांग वृहतकल्प में, उत्तराघेन नसीत जी ॥ २० ॥

आलस नही आरा में जातां, वले बेठी पांत वसेष जी ।
 सरस आहार ल्यावे भर पातर, त्यां लज्यां छोडी ले मेष जी ॥ २१ ॥
 चेला करण री चल्पात उंची, चाला बोहत चलाय जी ।
 साथे लीयां फिरे गृहस्थ नें, वले रोकड दाम दराय जी ॥ २२ ॥
 ववेक विकल नें सांग पहराए, मेलो करे आहार जी ।
 सामग्री में जाय वंदावे, फिर फिर करे खुवार जी ॥ २३ ॥
 अजोग ने दिव्या दीधी ते, भगवंत री आग्या बार जी ।
 नसीत रो डंड मूल न मान्यो, ते विटल हुवा वेकार जी ॥ २४ ॥
 विण पडलेह्या पुस्तक राखे, वले जमें जीवां रा जाल जी ।
 पडे कुंधुआ उपजे माकण, जिण बांधी सांगी पाल जी ॥ २५ ॥
 जोवे बरस छ मास निकलीयां, तो पेंहलां व्रत नो खंड जी ।
 नित पडिलेहूण मेली तिणने, एक मास नों डंड जी ॥ २६ ॥
 गृहस्थ नें साथे कहे सदिसो, तो भेलो हुओ संभोग जी ।
 तिणनें साधु किम सरखी जे, लागो जोग नें रोग जी ॥ २७ ॥
 समाचार विवरा सुघ कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी ।
 कागद लिखावे करे आमनां, परहथ दीए चलाय जी ॥ २८ ॥
 आवण जावण वेसण उठण री, वले जायगां देवे बताय जी ।
 इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो दोनूं बराबर थाय जी ॥ २९ ॥
 गृहस्थ नें दे लोट पातरा, पूठा परत विशेष जी ।
 रजोहरण पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुआ ले मेष जी ॥ ३० ॥
 पूछे तो कहे परठ दीया में, कूड कपट मन मांहि जी ।
 काम पडे तो जाय उरा ले, न मिटी अंतर चाहि जी ॥ ३१ ॥
 कहे परठ्यां गृहस्थ ने देइ, बोले वले अन्याय जी ।
 कह्यो अचारांग उत्तराघेन में, साधु परठे एकंत जाय जी ॥ ३२ ॥
 करे गृही सूं बदलो सदलो, पिंडत नाम बराय जी ।
 पूरी पडी सगला वरतां री, ते मेष ले मूला जाय जी ॥ ३३ ॥
 थोडो सो उपघ गृहस्थ ने दीघां, वरत रहे नही एक जी ।
 चोमासी डंड नसीत मे गूंघ्यो, तिण छोडी जिण धर्म टेक जी ॥ ३४ ॥
 विण अंकुस जिम हाथी चाले, थोडो विगर लगाम जी ।
 एहवी चाल कुगुरु री जांगो, कहिवा नें साधु नाम जी ॥ ३५ ॥
 अणुकंपा नही छही काय री, गुण विण कहें में साध जी ।
 ए चरचा अणजोग दुवार में, चिरला परमारथ लाच जी ॥ ३६ ॥

धृष्ट पुष्ट नें मांस बघारे, बले करे विगेरो पूर जी ।
 माठा परिणामा नास्त्रां निरखे, ते साधुपणा थी दूर जी ॥ ३७ ॥
 सरस आहार ले विण मरजादा, तो बघे देही री लोथ जी ।
 काचमणी प्रकाश करे जिम, कुगुरु माया थोथ जी ॥ ३८ ॥
 दबक दबक उतावला चाले, तस थावर मास्त्रां जाय जी ।
 इर्या समिति जोया विण भागी, ते किम साधु थाय जी ॥ ३९ ॥
 कह्यो आचारंग उत्तराधेन में, जो करे चलतां बात जी ।
 उंची तिरछी दिष्ट जोवे तो, छ काय री हुवे घात जी ॥ ४० ॥
 कपडा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी ।
 इधिको राखे दोयबड ओढे, बले बोले मुसावाय जी ॥ ४१ ॥
 उपगरण नें इधिका राखे, तिण मोटो कीयो अन्याय जी ।
 नसीत रें सोल में उद्देशे, चोमासी चारित जाय जी ॥ ४२ ॥
 मूरख नें गुर एहवा मिलिया, ले डूबसी लार जी ।
 साचो मार्ग साधु बतावे, तो लडवा नें छे तयार जी ॥ ४३ ॥
 एहवा गुर साचा कर मानें, ते अंध अग्यानी बाल जी ।
 फोडा पडे उत्कष्टा तिणमें, तो हले अनंतो काल जी ॥ ४४ ॥
 हलुकर्मी जीव सुण सुण हरषे, करे भारीकर्मा वेष जी ।
 सूतर रो न्याय निदाकर मानें, ते डूबा बले विशेष जी ॥ ४५ ॥

ढाल : २

दुहा

समदिष्टी आरे पांच में, थोडी रिघ अपमान ।
मिथ्यदिष्टी जोडे हुसी, बहु रिघ बहु सनमान ॥ १ ॥
समण थोडा ने मुड घणा, पांचमें आरे चैन ।
भेष लेह साघां तणो, करसी कूडा फेन ॥ २ ॥
साधु अल्प पूजावसी, ठांणा अंग में साख ।
असाधु महिमा अति घणी, श्री वीर गया छे साख ॥ ३ ॥
कुगुर कुदेव कुधर्म मे, घणा लोक रजाबंध होय ।
ओल्ल ने निरणों करे, ते तो विरलां जोय ॥ ४ ॥
साधु मारग छे सांकडो, भोला खबर न काय ।
जिम दीवे मरे पतंगियो, तिम पडे पगां में जाय ॥ ५ ॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार ।
उलटा पड जिण धर्म थी, परसी नरक मझार ॥ ६ ॥
महा नसीत में इम कह्यो, गुण विण घारे भेष ।
लाखां कोडा गमे सांवठा, नरकां पडता देख ॥ ७ ॥
लीघा वरत न पालसी, खोटी दिट्ट अयांग ।
तिणने कही छे नारकी, कोइ आप म लीजो तांग ॥ ८ ॥
आगम थी अंवला बहे, साधु नाम घराय ।
सुघ करणी वेगला, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा]

सीघा घर आपे साधु नें, बले ओर करावे आगे रे ।
एहवो उपाश्रो भोगवे, तिणने वज्र किरिया लागे रे ।
तिणनें साधु किम जाणीए# ॥ १ ॥
आचारंग हुजे कह्यो, महा दुष्ट दोषण छे जिणमें रे ।
वीर वचन संवला करो, तो साधुपणो नहीं तिणमे रे ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधु	अर्थ	करायो	उपाश्रो,	छायो लिप्यो ग्रहस्थ बाल रागी रे ।
तिण	थानक	रहे	तेहनें,	महा सावद्य किरिया लागी रे ॥ ३ ॥
त्यानें	भावे	तो	ग्रहस्थ कह्या,	दियो आचारंग साखी रे ।
भेषधारी	कह्या	सिधंत	में,	भगवंत काण न राखी रे ॥ ४ ॥
सिज्यातर	पिंडज	भोगवे,	वले कुब्द केलवे	कपटी रे ।
धणी	छोड	आग्या	ले	अवरनी,
सबलो	दोषण	लागे	तेहनें,	वले नसीत में डंड भारी रे ।
अणाचारी	कह्या	दसवेकालिके,	तिण	भगवंत सीख न धारी रे ॥ ६ ॥
अणुकंपा	आण	श्रावक	तणी,	दरब
दूजे	करण	खंड्यो	वरत	पांचमों,
ग्रहस्थ	जिमावणरी	आमनां,	जो	करे
चोमासी	डंड	नसीत	में,	व्रत
करे	बांसादिकनो	बांधवो,	वले	क्रिया
लीपवो	छायवो	आद	दे,	ते
एहवी	वस्ती	भोगवे,	ते	साधु
मासीक	डंड	कह्यो	तेहनें,	नसीत
बांधे	पडवो	परेच	कनातं	ने,
साधु	अर्थ	क्रिया	ते	भोगवे,
थापीता	थानक	में	रहे,	तिण
भावे	साधुपणा	थी	वेगला,	त्यानें
काच	चशमो	वर्ज्यो	ते	राखनें,
पांचमों	वरत	पूरो	पड्यो,	वले
ग्रहस्थ	आयो	देखी	मोटको,	हावभाव
करे	विछावण	री	आमनां,	ते
ग्रहस्थ	तेरण	आया	साधु	नें,
इण	विध	वहरे	तेहमें,	चारित
साहमों	आण्यो	लेजाए	तेरियो,	ए
यानें	टाले	केडायत	वीर	नां,
धोवणादिक	में	निलोतरी,	वले	जीव
ते	पिण	वहरे	संके	नहीं,
एहवो	अनपाणी	भोगवे,	त्यानें	साधु
जो	सूतर	नं	साचा	करो,
				तो
				चोरां
				री
				पांत
				घातीजे
				रे ॥ १८ ॥
				रे ।
				रे ॥ १९ ॥
				रे ।
				रे ॥ २० ॥
				रे ।
				रे ॥ २१ ॥
				रे ।
				रे ॥ २२ ॥
				रे ।
				रे ॥ २३ ॥
				रे ।
				रे ॥ २४ ॥
				रे ।
				रे ॥ २५ ॥
				रे ।
				रे ॥ २६ ॥
				रे ।
				रे ॥ २७ ॥
				रे ।
				रे ॥ २८ ॥

गह्वर रे सभाय वोल थोकडा, साधु लिखे तो दोषण लगे रे।
 लिखायानें अनुमोदियां, दोय करण उपरला भाने रे।
 पहिले करण लिखायां में पाप छे, तो लिखाया दोष उषाड रे।
 पांच महाव्रत मूळगा, त्यां सगलां में परिया वचारा रे।
 उन्नरण भलावे ग्रहस्थनें, ओ नहीं साधु आचारो रे।
 प्रवचन न्याय न मानियो, लियो नुगत सूं मारण न्योरे रे।
 गह्वर रा उपचि रा जावता, कीवां वरत चकचूरे रे।
 सेवन हुओ संसारियां, ते साधुपणा थी दुरो रे।
 साता पूछे पूछावे ग्रहस्थ नें, ते अविरत सेवण करा रे।
 अणाचारी कह्या दसवेकालिके, वले पांचूई महाव्रत करा रे।
 श्रावक ने वले श्राविका, करे मांहोमाहि करा रे।
 नाता पूछे विनो वियावच करे, यामें धर्म परुपे करा रे।
 अणाचार पूरा नहीं ओलख्या, ते नवभांगा किण करा रे।
 ग्रहस्थनें सीखावे सेवणा, लिया वरत करा रे।
 कारण परियां लेणो कहे साधुनें, करे अधुव वदरे करा रे।
 दानार नें निरजरा धणी, वले थोडो करा रे।
 एहवी ऊंची करे परुपणा, घणा जीवां नें करा रे।
 अगविचारी भाषा बोलता, भारीकर्मां करा रे।
 करे मिष्ट आचार नी थापनां, कहि कहि करा रे।
 द्विर्डा आचार छे एहवो, घणा देव करा रे।
 एक पोते तो पाले नहीं, वले पाले करा रे।
 दोय मूर्ख तिणनें कह्यो, पहलो करा रे।
 पाट बाजोट आप्यां ग्रहस्थ नां, पाछा दे करा रे।
 मरजादा लोपीनें भोगवे, तिण करा रे।
 त्यानें डंड कह्यो एक मास नो, नंसीत करा रे।
 ए न्याय मारण परगट कियां, करा रे।

ढाल : ३

दुहा

घणा असाधु जिन कहा, ते लोक में साधु कहाय ।
सांसो हुवे तो देखलो, दसवेकालक मांय ॥ १ ॥
भेष सगलां रो सारीखो, ते भोला खबर न काय ।
निवरो वीर बतावियो, हूजी गाथा मांय ॥ २ ॥
ग्यान दर्शन चारित तप, ए च्यारां में रक्त अपार ।
एहवे गुणे सहित छे, ते मोटा अणगार ॥ ३ ॥
इण विघ साधु नें ओलखे, ते तो विरला जाण ।
ए न्याय मारग जाण्यां विना, करे अग्यानी ताण ॥ ४ ॥
चोथे आरे अरिहंत थकां, इम हिज खांचा ताण ।
पाबंध में पडता घणा, कर्मा वस लोक अजाण ॥ ५ ॥
भगडा राड हुंता घणा, चोथा आरा मांय ।
पांचमां रो कहिवो किं, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ६ ॥

ढाल

[जोयजो रे कायर हीण]

सावत्यो तो नगरी वीर पवारिया रे, गोशालो भगड्यो छे तिहां आय रे ।
लोक मूंडा सूं वाणी इम वदे रे, कुण साचो कुण मूठो थाय रे ।
पाबंध वचसी आरे पांचमें रे* ॥ १ ॥
घणा लोकारे मन इम मानियो रे, गोशालो भापे ते सत वाय रे ।
वीर नहीं छे जिन चोवीसमो रे, अणहूंतो बोले मुसा वाय रे ॥ २ ॥
केएक उत्तम था ते इम कहे रे, गोशालो जिन नहीं करे अन्याय रे ।
सतवादी वीर जिनंद चोवीसमां रे, ए कदेय न बोले मुसावाय रे ॥ ३ ॥
कितरां एक रो सांसो मिटियो नहीं रे, म्हानें तो समझ पडे नहीं काय रे ।
जिण दिन पिण सगलाइ समज्या नहीं रे, भोल घणी थी लोकां मांय रे ॥ ४ ॥
श्रावक गोसाला रे सुणिया अति घणा रे, इग्यारे लाख इगसठ हजार रे ।
वीर रें एक लाख बले उपरे रे, गुणसठ सहस्र अचिक विचार रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जद पिण पाखडी था अति घणा रे, तो हिवडां पिण पाखडी नो जोर रे।
वीर जिनद मुगत गयां पछे रे, भरत मे हुओ अंधारो घोर रे ॥ ६ ॥
तिणमें धर्म रहसी जिनराजरो रे, थोडोसो आग्या नो चमत्कार रे।
भद्रको परे ने वले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहिं इकबीस हजार रे ॥ ७ ॥
अल्प पूजा होसी सुघ साध री रे, आगूंच वीर गया छे भाष रे।
असाधु री पूजा महिमा अति घणी रे, ठाणा अंग माहें तिणरी साख रे ॥ ८ ॥
ऊओ ऊओ ने वले ऊगियो रे, तो आर्यमियां विन किम उगाय रे।
इण न्याय भवियण नही धर्म सासतो रे, हुय हुय भलपट ने वुभ जाय रे ॥ ९ ॥
लिंगरा लिंगरी वधसी अति घणा रे, करसी मांहो माहि भगडा राड रे।
जे कोइ काढे तिण में खूचणो रे, क्रोध कर लडवाने छे तयार रे ॥ १० ॥
चेला चेली करण रा लोभिया रे, एकंत मत बाघण सूं काम रे।
विकलां ने मूंड मूंड भेला करे रे, दिराए ग्रहस्य ना रोकड दाम रे ॥ ११ ॥
पूजरी पदवी नाम घरावसी रे, मे छां सासण नायक साम रे।
पिण आचारे ढीला सुघ नहिं पालसी रे, नहिं कोइ आतम सावन काम रे ॥ १२ ॥
आचार्य नाम घरासी गुण विना रे, पेटभरा ज्यारो परवार रे।
लपटी तो हूसी इद्दी पोषवा रे, कपट कर ल्यासी सरस आहार रे ॥ १३ ॥
तकसी तो देखी आरा टांमला रे, रिगसी ए जाणी जीमणवार रे।
पात जीमें जिहा जासी पावरा रे, आग्या लोपे हूसी बेकार रे ॥ १४ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

दलवलनल ललगु अधलक, वले वलजे वलड अथलड ।
अटवी डुडुी इंधण घणल, ते कलड आग डुडुलड ॥ १ ॥
आगल सूं इंधण अलगल करे, वले रहे वलजंतु वलड ।
ऊडर जल सूं छलंडलडलं, दलवलनल डलड डलड ॥ २ ॥
तलड डर डुडुवन व्रत आदरे, वले डीलडें डुडुडी कलड ।
अतल सरस आहलर नलत डुडुगवे, तु वलषड वधंतु डलड ॥ ३ ॥
अतल सरस आहलर न डुडुगवे, वले खीणी डलडे कलड ।
डुडुडलवे वलषेरूड अगन नें, सुडतलरस डलणी लुडलड ॥ ॡ ॥
वलषे वधे तलड आहलर न डुडुगवे, घडुडी डुडुडी न करे कलड ।
डलंत डलंत करे नलषेधलडु, सूत्र सलदुडलंतलं डलड ॥ ॡ ॥
आ डुडुल डडु डुडुी घणी, तुडलं डलडुडुल दुडुी डुडुकलड ।
खलणे डुडुहरणे कलत दलडु, इण सडले सरणे आड ॥ ॢ ॥
डेष लेइ डगवलन रु, खलडल लुकलं रु डलल ।
तड डड संजड डलहलरु, कुंदु वण रहुु ललल ॥ ॣ ॥
छदडसंथ एलणे अुलखे, ए डेषंले डुडुल डलड ।
तलणरुी खडर इण वलध डरे, ते सुणकु डलत लुडलड ॥ ॡ ॥

ढलल

[डुडु वडल व्रत डललु]

रसगुदुडी ते हलललुडल गटके रे, सरस आहलर नें कलरण डटकें ।
डेषलेइ आतुड नहल हटकें रे, तुडलंरे कलहूं दलस डलदल लटकें ॥ १ ॥
रगलकंगल ने डीललं सनुलरु रे, लुहुु डलंस डधुडल नहल खडल ।
ललुडल व्रत न डलले डूरु रे, ते सलव रडणी सूं दूरु ॥ २ ॥
कलड कलड नें कुीधलं आहलरु रे, डील डलटे नें वधे वलकलरु ।
तुडलरुी देहुी वधे ऊडुी ने आडुी रें, सलथल डुडुडुडलं डडे डलडुी ॥ ३ ॥
घुत दूध दहुी डुडुी डुडुी डलवे रे, कलरण वलण डलंगुी नें लुडलवे ।
लूंदल लुडलवे तडसल कणलडु रे, ए तु डेट डरण रु उडलडु रे ॥ ॡ ॥

कोरो घृत पीए वीघारी रे, आ जुगती नहि ब्रह्मचारी ।
 मरजादा बिन करे आहारो रे, तिण लोपी भगवंत कारो ॥ ५ ॥
 ताक ताक जाए घर ताजे रे, साधु भेष लियो नहि लाजे ।
 पर घर जाय पडगो माडे रे, नहि दियां मांडां ज्यूं भांडे ॥ ६ ॥
 दाता रा करे गुण ग्रामो रे, पारे नहि दे तिणरी मामो ।
 करे ग्रहस्थ आगे बातां रे, नहि बहरावे त्यांरी करे तांतां ॥ ७ ॥
 श्रावक श्राविका ऊर ममता रे, सिष्या री नहि सुमता ।
 मूडे वले काल्या दुकाल्या रे, त्यांसूं व्रत न जाए पाल्या ॥ ८ ॥
 बांध्यां थानक पकस्था ठिकाणा रे, ग्रहस्थ सूं मोह बंधाणा ।
 सुखसीलिया सात्ताकारी रे, डूबा साधु नों भेषघारी ॥ ९ ॥
 ए लखण कुगुर रा जाणो रे, उत्तम नर हिरदे पिछ्छाणो ।
 देव गुर में छोटा जिण खावा रे, तिणने छें संसार जादा ॥ १० ॥
 एहवा ने गुरकर पूजे रे, समकत बिन संवलो न सूझे ।
 तिणरे छे भारी कर्मो रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो ॥ ११ ॥
 कुगुरां री भाली पखपातो रे, त्याने न्याय री न गर्में बातो ।
 बुध उलटी ने मूढ मिथ्याती रे, साधु वचन सुण्यां वले छाती ॥ १२ ॥
 घनावे सेठ बेटी ने खायो रे, कुसले राजग्रही आयो ।
 इम करसी साधु आहारो रे, तो पोहचे मुगत मभारो रे ॥ १३ ॥



ढाल : ५

दुहा

खोटो नांणो नें सांतरों, एकण नोली मांय ।
 ते भोला रे हाथे दियां, त्यासूं जूया किया किम जाय ॥ १ ॥
 ज्यूं साघु असाघु लोक में, दोयां रो एक आकार ।
 भोला भिन्न नहिं लेखवे, ते जाणे नहिं आचार ॥ २ ॥
 जिणरी बुध छे निरमली, ते देखे दोयां री चाल ।
 कुगुरां नें काने करे, साघु वांदि पग झाल ॥ ३ ॥
 जे भारीकर्मा जीवडा, ते रह्या कूडी पख झाल ।
 पिण छिपायी छिपे नहीं, ते सुणजो कुगुर नी चाल ॥ ४ ॥

ढाल

[शदलरी—ए देसी]

ग्रहस्थ लीपे साघु कारणे, बले ऊपर छावे छान ।
 तिणरी करे अनुमोदना, ए कपट बुगल ज्यूं ध्यान ।
 ते किम तिरसी संसार नें* ॥ १ ॥
 थानक भाडे लियो भोगवे, बले काचो पाणी तिण ठाम ।
 गछवासी भेला रहे, ए विटलां रो छे काम ॥ २ ॥
 मिनष आंतरिया उमरे, वन उदके थानक काज ।
 ते भोल लराय मांहे वसे, त्यां छोडी लोकां री लाज ॥ ३ ॥
 बले जागां बांघण कारणे, लेवे अउतरो माल ।
 तिण जागां मांहे रह्यां, ओ खांपणवालो ख्याल ॥ ४ ॥
 लिंगडा लिंगड्यां कारणे, जागां बांधी मठ जेम ।
 मठवासी ज्यूं मांहे वसे, त्यां साघु कहीजे केम ॥ ५ ॥
 एहवा थानक भोगव्यां, बुद्धि अकल पत जाय ।
 भेष भांड्यो भगवान रो, साघु नाम धराय ॥ ६ ॥
 ए चाला तो पोते चालवे, काम पड्यां हुवे दूर ॥
 थानक भायां निमते कहे, कपटी बोले कूर ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गृहस्थ बेलादिक तप कियां, तिण पासे घाल्यो डंड ।
 भोलां नें पाखां भर्म मे, ते हणे जीवां रा भंड ॥ ८ ॥
 लाडू करावे करे आमनां, सामग्री में दराय ।
 ते रस गृद्धी चेंवे पखा, आणी आणी खाय ॥ ९ ॥
 केइ भेषघारी भूला कहे, पोखो घर्म रे नाम ।
 श्रावक नें श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ १० ॥
 पछे गृहस्थ साधु श्रावकां तणो, भेलो बांध तुमार ।
 मोल ह्यावे त्यारे कारणे, के घरे नीपावे आहार ॥ ११ ॥
 तिण घर जाए तेरिया, ज्यू डोरी ताण्यो स्वान ।
 ताजे आहार तूटा पडे, ओ पेट भरण रो तान ॥ १२ ॥
 ए जीमणरो नाम दया दियो, पिण प्रतख दीसे गोठ ।
 काबू करवा आपणो, चोडे चलायो खोट ॥ १३ ॥
 वले भेष पहरी लोलपी थका, हेरे परघर हाट ।
 इंद्रयां मेली मोकली, त्यारो परभव में कुण घाट ॥ १४ ॥
 गुरु चेला एक समुदाय मे, ते सगला एकण पांत ।
 आहार पाणी भेला करे, तिणमें क्यूं जाणे भांत ॥ १५ ॥
 केइ चेला नें जाण कुसीलिया, त्यांसूं तो तोडे संभोग ।
 गुरु सूं न तोरे संकता, एतो वात अजोग ॥ १६ ॥
 श्री वीर जितेसर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जाण ।
 तिण गच्छ सूं भेलप करे, ए बूडण रा अहलाण ॥ १७ ॥
 कुसीलियां भागल भेला रहे, तिणरो न काढे निकाल ।
 कूड कपट करता फिरे, वले साषां सिर दे आल ॥ १८ ॥
 परसंसा करे आप आपणी, दोषण देवे ढांक ।
 भागल भागल मिल गया, किणरी न राखे सांक ॥ १९ ॥
 जो एकण नें अलगो करे, तो करे घणा रो उघाड ।
 पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो नाणो असार ॥ २० ॥
 पांच सुमत तीन गुप्त में, दीसे छिदर अनेक ।
 पांच महाव्रत माहिलो, आखो न दीसे एक ॥ २१ ॥
 ते गुरु करनें पूजावता, आप डूवे ओरा ने डबोय ।
 इम सांमल नर नारियां, छोडो कुगुरु ने जोय ॥ २२ ॥
 भट्टी काढे कलाल तणे घरे, उनी पाणी हुवे तयार ।
 लिंगाडा लिंगाडी शहर में, बांचे मकोडा ज्यं हार ॥ २३ ॥

कदा आगे पाणी नहिं उतरख्यो, तो तिहांइज ले विसराम ।
 भरभर ल्यावे लोट पातरा, ठाली कर दे ठाम ॥ २४ ॥
 ते पछे फेर भरावे ठामडा, काचो पाणी आण ।
 ते भारी दोष पिछात सू, ए बूडण रा अहलाण ॥ २५ ॥
 त्यांरे परंपरा में निषेधियो, नहिं वहरणो घरे कलाल ।
 तिण घर ढूका वहरवा, मांगी परंपरा पाल ॥ २६ ॥
 त्यांरे लेखेइ तिण कुल वहरतां, आवे चोमासी नो डंड ।
 आज्ञा लोप बडा तणी, हुंवा जगत में मंड ॥ २७ ॥
 धुर सू तो कुल जुगतो नही, बीजो गृहस्थ ले जावे साथ ।
 नित नित वहरे ते तीसरो, चौथो दोष पिछात ॥ २८ ॥
 वणीमग संकादिक दोषण घणा, पिण चावा दोषण च्यार ।
 ते लिंगडा लिंगडी टाले नहीं, ते विटल हुवा बेकार ॥ २९ ॥
 त्यांमें कितरा एक वहरे नहीं, केइ वहरे तिण घर जाय ।
 त्यांमें कुण साधु ने कुण चोरटो, ते पिण खबर न काय ॥ ३० ॥
 जो अस्त्री समझे साधां कनें, तो धणी नें देरे लगाय ।
 भरतार समझ्या नार नें, कुगुरु कुब्द सिखाय ॥ ३१ ॥
 सासू बहू मा बेटियां, वले सगा संबंधीयां माहिं ।
 त्यांनें रागनें घेष सिखावता, भेद घलावे ताहि ॥ ३२ ॥
 केइ आवे सुध साधां कनें, तो मतीयां नें कहे आम ।
 शे वजीं राखो घर रा मनुष्य नें, जावा मत दो ताम ॥ ३३ ॥
 कहे दरसण करवा दो मती, वले सुणवा मत दो वांग ।
 डराए नें ल्यावो म्हां कनें, ए कुगुर चरित पिछांण ॥ ३४ ॥
 त्यांरी अकल लागे केई बापडा, त्यांमें बुद्धि नहीं लवलेस ।
 दाघे घर रा माणसां, कर रह्या कूड कलेस ॥ ३५ ॥
 केई अपचो कर मूखां मरे, आ खोटा मतरी रेस ।
 तिणरो दिन छे बांकडो, त्यांरे कुगुर तणो परवेस ॥ ३६ ॥
 हलुकरमी डराया डरे नहीं, त्यांने रुचियो जिणवर धर्म ।
 चल जाए केयक बापडा, उदे हुवां असुभ कर्म ॥ ३७ ॥
 त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फिख्यां दुख थाय ।
 ताजा आहार पांणी कपडा तणी, जाणे रखें पडे अंतराय ॥ ३८ ॥
 पेट रे कारण पापीया, त्यांरा घर में घाले बेठ ।
 कलहो बधारे करे आमनां, ए तो खोटा कुगुर पेट ॥ ३९ ॥

तिण घर एक समझु हुवे, तो राखे तिणरी आंख ।
 सुध असुध लेवण तणी, आवे मन में सांक ॥ ४० ॥
 तिण कारण कुगुर कर रह्या, आमी सामी घमडोल ।
 तोही आंघा नें मूल सूके नही, जिम तांबा उपर भोल ॥ ४१ ॥
 भाग प्रमाणे कुगुर मिल्या, ते कर्म तणो छे दोष ।
 इम सांमल नर नारीयां, मत करो मांहो मांहि रोष ॥ ४२ ॥



ढाल : ६

दुहा

भेषघारी विगख्या घणा, पांचमां आरा मांय ।
 नांम घरावे साधु रो, पिण वेठां सरम न काय ॥ १ ॥
 खेत खाधो लोकां तणो, पहर नाहर की खाल ।
 ज्यूं भेष लीयो साधां तणो, पिण चाले गघा री चाल ॥ २ ॥
 सरघा में भूलो घणा, ते थापे हिंसा धर्म ।
 वले मिष्ट हुआ आचार थी, बोहला बांधे कर्म ॥ ३ ॥
 आभे फाटे थीगरी, कुण छ देवणहार ।
 ज्यूं गुर सहीत विगडीयो, त्यांरे चिहुं दिस परियाबघार ॥ ४ ॥
 चोरी जारी आद दे, नीपजें माठा कर्म ।
 तोही आंधा जाय पगां पडे, ते मूल न जाणें मर्म ॥ ५ ॥
 गुर गुरणी तणा चरित जाणियां, पिण छूटे नहीं पखपात ।
 तोही निरलज सुध साधां तणी, उठावे अणहूंती बात ॥ ६ ॥
 आल देवण आघा घणा, वले डरे नहीं तिल मात ।
 भूठ बोले मुख बांधनें, ते किम आवे हाथ ॥ ७ ॥
 ज्यांरे लाय लागी चिहुं दिसा, रहे न तिणरी सुध ।
 ज्यूं विणास काले इण भेष री, उपनीं विपरीत बुध ॥ ८ ॥
 कुगुर चरित अनंत छें, कहितां नावें पार ।
 हिंवे भव जीवां नें प्रति बोधवा, अल्प कहूं विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल

[समरू मन हर्ष तेह]

एक एक तणा दोषण ढाके, अकारज करता नहीं सांके ।
 त्यांनं कोइ नहीं हटकण वालो, एहवा भेषघारी पांच में कालो ॥ १ ॥
 त्यांरा विटल हुवा चेली चेल, गुर माहें पिण आवे रेला ।
 लोपी मरजाद फोडी पालो, एहवा भेषघारी पांच में कालो ॥ २ ॥
 ब्रत पचखाण में नहीं सेठां, ठांम ठांम थानक मांडे वेठां ।
 श्री जिणवर सीख दीवी रालो, एहवा भेषघारी पांचमे कालो ॥ ३ ॥

साथे लीयां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालण जाबक थोथा ।
 ते फस रह्या माया जालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ ४ ॥
 करणी करतूत माहे पोला, बले अरड वरड मिरषा बोला ।
 त्यारे भूठ तणो नही टालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ ५ ॥
 विकलां ने मूंड कीयां भेला, ते नाच रह्या कुबदी खेला ।
 जाणे भरभोलियां तणी मालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ ६ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण केह मूढ मती, पेलांरी बात करे अच्छती ।
 परभव डर नाणे देता आलो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ ७ ॥
 नाम धरावे साध सती, पिण लषण न दीसे एक रती ।
 मूढे भूठ तणो वेह रह्यां नांलो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ ८ ॥
 केई पदवीधर बाजे मोटा, चलगत उंची लषणा खोटा ।
 कण रहीत एकंत परालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ ९ ॥
 केइक लिगडा ने लिगडो, त्यांरी सुमत गुपत धूरसूं बिगडी ।
 अंतर नही घाल्यो बिचालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ १० ॥
 एक टोला मे तायफा रे घणा, तायफा तायफा मे भागल पणा ।
 कुण काढे त्यारो निकालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ ११ ॥
 उषाड मांहोमाहि केम करे, पाणी सगलां रो मांहि मरे ।
 लिगडा लिगड्यां रो एक ढालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ १२ ॥
 भेष माहे करे चोरी जारी, त्यांने गृहस्थ बिचे कहिजे सारी ।
 त्यांरे केरे लगा मूरख बालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १३ ॥
 तिणरो करे रह्या गालागोली, त्यांरो बिगड गयो जाबक टोली ।
 त्यां मे कुकर्म रो बधियो चालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १४ ॥
 एहवा कर्म करे साधु बाजे, निरलजा मूल नही लाजे ।
 निकाल काढ्यां उठे म्हालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १५ ॥
 त्यांरो जथातथ्य उषाड करे, तो परिवार सहित तिणसूं रे लडे ।
 भगडो म्हाले बाघे चालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १६ ॥
 जब आफे लोकां मे उषाड पडे, किण एक भागल ने दूर करे ।
 तिणने प्रायच्छित बिन ले माहे वालो, एहवा भेषचारी पांच मे कालो ॥ १७ ॥
 एतो कपट करे लोकिक राखी, इतरी न कियां जाय नाकी ।
 आहार पाणी आडो आवे तालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १८ ॥
 इम कर कर नें राखे शेखी, त्यांने केवलज्ञानी रह्या देखी ।
 एतो पेटतणी करे प्रतिपालो, एहवा भेषचारी पांच में कालो ॥ १९ ॥

जो आप तथा किन्तव देखे, सो उंचा गुरु बोले किण लेखे ।
 गमके नहिं ग्यान रहिण वालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २० ॥
 त्यामिं अठारुह पाप तथा खाता, तो पिण गुरुख बोले ताता ।
 अग्याली आपो नहिं संभालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २१ ॥
 लष्टपुष्टनें देखे राखे, चर्गी, त्यामिं मिळें ३ मांठी श्रीमंगी ।
 सोही बोले आळ में पंपालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २२ ॥
 सोचीं हूव धोत्री नें पींजार, टगा यं राज धियां छ्यां ।
 ग द्विष्टन श्रीजे संभालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २३ ॥
 त्यानिं प्रगट क्रियां मडि करिजया, ज्यांग थिगड गया गाधु श्रीजिया ।
 त्रिणभूं माघां ३ राग देखे आळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २४ ॥
 ने परिवार सहित नरके जायी, पछें चिहूं गति में भीका धारी ।
 भाभी अष्ट तणी ज्युं घडमालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २५ ॥
 में गुणिया था धीर नां वेणा, ने प्रत्यक्ष देख लिया नेणा ।
 गांयो हूवे सो गुरु संभालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २६ ॥
 अंधारा भूं चोर रहि राजी, जेदथी कुगुम तणी चहुरवाजी ।
 कोठ आय पडे समर जाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २७ ॥
 अंगग घट्यां ने सेप बधियां, हृथ्यांगी गार मधा ल्यांघ्यां ।
 थक गया बोज दियो राळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २८ ॥
 धुर भूं केठ नवनन्ध नहीं भण्या, तेतो गांग पहरी मुनिराज बण्या ।
 ज्युं नादर री ब्याळ पहरी द्याळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ २९ ॥
 मांठीं मांठीं निज पट्यां श्रीजे, त्यानिं उपमा स्वान तणी धीजे ।
 बनलायां करे मुहुं विकरालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३० ॥
 केनला एक अवतन छिन्न न्यागा, किनला एक चोथा भूं भागा ।
 निकांठयो मरं पहियो देवाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३१ ॥
 चौरां मांठीं चोर जाय बस्या, भागळो में भागळ आय धस्या ।
 कचरा कूटा ज्युं दींग धो गाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३२ ॥
 सगुडी ताके घर में हाट, घले अवसर देख पाडे वाट ।
 अणज ज्युं दागार शब्दे टाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३३ ॥
 ण सेप तथा कूडकपट तणी, कितली एक कहूं हो त्रिभुवन धणी ।
 ल्या रं तणीं नहिं म्बवाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३४ ॥
 निं पिण गुरु जाणी पूजे, गमावन विन संवळो नहिं गुरुके ।
 मंतर पूटी आयो जाळो, गुरुवा सेपधारी पांच में काळो ॥ ३५ ॥

तिणरी दिस छे सगली काणी, ते खांच आपण मे ले ताणी ।
 अग्नि ज्यू उठे अंतर भालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३६ ॥
 समचे कहां पिण निदा जाणे, बुद्धी मिष्ट थयां उल्टी ताणे ।
 ते कर रह्या भूठी भखालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३७ ॥
 जे अन्याय मारग रा पखपाती, ज्यारी सुण सुण बल उठे छाती ।
 त्यांने कुगुर तणी लागी लालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३८ ॥
 पखपात नही त्यांरे मन भावे, पिण चोर चांदणो किम सुहावे ।
 लारे बाहर रा पूर लागे लालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३९ ॥
 ए तो भाव आचारग मे चाल्या, केइ ठाणांग माहिं सूं घाल्या ।
 विकलां नें वीर दिया टालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४० ॥
 वले अग उपंग मूल नें छेद, तिण माहिं पिण चाल्या भेद ।
 ओलखाय कियो वीर उजवालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४१ ॥
 कितरा एक चरित काने सुणिया, कितरा एक सूतर सूं गुणिया ।
 केइ प्रतख देख लिया न्हालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४२ ॥
 सूतर तणो लेइ सरणो, पाषंड पथ रो कियो निरणो ।
 खोटा नें उत्तम दे विडालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४३ ॥
 एतो कुगुर तणी छे निसाणी, सुण हरष घरे उत्तम प्राणी ।
 अमृत ज्यू लागे रसालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४४ ॥



दुहा

ढाल : ७

केई भेषधारी भूला थका, ते कर रह्या उंधी तांण ।
 इविरत बतावें साध रे, ते सूतर अर्थ अजांण ॥ १ ॥
 त्यां साधपणो नही ओलख्यो, ते भूला भर्म गिंवार ।
 सर्व सावद्य त्याग्यो मुखूं कहे, वले पाप रो कहे आगार ॥ २ ॥
 आहार पांणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रह्या मुरभाय ।
 एहवा भेषधाख्यां रे इविरत खरी, पिण साधां रे इवरतन कांय ॥ ३ ॥
 च्यार गुणठांणा इविरत कही, तठें विरत न दीसें लिगार ।
 देस विरत गुणठांणें पांच में, आणें सर्व विरत अणगार ॥ ४ ॥
 जो साधां रे इविरत हुवें, तो सर्व विरती कुण होय ।
 त्यांरो भाव भेद परगट करूं, सांभलजो सहू कोय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अरु कम्पा जिण आ०]

चौबीसमां श्री वीर जिणसर, निरदोष आहार आंणी, ने खायो ।
 सुध परिणामे उदर मे उताख्यो, त्यांनेइ मुख पाप बतायो ।
 इण पाषंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 अनंत चौबीसी मुगत गइ, ते आहार ल्याया था दोषण टालो ।
 तिणमे अग्यांनी पाप बताए, सगला रे सिर दीधो आलो ॥ २ ॥
 सर्व सावद्य जोग रा त्याग कीयां ते, सर्व विरत सुध साध कहावें ।
 तिरण तारण पुरुषां रे अग्यांनी, इविरत रो आगार बतावें ॥ ३ ॥
 गोतम आदि दे साध अनंता, साधवीयां रो छेह न पारो ।
 सगला रो आहार अधर्म मे घाल्यो, तिण आंख मीची नें कीयो अंधारो ॥ ४ ॥
 साध रो जनम हूओ जिण दिन थी, कल्पें ते वस्तु वहरिने ल्यावें ।
 ते पिण अरिहंत री आगना सूं, इणमेंइ दूष्टी पाप बतावें ॥ ५ ॥
 वस्त्र पातर रजोहरणादिक, साध रा उपध सूतर में चाल्या ।
 भगवंत री आग्या सूं राखे, ते अधर्म मांहे अग्यांनी घाल्या ॥ ६ ॥
 दसवीकालक ठांणां अंग में, प्रश्न व्याकरण उवाइ मांहो ।
 धर्म उपध साध रा विरत मे, तिण मांहे मूरख पाप बतायो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

किण ही ग्रहस्थ नीलोतरी ने त्यागी,
 उ सावपणो लेड इविरत सरखे,
 अघर्म जाणें नीलोतरी खाचां,
 घर मे थका जावजीव त्यागी थी,
 ग्रहस्थ जे जे वस्तु त्यागी ते,
 ते सावपणो लेड सेवा लागो,
 जे इविरत सरखे ने सूस न पाले,
 मारण छोडीने उजर पडीया,
 करे वीयावच चेला गुररी,
 तीथंकर गोत वधें उतकष्टों,
 दसवीस चेला पडिकमणो करने,
 ते गुर नें पाप लगाए अग्यांनी,
 गुर नें पाप लागे वीयावच करायां,
 मुढ मती जीव भारीकरमा,
 गुर ने पाप सूं भेलो कीयां मे,
 अभ्यंतर फूटी ने अंघ थया ते,
 साव मांहोमाहीं देवे लेडे,
 ते पिण लीघां मे पाप बतावे,
 दातार ने घर्म साधा ने वेहराया,
 दातार तरीयो साधु डबोए,
 जो पाप लागे साव आहार कीयां मे,
 तिरण री आसा राखे किण लेखे,
 साव तो पाप अठारेड त्याग्या,
 दातार कने सुख जाच लीयां में,
 गुर दिप्या देइ सिख सिषणी करे ते,
 मोह मिथ्यात सूं भारीकरमां,
 छठें गुणठाणें परमाद कहीने,
 पूछ्यां कहे में सर्व विरती छां,
 छठे गुणठाणे परमाद कह्यो ते,
 ते विषे कपाय उसम जोग आयां,
 परमाद इविरत कहे आहार उपव सूं,
 आहार उपव केवली पिण आणें,
 १०१

जीवे ज्या लग थाण वेरागो ।
 तो ववेक विकल खावा कांय लागो ॥ ८ ॥
 तो पचखाणं भाग्यो किण लेखे ।
 तिण सांहाणें मूरख कांय नहीं देखे ॥ ९ ॥
 अघर्म रो मूल इविरत जाणें ।
 तो क्युं नही पाले लीयां पचखाणो ॥ १० ॥
 ते भागल छे भारीकर्मो ।
 साव आहार कीयां में सरखे अघर्मो ॥ ११ ॥
 करम तणी कोड तेह खपावे ।
 पिण गुर नें तो मूरख पाप बतावे ॥ १२ ॥
 गुर री वीयावच करवा आवे ।
 दुरगत मांहे कांय पोहचावे ॥ १३ ॥
 ए सूतर मांहे कठे नही चाल्यो ।
 ए पिण घोचो अणहुंतों घाल्यो ॥ १४ ॥
 चेलां रा करम कटे किण लेखे ।
 सूतर सांहाणो मूल न देखे ॥ १५ ॥
 बस्त्र पातर आहार ने पांणी ।
 एहवी कुपातर बोले वाणी ॥ १६ ॥
 पिण साव बेहरे हुवे पाप सूं भारी ।
 आ पिण सरघा कहे भेषधारी ॥ १७ ॥
 तिण पाप रो साम्म दीयो दातार ।
 भूला रे भूला थे मुढ गिदार ॥ १८ ॥
 सुख छे तिणरी सुमति ने गुपती ।
 पाप कठी सूं लागो रे कुमती ॥ १९ ॥
 निरजरा तणा भेद माहे चाल्या ।
 ते पिण परिग्रहा मांहे घाल्या ॥ २० ॥
 सावां रे इविरत थापे खानारी ।
 ओ पिण भूठ बोले भेषधारी ॥ २१ ॥
 किणहीक वेला लगतो जाणो ।
 पिण मुढ मती करे उंची तांणे ॥ २२ ॥
 ते कर रह्या कुमती कूडी विपगदो ।
 ते कठी गयो त्यांरो परमादो ॥ २३ ॥

अप्रमादी कह्या सातमें गुणठाणें,
 उवे पिण आहार उपाध भोगवता,
 छदमस्थ आचरें केवलीए आचरीयां,
 आहार उपध केवली ज्यूं भोगवीयां,
 साध आहार करतां चारित कुसले,
 जब उंध मती कोइ अवलो बोलें,
 पोहर रात तांइ साध उंचें सब्दे,
 उण उंध मती री सरघा रे लेखें,
 जेंणा सूं साध करें पडिल्लेहण,
 उण उधमती री सरघा रे लेखें,
 मरजादा सूं आहार साध नें करणो,
 मरजादा सूं पडिल्लेहण करणी,
 ज्यूं साध नें आहार छ कारणें करणो,
 ए छवीसमो उत्तराधेन मांहें,
 जो धर्म हुवें साध आहार कीयां में,
 पाप जाणेंनें त्याग करें छें,
 साध काउसग में त्यागें हालवो चालवो,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ बोलण रा त्याग करें गुण सामे,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध साधां नें आहार देवण रा,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध साधां री न करें वीयावच,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 सर्व मूलगुण में सर्व सावद्य त्याग्यों,
 आगला करम काटणें साध नें,

साध उपवास बेलदिक करें संधारो,
 पाप रो त्याग बेहूं रे सरिषो,
 जेंणा सूं चाल्यां जेंणा सूं उभां,
 जेंणा सूं भोजन कीयां जेंणा सूं बोल्यां,

परमाद नहीं तिण गुण ठांणा अगें ।
 तो त्यांनं परमाद क्यूं नहीं लागें ॥ २४ ॥
 केवली ए ताग्यो ते छदमस्थ त्यागें ।
 तिण साध नें परमाद किण विघ लागें ॥ २५ ॥
 सुध परिणांमा सूं कटें आगला करमों ।
 कहे घणों खावो ज्यूं घणों हुवे धर्मों ॥ २६ ॥
 धर्मकथा कहें मोटें मंडाणो ।
 आखी रात में करणो वखांणो ॥ २७ ॥
 ते काटण करम आत्म नें उधरणी ।
 आखोइ दिन पडिल्लेहण करणी ॥ २८ ॥
 मरजादा सूं करणो वखांणो ।
 समभो रें समभो थे मूंद अयांणो ॥ २९ ॥
 उवें घणों घणो खासी किण लेखें ।
 वले छटो ठांणों मूंद क्यूं नहीं देखें ॥ ३० ॥
 तो क्यांनं करें आहार ना पचखांणो ।
 उलट बुधी बोले एहवी वांणो ॥ ३१ ॥
 वले मुख सूं न बोलें निरवद वांणो ।
 अे पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३२ ॥
 ते धर्मकथा मांडी न करें वखांणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३३ ॥
 त्याग करे मन उधरंग आंणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३४ ॥
 त्याग करें मन उरंग आंणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखांणो ॥ ३५ ॥
 तिणसूं नवा पाप न लागें आंणो ।
 उत्तर गुण छें दस विघ पचखांणो ।
 आ सरघा श्री जिणवर भाषीः ॥ ३६ ॥
 कोइ साध लेवें नितरो नित आहारो ।
 ओं तप तणों छें भेदजन्या रो ॥ ३७ ॥
 जेंणा सूं बेंठा जेंणा सूं सुवंता ।
 तिण साध नें पाप न कह्यो भगवंत ॥ ३८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दसवीकालक चोथे अघेने, आठमी गाथा अरिहंत भाषी ।
 छ वोल जेणा सूं साघ कीयां में, पाप कहे भारीकर्मा अन्हाखी ॥ ३६ ॥
 निरवद गोचरी रखेसरां री, मोख री साघन भगवानं भाषी ।
 ए दसवीकालक पांचमें अघेने बांगूंमी गाथा बोले साषी ॥ ४० ॥
 सुघ आहार वहस्थां साघ सद गति जाये, निरदोष दीयां सुद गति जाये दाता ।
 ए दसवीकालक पांचमें अघेने, पेहला उदेसा री छेहली गाथा ॥ ४१ ॥
 सात करम साघ ढील पाडे, सुघ आहार करे साघ तिण कालो ।
 ए भगवती सूतर पेहले सुतस्कंधे, नवमो उदेसो जोय संभालो ॥ ४२ ॥
 आहार करे गुर री आगना सूं, तिण साघ ने वीर कही छे मोखो ।
 अठारमो अघेन गिनाता रो जोए, सांसो काढी मेटो मन रो धोखो ॥ ४३ ॥
 सन्द रूप गन्ध रस फरस री, साघां रे इविरत भूल न कायो ।
 ए सुयगडांग अघेन अठारमें, वळे उवाइ सूतर माह्यो ॥ ४४ ॥
 साघां रे इविरत कहे पाषंडी, तिण कुमती री संगत दूर निवारो ।
 ए सुण सुण नें उत्तम नर नारी, सर्वं विरती गुर माथे धारो ॥ ४५ ॥

ढाल : ८

ढुहा

आहार उपध नें उपासरो, भोगवें दोष सहित ।
 भिष्ट थया आचार सू, त्यां छोडी साधां री रीत ॥ १ ॥
 आहार उपधने उपाश्रो, असुध दे दातार ।
 ते गुरां समेत दुरगत परें, खावें अनंती मार ॥ २ ॥
 सहू दोषां में दोष मोटकॉ, आघाकर्मी जाण ।
 एहवा थांनकादिक भोगवें, त्यां भांगी जिणवर आण ॥ ३ ॥
 जिण आगना पालें नही, ते भागल री छें पांत ।
 ते कुग कुग अकार्य कर रह्या, ते सुणजो कर खांत ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आगरथा में]

केई भेषधारी कहें म्हें जीव बचावां, ते करें अन्हावी अणहंता कूका ।
 ते साधपणा रो नांम धराए, उलटा छ काय मरावण ढूका ।
 इण पापंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 पीलू जितरी मुरड माटी में, असंख्याता जीव तेहीज बतावें ।
 माहे बुगलध्यानी मुनीसर बेठा, उपर थटे थटें मुरड नखावें ॥ २ ॥
 साधां रे कारण थांनक लीपे, पीली पांणी रा जीवां नें मारी ।
 जो उण थांनक में साध रहें तो, तिणने तो वीर कह्यो भेषधारी ॥ ३ ॥
 कूटा सांकल करावे थांनक कारण, बले खाती सिलावट बेंठा कमावें ।
 केलू कूटीजें ने चूनो दरीजे, अे पिण चाला कुगुर चलावें ॥ ४ ॥
 एक आंकुरा बनसपती मे, जीव अनंता तो मुख सूं बतावे ।
 जो थांनक उपर नीलो उगें तो, सांनीकर दुष्टी जड सूं कढावें ॥ ५ ॥
 दरतां लीपतां थांनक चूणतां, कीच्यां मांकादिक मरे अथागो ।
 डरें नहीं दुष्टी अकार्य करता, त्यांरे करम जोगे डंक कुगुरां रो लागो ॥ ६ ॥
 बले छपरा छावंता नें केलू फेरतां, तटें नीलणफूलण जीव मरें अणंता ।
 जमीया जाल उखेलें अग्यांनी, ते पिण कुगुरां रे काज हणंता ॥ ७ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए थानक काजे हणे जीव दुष्टी,
 सरावण वालो तीजे करण डूबो,
 जिण थानक करावण गरथ दीयो ते,
 धर्म काजे दूष्टी जीव हणाए,
 अनता जीव मारे थानक कीघो,
 भेषघाख्यां सहीत श्रावक ने पूछीजे,
 कोइ श्रावक राते रोछार सूजे तो,
 ओ थानक सदाइ रोछार रहे छे,
 मठवासी ज्यूं तिणमें मूरभ रख्या छे,
 सार संभाल करे परीया घूरीयां.
 कोइ पूछे तो कूड बोले कपटी,
 जो साचो हुवें तो माहे रहणो त्यांगे,
 छक्राय हणीने थानक कीघो,
 तिण थानक मे साघ रहें तो,
 वले ग्रहस्थ कह्यो तिणने वीर जिणेसर,
 आचारग दूजे श्रुतकंवे,
 आघाकर्मी थानक मे साघ रहे ते,
 ए भाव भगोती मे वीर कह्या छे,
 साघ रे कारण थानक करावे,
 त्याने कापे कापे काढे नान्हा काता,
 घन रे कारण जीव हणे त्याने,
 दयारी ठोर हिंसा ने थापी,
 धर्म हेते हिंसा कीयां समकत जावे,
 ए वीर वचन साचा कर सरदो,
 इम साभल ने उत्तम नरनारी,
 आहार उपघ सेज्या सथारो,
 न्याती अन्याती श्रावक अश्रावक ने,
 नसीत रे आठमे उदेसे,
 वासा रूप रहे तिणने नही नपेवे,
 तिण साथे वारे जायें साथे आवे पाछो,
 सिबंत रा पाठमें वीर नपेघ्यो,
 उवें सूतर रो नामलेइ भूड बोले,

हणावण वालो दूजे करण जांगो ।
 पछे इविरत लेखे वरोबर जांगो ॥ ८ ॥
 सर्व हिंसा रो कहीजे नायक ।
 अनत वीवा रो हुवो दुखदायक ॥ ९ ॥
 वले दिन दिन अनत मरे छे आगे ।
 इण थानक रो पाप किण किणनें लागे ॥ १० ॥
 तिणने पाप लागो कहे छे विमासी ।
 तिण पाप थी दुरगत कुण कुण जासी ॥ ११ ॥
 वले थानकरी राखे धणीयापो ।
 तिणनें लागें छे निरंतर पापो ॥ १२ ॥
 श्रावका रे काजे कीघो वतावे ।
 पछे कुण कुण श्रावक थानक करावे ॥ १३ ॥
 ते तो थानक छें आघाकर्मी ।
 धर्म सूं भिष्ट ने कहीजे अधर्मी ॥ १४ ॥
 महासावद्य किरिया लागें भारी ।
 भेषरे लेखें कह्यो भेषधारी ॥ १५ ॥
 नरक निगोद में भीकां खावे ।
 वले चिहुं गत माहे घणो दुख पावे ॥ १६ ॥
 ते गर्भमे आडो आवे दाता ।
 वले नरका मे मार अनती खाता ॥ १७ ॥
 मंदबुधी कह्या दसमे अंगो ।
 डूबा रे डूबा थे कुगुरां रे संगो ॥ १८ ॥
 वले जनम मरण दुख वधे अथायो ।
 पेला अघेन आचारग माह्यो ॥ १९ ॥
 देवगुर धर्म काजे हिंसा नहीं कीजें ।
 निरदोष हुवे तो देइ लाहो लीजें ॥ २० ॥
 आघी आखी राति थानक मे वसावे ।
 च्यार महीनां रो चारित जावे ॥ २१ ॥
 कोइ नषेध्यां पछेइ रहे जोरीदावे ।
 तिणनेइ डंड चोमासी आवे ॥ २२ ॥
 केइ भिष्ट आचारी कहे रहणो चाल्यो ।
 ओ अथमे घोचो अणहूतो घाल्यो ॥ २३ ॥

कूडा कूडा अर्थ लोकां नें वचाएं,
 अणहुंता अर्थ सूं पाठ उथापें,
 उदेसीक असणादिक भोगवें ते,
 वले नित्तिपिंड भोगवें एकण घरनो,
 एतो भाव कहुआ उतराघेन माहें,
 त्यांनं पिण गुर जाणेंनं वादें अग्यांनी,
 गांमवारें उतरीयो कटक सथवाडो,
 कोइ जिण आगना लोपी रात रहें तो,
 एतो वेतकल्प रे तीजें उदेसैं,
 कोइ रातें रही वले दोष न सरवें,
 एहवा भारी भारी दोष जाणनें सेवें,
 ते समझाया समझें नहीं मूरख,
 एहवा भेषधारी साध रा भेष माहें,
 त्यांनं वादें पूजें सतगुर जाणेंनं,
 उसभ करम उदें सूं संवलो न सूझें,
 त्यांरी सेवा भगत कीयां ए फल लागें,
 इम सांभलनें उत्तम नरनारी,
 सावां री सेवा करें चित्त चोखें,

आप डूवें करें ओरां नें भारी ।
 जो टांकों भल्लें तो हुवें अनंत संसारी ॥ २४ ॥
 वले मोल लीयो उपघादिक आहारो ।
 एहवा साध जासी नरक मझारो ॥ २५ ॥
 वीसमां अघेन भें काढ्यो निकालो ।
 त्यांरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ २६ ॥
 तिहां गोचरी जावेंतो पाछो आवें ।
 च्यार महीनां रो चारित जावें ॥ २७ ॥
 साधनें कटक माहें न रहणो रातो ।
 तिण मूरख री मानें मूरख बातों ॥ २८ ॥
 वले बतलाया बोलें नहीं सूधा ।
 जिण आगना लोपी नें पडीया उंवा ॥ २९ ॥
 ते तो आप डूवें ओरां नें डबोवें ।
 ते पिण मानव रो भव खोवें ॥ ३० ॥
 त्यांनं गुर मिलीया छें हीण आचारी ।
 टांको भल्लें तो हुवें अनंत संसारी ॥ ३१ ॥
 एहवा भेषघास्थां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चुतर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ३२ ॥

ढलल : ६

दुहल

भेषधरल भूलल फलरें, त्यरलं धोर रुदर मलथ्यलत ।
वले मलषुट थयल अलचलर थी, त्यरलरी भूलल करें पखपलत ॥ १ ॥
अलहलर उषलधल ने उषलथुओ, असुध भुओलवे अणुण ।
त्यलसूं अलचलर रल चरचल कीयलं, तुओ ललगे जहर सलमलणु ॥ २ ॥
वले ऑलव हलसल सू डरे नहीं, सके नही करतल अकलज ।
वले धरुमं कहे हलसल कीयलं, नलणे मन मलंहे ललज ॥ ३ ॥
पलणु भुओलं ने खबर पडे नही, चुओडे अलचलर रल वलत ।
शुओडीसल परगट कलं, ते सुणऑु वलख्यलत ॥ ॡ ॥

ढलल

[देवदलनव तुीरुंकर गणुधर]

अधलकरमल थलनक मलंहे सलध रहे तुओ, पेहलुओ मलहलवरत भलगें ।
वले दयल रहलत कहुओ सुतर भगुतुी भे, अनंत जनम मरण करसुी अलगे रे मुनलवर ।
ऑलव दयल वलरत पललुओ* ॥ १ ॥
वले सरुवं सलवध रल त्यलग कहे तुओ, दुऑुओइ मलहलवरत भलगुओ ।
ऑुओ उ कहे थलनक म्हुलरें कलज न कुीधुओ, तुओ कषुट सहीत भूठ ललगुओ रे ॥ सु० ऑुओ २ ॥
ऑे ऑुलव मूंअल त्यलं सरुीर न अलप्युओ, तुलणसूं अदत उण ऑुलवलं रुओ ललगुओ ।
वले अलगनलं लुओपी शुरुी अरुहलत रल, तुलणसूं तुीऑुओइ मलहलवरत भलगुओ रे ॥ ३ ॥
तुलण थलनक ने अलपणुओ कर रलखे, वले ममतल रहें नलत ललगुी ।
मठवलसुी ऑुयूं मलंहे वसे तुओ, पलंचमुओइ गयुओ वलरत भलगुी रे ॥ ॡ ॥
बलकुी चुओथुओ ऑुठुओ वलरत इण वलष भलगल, अलचलर कुसुील रे लेखे ।
एहुवल भलगल फलरें सलध रल भेषधरें, त्यलनें वुषवंत ग्यलन सूं देखें रे ॥ ॡ ॥
एक कलड हणें तुलणुने उतकषुटे भलंगे, हलसल ऑुकलड रल ललगे ।
ऑुयूं एक वलरत भलंग्यलं उतकषुट भलंगे, वलरत ऑुहुंइ भलंगे रे ॥ ६ ॥
ए अलचलरलंग रे दुऑे अघेने, ऑुठुओ उदेसुओ संभललुओ ।
ए भलव सुणुने हलडे वलमलसुओ, मत वुओलुओ अलल पंपललुओ रे ॥ ७ ॥

*थह अलंकडुी प्रत्येक गलडल के अन्त में है ।

इणसूं दोष मोटां मोटां सेवें, साध रा मेघ ममारो ।
 कोइ चुतर विचषण जाण होसी ते, थानें किम सरवें अणगारो रे ॥ ८ ॥
 वले दोष बयालीस भाख्या सूतर में, बावन कहुआ अणाचार ।
 यां मांहिला दोष सेव्यां सेवायां, माहावरतां में परसी वधार रे ॥ ९ ॥
 कोइ थानक निमतें गरथ दे तिणनें, मुख सूं मतीय सरावो ।
 आप समांगा छ काय जीवां नें, सांनीकर कांय मरावो रे ॥ १० ॥
 थानक करावें त्याने धर्म कहें नें, भोला नें मत भरमावो ।
 आप रहिवाणें जायगां रे कारण, जीवां नें मतीय मरावो रे ॥ ११ ॥
 साथां रें कारण जीव हणें त्यांरे, हुसी भूंडा सूं भूंडो ।
 जो उ साधु थइ उण जायगां में रहसी तो, साधपणो उणरोइ बूडो रे ॥ १२ ॥
 जिण गरथ दीयो जिण सूं जीव मूंआ त्यांरो, उतरा जीवांरो उणनें पापो ।
 वले धर्म जाणें तो पाप अठारमो, तिणसूं होसी घणो संतापो रे ॥ १३ ॥
 साध काजें दडें लीपें छपरा छावें, वले जीव अनेक विध मारें ।
 आप डूबे वेर वांधें जीवां सूं, वले गुर रो जनम विगाडे रे ॥ १४ ॥
 थे धर्म ठिनाणें जीव हणों छीं, तो दया किसी ठोड पालो ।
 कुगुरां रा भरमाया आतमा नें, कांय लग्गावो कालो रे ॥ १५ ॥
 रात अंधारी में जीव न सूभें, जब आडा म जडो किवाडो ।
 छ कायां रा पीहर वाजो तो, हाथा सूं जीव म मारो रे ॥ १६ ॥
 जो थानें साची सीख न लागें, तो मतल्यो साधवीयां रो सरणो ।
 साध नें रहणो हुवार उधाडें, साधवीयां नें चाल्यो जडणो रे ॥ १७ ॥
 जो गृहस्थ साथे मेलो संदेसो, जब मारी जासी छ कायो ।
 उ जोयां विनां चालें मारग मांहें, तो एहवो म करो अन्यायो रे ॥ १८ ॥
 साधपणो थांसूं सभ्तो न दीसैं, तो श्रावक नाम धरावो ।
 सगत साध वरत चोखा पालो, दोषण मतीय लग्गावो रे ॥ १९ ॥
 आचार थांसूं पलतो न दीसैं, तो आरा रे माथें मत न्हांखों ।
 भगवंत रा केडायत वाजे, भूठ बोल्ता ब्यूं नही सांको रे ॥ २० ॥
 थे विरत विहूण साध वाजो, तो ही रह्या लोकां में पूजाय ।
 ठाला वादल सूं थोथा गाजो, ओं मोने इचर्य थाय रे ॥ २१ ॥
 इत्यादिक आचार में हीणां, ते पूरा केम कहवायो ।
 हिंसा मांहें धर्म परूणो, थानें ते पिण खबर न कांयो रे ॥ २२ ॥
 तेलो करें तिणने सीनां दिनां लग, कोइ उनोपाणी कर पायो ।
 तिणनें तो आगली सरघा रें लेखे, थे एकंत पाप बत्तायो रे ॥ २३ ॥

तिणने चोथें दिन आरंभ करने, छ काय हणीनें जीमायो ।
 तिण माहे मिश्र धर्म बतावो, ते किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ २४ ॥
 तेला मे उजो पाणी कर पावे, तिणमे तो पाप बतायो ।
 चोथे दिन पोळ्यो ते हिंसा घणी करे, तिणमे मिश्र किहां थी थायो रे ॥ २५ ॥
 ओ मिश्र परूय्यो ते थरि लेखे, बाघो न चालें कोय ।
 थे हिंसा माहें धर्म म थापो, सूतर सांद्दो जोय रे ॥ २६ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म जाणीने, छकाय हणे मंदबुधी ।
 धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरी, सरवा घणी छे उंधी ॥ २७ ॥
 सूइ नाके सिंघर पावें, कहो किम बागो पेसे ।
 ज्यू हिंसा माहे धर्म परूये, ते सालोसाल न बेसे रे ॥ २८ ॥
 ए समचे आचार साघरो बतायो, तिणमें राग घेख मत जाणो ।
 थे सुण सुणनें समता भाव राखो, थे म करो खांचाताणों रे ॥ २९ ॥
 पीत पुरांणी थी थारूं, पेंहली, तिणसूं भिन भिन कर समझावूं ।
 जो थारा मनमें संका पडें तो, सूतर काढ बतावूं रे ॥ ३० ॥
 समत अठारे वरस तेतीसे, मेळता सह्र मंभारो ।
 वेसाख विद नवमी दिन थाने, दीधी सीखावण हितकारो रे ॥ ३१ ॥

ढाल : १०

दुहा

तालपुट विप पीघां थकां, जूदा हुवें जीव काय ।
 कुगुर नें कोड गुर करें, ते चिहुं गति गोता धाय ॥ १ ॥
 कुगुर कुपातर अति बूरा, भाख्यो श्री भगवान ।
 त्यांनैं माठी माठी देउं ओपमा, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ २ ॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

विष पीघों निरणें कोटें, पवन भूम्यो हो बले तिणहिज ठाम ।
 नहीं ओपध नहीं गारडू, जिबण रो हो तिनरें काठो कांम ।
 लखण सुणो कुगुरां, तणां* ॥ १ ॥

विप जिम छें मिथ्यात अनादरो, सर्प जेहवा हो कुगुरां रा डंक जाण ।
 जहर सगलेइ परगम्यो, नहीं वांछें हो सुणवा साधां री वाण ॥ २ ॥

कदा सुणें तो सरघें नहीं, विण समझ्यां हो करें उंधी ताण ।
 साध थावक धर्म न ओलख्यो, सावद्य निरवद हो करणी रा अजाण ॥ ३ ॥

सनीपात भोलो घट तेहनैं, घणों भिडकें हो पायां मिश्री ने दूध ।
 इम साध वचन सुणीयां थकां, बक उटें हो मिथ्याती विण सुध ॥ ४ ॥

केइ अग्यानी इम कहें, म्हारे तो हो घणा री परतीत ।
 ते केडें लाग्गा कुगुरां तणे, समझण री हो न दीसैं कांइ रीत ॥ ५ ॥

जाजम विच्छाइ कूवा उपरें, चिहुं कांनी रे मेल्यो उपर भार ।
 भोला वेंसे तिण उपरें, ते डूब मरें रे तिण कूवा मभार ॥ ६ ॥

तिम कुगुर छें कूवा सारिया, जाजम सम रे कनैं साध रो भेष ।
 त्यांनैं गुर लेखव बंदणा करें, ते डूवें रे मूरख अंध अदेख रे ॥ ७ ॥

कुगुर भडभूजा सारिया, त्यांरी सरधा हो खोटी भाड समाण ।
 भारीकरमां जीव चिणा सारिया, त्यांनैं भोखे हो खोटी सरधा में आण ॥ ८ ॥

चोरी जारी करता लाजें नहीं, ते किम लाजें हो मूरख देता आल ।
 केई भेपधारी छें एहवा, कर रह्या हो पापी भूठी भखाल ॥ ९ ॥

एहवा भेपधाख्यां नें छेडव्यां, बक उटें हो वोलें आल पंपाल ।
 कजीया कलेस करें घणां, नहीं सके हो देता कूडा आल ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

लोक सुणे वखाण रात रो, जब जाए हो पाखंड पंथ उठ ।
 जब भेषधारी कुडता थकां, ते तो बोले हो पापी किण विघ भूठ ॥ ११ ॥
 परउपपार जाणनें, साध करे हो रात रो वखाण ।
 तिणमें कहे दोष निसंक सूं, ते भेषधारी हो एहवा मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 रात तणो वखाण निषेचीयो, भेषवाख्यां हो मूरखां बेफाम ।
 ते चोडे भूठ चलावीयो, लेइ लेइ हो भगवंत रो नाम ॥ १३ ॥
 जो सूतर में भगवंत वरजीयो, रात तणो नही करणो वखाण ।
 साचा हुवे तो सूतर में बताय वो, नही तो बूडो क्यूं हो कूडी कर ताण ॥ १४ ॥
 रात तणो वखाण करणो नही, सूतर मांहे हो नही वरज्यो साख्यात ।
 भेषवाख्यां भूठ चलावीयो, त्यांरी मानें हो कोइ मूरख वात ॥ १५ ॥
 दोष जाणे वखाण राते क्रीयां, तो कांय करे हो पोते राते वखाण ।
 पोते साध नाम धराय ने, कांय बूडे हो मूरख जाण जाण ॥ १६ ॥
 इम कहां जाव न उपजे, जब बोले हो मूरख उंची वाण ।
 कहे म्हें दोष सेवां जाण जाणने, पिण थाने हो नही करणो वखाण ॥ १७ ॥
 पोते भागल दोषीला ठहरने, निषेचो हो रात तणो वखाण ।
 एहवा भेषधारी सुघ बुघ विनां, अणहूंती हो लीची गला में ताण ॥ १८ ॥
 कोइ नाक काटे आपरो, पॅलाने हो कुसावण करवा काज ।
 एहवा मूरख छे मांनवी, नकटा हुवेतां हो मूरख नांणी लाज ॥ १९ ॥
 ज्यूं साधां ने दोषीला थापवा, भेषधारी हो दोषीला ठहख्या आप ।
 नकटा तणी त्यांने ओपमा, त्यांरे होसी हो भवभव में सताप ॥ २० ॥
 एहवा कुगुरां री परतीत सूं, आगे बूडा हो घणां जीव अंतंत ।
 ते नरक निगोद माहे पख्यां, त्यारो कहतां हो किम आवे अंत ॥ २१ ॥



ढाल : ११

दुहा

विनें मूल घर्म जिण कह्यो, ते जाणें विरला जीव ।
 ते सतगुर रो विनों करें, त्यां दीधी मुगत री नींव ॥ १ ॥
 जे कुगुर तणो विनो करें, ते किम उत्तरें भवपार ।
 ज्यां सुगुर कुगुर नहीं ओलख्या, ते गया जमारो हार ॥ २ ॥
 केई अग्यांनी इम कहें, गुर नें बाप एक होय ।
 भूंडा भला जे गुर कख्या, त्यांनै न छोडणा कोय ॥ ३ ॥
 जिण आगम माहें इम कह्यो, गुर करणा गुण देख ।
 खोटा गुर ने नहीं सेवणा, त्यांरी कीमत करणी वशे ॥ ४ ॥
 कुगुर नें अजाणपणें गुर कीयो, ठीक पडीयां छोडणो सताब ।
 आतो लीधी टेक न राखणी, ते सुणजो सूतर रा जाब ॥ ५ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नदन वीर]

केई भोला लोक इम कहें जी, गुर नहीं छोडणा कोय ।
 त्यां आचार तो ओलख्यो नही, मन आवें ज्यूं बोलें सोय ।
 चुतर नर छोडो कुगुरनों संग* ॥ १ ॥
 गुर गहला गुर बावला, तोही गुर देवन का देव ।
 चेलो जों सेणों हुवे तो, उं करे गुरां री सेव ॥ २ ॥
 साचो मारग साधरो जी, खोट खटावें नांहि ।
 चेलो गुर चूकें कदा जी, तो छोडें खिण एक मांहि ॥ ३ ॥
 कहो साध किसका सगा जी, तडकें तोडें नेह ।
 आचारी सूं हिलभिलें जी, अणाचारी सूं छेह ॥ ४ ॥
 नीलटांस कीडा चूर्णे जी, मांहें विराजें राम ।
 कहे करणी रो कारण नही, म्हांरे दरसनरोइ काम ।
 ए अणतीरथी री वाण ॥ ५ ॥
 नीलटांस कीडा चूर्णेजी, तिणरे दया नहीं घट मांय ।
 पापी रो मुख देखतां जी, भलो कठा सूं थाय ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गुण लारे पूजा कही, तोही निगुण पूजता जाय ।
 चोडे भूला मानवी, त्याने किम आंणीजे ठाय ॥ ७ ॥
 सोंनारी छूरी चोखी घणीं, पिण पेट न मारे कोय ।
 ए लोकीक दिष्टत सांभले, तुम्हे हिरदें विमासी जोय ॥ ८ ॥
 ज्युं गुर कीधा तिखा भणी, ते ले जावें दुरगति मांय ।
 जे भागल तूटल गुर हुवे, त्याने उभा दीजे छिटकाय ॥ ९ ॥
 खोटा गुरने नहीं सेवणा जी, श्री वीर गया छें भाख ।
 कुण कुण गुरने छोडीया, त्यांरी सूतर में छे साख ॥ १० ॥
 जमाली सिष्य भगवंत रो, तिणरें चेल पाचसों जाण ।
 एक वचन उथापे वीर नो जी, पर गयो उलटी तांण ॥ ११ ॥
 जब कितरां एक चेलं तणो जी, तुरत गयों मन भाग ।
 घणां चेलं जमाली ने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १२ ॥
 केइ मूढ मिध्याती कने रह्या, केइ आया भगवंत पास ।
 जमाली ने खोटो जाण छोडीयो, त्याने वीर क्खाण्या तास ॥ १३ ॥
 जमाली ने कुगुर जाण्या पछे जी, छोड दीयों ततकाल ।
 जो गुर छोड्यारी संका पडे तो, सूतर भगोती संभाल ॥ १४ ॥
 सावथी नगरी रे बाहिरे जी, कोठक नामां बाग ।
 तठे गोसाले भगवंत सूं जी, कीयो संवादो लाग ॥ १५ ॥
 अजोग बोल्यो भगवत ने जी, मूल न राखी काण ।
 दौय साव बाल्या भगवंत रा जी, वीर नें कीयो लोही ठांण ॥ १६ ॥
 लेस्या सूं खाली हुवो जाणने जी, साघ आया सताब ।
 गोसाला ने प्रस्न पूछीया, जब नायो गोसाला ने जाव ॥ १७ ॥
 जब गोसाला रा चेला तणों, उत्तरीयो गोसाला सूं राग ।
 तिणने खोटो जाणने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १८ ॥
 त्या गोसाला ने गुर कीयो हूतो, पिण छोड्तां नांणी लाज ।
 पछे गुर करे श्री भगवत ने, त्या साख्या आतम काज ॥ १९ ॥
 केइ चेलं गोसाला कने रह्या, त्यां राखी गोसाला री टेक ।
 ते तो कुगुर नें सेवनें जी, अें वूडा विनां ववेक ॥ २० ॥
 गोसाला ने चेलं छोडीयो जी, ते तिरीया संसार ।
 ए भगवती रे सतखंघ पनरमें, ते बुववत करजों विचर ॥ २१ ॥
 सोगंधीया नगरी तिहां जी, नीलासोग उद्यांण ।
 सेठ सुदंसण तिहां वसे, ते डहो चतुर मुजांण ॥ २२ ॥

सुखदेव सिन्यासी नें गुर कीयो जी, सेठ सुदंसण जाण ।
 खोटो जाण्यों जब छोडीयो, उणरी मूल न राखी काण ॥ २३ ॥
 थावचा अणगार नें, गुर कीचा उत्तम जाण ।
 सुखदेव सिन्यासी नें छोडीयो, तिण श्री जिण धर्म पिछाण ॥ २४ ॥
 सुखदेव सिन्यासी सांभल्यो जब, आयो वेग सताब ।
 सेठ सुदंसण रें घरे जी, आयों करवा जाब ॥ २५ ॥
 पछे सुखदेव नें सुदंसण, आया नीलासोग उद्यान ।
 थावचें अणगार - समझावीया, जब आयों घट में ग्यान ॥ २६ ॥
 सुखदेव सिन्यासी तिण समें, वले चेला एक हजार ।
 थावचा अणगार नें गुर कीयां जी, लीवो संयम भार ॥ २७ ॥
 त्यां आगला गुर नें छोडतां जी, सक न आंणी काय ।
 गिनाता रा पांचमां अघेन में जी, ए चोडे सूतर रो न्याय ॥ २८ ॥
 सेलकराय रषेसर तणें जी, पांचसो चेला लार ।
 सेलगपुर नगर पघारीया जी, करता उग्र वीहार ॥ २९ ॥
 तठें बेटे कीची त्यांरी वीनती जी, सरीर में रोग जाण ।
 जब रथसाला में आय उतर्या जी, पछे ओषध कीचा आण ॥ ३० ॥
 रोग गयो साता हुइ पिण, न करें तिहां थी वीहार ।
 खावापीवा उण चित्त दीयों जी, सिधी थको करें आहार ॥ ३१ ॥
 उसनो उसनविहारी हुवो जी, पासथो कुसीलीयो जाण ।
 परमादी नें संसतो, ए पाचूंई बोल पिछाण ॥ ३२ ॥
 जब पंथग बरजी पांचसो जी, मिलने कीयो बिचार ।
 गुर तो पढ्या परमाद मे जी, पिण आपानें सिरें छें वीहार ॥ ३३ ॥
 एहवी करें विचारणा जी, परभाते कीयो वीहार ।
 गुरने ढीलें जाण छोडीयो, ते चिन मोटा अणगार ॥ ३४ ॥
 पंथग बरजी पांचसों जी, नांणी गुर री परतीत ।
 त्यां ढीलें जांणीनें परहृख्यो - जी, आजिण मारग री रीत ॥ ३५ ॥
 पंथग वीयावच करीजी, तिणने कट्टे केइ धर्म ।
 त्यां जिण मारग नहीं ओल्लख्यो जी, भूला अग्यानी भर्म ॥ ३६ ॥
 उसनादिक पांचूं भणीजी, असणादिक दें कोय ।
 तिणनें चोमासी डंड नसीत रें, पनरमें उदेसैं जोय ॥ ३७ ॥
 तो सेलगनें जिण घालीयो जी, उसनादिक पांचूं मांय ।
 तो तिणरी वीयावच कीयां में, धर्म किहां थी थाय ॥ ३८ ॥

ज्ञाता अंग मे जिण कह्यो जी, म्हांरो साध साधवी होय ।
 जो सेल्य ज्यूं ढीलो पडें तो, गण माहे आछ्यो न कोय ॥ ३६ ॥
 घणां साध ने साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय ।
 उ हेलवा निंदवा जोग छें, जाव अनंत संसारी थाय ॥ ४० ॥
 जे हेलवा निंदवा जोग छे, तिणने वांछा किहां थी धर्म ।
 तिणरो विनों वीयावच कीया में, निश्चे वंघसी कर्म ॥ ४१ ॥
 पंथग वीयावच करीजी, ए आपरों छांदो जाण ।
 धर्म नही तीन करण में जी, नसीत सूं करो पिछांग ॥ ४२ ॥
 पंथग ने वीयावच थापीयों, जब सगलाइ भेला जाण ।
 ते पिण छांदो आपरो जी, पूरवली पीत आंग ॥ ४३ ॥
 पथग वरजी पांचसो, गुरने छोड्या खोटं जाण ।
 पछें सुध हुवा काने सुण्या, जब सगलाइ मिलीया आंग ॥ ४४ ॥
 ए ज्ञाता सूतर मे कह्यो जी, पांचमां अघेन रे मांय ।
 खोटं जाणें गुर छोडणां जी, आ संका म आणो काय ॥ ४५ ॥
 सकडाल गोसाला ने गुर कीयो जी, छेहलो तीथंकर जाण ।
 तिण खोटो जाण्यो जब छोडीयो, उणरी मूल न राखी कांण ॥ ४६ ॥
 पछे गुर कीघा भगवंत नें जी, कीयो गोसाला नें दूर ।
 ए सातमा अग मांहे कह्यो, ते निश्चे म आणो कूर ॥ ४७ ॥
 पछे गोसालो सुण आयो तिहां, सकडाल ने फेरण कांम ।
 सकडाल गोसाला ने देखनें, बेटों रह्यो एकण ठांम ॥ ४८ ॥
 तिणने आदर सनमान दीयों नही, वले मीट न मेली तांम ।
 जब गोसाले कपटी थके, कीघा भगवंत रा गुण ग्राम ॥ ४९ ॥
 हाट दीघा उत्तरवा तेहने, पिण मांम पाडी तिण ठांम ।
 कह्यो तों ओ दान दीयों तिको, म्हांरे नही धर्म रो कांम ॥ ५० ॥
 अंगालभरदन साध रें, चेलां पांचसो मुनीराय ।
 गुर तो अमघी जीव छें, पिण चेलां ने खवर न कांय ॥ ५१ ॥
 एक मंड्युरो आगे चले, तिणरें पांचसो हस्ती लार ।
 एहवो सुपनों राय देखने, परभाते करे वीचार ॥ ५२ ॥
 इतला मांहे आवीया, अंगालभरदन अणगार ।
 राजा देख सांसे पढ्यो, पछें परख करी उण वार ॥ ५३ ॥
 पछे चेलां पिण गुर ने जाणीयो, ए तिरण तारण नहीं होय ।
 दया रहीत जाणे छोडीयो, पिण मोह न आण्यो कोय ॥ ५४ ॥

ए ठांणांअंग रा अर्थ में, वले कह्यो कथा रें मांय ।
 खोटा गुर नें छोडणा कह्या, ते निरुचें सूतर रोय न्याय ॥ ५५ ॥
 हूं कहि कहि नें कितरा कहूंजी, गुर छोड्यां रा नांम ।
 ते सूतर में छें अति घणा जी, आ कही वांनगी तांम ॥ ५६ ॥
 इत्यादिक साध नें श्रावकां जी, गुर नें छोड तिरिया अनंत ।
 जे करणी करें मुगते गया, त्यांरा गुण गाया भगवंत ॥ ५७ ॥
 गुर गुर गेंहला कर रह्या, पिण गुर री खबर न काय ।
 जो हीण आचारी नें गुर करें तो, चिहूं गति गोता खाय ॥ ५८ ॥
 जे कुगुर छोड सत गुर करें, वले पालें विरत अमंग ।
 ते तिख्या तिरें तिरसी घणा जी, सतगुर रे परसंग ॥ ५९ ॥
 गुर नें ढीला जाण छोडीया, त्यांरी कही सूतर सूं बात ।
 हिवें परंपरा गुर छोडीया जी, ते सुणजो विख्यात ॥ ६० ॥
 लूकें साह गुर नें छोडनें जी, कीधी आपणी थाप ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, इण मोटों कीधों पाप ॥ ६१ ॥
 त्यां मां सूं नीकल्या ढूंढीया जी, लूका गुरां नें छोड ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, यामें ही मोटी खोड ॥ ६२ ॥
 लूकां नें ढीला जाण छोडनें जी, सयमेव चारित लीध ।
 साध वाज्या तिण दिक्स थी जी, ओर गुर कोइ माथे न कीध ॥ ६३ ॥
 जो गुर नहीं माथे केहनें जी, तिणमें बतावें दोष ।
 तो धुर सूं निगुरा छें ढूंढीया, इण लेखें ओही मत फोक ॥ ६४ ॥
 कोइ कहें गुर माथे कीयां विनां जी, नही उतरें भव पार ।
 तो इण लेखें सगलाइ ढूंढीया जी, अँ निगुरां रो पिरवार ॥ ६५ ॥
 जो गुर छोड्यां में दोष छे, वले गुर नहीं कीधां रो दोष ।
 ए दोनूं दोष तो ढूंढीयां में, ते किण विष जासी मोख ॥ ६६ ॥
 वले मांहोमां ढूंढीया जी, गुर छोडें छें तांम ।
 वले ओर करें गुर जायनें जी, तिणरो धरावें नांम ॥ ६७ ॥
 ढूंढीया में गुर छोडें घणां जी, त्यांरो किण किण रो कहूं नांम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां, तों अँ सर्व बूडा वेकांम ॥ ६८ ॥
 केई संवेगीयां रा श्रावकां, त्यां गुर कीयां ढूंढीयां तांम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां तांम, अँ खोटी हुवा वेकांम ॥ ६९ ॥
 वले भगत सिन्यासी नें सेवडा जी, केई गुर छोडी उभा जाय ।
 जो उवे गुर करें ढूंढीया भणी जी, तुरत मूडेले मांय ॥ ७० ॥

उणरा आगला गुर छोडायनें जी, आप हुवा गुर तांण ।
 जो दोष कहे गुर छोडीयां तो, कांय बोया त्यानें जांण ॥ ७१ ॥
 यांरी सरघा रें लेखें इम बोलणो जी, गुर मत छोडो कोय ।
 आगला गुर नें सेवतां, थाने सुष गति वेगी होय ॥ ७२ ॥
 इम कहणी आवें नहीं, जब बोलया सूधी वांण ।
 खोटां जांणी गुर छोडणा जी, करंणा उत्तम गुर जांण ॥ ७३ ॥
 तो क्युं कहो गुर नें न छोडणा जी, कूडी कांय करो वकवाय ।
 इण विघ लीघा सांकडें, जब कोयक बोलें न्याय ॥ ७४ ॥
 कुगुर छोडणी करी जी, रीयां गांम मभार ।
 संवत अठारें तेतीसे समें, असाठ सुद तीज नें सोमवार ॥ ७५ ॥



दुहल

भेष पहृख्यों .. भगवॉन रो, सलधु नॉम धरलय ।
 पलण ऑलऑर में ढीलल घणॉ, ते कह्यों कळ लग जलय ॥ १ ॥
 त्यॉनें वॉढें गुर जॉणनें, वले कूडी करें पखपलत ।
 त्यॉ भूठॉ नें सलऑल करण खपें, त्यॉरे मोटें सलल मलधुयलत ॥ २ ॥
 कुगुर तणॉ पग वॉदनें, ऑगें बूडल जीव अनंत ।
 वले बूढें नें बूडसी घणॉ, त्यॉरो कहतॉ न ऑवें अंत ॥ ३ ॥
 सलध मलरग छें सॉकडों, तलणमें न ऑल्लें खोट ।
 ऑगलर नहें त्यॉरे पलप रो, त्यॉ वरत कीयॉ नवकोट ॥ ॡ ॥
 भेषधलरी भलगल घणॉ, त्यॉसूं पल्लें नहें ऑलऑर ।
 ते कुण अकलर्य कर रह्यल, ते सुणजो वलसतलर ॥ ५ ॥

ढलल

[ऑदर जीवल रलवमल गुर ऑदर]

कुगुर तणॉ ऑलरत ऑवल करसूं, सूतर री दे सलख जी ।
 सुमतल ऑण सुणो भव जीवॉ, श्री वीर गयल छें भलख जी ।
 सलध म जॉणों इण ऑलऑर* ॥ १ ॥
 जो कुगुरॉ नें सेंठ कर भलल्यल, तोही सुण सुण म करो घेख जी ।
 सलऑ भूठ रो करों नलवेरो, सूतर सॉह्यो देख जी ॥ २ ॥
 जीमणवलर मॉसूं कोइ ग्रहस्थ, ल्यलवें धोवण पॉणी मॉड जी ।
 ते ऑप तणें धरें ऑण वेहरलवें, ते करें भेष नें भॉड जी ॥ ३ ॥
 जो जॉण जॉणनें सलध वेहरें, तलण लोप दीयो ऑलऑर जी ।
 ए प्रतख सॉह्यो ऑण्यों लेवे, त्यॉनें कलम कहलजें अणगलर जी ॥ ॡ ॥
 ए अणलऑर उघलडों सेवें, जे सॉह्यो ऑण्यों ले ऑहलर जी ।
 ए दसवीकलक तीजें अघेनें, कोइ जोवो ऑलख उघलड जी ॥ ५ ॥
 सलध सलधवी ठरल्लें मलतर, एकण दरवलजें जॉय जी ।
 वीर वऑन सू उलटल पडीयल, ए ऑोडें कीयों अन्यलय जी ॥ ६ ॥
 गलम नगर पुर पलटण पलडो, तलणरो हुवें एक नीकलल जी ।
 तलहॉ सलध सलधवी न रहें भेला, ऑ वॉंधी भगवंत पलल जी ॥ ७ ॥

* यह ऑंकडी प्रत्येक गलथल के अनंत में है ।

आचार री चौपई : ढाल १२

एकण दरवाजे साध साधवी, जो जाए नगरी वार जी ।
 तो अपरतीत उठे लोकां में, केइ विरत भांगी हुवे खुवार जी ॥ ८ ॥
 जुदो जुदो नीकाल छतो पिण, कोइ जाए एकण दरवाज जी ।
 ते घेठा हटक न माने किणरी, वले नांणे मन मे लाज जी ॥ ९ ॥
 एक नीकाल तिहां रहणोइ वरज्यों, तो किम जाए एकण दुवार जी ।
 ए वेतकल्प रें पेहले उदेसैं, ते वुधवंत करो विचार जी ॥ १० ॥
 ग्रहस्थ रे घरे जाए गोचरी, जो जोडीयो देखें दुवार जी ।
 तिहां सुध साध तो फिर जाए पांछा, भागल जाए खोल किवाड जी ॥ ११ ॥
 केई भेषघास्यां रे एहवी सरघा, ग्रहस्थ रे जड्यो दुवार जी ।
 तो घणी तणी आग्या ले साध, मांहे जाए खोल किवाड जी ॥ १२ ॥
 हाथां सूं साध किवाड उघाडे, मांहे जाए वेहरण ने आहार जी ।
 इसरी 'ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वेकार जी ॥ १३ ॥
 किवाड उघाडनें वेहरण जाणरो, मूल न सरखे पाप जी ।
 कदा न गया तो पिण गया सारिषा, आ कर राखी छे थाप जी ॥ १४ ॥
 किवाड उघाडनें वेहरण जाए, तो हिंसा जीवां री थाय जी ।
 ते आवसग सूतर मे वरज्यों, चोथा अघेन रे मांय जी ॥ १५ ॥
 गाम नगर वारे उत्तरीयो, कटक सथवाडो ताहिजी ।
 जो साध रात रहे तिण ठमि, ते नही जिण आग्या मांहि जी ॥ १६ ॥
 एक रात रहे कटक मे तिणने, च्यार मास रो छेद जी ।
 ते वेतकल्प रे तीजे उदेसे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ १७ ॥
 इसरा दोष जाणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्म रीत जी ।
 एहवा मिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीत जी ॥ १८ ॥
 विण कारण आंख्यां में अंजण, घाले आंख मभार जी ।
 त्यांने साधवीयां किम सरघीजे, त्यां छोड दीयो आचार जी ॥ १९ ॥
 विण कारण जो अजण घाले, ते श्री जिण आग्या बार जी ।
 दसवीकालक तीजे अघेने, ओ उघाडो अणाचार जी ॥ २० ॥
 वस्त्र पातर पोथी पानादिक, जाए ग्रहस्थ रें घरे मेल जी ।
 पछें करे विहार दे घणी मलावण, तिण प्रवचन दीघां ठेल जी ॥ २१ ॥
 पछें ग्रहस्थ आंमा सांहा मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी ।
 तिण हिंसा सूं ग्रहस्थ नें साध, दोनूं भारी हुवे ताय जी ॥ २२ ॥
 भार पडावे ग्रहस्थ आगे, ते किम साधु थाय जी ।
 नसीत रे बारमें उदेसैं, चोमासी चारित जाय जी ॥ २३ ॥

बले विण पडिलेह्यां रहें सदा नित, ग्रहस्थ रा घर मांय जी ।
 ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवों सूतर रो न्याय जी ॥ २४ ॥
 जो विण पडिलेह्यां रहें एक दिन, तिणनें डंड कह्यो मासीक जी ।
 नसीत रे दूजें उदेसें, तिहां जोय करों तहतीक जी ॥ २५ ॥
 मात पितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखें खाल जी ।
 त्यांनें परिग्रहो साध दरावें, आ चोडें कुमुर री चाल जी ॥ २६ ॥
 सांनीकर साध दरावें रुपीया, वरत पांचमो भांग जी ।
 बले पूछ्यां भूठ कपट सूं वोळें, तिण पेंहर विगाडचों सांग जी ॥ २७ ॥
 न्यातीलां नें दांम दरावें, त्यांरें मोह न मिटीयों कोयजी ।
 बले सार संभाल करावें त्यांरी, ते निस्चें साध न होय जी ॥ २८ ॥
 अनरथ रो मूल कह्यो परिग्रहो, ठांणां अंग तीजें ठांग जी ।
 तिणरी साध करें दलाली, ते पूरा मूंड अयाण जी ॥ २९ ॥
 रित उनालें पांणी ठारें, ग्रहस्थ रा ठाम मभार जी ।
 मन मानें जब पाछा सूंपें, ते श्रीजिण आग्या बारजी ॥ ३० ॥
 ग्रहस्थ तणां भाजन में साधु, जीमें असणादिक आहार जी ।
 तिणनें मिष्ट कह्यो दसवीकाल में, छठा अघेन मभार जी ॥ ३१ ॥
 केइ सांग पहर साधवीयां वाजें, पिण घट में नहीं बवेक जी ।
 आहार करें जब जडें किवाड, दिन में वार अनेक जी ॥ ३२ ॥
 ठरलें मातरे गोचरी जाए जब, आडा जडें किवाड जी ।
 बले साध कनें आवें तोही जडलें, त्यांरो विगड गयो आचार जी ॥ ३३ ॥
 साधवीयां नें जडवो चाल्यो, ते सीलादिक राखण काज जी ।
 ओर काम जो जडें साधवीयां, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ३४ ॥
 आवसग में हिंसा कही जडीयां, आलोवण खातें ताहि जी ।
 मन करने जडणो नहीं वांछे, उतराघेन पेंतीसमां मांहि जी ॥ ३५ ॥
 ओषध आद दे वेंहर आंगें, केइ वासी राखें रात जी ।
 ते जाय मेलें ग्रहस्थ रा घर में, पछें नित ल्यावें परभात जी ॥ ३६ ॥
 आपरो थको ग्रहस्थ नें सूंप्यो, ए मोटों दोष पिछ्छांग जी ।
 बले वीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजेंयणा जांग जी ॥ ३७ ॥
 बले चोथो दोष पूछ्यां भूठ वोळें, वासी राख्यो न कहें मूंड जी ।
 केइ भेषघारी छें एहवा भागल, त्यांरें भूठ कपट छें गूड जी ॥ ३८ ॥
 ओषध आद दे वासी राख्यां, वरतां में पडें वगार जी ।
 कह्यो दसवीकालक तीजें अघेनें, वासी राखें तो अणाचार जी ॥ ३९ ॥

केइ आघाकरमी पुस्तक वेंहरे, वले तेहिज लीघो मोल जी ।
 ते पिण सांहो आण्यो वेंहरे, त्यारे पूरी जाणजो पोल जी ॥ ४० ॥
 कोइ आप कनें दिख्या ले तिणरे, सांनीकर मेलें साज जी ।
 पुस्तक पांनादिक मोल लरावे, वले कुण कुण करे अकाज जी ॥ ४१ ॥
 गछवासी परमुख आगा सूं, लिखावे सूतर जाण जी ।
 पेंहला मोल कराय परत रो, सचकार दरावें आणजी ॥ ४२ ॥
 खीया मेलावे ओर तणे घर, इसडो सेडो करे कांम जी ।
 ते पिण हाथे परत आयां विण, दिख्या दे काढे तांम जी ॥ ४३ ॥
 पछे गछवासी कवल सूं डरतो, परत लिखे दिन रात जी ।
 जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करे तस थावर री घातजी ॥ ४४ ॥
 इण विघ साघ परत लिखावें, तिण संजम दीघो खोय जी ।
 जे दया रहीत छें एहवां दूष्टी, ते निश्चे साघ न होय जी ॥ ४५ ॥
 छकाय हणीने परत लिखी ते, आघाकरमी जाण जी ।
 ते हिज परत जो साघ वेहरे, ए भागल रा अहलांण जी ॥ ४६ ॥
 वले तेहिज परत टोलां मे राखें, आघाकरमी जाण जी ।
 जे सेमल हुवा ते सगला बूडा, तिणमे संका मत आण जी ॥ ४७ ॥
 आघाकरमी रा लेवाल रुले तो, उतकटो काल अनंत जी ।
 दया रहीत कह्यो तिण साघ ने, भगोती में भगवंत जी ॥ ४८ ॥
 कोइ श्रावक साघ समीपे आए, हरषे वांदे पग झाल जी ।
 जब साघ हाथ दे तिणरे माथे, आ चोडे कुगुर री चाल जी ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रें माथें हाथ देवे ते, ग्रहस्थ बरोबर जाण जी ।
 एहवा विफलां ने साघ सरधे, ते पिण विकल समांण जी ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थ रे माथें हाथ दीयो तिण, ग्रहस्थ सू कियो सभोग जी ।
 तिणने साधु किम सरधीजे, लागो जोग ने रोग जी ॥ ५१ ॥
 दसवीकालक आचारंग माहे, वले जोवो सूतर नसीत जी ।
 ग्रहस्थ रें माथे हाथ दीयो ते, वा प्रतख उंधी रीत जी ॥ ५२ ॥
 वले चेला करें ते चोर तणी परे, ठग पासीगर ज्यूं तांम जी ।
 वले उजबक ज्यूं तिणनें उचकाए, लेजाय मूंडे ओर गांम जी ॥ ५३ ॥
 आछो आहार दिखाए तिणनें, कपडादिक मही दिखाय जी ।
 इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलाने मूंडे भरमाय जी ॥ ५४ ॥
 इण विघ चेला कर मत बांधे, ते गुण विण कोरो भेष जी ।
 साघपणा रो सांग पेहर ने, भारी हुवे वशेष जी ॥ ५५ ॥

मूंड मूंडावी भेला कीघा, त्यासूं पलें नहीं आंचार जी ।
 भूख तिरखा पिण खमणी नावें, जब लेवें असुघ पिण आहार जी ॥ ५६ ॥
 अनल अजोग नें दिख्या दीघां, तो चारित रो हुवें खंडजी ।
 नसीत रे उदेसैं इग्यारमें, चोमासी रो डंड जी ॥ ५७ ॥
 ववेक विकल बालक बूढा नें, पेंहरावें सांग सताव जी ।
 त्यांनैं जीवादिक पदारथ नव रा, जाबक नावें जाबजी ॥ ५८ ॥
 सिष्य करणों तो निपुण बुधवालो, जीवादिक नव जाणें ताहिजी ।
 नहीं तों एकल रहणों टोला में, उत्तराधेन बतीसमा मांहि जी ॥ ५९ ॥
 केई दडें लीपें हाथां सू थांनक, ते पिण ढलीया कूट जी ।
 इसरो काम करें तिण साधु, पाडी भेषमें फूटजी ॥ ६० ॥
 जो दडें लीपें थांनक नें साधु, तिण श्री जिण आग्या भंग जी ।
 तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंग जी ॥ ६१ ॥
 छती साधवीयां टोला मांहें, बले कारण पिण न पड्यो कोय जी ।
 तोही दाय साधवीयां रहें छें, ओ दोष उघाडो जोय जी ॥ ६२ ॥
 पवित्रणी रहें दाय साधवी, ते जिण आग्या में नाहि जी ।
 त्यांनैं वरज्यो ववहार सूतर में, पांचमां उदेसा मांहि जी ॥ ६३ ॥
 कारण विण एकली साधवी, असणादिक वहरण जाय जी ।
 बले ठरले पिण एकलडी जावें, ते नहीं जिण आग्या मांय जी ॥ ६४ ॥
 बले एकलडी नें रहणों वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी ।
 ते वेतकल्प रें पांचमें उदेसे, ते समझों आंग ववेक जी ॥ ६५ ॥
 कुगुरु एहवा हीण आचारी, साघां सू दे भिडकाय जी ।
 आप तणां किरतव सू डरता, जिण मारग दीयो छिपाय जी ॥ ६६ ॥
 इसडा कुगुरु नें गुरकर मांनैं, त्यारें अभितर में अंचकार जी ।
 गुर में खोटो खाय अग्यानी, चाल्या जनम विगाड जी ॥ ६७ ॥
 उसभ करम ज्यारे उदें हुवा जब, इसरा गुर भिलीया आय जी ।
 दग्ध बीज हो जाबक बूढा, पछें चिहूंगति गोता खाय जी ॥ ६८ ॥
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी, छोडो कुगुर नो संग जी ।
 सत गुर सेवो सुघ आचारी, दिन दिन चढतें रंग जी ॥ ६९ ॥
 आ सभाय करी कुगुरु ओलखावण, पीपाड सहर मभार जी ।
 समत अठारे वरस चोतीसे, आसोज सुद सातम बुधवार जी ॥ ७० ॥

बाल : १३

दुहा

केई साधु नांम धराय ने, सेवें दोष अनेक ।
त्याने ठीक नही त्यांरा दोष री, ते सुणजो आंण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजेसर]

केइ भंगी रा घर री रोटी तो खावें, पिण भंगी री भीटी न खावें ।
इसडी उत्तमाई देखी विकलां री, डाहा ते इचर्य पावे रे ।
जोवों हिरद विचारी, थे छोडो कुगुर री लारी रे ।
कुगुर हीण आचारी* ॥ १ ॥

ज्युं केई हाथा सूं जडें उघाडे किवाड, ग्रहस्थ उघाड दीयां करें टालों ।
इसडों आचार देखो कुगुरां री, ते प्रतष ढाल मे कालो रे ॥ २ ॥

ग्रहस्थ उघाडे आहार बेहरावें, ते वेहरें नहीं दोष जाण ।
हाथे जड्यां उघाड्यां री दोष न जाणें, इसडा छें मूढ अयांण रे ॥ ३ ॥

गोचरी जाए जब जडें किवाड, पाछा आयां पिण खोलें किवाड ।
ग्रहस्थ रे घरे गयां खोल ने पेसे, इसडों कुगुरां री आचार रे ॥ ४ ॥

ज्याने साध सरधें त्याने भेला न राखें, एकण थानक मांहि ।
त्यानें पूछ्यां कहें म्हारे नही संभोग, तिणसूं भेला उतरां नाहि रे ॥ ५ ॥

इम कहि कहि राते भेला न राखें, एकण थानक मांय ।
तो यारे ग्रहस्थ सूं संभोग किसों छे, तिणनें माहें राखें कांय रे ॥ ६ ॥

ग्रहस्थ नें भेलां राखे सांघां ने नहीं राखें, ओ दोनूं कांती देवालो ।
यां दोनूं बोलांरो प्रायच्छित आवें, सूतर नसीत संभालो रे ॥ ७ ॥

कोइ सुध साघां रा कुल गण मांहें, भेद पाडें कर कर तांण ।
तिणने प्रायच्छित दसमो आवे, ठांणा अंग रे पांचमें ठांण रे ॥ ८ ॥

जो दोषीलां सूं संभोग तोडे तो, प्रायच्छित मूल न आवें ।
वले त्यां दोषीलां ने तेहिज वादे, तो सगला सरिषा थावे रे ॥ ९ ॥

कदा आप दोषीलां नें बंदणा छोडें, तो पिण थावकां नें दूकावें रें ।
ते आप तणां मुतलब रें अर्थ, ठगा सूं काम चलावें रे ॥ १० ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले धर्म कहें दोषीलां नें बांदा,
 तिण समकत सहीत साधपणों खोयो,
 त्यां दोषीलां नें साधां बंदणा छोडी,
 तिणनें त्यांरा गुर री परतीत न आई,
 ज्यांरी परतीत थी त्यां बंदणा छोडी,
 इसडों अंधारों छें घट भितर जेहनें,
 ज्यांनें दोषीलां सरधें त्यांनें हिज वांदे,
 ते सममें नहीं घमडोल में पडीया,
 डीला भागल नें साध वांदे नहीं,
 तो थावक थावका वांदसी त्यांनें,
 जे घर हुवो असुभक्तो तिण दिन,
 जो उणहीज दिन तिण घर रों वेंहरें,
 पेंहला तो ज्यां घरां रो धोवण जाय ल्यावें,
 पछे तिण दिन तिण हीज टोलारा,
 उणहीज दिन उणहीज टोलारा,
 असुभक्तो हुवो घर नहीं वतावें,
 द्धम प्रतप आहार असुभक्तो खावें,
 ते साधपणां रो नांम घरावें,
 कोइ कहें म्हें नितको एकण घर रों,
 म्हें धोवणादिक वेंहरां ते न्हांखी तो,
 तो पेंहलें दिन जिण घर जाय वेंहख्यों,
 बीजें दिन बीहर करतां नित वेंहरें,
 उन्हीं पांणी पिण नितको वेंहरें,
 त्यांनें पूछें पांणी नितको कांय वेंहख्यों,
 केइ पाडा बंध गोचरी वरजेनें,
 सिष्य सिष्यणी सगला नें मेलें,
 एक दोय सिषाडे पेंहलें दिन वेंहख्यों,
 नितरो नित वेंहख्यों एकण टोला रां,
 केई एकण गुर रा सिष्य सिष्यणी छें,
 ते गोचरी जाए विण पूछ्यां मांहोमां,
 उण वेंहख्यों ते घर बीजा न टालें,
 नितरो नित वेंहरें एकण टोला रा,

तिणरें आय चूको मिथ्यात ।
 उंधीं सरधें सूतर री बात रे ॥ ११ ॥
 त्यांनें थावक थाविका वांदें ।
 जिण धर्म न ओलख्यों आंधें रे ॥ १२ ॥
 तो आप वांदें किण लेखें ।
 ते सूतर न्याय न देखें रे ॥ १३ ॥
 इसडी ज्यांरें भोलप मोटी ।
 सरधा झाल रह्या छें खोटी ॥ १४ ॥
 लागतो जाणें पाप करम ।
 किण विध होसी धर्म रे ॥ १५ ॥
 जिण दिन वेंहरणों नांहि ।
 तो भागल री पांत मांहि रे ॥ १६ ॥
 त्यां कठें असुभक्तों होय जावें ।
 विण पूछ्यांही वेंहरी ल्याय रे ॥ १७ ॥
 मन मानें तिण घर जावें ।
 विण पूछ्यांही वेंहरी ल्यावें रे ॥ १८ ॥
 त्यांमें आछी अकल किम आवें ।
 इण लेखें दुरगत जावें रे ॥ १९ ॥
 नहीं वेंहरां आहार नें पांणी ।
 ओ पिण भूठ बोलें छें जांणी रे ॥ २० ॥
 असणादिक च्याखं आहार ।
 जब कठी गयो आचार रे ॥ २१ ॥
 कलालादिक रें घरे जाय ।
 जब साच बोल्यों नहीं जाय रे ॥ २२ ॥
 फूटकर घरां रे मांय ।
 तिहां वेंहरें नितरा नित जाय रे ॥ २३ ॥
 केकां वेंहख्यों बीजें दिन जाण ।
 गुर रें पास मेल्यो आण रे ॥ २४ ॥
 च्यारां पांचा जायगां रहें ताय ।
 एकण घर पिण वेंहरें आय रे ॥ २५ ॥
 बीजां वेंहख्यो ते ओ पिण न टालें ।
 अणाचार नें कुण संभालें रे ॥ २६ ॥

इत्यादिक बले कूड कपट सूं,
 ते अणाचारी उघाडा चोडें,
 च्यार पांच साध किहां रह्या चोभासे,
 तो संकडाई पिण न पडें तिणां रे,
 च्यार पांच अनेक भेला रहें साध,
 तो एकण दिन एकण घर मांहे,
 केई साध नांम घरवें त्यांरो,
 आहार पांणी तणां मिथी छें गाढा,
 इग्यारें संभोग तो भेला राखे,
 ते नितरो. नित एकण घर वेहरण,
 ते पिण मांहीमां देवें लेवें,
 ते नित्य पिंड एकण घर रो खावें,
 सदा भेला रहे नित इण सरधा सूं,
 ते पेटभरा साध रा भेष मांहे,
 कोइ कारण बशेष रोगादिक आयां,
 राग बेष रहीत कोइ कारण बतवें,
 जे जे बोल सूतर में नाहीं,
 ते प्रतल नित नित वेंहरे एकण घर,
 पांणी न वेहरें ने घोवण वेंहरे,
 घोवण मांहे तो बले छे असणादिक,
 ते घोवण ने पाणी मांहे न गिणें,
 पांणी तो च्यार आहारां में आयो,
 केई च्यारांई आहारां रो उपवास करे छे,
 जे घोवण पांणी मांहे नही तो,
 इकवीस जातरो पांणी चाल्यो,
 जे घोवण वेंहरेनें पांणी न वेहरे,
 जो आप तणो वेहख्यो आप खावे,
 तो जूओ जूओ वेंहख्यो आण खाघा रों,
 तो जोड करीयानि ओलखावण,
 आप थापी नें आप उथापें,
 निरबद किरतब कहि कहि मूढें,
 पिण सुध साबां नें दोषीला व्हरावण,
 १०४

एकण घर वेंहरे नितको आहार ।
 ते पिण बाज रह्या अणगार रे ॥ २७ ॥
 आप आपरो वेंहख्यो खावे ।
 सगला रे साता होय जावें रे ॥ २८ ॥
 ते जूजूवा वेंहरण जावे ।
 सगल्यई वेंहरण आवे रे ॥ २९ ॥
 आचार छें षणों अजोग ।
 तिणसूं तोडें मांहीमां संभोग रे ॥ ३० ॥
 न्यारो करें आहार नें पांणी ।
 त्यांरा कपट ने लीजो पिछांणी रे ॥ ३१ ॥
 तो भेलोइज आहार नें पांणी ।
 त्यांरा चारित री धूर घांणी रे ॥ ३२ ॥
 सदा नित पिंड इण विध खावें ।
 ठागा सूं कांम चलावे रे ॥ ३३ ॥
 नित पिंड ओषध ज्यूं खावें ।
 ते तो निषेधणी नावे रे ॥ ३४ ॥
 ते वांघणो जीत आचार ।
 ओ तो उघाडो अणाचार रे ॥ ३५ ॥
 ते पिण सरधा छोटी ।
 ते वेहख्यां छें भोलप मोटी रे ॥ ३६ ॥
 ओ पिण मोटी अंघारो ।
 पिण घोवण नही त्यां बारो रे ॥ ३७ ॥
 ते घोवण पीवें नांही ।
 क्यूं न पीवें उपवास मांहीं रे ॥ ३८ ॥
 ते घोवण पांणी एक जात ।
 त्यांरी मूरख माने बात रे ॥ ३९ ॥
 तो इसडो इज हुवें आचार ।
 दोष नहीं छे लिंगार रे ॥ ४० ॥
 यांरोइज ओलखायो आचार ।
 बोले नहीं वंघ लिंगार रे ॥ ४१ ॥
 पीढीयां खप करता आवें ।
 तिणमें हीज दोष बतवें रे ॥ ४२ ॥

कोड थाप तणों नाक जावक कादें, पेंहला नें कुसावण काजें ।
 ज्यूं सावां नें दोपीला थापण, आप. दोपीला होता न लाजें रे ॥ ४३ ॥
 जिण जिण किरतत्र मांहें दोपण थापें, ते छोड वतावें तो सुरा ।
 विण छोड्यां गेंहला ज्यूं गूजें, ते साव मारग श्री दूरा रे ॥ ४४ ॥
 दोप वतावें पिण छोडणी नावें, वले साव नांम धरावें ।
 धार धार तेहीज वातां करतां, निरलजा नें लाज न आवें रे ॥ ४५ ॥
 सुध बुध विनां विचार्यां वोलें, ते होय वेंठा छें भडंग ।
 त्यांसू चरचा तणों कदे कांम पडें तो, जांणक वोलें जडंग रे ॥ ४६ ॥
 इसडा छें कुगुर हीण आचारी, ते पिण रावें छें मुगत री आसो ।
 ग्यानी पुरप इसडा विकला रों, देख रह्या छें तमासो रे ॥ ४७ ॥
 कांणी काजल घालें तिण व्यावें, ते सोभा न पायें लिगार ।
 जो आचार वतावें पिण पोंतें न पालें, ते पिण मूड गिवार रे ॥ ४८ ॥
 जे अणाचारी थका आचार वतावें, ते यूंही अन्ह्याखी कूकें ।
 जाणें गायं तणां टोळारे मांहि, निकेवल गवा ज्यूं भूके रे ॥ ४९ ॥
 साव मन करणें नहीं वांछें किवाड, उत्तरावने पेंतीसमें चाल्यो ।
 पिण जडवो उघाडवो वरज्यो न दीसें, ओ घोचो कुगुरां रो धार्यो रे ॥ ५० ॥
 मन करणें किवाड न वांछणों, ते जडवारो परमारथ जाणों ।
 थे हाथा मं जडो उघाडो किवाड, तिणसूं उलटी मंत तांणो रे ॥ ५१ ॥
 असणादिक च्याह्ण्ड आहार, साव मन करें न वांछें रातो ।
 ते तो परमारथ ग्यावारो जाणों, थे सरवो सूतर री वातो रे ॥ ५२ ॥
 मन करणें साव अस्त्री न वांछें, ते परमारथ सेवारो जाणों ।
 धर्म परमारथ वंछां करें तो, सावद्य कदेय म जाणों रे ॥ ५३ ॥
 मन करणें साव किवाड न वांछें, ते तो जडवा उघाडवा कामो ।
 तिण किवाड उपर मूयें वेंसें इत्यादिक, तो दोप नहीं छे तांमो रे ॥ ५४ ॥
 मन करणें साव धन न वांछें, ते तो राखवा काजें ।
 पिण थानक मांहें धन पडियो देखें तो, साव रों विरत मूल न भाजें रे ॥ ५५ ॥
 चंदरवादिक साव मनकर न वांछें, पिण तिहां रहींतां दोप न लागें ।
 पिण छूटा चंदवा नें हाथां सूं वांघें, तो साव तणो विरत भांगें रे ॥ ५६ ॥
 ज्यूं मन करे साव किवाड न वांछें, तिहां रहींतां दोप न लागें ।
 पिण तेहीज किवाड जडें उघाडें, तो पेंहलें माहावरत भांगें रे ॥ ५७ ॥

ढलल : १४

ढुहल

भेषघलरी वलगडुडल घणलं, ते करुं अनेक अनुडलडुडल ।
 ते नलंम घरलवे सलडु रू, डलण डलण घरुड रू खवर नकलडु ॥ १ ॥
 तुडलंमे डूरीडरूरी करे घणलं, डूलें डूठ अडलडुग ।
 नलरलज सुड डुड डलडलरल, डूलल डुगड रू डलडु ॥ २ ॥
 डूठ न सलडू करे, तलणरल डूषण डेवे डलंक ।
 सलडल न डूठूँ करुं, ते डलण नलणूँ सलंक ॥ ३ ॥
 तुडलंमे कुडडूी कडलडुडल अतल घणल, सके नडूी डेवल अलल ।
 तुडलंरू गुर सडूीतगण वलगलडूीडू, तलणरू कुण कलडे नूीकलल ॥ ४ ॥
 तुडलं भेषघलरूखलं रल डूलेल तणूी, एक इडरुड डलली वलत ।
 तुडलंमे डूीगलडुडल डंड रडूी, ते सुगणडूी वललुडलत ॥ ५ ॥

ढलल

[३ डूीव डूीह अशुकडुडल न अलशुडे]

डूरी करे सलघरल भेषडूँ, वले डूठ डूले डलर डलडु रू ।
 डूी डूरी करे छे तेहने, डेर डललुडल अलवे छे तलडु रू ।
 तुडे डूीडडूी अंघलरू भेषडूँ ॥ १ ॥
 तलणने डूेले डूेली डलणे अलडरू, डूीरू डुरलडुडलत डेवूँ अलड डूी ।
 तलण डुरलरलूँ अलड डललुडल डूीडे, डुररू डूीडूी डंड डुडलडु रू ॥ २ ॥
 रलड रू डललुडूी डूीडूी डंड डे, तलणने डुतरू डुरलडुडलत अलड रू ।
 डूी ड डुरलडुडलत डंड लेवे नडूी, तू ड सलड केड कहलवलडु रू ॥ ३ ॥
 डूीरने लेवे सुतर डलरकल, अर डलसे डेवे गललडु रू ।
 डलणने रखे डूरी डलवी डुवल, डूीने डेर सलडडणूँ अलड रू ॥ ४ ॥
 गलणडललू डूरी डलवी करे, तलणने डेर डललुडल डे डलण रू ।
 कलहने गललडल सुतर तेहने, डंड डूीडूी डे डूड अडलण रू ॥ ५ ॥
 अर कने सुतर गललडूीडलं, डूरी डलंकवल रू डन अलण रू ।
 तलण कूड कडुट केलडुडूी घणूँ, डूडूँ तू डूीर तेडूीड डलण रू ॥ ६ ॥
 अर रे कहूँ सुतर गललडल, ते तू डूीले छे वलकल सडलंन रू ।
 डूे डूरी डलवी कूीडूी तेहनी, गुर गुरणूी ने कूीडलं हेरलन रू ॥ ७ ॥

*डूह अलंकडूी डुरतुडेक गलथल के अतुड डे डूी ।

चोरी नें चाबी कीधी तेहनें, फेर दिख्या देवें तांय रे ।
 मुदें चोर नें दिख्या दें नहीं, एहवो करें अग्यानी अन्याय रे ॥ ८ ॥
 मुदें चोर नें दीख्या दे नहीं, आघो काडें थोडो दे दंड रे ।
 तिणनें पिण दिख्या देंगी फेरसूं, च्यार तीरथ में करणो भंड रे ॥ ९ ॥
 तिणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो सगलाइ मूंड गिंवार रे ।
 एहवा नें आचार्य लेखवें, ते तो गया जमारो हार रे ॥ १० ॥
 बले केयक लिगडा नें लिगडीयां, ते तों करें मांहोमां अकाज रे ।
 चोथो वरत भांणें पापीया, लोकां री पिण नाणें लाज रे ॥ ११ ॥
 केयक वरत भांणें भेद सूं, ते तों मांहोमांहीं मिल जाय रे ।
 जो उ करें आलोवण तेहनें, फेर दिख्या देवें ते न्याय रे ॥ १२ ॥
 त्यांरें भेद मांहें सेव्यो नहीं, त्यानें प्रायच्छित नावें लिगार रे ।
 तिणनें दिख्या देइ छोटो करें, ते तो पूरा मूंड गिंवार रे ॥ १३ ॥
 दिख्या नावें तिणनें दिख्या दीए, तिण मोटो कीयो अन्याय रे ।
 तिणनें पिण दिख्या आवें फेर सूं, चोडें देखो सूतर रो न्याय रे ॥ १४ ॥
 जो उणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो उण टोलां में भोलप जाण रे ।
 सगला बूडें छें बापडा, तिणरें केडें कर कर तांण रे ॥ १५ ॥
 भागलां नें कोड कसाई विचें, भूंडा कहें मुख सूं जाण रे ।
 इम भेषधारी बकता फिरें, त्यांरा बोलां री करजो पिछांण रे ॥ १६ ॥
 त्यांरा टोलां मांसूं केई नीकले, त्यानें दिख्या विनां ले मांय रे ।
 बले वादें पूजें सुध साध ज्यूं, त्यांसूं भिन नं राखें कांय रे ॥ १७ ॥
 कहता कोड कसाया सूं बूरा, त्यानें विनां दिख्या ले मांहि रे ।
 पछें पूछ्यारो जाब न उपजें, तिणसूं बारें काढ्या ताहि रे ॥ १८ ॥
 एक दोय वरस भेला रह्या, वांदे पूजे भेलो कीयो आहार रे ।
 त्यानें फेर दिख्या आवें मूल थी, कोइ वुधवंत करजो वीचार रे ॥ १९ ॥
 कोइ साध कसायां भेलो रहें, एक दोय वरस परमाण रे ।
 जो उवे फेर दिख्या दें तेहनें, तिण लेखें त्यानेइ जाण रे ॥ २० ॥
 फेर दिख्या दीयां पिण तेहसूं, जो उवे भेलो करें आहार रे ।
 तो उवे सगला बूडा छें बापडा, साध तणो भेषधार रे ॥ २१ ॥
 केइ वरत पालें श्रावक तणां, इण साध तणां भेष मांय रे ।
 त्यानें दिख्या विनां मांहें लीयें, वादें पूजें तिणरा पाय रे ॥ २२ ॥
 त्यानें श्रावक पिण नहीं सरघता, खोटी सरधारो कहता एम रे ।
 त्यानें दिख्या विनां माहे लीयें, त्यानें साध कहिजें केम रे ॥ २३ ॥

दिख्या दीयां विनां माहें लीयां, तिणनें पिण दिख्या देंणी जाण रे ।
 गाला गोलो करें इण बात रो, सगला बूडा मुंड अयाण रे ॥ २४ ॥
 जो उणनें दिख्या देनं माहें लीयें, तो टलें सगलां रो संताप रे ।
 पछें भूठ बोले जो उ कपट सूं, तो उणरो उणनें इज लागें पाप रे ॥ २५ ॥
 केई भेषघाख्यां रा टोला मभे, एक उंधी घणीं छें रीत रे ।
 ते मुणतांइ इचर्य उपजें, नही न्याय मेलण री नीत रे ॥ २६ ॥
 सील भागें त्यांरा टोलां मभे, तिणने फेर दिख्या दे तांम रे ।
 पिण छोट्यां रे पग पाडें नहीं, एहवा करे अग्यांनी काम रे ॥ २७ ॥
 कहिवाणें दिख्या दीवी फेर सूं, पिण डंड दीयां नही तिलमात रे ।
 बडो हूंतो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, त्यांरी मूरख माने बात रे ॥ २८ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखी, तिण चोडें चलायो भूठ रे ।
 उगरा टोलां माहें उण पापीये, कीघी कुसील सेवारी छूट रे ॥ २९ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखीया, तो कुण डरें करतो अकाज रे ।
 तिण टोलां रा लिगडा लिगडीयां, सील मांगता नांणे लाज रे ॥ ३० ॥
 सील भागें तिणनें दिख्या दीये, सगलां सूं बडो राखें जाण रे ।
 एहवी मरजादा बांधी तेहमें, दीसे भागल रा अहलांण रे ॥ ३१ ॥
 वले विगड्यो टोलें जाणें आपरो, पडतो दीसें घणारो उघाड रे ।
 त्यांरा दोष ढांकण रे कारणे, कपटी एहवो बांध्यो आचार रे ॥ ३२ ॥
 केई टोलां में लूंठा घणां, केई वनीत छें त्यां मांहि रे ।
 ते अकारज कर दिख्या लीयें, ज्युरा ज्यूं बडा राखें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 लागबाजी हुवें रांक गरीब सूं, तिणरो करे तुरत उघाड रे ।
 तिणने तो दिख्या दे छोटी करे, सगलां रे पगे देवें पाड रे ॥ ३४ ॥
 प्रायच्छित्त सगलां ने नही दे सारिखो, जो उवे करे सारिखो अकाज रे ।
 आप छ्रांवे करें मन जांणीयां, त्यांने किम कहीजें मुनीराज रे ॥ ३५ ॥
 सील भांगे ने फेर दिख्या लीये, बडा रद्दे करता ओ गाज रे ।
 तिण टोलारा लिगडा लिगडी, किम संक सी करता अकाज रे ॥ ३६ ॥
 वरत भागें ने फेर दिख्या लीयें, बडाने लगावे पाय रे ।
 तिण श्री जिण वचन उथाप नें, चोडे कीघो बुडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 बडा आगें करावें बंदणा, तिण कीयो विना रो नास रे ।
 एहवा भेषधारी मूला थका, राखें मुगत जावारी आस रे ॥ ३८ ॥
 भेषधारी भागल चौथा तणां, त्यांरी खबर पडे नहीं काय रे ।
 आगा ज्यूं टोलां में बंदावता, एहवी वीगामस्ती छें ताय रे ॥ ३९ ॥

भागल नें दिख्या दे बडो राखीयो, तिण टोलां में पूरो अंधार रे ।
 त्यांनैं वांदि पूजें गुर जाणनैं, ते पिण बूडा कालीघार रे ॥ ४० ॥
 एहवा भेषघाख्यां रा टोला मभे, उघडी भागलां री खान रे ।
 त्यांनैं छोडे कोइ संजम लीयें, तिणनैं फिर फिर करें हेंरान रे ॥ ४१ ॥
 त्यां भेलो रहें ज्यां लग गुण करे, पिण न करें तिणरो उघाड रे ।
 जोउ संजम ले साधां कनें, तिणनैं भाडें फिर फिर लार रे ॥ ४२ ॥
 त्यांनैं खोटा जाणें नें छोडीयां, तो उवे बोलें अनेक विघ कूड रे ।
 पछें लागू थका बकवो करें, कूडा करें फेंन फितूर रे ॥ ४३ ॥
 त्यां माहें रहे त्यां लग तेहनी, करें कूडी घणी पखपात रे ।
 दोष हुवें ते सगला ढांकने, सवारलें तेहनी बात रे ॥ ४४ ॥
 त्यांनैं छोडें त्यांरा लागु घणां, तिणसूं पडवजीयो पूरो मिथ्यात रे ।
 तिणनैं आल देता संके नहीं, भूठी कर कर अन्हाखी बात रे ॥ ४५ ॥
 केई भेषघाख्यां रा टोलां मभे, चोथा वरत सूं भागा अनेक रे ।
 त्यांरो लेखो कीयां तो रूड पडें, भगडें मूढ विनां ववेक रे ॥ ४६ ॥
 भेषघारी भागल नें छेडव्यां, तो उ भांबां घालें हाथ रे ।
 उलटा आल देवें पापीया, भूठी भूठी उठावे बात रे ॥ ४७ ॥
 त्यांरा भागलां नें चावा कीयां, करें ग्रहस्थ आगें पूकार रे ।
 केई ग्रहस्थ सुघ बुध बाहिरा, भगडो करवा नें हुवे तयार रे ॥ ४८ ॥
 ते तो कुगुरां रा 'भरमावीया, लडवा आवें भेली करें खेड रे ।
 उंघर बोलें अजोग बूरी तरें, जाणें जाग्यों पूर्वलों वेर रे ॥ ४९ ॥
 गुर गुरणी नें जाणें कुसीलीयां, ते किण विघ काडें निकाल रे ।
 उलटों आल देवें साधनैं, अन्हाखी थका भाषें अलाल रे ॥ ५० ॥
 सती काढे कुसती रा खूचणा, तो उवा बोलें आल पंपाल रे ।
 कूड कपट केवल नें पापणी, उलटो देवे सती सिर आल रे ॥ ५१ ॥
 कुसती डरे नहीं सील भांगती, तो उवा किम डरें देती आल रे ।
 तिणसूं सती डरें कुसती थकी, ते तो लोकिक सांहो न्हाल रे ॥ ५२ ॥
 ज्यूं भेषघारी भागल घणां, त्यांरो कुण काडें निकाल रे ।
 भगडो भालें पापी तेहसूं, उलटो देवें अन्हाखी आल रे ॥ ५३ ॥
 अकार्य करता डरें नहीं, तो ए किम डरे देता आल रे ।
 एहवां भेषघारी भागलां तणो, कहो किण विघ काडें निकाल रे ॥ ५४ ॥
 आपणा दोषण नें ढांकवा, पापी बोले अनेक विघ कूड रें ।
 त्यांने छेडवीयां गलें पडें, त्यांसू बुधवंत रहजो दूर रे ॥ ५५ ॥

भेषधारी भागल तूटल घणां, होय बेठा बाबा रा धीग रे ।
 वेसरमा सुघ बूब बाहिरा, सांझा माडें सावां सूं सीग रे ॥ ५६ ॥
 आपणा किरतव देखे नही, हाथां सूं चावा हुवे मत हीण रे ।
 त्यांरा दोष परगट हुवां परजले, पछे भाषें लोकां आमें रीण रे ॥ ५७ ॥
 एहुवा भेषघाख्यां नें गुर करें, ते तो गया जमारो हार रे ।
 ते तो जासी नरक निगोद मे, तिहां खासी अनंती मार रे ॥ ५८ ॥
 छेदन भेदन पांमसी अति घणीं, तिहां सुख नहीं लवलेस रे ।
 परमाघांमी रे पांनं पड्यां, पांमं दुख असाता कलेस रे ॥ ५९ ॥
 इम सुण सुणनं नर नारीयां, सतगुर सेवो रूडी रीत रे ।
 भेषधारी भागल नें परहरें, राखो सुघ सावां री परतीत रे ॥ ६० ॥
 भेष अंधारी परगट करी, आणंदपुर सहर मझार रे ।
 समत अठारे तेतीसे समें, वेसाख सुद इग्यारस रिखवार रे ॥ ६१ ॥



ढलल : १ॡ

दुहल

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभलललल सर्व सलध ।
 मुगत नगरनलं दलडकल, ए पलंचूं पद आरलध ॥ १ ॥
 बलंदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमलड ।
 गुण ओलख बंदणल कीयलं, भव भव रल दुख जलड ॥ २ ॥
 सलध सलधवी श्रलवक श्रलवकल, जिन भलषुडल तीरथ चुडर ।
 छोटल मोटी मललल गुण रतनलं तणी, तुडलनें सीख कहूं हितकर ॥ ३ ॥
 सलध सलधवी श्रलवक श्रलवकल भणी, चललणो इण मरजलद ।
 दोष देखे तो तुरत बतलवणो, जुडूं वरुं नहीं विषवलद ॥ ॡ ॥
 कोइ कषलड वस दुष्ट आतमल, ओर सलधलं सिर दे आल ।
 तुडलनें घणलं दिन दोष कहूं घणलं, तिणरो किण विध कलढे निकलल ॥ ॡ ॥
 ओरलं में बतलवे दोष घणलं दिनलं, तिणरी मूल न मलनणी बलत ।
 आ बलंदी मरजलदल सर्व सलधनें, ते लोपणी नहीं तिलमलत ॥ ६ ॥
 तोही दोष कलढे घणलं दिनलं, वले भूठो करूं विषवलद ।
 ते अपछंडल निरलज नलगडल, तिण लोप दीधी मरजलद ॥ ७ ॥
 इसडल अजोग नें अलगो कीयलं, जब उ कलढे दोष अनेक ।
 वले ओगुण कलढे अति घणलं, तिणरी बलत न मलनणी एक ॥ ८ ॥
 इण रीते सलधनें चललीयलं, किणरे संकल पडे नहीं कलड ।
 वले वशेष परगद कहूं, ते सुणजो चित्त लुडलड ॥ ९ ॥

ढलल

[डलम मुंजलदिकनल डोरी]

हिवे सलंभलजो नर नलर, सुध सलधलं तणो आचलर ।
 कदल कर्म जोगे दोष ललगे, तो प्रलडछित्त लेणो गुर आगे ॥ १ ॥
 कोइ गण मलंहें दोष ललगलवे, ते निजर आपरी आवे ।
 ते नहीं रलखणो दलब, उणनें कही देणो तुरत सतलब ॥ २ ॥
 गुर चेला नें गुर भलइ मलंई, दोष देखे तो देणो बतलई ।
 तुडलंसूं पिण करणो नहीं टललो, तिणरो कलढणो तुरत निकललो ॥ ३ ॥

कोइ दोष जाणीने सेवे, तिणरो प्रायच्छित्त पिण नहीं लेवे ।
 तिणने कर देणो गणसूं न्यारो, कुण डूबसी तिणरी लारो ॥ ४ ॥
 दोषीला सूं करे आहार ने पाणी, तिणरो चारित्र ह्रुवे धूल घाणी ।
 दोषीलां नें राखे गण माय, तो सगलाइ मिष्टी थाय ॥ ५ ॥
 गुर रो दोष चेलो ढांके, मूढे पिण कहितो सांके ।
 तिणरे रहगइ भोल्य मोटी, घर छोड हुवो छे खोटी ॥ ६ ॥
 किणरो द्वेषी कोइ होय जावे, तिणमें दोष अनेक बतावे ।
 कहे म्हे छांनां राख्या दोष जाण, म्हें राखी घणा दिन काण ॥ ७ ॥
 घणा दिना - रा दोष बतावे, ते तो मानवा मे किम आवे ।
 साच भूठ तो केवली जाणे, छद्मस्थ प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
 हेत मांही तो दोषण ढांके, हेत टूटां कहतो नहिं सांके ।
 तिणरी किम आवे परतीत, उणनें जाण लेणो विपरीत ॥ ९ ॥
 इण दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नहिं डरियो लिंगार ।
 हिवें आळ देतो किम डरसी, उणरी परतीत मूरख करसी ॥ १० ॥
 इण दोष क्याने किया भेला, इण क्यू न कह्यो उण बेलों ।
 इणरी साव तणी रीत हवे तो, उणरो उण दिन कहेतो ॥ ११ ॥
 जद ऊ कहे न कह्यो डरते, गुर सूं पिण लाजां मरते ।
 जब उणने कहिणो पाछो, तोने किण विव जाणा आछो ॥ १२ ॥
 घें दोषीला सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग ।
 थारी परतीत नावे म्हाने, इणरा दोष राख्या ते छानें ॥ १३ ॥
 थे तो कियो अकारज मोटी, जिन मार्ग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट ह्रुइ मति बुद्ध, हिवे प्रायच्छित्त ले हुय सुद्ध ॥ १४ ॥
 उणने पूछ्यां ऊ आरे होय, तो उणने प्रायच्छित्त देसां जोय ।
 जो ऊ पूछ्यां आरे नहीं होय, तो उणसूं जोर न लागे कोय ॥ १५ ॥
 उणरी तो थारा कह्या सूं सक, पिण तूं तो दोषीलो निसंक ।
 इम कहि तिणने घालणो कूरो, प्रायश्चित्त नहिं ले तो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥
 ज्यू कोइ वले ने दूजी वार, किणरा दोष न ढांके लिंगार ।
 दोष ढाक्यां सूं हुवें खुवारी, टांको भल्ले तो अनंत ससारी ॥ १७ ॥
 संका सहित ने राखे माय, तो ओर साव दोषीला न थाय ।
 दोषीला ने जाणी राखे मांय, तो सगलाइ साव असाव थाय ॥ १८ ॥
 एक दोष सेवे नित साव, तिण संजम दियो विराव ।
 तिणने साव जाण बांदे कोय, ते अनंत संसारी होय ॥ १९ ॥

तो घणां दोष सेवे साख्यात, तिणनें जाण वादे दिन रात ।
 ते तो पूरा अज्ञानी बाल, ते - रूल्सी अनंतो काल ॥ २० ॥
 एक दोष रो सेवणहार, तिण बांचां बधे अनंत संसार ।
 तो तिणमें जाणे घणां दोष साल, त्यांनैं वांचां हुवे कवण हवाल ॥ २१ ॥
 जाण जाण दोषीला ने बांवे, जिण धर्म न ओलख्यो आंधे ।
 ते तो बूड गयो कालीघार, आरे कियो अनंत संसार ॥ २२ ॥
 छिद्रपेही छिद्र घारी राखे, कदे काम पडे जद कही राखे ।
 तिणमें साध तणी नहीं रीत, तिणरी कुण मानें परतीत ॥ २३ ॥
 एहवारो वचन मानें सांचो, तो जिनमत पड जाय काचो ।
 पछे हरकोइ दोष बतावे, हरकोई मूठ चलावे ॥ २४ ॥
 उणरी मान्या ऊ होय जावे सूरु, तो जिनमत रो हुवे फितूरो ।
 शुद्ध साध हुवे मोत्यां री माल, त्यांरे हरकोइ दे काढे आल ॥ २५ ॥
 घणां दिनां काढे दोष विष्यात, तिणरी मूल न मानणी बात ।
 शुद्ध साधां री ए मरजाद, तिणसूं बधे नहीं विषवाद ॥ २६ ॥
 ओर साधां में दोषण देखी, तुरत कहें ते निरापेखी ।
 तिणरे मूल नहीं पखपात, तिणरी मानणी आवे बात ॥ २७ ॥
 किण में दोष परपूठ बतावे, ओर साधां नें आय सुणावे ।
 तिणरो किण विघ्न काढे निकाल, दोनूं भेला नही तिण काल ॥ २८ ॥
 एहवे कारण पड्यां करे जेज, ओर मुतल्लब सूं नही हेज ।
 दोष बांकण री नहीं नीत, आतो जिन मारग री रीत ॥ २९ ॥
 प्रायच्छित्त देवारा छे कामी, त्यांमें कदेय म जाणो खामी ।
 पछे करे दोग्यां ने भेला, निकाल काढे तिण बेलां ॥ ३० ॥
 जिणमें दोषण आप जाणे, प्रायच्छित्त देने आणे ठिकाणे ।
 उतावल सूं न करणो विगाडो, प्रायच्छित्त न ले तो कर देणो न्यारो ॥ ३१ ॥
 कदा सहज दोष छे ताय, दोनूं भगडे छे मांहेंमांय ।
 समझाय नही समझे ताय, तो केवल ज्ञानी नें देणो भलाय ॥ ३२ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषघार्यां रा त्याग वेंराग मे, लखण नही तिलभात ।
 विगे छोड बाजे वेरागीया, पिण एक इचर्य वालो बात ॥ १ ॥
 उवे जाणे उत्तर गुण नीपनो, ते कर कर कूडी रूड ।
 मूल गुण सहीत उत्तर गुण, दोनूं विगड्या न देखे मूंड ॥ २ ॥
 ते सूंस लोकां नें जणावता, नाणे मन में लाज ।
 ठगबाजीगर नी परे, करे अनेक अकाज ॥ ३ ॥
 केइ सूंस करे सुघ बुघ विनां, केइ मान वडाइ आंण ।
 केई मसांणीया वेराग स्यूं, केइ सरमां सरमी जाण ॥ ४ ॥
 त्यांसूं पछे न जाए पालीया, चोडे भांग्या पिण नही जाय ।
 आरतध्यानं में दिन नीकले, पिण कारी न लागे कांय ॥ ५ ॥
 सूंस भांगे पिण कपटी थकां, करे अनेक उपाय ।
 ते तो ताके सेरी चोर ज्यूं, भेल सभेल कर खाय ॥ ६ ॥
 त्यां विकलां रा सूंसां तणी, परतीत आवे केम ।
 ते डाव घाव करे किण विघे, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[विखिया नी देशी]

केइ भेषघारी महीना मफे, पनरें दिन विगे त्यागे जाण रे ।
 वेंराग विण सुघ बुघ बाहिरा, त्यांरी बुंघवंत करजो पिछांण रे ।
 ते पिण कहिवानें पनरें दिन कहे, तुम्हे जोयजो सुंस विकलां तणां# ॥ १ ॥
 पूरा त्याग परूपे मूठा थका, पिण आगार राखें अनेक रे ।
 एहवो त्याग परंपरा वांधीयो, ओ पिण घटमें नही ववेक रे ॥ २ ॥
 आप लूखो खाए पॅलें चोपड्यो, ते पिण जोरी दावे कराय रे ।
 उ जां लग त्याग करे नही, तिणसूं अन्हाखी दें अंतराय रे ॥ ३ ॥
 ओर इघको लेवे चोरटा थका, त्यां लम थोडो घालें चुगराय रे ।
 उणनें त्याग वताय वताय रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

देखे' आप सूँ उषको खावतो, जब जागें अमितर धेष रे ।
 कूड कपट सूँ करें नषेघणां, तिण पहर विगाड्यो भेष रे ॥ ५ ॥
 म्हां बरोबर त्याग कीयां पछें, विगें चांटे' देसां तोय रे ।
 तिणसूँ ते पिण त्यागें तिण विधें, इम सहु सरीषा होय रे ॥ ६ ॥
 विनां परिणामा सूँस करावीयां, इसको खेदो दीसैं साख्यात रे ।
 त्यांरा सूँस पालण री विव सुण्यां, एक इचर्य वाली बात रे ॥ ७ ॥
 दोय च्यार जणां गया गोचरी, वेंहरी लाया पूरण आहार रे ।
 पिण विगें थोडो आयो देखनें, करें मांहोमांहीं मनवार रे ॥ ८ ॥
 जाणें थोडा विगें रे कारणें, म्हांरे कुण लगावें आज रे ।
 तिणसूँ नां कहें माथो धूणनें, पिण नाणें मुरख लाज रे ॥ ९ ॥
 न लगावें सर्व लोलपी थका, जाणें गिणती में दिन घट जाय रे ।
 जब मांहोमांहीं निंदा करें, घृत कपडा रें देवें लाय रे ॥ १० ॥
 कोइ वधतो देखे' कलहो राड नें, कोइ डरतो थको मन मांय रे ।
 कोइ लाज सरम रो मारीयो, कदा थोडोसो देवें लाय रे ॥ ११ ॥
 थोडो विगें खाधां वेदल हुवें, गिणती मां सूँ घटयो दिन जाण रे ।
 टाला टोली करण खपे' घणुं, पिण पडी गला ने' आण रे ॥ १२ ॥
 घृत थोडोसो आयो देखनें, केई आहार रे देवें लाय रे ।
 लेप लागे ते लूखा में गिणे', सूँस भांगेने' इण विध खाय रे ॥ १३ ॥
 आइ फीणा रोटी चूरमादिक, वले गलगली रोट्यां पूर रे ।
 पिण घी थोडो आयो देखनें, कपटी किण विध बोले' कूड रे ॥ १४ ॥
 म्हेँ आज तो आहार लूखो करां, न लगावां विगें नें कोय रे ।
 तिणसूँ फीणा रोटी चूरमादिक, लेवे' पातरा मां सूँ जोय रे ॥ १५ ॥
 चूरमा फीणा रोटीदिक मम्भे, जो तिणमें घी हुवें पाव अघसेर रे ।
 भावे' जितो खाय लूखो गिणे', एहवो भेषघाख्यां रे अंधेर रे ॥ १६ ॥
 कोइ रांक थको बुध केलवें, घृत ले काढें तिण मांय रे ।
 तिणनें डरावे' लोलपी थका, वले भगडो राड मचाय रे ॥ १७ ॥
 त्यामें रांक रहें छें जोक्तो, लूंठो हुवे' तो खाए डराय रे ।
 धींगामस्ती ने' आरतघ्यांन में, यांरा दुख मांहेँ दिन जाय रे ॥ १८ ॥
 आपरे' लूखो खाणो जिण दिने, कोइ आहार अपथ वेंहराय रे ।
 जब कपटी दगो करे' इण विधें, विगें भेलों लेवें तिण माय रे ॥ १९ ॥
 धापरें विगें खाणो जिण दिने, पेंलारें लूखो खाणो हुवे' आहार रे ।
 जब आवे रोटी चोपडी, तो घाल दे घृत मम्भार रे ॥ २० ॥

कितल- एक घी खाए घणो, केकां नें घणों विगो भांय रे।
 जब कोयक कोरो घी पीवे, पिण लाजे नही मन मांय रे ॥ २१ ॥
 यांरा खावारा चरितं अनेक छें, ते तो पूरा कहाा न जाय रे।
 वले वेंहर ल्यावण री विघ कहूं, ते पिण सुणीयां इचर्य थाय रे ॥ २२ ॥
 सहर जातां विचे गांवडां मभे, कोइ ग्रहस्थ विगें वेंहराय रे।
 थोडो आवतो देख लेवे नहीं, आगे मोटी आसा मन माय रे ॥ २३ ॥
 घणों विगो खावारें कारणें, लगतो खावे लूखो आंण रे।
 ते तो सहर माहें गयां पछें, नित सरस विगें लें जांण रे ॥ २४ ॥
 घणों विगो ल्यावारी खप करे, ताक जाए ताजो घर जोय रे।
 न मिलीयां न खाए तेहनें, वेंरगी मत जांणो कोय रे ॥ २५ ॥
 जिण दिन विगें खांणो आपरें, जद जाए ताजो घर टाल रे।
 आप न खाए खांणो ओर रे, जब जोवें घर अवेाल रे ॥ २६ ॥
 हुजें दिन विगें खावा कारणें, ताजा घर देवे टाल रे।
 ओरां नें पिण जावा हे नहीं, एहवी पेट री बांधें पाल रे ॥ २७ ॥
 विगो देवें न देवें तेहनां, सगला घर राखें टाल रे।
 आप मूतलब वेहरे तिण घरे, विण मूतलब देवें टाल रे ॥ २८ ॥
 आपरें लूखो खांणो जिण दिने, जव आगूच बोले एम रे।
 लूखो आवें ते वास बताय दे, तिणनें सरल कहिजे के रे ॥ २९ ॥
 ते पिण पडीया पोमावता, ले ले त्याग री मूरख नय रे।
 पिण खावा रो घ्यान मिटीयो नही, त्यां जनम विगाडयो के रे ॥ ३० ॥
 उवास करे जद पिण तेहनों, विगें खावारो न मिट्यो अपर रे।
 ताजा घर थाप राखें पारणे, ओर साघ नें न हे जा रे ॥ ३१ ॥
 कदा वीजें दिन घर हुवें असूमतो, काई आय पडे कतर रे ॥ ३२ ॥
 उसभ करम बांधेनें यूं ही रह्यो, पुन विनां विगें मिम रे ॥ ३३ ॥
 ओर साघ नें अंतराय पाडियां, करम आठोइ उजब रे ॥ ३४ ॥
 तीस कोडाकोड सागर तणी, उतकछी वंधे कतर रे ॥ ३५ ॥
 पछें जिण गति जाए तिण गते, अवस आय
 बासा मांडें ते न पडे पावरी, चितवें ते
 विगें त्याग नें उत्तर गुण कीयां, जो पाले गे
 उत्तर गुण नही भांगां एकला, भांगां छे
 कोइ विगें वेंहरावें सुपातर जांणने, उलट
 पिण विगें न खांणों आपरें, जद

कोइ लाज सरेम रो, घालीयो, विगें वेंहरावें दातार रे ।
 पिण आपरें खाणों जिण दिनें, डीला मेलें कहें नांकार रे ॥ ३७ ॥
 आप विगें न खाए जिण दिनें, कोइ दातार विगें वेंहराय रे ।
 तो सूभता में संका घालें, आप बुगल घ्यानी होय जाय रे ॥ ३८ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिनें, कोइ विगें देवें तिण काल रे ।
 असुध हुवें तो पिण छोडें नहीं, पूछें नहीं काढें नीकाल रे ॥ ३९ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिने, करें कुदम कुदा जाण रे ।
 आपरें नहीं खाणों तिण दिनें, वेंहर ल्यावें घर समुदाण रे ॥ ४० ॥
 एहवी ओघट घाट घटमें घणी, करें चाला चरित अनेक रे ।
 तिणरो भोलां नें रांक गरीब सूं, भेले रहीवा रो मन वशेष रे ॥ ४१ ॥
 जिण साथे गयां विगें मिलें घणों, तिण साथे मेल्यां हरषत थाय रे ।
 थोडो मिलें तिण साथे मेलीयां, तो षडक पडें मन मांय रे ॥ ४२ ॥
 ओ तो किणही एक आगें रखां थकां, चाला चरित कीया नही जाय रे ।
 जब साप ठोडी दव्या नी परे, दुख पावें घणों सीदाय रे ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाइ नें ओर साध सूं, इणरें किणसूं म जाणों पीत रे ।
 उणनें घणों विगें आण पोखीयां, तिणरोइ छें वनीत रे ॥ ४४ ॥
 तप करें विगें रें कारणें, तिणरा कुण कुण कहिजें दोष रे ।
 घणों खावानें मारें हिडवची, थोडें खायां न करें संतोष रे ॥ ४५ ॥
 विकल सूंस पालें इण विघें, ते तो निश्चें बूडा जाण रे ।
 वले सरखें साधपणों आपमें, ते तो मूढ मिथ्याती अयाण रे ॥ ४६ ॥
 एहवी त्याग परंपरा बांधनें, घाल्यो टोलां में मगडो राड रे ।
 हेत तूटे मांहोमांहीं तिम कीयों, ते तो पूरा मूढ गिंवार रे ॥ ४७ ॥
 थोडा घणां सांहो जोवे नहीं, सेजां आयो लगावें जाण रे ।
 परतीत उपजावें पालतो, तिणरा त्याग कीयां परमाण रे ॥ ४८ ॥
 समत अठारें ब्रतीसैं समें, आसोज सुद बीज मंगलवार रे ।
 विकल पचखाणी परगट करी, खैरवा सहर मभार रे ॥ ४९ ॥

ढाल : १७

दुहा

कोइक रे माहोमां अडो अडी, कोइ बांणे मन बैरंग ।
जाव जीव विगें त्यागन करे, पछें कायर जाए भाग ॥ १ ॥
केई विगे खाए अपरेतीया, कदे हुवे अजीरण तांम ।
जावजीव विगे त्यागें तिण समे, त्यारो कठण घणों छे कांम ॥ २ ॥
पछें भूरें रोट्यां देख चोपडी, इधकी लेवारें कांम ।
परठावणीया खानानें हीज रें, भूंडा रहे परिणाम ॥ ३ ॥
खाजा साकुली आया देखनं, मन मे रहे ओघट घाट ।
लाफसी सीरादिक जाणें आवीया, जोवे इधका लेवण री बाट ॥ ४ ॥
जो इधको न देवें तेहनें, तो जागें अभितर रोस ।
थाडी तेडी बातां घाली लडे, काढे अणहुंता, दोष ॥ ५ ॥
दुष्ट परिणाम रहे तिण उपरें, बले बांछें तिणरी अंतराय ।
वेर बुधी ज्यूं छिदर जोवतो, बले खुद्र परिणाम घट मांय ॥ ६ ॥
विकलां रा सूंस पचखांण सू, दिन दिन केतब थाय ।
ओर साधां ने उपसर्ग उपजें, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे लाल]

विकल सूंस करतां थकां रे, राखें अनेक आगार रे । सुगणनर* ।
ते करें विकलाइ अन्हाखी थका रे लाल, तिण घाली टोलां में राड रे । सुगणनर ॥
सुणजो सूंस विकलां तणां रे लाल* ॥ १ ॥
खावा नें मारें भाकुली रे, बले रहे निरंतर सोच रे ।
तिणरी विकलाइ देखने रे लाल, ओर साधां नें उपजे संकोच रे ॥ सु० २ ॥
विगे आयों देखें पातरे रे, ओर साधां नें खाता देख रे ।
तिणने टालेने देवें चोपडी रे, जब जागें मूरख ने घेख रे ॥ ३ ॥
जो टाल टालनें देवे चोपडी रे, बले सूखडी आदि देवें टाल रे ।
तो दबीयो थको पडीयो रहे रे, नही देंतो उठे घट भाल रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तिणसूं आडी तेडी बातां घालनें, करें खोटोराइ जाण रे ।
 काडें अणहंता खूंचणा रे, पग पग तांणा तांण रे ॥ ५ ॥
 पछें साधां नें सरधें लोलपी रे, वले ब्रोलें अनेक विघ कूड रे ।
 आल देतों संके नहीं रे, तिणरा त्याग कीयां में घूर रे ॥ ६ ॥
 कोई सराग रो घालीयो रे, टाल देवें घणां रो आहार रे ।
 ते दोनूंइ चोर भगवानं रा रे, तीजो वरत भांजे हुवा खुवार रे ॥ ७ ॥
 कोइ विगें वेंहरावें तेहनें रे, तो नही वेंहरें मूंड अयांण रे ।
 ओरां री इरषा रो घालीयो रे, ए बूङ्णरा छें अहलांण रे ॥ ८ ॥
 दातार तो हरष पांमें घणों रे, नीठ मिलीयो सुपातर जोग रे ।
 उ उलट परिणांमा वेंहरावतो रे, पिण विकल पचखांणी नें सोंग रे ॥ ९ ॥
 एहवा विकल भेला रछां रे, उ जद तद दावादार रे ।
 ते गुण कीयां पिण अवगुण गिणे रे लाल, वले छिदर गवेषणहार रे ॥ १० ॥
 इण विघ आगें बूडा घणां रे, त्यारो कहितां न आवें पार रे ।
 ते समकत बोध गमायनें रे लाल, गया नरक निगोद मझार रे ॥ ११ ॥
 वले बेला तेलादिक पारणें रे, विगें खाए विण मरंजाद रे ।
 ओरां नें राखें भीकता रे लाल, आप इघका करें विषवाद रे ॥ १२ ॥
 तपसा करें खावारें कारणें रे, ते पिण पूरा मूंड रे ।
 विगेंरो उद्यम करें पारणे रे, जाए ताजें ताजें घर वूंड रे ॥ १३ ॥
 ते पेटभरा ठा भेष में रे, ते पिण बुगलब्ध्यांनी होय जाय रे ।
 त्यां भोलां नें पाड्या भर्म में रे लाल, ताजा माल आंणी खाय रे ॥ १४ ॥
 वले वीहार गामां नगरां करें रे, पिण रहें निरंतर संताप रे ।
 मिगसर महीना थी मांडनें रे लाल, करे चोमासा री थाप रे ॥ १५ ॥
 गमतो खेतर देखीनें कहें रे, म्हे अठें करसां चोमास रे ।
 ओरां री म करजो वीणती रे लाल, यारें मांहींमां नही वेसास रे ॥ १६ ॥
 मिगसर मास लागां पछें रे, मांडें घणीं दोडादोड रे ।
 जाणें मन चितवीया खेतर में रे लाल, रखे करें चोमासों ओर रे ॥ १७ ॥
 वले छती सगत फिरवा तणी रे, तोही थाणें वेंसें रहें जाण रे ।
 ताजो खाणों मिलें तिण सहर में रे लाल, पर रहें मूंड अयांण रे ॥ १८ ॥
 जो ताजो आहार मिलें नही रे, तो छोड दें थांणो सताब रे ।
 वले अलगो खेतर आछो मुणे रे लाल, तो जाय वेंसे खेतर दाब रे ॥ १९ ॥
 थाणें वेंसें लोलपी थकारे, वले कूडा कारण बताय रे ।
 त्यांमें दोषां रो थांग दीसें नहीं रे लाल, ते पूरा केम कहीवाय रे ॥ २० ॥

तिणने उपरलो आए मिले रे, तो छुडाय दे थाणों सताब रे ।
 विण परीणामां काडें दक्कायने रे लाल, पाडे तिणरी आब रे ॥ २१ ॥
 उ साध श्रावकां रो दबीयो थको रे, गयो अनेरे गांम रे ।
 पिण अंतरंग में दुखीयो घणो रे, इणरो छूटो ठिकाणो ठांम रे ॥ २२ ॥
 इणने एकंत लोलपी जाणनें रे, ओरांने देतो जाणे अंतराय रे ।
 वले आंगुण घणां जाणे तेहने रे, दीयो ठिकाणो छुडाय रे ॥ २३ ॥
 तोही ताणा बेजा तिणरे लगे रह्या रे, तिहां पाछा आवारा परिणाम रे ।
 जाणें चोमासो पूरो हुआ पछें रे, पाछो जाय बेसेसूं तिण ठांम रे ॥ २४ ॥
 सुखसाता आगा ज्यूं तिहां पावसू रे, इणरें इसरों छे मन वेसास रे ।
 इण आसा सूं दिन गिनतां थकां रे, पूरों करे छे चोमास रे ॥ २५ ॥
 चोमासो पूरों हुआं पछे रे, पाछो आय वेसे थाणें सताब रे ।
 तेतो लोलपी नगर पिंडोलीयो रे, तिणने खांणे कीयो छें खुराब रे ॥ २६ ॥
 कदेयक तो थाणें कहे रे, कदे कारण बतावें ताहि रे ।
 इणरें कूड कपट रो चालो घणो रे, तिणनें विकल राखें गण मांहि रे ॥ २७ ॥
 कल्प मरजादा भांगी लोलपी थको रे, तिणरें कदेय म जाणो समाध रे ।
 तिणसूं आहार पांणी भेला करें रे लाल, त्यांने निदचे कहीजे असाध रे ॥ २८ ॥
 वले तप करें महिमा वधारवा रे, पूजा सलाघा काज रे ।
 जस कीरत रा भूला घणा रे, ठाला बादल ज्यूं करें ओगाज रे ॥ २९ ॥
 मत विखरतो जाणे आपरो रे, फिरता देखे श्रावक अनेक रे ।
 तो करे उपाय मत राखवा रे, ते सुणजो दिष्टंत एक रे ॥ ३० ॥
 जोगी ब्राह्मण आददे दरसणी रे, ज्यारी जाती देखे डोली घ्रास रे ।
 तो करे उदंगल अति घणां रे, त्यारे आजीवका रो विसास रे ॥ ३१ ॥
 हाथ फाडें चांदी चिगदो करे रें, मारें जांघ गले घालें जांण रे ।
 इतरे कीयें सुलभें नही रे लाल, तो जूंहर खडकें आंण रे ॥ ३२ ॥
 टूटो खोडो पांगलो रे, वले गरटो जोजरु जांण रे ।
 निकमां माणस भेला करी रे, खडकें जूंहर में आंण रे ॥ ३३ ॥
 जो माथा उपर ली आए वणे रे, तो न गिणें बालक बघेल रे ।
 भेलाकर होमें घरती कारणे रे, देवे जूंहर में ठेल रे ॥ ३४ ॥
 कदा जूंहर रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे ।
 घ्रास जाअेंनें फिट फिट हुवें रे, उत्तरजाअे लोकां में आब रे ॥ ३५ ॥
 इण दिष्टते भेषधारी लोक मे रे, साधरो नांम घराय रे ।
 आजीविका अर्थे गच्छ बांधीयो रे लाल, भोलां आणें रह्या छें पूजाय रे ॥ ३६ ॥

ते अकारज अनेक करता थका रे, संकें नहीं मन मांय रे ।
 ते मतवाला ज्युं छक्कीया रहें रे लाल, ते डरें नहीं करता अन्याय रे ॥ ३७ ॥
 उघाड पडें त्यांरो लोकमें रे, कदे पूजा श्लाघा घट जायरे ।
 वले श्रावक फिरें मत वीखरें रे लाल, जब कुण कुण करें उपाय रे ॥ ३८ ॥
 केई गरढा अवनीत अजोगनें रे, तिणनें पोगां चढाय चढाय रे ।
 लांबी तपसा करावें तेहनें रे लाल, कें संथारो देवें कराय रे ॥ ३९ ॥
 तोही आव आदर न हुवें लोक में रे, वले परजावें इधको उघाड रे ।
 तो बाल जवान पिय तेहनें रे लाल, करावें लांबो तप नें संथार रे ॥ ४० ॥
 इम कर कर काम चलावता रे, खावें लोकां रा माल रे ।
 ते वरत विहूणा नागडा रे लाल, ते कूदा वण रह्या लाल रे ॥ ४१ ॥
 कदा संथारो रस आवें नहीं रे, तो वणजावें घणी खुराब रे ।
 आजीवका घटें मत वीखरे रे लाल, उतर जावें लोकां में आब रे ॥ ४२ ॥
 चांदी चिगदां सम त्यांरो तप कह्यां रे, संथारो जूहर समाण रे ।
 ते तो ग्रास आजीवका कारणें रे लाल, करें मनख मारें घमसाण रे ॥ ४३ ॥
 कोइ जूहर मां सूं नीकलें रे, तिणनें पकड जूहर में दें भोक्क रे ।
 ज्युं कोयक संथारो भांग नीकलें रे, तिणनें जोरी दावें राखें रोक रे ॥ ४४ ॥
 जो उ अनपाणी मागे हेला करें रे, तो राखें अबोलो मुख मीच रे ।
 ते हाय विराय टलबल करें रे, तिणनें मारें भूंडीतरे कुमीच रे ॥ ४५ ॥
 खावापीवा रो अतुपतो मूआं रे, महा मोहणी कर्म बंधाय रे ।
 बले नरक निगोद माहें पडे रे, पछें विहूं गति भोला खाय रे ॥ ४६ ॥
 उणनें रोक राखें ते पापीया रे, ते मिनष ना मारण हार रे ।
 ते पिय बांधें महा मोहणी रे लाल, जासी नरक निगोद मझार रे ॥ ४७ ॥
 एहवीतरें मूआं नें मारीयां रे, दोनुं नें दुरगत होय रे ।
 यारें कर्म बंधें महा मोहणी रे लाल, दसासतकचे सुतर में जोय रे ॥ ४८ ॥
 विना विचार्यां लांबो तप करे रे, वले करें संलेखणा संथार रे ।
 पछें आरतध्यान माहें मरे रे लाल, ते चाल्या जन्म विगाड रे ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रा घरमें कलही हुवे रे, कोइ ताकें कूओ नें घेड रे ।
 कोयक आपच करे मरे रे, वले खाय मरें केई जहर रे ॥ ५० ॥
 ज्युं भेषधारी घर छोडायनें रे, करें माहेंमा कजीया राड रे ।
 त्यांमें केयक दुखरा दाघा थका रे, करें संलेखणा संथार रे ॥ ५१ ॥
 त्यांरो संथारो पार पोहचें नहीं रे, पोहचें तोही असुध परिणाम रे ।
 मरें लाज सरम रा मारीया रे, त्यांरो मरणो छें मरण अकाम रे ॥ ५२ ॥

जे बालमरण मूआ तके रे, बूडा घोर रुद्र संसार रे ।
 त्यांरा गुण कीरत महिमा करे रे लाल, ते पिण बूडा त्यांरी लार रे ॥ ५३ ॥
 विनें करे सुतर भणे रे, करे तपसाने पाले आचार रे ।
 इहलोक परलोक जस कारणे रे लाल, ते तो भगवंत री आग्या बार रे ॥ ५४ ॥
 इहलोकादिक अर्थे तपसा करे रे, वले करे सलेखणा संथार रे ।
 फह्यो दसवीकालक नवमा अघेन में रे, अग्या लोपी नें परीया उजाड रे ॥ ५५ ॥
 केई तपसा करे मानी थका रे, केई पेट भराइ काज रे ।
 वले लोक सरायां हरषत हुवे रे लाल, त्यांनें केम कहीजे मुनीराज रे ॥ ५६ ॥
 ए सुण सुणनें नर नारीयां रे, करजो मनमें विचार रे ।
 समचे कह्या सगलां उपरे रे लाल, नाम लेह न कख्यो उघाड रे ॥ ५७ ॥
 जिणमें अघगुण होसी एहवा रे, त्यांनें न गमें एहवी जोड रे ।
 बुधवंत सुण सुण हरषे घणा रे लाल, पामे आणंद कोड रे ॥ ५८ ॥
 सुंस लेह सुष पालजो रे, चोखा राखो परिणाम रे ।
 लोक बतावे आंगली रे, एहवो म करजो काम रे ॥ ५९ ॥
 विकल पचलाणी आ दूसरी रे, कीधी खेखा सहर मफार रे ।
 संवत अठारे बतीसें समे रे लाल, काती विद बीज मंगलवार रे ॥ ६० ॥

ढाल : १८

दुहा

पचखांग सुणे विकलां तणो, करजो सूंस विचार ।
 सीखावण कहुं सर्व साधनें, ते बुधवंत लेजो घर ॥ १ ॥
 केई सूंस करे वेंराग सुं, तिण काले सुघ परिणाम ।
 पछें पड जाअें केई आड दोढ में, तिण जन्म गमायो वेकाम ॥ २ ॥
 वले वाजे लोकां में वेंरागीया, त्याग बताय बताय ।
 पिण करे विकलाई अति घणी, तिणरी खबर न काय ॥ ३ ॥
 करे विकलाई तेहनें, सूंस कीया ते निरफल थाय ।
 वले खावापीवा रो अत्रिसो रह्यां, तिणरे मोहणी कर्म बंधाय ॥ ४ ॥
 तिणसूं पहिला तोलनें, कीजो उत्तर गुण पचखांग ।
 कीषां पछें सुघ पालजो, ज्यूं वेगा पोंहचो निरवांग ॥ ५ ॥
 विकलाई देख विकलां तणी, समचे कहुं छूं भाव ।
 सूंस लेवण ने पालण तणों, कही बतावूं न्याव ॥ ६ ॥

ढाल

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविथा]

कोइ बंधो करे जाव जीव लग एहवो, हूं एकटक करसूं आहार मुनिसर ।
 पछें चांप चांप आहार मरजादा लोपी करे, ते श्रीजिण आग्या वार हो मुनिसर ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचार नें* ॥ १ ॥
 एक वार दोय वार आहार कीयां थकां, साव नें दोष न कोय हो ।
 चांप चांप आहार एकण टकमें कीयां, छिदर चारित रे होय हो ॥ २ ॥
 चांप चांप आहार करे एकण वार में, तेहिज आहार करे दोय वार हो ।
 तिण आज्ञा आरावी श्री जिणराज री, ते सुखे वहे संयम भार हो ॥ ३ ॥
 जो करणी नावे अणोदरी तेह सूं, तो करणो पूरो उन्मान हो ।
 पिण कठोकठ साव नें आहार करणो नहीं, ते भाष गया भगवान हो ॥ ४ ॥
 चांप चांप आहार करे छें तेहमें, दोषण उपजें अयाग हो ।
 निद्रा आलस रोग री उतपत हुवें, केई जाअें संजम सूं भाग हो ॥ ५ ॥
 जो करे उत्तरगुण आंग वेंराग नें, तो पालजे ह्डी रीत हो ।
 जो आहार उन्मान एकण टकमें कीयां, ओर सावानें आवें परतीत हो ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपवास बेलदिक पारणें धारणे, जद पिण अरिहंत री आज्ञा नही, उपवास वेला तेलदिक तप तणो, पछे आरत घ्यान माहें पडीयां थकां, बंधो कीयां विग छूटो तप करें, पछे बंधो करे तो पाले रूडी रीत सूं, तूं उपवास वेला तेलदिक तप करे, ताजा घर पारणें धारणें नहीं राखणा, ताजा घर पारणें धारणें थाप राखीयां, वले साध सरवेंला तोनें लोलपी, तप कीजें सरल सभावे कर्म काटवा, सहजें आयो कीजें पारणो धारणो, जावजीव पांचूंइ विगें त्यागण तणा, तो आगली पाछली कीजे विचारणा, सूंस कीयां पछे विगय खावण तणी, पछे परिणाम आड दोड मे वरतीयां, तो सहजेइ विगें टाले सूंस विण कीयां, पछे लूवो आहार कीयां सुं ताहरा, जो चौखा परिणाम रहें नित ताहरा, तो त्याग कीजें दोय च्यार वरसां लमें, जो थिर परिणाम रहिता जाणे ताहरा, तूं त्याग कीजे जावजीव निसंक सूं, पाछे रिगला तूं रोट्यां देखे चौपडी, ओर साध सरवेलो तोने लोलपी, जे विगे त्यागे नें रोट्यां जोवे चौपडी, तिणरो खावरो घ्यान मिटचो नही माहिलो, त्याग करें तो विकलाइ करे मती, ओर साध बतावे तोने आंगुली, कदे ओर साध तोनें जाणें सीदावतो, ते पांती सूं इचिको लेवेंला कारण विना, ओर साधां नें विगे खाता देखने, साधां रो इसको खेदो कीयां थकां,

तूं चांप चांप करेंलो आहार हो ।
 ग्यानादि गुण ने विगाड हो ॥ ७ ॥
 तूं बंधो करेंला जावजीव हो ।
 तो बंधो कर्म अतीव हो ॥ ८ ॥
 जो रहिता जाणें थिर परिणाम हो ।
 ज्यूं सुधरें आत्म काम हो ॥ ९ ॥
 तो वेंराग राखे घट मांय हो ।
 ओर साधा नें न देणी अंतराय हो ॥ १० ॥
 तो आ रीत छें घणी विपरीत हो ।
 थारी कुण मानेला परतीत हो ॥ ११ ॥
 उपवास बेलदिक जाण हो ।
 ज्यूं पामें पद निरवाण हो ॥ १२ ॥
 थारा इसडा उठे परिणाम हो ।
 ए कठण घणो छे काम हो ॥ १३ ॥
 कारी न लागे काय हो ।
 घणेरी खुरावी थाय हो ॥ १४ ॥
 ओरानें विगे खाता देखी तांम हो ।
 किसडा एक रहे परिणाम हो ॥ १५ ॥
 वरस छमास लगे जाण हो ।
 यूं सहितां सहितां कीजे पचखाण हो ॥ १६ ॥
 तो थागा थेगरा रो नहीं काम हो ।
 चढता राखे परिणाम हो ॥ १७ ॥
 तो लागेली घणी विपरीत हो ।
 उठेला घणी अपरतीत हो ॥ १८ ॥
 वले चौपडी रा जोवें दातार हो ।
 तिणनें बुधवंत देसी चिकार हो ॥ १९ ॥
 राखे समता परिणाम हो ।
 तूं इसडो म कीजें कांम हो ॥ २० ॥
 कोइ आहार आछो दें जोय हो ।
 तो कुण सरवे वेंरागी तोय हो ॥ २१ ॥
 तूं धेप धरेंला मन मांय हो ।
 ए पुरो वूडण रो ज्पाय हो ॥ २२ ॥

सूंस कीयां पेली ओर साघां भणी,
 ते जावजीव सूंस करे तो पालण तणी,
 वेंराग विनां विगें त्यागें उसभ उदें,
 ते सूंस घणां माहें भाग सकें नहीं,
 उणरें ओघट घाट रहे घट में घणी,
 उ खवारा चाला चिरत करे घणा,
 वले चेलां री भूख रहें तिणनें घणी,
 सूंस लेइनें भागे तेहनी,
 कोइ विगेंरो त्याग करे जीवें ज्यां लो,
 जो उ तपसा करे विगेंरो लोलपी थको,
 उ देखा देख पिण तपसा करतो नहीं,
 हिवें श्रीषम रितु पिण ए एकलोइ तपकरे,
 ते थोडो विगें देखी तपसा करे नहीं,
 एहवा चाला चिरत करे घणा,
 सूंस कीया जब परिणाम ओर था,
 तो थिर परिणाम करे सुघ पालजे,
 आहार विगें मरजादा सूं भोगवे,
 देहीनें भाडो देवें छ कारणे,
 जो इण रीतें आहार विगें नित भोगवें,
 जो त्याग वेंराग करो कर्म काटवा,
 वले केयकारी अथिर घणी छें आत्मा,
 ते खिण एक में मंड जाअें सलेषणा,
 उणनें धाप्यां तो मीठी लागें सलेषणा,
 जो एहवा जीव मंडे सलेषणा,
 देवल धजा सरीषो मन जेहनों,
 त्यानें भूख लागं परिणाम भागल हुवें,
 ज विगर विचार्यां करसी सलेखणा,
 पछें आरतव्यानं माहें परीयां तिके,
 तो पहिलां तूं अणसण अणादरी तप करे,
 विगें रो त्याग सहितों सहितों करे,
 पछें परिणाम दिढ रहिता जाणें ताहरा,
 परतीत उपजें ए सगला साघ नें,

कदे विगें नहीं धाम्यो तिलमात हो ।
 इचरज वाली छें बात हो ॥ २३ ॥
 वले ओर सूंसां रो करे पूर हो ।
 पछें गणसूं हो जाअें दूर हो ॥ २४ ॥
 वलें पग पग कपट नें कूर हो ।
 ते दिन दिन मुगत सूं दूर हो ॥ २५ ॥
 नहीं सूंस पालण री नीत हो ।
 चिहूं गति में होसी कूपीत हो ॥ २६ ॥
 पारणें धारणे आगार हो ।
 उणरो पडजाअे साघां में उघाड हो ॥ २७ ॥
 ते पिण रितु वरसात हो ।
 ते लोलपी थको साख्यात हो ॥ २८ ॥
 घणो आयो देख हुवें तयार हो ।
 ते चाल्या जन्म बिगाड हो ॥ २९ ॥
 पछें होय जायें ओर परिणाम हो ।
 ज्यूं सुघ रें आत्म काम हो ॥ ३० ॥
 वले राग नें बेष रहीत हो ।
 श्री जिण आग्या सहीत हो ॥ ३१ ॥
 तो साघ नें दोष न कोय हो ।
 तो आपो वस आपो सोय हो ॥ ३२ ॥
 ते खिण माहें रंग विरंग हो ।
 वले खिण माहें जाअें मन मंग हो ॥ ३३ ॥
 भूखां मीठो लागें अन्न हो ।
 त्यांरो थिर किम रहसी मन्न हो ॥ ३४ ॥
 ते करे सलेखणा संथार हो !
 ते कुसले न पोहचें पार हो ॥ ३५ ॥
 वले विगर विचार्यां संथार हो ।
 ते गया जमारो हार ॥ ३६ ॥
 वले दिन दिन आहार घटाय हो ।
 इम खीणी पारें कांय हो ॥ ३७ ॥
 तो नात कढे मुख बार हो ।
 मंडजे सलेखणा संथार हो ॥ ३८ ॥

ते पिण गुरवादिक आग्या दीयां, तो चढता हुवें परिणाम हो ।
 ते पिण देही नें पतली पाखां पछे, ढील तणो नहीं काम हो ॥ ३६ ॥
 एकासणो आंबल उपवास वेलादिक, बले विगें तणो परिहार हो ।
 इत्यादिक सूंस करे जाव जीवरो, तो करजे विचार विचार हो ॥ ४० ॥
 केई सूर नें वीरपणों मानें आपनें, ते करे जावजीव पचखाण हो ।
 पछें सूंस न जावें गीदर सूं पालीया, ते भांगे विकल जाण जाण हो ॥ ४१ ॥
 एहवा त्याग कीयां विण साध नें, दोष न लागें कोय हो ।
 तो काचा परिणामा सूंस न कीजीए, सूतर सांहमो जोय हो ॥ ४२ ॥
 तप करता देख ओर साधां भणी, कोइ लोलपी करें कपटाय हो ।
 उ तपसा छोडें विगेंरें कारणें, उणरें गिरधिपणो घट मांय हो ॥ ४३ ॥
 तिणरें उपदेस देवारी खेद दीसें नही, बले भणवां ने लिखवारी न काय हो ।
 तोही नित विगें खाये तपसा करे नहीं, ओर साधां ने पाडें अंतराय हो ॥ ४४ ॥
 उणनें आछा घर न बतावे गोचरी, तो उलटो डरावे ताम हो ।
 अन्हाखी थको दुख देवें साधां भणी, ते विगय खावा रें काम हो ॥ ४५ ॥
 जो तपसा करण रो कहें कोइ तेहने, तो उ भूठ बोले कारण बताय हो ।
 इसरा अजोग अवनीत नें लोलपी, ते किण विघ आवें ठाय हो ॥ ४६ ॥
 जो उ आहार थोरो कें उ आहार लूखो करें, वेंराग भावें रूडी रीत हो ।
 ते नित नित आहार करें तिण साध री, तिणरा कारण री आवें परतीत हो ॥ ४७ ॥
 केयक कारण अणहुता बताय ने, ते लाग़ा छे खावा लार हो ।
 केयक सूंस भांगेनें विकल थया, यां दोया री संगत निवार हो ॥ ४८ ॥
 तो बल समरथपणों देख सरिर नों, मांहे सरवा वेराग पिछाण हो ।
 बले काया निरोगी देखे आपणी, तू होय अवसर नो जाण हो ॥ ४९ ॥
 बले दरब खेतार काल भाव विचारने, बय जोवनादिक जाण हो ।
 बले गुरवादिक साधां नें पूछनें, कीजें जावजीव पचखाण हो ॥ ५० ॥
 सूंस कीयां परिणाम सेठा रहें, त्यांरा सूंस कीया परिणाम हो ।
 जे सूरा वीरा पार पोहचावसी, ते पामि पद निरवाण हो ॥ ५१ ॥
 ए भाव सुणे उत्तम नर नारीयां, चोखा पालजों सूंस हो ।
 ज्यूं फेरा टलें जन्म नें मरण तणा, पूरीजें मन हंस हो ॥ ५२ ॥
 समचें कहीं छें विकल सीखावणी, गुंदक्च सहर मभार हो ।
 संवत अठारें वतीसा वरस में, वेसाख सुद ग्यारस सोमवार हो ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचारनें ॥ ५३ ॥

ढाल : १६

दुहा

दुषम आरो पांचमो, घणो हलाहल मान ।
 तिणमें भेषवारी हुसी घणा, कूड कपट री खान ॥ १ ॥
 अे कुबदी खेला नाचसें, इण साघ तणा भेष मांय ।
 वले हिंसा धर्म परूपनें, अें परसी नरक में जाय ॥ २ ॥
 त्यांरा विकल श्रावक नें श्रावका, ते करसी कूडी पषपात ।
 त्यांनें कुबद कदाग्रह सीखाय नें, त्यांनें पिण लेसी साथ ॥ ३ ॥
 ज्यांरे अंधकूप नें जलोजथा, त्यांरें दिवस तका हीज रात ।
 ए गुधू सरीषा होय रह्या, वले दिन दिन अधिक मिथ्यात ॥ ४ ॥
 अें नव नव आंकरा नवकडा, ते जासी नरक मभारो ।
 माहा नसीत में में सुण्या, ते सुणजो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल

[सल कोइ मत राख]

आचार्य नें साध साधवी, वले श्रावक श्रावका जाणो रे ।
 अें गुण विण नाम धरायनें, नरक जासी त्यांरो परिमाणो रे ।
 इण विघ ओलखों नवकडा ॥ १ ॥
 पचावन कोड नें लाख पचावन, वले पचावन हजारो रे ।
 पांचसों नें पचावन उपरां, आचार्य जासी नरक मभारो रे ॥ २ ॥
 छ्वासठ कोड नें छ्वासठ लाख, वले छ्वासठ कह्या हजारो रे ।
 छ्वां नें छ्वासठ उपरें, साघ जासी नरक मभारो रे ॥ ३ ॥
 सितंतर कोड लाख सितंतर, वले सितंतर हजारो रे ।
 सातसों नें सितंतर उपरें, साघव्यां जासी नरक मभारो रे ॥ ४ ॥
 अठ्वासी कोडनें लाख अठ्वासी, वले अठ्वासी हजारो रे ।
 आठ्वासी नें अठ्वासी उपरें, श्रावक जासी नरक मभारो रे ॥ ५ ॥
 निनाणूं कोडनें लाख निनाणूं, वले निनाणूं हजारो रे ।
 नवसों नें निनाणूं उपरें, श्रावका जासीं नरक मभारो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए आचार्य नें साध साधवी, पदवी घर बाजे मोटा रे ।
 जे नरक जासी इण भेष में, त्यांरा लक्षण घणां छे खोटा रे ॥ ७ ॥
 ते भिष्ट थया आचार थी, वले सरघा में मूढ मिथ्याती रे ।
 पहरण सांग सावां तणो, पिण थोथा चिणां रा साथी रे ॥ ८ ॥
 खाए पीए सुखे दीहां सूय रहें, वले डील में वण रह्या लूंठा रे ।
 गोचरी वीहार करें जरें, जाणें रावला कोतल छूटा रे ॥ ९ ॥
 अे तो फिरता वचन बोलें घणा, वले कूड कपट माहे राचें रे ।
 चरचा करे तिण अवसरे, जाणें ओघड उघाडा नाचें रे ॥ १० ॥
 न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या फेन फितुरा रे ।
 जो सूतर री चरचा करे, तो पग पग पड जाय कूडा रे ॥ ११ ॥
 कूड कपट करे मत बांधीयो, ते तो पेट भराइ काजें रे ।
 आचार में ढीला घणा, तोही निरलजा मूल न लाजे रे ॥ १२ ॥
 ते साध नांव धरायने, ठाम ठाम थानक करावें रे ।
 तिणरी सांनीं सूं कर कर आमना, छ काय जीवां ने मरावें रे ॥ १३ ॥
 आधाकर्मी थानक ने भोगवें, वले सांग साध रो धरीयो रे ।
 छ काय जीवां नें मरावता, ओ तो पीहर पूरो पडीयो रे ॥ १४ ॥
 वले पडदा परेच बंधावता, चंद्रवा सिरकी ताटा रे ।
 वले छपरा छांन करावता, तिणरा ग्यांनाविक गुण न्हाठा रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक थानक रें कारणें, जीव हुणें वास्वरो रे ।
 एहवा थानक साध भोगवे, ते चाल्या जन्म विगाडो रे ॥ १६ ॥
 साध थइ उदेसीक भोगवे, वले मोल लीयो बहरे आहारो रे ।
 नित पिंड वेहरे एकण घरे, ते जासी नरक मझारो रे ॥ १७ ॥
 ए उत्तराधेन रे वीसमे, वीरना वचन सभालो रे ।
 जे उदेसीकादिक भोगवें, त्यांरे किम होसी नरक सूं टालो रे ॥ १८ ॥
 धी खांड लाडू मिश्री मोल लें, त्यांरा भर भर मेले चाडा रे ।
 मोल ले ले वेहरावें साध नें, ते तो गर्भ मे आवसी आडा रे ॥ १९ ॥
 धी खांड लाडू लूंग मिश्रीयां, मोलरा लीवां वेहरें जाणो रे ।
 वले साध बाजे इण लोकमें, ते तो पूरा मूढ अयाणो रे ॥ २० ॥
 जो चेलो हूंतो जाणें आपरो, तो उणने रोकड दांम धरावे रे ।
 पांचमों महावरत भागनें, तोही साध रो विड्ड घरावें रे ॥ २१ ॥
 जीवादिक जाणें नहीं तेहने, पांचोइ महावरत उचरावें रे ।
 साध रो सांग पेहराय नें, भोला लोकां ने पगां ल्गावे रे ॥ २२ ॥
 १०७

बालक	बूढो	देखें	नहीं,	यारे	पानें	पहें	ज्यूं	ज्यूं	मूहें	रे ।
नांव	ना	करवा	-आपरी,	ते	तो	मान	बडाइ	सूं	बूहें	रे ॥ २३ ॥
बले	चेलो	करवा	कारणें,	मांहोमां	भगडो	माहें				रे ।
फाडा	तोडो	करता	लाजें	इण	साध	रा	भेष	नें	भाहें	रे ॥ २४ ॥
गांवां	नगरां	समाचार	मेलवा,	सांनीकर	ग्रहस्थ	बोलवें				रे ।
कागद	लिखावें	तिण	कनें,	विवरों	आप	बतावें				रे ॥ २५ ॥
ग्रहस्थ	आगें	वीयावच	करावीयां,	साध	नें	कह्यो	अणाचारी			रे ।
दसवीकालक	तीजा	अघेन	में,	कोइ	बुधवंत	लेजो	विचारी			रे ॥ २६ ॥
भागल	तूटल	त्यामें	घणा,	त्यांरो	कुण	काहें	नीकालो			रे ।
जो	थोडासा	त्यानें	छेडव्यां,	उलटो	दे	अन्हाखी	आलो			रे ॥ २७ ॥
धाप	सरीषा	करवा	खपें,	दे	दे	अणहूंत	आलो			रे ।
त्यानें	परभव	री	चिता	त्यारें	भूठ	तणो	नहीं	टालो		रे ॥ २८ ॥
सुध	साधां	रे	माथें	त्यांरा	टोला	में	तेह	सपूतो		रे ।
तिण	भूठ	रो	निरणो	त्यारें	नरक	जावारा	सूतो			रे ॥ २९ ॥
भूठो	आल	देवे	तेहनें,	प्रायच्छित	न	दें	लिंगारो			रे ।
तिणसूं	आहार	पांणी	भेलो	ते	बूड	गया	कालीधारो			रे ॥ ३० ॥
रेणादेवी	री	कुगुर	नें	ते	सांभलजों	चित्त	ल्यायो			रे ।
कूड	कपट	करे	पापीया,	सुध	साधां	सूं	दे	भिडकायो		रे ॥ ३१ ॥
रेणादेवी	दिखण	रा	बाग	अणहूंतोइ	सर्प	बतायो				रे ।
तिण	आपणा	किरतब	ढांकवा,	उण	बोलीयो	मूसावायो				रे ॥ ३२ ॥
तिण	जिणरिष	ने	जिणपाल	उण	घालवी	संका	मोटी			रे ।
पिण	बुधवंत	जाए	जोयों	जब	जांणी	छें	तिणनें	खोटी		रे ॥ ३३ ॥
ज्यूं	कुगुर	रेणादेवी	सारिषां,	संका	साधां	रो	घालें			रे ।
ते	आपणा	किरतब	ढांकवा,	सुध	साधां	कनें	जातां	पालें		रे ॥ ३४ ॥
पिण	बुधवंत	पूछ	निरणो	जब	जांग	लीया	त्यानें	खोटा		रे ।
ग्यांन	किरीया	में	पोला	जाणें	पांणी	तणा	परपोटा			रे ॥ ३५ ॥
तिण	रेणादेवी	सांहमों	जोयनें,	जिनरिष	हूवो	खुवारो				रे ।
तिम	कुगुरां	परतीत	सूं,	दुरगत	जासी	नरभव	हारो			रे ॥ ३६ ॥
रेणादेवी	रो	कपट	जिहांइ	पिण	कुगुरां	रा	कपट	छें	भारी	रे ।
आप	डूबें	ओरां	नें	केई	हुय	जाए	अनंत	संसारी		रे ॥ ३७ ॥
सांग	पहरे	साधां	तणों,	खाधा	लोकां	रा	मालो			रे ।
तप	जप	संजम	बाहिरा,	अें	कूदा	बण	रह्या	लालो		रे ॥ ३८ ॥

इम सुण सुणलें नर नारीयां, छोड दो कुगुर सताबो रे ।
 सुध सावां तणी सेवा करो, राखी चावो इजत आबो रे ॥ ३६ ॥
 संवत अठारें तेतीसे समें, जेठ सुदि पुनम शुक्रवारो रे ।
 कही छे कुगुरा री नवकडी, रीया गांव मझारो रे ॥ ४० ॥



ढलल : २०

दुहल

दुषड अरें ढलंचडें, शुरलवकुर शुरलवकल नलंन डरलड ।
 गुण वलण ठलल ठीकरल, ढडसी नरक डें डलड ॥ १ ॥
 ते हीण अलचलरी कुगुरलं तणुी, सेवल करें वलन रलत ।
 तुरलं डुठ नें सलचल करवल डणुी, कुडी करें ढखढलत ॥ २ ॥
 तुरलं अलंघल नें डूल सुडें नहीं, नुडलड डलरग री डलत ।
 ढलडंड डत डें रच रहलल, डड डलहें डुर डलथुडलत ॥ ३ ॥
 दीठी नुने अणदीठी कहें, डुठ डुललतल नलंणें सलंक ।
 अलल देवण नें नही अललसु, तुरलरी डुली डें डलंक ॥ ॡ ॥
 एहवल शुरलवक डलसी नरक डें, तुरलरल चलल चलरत अनेक ।
 वले थुडलसल ढरगड कलं, ते सुणडुी अलंण ववेक ॥ ॡ ॥

ढलल

[२े डुीव डुीह अरुशुकडुडल न अलशुडुी]

नव नव अलंकलरल कुगुर नवकडल, ते तुी डलसी नरक डडलर २े ।
 तुरलरल शुरलवक नें शुरलवकलं तणुीं, तुडुहें सलंडलडुीं वलसुतर २े ।
 एहवल शुरलवक डलंणुीं नवकडल* ॥ १ ॥
 धुर सुं तुी डुलल डलरग डुगड रुीं, गुर कलडें हणुें छें डुीव २े ।
 वले धरुड डलंणुीं हलसल कुीडलं, तुरलं दीधी नरक री नुीव २े ॥ २ ॥
 चवतुी देखुे थलंनक डुी गुर तणुीं, तलणरी अड करें संडलल २े ।
 नुीलुीं उखण उडर नुलंखुें डुरड नें, करें अनंत डुीवलं रुीं खेंगल २े ॥ ३ ॥
 ढुीली ढलंणुी तणल डुीव डलरनुें, दडें लुीडे थलंनक नें अड २े ।
 ते ढलण गुर रें कलडे नलसंक सुं, अें तुी हण रहलल डुीव छकुरलड २े ॥ ॡ ॥
 केडु करलवें थलंनक डूल थुी, धुर सुं नवी डलडडलं उडलड २े ।
 ढल्लें डुीव वलणलसे वलच वलडुें, ते तुी कहुीं कडल लुग डलड २े ॥ ॡ ॥
 गलडलं गलडलं ढृथुवी डुंगलवतल, वलंणल वलंणल ढलंणुी डुंगलड २े ।
 कचरल कुीतुीं करे छ कुरलड री, डन गडतुीं थलंनक डुणलड २े ॥ ॢ ॥

*डुह अलंकडुी ढुरलुेक गलथल के अनंत डें है ।

केई करें मजूरीया हाथ सूं, उंडी उंडी दरावे नीव रे।
 घर रो गरथ देई पापीया, छ काय रा मरावें जीव रे ॥ ७ ॥
 छ काय हणेने थानक करें, तिणमें धर्म जाणगे निसंक रे।
 तिणसूं ठाम ठाम जायगा बंधे, एहवा लागा कुगुरां रा डंक रे ॥ ८ ॥
 त्याने पूछ्चां बोले केई पाधरा, केई भूठ बोले ततकाल रे।
 भायां निमते थानक करायो कहे, अन्हाखी थका भाषे अलाल रे ॥ ९ ॥
 प्रतख करायो गुर रे कारणे, लाजां मरतां खांचेले आपरे।
 धर्म रे ठिकाणे भूठ बोल्ले, भारी हुवें चीकण बांधे पाप रे ॥ १० ॥
 धर्म ठिकाणें भूठ बोलीयां, बंधे महामोहणी कर्म रे।
 सित्तर कोडाकोड सागर लगे, नही पांमें जिणवर धर्म रे ॥ ११ ॥
 ज्यूं किणरी मा बेंनादिक डाकण हुवें, त्यांरी बात सुण्यां पामे खीज रे।
 त्याने साची करण खपे घणूं, भूठो थको पिण थापे धीज रे ॥ १२ ॥
 वले अनेक उपाय करे घणा, घर जाणो पिण कर दें कबूल रे।
 पिण मुख सूं डाकण कहणी दोहिली, गाढोइ भूढो हुवे कबूल रे ॥ १३ ॥
 ज्यूं भारीकरमा केई जीवडा, बोले कुगुरां रे बदले भूठ रे।
 त्याने साचा करण खपें घणूं, कूडा गुण करे मुख परपूठ रे ॥ १४ ॥
 अनंत संसार सूं डरे नही, नरक जाणो पिण करे कबूल रे।
 पिण मुख सूं खोटा कहणा दोहिला, रह्या पाषड मत में भूल रे ॥ १५ ॥
 डाकण रें बदले धीज कीया थकां, कदा राजा कोप्यां घर जाय रे।
 पिण कुगुरां काजे भूठ बोलीयां, पडें नरक निगोव मे जाय रे ॥ १६ ॥
 आप आदरया त्यां कुगुरां तणा, देवे दोषण सगला ढांक रे।
 सुघ सांघां ने आल वेता थका, पापी मूल न आणगे सांक रे ॥ १७ ॥
 सुघ साघां री निदा करे, वले निजर पढ्या जगें घेष रे।
 त्यांसूं वरते बेरी ने सोक ज्यूं, जोवे छल छिदर वसेष रे ॥ १८ ॥
 आप कुगुरां ने सेठा भालीया, त्यामें दोषां रो छेहे न पार रे।
 तिण सुं साघां तणा दोष जोवता, खप कर रह्या मूढ गिवार रे ॥ १९ ॥
 पिण साघा माहे दोष देखे नही, जब कूडोइ देवे आल रे।
 पछें भूठं बोली बकता फिरे, त्यांरे कुण काढे निकाल रे ॥ २० ॥
 कडवो तूंबो वेंहरायो साघ ने, नागश्री ब्राह्मणी एक वार रे।
 तिणसूं संसार में छली घणी, सातूं नरकां में खाषी मार रे ॥ २१ ॥
 तिण तो न्हांखण रा आलस भणी, तूंबो वहरायो साघ ने देख रे।
 तिणराइ फल लागा पाड्या, पांमी दुख माहे दुख वसेष रे ॥ २२ ॥

तो साधां री केइ निंदा करें, वले राखें अभितर घेष रे ।
अछतो पिण आल देवें निसंक सूं, ते तो बूडा वले वसेष रे ॥ २३ ॥
केई करला बोलें बूरी तरे, केई वाछें साधां री घात रे ।
केयक परीसा देवें वचन ्रा, केई तपता रहें दिन रात रे ॥ २४ ॥
सर्व पाषंडीयां सूं मिल गया, वले लोकां नें देवें लगाय रे ।
त्यांरे केडें गमता बोलें घणा, साधां सूं वेंरी करवा ताय रे ॥ २५ ॥
एहवा नागश्री सूंड अति बूरा, त्यांरो कहतां न आवें अंत रे ।
तेतो नरक गांमी छें नवकडा, त्यांनं ओलखल्यो मतवंत रे ॥ २६ ॥
नागश्री ब्राह्मणी दुख भोगवे, नीठ नीठ पाम्यो तिण अंत रे ।
सदा वेंरी ज्यू वरतें साध सूं, त्यांरो हुसी कुण विरतंत रे ॥ २७ ॥
हिवें कहि कहि नें कतरो कहू, कोइ बुधवंत करजो विचार रे ।
जे जे साधां रें सिर आल दें, ते तो बूडा कालीघार रे ॥ २८ ॥
जो साची नें साची कहें, तेतो निंदा म जाणों कोय रे ।
साची ने साची कहणी निसंक सूं, ते पिण अवसर जोय रे ॥ २९ ॥
अंतो जीव अजीव जाणें नहीं, आश्रव संवर की खबर न कांय रे ।
आश्रव सेवें संवर धर्म जाणनं, अें तो चोडें भूला जाय रे ॥ ३० ॥
उपभोग परिभोग श्रावक तणा, तेतो इविरत आश्रव मांहि रे ।
सेव्यां सेवायां भलो जाणीयां, यामें धर्म जाणे छें ताहि रे ॥ ३१ ॥
देवगुर धर्म ओलखीयां विना, रह्या ठाला बादल ज्यूं गूंज रे ।
वले धोरी होय बेंठा धर्म ना, पिण पूरा छें मूंड अबूज रे ॥ ३२ ॥
केई चरचा में अटके घणा, पिण सूधा न बोलें मूंड रे ।
अण विचाख्यां उंघा बोलें घणा, पिण छोडें नहीं खोटी ह्द रे ॥ ३३ ॥
वले गुर रों आचार जाणें नहीं, सरवां री पिण खबर न काय रे ।
भेषधारी भागल तुटल भणी, तिखतो कर वादें पाय रे ॥ ३४ ॥
धी खांड लूंग मिश्री आदि दे, मोल ले ले वेंहरावे जाण रे ।
वले नीपनों जाणें वरत बारमो, इसडा छें मूंड अयाण रे ॥ ३५ ॥
बारमो वरत भांगें आपरों, साधां नें वेंहरावे ले मोल रे ।
तका पिण समझ पडें नहीं, त्यांरा वरतां मांहि मोटी पोल रे ॥ ३६ ॥
थानक मोल ले गुर रें कारणें, वले भाडें लेवे गुर काज रे ।
बारमो वरत भांग भागल हुवा, नरक में जासी श्रावक बांज रे ॥ ३७ ॥
कपडो मांगे साध साधवी, जब हाजर नही घर मांय रे ।
मोल ले ले वेहरावें साध नें, गांव परगांव सुं मंगाय रे ॥ ३८ ॥

मोल ले ले कपडो वेहरायने, वले धर्म जाणें मन मांय रे ।
 इसड़ी सरधा रा श्रावक श्रावका, ते तो दुरगति पडसी जाय रे ॥ ३९ ॥
 जीमणवार आरा तणे घरे, मांड घोवण उंनों पांणी जाण रे ।
 ते साधां नें वेहरावा कारणे, आपरे घरे राखें आंण रे ॥ ४० ॥
 पछे तेड वहरावें साध ने, वले जांणे होसी माने धर्म रे ।
 एहवा कुगुरां 'रा भरमावीया, भूला छे अग्यांनी भर्म रे ॥ ४१ ॥
 केई घोवण जांणे इधको करे, साधां नें वहरावण कांम रे ।
 उंनो पांणी करे ठामडा भरे, ते पिण ले ले गुर रो नांम रे ॥ ४२ ॥
 घणा साध साधवी जांण ने, इधको नीपजावे आहार रे ।
 पछे भर भर वहरावें पातरा, ते तो परभव में होसी खुवार रे ॥ ४३ ॥
 असुध आहार पांणी वहरावीयां, बंधे पाप कर्म रा पूर रे ।
 साध पिण जांणे वेहरे असुभत्तो, ते तो साधपणा थी दूर रे ॥ ४४ ॥
 केइ आहार वहरावें असुभत्तो, केइ कपडो वहरावें असुध रे ।
 देवें थानकादिक असूभत्ता, भिष्ट हुइ सगलां री बुध रे ॥ ४५ ॥
 सामायक संवर पोसा मभे, करे सावद्य जोग रा त्याग रे ।
 तिणमें भागलां नें वंदणा करे, सामाइ पोसो पिण गया भाग रे ॥ ४६ ॥
 एक समाइ भागे तेहनें, डंड देवे समाइ इग्यार रे ।
 तो नितका . सामाइ भागें तके, ते तो गया जमारो हार रे ॥ ४७ ॥
 सूंस न ले त्याने पापी कह्यां, लेनें भांगे ते महा पापी होय रे ।
 वलें जाने हूं श्रावक मोटको, त्याने नरक तणी गति जोय रे ॥ ४८ ॥
 माने भागल तूटल एकल भणी, वीणती कर राखे चोमास रे ।
 ते पिण साधां सुं घेषरा घालीया, वखाण मुणे तिण पास रे ॥ ४९ ॥
 जो उ साधां रा आंगुण बोले घणा, तिणने हरष सूं देवे दांन रे ।
 वले करे प्रसंसा तेहनी, धणो देवे आदर सनमान रे ॥ ५० ॥
 उणने मन में तो साध जांणे नही, तोही वघारे उणरो आव रे ।
 ते पिण साधां सुं घेष चलायवा, त्यांरीं निरुचेइ जांणो अभाग रे ॥ ५१ ॥
 आप आदख्या कुगुर तेहनां, गुण बोलावण रें कांम रे ।
 उपिण लोभ रो घालीयो थको, मूठा मूठा करे गुण ग्राम रे ॥ ५२ ॥
 एहवा चाला चिरत करे तेहने, जो पाप उदे हुवे इण भव आंण रे ।
 दुख असाता अठेइज हुवें घणी, परभव मे तो संका मत आंण रे ॥ ५३ ॥
 भागल रा वलांण वांणी सुण्यां, केई पडवजे वेगो मिथ्यात रे ।
 वले तहत वचन करे तेहनों, तिणनें हूंकारें मूंगी बात रे ॥ ५४ ॥

ज्यारें कुगुरां सू राग अति घणों, वले सावां सू अंतर घेष रे।
 दोनूं कांनी देवालो तेहनें, ते तो बूढा में बूढा वसेष रे ॥ ५५ ॥
 करलो डंक लागों कुगुरां तणों, तिणसूं करे त्यांरी पखपात रे।
 त्यांसूं लीवी टेक छूटे नहीं, त्यांरा घट में छें मोटो मिथ्यात रे ॥ ५६ ॥
 संवत अठारें नें तेतीसे समें, असाढ विद नवमी रविवार रे।
 श्रावक नरकगांमी नवकडी, कीषी रीयां गांव मभार रे ॥ ५७ ॥

ढलल : २१

दुहा

भारीकरमा जीव संसार में, ते भूला अग्यांनी भर्म ।
त्यांनीं गुर पिण मूढ मूरख भिल्या, ते किण विघ पांमे जिण धर्म ॥ १ ॥
सुध सावां री निंदा करे, वले देवे अणहंतो आल ।
त्यांराबोल्यां री समभक्त्यांनीं नहीं, तिणरो कुण काढे नीकाल ॥ २ ॥
त्याने ठीक नहीं धर्म अधर्म री, गुर कुगुर री खबर न काय ।
वले साधू तणा आचार री, समभक्त नही मन मांय ॥ ३ ॥
डकण नें चढवा जरख मिले, जब डकण हरखत थाय ।
ज्यूं भारीकरमाने कुगुर मिले, जाणें पाछ रही नही काय ॥ ४ ॥
त्यांने कुगुर कुब्द सीखाय ने, कलेस करावे दिनरात ।
ते कुगुर सहित जावे कुगत में, तिहां मार अनंती खात ॥ ५ ॥

ढलल

[समरू मन हरषे तेह सती]

अनादरो जीव गोता खावे, समकत पथ हाये नही आवे ।
मिथ्यात मत माहे कलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १ ॥
उसम उदें सूं संवलों नही सूमे, वले भाव सहीत कुगुरां नें पूजे ।
ते मुगत मारग सूं परा टलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २ ॥
जे कुगुर तणे पडीया पाने, ते सुगुर तणा वेण नही मानें ।
मिथ्यात मत में काढा मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३ ॥
भारी दोष लगावता नही साके, वले पांचमां आरा रे सिर न्हांखे ।
ज्यासूं वरत नहीं जावे पलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ४ ॥
सूतर रो न्याय तो नही जाणे, कुगुरां री पख काठी ताणे ।
उंघा उंघा बोले क्रोध सूं वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ५ ॥
भांत भांत साध त्यांनीं समभावे, पापी जीव रे मन नही भावे ।
त्यांरे-माठी गतिरा टांका भलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ६ ॥
ज्यारे उसम कर्म तणा जोरा, ते केवली थकां रहि गया कोरा ।
त्यांरा पिण बाल्या नही वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ७ ॥

मेंला जीव मारग नहीं आवें, त्यांनं उपदेस दीयों अहलें जावें ।
 ते मोहकर्म सूं माठा खलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ८ ॥
 भारीकरमा जीव मूंड मिथ्याती, साधू नें दीठां बल उठें छाती ।
 बले ओगुण बोलणनं उल्लीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ९ ॥
 साध काजे बांधे ताटा ताटी, त्यां विकलां नें गति होसी माठी ।
 बले भीत चूणे भेलाकर ढलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १० ॥
 साध काजे परदा आण बांधे, जिण धर्म नहीं जाण्यो बांधे ।
 बले छावण लीपण नें हल फलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ११ ॥
 श्रावक नें जीमावे धर्म जाण, छ काय रो कर कर धमसाण ।
 ते जिन मारग सूं जाबक टलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १२ ॥
 कुगुरां रो तो दोष जाबक ढांके, साधां ने आल देता नहीं सांके ।
 त्यांरा लोकीक में पिण गुण गलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १३ ॥
 त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लागा, कजिया राड करवानें आगा ।
 वचन बोले अलिया अलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १४ ॥
 न्याय तणी चरचा करतां, त्यां विकलां नें वार नहीं लडतां ।
 उधा बोलें क्रोध मांहे बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १५ ॥
 जिण आगम न्याय देवें ठेली, अनमतीयां नें उठाय करें बेली ।
 पाषंडीयां में जाय मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १६ ॥
 गुणवंत साधां रा कोई गुण गावें, ते दुष्ट जीवां रें मन नहीं भावें ।
 ते रात दिवस रहे परजलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १७ ॥
 जीवादिक नवतत रो नही निरणों, वले क्रोध तणों लीधो सरणों ।
 त्यांनं मोहकर्म अजर गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १८ ॥
 न मिट्यो च्याखं गति में आवण जाणों, चोरासी में लागो बेजा ताणों ।
 जिम आंमा साहमां फिर रह्या नलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १९ ॥
 देवगुर धर्म तणे काजें, जीवां नें हणता नही लाजें ।
 त्यांनं कुमत करे कुगुरां छलीयां, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २० ॥
 आचार री बात लागें काठी, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक नाठी ।
 बांधे पुरुष घरटी में मोती दलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २१ ॥
 गुण विण साध रो सांग घरें, त्यां विकलां रा पगां में जाय पडें ।
 ते बीज विहुणा हांके हलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २२ ॥
 आधाकर्मी थानक सेवण लागा, ते चारित विहुणा छें नागा ।
 त्यांनं वादें पूजें मांनं मन रलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २३ ॥

सामायक पोसा माहे भागलां नें वादे, ते करमां रा पूज भारी वांचें ।
 त्यांरा समकत सहीत वरत गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २४ ॥
 भागलां ने वदि जोडी हाथ, ते पाप करम बांचे सात ।
 उलटा कर्म रिणें मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २५ ॥
 हरीया जव देखीने मिरग डरे, वावर माडी मे जाय पडें ।
 मिरग ज्यूं सेचे मारग जाए हीलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २६ ॥
 आप गुर रा किरतब देखे, तो उचे सुर बोले किण लेखे ।
 न्याय विना बोले सिकल विकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २७ ॥
 ज्यारे कुगुरां रो डंक लागो भारी, त्यांने आचार री वात लागे खारी ।
 ते अणाचार्या सूं हिलिया मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २८ ॥
 पाच महावरतां री चरचा छेरे, तो तुरत मूंहडा नो रग फेरे ।
 अतरंग मे आघण ज्यूं उकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २९ ॥
 जो वरता री चरचा करे त्या आगे, तो क्रोध करे लडवा लागे ।
 जाणे भाड मा सूं चिणा उछलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३० ॥
 जो साध रो आचार कहे तिण आगे, तो हंम रूम में लाय लागे ।
 मूंह विगाड बोले क्रोध वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३१ ॥
 ज्यांरे कुगुरा रो डंक लागो जाणो, त्यारी बोली में नही ठोर ठिकाणो ।
 कहि कहिने तुरत जाएं बदलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३२ ॥
 जोड कीची छे कोठरीये गांम, सवत अठरे तयाले वरस तांम ।
 काती सुद आठम नें सोमवार, उत्तम गुर सेवों नर नार ॥ ३३ ॥



ढलल : ३२

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, विगखो साधरो भेष ।
 संका हुवे तो पूछ निरणों करो, वले अरुवरु लो देख ॥ १ ॥
 साध मारग छें सांकडो, करडो छें त्यांरो आचार ।
 ते जिण तिण सेती किम पलें, जावजीव रहणो एकधार ॥ २ ॥
 केई सांग पेंहरे साध हुआ, त्यांरा घट में नहीं ववेक ।
 त्यां साधपणो नहीं ओलख्यों, तिणसूं सेवें छें दोष अनेक ॥ ३ ॥
 दोष सेव्यां भागें साधपणो, त्यांनैं ते पिण खबर न काय ।
 त्यांनैं श्रावक पिण तेसाहीज मिल्या, त्यांनैं समझ नहीं मन मांय ॥ ४ ॥
 जो आचार बतावें त्यांनैं साध रो, तो तुरत जांगें त्यांनैं धेख ।
 जाणें निदा करें छे मारा गुर तणी, घटमें नही सुध ववेक ॥ ५ ॥
 आचार बतायां साध रो, तिणनैं निदा सरधे ते मूढ ।
 ते ववेक विकल सुध बुध बिना, त्यां भाली मिथ्यात रीरुढ ॥ ६ ॥
 साचीनैं भूठी कहें, ते तो निदा होय ।
 साची बात कहें समझायवा, ते निदा म जाणो कोय ॥ ७ ॥
 जे भारीकमां जीवडा, त्यांनैं न गमें आचार रीबात ।
 ते भूला छें भर्म अनादरा, त्यांरा घटमाहे घोर मिथ्यात ॥ ८ ॥
 पिण भव जीवां नैं समझायवा, थोडी सी कहूं अल्प मात ।
 ते सुण सुणने नर नारीयां, छोडें कुगुरां तणीं पखपात ॥ ९ ॥

ढलल

[भविष्यत् जिण आम्हा०]

कोइ साधपणा रो नाम धरावें, पूरों पलें नहीं आचारो ।
 त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सेंमल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे ॥ १० ॥
 जोवों हिरद विचारी, छोड दो कुगुरां री लारी रे । १० ।
 कुगुर छें हीण आचारी* ॥ १ ॥
 आंधा नें आंधो आय मिलीयो जब, कुण बतावें वाटो ।
 ज्यूं कुगुरा नें विकल मिलीया श्रावक, यां दोयां रे अकल आडो पाटो रे ॥ २ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरा श्रावक जीव हणे त्यांरे काजें,
 ते तो दोनूइ हरषें छे हिंसा कीयां थी,
 कोइ साधां रे काजे नीलो उखेल ने,
 अनता जीवा रो घमसांण करतां,
 मोटी तिथ आठम नें चउदस,
 आप डूवें भिष्ट करें गुरां ने,
 साधां रे काजे जायगां खोदने,
 नीलणफूलण नीला अंकूडा मारें,
 वले कसी सूं खोदे समी जागा करतां,
 वले तिण माहे घर्म जाणें छें भोला,
 वले साधां रे काजे कॅलू फेरावे,
 वले नीलणफूलण रा जीवां नें मारे,
 घणो खात कचरादिक पडीयो जागा में,
 पंछे ओडीये ओडीये वारें नखावें,
 साध काजें दडे लीपे छपरा छावे,
 वले विवध पणे घात करे जीवा री,
 एहवा किरतव करें छे साधा रे कारण,
 वले आप मुतलब जांण राजी हुवें,
 एहवा किरतब करावे आमनां करने,
 वले पेहरण सांग साध रो छें त्यांरे,
 जीवां री घात करने जागा करे चोखी,
 ते तो प्रतख्य असाध उघाडा दीसे,
 केई साधां रे कारण नीव दराए,
 तिण जागामे साध रहे ते.
 केई साध रे काजे मोल छे जागा,
 तिण माहे रहे ते अणाचारी,
 साध काजें दडे लीपे गार घालेने,
 साध पिण तिण ठामें रहे ते,
 एक थानक तणा छें दोष अनेक,
 असुध थानक भोगवे भेषधारी,
 नाटकीये सांग साधां री आण्यो,
 भेषधाख्यां तो साधरो सांग लजायो,

त्यां श्रावकां नें तो वरजें नांही ।
 त्यांरें दया नही घट मांही रे ॥ ३ ॥
 वरसता मेह मे मूरड न्हाखे ।
 पापी जीव मूल न सांके रे ॥ ४ ॥
 तिण दिन पिण न करे टालो ।
 आत्मा ने लगावे कालो रे ॥ ५ ॥
 करे विषम जागाने सुधी ।
 त्यांरी अकल घणी छे उंवी रे ॥ ६ ॥
 कीडी मांकादिक देवे दाटी ।
 त्यांरे आइ अभितर पाटी रे ॥ ७ ॥
 जमीयां उखेले जालो ।
 तस जीवां रो पिण करे खेगालो रे ॥ ८ ॥
 बुहार भेलो करे साध रे भावे ।
 तिहां पिण जीव माख्या जावे रे ॥ ९ ॥
 चद्रवा ने ताटादिक बाधे ।
 तिण घर्म न ओलख्यो आधे रे ॥ १० ॥
 त्यांने साध निषेधे जो नांही ।
 त्यांने गिणजो मती साधा माही रे ॥ ११ ॥
 आपरे सुखसाता रे काजें ।
 पिण निरलजा मूल न लाजें रे ॥ १२ ॥
 तठे रहवा ने होय जाजें त्यांरी ।
 त्यांने वीर कह्या भेषधारी रे ॥ १३ ॥
 नवी करावे जागा ।
 विरत विहूणा नागा रे ॥ १४ ॥
 केई साधा रे काजें ले भाडें ।
 निरुचे सुध साध तणी पात बारे रे ॥ १५ ॥
 ते पिण कर्म बाधेने वूडा ।
 चिहुं गति में दीससी भूंडा रे ॥ १६ ॥
 ते तो पूरा केम कहवाय ।
 ते भोला ने खबर न काय रे ॥ १७ ॥
 ते पिण सांग तणी वरग वूहो ।
 स्वांन ज्यूं पकड रहा दूओ रे ॥ १८ ॥

अजूणाकाल में पांचमें आरें, घणी हीण पडी छें बुध ।
 एहवा अणाचाख्यां नें साध सरखें, त्यामें काय न दीसैं सुध रे ॥ १६ ॥
 एहवा भाव सुणेनें भारीकर्मा, पांमें नहीं चमतकारों ।
 कर्म जोगें त्यानें कुगुर मिलीया, त्यारो किण विघ मिटें अंधारो रे ॥ २० ॥
 त्यांरा थानक में कोइ दोष बतावें, तो बोलें घृणा आलपंपालो ।
 पाछो जाब न आवे जब क्रोध करेनें, देवें अणहूंतो आलो रे ॥ २१ ॥
 सुध साध तो सुध थानक में रहें छें, त्यामें दोष बतावें अन्हाखी ।
 भूठ बोले छें आप सरीषा करण नें, त्यांरा भूठा बोला छें साखी रे ॥ २२ ॥
 सुध साधां रे आल देता नही संकें, आपरा दोष ढाकें निसंक ।
 दोनूं प्रकारे बूड गया त्यानें, आपरों नहीं सूमें बंकरे ॥ २३ ॥
 परभाते आहार बहख्यों तिण घर रों, आथण रों वेंहरें दाल नें रोटी ।
 कारण बिना दोनूं टक वेहर ल्यावें, आ पिण चलगत खोटी रे ॥ २४ ॥
 परभाते आहार ल्यावें तिण घर रों, बेपारां गुगरीयादिक आणें ।
 आथण रों ल्यावें ऊनी दाल नें रोट्यां, संका पिण किणरी न आंणे रे ॥ २५ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण छें ववेक रा विकल, त्यारें मूल पडें नहीं संक रे ।
 जेसाकूं तेंसों आय मिलीयां, हिंवें कुण काढें त्यारो बंक रे ॥ २६ ॥
 कारण बिना उनों आहार ल्यावे आथण रों, नही गरढो गिलाण विसेष ।
 हिलीयों उनी दाल नें रोट्यां रें रसकें, त्यां छोडी लज्या ले भेष रे ॥ २७ ॥
 कोइ राखनीयादिक तेंवार आथण रों, जबतो पेंहलं करें भालामालो ।
 पछें रसग्निधी फिरें आथण रा, ताजा घर संभाल संभाली रे ॥ २८ ॥
 छतो आहार मिलें परभात रो त्यानें, तो पिण गिधी थका वेंहरें नाहीं ।
 जाणें आथण रो ल्यासूं तेंवार रो जीमण, तांणा बेजा लगा तिण मांही रे ॥ २९ ॥
 इम आरतध्यान करतो दिन काढें, सांभू रा ल्यावें सेवां नें कसार ।
 वले घृत ने खांड रां करें चबोला, इण विघ पूजें तेंवार रे ॥ ३० ॥
 इण विघ तेवार पूजे रसग्निधी, ते पिण नाम धरावे साध ।
 ताजें आहार तूटा पडे पापी, त्यांरे किण विघ होसी समाध रे ॥ ३१ ॥
 ताजें आहार तेंवार रो सरस जाणें तो, चांप चांप खाएं भरपूर ।
 एहवी विकलाइ करें छे तिणारा, परी साधपणा में धूर रे ॥ ३२ ॥
 एहवा रसगिरधी जिभ्या रा लंपटी, त्यां पहर विगाड्यो भेख ।
 त्यानें साध सरखें वादें पूजें अग्यानी, ते पिण बूडें छें बिना ववेक रे ॥ ३३ ॥
 कोइ कारण पडोयां जाजें आथण रा, जब दोष नही छें लिंगार ।
 बिना कारण जाजें तेंवार जाणेंनें, त्यानें छें तीन धिकार रे ॥ ३४ ॥

कोइ ग्रहस्थ घर सूं बोलावण आयों, म्हारें घरे वेहरण पधारो ।
तेडीया तिण घर जाअे तिणानें, किम कहीजे अणगारो रे ॥ ३५ ॥
तेरण आयो ते छे काय मरदतो, तिणरा हाथ सूं पिण न करे टालो ।
तेरीया गयामें दोष न जाणें, त्यारें आयो बभितर जालो रे ॥ ३६ ॥
कदा कर्मजोगे साव तेडीया जावें, तो प्रायच्छित ले हुवें सुघो ।
पिण सदाइ तेडीया जावें तिणारी, मिष्ट हुड छें वुघो रे ॥ ३७ ॥
जों सहजेइ ग्रहस्थ आयो छे थानक मे, ते कहे म्हारा दिस पधारो ।
तिण भावमेल न आंण्यों सावां रो, जब गयां नही दोष लिगारो रे ॥ ३८ ॥
तेडीया जावेने आंण दीघो लेवें, ते नीयमाइ निरुचे मिष्टी ।
एहवा भागल मिष्ट हुआ छे त्यांने, साव सरखें नही समदिष्टी रे ॥ ३९ ॥
केइ भेषधारी ग्रहस्थ नें देवे, पूठा पांना ने परत वगेष ।
लोट पातरा नें ओघो पूंजणी देवें, ते तो मिष्ट हुआ ले भेष रे ॥ ४० ॥
केइ भोला ग्रहस्थ तो इम जाणें, मोसूं दीसे छें सावां री मया ।
पूंजणी काढ दीघी छे मोने, तिणसूं पालां छा म्हें दया रे ॥ ४१ ॥
ग्रहस्थ ने साव पूंजणी दीघां, भोला तो जाणें दोष न लागो ।
पिण नसीत सूतर मे श्रीजिण भाप्यों, तिणरो चोमासी चारित भागो रे ॥ ४२ ॥
ग्रहस्थ नें साव पूंजणी देवें, ते निमाइ निरुचे मिष्टी ।
पिण भोलां रे भावें तो तेहीज साव, तिणने साव न सरधे समदिष्टी रे ॥ ४३ ॥
केइ कहे पूंजणी सूं तो दया पले छें, तिणसूं पूंजणी देवें छे साव ।
तिण लेखें तो मूहपती पिण देणी, इणसूं पिण दया पलसी वाघ रे ॥ ४४ ॥
दले धोवणादिक पिण देणो ग्रहस्थ ने, तिणसूं काचा पांणी तणो हुवे टालो ।
आ पिण दया पले यारे लेखे, पूंजणी रो न्याय सभालो रे ॥ ४५ ॥
पूंजणी देणी तो रोटीयां पिण देणी, तिणसूं टलें चूला रो आरंभो ।
पूजणी देवेने रोटीयां न देवे, यांरी सरचा रो वडो अचंभो रे ॥ ४६ ॥
कोइ काचा पांणी सूं कपडादिक घोवें, वांटादिकमें घाले काचो पांणी ।
तिणनें धोवणादिक देणों दया पलावण, पूंजणी देवा रो लेखो आंणी रे ॥ ४७ ॥
पूंजणी सूं तो गिणवा जीव पूजे, ते पिण थोडा सा अल्प मात ।
उंनो पांणी धोवण असणादिक दीघां, टलें अनंत जीवां री घात रे ॥ ४८ ॥
ग्रहस्थ ने एक पूंजणी देणी, तिण लेखें तो देणी वस्त अनेक ।
थोडीसी वस्त साव देवें ग्रहस्थ नें, आखो वरत रहे नहीं एक रे ॥ ४९ ॥
ग्रहस्थ नें साव हाथ पकडनें, राग करने हेठो वेंसाणें ।
एहवा भागल भेषधारी छे त्यांने, बहा हुवे ते साव न जाणें रे ॥ ५० ॥

संवत् अठारे एकावने वरसे, सावण सुद तीजने वृधवार ।
 भेषघाख्यां नें ओलखावण काजे, जोड कीधी सरियारी मभार रे ॥ ५१ ॥



ढलल : २३

दुहल

सुध सलधलं ने दलन असुध दे, जलंनलं असुध ले सलध ।
 ते दलनूँ बूडे छे बलपडल, शुरी जलण वचन वलरलध ॥ १ ॥
 असुध देवल नलं लेवल रे, कडवल फल ललगे ललण ।
 ते जथलतथ परगट कलं, ते सुणजल चुतर सुजलण ॥ २ ॥

ढलल

[रलग उललली]

तीनलं बललं करे जीवरे जी, अलप ललउखल बंधलड ।
 हलसल करे प्रलंणी जीव री, वले बले मूसलवलड जी ।
 सलधलं ने असुध वलंहरलड जी, हलसलकर चुलखी जलगल बणलड जी ।
 सलधलं ने उतलरलं मलंय जी, तलरलं उसम कर्म बंधे ललड जी ।
 तीजे ठलंणलं कलहलं जलणरलड जी, वले सुतर भगुती रे मलंय जी ।
 शुरी वीर कहे सुण गुडलड ॥ १ ॥

दडलं लीपे सलधलं रे करलंणलं, वले छपलरल डलवलं ललड ।
 कलंलूँ पलण फेरतलं थकलं, जमीलल जलल उखले तलड जी ।
 नललण फूलण मलरी जलड जी, अनतल जीव छलं तलण मलंय जी ।
 वले ओर हणलं छकलड जी, तलरलरी दलड न ललणलं कलड जी ।
 तलरलं पलण अलप ललउ बंधलड जी, शुरी वीर कहे सुण गुडलड ॥ २ ॥

वले नीव दरलए थेट सूं, वले टलंकी बजलवलं तलड ।
 भेललकर भलठल चुणलं, तलण बलहत मलरी छकलड जी ।
 अनंतल जीव हणीडल तलड जी, ते पूरल केम कलहलड जी ।
 सलधलं ने रहलवल री मन ललडलड जी, तलण मलुटे कलडलु अनलडलड जी ।
 तलणरलं पलण अलप ललउ बंधलड जी, शुरी वीर कहे सुण गुडलड ॥ ३ ॥

जलण गरथ दीडु थलंनक करलडलवल, तलण पलण मरलड छकलड ।
 कलणही मलल भलडे भुग ललवलं लीडु, कलणही थलप रलखुवलं छे तलड जी ।
 इतुडलदलक दुडुडलल करलड जी, खणे खुडे सलमलं कलडु जलड जी ।
 वलध वलध सूं मलरे छकलड जी, सलधलं नलं उतलरलं मलंय जी ।
 वले मन मे हरखत थलड जी, तलरलं पलण अलप ललउ बंधलड जी ॥ ॡ ॥

आहार सेज्या बसतर नें पातरो, इत्यादिक दरब अनेक ।
 असुध वेंहरावें साध नें, ते डूबें छें विना ववेक जी ।
 त्यां भाली कुगुरां री टेक जी, त्यांरि कर्म तणी काली रेख जी ।
 त्यांनैं सीख न लागे एकजी, गुर नें पिण कीया भिट वशेष जी ।
 संका ह्रुवें तो सूतर लो देख जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ५ ॥

पाप उदें हुवे तेहनें जब, पडें निगोद में जाय ।
 उत्कष्टो अनंता भव करें, तिहां मार अनंती खाय जी ।
 रहें घणी संकडाई मांय जी, जक नहीं निगोद में ताय जी ।
 बले मरण वेगो वेगो थाय जी, उपजें नें विलें होय जायजी ।
 तिणरो लेखो सुणो चित्तल्याय जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ६ ॥

सतरें भव जाभेरा करें, एक सास उसास मभार ।
 एकण मोहरत नें मभे, भव करें साढा पेंसठ हजार जी ।
 बले छतीस इधिक विचार जी, एहवी जनम मरण री धार जी ।
 मरण पांमें अनंती वार जी, अनंता काल चक्र मभार जी ।
 तिणरो वेगो न पांमें पार जी, ए फल पांमें निगोद मभार जी ।
 असुध दांन तणो दातार जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ७ ॥

कदा पेंहला पडे वंघ नरकनो, तो पडे नरक में जाय ।
 तिहां क्षेत्र वेदन छे अति घणी, परमाधामी मारें बतलाय जी ।
 तिहां मार अनंती खाय जी, उठें कुण छुडावें आय जी ।
 भूष त्रिषा अनंती ताय जी, दुष में दुख उपजें आय जी ।
 असुध दीवां रा ए फल जाणजी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ८ ॥

दुख भोगवतां नरक में जी, सेष बाकी रहें पाप ।
 ते उपजें तिरयंच में, तठें पिण घणो सोग संताप जी ।
 ते छूटें नहीं कीवां विलाप जी, बले न्हाखें निगोद में पाप जी ।
 आडा नावें गुर मा बाप जी, दुख भोगवें आपो आप जी ।
 असुध दांन दीयो धर्म थाप जी, ते कुनुर तणो प्रताप जी ॥ ९ ॥

आधकर्मिं साध जो भोगवें, ते बांधें चीकणा कर्म ।
 ते भिट थया आचार थी, तिण छोड दीयो जिण धर्म जी ।
 नीकल गयो त्यांरो भर्म जी, त्यां छोडी लाज नें सर्म जी ।
 त्यां विगोय दीयो निज ब्रह्म जी, दुख पांमें उत्कष्टा परम जी ॥ १० ॥

असुध जाणनें भोगवें, त्यां भांगी जिणवर पाल ।
 ते भमण करसी संसार में, उत्कष्टो अनंतो काल जी ।
 नरक में जासी टांको भालजी, तिणनें मार देसी नरकपाल जी ।
 कीवा कर्म संभाल संभाल जी, रोसी किरतब सांहमो नाल जी ।
 भगोती पहलें सतक नीकाल जी, लीजों नवमें उदेशे संभाल जी ॥ ११ ॥

साधां रे काजे हणे छकाय ने, ते वार अनंती हुणाय ।
 जो साध जाणें भोगवे, ते पिण अनंत मरण करे तायजी ।
 अे तो दोनूई दुखीया थायजी, अनंता भव माख्या जाय जी ।
 एकवार मारी थी छकाय जी, त्या तो दुख भोगवे लीया ताय जी ।
 पिण यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १२ ॥

छकाय रे उसभ उदे हूवा, त्यां तो पांमी एक वार घात ।
 पिण साध पड्यो नरक निगोद में, सेवगां ने पिण लीधा साथ जी ।
 त्या मानी कुगुरां री बात जी, कीधी तस थावर री घात जी ।
 अनतो काल दुख मे जात जी, वले मरण वेगो वेगो थात जी ॥ १३ ॥

ज्यां गुर ने डबोया सेवगा, त्यां सेवगा ने डबोया साध ।
 ते दोनू पख्या नरक निगोद मे, ते श्री जिण धर्म विराध जी ।
 बूडा संसार समुद्र अगाध जी, ते किण विध पामे समाध जी ।
 जिण धर्म री रेस न लाधजी, भव भव में पामे असमाध जी ।
 ओ पिण कुगुर तणो परसाद जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १४ ॥

असुध दान दीयो जिण साध ने, तिण साध ने लूट्या ताय ।
 तिणरे पाप उदे हुवे इण भवे, तो दलदर धसे घर मांय जी ।
 रिध सपत जायें विललाय जी, वले दुख माहे दिन जाय जी ।
 कदा पुन भारी हुवे तायजी, तो इण भवमें दुख न थाय जी ।
 परभव मे संका नहीं काय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १५ ॥

इम साभल ने नर नारीयां, कोइ करजो मन मे विचार ।
 सुध साधा ने जाणने, असुध मत देजो किणवार जी ।
 असुध मे नहीं धर्म लिगार जी, सुध देने लाहो लो लार जी ।
 उत्तर जावो भवपार जी, ओ मिनख पणारो सार जी ॥ १६ ॥



ढलल : २४

दुहल

दुवल सत दत सील सुघ, नलतुरलही अणगलर ।
 ढलंघ ढहलवरत आदरी, ढललें नलर अतलचलर ॥ १ ॥
 वलंसूं नवल करढ नहलं नीढजें, अर जूना तढ करल खढलव ।
 जब चेतन नलरढल हुवें, ढोक्ष वलरलजें जलव ॥ २ ॥
 हलसल ढूठ अदत अछें, कुसील ढरलगुह घलर ।
 इणसूं कर्ढ उढलरजें, जीव ढढत संसलर ॥ ३ ॥
 हलसल तुवलतुवलं सढ तलगें, तीन करण तीन जोग ।
 ए जलग ढलखलत ढलहलवरत, ढलले सुघ उपडोग ॥ ॡ ॥
 अणुकुर्ढें वरत आदरवल ढणी, सलष ढूछें जगत लगलव ।
 सुणल सतगुर इसडी कहें, संढललुओ वलसुतलवलव ॥ ॡ ॥

ढलल

[जगत गुरु तलसतलनन्दन वीर]

कोइ कहें ढहललें ढलहलवरत ढललसूं जी, हणसूं नही छुकाव ।
 ढलण ढलहरी जलढुवल वस नहलं, हूं ढोलसूं ढूसलवलव ।
 चुतर नर सढढुओं गुवल वलचलर ॥ १ ॥
 ओ ढहलवरत ढलखुओ ढगवलंन रो, ते नही हुवें इण रलत ।
 तूं हलसल ढें घर्ढ ढरुढ दें, थलरी कुण ढलंनं ढरतीत ॥ च० २ ॥
 कहें देवगुर घर्ढ कलरणें, आरंढ कीवल रुडो थलव ।
 देवललदलक करलवीवल जी, जीव ढली गतल जलव ॥ ३ ॥
 घर्ढ हेतें जीव हलसल कीवल ढें, थोडोसो ढलढ ढंघलव ।
 तूं एहवी करें ढरुढणल, हलसल ढलहे संसल होव जलव ॥ ॡ ॥
 इढ हलसल ढें घर्ढ सथलढवल जी, करलवें जीवल री थलत ।
 ढलहलवरत तो जलहलंइ रहलल, जलव सढकत होव ढलथुवलत ॥ ॡ ॥
 तो हूं हलसल ढूठ ढेहूं तुवलग सूं, ढलण चोर लेसूं ढर ढलल ।
 ढलहरी घन उपर ढढतल वणी, ढोसूं नही ढलटे ओ सलल ॥ ६ ॥
 जो तूं जीव हणसी नही जी, वले नहलं ढोलसी कुड ।
 ढलण ढेललरें दलह दीघलं थकलं, ढेहलल ढलहलवरत ढें ढडसी घर ॥ ॡ ॥

*यह आँकड़ी ढुरत्येक गलथल के अन्त ढें है ।

धन चोखां घणी दुख पामसी जी, हिस्सा लागी इम जोय ।
 जो तूं कहसी हिंसा लागी नही तो, दूजोइ वरत न होय ॥ ८ ॥
 तो तीजोइ माहावरत आदरुं जी, चोरुं नही परघन ।
 पिण सील मोसूं पले नही, म्हारो विषे सूं लग रह्यो मन ॥ ९ ॥
 चोथो आश्रव सेवतां जी, तीन वरत जाय भाग ।
 सब गुण बाले पलक में जी, जिम पीनी रुइ आग ॥ १० ॥
 जीव पंचिद्री नी हिंसा हुवें जी, हणवो नही तै भूठ ।
 बले आग्या नही वीतराग नी, जव तीन वरत जाये उठ ॥ ११ ॥
 तो हू चोथोइ माहावरत आदरुं जी, पाचमो कीचो न जाय ।
 नवविध परिग्रह राख सूं, मोसूं ममता नही मूकाय ॥ १२ ॥
 खेतु वथू आदि परिग्रहो जी, ओ च्यारुइ आश्रव नो छे मूल ।
 एक परिग्रहो राखीयां, च्यारु माहावरत मिलसी धूल ॥ १३ ॥
 सस्त्र छे छहूं काय नो जी, कूड कपट नो ठाम ।
 आग्या नही जिणराज नी, बले नही रहे सील परिणाम ॥ १४ ॥
 पांचूइ आश्रव त्यागसूं जी, एक करण तीन जोग ।
 आग्या देसू अणुमोद सूं, मोसूं सरागी बहू लोग ॥ १५ ॥
 एक करण तीन जोग थी जी, माहावरत नीपजें नही कोय ।
 त्रिविधे त्रिविधे सावद्य तागीयां जी, माहावरत इण विध होय ॥ १६ ॥
 एक घर त्यागयो आपरो, जिणमे कितरो एक घन घान ।
 हिवे हुकम चलासी लोकमें, इण लेखे जाणे राजान ॥ १७ ॥
 घरमे गिणत होती नही जी, पूरो न मिलतो नाज ।
 भेष लेइ भगवान रो, केइ करवा लागा राज ॥ १८ ॥
 दाय करण तीन जोग सूं जी, पांचूइ आसरव त्याग ।
 अणुमोदना खाली राख सूं, माहरे एतो इज छे बेराग ॥ १९ ॥
 अणुमोदना खाली रही जी, जब तूं वेहरे असुध आहार ।
 संमोग करें भूहस्थी थकी, तिणसूं पाचूं वरतां मे पड़े बगार ॥ २० ॥
 पाचूइ आश्रव ने विषे जी, हरप होवे मनमान ।
 तीनुंइ जोगां थकी, थारो न मिटयो खोटो ध्यान ॥ २१ ॥
 तीन करण तीन जोग सूं जी, सर्व सावद्य परिहार ।
 धर्म सुकल ध्यान ध्यावता, नीपजे पाचूइ माहावरत सार ॥ २२ ॥

बाल : २५

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
 ते समकत विरत विना फिरें, भूला भर्म वसेष ॥ १ ॥
 ते सारंभीनें सपरिग्रही, वले करें अकार्य अनेक ।
 ते पिण साध नाव घरावता, त्यां भाली मिथ्यात री टेक ॥ २ ॥
 त्यां जूवा जूवा गच्छ बांधीया, मांहोमां कर कजीया राड ।
 त्यांरी सरघा चलगत जू जूइ, वले जूओ जूओ छें आचार ॥ ३ ॥
 सुध साधां सूं चरचा करें, जब सगला एकें होय जाय ।
 कहें म्हे सगलाइ साध छां, एहवी बोलें अग्यांनी वाय ॥ ४ ॥
 सावद्य कामा करता नें करावता, संका आणें नही मन मांय ।
 हिचें कुण कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

बाल

[भविष्य जिन आज्ञा]

साधारें काजे थांनक करावें, छ काय रो कर घमसांण ।
 तिण थांनक माहे रहिवा लागा, त्यां मांगी छें श्रीजिण आंण रे ।
 मवीयण जोवों हिरदें विचारी, थें छोडो कुगुरां री लारी रे । भ० ।
 थें ज्यूं उतरो भवपारी* ॥ १ ॥
 सांप्रत एहवा थांनक सेवें, वले भूठ बोलें ठाम ठाम ।
 कहे थांनक म्हारे काज न कीघो, श्रावकां रें काजें कीयो तांम रे ॥ २ ॥
 त्यांरा श्रावकां नें कहे थे इम बोलो, थांनक नें कहों घर्मसालों ।
 ज्यूं थारी म्हारी आळी लागे लोका में, म्हानें तो दोषण मांसूं टालो रे ॥ ३ ॥
 त्यांनें श्रावक पिण तेहवाइज मिलीया, त्यांनें ज्यूं सीखावें ज्यूं बोलें ।
 कहें घर्मशाला म्हारें काजें कराइ, भूठ बोले वाजतें ढोले रे ॥ ४ ॥
 श्रावक त्यांसूं रीभ रह्या छे, जाणे वोलें पढाया ज्यूं सूया ।
 त्यांमें जाणपणा री जुगत न दीसें, तेतो निदक साधा रा हुआ रे ॥ ५ ॥
 व्यापाख्यां नें ठ्यां वेसासे, उजाड नें घतूरो खवायों ।
 तेल वांभीहा छांभीया करता, मूवा उजाड रे माह्यो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्यू भेषघाखां लोकां नें बेसासे,
 इण थानक ने कहो धर्मसाला,
 साघां रे काजें थानक कीघो चोडें,
 ते थानक प्रतख छे पापसाला,
 तिण थानक में साघां रें काजें,
 तिण हिस्या थकी साव ने श्रावक री,
 त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढमती छे,
 आवाकमीं थानक नें कहें धर्मसाला,
 एहवा भूठा बोलाने पूछा कीजे,
 थे रुपीया कठी थी आण कराइ,
 थे कहो म्हारे काजे कीधी धर्मसाला,
 थे कुण कुण दान ले साला कराइ,
 मिनष आंतरीयो घुरडकें जूतो,
 ते दान लेइ धर्मसाला करावों,
 वले धर्मसाला करावण काजे,
 ओ निरमायल माल लोकीक लेखें,
 कोइ अंतकाल समे घन उदकें,
 ते दान लेइ धर्मसाला करावों,
 वले गांम परगाव सूं मांगणी करने,
 थे भिख्या मांगो नीचों हाथ मांडो,
 थे मोटका मिनष वाजो छो लोका में,
 धर्मसाला कराइ अजोग दान ले,
 निरमायल दान मुरदा रो लेइने,
 तिण दान तणो लेवाल छे कुण कुण,
 उतो धर्म आंगी दान दे अंतकाले,
 थे पेंला रे बदलें भूठ बोलनें,
 दातार तो दान देवें इम जांणी,
 इण रुपीयां साटें चोखो थानक करासी,
 यूं जाणे घन उदकें आंतरीयो,
 थे कहो इसों दान साव क्यांनें ले,
 ओं तो दान साघ श्रावकां लीघो छें,
 इण दान तणो भेलू हूवो तिणरों,

भूठ बोलणों त्यांनें सीखायो ।
 ते धर्मसाला कहिता मरसी ताह्यो रे ॥ ७ ॥
 छु काय रो करें खेंगाल ।
 तिणरों नाम दीयो धर्मसाल रे ॥ ८ ॥
 मन गमती राखें वारी ।
 भव भव मे होसी खुवारी रे ॥ ९ ॥
 जांण जांण गुर रा दोष ढांकें ।
 भूठ बोलता मूल न सांके रे ॥ १० ॥
 थे धर्मसाला करावण काजे ।
 जब पाछो जाव देता लाजे रे ॥ ११ ॥
 तो अजोग दान लीयो किण काजे ।
 ते सुण सुणनें मत लाजो रे ॥ १२ ॥
 ते घन उदकें थानक काज ।
 एहवो दान लेता क्यूं नहीं लाजो रे ॥ १३ ॥
 लेवो अउतरो मालो ।
 ओं तो खांपणवालो ख्यालो रे ॥ १४ ॥
 रांक गरीब भिख्यारी तांई ।
 तिणमें करों पोसा समाई रे ॥ १५ ॥
 करावो छो धर्मसाला ।
 थारा कुल सहांमो क्यूं नही न्हाणो रे ॥ १६ ॥
 वड वडा करों किरियावर काजो ।
 थे छोड दीधी सरम ने लाजो रे ॥ १७ ॥
 थे धर्मसाला करावो छे ।
 तिणरो थे नांम वतावो रे ॥ १८ ॥
 तिणरो लेवाल किणने थापो ।
 काय विगोयो आपो रे ॥ १९ ॥
 साघारे जागा वांण तांइ ।
 तो साघ उतरसी तिण मांही रे ॥ २० ॥
 निकेवल सांघां रें कांम ।
 तो किसें श्रावक लीयो छें तांम रे ॥ २१ ॥
 तीजों न दीसैं कोय ।
 चोडें नाम वताय दों सोय रे ॥ २२ ॥

जो साधां रो नांम बताय दे चोडें,
जो श्रावकां ओं दांन लीयो कहे तों,
त्यांमें केयक तो पाप कर्म सूं डरता,
ते तो कहिदें थांनक साधां रें काजें कीघो,
केइ कहें थांनक म्हारें काजें कीघों छें,
त्यांमें इसडा इसडा केइ भूठा बोला छें,
त्यां भूठा बोलांनं पाछो इम कहिणों,
इण दांन थकी जात न्यात लोकांमें,
मिनष आंतरीयो नें घुरडकें जूतों,
ते दांन लेइ धर्मसाला करावो,
थे निरमायल दांन मुरदा रो लेइनें,
तिण जागा मांहें करो पोसा सामांइ,
थे सांप्रत मुरदा रो दांन लेइनें,
थे कहो थांनक म्हारें काजें कीघों,
आप आप तणा थांनक री ममता,
यारी मरजी बिना अनेरा टोलां रां,
मठघाख्यां ज्यूं मठ मांडे बेंठा,
सांप्रत ममताधारी छें त्यांनं,
आप आप तणा थांनक मांड बेंठा,
कदा उतरण दें तोही धणीयाप यांरो,
थांनक निमतें गरथ लागे ते,
ओर सामग्री तणा नहीं देवें,
वले गांव परगांव सूं गरथ मंगावें,
कदा कोइ सरमा सरमी देवें अनेरो,
गछवासी ज्यूं गछ मांडी बेंठा,
ते पिण साध बाजें लोकां में,
मुरदारो दांन ले थांनक करायों,
तिण थांनक मांहे साध रहें छें,
मुरदा रो दान ले थांनक करायों,
तिण थांनक में करें पोसा सामांइ,
कोइ मांदो आंतरीयो घुरलकें जूतो,
ते आंतरीयादिक रो दांन लेइनें,

तो साध सहीत श्रावक सर्व बूडा ।
न्यात जात में दीससी भूडा रे ॥ २३ ॥
केइ लोकीक सूं डरता ।
सूधा बोलें छें लाजां मरता रे ॥ २४ ॥
वद वदनें कहें वारुंवार ।
त्यांरा घटमें छें घोर अंधार रे ॥ २५ ॥
जो थे लीयो आंतरीयो दांन ।
थे होसो 'घणा हिरांन रे ॥ २६ ॥
तिण दांन रा थें लेवालो ।
जब थें कुल नें लगावो कालो रे ॥ २७ ॥
जागा कराय हरषो तिण देखी ।
तो उड गइ जाबक सेखी रे ॥ २८ ॥
साधां रें काज थांनक करायो ।
ओ तो भूठ कुगुरां रो सीखायों रे ॥ २९ ॥
दर पीढ्यां लग लागी छें ताहि ।
कुण घसैं तिण मांहि रे ॥ ३० ॥
मठघाख्यां ज्यूं राखे धणीयापो ।
साध किसें लेखें थापो रे ॥ ३१ ॥
ओरां नें उतरण दे नाहीं ।
उतारें खोज भांगण तांइ रे ॥ ३२ ॥
करें सामग्रीही में भेलों ।
यारें नहीं छे माहोमा मेलो रे ॥ ३३ ॥
ते पिण सामग्री मांही ।
ते तो लेखा में छें नाहीं रे ॥ ३४ ॥
आप आपरा थांनक ठहराय ।
ते पिण भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
ते थांनक नहीं छें सिष्ट ।
ते तो निमाइ निश्चें भिष्ट रे ॥ ३६ ॥
त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध ।
ते पिण श्रावक नही छें सुघ रे ॥ ३७ ॥
ते धन उदकें थांनक काजों ।
लोकां में वधारो छो व्याजों रे ॥ ३८ ॥

इण दान रो लेवाल किणने ठेहरायो, किणरो थको ववे छे व्याजो ।
 ओ किण किणरो वाजे छे परिग्रहो, ओ किण किणरे आवसी काजो रे ॥ ३६ ॥
 इण मुरदा रो दान ले थानक करवें, त्यांरी मत घणी छे माठी ।
 तिण थानक में करसी पोसा सामांइ, त्यारी पिण अकल गइ छे न्हाठी रे ॥ ४० ॥
 एतो निरमायल मुरदा रो माल, तिणने रांक भिल्यारी माले ।
 भगवंत रा उत्तम च्यार तीरथ, एहवा दान ने हाथ न घाले रे ॥ ४१ ॥
 एहवो फित्तरखानों मांड रखां लोकां में, त्यांरा मत माहे मोटी भोलो ।
 बुधवंत विण कुण काढे निकालो, चोडे मांड रखा गांगीरोलो रे ॥ ४२ ॥
 त्यांरा थानक रो कोड काढे नीकालो, जव वोलें घणा आलपंपालो ।
 सुध साध रहे निरदोष जायगा में, त्यारे उलटा देवें सावां सिर आलो रे ॥ ४३ ॥
 आधाकर्मीयादिक छें थानक दोषीला, तिणने दीयो छे निरदोष थापी ।
 निरदोष जागां माहे साध रहे छे, तिणमें दोष कहें छे पापी रे ॥ ४४ ॥
 एहवी अजोग जायगा माहे रहसी, त्यांमे अकल पिण एहवी आवें ।
 त्यांरो असुध उपदेस मूडा री वांणी, ते भवजीवा ने किम समभावे रे ॥ ४५ ॥
 जाण जाणने एहवी जागा सेवे, वले असुध लेवे अनपांणी ।
 ते प्रतख जेन तणा विगडायल, त्यारी खोटी वखाण री वाणी रे ॥ ४६ ॥
 वीर विक्रमादीत रे सिंघासण वेठां, लोक कहे आच्छी दुध आवे ।
 ज्युं निरंदोषण जायगा भोगवे त्यारे, आच्छी आच्छी अकल दुध थावें रे ॥ ४७ ॥
 माहोमा कहे म्हे सघलाइ साध, माहोमा त्यारी वंदणा छुडावे ।
 वले माहोमा सरवा कहे त्यारी खोटी, माहोमा दोष अनेक वतावे रे ॥ ४८ ॥
 माहोमा आप तणा श्रावका ने, साध कहे त्यासूं भिडकावे ।
 ते सामायक पोसा न करे त्यारे पासे, वले वखाण सुणवा नही जावे रे ॥ ४९ ॥
 माहोमा साध कहे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यां विकलां री किसी परतीत ।
 कपटी थका भूठ वोले अग्यांनी, त्यामें साध तणी नही रीत रे ॥ ५० ॥
 साध सरधे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यागे सरवा घणी विपरीत ।
 साध कहे त्यांने वांछा धर्म न सरधे, ते भव भवमें होसी फजीत रे ॥ ५१ ॥
 माहोमा भेला हवां करे नही वंदणा, साना पिण पूछे नाही ।
 आवो पघारो पिण नही देवे माहोमां, नही उनारे थानक माही रे ॥ ५२ ॥
 आमना जणाय जणाय ग्रहस्य ने, माहोमा देवे वदणा छुडावे ।
 वले साध माहोमा कहे किण लेखे, ओ पिण अक्कार त्यांरा मत माहि रे ॥ ५३ ॥
 जिगन दोय सहस कोड साध जभेरा, उत्कृष्ट नव सहंस छे कोड ।
 त्यां सावां ने थे वांदो वदावो, तीस नामी ने वेकर जोड रे ॥ ५४ ॥

ज्यांरी वंदणा छुडावें त्यां साधां नें, काढ्या साधां तणी पांत' बारें ।
 त्यांनं वले तेहीज साध सरघें, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार रे ॥ ५५ ॥
 ज्यां साधां री वंदणा छोडाई, त्यांनं साध कहे किण लेखें ।
 अमितर आंख हीर्या री फूटी, ते सूतर सांहाणें न देखें ॥ ५६ ॥
 साध सरघें त्यांरी वंदणा छुडावें, ते बूडगया कालीघारो ।
 ते भारी करमा छें मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट माहे घोर अंधारो ॥ ५७ ॥
 माहोमा साध कहे छें मूढां सुं, त्यांसूं पिण करें अंतरंग धेष ।
 वले इसको खेदो करें छें माहोमा, त्यां पहर विगाड्यो छें भेष रे ॥ ५८ ॥
 ज्यांनं कदेयक तो कहें साध लोकां में, त्यांनं कदेयक कहि दे असाध ।
 फिरती भाषा बोले अग्यांनी, त्यांरें किण विघ होसी समाध ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषधाख्यां नो वलांग सुणें छें, त्यांरें दिन दिन हुवें गाढो मिथ्यात ।
 ते कलेस कदाग्रहो करें साधां सुं, छेरेवीयां करे उंधी वात रे ॥ ६० ॥
 संवत अठारें बावनें बरसें, भादरवा विद सातम मुक्रवार ।
 जोड कीधी कुगुरां रो कपट ओलखावण, पाली सहर मभार रे ॥ ६१ ॥

ढलल : २६

दुहल

डेडधलरी डलगल तुलल हुडल, तुडलसुं डले नही डलडलर ।
 दुड डेडे छे डलंग डलंगने, डूछुडलं डलड न डुले ललगलर ॥ १ ॥
 तुडलरो डुथुडलं तुडुं गलग डेखने, कुड डुरलन डूछे डड ।
 ओ डुथुडलं रो गलग डरखुडु तेहनी, डडुलेहण करु छु डेड ॥ २ ॥
 डड डलरुकरडल डुडल थकु, डलड डुलेडु नही डलड ।
 नलग दुड डलंकणने डलडुडल, डुले छे डूसलडलड ॥ ३ ॥
 कहे डुथुडलं डडुलेहणु डलली नही, कलग ही सुतर रे डलहल ।
 तुणसुं नही डडुलेहलं छलं डुथुडलं, थे सकल ड रलखु कलड ॥ ॡ ॥
 डुथुडलं ने नही डडुलेहलुडलं, तुणरो नही डुहलने दुडने डलड ।
 डुहने हलसुडल डलण डूल ललगे नही, एहुडु कलषु लुकलं डे थलड ॥ ॡ ॥
 कडडल डलड डलकुड डुगडलं, तुडलरु करणु डडुलेहण डुड ।
 नही डुगडल कडडलडक तेहनी, नही डडुलेहलं दुड न कुड ॥ ६ ॥
 एहुडु डूठ डुलेने दुड डलंकुडुडु, ते डुललं खडर न कलड ।
 हलडे कुड कडड तुडलरु सुणु, एगलक डलत ललगड ॥ ७ ॥

ढलल

[डलड डतुर वलडलर]

कहे डुथुडल रल डडुलेहण नही डलली, तुणरु डलषल छे एकंत डूठु रल ।
 सुतर डरथ डलवल नही सुडुं, तुणरु हलडल नललड रल डूठु रल ।
 डूठुडुलुं रल डलंगन कलकु ॥ १ ॥
 डु थुडु डलण डडुड नही डडुलेहलं, तुणने डलरुडक दड डतलडु रल ।
 डलक हुडे तु नसलत सुतर डलहे डुडुं, दूडल डडेडल रे डलहुडु रल ॥ २ ॥
 डले डलडडग दसलुवलक डलड देड, डणल सुतरलं रल डलखु रल ।
 डलड ने नलत डडुलेहण करणु, शुी वलर गडल छे डलखु रल ॥ ३ ॥
 रलख रलत डुथुडु ने डलखु थलनक डडलरु, वलण डलडरुडल डडुड छे डलहल रल ।
 तुडलने डलण एकडलर तु डलड डडुलेहलं, वलण डडुलेहल न रलखे कलड रल ॥ ॡ ॥

*डह डलंकडु डुरतुडक गलथल के डलत डे हल ।

भेषधारी कहें पोथ्यां नही उपधि मे,
 अंतो ग्यान तणी नेसराय छे तिणसूं,
 भूठ बोले पोथी री पडिलेहण उठाइ,
 तिणरो न्याय सुणे भव जीवा,
 पोथीया रो गिज विण पडिलेह्या राखे,
 नीलणफूलण चोमासा माहे आवें,
 कीडीया कथू आदिक जीवा रा समूह,
 विण पडिलेह्या पोथ्यां रा गिज में,
 विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज मे,
 तिणरो पाप नें दोष लागो नही सरघे,
 पोथ्यां रा गिज नें विण पडिलेह्यां राखें,
 तिण हिंसा तणो पाप किणने लागों,
 जो पोथ्या ने हिंसा रो पाप लागो हुवे,
 नामे परना मे पाप रों भेळूं बतावो,
 जो किणनेइ पाप लागों नहीं हुवें तो,
 जेसी हुवे तेसी कहि वतावो,
 त्यांनं प्रश्न पुछ्यारों जाब न आवे,
 आल पपाल बोले विनां विचाख्या,
 पोथ्यां रो गिज विण पडिलेह्या राखे,
 पोथ्यां विण पडिलेह्यां रो पाप न सरघे,
 पोथ्यां गिजने विण पडिलेह्यां राखे,
 पोथ्या रा गिज सूं जीव मरें अनता,
 कहे पोथ्या ने कदे नही पडिलेह्या,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां ने मेल्या,
 पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे,
 वले वेठीया पोथीया पोथ्या चलाया,
 जो पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे,
 हिंसादिक दोप सेवे पोथ्या रे ताइ,
 पोथ्यां नही पडिलेहे छे तिणरे लेखे,
 ओवरा मखारी में पिण मेलणी पोथ्या,
 कहे पोथ्यां री पडिलेहण करणी,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां मेलण रो,

तिणसूं पोथ्यां पडिलेहां नाही रे ।
 नही पडिलेह्या दोष न काइ रे ॥ ५ ॥
 तिणने भारीकर्मों जीव जाणों रे ।
 तिण भूठा री पख मत ताणो रे ॥ ६ ॥
 त्यांमें जमें जीवां रा जालो रे ।
 घणा जीवां रों हुवें खेंगालो रे ॥ ७ ॥
 उपज उपज मरे तिण ठामो रे ।
 त्यांरे भारी मंड्यो संगरामो रे ॥ ८ ॥
 अनत जीवां तणी हुवें घातो रे ।
 त्यांरी विकल मांनं छे बातो रे ॥ ९ ॥
 अनत जीवा रो हुवें घमसाणो रे ।
 चोडें कहिता संक म आणो रे ॥ १० ॥
 तो पोथ्यां रों नाव बतावो रे ।
 थारी सरघा ने मतीय छिपावो रे ॥ ११ ॥
 आ पिण कहि दो निसंको रे ।
 छोडों हीया रों वको रे ॥ १२ ॥
 जब कूडा कूडा कूहेत लगावें रे ।
 गालां रा गोला मुख सूं चलावे रे ॥ १३ ॥
 त्यांनं पार लागें भरपुरो रे ।
 त्यांरो तो मत जाबक कूडो रे ॥ १४ ॥
 त्यांरे सदा रहे असमाधो रे ।
 त्यांने निश्चेइ जाणों असाधो रे ॥ १५ ॥
 तिणरो दोप न लागे काइ रे ।
 ओ पिण दोप छे नाही रे ॥ १६ ॥
 तो गाडा मे मेल्यां दोष छे नाही रे ।
 ओ पिण दोप न लागे काइ रे ॥ १७ ॥
 तो मोल लीघां वेहख्या दोष नाही रे ।
 यारे लेखे तो दोष न काइ रे ॥ १८ ॥
 मेलणी ग्रहस्थ घर माह्यो रे ।
 विण पडिलेह्यां राखे तिण न्यायो रे ॥ १९ ॥
 ते नही छे सूतर रे माह्यो रे ।
 ओ पिण नही छे नकारों ताह्यो रे ॥ २० ॥

पोथ्यां री पडिलेहण सूतर मे न चाली,
 इम कहि कहि अग्याल्या पडिलेहण छोडी,
 पाट वाजोट कपडा ने पडिया राखे,
 त्यानें उपघ जाण पडिलेहे नांही,
 आखा धान नें विण पडिलेह्यां राखे,
 वले पडिलेह्यां विण उपघि राखे अनेक,
 कपडा ने पोथ्यां आला माहे घाले,
 जब पूरी पडी पडिलेहण त्यारी,
 मास छ मास तांड न खोले आला,
 त्यामें जीव अनेक उपजे खपे छे,
 कोइ खोडो ने पांगलो लूलो होवे,
 दोनू टका न करे पडिलेहण,
 मुंहपती री तो करे नित पडिलेहण,
 तिण मांहे जीव अनेक घसे छे,
 थानक आडा पडदा वांध्या छे,
 तिणरा सावपणा ने पलीतो लागो,
 तिण परदा रे नीलणफूलण आवे,
 तिण हिंसा तणो पाप सांभा ने हूवो,
 जो सी राखणने पडदा हेठा करे छे,
 तिणने देव अवत ने परिग्रह लागो,
 जब कहे ग्रहस्थ री आगना लेने,
 तिण लेखे तो ग्रहस्थ री आगना लेइने,
 सावां रे कारण पडदा वाधे छे,
 तिण पडदा मांहे रहे साव जाणने,
 कारण विण पिण महिना सूं इधिका रहे छे,
 तिण दोष तणो प्रायश्चित नही लेवे,
 केई चोमासी उतर गया पछे,
 खावा पिवा कपडादिक काजे,
 चोमासो करे तिण गाम नगर मे,
 तठा पहिली चोमासों करे तिण गामे,
 छत्री सगत छे पगां चालण री,
 कारण कहे छे दोप रो खोज भागण रों,

पोथ्या ने न गिणे उपघि रे माह्यो रे ।
 ओ तो चोडे कपट चलायो रे ॥ २१ ॥
 इत्यादिक उपघि वकोपो रे ।
 ओ दोष सेवे किण लेखे रे ॥ २२ ॥
 न पडिलेहे पिछोवडी सीवी रे ।
 त्या खोइ संजम रूप नीवी रे ॥ २३ ॥
 उपर गारो लीपे छे काठो रे ।
 त्यारो चारित घट मा सूं न्हाठो रे ॥ २४ ॥
 जब जमे जीवां रा जाल्हा रे ।
 एहवा गुर छे विकला बाला रे ॥ २५ ॥
 पगां वाधे इंडणी गावो रे ।
 तिणरो भागल काई देसी जावो रे ॥ २६ ॥
 नही पडिलेहे पगारो गावो रे ।
 त्याने देवे पगा सू दावो रे ॥ २७ ॥
 ते साव हाया सूं खोलने बाधे रे ।
 ओ पिण दोप न जाण्यो वांधे रे ॥ २८ ॥
 आडो दीया छाटां लागे रे ।
 तिणसूं पहलो महावरत भागे रे ॥ २९ ॥
 जब तो पडदा भोगवीया साधो रे ।
 तिण चारित दीयो विराधों रे ॥ ३० ॥
 म्हे पडदा मेला ढलकाउ रे ।
 सी राखण सीरख ओढणी साऊ रे ॥ ३१ ॥
 ते कर्म वाधे हूवो भारी रे ।
 तिणरी पिण घणी खुवारी रे ॥ ३२ ॥
 त्या भाग्यो कल्प लोपी भरजादो रे ।
 वले पूछ्या करे विषवादो रे ॥ ३३ ॥
 कारण विण रहिवा लगा रे ।
 त्यासूं छूटे नही सेंदी जागो रे ॥ ३४ ॥
 नही करे चोमासा दोयो रे ।
 तिण चारित चोडे विगोयो रे ॥ ३५ ॥
 तो ही लेवे कारण रों नामों रे ।
 पिण रहे छे मुत्तलव कामो रे ॥ ३६ ॥

त्यामें कोइ तो मुतलब खावारे काजे, केई चेंला रें मुतलब काजे रे ।
 कोइ रहें कपडादिक काजे, तिणसं भूठ बोलतां न लाजे रे ॥ ३७ ॥
 कोइ तो जाणें म्हारा श्रावक फिर जासी, तो मत माहें पडसी वगारा रे ।
 फिरता फिरता कदा सर्व फिरें तो, इहां थी छुट जासी पग म्हारा रे ॥ ३८ ॥
 जों श्रावक म्हारा फिर जाजें म्हांथी, तो पछे कारी न लागें कायो रे ।
 भगवतें बांधी मरजादा भागेंनें, देवे चोमासों उहरायो रे ॥ ३९ ॥
 कल्प मरजादा लोपतां संक न आणें, त्यामें साध तणी नहीं रीतो रे ।
 ते तो इह लोकरा अर्थी छें अग्यानी, ते चिहूं गति में होसी फजीतो रे ॥ ४० ॥
 साध एक मास रह्या तिण गांमें, तो बिमणा काढणा दिन बारे रे ।
 तठा पहिली पिण तिहां आय रहे छें, ते तो विटल हुआ बेंकारो रे ॥ ४१ ॥
 कल्प भागेंनें करें चोमासो, कल्प भागेंनें रहे सेखा कालो रे ।
 अणहंतों अग्यानी कारण बतावे, त्यारे भूठ तणों नहीं टालो रे ॥ ४२ ॥
 कल्प भागेंनें करें चोमासों, कल्प भागेंनें रहें सेखा कालो रे ।
 तिणने पिण पूज जानें अग्यानी, त्यारे आयो अभितर जालो रे ॥ ४३ ॥
 जे सोंइ पूजनें जेंसाइ चेला, जेसोंइ परवार छें दूजो रे ।
 कल्प भागेंनें करें चोमासो, ते पूज छें पूरो अबूजो रे ॥ ४४ ॥
 दोष सेव्यारो प्राच्छित नहीं लेवे, आगा सूं नहीं पालें मरजादो रे ।
 एहवी धिगांमस्ती मडे रही तिण गछ में, ते तो भगवत रा नहीं साधो रे ॥ ४५ ॥
 थानक माहे पाणी चवें जब, ठामडा मांड भेले पाणी रे ।
 तिणनें हिंसा लागे छें तस थावर री, तिणरो दोष न जाणें अग्यानी रे ॥ ४६ ॥
 काचों पाणी भेलें पोतें जाय ढोलें, तिणरी दया घट मांसूं न्हाठी रे ।
 एहवा पिण साध वाजें लोकां में, तिणरी चोडे छे चलगति माठी रे ॥ ४७ ॥
 त्यारे ग्रहस्थण थानक आय लीपें जब, आर्या घोवण गारा मे घालें रे ।
 केइ आर्या हाथां दडें लीपें छें, केइ गार पीडा हाथां भाले रे ॥ ४८ ॥
 केइ आर्या थानक तणी छंजाख्यां, पडी हुवे तो थानक माहे आणें रे ।
 त्यां छंजाख्यां आपरी कर जाणें, तिणसूं मेल दे एकंत ठिकाणे रे ॥ ४९ ॥
 ओषध आदि दे तंबाखू इधकी आणे, वधें ते बासी राखे छे रातो रे ।
 त्यांनं पूछ्या कहें अंतों ग्रहस्थ री छें, तिणरी फेर आग्या ले परभातो रे ॥ ५० ॥
 आपरी वस्त थानक में वासी राखे ते, ग्रहस्थ री थापी किण न्यायो रे ।
 वले ग्रहस्थ री आग्या लेवें किण लेखे, त्यांमें आ पिण अकल न कायो रे ॥ ५१ ॥
 मूआ गया रा पातरा इधिका हुवे ते, त्यांरी पिण ममता मूकें नाही रे ।
 त्यांनं पडिया राखे छे विण पडिलेह्यां, आपरा थानक मांही रे ॥ ५२ ॥

लोट पातरा थानक मे पडीया देखीने, कोइ प्रस्न पूछें छें आंमो रे ।
 अँ लोटने पातरा सावठा किणरा, जब तो कहें छे ग्रहस्थ रा ठांमो रे ॥ ५३ ॥
 लोट नें पातरा ग्रहस्थ रा कहिनें, आप न्यारों होय जावें रे ।
 एहवा एहवा भूठ जाणेनें वोलें, त्यामें साव रो खेरो न पावें रे ॥ ५४ ॥
 ग्रहस्थ रे लोट पातरा क्याने चाहीजे, ते थानक में मेलें क्यानें रे ।
 थापरां पातरा नें कहें ग्रहस्थ रा, साध न कहीजे ज्याने रे ॥ ५५ ॥
 जो आपरे चाहीजें लोट पातरा, तो लेवे छे तिण मांसूं ताह्यो रे ।
 वले मूआं गयां रा ववे लोट पातरा, ते मेल देवे तिण मांह्यो रे ॥ ५६ ॥
 ओ तो कोठार ज्यूं छे लोट नें पातरा, ते तो निश्चेइ त्यांरा जांणो रे ।
 जो भेषधारी कहे अँतो ग्रहस्थरा छें, त्यां विकलां रो करजो पिच्छांणो रे ॥ ५७ ॥
 विण पडिलेह्यां राख्यां पहिलो व्रत भागो, बीजो व्रत भागो भूठ भाख्यां रे ।
 तीजों व्रत भागो जिण आगना लोप्यां, पाचमों व्रत भागो इधिका राख्यां रे ॥ ५८ ॥
 आचार कुसील तणे लेखें तों, चोथो नें छठें व्रत भागा रे ॥
 विण पडिलेह्यां पातरा इधिका राखे, ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ५९ ॥
 लोट पातरा ने उपधि इधिका राखे, त्यामें छे मोटी खोडो रे ।
 इधिकाइ राखे ने विण पडिलेह्यां, ते तो निश्चें भगवान रा चोरो रे ॥ ६० ॥
 कुगुराने ओलखावण जोड करी छे, सोजत सहर मभारो रे ।
 समत अठारे ने वरस तेपनें, आसोज सुद सातम थावरवारो रे ॥ ६१ ॥

दुहा

भेषधारी भूला जिण घर्म थी, त्यांरा फूटा अमितर नेत ।
 ते भोलां नें भिष्ट करवा भणी, कूडा लगावें कूहेत ॥ १ ॥
 तिज दोषण ढांकण भणी, भूठी भूठी बणावें बात ।
 त्यांरी बात माने तिण जीव रें, आवे तुरत मिथ्यात ॥ २ ॥
 चहरबाजी तमासा नी परें, ज्यू भेषघाख्यां मांड्यो फंद ।
 किणही भोला नें न्हांखी फंद मे, जब पांमें अधिक अणंद ॥ ३ ॥
 काचा पंखी रें पांख आइ नहीं, ते उछल पडीयो आला बार ।
 तिणनें पडीयो देखनें पापीया, त्रापे आवे तुरत मभार ॥ ४ ॥
 ज्यू काचों जाणपणों छे, तेहनें, तिणने भिष्टकरण हुवे तयार ।
 तिणनें भिडकावें सुघ सावां थकी, कूड केलवे दासंवार ॥ ५ ॥
 कमाड जड्यांनें उघाडीयां, तिणनें दीसें उघाडों पाप ।
 ते वीर वचन उथापने, करें कवाड जडण री थाप ॥ ६ ॥
 चोढें दोष अणाचार सेवता, पृछ्यां आरे न हुवें ताहि ।
 ते ढालें उतारे कूड कपट सूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढलल

[आ अनुकम्पा जिन आग्या मे]

केई साध रो भेष पेंहरी नें भूला, आडा जडे उघाडे कमाड ।
 त्यांमें केई तो कहें म्हांनें दोष लागे छे, केई कहें म्हांनें दोष न लागें छें लिगार ।
 कवाड जडे पिण दोष जाणें छें, यां भूठाबोलां रो निरणों कीजो ॥ १ ॥
 कवाड जडे नें दोष न जाणें, ते तो छें एक मूर्ख री पांत ।
 त्यां भेषघाख्यां नें पूछा कीजे, त्यांनें दोय मूर्खे कहीजे भलीभांत ॥ २ ॥
 मोनें कमाड जडवो उघाडणों नाहीं, थांरो श्रावक कहें थांसूं जोडी हाथ ।
 जब तो कहे म्हें उणनें सूंस करावां, ए सूंस करावो मोनें सांमीनाथ ॥ ३ ॥
 जब कहे उणरें पेंहलो वरत नीपनो, तो किसों वरत उणरें नीपनो जाणों ।
 जोड कवाड हाथा सूं जडें उघाडे, हिसा रों त्याग कीयो छे सुमता आणो ॥ ४ ॥
 जब तो कहें उणरो पेहलो व्रत भागो, जबकि सों व्रत उन श्रावक रो भागो ।
 हिसा रो पाप सागेड लागो ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रावक जड्यां उघाड्यां पहिली व्रत भागो,
 थे पिण कवाड जडो ने उघाडो,
 दोष न गिणे छें कवाड जड्यां उघाड्यां,
 जब मूंडो विपाडने पडग्यो फीटो,
 वले भेषवारी नें पूछा कीची,
 पाछा आर्वो जव पिण कवाड उघाडो,
 थानक रो कवाड तो जडो उघाडो,
 तो थे ग्रहस्थ तपो कवाड खोलेने,
 जब तों कहे म्हे कवाड जड्यां मे,
 आगे वाइ हुवें काइ ढांकी उघाडी,
 इम मूठ बोलीनें होय गयो पार,
 हाट माहें तो वाइ थे वेठी न जाणों,
 कोइ वाइ ओरां रो कमाड उघाडें,
 माहे तो वाइ ढांकी उघाडी न जाणों,
 कोइ ग्रहस्थ कहे सांमी कमाड उघाडें,
 जब थे कमाड उघाड मांही क्युं न जावो,
 इत्यादिक खिष्ट कीया छें अनेक बोलां सूं,
 कवा कवाड जड्या माहें दोष जाणे छे,
 यांरा बडा बडेरा दर पीढ्यां लग,
 त्यां तो दोष जाणें नही लीघो,
 बयालीस दोषां मे दोष कह्यो छे,
 भिने दोष में दोष जाणे ने टाल्यो छे,
 साधवीयां रो नाम लेइनें,
 ते परभव सूं डरे नही पापी,
 साध ने कवाड जडवो थापण ने,
 जो साध जड्यां उघाड्यां पेहलो व्रत भागो,
 तिण मूढमती नें पाछो इम कहीजे,
 साधवीयां तो सील राखण नें जडे छे,
 जब मूढ मती पाछो इम बोले,
 डाला राखणें गोड जडीयां सूं काडें,
 तिण मूढमती नें पाछो इम कहिणो,
 घर में एकली अस्त्री छें बाल जवान,
 १११.

जब तो थारोई पहलो महाव्रत भागो ।
 जब हिंसा रो दोष थारोई लागो ॥ ६ ॥
 तिणने जाब सूं जाब देइ खिष्ट कीघों ।
 वलतो जबाब पाछो नही दीघों ॥ ७ ॥
 ये कवाड जडें गोचरी जावो ।
 तो ग्रहस्थ रो आडो देख पाछा कांय आर्वो ॥ ८ ॥
 तिणमे तो दोष गिणों नही कांड ।
 क्युं नही जावो तिणरा घर मांही ॥ ९ ॥
 दोष तों मूल न जाणो लिगार ।
 तिणसूं मांहे न जाओ खोल कवाड ॥ १० ॥
 तिणनें पाछो खिष्ट करवों छे एम ।
 तो हाट खोली वेहरायां वेहरो नही केम ॥ ११ ॥
 थाने वेहरावे तो वेहरो नही कांय ।
 हिवे क्हो थें दोष गिणों किण मांहि ॥ १२ ॥
 असणादिक वेहरण मांहे पधारो ।
 कमाड खोल्यां में दोष न जाणो लिगारो ॥ १३ ॥
 तिणरो पाछो जाबतों मूल न आयो ।
 तो पिण पापी सूं चोडे क्ह्यो नही जायो ॥ १४ ॥
 कहे कमाड खोलायने न लीयो आहार ।
 हिवे तो मूढ दोष न जाणें लिगार ॥ १५ ॥
 यांरा बडा बडेरां रा आखर संभालो ।
 त्यांरी सरयाने विकला ल्गायो छे कालो ॥ १६ ॥
 साध ने कवाड जडवो थापे ।
 जाण जाणें वीरना वचन उथापें ॥ १७ ॥
 पापी कूडा कुहेत लगावण लागों ।
 जो साधवियांरोइ पहलो व्रत भागो ॥ १८ ॥
 तूं ओही विचार हीया मे न देखे ।
 साध कवाड जडे किण लेखें ॥ १९ ॥
 सील राखण पेहलो व्रत भागें छे जेह ।
 ए खोटो दिष्टंत देव लोकां आगे तेह ॥ २० ॥
 थें गोचरी जाओ ग्रहस्थ नें घर ताम ।
 इतरे मेह आय गयो तिण ठाम ॥ २१ ॥

एकली अस्त्री छें तिहां रहो के न रहों,
 म्हे वरसतें मेह नीकल जावां वारें,
 जो थे सील राखण नें पाणी माहें चालों,
 आर्या तों कवाड जडे सील राखण,
 आपरो व्रत भागो तो कंहणी न आवें,
 भोला लोकां नें समझ पडें नहीं कांड,
 वरसतें मेह नीकलें अस्त्री कना थी,
 साधवीयां कवाड जडे सील राखण नें,
 सीलादिक कारण विण कवाड जडें छें,
 जब तो पहिलो महाव्रत निश्चेंइ भागों,
 त्यांनं कवाड जड्यां माहें दोष वतावें,
 कहे साध तों फलसों हाथां सूं उवाडें,
 कवाड विचे तो फलसों भारी छें,
 ते तो आचारंग सूतर माहें कह्यो छें,
 कवाड जडण उघाडण रो दोष ढांकणने,
 वले आचारंग माहें चाल्यो कहे छें,
 कंटक बोदीया पाठ कह्यो छें सूतर में,
 आचारंग दूजें सतक पेंहलें अघेनें,
 कंटक बोदीया साखा नें फलसो कहे छें,
 ते तों कवाड जडण नें उंवा अर्थ करें छें,
 कंटक साखा रो ठूठी पूंजे दुवार खोले,
 कंटक बोदीया रो अर्थ फलसों कहे ते,
 तिण भेषधारी ने पूछा कीजे,
 जो धर्म कहे तो लोकां में भूंडा दीसैं,
 कवाड जड्यां माहें दोष उघाडों,
 तो पिण पापी मूल न मानें,
 कवाड जड्या उघाड्या हिंसा कही जिण,
 थोडी हिंसा कीयां डंड आवें चोमासी,
 वेतकल्प सूतर रे पेंहलें उदेशे,
 आडो जडेनें रात रो रहिणों,
 साध नें रहिणो दुवार उघाडे,
 पोतें जडण उघारण रो काम न पडें तो,

जब तो कहे म्हे न रहां तिणठाम ।
 चोथो सील वरत राखण ने काम ॥ २२ ॥
 जब थारें लेखें थारों पहिलों व्रत भागों ।
 थे सील राखण जीव माख्या अथागों ॥ २३ ॥
 जाव अटक गया जब पड गया फीटा ।
 डाहा लोकां में तो घणा भूंडा दीटा ॥ २४ ॥
 तिण साध नें श्री जिण आगना जाणो ।
 तिण में पिण श्री जिण आग्या प्रमाणो ॥ २५ ॥
 सीलादिक कारण विण मेह में चालें ।
 तिण माहें घोचो अग्यानी घालें ॥ २६ ॥
 जब भूठ वोलें फलसों देवें वताइ ।
 तो कवाड जडवारी कुण चलाइ ॥ २७ ॥
 फलसो पूंजें खोलें माहें जाणो ।
 म्हे कवाड जडण रो संक क्यूं आणों ॥ २८ ॥
 फलसों उघाडण रो भूठ चलायों ।
 ते पिण एकंत मूसावायो ॥ २९ ॥
 ते कंटक नी साखा डाली जाणो ।
 पांचमों उदेसो जोय करो पिछाणों ॥ ३० ॥
 तिण निश्चेंइ चोडें चलायो छे कूडो ।
 त्यांरा साधवणा माहें पर गइ धुरो ॥ ३१ ॥
 फलसों होसी तो पूंजणी किम आवें ।
 निश्चेंइ गालां रा गोला चलावें ॥ ३२ ॥
 कवाड जड्यां खोल्यां पाप कें धर्म ।
 पाप कहां निकल जाअें सरघा रों भर्म ॥ ३३ ॥
 सांभलजों सूतर री साख ।
 कवाड जडवोछे साध नें कहे छेअन्हाख ॥ ३४ ॥
 आवसग सूतर चोथा अवेन मभार ।
 नसीत वार में उदेसैं विचार ॥ ३५ ॥
 साधवीयां नें नहीं रहिणो उघाडे दुवार ।
 सील नें उपजतों जाण विगाड ॥ ३६ ॥
 साध नें कमाड जडवो नहीं चाल्यो ।
 जडीयें दुवार तो रहणों नहीं पाल्यो ॥ ३७ ॥

आर्या रो नाम लेहने साघ जडे छे,
 आर्या न जडे तो जिण आगना लोपी,
 मन करने पिण साघ कमाड न बांछे,
 ते वरज्यो छे उत्तरावेन पेतीस में अघेन,
 मनोहर घर ने वले चित्राम कीघा,
 कवाड सहीत ने घर धवलीयो हुवे,
 जो इतरा बोल माहिलो सहजा हुवे तो,
 आगे पडीया छे जिम नचित पख्या छो,
 चंद्रवा छूटा ने साघ पाछा बाघे,
 ते चित्रामादिक समारे हाथा सूं,
 ज्याने मन करने वांछणा जिण पाल्या,
 वले कमाड जडवो साघां ने थापे,
 गोसाले पिण कमाड जडीयो नही दीसें,
 गोसालो मूआं पछे चेलां जख्या छे,
 पेहला चेलां ने करडा सूस कराए,
 जब चेला टटवस करणो मांड्यो,
 चेलां टटवस करने पाछो उघाड्यो,
 गोसाला नें घीसालतो लाजां मरे छे,
 गोसाला रे तो जागा सूतर में चाली,
 ते तीथकर बाजे ते किण विव जडसी,
 केई पापंडी पिण बाजे वेरामी,
 भगवंत रा साघ बाजे कमाड जडे छे,
 भूठ बोलता बोलता जाब में अटकें,
 वले क्रोध करे प्रजलता पापी,
 साघां रा भेष थकां कमाड नें जडतां,
 वले दोष काडे त्यांसूं मंड जाए साह्या,
 कमाड जडवारो दोष ओलखावण,
 समत अठारने वरस वावने,

त्यानें जिण मारग रा कहीजे अजाण ।
 साघ जडे तिण भांगी छे जिणवर आण ॥ ३८ ॥
 ते काया सूं किण विव जडे कमाड ।
 चौथी गाथा जोय करों निस्तार ॥ ३९ ॥
 माला सहीत नें धूपादिक वासकारी ।
 वले चंद्रवा सहीत न वांछे लिंगारी ॥ ४० ॥
 तिहां रहितां दोष न लागें कांड ।
 त्यांरी बंछा पिण नही करणी मन मांही ॥ ४१ ॥
 वले हाथा सू जडे उघाडें कमाड ।
 त्यांरो बिगड गयो जाबक आचार ॥ ४२ ॥
 त्यानें कायाइं करने सेवण लगा ।
 त्याने वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ ४३ ॥
 ते सूतर भगोती सू करों पिछांणो ।
 ते तो आपरा मुतलब रे काम जांणों ॥ ४४ ॥
 पछे निज आलोवण कीघी गोसाले ।
 जब चेलां कमाड जड्यो तिण काले ॥ ४५ ॥
 बीजू तो आगे हुंतो उघाडो दुवारों ।
 तिणसूं चेला जडीयो उघाख्यो कमारों ॥ ४६ ॥
 जडवों उघाडवो नही चाल्यो कवाड ।
 ओ पिण दीसें उघाडो विचार ४७ ॥
 ते पिण आडा न जडे कमाड ।
 त्यां विकलां नें दीजे तीन धिकार ॥ ४८ ॥
 तो अनेक आका आका ले उठें ।
 सुघ साघां री निदा करे परपूठे ॥ ४९ ॥
 निरलजा हुवे ते मूल न लाजे ।
 न्याय चरचा करे त्यांसू दूरा भाजे ॥ ५० ॥
 जोड कीघी पालीसहर मभार ।
 आसोज सुदि वीज ने बुधवार ॥ ५१ ॥

दुहा

दुषम आरें पांचमें, हीण परी लोकां री बुव ।
 त्यानें साध नें असाध दोनूं तणी, पूरी परती न दीसें सुध ॥ १ ॥
 भेषधारी भागल तूटल फिरें, इण साध तणा भेष मांहि ।
 त्यारें माया ममता अति घणी, ते कह्यो कठ लग जाय ॥ २ ॥
 गांमा गांमा थानक त्यारे बांचीया, छ काय रो कर घमसाण ।
 नामें पर नामें त्यारें जूजूआ, त्यामें पर रह्या मूढ अयाण ॥ ३ ॥
 चेला चेली करणरा अति लोभी, त्यारें लागी तिसणा लाय ।
 ववेक विकल बालक विरघ नें, तुरत मूढलें मांहि ॥ ४ ॥
 त्यां भेष भांड्यो छे भगवानं रो, वले छोडी सरम नें लाज ।
 चेला चेली करण रें कारणे, करें छें अनेक अकाज ॥ ५ ॥
 वले ओर दोप सेवें घणा, ते पूरा कहा नहीं जाय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[पाषड बधसी आरे पाचमें]

जिण साधपणा रा गुण जाण्ण्या नही रे, वले नही जाण्ण्यो समकत रो सरूप रे ।
 एहवा विकलां नें मूंड भेला करे रे, ते भेप ले बूढा भवजल कूप रे ।
 त्याने साध म जाणो श्री भगवानं रा रे ॥ १ ॥
 बूढा ने मूंडे बालक रें लालचें रे, जाणें बालक होसी म्हारें भणणार रे ।
 पिण अे दोनूंड पेटभरा पेटारथी रे, त्यानें सांग पेंहराय कहे अणगार रे ॥ २ ॥
 तिण बालक ने न्याती लेगा पकडने रे, तिणनें ग्रहस्थ कीयो छे भेष उत्तार रे ।
 ते बालक विकल थको रमतो फिरे रे, ते पिण चाल्या छें तिणरी लार रे ॥ ३ ॥
 तिण नें पाछो ल्यावण री आसा धारने रे, धरणो पाखो तिण ठामें जाय रे ।
 तोही हाथ न आयो त्यारि डावडो रे, जब फेर धरणो दीयो छें ताय रे ॥ ४ ॥
 कहे मानें पाछो सूपेदो डावडो रे, नही तो अणसण कर छोडूंथां उपर प्राण रो
 कें हूं पाछो होय जासूं ग्रहस्थी रे, जोरी दावें लेजा सूं तिणनें ताण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले कजीयो कलेस कीयो तिण अति घणो रे,
 'धोषड ज्युं उघाडा नांच्या लोक मे रे,
 तो पिण हाथे नही आयो डावडो रे,
 भूखां मूखां ते पिण यूंही गयी रे,
 पहिला तों विकलां नें मूंड माहे लीया रे,
 तिणानें तो विकल निजरां देखी लीया रे,
 भेषघारी विलखा वेदल हूआ घणा रे,
 'धासा अलूधा पाछा आवीया रे,
 पछें माहोमां मिलने मतो कीयो रे,
 हिवे बालक विण बूढो किण कांमरो रे,
 इम जाणे नें बूढा ने पिण छोडे दीयो रे,
 ओ मिण भेष छोडेनें हूवो ग्रहस्थी रे,
 कलेस कदागरो करे घणो रे,
 तपकर मरवा मांडें उपरे रे,
 तिणमे भेषघाच्यां ने सांभल जाण जो रे,
 यांरा चेहन देखे नें यांने अटकल्या रे,
 जो सेमल न हुवे तो कह दो एतलो रे,
 लडे भगडे ल्यायाने माहे ल्यां नही रे,
 जो त्याग न करे तो तिण कजीया मके रे,
 'एहवा कजीया कराएनें चेला करे रे,
 जो इतरो कहे कजीया मूल करो मती रे,
 तिणरीं आसा छोडे ने निरदावें हुवें रे,
 सुस करेने कजीयो मेंटें किण विघें रे,
 तेतां कुटंब छोडेने पडीयो विटंब मे रे,
 एहवा विकलां ने साधु सरखे छें भेलीया रे,
 त्यांनं कर्म जोगे एहवा कुगुर मिल्या रे,
 कोइ मादो अकेलो ग्रह करलां थकां रे,
 'एहवो पिण दांन लेता लाजे नही रे,
 मिनष आंतरीयो जूतो घुरडकें रे,
 वले साता उपजावण सावां ने दीयो रे,
 कोइ घर छोडतां थानक मोल ले रे,
 वले परिग्रह पिण छाने सूपे ग्रहस्थ ने रे,

छोरा ने पाछो लेजावण काज रे ।
 त्यां भेष री मूल न राखी लाज रे ॥ ६ ॥
 वले फीटा पडीया छे लोकां माहे रे ।
 पछे काया होय घरणों दीयो उठाय रे ॥ ७ ॥
 पछें घरणों पाडयो पिण ठामे जाय रे ।
 तोही न मटी विकलां नें तिणरी चाहि रे ॥ ८ ॥
 जाणे कोइ न सरीयो म्हारे काज रे ।
 घणा लोकां में खोए लाज रे ॥ ९ ॥
 आपे भूंडा दीठा छां लोकां माहि रे ।
 तो इण बूढा ने बारे काडे दो ताहि रे ॥ १० ॥
 जब बूढो तो जाय बेठो तिण गांम रे ।
 जेसा हुंता जेसोइज कीवो कांम रे ॥ ११ ॥
 वले देवे करडा करडा सराप रे ।
 छोरा ने पाछा ल्यावण री थाप रे ॥ १२ ॥
 पिण निश्चे तो जाणे श्री भगवत रे ।
 यारे छोरा सुं दीसे ध्यान अतंत रे ॥ १३ ॥
 इणने लेसां म्हे बासी जब वेंराग रे ।
 साचा हुवे तो कर दो इणरो त्याग रे ॥ १४ ॥
 सेमल छे चेला करवा काजरे ।
 ते निरलजा मूल न आणें लाज रे ॥ १५ ॥
 म्हारे छोरा ने लेवण रा छें त्याग रे ।
 जब तो थोडा में कजीयो जावे भाग रे ॥ १६ ॥
 तिणरे चेलां री लागी तिसणा लाय रे ।
 सुमता नही दीसे तिणरे माहि रे ॥ १७ ॥
 त्यांरी पिण अकल गइ दपटाय रे ।
 ते पिण खूता छे मोह मिथ्यात रे माहि रे ॥ १८ ॥
 घन उदकें सावां रे थानक काज रे ।
 त्यां विकलां ने किम कहीजे मुनीराज रे ॥ १९ ॥
 घन उदकें सावां रे थानक काज रे ।
 ते दांन लेतां पिण नाणे लाज रे ॥ २० ॥
 जाणें साध रहसी तिण थानक माहि रे ।
 सावां ने साता उपजावण ताहि रे ॥ २१ ॥

चले राधां दें थानक कारावण कारणे रे,
 पड़वा थानक जे साम भोगवें रे,
 चले कहि कहिनें त्यानिं कितरो कहुं रे,
 ते पिण नांग धरावें राधरो रे,
 तिण परिग्रहा नें कहुं छें थानक तणो रे,
 पिण अंतरंग में जाणें छें घन आपरो रे,
 जिणरें थानक छें तिणरो परिग्रहो रे,
 तिण थानक रा धगी धोरी जो साम छें रे,
 तिण घन रा भेल्हू त्यांरा श्रावक हुवें रे,
 ते गुपत छानें छें सामग्री गभे रे,
 ते व्याज वधें छें सामग्री गभे रे,
 ते अंतरंग में जाणें छें मन नें आपरो रे,
 जिणमें नांगों छें तिणरा घर थली रे,
 धी खांड पत्रादिक देवें गोकला रे,
 जो थानक निगतें पड़सों थालिजे रे,
 जब पिण सामग्री मांहे गेलो करे रे,
 करलो काम पश्चां लेवा दे तोहमें रे,
 ते पिण मुतलज जाणें आप रो रे,
 त्यानिं कितरायक मांग्यां पाछो दे नही रे,
 जब अंलाज भरता पाछा बोलें नही रे,
 पड़यो पोखणो छें एण भेप मे रे,
 जाल मांढ्यो छें मोह मिथ्यात रो रे,
 फदे उराग कर्म त्यारें उदें हुआ रे,
 पापें गरीयो भरो फूटे गयो रे,
 जब राध श्रावक शारा लाजां गरें रे,
 जब दीप बांगण री मन करें घणी रे,
 त्यानिं परगम रो उर तों मूल धीरें नही रे,
 पड़वा साध श्रावक समला बूटे गया रे,
 फोड़ श्रावक यांरा ते खावें मांगनें रे,
 तिण मांहे रीर जाणें छें आपरो रे,
 उ मोल त्यावें पी राकर सुंखाडी रे,
 उ पिण खावें छें नाम गांनें जीतो रे,
 लेवें छें अउत तणों तो माल रे।
 त्यामें भव भवमें होरी घणा हुवाल रे ॥ २२ ॥
 नही छोड़ें मुरदादिक रो घन माल रे।
 वा चोडे देखों पुनुरां री चाल रे ॥ २३ ॥
 आप तों होय जावें छें दूर रे।
 गमटी जाणेंगे वोलें कूड रे ॥ २४ ॥
 पिण ओर रो गेल नही तिलगात रे।
 तो सायां रो परिग्रहो छे साम्यात रे ॥ २५ ॥
 ते मिल नें मेलें ठिकाणों जोय रे।
 ते लोगां में चावो न करे कोय रे ॥ २६ ॥
 त्यां समलां रो जाणें छें साध नांग रे।
 ओ समलोद आसी म्हारि काम रे ॥ २७ ॥
 चाहीजे ते बेंहरी ल्यावें जाण रे।
 तिणरो लेशो उ जाणें ते परमाण रे ॥ २८ ॥
 चले काठ गांपण नें मांठी काम रे।
 तिण परिग्रह नें लेवा न दें तांग रे ॥ २९ ॥
 नें लेवा दे लोज भागण रे काम रे।
 विण मुतलज लेवा न दे तांग रे ॥ ३० ॥
 जोरीदावें बेंठ छें गुंठों मार रे।
 पिण छानें छानें भायां में करे पुकार रे ॥ ३१ ॥
 टापो मलायो लोकां माहि रे।
 तिण मांहे पछें अग्यांगी आय रे ॥ ३२ ॥
 जब चात चावी हुइ लोकां माहि रे।
 हिवें दीप छिपाया न छिपें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 लोकां में हुचों जाण फितूर रे।
 हिवें विमविध सूं चोडें बोलें कूड रे ॥ ३४ ॥
 शूठ बोले दीपां नें देवें दाव रे।
 ते चिह्नगति में होरी घणा खुराव रे ॥ ३५ ॥
 तिणनें दरायें रोकड दाग रे।
 एणरें होरी ते आसी म्हारें गांग रे ॥ ३६ ॥
 चले चिरक पिण मेवा नें गिसठांन रे।
 गुर नें पिण देवें अडलक दांग रे ॥ ३७ ॥

तिणरे निठ जाअें खातां देतां थकां रे, तो फेर सखु करें दातार रे ।
 कानी कानी गांमां नगरां थकी रे, परिग्रह मेलण ने करें तयार रे ॥ ३८ ॥
 तिणें फेर दरावें कर कर आंमना रे, बले उण कना थी ल्यावें छे आप रे ।
 घोरां कुत्ती मिली ज्यूं मिल गया रे, ज्यूं यारे पिण आकर राखी छे थाप रे ॥ ३९ ॥
 किणरे दोय सीख्यां रे सोदों वेचणो रे, जब एक जणों वणें दलाल रे ।
 गराग ठगणने कपट दगों करें रे, ये पिण इण विच ठग ल्यावे माल रे ॥ ४० ॥
 मिनष आंतरीयो जूतो घुरड्ढकें रे, घन उदके रांक गरीब ने ताहि रे ।
 ते पिण दरावे तिण श्रावक भणी रे, तिणरी पिण आसा छे मन माहि रे ॥ ४१ ॥
 हूं कहि कहि ने बले कितरो कहुं रे, इण भेष माहे छें घोर अंधार रे ।
 त्यांरा श्रावक भोला ने समझ पडे नही रे, ते पिण बूडे छें त्यांरी लार रे ॥ ४२ ॥
 त्यांमें दोष बतावें थानक तणो रे, जब भोला ने किण विष दें भरमाय रे ।
 कहे थानक चाल्या छे अठारे जातरा रे, तिणसूं म्हे पिण रहां छां थानक माय रे ॥ ४३ ॥
 झम कहि कहि दोषीला थानक भोगवे रे, गाला गोलो कर देवे ताय रे ।
 हिंवें अठारे जातना थानक तेहनो रे, जू जूओ नांम सुणों चितल्याय रे ॥ ४४ ॥
 देवरो सभा जायगा पोतणी रे, परब्राजक नों कह्यो असरांम रे ।
 रूप हेठें पिण साब उतरे रे, अस्त्री ने पुरुष रमवाना आराध रे ॥ ४५ ॥
 गुफा ने लोहारादिक नी साला मझे रे, बले गुफा परवत नी हुवें रसाल रे ।
 चोह कमावे तिण ठांमें पिण उतरे रे, विरष व्यापत उद्यान ने गडसाल रे ॥ ४६ ॥
 क्रियाणासाला ने जगने मंडप मझे रे, सूनो घर नें मसांण छत्री माहि रे ।
 परवत घरनें बले हाट मे रे, इत्यादिक जाचीने रहे तिण माहि रे ॥ ४७ ॥
 यांमें दोषीला थानक तो एको नही रे, ए सगलाइ वीर कह्या छे सिष्ट रे ।
 त्यामे साधरो तो थानक चाल्यो नही रे, थानक मांडीने वेठा ते भिष्ट रे ॥ ४८ ॥
 थानक तो कहे छे अठारे जातरा रे, अें वाखवार कहें किण कांम रे ।
 दोषीला थानक रा दोष छियायवा रे, बले दोषीला सेवण रा परिणांम रे ॥ ४९ ॥
 भोला ने भरमावें कपट दगों करी रे, तिणसूं भोला जाणे थानक निरदोष रे ।
 पिण मन माहे मूल न जाणे सुभ्रता रे, यां विकलां ने किण विष होसी मोखरे ॥ ५० ॥
 भेषघारी भागल तूटल ओलवायवा रे, जोड कीषी छें सोजत सहर मभार रे ।
 संवत अठारे ने बरस तेपने रे, आसोज विद इग्यारस ने मंगलवार रे ॥ ५१ ॥

दुहा

आवाकर्मों नें उदेसीक जे क्रीयों, ते तों साव नें कल्पें नांहि ।
 भोगवें त्यांनै भिद्यी कह्या, नहीं साव तणी पांत मांहि ॥ १ ॥
 आवाकर्मों उदेसीक भोगवें, त्यांनै नपेचा श्री भगवान ।
 त्यांनै कृण कृण कहि वतलावीयें, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ २ ॥

दाल

[मदिद्यल जिन ३०]

आवाकर्मों उदेसीक भोगवें त्यांनै, निश्चें कह्या अणाचारी ।
 दसवीकालिक तीजे अथेनै, तिणमें संका म जाणों लिंगारी रे ।
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, एहवा कुगुर छें हीण आचारी रे ।
 त्यांनै वांघ्रा हुवें षणी खुवारी* ॥ १ ॥

आवाकर्मों उदेसीक भोगवें त्यांनै, भिष्ट कह्या भगवंत ।
 दसवीकालिक रें छठें अथेनै, ते निरणों करों मतवंत रे ॥ २ ॥

आवाकर्मों उदेसीक भोगवें त्यांनै, कह्या छें गृहस्थ नें भेषवारी ।
 माहा सावद्य क्रिरीया लागी कही त्यांनै, आचारंग सेचा अथेन मकारी रे ॥ ३ ॥

आवाकर्मों उदेसीक भोगवें त्यांनै, भागा छहू व्रत जाणों ।
 आचारंग दूजा अथेन रें छठें उदेसें, तिहां जोय करों पिछांगो रे ॥ ४ ॥

आवाकर्मों उदेसीक भोगवें त्यांनै, नरकगामी कह्या भगवान ।
 ते उत्तरावनेरे वीसमें अथेनै, ते निरणों करों वृषवान रे ॥ ५ ॥

आवाकर्मों भोगवीयां अवोगति जावें, बले कह्यो छें अनंत संसारी ।
 भगोती पहिला सतक रें नवमें उद्देवें, तिहां बोहत कह्यो विस्तारी रे ॥ ६ ॥

आवाकर्मों उदेसीक न कल्पें ते लेवें, तिणमें छें मोटी खोड ।
 आचारंग रें पहलें सुतखवें, तिणमें कहू दीयो भगवंत चोर रे ॥ ७ ॥

आवाकर्मों एकवार भोगवें, तिणमें चोमासी प्रायच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणरा प्रायच्छित रो कांड कहणों रे ॥ ८ ॥

आवाकर्मों नें एकवार भोगवें, तिणमें सबलों दोषण लागों ।
 सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणमें प्राच्छित रों नहीं धागों रे ॥ ९ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधा रे काजे थानक दहें लीपें जद, लाखां कोडां गमें तस जीवां नें माख्या, अनेक तस जीवा ने जीवां माख्या, कुगुरां काजें जीव इण विघ भारें, सास उसास रंधी तस जीव नें माख्यां, दसासतखंघ सुतर में कह्यो छें, चिगटरो तिरको न्हाखें तिण ठामे, तिहां गार दड्यां लीप्यां दर रुंधाय, पूतीकर्म भोगवें तिण साघ ने, दोय पक्ष तणो सेवणहार कह्यो छें, तो पूतीकर्म दोष विचे आघाकर्मी, सदा निरंतर आघाकर्मी सेवे छे, आघाकर्मी थानक जाण जांच सेवे छे, त्यांरे तो माहामोहणी कर्म बंधे छे, आघाकर्मी थानक जाण जाणनें सेवे, मिश्रभाषा बोले महामोहणी बांधे, आघाकर्मी थानक जाण जाणनें सेवे, त्यांरा श्रावक पिण त्यांरी साल भरें छें, आघाकर्मी तो थानक सेवे उघाडो, त्यांरा जेसाइ सांमी ने जेसाइ सेवग, केइ श्रावक पिण त्यांरा भारीकर्मा, आघाकर्मी नें निरदोष कहें छे, आघाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, ठाणाअंग दसमें ठाणे कह्यो अर्थ मे, आघाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, ते सुघ बुघ बाहिरा जीव अग्यांनी, आघाकर्मी रा दोष सुतर सूं बताया, हिवे मोल लीया रा दोष कहूं छूं, मोल रा लीया भोगवें त्यांनें, दसवीकालक रें तीजें अघेनें, मोलरो लीघो भोगवें त्यांनें, उतरावेन रें बीस में अघेनें,

कीड्यां नें माकादिक देवें दाटी ।
 त्यां विकलां ने होसी गति माठी रे ॥ १० ॥
 अनेक जीवां उपर दीधी माटी ।
 त्यांरी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ ११ ॥
 माह मोहणी कर्म वंधाय ।
 ते पिण विकलां ने खबर न काय रे ॥ १२ ॥
 तठे कीड्यां लाखां गमे आवे ।
 लाखांगमे कीड्यां मारी जाय रे ॥ १३ ॥
 कह्यो छें गृहस्थ ने भेषधारी ।
 सुयगडाअंग सुतर मभारी रे ॥ १४ ॥
 दोष विशेष छें भारी ।
 तेतो निश्चे नही अणगारी रे ॥ १५ ॥
 वले साघ वाजे छें अन्हाखी ।
 दसासतखंघ सुतर छें साखी रे ॥ १६ ॥
 पूछ्यां पाधरा बोलणी नावें ।
 कूड कपट सूं काम चलवे रे ॥ १७ ॥
 पूछ्यां थकां वोलें कूड ।
 ते पिण गया बहती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 वले भूठ वोलें जाण जाण ।
 त्यांरो बिगड्यो छें जावक धाण रे ॥ १९ ॥
 भूठ बोलता न डरें लिंगार ।
 ते वूड गया कालीघार रे ॥ २० ॥
 साघ सरवें ते निश्चें मिथ्याती ।
 मूढा तणी म जाणों वाती रे ॥ २१ ॥
 साघ सरवे त्यांरें भारी कर्मो ।
 ते किम पामे जिण घर्मो रे ॥ २२ ॥
 वले सुतर मे दोष अनेक ।
 सुणजो आंग ववेक रे ॥ २३ ॥
 निश्चे कहाा अणाचारी ।
 तिणमे संका म जाणों लिंगारी रे ॥ २४ ॥
 नरकगामी कहाा भगवंत ।
 ते निरणों करो मतवंत रे ॥ २५ ॥

मोलरो लीयो नहीं कल्पें ते वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड ।
 कह्यो छें आचारंग रे पहिलें सतखेंचें, तिणनें कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ २६ ॥
 मोलरो लीयो भोगवें त्यानें, भिष्ट कहा भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अवेने, ते निरणो करो मतवंत रे ॥ २७ ॥
 मोल रो लीयो भोगवें त्यांरा, सुमत गुपत महाव्रत भागा ।
 नसीत रें उगणीस में उदेगें, व्रत विहुणा छें नागा रे ॥ २८ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्राच्छित देणो ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रों नहीं परमाणो रे ॥ २९ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागो ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रो नहीं यागो रे ॥ ३० ॥
 मोल लीघा रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर माहे छें अनेक ।
 हिवें नित पिंड वेंहत्यां रा दोष कहूं छूं, ते सुणजो आंग ववेक रे ॥ ३१ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें निश्चें कहा अणाचारी ।
 दसवीकालक रे तीजे अवेनें, तिणमें संका म जाणो ल्गिारी रे ॥ ३२ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें भिष्ट कहा भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अवेनें, ते निरणो करो मतवंत रे ॥ ३३ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें नरक गांभी कहा भगवान ।
 उत्तरावेन रें वीसमें अवेनें, ते निरणो करो बुधवान रे ॥ ३४ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड ।
 आचारंग रे पहिलें सतखेंचें, कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ३५ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणनें मासीक प्राच्छित देणो ।
 पिण सदा निरंतर वेंहरे तिणनें, प्राच्छित रों नहीं प्रमाणो रे ॥ ३६ ॥
 कोइ भेषवारी भागल नित रो नित वेंहरे, एकण घर रों आहार ।
 त्यानें पूछ्यां थका पाघरा नहीं वोलें, भूठ बोलें विविध प्रकार रे ॥ ३७ ॥
 नित को एकण घर रो धोवण तो वेंहरां, नित पांणी न वेंहरां ल्गिार ।
 धोवण में च्यार आहार म्हे न गिणें, एहवो भेषवाच्यां रे अंधार रे ॥ ३८ ॥
 तेहीज नित नित कलाल रा घर सूं, वेंहर ल्यावें छें उंनो पांणी ।
 चोडे घाडें पीढ्यां लग वेंहरतां आवें, वले भूठ वोलें जाण जांणी रे ॥ ३९ ॥
 चोडें भूठ सभा में बोल्यो, नितका पांणी न वेंहरां तांम ।
 तिण भूठ तणो उघाड कीयो जब, लीयो वडां रो नाम रे ॥ ४० ॥
 जो साचो हुवें तो सूतर माहे काड वतावत, वडां रों नहीं लेतो नाम ।
 तिणरा वडेरा तो अणाचारी उघाडा, त्यामें सावणो नहीं तांम रे ॥ ४१ ॥

भगवंत भाष्या सूतर ते उथापे, बडां लारे सेवे अणाचार ।
 ते बूड गया बडा सहित अग्यांनी, छिग त्यारो जमवार रे ॥ ४२ ॥
 वीहार करे जब नित को वेंहरे, ते नितको वेहख्यो गिणे नाही ।
 इण विघ कूड कपट करे नित वेंहरे, ताजो आहार लेवारे ताई रे ॥ ४३ ॥
 वीहार तणों नांम लेने अग्यांनी, चोडे सेवे अणाचार ।
 आ आप छादे थाप कीघो अणहंती, ते विटल हुआ वेकार रे ॥ ४४ ॥
 केइ तों नित रो नित एकण घर नो, वेंहरे घोवण ने पांणी ।
 ओ पिण उघाडो अणाचार सेवे, निडर थका जांग जांणी रे ॥ ४५ ॥
 केइ कहे म्हारे वंधी गोचरी छें, तठें तो म्हें एकंतर जावो ।
 वाकी फुटार घर मोकलाय देवां म्हे, तिहा थो मनमाने सोइ ल्यावों ॥ ४६ ॥
 जको वेंहरे तिणनें नही जाणो, वीजां रे अटकाव छे नाही ।
 इण विघ कूड कपट करे नित वेहरे, भोगवे सर्व टोंला मांही रे ॥ ४७ ॥
 एकण टोला री एकण गांव मांही, ते जुदी जुदी थानक उत्तरे छे ।
 आरज्यां रहे छें अनेक, सगल्यां रे समोग छे एक रे ॥ ४८ ॥
 ते आपरे गोचरी जू जूड जावे, ओर रा लीया घर नही टाले ।
 ते सगली जणी आहार पांणी ल्याए, गुर ने आंग दिखा छे रे ॥ ४९ ॥
 सगलां रो आय्यो आहार गुर भोगवे छे, नित पिड रो न करे टालों ।
 एहवा भेषघारी भागल साध वाजे, त्यां आत्मा ने लगायो कालो रे ॥ ५० ॥
 एक टोला रा नित जू जूओ वेहरे, एकण घर रो आहार पांणी ।
 त्या विकला ने साध सरघे छे मूरख, ते पूरा छे मूढ अयांणी रे ॥ ५१ ॥
 केइ भेषघाख्यां रे इग्यारे संभोग, एक भेलो न करे आहार ।
 बघीयो घटीयो आहार देवे लेवे, बले माहोमा करे मनवार रे ॥ ५२ ॥
 आहार तणा संभोग ने तोख्यो, ते पिण खावा रे काज ।
 एक माले आहार जू जूओ करता, निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 आहार पाणी माहोमा देवे लेवे, बले कहे म्हारे नही संभोग ।
 एहवा भूखोला भागल भेषघारी, त्यां लागों जोगने रोग रे ॥ ५४ ॥
 आघाकर्मी नें मोल रो लीघों, नितको एकण घर रों आहार ।
 ए तीनां दोषां रो फल ओलखायो, अल्प मात्त कह्यो विस्तार रे ॥ ५५ ॥
 आघाकर्मी नें मोलरो लीघो, नही वहरणों करडे काम ।
 निरदोषण ने निर्पिड आहार, कारण पख्यां लेणो कह्यो तांम रे ॥ ५६ ॥
 आघाकर्मी नें मोलरो लीघों, ओं तो निस्चे उघाडो असुघ ।
 नित पिड तो ढीला परता जांणी वरज्या, आ तीथंकरां नी वुध ॥ ५७ ॥

भेषधारी तो, दोष अनेक सेवे छें, ते पूरा कहा न जाय ।
 वले साधपणा रो नाम धरावे, ते भोलां ने खबर न काय रे ॥ ५८ ॥
 अें तीनूं दोष तों जाण जाण ने सेवे, वले वद वद ने बोले कूड ।
 त्यांरो घाण रो घाण बिगड गयो जाबक, ते गया वेहती रे पूर रे ॥ ५९ ॥
 अें तीन दोष ओलखावण काजे, जोड कीधी छें पाली मभार ।
 संवत आठारे पचावन वरसे, भादरवा विद दसम बुधवार रे ॥ ६० ॥

वानरा पारगा रो तो निरु करेनें,
 तिमनें तपसी तगों भाव भेले अयांनी,
 पाछली रतरा उठ सवेरा,
 उतावळ नीपनावें असपाविक,
 कोइ तो घनागरों कर राखे,
 कोइ सूठ कूटेगें करे अलोइ,
 कोइ वृष उगोकर बल्लो नेले,
 कोइ हाट धकी घरे आण राखे,
 इत्यादि अनेक असुष वरवां नें,
 असुष नें सुष करता नहीं करपे,
 त्यांरा गुर पिग त्यानें तेंसाइ जाणें,
 सुष असुष लेता नहीं सके,
 साधां नें दान देवाने काजे,
 ते तो दोष क्यालीस नें दोष छठों छे,
 आणंद वाद दे श्रावक अनेक हुआ छे,
 त्यां साधां नें दान देवारे काजे,
 तपसी तग पारगा रे दिन,
 आछो आछो आहार देता जागें दिन भर,
 वास वास नें घर लांग पातला हुवे ते,
 वास वास माहे आहार आछो देवे छे,
 समवांगी गोचरी नें छोडेनें,
 एहुवा नेपचारी पेटनरा छे पायी,
 कवा नेटके घर आहार आछों न देवे,
 रसप्रीवी काजों आहार गवेपे,
 तपसी रे तों आहार अल्प चाहीजे,
 तिम तपसी तना नारगा रे दिन,
 उग दिन तो तपसी रे ओले सगला
 वांती वांती मूं घर संमाल संभले,
 ते आहार तपसी नें तपसी रा मनेंगी,
 उग तपसी करे मगला हुआ त्रिस्ता,
 तपसी करे सगलाइ त्रिस्ता हुआ,
 मुहनी वाडेनें मेव लजयो.

वारन करे छे विविध प्रकार ।
 गुर सहित बूडा कालीवार रे ॥ ६ ॥
 ताकीद मूं चूल् घडवे ।
 जाणें रखे तपसी किरावे रे ॥ ७ ॥
 कोइ करे सीराविक तान ।
 तपसी नें वेहरावग रे काम रे ॥ ८ ॥
 कोइ मोळ रोई जावे तान ।
 तपसी नें वेहरावग कान रे ॥ ९ ॥
 आगा पाछा नेगे राखे तान ।
 वेहरावग रा अंग परिमाण रे ॥ १० ॥
 असुष वेहरता संक नहीं जाणें ।
 त्यां चित दीयो छे कागि रे ॥ ११ ॥
 प्रावणा आधा पाछा जीमावे ।
 ज्यू जें पारगों साथे बगावे रे ॥ १२ ॥
 त्यानें मुतर नाहे क्वांग्या ।
 पारगा साधां साथे न काम्य रे ॥ १३ ॥
 सामग्री ना घर मोटका जांग ।
 पातरा माहे जांग रे ॥ १४ ॥
 त्यानें तों देवे दल ।
 त्यां घर जावे संमाल २ रे ॥ १५ ॥
 यां गध गोचरी नंडी ।
 त्यांरी त्रिहंगति नें होनी भांडी रे ॥ १६ ॥
 तो निग त्रिप घर वेहरे नंडी ।
 जाना वेडा त्यांरा घट माहे रे ॥ १७ ॥
 ने आवे घोडा घर नसरो ।
 मगला रक्षा छे मूंहा फाडे रे ॥ १८ ॥
 ल्यावे मगल आहार ।
 जाणें पूजनों मांडयो तेवार रे ॥ १९ ॥
 निल्ले सगलाई ल्यावे ।
 त्रिगुं तपसी तना गुन रावे रे ॥ २० ॥
 जनें काज हुआ मूं निहाल ।
 नांडनें नाटनीया वाणें क्यार रे ॥ २१ ॥

नाटकीयो वरत उपर खेले, नाच अनेक विघ आणे ।
 नीचे उभा ते करे घीग घीगा, ए पिण दांन माहे सीर जाणे ॥ २२ ॥
 नीचला घीग घीगा तों कीधा घणाड, पिण दांन तो नाच साहं आवे ।
 दांन आयें ते नाटकीयो नाच्यो तिणमूं, पिण मिल नें सगलाड खावे ॥ २३ ॥
 नाटकीयो वरत उपर नाच्यो ते, सगला कुटंब रो काम चन्नावे ।
 ज्यूं यारे पिण लांबी तपसा करे ते, पारणे सारा ताजो खावे ॥ २४ ॥
 लांबी तपसा रे पारणे तपसी जाणेने, गमतो आहार आणेने देंगो ।
 वले गोचरी मे गमतों आहार जाणेने, वले मांगी मांगीने लोणो रे ॥ २५ ॥
 गरदा गिलोण रोगी तपसी रे कारण, गमतो आहार गवेपे ते लोखे ।
 यारे ओलें भेषचारी सगला, ताजो ताजो आहार गवेपे ॥ २६ ॥
 इण रीते ताक ताक आहार गवेपे, ते पिण खासी सराय सराय ।
 एहवा भेषवाख्यां में चारित नांही, चारित हुवे त्यारो कोयला थाय रे ॥ २७ ॥
 इह लोक रा अर्थी तपसा करे त्यारा, चोखा नही परणाम ।
 ते तपसा ने परगट करदे लोका मे, खावा पीवा जस कीरत कांम रे ॥ २८ ॥
 साधु ने लांबो तप करे जब, प्रछन छति करणो ।
 ग्रहस्य ने कहणो जिण वरज्यो, तिणरो आक्सग में निरणों रे ॥ २९ ॥
 जोग संग्रह ना वोळ वतीस चाल्या छे, तिण मे सातमो वोळ पिछणो ।
 अजाण्यो तप साधु ने करणो, अग्यात कुल गोचरी जाणो रे ॥ ३० ॥
 वले समवाअंग चोथा अंग माहे, जोग संग्रह ना वोळ वतीस ।
 त्यां पिण अजाण्यो तप करणो, इम भाष गया जगदीस रे ॥ ३१ ॥
 वले उत्तराधेन इगतीस मे अवेने, प्रश्नव्याकरण दसमा अवेन माहि ।
 तिहां पिण वतीस जोग संग्रह छे, नांम मात्र कह्या जिणराय रे ॥ ३२ ॥
 वेसाली नगरी वीर पघाख्या, तिहा पचल दीया माम च्यार ।
 त्यां पिण तपसा ने पारणा रो दिन, किणने कह्यो न दीसें दिगार रे ॥ ३३ ॥
 त्यांनै दांन देवा री भावना भाड, च्यारूं महीना जीर्ण मेठ ।
 छांनी तपसा भगवंते कीची, थो सुघ ववहार छे नेट ॥ ३४ ॥
 अभिग्रह करे ते न कहे लोकां ने, जाणे रळे कोऽ दोष न्गायें ।
 ज्यू लांबी तपसा रो पारणों जाणे जब, केई भोला अमुघ जेह्गवे ॥ ३५ ॥
 एक आदि देड दातरी तपसा करे ते, ग्रहस्य ने न वहे तांम ।
 ग्रहस्य ने कह्यां दोष लागेतो जाणो, लांबी तपसा पिण जांनो आंम ॥ ३६ ॥
 साधु रे महीना रो पारणो जाण्यो, वाऽ मीरो जन्ने देंगवे ।
 तिणरी जायगा में पारणो करे साधु, तिणरो मोंना रें वास्यो न्गमो रे ॥ ३७ ॥

कर्म जोगें साव नें वमण हूइ जब,
 जब आप तणो अवगुण पिण सुइयों,
 गाढ़ों निरणों करने सीरो न लीघों,
 ते आहार कीयां म्हारी भिष्ट हुइ मत,
 बाइ तो सीरों करे कर्म बांघ्या,
 आ बाइ तो दोनूं प्रकारें बूढी,
 म्हारा पारणा रो दिन बाइ जाण्यो तो,
 ए सकली विचार तिहां थी निकलीयो,
 बाइ ने साच बोलाए साच,
 पछें सगली बात सुणाए बाइ नें,
 सीरो असुघ खायें तिणसूं बारलो लेगों,
 इण पाप थकी परभव दुखपाती,
 आ कथा तो भेषधारी जाणें छें,
 पिण पोंतें तो तपसा लांबी करे जब,
 लांबी तपसा नें पारणा रो दिन,
 पेटभरा इह लोक रा अर्थी,
 बाइ तों पारणो विना जाणयां जाण्यो,
 तो आपरें मुतलव तपसा जणावे,
 गाला गोलो करे साव असुघ लेसी,
 ते दातार नें लेवाल वेहुइ,
 इह लोक रें अर्थे तपनही कारणों,
 कीरत सलागादिक रे पिण अर्थे न करणों,
 तप करणों कह्यो एक निरजरा नें अर्थे,
 जे तप करने पमासी लोकां में,
 केई इह लोक रें अर्थे करे त्यांसूं,
 परगट लोकां में कीयां विण तिणरो,
 इह लोक रें अर्थे तप करने,
 मोटी तपसा सूं लेने पारणा तांइ,
 पांच सात तांइ मोटो तप नहीं दीसे,
 एहवो मोटको तप लोक जाणें तो,
 मोटा तप रो पारणों कह्यां लोकां में,
 दोष लागतो उघाडों दीसे तिणसूं,

साव रो चित्त आयो ठिकाणें ।
 आहार नें पिण असुघ जाणें रे ॥ ३३ ॥
 उण पिण सीरों मोनें कर दीघों ।
 तिणरो बारलों चोर में लीघो रे ॥ ३६ ॥
 वले बारलों दीघो खोयों ।
 म्हें पिण चारित इवोयो रे ॥ ४० ॥
 तिणसूं ए कर्म हूवों भारी ।
 आयों बाइ रा घर मभारी ॥ ४१ ॥
 बारलों पाछों दीघों ताय ।
 ओलंभो दीयो तिणनें समझाय रे ॥ ४२ ॥
 जब तूं तो ओर रे माथें देती ।
 अठे पिण घणा घमेडा लेती ॥ ४३ ॥
 ते कहि कहि घणी दिढावें ।
 घणा लोकां नें तुरत जणावे रे ॥ ४४ ॥
 घणा लोकां में देवें फेलाइ ।
 जाणें इवडवी चोडे वजाइ रे ॥ ४५ ॥
 तिणसूं हूचो विगाडो ।
 ते भव भव होसी खुवारो रे ॥ ४६ ॥
 असुघ आहार बाइ ज्यूं देसी ।
 आगे घणा घमेडा लेसी रे ॥ ४७ ॥
 परलोक रें अर्थे न करणों ।
 दसवीकालक नव में अघेन निरणों ॥ ४८ ॥
 ते लोकां में क्यां नें पमासी ।
 तिणरा फल आछा किम पासी ॥ ४९ ॥
 छानें केम रहवायो ।
 जाणें पेट आफर गयो ताह्यो रे ॥ ५० ॥
 ठाला वादल ज्यूं करे ओगाज ।
 जाणे दीवकी रंही छें वांज रे ॥ ५१ ॥
 मोटो तो पंख मासादिक जाणो ।
 दोष लागण रो दीसें ठिकाणो रे ॥ ५२ ॥
 गुण तो कांइ न दीसें ।
 छानों तप कह्यो जगदीसें रे ॥ ५३ ॥

कोई भेषधारी भागल फिरे एकेलो, ते तपसी रो नांम धरावे ।
 वेलें वेलें पारणों कहेकहे, लोकां में ठागो चलावें रे ॥ ५४ ॥
 तपसी तणों नाम ले ले कपटी, ठग ठग लोकां रा माल खावें ।
 जाणें मोनें तपसी लोक जाणे तो, आछो आछो आहार वेंहरावें रे ॥ ५५ ॥
 तिणरी भोला लोकां नें तो ठीक नहीं छें, तपसी जाण आछो वेंहरावें ।
 इणरा तप तणो ठागों नहीं जाणें, तिणसूं लोक ठागवे रे ॥ ५६ ॥
 ते डील तणों घट पुष्ट थयो छे, बले लुटपुट डीला सनूरों ।
 बले चाल पिण तिणरी छंठी देखे, बुधवंत जाण लीयो फिनूरों रे ॥ ५७ ॥
 लूखों सूकों सरीर तपसी तणो हुवे, बले सरीर हुवे तेज रहीत ।
 बले तपसी तणा लोही मांस ढीला हुवे, चलगत हुवे वेराग सहीत रे ॥ ५८ ॥
 केइ चुतर विचक्षण डाहा हुवें ते, दोयां नें रुडी रीत पिछाणें ।
 तपसी नें तों तपसी जाणेले, कपटी ने कूडो जाणे रे ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषधारी भागल भिष्टी नें, एहवों भागल भिष्टी मिले आणों ।
 तो अँ ठग ठगें माल खावें लोकां रा, त्यारी भोला ने नहीं पिछाणो रे ॥ ६० ॥
 भेषधार्यां तणा किरतब ओलखावण, जोड कीवी नाथदुवारा मभार ।
 समत अठारें वरस छपनें, काती सुद आठम मंगलवार रे ॥ ६१ ॥



ढल ३१

[प्रभव०]

मोची तणों थो दीकरो, ते गयों देसांतर तांम ।
 आगें काल कीयों राजा तिहां, मोची गयों तिण ठंम ॥ १ ॥
 पुत्र नहीं तिण राय नें, जब किणनें बेसाणें पाट ।
 अमराव सहू नें मित्रवी, मिलिया थाटो थाट ॥ २ ॥
 माहो माहि मिसलत करी, हथणी सिणगारो आज ।
 कुंवरी बरमाला घालसी, तिणनें बेसाणां राज ॥ ३ ॥
 ए वात ठेंहराइ मिलीनें सहू, हिवे मेल्या राणोंराण ।
 तिण स्वयंवर मंडप मभे, मोची पिण उभों आण ॥ ४ ॥
 तिण मोची रा गला मभे, कुंवरी घाली बरमाल ।
 दीठों रूप रलीयांमणों, रायपुत्र जाण्यो सुखमाल ॥ ५ ॥
 मंत्रीसरां मोची नें पूछीयों, तुमनों कुण कुल कुण जात ।
 जब इण कह्यो खत्री कुल जात छां, उंचो गोत कह्यो बिल्यात ॥ ६ ॥
 इम सांभल सहू हरखीया, परणाइ राजकुमारी ।
 राज बेसाणें राजा कीयों, मोची नें तिणवारी ॥ ७ ॥
 मात पिता छे मोची तणा, तिण देस में पडीयो काल ।
 मउ साथे आया तिण नगरीयें, तिहां मोची बेठों सरवर पाल ॥ ८ ॥
 तिण मातपिता नें ओलखे, पगां पख्यो छें आय ।
 समभाए ल्यायों सहू में, त्यां पिण दीधी जात छिपाय ॥ ९ ॥
 मोची मातपिता सहीत सूं, सुखे राज करे तिणवार ।
 पिण जात सभाव मिटे नहीं, त्यांरों त्यांसूं पडीयो उवाड ॥ १० ॥
 बहुना पगनी मोचडी, तिणरी कूट गइ छें तूट ।
 जब सुसरें तिण मोचडी तणी, चोखी लीधी कूट ॥ ११ ॥
 कूटी ले तो देखीयों, सुसरा नें तिणवार ।
 सांसो पडीयो तेहनें, जाण्यो खाधी बात विकार ॥ १२ ॥
 राजा दीसे रलीयांमणों, मन मान्यो मिलीयो मेल ।
 कूटी सांह्यो माली जाणीयो, कयूं दीसें जात में भेल ॥ १३ ॥
 कूटी अहलाणें जाणीयो, आ जात दीसें छें पोची ।
 ओ राज अंस दीसें नहीं, सकेत जात रो मोची ॥ १४ ॥

आचार री चौपई : ढाल ३१

तिण रात धणी नें पूछीयो, एक अरज हमारी सुणसों ।
 हुवे जेसी फुरमावो मो कने, आप जात रा कुणसों ॥ १५ ॥
 तूं तो म्हारी अस्त्री, हू छू थारो वर ।
 पाणी तो पीघा पछें, हिंवे काई पूछे छे घर ॥ १६ ॥
 जब बलती रायकुवरी कहे, हू अस्त्री ने थें वर ।
 जो मेल हुवे तुम जात मे, तो जातो दीसे घर ॥ १७ ॥
 जो पहली मोंनें जताय दो, तो काइ बांधे लेउं बात ।
 परधान कांमदार प्रोहत भणी, तेडाउं रातोरात ॥ १८ ॥
 इणने वार वार पूछ्यो घणो, जब ओ पिण उडो आलोची ।
 थारे करणों वेसो कर लीजो, हू छू जात रो पिण मोची ॥ १९ ॥
 जब सातोरात बोलवीयो, रायकुवरी परधान ।
 विगडी बात सुधारलों तो, थें पूरा बुधवानं ॥ २० ॥
 वले राजा कहे परधान नें, तूं गलो हमारो काट ।
 हिंवे ढीळ म कर इण काम री, किण री मत जोए वाट ॥ २१ ॥
 जब परधान कहे किण कारणें, इसडी बात करो छो पोची ।
 जब राजा कहे हूं राजा नही, हू छू जात रो मोची ॥ २२ ॥
 आ बात सुणे राजा तणी, परधान पिण पांम्यो हरख ।
 ओ पिण जात हीणो हूंतो, इणरेइ मिट गइ मन धरक ॥ २३ ॥
 ओ इहा देइ बोलीयो, पगभाल रह्यो छे लूंब ।
 मारी चिंता मूल करो मती, हूं जात तणो छूं डूंब ॥ २४ ॥
 जब राज कहे तूं मूठ बोल्लें, रखे पाडे म्हारी आव ।
 जब महिलां मांहे डूंबडे, लेइ बाजाइ रवाव ॥ २५ ॥
 हिंवे तेडावो कांमदार ने, उण सू गाडी वाधो वात ।
 जो आपे चावा हुवां, तो उ करसी दोंयां री घात ॥ २६ ॥
 इणने पिण तेडावीयो, ते पिण आयो रातोरात ।
 राजा परधान कहे तेहने, तूं म्हां दोंयां री कर घात ॥ २७ ॥
 जब कांमदार कहे किण कारणे, इसी कहो थें वात ।
 जब राय परधान दोनू कहे, म्हांरी विगड गइ वात साख्यात ॥ २८ ॥
 हू मोची ओ डूंबडो, म्हे ठगा सूं खाधो राज ।
 हिंवे गलो काट तूं म्हांरो, ज्यूं रहें दोंयां री लज ॥ २९ ॥
 इण बात सुणे दोनूं तणी, कांमदार हरख्यो तिणवार ।
 मिट गइ चिंता तेहनी, हिंवे डर नही रह्यो लिंगार ॥ ३० ॥

थे चिन्ता मत राखो मांहरी, मोसू मत जावो खोबी ।
 थे तो मोची नें डूब छो, हूं पिण जात रो घोबी ॥ ३१ ॥
 जब राजा घोबी नें कहें, रखे बात करें तूं फीटी ।
 जब घोबी महिलां मरुं, दीघी हरष सूं सीटी ॥ ३२ ॥
 हिंवें तीनूं जणां मतों कीयो, हिंवें ल्यावो प्रोहित बोल्या ।
 बात चावी हुवें आपणी, तो धो तीनूं देवें मराय ॥ ३३ ॥
 हिंवें प्रोहित नें बोलवीयो, तिणहीज रात मभार ।
 कहें प्रोहित नें तीनूं जणां, म्हां तीनां नें तूं मार ॥ ३४ ॥
 जब प्रोहित कहें किण कारणें, करूं तीनां री घात ।
 जब कहें तीनूह तेहनें, म्हांरी बिगडी बात साख्यात ॥ ३५ ॥
 हूं राजा तो मोची अछूं, ओ डूब छें परधान ।
 कामदार घोबी हूवों, म्हें तीनूं नही सुधमान ॥ ३६ ॥
 म्हां तीनां नें तूं मारसी, तो म्हांरी सोभा रहसी तांम ।
 उघाड न पडसी लोक मे, सहू सुघरसी काम ॥ ३७ ॥
 ए बात सुणीनें हरखीयो, थे डर मत राखो म्हारों ।
 थे मोची डूब नें घोबी छों, ज्यूं हूं पिण जात रो पीजारों ॥ ३८ ॥
 जब राजा कहें भूठ मत बोलजे, जब काढी पीजण री घाइ ।
 घट धूं धूं करतो बोलीयो, जब संका न रही काइ ॥ ३९ ॥
 ते ठीक अमरावां नें नहीं, यां राज कीयो छें खूब ।
 यां च्यारूं जणां ठागों कीयो, तिणरी बाहर न बूब ॥ ४० ॥
 बले माहोमा एकएकनो, न करें मूल उघाड ।
 जात सघलां री पाडवी, तिणरो डर नहीं रह्यो लिंगार ॥ ४१ ॥
 इण दिष्टतें जांगजों, भेषधारी छें अनेक ।
 ते साध बाजें लोक में, त्यां पेंहर बिगाड्यो भेष ॥ ४२ ॥
 त्यांरा टोला बाजें जू जूवा, जू जूइ सरधा अनेक ।
 त्यांरो आचार पिण छें जू जूजों, पिण काम पड्यां कहें एक ॥ ४३ ॥
 पाणी सगलां माहे मरे, सगला सेवें अणाचार ।
 ते माहोमा सहू मिल गया, त्यांरों करें कुण उघाड ॥ ४४ ॥
 माहोमा सरधा एकएक नी, खोटी जाणें छें अंधकार ।
 पिण खोटा त्यांनें कहिता डरें, जाणें म्हारोइ करेंला उघाड ॥ ४५ ॥
 असाध कहें जो तेहनें, ते पिण मनें कहें असाध ।
 जब उघाड पडें दोयां तणों, तिणसूं न करे छे विषवाद ॥ ४६ ॥

आचार री चौपई ढाल : ३१

ते ठगो चलावें छैं लोक में, ठग ठग खावें लोकां रा माल ।
 ते जासी नरक निगोद में, त्यामें परसी घणा हवाल ॥ ४७ ॥
 माहोमा कहे म्हे सर्व साध छैं, त्याने मन माहे जाणें असाध ।
 एहवा भेषचारी छे तेहने, किण विष होसी समाध ॥ ४८ ॥
 ते माहोमा बंदणा छोडाय दे, वले मुख सूं कहे त्याने साध ।
 एहवा भूठाबोला छैं तेहने, भव भवमे होसी व्याध ॥ ४९ ॥
 ज्यूं यां च्याहं जणा ठागों करी, राज कीयो मोटे मंडांग ।
 ज्यूं अं भेषचारी ठागो करी, माल खावो ल्हेकां रा आंग ॥ ५० ॥
 ज्यूं अं माहोमा च्याहं जणा, कहे माहोमा सुधमान ।
 ज्यूं भेषचारी माहोमा कहे, म्हें सर्व साधू छां गुणखान ॥ ५१ ॥
 ज्यूं अं माहोमा च्याहं जणा, जाणें म्हें छां घणा असुध ।
 ज्यूं भेषचारी माहो माहि में, जाणें म्हे पिण नही छा सुध ॥ ५२ ॥
 ए च्याहं जणा चावा हुवें, तो एकण भव में दुख थाय ।
 पिण भेषचारी दुखिया होसी घणा, त्यारो कह्यो कठा लग जाय ॥ ५३ ॥
 भेषचारी भागल तूटल भणी, त्याने ओलखे जथा तथ बुधवान ।
 त्यारो संग परचो छोडाय दे, घालें घटमें र्यान ॥ ५४ ॥
 रायकुमारी डाही हुंती, तिण कीची त्यांरी पिछाण ।
 कूटी लीची देखनें, मोची लीचो जाण ॥ ५५ ॥
 तिण सरीखो कोइ चुतर होसी, ते करसी पूरी पिछाण ।
 आचार पाडूओ देखनें, भेषचारी लेसी जाण ॥ ५६ ॥
 एक मोची ने परखीयां, तीनूं परख्या तेह ।
 ज्यूं एक टोलाने परखसी, ते सगला परखसी जेह ॥ ५७ ॥

दुहल

ओ दुषड आरु डलंओ, ते कल उतरतु डलं ।
 तलणडें डेडधरल डलगल घणल, डडकत वलण डूंढ अडलंण ॥ १ ॥
 तडलंसूं आओर तूं डलें नहुं, तु डलण नलड धरलवें डलध ।
 कने डलंग रलखें डलधलं तणु, डलंओ व्रत दीडल छे वलरलध ॥ २ ॥
 तडलरल दुष उघलडे तेहसूं, करें छे कओडल रलड ।
 धरणु डलडे डलओर डें, लडवल नें हुड डलवे तडलर-॥ ३ ॥
 तडलरल श्रलवक डलण डेंडल हुवे, गुरलं नें डखलड डखलड ।
 धरणु डरलवण रल तडलरल करें, डेले डलओर रे डलहल ॥ ॡ ॥
 तडलं लओडल छुडुडल लुकलं तणु, वले लओडलु डलध रु डेख ।
 ओ कलणरे डलंकल हुवे, तु अरुवरु लु डेख ॥ ॡ ॥

ढलल

[२ डलवलडल डलन श्रलओल]

तडलरु डललव्रत कुड डलगु सुणें, तलणरु कुड करें उघलड ।
 डड डलध श्रलवक डलल डेला हुड नें, लडवल नें हुड डलड तडलर रे । डलवलडण ।
 तडलने डलध सरधुडुं केड, तडलरल डलगु व्रत नें नेड रे ।
 हुआ ठलल ठलकरल डेड* ॥ १ ॥
 तडलने श्रलवक डलण तेडल हुओ डलललडल, तडलरे नुडलड तणु नहुल नीत ।
 डलओ डूठ तणल नीकलल वलनलड, डूंई डलगुडें डेरलत रे ॥ २ ॥
 ओथु व्रत डलगु कहे छे डलण रु, तलणने तु डेठु रलखें तलहल ।
 ओर ओडलर डणल डलल डेला हुड नें, धरणु डलडु डलओर रे डलहल रे ॥ ३ ॥
 ओ सुध डुध वलनल नलगडल नलरलओल, डलने डलणुडल हुण धरणल ललडक ।
 ते ववेक रल वलकल हुंतलं ओडलरेड, तडलने डेलेडल ठुलल रे नलडक रे ॥ ॡ ॥
 ते ओडलर डणल छे डूख रल करडल, ते आडल डलओर रे डलहल ।
 ते रलड डखुडल छे डलओलडलडलन, तडलं डलसें उडल छे आड रे ॥ ॡ ॥
 थें डुहलरल डलध रु व्रत डलगु कहुु छुं, ते तु दु छुं अणहुंतु आल ।
 हलवे डलओ नें डूठ रल खडर डडुडल, तलणरु कलडण आडल छुं नीकलल रे ॥ ॢ ॥

*डह आंकडु डुरतुडक गलथल के अडन डें ह ।

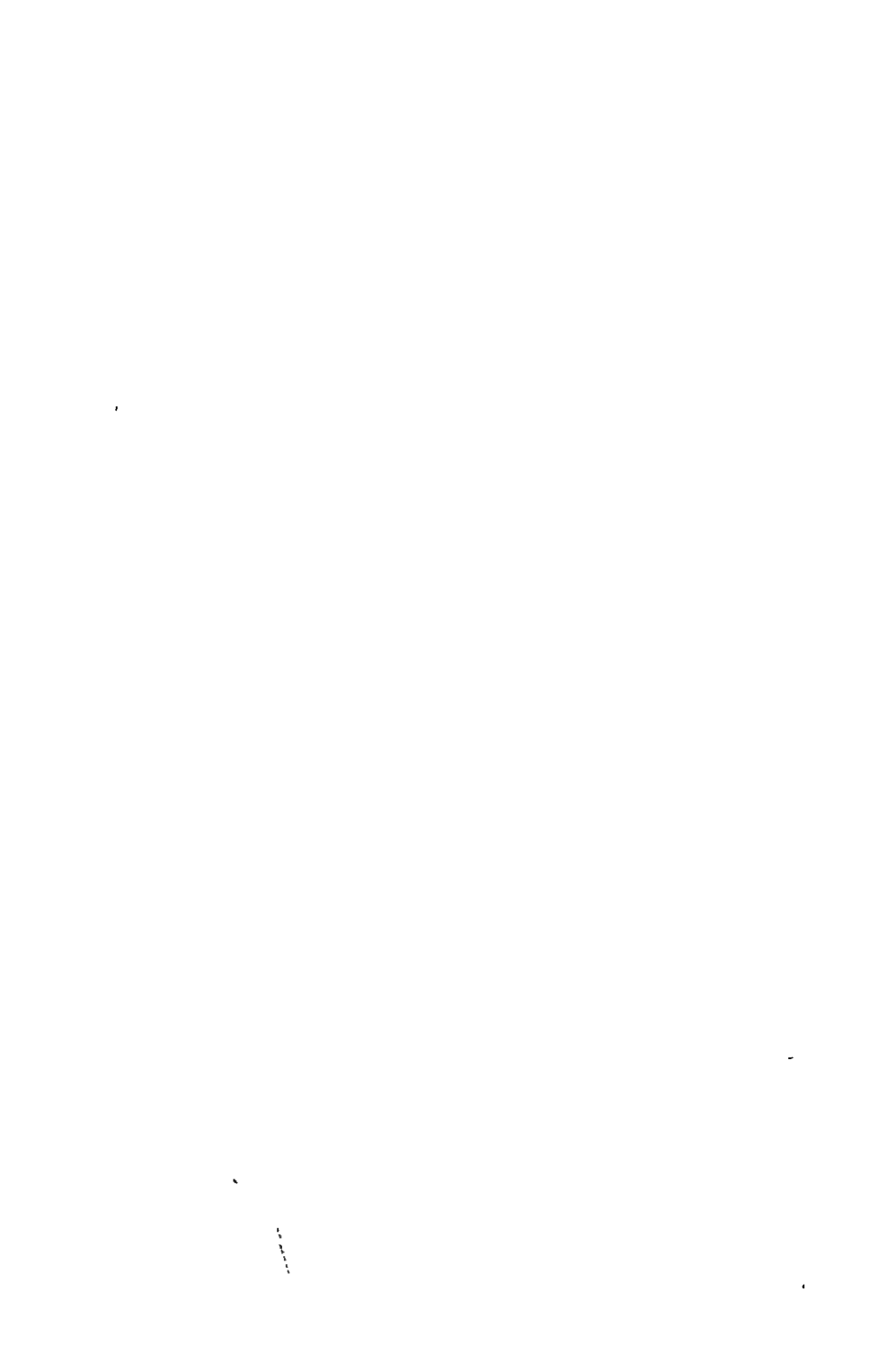
इण वात रो निकाल काढ्यां विण थांनै, च्याळं आहार नहीं खाणो ।
 अनंता सिधा री आण छे थाने, वले तीर्थकरां री आणो रे ॥ ७ ॥
 वले राज री आण छे थाने, मत खाय जो च्याळंद आहार ।
 म्हे पिण च्याळंद आहार न खावां, वो घरणो दियो मरु बाजार रे ॥ ८ ॥
 अनंता सिधा री ने तीर्थकरां री, म्हें आण दीधी छे मरु बाजार ।
 वले राजा री आण दराइ छे थाने, मत खायजो च्याळंद आहार रे ॥ ९ ॥
 मरु बाजार में एहवो घरणो पाखी, घणा लोकां ने कीया भेला ।
 एहवां भेषघारी साध रा भेष माहे, जाणें नाच्या कुब्दी खेला रे ॥ १० ॥
 यांरा साध साधवी ववेक रा विकल, घरणो पारण सू राच्या ।
 भेषघारी इणे दुषम काले, ओघड उघाडा नाच्या रे ॥ ११ ॥
 ज्यांनं अन पाणी खांवा री आण दराइ, ज्यांरी वंछी अकालें घात ।
 मिनां ने मारण रो उपाय कीयो छे, त्यामें साधपणो नही अंसमात रे ॥ १२ ॥
 साध गोचरी जाजें छे तिण घर मे, आणें उभो मिथ्यारी आणो ।
 तिण घर में प्रवेश न करे साध, पडती अंतराय जाणो रे ॥ १३ ॥
 तो सांप्रत त्याने आण दराइ, च्याळं आहार री दीधी अंतराय ।
 उघाडी घात वांछी छे त्यांरी, ते पिण विकलां नें खबर न काय रे ॥ १४ ॥
 भूख रा सेठ जाण्या त्यांनं मेल्या, पेंलां ने भूख रा काचा जाण ।
 ते थोडा में लातर भूठा पर जासी, के छोड देसी अकाले प्राण रे ॥ १५ ॥
 त्यां च्याळं जणां रां नाम दीया लोकां मे, अ तो च्याळं नालां छे भारी ।
 नागण वाघण किंककिला संभूबाण, अ वेस्थां री मारणहारी रे ॥ १६ ॥
 एक तो भेषघारी कहें इम बोल्यो, मुंजरी डोरी सीध री आण ।
 यांरा ने म्हांरा पग भेला बाघ देसां, आघा पाछा न देसां जाण रे ॥ १७ ॥
 एहवी वार्त करे लोकें त्यांरें मूहें, बले ठाम ठाम कहे परपूठे ।
 तो पिण निरलजा भेषघारी, घरणा सू नहीं उठे रे ॥ १८ ॥
 एहवा भारी दोषां री ठीक नहीं छे, त्याने समकत पिण नहीं पावें ।
 ते पिण सांग पेहरे साध वाजें लोकां मे, ते भेष नें थूंही लंजावें रे ॥ १९ ॥
 त्यांनं श्रावक पिण तेहवा इज मिलीया, ते अकार्य करतां कुण पालें ।
 जंसा कुं तेसा आय मिलीया जब, पाघरा किण विघ चाले रे ॥ २० ॥
 धुरसूं ओ हीज अन्याय उघाडो, ते अंतर माहे न देखे ।
 जिणरो व्रत भागो कहें ते नही म्हाडें, बीजा घरणो पाड्यो किण लेवे रे ॥ २१ ॥
 साचो भूडो हुवे तो उणरी उ जाणें, बीजाने पुरी खबर न काय ।
 ते निसेक सूं इणें साचो ठेहरावण, घरणो पाड्यो बाजार रे माय रे ॥ २२ ॥

जिणरा सीलव्रत नें भागो कहेँ छेँ, इणरें बदलेँ बीजा भेषघाख्यां ने, घणां दिनां लग बाजार माहि, इहलोक नें परलोक दोनूइ, इह लोक तो फिट फिट हुवा लोकां में, भेष भेषंतर जात न्यात रें माहि, सुध साध जिणसर ना छेँ त्यांनै, भेषघारी भागल घरणा देसी, एहवा भारी भारी दोष चोडे सेवे, अंतो नागडा निरलज दीसेँ उघाडा, चोवीस तीर्थंकर ना सासण माहे, इण दुषमकाल माहे भेषघाख्यां, जो सुध साध रे किण आल दीयो हुवें, ओर किणहीनेँ दोष न देवें, जो म्हे किणरेइ माथे आल दीयो छेँ, ते आल समें परिणांमां खमीयां, जो इतरी करणी नावें साध सूं, ते च्यारूइ आहार ना त्याग करें नें, इण कलंक उत्तरीयां विण मोनें, जो कलंक न उतरे मारा माथा थी, इण विध साध अणसण करनें, जो कर्म जोगे आल नहीं उतरे तो, जब केई भेषघाख्यां रा श्रावक इम बोल्या, आगेँ तो आल उतारण देवता आवता, तिण सूं आल देवे तिण नें पाघरो करणो, च्यारुं आहार खावा री आंण दराए, भूखां मरसी वले तिरसां मरसी, तिण सूं, म्हांरा साध घरणो पाडे छेँ, यांरा श्रावक पिण एहवा छेँ अग्यांनी, त्यां जिण मारग ओलखीयो नहिं, यांरा श्रावक केइ पावरा बोलेँ, केइ विकल कहेँ देणो छेँ घरणो,

तिणनेँ पोते आए करणो निरणो ।
 किसेँ लेखेँ आए देणोँ घरणो रे ॥ २३ ॥
 वासी घरणो पाड्यो ।
 जीतबं जनम विगाड्यो रे ॥ २४ ॥
 गांमां नगरां मे घणा मूंडा दीठा ।
 सगलां में पडीया फीटा रे ॥ २५ ॥
 घरणो पारण री नहीं रीत ।
 ते चिहुंगति में होसी फजीत रे ॥ २६ ॥
 ते पिण साध लोकां में वाजेँ ।
 त्यांरा श्रावक पिण त्यांसूं न लाजेँ रे ॥ २७ ॥
 किणही घरणो पाख्यो दीसेँ नाहि ।
 घरणो दीघो बाजार रे माहि रे ॥ २८ ॥
 तो साध तो सुमता आणेँ ।
 आपरा संचीया कर्म जाणेँ रे ॥ २९ ॥
 तो आल म्हांरेँइ आयो ।
 म्हांरेँ कर्म निरजरा थायो रे ॥ ३० ॥
 अण बोल्यां रहिणी नावें ।
 सागारी संथारो ठावे रे ॥ ३१ ॥
 च्यारुं आहार खावारा पचखांण ।
 च्यारुं आहार न खाउ जाण रे ॥ ३२ ॥
 आल उतरे तो उतारे ।
 किण सूं घरणो मूल न पाडेँ रे ॥ ३३ ॥
 इम कीयां अें सुधा न थावें ।
 हिवडां देवता नहीं आवें रें ॥ ३४ ॥
 चोडे पारणो छेँ घरणो ।
 इण विध पाघरो करणो रे ॥ ३५ ॥
 जब उतार देसी उवे आल ।
 वेगो काढण निकाल रे ॥ ३६ ॥
 घरणो पाड्यां में दोष न जाणेँ ।
 समरु पड्यां विण उंची ताणेँ रे ॥ ३७ ॥
 साध नें नहीं देणो घरणोँ ।
 यांनै माहोमा पिण नहीं छेँ निरणो रे ॥ ३८ ॥

धरणो पारण गया ते ववेक रा विकल,
 ते हीया फुट गवा रा साथी,
 ते पिण पिंडत वाजें लोकां में,
 एहवा अजाण ते मूढ मिथ्याती,
 साव रो नांम धराए अग्यांनी,
 भोला लोकां माहे पूजावें,
 धरणो पाडया में धर्म जाणें ते,
 तिणसूं आहार पांणी कोई भेलो करे छें,
 अन पाणी खावा री आंण दरावें,
 एहवा विगडायल साध रा भेग में,
 धरणो पाडे साध रा भेष मांहे,
 एहवा भेषघाख्यां नें गुर करसी,
 त्यांरा धरणा पाडयां माहे दोष बतावें,
 थारें पिण साधवी धरणो दीघो,
 दरवार थकी प्यादा मेंलें नें,
 वले सिन्यास्यां पिण नषेच्या त्यांनं,
 धरणो पाडेनं निकालो न काढ्यो,
 आल तो माथें ज्यूं रो ज्यूं राख्यो,
 चोथा व्रत भांगां रो आल लीयां फिरें छें,
 आल रा देवाल तो अठे नेडा फिरें छें,
 इण लेखे तो व्रत भागो छें इण रो,
 यांरा टोळवालां नें तो निश्चों न आयो,
 भेषघाख्यां नें ओलखावण काजें,
 संवत अठारें वरस गुणसठें,

त्यांनिं मेल्या ते विकल विसेख ।
 छोडी छें भेष री टेक रे ॥ ३९ ॥
 धरणा पाडयां में दोष न जाणें ।
 ते जिण धर्म नें केम पिछाणें रे ॥ ४० ॥
 धरणो पाडवा लागा ।
 ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ४१ ॥
 निश्चेंद मूढ मिथ्याती ।
 ते पिण तिण रो छें साथी रे ॥ ४२ ॥
 ते जेंन तणा छें जिंदा ।
 ते होय रह्या मोह अंधा रे ॥ ४३ ॥
 ते निमाइ निश्चें वूडा ।
 ते चिहुं गति माहे दीससी भूंडा रे ॥ ४४ ॥
 त्यांरे माथे दें अछतो आलो ।
 तिणरो पाछो न काढें निकालो रे ॥ ४५ ॥
 यांनं बाजार माथी उठया ।
 जब भूटा पड हो गया काया रे ॥ ४६ ॥
 पाछा फिट्टा पडनं आया ।
 ते तो सोभा कठेंद न पाया रे ॥ ४७ ॥
 अजे कयूं नही काढे छे तार ।
 हिंवे छोडी कयूं यांरी लार रे ॥ ४८ ॥
 ते निश्चें तो ग्यांनी जाणें ।
 अें संका सहित कयूं तांणें रे ॥ ४९ ॥
 जोड कीधी पाली सह्र मफार ।
 आसोज विद एकम रविवार रे ॥ ५० ॥



रत्न : ३४

अवनीत रास

ढाल : १

दुहा

मद विपे कषाय वस आत्मा, तिणसूं विनो कीयो किम जाय ।
तिणरी वणें खुरावी अति घणी, ते सुणजो चित ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[विनां रा भाव सुख सुख गु जे]

कोइ गण मे हुवे साधु अहकारी, तिणरी थोडा में हुय जावे खुवारी ।
उणरों गुण कही पोमां चढावे, तो उ थोडा मे फलफूल थावे ॥ १ ॥
जो उणने गुर गुरभाइ सरावे, तो उ मगज मे पूरों न मावे ।
जब रहे टोला में राजी, ठाला वादल ज्यूं करे ओ गाजी ॥ २ ॥
इसडो अभिमांनी दोष लगावे, तिणसू आलोवणी नही आवे ।
इह लोक रो अर्थी मूंड वाल, सल सहीत कर जावे काल ॥ ३ ॥
इसडो अभिमांनी हुवे अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत ।
तिणने गुर निषेदें घणा मांय, तो उ गुर रो घेपी हुय जाय ॥ ४ ॥
तिण भूठा ने कहे कोइ भूठो, तिण सूं तो रहे नित रुठो ।
खपे छे तिणने देवा आल, जांणे टोला मासू देउ टाल ॥ ५ ॥
यां तो घणा सावां रे माहि, म्हारी आव न राखी कांइ ।
म्हारी आसता चोडे उतारे, तो हू कयाने रूहू यारे सारे ॥ ६ ॥
याने छोडेने होय जालं न्यारो, यारे पिण करू वोहत विगारो ।
यामे दोप पक्षू भारी, जब खबर पडे याने म्हारी ॥ ७ ॥
यारा चेला ने वली चेली, त्याने फाड करू म्हारा वेली ।
इसडी चितवे मन मांय, मिले ओर साधा सूं जाय ॥ ८ ॥
जिण विघ गुर सूं मन भागे, तेहवी वात करें तिण भागे ।
जिण विघ जागे गुर सूं घेप, तेहवी करे वात वणेप ॥ ९ ॥
वले वोलें आल पंपाल, भूठ २ दें गुर रे आल ।
वले दोप अनेक वतावे, जावक खोटा सरवावे ॥ १० ॥
गुर गुरभाई उपर घेप, त्यांरा अवगुण वोलें अनेक ।
जुंन २ खुरट उखेले, आपरे मन माने ज्यू ठेले ॥ ११ ॥

बले आप रें स्वार्थ नावें, त्यामें दोष अनेक बतावें ।
 केकांरी तों हूं परतीत नाणूं, त्यांनं थेटरा असाध जाणूं ॥ १२ ॥
 टोला मांहे तो घणी ढीलाई, कऱ्यां ठीक न लागें कांई ।
 तिणसूं म्हारे तो हूवेणो न्यारी, यामें कुण विगाडें जमारों ॥ १३ ॥
 जो हूं इसडा जाणतो याने, तो हूं घर छोडतो क्याने ।
 हूं तो घर छोडनं पिछ्त्रांणो, में तो खोटो खाधा अजांणो ॥ १४ ॥
 कलह लगावण री करे बले वात, जाणें फाड लेउं म्हारे साथ ।
 जब वेंलों हुवें कांन रो काचो, तो उ मान ले इणरो साचों ॥ १५ ॥
 जब ओं राखें इणरी परतीत, ओ पिण बोलें इणहीज रीत ।
 ओ तों किणही में दोष न जाणें, इणरा कऱ्यां सूं ओपिण ताणें ॥ १६ ॥
 जब ओ आपरो बेली जाण, पछें गुर सूं म्हाडें आण ।
 या बेंठाहीज उंचो बोलें, आंगुणां रो पिदारो खोलें ॥ १७ ॥
 यां आगें बोल्यो तिणहीज रीत, गुर आगेंइ - बोले विपरीत ।
 बले बोले अन्हाखी अलाल, गुर नें देवें भूऊ आल ॥ १८ ॥
 जिण इणने घाल्यो थो भूऊ, तिणसूं तो बेंठो थो रुठों ।
 तिणमें दोष अनेक बतावें, मनमानें ज्यूं गोला चलावें ॥ १९ ॥
 हूं तों याने न जाणूं साध, घर में थकां रो जाणूं असाध ।
 यांरा महाव्रत पांचूइ भागा, सुमत गुपत में दोषण लागा ॥ २० ॥
 याने राखसो टोला माहि, तों बारें नीकल सूं ताहि ।
 थें तो यांरी करों पखपात, तिण सूं मानूं नहीं थारी वात ॥ २१ ॥
 बले घणी साधवीयां माहि, साधपणो न जाणूं ताहि ।
 बले दोष घणांमें वतावे, विपरीत पणें सुणावें ॥ २२ ॥
 हूं धरती छोड परो नही जाउं, यां खेत्रां में साथे लगे आउं ।
 थां सांहमों उतर सूं आंणो, ओर गया ज्यूं मोने म जांणो ॥ २३ ॥
 थारा दोष घणाने सुणाउं, थाने चोडें असाध सरघाउं ।
 इस बोलें घणो विकराल, संकें नही देतो आल ॥ २४ ॥
 जिणसूं वात बांधी थी मेली, तिण चेपी साथे लगी मेली ।
 कांयक दोष ओ पिण काढे, उणनं बले पोगां चाढें ॥ २५ ॥
 इणरी आगेई कीची पखपात, भूठी साख भरी साख्यात ।
 जब इणनेई निखेद्यो थो गाढों, तिणसूं ओपिण बोलें आडो आडों ॥ २६ ॥
 न्याय निरणा तणी नही वात, भूठी करवा लागों पखपात ।
 न्याय निरणारी हुवें नीत, तो इणने निषेधे इण रीत ॥ २७ ॥

वनीत रास : ढाल १

श्रों तों तीमे हीज छे वांक, शें दोषण राख्या ढांक ।
 थे तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो मूठों करे विषवाद ॥ २८ ॥
 घणा दिनां काढे दोष अनेक, तिणरी बात न मानणी एक ।
 आपारे छें इसडी मरजाद, हिवे क्याने करे विषवाद ॥ २९ ॥
 इणने इण विध पाहें कूडो, घणा बेंठ घालें मुख घूडों ।
 पिण चोरां कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विध देह ॥ ३० ॥
 जूं मिलीयों अवनीत सूं जेह, तिणने निषेघसी किम तेह ।
 जब गुर जाण्यो इणरें सीहें, ओं तो बोलतो मूल न बीहें ॥ ३१ ॥
 ओं तो दीसें छें भारीकर्मों, निरलज घणों बेसरमो ।
 इणने प्रतख सूम्मी भूंडी, जब गुर तो विचारी उंडी ॥ ३२ ॥
 रखे छूट एकलों थावें, रखे सका घणां रे परजावें ।
 रखे गूजे पाखंडी अयाण, रखे जिणमत री पडें हांण ॥ ३३ ॥
 रखे घट जायेला उपगार, बेंदो उठेला लोक मभार ।
 जो इणने करडा कहूं इणवारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥ ३४ ॥
 ओं तो चडियो क्रोध अहंकारो, तो हिवें करणो कुण विचारी ।
 जो नरमाई कीयां ठाय आवे, कदा आलोय नें सुघ थावे ॥ ३५ ॥
 इम जांगी कीधी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ।
 किणरे संका न राखी काय, सगला नें दीया समझाय ॥ ३६ ॥
 जब ओं किण विध बोले उंचो, हिवें ओ पिण बोलीयो सूषो ।
 अब तो जावजीव रडूं मांय, गण छोडण री काहूं वाय ॥ ३७ ॥
 इण दोषण काढ्या था अनेक, तिणरी पाछी न पूछी एक ।
 किणने थोडो घणों दंड देणों, ते पिण नही काढियो बेणो ॥ ३८ ॥
 बले घणी साघवीयां मांहि, साघपणो न जाणतें ताहि ।
 त्यानें काढणी नहीं ठेराई, त्यांरी बात न कीधी काई ॥ ३९ ॥
 यानें छोड्यां रडूं गण मांहि, तका पिण काई बात न काय ।
 टोला माहें कहेतो थों ढीलाई, तिणरी पाछी नही चलाई ॥ ४० ॥
 सगली ढीली मेले दीधी बात, विनें सहीत बोलें जोडी हाथ ।
 हिवें आप घणो पिछतावें, गुर ने बाह्वंवार खमावें ॥ ४१ ॥
 म्हे तो कीषों छे कांम छोटीं, अपराव कीयो म्हे मोटों ।
 मोनें आछो न जाणसी आप, इम करवा लागों विलाप ॥ ४२ ॥
 हिवे हूं मन में न राखूं पाप, म्हांरी सुणों आलोबण आप ।
 म्हे तो आपरा अवगुण अनेक, साचां रें कने बोल्या वगेष ॥ ४३ ॥

ते हूं आपनें सब सुणाउं, जुदा जुदा कहे वताउं ।
 इण वात रो न काहूं आगों, इम कहि नें सुणावण लागों ॥ ४४ ॥
 वले आलोया बोल अनेक, हिवें सल न राखूं एक ।
 वले याद आवसी मनें, ते पिण कहि देसूं थानें ॥ ४५ ॥
 म्हारा मन माहें आई अनेक, पूरी कहणी न आवें वशेण ।
 म्हारी भाषा तणें अंलाण, लेजों तिण अणुसारे, जाण ॥ ४६ ॥
 म्हें तों इसरो जाण्यो मन माय, म्हारी गिणती राखें नहीं काय ।
 म्हारी आसता देवें उतारी, तिणसूं एकलो हुवेंगरी धारी ॥ ४७ ॥
 म्हें कीधो विचार वशेण, यानें इम कहां जागसी धेष ।
 जब अं करडा कहिसी तिणवारो, तब हूं एकलो होय जासूं न्यारो ॥ ४८ ॥
 तिण कारण हूं बोल्यो विपरीत, म्हारें एकला हुवेंगरी नीत ।
 म्हें तों इसडी न जाणी थी काय, मों आगें करसी नरमाय ॥ ४९ ॥
 म्हें कीधों घणो विषवाद, म्हारों खमजो सगलो अपराध ।
 म्हारी गई आगावाली रीत, हूं तो हूओ घणो अक्कीत ॥ ५० ॥
 वले मन माहें बोहत सीदावें, मुखसूंई घणों पिछ्छतावें ।
 म्हें तो खोई म्हारी परतीत, मोनें आप जाण्यो अक्कीत ॥ ५१ ॥
 म्हें ती कीधो घणों अन्याय, थारा आंगुण बोल्या सावां माहि ।
 हूं तो वले इण भव माहि, एहवों काम ने करसूं ताहि ॥ ५२ ॥
 कवा दोष जाणूं आप मांय, तो हूं कहि देसूं आप नें आय ।
 बीजानें कहितों कदेय म जाणों, हिवें तो म्हारी संका म आणो ॥ ५३ ॥
 ओरां आगें न कहणरी थाप, म्हारी परतीत राखजों आप ।
 हूं तो चालसूं आगली रीत, अठासूंई जाणों वनीत ॥ ५४ ॥
 आपों हेले निन्दें गुर पासें, निज अवगुण अनेक परकासें ।
 वले कर कर घणी नरमाई, परतीत पूरी जपजाई ॥ ५५ ॥
 वले करें घणो पिछ्छाताप, हिवें प्रायाच्छित्त दें मोनें आप ।
 इम कीधी आलोवण ताय, जब गुर जाण्यो आयो ठाय ॥ ५६ ॥
 ओं तो प्राच्छित्त मागें म्हां आगें, म्हारें तो दीघां ठीक न लागें ।
 ओ तो कषाय वस बोल्यो जाण, प्राच्छित्त देउं इण अंलाण ॥ ५७ ॥
 कदे विकटे वलें किण काल, वले मांगी दे बांधी पाल ।
 दीघों ते बोल संमाल, एक ओ पिण दे काडे आल ॥ ५८ ॥
 हूं तो प्राच्छित्त यां कनें लीघों, मोसूं डरतां पूरी नहीं दीघो ।
 म्हारा बोल्यां रो करत निवेरो, तो मोनें सावणो देत फेरें ॥ ५९ ॥

कदे इसरोई दे काढे आल, तिणरो कुण काढे नीकाल ।
 इणरो आगा सूं नहीं वेसास, इसरो जाण टालो दीयो तास ॥ ६० ॥
 हिवडां तो न दीसें खांमी, प्राछित लेवारो छे कांमी ।
 वले कपट न दीसें ताय, तो इणरो देउं इणनें भोलाय ॥ ६१ ॥
 ओं तों करे आलोवण एम, ओछो प्राछित लेसी केम ।
 इसरो जाणे क्हों तिणने आम, थने भासे जितो लेवो तांम ॥ ६२ ॥
 आड दोढ आई मन मांय, ते पिण सारी याद अणाय ।
 जिण परिणामां क्हो ओरां पास, सगला दोष भेला करे तास ॥ ६३ ॥
 तिणरो प्राछित लें थारें मेलें, वले याद आवे तिण वेलें ।
 थनें दीवीं छे आग्या ताहि, कोइ सल मत राखजों माहि ॥ ६४ ॥
 जब ओ करवा लागो विलाप, मोनें प्राछित देवो आप ।
 प्राछित मांग्यो घणां दिन ताय, तो पिण दीवो उणनें भोलाय ॥ ६५ ॥
 पछे इणनें क्हों तूं वताय, ते हूं प्राछित ले काढूं ताय ।
 जब ओ कहे मोने खबर न काय, आपने भासे ते लेवो ताय ॥ ६६ ॥
 इणनें वतलायो घणी वार, दोष प्राछित न कहे लिंगार ।
 इणनें पूछ्या रो उत्तर एह, आपनें भासे ते लेवो तेह ॥ ६७ ॥
 पूछ्यां सीदावे संकोच पांम, जब इणरा जाण्या सुच परिणाम ।
 कदा फेर अगन ज्यूं ओ जागे, वले विगट वेदों करे आगे ॥ ६८ ॥
 तो इणनें उत्तर देवा काम, तप थोडो घणों लेउं तांम ।
 दोष निरजर हेत लीयो जाण, कलहादिक भेटण री मन आण ॥ ६९ ॥
 ते तो केवल ग्यानी रह्या देख, पिण केंतव न राख्यो एक ।
 जे कोइ माहे राखसी सल, तो उणरी उणनें मुसकल ॥ ७० ॥
 वले घणां सावां रे मांय, त्यानें दीयो वणेष जताय ।
 कोइ दोष जाणों जिण मांय, प्राछित लेजों सुच वताय ॥ ७१ ॥
 अठा पेहली रा केंतव अनेक, ते तों वाकी न राख्या एक ।
 अठा पेहली रों अपराव सारो, ओ पिण खमार्यो वाख्वारो ॥ ७२ ॥
 सरल हूवो दीसे सुवनीत, आगे हूता तिणहीज रीत ।
 सह हिल मिल नें एक हूवा, ओंपरा नहीं दीसें जूवा ॥ ७३ ॥
 कोइ गण माहे दोष लगावे, ते निजर आपरी आवे ।
 तिणनें देणों तुरत वताई, आगली रीत सेंडी टेंराई ॥ ७४ ॥
 कलहो मेट कीया जिण सुच, जिणरी निरमल लेइया वुच ।
 पिण दुष्टी रे समता न आवे, वले किण विच कलहो उठावे ॥ ७५ ॥
 ११५

तिणनें दे काढ्या था दोखो, तिणरें मनमाहि मोटो धोखें ।
 जब आपरा किरतव देखें, तिणसूं पड गइ घरक वशेखें ॥ ७६ ॥
 इसरी कीधी घणी अजोगाई, यासूं छांनी न दीसैं काई ।
 वले जाण्यो घणो अवनीत, म्हारी किम करसी परतीत ॥ ७७ ॥
 सगला साधां रे मांय, म्हारी परतीत देवे घटाय ।
 मोनें सरघाय, म्हारी आसता देला उडाय ॥ ७८ ॥
 पछें सगलां नें ले वख मांय, म्हारा आंगुण त्यांनें दरसाय ।
 रखे पछें मोसूं दाव वालें, एकला नें टोलां मांसूं टालें ॥ ७९ ॥
 तो हूं पिण यांरा गण मांय, साघ साघवीयां नें फटाय ।
 त्यांनें फाड्यां सूं कळं न्यारा, त्यांनें कर राखूं बेली म्हारा ॥ ८० ॥
 किणसूं सेंठी बांधे राखूं वात, मोनें छोड्यां आवें म्हारे साथ ।
 तिणरा परिणाम गुर सूं फारों, तिणनें सेंठो कर राखूं म्हारों ॥ ८१ ॥
 टोलो फारणरी धारी मन मांय, संकीयो नहीं करतों अन्याय ।
 ज्यां भेलो रहें दिनरात, त्यांसूंइज मांडी बेसासघात ॥ ८२ ॥
 माहें थकों करे एहवा कांम, तिणरा दुष्ट घणा परिणाम ।
 ते तो परभव साह्यो न जोवें, नर नों भव निरथक खोवें ॥ ८३ ॥
 तिण अवनीत नें सूके उंधो, तिणरी भिष्ट हुइ मति बूधो ।
 संवलो सूकें नही तिलमात, तिणरें उदें थयो छें मिथ्यात ॥ ८४ ॥
 वाह्य विनो करें दिनरात, अभितर में खेल रह्यो घात ।
 घणो केलवे कपट नें कुरों, गुर रो बेधी होय गयो पुरों ॥ ८५ ॥
 वेंरी ज्यूं रह्यो डस झाल, मुख सूं करें लाल नें पाल ।
 विनो नरमाई करें वशेखों, छल छिद्र रह्यो नित देखों ॥ ८६ ॥
 चोर ज्यूं रहें दुष्ट परिणाम, साघ साघवी फारवा कांम ।
 अवनीत उंधी उंधी धारे, आप विगड्यां ओरां नें विगारे ॥ ८७ ॥
 एकला री आसंग नही आवें, जब ओरां में बेली उठावें ।
 तिणनें लालच लोभ दिखावें, गुर सूं जावक भिडकावें ॥ ८८ ॥
 जिण विघ गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विघ जागें गुर सूं बेष, तेहवी करें वात वशे ॥ ८९ ॥
 आपां उपर छें गुर रो घेख, दाव वालसी अवसर देख ।
 एके कर साघ साघवी सारा, आपां नें छोडसी न्यारा न्यारा ॥ ९० ॥
 आपां सूं बोले नरम वशेखें, ते तो आपरों मुतलब देखें ।
 यानें सुधा कदे मत जाणों, यांरी परतीत मूल म आणों ॥ ९१ ॥

अवनीत रास : ढाल १

जों आपांमांसूं करें एक काल, तो एकण ने दे गण सूं टा
 माहे राखे तो फोरा पारें, वले परतीत पूरी उतारें ॥ १४ ॥
 तो आपां पिण टौला मांहि, आपणा कर राखां ताहि ।
 त्यांसूं सेठो कर कर करारो, ते गुर ने लखाव म पारो ॥ ६॥
 इम कहि कहि उणनें भरमावे, सिष पदवी रो लोम दिखावे ।
 तिणसूं कर कर घणी नरमाय, वले विविष पणें ललचाय ॥ ६४ ॥
 जो उणारे उदें हुवे मिथ्यात, तो उ मान ले उणरी वात ।
 परमारथ पिण पुरो न बूकें, कर्मां वस सवली नही सूमे ॥ ६५ ॥
 जब ओ गुर आग्या दे ठेली, अवनीत रो होय जावे वेली ।
 तिणसूं करे अग्यांनी एकां, बोल वंघ सेठा लेवें वगेलो ॥ ६६ ॥
 वले माहोमां सूंस खावें, जिलो बाघ एके होय जावे ।
 अवनीत सूं एके होई, लोम रे वस आत्म विगोई ॥ ६७ ॥
 सिख पदवी री तिणरे चाहि, पूजा सलाघा री मन माहि ।
 इत्यादिक लोम मन मांहे आण, अवनीत सूं एको कीयो जाण ॥ ६८ ॥
 अवनीत रे एको ने मिलाप, जब करे अविनां री थाप ।
 आपा ने गुर सूं डरतो न रहिणों, करडा कहे पाछो करडो कहिणो ॥ ६९ ॥
 आपा डरता रहिसां किण लेखें, आपा री तों परतीत वगेले ।
 आपा तो रहिसां गण मांहे जोडे, इसडो कुण आपा सू तोडे ॥ १०० ॥
 कदे परपदा लोक हुवें भेला, थाने करडा कहे तिण वेला ।
 जब थे पिण करडा पाछा कहिजो, लोका बेठां डरता मत रहिजो ॥ १०१ ॥
 पाछो न कहां लागे हलकाई, थारी गिणत रहे नहीं काई ।
 तिणसूं थे पिण करडो कहिजो पाछो, नही कहां न लागे आछो ॥ १०२ ॥
 करडा पाछा कहां तोडे थांसूं, जब थे आय मिलजो म्हांसूं ।
 थारो उपर राखजो बोलो, ज्यूं ववे आपां रो तोलो ॥ १०३ ॥
 मोने अलगो जाणो तिण वेला, तोही आय होयजो मो भेला ।
 म्हांरी संका कदे मत आणो, मोनें थारो थकोईज जाणो ॥ १०४ ॥
 इण विष हुआ अविनां में सेठा, उल्ट्या लडवा ने वेठा ।
 कजीयो करवारी वाट जोवे, छेरवे तो ततपर होवे ॥ १०५ ॥
 तिणने गुर कहे सहिज मे सूवो, तो उ पड जावे मूरख ज्यो ।
 तिणरा लखण घणा छे माठा, उलटो गुर ने कहे करडा काठा ॥ १०६ ॥
 गुर ने करडो काठो कहिणो पाछो, ओ किरतत्र जाणीयो आछो ।
 तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण मारग थी सिष्ट ॥ १०७ ॥

तिगनें करडा कहें क्रिण वारें, जत्र उ अचनीत पास पुकारें ।
 जत्र उ कहें उगलें एम, यें क्यूं पाछों कहीं नहीं केम ॥ १०८ ॥
 इसरी करे अविनां री थाप, मांहीमां कीयो त्यारे मिलाप ।
 बले जिलो शंघग रे काज, हिंवें कुग २ करें अकाज ॥ १०९ ॥
 फिं मिल २ तें करें चोरी, गण में करें फारा तोरी ।
 १०१ वात करें उग आगे, जिण विष मांहीमां कल्ह लागें ॥ ११० ॥
 गुर सूं पिग मेलें मूरख दांडी, तिग भेप ले आतमां भांडी ।
 गुर सूं बेलो हुवे उदास, तेहवी वात कहें तिग पास ॥ १११ ॥
 क्रिगनें कहें थां उपर घेव, ते अर-वर ल्यां देख ।
 क्रिगनें कहें थांरी कीधी उतरती, मो आगे पिण कीधी परती ॥ ११२ ॥
 क्रिगनें बले कहें छें आम, थांने लोलपी कहें छें ताम ।
 क्रिगनें कहे थांने कहितां वेंपो, इणनें महीं कपडों नहीं देंपो ॥ ११३ ॥
 क्रिगनें कहें थे प्राच्छित लीबो, ते तो मों आगे कहि दीबो ।
 थांरी आसता एम उतारें, बले निन्दा करें पूठ लारें ॥ ११४ ॥
 क्रिगनें कहें थांने कहितां चोरो, क्रिगनें कहें थांसूं हेत थोरो ।
 क्रिगनें कहें थांने कहितां अचनीत, क्रिगनें कहें थांरी करें अप्रतीत ॥ ११५ ॥
 क्रिगनें कहें थांने नहीं भगावें, क्रिगनें कहें थांने नहीं बतलावें ।
 क्रिगनें कहें थांने रोगी जाणें, पिण ओपव कदेव न आणें ॥ ११६ ॥
 क्रिगनें कहें थांने चोमासें काल, लांबो खेतर बतावे टाल ।
 बाछे खेतर थांने नहीं मेलें, सेपें काल पिण इमहीज ठेलें ॥ ११७ ॥
 क्रिगनें कहें थांरो न करे वेसास, माहिं रहिवा रीन करें आस ।
 जिग विष जागे गुर सूं वेप, तेहवी करें वात वगेप ॥ ११८ ॥
 जिग विष गुर सूं मन भागे, तेहवी वात करें उग आगे ।
 जिग विष गुर सूं हेत दुटें, तेहवी वात करें परपूठें ॥ ११९ ॥
 इण विष साव साधवी फाडें, गण में भेद इण विष पाडें ।
 गुर सूं परिणाम उतारे, सुब सावां नें मूड विगारे ॥ १२० ॥
 बले गुर में अवगुण दरसावें, मूठा २ दोप बतावें ।
 बले निन्दा करे छानें-छानें, जिगरें अमुभ उदें ते मानें ॥ १२१ ॥
 जिगनें गुर सूं करें उपराठों, आपरो कर राखें काठो ।
 जिगनें निसक आउरों जाणें, जिगनें घगो घगो बलाणें ॥ १२२ ॥
 ओर साव नें मेल उग साव, जत्र पिण करें वेसासघात ।
 उगलें फार करें आन कानी, पछें निन्दा करें मन मानी ॥ १२३ ॥

इण विध करे फारातोडी, गुर सूं छानें छाने करे चोरी ।
 त्यासूं छानें छानें जिलो बांवे, जिण धर्म न ओलख्यो बांधे ॥ १२४ ॥
 माहोमा मिल जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे ।
 इसरों करे अकारज खोटों, तिणने दोप लागे छे मोटो ॥ १२५ ॥
 एहवा दोप री कर राखें थाप, पछे सेवे निरतर आप ।
 बले साधु नाम धरावे, तों उ पेहिले गुणठाणें आवें ॥ १२६ ॥
 जों उ दोष नें दोष न जाणें, तो पिण पेहिले गुणठाणें ।
 ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडीयो च्यार तीरथ थी दूरो ॥ १२७ ॥
 तिणरे सरधा जमाली री आई, मूल की पूंजी सर्व गमाई ।
 समकत ने साधपणो खोयो, जिलो बांध ने जनम विगोयो ॥ १२८ ॥
 एहवा गेरी थका गण मांय, तिणरी गुर नें खबर न कांय ।
 मुख उपर तों करे गुणग्राम, छाने छाने करे एहवा काम ॥ १२९ ॥
 गुर रे मुख तो गुण गावें, छाने छाने अदगुण दरसावें ।
 मुख उपर तो बोले राजी, छाने छाने करे दगाबाजी ॥ १३० ॥
 बले वादे गुर ने जोडी हाथों, पगां मे देवे नित नित माथों ।
 बांदताई करे गुणग्राम, सारां पेंहली ले गुरां रो नाम ॥ १३१ ॥
 बले लोकां ने वंदणा सिखावे, त्यामें पिण गुर रो नाम घलावे ।
 लोकां आगे करे गुणग्राम, पिण मन रा मेला परिणाम ॥ १३२ ॥
 जोम अहकार में नहीं मावें, त्यासूं आलोवणी नही आवें ।
 प्राच्छित लेने सुख नही थावें, पूरी परतीत नही उपजावे ॥ १३३ ॥
 जब याने जाण्या दगादार पूरा, तब कर दीया गण सूं दूरा ।
 जब अ हुआ जाबक अपछ्छंदा, विगडायल जेन रा जिदा ॥ १३४ ॥
 त्या छोडी लाज नें मरजाद, सके नही करता विपवाद ।
 त्यारें भूठ तणों नही टालो, कूड कपट तणो बोहत चालो ॥ १३५ ॥
 त्यारा नेम वरत सर्व भागा, हुआ वरत विहुंणा नागा ।
 परीया च्यार तीरथ सूं बारे, आप विगड्या ओरां ने विगाडे ॥ १३६ ॥
 गण मे करता था फारा तोरो, त्याने जाण्या घणा जणां चोरो ।
 सगलां साधा में परतीत छोई, त्यांरी साख भरे नही कोई ॥ १३७ ॥
 त्यारे सिध पदवी री थी आस, तिण थी पिण हुआ निरास ।
 त्यांरी वेसास आगा सूं भागो, आत्म ने कलंक मोटो लागो ॥ १३८ ॥
 गण मे कीवी थी वेसासघात, पिण कोइ न लागो हाथ ।
 ज्याने आपरा कीधा था फार, ते पिण न गया त्यांरी लार ॥ १३९ ॥

त्यां पिण यानें खोटा जाण, गुर नीं आग्या कीधीं परमाण ।
 अें तो गण माहें भूंडा दीठा, सगला साधां में पर गया फीटा ॥ १४० ॥
 साध तो कोइ हाथे न लागो, श्रावकां सूं करें हिवें ठागों ।
 त्यां आगें वोलें सूधा वशेख, मिनकी ज्यूं रह्या छल देख ॥ १४१ ॥
 त्यां देखतां करें खप गाढी, न्हार भगत तणी चाल काढी ।
 बुगलध्यांनी ज्यूं वणीया ताहि, लोकां नें न्हाखवा फंद माहि ॥ १४२ ॥
 श्रावकां री लागी त्यारे चाय, त्यांनें फारण रो करें उपाय ।
 मान वडाई ने पेट काज, हिवें कुण कुण करे अकाज ॥ १४३ ॥
 खोटी पेडी जमावण काजें, भूठ वोल्ता मूल न लाजें ।
 आपणा दोष सगला डांके, ओरां सिर आल देता न सांके ॥ १४४ ॥
 जांणे गुर माहें दोष वताय, श्रावक श्रावकां लेउं फंटाय ।
 इसरी आसा वाचे मन मांय, रात दिवस करें वकवाय ॥ १४५ ॥
 श्रावक श्रावकां पूछें ताय, वले पूछें अनेराई आय ।
 वले पूछें त्यांनें ओर लोक, जब अें गुर में बतावें दोख ॥ १४६ ॥
 घणां लोकां में भूठ चलावें, अणहुंता दोष गुर में वतावें ।
 आपरें मन मानें ज्यूं वोलें, आं गुणां रो पिटारो खोलें ॥ १४७ ॥
 दोष वीसां तीसां रो ले नांम, पछे वोलें अग्यांनी आंम ।
 यामें दोषां रो कहूं उनमान, ते सुणां सुरत दे कांन ॥ १४८ ॥
 सों मण तणी खांड माहि, तिण मांसूं एक मूठी दिखाइ ।
 ज्यूं छें दोष घणां यां माहि, थानें थोडासा दीया वताय ॥ १४९ ॥
 घणी ढीलाइ छे टोला मांय, ते तो लोकां नें खबर न कांय ।
 यारे खोट घणों छे माहि, परूपे जिम पालें नाहि ॥ १५० ॥
 अें आचार घणोंई दिढावे, पोते तों पूरो पालणी नावें ।
 अें तो कपट सूं कांम चलावें, यामें साधपणों नहीं पावें ॥ १५१ ॥
 म्हें यामें आगेई दोष वताया, यानें प्राच्छित दीधों छों ताय ।
 पिण अें वले न चालें सूधा, तिणसूं म्हें हो गया जूदा ॥ १५२ ॥
 म्हारे आचार री छें सगाई, यामें तो दीसें घणी ढीलाई ।
 जब म्हें असाध जांणीया यानें, खोटा जाण छोडीया त्यांनें ॥ १५३ ॥
 म्हें मिनष तणो भव हार, म्हें किम बूडां यारे लार ।
 म्हे करसां आत्मा रो किल्याण, चोखो चारित पालसां जाण ॥ १५४ ॥
 जिणरा छे घेषी पूरा, तिणरें आल दे कूडा कूडा ।
 तिणमे दोष अनेक वतावें, जावक खोटो सरधावें ॥ १५५ ॥

गुर गुर भाई उपर घेष, तयारा आंगुण बोले वशेप ।
 जूना जूना खुरट उ खेले, आपरें मन मानें ज्यू ठेले ॥ १५६ ॥
 जिण धाल्यो थों इणने भूठो, तिण सूं तो वेठो थो रुठों ।
 तिणमें दोष अनेक वतावें, मन माने ज्यू गोला चलावें ॥ १५७ ॥
 तिणसूं तो आवे लाग़ा लाग़ा, तिणने आल देवा नें आगा ।
 तिणरी परती परती काढें वात, हिला निन्दा करे दिन रात ॥ १५८ ॥
 बले करें घणों विषवाद, सगला साचां ने कहे असाव ।
 घणा लोकां मे वद वद बोले, आंगुणां रो पिटारो खोले ॥ १५९ ॥
 किणनें कहे याने प्राछित आवे, तो प्राछित यासूं लेणी न आवे ।
 तिण कारण म्हे नीकलीया बारें, कुण वूडसी यारे लारें ॥ १६० ॥
 किणनें कहे यानें म्हे दंड दीघो, जब तो प्राछित यां लीवों ।
 बले यां दोष सेव्या छे ताहि, प्राछित विन लीवां किम रहां माहि ॥ १६१ ॥
 किणनें कहे यानें दोषण लाग़ा, यारा पांचोई महावरत भागा ।
 सुमत गुपत हुआ चकचूर, इण कारण यांसूं हो गया दूर ॥ १६२ ॥
 किणनें कहे यामें नही आचार, दोष सेवतां न डरें लिगार ।
 अणआचारी न लागे प्यारा, तिण कारण यांसूं हो गया न्यारा ॥ १६३ ॥
 किणनें कहे अें तो बोलें फिरता, भूठ सूं नहीं दीसें डरता ।
 कूड कपट घणों यां माहि, यारा बोल्या री परतीत नाहि ॥ १६४ ॥
 किणने कहे अे तो सुघ न चालें, दोष सेवें तो कुण याने पालें ।
 जे कोइ दोष काढें यां माहि, तिणसूं इस भाल राखे ताहि ॥ १६५ ॥
 हुंतो कहितो यानें दोष देख, जब अें म्हांसूं पिण करता थेख ।
 म्हांरी वात नें वेता उडाय, मोने तो राखता दवकाय ॥ १६६ ॥
 म्हांरे हुंती घणी मन मांय, एकलां री आसंग नही कांय ।
 हिवें तो म्हे हुआ छां दीय, दोष सेवण न दर्शां कोय ॥ १६७ ॥
 इसरा घड घड ने भूठ चलावे, आपरो सूरपणो मनावे ।
 आपरा दोषां सामो न देखें, भूठ में भूठ बोले बजेखे ॥ १६८ ॥
 किणने कहे यामें दोषण पावे, विविध प्रकारे प्राछित आवे ।
 म्हांमें दोषण मूल न पावे, मिच्छामि दुकडं पिण नही आवे ॥ १६९ ॥
 किणने कहे यां क्हायें म्हांरे पास, एक लिखत कर द्यो मोने ताम ।
 जो थे नीकलो टोला बार, जब थाने करणा नही च्याहं आहार ॥ १७० ॥
 पाछें भागल तुटल रहें ज्याने, सगला पानां सूप देणा त्यानें ।
 इसरो लिखत कर द्यो कहे म्हांनें, इण कारण यांसूं हो गया कानें ॥ १७१ ॥

अं तो डीला पारण रे काम, एहवा वं वं वांवे तांम ।
 इसरा वं में परां नहीं ताहि, म्हारिं कुण रहसी डीलां मांहि ॥ १७२ ॥
 किणनें कहें यांमें पेहलो गुणठाणों, निदचेंइ मिथ्याती जाणों ।
 यांनें साव साचिला जाणें, ते पिण पेंहलें गुणठाणें ॥ १७४ ॥
 किणनें कहें यांमें समकत नांहि, सावपणों जाणें आप मांहि ।
 जो अं आपनें असाव जाणें, जव तां चोयें गुणठाणें ॥ १७३ ॥
 यांनें किणही पूछ्यो किण वेलां, किण मांत हुवो यांसूं भेला ।
 जव कह्यो म्हारिं भेला होवो, इण भव में वाट म जोवो ॥ १७५ ॥
 जो अं प्राच्छित ले मुख थाय, तो म्हें यांसूं भेला र्हां जाय ।
 यांने प्राच्छित लेता जाण्या नांहि, दीवां विण नहीं जावां मांहि ॥ १७६ ॥
 यांनें किणहीक पूछीयों आय, मो आगें कहीजों सतवाय ।
 यांनें असाव जाणों के साव, जव कह्यो म्हें जाणां असाव ॥ १७७ ॥
 जव यांनें फेर पूछ्यो मीठी वाणों, किण दिन पछें असाव जाणों ।
 जव अं बोलीया वचन विराच, म्हानें छोडीयां पछें असाव ॥ १७८ ॥
 यांनें तां यां कर दीया जूआ, पछें असाव क्यांयी अं हुवा ।
 जव तो पाछों जाव न आयों, मून सारु रह्या मुरभायो ॥ १७९ ॥
 यांनें पूछ्यो किणही किण वेर, हिंवे दिख्या लेंता दीसो फेर ।
 जव कहें फेर दिख्या ल्यां म्हें क्यांनें, खोटा जाण छोड दीया त्यांनें ॥ १८० ॥
 म्हामें ओर दोपण नहीं पावें, म्हानें फेर दिख्या क्यांनें आवें ।
 म्हें भेला रह्या भागलां मांय, तिणरो प्राच्छित ले मुख थाय ॥ १८१ ॥
 इण रीतें करें वकवाय, ते तो पूरी केम कहवाय ।
 जिण तिण आगें इण विव बोले, ओंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १८२ ॥
 यारे ओहिज मुदें ध्यान, यारे ओहिज मुदें ग्यान ।
 जाणें गुर नें खोटा सरवाय, थावक थाविका लेंउं फंटाय ॥ १८३ ॥
 जाणें म्हें यांरी वंदणा छुडाय, सगलां नें पारां म्हारे पाय ।
 जो जाणें यांनें लोक खोटा, तो म्हानें जाणें अं पुरुष मोटा ॥ १८४ ॥
 जिण विव गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विव गुर सूं हुवें उदास, तेहवी वात करें तिण पास ॥ १८५ ॥
 जिण विव गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वान करें परपूठें ।
 जिण विव जाणें गुर नें वेप, तेहवी करें वात वणेप ॥ १८६ ॥
 जिण विव गुर नें न जाणें आच्छा, जिण विव जाणें आप नें साचा ।
 एहवी भूठी वातां वणावें, ते भूठ लोकां में फेलावें ॥ १८७ ॥

जिण विघ गुर नें असाघ जांणे, एहवी वात घणी मुख आणे ।
 सके नही देता आल, वले कर रह्या मूठी मलाल ॥ १८८ ॥
 लोकां सूं करे घणी नरमाय, मीठ बोले त्यासूं मिल जाय ।
 त्यारी करे खुसामदी जाण, जाणे फंद माहि न्हांवूं नाण ॥ १८९ ॥
 यांरी धुरताई ने कपटाई, तिणमें पाछ न दीसे कांई ।
 त्यारे घात घणी घट मांय, त्यांरी काचा ने खबर न कांय ॥ १९० ॥
 श्रावक श्रावका री त्यारे चाहि, तिणसूं सवलो न मूठें ताहि ।
 घणो मूठ बोलें जांण, त्यांरी वुधवंत करजो पिछ्हांण ॥ १९१ ॥
 यातो कीघो अकारज खोटो, यांने दोपण लागो मोटो ।
 गुर सूं छाने २ वांध्यो जिलो, यांने कर्मा दीघो टिलो ॥ १९२ ॥
 गण में कीघी फारा तोरी, करवा लाग्ना छानें २ चोरी ।
 गुर सूं माडी वेसासघात, त्यारी परगट होय गई वात ॥ १९३ ॥
 वले सेवीया दोष अनेक, ते पिण चावा हुआ वणेख ।
 तिणरो प्राच्छित न हुआ आरे, जब काढ दीया गण बारे ॥ १९४ ॥
 खोटा जांण ने छोडीया यांने, ते वात न राखी छाने ।
 याने चोडें छोड्या साख्यात, तिणमें कूड नही तिलमात ॥ १९५ ॥
 अे तो कहे छें घणा लोकां माहि, म्हें छोड्या छें यांने ताहि ।
 इण विघ बोले छें परपूठ, ते तों निद्वेंद बोले छे मूठ ॥ १९६ ॥
 किणने कहे यां छोडीया म्हाने, किणने कहे म्हे छोडीया याने ।
 इम मूठ बोलें जांण जांण, सके नही मूठ अयाण ॥ १९७ ॥
 जिण किरतव सूं कीया वारे, तिण वात रो नाम न काडे ।
 द्विवे ओर री ओर ले उठें, अें तो लग रह्या मत मूठे ॥ १९८ ॥
 आप माहे छे दोष अनेक, ते तों वारे न काडे एक ।
 उलटों ओरा में दोष वतावे, मूठ में मूठ जांण चलावे ॥ १९९ ॥
 ओगुण सुण २ ने समद्विष्टि, यांने जाणे घमं सूं भिष्टि ।
 यांरा बोल्यां री परतीत नाणे, मूठ में मूठ बोलता जाणे ॥ २०० ॥
 श्रावक आरे करता दीसे नाहि, जब अे प्राच्छित ओडे आया मांहि ।
 आ आलोवण करणी थापी ताय, प्राच्छित पूरो लेणों ठेंहराय ॥ २०१ ॥
 पाचूं पद विचे दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय ।
 तिणरा साखी ग्रहस्थ ठेंहराय, तया पछें लीया मांय ॥ २०२ ॥
 दोला रा साघ साघवी मांहि, किणरे प्राच्छित ठेंहरायों नाहि ।
 किणही प्राच्छित मूल न लीचो, मिच्छामि दुकडं पिण नही दीचो ॥ २०३ ॥
 ११६

किण्ही में न काढ्यो बंक, सगलां नें कर दीघां निसंक ।
 प्राच्छित विण दीघां आया मांहि, सगलां नें सुघ जांणी ताहि ॥ २०४ ॥
 यांरी तरफ सूं चोखा जाण, गुर रे पगां पडीया आण ।
 जो अं दोप जाणें किण मांहि, तो अं आगों काढें जिसा नांहि ॥ २०५ ॥
 ज्याने असाध कह्या था मुख सूं, त्यांरा वांदीया पग मसतक सूं ।
 त्यांनें प्राच्छित मूल न दीघो, उलटों आप प्राच्छित ओढ लीघो ॥ २०६ ॥
 ज्यांरा पांचूत्रत कह्या भागा, त्यांरे हीज पगां आय लागा ।
 ज्यांनें कह्या था लोकां में खोटा, त्यांनेंहीज लेखव लीया मोटा ॥ २०७ ॥
 ज्यांमें काढ्या था अनेक दोप, ते तो कर दीया सगला फोक ।
 उलटो आपरे डंड ठेहराय, इण विघ आया गण मांय ॥ २०८ ॥
 ज्यांने डीला कहिता तांण तांण, बले भागल कहिता जांण जांण ।
 ज्यांरी वंदणा देता छुडाय, त्यांरा हीज पोतें वांदीया पाय ॥ २०९ ॥
 ज्यांने कहिता पेहलें गुणठाणें, त्यांराहीज पग वांदीया आणें ।
 अणाचारी कहिता दिनरात, तिका पाछी न पूछी वात ॥ २१० ॥
 ज्यांने प्राच्छित केंता था आप, ते तो जाबक दीयों उथाप ।
 उलटो आप डंड कराय, गण मांहे पेंठा छें आय ॥ २११ ॥
 कहितो थो मोमें दोप न पावें, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवें ।
 तिणनें प्राच्छित देणों ठेहराय, तठा पछे लीयों गण मांय ॥ २१२ ॥
 कहितो आलोवण करुं नांहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि ।
 तिण आलोवण करणी थाप, ते प्राच्छित पिण ओढीयो आप ॥ २१३ ॥
 ज्यांमें कहिता कपट नें भूठ, हिला निन्दा करता परपूठ ।
 त्यांनें उत्तम पुरुष ठेहराय, प्राच्छित ओढ आया त्यां मांय ॥ २१४ ॥
 ज्यांने खोटा सरघावण ताय, कीघा था अनेक उपाय ।
 त्यांनें तिरण तारण ठेहराय, प्राच्छित ओढे आया त्यां मांय ॥ २१५ ॥
 यांरी करता था केई तांण, त्यांरो गल गयो जाबक मांण ।
 यांरी करता केई पखपात, त्यांरी पिण विगड गइ वात ॥ २१६ ॥
 यांनें जाणता था केई साचा, ते तों प्राच्छित ले हुवा काचा ।
 बले ताणे यांरी डूजीवार, तों अं पूरा मूढ गिवार ॥ २१७ ॥
 आगे तो यांरी राखें परतीत, निज गुर सूं हुवा विपरीत ।
 सुख सावां ने कह्या बले मूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे बूडा ॥ २१८ ॥
 जो यांरे वंधीया निकाचित कर्म, तों यांसूं छूट जासी जिण धर्म ।
 जासी मानव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मभार ॥ २१९ ॥

जो यारे न बध्यो निकाचित कर्म, कदा परजाजे पाछा नर्म ।
 कदा आलोए ने सल काढे, निज काम सिराडे चाडे ॥ २२० ॥
 न्यारा थका हुता गेरी, गण रा हुआ था पूरा वेरी ।
 सर्व साधा ने असाध सरघाया, त्यामेहीज डड ओड ने आया ॥ २२१ ॥
 यां तो च्यार तीरथ रे मांय, कीघो थो घणो अन्याय ।
 पिण प्राछित ले आया माहि, टोला री परतीत अणाई ॥ २२२ ॥
 घणा श्रावक हुआ निसंक, यामेहीज जाणीयो वक ।
 या तो दोष बताया या मांय, आ तो भूठी कीची वकवाय ॥ २२३ ॥
 वारे थकां तो कहिता असाध, माहे आय सरव लीया साध ।
 इण विघ बोल्या था विपरीत, त्यांरी तुरत नावे परतीत ॥ २२४ ॥
 टोला रा साध सावची माहि, साधपणो न कहिता ताहि ।
 इण बात सू घणा भूडा दीठा, परीया च्यार तीरथ मे फीटा ॥ २२५ ॥
 अे तो प्राछित ओढे माहे आया, सगला साधां ने मुख ठेहराया ।
 पिण यारो छूटो नही अभिमान, बले किण विघ विगडे छे तांन ॥ २२६ ॥
 जिण दोष थी काढीया वार, ते पिण दोष सगला चितार ।
 ते आलोवणा गुर हजुरो, तिणरे प्राछित लेणो पूरो ॥ २२७ ॥
 सगला साधां ने असाध सरघाया, त्यामि दोष अनक बताया ।
 ते तो दोष साधा मे न पावे, तिणरो प्राछित पिण याने आवे ॥ २२८ ॥
 ते पिण आलोवणो गुर पास, प्राछित लेणो आण हुलास ।
 ते आलोवण करणी न आवे, प्राछित पिण लीघो न जावे ॥ २२९ ॥
 उणने कह्यो धणीवार तांम, पिण आलोवण रा नही परिणाम ।
 ओ तो भारीकर्मो नही सरलो, तिणने आलोवणो काम करलो ॥ २३० ॥
 जिण ऊरर प्राछित ठेहरायो, तिणने पिण घणो जनायो ।
 इणने प्राछित दीजो भारी, इणरी संक म करजो लिगारी ॥ २३१ ॥
 इणने प्राछित पूरो दीजो, थाने दोष लागे ज्यूं म कीजो ।
 जब इण पिण नही मांनी वात, इणरी छूटी नही पखपान ॥ २३२ ॥
 इणरेई वगो मन माहि, ते कहें हुंतो प्रायच्छित देउ नाहि ।
 जे दोष भ्याससी ते उण माहि, उणरो उहिज ले काडसी ताहि ॥ २३३ ॥
 उणरो प्राछित उणने भलावे, गुर आगे लेणो नही वनावे ।
 जब जांण्यो इणने अवनीत, इणने उंधो मूभजो विपरीत ॥ २३४ ॥
 वाप तो उणने प्राछित न देवें, उणरे मेले उ प्राछित लेवे ।
 गुर आगे लेण री नही वात, ओ उचाडोई मिथ्यान ॥ २३५ ॥

गुर आगे प्राच्छित लेवें नाहि, आप छादें लेवें मन माहि ।
 जब तों चोरेई जाणों अवनीत, त्यामें साध तणी नही रीत ॥ २३६ ॥
 साधां तो यानें दीयो जताय, अे दगा सू आया दीसैं मांय ।
 यारी किम आवे परतीत, यारी देखलो पाछली रीत ॥ २३७ ॥
 जब तो पाछो बोलीयो आंम, म्है दगो करसां किण काम ।
 म्हारें सिष करवारी न काई, सूंस करणें परतीत उपजाई ॥ २३८ ॥
 म्हारे सिष सिषणी करणों नांहि, म्हारे सूंस छे इण भव मांहि ।
 सभोगी करवारो छे आगार, ओ फिरतो बोल्यो तिणवार ॥ २३९ ॥
 जब उणने पाछो दीयो खराय, आ थें फिरती बोल्या वयूं नाय ।
 थारे टोला रे बाहिर जाय, संभोगी पिण न करणों छे ताय ॥ २४० ॥
 जब ओ बोल्यो कर नरमाय, संभोगी पिण न करसा ताय ।
 ज्यूं रो ज्यूं पाछो आरे कराय, काची बात न राखी काय ॥ २४१ ॥
 केई साध बोल्या इण रीत, यारा सूंसां री नही परतीत ।
 याने सूंस करावे अनेक, पालता नही जाण्या एक ॥ २४२ ॥
 यानें आणेंई सूंस कराया, अनंता सिद्ध साखी ठेहराया ।
 ते सूंस पानां में लिखाया, नीचें यारा आखर कराया ॥ २४३ ॥
 इण रीतें सूंस कराया, ते पिण सूंस सगला उडाया ।
 चोरे भाग कीया चकचूर, इणमें मूल न दीसे कूर ॥ २४४ ॥
 तो लारला सूंस इमहीज जाणो, यारी परतीत मूल म आणो ।
 बले एक साध बोल्यो एम, थारी परतीत आवसी केम ॥ २४५ ॥
 म्हारा पाचूं वरत कह्या भागा, थें तो लोका में कहिवा लागा ।
 सुमत गुपत भागी केता म्हारी, मोने साध न गिणता लिगारी ॥ २४६ ॥
 मोनें असाध कह्यो लोकां मांय, मो मे दोष अनेक बताय ।
 ते प्राच्छित म्है तो मूल न लीघो, मिच्छामि दुकडं पिण ही दीघो ॥ २४७ ॥
 थें प्राच्छित पिण मोने न ठेहरायो, तोही आय वांछा म्हारा पायो ।
 मोने परूप्यो लोका मे असाध, हिवे हु किण विघ हुओ साध ॥ २४८ ॥
 आ देख लीघी थारी रीत, इम नावे थारी परतीत ।
 जब कहे म्है लोकां रे मांहि, थानें असाध परूप्या नांहिं ॥ २४९ ॥
 पाछो जाव नायो तिण ठाम, मूठ बोले चलायो काम ।
 इणरी किणनें न आई परतीत, मूठाबोलो जाण्यो विपरीत ॥ २५० ॥
 याने पाछा लीया गण माहि, जब यांसूं पेहली वात ठहराइ ।
 सिप सिपणी न करणा सोय, जुदो टोलो न वाघणो कोय ॥ २५१ ॥

कदा गुर ने पिण दोपण लागे, तो कहणो नही ओरा आगे ।
 गुर नेंडज कहिणो सताव, घणा दिन नही राखणो दाव ॥ २५२ ॥
 बले फाडा तोडा री वात, किणसूं करणी नही तिलमात ।
 जिलो बांधणो नही मांहोमांहि, फेर साथे ले जावणो नाहि ॥ २५३ ॥
 पांचूं पद विचे दीया ताय, आलोवण प्राछित पूरो ठेहराय ।
 आग्या मे चालणो रुडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत ॥ २५४ ॥
 आगा विचेइ रहिणो वनीत, बाकी सर्व आगली रीत ।
 इत्यादिक पेहली सेठी ठेहराय, पछे गण मे लेणा थाप्या ताय ॥ २५५ ॥
 एक बले परतीत उपजावो, बले कर्म जोगे न्यारा थावो ।
 तो न बोल्णा अवगुणवाद, इसडो करणों नही चिपवाद ॥ २५६ ॥
 जिण बोल सूं बले तूट जाय, तेहिज बोल कहिणो लोकां माय ।
 ओर बोल न कहिणो एक, आ परतीत उपजावो वगेल ॥ २५७ ॥
 जब ओ पिण बोल्यो चोखी वाणो, हिवे इण भव मे सका मत आणो ।
 तो पिण ओ बोल गाढो खराय, इत्यादिक घणा बोल जताय ॥ २५८ ॥
 पछे दोय सूस कराय, तठा पछे लीया गण मांय ।
 आलोवणा प्राछित पूरो ठेहराय, अनन्ता सिघ विचे दे आया माय ॥ २५९ ॥
 ते आलोए प्राछित लेणी नावे, तिणसू भूठी भूखलायां खावे ।
 जाणे आगे ठेहराइ ते भेलो, प्राछित लेवूं म्हारे मेलो ॥ २६० ॥
 ओ पिण खांचातांण मांडी, जाणे टल जाये ज्यूं म्हारी भाडी ।
 जब साधा घणो दवकायो, घणो दोरोसो आरे करायो ॥ २६१ ॥
 गृहस्थ वेठा ठेहराइ वात, ते प्रसिघ करणी विल्यात ।
 जिण मे हुतो जिण रो जाणें वक, ज्यूं भागे लोका री सक ॥ २६२ ॥
 आगे कीघो थो तिम ठेहरायो, प्राछित लेणों आरे करायो ।
 जब उणनें कह्यो इण जाय, जब ऊ ओर ले उठीयो ताय ॥ २६३ ॥
 जो हू प्राछित थां आगे लेसूं, ते ओर आगे कहण नही देसूं ।
 साधा री रीत तिम कीघो कहिणो, प्राछित रो नाम किणरो नही लेणो ॥ २६४ ॥
 ओर कहिवा रो कीघो छे टालो, सगला सूंस कीया ते सभालो ।
 ओ तो भूठो ले उठीयो म्भोर, साधां तो सूंस कीघो ते ओर ॥ २६५ ॥
 जो सूंस कीयो जाणे एह, तो दूजों व्यू आरे हुओ तेह ।
 लोका कने प्राछित कहिणो थाप, उण कने जाय दीयो उथाप ॥ २६६ ॥
 ओ तो उणरेइज बल भूंभे, पोते कांई सबली नही सूंभे ।
 जाणें ओ करसी म्हारें रुडों, इणरे पाछे लागो पूरो ॥ २६७ ॥

ओं तो गुर नें लट्टो डरवें, लट्टी पेंली अनेक वतावें।
 सूंस कर नें वन्द्य गयों ताय, बोलीए पिण बन्वन थाय ॥ २६८ ॥
 हूं तो ज्यां ला रहिसूं गण मांहि, किणरो अवगुण बोलसूं नांहि।
 म्हें तो सूंस ज्येतांहि कीयो, जाव जीव रो सूंस न लीवो ॥ २६९ ॥
 इणतें जाक्क बदल गयो जाण, जव फेर पूछ्यो मीळी वाण।
 यांरो परख करवा कह्यो आम, सगला सूंस करो एक ताम ॥ २७० ॥
 कदा आहार पांगी नूट जाय, तो किणरा अवगुण न बोळणा ताय।
 जिन बोल सूं नूट जायें आहार, तेहिज बोल कहिणों विचार ॥ २७१ ॥
 ओर अवगुण न बोळणा जाण, ओं तो सगला करो पचखाण।
 जव यां पाछें उत्तर दीयो एम, ओं तो न करां म्हें नेम ॥ २७२ ॥
 ओं सूंस म्हारें ठीक न लागें, कदा नूट जायें बले आणें।
 पेंह्या सूंस कीयो ने भागो, आगा सूं इम बोळवा लागो ॥ २७३ ॥
 जव इणतें जाण्यां वणों अबनीत, सावु तणी न जाणी रीत।
 ओगुण बोळण नूं कांई कांम, इणरा दुष्ट जाण्या परिणाम ॥ २७४ ॥
 ओगुण बोळण रों डर निन्नाय, गण मांहें रहिता जाण्या ताय।
 आगा ज्यूं जाण्यां भूळ रो चालो, ते कदे दे काडें मोटोई आलो ॥ २७५ ॥
 जें द्या सूं आया दीसे ताहि, इसडा आछा नहीं गण मांहि।
 तो यांन देणा देणा छिट्काय, इसडी घारी मन मांय ॥ २७६ ॥
 प्राच्छित लेंगों तो बदलीयो नांहि, पिण मान वणों घट मांहि।
 वो म्हारो प्राच्छित कहें लोक आणें, तो म्हारी जाव हलकाई नाणें ॥ २७७ ॥
 त्रिण कारण बले अडवी मांडी, हुंती देख आपरी भांडी।
 वाक्वार आहिज वणी ताणें, रखे लोक भूंडो मोतें जाणें ॥ २७८ ॥
 प्राच्छित चावो न कहें लोकां मांहि, गाला गोले छांनों राखूं ताहि।
 पिण आ तों प्रसिध वात, ते छिपाई केम छिपात ॥ २७९ ॥
 ओर मावां प्राच्छित लीवो नांहि, त्यांनं कहरा न हूं लोकां मांहि।
 जो उवे कहें म्हानें प्राच्छित न दीवो, तो हूं पिण केसूं म्हेंई न लीवो ॥ २८० ॥
 वद इणतें बले पूछीयो जाण, कोई ग्रहस्य पूछें मोतें आण।
 यांरो सूंस भागा नुणीया तान, यांराइज सिपां रें पास ॥ २८१ ॥
 नहीं भागा नें नहीं भागो तो कहि सुं, अण बोळ्यो वेअें किम रहिसूं।
 इसडों आल मायें किम लेसूं, जव बो कहें यूं तो कहिण न देसूं ॥ २८२ ॥
 भावां री रीत कीयो कहिणों, ओर उत्तर पाछें नहीं देणों।
 धामना करे देवो जणाय, तेहवी पिण नहीं काडणी वाय ॥ २८३ ॥

जो थे कहिसों म्हांमें दोष नांहि, तो हूं कहि देसूं दोष यां मांहि ।
 म्हे कह्यो ते नही छे भूठ, तो वले वेदो जासी उठ ॥ २८४ ॥
 जिण प्राछित नहीं लीघो छे ताय, तिणने न लीघों न काढणी वाय ।
 जिण प्राछित लीघो छे तांम, तिणरो पिण नही लेणो नांम ॥ २८५ ॥
 लीघा न लीघा रो नांम नकारो, ग्रहस्थ आगे न कहिणों लिगारो ।
 जो थें कहिसों इणनें प्राछित दीवो, तो हूं कहिसूं म्हे मूल न लीघो ॥ २८६ ॥
 इसडों डाल कुण ओढे माथे, प्रतीत जावे इण वाते ।
 ग्रहस्थ नें मर्म ओर रो होवें, तो यारें बदलें परतीत कुण खोवे ॥ २८७ ॥
 ग्रहस्थ पिण साचा ने भूठो जाणें, भूठा ने साचों कहें अजाणें ।
 ग्रहस्थ दोनूं प्रकारे हुवें भारी, केयक होय जाए अनंत संसारी ॥ २८८ ॥
 जाण नें साचा भूठा रो, सरीखो भर काढें हूंकारो ।
 एहवी मिश्र भाषा सूं हुवे खुवारी, ज्यूं वणी वसुदेव राजा री ॥ २८९ ॥
 इसडो कुण करसी अन्याय, वले निज परतीत गमाय ।
 कोइ जाणे यारें सिपां री चाहि, यानें प्राछित विण लीया मांहि ॥ २९० ॥
 आप प्राछित लीयों ते छिपावें, न लीयो तिणने दीयो सरधावें ।
 लोकां ने कहिवा न दे इण कांम, यारा दुष्ट घणा परिणाम ॥ २९१ ॥
 म्हांनें प्राछित लीयो जाणे लोक, तो म्हांमें जाण लेसी दोप ।
 नही तो यामें हिज जाणें दोप, यानें प्राछित लीयो जाणें लोक ॥ २९२ ॥
 इसडी गूढ माया सेवे, ओर साधां सिर आल देवें ।
 इसडा आछा नहीं गण माहि, जाण्यो वेगा दीजे छिटकाइ ॥ २९३ ॥
 एक आचार्य पदवी रो भूखो, कदागरो करवा दूको ।
 पदवी मूढें आणें वारुंवार, कहितो पिण नही लाजे लिगार ॥ २९४ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य आप, तिणनें तो जाणें देउं उथाप ।
 आचार्य पदवी हूं लेऊं, जाणें सगलां रो नायक वेऊं ॥ २९५ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य जाण, जाव जीव रा करे पचखाण ।
 तिणमें अनंता सिद्धां री साख, त्यां सूसां री करवा मांडी राख ॥ २९६ ॥
 आचार्य पदवी रे काजे, सूंस भांग तो पिण नहीं लाजे ।
 ह्रवो पदवी रो मोह मतवालो, आत्मा ने लगावे कानो ॥ २९७ ॥
 इसडों अभिमानी नें अवनीत, मांडी गछवास्यां वाली रीत ।
 पदवी पदवी करतो दीठो भूंडों, अवनीत सूं एको कर दूडों ॥ २९८ ॥
 यारे एको मांहोमां न छूट्यें, उणरें वदले ऊ वोलें भूडों ।
 एक एक रा दोषण ढांके, गुर आगे पिण कहितों तांके ॥ २९९ ॥

वले बोलें घणा घणा उंघा, सरलपणें न बोले सूधा ।
 करें जोम नें गाढ री वात, मिटियो नहीं त्यांरो सल मिथ्यात ॥ ३०० ॥
 पांचूं पद बिचें दे आया मांहि, कपट दगो छूटों नहीं ताहि ।
 यांनं जाण्यो अँ वेसासघाती, मांहोमां करें पखपाती ॥ ३०१ ॥
 यारो जाण्यो मांहोमां एकों, चाला चरित देख्या अनेकों ।
 आगा ज्यूं चोखी रीत ठेंहरायो, तिका पिण नहीं दीसैं कायो ॥ ३०२ ॥
 इणनं एक बाईं पूछ्यो एम, सांमीजी सूं जुदा हुवा केम ।
 जब ओर साघ बोल्यो इम वांण, अब तो गुरां रे पगे पडीया आंण ॥ ३०३ ॥
 जब उण साघ नें कह्यो इण एम, इसडो थें बोलीया केम ।
 म्हानें पगा पडीयो कह्यो कांय, हूं तो करार करे आयो मांय ॥ ३०४ ॥
 आज पछें थें इसडो वाय, मूढा बारें म काढजों ताय ।
 अँ तों बोले अग्यांनी एम, ते तो गुर ने आराधसी केम ॥ ३०५ ॥
 यांनं जाण्यो घणो अघनीत, नही चारित पालण री नीत ।
 छोडी जिण मारग री रीत, इणरी जाबक नावें परतीत ॥ ३०६ ॥
 ग्रहस्थ आगें कहिवा रा पचखांण, ते पिण सूंस भांगीयो जांण ।
 प्राछित ठेंहरायों घणा री साखी, ते बदल गयो अन्हाखी ॥ ३०७ ॥
 वले घणा लोकां रे मांय, भूठी भूठी करे बकवाय ।
 वले वद वद नें बोले करों, जब इणनं तों कर दीयो दूरो ॥ ३०८ ॥
 दूजोडा नें न छोढ्यो ताय, तिणनं दीयो एम जताय ।
 जो थारें एको न छें मांहोमांहि, फाडा तोडो न कीधो छें ताहि ॥ ३०९ ॥
 तो तूं मत जाए उणरी भार, उण दोषीला नें काढीयो बार ।
 ऊ प्राछित आढ बदलीयो तांम, तिण भूठा बोला सूं नहीं काम ॥ ३१० ॥
 जो तूं जाएला उणरी लारी, तो थे एको कीयो गण फारी ।
 इम कहां बेटो रह्यो तांम, अंतरंग तों मेला परिणांम ॥ ३११ ॥
 उण सूं मिल मिल नें करें वात, उणरीज करें पखपात ।
 उणरो थको बेटों गण मांय, जांण जांण करे कपटाय ॥ ३१२ ॥
 ओं तो जाणें र्हूं गण मांय, पिण उण विण रह्यो न जाय ।
 तिणरी करें दलाली आप, करें मांहें ल्यावण री थाप ॥ ३१३ ॥
 आगें ठेंहरायो प्राछित ताहि, ते प्राछित दे लेवो मांहि ।
 इणरो परमारथ छे एह, मो उपर प्राछित थापों तेह ॥ ३१४ ॥
 जब उणनं पाछो कह्यो एम, तो उपर थापां प्राछित केम ।
 थारें उणरी दीसैं पखपात, वले भेली दीसैं थारी वात ॥ ३१५ ॥

जब इण कह्यो मो उपर थें थाप्यो, ते थैइज कांय उवाप्यो ।
 जब इणने कह्यो बले आंम, उणहीज उथापीयो तांम ॥ ३१६ ॥
 उण कह्यो प्राछित लेऊं नांहि, तिणनें किण विव राखां मांहि ।
 जब इण भूठ बोले तिणवार, उणरी वात लीघी संवार ॥ ३१७ ॥
 उ तो प्राछित बदले क्यांनें, उणने आवे जितों देणो म्हाने ।
 फाडा तोडो न कीयों म्हे सोय, तिणरो प्राछित न लेऊं कोय ॥ ३१८ ॥
 उ तो बदलीयो ते इण न्याय, ओ बोल्यो इसडो भूठ बगाय ।
 जब उणने दीयो जताय, तोसूं प्राछित दीयो न जाय ॥ ३१९ ॥
 म्हे तो सरल हुवो जाण्यो ताह्यो, जब थां उपर प्राछित ठेहरायो ।
 अब तो सरल न दीसो एक, छल खेलता दीसो अनेक ॥ ३२० ॥
 उणनें प्राछित भारी आवे, ते तोसूं पूरो दीयों नही जावे ।
 'तोनें प्राछित कुण भलावे, थारी परतीत मूल न आवे ॥ ३२१ ॥
 तूं प्राछित दीधां रो करे नांम, ते तो खोज मांगण रे कांम ।
 तूं प्राछित रो करे गाला गालो, इसडों दूजो कुण वेठो छे भोलो ॥ ३२२ ॥
 जो उणरे रहिणों होसी गण मांय, तो गुर कने प्राछित लेसी आय ।
 गुर छोडे तोकनें लेवें ताय, ते कारण मोहि वताय ॥ ३२३ ॥
 आ उघाडा दगा री बात, मिल मिल नें करो बेसासघात ।
 थामें साध तणी नही रीत, उघाडाई दीसो अवनीत । ॥ ३२४ ॥
 गुर कनें प्राछित लेवा नें पाछो, तिणनें कदे म जाणजों आछो ।
 इसडाने राखे गण मांय, तो सगलां ने आछो नही थाय ॥ ३२५ ॥
 जब उणरी पख में बोल्यो पूरो, जब इणनेइ कर दीयो दूरो ।
 इणनेइ नही राखियो मांय, जब ओ उण सूं भेलो हुवो जाय ॥ ३२६ ॥
 जो उ न जाजे उणरी लार, तो उ कर दें इणरो उघाड ।
 कवा दसमो प्राछित वतावें, ते इणसूं पछे लीयो न जावे ॥ ३२७ ॥
 ओ जाणें म्हारी पारेला कूक, अठ सूं पिण जाउंला चूक ।
 भेला होय ने कीधा छे कर्म, चावा हुवां निकल जाजे भर्म ॥ ३२८ ॥
 जो आप मे खामी न हुवे लिंगार, तो कुण जाए भागल री न्यार ।
 ओ तो आपरा किरतव देखें, ते गुर सूं भेलो रहें किण लेवें ॥ ३२९ ॥
 जो उणनें प्राछित आप ओढावे, तो उ इणनें उत्तरो वतावे ।
 तिणसूं उणने प्राछित देणी नावे, आप सूं पिण लेंणी न आवे ॥ ३३० ॥
 इणरे इसडी वणी छे आय, आड दोड में पडियो जाय ।
 अवनीत सूं गाडी जोडी, गुर सूं तो पेह्णान्ज तोडी ॥ ३३१ ॥

गुर कीषो थो उपगार मारी, ते तो घाल दीयो विसारी ।
 अवनीत रे जिले जूतो, नर नों भव खोय विगूतो ॥ ३३२ ॥
 यानें छोडीया पँहली वार, दोयां नें साथे काढीया बार ।
 हिवें छोडीया हूजी वार, एकीकानें काढीयों बार ॥ ३३३ ॥
 हिवें अवनीत हुआ दोनूं भेला, करवा लगा गुरां री हेला ।
 सूंस वरत सर्व यांरा भागा, हुवा वरत विहूणा नागा ॥ ३३४ ॥
 प्राच्छित न ले तिणसू काढ्या बारें, तिण वात रो नाम न काढें ।
 उलटो दोष साधां में वतावे, झूठ बोलतों संक न ल्यावे ॥ ३३५ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या वाय, यामें दोष हुवें ते दयो वताय ।
 जब ओ पाछो बोल्यो तिणवार, यांरा दोषां रो घणों विसतार ॥ ३३६ ॥
 हिवें काल पडिकमणा रो आयो, ते तों पूरा केम कहिवायो ।
 चेडा नें कोणक री हुइ राडो, ज्यूं यांरा दोषां रो छे विसतारो ॥ ३३७ ॥
 पछें घणा लोक मिल आयो, त्यां कर्नें दोष अनेक वतायो ।
 जब लोक पाछा बोल्या एम, ओ गढ इण विघ भांगे केम ॥ ३३८ ॥
 कोइ भारी वतावो दोष, ज्यूं सुणें सगलाई लोक ।
 जब कह्यो मोटों दोष नहीं मांय, अणहूतो वतायो न जाय ॥ ३३९ ॥
 जो अँही दोष यामें हुवेंसी, तिणरो अँ प्राच्छित लेसी ।
 जब कहें प्राच्छित तों यामें नाहीं, आगें सुध हुवा म्हां मांहीं ॥ ३४० ॥
 जब लोकां कह्यो तो क्यूं वतावो, यामें दोष हुवें ते सुणावो ।
 जब कहें अँ तों म्हे वातां वताई, यांरी उठाणपरीया सुणाई ॥ ३४१ ॥
 जब लोकां कह्यो वले यानें, आ निरथक सुणाई थें क्यानें ।
 हिवें थें प्राच्छित ले आवो मांहि, जिलो मत राखो ताहि ॥ ३४२ ॥
 जो थें जिला सहित आवो मांहि, जब तो मांहे न लेवें ताहि ।
 थारी परतीत यानें न आवे, रषे वले किणनेंई ले जावे ॥ ३४३ ॥
 जब अँ पिण बोल्या बेरीत, म्हांनें यांरी नावें परतीत ।
 अँ म्हांसूं गाढो करे करार, पछें काढें एकीका नें बार ॥ ३४४ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या तिणवार, थानें दोष विनां काढें बार ।
 तो म्हे वंदणा छोड द्यां यानें, इसडी वात विचारो क्यानें ॥ ३४५ ॥
 जब कहें म्हे रहिसां दोय, तीजां नें नही फाडां कोय ।
 इसडी परतीत उपजावां, दोय तो वीखर न्यारा न थावां ॥ ३४६ ॥
 मुदें जिलो विखेरणों पँहलो, ओ तो दोष नहीं छें सँहिल्यें ।
 चोरी सहीत लेवें गण मांय, तो सगलाई मिट्टी थाय ॥ ३४७ ॥

जिलो विखेरण रा नही हुआ ठगो, थे दीयो घणा ने काम ।
जब लोकां पिण जाणो लीया ताहि, अ देगा सहीत आवें गण माहि ॥ ३४८ ॥
वले गृहस्थ बोल्या केई वाय, गुर कने प्राच्छित ल्यो जाय ।
जब ओ बोल्थो अविनेकारी वाणों, आ वात इण भव मे मत जाणों ॥ ३४९ ॥
जो म्हे जावां यारा गण मांय, तठे तो म्हांरी गिणत न कांय ।
म्हाने दिव्या दे लेवे मांय, सगलां रे पगां देवे लगाय ॥ ३५० ॥
आपणा किरतव देखे, ते गण मे आवसी किण लेखे ।
आलोवण पिण करणी नावे, प्राच्छित पिण लेणी न आवे ॥ ३५१ ॥
जथातय निज ओगुण वतावे, तो यांने प्राच्छित दसमों आवे ।
एहवो वेराग ने नरमाई, ते मूल न दीसे काई ॥ ३५२ ॥
जब घणा लोकां जाण्यां अजोग, याने माहे लेवा नही जोग ।
लोकां पिण कह्यो साधा ने आय, काची बातां म ल्यो यांने मांय ॥ ३५३ ॥
अपछदा पडीया गण सूं जूआ, च्यार तीरथ मे फिट फिट हूवा ।
थावक हुंता चतुर सुजाण, यांने वदणा छोडी खोटा जाण ॥ ३५४ ॥
अे जाणें यामे दोप वताउ, थावका ने यांसूं मिडकाउ ।
यारें उसभ उदे हुआ आण, मुख सू पिण नीकले खोटी वाण ॥ ३५५ ॥
विसवा पिण म्हांराई घट जासी, लोका मे पिण आछी नही थासी ।
पिण यारा थावका नें करू एम, दाहे बलीया आकडा जेम ॥ ३५६ ॥
या कने हरकोइ आवे, जब अे गुर माहे दोप वतावे ।
अे तो मिल मिल ने भूठ बोले, अवगुणां रो पिदारो खोले ॥ ३५७ ॥
आगे बोलीया अवगुण अनेक, तिण विचेइ बोले छे क्कोख ।
यारें निन्दा तिकोइज घ्यांन, यारे निन्दा तिकोइज ग्यांन ॥ ३५८ ॥
जाणे अवगुण काढ्यां दिन रात, कोयक लागें म्हांरेइ हाथ ।
इण कारण करे छे विलाप, यारे उदे हुआ छे पाप ॥ ३५९ ॥
अवगुण सुण सुण ने समदिष्टी, याने जाणे धर्म सूं भिष्टी ।
यारा बोल्या री परतीत नाणे, भूठ मे भूठ बोल्ता जाणे ॥ ३६० ॥
सगला थावक सारीखा नाहि, अकल जुदी जुदी घट माहि ।
समदिष्टी री साची हुवे दिष्ट, ते यांने करे थोडा माहे खिष्ट ॥ ३६१ ॥
ते याने न्याय सू देवे जाव, पारे घणां लोका माहे आव ।
यारी मूल न आणे सक, याने देखाल दे यारो वंक ॥ ३६२ ॥
अे घणा दोप कह्यो गुर मांहि, घणा वरसां रा जाणो छो ताहि ।
तो अे पिण साव किम थाय, जाण जाण मे ह्या ॥ ३६३ ॥

यामें दोष घणा छे अनेक, कदा दोष नही छें एक ।
 त तो केवलग्यानी रह्या देख, पिण थे तो बूडा लें मेख ॥ ३६४ ॥
 जो यामें दोष कह्या थें साचा, तोही थें तों निश्चें नही आछा ।
 जो भूडा कह्या तो क्लेश भूडा, थें तो दोनूं प्रकारें बूडा ॥ ३६५ ॥
 थे दोषीला नें बांछा कहो पाप, मेला पिण रह्यां कहो मंताप ।
 दोषीला नें देखे आहार पांणी, बले उपधादिक देवें आंणी ॥ ३६६ ॥
 हरकोइ वसत देवें आण, करें विनों वीयावच जांण ।
 दोषीला सूं करे संभोग, तिणरा पिण जाणों छों माठा जोग ॥ ३६७ ॥
 इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिणमें पाप कहो छो एकंत ।
 थें थें जाणें कीया सारा काम, ते पिण घणा वरसां लगे तांम ॥ ३६८ ॥
 घणा वरस कीया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो धर्म ।
 निरंतर दोष सेवण लागा, हुआ वरत विहुंणा नागा ॥ ३६९ ॥
 ओ थे कीधो अकारज मोटो, छांने छांनें चलायो खोटो ।
 थे तो बांध्या करमा रा जालो, आतमा ने लगायो कालो ॥ ३७० ॥
 थे गुर ने निश्चें जाण्यां असाध, त्यानें बांछा जांणी असमाध ।
 त्याराहीज बांछा नित नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय ॥ ३७१ ॥
 यांसूं कीधा थें बारें संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग ।
 सावद्य सेव्यो निरंतर जांण, थें पूरा मूंड अयांण ॥ ३७२ ॥
 थें भण भण ने पाना पोथा, चारित विण रहि गया थोथा ।
 थें कहो अर्थ करां म्हे गूढा, तो थें भण भण नें कांय बूडा ॥ ३७३ ॥
 थे वीहार करता गांम गांम, सिप सिषणी वधारण काम ।
 किणनें देता बधो कराय, किणनें देता घर छोडाय ॥ ३७४ ॥
 बले कर कर गुर रा गुण ग्राम, चढावता लोकां रा परिणाम ।
 जब थें गुर ने खोटा जाणो ताहि, ओरां नें क्यूं न्हाखता यां माहि ॥ ३७५ ॥
 पोते पडीया जाणों खाड मांय, तों ओरां नें न्हाखता किण न्याय ।
 ओरां नें डबोवण रो उपाय, जांण जांण करता था ताय ॥ ३७६ ॥
 पात्र पद वंदणा सीखावता ताह्यो, तिणमे गुर रो नाम घलायो ।
 तिण गुर ने बांछा जाणता पाप, तो ओरां नें कांय बोया आप ॥ ३७७ ॥
 ज्यूं नकटो नकटा हुआ चावें, उसभ उदें माठी मत आवें ।
 ज्यूं थे डूबता दोषीलां माहि, ज्यूं ओरां नें डबोवता ताहि ॥ ३७८ ॥
 ओरां सूं करता एहवो उपगार, थारो भणीया रो ओहीज सार ।
 इसडो कूड कपट थे चलायो, थारो छूटको किण विघ थायो ॥ ३७९ ॥

थे तो जिण मारग में हुआ ठगो, थे दीयो घणा ने दगों ।
 ठग ठग खाधा लोकां रा माल, थारो होसी कुण हवाल ॥ ३८० ॥
 आछी बसत हूती घर मांहि, आहार पांणी कपडादिक ताहि ।
 थानें गुर जाणें हरख सूं देता, सो थारा तों अे निकल गया पेंता ॥ ३८१ ॥
 म्हें थानें वांदाता वाख्खार, जद म्हानें हुवतो हरप अपार ।
 थानें जाणता सुघ आचारी, थे छाने र्हां अणाचारी ॥ ३८२ ॥
 म्हे थाने जाणता था पुरष मोटा, पिण थें तो निकल गया खोटा ।
 म्हे थानें जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवरीया असाध ॥ ३८३ ॥
 थे जाणें र्हाया दोषीला मांहाणें, ठगा सूं थे काम चलायो ।
 थे जीतब जनम विगाख्यो, नरनो भव निरथक हाख्यो ॥ ३८४ ॥
 थे घणा दिनां रा कहो छो दोष, थारी वात दीसे छे 'फोक ।
 साब भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ तो परतीत नाणें ॥ ३८५ ॥
 थे हेत माहे तो दोपण ढांक्या, हेत तूटे कहितां नही सांक्या ।
 थारी किम आवे परतीत, थाने जाण लीया विपरीत ॥ ३८६ ॥
 थे दोषीला सूं कीयो आहार, जद पिण नही डरीया लिंगार ।
 तो हिवे आल देता किम डरसी, थारी परतीत मूरख करसी ॥ ३८७ ॥
 अे थे दोप कयाने कीया भेला, अे थे क्यूं न कहा तण वेला ।
 थामे साध तणी रीत हुवेतों, जिण दिन रो जिण दिन केंतो ॥ ३८८ ॥
 थें दोषीला सूं कीयो सभोग, थारा वरतीया माठा जोग ।
 थारी परतीत नावे म्हाने, यांरा दोष राख्या थे छाने ॥ ३८९ ॥
 थें तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवे प्राच्छित ले होवो सुघ ॥ ३९० ॥
 उणरी तो थारा कहा सूं संक, पिण तूं तो दोषीले निसंक ।
 इम कहि उणने घालणो कूडो, घणा बेठां देणी मुख धूडो ॥ ३९१ ॥
 ज्यूं कोइ वले न हूजीवार, किणराई दोष न ढांके लिंगार ।
 दोप ढांक्यां हुवे घणी खुवारी, टांको मले तो अनंत संसारी ॥ ३९२ ॥
 संका सहीत नें राखे मांय, तो ओर साब दोषीला न थाय ।
 दोषीला ने जांणी राखें मांय, तो सगलाई असाध थाय ॥ ३९३ ॥
 इम कहां यानें जाब न आवे, जब मूठी मूठी वातां वणावे ।
 यांरा दोष न कहा म्हे डरते, गुर सूं पिण लाजा मरते ॥ ३९४ ॥
 रखे कर दे मोनें टोला बारे, मुदे तो ओहीज डर रह्यो म्हारे ।
 म्हे दोष सेव्यां यारे कहे जाण, यां सेव्यां री करी तांण ॥

कदे देतों हूं दोष वताय, जब म्हारी देता वात उडाय ।
 म्हां एकला री आसंग नही कांय, तिण सूं रह्यो दोषीलां मांय ॥ ३६६ ॥
 हिवें तों हुवा म्हें दोय, दोष सेवण न दयां कोय ।
 इसडी जोमरी वातां वणावे, मन मानें ज्यूं गोला चलावे ॥ ३६७ ॥
 जब यानें पाछो कहिणो एम, थारो साधपणो रह्यो केम ।
 थें डरता अकारज कीघो, तिणरो प्राच्छित पिण नही लीघो ॥ ३६८ ॥
 कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थें डरता थकां भर ल्यावत ।
 करावत पाप हर कोई, तो थें डरता करता सोई ॥ ३६९ ॥
 कदा गुर पिण भारी पाप करता, तोही थें तो भेला रहिता डरता ।
 भागलां माहें रहिता खूता, पिण थें एकला कदेय न हुंता ॥ ४०० ॥
 इसडी थारी गीदडाई, थेंइज थारे मुख सूं वताई ।
 इसडा पाक्रम थां माहे पावें, थारी आगा सूं परतीत नावें ॥ ४०१ ॥
 साधा नें डरतो मूल न रहिणो, दोष देखे सताब सूं कहिणो ।
 डरता न कह्या तो थें गीदड पूरा, हिवे किण विध होसो थें सुरा ॥ ४०२ ॥
 एकला होयवा सूं डरतें, दोष न कह्या थें लाजां मरतें ।
 तो हिवें ढांकोला दोप अनेक, जाणें होय जावांला एक एक ॥ ४०३ ॥
 हिवें थारे दोयां रे माय, कोइ दोष दे अनेक लगाय ।-
 तो पिण चावा न करो लाजां मरता, एकला होण सूं बले डरता ॥ ४०४ ॥
 एकला होण सूं डरो दोई, मांहोमा दोष देसो लकोई ।
 आ देख लीधी थारी रीत, हिवें जाबक नावें परतीत ॥ ४०५ ॥
 थारे तो मांहोमां दोप देख, हिवे तो ढांकसो वरोख ।
 एकला होवण रो डर थानें, मांहोमां दोष राखसो छानें ॥ ४०६ ॥
 जो हिवें कहो म्हे न राखां छानें, तो हिवें वात थारी कुण माने ।
 थे बेठा परतीत गमाय, थारी मूख माने वाय ॥ ४०७ ॥
 किणही चोर रो हुवो उघाडो, फिट फिट हुवो सहर मभारो ।
 घणा लोकां जाणीया तास, पळे कुण करे तिणरो वेसास ॥ ४०८ ॥
 ज्यूं थारो पिण हुवो उघाडो, दोषीलां भेलो काढ्यो जमारो ।
 परगट. न कीया त्यारा दोष, थें जनम गमायो फोक ॥ ४०९ ॥
 एक दोष सेवें नित साध, तिण संजम दीयो विराध ।
 तिणें गुर जाण नें वांदि कोय, तो उ अनंत संसारी होय ॥ ४१० ॥
 तो घणा दोष जाणें थें साख्यात, त्यानें जाणे वांद्यां दिनरात ।
 तो थें पूरा अग्यांनी बाल, थें रुलसो कितोएक काल ॥ ४११ ॥

एक दोष रो सेवणहार, तिण वांद्या वधे अनंत ससार ।
 थे घणा दोष जाण्यां त्यां मांय, त्यांरा हीज वांद्यां नित नित पाप ॥ ४१२ ॥
 भागलां रा वांद्यां जाणे पायो, जिण मारग माहे ठागो चलायो ।
 रह्या कूड कपट माहें मूल, हिचे थारो होसी कुण सुल ॥ ४१३ ॥
 जो थे गुर माहे दोष वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया ।
 तिण लेखें पिण थेंइज मूडा, ग्यांनादिक गुण खोई वूडा ॥ ४१४ ॥
 जो थे दोष कहा यामें कूरा, जब तो थे जावक वूडा पूरा ।
 थें दीया अणहूता आल, हिचे रलसो कितो एक काल ॥ ४१५ ॥
 थें दोनूं विष वूडा इण लेखे, साच मूठ तों केवली देखें ।
 छद्मस्थ तों यां अंहेलाणें, थानें जावक मूठा जाणें ॥ ४१६ ॥
 यां कनें पेहला अवगुण कहिवाय, पछें खिष्ट करें इण न्याय ।
 यांरा वचन ने सेंठा माले, यांनं पग २ मूठा घाले ॥ ४१७ ॥
 यांनं जाव न आवे पूरा, चरचा करतां परजाभे कूरा ।
 ज्यू बोले ज्यू पकडावे, भागवा री सेरी न पावे ॥ ४१८ ॥
 थे तों अवगुण बोले अनेक, वुधवंत नही माने एक ।
 यांनं जाणें पूरा अवनीत, यांरी मूल नाणें परतीत ॥ ४१९ ॥
 अवनीतां रो करे वेसास, तो हुवे बोध बीज रो नास ।
 च्यार तीरथ सूं पडीया काने, त्यारी वात अग्यांनी मानें ॥ ४२० ॥
 अविनीतां रो करे परसग, तो साधां सूं जाजे मन भंग ।
 थे साधां ने असाव सरघावे, मूठा २ अवगुण वतावे ।
 यांरो जाय सुणे वखांण, तिण लोपी जिणवर आंण ।
 यांरी तहत करे कोइ वाणी, आ दुरगत नी अंलाणी ॥
 किणरे उसभ उदें हुवे आंण, ते करे अविनीत री तांण ।
 त्यां मूठा ने साचा दे ठेंहराई, त्यांरे अनत संसार री साई ॥
 यांनं कहि वतलावे सामी, तिणमें पिण जाणजे मोटी खामी ।
 यांनं उंचो करे कोइ हाथ, तिणरे निश्चें बंधे कर्म सात ॥
 यांरो जाय वखांण मंडावे, वले ओर लोकां ने बोलावे ।
 इसडी कोइ करे दलाली, ते पिण घर्म सूं होय जाए खाली ॥
 यांनं च्यार तीरथ माहे जाणें, ते पिण पेहले गुणठाणें ।
 यांरी करे कोइ पखपात, तिणरे आय चूको मिथ्यात ॥
 यांसूं करे आलाप संलाप, तिणरें पिण वधे चीकणा पाप ।
 यांनं वंदणा करे जोडी हाथ, तिणरें वेगो आवे मिथ्यात ॥

यांरी भाव भगत करे कोइ, वले आदर सनमान दे सोई ।
 तिणरें सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥ ४२८ ॥
 यांसूं करे विनो नरमाई, तिणरें लागी मिथ्यात री साई ।
 घणों २ जो यां कर्ने जावे, ते समकत वेगी गमावे ॥ ४२९ ॥
 अं अवनीत नें भागल पूरा, वले आल दे कूडा कूडा ।
 त्यांरी मान लेवे कोई वात, ते तों बूड चूका साख्यात ॥ ४३० ॥
 कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यांरे कर्ने जाअें कोई चाल्यो ।
 ते तों गुर रो न मानें हटको, तिणरो तो हुंतो दीसे छे गटको ॥ ४३१ ॥
 चरचा बोल सीखे त्यां आगे, तिणरें डंक मिथ्यात रो लागे ।
 यांरो संसतो परचो न करणो, यांरो संग जाबक परहरणो ॥ ४३२ ॥
 समकत रा अतिचार संभालो, तो अवनीत सूं देजो टालो ।
 जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥ ४३३ ॥
 अं अवगुण बोलें चिठाय चिठाय, किणही भोला रे संक पड जाये ।
 जो उ न करे त्यांरी पषपात, तिणरो काढणों सोहरो मिथ्यात ॥ ४३४ ॥
 त्यांरी गाढी भाले पष कोई, ते नहीं छोडे भूठा जाणे' तोही ।
 ते बूडसी अवनीतां रे लारें, त्यां अहली दीयो जनम विगाडें ॥ ४३५ ॥
 कोई लीधी टेक न मेले, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले ।
 जिण घर्म री रीत न जाणे', मूढ मूर्ख थको यूंही ताणे' ॥ ४३६ ॥
 यां कर्ने करे कोई पोसो समाई, यां कर्ने करे पचखाण जाई ।
 तिणरी पिण जाणजो मति काची, जिण मारग में न कीधी आछी ॥ ४३७ ॥
 जे अवनीत 'रा पषपाती, त्यांरी सुण २ बल उठे छाती ।
 अवनीतां रो करे उघाड, जब पिण मूढो देवे विगाड ॥ ४३८ ॥
 कोई गण में हुवे अवनीत, तिण सूं गाठी बांधे पीत ।
 ते पिण ओगुण बोलावण कांम, इसडा छे मेला परिणाम ॥ ४३९ ॥
 जिणरो धेष छे घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणामी जीव छे मेलो ।
 तिणरें उदे हुवे कर्म मिथ्यात, ते तुरत मानें त्यांरी वात ॥ ४४० ॥
 ते अवनीतां री करे पखपात, तिणरें आय चूको मिथ्यात ।
 खप करे त्यांरी करवा थाप, तिणरें उसम उदे हुवा पाप ॥ ४४१ ॥
 जाणे' अभिमांनी ने अवनीत, तोही राखे त्यांरी परतीत ।
 तिणरे प्रतष पूरो अंधारो, बूडें छे अवनीत रे लारो ॥ ४४२ ॥
 जिणनें गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नें मूढे लगावे ।
 त्यां कर्ने गुर रा अवगुण बोलावे, पछे लोकां में आप फेंलावे ॥ ४४३ ॥

करे जिण तिण आगे वाहू, करे अवनीता री पखपात ।
 अवनीतां ने साचा साचा सरधावे, गुर माहे अवगुण दरसावे ॥ ४४४ ॥
 वादे तो गुर ने सीस नाम, करे अवनीतां रा गुणग्राम ।
 ते होय वेठा अवनीतां री लारी, वले ओरां ने खपे करवा खुवारी ॥ ४४५ ॥
 गुर सूं लोकां रा परिणाम फारें, आप विगड्यो ओरा ने विगाडे ।
 इसडो श्रावक वेसासघाती, ते पिण होयचूको मिथ्याती ॥ ४४६ ॥
 गुर री साची वात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाए वेली ।
 हरकोई अवनीत छूटे, तिणरो वेली होय उठे ॥ ४४७ ॥
 साधां रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सूं वात करे दिल खोले ।
 अवनीत नें मिलीया अवनीत, त्यांरी तेहीज करे प्रतीत ॥ ४४८ ॥
 गुर सूं पिण जावक नही तोडे, अवनीत सूं पिण सटकें नही जोडे ।
 धरपाधर रह्या छे देख, छल छिदर जोवे छे वगेव ॥ ४४९ ॥
 जो अवनीतां ने लोक न माने, तो आप पिण होय जाए काने ।
 अणसरते दवीया रहे मांहि, पिण लखण भदर लीया ताहि ॥ ४५० ॥
 केई श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारे संग फीटा ।
 जो कोई बंध निकाचत पाडे, ते पिण अन्तं ससार वधारे ॥ ४५१ ॥
 केई श्रावक भागल साख्यात, ते भागलां री करे पखपात ।
 जाणें चोर सूं मिल गई कुंती, भूठी वाता करे अणहूती ॥ ४५२ ॥
 ते भागलां ने कहे उतकिष्टीं, तिणरी पिण मति होड गई भिष्टी ।
 तिण भागल नें भागल मिलियां, जब पूरीजे मन रलीयां ॥ ४५३ ॥
 असाधां ने सरघे साघ, साधां ने सरघे असाघ ।
 दोनूं प्रकारे मूरख वूडे, ते पिण जाय वेससी तूडे ॥ ४५४ ॥
 एहुवा अभिमानी ने अवनीत, होसी चिहुंगति माहे फजीत ।
 याने भूंडा कह्या लोकां आगे, यांरा पखपाती रे दाह लागे ॥ ४५५ ॥
 ए समचे भाव कह्या छे जाण, कोई आप म लीजो ताण ।
 एहुवा अवगुण छे जिण मांय, ते छोड्या विण सुख नही थाय ॥ ४५६ ॥
 ए विगडायल जेन रा पूरा, त्यांने कर दीया गण सू दूरा ।
 लाज सरम त्यां अलगी मेली, भेपधारी भागल त्यांरा वेन्नी ॥ ४५७ ॥
 ए साधां मे दोप वतावे, ते भेपघाख्यां रे मन भावे ।
 यारी ठडे कीघी या छाती, ए पिण हुवा त्यांरा पखपानी ॥ ४५८ ॥
 यां तो दुरगत री नीव दीवी, भेपघाख्या रे खरची नीवी ।
 डण खरची सू होसी खुराव, पडमी चिहु गति माहे आय ॥ ४५९ ॥
 ११८

ए तो आगइ देता था आल, ते भूँ रो क्यानें काडे नीकाल ।
 ओं सहजें पडीयो भूठ पानें, हिंवे ए क्यानें राख्या छानें ॥ ४६० ॥
 भेपवाख्यां रा थावक आवे, त्यांसूं तो घणा मिल जावे ।
 त्यानें मीठा वचनां बोलावे, त्यां आगें गुर में दोप बतावे ॥ ४६१ ॥
 जब ए पिण राजी होय जावे, असणाटिक आछी रीत वैहरावे ।
 बले ए पिण यांनें पोगां चढावे, वाहंवार अवगुण बोलावे ॥ ४६२ ॥
 बले मांहोमां कल्हो दे ल्गाड, आमी सामी भेटी मेलें ताहि ।
 यारे आगेई साव सूं घेप, निणसूं यांरी मानें वसेप ॥ ४६३ ॥
 बले यांनें पृछें केइ एम, थानें गण वारे काडीया केम ।
 जब ए कहे म्हांनें काडे क्यानें, म्हें तो डीला जाणें छोड्या यांनें ॥ ४६४ ॥
 इसडा भूठ वोलें जाण जाण, तिणरो कठें नही परमाण ।
 यांनें छोड्या एकीकानें ताय, तका तो वात दीवी छियाय ॥ ४६५ ॥
 कमलप्रभ आचार्य नें देखो, तिण विचे यांरी विगडी वमेखों ।
 जण वचन फेखो एकवार, तों रुनीयो अनंत संसार ॥ ४६६ ॥
 ए तों वके घणा दिनरात, कूड कपट सहीत करे वात ।
 बले विववपणें देवे आल, तों ए कल्सी कित्तोएक काल ॥ ४६७ ॥
 इसडा अनंत हुआ नें होसी, परभव सामो विगला जोसी ।
 बले आरा आजूणा मांहि, म्हे पिण देख लीया छे ताहि ॥ ४६८ ॥
 ए भाव कह्या तिण मांहि, कोई बोल टले छे ताहि ।
 केई अणुसारें मेल्या छे न्याय, कोई बोली रो फेर छे मांय ॥ ४६९ ॥
 इत्यादिक यांमें आंगुण जाण, जब लागा छे जहर समाण ।
 यांनें निन्द जाणें कीया दूर, तिणमें मूल म जाणजों कूड ॥ ४७० ॥
 सेतीमें वरस संवत अठारे, काती मुद एकम सनीसरवार ।
 निन्द भागल रो विसतार, कीवो पादू गाम मफार ॥ ४७१ ॥

